अयाची मिश्र

प्रथम दृश्य

(मातृ वन्दना—पाँच बालक द्वारा सम्मिलित गान)

(असावरी)

धन्य धन्य मातृभूमि ! सकल ज्ञान गुणक खानि !
धन्य तोँ पवित्र माँटि ! धन्य अमृत तुल्य पानि !
धन्य तोँ बसात जाहिमे बहैछ ब्रह्मज्ञान !
धन्य तीर्थ सदृश देश शान्त तपोवन समान !
कोन देशमे भेलाह नृप विदेह सन महान ?
कन्या ककर कोखिसँ भेलैक अछि सिया समान ?
ठाम ठाम ओखनधरि कीर्ति अछि विद्यमान ?
कतहु गौतमक कुण्ड, कतहु कपिल मुनिक स्थान !
वाचस्पतिक डीह कतहु, गंगेशक कतहु धाम !
कतहु पक्षधरक टोल, कतहु उदयनक गाम !
राजा शिव सिंहक कतहु पोखरि ओहने उदार !
कतहु संस्कृतिक स्रोत मंडन मिश्रक इनार !
कतहु बिसपीक गाछ जकरा तर बैसि बैसि
मैथिल-कवि-कोकिल अमर विद्यापति कैल गान !
कतहु सवा कट्ठा मात्र बाड़ी महँक साग मध्य
ओखन चमकैत अछि अयाची केर स्वाभिमान !

द्वितीय दृश्य

(पंडित अयाची मिश्र पूजापर बैसल छथि । आगाँमे धूप दीप नैवेद्य, फूल, तराइ, पंचपात्र, अर्घा, घंटी आदि ।)

(बालक शंकरक प्रवेश)

शंकर—बाबूजी, नवद्वीपसँ एकटा विद्यार्थी आएल छथि ।

पं० अयाची—हुनि अबियौन्ह ।

(शंकर आगन्तुककेँ नेने अबैत छथिन्ह । आगन्तुक पं० जीकेँ प्रणाम कय बैसैत छथि ।)

पं० (आशीर्वाद दैत)—की समाचार ?

वि०—हम प्राचीन न्यायमे आचार्य कय सम्प्रति नव्यन्यायक अनुशीलन कय रहल छी । व्याप्तिक प्रकरणमे एक ठाम नीक जकाँ परिष्कार नहि होइत अछि...

पं०—की ?

वि०—साध्यतावच्छेदक धर्मावच्छिन्न साध्यतावच्छेदक सम्बन्धावच्छिन्न निष्ठ प्रतियोगिता निरूपक जे अभाव—

पं०—तकर हेतुतावच्छेदक धर्मावच्छिन्न हेतुतावच्छेदक सम्बन्धावच्छिन्नसँ सामानाधिकरण्य नहि हैबे व्याप्ति थीक । यैह ने ?

वि०—हँ । यैह ।

पं०—शंकर, तोरा त ई विषय बूझल छौह ?

शं०—हँ, बाबूजी !

पं०—हिनका परिष्कार क' दहुन ।

शं०—बेश ।

वि०—परन्तु ई तँ एखन....

पं०—अवस्था देखि नहि भुकुआइ । ई अवच्छेदकता-प्रकारता आदि समस्त विषयमे निष्णात छथि । शंकर ! व्याप्तिक लक्षण बुझा दहुन ।

शं०—देखू, चिन्तामणिकार पहिने ई लक्षण कहैत छथि जे साध्याभाव वदवृत्तित्वम् । अर्थात् साध्यनिष्ठ प्रतियोगिता निरूपक जे अभाव तकरा अधिकरणमे हेतुक वृत्ति नहि भेनाइ सैह व्याप्ति थीक । एतबा त बुझिए गेल हैबैक ?

वि०—(कनेक अभ्यास करैत जकाँ)—अर्थं । हँ ।

श०—परञ्च ई सिद्धान्त लक्षण नहि । गंगेश उपाध्याय अन्तमे एहि लक्षण पर पहुँचैत छथि जे हेतु-व्यापकसाध्यसामानाधिकरण्यं व्याप्तिः । पूर्वोक्त परिभाषा ओर एहि परिभाषामे की अंतर छैक से बुझलिऐक ?

वि०—नाइ ।

श०—तखन चलू, बुझा दैत छी ।

वि०—(उठैत) आश्चर्य । हम मिथिलाक जेहन नाम सुनैत छलहुँ ताहूसँ अधिक बहराएल । मैथिल बालकक ई अपूर्व संस्कार । धन्य ई देश ।

पं०—शंकर ! हिनक शंका-समाधान कय पुनः अबिहुं' । (शंकर विद्यार्थीकेँ ल' क' जाइत छथि । पं० जी पुनः पूजामे लगैत छथि । थोड़ेक कालक अनन्तर हुनक स्त्री भवानीक प्रवेश ।)

स्त्री०—ऐ ! अभ्यागत जे ऐलाह अछि तनिका भोजन की करैबैन्ह ?

पं०—आइ भानस की भेल अछि ?

स्त्री०—साग भात भेल अछि । था डेढ़ेक चाउर घरमे छलैक तकर भात रन्हुलिऐक अछि और बाड़ी महँक पटुआक साग ।

पं०—तखन दही चूड़ा खोवा देबैन्हु ।

स्त्री०—परंतु घरमे ने दही अछि ने चूड़ा ।

पं०—तखन सोहारी छानि दियौन्ह ।

स्त्री०—परंतु चोकस कहाँ अछि ?

पं०—(चिन्तित मुद्रामे) तखन उपाय ? बाड़ीमेसँ किछु बहराएत ?

स्त्री०—थोड़ेक खम्हारु बहरा सकैत अछि । से कही त उखाड़ि क' सरि दिऐन्ह ।

पं०—परंतु खैताह कथीक संग ?

स्त्री०—नैवेद्यक हेतु थोड़ेक अक्षत छैक । तकरे पीसि कय सोहारी छानि दैत छिऐन्ह ।

पं०—(प्रसन्न होइत) घरक लज्जा अहाँ राखि लेल । गृहिणीकेँ एहने होमक चाही ।

स्त्री०—अपन गाय काल्हिसँ नहि दुहल गेल अछि । आधो सेर भ' जइतैक तएखन काज चलि जाइत ।

पं०—बेश । हम बुढ़ियाकेँ बजबा पठबैत छिऐक । अहाँ और वस्तुक ओरिआओन करहु' ।

(स्त्री जाइत छथिन्ह । शंकरक प्रवेश)

पं०—की शंकर ! सभटा बुझा देलहुन ?

शं०—हँ । आब शब्द खण्डमे किछु शंका छैन्ह से भोजनोत्तर बुझा देबैन्ह ।

पं०—हाँ, कनेक गोपिया समातकेँ त देखहीक । लोटा नेने जाह । दूध दुहा क' नेने आबह ।

(शंकर जाइत छथि । स्त्रीक प्रवेश)

स्त्री—(अत्यन्त प्रसन्न होइत) ऐ, दिन फिरि गेल ।

पं०—से की ?

स्त्री—घरमे अचक्के लक्ष्मी आबि गेलीह ।

पं०—से कोना ?

स्त्री—बाड़ीमे खम्हारु उखाड़ैत छलिऐक कि खन्तीसँ ठन्न द' बजलैक । माटि हटाक' देखैत छिऐक त कलशक कनखा ! भरि क' असर्फी छैक ।

पं०—वास्तवमे ?

स्त्री—हम फूसि कहब ? तेना क' गाड़ल छैक जे हाथसँ टकसौने नहि टसकैत छैक ।

पं०—अहाँ नीक जकाँ देखि लेलिऐक अछि ? सोने थिकैक ?

स्त्री—भला सोन नहि चिन्हबैक ? देखू, एकटा नेने आएल छी । (पं० जी हस्तगत कय देखैत छथि ।)

पं०—हूँ, स्वर्ण थिकैक । कतेक रासे हेतैक ?

स्त्री—आब सौंसे कलश बहार होइक तखन ने बुझिऐक ।

पं०—बेश, त जाउ । बहार कैने आउ । अपना बुतेँ हैत कि गोपियाकेँ आबय देबैक ?

स्त्री—भला कहू त ! एहनो एहन वस्तु लोक अनका देखबैत छैक ? हम अपनहि उखाड़ि लबैत छी । (झटकलि जाइ छथि)

पं०—(स्वगत) ई दैवी कृपा बूझि पड़ैत अछि । एखन अतिथि-सत्कारक हेतु घरमे एकटा कैंचा नहि छल । आब मर्यादा रहि गेल । अहा ! एहि दैवीकेँ

हम आइ धरि एकोटा आभूषण नहि देलिऐन्हि। परंतु तथापि कहियो मन छोट नहि कैलन्हि। एहि देवक गृहिणीकेँ भूषणक प्रयोजने की? ओ त स्वयं भूषण होइत छथि।

(शंकरक प्रवेश। खाली लोटा नेने।)

शं०—बाबूजी, दूध त नहि भेल। गोपियाकेँ जेठरैयत कामतपर ल' गेलथिन्ह अछि।

(स्त्रीक प्रवेश। कलश आनि क' राखि दैत छथिन्ह।)

स्त्री—एहिमे गनि क' असर्फी भरल छैक। कलश उठौने नहि उठैत छैक।

पं०—(विचार करैत) एहि स्वर्ण मुद्राक की होमक चाही?

स्त्री—सभसँ पहिने त हमरा घृत मङबा दिय' जे पाहुन लेल सोहारी छनाइन। (एकटा असर्फी दैत) शंकर, हे, ई लैह। दौड़ल मोदीक ओतय चलि जाह, एक सेर घृत....

पं०—थम्हू, थम्हू। ई मुद्रा एखन अनामति रहत। शंकर, ई लोटा बन्धक राखि कय घृत नेने आबह।

(शंकर जाइत छथि।)

स्त्री—(अप्रतिभ होइत) ओहि लोटामे शंकर पानि पिबैत छलाह। (कनेक संकुचित होइत) आब ओकर रखबाक प्रयोजने की?

पं०—(गम्भीर मुद्रामे) ई कलश नहि जानि ककर अरोहरि थिकैक। आनक संचित कैल द्रव्य हमरा लोकनि अपन काजमे लगाबी से उचित नहि। धर्मशास्त्रक सिद्धांत छैक जे एहन द्रव्य राजकोषमे समर्पित क' दिऐक। राजा ओकरा प्रजाक उपकारमे लगाबथि। (स्त्रीकेँ उदास होइत देखि) की, अहाँक मनमे विषाद त नहि होइत अछि?

स्त्री—नहि। जखन शास्त्रक एहने आज्ञा छैक तखन अनकर धन लय अधर्मक भागी के बनी?

पं०—(प्रसन्न होइत) आब हम निश्चिन्त भेलहुँ। कलशकेँ मुनि क' राखि दिऔक। ओकरा अनामति राजमे पठा देबैक।

(शंकर बाटीमे घृत ल' क' अबैत छथि।)

पं०—(स्त्रीकेँ) आब अहाँ चटपट सोहारी छानि लियग'। अतिथिकेँ भोजन करैबामे विलम्ब नहि होमक चाही। (स्त्री जाइत छथिन्ह।)

पं०—शंकर, काल्हि तोरा राज-सभामे जाए पड़तौह।

शं०—जे आज्ञा।

पं०—चलह, दलानपर। पाहुनकेँ देखिएनय'।

(दुहू गोटे जाइत छथि।)

तृतीय दृश्य

मिथिलेशक राजसभा—महाराज सिंहासनपर बैसल छथि। दरबार लागल छैन्हि। एक गायक तानपूरापर गबैत छथि।

(काफी)

धन्य ई मिथिलेशक दरबार।
लक्ष्मी तथा सरस्वती दुहू छथि जहँ एकाकार। धन्य०
जनिक विमल यशक विरुदावलि विदित सकल संसार।
वेद विहित शासन करैत छथि जे नृप विद्यागार। धन्य०
गो-ब्राह्मण-रक्षक दीनक पालक धर्मक अवतार।
करथि निरन्तर प्रजा वर्गकेँ धन-जन सौं उपकार। धन्य०
सदा सनातन रीति-नीति सौं पालथि शुचि आचार।
उचितक त्याग करथि नहि कहियो तजथि न कुल व्यवहार। धन्य०
पंडित गुणी विशिष्ट व्यक्तिकेँ करथि सदा सत्कार।
विद्वानक आदर करबामे जनिका हर्ष अपार। धन्य०
दानी एहन दैत के जगमे के अछि एहन उदार?
आर्त्त-दीनकेँ एना करैं अछि दोसर के उद्धार। धन्य०
कीर्त्ति-पताका होइछ जिनकर दिन दिन जग विस्तार।
युग-युग जीबथु अमर नाम कय सुखी रहथु सरकार। धन्य०

(संगीतक अनन्तर राजपंडित उठि कय)—श्रीमान्। एकटा नेना दरबारमे उपस्थित भेल छथि से किछु निवेदन करय चाहैत छथि।

महाराज—बेश।

(बालक शंकर सामने आबि कय अभिवादन करैत छथिन्ह और आगामे कलश राखि पत्र दैत छथिन्ह।)

मंत्री पत्र पढ़ि कहैत छथिन्ह—सरकार, सरिसवक एक ब्राह्मणक भूमिसँ एक कलश असर्फी बहराएल छन्हि तेँ राजकोषमे जमा करबाक हेतु पठौने छथि।

(दरबारमे)—साधु साधु ! धन्य ब्राह्मण ! ओ के थिकाह ?

महा०—(शंकरसँ) अहाँक नाम ?

शं०—शंकर।

महा०—किनकर बालक।

शं०—पं० भवनाथ मिश्रक।

राजपंडित—श्रीमान्। सम्प्रति ओहन विद्वान देश भरिमे केओ नहि अछि और संतोषी तेहन छथि जे सवा कट्ठा बाड़ी मात्र छैन्ह ताहीसँ निर्वाह करैत छथि। ओ ककरोसँ किछु नहि मँगैत छथिन्ह। ई अयाची मिश्रक नामसँ प्रसिद्ध छथि। सरकार त हुनकर नाम सुननहि हैवैन्ह।

महा०—हँ, हँ। वैह थिकाह? अहा! धन्य छथि। एहन विद्वानक पुण्य सँ ई मिथिला देश तीर्थ बनल अछि। मंत्री, कतेक स्वर्ण-मुद्रा छैक?

(मंत्रीक संकेतसँ दीवान जी आगाँ बढ़ि ओ कलश उझिलैत छथि तथा जल्दी-जल्दी असर्फीक थाक लगबैत गनैत छथि।) सरकार एक हजार आठ टा बड़का मोहर छैक।

महा०—(राज पंडितसँ) एहि द्रव्यक की होमक चाही?

राज पं०—कोनो लोकोपकारी कार्यमे लगाओल जाय। जाहिसँ ओहि ठामक जनताकेँ विशेष उपकार होइक।

महा०—हमर विचार जे ओहिठाम एक विद्यापीठ स्थापित कैल जाय जाहिमे विद्यार्थीगणकेँ निःशुल्क शिक्षा ओ भोजन भेटैन्ह। विद्यालय ओ सत्रमे और जे खर्च पड़तैक से राजसँ देल जैतैक।

दरबारी सभ—बहुत उत्तम विचार!

राज पं०—ई विद्यापीठ हुनकहि नामपर खोलल जाय—अयाची विद्यापीठ।

महा०—मंत्री! एकर प्रबंध शीघ्र होमक चाही।

मंत्री—जे आज्ञा।

महा०—बालक! अहाँ की पढ़ैत छी! एकटा श्लोक त सुनाउ।

शं०—सरकार, अपन बनाओल की अनकर?

महा०—(साश्चर्य) अहाँ एही अवस्थामे श्लोक-रचना करैत छी! बेश, त बना क' सुनाउ त एकटा।

शं०—बालोऽहं जगदानन्द! नमे बाला सरस्वती
अपूर्णे पञ्चमे वर्षे वर्णयामि जगत् त्रयम्।

महा०—(चकित होइत) वाह! की अपूर्व संस्कार! एहन बेनाकेँ पुरस्कार भेटक चाही।

राज पं०—अवश्य।

एक दरबारी—ई श्लोक हिनकर बनाओल कथमपि नहि भ' सकैत अछि। निश्चय केओ सिखा पढ़ा क' विदा कैलकैन्ह अछि।

दोसर दरबारी—यदि ई वास्तवमे श्लोक बनबैत छथि त एही ठाम समस्या-पूर्ति क' क' देखाबथु।

महा०—की औ बालक! अहाँ तत्काल समस्या पूर्ति क' सकैत छी?

शं०—सरकार, ऐखन परीक्षा ल' लेल जाय।

महा०—बेश, त कोनो समस्या दिऔन्ह।

(दुनू दरबारी आपसमे विचार कए)—हमरा लोकनि एकटा समस्या दैत छिऐन्ह—

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्

शं०—(तुरन्त)

चलितश्चकितश्छन्नः प्रयाणे तव भूपते
सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्

सकल दरबारी—वाह! वाह! वाह! की विलक्षण चमत्कार!

(महाराज मुग्ध भए अपन रत्नमाला उतारि बालकक गरमे पहिरा दैत छथिन्ह। दुष्ट दरबारी हाथ मलैत छथि।)

महा०—शंकर! अहाँक माता पिता धन्य छथि जे अहाँ सन बालक-रत्न भेटलैन्ह अछि। हम आशीर्वाद दैत छी जे अहाँ अपने पिता समान यशस्वी होउ और देशक गौरव बढ़ाउ।

(शंकर हाथ जोड़ि विनयपूर्वक अभिवादन करैत छथिन्ह।)

महा०—(राजपंडितसँ) हिनक पिता वस्तुतः एहि देशक रत्न थिकाह। हमरा अभिलाषा होइत अछि जे हुनकासँ

राज पं०—(सभय) परंतु श्रीमान्! ओ त' कतहु जाइ नहि छथि।

एक दरबारी—एँ! एतबा दर्प!

दोसर—एहन अभिमान!

महा०—हम स्वयं जा क' हुनक दर्शन करबैन्ह। जाहिठाम ओ सवा कट्ठा भूमि अछि से पृथ्वी स्वर्ग तुल्य थीक। मंत्री, हौदा कसबाउ।

राज पं० – ई विचार महाराजेकें हो !

सम्पूर्ण दरबार— महाराजक जय हो !

चतुर्थ दृश्य

(पं० अयाची मिश्रक घर। पंडित अयाची मिश्र कोनो प्राचीन ताल-पत्रमे लिखित ग्रन्थक मनन कय रहल छथि। आसपास बहुत रास पुस्तक धैल छैन्ह। स्त्री एक सीकीक डालीमे पिउर रखने टकुरी काटि रहल छथिन्ह।)

स्त्री – (टकुरी कटैत) एखन धरि शंकर ऐलाह नहि !

पं० – अबितहि हैताह।

स्त्री—द्रव्य ल' गेल छथि तँ अन्देशा होइछ।

पं०—एखन देशमे ततबा धर्मक लेश छैक। कोनो चिन्ता नहि।

(नेपथ्यमे घंटा ध्वनि)

स्त्री—बुझि पड़ैत अछि जेना हाथी आबि रहल हो।

पं०—हैं, प्राय: एही दिस आबि रहल अछि।

(शंकर अबैत छथि)

शं०—(पैर छुबि) बाबूजी, मिथिलेश स्वयं ऐलाह अछि।

पं०—ऐं ! मिथिलेश ? ओ किएक कष्ट कैलन्हि ? (हड़बड़ा क' उठैत छथि। स्त्रीकेँ)—ऐ ! झट द ई सभ समेटू। महाराज आबि रहल छथि। छोटकी चौकीपर नरका कुशासन बिछा दिऔन्ह। शंकर, पैर धोबक हेतु पीढ़ी पानि आनह।

(शंकर माथकेँ प्रणाम कय एक लोटा पानि, पीढ़ी तथा खड़ाम अनैत छथि। पंडिताइन पुस्तक सभकेँ यथास्थान राखि आसन लगबैत छथि।)

पं०—ऐं ! हम अरियाति अनै छिऐन्ह। अतिथिकेँ सत्कार कथी ल' क' करबैन्ह ?

स्त्री—घरमे जनउ सुपारी त अछि। परन्तु...

पं०—जलपानक आपइ कथी ल' क' करबैन्ह ? घरमे मखान हैत ?

स्त्री—चारि गोट रहैक से लक्ष्मी-पूजामे भ' गेलैक।

पं०—बाड़ीसँ किछु बहराएत ?

स्त्री—दू एकटा शरीफा पाकल होइ से सम्भव !

पं०—(प्रसन्न भय) बेस, त बाड़ी सराइमे जलपान पठा देब ! शंकर, तोहूँ जाह।

(स्त्री और शंकर दुनू भीतर जाइत छथि। पं० अयाची मिश्र महाराजकेँ बाहरसँ अरियाति अनैँ छथिन्ह।)

पं०—बैसल होयौ (हाथसँ लोटा खड़ाम पैर धोआबक हेतु उद्यत होइ छथिन्ह।)

महा०—(हाथसँ लोटा लैत) हाँ-हाँ ! ई की ! अपने श्रेष्ठ छिकहुँ। हम त अपनेक दर्शनक हेतु आएल छी।

पं०—हम त सरकारक एक साधारण प्रजा छिकहुँ।

महा०—जहाँ सन प्रजा जाहि देशमे रहथि से देश धन्य थीक।

पं०—और अपने सन सहृदय राजा जाहि राज्यमे रहथि से राज्यो धन्य थीक।

(दुहु गोटे बैसैत छथि।)

महा०—हम अपनेसँ किछु माङय आएल छी।

पं०—हम कोन योग्य छी ? तथापि जहाँ धरि साध्य हैत ताहिमे अन्यथा नहि करब।

महा०—हमरा किछु सेवा करबाक आज्ञा भेटो।

पं०—कोन सेवा ?

महा०—अपनेक नामसँ ई परगन्ना लिखि देबक चाहैत छी।

पं०—परगन्ना ल' क' हम की करब ? सवा कट्ठा बड़ीलहर अछि। ओहिमे के साग-पात बहराइत अछि ताहिसँ उदरपूर्ति भ' जाइत अछि। तखन बेसी भूमिक प्रयोजने की ?

महा०—तखन और जे इच्छा हो सैह आदेश कैल जाय।

पं०—महाराज ! हमर नाम थीक अयाची मिश्र। आइ धरि एहि जीवनमे ककरोसँ किछु याचना नहि कैल। साठि वर्ष एहि तरहेँ निमहि गेल। तखन आब थोड़ेक दिनक हेतु एहि संकल्पकेँ भंग क' दी, ई उचित नहि। अपनेक दानशीलता सँ लाभ उठाबक हेतु अनेको ब्राह्मण भेटि जैताह। हमर टेक आब टूटय नहि सैह प्रार्थना।

महा०—धन्य छिकहुँ अपने। एतबा दिनसँ हमर हाथ सर्वदा ऊपर रहैत आएल अछि। आइ हम अपनेक समक्ष नत भ' गेलहुँ।

पं०—ई अपनेक सौजन्य थीक।

(तावत शंकर एक सराइमे दू टा पाकल शरीफा नेने अबैत छथि ।)

पं०—मिथिलेश जानि क' कहबाक साहस त नहि होइत अछि । परन्तु, एखन अपने हमर अतिथि रूपमे छी । तें एतबा साहस करैत छी । (आगामे सराइ राखि दैत छथिन्ह ।)

महा०—ई अनुपम प्रसाद थीक । अमृत तुल्य । एकरा हम अवश्य ग्रहण करब । परन्तु एहि प्रसादकें हम सभ गोटे बाँटि क' खाएब, तें अपना संग नेने जाएब ।

(महाराज आदरपूर्वक शरीफाकें उठा लैत छथि ।)

शंकर—गाछमे बहुत रास फरल छैक । और नेने आउ ?

पं०—वाह ! एतेक रास पड़ि गेलाह, तथापि नेनमति नहि छुटलौह अछि ?

महा०—अपने त हमरासँ नहिए किछु मङलहुँ । आब हमही अपनेसँ किछु मङैत छी ।

पं०—मिथिलेश और हमरासँ माङथि ?

महा०—हँ । अपनेक बाड़ीक साग-पातक जे मूल्य अछि से हमर सम्पूर्ण रत्न-भंडारक नहि । हम अपनेसँ एह मङैत छी जे ओहि बाड़ीक थोड़ेक साग हमरा भेटय ।

पं०—शंकर !

(शंकर दौड़िक' जाइ छथि और एक चर्चरी साग तोड़िक' नेने अबैत छथि । महाराज आदरपूर्वक दोशालामे लपेटि लैत छथि । पं० जी भीतर जा क' सराइमे जनेउ सुपारी नेने अबैत छथिन्ह ।)

महा०—हम अपनेक दर्शनसँ कृतार्थ भेलहुँ ।

पं०—और अपनेक चरणसँ ई कुटी धन्य भ' गेल ।

(सभगोटे उठैत छथि ।)

पञ्चम दृश्य

(अयाची मिश्रक बाड़ी । शंकर तथा भवानी साग तोड़ैत छथि । पं० अयाची ओहि ठाम बान्हल धेनुक पीठपर हाथ फेरैत छथि और ओकरा मुँहमे सागक डाँट-पात दैत छथिन्ह ।)

शं०—बाबूजी ! हमरा जे पुरस्कार भेटल से त नहि देखल ?

(माला बहार कए देखबैत छथिन्ह ।)

पं०—ई रत्नक माला थिकैक । राजा महाराजक पहिरबाक वस्तु ।

स्त्री—(हाथमे माला लय) एकर कतेक मूल्य हैतैक ?

पं०—हमरा लोकनि की बुझबैक ? परन्तु लाख टकासँ कम त नहिए हैतैक ।

स्त्री—तखन त एहीसँ सभटा दुःख-दारिद्र्य पार ?

पं०—ताहिमे कोन सन्देह ? अहाँ भाग्यवती छी जे पुत्रक प्रथमे कमाइसँ जीवन भरिक कष्ट दूर भ' गेल ।

स्त्री—(एकाएक किछु स्मरण कए) अरे, ई त बेस मन पड़ल, नहि त भारी पाप लगैत !

पं०—से की ?

स्त्री—ई धन हम नहि राखि सकैत छी ।

पं०—से किऐक ?

स्त्री—जाहि दिन शंकरक जन्म भेल रहैन्ह तहिया चमैनिकें निछाउर देबाक हेतु घरमे किछु नहि रहय ।

पं०—तखन ?

स्त्री—तखन ओ करार कएल गेलैक जे हिनक पहिल कमाइ जे होइन्हि से हमरा द' देब ।

पं०—तखन ऐखन ओकरा बजा पठबिऔक ।

स्त्री—शंकर, जाह, मरनी मायकें बजा लबहोक ।

(शंकर दौड़ल जाइ छथि ।)

पं०—ई त बड़ रक्ष रहल जे अहाँकें समयपर मन पड़ि गेल । नहि त भारी प्रत्यवाय लगैत ।

स्त्री—अहाँ 'प्रथम कमाइ' शब्द जे कहलिऐक ताहिसँ मन पड़ि गेल । आब मरनी माय बेहाल भ' जाइति ।

(शंकरक संग मरनी मायक प्रवेश)

स्त्री—मरनी माय ! शंकरक निछाउर त तोरा बाँकिए छौह !

मरनी माय—की हैतैक मालकिनी ? कखन ई कमाय लगताह ...

स्त्री—हिनक पहिल कमाइ घरमे आबि गेल से लैह । (माला हाथमे दैत छथिन्ह) तोरा खपसँ आइ उद्धार भ' गेलहुँ ।

मरनी माय—ई लाल पिपर लग ल' क' हम की करब ? एहिसँ बरु दू पसेरी मड़ुए द' दितहुँ त...।

स्त्री --बताहि ! ई पेचलापर एक मोटा रुपैया भ' जैतोह ।

म० माय--ओतेक रुपैया ल' क' हम की करब ?

स्त्री --और नहि किछु त एकटा पोखरिए खुना लिहँ'। नाम त रहि जैतोह ।

म० माय--हँ, मलकीनी, ई त बेस कहल । अहीं सभक प्रसादें किछु हमरो धर्म भ' जाएत । भगवान एहिने बेटा सभकेँ देथुन्ह ।

छठम दृश्य

(भवानी मिश्रक डीह । तत्समीप चमैनिया पोखरिक भीड़क किछु अंश।)

एक ब्राह्मण ओहि डीहपर आबि भक्तिपूर्वक ओहिठाम माटि लए माथमे लगबैत छथि । तदनन्तर हाथ जोड़ि वन्दना करैत छथि--

हे डीह ! अमर कीर्त्तिक निधान !
जकरा कण-कणमे स्वाभिमान
थिक विप्र अयाचिक वर्त्तमान
से माटि थीक चन्दन समान

खाबा कट्ठा बाड़ीक साग
रखने छल जे ब्राह्मणक पाग
तकरा सन बाड़ी कोन अन्य ?
सन्तोषमयी तोँ भूमि धन्य !

हे धन्य धन्य प्राचीन डीह ।
तोँ पूजनीय धरणी थिकीह ।
जकरा पर कैलन्हि नाम अमर,
भवनाथ, भवानी ओ शंकर ।

पोखरि चमैनिया विद्यमान
एखनो करैत अछि कीर्त्तिगान
भूदेव तथा भूपति देशक
होइत छलाह कहेन महान !

प्रकटाउ भवानी मिश्र फेरि
आनू शंकर केँ एक बेरि
गृहिणी पुनि होथि भवानी सन
आदर्श भेल जिनकर जीवन !

हे डीह ! सत्वगुण मूर्त्तिमान
पदरज जकरा मे विद्यमान
होएत ब्रह्मपिक ठाम ठाम
हे धूलि ! अहाँ केँ अछि प्रणाम !

(पटाक्षेप)

□

मंडन मिश्र

दृश्य १

[मंडन मिश्रक इनार। पनिसालाक दृश्य। एकटा तरुणी पनिभरनी लाल नुआ लहठी पहिरने पानि भरि रहल अछि। एकटा युवा संन्यासीक प्रवेश। कौपीन पहिरने, माथ मुँड़ल, एक हाथमे यष्टि, दोसरा हाथमे कमण्डलु, पैरमे खड़ाम, ललाटपर भस्म-रेखा।]

संन्यासी (पनिभरनीसँ) —पं० मंडन मिश्रक घर जनैत छिऐन्हि ?

पनिभरनी —किऐक ने जनबन्हि ? हुनके त इनार छैन्हि। एहिठाम पनिसाला चलि रहल छैन्हि। हम हुनके पनिभरनी छिऐन्ह।

सं० —घर एहिठामसँ कतेक दूर छैन्ह ?

प० —(विहुँसैत) एँह पुछारी कोन जे घर देखैत छिऐक से हुनके चिन्हैन्ह।

सं० —ओहिठाम त दू टा घर देखाइ पड़ैत अछि।

प० —तखन सुनू। जाहि दरबाजापर अहाँकेँ सुग्गाक पिजरा टाँगल भेटय और सुग्गाक मुँहसँ 'स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणम्' सुनाइ पड़य सैह बूझब जे पं० जीक घर थिकैन्ह।

सं० —(चकित होइत) ऐँ! सुग्गाक मुँहसँ 'स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणम्!'

प० —एहिमे आश्चर्य कोन ? पं० जीक ओहिठाम रातिदिन मीमांसाक चर्चा होइत रहै छैन्ह। स्वतः प्रामाण्यवाद ओ परतः प्रामाण्यवादक ध्वनिसँ दलान गुँजैत रहै छैन्ह। तखन सुग्गाक मुँहसँ ई सभ शब्द नहि बहरैतैक त की बहरैतैक ?

सं० —(और बेसी चकित होइत) बँप ऐ! अहाँ खबासिन भ' क' 'मीमांसा'क नाम कोना जनलिऐक ? स्वतः प्रामाण्यवाद त विद्वान लोकनिक विषय थीक। ई सभ ज्ञान अहाँकेँ कोना प्राप्त भेल ?

प० —औ संन्यासीजी! अहाँकेँ एतेक आश्चर्य किएक होइत अछि ? ई मिथिला देश थिकैक। एहिठामक साधारणो हरवाह-चरवाह शास्त्रक विषय बुझैत अछि। और हम त मंडन मिश्रक खबासिन थिकिऐन्हु। हुनके अन्न-पानि देहमे लागल अछि। तखन एतबो किएक ने बुझबैक ?

सं० —धन्य ई मिथिला देश जतेक पनिभरनीओ एतेक वाक्चतुरा होइ छथि!

प० —अहाँ कोन देशसँ आएल छी ?

सं० —हम दूर दक्षिण देशसँ आएल छी।

प० —तखन हाथ-पैर धोउ। जल पीबू।

सं० —(स्वगत) एहन सौजन्य मिथिलेमे हो। जखन खबासिनक ई हाल तखन तोआसिन नहि जानि केहन होइथिन्ह! (प्रकट) की ऐ! अहाँक एहन उच्च संस्कार कोना बनल ? बूझि पड़ै अछि अहाँक मलकिनी बड़ उच्च विचारक छथि।

प० —किएक ने रहतीह ? सम्पूर्ण वेद-पुराण पढ़ने छैन्ह, सभ शास्त्रमे पारंगता छथि, छौओ दर्शन जिह्वापर रहैत छैन्ह।

सं० —अयँ, एहन शिक्षिता!

प० —अहाँ शिक्षिता कहै छी ? ओ साक्षात् सरस्वतीक अवतार छथि। नामो त सरस्वतीए छैन्ह। यथा नाम तथा गुण।

सं० —अहा! धन्य परिवार!

प० —पहिने ई बदामक ठँकुरी ओ आद-नोन खा लिय'। तखन जल पिउब। एहिठामक यैह व्यवहार छैक।

सं० —वाह रे आतिथ्य-सत्कार! घाट-बाटपर एहन सुन्दर व्यवस्था! एहि पुन-भूमि तिरहुतक जेहन नाम सुनैत छलहुँ ताहूसँ बाढ़ि क' देखबामे आएल। (प्रकाश्यतः) शुभे! हमरा खान-पानक विशेष नियम अछि। अतएव क्षमा करू।

प० —तखन अहाँ दलानपर चलू। हम मालिककेँ खबरि दैत छिएन्हु।

(प्रस्थान)

सं० —धन्य ई मिथिलाक माटि जतै कण-कणमे सरस्वतीक वास छैन्ह। एहि तीर्थभूमिमे आबि हमर जन्म सफल भ' गेल।

दृश्य—२

[पण्डित मंडन मिश्रक दलान। पिजड़ामे सुग्गा टाङल। मंडन मिश्र आसनपर बैसल पूजा कय रहल छथि। खवासिन आबि कहै छैन्ह—'मालिक, एकटा दूर देशक संन्यासी आएल छथि।' मंडन मिश्रक संकेतपर ओ एकटा मृगचर्म आनि ओहिठाम ओछा दैत छैन्ह।]

(शंकराचार्यक प्रवेश)

शं०—(अभिवादन करैत) हमरा लोक शंकराचार्य कहै अछि। अपनेक नाम सुनि हम सुदूर दक्षिण देशसँ अपनेक द्वारपर उपस्थित भेल छी। आइ अपनेक दर्शन पाबि हम कृतार्थ भ' गेलहुँ।

मं०—हमर अहोभाग्य जे साक्षात् शंकरक अवतार शंकराचार्य हमरा दर्शन देबक हेतु आबि गेल छथि। एहिसँ बढ़ि सौभाग्य और की भ' सकैत अछि।

शं०—हम अपनेसँ एक भिक्षा माँगय आएल छी।

मं०—की आदेश? कहल जाओ।

शं०—अपनेकेँ हम गुरुवत् बुझैत छी। आदेश नहि, प्रार्थना कय सकै छी।

मं०—'सर्वस्याभ्यागतो गुरुः'। अतिथि देवता सभक श्रेष्ठ होइ छथि। तैयार जे वयसमे लघु रहितहुँ अपने विद्यामे बृहस्पति छी!

शं०—हम एक विशेष अभिप्रायसँ अपनेक सेवामे उपस्थित भेल छी।

मं०—कहल जाओ।

शं०—बौद्धभिक्षुगण जनताकेँ नास्तिक बना रहल छथि। लोककेँ वेदसँ आस्था उठल जा रहल छैक।

मं०—मिथिलामे लोककेँ वेदमे अत्यन्त निष्ठा छैक। एहिठाम नास्तिकताक लेश मात्र नहि।

शं०—परंच संपूर्ण देशमे आस्तिकताक मर्यादा स्थापित करबाक हेतु हमरा लोकनिकेँ संगठित होमय पड़त। हमर विचार अछि जे कर्मकाण्डक विभिन्नता हमरा लोकनिकेँ अनेक दलमे विभाजित कय देने अछि। यदि हमरा लोकनि वेदान्तक आधारपर देशकेँ एकताक सूत्रमे बान्हि सकी त बहुत उत्तम हो।

मं०—हूँ, ई त विचारणीय विषय थीक।

शं०—एही विचार-विमर्श करबाक हेतु हम एतेक दूरसँ आएल छी। कोनो जय-पराजयवला शास्त्रार्थ नहि चाहैत छी।

मं०—जल्प ओ वितण्डा त वाक्-विनोदक वस्तु थिकैक। गम्भीर समस्याक समाधान वादे द्वारा होमक चाही। 'वादे वादे जायते तत्त्वबोधः।'

शं०—बस, बस, हम एहे चाहैत छी। सम्प्रति देशमे अपनहि विद्वानक मणिमुकुट थिकहुँ। अपनेसँ बढ़ि क' एहि महत्त्वपूर्ण विषयक विवेचना के क' सकै अछि?

मं०—परन्तु तार्किक विवेचनमे एकटा मध्यस्थक रहब आवश्यक होइ छैक जे निष्पक्ष दृष्टिसँ दुहू पक्षक विचार सुनि निर्णय करय।

शं०—हमरा अपनेक बीचमे मध्यस्थक प्रयोजन नहि पड़त। तथापि यदि अपनेक अनुमति हो त हम एक निवेदन करी।

मं०—कहू।

शं०—हमरा ज्ञात भेल अछि जे अपनेक पत्नी साक्षात् सरस्वती स्वरूपा थिकीह। एहन विदुषी घरमे अछैत मध्यस्थक खोजमे दूर जैबाक कोन प्रयोजन? 'अर्के चेन्मधु विन्देत किमर्थं पर्वतं व्रजेत्।'

मं०—बेश, हम हुनका क' पुछैत छिऐन्ह। (नेपथ्य दिस) ऐ! कनेक एम्हर त आएब!

(सरस्वतीक प्रवेश)

शं०—(अभिवादन करैत) अपनेसँ एकटा प्रार्थना अछि। हमरा लोकनि किछु शास्त्र-चर्चा करय चाहैत छी। अपने मध्यस्थाक आसन ग्रहण कैल जाय।

सरस्वती—बेश! परंच हमर प्रस्ताव होइछ जे अहाँ लोकनि पहिने भोजन क' लेल जाउ। तखन सुभ्यस्त भ' शास्त्र-चर्चा करै आएब। हमहूँ गृहकार्यसँ निश्चिन्त भय अहाँ दुनू गोटाक लग बैसि सकब।

शं०—जेहन अपनेक आज्ञा हो।

स०—तखन चलै चलू।

(सभ गोटाक प्रस्थान।)

दृश्य—३

मंडन ओ शंकर सोझा-सोझी छोट-छोट चौकीपर बैसल छथि। बीचमे सरस्वती एक ऊँच सिंहासनपर आसीन छथि। हुनका हाथमे दू टा माला छैन्ह। ओ दुहूकेँ संबोधित कय कहै छथिन्ह—देखू, अहाँ दुनू गोटाकेँ हम एक-एक टा माला पहिरा दैत छी। जिनकर पक्ष न्यून हैतैन्ह तिनकर माला मौलि जैतैन्ह।]

शं० —अहा ! तत्वविचारक एहन चमत्कार मिथिलेमे दृष्टिगोचर होइछ।

मं० —बेस, त अहाँ प्रारम्भ करू।

शं०—प्रारम्भ करबासँ पूर्व हमर एकटा प्रार्थना।

मं०—से की ?

शं०—यदि कर्मकाण्डक श्रेष्ठता सिद्ध भ' जाय त हमहुँ गृहस्थाश्रममे प्रवेश क' जाएब। यदि ज्ञानकांडक श्रेष्ठता सिद्ध भ' जाय त अपनहुँ संन्यास ग्रहण करी। (मंडन मिश्र सरस्वती दिस तकै छथि। सरस्वती संकेतसँ स्वीकृति द' दैत छथिन्ह।)

मं०—बेस, हमरा स्वीकार अछि। एवमस्तु। अहाँ पूर्वपक्ष करू।

शं०—हमर पक्ष जे 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' एहि अद्वैतक ज्ञान परम कल्याणक साधक थीक। कर्मकांडक उपासक-उपास्य भाव द्वैतपर आधारित थीक, जे पारमार्थिक सत्य नहि।

मं०—अहाँक जे प्रतिज्ञा अछि तकर हेतु दिय'।

सर०—हेत्वाभास निग्रहस्थानसँ रहित पंचावयव-वाक्य पुरःसर दुहू गोटा क्रमशः अपना-अपना पक्षक प्रतिपादन करैत जाउ।

मं०—बेस, त सुनल जाओ।

सर० —ऐ खबासिन ! बाहरसँ पर्दा खसा दिऔक।

(खबासिन पर्दा खसबैत छथि।)

खबासिन —(पर्दासँ बाहर आबिक') बस, भ' गेल। आब चलल धर्म जिज्ञासा, ब्रह्म-जिज्ञासा।

(मंडन मिश्रक हरबाह हर नेने अबै छथि।)

हरबाह—ऐ बुधुआनि ! मालिक की करै छथि ?

खबा०—एकटा बड़का पंडित एलाह अछि। हुनके संग शास्त्र-चर्चामे लागल छथि।

हर० —तखन त हुनकासँ एखन भेंट नहिए हैत। आब मलकीनिए हिसाब क' देतीह।

ख०—मलकीनिए कोन कम छथि ? ओहो शास्त्रार्थमे बैसलि छथि। अपितु पंचक काज क' रहल छथि।

हर० —तखन त हुनको सँ भेंट हैब दुर्लभ।

ख० —एही डरें त हमरा बाहर ठाढ़ क' देलन्हि अछि जे केओ भीतर आबि क' बाधा नहि दैन्ह।

हर० —तखन हमरा बोनि के देत ?

ख०—हम देब। मलकीनी हमरा सभटा भार सौंपि देने छथि। चलू, बोनि जोखि दैत छी।

ह०—एखन त अहीं घरक मालिक भेल छी।

ख०—से त सत्ते। एखन हमरेपर सभटा अछि। आब जनै छी ई शास्त्रार्थ कतेक दिन धरि चलै अछि।

ह० —कोन विषयपर शास्त्रार्थ चलै छैन्ह ?

ख०—मीमांसा ओ वेदान्तपर। कर्मकांड ओ ज्ञानकांडपर। गृहस्थाश्रम ओ संन्यासपर।

ह०—तखन त जल्दी फरिछायबला नहि छैन्ह।

ख०—ताहिमे कोन सन्देह ? दुहू त दिग्गजे छथि। संभव जे कइएक दिन लागि जाइन्ह।

ह०—तखन त किछु दिन अहींक राज चलत। देखू, हमर मलकीनी बड़ उदार छथि। तौलसँ किछु बेसिए दैत छथि। अहाँ कंजूसी नहि करब।

ख०—मलकीनीक वस्तु छैन्ह। जकरा जतेक चाहथि द' सकैत छथिन्ह परन्तु हमरा त से अधिकार नहि अछि। तखन तुलादंडसँ जतबा अहाँक प्राप्य हैत से अवश्ये भेटत। हम एको दाना नहि कटब।

ह०—हम केवल परिहास कैने छलहुँ। अन्यायक अंश ल' क' के माथपर पाप चढ़ाओत ?

ख०—बेस, चलू। हम अहाँक बोनि तौलि दैत छी।

(दुहूक प्रस्थान)

दृश्य – ४

[मंडन, शंकर ओ भारती बैसल छथि। मंडन मिश्रक माला मौलल छैन्ह। सरस्वती मध्यस्थाक आसनसँ निर्णय सुनबैत छथिन्ह—अपने दुहू गोटा बाइस दिन पर्यन्त शास्त्र-चर्चा कैल। बहुतो विषयक गंभीर विवेचन भेल। दुहू पक्षक युक्ति हम ध्यानपूर्वक सुनल। आब हमर निर्णय एहि होइछ जे शंकर भगवत्पादक वेदान्त-पक्ष

समीचीन छैन्ह । (माला दिस ताकि) माला सेहो एहि विषयक प्रमाण दए रहल अछि ।

मं०—देवि ! हमहुँ अहाँक निर्णयकेँ शिरोधार्य करै छी ।

शं०—धन्य देवि ! अहाँक ई न्याय इतिहासमे अमर रहत । विद्वत्ता ओ निष्पक्षताक एहन सुन्दर दृष्टान्त विश्वमे भेटब दुर्लभ । (मंडन मिश्र दिस ताकि) और अपनहुँ जेहन उदारताक परिचय देल अछि से आदर्श थीक । अपने दुहू गोटा धन्य थिकहुँ ।

मं०—आब हमरा की आज्ञा होइत अछि ?

शं०—हमर प्रार्थना स्वीकार हो । अपने संन्यास-धर्ममे दीक्षित भय वेदान्तक प्रचारमे सहायक बनल जाय ।

स०—संन्यासीजी, थम्हू । एखन अहाँ केवल आधा अंगपर विजय प्राप्त कैने छी । हिनक अर्द्धांगिनी हम त एखन वर्तमाने छिऐन्ह । अहाँ हमरासँ शास्त्रार्थ करू । पहिने हमरा परास्त क' लिय' तखन हिनका संन्यासी बनैबैन्ह ।

शं०—(किछु कुण्ठित होइत) परन्तु…

स०—(विहुँसैत) परन्तु की ? स्त्री सँ मल्ल-युद्ध करबामे पुरुषकेँ हीनता बूझि पड़ै छैन्ह । किन्तु शास्त्र-युद्धमे त कोनो दोष नहि । वैदिको युगमे गार्गी याज्ञवल्क्यसँ शास्त्रार्थ कैने रहथि ।

शं०—से त अवश्य । परञ्च –

स०—परंच किछु नहि । अहाँ प्रश्न करू ।

शं०—देवि ! ई असंगत हैत । अहीं प्रश्न करी से उचित ।

स०—बेस, तखन लिय' । अहाँक ब्रह्म त निर्विकार छथि । तखन सृष्टि कोना करै छथि ?

शं०—सृष्टि केवल मायाक खेल अछि । ब्रह्म अपना अद्भुत शक्तिसँ ई सृष्टिक लीला

स०—अहाँकेँ सृष्टिक प्रक्रिया बूझल अछि ? (शंकर विचारय लगैत छथि) बिना बीजक विकार भेने सृष्टि भ' सकै छैक ?

शं०—कनेक बुझा क' कहू ।

स०—बिना बीजक रूपान्तर भेने अंकुरक सृष्टि भ' सकै छैक ? बिना धातुक परिणति भेने गर्भाधान भ' सकै छैक ?

(शंकर हुनक मुँह तकैत चुप्प रहि जाइत छथि ।)

स०—शुक्र-शोणितक संयोगसँ कोना सृष्टि होइ छैक से अहाँकेँ बूझल अछि ?

शं०—देवि ! क्षमा करब । हमरा एहि विषयक पूर्ण ज्ञान नहि अछि ।

स०—तखन पहिने जनन-विज्ञानक सम्यक् ज्ञान प्राप्त क' क' आउ । तखन हमरासँ शास्त्रार्थ करब ।

शं०—देवि ! हम अहाँक विलक्षण प्रतिभा ओ चातुर्यक लोहा मानि लेल । हम अपन पराजय स्वीकार करै छी । जनन-प्रक्रियाक पूर्ण अध्ययन कैलाक उपरान्त अहाँक सेवामे पुनः उपस्थित हैब । एखन आज्ञा भेटो ।

(दुहू गोटा केँ अभिवादन कय प्रस्थान करै छथि ।)

मं०—देवि ! हमरा त प्रव्रज्या लेबाक मन छल । अहाँ ताहिमे बाधिका किऐक भेलहुँ ?

स०—एखन तकर समय नहि आयल अछि । किछु दिन और गार्हस्थ्य धर्मक पालन क' लिय' । तकरा उपरान्त त मठ ओ वैराग्य छैहे ।

दृश्य—५

[सरस्वती, शंकर ओ मंडनमिश्रक प्रवेश]

सरस्वती—संन्यासी जी, अहाँ प्रतिज्ञानुसार आबि गेलहुँ । सात वर्षक उपरान्त अहाँकेँ पुनः देखि बड़ प्रसन्नता भेल । अहाँक उत्तरसँ हम संतुष्ट छी । आब अहाँक अभीष्ट सिद्ध हैत । (स्वामीसँ) आब हम वचन-बद्ध छी । आब संन्यासीक वेष धारण करी से उचित ।

मं०—अवश्य (भीतर जाइत छथि ।)

शं०—देवि ! अपने धन्य थिकहुँ । धन्य अपनेक त्याग ! एहने महिलाक माहात्म्यसँ मिथिलाक माटि महिमामयी मानल जाइत छथि ।

स०—संन्यासी जी, हम त केवल अपन कर्तव्यक पालन कैल अछि । कंजी की कैल अछि ?

(मंडन मिश्र संन्यासीक वेषमे आबि उपस्थित होइत छथि । गेरुआ वस्त्र पहिरने हाथमे कमंडलु नेने ।)

सर०—स्वामी ! आब अहाँ 'स्वामी' सँ 'स्वामीजी' बनि गेलहुँ । दीक्षाक पश्चात् सेब । तावत् भिक्षा हमरासँ ल' लिय' । (कान सँ कर्णफूल उतारि) ई प्रथम भिक्षा स्वीकार हो । कोनो मठ वा विद्यालयमे ई धन लगा देबैक ।

(मंडन मिश्र सादर ग्रहण करैत छथि ।)

शं० — आब अनेक नव नामकरण हो से उचित । देवीजी ! अपनहि एकटा उपयुक्त नाम कीछि देल जाइन्ह ।

स० — हिनका देवता ओ ईश्वर दुहुमे अगाध भक्ति छैन्ह । तें हमरा जनैत सुरेश्वराचार्य नाम उपयुक्त हैतैन्ह ।

शं० — बड़ सुन्दर ।

स० — स्वामीजी ! आब अहाँ हिनक संग घूमि ब्रह्मविद्याक प्रचार करू । बौद्ध भिक्षुगण वेदक मूलोच्छेद कए रहल छथि । अहाँ लोकनि देशमे पुनः आस्तिकताक संस्थापन करू । अहाँ दुनू गोटाक सहयोग मणि-कांचन योग थीक । ई योग देशक हेतु कल्याणकारी हो ।

शं० — भगवति ! अहाँक वरदान सफल हो । हम जाहि भिक्षाक हेतु एतेक दूर आएल छलहुँ से भेटि गेल । आइ हमरा जीवनक सभसँ पैघ मनोरथ पूर्ण भेल ! धन्य अहाँ सन स्त्री ! धन्य हिनका सन स्वामी ! ! ओ धन्य धन्य मिथिला देश !!! जतै एहन-एहन आदर्श-दंपति होइत छथि ।

(नेपथ्य संगीत)

धन्य ई पावन मिथिला देश ।
विदुषी जहाँ सरस्वती सन और मंडन सदृश द्विजेश ।
महिमा जिनकर गाबि थकै छथि, स्वयं शारदा शेष । धन्य०

(पटाक्षेप) ☐

एहि बाटे अबै छथि सुरसरि धार

(१)

आइसँ पचास वर्षक बाद। सौराष्ट्रमे सामुदायिक विवाह यज्ञ भ' रहल अछि। समावर्त्तन भोजक अनन्तर पंचमन्दिरक प्रांगणमे सभा बैसल अछि। असंख्य नरनारी समवेत छथि। एक वृद्ध सौराष्ट्रक इतिहास सुना रहल छथि—
"'एहि ठामसँ ५० वर्ष पहिने एहि सभा गाछीमे बरहट्टा लगैत छल। हजारोक हाक बाजल जाइत छल।' कन्यादान'क अर्थ भ' गेल छल 'बलिदान', जाहिमे बकरा बनै छलाह कन्याक पिता। ...परन्तु एक दिन शोणितक घट भरि गेलैक और अभिनव सीता प्रकट भेलीह। मिथिलाक नारी-समाजमे नव चेतना आबि गेलैन्ह। ओ गंगाक लहरि जकाँ बढ़लीह और ओहि लहरिमे समस्त घटक पंजियार ओ तिलकग्राही वर अपना बापक समेत भसिया क' विलीन भ' गेलाह। और ओहि कलंकके धो पोछि क' सौराष्ट्रक ई पुण्यभूमि यज्ञस्थली बनि गेल छथि, जहाँ प्रतिवर्ष विवाह यज्ञक समारोह होइत अछि। एहि तीर्थस्थानमे जे ई पाँच टा स्वर्णमन्दिर चमकि रहल अछि ताहिमे प्रत्येकक अपन इतिहास छैक ..."

ई सभ परिवर्तन कोना भेलैक? देखू, अतीतक चलचित्र देखाओल जा रहल अछि।

(२)

प्रथम रील चलल। १९६१। सौराठ सभा जमकल अछि। बड़क गाछतर वरक मेला लागल अछि। हजारो घटकजी ओछाओल अछि, जाहिपर हजारो बाप अपना-अपना बालकके ओड़ा पहिरा कए बैसौने छथि। लाल पीयर धोती, रेशमी चादर ओ कुर्त्ता, सूट ओ टाइ, सभ प्रकारक वेषभूषासँ सुसज्जित 'माल' विक्रयार्थ प्रस्तुत अछि। सभठाम एकेटा प्रश्न चलि रहल अछि—'कै हजार?' कुसियारक पुर्जी जकाँ सिद्धान्तक पुर्जी कटा रहल अछि। कन्यागत लोकनि तहिना गहुकी नजरिसँ तजवीज करैत चलै छथि जेना सोनपुरक हाटमे आएल होथि। घटक लोकनि घट जकाँ मुँह बौने छथि।

एहि बीचमे एक बड़का पिहकारी उठल। की बात छैक? एकटा नीक घरक स्त्री अपना पतिक संग एहि सभामे पदार्पण कैलन्हि अछि। चारूकातसँ

ठोका-टिप्पणीक बौछार भय रहल छल—'बाप रौ बाप! एहन अजगुत बात? जे कहियो ने भेल छल। आइ धरि सौराठ सभामे स्त्रीक पैर नहि पड़ल छल। ई के थिकीह? की करय आइलि छथि? एहिठाम कि कोनो तमाशा छैक?.... की चाही छथि?— बन्धुगण! हम अपने लोकनि सभसँ आँचर पसारि एक भिक्षा माँगि रहल छी।'

...अरे! ई त तिलक दहेजपर लेक्चर झाड़य आएल छथि। बह! हिनकर मुँह देखि क' लोक कन्या छोड़ि देत। ई कसि क' पिहकारी! हा हा हा हा.. ही ही ही ही.. हु हु हु हु..

महिलाक आँखिमे नोर भरि ऐलैन्ह। एक बुन्द टप द' पृथ्वीपर खसलैन्ह। रील खतम।

वृद्ध बजलाह—सभ नोरक ओ प्रथम बिन्दु क्रान्तिक प्रथम चिनगी छल! जाहि ठाम ओ खसल ताहि ठाम एकटा मन्दिर बनि गेल। ई जे 'अश्रुमोचिनी' भगवतीक मंदिर देखैत छिऐन्ह से तकरे स्मारक थीक।

(३)

दोसर रील चलल। १९६२। एहि बेर सौराठ सभामे एक युवक प्रगतिशील नारी आन्दोलन करबाक हेतु तैयार भ' क' आइलि छथि। ओ लोकनि नारा लगा रहल छथि 'बिकी बला वर, जाथु अपन घर। जे मँगता हजार, से रहता कुमार।....जे गनताह, से कनताह। घटक पंजियार, होउ होशियार। आब नहि चलत ई रोजगार।'

ओम्हर पण्डित समाजमे घोंघाउज शुरू होइछ—'एहि ठाम स्त्रीगणक कोन काज? ई लोकनि अपन-अपन चकमककी देखाबय आएल छथि। भला, स्त्रीगणके पुरुषक बातमे दखल देबाक कोन प्रयोजन? जाथु, अपना घरक काज देखथु। भिनसार नीपथु। चूल्हि फुकथु। गोसाउनिक पूजा करथु। नेनाके खेलाबथु। सनचन ठौंठ छैन त मलार गाबथुन'। एना थिकरै फिरैत छथि?'

बरहट्टामे खड़भड़ मचि गेल 'हम सभ दस हजार लेब वा बीस हजार लेब। ताहिसँ हिनका कोन मतलब? गहकीके घेघ, सौदागरके बेथा। इहो लोकनि त बेटा जनमैबे करतीह। तखन हँसौथि क' सिहथि। एखनेसँ अपना भभ्भनक फाँसी किएक मारै छथि? ई सभ गृहलक्ष्मी नहि, दरिद्रा छथि। ने अपने खेतीह, ने अनका लेबय देथिन्ह। इहाबांथिनी महिलाम !.. है, देखहोक। एहने बहकि चलि अबै छोह। ई सभ सत्याग्रह करति की? देखहोक, धरना

देमय लगलैक। एक, दू, तीन, चारि...ई त हाँजक हाँज गोहि जकाँ पड़ि रहलैक। जेना बाबाक धाममे पैटकुनियाँ देमय आइलि हो।'

आब बोच बाबू दलाक मोटरी नेने कोम्हर द' क' निकसलाह ? चारुकात बाट छेकने छैन्हि, बोच बाबू भारी अवग्रहमे पड़ल छथि। ने लैत बनै छैन्हि, ने छोड़ैत। हे लिय'। आश्चर्य ! बोच बाबू ढाका फोरि रहल छथिन्ह। सत्याग्रह दलक नायिका हुनका माथमे रोड़ीक तिलक लगा रहल छथिन्ह।... परन्तु ई की ? फट् ! दलनायिकाक माथपर केओ रोड़ा फेकलकन्हि। धीरज सिन्दूर जकाँ रक्तक धार चूबय लगलैन्ह। पैह, टप्प द' एक बुन्द भूमिपर खसल। रील खतम।

वृद्ध बजलाह—ई क्रान्तिक दोसर चिनगी छल। जाहिठाम ओ रक्तबिन्दु खसल, ताहिठाम एकटा दोसर मंदिर बनि गेल। ई जे 'छिन्नमस्ता' भगवतीक मंदिर देखै छी से तकरे स्मारक थीक।

(४)

आब तेसर रील चलल। १९६३। एहि बेर झुंडक झुंड शिक्षिता नवयुवती हाथमे पताका लय घुमि रहल छथि। गौरी जकाँ प्रण कैने — हरब तिलक ने त रहब कुमारि। पै नहि करताह दहेजक माँग, सैह भरताह कन्याक माँग। तिलक करू दूर, तखन दिय' सिन्दूर।

सभागाछीमे खलबली मचि गेल। कुमारि सभ लाज धाखकेँ घोरि क' पीबि गेल। विवाहक हेतु षड्यन्त्र अछि। ताहि दिनक अमल रहितैक त गोटेक राजा एक चुटकी सिन्दूर छीटि क' सभकेँ रनिवासमे बन्द क' लितैन्ह। परन्तु आब त केओ तेहन पुरुखे नहि। हे हरिसिंह देव ! हे महादेव झा ! अहाँ लोकनि कतय छी ?

'हौ यार। तों जे कहह, मुदा ई नवयौवनाक फौज नगौं छेंक धरि बैस गनगर ...की कहै छह ? मदतुरिया सभ कंचनसँ बेसी कामिनीकेँ बुझैत छथि। दहेजसँ गुणकेँ अधिक महत्व दैत छथि। कन्याक तेजीसँ वरक भावमे मन्दी आबि गेलैन्ह। ओ बिना दामे कन्याक गुलाम बनि रहल छथि। हे देखह, एकटा वर छान-पगहा तोड़ि ओहि स्वयंवराक दलमे जा मिलल। पैह लैह ! दोसर, तेसर, चारिम ...कहाँ धरि गनबह ? सभ वर कबइ माछ जकाँ प्रेमपाश जालमे फँसल जा रहल छथि। आब बाप गजिरा लिया क' रखने रहथुन्ह। देखह, ओहि वरक गरमे एक कन्या माला द' रहल छथिन्ह। नवयौवना सभ आरती कय रहल छथिन्ह। तरुणी सभ शंख फूकि रहल अछि।' रील खतम।

वृद्ध बजलाह- जहाँ ओ शंख फूकल गेल तहाँ तेसर मंदिर बनि गेल। अहाँ जे 'तिलकासुरमर्दिनी'क मंदिर देखैत छी से तकरे स्मारक थीक।

(५)

चारिम रील। १९६४। एहि बेरक क्रान्ति लुत्ती नहि, दावानल थीक। सहस्रोनारी एहिबेर सौराठ सभापर आक्रमण क' देने छथि। गाम-गामसँ, घर-घरसँ, स्त्रीगण जमा भेल छथि। जे लोकनि पहिने भेंड़ी छलीह सेहो सभ भैरवीनाद कय रहल छथि। रणचण्डी दलक सदस्या अद्भुत साहस देखा रहल छथि।

एकटा-दृश्य देखू। वरक बाप कन्यागतसँ गमा रहल छथिन्ह। चानी पुरबैत-पुरबैत कन्यागतक पानी उतरल जा रहल छैन्ह। ताही बीचमे एकाएक चंडीदलसँ बिजली जकाँ कन्या आविर्भूत भय कहै छथिन्ह—'हमरा हेतु गनी, त हमर सारा खनी'। तावत कन्या ओ वरक माय सेहो ओहिठाम आबि जाइ छथिन्ह। वरक माय थैली छीनि कन्याक मायक हाथमे दैत छथिन्ह और वरक हाथ कन्याक हाथमे। दुनू समधिन गर मिलैत छथि और दुहु समधी अवाक भ' देखैत छथि। नेपथ्यसँ जयघोष होइत अछि—'मेहरावालीक जय ! दुलारपुरवालीक जय !'

देखैत-देखैत सभाक बागडोर स्त्रीगणक हाथमे आबि गेल। ओ लोकनि समस्त बटुआ, थैली ओ पञ्जिया जमा कय होलिकादहन कैलन्हि। देखू, ओही पघरामे पाँजक पाँज पाँजिक पोथा धू-धू कय जरि रहल अछि। ओही अग्निकेँ साक्षी कय सहस्रो वर-कन्याक विवाह भ' रहल छैन्ह। रील खतम।

वृद्ध बजलाह—जाहि स्थानमे ई होलिकादहन भेल, तहाँ चारिम मंदिर बनि गेल। ई जे 'ज्वालामुखी' देवीक मंदिर देखि रहल छी से तकरे स्मारक थीक।

(६)

पाँचम रील। १९६५। एहि बेर सभाक दोसर दृश्य अछि। असंख्यो नर-नारी समवेत छथि। विचार होइ अछि जे सौराठक कायाकल्प कय सौराष्ट्र बना दी। तिलक-दहेजक प्रथा त आब उठिए गेल। परन्तु तथापि समाजमे अनेक व्यक्ति छथि जे बेटा-बेटीक विवाह पाछाँ उजड़ि जाइ छथि। घर-दोर ओ विधि-व्यवहारक हेतु खेत बेचय पड़ैत छैन्ह तिनका लोकनिक रक्षार्थ एहिठाम सामुदायिक विवाह-यज्ञक व्यवस्था कैल जाय। सार्वजनिक चन्दासँ टका संग्रह कय ई पुण्य कार्य हो।

देखैत-देखैत ई प्रस्ताव कार्यरूपमे परिणत होइत अछि। आब सामुदायिक विवाहक दृश्य देखू। सहस्रो गामक वर-कन्या एहिठाम अपना माता-पिताक संग उपस्थित छथि। हिनका लोकनिक विवाह भ' रहल छैन्ह। वैदिक विधिसँ हवन पुरस्सर। परन्तु कोनो आडम्बर नहि। ब्राह्मी रीतिसँ। विद्वान आचार्य पुरोहित बैसल छथि। ओ वेदीपर वर-कन्यासँ प्रतिज्ञा करबैत छथिन्ह— हम सभ मिथिलाक आदर्श पालन करब। मिथिला भारत माताक हृदय स्वरूप थिकीह। हम हुनकामे नवीन शक्ति संचार कय देशकेँ अनुप्राणित करब। जय माँ मिथिले।

एवं प्रकारे सहस्रो विवाह संपन्न भय रहल अछि। गीतवाद्य, भोजभात, सभक प्रबन्ध सामूहिक रूपसँ अछि। यज्ञक समावर्तन समदाउनिसँ होइत अछि। कन्या लोकनि माता-पिताक आशीर्वाद लय अपन-अपन नवीन घर बसेबाक हेतु जा रहल छथि। गीत भय रहल अछि—

"बर रे जतन सँ सियाजीकेँ पोसलहुँ।
विद्या विविध पढ़ाय।
गृहक कार्यमे निपुण बनौलहुँ
बहु-विधि कला सिखाय।
सुन्दर शील स्वभाव बनौलहुँ
उच्चादर्श देखाय।
तेहन धियाकेँ पठा रहल छी
सासुर योग्य बनाय।
जाउ धिया निज सासु-ससुर संग
पति सौं प्रेम लगाय।
रहब कुशल सौं, सदा प्रफुल्लित
घरकेँ स्वर्ग बनाय।"
(रील खतम।)

वृद्ध कहलाह—जाहि ठाम एहि सामुदायिक विवाहक लावा छिड़िआएल तहीं पाँचम मन्दिर बनि गेल। ई जे 'वरदा' देवीक मंदिर देखैत छी से तकरे स्मारक थीक।

सभ रील समाप्त भ' गेल। वृद्ध बजैत गेलाह—'....एहि तरहेँ अपने देखि लेल जे ई सौराठ कोना 'सौराष्ट्र' बनि गेल। गत पचास वर्षसँ एहि धर्मगाछी मे लाखो धर्म-विवाह भेल अछि। मिथिलाक एहि विवाह-यज्ञक अनुकरण आनो

आन प्रांतमे भ' रहल अछि।....पचास वर्ष पहिने जे सौराठक गाछी कलंकस्वरूप लगैत छल से आइ देशक पवित्र तीर्थ बनि गेल अछि। जाहि वेदीपर लाखो पिता बलिदान पड़ैत छलाह, ताहिपर आब लाखो कन्याक उद्धार भय रहल छैन्ह। पुरना बड़का गाछ औंसा क' सुखा गेल, आब नव-नव बरोहुर पनकी देलक अछि।

....ई सभ कोना भेलैक? मिथिलाक नारी-समाजमे नव चेतना आबि गेलैन्ह। ओ गंगाक लहरि जकाँ बढ़लीह और ओहि लहरिसँ क्रान्तिक गीत उठल—

भागु, भागु, दूर घटक पँजियार।
होउ बरागत आब होशियार।
आब नहि चलत तिलक रोजगार।
नहि केओ टाका गनत हजार!
समटू अप्पन हाट-बजार।
एहि बाटे अबै छथि सुरसरि धार।

और, ओ सुरसरिक धार सरिपहुँ तेहन वेगसँ ऐलीह जे सौराठक झगटा सड़ैत धी-बहा क' साफ क' देलन्हि और जे ओहि लहरिमे पड़लाह से.... □

संगठनक समस्या

श्रीमान् सम्पादक जी,

अत्र कुशलं, तत्रास्तु । आगाँ सुरति जे अपनेक पत्र भेटल । परंच लेख की पठाउ से फुरिते ने अछि ।

नहि जानि कोन सनमे ई उन्माद सवार भेल जे समाजक संगठन करी । एक निवेदन लिखल और विशिष्ट व्यक्तिक सूची बनाय एक दिनसँ विदा भेलहुँ । कहल जे पहिने विद्वानवर्गसँ श्रीगणेश करी । सर्वप्रथम वैयाकरण भेटलाह । नम्रता-पूर्वक कहलिऐन्ह—समाजक संगठन ...

वैयाकरण डोकैत बजलाह—प्रथमग्रासे मक्षिकापातः । 'संगठन' शब्दे अशुद्ध थीक । ई कोनो तरहेँ सिद्ध नहि भ' सकैत अछि ।

हम कहलिऐन्ह—परन्तु....

वै०—परन्तु की ? 'गठ्' धातुए व्याकरणमे नहि छैक, तखन उपसर्ग-प्रत्यय लगतैक कथीमे ? अहाँ लौकिक व्यवहारक करब से हम कोना मानब ? 'गठ्' धातु अहाँ कतयसँ अनलहुँ ? पाणिनिक सूत्र देखाउ । 'संगठन' कथमपि भइए नहि सकैत अछि ।

हम मनहि मन कहल—सरिपहुँ नहि भ' सकैत अछि । विवादोमे नहि । यावत अपने सन-सन विद्या-दिग्गज विद्यमान रहताह तावत 'संगठन'क कोन कथा 'सङ्गो' नहि भ' सकैत अछि । प्रकाश्यतः कहलिऐन्ह—तखन कोन शब्द एहिठाम होमक चाही ?

वै० जी बजलाह—'संघटन' शब्द होमक चाही । सम्यक् रूपेण घटनम् इति संघटनम् । 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'घट्' धातुमे ल्युट् प्रत्यय लगाउ । तखन हमरा कोनो विवाद नहि ।

हम कहलिऐन्ह—बेस, त यैह रहौ ।

पं० जी—बजलाह—से नहि, काटि क' बनाइए दिऔक। ता धरि हम एहि कागतपर हस्ताक्षर नहि क' सकैत छी।

अगत्या 'संगठन' काटि क' 'संघटन' करय पड़ल। तदुपरान्त द्वितीय अध्यापकक ओतय गेलहुँ। ओ कर्मकांडी छलाह। 'संघटन' शब्द देखैत बजलाह—एकर अर्थ की? यैह ने जे समस्त सभकें संघटन होइक, अर्थात् सभक छुट्टल सभ खाय, किछु स्पृश्यास्पृश्यक विचार नहि रहय। जौं सैह करबाक अछि त एहिमे हमरा किएक सनैत छी? सभ लोक त आब भ्रष्ट भइले जाइत अछि। किछुओकें त बाँचल रहय दिऔक।

हम कहलिऐन्हि—पं० जी, से अर्थ नहि छैक।

कर्मकांडी—तखन की अर्थ छैक?

हम—यैह जे सभ गोटे पारस्परिक सहयोगसँ काज करी, जाहिसँ सामूहिक उन्नति हो।

कर्मकांडी—तखन केवल 'संघ' राखू। ताहिमे हमरा आपत्ति नहि। परन्तु 'टन' धरि हटाइए दिऔक। तखन हम हस्ताक्षर करब।

आब 'संघटन' खंडित भय केवल 'संघ' रहि गेल। ततःपर तृतीय अध्यापक जे भेटलाह से वैदिक छलाह। बजलाह—'संघ' किएक? ई त बौद्ध सम्प्रदायक वस्तु थिकैक। नास्तिक भिक्षु सभ वेद विरोध करबाक हेतु अपन संघ बनबैत छल। हमरा लोकनि सनातन धर्मी भ' वेद-विरुद्ध नाम किएक ग्रहण करब? से कि दोसर कोनो शब्द नहि छैक?

हम कहलिऐन्हि—बेश, त जैह शब्द अपनेकें वेदानुकूल बुझि पड़य से बदलल जाओ।

सामवेदी जी सोचय लगलाह। सोचैत-सोचैत बजलाह—'समवाय' शब्द राखि सकैत छी।

अस्तु। 'संघ' काटि 'समवाय' बनाओल। आब जे अध्यापक भेटलाह से नैयायिक छलाह। 'समवाय' शब्द देखैत ओ शास्त्रार्थक मुद्रामे आबि गेलाह। बजलाह—समवाय नित्य सम्बन्ध थीक। जे वस्तु नित्य थीक तकरा हेतु प्रयत्न किएक? जाति त स्वतः समवाय सम्बन्धावच्छिन्नेन व्यक्तिमे रहितहि अछि। तखन एहि हेतु चंदाक कोन काज? समवाय कहियो नहि छल जे अहाँ आरम्भ करब?

ई तर्क सुनि हम भगवानकें गोहराबय लगलहुँ—हे दीनबन्धो! दयासिन्धो! करुणावरुणालय! ई जटिल तर्कपाश बिना सुदर्शन चक्रें खंडित होयबला नहि अछि। नैयायिकजीक जालसँ हमर उद्धार करू। परन्तु से अहाँ किऐक करब? एहने-एहने लीलासँ त अहाँ अपन मनोरंजन करैत रहै छी। नहि त एहन-एहन नैयायिकक सृष्टि करबाक अहाँक प्रयोजने की छल?

नैयायिकजी हमरा चुप देखि बजलाह—सोचै छी की? समवाय हमरा अहाँक कर्तृत्वे नहि भ' सकैछ। किएक त चिकीर्षाप्रयत्नाधारत्वं कर्तृत्वम्। से चिकीर्षा ओ प्रयत्न कार्यक निमित्त होइ छैक। प्रागभावविध्वंसि कार्यम्। जखन प्रागभाव छैहे नहि, तखन विध्वंस हैतैक ककर? पहिने अहाँ ई सिद्ध करू जे समवायक एखन अभाव अछि, तखन तदभावप्रतियोगिक कार्यत्वक निरूपण भ' सकै अछि। अन्यथा चेष्टा करब व्यर्थ थीक।

हम माथपर हाथ दय बैसलहुँ। एतबा चेष्टा व्यर्थ गेल। आब की कैल जाय?

नैयायिकजीकें किछु दया आबि गेलैन्हि। बजलाह—देखू, न्यायशास्त्र नहि पढ़बाक कारणें अहाँ लोकनि 'समवाय' ओ 'संयोग'क भेद नहि बुझैत छी। नित्य-सम्बन्धः समवायः। अनित्यसम्बन्धः संयोगः। समवाय अनादि ओ अनन्त थीक। संयोग सादि ओ सान्त थीक। यैह दुनूमे भेद थिकैक। अतएव प्रयत्न 'संयोग'क हेतु कैल जा सकैत अछि, 'समवाय'क हेतु नहि। आब बुझलिऐक?

हम मनमे कहल—दयानिधान! जौं एतबा बुझबाक शक्ति रहैत त अपनेक समक्ष ई निवेदन ल' क' ऐबाक मूर्खता किएक करितहुँ?

अस्तु। नैयायिक जी अपने हाथसँ 'समवाय'कें काटि 'संयोग' बनौलन्हि।

तदुपरान्त जे अध्यापक भेटलाह से साहित्याचार्य छलाह। 'संयोग' शब्द देखितहि बिहुँसय लगलाह। व्यंग्य करैत पुछलन्हि—की? एहिमे केवल नायके रहताह अथवा नायिको रहतीह? अहाँ लोकनि एखन युवक छी। फगुआक समय छैक। जे-जे मन होय से करै जाउ। परन्तु हमरा सन-सन वृद्धक हेतु त आब वियोगे मार्ग उचित। जे सभ तरुण-तरुणी छथि से लोकनि संयोगमे सम्मिलित होथि।

आब कोन उपाय? जतहि जाइत छी ततहि एक चरण लागि जाइ अछि। हम एही विडंबनामे पड़ल छलहुँ कि ज्योतिषीजी बिचहिमे टोकैत बजलाह—आद

पाखाक दिने नहि छैक तखन स्वयं किछ कोना हैत ? अहाँ कोन दिससँ आएल छी ?

हम —दक्षिणसँ ।

वैद्य० — तखन सोझे दिक्शूलमे चललहुँ । एक भदवा, दोसर दिक्शूल ! तखन कतहु काज हो !

तावत आयुर्वेदाचार्य सेहो ओहिठाम आबि उपस्थित भेलाह । सभ बात बुझि कहलाह —ओझो, यावत लोकक पित्त ओ वायु शान्त नहि हैतैक तावत झगड़ा बंद हैब असम्भव । अतएव यदि अहाँ स्थायी एकता चाहै छी त लोक सभकेँ गुल्लरि खोआबियौक । ओहिमे पित्त ओ वायु दूनूकेँ शमन करबाक सामर्थ्य छैक । यदि अहाँकेँ गुल्लरि भेटबामे कठिनता हो त हमर उदुम्बरपाकक प्रचार करू । पाव भरिक दाम केवल सवा टाका मात्र । अहाँ दाम पाछाँ पठा देब ।

ई कहि वैद्यजी एक डिब्बा हमरा हाथमे धरा देलन्हि । हम अबैत आगाँ विदा भेलहुँ कि बाटमे भेटलाह फकीरन झा । पुछलन्हि —ओ, कतय बौआइत छी ?

सभटा बात सुनि कहलन्हि—है ओ ! अहाँकेँ दोसर कोनो काज नहि अछि ? तखन चलू । हमरा एकटा खाढ़ घोरबाक अछि । एक दिससँ अहाँ रस्सी धरौने जाएब ।

एवं प्रकार हम तेहन वेगारीमे पकड़ा गेलहुँ जे ऐखन जा कऽ छुट्टी भेटल अछि । मूजक जोरसँ तेहन घस्सा पड़ल जे हाथ भकभका रहल अछि । एहना स्थितिमे हम लेख कोना कऽ लिखू से अहीं कहू ।

अपनेक कुशलाकांक्षी
खेवानन्द झा □

दलानपरक गप्प

ओहि दिन लालककाक दलानपर गप्प जमि गेल। हुनका ओहिठाम चतुर्थीक हकार पुरुष लोक आएल रहथ। पानन-काजर होइत रहैक। ताही बीचमे पहुँचि गेलाह भोलबाबा। पं० जी पान-सुपारी आगाँ बढ़बैत कहलथिन्ह- लेल जाओ। भोलबाबा कहलथिन्ह—अहाँ विद्वान छी, पहिने अहाँ लिय'। पं० जी कहलथिन्ह—भला, ई कोना भ' सकैत छैक ?

दीर्घनारायण टिप्पणी कैलथिन्ह—एही तिरहुतामसँ रेल छूटि जाइत छैक।

एतबा सुनैत भोलबाबा अपन गप्पक बटुआ फोललन्हि- तोरा लोकनि केवल सुनबे टा करैं छह, परन्तु हमरा सरिपहुँ गाड़ी छूटल अछि। एकबेर तार-सरायमे देखल जे हुनर पिसिया ससुर गाड़ीपर चढ़ि रहल छथि। गाड़ी सीटी द' देने रहैक। हम चाहितहुँ त गाड़ीक भीतरसँ हुनक हाथ पकड़ि चढ़ा लितिऐन्ह। परन्तु बिना पैर छुइने हाथ धरितिऐन्ह कोना ? ई प्रणाम करक हेतु हमरो नीचा उतरय पड़ल। आब ओ बिना आशीर्वाद देने कोना चढ़ितथि और बिना गोरलगीक टकाकेँ आशीर्वाद दितथि कोना ? ओ तावत अपना फाँड़सँ बटुआ बाहर कय खोलय लगलाह, तावत गाड़ी सपरद लागल। हम कहलिऐन्ह—'अपने चढ़ि लेल जाओ।' ओ बजलाह—'ई कोना भ' सकैत अछि ? ओझा, पहिने अपने चढ़ल जाओ।' तावत गाड़ी निकसि गेल।

मधुकांत बजलाह—वाह रे वाह ! एहन तिरहुताम !

भोलबाबा डँटैत कहलथिन्ह —तोरा लोकनि तिरहुताम देखलह कहिया ? एही तिरहुतामक द्वारे निवधारक सामवेदी जीकेँ कहियो संतान नहि भेलैन्ह।

श्रोतागण उत्सुक भय पुछलथिन्ह —से कोना, बाबा ?

भोलबाबा कहए करैत बजलाह—सामवेदी जीक स्त्री जातिमे पैघ छलथिन्ह। दुहू बेकती सपरतपारसे जाथि त उचितो होमय लगैन्ह—अहाँ पूज्य, त अहाँ पूज्य। ई कहथिन्ह—पहिने अहाँ खाटपर चढ़ू। ओ कहथिन्ह—पहिने अहाँ खाटपर चढ़ू। एवं प्रकारे दुनू गोटा भरि राति ओहिना ठाढ़े रहि जाथि। एहना स्थितिमे संतान होइतैन्ह कोना ?

रतिकांत बजलाह—हद भ' गेल बाबा !

भोलबाबा एक चुटकी कतरा मुँहमे दैत बजलाह—हाँ, ताहि दिनक लोक व्यवहारी होइत रहय। ओहन मर्यादा कि आब देखबामे आबि सकैत अछि ? ओही मर्यादाक कारण सलखा झा ओ मलखा झा—कहियो एक संग बैसि कय भोजन नहि कैलन्हि।

श्रोतागण पुछलथिन्ह—से किएक ?

भोलबाबा बजलाह—हाँ, दुनू गोटा पंजीबद्ध रहथि। के पैघ, के छोट, से नहि फरियाइन्ह। तखन के सीरामे बैसत, के भट्ठामे ? एही हेतु दुनू गोटे कहियो एक पाँतीमे नहि बैसलाह। कतहु नेओत पुरय जाथि त एक ओसारापर सलखा झाक डाम होइन्ह, दोसर ओसारापर मलखा झाक।

काशीनाथ बजलाह—ताहि दिन एहनो एहन लोक रहथि !

भोलबाबा कहलथिन्ह—तों देखलह कहिया ? एही व्यवहारमे कनेक त्रुटि रहि गेलाक कारण सोनमनि झा अपन बेटाक दोसर विवाह करौलन्हि।

श्रोतागणक उत्सुकता देखि भोलबाबा दोसर चुटकी लसि लैत कथा पसार-लन्हि—सोनमनि झा बेटाक द्विरागमन करावय गेल रहथि। रातिमे भोजन काल जखन दही परसाद लगलैन्ह त कहलथिन्ह—बस, बस, बस। आब पूर्ण भ' गेलैक। परवैया कहलथिन्ह—थोड़ेक और लेल जाओ।

सोनमनि झा कहलथिन्ह—नहि, नहि, हम रातिमे दही कम खाइ छी।

परवैया दस' उचितो कैलथिन्ह—बेस, त दुइए छी।

सोनमनि झा बजलाह—नहि, एको छौ नहि। हमरा बातपर धैर्य अछि। पेट न एहबे रामे। केवल कथा मानि लेल जाओ'—ई कहैत परवैया दही देबक हेतु निहुरलाह। सोनमनि झा 'हाँ-हाँ' करैत दुहू हाथसँ थारीकेँ छापि लेलन्हि। परवैया बहुत चेष्टा कैलन्हि परन्तु सोनमनि झा कोनहुना दही नहिए देबय देलथिन्ह। अगत्या हारि-दारि क' परवैया शेष दही फिरा क' ल' गेलाह। ई देखितहि सोनमनि झाकेँ लेसि देलकैन्ह। जखन अचाएल भ' गेलैन्ह तखन बेटाकेँ बजा क' कहलन्हि —'चलह एहिठामसँ। दोसर बिवाह करा देबौह। एहिठाम हिनका लोकनिमे भावकता नहि छैन्ह। पुराइ त लोक करितहि छैक, तखन आगाँसँ भटकूर उठा क' की ल' गेलाह ?' पाछाँ कतेक लोक नेहोरा कैलकैन्ह, परन्तु सोनमनि झा टससँ मस नहि भेलाह। बेटाक दोसर विवाह कराइए क' छोड़लन्हि।

श्रोतागण स्तम्भित रहि गेलाह। मुकुन्द बजलाह— धन्य छलाह सोनमनि

झा ! हुनका भोजनकाल पटकि क' जबर्दस्ती मुँहमे दही कोंचि देलैन्हि तखन आफकता बूझि पड़लैन्हि ! एहन रगड़िपल लोक ! बाप रे बाप !!

भोलबाबा हुलसि हँसैत कहलथिन्ह— तों एतबेमे घबराहटि होइत छह ? एही मर्यादाक खातिर फेंटकटाइ झाक डाँड़ टूटि गेलैन्ह ।

श्रोतागण— से कोना, से कोना ?

भोलबाबा पुनः थोड़ेक कतरा मुँहमे दैत बजलाह—फेंटकटाइ झा समधियारि गेल रहथि । चलबा काल लाल धोती बिदाइमे देलकैन्ह । फेंटकटाइ झा जवाब कें कहलथिन्ह—धौ, मोटरीमे बान्हि दिअ । परंतु फेंटकटाइ झाक समधि रहथिन्ह बोचबाबू । ओ अड़ि गेलथिन्ह जे धोती पहिरिए लेल जाओ । फेंटकटाइ झा बजलाह—धर्म ! भ' गेलैक । हम ल' लेल । बोच बाबू कहलथिन्ह—भला ई कोना भ' सकैत अछि ? एहिठामसँ अपना ग्राम धरि लोक उज्जर धोती देखत से की कहत ? ई कहैत बोचबाबू हुनका डाँड़मे धोती लपेटय लगलथिन्ह । फेंटकटाइ झा अपनाकें छोड़ाबय लगलाह । आब दुहू समधिमे हाथाबाँहि होमय लगलैन्ह । परंतु बोचबाबू जबर्दस्त रहथि । एक बेर लपकि क' जे पकड़लथिन्ह से फेंटकटाइ झा तरमे आबि गेलाह । ऊपरसँ बोचबाबूक तीन मनक शरीर । फेंटकटाइ झाक डाँड़ टूटि गेलैन्ह । ओ खरखरियामे लदा क' गाम गेलाह । परंतु वाह रे बोचबाबू ! अपना वंशक टेक नहिए छोड़लन्हि । समधिकें धोती पहिराइए क' बिदा कैलन्हि । ताहि दिन मर्यादाक एतबा विचार रहैक ।

पं० जी अनुमोदन करैत कहलथिन्ह—ताहिमे कोन संदेह ?

भोलबाबा प्रोत्साहन पाबि बजलाह—आब से केओ बुद्धिनाथ पाठक जकाँ करत से निमहतैक ? पाठक जी पुरी गेल रहथि । ओहिठाम जगन्नाथजीक अटकाक महाप्रसाद भेटलैन्ह । परंतु ओ अड़ि गेलाह जे जगन्नाथ भगवान छथि तँ की ? बिनु सौजने भात नहि खा सकैत छिऐन्ह । जौं दू जोड़ धोती देताह त प्रसाद खैबैन्ह, नहि त अपना घर रहथु । अंतमे हुनके जिद्द रहलैन्ह । जगन्नाथजीक दिससँ दू जोड़ धोती बिदाइ भेटलैन्ह, तखन प्रसाद मुँहमे देलन्हि । आबक लोकमे कि एतबा विचार भ' सकैत छैक ?

पारकैका कहलथिन्ह—कथमपि नहि । कथमपि नहि ।

भोलबाबा और अधिक उत्तेजित होइत बजलाह—हौ, आब से केओ नैना चौधरिक परि करत से निमहतैक ?

श्रोतागण—से की बाबा ?

भोलबाबा कहलथिन्ह—नैना चौधरि सिमरियाघाट जाइत रहथि । संगमे

रहौ, भागहु सेहो संग रहथिन्ह । जखन सभकें गाड़ीमे चढ़ाओल भ' गेलैन्ह त अपने ओहिठाम रहि गेलाह । एक गोटा पुछलकैन्ह त कहलथिन्ह—जाहि गाड़ीपर हमर भागहु चढ़लि छथि ताहिपर हम कोना पैर द' सकैत छी ? हम दोसरा ट्रेनसँ जाएब । आब एतबा विचार ककरामे छैक ?

पारस्का बजलाह—अहा ! ताहि दिन की अपूर्व मर्यादा छलैक ?

भोलबाबा बजलाह—मर्यादा त तेहन छलैक जे बुद्धिनाथ पाठक अपन स्त्रीकें महफापर बिदागरी नहि होमय देलन्हि जे चारि टा पुरुषक कान्हपर चढ़ि क' कोना जैतीह ? आब त लोक स्त्रीकें लौरीपर चढ़ाक' बिदा करैत अछि !

कासीनाथ कहलथिन्ह—बाबा ताहि दिन मर्यादाक बड़ विचार रहैक ।

भोलबाबा कहलथिन्ह—विचार त एतबा रहैक जे मुंशी सोखतार लाल दास सासुरक इनारमे खसि पड़लाह, तथापि सासुसँ भोर नहि उतारलन्हि । ताहि दिनक समाज तेहन संकोची होथि जे तिलौड़ी नहि खाथि जे कुड़कुड़ क' उठत । पापड़ खेबाक होइन्ह त पहिने दालिमे फुला लेथि । जखन सासु अबथिन्ह तखन गोनी ल' क' माथ झाँपि लेथि । कहियो स्त्रीगणक सोझाँ उघार छाती नहि राखथि । आबक पुरुषमे एतबा विचार छैन्ह ?

शोभाकांत कहलथिन्ह—पुरुषक कोन कथा, आब त स्त्रीगणोकें एतबा विचार उठल जा रहल छैन्ह ।

पं० जी बजलाह—ताहि दिनक स्त्रीगणमे तेहने विचार रहैन्ह ।

भोलबाबा कहलथिन्ह—विचार त तेहन रहैन्ह जे हमर समधिन अपन नुआ कहियो धोबीकें नहि देलन्हि, जे धोती आन पुरुषक मुट्ठीमे पड़ि जाएत । आबक स्त्रीकें एतबा विचार छैक ?

शोभाकांत बजलाह—आब त धोतीक कोन कथा जे ...

फोंचाइ पाठक बजलाह—ताहि दिनक स्त्रीमे विचार अधिक रहैन्ह ।

भोलबाबा बजलाह—तेहन विचार रहैन्ह जे हमर पीसी कहियो घरवलाकें पैर नहि लगौलन्हि ।

कमलाकांत पुछलथिन्ह—से किएक, बाबा ?

भोलबाबा कहलथिन्ह—हमर पीसाक नाम रहैन्ह रामगुलाम झा । तँ पीसी घरवलाकें कहियो पैर नहि लगाबथि जे हिनका अन्तमे पतिक नाम पड़ै अछि । एही डरें ओ 'रामखिलुनी'कें 'श्यामखिलुनी' कहथि ।

पारस्का बजलाह—अहा ! ताहि दिन केहन धर्म-कर्ममे निष्ठा रहैक !

भोलबाबा नाकक पूरामे नोसि दैत बजलाह—हौ, धर्म-कर्ममे त तेहन निष्ठा

रहैक जे हमर मालामहू भगवानक स्थापना कैने रहथि। अपना धाम चढ़ैन्ह त भगवानकें पंखा हौंकथि। जाड़ होइन्ह त भगवानकें रजाइ ओढ़ाबथि। गाममे हैजा होइक त सभसँ पहिने भगवानक ठोंठिमे सुइ देयाबथि। आबक लोक त भगवानोसँ चालाकी करै छैन्ह। डालडा लऽ कऽ आरती कऽ दैत छैन्ह। मडुनिया सभ त सेहो नहि करैन्ह। नवका धीयापुता शालग्राम लऽ कऽ मिश्री बुकै जाएत।

लंबोदर चौधरि बजलाह - आब त भक्तिक लोप भेल जाइ अछि। परंतु ताहि दिन तेहन-तेहन भक्त होथि जे ...

भोलबाबा कहलथिन्ह - भक्त त तेहन-तेहन होथि जे भगवानो हुनकासँ हारि मानथि। डोढ़ाइ पाठक तेहन विष्णुभक्त रहथि जे कहियो कंठी नहि बन्हलथिन्ह।

अजगैबीनाथ पुछलथिन्ह---से किएक ?

भोलबाबा बजलाह हुनक कथ्य रहैन्ह जे तुलसी विष्णुप्रिया छथीह। जिनका हम अपना गरमे कोना लगबैन्ह ? माय-पितियाइनकें केओ कंठ लगबैत अछि ?

पं० जी बजलाह अहा ! की उच्च विचार छलैन्ह ?

भोलबाबा कहलथिन्ह—तेहने उच्च विचार हुनका स्त्रीओक रहैन्ह। ओ कहियो शिवलिंग पर जल नहि ढारलन्हि।

दीपनारायण पुछलथिन्ह - से किएक ?

भोलबाबा कहलथिन्ह - हुनक कथ्य ई रहैन्ह जे महादेव केहनो बड़का रहथु, छथि त परपुरुखे !

पारकका बजलाह — अहा ! ताहि दिनक स्त्री तेहन पतिव्रता होथि !

भोलबाबा बजलाह पतिव्रता त तेहन होथि जे मायदह बालीक कोनाकें नाक काटि लेलकैन्ह। स्वामी कहलथिन्ह जे अहाँ एहिठाम कसि कऽ बान्हि दिअ' और ऊपरसँ मुक्का मारू। परंतु स्त्री अड़ि गेलथिन्ह जे एहन नहि कऽ सकै छी जे अपना स्वामीकें हम बान्हि कऽ मारी। स्वामी अचेत भऽ खसि पड़लथिन्ह, परंतु ई अपना टेकसँ विचलित नहि भेलीह !

फोंचाइ ठाकुर बजलाह - वाह रे टेक !

भोलबाबा बजलाह---तनौतावाली हुनकासँ कम नहि छलीह। एक राति हुनका स्वामीकें चोर पटकि कऽ मारय लगलैन्ह। स्वामी कहलथिन्ह—'एकर एक हाथ अहाँ पकड़ू, दोसर हम पकड़ैत छी। परंतु ओ आगाँ नहि बढ़लीह। उत्तर देलथिन्ह—हमरा एकके गोटाक हाथ पकड़ैत छैक। एहि शरीरसँ हम परपुरुषक स्पर्श नहि कए सकै छी।' स्वामीकें मारैत-मारैत भुरकुस कऽ देलकैन्ह, परंतु ई

हुनकसँ पार नहि भेलीह। ताहि दिन पातिव्रत्यक एहन मर्यादा रहैक।

कासीनाथ बजलाह —धन्य ! धन्य ! तहि दिनक लोक केहन मनस्वी होइत छल ? ओ टेक, ओ स्वाभिमान, आब रहय भेटत ?

भोलबाबा नाकक पुराने नोसि फोचैत बजलाह — एही स्वाभिमानक द्वारे डाक्टर झा धुरकैत धुरकैत चौमथ घाट पहुँचि गेलाह।

श्रीलालजी उत्सुक भए पुछलथिन्ह — से कोना ?

भोलबाबा गद्गद लगलथिन्ह डाक्टर झा घरमे कुशल रहथि। गरीबक समय रहैक। स्त्री कहलथिन्ह---कनेक धुसुकि जाउ। ई नहि स्त्री त सूति रहलथिन्ह। ओम्हर डाक्टर झा धुसुकय लगलाह। पहिने धुसकैत-धुसकैत खाटक पाओ पर आबि गेलाह। तखन ससरि कऽ नीचा उतरि गेलाह। तदुपरान्त केवाड़ फोलि बाहर भऽ गेलाह। तत्पश्चात् राति भरि धुसकैत-धुसकैत डोड़ पोखरिक पार पहुँचि गेलाह। घरसँ चौदह कोस। ओतयसँ चिट्ठी लिखलथिन्ह जे की, आब और अधिक धुसकू कि एतबेसँ काज चलि जाएत ?

दीपनारायण टिप्पणी कैलथिन्ह—ओहो प्रणम्य देवता छलाह। कनेक धुसकय कहलथिन्ह त ओतेक दूर चलि गेलाह यदि कतहु लगमे आबय कहितथिन्ह त से जानि की करितथि !

पं० जी बजलाह —ताहि दिनक लोक मनस्वी होइत छलाह।

भोलबाबा कनेक कटैत बजलाह —एही मनस्विताक कारण अलमाक पं० जी अपना घरमे आगि लगा देलन्हि।

पं० जीक घरपर एकटा पाहुन ऐलथिन्ह। स्त्रीकें पुछलन्हि—ऐं ! घरमे चूड़ा अछि ? स्त्री कहलथिन्ह —नहि। ई पुछलथिन्ह—आटा अछि ? स्त्री कहलथिन्ह —नहि। पुछलथिन्ह —सातु अछि ? स्त्री कहलथिन्ह — नहि। पुछलथिन्ह---सलाइ अछि ? स्त्री कहलथिन्ह हँ। बस, ई सलाइ खरड़ि कऽ घरमे लगा देलन्हि। जाहि घरमे किछु नहि, से घर रहिए कऽ की हैत ? फेरि घर त जरिए गेलैन्ह। आगा पाछाक संग-संग संपूर्ण गामो स्वाहा भऽ गेलैन्ह।

कासीनाथ बजलाह —ताहि दिन मर्यादाक एहन महत्त्व रहैक।

भोलबाबा बजलाह---मर्यादाक तेहन महत्त्व रहैक जे जेना चोधरिक घरमे आगि लगलैन्ह त अगिलग्गीक जिज्ञासामे उनचास टा गरचुट्टमह पहुँचि गेलथिन्ह। ई-दूरक सम्बन्धी। जहिना सुनलथिन्ह कि धाविए हाथ, धुरिआएले पैरे पहुँचि गेलथिन्ह। जेठमासक प्रचंड रौद। ऊपर एकटा छतरी नहि। गाछ तर मानस होय। तथापि कतोक गोटा नातक मारा ओही गाछ तर रहि गेलथिन्ह, जे एहन

रिवाजिक समयमे छोड़ि क' कोना देलैन्ह ? तँ ओ चौधरिकेँ तहिक लोक पुछारी करय ऐलथिन्ह जे समक सरकारमे हीह पर्यन्त बिका गेलैन्ह । तखन दोसर गाममे जा क' बसलाह ।

कमलाकांत बजलाह—धन्य छलाह एहन-एहन लोक ।

भोलबाबा कहलथिन्ह—हौ, ताहि दिनक लोक अलौकिक होइ छलाह । बुद्धिनाथ बाबू कहियो 'ब' अक्षरक पेट नहि कटलन्हि । हुनक कथ्य रहैन्ह जे जखन कोनो दोसर आकरक पेट नहि कटैत छिऐक त 'ब' अक्षर कोन अपराध कैने अछि ? एही द्वारे ओ 'बुद्धि'केँ 'बुद्धि' लिखथि !

फौजदार पाठक बजलाह—अहा ! की उच्च विचार !

भोलबाबा कहलथिन्ह—टटुआरमे कोनो ब्राह्मण ईंट पथबौलन्हि त पं० सूदन मिश्र हुनका तोषधक प्रायश्चित द' देलथिन्ह ।

काशीनाथ पुछलथिन्ह—से किएक, बाबा ?

भोलबाबा बजलाह—पं० जी कहलथिन्ह जे माटि खनने धाधि कैले हैत । वर्षामे पानि भैने ओ भरबे करत । से जल पीबय धेनु ऐबे करतीह । ताहिमे लोटैक डुबबे करतीह । ई विचारि पहिनहि गोहत्याक प्रायश्चित करा देलथिन्ह ।

कमलाकांत बजलाह—की अपूर्व पण्डित ओ लोकनि होइत छलाह !

भोलबाबा बजलाह—पण्डित त तेहन अपूर्व होइत छलाह जे एकबेर सतलखामे पात मध बासमती चाउरक भात फेंकल गेल ।

लंबोदर चौधरि पुछलथिन्ह—से कोना ?

भोलबाबा बजलाह—सातो टोलक लोक भोज खाय लेल बैसल रहथि । महामहोपाध्याय नेनमनि पाठक सेहो ओहिमे सम्मिलित रहथि । जखन ओ भोजन करय लगलाह त तरकारी खाइत काल पुछलथिन्ह—हौ, ई की थिकैक ? केओ कहलकैन्ह—सलगम थिकैक । ई सुनितहि ओ पातै पर वमन करय लगलाह । सभ हुर्र भ' गेल ।

सारखंडी पुछलथिन्ह—से किएक, बाबा ?

भोलबाबा बजलाह—महामहोपाध्याय कहलथिन्ह जे सलगम पूर्वजन्मक मुसलमान होइ अछि और अंगरेज जे मरैत अछि से अंगरेजी भाँटा (टमाटर) भ' क' जन्म लैत अछि । एतावता समकेँ सिमरियाघाट जा चारू चरण प्रायश्चित करय पड़लैन्ह ।

काशीनाथ बजलाह—अहा ! की धर्मशास्त्रक विचार हुनका लोकनिकेँ रहैन्ह !

भोलबाबा कहलथिन्ह—धर्मशास्त्रक त तेहन विचार रहैन्ह जे भूपकोलक शास्त्रा ओ कन्या कुमारीकेँ बिना स्नाने कैने फिरि ऐलाह ।

रतिकांत पुछलथिन्ह—से किएक, बाबा ?

भोलबाबा नाकमे नोसि लैत बजलाह—हौ, हुनक तर्क ई जे एक त कुमारि, दोसर कन्या ! ताहिमे प्रवेश कैने त पापिए पड़ि जाए ! एतावता ओहि जलसँ आचमनो टा नहि कैलन्हि ।

चुनचुन चौधरि बजलाह—वाह रे मर्यादा !

भोलबाबा कहलथिन्ह—एही मर्यादाक द्वारे पुबारी ड्योढ़ीक बाबू रुद्राणीपति सिंह कहियो अपना टोपी पर इस्त्री नहि देऔलन्हि, जे एकटा स्त्री जखन छथिए त दोसर किएक माथ पर चढ़ाएब । आब एहन विचार लोककेँ हैतक ?

पारकका बजलाह—कथमपि नहि ।

भोलबाबा गंभीर श्वास लैत बजलाह—आब त युगे बदलि गेलैक । हाथीकेँ मोटर खैलक, घोड़ाकेँ साइकिल खैलक, रामलीलाकेँ सिनेमा खैलक, भोजकेँ पार्टी खैलक, भाङकेँ चाह खैलक, संस्कृतकेँ अंग्रेजी खैलक, और मर्यादाकेँ कम्युनिस्ट खैलक । आब किछु दिनमे घसकट्टी ओ चानन काजर, सभ बा उठि जाएत । परन्तु आब हमरा जिनगिक कतेक दिन बाँकी अछि ? जे रहलाह से रहलाह ।

ई कहैत भोलबाबा पान-सुपारी लेलन्हि और फराठी टेकैत विदा भ' गेलाह ।

□

चौपाड़िपरक गप्प

आहि दिन पं० जीक चौपाड़िपर मोतिहारी सभ बैसल रहथि । किछो भ' गेल रहैक, परन्तु भोजनमे किछु विलंब रहैक ।

ताही बीचमे पहुँचि गेलाह भोलबाबा । हुनका अबितहि सभ उल्लसित भ' उठल जे आब गप्पक छुरहका उड़त ।

काशीनाथ कहलथिन्ह—आउ बाबा ! भल्लहु बेरपर जुमलहुँ । एखन ऐह बहस छिड़ल अछि जे पहिलेक लोक सुखी छल कि आबक लोक ?

भोलबाबा बटुआसँ नसिदानी बहार करैत बजलाह—हौ, ताहि दिनक लोक जतेक दूध-घी कुरुड़ क' क' फेंकि दैत छल ततेक आबक लोककेँ पानि जुमब कठिन छैक । हमरा लोकनिक पुरखा एक धैन दूध एक छाकमे पीबि जाइत छलाह । ताही जोरपर एक हजार दंड-बैसक खींचि लैत छलाह । आब लोक एक सितुआ दूध चाहमे घोरि क' चुसैत अछि । जेना होमियोपैथी नेनाकेँ घोंटी देल जाइ छैक । तखन शारिक बला बल-वीर्य कहाँसँ हैतैक ?

शोभाकान्त कहलथिन्ह—ताहि दिन मोट चालि रहैक । आब फैंसी ...

भोलबाबा उत्तर देलथिन्ह—हौ, हमरा तुरक लोक चमड़ाक पनहीमे एक चुटू अरीक तेल द' क' एक सुरमे बीस कोस चलि जाय । आबक बाबू भैया जे रैयलएट कालिसदार अंगरेजी जुत्तामे मचमच करैत छथि से दू कोस खातिर चारि घंटा रेलक बाट तकै छथि । पहिलेक लोक कोस भरि मैदान लोटा ल' क' चलि जाइत छल । आब त भानसे घर लग पैखाना बनबैत अछि ।

पुनपुन पुछलथिन्ह—एकर कारण की, बाबा ?

भोलबाबा नाकक दुनू पुराने नोसि कोचैत बजलाह—हौ, ताहि दिनक लोक पच्चीस वर्ष धरि एकछाहु ब्रह्मचर्यक पालन करैत छल । आब त पाँचमे वर्षसँ सिनेमाक गीत गाबय लगै अछि—'तेरा मेरा प्यार हो गया !' हमरा लोकनिक पुरखा भरि-भरि बट्टा घोआ खाइत छलाह और मासमे एक बेर भोग करैत छलाह ।

आबक लोककेँ पाव भरि आहार पचैबाक हेतु सोडावाटरक काज पड़ै छैन्ह, और विहार नित्य भेले चाहिय । तखन जे गति होमक चाही सैह होइ छैन्ह । जहाँ पहिलेक पुरुष कंचनजङ्घापर विजय प्राप्त करैत छलाह, तहाँ आइकाल्हुक युवक कुचबिहारसँ कटिहार धरि पहुँचैत-पहुँचैत हाँफय लागि जाइत छथि !

पं० जी अनुमोदन कैलथिन्ह—ई यथार्थ कहल । आबक लोकमे ओ बलवीर्य नहि रहलैन्ह ।

भोलबाबा बटुआसँ सुपारी-सरौता बहार करैत बजलाह—लोकक कोन कथा जे अन्नोमे आब ओ वीर्य नहि रहलैक । एकटा मरकनियाँ रहथक भोजन सर्दन रहथि । ताहिमे कौआ लोल मारि क' एक लोढ़या ल' गेलैन्ह । से देखि हुनक अंगना मात्र हँसि देलथिन्ह ।

कनियाँ पुछलथिन्ह—ई हँसै छथि किएक ?

साधु कहलथिन्ह—एकटा पहिलुक बात मन पड़ि गेल । एक बेर हमरा ओंगनमे एहिना कौआ लोल मारने रहय से ओहीमे अटकल रहि गेल । जखन हाथसँ छोड़ौलिएक तखन लोल छुटलैक । ताहि दिनक गहुमो तेहन सगर होइक ।

तारकका बजलाह—तखन ने लोको तेहन वीर्यवान होइत छल ।

भोलबाबा कहलथिन्ह—हौ, तैं ने सत्तरि वर्षक बूढ़ सत्रह वर्षक भार्यासँ पुत्र उत्पन्न कय लेथि । हुनका लोकनिक वर्षीक धारमे तेहन वेग रहैन्ह जे पाथरमे भूर भ' जाइक । आबक युवक हुनै त पानिशोक देह फूटब कठिन ।

कोषाद पाठक बजलाह—ताहि दिनक वीर्य बोसर रहैक ।

भोलबाबा सुपारी कतैत बजलाह—हौ, पुरुषक कोन कथा, स्त्रीओ सभ तेहने वीर्यवती होइत छलीह । ऐह देश थीक जहाँ एकटा महिसक चरवाहिनी घोड़ा सहित घोड़सवारकेँ उनटा देलकैन्ह ।

श्रोतागणकेँ रस लैत देखि भोलबाबाक जोश बढ़ि गेलैन्ह । बजलाह—हौ, ताहि दिनक यौवने तेहन विशाल होइक । हाथीक मस्तक सन । तैं कुम्भसँ उपमा देल जाइक । आब तेहन रंग-ढंग देखैत छी जे खियाइत-खियाइत किछु दिनमे कुम्भक स्थानमे किशमिशसँ उपमा देल जाएत । तखन बोतलक दूध पीबय बला संतान बोतल सन पहलमान कोना बनताह ।

लंबोदर चौधरि अनुमोदन कैलथिन्ह—अपने बहुत ठीक कहैत छी ।

भोलबाबा कतरा बँटैत बजलाह—ओहन-ओहन विशाल छातीक दूध पीबि क' जे संतान पुष्ट होय तकर हृदयो विशाल होइक । आइकाल्हुक लोक त संकीर्ण भेल जा रहल अछि ।

कमलाकान्त पुछलथिन्ह— से कोना ?

भोलबाबा बजलाह— देखू, ताहि दिनक लोक घर उठाबथ त तेहेन दालान बनाबए चाहिऐ जे कि बरियाती सूति सकय। आइन तेहेन दलान बनाबए चाहिऐ हजार पाँच सै ब्राह्मण बैसि कऽ खा सकथि। आब त तेहन अँटकर्सं दरबाजा बनबैत अछि जे चारि टा कुर्सीसँ फाजिल नहि अँटय। एहन सन भन भे दू टा गप्प कऽ लिय' और अपन बाट धरू।

दीर्घनारायण समर्थन कैलथिन्ह— ठीक कहै छी, बाबा। आब सभ वस्तु छोट भेल जा रहल अछि।

भोलबाबा बजलाह—हौ, ताहि दिनक स्त्रीगण चालिस हाथक साड़ी पहिरैत रहथि। हमरा लोकनिक अमलमे बिसहत्थी चलय। आब त पाँच गजसँ फाजिल केओ रखितहि ने छथि। तहिना अँगियो छोट होइत-होइत आब एक बीतपर आबि गेलैन्ह अछि। परन्तु नवयुवतीएकेँ किएक दोष दिओन्ह ? पण्डितो लोकनि पहिने साठि हाथक पगड़ी बन्हैत छलाह। आब एक बीतक पाग पहिरैत छथि।

पं० जी अनुमोदन कैलथिन्ह— अपने सत्य कहै छी। आब सभ वस्तुक लघु संस्करण भऽ रहल छैक।

भोलबाबा कथरा चिबबैत बजलाह— पहिनेक लोक पैघ वस्तु पसंद करैत छल। पैघ पोखरि, पैघ इनार। पैघ लोटा, पैघ थारी। तेहन-तेहन खाँखर बनय चाहिऐ एक बोरा चाउरक भात राखि लिय'। हमरे सासुरसँ ततबा टा डाला आएल जे चारि टा भरिया ओकरा उठा कऽ लाएल। आब त लोक कनियाँ-पुतराक खेल करै अछि। हमरा पोताक सासुरमे जे सँचार लगौलक से साइकिलक घंटी सन-सन बाटी आगाँमे राखि देलक।

कमलाकान्त बजलाह —सत्य कहै छी, बाबा ! पहिने लोक पैघ वस्तु पसिन्द करैत छल।

भोलबाबा बजलाह—देखह, काव्ये बनैत छल त रामायण महाभारत सन जे पुहत दर पुहत काज आबय। आबक कविता भगजोगनी जकाँ भकदऽ उगत, फकदऽ मिझाएत। पहिलुक रचल पुराण सभ भरि जन्म पढ़ैत रहू, तथापि अन्त नहि लागत। आबक कथा-पिहानी घंटा भरिमे पढ़ि कऽ लोक फेंकि दै अछि। पहिने मास-मास धरि रामलीला चलैत छल और लोक भरि-भरि राति जागि कऽ देखैत छल। आब तेहन सिनेमा चलल अछि जे दुइए घंटामे दशरथसँ लऽ कऽ लवकुश पर्यन्त देखा देत। पहिने एकटा ध्रुपद प्रारंभ होइ छल से अढ़ाइ घंटामे जा कऽ समाप्त होइ छल। आब त अढ़ाइ मिनटमे एक टा गीत खतम। एतबा कालमे लोक लम्बी करैत अछि।

धारकका पुछलथिन्ह—एकर कारण की ?

भोलबाबा नोसि लैत बजलाह— असलमे पूछह त आबक लोकमे धैर्य नहि छैक। चट मँगनी पट विवाह। आइकालुक आनन्द पूछह त खड़क आगि थिक। तुरत धधकल, तुरंत मिझाएल। ताहि दिनक आनन्द कोइलाक आगि होइत छल। देरीसँ पजरैत छल, देरी धरि रहैत छल।

पं० जी बजलाह —पहिलुक लोक उदास होइत छल।

भोलबाबा बजलाह—एहिमे कोन संदेह ? ताहि दिन पाहुनक आगाँमे एक अढ़ैया चाउरक भात जाँति कऽ परसल जाइ छलैन्ह। डब्बू लऽ कऽ घृत परसल जाइत छल। आब चम्मच चलल अछि। ई 'चम्मच' कोन अभागल आविष्कार कैलक से नहि कहि। ओ भारी छुद्रचंटी छल हैत।

थोड़ेक काल धरि भोलबाबा क्षुब्ध रहलाह। लोक गुम्म रहल। तखन पुनः निस्तब्धता भंग करैत बजलाह— हौ, ओकरेकेँ किऐ दोष दिऔक ? प्रकृतिओमे वैह संकीर्णता आबि गेलैक अछि।

फोंचाइ पाठक पुछलथिन्ह— से कोना ?

भोलबाबा बजलाह —ताहि दिनक बाते दोसर रहैक। सभ वस्तु पैघ होइक। हमर बाबाक भुतही गाछीमे एकटा पुरान फलेनाक गाछ रहैन्ह। से एक एक टा जामुन आधा-आधा पावक गुलाबजामुन जकाँ होइक। चौधू बाबूक कलमिमे तेहन केराक घौर फुटैन्ह जे एक एक टा घौर एक एक गाड़ीपर लदा कऽ अबैन्ह। हमरा पीसाक ओहिठामसँ एक टा कटहर आएल रहय से फाड़ल गेल त साढ़े तीन हाथक गेंड़ा ओहिमे सँ बहराएल।

अजगैबीनाथकेँ विस्मित देखि भोलबाबा कहलथिन्ह — तोँ मुँह की बबैत छह ? हम एही आँखिसँ दू-दू हाथक बालि देखने छी। मकोय सन-सन मकइक दाना। कुसियारे तेहन झमटगर होइक जे एक बेर एक टा साँढ़ छौ मास धरि झँपल रहि गेल। हमरा मामाक चारपर एकटा राहड़ि कोआक मुँहसँ घसि पड़लैक। से जनमि गेलैक। हौ बाबू ! ओ गाछ जे काड़ल गेल त एक पसेरी राहड़ि ओहिमेसँ बहराएल। आब ई बात हैतैक ?

मोतिलाल बजलाह— बाप रे बाप !

भोलबाबा हँसैत कहलथिन्ह— तोँ एतबेमे घबाहटि तोड़ैत छह। हम बनाइकमे ततेका टा इचना माछ देखल, जे ओकर मूँग लऽ कऽ लाठी बनैत छल। एक बेर हमरा भोलाक खाटसँ एकटा उड़ीस बहरैलैन्ह से हमरा नसिदानी एतेक टा।

आब त लोकक देहमे शोणिते नहि छैक। ओतेक टा उड़ीस कोना हैतैक ?

पंडित जी कहलथिन्ह – पहिने सभ वस्तु पुष्ट होइ छल। लोकक जेहने शरीर छलैक तेहने बुद्धियो। एकसँ एक गुणी होइ छलाह।

भोलबाबा बजलाह – गुणी त तेहन होइ छलाह जे फूलक नाम पूछि क' कहि देथिन्ह जे मुट्ठीमे की अछि। एक बेर हमरा मामक घोड़ी हेरा गेलन्हि। मानिपुरक ज्योतिषी हुनक जन्मकुंडली देखि क' कहि देलथिन्ह जे घोड़ी एखन पछबरिया खढ़ोरमे चरि रहल अछि।

फोंचाइ पाठक बजलाह—वाह रे गुणी।

भोलबाबा बटुआसँ सुपारी बहार कैलन्हि। पुनः कतरा करैत बजलाह— एक बेर बंगाबालीकेँ ज्वर लगलैन्ह। पाहीटोलक वैद्य रहथिन्ह। ओ नाड़ी कोना धरथिन्ह ? तखन बंगाबालीक हाथमे सूत बान्हि देल गेलैन्ह, से वैद्य जीकेँ धरा देल गेलैन्ह। वैद्य जी सूत सँग मुँह लगा क' ज्वरकेँ बुझा क' कहलथिन्ह—तौ तेरह दिन धैर्य राखह। हिनका माइक श्राद्धमे नैहर जेबाक छैन्ह। ओतहसँ औतीह त चौदहम दिन हिनका पर चढ़िअहुन।' किछु सूचिओ लगा क' ल' लिअहुन।' और ठीक एही तरहेँ भेलैन्ह। आबक डाक्टर वैद्यमे ई सामर्थ्य छैन्ह ?

झारखंडी बजलाह—अरौ तोरीक रौ तोरी !

भोलबाबा हुनका डँटैत बजलाह—हाँ, मिसरटोलीक एक वैद्य तेहन रहथि जे एकटा बंध्याकेँ दवाइक जोरपर जौआँ बच्चा जनमा देलथिन्ह। एक बुँद दवाइ खाइत पानि पर खसि पड़लैक ! ताहिमे तुरंत हरियर पनकी द' देलकैक। शेष दवाइ हड़ाहीमे फेकि देलथिन्ह। सभ गाछमे अंटा भ' गेलैक।

लबोदर चौधरि बजलाह—वाह रे चमत्कार ! ताहि दिन जे गुणी होथि से अपना विषयमे बेजोड़ होथि।

भोलबाबा बजलाह—हमर वृद्ध प्रपितामह तेहन उद्भट वैयाकरण छलाह जे जे शब्द मुँहसँ बहार भ' जाइन्ह तकरा सिद्ध कइए क' छोड़थि। एक दिन भूजा फकैत काल पुत्रक जन्म भेलैन्ह तकर नाम राखि देलथिन्ह—'भूजानाथ'। लोक पुछलकैन्ह—एकर अर्थ की ? ई कहलथिन्ह—रामचन्द्र। लोक पुछलकैन्ह से कोना ? ई कहलथिन्ह—'भू' भेली पृथ्वी, तनिक 'जा' भेली सीता, तनिक 'नाथ' भेलाह रामचन्द्र।

फोंचाइ पाठक बजलाह—अहा ! की विलक्षण प्रतिभा ?

भोलबाबा बजलाह—हुनक पुत्रो तेहने दुर्दान्त भइलैथिन्ह जे विवाहोमे अपन तर्कशास्त्र नहि छोड़लन्हि। तीन ठामसँ बतुँहार आएल रहैन्ह—लोहा, हथौड़ी ओ काँटी। ई तर्क लगौलन्हि जे काँटीसँ हथौड़ी प्रबल। परन्तु काँटी ओ हथौड़ी दुहुक मूल लोहा। अतएव लोहेमे अपन विवाह कैलन्हि। ओ कहियो ककरोसँ परास्त नहि भेलाह। एक बेर बरो बरियातक हेतु घोड़ा मंगनी कैलकैन्ह। ई अपन सतरंजक घोड़ा पठा देलथिन्ह। ओ आबि कय कहलकैन्ह—हम त चलब-अबा घोड़ा मंगने रही। ई उत्तर देलथिन्ह—इहो अढ़ाइ घर चलैत अछि।

चुनचुन बजलाह—इह ! ताहि दिन एहन-एहन दुर्दान्त नैयायिक होइत छलाह।

भोलबाबा किछु मन पारैत कहलथिन्ह—परन्तु हौ बाबू, एक बेर ओ नैयायिक अपना स्त्रीएसँ परास्त भ' गेलाह।

कमलाकान्त कहलथिन्ह—से कोना, बाबा ?

भोलबाबा नोसि लैत बजलाह—एक बेर हुनका भोजन करैत काल सोंसे सोंगिया मिरचाइ मुँहमे पड़ि गेलैन्ह। छिलमिला उठलाह। स्त्रीकेँ कहलन्हि— झट द' एक रत्ती चही-चीनी दिअ। स्त्री दौड़ि क' कतय गेलीह तकर पता नहि। तावत नैयायिकक जीभ भकभकाइत रहलैन्ह। जखन बड़ीकालपर स्त्री ऐलथिन्ह त नैयायिक खिसिया क' पुछलथिन्ह—'अहाँ कतय गेल छलहुँ ?' स्त्री कहलथिन्ह— 'हम सोनारक ओतय गेल छलहुँ।' नैयायिक क्रुद्ध होइत पुछलथिन्ह—'एखन सोनारक कोन काज छल ?' स्त्री उत्तर देलथिन्ह—'अहीं कहने छलहुँ जे एक रत्ती चही-चीनी चाही। तँ तुकतीक काज पड़ल।' नैयायिक कहलथिन्ह—'हम आजन्म ककरोसँ परास्त नहि भेल छलहुँ। परन्तु हे सोहागवती ! आइ हम अहाँक लोहा मानि लेल। अहीं हमरा पानि पिया क' छोड़लहुँ।'

चारकका कहलथिन्ह—अहा ! ताहि दिनक स्त्रीओ तेहने अपूर्व होइत छलीह। जेहने बुद्धिवती, तेहने सुन्दरी।

भोलबाबा सेहो कतरा करैत बजलाह—सुन्दरी त तेहन-तेहन छलीह जे वर्णन नहि हो। चन्द्रावती बहुरियाक देह तेना शीशा जकाँ झलकैत रहैन्ह जे हिनकाकेँ कहियो दर्पणक काज नहि पड़लैन्ह। स्त्रीक पीठ पाछाँ ठाढ़ भ' क' अपन मुँह देखि लेथि। कंचनपुरवाली तेहन सुकेशी छलीह जे सासुर गेलीह त एक पहलाने अपने चढ़लीह, दोसरमे केश चढ़लैन्ह। कमलदहवाली एक बेरि पोखरिमे ऐंड़ी माँजय लगलीह से पोखरिक पानि लाल भ' गेल।

सारखंडी बजलाह—हद्द भ' गेल, बाबा !

भोलबाबा ठेंठिआकहलथिन्ह—तों देखलह कहिआ ? फुलकुमारि दाइ तेहन सुकुमारि रहथि जे दही काटने आँगुरमे फोका पड़ि जाइन्ह। एक बेर बलाशापर पैर पड़ि गेलैन्ह त तरवामे ठेला भ' गेलैन्ह। गन्धवारिवाली विशमिकाकें सोहि क' खाथि। मणिपुरवाली इजोरिया रातिमे चलथि त मायपर केराक बीर भ' लेथि जे धाह नहि लागि जाय। आब त ई सभ बात उपन्यास जकाँ लगतौह।

शोभाकान्त बजलाह—हाय रे कोमलता !

भोलबाबा एक चुटकी कतरा मुँहमे रखैत बजलाह—परन्तु ई नहि बुझी जाह जे ओ लोकनि केवल फुलपढ़ैसे होइ छलीह। तेहन-तेहन कलाकौशल जनैत छलीह जे आबक स्त्रीकें हैब दुर्लभ छैन्ह। हिरनीवाली अपना केशोसँ पातर कतरा करैत छलीह। समशमवाली तेहन मेही सूत कटैत छलीह जे धू जोड़ वस्त्र एक छोटकी अणाचीक खोइयामे भरि दैत छलीह। भ्रमरपुरवाली जे पीढ़ी लिखैत छलीह से देखि गलीचाक भ्रम भ' जाइत छलैक। एक बेर नागपंचमीमे साँपक चित्र भीतपर काढ़लनि से ओहिपर सेपनीर पहुँचि गेलैन्ह।

मारकका बजलाह—अहा ! ओ लोकनि यथार्थ गृहलक्ष्मी होइत छलीह। आबक लोकमे ओहन चमत्कार कहाँ।

भोलबाबा कतरा करैत बजलाह—चमत्कार त तेहन-तेहन देखने छी जे कहबौह त गप्प जकाँ बुझि पड़तौह। सरिसबमरिवाली जे ए बनाबथि से तुरुक फाहासँ बेसी मोलायम। मझिलाथपुरवाली तेहन बड़ बनाबथि जे एक रत्ती खोंटि क' मुँहमे दिय' और मैलक थैल पानि पिबैत रहू। पिलखवारवालीकें एक बेर पाहुन ऐलथिन्ह। घरमे केवल चाउरे टा रहैन्ह। परन्तु ई ओहीसँ हलुआ, पूड़ी, तरकारी, चटनी बना क' खोआ देलथिन्ह।

काशीनाथ बजलाह—एकर नाम छैक पाकविद्या।

भोलबाबा बजलाह—हमर अपने सासु एहन फुर्तिगर छलीह जे जतबा कालमे हम हाथी क' क' तीन टा चुटकी बजबै छी ततबा कालमे तीन टा तरकारी तरि लेथि।

मुकुन्द बजलाह—से ओ कोन मंत्र जनैत रहथि ?

भोलबाबा बजलाह—ओ एकके बेर तीनटा दुचुल्हिया जोड़ि क' सभ पर कड़ाही चढ़ा देथिन्ह। तखन जे ओ नाचिनाचि क' सभमे टनटन करछु-तरंग बजाबय लागथि से की मनहर बरबे जलतरंग बजौनाइ ! एके अंशमे हलिस दा अंबार लगा देथि।

रसिकनंदन बजलाह—बाबा ! ओर जे कहिऔक परन्तु आइकाल्हि जेहन हैसन ताहि दिनक स्त्रीगणकें नहि रहैन्ह !

भोलबाबा उत्तेजित भ' गेलाह। जोशमे आबि बजलाह—हाँ, आइकाल्हि कनी मोलमरा चलैं छैक। ताहि दिन असली वस्तु रहैक। पुरसुन्दरी केंडड़ीक गिभरनी तेहन निठ्ठाहि रहथ जे छाती पर कलश ल' क' चलथ त कलशमे छेद भ' जाइक। आबक युवतीकें त अँगुखर्वे देहु छिलाइ छैन्ह।

लंबोदर चौधरी बजलाह—ताहि दिनक लोकमे दोसर छलैक।

भोलबाबा पटुआमे सरौता रखैत बजलाह—यौवन त तेहन दृढ़ होइत छलैक जे बरुआसुन्दरी चौधराइन एकटा हरिण पोसने रहथि। से एक दिन खेलाइत-कुदाइत हुनका छातीमे सिंग मारि देलकैन्ह। ओकर सिंग टूटि गेलैक। ओ टुकड़ा एखन धरि अजायबघरमे राखल अछि। आबक युवतीमे ई सामर्थ्य हैतैन्ह ?

एतबहिमे भीतरसँ खिरो आबि गेल। सभ लोक लोटा ल' क' आङन दिस बिदा भेलाह।

□

घूरपरक गप्प

ओहि दिन भयंकर ठण्ढी लगैत रहय। पारककाक घूरपर बैसल लोक आगि तपैत रहय। बीच-बीचमे तेहन पुरबैयाक झटक उठैक जे लोक सिहरि उठय। काशीनाथ बजलाह – एहने जाड़मे ब्राह्मण बाबा बेचि क' कंबल किनलन्हि। भोलबाबा कहलथिन्ह– हौ, तोरा लोकनि जाड़ देखलह कहिया? जाड़ आएल रहय उनासी इसवीमे। एक बेर जे डाढ़मे पैसल से छौ मास धरि पैसले रहल। सभक दाँतसँ दंततरंग बाजय लगलैन्ह। ढूढ़ बुढ़ाइ ओढ़ि क' लोक सूतय, तैयो देह 'द' अक्षर बनि जाइक।

मधुकांत पुछलथिन्ह – से की बाबा?

भोलबाबा कहलथिन्ह—दाढ़ीमे ठेहुन सटने 'द' अक्षर बनिए जाइ छैक। एहने जाड़मे हमर पीसाकेँ कियो पुछलकैन्ह जे गाछी बेचब? तखन ई उत्तर देलथिन्ह जे हुनका गाछी नहि।

मुकुन्द कहलथिन्ह—बाबा, एकर अर्थ नहि बुझलिऐक।

भोलबाबा बजलाह—एकर अर्थ ईह जे गाछी नहि रहने जारन-काठीक अभाव अछि। काठीक गोबरसँ गोइठा होइत अछि। यदि सेहो नहि रहत त आगियासी कथीसँ करब?

पारककाक कहलथिन्ह—अहा! ताहि दिन बजबाक की चमत्कार रहैक।

भोलबाबा बजलाह—वाक्‌चातुर्य त तेहन रहैक जे एकटा हजाम कुसुमपुर डेवढ़ीक बहुआसिनकेँ छका देलकैन्ह।

श्रोतागण पुछलथिन्ह—से कोना, बाबा?

भोलबाबा नोसि लैत बजलाह—नौआकेँ एक ठाम वर देखबा हेतु पठौलथिन्ह। ओ आबि क' कहलकैन्ह—'सरकार! हुनकर रईसी की कहू? आइ धरि पैदल नहि चललाह, कहियो अनका जमीनपर नदी नहि फिरलन्हि, ककरो 'नहि' नहि कहलथिन्ह, सभकेँ एकहि आँखिसँ तकै छथि।' ई सुनितहि बहुआसिन गद्‌गद्‌ भय

कतरास पठा देलथिन्ह। पाछाँ क' ज्ञात भेलैन्ह जे दुल्हा कनाह, घोंघ आ लोथ छथि, आँगनेमे नदी फिरै छथि।

अजगैबनी नाथ बजलाह – हह! ताहि दिन केहन-केहन धूर्त्त रहय!

भोलबाबा कहलथिन्ह – हौ, धूर्त्त त तेहन-तेहन रहय जे नमोनारायण सौ अक्षर पढ़ल नहि रहथि। तथापि सभ दिन खीरे खा आबथि।

झारखंडी– से कोना, बाबा?

भोलबाबा कहलथिन्ह—हौ, हुनका दुइटा श्लोकक अन्तिम पद अवैत रहैन्ह। एक सहस्रं श्री गुरवे नमः, दोसर पयसामर्णव इव। यजमान सभकेँ बुझा देथिन्ह जे 'सहस्रं' अर्थात् खीर भोजन करा क' 'पयसा' अर्थात् कैंचा देल करह।

मुकुन्द बजलाह—बाप रे! एहन धाहि से बीस!

भोलबाबा नसौता बाहर करैत बजलाह—हौ, मकरन्दावला ज्योतिषी पूरे आठ सँ चालीस रहथि। कोनो स्त्री गर्भवती होइ त भोजपत्रपर 'बेटा न बेटी' लिखि क' यंत्रमे मढ़ि पहिरा देथिन्ह। जौं बेटा होइक त कहथिन्ह—देखू, हम पहिनहि लिखि देने छलहुँ, 'बेटा, न बेटी' अर्थात् कन्या नहि। बेटी होइक त कहथिन्ह जे—देखू, हम लिखि देने छलहुँ जे 'बेटा न, बेटी' अर्थात् कन्या। जौं गर्भपात भ' जाइक त कहथिन्ह —देखू, हम पहिनहि लिखने छलहुँ जे 'बेटा न बेटी' अर्थात् कन्या-बालक किछु नहि।

एतबहिमे झारखंडीकेँ लघुशंका लगलैन्ह। ओ उठि क' कनैलक झोंझमे लघुशंका क' ऐलाह। ई देखितहि भोलबाबा हुनका रेहब शुरू कलथिन्ह –हौ छिः! एकओ चुरू पानियो ल' गेल छलाह?

झारखंडीक सिट्टीपिट्टी बंद भ' गेलैन्ह। भोलबाबा कहय लगलथिन्ह—ई तोहर दोष नहि, युगक दोष छिऐक। ताहि दिन एतेक मर्यादा रहैक जे लोक थपियो करय त ढेका खोलि क'। पानिक संग माटियोक व्यवहार करय। आबक छौंड़ा त ठाढ़े ठाढ़ अर्घ्य दैत अछि।

पं० जी कहलथिन्ह – अहा! ताहि दिनक मर्यादाक कोन कथा!

भोलबाबा बजलाह—मर्यादाक त एतेक विचार रहैक जे हमर पीसा बाह्य-भूमि दिस जाथि त लोटा गिलास दुहू ल' क'। लोक पुछैन्ह जे गिलास किऐक? तखन कहलथिन्ह जे लघुशंकाक हेतु पृथक् पात्र ल' जाइ छी।

ठीडर कें हुँसी लागि गेलैन्ह । भोलबाबा हुँसैत कहलथिन्ह — ठीठी-ठीठी की करैत छह ? बुद्धिनाथ पाठक कहियो स्त्रीकें चश्मा नहि देलथिन्ह जे गाछ पेँड़ प' जैतैन्ह । आइक छौड़ाकें एहना विचार हेतैक ?

तारकका बजलाह — तहि दिनक स्त्रीगणोकें मर्यादाक विचार रहैन्ह ।

भोलबाबा कहलथिन्ह — विचार त तेहन रहैन्ह जे बन्हुराठाढ़ीवाली मोल-म्पाति अपना वेटाक सासुर जाए पड़ैन रहथि । समधिनक हेतु नूआ-लहठी सैंठैत रहथि । केओ कहलकैन्ह जे समधिनक पेटमे बच्चो छैन्ह । तखन ओहि गर्भस्थ शिशुक हेतु अंगा-टोपी और ओती-धजरी इत्यादि वस्तु सीबि क' पठा देलथिन्ह । समधिनो तेहने मर्यादावाली रहथिन्ह । भरियाक संगमे एकटा कुकुर रहैक । तकरो नाङड़िमे एक जोड़ लाल धोती बान्हि देलथिन्ह । आब एहना विचार लोकके हेतैक ?

फोंचाइ पाठक समर्थन करैत कहलथिन्ह — कथमपि नहि । ओहि समय जातिक केहन मर्यादा रहैक !

भोलबाबा बजलाह — मर्यादा तेहन रहैक जे हमरा सन-सन बूढ़ भलमानुस चुटकीमे सिन्दुर नेने भेल फिरथि । जहाँ गोर मांग देखथिन्ह कि लगाड़ि देथिन्ह । बयसमे अपना सासुओसँ जेठ होथि । तैं ताहि दिनक सासु ततेक पर्दा करथिन्ह जे केबाड़क दोगसँ गोरलगीक टका फेंकि देथिन्ह । आ तक सासु त जमायक संग एक्के रिक्शापर बैसि क' बजार करै छथि ।

काशीनाथ कहलथिन्ह — आब तहिलुका रीति-नीति कहाँ रहल ?

भोलबाबा बजलाह — हाँ । हमर जेठका सासु तमकी-सभाकें खिलाड़ियोक आँखिमे काजर क' दैत छलथिन्ह । आबक स्त्रीगण त सभ विधि-व्यवहारकें उठा क' कोठीक कान्हपर राखि देलन्हि ।

तारकका बजलाह — ताहि दिन लोकमें निष्ठा रहैक ।

भोलबाबा — निष्ठा त तेहन रहैक जे केओ तुलादान करय, केओ जीवित श्राद्ध करय । आब त ई सभ बात मूर्खतामे गनल जाइत अछि ।

मधुकांत — आबक लोक कृपण भ' गेल अछि ।

भोलबाबा — हाँ, कृपण त पहिलहुँ एकसँ एक होइ छल । तथापि धर्म-कर्ममे खर्च करितहि छल । मोल्हाइ चौधरिक नाम सुनने छहक ?

श्रोता लोकनि कहलथिन्ह — नहि, हुनकर गप्प कहू ।

भोलबाबा कतरा करैत बजलाह — ओ तेहन मोट रहथि जे जाँघमे जाँघ सटि जाइन्ह । अपन हाथ ओहि ठाम धरि नहि पहुँचैन्ह । तखन खवास शौच करा दैन्ह ।

अजगैबीनाथ बजलाह — हद भ' गेल ।

भोलबाबा दरसैत कहलथिन्ह — तोरा एतबेमे आश्चर्य होइ छौह ? ओ एक दिन पोखरिमे स्नान करय गेलाह त धोधिक तहमे एकटा पोठिया माछ पैसि गेलैन्ह । ओ माछ सात दिन धरि ओहीमे पड़ल रहलैन्ह । जखन सड़ि क' गंध करय लगलैन्ह त एक दिन मालिश वाला खवासकें कहलथिन्ह — रौ, देखहीक त, की छैक ? तखन ओ धोधिक भीतरसँ माछ बहार क' देलकैन्ह ।

मुकुंद पुछलथिन्ह — तखन की भेलैन्ह, बाबा ?

भोलबाबा कहलथिन्ह — ओ चारि मन भारी रहथि । परन्तु जखन तुलादान करय गेलैन्ह तखन दु दिन पहिलहिसँ खेनाइ छोड़ि देलन्हि और जुलाब लेब शुरू कैलन्हि जे कनेक हलुक भ' जाएब तखन तराजूपर बैसब ।

तारकंठी बजलाह — बाप रे बाप ! एहन कृपण !

भोलबाबा कहलथिन्ह — तों एतबेपर अकाहटि तोड़ैत छह ! हुनका सन अभागलो भेलाह जे मंदाग्निवला चर ओहुन लगलाह जे पहुथकमे कम खीर लागत । हमहीलोकनिकें अपना स्त्रीक यौवन नहि देखि होइन्ह ।

श्रोता सब पुछलथिन्ह — से किएक, बाबा ?

भोलबाबा कहलथिन्ह — हाँ, यौवनक उत्कर्ष देखि हुनका भय होइन्ह जे हुनका सिऐबामे बेसी कपड़ा लागि जाएत ।

रसिकनंदन बजलाह — ओ भारी अभागल छलाह ।

भोलबाबा कहलथिन्ह — हाँ अभागल त तेहन-तेहन होइ छथि जे ठाकुर गोवर्धन सिंह भरि राति सासुरमे ओंदाके पसैत रहि गेलाह ।

श्रोतालोकनि उत्सुक भए पुछलथिन्ह — से कोना, बाबा ?

भोलबाबा कहलथिन्ह — जखन प्रथम रात्रि कोबरमे गेलाह त बूझि पड़लैन्ह जे खाट किछु छोटगर अछि । बस, रस्सी उघाड़ि क' फेरसँ बूनय लगलाह । ओहिठाम नवरोहुना वधू भरि राति ठाढ़ि रहलथिन्ह । जखन भोर भेलापर ओ बहरा गेलाह तखन जा क' हिनकर खाटि पुरलैन्ह ।

मोहेलाल बजलाह — हह ! संसारमे केहन-केहन बुड़िबक होइ अछि ।

भोलबाबा कहलथिन्ह — हाँ बुड़िबक त तेहन-तेहन होइ अछि जे हमरा रीबल परदेश गेलाह त स्त्रीक कोठरीमे ताला लगौने गेलाह ! लेकिन स्त्रीयो होशियारि रहथिन्ह । दोसर कुंजी बनवा लेलथिन्ह ।

मुकुन्द बजलाह—हः, एहनो एहन अथाह बुद्धि होइत अछि !

भोलबाबा कहलथिन्ह—हम त एक सँ एक नकडुब्बा देखने छी। लाला गन्दनलालक बेटा कें गुरु अक्षर सिखबैत रहैन्ह—त थ द ध न। ई सुनि ओ गुरुजी कें बरखास्त क' देलथिन्ह।

काशीनाथ—से किऐक, बाबा ?

भोल०—हुनकर इच्छा रहैन्ह जे बेटा 'द ध न' नहि पढ़य, 'ल ध न' पढ़य। अर्थात् लेबाक हाल जानय, देबाक नहि। तें ओकरा नाम मे केवल 'ल' अक्षर भरि देलथिन्ह—लाला लल्लूलाल।

मधुकान्त—हद्द रहथि !

भोल० तें एकटा पंडित हुनका पर श्लोक बनौलकैन्ह

आदौ नकारः परतो नकारः
मध्ये नकारेण हृतो दकारः
त्रिभिर्नकारैः परिवेष्टितस्य
का दानशक्तिर्वद नन्दनस्य

अर्थात् आदियो मे 'न', अन्तो मे 'न'। बीच मे एकटा 'द' अक्षर छैन्हो, त ओकरा पर 'न' सवार। तखन तीन-तीन नकार सँ युक्त 'नन्दन' कें दान करबाक शक्ति कहाँ सँ औतैन्ह ?

यारकका कहलथिन्ह—अहा ! केहन-केहन अपूर्व पंडित होइत छलाह !

भोलबाबा बजलाह—पंडित त तेहन-तेहन होइत छलाह जे जतबा कालमे एकटा ढेप फेकल जाय ततबा कालमे समस्या पूर्ति क' देथि। ललितपुरक एकटा पंडित श्लोक बनौलन्हि :—

नाना नाना नना नाना निन्नी निन्नी निनी निनी।
नुन्नू नुन्नू नुनू नूनू नानानिन्नी नुनुन्नुनुः।

आबक पंडित कें एकर अर्थ लगाबय कहूंह त कटहर, चूड़ा, अखोट, तीनू खसय लगतैन्ह।

पं० जी बजलाह—एहि मे कोन संदेह ? आब ने ओहन पंडित रहलाह ने ओहन शास्त्रार्थ।

शास्त्रार्थक नाम सुनि भोलबाबा कें और बेसी जोश आबि गेलैन्ह। बजलाह —शास्त्रार्थी त तेहन-तेहन होइ छलाह जे धुरंधर शास्त्री आजन्म खड़ाम नहि पहिरथन्हि।

काशीनाथ पुछलथिन्ह—से किऐक, बाबा ?

भोलबाबा कहलथिन्ह—ओ पुछथिन्ह जे कोन खड़ाम पहिने पहिरू ? लोक कहैन्ह दहिना। तखन पुछथिन्ह जे बामा किऐक नहि ? लोक कहैन्ह बामा। तखन पुछथिन्ह जे दहिना किऐक ने ? एहि प्रश्नक कहियो समाधान नहि भ' सकलैन्ह। तें हुनू पबाइ खड़ाम ओहिना पड़ले रहि गेलैन्ह।

फौंचाइ पाठक बजलाह—अहा ! ताहि दिन केहन-केहन विषय पर शास्त्रार्थ चलैत छल !

भोलबाबा कहलथिन्ह—शास्त्रार्थ त एहन-एहन विषय पर चलैत छल जे तखन घट फूटि गेल त ओकर 'घटत्व' कहाँ गेल ? शालग्राम चोरौने पाप हो वा पुण्य ? गंगास्नानक काल कुश्ह फेकबाक हो त कतय फेकी ? स्त्री कें मोक्ष हो वा नहि ?

मधुकान्त पुछलथिन्ह—बाबा, अन्त मे की फरियाएल ?

भोलबाबा अन्त मे यैह निर्णय भेल जे जखन स्त्री कें मोछ पर्यन्त नहि होइ छैन्ह तखन मोक्ष कहाँ सँ भ' सकै छैन्ह ?

फौंचाइ पाठक बजलाह—अहा ! की विलक्षण युक्ति !

भोलबाबा नोसिदानी बाहर कैलन्हि। दुनू पुड़ामे नोसि कोचैत बजलाह—शास्त्रार्थ त तेहन-तेहन देखने छी जे आइ लोककें विश्वासो नहि हैतैक। एक बेर काली मंदिरमे शास्त्रार्थ छिड़ल जे स्त्रीशिक्षा होमय चाही वा नहि ? कारी बैसबाक पक्ष रहैन्ह जे होमक चाही। उज्जर केश बजाक पक्ष रहैन्ह जे नहि होमक चाही। दुनू दिसतँ युक्ति एवं प्रमाणक वर्षा होमय लागल। १ बजे दिन सँ जे शास्त्रार्थ चलल से राति मे ११ बाजि गेल। एक अढ़ैया नोसि खर्च भ' गेल तथापि फरियाएल नहि। तखन एकटा मध्यस्थ मानल गेलाह जिनकर आधा कारी आधा उज्जर रहैन्ह। ओ मध्यम मार्गक अवलंबन करैत तालपत्र पर सिद्धान्त लिखलन्हि :—

कुचोद्गमावधिः पाठः बालिकानां विधीयते।

अर्थात् कन्या लोकनि तावते धरि पढ़थि यावत् पर्यंत यौवन अंकुरित नहि होइन्ह। ओ तावत्त प्राय: औबन धरि दछिनगा में हैबे करत। परन्तु आब जों ओ पंडित लोकनि आबि क' देखितथि त डामहि चाउन्ह आबि जइतैन्ह।

श्रोता लोकनि कें रस लैत देखि भोलबाबा उद्भासेँ पुन: मरीता बहार कैलन्हि। तखन कतरा करैत बजलाह—एक बेर त एहन शास्त्रार्थ उठल जे लाठिए चलि गेल। कोनो बरियात रहैक। ताहि मे 'कन्यादान' पर शास्त्रार्थ बजरि गेलैक। बरियातक दिससँ एकटा दिग्गज पूर्वपक्ष उपस्थित कैलन्हि जे कथं नाम कन्यादानम्। 'दान'क अर्थ अपना वस्तुक स्वत्व त्यागि दोसराकेँ अर्पित करब। आब बाबू जे कन्यादानसँ पूर्व कन्यापर पिताक स्वत्व रहै छैन्ह वा नहि? यदि 'हँ', त मानिए पड़ि जाइत छैन्ह, यदि 'नहि' त फेर दान करबाक अधिकार कोना हैतैन्ह?' हौ बाबू, एहि पर जे घनघोर मचल से कहाँ धरि कहिऔह? कन्यापक्षमे खलबली उठि गेल जे ई मामला पानि उतारि लेलक। सरियाती कैं जखन उत्तर नहि फुरलैन्ह तखन बरियाती पर लाठी चलाबय लगलाह। फतेक कपार फूटल तकर ठेकान नहि। तखन एकटा नव्ये दर्शक सिद्धान्तगजकेसरी खरखरिया पर ठनाओल गेलाह। हुनका पानीमे आधा पाव बाहो तेल पचाओल गेल। एक भरि चोआ बला नसि हुनका नाकक दुनू पूरामे कोंचल गेल। चारि गोटा भरसाहा द' क' हुनका ठाढ़ कैलक। तखन ओ उत्तर पक्ष करय लगलाह—मानि लिअ जे एकटा भूमि अछि। ताहि भूमि मे एकटा नारिकेर वृक्ष अछि। ताहि वृक्षमे फल लागल अछि। ताहि फलक भीतर मे जल अछि। आब मानि लिअ जे भूमिपत्ता भूमिदान करै छथि। तखन ओहि भूमिक संगहि ओहि जलक दान सेहो भ' जाइत छैन्ह। वृक्ष जे तहते'''तहते'''तहते''!

ई समाधान सुनितहि सनातन धर्मक जयजयकार होमय लागल।

श्रोता लोकनि चकित विस्मित ओ अवाक् छलाह। पं० जी बजलाह—बाह! केहन-केहन बेजोड़ पंडित ओहि समय मे होइत छलाह!

भोलबाबा बजलाह—पंडितक कोन कथा, हुनक खवास पर्यन्त तार्किक होइत छलैन्ह। पं० चूड़ामणि झा सोंटन खवास सँ परास्त रहथि।

काशीनाथ पुछलथिन्ह—से कोना, बाबा?

भोलबाबा—एक दिन पं० जी कहलथिन्ह जे औ, वैद्य क ओहिठाम जा क' दबाइ ल' आ। ओ पुछलकैन्ह—यदि वैद्यजी नहि होथि, तखन? पं० जी कहलथिन्ह

'अरे, हैबे करताह औ।' ओ पुछलकैन्ह—यदि हुनका दबाइ नहि होइन्ह, तखन? ई कहलथिन्ह—हैबे करतैन्ह, औ। ओ फेर पुछलकैन्ह—यदि दबाइ नहि देथि तखन? ई कहलथिन्ह—देबे करथुन्ह, औ। तथापि ओ हारि नहि मानलकैन्ह। पुछलकैन्ह—यदि दबाइ फायदा नहि करय, तखन? ताहि पर पं० जी निरुत्तर भ' गेलाह। जहाँ कोनो काज अढ़बथिन्ह कि एहिना तर्क करय लगैन्ह।

फोंचाइ पाठक बजलाह—ताहि दिनक मूर्खो एहन वाक्चतुर होइत छल!

भोलबाबा कहलथिन्ह—वाक्चतुर त तेहन होइ छल जे टेकुआ तेलो पं० टेकनाथ शास्त्री कें चुप्प क' देलकैन्ह।

मुकुंद पुछलथिन्ह—से कोना, बाबा?

भोलबाबा कहलथिन्ह—हौ, टेकनाथ शास्त्री तेलीक ओहिठाम गेलाह। कोल्हुक बड़दक गरमे घंटी बान्हल देखि पुछलथिन्ह—रौ, ई किऐक? ओ कहल-कैन्ह—जखन ई चलैत रहै अछि त घंटी बजैत रहै छैक, ताहि सँ बुझि जाइत छिऐक जे काज भ' रहल अछि। शास्त्रीजी शंका कैलथिन्ह—और यदि ई ठाढ़-ठाढ़ घंटी डोलबय लगैक, तखन? तेली तुरंत जवाब देलकैन्ह—सरकार, ई बड़द न्यायशास्त्र नहि पढ़ने छैक।

मारकण्डा बजलाह—औखन खिड़कीओ सँ पैल फूटि जाइ छैक।

भोलबाबा बजलाह—से त हैबे करैत छैक। हमर माम शास्त्रार्थमे दिग्विजय कैने छलाह। हुनकर प्रण छलैन्ह जे हमरा जे हरा देत तकर आजीवन चाकरी करबैक। परन्तु एहन संयोग जे एक दिन हमर मामिए हुनका परास्त क' देलथिन्ह।

श्रोतागण उत्सुकतापूर्वक पुछलथिन्ह—से कोना?

भोलबाबा कतरा मुँहमे दैत बजलाह—हमर माम सभ दिन क' विद्यार्थी कें पढ़बथिन्ह जे—यत्र-यत्र धूमः तत्र-तत्र वह्निः (जहाँ-जहाँ धूँआ होइ छैक तहाँ तहाँ आगि होइ छैक)। नित्य भानस घरसँ ई सुनैत-सुनैत हमर मामीक जी अकच्छ भ' गेलैन्ह। ओ एक पैलमे धूआँ जमा कय सरबासँ मुँह मूनि देलथिन्ह। जखन हमर माम दलानपर पढ़बैत रहथि—यत्र धूमः तत्र वह्निः, तखन ओ ओहीठाम पैल पटकि क' पुछलथिन्ह—अत्र धूमः कुत्र वह्निः (एहिठाम त धूआँ अछि आगि कहाँ अछि?) गुरु ओ विद्यार्थी अवाक् रहि गेलाह। किछुओ जवाब नहि फुरलैन्ह। तहियास हमर माम प्रतिज्ञानुसार दुनू साँझ चूल्हि फूकय लागि गेलाह।

मधुकान्त बजलाह—आइ दिनक लोक केहन वचननिष्ठ होथि !

भोलबाबा—वचननिष्ठ त तेहन होथि जे एक बेर सत्यदेव झा धोखा सँ अपना बहु कैं 'भौजी' कहि देलथिन्ह। तहियासँ ओ आजीवन स्त्रीकँ पैर छूबि क' प्रणाम करैत रहि गेलाह।

काशीनाथ—अहा ! धन्य छल ओहि समयक विचार।

भोलबाबा—विचार त तेहन छल जे नवतुरवाली कनियाँ अगिलगी मे जरि क' मरि गेलीह, परन्तु कुल-लज्जाकेँ त्यागि घरसँ बाहर नहि पड़ैलीह।

धारकका—वाह रे कुलकन्या !

भोलबाबा—कुलकन्या त तेहन होइ छलीह जे वयूजन चौधरि भोजन करैत रहथि। हुनक भाभहु कोठीक पाछाँ लुका क' बैसल रहथिन्ह। आहिठाम एकटा जुआएल गहुमन हुनका देह मे लपटि गेलैन्ह। परन्तु किऐक एकोबेरि मुँह सँ सिसकीओ बहरैतैन्ह ! जा चौधरीओ भोजनक आस्वादन कए अचावक हेतु दलान पर गेलाह ता ओ निर्जीव भ' खसल छलीह।

पं० जी—अहा हा ! एकर नाम मर्यादा।

भोलबाबा—मर्यादा त तेहन छल जे मणिपुरक रानी महफा मे चढ़ि अबैत रहथि। धोखा सँ कनेक रानीक कनगुरिया आँगुर बाहर भ' गेलैन्ह। ई देखिताहि अंगरक्षक सिपाही खच्च द' तरुआरि सँ ओतबा अंश काटि देलकैन्ह। जाहि आँगुर पर परपुरुषक दृष्टि पड़ि गेल, जकर पातिव्रत्य नष्ट भ' गेल, से अंश शरीर मे रहिए क' की करत ? जखन राजाकेँ ई समाचार ज्ञात भेलैन्ह त ओहि सिपाहीकेँ इनाम मे जागीर लिखि देलथिन्ह।

मुकुन्द बजलाह—अहह ! ओ दिन आब फेरि आबि सकत ?

भोलबाबा हुनका डँटैत कहलथिन्ह—चुप्प रहह। आब स्त्रीगण कुर्सी पर बैसय लागलि अछि। पुरुषक संग जेंति खाय लागलि अछि। घोड़ा पर चढ़य लागलि अछि। बन्दूक चलाबय लागलि अछि। फाँड़ भीड़ि क' दौड़ैत अछि, कुदैत अछि, फनैत अछि, हेलैत अछि, नचैत अछि। केवल एकटा काज बाँकी रहि गेलैक अछि। पुरुषकेँ गर्भ कराइ। सेहो किछु दिनमे कइए देतैन्ह। जखन एतेक अनर्थहु होमय लागल अछि त कोना भगवानकेँ देखल जाइन्ह ! एहाइत वर्षा नहि होइ अछि, एहाइत अकाल पड़ै अछि, एहाइत भूकंप होइ अछि ! परन्तु आब हमरा जीवहुक कतेक दिन अछि ?

ई कहैत भोलबाबा अपन दुइनरा मिरजइक ऊपर खलगा लपेटैत उठि बिदा भेलाह और मंडली बरखास्त भ' गेल। □

पोखरिपरक गप्प

ओहि दिन भोज खा क' लोक फिरल चल अबैत रहय कि मधुमाही पोखरि लग वर्षा झहरय लगलैक। लोक पड़ा क' ब्रह्मस्थान तर आबि बैसल। मड़ैयामे बड़का सौंके पसरल रहैक से लोक सँ भरि गेल।

लंबोदर चौधरि बजलाह — हह ! गर्मी सँ मिजाज अकबकबक छल। आब जा क' ठंढा भेल।

दीर्घनारायण कहलथिन्ह — आब एही पुरबैयाक लहरा पर सभ टा मालदह पकि जाएत।

'ओतेक मालदह त लंबोदरके' एसके सपोने साफ क' देतैन्ह' ई कहैत भोलबाबा सेहो ओहि गोष्ठी मे आबि सम्मिलित भेलाह।

भोलबाबाक स्वर सुनितहि सभ केओ उल्लसित भ' उठल।

'आउ बाबा, आउ बाबा' कहि सभलोक हुनका हेतु स्थान बनाबय लगलैन्ह।

भोलबाबा बीच मे सुभ्यस्त भ' बैसि गेलाह। तखन बजलाह— लंबोदर खैबे की कैलन्हि अछि ? बहुत त पचास टा आम। हमर पोसा दैला पितजीक दाद सँ मालदह देखि लेथिन्ह। हुनकर भोजनक ई हिसाब रहैन्ह जे —

तीस सोहारी तरकारी संग
दही - दूध संग तीस
मधुर केर जौं लसफस पाबी
तँ रे चालीस।

एही द्वारे ओ 'चालीसा झा' कहबै छलाह।

भुटकुन बजलाह—बाप रे बाप ! एहन खाधुर लोक !

भोलबाबा बटुआ सँ सुपारी-सरौता बहार करैत बजलाह: अपहारि की बोढ़ैत छह ? सतलखा क डोंड़ाइ पाठक तेहन रहथि जे एक बेर मखाइक साथ संग एक पसेरी गुड़ फाँकि गेलाह। हुनकर सिद्धान्त रहैन्ह जे—

खस्सी छाँछ कटहर
तीनू खाइ एकसर।

कटहर, ताबत आ रहैत मटकूर हुनका लोकनि भेल सकैछ।

नवीनाथ बजलाह — धन्य रहथि — कहिओ पेटो नहि दुखैन्ह ?

भोलबाबा कतरा करैत बजलाह — कटहर सँ अजीर्ण होइन्ह त एक घौर केरा खा लेथि। केराक अजीर्ण होइन्ह त ऊपर सँ दू चहा चून पीबि लेथि।

दीर्घनारायण बजलाह — ताहि दिनक हाड़काठ दोसर रहैक। आबक लोक की खाएत ?

काशीनाथ कहलथिन्ह — से पुनि रहु, भाइ। अहूँ आइ एक पसेरी दही सँ कमन नहि खाइत हैबैक।

झारखंडी बजलाह — दही छलैहो बेजोड़ विलक्षण। एहन दही हम आइधरि नहि खैने छलहुँ।

भोलबाबा दूध घुटकी कतरा मुँह मे दैत बजलाह — 'आओन गनमलाह गीदड़, भादव थाएल बाढ़ि, कहलन्हि जे एहन ठाढ़ि कहिओ नहि देखल।' तों कहाँ देखबे कैलह कहिआ ?

झारखंडी गोविन्दनाथ बजलाह — तथापि···

भोलबाबा हँसैत कहलथिन्ह — तथापि की ? दहीक परीक्षा दू तरहेँ होइ छैक। भीत पर फेकिऐक त सटल रहि जाय। नटकूर उनटा क' टाड़ि दिऐक त खसय नहि।

भोजिलाल बजलाह — आब त आजुक दूध बेचल ने ओहन घोरलाहर।

भोलबाबा कतरा चिबबैत बजलाह — दही पौरैत छलीह हमर बड़िया सासु। तेहन सक्कत, जे हाथसँ नहि टारहल छलैक। एक बेर ताइ चड़ेरा मे चौरि क' पार पठौलन्हि। से तेहन कठिन जे ओहिमे सिलुआ गड़ाओल गेलैक से टूटि गेलैक।

अजर्दीनाथ बजलाह — अरे तारीक री तोरी !

भोलबाबा कहलथिन्ह — हौ एलबेमे उजबुला भेलाह ! सारबाड़ीमे हम जेहन देखल से देखितह त बुझितह !

कमलाकान्त पुछलथिन्ह — से की भेलैक बाबा ?

भोलबाबा बजलाह — स्टेशन पर बोराक गेँठ लागल रहैक। हम एकटा टोएलिऐक त बूझि पड़ल जेना गुड़क भेली कसल होइक। तावत् मालगाड़ीमे लादक हेतु कुली सभ पहुँचि गेलैक। पुछलिऐक त कहलक जे दही चलान भ' रहल छै। हम पुछलिऐक जे ई बहार कोना कैल जैतैक ? त ओ बाजल जे छेनीसँ काटि क'।

ई सभ सुनि केर किछुओ रहैत सभाँ तकलाह, साहस नहि पड़लैन्ह।

पोइँत नावर बाद बंबोदर चौधरि बजलाह — अहुँका भात बड़ विलक्षण छलैक। बेस गमकैत छलैक।

भोलबाबा कहलथिन्ह — ई की गमकतैक ? चाउरक नमूना हम लाएल रही दुबहैन सँ। ताहि तौलीमे बासिक' अनलिऐक त के बेर ओविषष्ठासँ भ' आएल, चिरी चिरी फाटि गेल, तथापि ओकर सुगन्ध नहि गेलैक।

कामेश्वर बजलाह — अहा ! ओकर भात की विलक्षण होइत हैतैक ?

भोलबाबा नोसि लैत कहलथिन्ह—राजा लोकक ओहिठाम जे भात पन्हल जाइन्ह तकरा मोरम सँ भनसीया बेहोश भए जाय। चाउरक धोएन गुलाबजल बनि जाइक और माँड़ जे पसाओल जाइक से जमि क' श्रीखंड चंदन भ' जाइक।

मोजेलाल बजलाह — हूँ हूँ। हमरो सासुरमे जे महुअकक खीर भेल रहय से तहिना गमकैत रहय।

भोलबाबा हुनका देखाबैत कहलथिन्ह — बुड़िबक देखलन्हि झाँआ त बुझलन्हि जे देह वृन्दावन छिकैक। हौ मूढ़ि ! ओ चाउर गंधमादन पर्वत पर उपजैत छैक। देवरक निवासीसे। एक योजन धरि ओकर सुगन्ध पसरि जाइ छैक। हरिण चरैत अछि त ओकरा नाभिमे कस्तूरी बनि जाइ छैक। ओ वस्तु एमहर कहाँ पाबी ? तोर सासुरमे केओ ओकर नामो नहि सुनने हैतीह।

मोजेलाल मकदम्म भ' गेलाह। तखन भोलबाबा बजलाह — महारानी द्रौपदी ओकरे खीर बनबैत छलीह। ओकर मोरमे सँ सभक पेट भरि जाइत छलैक। एक चाउरसँ बेसी केओ खा नहि सकैत छल। एही द्वारे द्रौपदीक भंडार कहिओ नहि घटलैन्ह। राजा नल ओही चाउरक पोलाव बनबैत छलाह। ओकरा पुष्पोदन कहैत छलथिन्ह। ई सभ बुझबाक हो त नलपाक दर्पण देखह। संप्रति ओ पोथी नेपालक पुस्तकालयमे अछि।

तावत् बेसी जोरसँ झटक आबय लगलैक। चारूकात कहलथिन्ह — सौंफ कैं लैक और अड़मे सुपरा लइ जैतहुँ त नीक होइत।

सेहू कैल गेल।

लम्बोदर चौधरि गप्पक लड़ी कायम रखैत बजलाह — भोग त क' गेल पहुँचका लोक सभ। आबक लोक कहाँसँ पाओत ?

भोलबाबा पुनः कतरा करैत कहय लगलथिन्ह - नबाब वाजिद अली शाहक दालि अशर्फीए सँ क' छौंकल जाइक। एक कड़ाह घूरमे केवल एक टा कचौड़ी ओकरा हेतु छानल जाइक। नहरेक जे कबाब बनैक से तेहन जे एक कोलीसँ चारि चारि टा हस्तिनीक दर्प दलन करय। एक बेर नबाबक एक खिल्ली पान कोनो गवैया कें खैता गेलैक। से ओकरा देहसे ततेक खौंत फूँकि देलकैक जे माघक राति मे रजाइ फेंकि उघारे अङ्ग फर्शपे जा क' सूतल, तथापि देहसँ पसेना फेंकि देलकैक। तखन पोखरिमे जा क' भरि गर्दन पानिमे ठाढ़ भय राति भरि मलार राग गबैत रहल। ताहि दिनक मसालामे एहन जोर रहैक।

रतिकान्त पुछलथिन्ह - तखन नबाब कें अपना कोना बरदाश्त होइन्ह ?

भोलबाबा कहलथिन्ह - ताही द्वारे ते भोजन भ' ध' क' सीढ़ी पर चढ़थि। चढ़ाइयोमे जाथि त एक हाथ तरुआरिक मूठ पर रहैन्ह, दोसर चोलीक मूठ पर। जखन अइरेज पकड़ि क' पुछलकैन्ह जे कोना मरय चाहैत छी त कहलथिन्ह जे नवयौवनाक उरस्थल तर पिसा क'। तखन कप्तान सोचलक जे हिनका सबसँ भारी सजाय देल जाय। बस, कोनो गलित-यौवनाक लटकल स्तन हिनका देखा देलकैन्ह। ई देखिते बेहोश भ' गेलाह।

रसिकनंदन बजलाह - हइ! ताहि दिनक नबाबी!

भोलबाबा कतरा मेहिपर्चैत कहलथिन्ह - नबाबक गप्प छोड़ह। एही ठाम कुसुमपुर डेउढ़ीक बबुआन लोकनि जे बबुआनी क' गेल छथि से हमरा आँखिक देखल अछि। फूलबाबूक पानमे कहियो चून नहि पड़लैन्ह। दालिमे हरदि नहि देल गेलैन्ह। हुनक धोती खबास नहि खिचलकैन्ह। कहियो जल ल' क' अधुआंबा नहि कैलन्हि।

काशीनाथ बजलाह—एकर अर्थ नहि बुझलिऐक, बाबा!

भोलबाबा बजलाह - अर्थ ईह जे पानमे मोतीक बुकनी देल जाइन्ह। दालि मे केसर पड़ैन्ह। धोती फेरथि से पुनः धोबिएक घर जाइन्ह। अधुआंबा गुलाबजल सँ करथि।

दीर्घनारायण बजलाह - एहन बबुआनी ठाठ!

भोलबाबा उत्साहित भयबाजय लगलाह - हीराजी जे कुकुर पोसने रहथि तकरा खातिर बिलायतसँ मांसक पार्सल अबैक। मोतीबाबूक हाथीक माथमे सभ दिन चमेलिएक तेल लगैन्ह। लालबाबूक पैखानामे चंदनक पोचड़ा पड़ैन्ह। जवाहर साहेब कैं जाड़ होइन्ह त पँचाक नोट जराक' पैर सेदथि।

अवधेशीनाथ बजलाह - बाप रे बाप! ई गप्प सुनि त किछु फुरितहि ने अछि।

भोलबाबा कहलथिन्ह—फुरतौह कोना? बिहारी बाबूक महफिलमे एकटा बेश्या आएल रहय से अठारह हजारक छक पहिरने रहय। रतनपुर डेउढ़ीक बहु-आसिन साहिबा जे चट्टी पहिरथि ताहूमे एक एक लाखक नगीना जड़ल रहैन्ह। एक बेर कोनो खवासिन पर खिसिया क' एक पथाइ फेकि देलथिन्ह। ओकरे बदौलति ओ एकटा चटकल खोलि लेलक।

घारकका बजलाह—ताहि दिनक ऐश्वर्य दोसर रहैक।

भोलबाबा बजलाह - ऐश्वर्य त तेहन रहैक जे एक बेर छोतन बाबूक नाचघर बढ़कल गेलैन्ह त दस हजार सभ पूँछा चढ़रैलैन्ह। फूदनबाबूकें एकटा दरबारी कहलकैन्ह—सरकार! ई हबदा भरबा दिलिऐक। दोसर गोटे कहलकैन्ह - सरकार चाहथि त रुपैये सँ भरबा सकै छथि। फूदनबाबू कहलथिन्ह - 'ई कोन भारी बात? कोन ईसवीक रुपैया सँ भरबा दिऔह?' लगले पचास बखारी बिक्टोरिया वला रुपया ओहिमे उझिलबा देलथिन्ह। आब के एना क' सकैत अछि?

श्रोता लोकनि चकित भय सप्पक रस लैत रहलाह। तावत् कतहु-कतहु चार चुबय लागि गेलैक। घारकका बजलाह—एहि बेर कहुआल नहि गेलैक। ई ठाम ठाम चूबि रहल अछि। जे गोटा भिजैत होइ से छाता लगा लिय'।

दू एक गोटा छाता तानय लगलाह।

भोलबाबा बजलाह—तोरा लोकनि एतबे पानिसँ घबरा गेलाह? ई त गुलाबजलक फोहारा बूझल जाह। जौं तोरा लोकनि नबाबी सालक वर्षा देखितह त होश उड़ि जइतौह।

नवोनाथ पुछलथिन्ह—केहन वर्षा भेल रहैक, बाबा?

भोलबाबा मोंछ लेत कहय लगलथिन्ह—बाइस दिन बाइस राति एक सुरसँ मूसलधार बरसैत रहि गेलैक। संपूर्ण गाम डूबि गेलैक। तेहन बाढ़ि ऐलैक जे गाछ बृच्छ सभ जलमग्न भ' गेल। एहीसँ बूझि जाह जे एहि पोखरिक भीड़ पर जे बड़क गाछ छैक तकरा ऊपर नाव चलैत रहय। घर-द्वार, चार बखारी मोठुल्ला बहिआइ—सभ कहाँ बहा क' ल' गेलैक तकर पता नहि। जखन कइएक मास बाद लोक अपन अपन घर जोहय आएल त केवल माटीक ढेरी छोड़ि और किछु नहि भेटलैक।

श्रोता समकेँ चकित देखि भोलबाबा पुनः कहलथिन्ह — ताहूसँ बेसी आश्चर्य देखल हमरा आसाममे। ठंढ़ भयानक भार रहैत छैक। हम चुरुटा साठीमे जामुन बिछैत रही। तावत् दक्षिण भागसँ घटा उठलैक। हौ बाबू, की कहियौह! एकेबेर जे धप्प धप्प कबइ माछक वर्षा होमय लागल जे थोड़बे कालमे भरि ठेहुन पथार लागि गेलैक। चारू कात जमाहि नहि देखैक। हमहूँ एक मोटा जिबैत कबइ बीछि कऽ नेने एलहुँ। एक एक कबइ मे एक एक सेरक अंडा बहराएल।

श्रोता समाज सो मुँहबाय लगलैन्ह।

तावत् मटर सन सन बड़ोरी खसय लागल। ताहि दिन श्रोता लोकनिक ध्यान जाइत देखि भोलबाबा कहलथिन्ह — अरे! ई की देखैत छह! बड़ोरी त खसल रहय छेहरि कालमे। हौ बाबू, ओहि बेर जे पाथर पड़ल से किछु कहबा सुनबा योग्य नहि। पहिले पौआ सन सन, तखन सेर सन सन, तत्पश्चात् अढ़ैया सन सन बड़का बड़का बरसय लागल से खेत-पथार घर-वाथ सभ पाटि देलक। किछेक गाममे एको टा खपड़ा साबित रहल! कतेक के माथ कपार फुटलैक तकर ठेकान नहि। गाछ वृक्षक कोन कथा जे चौबटिक गाछ पर्यन्त भुर्रा भुर्रा भऽ गेल।

श्रोतागण केँ साकांक्ष देखि भोलबाबाक उत्साह बढ़ि गेलैन्ह। ओ एक चुटकी नोसि नाकक पुड़ामे कोंचैत बजलाह — एकटा तहूसँ ईसबोक गप्प कहैत छिऔह। ई दक्षिण भर जे मैदान देखैत छहौक ताही दऽ कऽ एकटा बरियात जाइत रहैक। तावत् हौ बाबू! तेहन जोर बिहाड़ि उठलैक जे सब बरियातकेँ उधिया कऽ फेंकि देलकैक। कनियाँ सहित महफा जे उड़िआय लागल से पचास हाथ ऊपर चलि गेल। अन्तमे जाइत जाइत ओहि गाछक फुनगी पर जा कऽ ओ महफा अटकल। कनियाँ डुबकारि छलि। लपकि कऽ चढ़ल डारि पकड़ि लेलक। परन्तु बरक खर-खरियाकेँ उधिया कऽ कहाँ लऽ गेलैक तकर पता नहि लगलैक।

रतिकान्त पुछलथिन्ह — तखन ओहि कन्याक की भेल हैतैन्ह?

रतिनन्दन पुछलथिन्ह — से किऐक? अहाँक जी कचटैत अछि?

भोलबाबा किछु मन पारैत बजलाह — हूँ। ओहो कालक त बात छैक। एक दिन तेहन बवंडर उठलैक जे हमरा दिठीवा खोप केँ उधिया कऽ गंगामे लऽ गेल। ओहिठाम एकटा कुटुम्ब नदी हेलैत रहथि। ओ खोप नर्तैत-नचैत हुनके ऊपर जा कऽ झाँपि लेलकैन्ह। बेचारे बीचमे पड़ि गेलाह। परन्तु बलिहारी कही ताहि दिनक साहस केँ। ओ एक हाथेँ खोप केँ अलगा कऽ ढोप लक्षो पहिरि लेलन्हि और दोसरा हाथेँ सोटा नेने घर पहुँचि गेलाह।

लम्बोदर चौधरि कहलथिन्ह — ताहि दिनक आकारे प्रकार दोसर रहैक।

भोलबाबा बजलाह — से त रहबे करैक। हमर पितिऔत बाबा पीसा खाट पर ठाढ़ होथि त बड़ेरीमे माथ ठेकि जाइन्ह। ओतबाबूक कन्गुरिया आँगुर तेहन मोट रहैन्ह जेहन आब औंठो नहि होइ छैक। ओल्हाइ मामा तेहन जबर्दस्त रहथि जे अपना कपार पर बेल फोड़ैत छलाह। हुनका कहियो चाकू सरौताक काज नहि पड़लैन्ह। सुपारीकेँ दाँतसँ काटि लेथि। नारियरकेँ तरहत्थी सँ दबा कऽ फोड़ि लेथि। एक बेर बलुआकेँ एक लात मारलथिन्ह से ओकर पीठ टूटि कऽ दू फाँक भऽ देलैक।

अजगैबीनाथ बजलाह — अलबत्त निठाह सो लोकनि रहथि।

भोलबाबा कहलथिन्ह — हौ, निठाह त तेहन होइ छलाह जे एक बेर दलमर्दन सिंह पर एकटा हथिनी छुटलैन्ह। हिनका चित्त उठलैन्ह जे ई मौगी भऽ कऽ आन देखतैक। तेहन मुक्का कनपट्टी पर लगौलथिन्ह जे ओकरा ठामहि सिट्टी खसि पड़लैक।

मारखंडी बजलाह — वाह रे बहादुर! मर्द हो त एहन।

भोलबाबा और उत्साहित होइत कहलथिन्ह — एक बेर पशुपति बाबा केँ कोठीमे चोर पकड़ि लेलकैन्ह। ओ ओकरा टाँगमे बान्हि कऽ पिपियोने घर नेने ऐलाह। आब एहन पुरुषार्थ ककरो हेतैक?

दीर्घनारायण बजलाह — अहा! ताहि दिनक की हाड़ काठ छलैक!

पुराण हड्डीक प्रशंसा सँ भोलबाबा केँ जोश आबि गेलैन्ह। दुइ चुटकी नोसि झुड़कैत बजलाह — हमरा पुरखामे एकटा छलाह मेघनाद बाबा। ओ एक बेर लड़ाइमे तरुआरि भाँजय लगलाह त एक दिसतँ सत्रह घोटा केँ काटि कऽ खसा देलन्हि। तावत् हिनको पाछाँसँ केओ तेहन छव मारलकैन्ह जे मुँड़ कटि कऽ नीचा खसि पड़लैन्ह। परन्तु तथापि ई पहिलुके जोश पर आगाँ बढ़ैत गेलाह और दुइ हाथेँ तरुआरि भाँजैत रहलाह। जखन और चारि घोट केँ मारि कऽ खसा देलन्हि तखन जा कऽ होश भेलैन्ह जे गर्दनि माथ पर नहि अछि!

श्रोतागण विस्मय सँ अवाक् रहि गेलाह। भोलबाबा कहलथिन्ह — हौ बाबू, सुतैक भऽ गेलैक। आब चलै चलह।

भोलबाबा सुपारीक बटुआ डाँड़मे खोंसि लेलन्हि और छड़ी छाता लय ठाढ़ भऽ गेलाह।

सभ लोक अपना अपना घरक बाट धैलक। □

रेलक झगड़ा

पहिल दृश्य

[स्थान : स्टेशनक प्लेटफार्म, एक प्रौढ़ा महिला ड्योढ़ा क्लासक जनानी डब्बामे चढ़य चाहै छथि, ओम्हर रेलक भीतर सँ एक नवयुवती दरवाजा छेकि क' ठाढ़ि भ' जाइ छथिन्ह, प्रौढ़ाक पाछाँ कुली माथ पर पेटी बिछौन नेने थकमथक ठाढ़ अछि। तावत् घंटी पड़ि जाइ छैक।]

नवयुवती — एहिमे जगह नहि छैक। आगाँ बढ़ू।

प्रौढ़ा — आगाँ कहाँ बढ़ू? गाड़ी छूटि रहल छैक। (कुली सँ) सामान भीतर धर।

[कुली फुर्तीसँ भीतर सामान राखि दैत छैन्ह। महिला कोनहुना चढ़ि जाइत छथि। तावत् गाड़ी चलय लगैत अछि। आब प्रौढ़ा ओ तरुणीमे बाझि जाइत छैन्ह।]

प्रौढ़ा — कनेक घुसुकि क' बैसू।

तरुणी — हम कनेको नहि टसकब।

प्रौ० — त अहाँ एना पसरि क' कियैक बैसल छी?

त० — हँ, हम चारि धूरमे पसरि क' बैसब। अहाँ के रोकनिहारि? गे माय! तोहू ओहिना ओङठल रह।

वृद्धा माय — गय! कनेक हिनको बैसय दहुन ने। कनेक कसमसे हेतौक त की हेतैक?

त० — से त नहि हेतैन्ह। हम पहिनहि मना क' देने छलिऐन्ह। आब ठाढ़े-ठाढ़े जैतीह।

प्रौ० — से कि हमरा टिकट नहि अछि? ई गाड़ी किछु अहीँक खरीदल त नहि अछि।

त० — एहि बर्थ पर छौ गोटाक सीट छैक और छौ गोटा पहिनहि सँ बैसल अछि। आब एकटा और अहाँ कैं बैसा क' हम अपन देह नहि छिलबाएब।

प्रौ०—एतबा सुकमारि छलहुँ त रिजर्व किऐक ने करवा लेलहुँ !

त०—से पुछयवाली अहाँ के ? हम अहाँकेँ बैसय नहि देब।

प्रौ०—अहाँक चश्मा-घड़ी देखने त लोक नहि डेरा जाएत।

त०—तखन अहाँक मटरदाना ओ बबमूड़ी देखि क' लोक जगह नहि द' देत। बड़ धनिकाहिन छी त अप्पन घर।

वृ०—गए ! झगड़ा किऐक करइ छी ? कनेक बैसय देबहुन त की हेतौक ?

त०—ई त हुनिके ने भ' सकै छैन्ह। ई एहि पर बैसि नहि सकै छथि।

प्रौ०—अहाँ हमरा बैसय नहि देब ? तखन हम देखैत छी, अहाँ कोना रोकैत छी ?

त०—तखन हमहूँ देखै छी जे अहाँ कोना बैसैत छी ?

प्रौ० (बैसैत)—त लिय'। हम बैसि गेलहुँ।

त० (ठमकि क' ठेलैत)—खबरदार ! अहाँ हमरा कोरमे बैसब ?

प्रौ० (पुनः बैसैत)—हम अहाँक कोरमे किऐक बैसब ? अहीं हमरा कोरमे बैसय योग्य छी।

त०—शटप ! अहाँ जनै छी जे हम के छी ?

प्रौ०—केओ रहू। बड़ चकमकी अछि त अपना नोकर पर झाड़ब। ई अखर अंग्रेजी बाजय आबि गेल त लोकके ओकर क' क' नहि बुझैत छिऐक ?

त०—तखन हम अंगरेजी सँ भेंट करा दिय'। उठू एहि ठाम सँ। गेट्स।

(हाथ ध' क' उठाबय लगैत छथिन्ह)।

प्रौ०—अहाँ एक बापक बेटी होइ त उठाउ हमरा एहि ठाम सँ।

(दुनू हाथापाइ म' रहल छैन्ह—कृशाङ्गी तरुणी बारंबार हटैबाक यत्न करै छथिन्ह, परन्तु स्थूलकाय प्रौढ़ा जबर्दस्ती बैसलि रहि जाइ छथिन्ह। एही संघर्षमे प्रौढ़ाक मटरदाना टूटि जाइ छैन्ह ओर तरुणीक कंचुकी मसकि जाइ छैन्ह। दुनू चित्तेँ हाँफि रहल छथि)।

[एकाएक तरुणीक बूढ़ा माय बेटीक पक्ष लय लड़ाइ मे सम्मिलित होइ छथि।]

वृ०—(प्रौढ़ सँ)—अएँ गए ! धमधुसरी। तों हमरा बेटी सँ मल्लयुद्ध करबें ? मारि लोटा कें कपार फोड़ि देबौक।

[ई कहैत बूढ़ी लोटा ल' क' प्रौढ़ा पर छूटैत छथिन्ह। सभ लोक 'हाँ हाँ' करैत अछि। प्रौढ़ा उठि क' ठाढ़ि भ' जाइ छथि। एक कात मुँह क' क' खिड़की दऽ भरगाहा देने रहै छथि। तरुणी दोसरा कात मुँह फेरने बैसलि छथि। गाड़ी दौड़ल जा रहल अछि।]

दोसर दृश्य

[स्थान : पहलेजा घाटक प्लेटफार्म—गाड़ी ठाढ़ अछि]

(एक युवकक प्रवेश)

युवक—माय, उतर ने। घाट आबि गेलौ।

प्रौ०—हँ, कुली कें कहौ, सामान उतारत।

(कुलीक संग दुहू गोटाक प्रस्थान)

प्रौ०—हौ बाबू, तों तेहन जनानी डब्बामे हमरा चढ़ौलह जे सभ दशा भ' गेल।

यु०—से की, माय ?

प्रौ०—हौ, तेहन हड़ाशंखिनी मौगी एकटा ओहिमे छल जे किछहुँ पड़ए नहि दैत छल। आखिर नहिए बैसय देलक।

यु०—कोनो दुब्बकावाली देहाती मौगी छल हेतौक। कोनो-कोनो भारी बज्जाति होइ अछि।

प्रौ०—नहि, से त पढ़लि-लिखलि छौंड़ी छलि। गोर-नार। रेशमी नुआमे फैशन करैक। मुदा आखिरी बदमाश। बुट्टी-बुट्टी चमकैत छलैक। लागलि हमरा पर ऐस-तैस झाड़य। अंगरेजी जनै छलि।

यु०—कोनो-कोनो अंगरेजी वाली नंबरी शैतान होइ अछि। लेकिन ओकरा मरदपुड़कीसँ नहि डेराइ। ऐं ! ई मटरदाना कोना टूटि गेलौक ?

प्रौ०—अरे ! वैह छिनकातोरी करय लागलि। ताहीमे टूटि गेल।

यु०—तखन तोंहू दू धौल कसरर्स किऐक ने लगौलें ?

प्रौ०—से त हमहूँ दू-चारि घुरमेंष तेहन देलिऐन्ह जे छौंड़ी बुझनहि हेतीह। ओ बकबका क' हमर खोपा ध' लेलक। तखन हमहूँ कसि क' पकड़लहुँ

चोटी। जो बुढ़िया बीचमे नहि पड़ैत त हम छौंड़ोकेँ पानि पिया क' छोड़ितहुँ। तखटा अङरेजी घुमरि जइतैन्ह। मुदा बूढ़ाक आगाँ हम की करितहुँ। चुपचाप उठि गेलहुँ।

यु०—(रोषा कय)—कहाँ अछि ओ छौंड़ी? कनेक देखिऐक जे कतेक शान छैक?

नी०—नहि, नहि। जाय दहोक। जे भ' गेलैक से भ' गेलैक। रेलमे एहिना भ' जाइ छैक।

तेसर दृश्य

[स्थान : फाटक प्लेटफार्म— जनानी डब्बाक सोझाँ एक युवकक प्रवेश]

युवक—नीलम! आब उतरैं किऐक ने छह?

नीलम—उतरैं छी, भैया!

(अटैची हाथमे नेने, चोटी ठीक करैत, चश्मा उतारि क' पोछैत छइ। आइ गाड़ीमे तेहन महाभारत मचि गेल जे एखन धरि हकमि रहल छी।

यु०—से की?

नी०—हाजीपुरमे एकटा तेहन बदमाश मौगी चढ़लि जे सीट खातिर हमरासँ झोंटाझोंटी करय लागलि। देखू ने, हमर केश पर्यन्त नोचि नेने अछि।

यु०—हमरा किऐक ने सोर कैलह?

नी०—तावत् गाड़ी चलय लागि गेल रहैक।

यु०—तखन चेन खीचि लितह।

नी०—तकर काजे नहि पड़ल। ओकरा मरैक चेन खिचलासँ काज चलि गेल।

यु०—तोरा त ने किछु कैलकोह?

नी०—मोटकी भारी गब्बर छल। तेहन हाथाबाहि कैलक जे हमर रेशमी कपड़ा मसका देलक।

यु०—लगौलें किऐक ने दू थाप?

नी०—से त गर्दनि ओ छातीमे तेहन निछोरने छिऐन्ह जे मौगीके एखन धरि भकभकाइते हेतैन्ह।

वृद्धा माय—की? ओहि छुच्छी द' कहै छै? हो, ओ छौंड़ी त तेना एकर गर्दनि दबोचने छलैक जे तेना चरोबरो भ' गेलि। जखन हम लोटा ल' क' छुटलहुँ तखन मौगी एकर जान छोड़लकैक।

यु०—(आस्तीन चढ़बैत)—कहाँ गेलि ओ? कनेक देखा त दे।

वृ०—की करबहोक? जाय देह। गाड़ीमे एहिना भ' जाइ छैक। ओर बुझह त लाइल एहो दाइक छैन्ह। कनेक बैसहि दितथिन्ह त की होइतैन्ह? से ई बिड़नी जकाँ नाचय लगलीह।

नी०—हमरा त ओकरा पर तेहन पित्त अछि जे कतहु पबितैक त मुँह नोचि लितैक।

वृ०—ओकरा सँ नहि जितबहीक। तोरा सँ दोबर छौक। ओकरा सँ बाँचि क' रहिहें। कतहु फेर गंगाकात मुठभेर नहि भ' जाउक। ओहो ग्रहण-स्नान करय आइलि हैत।

नी०—माय! से नहि बूझ। हम एन० सी० सी० वाली लड़की छी। खुलता मैदानमे लड़बाक हाल जनैं छी। आब हमरासँ लगतीह त सब मोटाइ गचका देबैन्ह।

चारिम दृश्य

[स्थान : गंगा कात। युवक, वृद्धा ओ तरुणीक प्रवेश]

युवक—माय, जुलुम भ' गेलौक।

वृ०—से की? बौआ!

यु०—आब किछु नहि पूछ। एहन ऐनाइ ब्यर्थ भ' गेलौक। आब सोझे फिरि चल।

वृ०—हौ बाबू, कनेक बुझा क' कहह।

यु०—तखन सुनि लिय'। जाहि मौगीकेँ अहाँ सब मिलि क' मारलिऐक अछि, सैह मिसरक माय छथिन्ह।

वृ०—गे माय गे माय! आब कोन उपाय हेतैक?

यु०—ई त पहिलहि बिचारबाक छल। जखन मिसरक माय कें कन्या निरीक्षण हेतु बजौने छलिऐन्ह तखन त ई ध्यान रहैत जे कोनो अनचिन्हारि स्त्रीसँ झगड़ा नहि बेसाही।

वृ०—हे दैव ! मिसरक माए छथिन्ह ! आब कोन उपाय हैतैक ?

यु०—आब उपाय की हैतैक ? जखन ओ देखतीह जे वैह मरतरिया छौंड़ी कनियाँ छैक और हर बुझतीह जे वैह कनियाँ हमरा माय सँ एतेक ठोंठाठोंठी कैलक…

वृ०—(कनैत-कनैत) हे दैव ! कोन घाता मे चललहुँ से नहि जानि।

नौ०—तों एना कनै छें ? संसारमे दोसर घर-वर नहि भेटतौक की ? जो, हम बियाहे नहि करब।

वृ०—सुनह एकर बात। गय् छौंड़ी, बेसी लनलह नहि कर। तोरा मन सुतरछनि जाहि परसे…

यु०—माय ! एकरे फिऐक फजहति करैत छहीक ? तोंहू त तोटा ल' क' कपार फोड़य लगलहीक। पहिनहि समधि-मिलान क' लेलैं।

वृ०—हाँ, कर्म बिगड़ै छैक त एहिना होइ छैक। कतेक जोगार सँ त ई कथा पटल और जकरे नेहोरा-मिनती करय आइलि छलहुँ तकरे लोह दागि देलिऐक। आब कोन मुँह देखैबैक ?

यु०—अन्हारमे कि तोरा सभकेँ नीक जकाँ देखने हैतौक ? भ' सकै अछि जे नहियो चिन्हीक।

वृ०—भला कहह त। ओतेक रासे गुल्मगुत्थी भेलैक, और मुँह नहि देखने हैत ! कीदन कहै छैक जे सभटा परियोग भ' गेल, और बहुरिया घर घैले अछि !

यु०—तखन त एतबा दिनक कैल घैल सभ टा व्यर्थ !

वृ०—बाबू, बहिन केँ और अङरेजी पढ़ाउ। दू-अक्षर और पढ़ि लेत तखन आब दोसरा बेर घर केँ टीक पकड़ि गाड़ीसँ ठेलि देत।

नौ०—माय, तों एना नहि बाज। हम कि जानि कय ओना कैलिऐक ?

यु०—हमरो ध्यान पर नहि चढ़ल जे मिसर पटोरी लाइन सँ आबि क' एहि ट्रेनमे चढ़ि सकैत छथि। जौं गाड़ीसँ उतरि क' देखितिऐन्ह त ई अनर्थ नहि होइत।

वृ०—एहन आइ धरि कत्तहु नहि भेल हैत। हौ बाबू, हमरा त ओकरा मारिक' कनबाक मन करै अछि।

यु०—आब कनने कोनो फल नहि। ओ लोकनि जावत् आबथि ताहि सँ पहिनहि बेरा-डंडा कूच कय बिदा भ' जाइ। ई बात ठाँयले-ठोपल रहि जाय से नीक। मोटा-चोटा सरियाबह।

पञ्चम दृश्य

[मधुकान्त एवं हुनक मायक प्रवेश]

मधुकान्त—माय ! गंगामाइ बड़ रक्ष रखलन्हि।

माय—से की ?

म०—वैह तिलबिखनी छौंड़ी अहाँक घरमे कनियाँ बनि क' अबैत। से भगवान पहिनहि परिचय करा देलन्हि।

मा०—आ गे दा…ई ! तोरा कोना ज्ञात भेलौह ?

म०—काशीनाथ केँ हम फराके सँ देखलिऐन्ह। संगमे एकटा चश्मावाली छौंड़ी, और पाठी-पाठी बूढ़ि माय। वैह दुनू तोहर ओतेक दुर्दशा कैलकौक।

मा०—हाँ, सत्ये कहै छह।

म०—हम अपना आँखिसँ देखलिऐन्ह अछि। जहिना तों कहै छें तहिना सभटा हुलिया मिलैत छैक।

मा०—हमरा विश्वास नहि होइत अछि। भ' सकै अछि ओहने कोनो दोसर होइक।

म०—बेस, तखन अपना आँखि सँ देखि ले। वैह काशीनाथक पाठी-पाठी स्टेशन दिस जा रहल छौक।

मा०—त हाँ ! सत्ते। वैह छैक। आब की करक चाही ?

क०—करब की ? फिरि चलू। (कुली सँ) हौ, सामान उठाबह।

मा०—हे भगवान् ! हम कतेक उमग सँ आएल छलहुँ। एना बैरंग वापस जैबाक मन नहि करैत अछि।

म०—तखन कि आब ओकरा हाथसँ मारि खैबाक मन करैत अछि ?

मा०—हाँ, जानि क' त कहिए कैने हैत। ओ सभ त अपने ताबे मरल जाइत हैत। रेलक झगड़ा बड़क धधरा थीक।

म० – ई सभ किछु नहि। आब एको मिनट एहिठाम ठहरबाक प्रयोजन नहि। घर जा क' हम काशीनाथ कें सभटा बात लिखि देबैन्ह।

(माय कें गाड़ी मे बैसबैत छथि)

[ओम्हर सँ काशीनाथ, मोलन ओ हुनक माय सेहो दोसरा दरबाजा सँ ओही डब्बामे चढ़ैत छथि। दुहू दल एक दोसरा कें देखि अवाक् भ' जाइ छथि। तरुणी एक दिस ताकय लगै छथि, प्रौढ़ा दोसरा दिस। वृद्धा कोखन एम्हर तकै छथि, कोखन ओम्हर। मुँह सँ कोनो शब्द नहि बहराइ छैन्ह। मधुकान्त एहि मौन कें भंग करै छथि।]

मधुकान्त (काशीनाथ सँ) अहाँ हमरा माय कें एहि तरहें बेइज्जत करबाक हेतु बजौने छलिऐन्ह ?

काशीनाथ (अप्रतिभ होइत)—अनजान मे गलती भ' गेलैक। हम सभ एहि हेतु परम लज्जित छी।

म०—केवल 'हम' कहू। 'हम सभ' किएक कहै छिऐक ?

वृद्धा—(प्रौढ़ा लग आबि)—तखन हमरो अपराध माफ हो। हम नहि चीन्हल।

म०—(प्रौढ़ा सँ) माय ! जे अपनो कसूरी छथुन्ह से तोरा सँ माफी नहि मँगलुन्ह। हमरा त डर होइ अछि जे फेर कतहु बाझि ने जाउ। चल दोसरा डब्बामे।

तरुणी (वृद्धा सँ) —माय ! चल, हमहीं सभ दोसरा डब्बामे चली। एहिमे भरि बाट कटाउझ होइत रहतैक।

वृ० —(तरुणी सँ)—चुप्प अलगटेंटी। ई कथा त भड़कबे कैलौ, आब दोसरो ठाम सुनतौक त हड़कि जैतौक। आब रह भरि जन्म कुमारि !

तरुणी (तमकि कय)—माय ! कुमारि रहब पाप नहि छैक। किन्तु अपना कें हीन क' क' झुकाइ पाप छैक। हम अपना अधिकार खातिर लड़लहुँ त कोन अन्याय कैलहुँ ? दुनू दिस सँ झगड़ा भेल—लड़ी बढ़ी भ' गेलैक—बात खतम।

तखन आब हमहीं सभ किऐ माफी माँगू ? एहि खातिर विवाह होए चाहे नहि होए !

वृ० (प्रौढ़ा कें) –की कहै छी ? आइ-काल्हुक बात देखि किछु कुरितहि त अछि। आब समधिन कहबाक मुँह त नहिए रहल। हम अपना बेटीक दिसतें माफी मँगैत छी।

[एकाएक प्रौढ़ाक नेत्रमे एक दोसर प्रकारक चमक आबि जाइ छैन्ह। जेना कोनो दिव्यज्योति आबि गेल होइन्ह।]

प्रौढ़ा (वृद्धा सँ) –परन्तु हमरा त सिहन्ता होइ अछि जे ई हमरा समधिन कहथि।

वृद्धा (आश्चर्य सँ) –ऐं !

प्रौढ़ा—हँ। हमरो एकटा एहने तेजगरि कन्या रहय। जिबैत रहैत त एतबे टा भेलि रहैत। हमरा एहि कन्याक आँखिमे ओही रूपाक प्रतिबिम्ब देखाइ पड़ै अछि। ई बेटी हमरा द' दिय'।

म० – माय ! तों की बजैत छें ?

प्रौ० –बौआ, हम ठीक कहै छिऔह। एहन तेजस्विनी बेटी हमरा घरमे आबि जाएत त बुझब जे साक्षात् दुर्गा आबि गेलीह।

त० –(तमकि कय) –अहाँकें एना व्यंग्य द्वारा हमरा अपमानित करबाक कोन अधिकार अछि ?

प्रौ० –सासुवला अधिकार। अहाँ बैसबाक हेतु जाहि झगड़ा कैने रही। आब लिय'। हम अपने कोरामे अहाँ कें बैसा लैत छी।

(ओ तरुणी कें भरि पाँज पकड़ि अपना कोरमे बैसा लैत छथिन्ह। तरुणी फफकि-फफकि कानय लगैत छथि)।

वृद्धी—धन्य भगवान् ! अहाँ बड़ पैघ छी।

म०—माय !

प्रौ०—हँ, बौआ ! हमरा कनिया पसिन्न अछि। बड़ भाग्य सँ अहाँ कें एहन रत्न भेटि गेल अछि।

म० : परन्तु ...

प्रौ० —परन्तु-फरन्तु किछु नहि ! एहने वीरांगना पुतहु हमरा चाही।

म०—ई कोन चक्र घूमि गेल ?

प्रौ०—भगवानक चक्र।

त०—माँ, हमर अपराध माफ करू।

म०—आब जाक' हमरा संतोष भेल।

बूढ़ी—धन्य भगवान् ! धन्य भगवती ! हमरा भरोस नहि छल। भगवान एहिना सभक बिगड़ल बनबथुन्ह। समधिन ! हमरा मन होइ अछि जे अहांक मुँह अमृत सँ भरि दी। हमर आशीर्वादी लिय'।

(ई कहैत ओ साजी सँ लड्डू बहार कय प्रौढ़ाक मुँहमे ध' दैत छथिन्ह। प्रौढ़ा सेहो अपना टिफिनकेरियर मे सँ रसगुल्ला बहार करैत छथि)।

प्रौढ़ा (तरुणीक मुँह मे रसगुल्ला दैत)—की गे ? आब त ने हमरा सँ झगड़ा करबें ? जौं झगड़ा करबें त ई ठोर नोंचि लेबौक। (ई कहैत तरुणीक ठोर केँ चूमि लैत छथिन्ह। तरुणी मुसकुरा क' रहि जाइत छथि)।

[गाड़ी सीटी दैत विदा भ' जाइत अछि]। ◻

परिवर्तन

पण्डितजी विद्यालयसँ ऐलाह त देखै छथि जे डेराक ताला बंद अछि। बाहर कलपर पनिभरनीकेँ पानि भरैत देखि पुछलथिन्ह – की गे ! मलकीनी कतय गेलथुन्ह अछि ?

परन्तु ओ जेना सुनबाहिए नहि कैलकैन्ह। चमकि क' घैल माथपर उठौलक और दोसरा दिस विदा भ' गेलि।

तखन पण्डितजी मनचनमाकेँ सोर कैलन्हि। ओ चबूतरापर बैसि तमाकुक गर्दा बनबैत छल। पं० जी पुछलथिन्ह– रौ ! मलकीनी कतय गेलथुन्ह अछि ?

परन्तु मनचनमाक मुँहसँ बातो नहि बहरैलैक।

पं० जी खिसिया क' कहलथिन्ह रौ ! बजैत की होइ छौक ?

मनचनमा किछु तोतिया क' बाजल, परन्तु पं० जीकेँ स्पष्ट बुझना नहि गेलैन्ह। तमसा कय कहलथिन्ह – रौ ! कंठमे महादेव अटकल छथुन्ह की ? एना तरा-वकोर किऐक लानि गेलौक अछि ?

एहि बेर मनचनमा साहस कय बाजल – ओ सिनेमा गेल छथि।

ई सुनितहि पं० जीकेँ लेसि देलकैन्ह। थरथर काँपैत पुछलथिन्ह – कखन गेलथुन्ह ?

मन०—करीब दू-अढ़ाइ बजे।

पं० जी—ककरा संग ?

मन—एहिठामसँ त एसकरिए गेल छथि।

आब पं० जीकेँ नहि रहि भेलैन्ह। मनचनमाक कान पकड़ि कहलथिन्ह— रौ ! तों किएक जाय देलहुन ? तुँ साँझ अढ़ाइ सेर क' गिरै छँ से एही खातिर ? नमकहराम नहितन।

मनचनमा कहलकैन्ह मालिक ! हमर हिसाब द' दिय। आब एहिठाम गुजारा नहि हैत। खेत खाय गदहा, मारि खाय जोलहा !

ई कहि मनचनमा चारमे खोंसल अपन कुर्त्ता उतारि क' पहिरय लागल ।

तावत् पाछाँसँ नहुँ-नहुँ डेग दैत सशंकित चित्तसँ पंडिताइन अबैत दृष्टि-गोचर भेलीह । ओ चुपचाप आँचरसँ कुंजी बाहर कय ताला खोलय लगलीह ।

आब पं० जीक फुफकार छूटल—खबरदार जँ आब एहि घरमे पैर रखलहुँ ।

पण्डिताइन स्तंभित रहि गेलीह ।

पं० जी कड़कि क' पुछलथिन्ह कहाँ कतए गेल छलहुँ ?

पण्डिताइन आर्त्त स्वरमे कहलथिन्ह कनेक 'झाँसीक रानी' देखय चल गेलिऐक । रातिमे त भानस-भातसँ छुट्टी हैब कठिन । तेँ कहलहुँ जे दिनेमे भ' आबी ।

पं० जीक अग्निवर्षा होमय लगलैन्ह—कहाँ सभ टा लाज-धाख घोरि क' पीबि गेलहुँ ! आँखिमे एकोरत्ती पानि नहि रहल ? दिन दहाड़े पैर घालि क' बिदा भ' गेलहुँ ! से की हम मरि गेल छलहुँ ? और सिनेमा कि कोनो तीर्थ छलैक जे पुण्य लूटक हेतु धड़फड़ा क' बिदा भ' गेलहुँ । बाटमे कतेको लोक देखने हैत से सभ की कहने हैत ? हमरा एहिठाम के नाहि चिन्हैत अछि ? कहाँ हमर नाक कटा देलहुँ !

पण्डिताइन गटगट सभटा सुनैत रहलीह ।

पं० जी प्रश्न कैलथिन्ह—ककरा संग छलहुँ ?

पण्डिताइन नम्रतापूर्वक कहलथिन्ह—वोकील साहेबक आइनसँ सेहो छलथीन्ह ।

पं० जी पुनः बाण-वर्षा करय लगलाह—ओकिलाइन इनारमे खसि पड़तीह त अहूँ खसि पड़ब ? सभ सखी झुम्मर पाड़य, सुरही कहय हमहूँ । कहाँ सिंह कटा क' पड़हमे मिझराइत छी ? खंजन चललीह बगराक चालि, अपनो चालि बिसरि गेलीह ! देसी कुत्ती, विलायती बोल ! कहाँ नव-नव चालि सिखैत छी ? सिनेमामे एकसँ एक गुंडा-लबारा रहैत अछि । बिना पुरुषेँ कैओ नीक घरक स्त्री ओतय जाइ अछि ? ओहिठाम टिकट के कटौलक ? कैओ चिन्हार त नहि भेटल ?

पण्डिताइन किछु साहस क' कहलथिन्ह—टिकट त हम अपने कटा लेलिऐक । और चिन्हारमे एकटा कविराजकेँ देखलिऐन्ह ।

पं० जीक क्रोधाग्निमे जेना घृत पड़ि गेलैन्ह । कविराज जी हुनक अनन्य मित्र छलथिन्ह । आइ ओ पण्डिताइनकेँ अपनहिसँ सिनेमामे टिकट कटबैत देखि मनमे की बुझने होइथिन्ह ? पं० जी ग्लानिसँ मरय लगलाह । क्रोधान्ध

होइत बजलाह—कुलटा ! राक्षसी ! बाप भरि जन्म सामवेद पाठ कैलथिन्ह और ई हुन कुलक मर्यादा धो बहा क' कर्मनाशामे भसा ऐलीह ! भला कविराज जी की कहने हैताह ? आइ हमर पाग खसि पड़ल !

पण्डिताइन अपराधिनी जकाँ मूर्तिवत् ठाढ़ि रहलीह ।

पं० जी हुनका दिस आग्नेय नेत्रसँ तकैत बजलाह—अहाँ एखन निकलि जाउ हमरा घरसँ । अपन मोटा-चोटा बान्हू और जहाँ मन होय चलि जाउ । तावत् पर्यन्त हम एहि घरमे अन्न-जल ग्रहण नहि कय सकै छी ।

ई कहैत पं० जी तमकि कय कविराज जी दिस बिदा भेलाह । थोड़बे दूर पर कविराज जीक बासा रहैन्ह । जखन पं० जी हुनका पछुआड़मे पहुँचलाह त भीतरसँ कविराज जीक उत्तेजित स्वर सुनाइ पड़लैन्ह । पं० जी कान पाति क' सुनय लगलाह ।

कविराज जी अपना पत्नीपर बरसि रहल छलाह—अहाँ भरि जन्म मूर्खा रहि गेलहुँ ! हम कहैत छी जे अहूँ ओ फिल्म देखि आउ । आइ आखिरी दिन छैक । परन्तु अहाँकेँ साहसे नहि होइत अछि । बिना रखबारकेँ कतहु जाइए नहि सकैत छी । मालजाल जकाँ सभठाम एकटा चरबाह चाही । एहि पशुजीवन सँ त मरणे नीक ।

पत्नी मेही स्वरमे उत्तर देलथिन्ह सिनेमामे कतैक लोक रहैत छैक । गुंडा लबारा ....

कविराज जी भाषण देमय लगलाह—गुंडा लबारा कि अहाँ के उड़ा क' ल' जाएत ? लोक देखि लेत ताहिसँ कि अहाँक सौन्दर्य खिया जाएत ? जे देखत तकरा अहूँ देखि लेबैक । अपनाकेँ लोक क' क' बूझू । ई बीसम शताब्दी थिकैक । दुनियाँ बहुत आगाँ बढ़ि गेल छैक । आब ओ युग नहि छैक जे 'पैर देथि नहि चौखट बाहर, नहि एकसरि बहराथि । आनक आङन अपर द्वीप सम जानि न कौखन जाथि ।' बल्कि आब ओ समय आबि गेल छैक जे 'पैर देथि ओ चौखट बाहर, खूब एकसरि बहराथि । घर आङन सन बूझि रेलकेँ, कलकत्ता चलि जाथि ।' और सिनेमा हाउस त एहि ठामसँ पाँच मिनटक रास्ता छैक । जखन हम कहै छी तखन अहाँकेँ तारतम्य किएक होइ अछि ?

पुनः मेही आवाज सुनाइ पड़ल—हमरा बुतेँ एसगरि जाएब पार नहि लागत । कैओ चिन्हार भेटि जाएत त की कहत ? नहि, नहि, हमरा सँ ई नहि हैत । एहि सँ बरु कंठ दबा क' मारि दिय' ।

कविराजजी और अधिक उत्तेजित होइत बजलाह—मूर्ख ! साहसहीना ! हमरा खातिर कहाँ बचाएल छलहुँ ? एहीठाम पण्डिताइनकेँ देखू ! आइ मैटिनी-शो मे देखल—की शान सँ आ क' सेकेण्ड क्लासक टिकट कटौलक ओ बाइ। की चुस्की ! की फुर्ती ! की तेजी ! हम दू-मिनट धरि देखिते रहि गेलहुँ। और एक बात छी ! घंटा भरिसँ हम कहि रहल छी जे अहूँ भ' आउ, देखबा योग्य 'पिक्चर' छैक परन्तु अहाँक पैरे नहि उठैत अछि। अपना-अपना कर्मक बात पंडितबा अपने ओहन मूसकौल अछि, तकर स्त्री त' एहन होशियार और हमरा कपारपर बड़ी सन बेवकूफ। धन्य भाग्य पण्डितबाक छैक जे ओहन स्त्री-रत्न भेटलैक अछि। झाँसीक रानी सन निर्भीक ! ओहन वीरांगना हमरा भेटैत त पूजा करितिऐक। ओकर पैरधोअनो एहि जन्ममे अहाँकेँ भय लगैत अछि ?

ततः पर मैंही कंठसँ सिसकब प्रारंभ भेल और कविराज जीक खड़ाम जोर सँ खटखटाय लगलैन्ह। आब पं० जी ओहिठाम रहब उचित नहि बुझलन्हि। चुपचाप घसकलाह और बाजार होइत डेरा दिस ऐलाह।

पं० जी अपना फाटकपर पहुँचै छथि त देखै छथि जे एकटा रिक्शा लागल अछि और मनचनमा ओहिपर पेटी चढ़ा रहल अछि। पुछलापर कहलकैन्ह—मलकीनी एही ट्रेनसँ नैहर जा रहल छथि।

पं० जी कहलथिन्ह—आब नैहर जैबाक काज नहि। पेटी उतार। और हे ! ई दोना द' अबहुन ! ओ दुइए बजेसँ पियासल होइथुन्ह से कहुन जे पहिने जलखइ क' लेथि। □

युगक धर्म

रमेश बाबू, ओ कन्या साक्षात् लक्ष्मी थीक। देखबामे दुर्गाक मूर्त्ति, शील-स्वभावमे गंगा। भोजन करयबामे अन्नपूर्णा। कहाँ धरि वर्णन करू? भोरे उठि फूल तोड़ैत अछि। गोसाउनि नीर सिपैत अछि। अर्घी-सराइ मजैत अछि। स्नान कय भगवतीक पूजा करैत अछि। ई सभ कार्य सूर्योदयसँ पहिनहि कय लैत अछि। किऐक ने हो! कंठ केहन छैक! एक पक्षसँ पछुआ पाजि, दोसर पक्षसँ नरहा पाजि। दुर्गापाठ जे करैत अछि से अहा हा! की शुद्ध-शुद्ध पवित्र उच्चारण जे सुनिते रही! राति मे रामायण महाभारत पढ़ि कऽ आङनमे सुनबैत अछि। ओर ताहिपर विनीत केहन जे बिना माय-पितियाइनक पैर दबौने कहियो सूतति नहि। सलज्ज तेहन जे बापोसँ भरि मुँह नहि बजैत अछि। रमेश बाबू! ओहन कन्या विश्वमे दुर्लभ अछि। यदि ओ अहाँक घरमे आबि जाय त अपन भाग्ये बूझू।

एतबा कहि पं० चतुरानन झा रमेश बाबूक मुखाकृति लक्ष्य करय लगलाह जे एहि वक्तृताक केहन प्रभाव हुनकापर पड़लैन्ह अछि। परन्तु रमेश बाबू पूर्ववत सिगरेटक धूआँ उड़बैत रहलाह। पुनः हाथक घड़ी देखि बजलाह—पं० जी, अब टेनिस का टाइम हो गया अच्छा, नमस्ते।

ई कहि रमेश बाबू रैकेट नचबैत विदा भऽ गेलाह। पं० जी एक मिनट धरि मुँह बौने ठाढ़ रहलाह। तत्पश्चात् पाग पहिरि क्षुब्ध होइत विदा भेलाह। बाटमे भेटलथिन्ह त्रिलोचन चौधरी। ओ सभ टा बात बूझि कहलथिन्ह—पं० जी, अहाँ बालुसँ तेल बहार करय गेलहुँ? रमेश बाबूकेँ हम खूब जनैत छिऐन्ह। कतेको कन्यागत हुनका द्वारपर अपन कपार पटकि कय रहि गेल छथिन्ह, परन्तु हुनका नाकपर माछी नहि बैसलैन्ह। रामायण पाठ करयवाली कन्याकेँ ओ देखय नहि चाहैत छथि। जे अपनाकेँ 'दासी' कहि कऽ स्वामीकेँ चिट्ठी लिखैत अछि, तकरा ओ पशुतुल्य बुझैत छथि। ओ गोली लगा कऽ मरि जैताह से मह कबूल, किन्तु ओहन कन्यासँ विवाह नहि करताह। अहाँ व्यर्थे दुर्गापाठक नाम कहि कऽ हुनका और हड़का देलिऐन्ह। आब ओ कथा कथमपि अहाँकेँ हैब संभव नहि।

पं० जी अपन कपार ठोकैत बजलाह—ई हुनकर बुद्धिक दोष थिक किंवा हमरा कर्मक दोष थिक। जखन एहन सर्वगुण-संपन्न कुलीन कन्या हुनका पसिन्द नहि, तखन केहन कन्यासँ विवाह करय चाहैत छथि ?

त्रिलोचन चौधरी एक चुटकी कतरा पं० जीक आगाँ बढ़बैत कहलथिन्ह—पं० जी ! अहाँ छी सात्त्विक लोक। आइकाल्हुक नवतुरियाक हाल नहि जनैत छिऐक। रमेश बाबूकेँ जाति-पाँति, वंशमूल वा कुल-मर्यादासँ कोनो प्रयोजन नहि। हुनका केवल अंग्रेजी पढ़लि कन्या चाहिऐन्ह। इंगलिशमे शास्त्रिओ पढ़लैन्ह से हुनका पसिन्द पड़तैन्ह परन्तु संस्कृतमे श्लोको पढ़यवाली नापसिन्द। से एकटा लड़की—मिस नर्गिस झाक नाम बी० एस० सी०क रिजल्टमे देखने छथिन्ह। ताहीपर बुलल छथि। कन्याक बाप नहि छैक ओ' माय ''

तदुपरान्त चौधरी जी बड़ीकाल धरि पं० जीक कानमे कीदन सभ फुस-फुसा क' कहैत रहलथिन्ह।

सभ किछु सुनि लेलाक उपरान्त पं० जी अपन टीक फोलि लेलन्हि और प्रतिज्ञा करैत बजलाह—आब हमर कन्या जखन ओहि घरमे नहि गेल त ओहो छौंड़ी नहिए आबय पाओति। हम ऐखन जाक' रमेश बाबूक पित्तीक कानमे सभटा बात ध' दैत छिऐन्ह। जेना हैत तेना हम एहि कथाकेँ भड़काएब।

ई कहि पं० चतुरानन झा चाणक्य जकाँ दृढ़संकल्प भय विदा भेलाह।

रमेश बाबू कलह जैबाक हेतु सूट-बूट लगबैत छलाह त' हुनक पित्ती आबि क' कहलथिन्ह—रमेश ! तोरासँ किछु गप्प करबाक अछि।

रमेश बैसि गेलाह। पित्ती कहय लगलथिन्ह—देखह, आब तोरा बापक स्थानपर हमहीं छिऔह। भौजी ई सिहन्ता मनमे लेनहि गेलीह जे पुतहुक मुँह देखी। तों आब डाक्टरी पास कैलह। घर बसाएब जरूरी छौह। तखन जेहन उच्च कुलक तों थिकाह ·

रमेश बाबू टोकैत कहलथिन्ह—चाचा साहब ! जरा मुख्तसर में कहिए। मुझे अभी एक लड़की को देखने जाना है।

पित्ती कहलथिन्ह—सैह बूझि क' त हम आएल छी। तों जाहि कन्याकेँ देखय जाइ छह तकर पूरा हुलिया हमरा भेटि गेल अछि। ओ टेलीफोन आफिसमे काज करैत अछि। ओकर माय तोरा फँसाबक चाहैत छौह। जखन कन्याक विषयमे सभ सुनि लेबह तखन ओहिठाम जैबाक काजे नहि पड़तौह।

रमेश बाबू चुपचाप धैर्य पूर्वक पित्तीक लेक्चर सुनय लगलाह। पित्ती पहिने नाकक सुनू पुरामे नोसि कोंचि लेलथिन्ह। तखन कहय लगलथिन्ह—जनै छह ? कन्याक मूल की छैक ? कमैहू उड़रा ! बाप तेलिअभना छलैक। माय छोटबभनी छैक। कोन-कोन वृत्तिसँ ओ मोसम्माति बेटीकेँ पढ़ौलक अछि से जगजाहिर अछि। हमरासँ सभटा जिऐक बोलैबह ? ओ छौंड़ी अपना मायोसँ टपलि अछि। अवस्था बाइस वर्षसँ कम नहि हैतैक। ताड़ गाछ सन नमछरि। बी० एस-सी० की कैलक जे जग जीति लेलक। धर्म, कर्म, देवता, पितर किछु नहि बुझैत अछि। मे ओकरा भरवा लगैत छैक ने दिक्शूल। पंडित सभकेँ मूर्ख क' क' बुझैत अछि। जन्म त एही देशमे भेलैक अछि, परन्तु मेमक कान कटैत अछि। जुत्ता पैंताबा पहिरने, फ्राक कसने, माथपर जुलफी रखने, कानमे चोंगा लगौने, सैकड़ो पुरुषक बीचमे टेलीफोनक काज करैत अछि। ओकरा छूआ-छूतिक एकोरत्ती विचार नहि। किस्तान लड़कीक बीचमे रहैत अछि। ओकरा सभक संग खाइत पिबैत अछि। सिगरेट पिबैत अछि। कतेक अंग्रेजी गिटपिट करय आबि गेल छैक से अपना शान मे ककरो लगबितहि ने अछि। घंटे-घंटे फैशन बदलति, कौखन साड़ीमे, कौखन सलवारमे, कौखन गाउनमे। जहाँ पाँच बजे साँझ क' आफिससँ छुट्टी भेटलैक कि उचरका जुत्ता पहिरने फुदुकि क' डू-डू सीढ़ी एकबेरमे उतरैत आएत और साइकिलपर सवार भय दस द' टेनिसक मैदानमे जा कूदति। सुनै छिऐक जे बारह बजे राति क' क्लबसँ डांस क' क' अबैत अछि। हाँ, लाज-लेहाज त एकोरत्ती छैहे नहि। कतेक यार-दोस्तक संग पार्टीमे जाइत अछि, सिनेमा देखैत अछि, तकर ठेकाना नहि। मायकेँ खुशी होइ छैक जे वाह ! हमर बेटी खूब कमाइत अछि। कहाँ धरि कहिऔह ? ओ लड़की सभटा लाज संकोच घोरि क' पीबि गेल अछि। निर्लज्ज तेहन जे जाँघिया पहिरि क' पोखरिमे हेलि जाइत अछि। दस टा छौंड़ा आगाँ पाछाँ घेरने रहै छैक। एहन हड़ाशंखिनी जौं घरमे आबि गेल त घरक सत्यानाशे बुझह। तोरा एकसँ एक सुन्दर कुलीन कन्या भेटि जैतौह। और ओकरामे की छैक ? ओकर माय कि एको छदाम तोरा देतौह ? बल्कि तोरे चूसि लेतौह। ऊपरसँ पाउडर पोतने रहै अछि ताहिपर त छौंड़ी आगसँ फाटल जाइ अछि, कतहु मेम जकाँ गोरि रहैत त नहि जानि की करैत ! एको घड़ी संच नहि। सदिखन बुट्टी-बुट्टी चमकैत रहै छैक। एहन कन्यासँ कि घर चलि सकैत अछि ? अंग्रेजी नोवेल पढ़तौह, सिनेमा देखतौह, पियानो बजौतौह, डांस करतौह। ओहन लड़की डेबब हाथी पोसब थीक। मासमे सैकड़ो रुपयाक स्नो-क्रीम, सेन्ट-पाउडर, साया-ब्रेसरी ''

रमेश बाबू और बेसी नहि सुनि सकलाह। पुछलथिन्ह—चाचाजी ! आपने जो कहा है क्या वह सब सच है ?

पित्ती दक्षिण मुँह भ' कहलथिन्ह हम वंश तर छी, जे एको बात फूजि कहने होइऔह। ओ सब तेहन मायाविनी अछि जे दुइए मिनटमे लोकके मोहि लैत अछि। तोंहू जइतह त तेना बतियैतह, तेना मुस्कयैतह जे तों निश्चय जालमे फँसि जइतह। ई त रक्ष रहल जे हमरा ऐन मौकापर पता लागि गेल।

रमेश बाबू अपना पित्तीक पैरपर खसि पड़लाह। पित्ती गद्‌गद होइत कहलथिन्ह—ई भगवत् कृपा थीक जे तोरा अन्तमे सुबुद्धि भ' गेलौह। आब त ओहि लड़कीकें देखबाक हेतु पटना नहि जैबह?

रमेश बाबू हुनक पैर धैनहि कहलथिन्ह—नहीं, चाचाजी! अब उसे देखने की कोई जरूरत नहीं रही।

पित्ती अपना भातिजकें कंठ लगा लेलन्हि। बजलाह—फेर त ओतबक संतान! महावीर झा क शोणित! अपना वंशक मर्यादा कहियो छुटि सकैत छैक? हम आइए हुनू माइ-धी कें तेहन कड़ा जवाब पठा दैत छिऐक जे फेर तोरा फुसियैबाक साहसे नहि हैतैक।

रमेश बाबू कहलथिन्ह—चाचाजी! आप गलत समझे। अभी तक मुझे डिटेल नहीं मालूम था। मगर आपने जो 'डिस्क्रिप्शन' दिया, उसे सुनकर मैं अब एक मिनट भी देर करना नहीं चाहता। अगर उसका आधा क्वैलिफिकेशन भी लड़की में मौजूद हो तो मैं अपने को 'लकी' समझूँगा। मैं फौरन टेलिग्राम भेज देता हूँ कि मैं मैरिज के लिए तैयार हूँ।…चाचाजी, इसका क्रेडिट आप ही को है।

ई कहि रमेश बाबू अपना पित्तीसँ लपटि गेलाह। पित्ती विस्मयसँ अवाक् भय मुँह तकैत रहि गेलथिन्ह।

□

महारानीक रहस्य

ओहि दिन वर्षा झहरैत रहैक। हम बरडामे बैसल चाह पिबैत रही। संगी सब तास-शतरंज खेलि क' अपन-अपन घर चलि गेल रहथि। एसकरमे समय काटब अस्सुह बूझि पड़ैत छल। तावत् देखै छी जे मधुकरजी झटकल आबि रहल छथि।

मधुकरजी रंगीन लोक। तेहन-तेहन गुलाबी गप्प छोड़ैत छथि जे सुननाहर कें रस भेटि जाइत छैन्ह। से आइ एतेक दिनपर मधुकरजीकें देखि मन उल्लसित भ' उठल। कहलिऐन्ह—आउ, आउ, मधुकरजी। भल्लहु बेर पर ऐलहुँ। चाह पीबू।

मधुकरजी अपन टोप ओ बरसाती खूटी पर टाँगि, चाहक टेबुल पर आबि बैसलाह। हम कहलिऐन्ह—वाह! आइ कतेक दिनपर अहाँकें देखल! अहाँ त प्रवासमे रहैत छलहुँ? देश कहिया ऐलहुँ?

मधुकरजी अपन रेशमी रूमाल बहार कय सोनहुला चश्माक सीसा साफ करैत बजलाह—ऐह मास दुइएक होइ अछि। मुदा फेर ओहिठाम जैबो नहि करब।

हम कहलिऐन्ह—से किऐक? अहाँकें त सुनै छलहुँ जे राजा साहेब हद्दसँ बेसी मानैत छथि। देहो पहिने लालबुन्द छल। आब एकदम सठल लगै छी। बात की छैक?

मधुकरजी हमर संगतुरिये जकाँ। वयसमे दू चारि वर्ष जेठ छलाह, तथापि संगिए जकाँ गप्प होइत छल। ततेक धाख नहि रहैत छल।

मधुकरजी एम्हर-ओम्हर तकलन्हि, फेर मद्धूँ-मद्धूँ बजलाह—हमरा शरीरकें पूछह त ओहिठामक महारानी दूरि क' देलन्हि।

हमहूँ किछु-किछु रसिक लोक। ओहि समय नवयुवक। ई गप्प सुनि तेहन कुतूहल जागल जे चाहक प्याली हाथेमे रहि गेल। पुछलिऐन्ह, से की मधुकरजी? कनेक खुलासा कहू।

मधुकरजी चाहक चुसकी लैत बजलाह—खाली चाहे छोड़ कि और किछु मङैबह ?

हम कहलिऐन्ह—तुरंत मँगबैत छी। घंटी बजौला उत्तर बेयरा आएल। कहलिऐक—चौप, कटलेट, आमलेट वगैरह जो कुछ हो, ले आओ।

मधुकरजी आब सुव्यस्त भ' क' बैसि गेलाह—तों त जनिते छह जे हम राजा साहेबक खास मोसाहेबमे छलिऐन्ह। शिकार खेलैबामे हमरे बन्दूक सभसँ आगाँ रहैत छल। परन्तु ...परन्तु की कहिऔह ? सभटा कर्मक बात होइ छैक। ओहिठामक महारानी हमरा लाहेब क' देलन्हि।

हमरा मनमे गुदगुदी उठय लागल। कहलिऐन्ह—कनेक फरिछा क' कहू ? ओहिठामक महारानीकेँ अहाँसँ कोन काज ?

ओ बजलाह—अरे ! से जुनि पूछह। ओ ककरा छोड़ैत छथिन्ह ? हमरे जकाँ कतेको मोसाहेब ओहिठामसँ पड़ा ऐलाह अछि।

हम चकित होइत पुछलिऐन्ह—अहाँकेँ कोना लागि भेल ?

मधुकरजी कहय लगलाह—हौ, एक राति हम अपन डेरामे सूतल रही। गर्मीक समय रहैक। केवाड़ खुजले छोड़ि देलिऐक। सनसन बसात चलैत रहैक से उघार देहमे नीक लागय। पुरबैयाक लहरामे जे आँखि लागल से बेसुध भ' सूति रहलहुँ। जखन आधा राति क' निंद टूटल त देखैत छी जे महारानी छातीपर सवार छथि।

तावत् बेयरा आबि क' टेबुलपर प्लेटक पथार लगा देलक। जखन ओ चलि गेल तखन मधुकरजी चौपमे काँटा गड़बैत बजलाह—हौ जी, हम त थरथर काँपय लगलहुँ। छाती धुक्-धुक् करय लागल। मुँहसँ बोल नहि बहराय। पहिने कहियो एहन अनुभव रहय नहि। हम डरेँ सकदम भ' गेलहुँ। देखल जे आब केवाड़ खूजल रहय देब उचित नहि। भीतरसँ बंद क' देलिऐक। बल्कि सभटा खिड़कीओ लगा देलिऐक।

लाजे हमर देह भुलकय लागल। तथापि साहस कय पुछलिऐन्ह—ओ कतेक काल धरि रहलीह ?

मधुकरजी नोन-मरीचक बुकनी मिलबैत नहुँ-नहुँ बजलाह—ओ भरि राति रहलीह। भिनसरबा रातिमे जा क' जान छोड़लन्हि। ओ गेलीह तखन जा क' हमरा होश भेल। ता त' हम पसीना-पसीना भय गेल रही। भरि रातिक झमारल देह। एतबो शक्ति नहि, बुझि पड़य जे उठि क' धोती पहिरी। पियासेँ कंठ सुखाइ छल परन्तु तेहन पस्त रही जे पानि ढारि क' पीब से नहि होय। दर्पणमे देखल त ठोर तेहन बुझि पड़ल जेना सभटा रस केओ चूसि नेने हो। ओहि दिन हम घरसँ बहरैबो नहि कैलहुँ।

हमरा मुँहसँ बहरायल—बाप रे बाप ! एहन जबरदस्त...!

मधुकरजी पेयाजक कतरामे सिरका मिलबैत बजलाह—हौ, जबरदस्त कि जबरदस्त सन ! लोककेँ खेला-खेला क' मारै छथिन्ह।

हम पुछलिऐन्ह—हुनका पछाड़यबला केओ नहि छैन्ह ?

मधुकरजी बजलाह—ककर बापक सक्क छैक ? ओ जकरापर लगै छथिन्ह तकरा पानि पिया क' छोड़ैत छथिन्ह। शरीरक सभटा सत्त्व खींचि क' सिट्ठी बना दैत छथिन्ह।

हम कहलिऐन्ह—परन्तु राजा साहेब...!

मधुकरजी बजलाह—राजा साहेब त अपने हुनका डरेँ छोड़ कटैत भेल फिरै छथि। जहाँ एक बेर महारानी धरैत छथिन्ह त 'बाप-बाप' करय लगै छथि। तेना क' बजारइ छथिन्ह जे उठि नहि होइत छैन्ह।

हम गुम्म भ' गेलहुँ। मधुकरजी कटलेट कटैत बजलाह—तोरा आश्चर्य होइत छौह। तखन ओहि देशमे जा क' स्वयं देखि आबहुन। यदि ओ महारानी लगलथुन्ह त फेर जल्दी निस्तार नहि। ओ बड़का-बड़का पहलमानक धोधि सटका दैत छथिन्ह।

हम क्षुब्ध होइत कहलिऐन्ह—तखन हुनका राक्षसी बुझक चाही। नहि, एहन देशमे नहि जैबाक चाही।

मधुकरजी आमलेट खोंटैत बजलाह—तेँ त हम ओहिठामसँ पड़ा ऐलहुँ। नहि त हमरा कोन बातक कम्मी छल ? दूध, दही, घी, मलाइ—जतबा जे खाइ, सभटा दरबारसँ भेटैत छल। परन्तु ओ सभटा सोखत भ' जाइत छल। किऐक त महारानी नित्य राति क' पहुँचि जाइत छलीह ?

हम पुछलिऐन्ह—अहाँ केवाड़ किएक ने बन्द क' लैत छलहुँ ?

ओ बजलाह—धुर बताह ! ओ महारानी केवाड़ बन्द कैने मानयवाली छथीह ? तों बच्चा जकाँ बजैत छह।

हम कनेक संकुचित होइत पुछलिऐन्ह—ओ कतेक दिन धरि अबैत रहलीह ?

मधुकरजी ऑमलेट निःशेष करैत बजलाह—कोनो मधुर नहि मँगेबह ?

हम तुरन्त घंटी बजाओल। बेयरा आयल। हम कहलिऐक—बढ़ियाँ-बढ़ियाँ मिठाई ले आओ।

मधुकरजी निर्विकार भावसँ पुनः अपन कथा कहय लगलाह—करीब छौ मास धरि ओ अबैत रहलीह। पहिने त ठीक बारह बजे राति क' आबथि। हम घड़ी देखि क' बूझि जाइ जे आब ओ औतीह। परन्तु पछाति क' कोनो नियम नहि रहलैन्ह। एकके दिनमे दू-दू बेर क' आबय लागि गेलीह। हम लाख यत्न कैल, परन्तु ओ हमरा नहि छोड़लन्हि। जखन एकदम्म खिसाय लगलहुँ तखन एकदिन अवसर पाबि चुपचाप घसकि ऐलहुँ। आब कान ऐंठै छी जे फेर ओहिठाम जैबाक नाम ली।

तावत टेबुलपर रसगुल्ला, क्रीम-चॉप, रसमलाइ ओ आइसक्रीमक पथार लागि गेल। मधुकरजी ओहिमे डूबि गेलाह!

हम किंचित घबाइत पुछलिऐन्ह—मधुकरजी, एकटा बात पूछू ? महारानीक वयस की छैन्ह ?

मधुकरजी अन्तिम रसगुल्ला मुँहमे दैत विस्फारित नेत्रसँ हमर मुँह ताकय लगलाह। बजलाह—एकर अर्थ नहि लागल। तोहर आशय की ?

हम कहलिऐन्ह—यैह पूछै छी जे रानी साहिबा कए वर्षक छैथीह ?

मधुकरजी ठठा क' हँसि पड़लाह। ततेक जोरसँ टेबुलपर हाथ पटकलन्हि जे प्लेटसभ झनझना उठल। पुनः बजलाह—तोँ की सँ की बूझि लेलह। रानी साहिबाकेँ त हम कहियो देखनहु नहि छिऐन्ह। ओ कि साधारण लोकक सोझाँ होइ छथिन्ह ?

हम विस्मित होइत पुछलिऐन्ह—तखन अहाँ एतेकालसँ ककरा महारानी द' कहैत ऐलहुँ अछि ?

मधुकरजी पुनः अट्टहास करैत बजलाह—हौ बुद्धिनिधान! ओ मलेरिया महारानी थिकीह। जहिना कमला-कोशी क्षेत्रमे, तहिना आसाममे। अपितु ओहूसँ बेसी। एतबो बुझबामे नहि ऐलौह ?

हम अवाक रहि गेलहुँ। कहलिऐन्ह—तखन अहाँ ओतेक रासे बात बना क' किऐक कहलहुँ जे ओ चुपचाप पहुँचि जाइत छलीह, पस्त क' दैत छलीह, पानि पिया क' छोड़ैत छलीह, घामे पसीने तर क' दैत छलीह।

मधुकरजी तौलियासँ हाथ पोछैत बजलाह—त एहिमे फूसि की कहलिऔह? मलेरियामे त ई सभ हैबे करइ छैक।

हम कहलिऐन्ह—परन्तु अहाँ त और बहुत बात सभ कहलहुँ अछि।

मधुकरजी सौँफ चिबबैत बजलाह हम एकोटा बात एहन नहि कहलिऔह अछि जे मलेरिया महारानीक विषयमे नहि होइन्ह। तोँ मिला क' देखि लैह।

हम कहलिऐन्ह—धन्य छी, मधुकरजी! अहाँ त गोनूझा वला परि कैल। पहिलहि सोझ-सोझ मलेरियाक नाम किऐक नहि कहि देलहुँ ?

मधुकरजी बजलाह—हम कि जानय गेलहुँ जे तोँ साहित्यक विद्यार्थी भय एतबो अलंकार नहि बुझबह ? परन्तु हौ जी! तोँ लक्ष्यार्थ नहि बुझलह से एक तरहेँ नीके भेल।

हम पुनः मुँह तकैत पुछलिऐन्ह—से की ?

मधुकरजी कनेक मुसुकाइत बजलाह—देखै छह ने ? ओही 'महारानी'क कृपासँ एतेक रासे प्लेटक पथार एहिठाम लागि गेल। यदि सोझ-सोझ 'मलेरिया' कहि देने रहितिऔह त तोँ एतबा सामग्री मँगबितह ?

ई कहि मधुकरजी एक बेर तृप्तिसूचक ढेकार कैलन्हि और तदुपरान्त अपन बरसाती ओ टोप उठा, हमरा धन्यवाद दैत विदा भ' गेलाह। □

सात रंगक देवी

(१)

प्रायः ३० वर्ष पहिलेक गप्प कहै छी। हम बहिनक सासुर गेल रही। हुनक ससुर धर्मशास्त्राचार्य। साठि-सत्तरसँ कम नहि छल होइथिन्ह। हम जखन खेबा काल आङन जाइ त ओ पं० जी आगाँ-आगाँ खड़ाम खटखटबैत, खखसैत, आङनक मुँह परसँ गर्द करथिन्ह—'हे ! पाहुन आबि रहल छथि।' यदि ताहू पर हुनक स्त्री कोनो दोगसँ हुलकी-बुलकी दैत देखाइ पड़थिन्ह त ओ हुनका नेने-नेने ओतसँ पछुआड़क बाड़ीमे मुनिगाक गाछ तर जा क' ठाढ़ क' अबथिन्ह। तखन हमरा कहथि—'आउ पाहुन' अर्थात् लाइन क्लीयर भ' गेल। परसूक दिन हम पं० जीसँ कहलिऐन्ह—'हम कनेक हुनका प्रणाम करितिऐन्ह।' ई सुनितहि पं० जी आश्चर्यसँ हमर मुँह ताकय लगलाह। पुनः बजलाह—'एकर उत्तर हम भोजनोत्तर देब।' चलबा काल पं० जी कहलन्हि—'हे औ बटुक! हम अहाँक प्रश्नपर विचार कैल। समधीनकेँ पुत्रवती बुझक चाही। तैं ओ अहाँक प्रणम्या अवश्य थिकीह। शास्त्रसँ एहिमे कोनो टा दोष नहि परंच... परंच... ई बात कनेक लोक व्यवहारक विरुद्ध... कनेक मर्यादाक विरुद्ध थैं... ऐं ऐं... बुझल कि ने?' हम कहलिऐन्ह—'हँ, बूझल।' और ओहि अज्ञातरूपा देवीकेँ मानस प्रणाम करैत ओहि परसँ विदा भेलहुँ।

(२)

एक और ठामक हाल कहै छी। हम कोनो गोष्ठीमे गेल रही। ओहिठाम एकटा परिचित भेटि गेलाह। सभाक उपरान्त कहलन्हि—'झाजी, कम-सँ-कम एक घंटाक हेतु हमरा ओहिठाम चलय पड़त।' हम कहलिऐन्ह—'चलितहुँ त अवश्य, परन्तु एखन एकटा जरूरी...'

ओ हमर हाथ ध' क' बजलाह—से नहि हैत। हमरा आङनक स्त्रीगण अहाँकेँ देखतीह। 'कन्यादान'क लेखककेँ देखबाक एहन सुयोग कहिया भेटतैन्ह?

आब एहि पर 'नहि' कोना बील जाय ? ओ बड़ प्रेमसँ अपना दलानपर ल' गेलाह । कहलन्हि—'अहाँक समस्त पुस्तकक 'सेट' हमरा घरमे अछि । स्त्रीगण के पढ़बामे बड्ड मन लगैत छैन्ह । टोल-पड़ोसमे कोन स्त्री एहन होइतीह जे अहाँक नाम नहि जनैत होथि ?' पुन: अपना बालककेँ कहलन्हि—'हौ, अपना मायकेँ कहुन्ह जे अड़ोस-पड़ोसक स्त्रीगणकेँ बजबा लेथि ।'

थोड़ेक कालक बाद ओ मित्र बजलाह 'बेस, त आब कनेक आङन चलल जाओ ।' हम मनमे गर्वक अनुभव करैत हुनका संग चललहुँ । बीच आङनमे जा क' ओ कहलन्हि—'आब एकटा कष्ट अपनेकेँ करय पड़त । स्त्रीगण देखब चाहैत छथि । तेँ कनेक आँखि मूनि लेल जाओ ।' हम जेना धम्म द' आकाश परसँ खसि पड़लहुँ । तदुत्तर हमरापर पूर्ण विश्वास नहि कय ओ अपन दुनू सुर,ह तरहत्थीसँ हमर दुनू नेत्रकेँ ध'र'त स्त्रीगणकेँ सम्बोधित कय कहलथिन्ह—'आब देखू जाउ, सभ गोटा । ओसारा पर आबि क' लोक हमरा देखिऔन्ह । पैह 'कन्यादान'क लेखक छिकाह ।' तत: पर चूड़ीक खनखन, पाजेबक झनझन आदि शब्द कानमे पड़य लागल । हमरा कतेक जनी देखलन्हि से कहि नहि, परन्तु हम हरि छिनको टा नहि देखि सकलिऐन्ह । ओहि अदृष्ट दर्शिकागणकेँ नमस्कार करैत हम आङनसँ बाहर ऐलहुँ ।

(३)

आब एक तेसर ठामक हाल सुनू । आङनमे भोजन करय गेलहुँ त देखै छी जे आसन, पानि, थारी, बाटी सभ यथास्थान राखल । बेस दूरमे अर्द्धगोलाकार ओहार लागल, परन्तु केओ लोक नहि । हँ, एकटा नूआक मोटरी आगाँमे राखल । गृहपति ओहि दिस तकैत बजलाह—'हे ! हिनका नीक जकाँ भोजन करबैन्ह ।' गृहस्वामीक गेला उत्तर ओहि मोटरीक तरसँ नहूँ-नहूँ एकटा लहठी वला हाथ बहराएल, पंखा नेने । हमरा अनुमानसँ बूझि पड़ल जे ओ देवी प्राय: दोसरा दिस मुँह घुरा क' बैसल छथि । कारण जे पंखा बारंबार हमरा नाकेपर बजरय लागल । जखन-जखन खट्ट द' आवाज होइक तखन-तखन ओहि पर्दाक भीतरसँ एक बेर क' 'च' शब्द सुनाइ पड़य । हम दू-एक बेर कहबो कैलिऐन्ह जे आब पंखाक कोनो काज नहि । परन्तु पंखा अविराम गतिसँ हमर नासिकाक अग्रभागपर आघात करैत रहल । ओहिसँ त्राण भेल तखन जखन गृहपति आबि पुछारी कैलन्हि—'कोनो कष्ट त नहि भेल ?' स्वामीक शब्द सुनैत देरी ओ देवी और बेसी निहुड़ि गेलीह

और ओ पंखा हमर जान छोड़ि देलक । पुन: गृहपतिक ऐलासँ पूर्वहि हम ओहि पंखावाली देवीकेँ प्रणाम करैत पीढ़ी परसँ उठि गेलहुँ ।

(४)

एक मित्र किछु बेसी साहस कैलन्हि । कहलन्हि—'भाजी, आइ अहाँक भोजन हमरे ओहिठाम हैत । ओ खास क' अहीं द्वारेँ माङुर माछ मँगौने छथि ।' यथासमय मित्र महोदय आबि क' अपना ओहिठाम ल' गेलाह । अपना स्त्रीकेँ शोर कय कहलन्हि 'हे ऐ ! हमरा लोकनि आबि गेलहुँ ।' पुन: आसनपर बैसला उत्तर कहय लगलाह—'हे औ ! हम पर्दा-तर्दा नहि रखैत छी । कहाँ गेलहुँ ऐ । थारी आनू ।' तत:पर देखल जे माथक आँचर भौंहक सिमान धरि लटकौने हुनक पत्नी मंद मंथर गतिसँ ऐंचैत बैंचैत लजौनी जकाँ संकुचित होइत थारी नेने आबि रहल छथिन्ह । दुनू थारी आगाँमे राखि ओ फुर्र द' पड़ैलीह । जेना विकट परीक्षामे पास क' चुकल होथि, तेना फक्क द' निश्वास छोड़ैत । ई देखि मित्र महोदय कहलथिन्ह 'ऐ ! जाइ छी कहाँ ? एम्हर सूनू । अरिकौंच नेने अबियौन्ह ।' ओ हमरा आगाँ अरिकौंच परसैत संकोचेँ स्वयं अरिकौंचक चक्का बनि गेलीह । मित्र कहलथिन्ह—'और किछु आग्रह करिऔन्ह ।' ओ बहुत प्रयास कैलन्हि बजबाक । परन्तु कंठसँ शब्द उच्चरित नहि भ' सकलैन्ह । केवल किछु फुसफुसा क' रहि गेलीह जे हमरा श्रुतिगोचर नहि भेल ।

तखन मित्र महोदय व्याख्या करैत बजलाह—'पुछै छथि जे किछु और चाही ?'

हम कहलिऐन्ह—नहि । धन्यवाद । हम बहुत पाबि गेलहुँ ।

(५)

एक मित्र अधिक प्रगतिशील बहरैलाह । लिखलन्हि जे—'औ भाजी ! हम दुनू बेकती एक दिनक हेतु पटना आबि रहल छी । अहींक ओतय ठहरब ।' ऐला उत्तर ओ अपना स्त्रीसँ परिचय करौलन्हि—'ई थिकीह हमर....।' देवीजी दुनू हाथ जोड़ि हमरा नमस्ते करैत पुछलन्हि—'की ? एम्हर किछु नव लिखल गेलैक अछि ?' हम कहलिऐन्ह—'हँ, 'खट्टर कका'क दोसर भाग ।' ओ कनेक घबाइत जकाँ बजलीह—'की, भेटि नहि सकैत छैक ?'

हम कहलिऐन्ह—'किएक नहि ? मङबा देब ।' भोजनोत्तर मित्र महोदय कोनो काजसँ बाहर गेलाह । हुनक पत्नी अखबार पढ़ैत रहथिन्ह । ता प्रेसक

'खट्टर कका' द' गेल। हम कहलिऐन्हि—'लिय', अहाँक पुस्तक आबि गेल।' परन्तु ओ मुँह फेरि क' ठाढ़ि भ' गेलीह। हमरा बूझि पड़ल प्राय: हमर बात ओ नहि सुनलन्हि। तैं लगमे जा क' और स्पष्टतया कहलिऐन्हि—'पुस्तक जे मङने रही से आबि गेल अछि।' परन्तु ओ किच्छु उत्तर नहि दय धप्प द' नीचामे बैसि रहलीह। हमरा एहि व्यवहारक किछु अर्थ नहि लागल। मित्र महोदयक ऐला पर कहलिऐन्ह त हँसि क' बजलाह—हँ, ओ हमरा समक्ष लोकसँ बजैत छथि, परन्तु हमरा परोक्षमे पर्दा रखैत छथि। आब फेर बजतीह।' और ओ देवी सरिवड्डँ लिखाओल सुग्गा जकाँ पुन: बाजि उठलीह—'ओ पुस्तक कहाँ अछि? दिय' ने।'

(६)

एक दिन एक परिचिता कालेज-कन्या अपना संग एक भद्र पुरुषकेँ नेने रिक्शासँ उतरलीह। डेरामे आबि बजलीह—हमरा चिन्हल कि ने?

हम कहलिऐन्ह—भला चिन्हब ने कियैं?

ओ बजलीह—हिनके संग एहि लुग्नमे हमर विवाह भेल अछि। इहो एम० ए० फाइनलमे छथि। हम फिलासफी नेने छी, ई साइकोलोजी नेने छथि। अपनहि सँ आशीर्वाद देयाबक हेतु नेने आएल छिऐन्ह। मैथिल कन्याक एहन ओजस्विता देखि मन गद्गद भ' गेल। हम दुहूँ गोटाक हेतु मधुर मँगा देलिऐन्ह। ओ बजलीह—'दू टा प्लेटक कोन काज छैक? हमरा लोकनि एकेमेसँ ल' लैत छी।' ई कहि ओ निर्विकार भावसँ एकटा अमिरती खोटैत प्लेट कैँ स्वामीक आगाँ सरका देलन्हि। मनमे रंचमात्र दुविधा नहि। नेत्रमे भय नहि। जेना ओ तपोवनक आश्रमस्थ हरिणी होथि! अथवा पिजड़ाक बंधनसँ मुक्त स्वतंत्र पक्षी!

(७)

'हे औ! आबो उठब कि हम रजाइ देहपरसँ खीँचि लिय'?' ई 'अल्टिमेटम' चंचला पत्नी दिने छलथिन्ह कि अकस्मात हम ओहिठाम पहुँचि गेलहुँ।

हमरा देखि ओ बजलीह—'देखू ने, हिनका उठाबक हेतु नित्य एहिना युद्ध करय पड़ैत अछि। एम्हर चाय ठंढा भ' रहल छैन्ह।' पुन: हुनका मुँहपरसँ ओढ़ना हटबैत कहलथिन्ह—'देखू ई के ऐलाह अछि?' तदनन्तर आनन्द-विनोदक धारा बहय लागल। हमरा लोकनि एक संग बैसि चाय पिबलहुँ। पति प्रोफेसर,

पत्नी डाक्टर। १० बजे ओ अपना ड्यूटीपर गेलाह, ई अपना ड्यूटीपर गेलीह। ४ बजे ओ ऐलाह, ५ बजे ई ऐलीह। अबितहि चिड़इ जकाँ चहकैत बजलीह—'हे औ! हमरा क्लबमे आइ ड्रामा अछि। अहूँ लोकनि चलब?' पति कहलथिन्ह—हमरा त आइ बहुत रास लिखबाक अछि, हिनका नेने जैयौन्ह।'

ओ बजलीह—बेस, तखन हिनके नेने जाइ छिऐन्ह। हमरा सभकेँ ऐबामे देरी हैत। अहाँ ९ बजे खा लेब। देखब, सुतबा काल दूध पिउब नहि बिसरब।

ई कहैत ओ चटपट तैयार भ' हाथक घड़ी देखि चुमकीसँ कार 'स्टार्ट' कैलन्हि और हमरा बगलमे बैसाय स्वयं 'ड्राइव' करय लगलीह।

१२ बजे राति क' हमरा लोकनि क्लबसँ वापस ऐलहुँ त पतिदेव फोंफ कटैत रहथिन्ह। पत्नी दू क्षण मधुर स्निग्ध दृष्टिसँ हुनका दिस तकैत बजलीह—'देखू, ई मशहरी नहिए लगौलन्हि। एहन आलसी केओ हैत? यदि हम नहि रहिऐन्ह त एको दिन अपन परिचर्या ई नहि क' सकैत छथि। देखिऔन्ह त कतेक रास मच्छर कटलकैन्ह अछि।' ओ स्नेहमयी देवी अपन कोमल हाथ पतिक गाल पर फेरय लगलीह। पुन: बजलीह—'आब अहूँ सूतू'। हम हिनक मशहरी ठीक क' दैत छिऐन्ह।' और ओ भीतरसँ मशहरी खसाबय लागि गेलीह।

हम अपना कोठरीमे आबि ओहि मधुर दांपत्य जीवनक रसास्वादन करय लगलहुँ। ओहि देवीक सद्य: प्रस्फुटित श्वेतकमल समान प्रफुल्ल मुखमंडल ओ चन्द्रकला फूलपर पड़ल प्रात:कालीन ओसक बुंद समान निर्मल पवित्र मुसकान बिसरबाक वस्तु नहि। ओ जेना एहि पार्थिव संसारसँ ऊपर कोनो दिव्य लोकक देवकन्या होथि।

ई सातो देवी सप्तर्षिमंडल जकाँ हमरा स्मृतिक आकाशमे जगमग क' रहल छथि। प्रश्न उठैत अछि—कस्मै देवाय हविषा विधेम्?

नौ लाखक गप्प

ओहि दिन सायंकाल चाय पिबैत रही कि ताहि बीचमे नोकर एक टा 'विजिटिंग कार्ड' द' गेल। ओहिपर अंग्रेजी अक्षरमे लिखल छलैक—'जा आरगंडी, प्रोड्यूसर, मिथिलेटेड फिल्म कंपनी, बंबई।' नाम देखि हम अनुमान कैल जे कोनो अन्यदेशीय सज्जन हैताह। परन्तु जखन बजा पठौलिऐन्ह त देखै छी जे बुध सन उज्जर शेरवानी ओ चुस्त पैजामामे एक भद्र युवक आबि रहल छथि। माथपर लीडरनुमा श्वेत खादीक टोपी। हाथमे अटैची। अत्यन्त शिष्टतापूर्वक कुर्सीपर बैसलाह। तदुत्तर मैथिलीएमे गप्प प्रारम्भ कैलन्हि—हम सोझे बंबईसँ आबि रहल छी। मैथिलीमे पिक्चर बनैबाक अछि। अपनेक नाम सुनल तैं किछु आइडिया हेतु आएल छी। परंच अपनेक 'रंगशाला' हम पढ़ने छी। हमरा 'बमबाबू' सुनि बूझी।

हमरा कुतूहलपूर्वक अपना नाम दिस तकैत देखि ओ बजलाह—एहि नामक कहानी छैक से पाछाँ ज्ञात हैत।

हम पुछलिऐन्ह—अहाँ कोन चित्र बनाबय चाहैत छी?

ओ बजलाह—फिल्मक नाम हैत 'विधिकरी'। ओहिमे मिथिलाक रीति-नीति, विधि-व्यवहार, उपनयन-विवाह, पूजा-पाठ भोजन-भात, गीत-नाद, बन-बाध—सभक दृश्य रहत। आब एहिमे दस लाख, बीस लाख, जतबा लागय।

हम पुछलिऐन्ह—शूटिंग कतय हैत?

ओ बजलाह—'इनडोर शूटिंग' बंबइएमे हैत, परन्तु 'आउटडोर शूटिंग' मिथिलाक माटिपर हैत। किछु हराही पोखरिपर, किछु सौराठक सभागाछीमे, किछु सिमरिया घाटपर, किछु दड़िभंगा जिलाक मुख्य-मुख्य गाममे...

हम पुछलिऐन्ह—कलाकार के सभ रहताह?

ओ उत्साहपूर्वक बजलाह—नामी-नामी अभिनेता-अभिनेत्रीक सहयोग हमरा भेटि रहल अछि। यदि हमर 'स्कीम' सफल भ' गेल त थमागासँ सामा-चकेबा पुजबैबैन्ह। चित्रासँ चिनवार निपबैबैन्ह। नरगिस मेहराभे आबि क' नचारी गौतीह। मधुबाला मंगरौनीमे माटिक महादेव बनौतीह। कामिनी कौशल कर्णपुरमे कोठी पारतीह। नूतन नवकनियाँ बनतीह। बैजयंतीमाला विधिकरी बनतीह।

हमरा मुँहपर विस्मयक भाव देखि ओ बजलाह—अभिनेत्रीमे केओ एहन नहि छथि जिनकासँ हमरा आत्मीयता नहि हो। निरूपाराय नारंगीक रस बना क' दैत छथि। कक्कू काफी पियबैत छथि। निम्मी हमरा देखतहि गिलकी बनाबय लगतीह। सुरैया आब थुल-थुल भ' गेलीह अछि, तथापि हमरा देखितहि दौड़ि क' सोहारी बेलय लागि जैतीह।

हम—अहाँकेँ एतबा घनिष्ठता कोना भेल?

ओ—घनिष्ठता त एहिसँ बहुत बेसी दूर धरि अछि। एक बेर दुःखित पड़ि गेलहुँ त नलिनी जयवंत नायलन फाड़ि क' माथमे पट्टी देलन्हि। बीणा राय बीअनि होंकय लगलीह। कुलदीप कौर अपने हाथेँ कौर सानि क' खोऔलन्हि। निगार सुलताना सिगार धरा क' मुँहमे लगा देलन्हि।

हम पुनः प्रश्न दोहरैलिऐन्ह—एतबा घनिष्ठता कोना भेल?

ओ अगराइत बजलाह—कला घनिष्ठता करा दैत छैक। एक बेर लता मंगेशकरकेँ एकटा लय मसियाइत रहैन्ह से हम सँभारि देलिऐन्ह, तहियासँ ओ हमर शिष्या बनि गेलीह। तहिना एक बेर पद्मिनीकेँ नृत्य करैत काल ताल धुड़ा क' देलिऐन्ह, तहियासँ तीनू बहिन हमर पुजारिन भ' गेलि छथि।

हम अर्द्धविश्वासक स्वरमे पुछलिऐन्ह—ओंकारनाथसँ त अहाँकेँ परिचय हैत?

ओ बजलाह—कय बेर झगड़ा भ' चुकल अछि। हम हुनका गबैयामे ओभर नहि करैत छिऐन्ह। केवल हाव-भाव देखबैत छथि।

हम—उदयशंकरक विषयमे अहाँक की सम्मति अछि?

ओ—हुनक 'टैकनीक' आब बहुत पुरान भ' गेलैन्ह। नृत्यकलाक नवीन शैलीपर हमर एकटा ग्रन्थ शिकागो युनिवर्सिटीसँ बहार रहल अछि। आठ 'भोल्यूम'क दाम ७५) रहतैक। हम छौंत देरी पूरा सेट अपनेक सेवामे पठा देब।

हमरा मुँहपर किछु अविश्वासक भाव देखि ओ बजलाह—ओकर 'फोरवर्ड' सर्वपल्ली राधाकृष्णन लिखि रहल छथि।

हम विषयान्तर करैत पुछलिऐन्ह—अहाँकें त अभिनेतो सभसँ बहुत निकट सम्बन्ध हैत ?

ओ बजलाह—निकट कि निकट सन ? राजकपूरसँ एकपिठिया जकाँ टेनाबेनी होइत रहै अछि। कय बेर दिलीपकुमारसँ उठापटक भ' गेल अछि। एक बेर देवानन्द हमर स्वेटर देखि नेहोरा करय लागल जे एहने हमरो बुनबा दिअ। माला सिन्हा सभक लेकिन मीनाकुमारी सभक खातिर थोड़बे स्वेटर बुनतैन्ह ? खातिर थोड़बे माला गथतैन्ह ? एही सभ हारे त ओ सभ हमरासँ भिलरिया काट रखै जाइ अछि। राड़ मारे जकाँ।

हम पुछलिऐन्ह—'हीरो'क पार्ट ककरा देबैक ?

ओ बजलाह—ओना त अशोककुमारसँ लय सुनीलदत्त पर्यन्त सभ गोटे मुँह बौने छथि। परन्तु नायकक भूमिकामे हम स्वयं उतरय चाहैत छी। कारण जे हीरोइन नूतन छथि, ओ हमरे संग पार्ट करय चाहैत छथि।

तावत नोकर चाय-पकौड़ी आनि हुनका आगाँ राखि देलकैन्ह। ओ प्याली कैं कनेक ठोरमे लगा नीचा राखि देलथिन्ह। हम पुछलिऐन्ह—की ? कम मीठ छैक ? ओ मुँह बनबैत बजलाह- नहि, चीनी बेसी छैक। हम सिर्फ आधा चम्मच लैत छी। बंबईमे ई बात सभकें बुझल छैक। जखन मोरारजी ककाक संग बैसि चाय पिबैत छी त ओ अपने हाथेँ ठीक आधा चम्मच चीनी हमरा प्यालीमे राखि दैत छथि।

हम नोकरकें कहलिऐक—ई ल' जो। दोसर चाय नेने आबहुन।

तावत ओ आलूक छनुआ खाय लगलाह। खाइत-खाइत जेना मन पाड़ैत रहथि।

पैल होइन्ह तेना बजलाह—एहने चिप्स दिल्लीमे तारकेश्वरी बहिन तरि क' खोऔने रहथि।

हम पुछलिऐन्ह—अच्छा ! अहाँकें हुनकोसँ परिचय अछि ?

ओ बजलाह—ओ सहोदरो बहिनसँ बेसी मानैत छथि। राखी बन्हने साकथि। एक बेर कातिकमे गेलहुँ त भ्रातृद्वितीया दिन बिना पुजने नहि छोड़लन्हि। पान ओ फूल ल' क'।

हम कहलिऐन्ह—तखन अहाँ बड़ भाग्यवान छी।

ओ बजलाह—हँ, से त अपनेक कृपासँ बड़का बड़का लोकसँ लागि रहैत अछि। ओहि दिन नेहरू ककाक संग बैसि जलपान करैत रही। नेहरू कका कहलन्हि—'हौ, तोँ विवाह किऐक नहि करैत छह ? आइ विवाह करह, काल्हि कतहु राजदूत बना क' पठा देबौह।' इंदिरा बहिन सेहो ओहिठाम रहथि। बजलीह—हँ, भैया ! आब भौजीकें देखबाक सिहंता होइ अछि।

हमरा मुँहपर अविश्वासक झलक देखि ओ बजलाह—अपने कैं आश्चर्य होइत हैत। परन्तु अपनेसँ एकटा गुप्त विषय कहि दैत छी। एक दिन स्वयं राष्ट्रपति हमरा बजा क' पुछलन्हि—'हौ, तोरा 'पद्मभूषण' बना दिऔह ?' हम हाथ जोड़ि कहलिऐन्हि—'काकाजी, हम नामक भूखल नहि छी। एहिना कलाक सेवा करय दिय'।'

तावत दोसर चाय आबि गेलैन्ह। ओ एक घोँट पीबि बजलाह—हँ आब ठीक अछि। ठीक एहने चाय हमरा पद्मजा पीसी बना क' दैत छथि।

हम पुछलिऐन्हि—'मायडू गवर्नरद' कहि रहल छी ? ओ गर्वसँ मुसकुराइत बजलाह—हँ। ओ हमरा शपथ देने छथि जे कलकत्ता आबी त गवर्नमेंट हाउसमे ठहरी। हम माँगुर माछक विशेष प्रेमी छी। तैं ओ बारहो मास हौजमे पोसने रहै छथि। कोन ठेकान कखन पहुँचि जैऐन्हि।'

हम कहलिऐन्हि—हमरा बूझल रहैत त हमहुँ माँगुर माछ मँगौने रहितहुँ।

ओ बजलाह—नहि, आइ राति हुनरा चीफ मिनिस्टरक ओहिठाम दावत अछि। ओ साढ़े आठ बजे बजौने छथि। ...की ? अपनेक आज्ञा हुए सिगार पीबि सकै छी ?

हम कहलिऐन्ह—अवश्य, अवश्य।

ओ जेबीसँ सिगरेट ओ लाइटर बहार कैलन्हि। ताही संग एकटा एकटकही नोट बहरा क' नीचा खसि पड़लैन्ह। ओ बसातमे उधियाय लगलैन्ह। परन्तु ओ देखियो क' उपेक्षा क' देलथिन्ह और सिगरेटक धुँआ उड़ाबय लगलाह।

हम नोकरकें कहलिऐक—'रौ, नोट उड़ल जाइ छैन्ह।'

ओ बजलाह—कोनो बात नहि छैक, छोड़ि दिऔक। एहिना कतेक पड़ैत रहै छैक।

तावत नोकर दौड़ि क' आनि देलकैन्ह। ओ घृणापूर्वक ओकरा दिस ताकि कहलथिन्ह—हम खसल नोट नहि छुबै छी। तोँही ल' जो।

हम पुछलिऐन्हि — तखन अहाँक की प्रोग्राम अछि ?

ओ कहलाह—एहि ठामसँ हम दड़िभंगा जाएब। महाराज बहादुरक एकटा स्कीम छैन्हि। ताहिमे राय लेबाक हेतु हमरा बजौने छथि।

हम—ओहाँ कोन ट्रेनसँ जाएब ?

ओ—ट्रेनसँ नहि, प्लेनसँ जाएब। सिंचाइमंत्री काल्हि सहरसा जाए लेल छथि। ओ हमरा दड़िभंगामे उतारैत जैताह।

हम—महाराज बहादुरक की स्कीम छैन्हि ?

ओ—महाराज बीस करोड़ लगा क' एकटा स्टुडियो खोलय चाहैत छथि। ओही सम्बन्धमे हमरासँ विचार लेबाक छैन्हि।

हम—तखन ओहीमे अहाँ अपना फिल्मक निर्माण कय सकै छी ?

ओ बजलाह—नहि। ओहिमे एखन देरी छैक और हम जल्दीसँ जल्दी 'विधिकरी' रिलीज करक चाहै छी। पाँच करोड़ मैथिलमे केओ एहन नहि हैताह जे ई देखबाक हेतु एक टका खर्च नहि करथि। परन्तु सबटा 'प्रोफिट' हम अपनहि लेबय नहि चाहैत छी। अधिकसँ अधिक गोटा एकर लाभ उठाबथि तें हम अपना इष्ट मित्र सभकें शेयर देबय चाहैत छिऐन्हि। परन्तु एक-एक सयसँ बेसीक नहि। एक सयक एक हजार बनबामे त कोनो देरिए नहि लगतैन्हि। यदि फिल्म चलि गेल त एक-एक शेयर होल्डरकें एक-एक लाख नफा भ' सकैत छैन्हि।

ई कहि ओ १००)क रसीद हमरा हाथमे थम्हा देलन्हि।

ई सभ गप्प भीतरसँ स्त्रीगण सुनैत रहथि। ओहो लोकनि आबि गेलीह। हमर स्त्री, कन्या, पुतोहु इत्यादि सभ गोटे अपना-अपना नामसँ एक-एक टा शेयर लेलन्हि। एवं प्रकारे ६००) हमरा घरसँ भेटलैन्हि। तत्पश्चात ओ घड़ी देखैत बजलाह—आब हमरा आज्ञा भेटो। चीफ मिनिस्टर इन्तिजारमे बैसल हैताह। हम पुनः बंबई पहुँचि क' पत्राचार करब।

तदनन्तर हमरा लोकनि ओहिना उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करय लगलहुँ जेना लोटरीमे लोक इनामक बाट तकैत अछि। नौ लाखक स्वप्न देखय लगलहुँ। परन्तु कथी लय कोनो समाचार भेटत ! ने 'विधिकरी' बहरैलीह, ने हुनकर विज्ञापन। कइएक टा चिट्ठी हुनका नामसँ पठौलिऐन्हि, किन्तु एकोटाक उत्तर नहि भेटल। रजिस्ट्री ओ रिप्लाई तार घुरि क' वापस आबि गेल। तथापि आशा नहि टूटल। कदाचित पता बदलि गेल होइन्ह ?

एक वर्षक बाद बंबई जैबाक अवसर भेटल। हुनक देल 'ऐड्रेस' पर गेलहुँ। ओतै 'अंधेरी' छानि गेलहुँ, कतहु पता नहि लागल। अन्ततोगत्वा एक गलीमे एक छोट-छीन होटलमे ज्ञात भेल जे ओहि नामक व्यक्ति किछु दिन पहिने एकटा कोठरी ल' क' रहै छलाह। होटलक एक वर्षक बकाया राखि एक राति चुप्पेचाप पड़ा गेलाह। पानवला, चायवला, मिठाइवला, अखबारवला, धोबी, हजाम—सभ हुनका जोहने भेल फिरै छैन्हि। सैकड़ो पैंच-उधारवला हुनका नाम पर हकन्न कानि रहल छथिन्ह। पूरे ४२० छलाह। कहाँ गेलाह तकर पता नहि। केवल साईनबोर्ड टा अपन छोड़ने गेल छथि। ओहिपर 'जा चारखंडी' अंग्रेजीमे लिखल छैन्हि, जे 'चारखंडी झा'क बंबइया संस्करण थिकैन्हि।

मिथिलेटेड फिल्मक आशा मेथिलेटेड स्पिरिट जकाँ उड़ि गेल। 'विधिकरी'क विधि ६००) लगाय जे मधुर स्वप्न देखैत छलहुँ से भंग भ' गेल। तखन ऐहु बुझि संतोष कैल जे नौ लाख भेटल नहि, त कमसँ कम गप्प त नौ लाखक सुनलहुँ जकरा बदौलति ई नौलखा गप्प तैयार भ' सकल। □

रंगशाला

ओहि दिन जहिना हाथमे कलम लेने छी कि एकटा सज्जन पहुँचि गेलाह। हम परिचय पुछलिऐन्ह त एकटा छपल कार्ड दैत बजलाह – हमरा लोक 'बम बाबू' कहैत अछि, परन्तु भुवनन्दन प्रसाद[1]क नामे बूझू। सहजे पिंड नहि छोड़ब। अतः कलम कैं रोकिए दिऔक।

एतेक विकट परिचय पाबिकऽ कलम अपने मसरिकाः खसि पड़ल। ओ बजलाह—हम एकटा सिनेमा कम्पनी खोलि रहल छी – 'मोक्षदा रङ्गशाला'। कहू, ई नाम केहन हैतैक ?

हम कहलिऐन्ह—बहुत सुन्दर। अपनेक ध्येय की रहत ?

ओ बजलाह—मिथिलाक प्राचीन सांस्कृतिक प्रदर्शन। हमर प्रथमे चित्र मैथिलीएमे रहत। हम यैह विचार लेबय आयल छी जे पहिल फिल्म कोन बनाओल जाय।

हम कहलिऐन्ह – वाह! ई त अपूर्व कहल! मैथिलीमे फिल्म बनत! परन्तु मैथिली बाजयवाली अभिनेत्री भेटतीह ?

ओ बजलाह—मैथिली बाजयमे छैहे की ? छ छा छि छी! से कइएक टा अभिनेत्री तैयार भऽ रहल छथि। जेना मिस पुदीना, शर्बत कुमारी, नर्गिस कनवर, अंगूर मोहिनी!

हमरा मुँह ताकैत देखि ओ बजलाह – हम चुनि चुनि कऽ परी सभ कैं जमा कैने अछि। जखन ई स्टार (तारिका) सभ चमकऽ लगतीह तखन पर्दा पर लोकक आँखि नहि ठहरतैक।

हम पुछलिऐन्ह – अपनेक स्टुडियो (रंगशाला) कतय रहत ?

ओ बजलाह – एतहि, गुलजारबाग मे। परन्तु देहातक सीनरी (दृश्य) लेबाक हैत त गामो सभमे हमर कैम्प जायत।

---

१ प्रशान्त देवताक एक प्रसिद्ध चरित्र।

हम कहलिऐन्ह — बहुत सुन्दर ! पहिने कोन तरहक फिल्म बनाबए चाहैत छी ?

ओ बजलाह — जाहि सँ मिथिलाक गौरव बढ़ए। परन्तु एहन विषय हो जाहि पर एखन धरि फिल्म नहि बनल हो।

हम सोचैत कहलिऐन्ह — शंकर मंडनक शास्त्रार्थ पर एखन धरि कोनो चित्र नहि बनलैन्ह अछि।

ई सुनितहि ओ उछलि पड़लाह। बजलाह — बस, बस। लाख टकाक बात कहल। तैं त हम अहाँ लग दौड़ल ऐलहुँ। आब हम सभ सँ पहिने वैह फिल्म बनायब। हमहूँ मनचला (दिमागदार) आदमी छी। देखू, एहि प्लौट (कथा) कें केहन चमका दैत छी ! अहूँ बीच-बीच मे आबि कऽ रिहर्सल (अभिनय) देखि गेल करब।

\+ + +

किछु दिनक बाद अकस्मात् बम बाबूसँ भेँट भऽ गेल। हमरा देखितहि बजलाह — अहाँ एको दिन ऐलहुँ नहि ?

हम पुछलिऐन्ह — की, चित्र कहियासँ प्रारम्भ हैत ?

ओ बजलाह — वाह, शूटिंग चलियो रहल छैक ! आउ चलू हमरा संग।

ई कहैत ओ हमरा बाँहि धऽ मोटरमे बैसा लेलन्हि।

ओतय पहुँचलहुँ त देखै छी जे अभिनय भऽ रहल अछि। मंडन मिश्रक बाप मरल पड़ल छथिन्ह और ओ गाबि कय विलाप कऽ रहल छथि — 'हाय पिता परलोक पहुँचला !'

बम बाबू कें अबैत देखि कऽ ओ और बेसी तानातानी पसारि देलन्हि — परलो''परलो''परलो'''!

बम बाबू हमरा कानमे कहलन्हि — देखू, वैह छथि मंडन मिश्र। केहन गबैत छथि ! और ओ छथि हमर म्यूजिक डाइरेक्टर (संगीत-निर्देशक)।

ई कहि ओ एक व्यक्ति दिस संकेत कैलन्हि। संगीत-निर्देशक देखलन्हि जे धनफुसकी चलि रहल अछि। ओ मंडन मिश्र कें इशारा कैलथिन्ह। आब मंडन मिश्र सरगमक औलादी देखाबए लगलाह — पधनी''पधनी''सारेग''गरेसा''' गरे गरे सा'''

कंसर्ट (बाजा) शान सँ चलि रहल छल। मंडन मिश्रक बाप मृत्युशय्या पर पड़ल छलथिन्ह। और मंडन मिश्र ईमन कल्याणक बारीकी देखैबामे पसीना-पसीना भऽ रहल छलाह।

हम बम बाबू कें पुछलिऐन्ह — हिनकर पिताक मृत्यु देखैबाक की तात्पर्य ?

ओ बजलाह — पिताक श्राद्धमे त शंकराचार्यसँ शास्त्रार्थ भेल रहैन्ह। तैं हम पहिनहिसँ भूमिका बान्हत अछि।

एतबहिमे अंगुरी रंगक साड़ी पर किशमिशी रंगक अँगरी (कंचुकी) कसने, शान रंगने, और ठोर कें पाकल तिलकोरक फर सन लाल-चटकने, एक नवयौवना आकाशक परी जकाँ आविर्भूत भेलीह। बम बाबू हमर हाथ दाबि कऽ नहुँ-नहुँ बजलाह — वैह थिकीह हिरोइन (नायिका)। मंडन मिश्रक स्त्री — सरस्वती। देखू, केहन पार्ट करैत छथि !

सरस्वती शोकमुद्रामे ओहिठाम बैसि गेलीह और एक रेशमी रुमाल लऽ कऽ आँखि पोछय लगलीह। हुनका दू बुन्द नोर चुऐबाक छलैन्ह, तैं ओहि रुमालमे अनचीन्ह तेल लगाओल छलैक। परन्तु से आँखिमे तेना कुरकुरा कऽ लगलैन्ह जे नोरक टघार गाल पर बहि गेलैन्ह। ई देखैत मेक-अप मास्टर (शृंगारीजी) दौड़लाह — जाह, पाउडर धोखरि गेलैन्ह !

फेरसँ क्रीम-पाउडर पोतल गेल। और पलक पर दू बुँद जल धऽ देल गेलैन्ह। तेहन कौशलसँ जे टप्प दऽ नोरक बिन्दु जकाँ खसैन्ह।

ओम्हर कैमरा-मैन (चित्रकार) पहिनहिसँ तैयार छलाह। बिन्दु खसैत-खसैत ओ टप्प दऽ स्नैप-शौट (चित्र) लऽ लेलन्हि।

आब सरस्वती देवी ससुरक शोक-संगीतमे संग पुरबाक हेतु दुनू हाथें ताल देबय लगलीह। हुनक अँगरी (कंचुकी) बेशी कसल छलैन्ह, ताहि सँ धक्क-सक्क छलीह। साँस लेब कठिन छलैन्ह। परन्तु हुनक श्वासोच्छ्वाससँ वक्षःस्थलक चढ़ाव-उतार प्रकट हैब जरूरी छलैन्ह, तैं बन्धन ढील नहि कय सकैत छलीह। जखन मृत्यु-गीत संगीत भऽ गेलैक तखन ओ 'हा तात !' कहैत बेहोश भऽ गेलीह।

परन्तु फोटोग्राफर नहि मानलकैन्ह। फेरसँ पोज देबक हैतैन्ह। किऐक त 'हा तात' कहैत काल हुनक दन्तावली नहि झलकल छलैन्ह।

खैर, दोबारा फोटो लेल गेल। एहि बेर सरस्वती अपन अनारदाना देखबैत बजलीह — 'हा तात !'

शूटिंग खतम भेल। सभा विसर्जित !

× × ×

किछु दिनक बाद बम बाबूक निमंत्रण भेटल—आउ अवश्य आउ। बड़ुत लहरदार सीन (दृश्य) छैक।

हम नियत समय पर पहुँचलहुँ त देखै छी जे पनिघटक बहार अछि। मंडन मिश्रक पनिभरनी सोलहो शृंगार बत्तीसो आभरण कैने इनार पर छमकि रहलि छथिन्ह।

बम बाबू हमरा कान लग आबि बजलाह—ई थिकी कटीली चंपा। देखू, केहन डांस (नाच) करै छथि!

चम्पा दू टा पूर्ण कुंभ कें उठा कलापूर्वक नचाबय लगलीह। कलश सभ छलकय लागल और छलकैत कलशसँ रस-वृष्टि होबय लागल।

तावत् हाथमे कमण्डलु नेने, डेढ़ हाथक दाढ़ी लगौने पहुँचि गेलाह शंकराचार्य! पुछलथिन्ह—मंडन मिश्रक घर कोन छैन्ह?

ओम्हर सँ म्यूजिक-डाइरेक्टर प्रौम्प्ट कैलथिन्ह—'बाबू दरोगाजी!'

बस, कटीली चम्पा ओहीं लयमे उठौलन्हि—

'बाबू संन्यासीजी!

कोन मुँ पुछै छह मालिक के घरवा मोर?

बाबू संन्यासी जी!'

एही धुन पर ओ तेहन चटक-मटक सँ अदा कलशक बहार देखाबय लगलीह जे संन्यासी जीक कमण्डलु डोलि उठलैन्ह।

तावत् संगीत-निर्देशक लय बदलि देलथिन्ह—

ए मोटर वाली छोरी!

शंकराचार्य मूड़ी डोलबैत गाबय लगलाह—

ऐ कलशीवाली छोड़ी!
तौं मंडन मिश्रक लौंडी!
ल-ल-ल-ल-ला!

× × ×

दू एक मास बितला उत्तर एक दिन मन भेल जे चली, कनेक देखी जे मण्डन मिश्रक आब की हाल छैन्ह।

रंगशालामे जा चुपचाप एक कात ठाढ़ भऽ कऽ तमाशा देखय लगलहुँ। मण्डन मिश्रक घर मैहक माशा मौसि गेल छैन्ह। और ओम्हर सरस्वती दाइ शीश-नृत्य कय रहल छथि। म्यूजिक-डाइरेक्टर संकेत देलथिन्ह—'जवानी की रेल चली जाय रे!' सरस्वती ओही ताल पर छम-छम करय लगलीह—

'हाय मोरा ई जोबना जाय रे,
देखू हीया हमर हहराय रे।'

ई नर्तन ओ निर्देशानुसार वक्षद्वय कें कम्पायमान करय लगलीह। हम आँखि मूनि लेल।

तावत् बम बाबू कोम्हरो सँ आबि पहुँचलाह। हमरा देखैत बजलाह—आउ, आउ। आइ बहुत दिन पर ऐलहुँ। हम केहन-केहन सीन (दृश्य) एहिमे देखिऐक अछि, जे लोक टूटि पड़त। चौदह टा डांस (नाच) और अठ्ठाइस टा गाना! एकरा अलावे ह्यूमर (हास्य), एडवेंचर (साहस), स्टंट (आश्चर्य)—सभ किछु भरि देलिऐक अछि। ई, आब अगिला सीन देखू।

संगीत-निर्देशक संकेत देलथिन्ह—'भारी कटारी मारि जाना!'

और सरस्वती ओही तर्ज पर शुरू कैलन्हि—

'छाती कें चीरि मारि जाएब ओ बलमा!
आब सहल नहि जाय रे!

हमरा त मन भेल जे हमहुँ संग दिऐक—

'आँखी कें फोड़ि मारि जाएब, ओ बम बाबू!
आब देखल नहि जाय रे!'

परन्तु बम बाबू दृश्यक रस लेबामे तल्लीन रहथि। बजलाह—अखन ई तैयार भऽ जायत त 'विद्यापति' फिल्मक कान काटि लेत।

हम कहलिएन्ह—ताहिमे कोन सन्देह? जौं मंडन मिश्रक आत्मा कतहु देखथिन्ह त हुनका सद्यः मोक्ष भेटि जैतैन्ह!

× × ×

किछु दिनक बाद सुनल जे बमबाबूक कंपनी बम बाजि गेलैन्ह। हम हुनक सिनेमा कें हाथ जोड़ि कऽ प्रणाम कैल—

मंडनो मुंडयते यत्र, नरीनर्ति सरस्वती।
शंकरो यत्र संमूढ़ः रङ्गशाले! नमोऽस्तुते।

□

अँचारक पातिल

हम ओहि समय बी० ए० मे पढ़ैत रही। गर्मीक छुट्टी बिता कऽ पटना जाइत रही। पुनारोडमे जखन गाड़ीमे सवार भेलहुँ और घंटी पड़ि गेलैक त देखैत छी एक व्यक्ति हाथमे एकटा पातिल नेने दौड़ल आबि रहल छथि। आबि कऽ बजलाह —अहाँ जा रहल छी? पटने कि ने? हमरा मुँह सँ 'हँ' सुनैत देरी ओ पातिल हमरा सीट पर राखि देलन्हि। हँसैत हँसैत बजलाह हमर छोट भाय उमाकान्त पटनामे पढ़ैत छथि से मठियामे रहैत छथि। हुनके खातिर ई अँचार······

हम पुछलिऐन्ह कोन मठिया?

ओ बजलाह अहाँ त मिंटो होस्टलमे रहैत छी। चौहट्टासँ उत्तर जे··· अच्छा, ओतेक ठेकान नहि रहत। पं० चतुरानन्द शास्त्री कैं त चिन्हिते हेबैन्ह। ओतहि पठवा देलासँ हुनका पहुँचि जेतैन्ह।

हम कहलिऐन्ह बेश, हम हुनके ओहिठाम पठवा देबैन्ह।

तावत् एञ्जिन सीटी देलकैक और गाड़ी चलय लागि गेल। ओ हाथ जोड़ि नमस्कार कैलन्हि और हमहूँ मात्र निहुरा कऽ उत्तर देलिऐन्ह। ओ हमरा सम्बोधन कए और किछु बाजय लगलाह परन्तु गाड़ीक घड़घड़ाहटि मे ओ सुनाइ नहि पड़ल। मुखाकृति और हाथक इशारासँ बूझि पड़ल जे अँचार नियत स्थान पर शीघ्र ओ सुरक्षित रूपमे पहुँचि जाय, तकरे पुनः स्मरण करा रहल छथि।

हम दस बजे अपना होस्टलमे पहुँचलहुँ। ११ बजेसँ कालेज रहय। वार्ड सर्वेन्ट (नौकर) कैं एकटा पुर्जी देलिऐक और कहलिऐक— जो, ई पातिल और चिट्ठी पं० चतुरानन्द जी कैं दऽ अबहुन। हँ, देखिहें, अनका नहि दिहहिक और पं० जी सँ जबाब लिखा कऽ नेने अबिहें।

पुनः हम झटपट स्नानादि कृत्य सम्पन्न कय क्लास गेलहुँ। जखन चारि बजे कालेजसँ फिरलहुँ त ओ एक बादामी रंगक रुलेक टा कागत हाथ मे देलक। देखलिऐक त ई लाइन लिखल अछि -

'शुभाशिषः। अँचार पाबि परमानन्द भेल। आब अहाँ पास भऽ गेलहुँ। इति। श्री चतुरानन्दस्य।'

पहुन न्यौंद पाबि हुनक छाती धुकधुक करए लागल। अँचार तऽ अनकर छैक तखन हुनका आनन्द किएक प्राप्त भेलैन्ह ? सेहो साधारण आनन्द नहि, परमानन्द ! दोसर वाक्य पढ़ैत सन्देह और पुष्ट भऽ गेल। 'आवे अहाँ पाक भऽ गेलहुँ'। एकर की अर्थ ? एकर आशय त ई भेल जे अहाँक जे जवाबदेही छल से समाप्त भऽ गेल। आब जे झार-भार से हमरा कपार पर। अहाँ चिन्ता छोड़ि दिअ।

पं० जी कैं भ्रम भेल होइन्ह तकर त कोनो संभावना नहि। किएक त हम साफ फरिछा कऽ सब बात लिखि देने छिऐन्ह। तखन धोखा कोना हेतैन्ह ?

केर मन कैं बुझाबए लगलहुँ किन्तु बात नहि। उमाकान्तसँ भेंट हेबे करतैन्ह। शास्त्री जी ओकर वस्तु दऽ देबिन्ह। तैं लिखै छथि जे 'अहाँ पाक भऽ गेलहुँ' अर्थात् निश्चिन्त भऽ गेलहुँ। शेष दायित्व जे हमरा ऊपर अछि से हम अपन पूर्ण कऽ लेब। तखन रहि गेल आनन्दक प्रश्न। से त लिखबाक शैली छैक। और अपन अपेक्षित व्यक्ति कैं परसँ सन्देश अबैक ताहूमे त लोक कैं आनन्द होएब उचिते। संभव जे दू चारि फाँक अँचारक हुनको बाएन रूपमे भेटि जाइन्ह। अतएव परमानन्द भेलैन्ह त कोनो तर्क असंगत नहि।

एवं प्रकार अपन शंकाक समाधान कय हम निश्चिन्त भऽ गेलहुँ।

दू चारि दिनक बाद सन्ध्याकाल बाजारसँ अबैत रही कि बाटमे पं० जीक खवास भेटि गेल। पुछलिऐक की हौ देसई भगत ! कोम्हर चललह अछि ?

देसई भगत भारी गप्पी अछि। जहाँ कनेको टोकि दिऐक कि डाकीक डाकी गप्प ओझराए लागत।

देसई बाजल — की कहू छौ बाबू ! तंग तंग कऽ कऽ छोड़ि देलन्हि। हमरा कहलन्हि जे अहाँसँ कोन बेल भेटैक तहाँसँ भेने आ। सेहो मलकीवाग छानि एलहुँ, कतहु नहि भेटल। आब मसल्लापुर दिस जाइ छी।

देसई बतबनहा अछि। एकरा बातक ओर छोर अन्दी नहि भेटत। तैं हम बीचहिमे टोकैत पुछलिऐक — बेल लऽ कऽ की हेतैक ?

भगत — की कहू छौ बाबू ! हुनकर की कोनो हाल बुझाइत अछि ! तखन जे बात फुरि जेतैन्ह कि हमरा हाँकि देताह। कालिह ग्रामिनसँ और उखड़ल छैन्ह। कोन्हे बेल पकड़ कऽ लेताह।

हम पुछलिऐक — और कोना उखड़ि गेलैन्ह ?

देसई भगत अपन स्वाभाविक टोनमे कहए लागल — की कहू छौ बाबू ! कतहुसँ एक पातिल अँचार आबि गेल छैन्ह। बस, तरकारी बन्द करा देलथिन्ह, जे आब दुनू साँझ अँचारे संग खायब। औ बाबू ! अँचार बढ़ियाँ छैक। खैबाक केर त अपना अंदाज रहै छैन्ह नहि। आब हमरा हरान करैत छथि। कहू त बाबू !......

एतबा सुनि लेला उत्तर वस्तुस्थितिक अनुमान करब कठिन नहि छल। तथापि शंका निवृत्त करबाक अभिप्रायसँ पुछलिऐक — अँचार कहाँसँ आयल छलैन्ह ?

देसई बाजल — की जानऽ गेलिऐन्ह बाबू ! जे कहाँसँ आएल छलैन्ह। हमरा सब कैं कि सब बात कहैत छथि ? हमरो एक फाँक देलन्हि ताहिसँ बुझलिऐन्ह।

हम पुछलिऐक — कथीक अँचार छलैक ?

देसई भगत किछु पुष्ट भेलो होइत बाजल — अँचार त बाबू, अँचारे छैक ! मुरार मालदह आमक। एहन एहन हरियर फाँक छैक जे की कहू ? और सिद्ध केहन त नकलन सको। चपाचप तेलमे डूबल छैक। मसाला तेहन चटकार जे आङुर चाटि कऽ खाइ। एहन अँचार हम नहि खैने छलहुँ।

हम पुछलिऐक — की, एहि बीचमे उमाकान्तो डेरा पर आएल छलथुन्ह ?

देसई बाजल — हँ, बराबरि अबै छथि। आइयो आएल छलाह।

हम — पं० जी हुनका किछु देबो कैलथिन्ह ?

भगत — नहि औ बाबू ! हम त नहि देखलिऐन्ह।

हम — और किछु कहितो रहथिन्ह ?

भगत — पुछैत रहथिन्ह जे एहि बीचमे नाम त नहि जेबाक अछि ? और हम नहि सुनि सकलिऐन्ह।

हम — बेस, त चलैक उमाकान्त कैं हमरासँ भेंट करबा हेतु पठा दिहुन। जरूरी काज अछि।

देसई भगत बेलक खोजमे बिदा भेल और हम अपना होस्टलमे एलहुँ।

× × ×

दोसरा दिन अन्हरौखे देखै छी तँ गंगास्नानसँ भीजल धोती कान्ह पर धैने, एक मुट्ठी भीजल टीक पीठ पर पसारने, लाल ठोप कैने, एक बेस सुभ्भाक संस्कृतक विद्यार्थी आगाँमे ठाढ़ छथि। हम पुछलिऐन्ह — की, अहींक नाम उमाकान्त थिक ? ओ बजलाह — हँ।

हम हुनका पुछलिऐन्ह — की, अहाँ कैं गामक सनेस भेटल ?

ओ बजलाह -- नहि त।

हम कहलिऐन्ह -- हम पण्डित चतुरानन्द शास्त्रीक ओहिठाम पठा देने छिऐन्ह। एक बासन अँचार अछि से लऽ आनव।

उमाकान्तक मुँह फक् दऽ उड़ि गेलैन्ह। बजलाह -- हुनका ओहिठाक किएक पठौलिऐन्ह ?

हम कहलिऐन्ह - अहांक बाप कहने रहथि।

उमाकान्त उदास होइत बजलाह -- आब ओ हमरा नहि भेटत।

हम पुछलिऐन्ह – से किऐक ?

ओ बजलाह – सेह। घरियारक मुँहमे पड़ल वस्तु उपरो होय परन्तु हुनका हाथमे पड़ल वस्तु ऊपर नहि भऽ सकैत अछि।

हम कहलिऐन्ह – बेस, त पहिने अहाँ चेष्टा करु। अहाँ बुते नहि हैत त हम कोनो युक्ति लगाएब।

× + +

दु चारि दिनक बाद हम पण्डित चतुरानन्द जीक ओहिठाम गेलहुँ। ओ हमरा देखितहि बजलाह – औ! ओहि विद्यार्थिया कें अहाँ की कहि देलिऐक ? राम राम ! एहनो बात कतहु कहल जाइक ! अँचार लैबाक वस्तु छलैक, लोक लैलक। ओकर कतहु पुरवा साठि होइक। अहीं हमरा पटाओल से अनर्गल कैल। अपने खइतहुँ। खैर। पठा देलहुँ त नीके कैल। परन्च आब ओकर खोद-खेन की ? हम उमाकान्त कें लेना कऽ बदलिऐन्ह जे थुकरी सन मुँह भऽ गेलैन्ह। हँ, और समाचार कहू।

हम त चुप्प रहि गेलहुँ।

दोसरा दिन संध्याकाल हम उमाकान्तक डेरा पर गेलहुँ। ओ उदास भय बजलाह -- शास्त्री जी त उनटे हमरे डाँटय लगलाह।

हम कहलिऐन्ह---बेस, एकटा युक्ति लगाबय दियऽ। जौं कदाचित् सुतरि गेल त अहांक अँचार ऊपर भऽ जाएत।

हुनका विश्वास नहि भेलैन्ह। बजलाह---कौन युक्ति लगैबैक ?

हम कहलिऐन्ह---अहाँ देखैत रहू। थोड़ेक और अँचार खर्च करब ? अछि ?

ओ बजलाह---हँ, घरसँ अनने रही ताहिमेसँ आठ दस फाँक हैतैक।

हम पुछलिऐन्ह---डेरामे एक पुरान पातिल हैत ?

उमाकान्त भण्डार घरसँ एक पैंच पातिल लऽ ऐलाह।

चतुरानन्द पातिलमे गर्दा भरल गेल। और ऊपरसँ अँचारक फाँक राखि देल गेलैक। तखन मैल सुभासँ काँप कऽ ओकर मुँह बान्हि देल गेलैक।

एतेक बेला पर एक फर्जी चिट्ठी लिखल गेल।

"स्वस्ति श्री उमाकान्त कें शुभाशीर्वाद। आगाँ समाचार जे एक बासन अँचार गेल छौह से तों अपने नहि खैहऽ। कारण जे एक बासनमे छुछुन्दरि पड़ि गेल रहैक सेह धोखा सँ तोरा चलि गेलौह। तँ तोरा लेल दोसर बासन नीक अँचार पठा रहल छिऔह। पहिलुक ककरो दऽ दिहौक। जौं शास्त्री जी होथि त हुनके दऽ दिअहुन। विशेष की लिखिऔह ? खूब मन लगा कऽ पढ़िह। इति

तोहर शुभाकांक्षी

रमाकान्त

हम उमाकान्तसँ पुछलिऐन्ह -- एम्हर देहातसँ कोनो नव आदमी आएल अछि ?

ओ बजलाह -- हँ, पुजेरी जीक गामसँ एकटा मड़र आएल छैन्ह।

हम कहलिऐन्ह -- बेस, तखन प्रायः काज भरि जाएत।

× × ×

शेष कथा सबैव त कहि सुनबे छी। ओहि आदमी कें कोना कोना सिखा पढ़ा कऽ विदा कैल गेल, से सब बूझि कऽ की करब ?

सारांश जे ओ अनमुआर बनि शास्त्री जीक ओहि ठाम पहुँचल और पुछलकैन्ह---औ सरकार ! उमाकान्त विद्यार्थी कतऽ रहै छथि ? हमरा त रातौन्ही अछि। सूझै अछि नहि। ककरो संग कऽ दिय।"

ई कहि ओ चिट्ठी तथा पातिल हुनका आगांमे राखि देलकैन्ह।

चतुरानन्द शास्त्री एक साँसमे चिट्ठी पढ़ि गेलाह। तकरा बादक घटना विज्ञ पाठक स्वयं अनुमान कऽ सकै छथि।

चतुरानन्द जी ओकरा कहलथिन्ह --तों ओहि कल पर सँ हाथ पैर धो आबह गऽ। दसई भगत ! मड़र कें सूझै छैन्ह नहि। हिनका हाथ धरा कऽ कल पर लऽ जाहुन।

एम्हर पातिल कैं बदला-बदली हेबामे कनेको विलम्ब नहि भेलैक। जखन मड़र हाथ-पैर धो कऽ आएल त शास्त्री जी कहलथिन —देखइ मगन। मड़र कैं उमाकान्तक मठिया देखा दहुन।

× × ×

हम चुपचाप उमाकान्तक कोठरीमे बैसल रही। मड़रक अबैत देरी उमाकान्त बजलाह— काज बनि गेल ! असली पातिल आबि रहल अछि।

खोलि कऽ देखल गेल त भरिकऽ हरियर हरियर आमक फाँक ! मन प्रसन्न भऽ गेल। केवल चारि फाङ्‌र खाली भेल छलैक। हम कहलिऐन्ह —उमाकान्त बाबू ! अहाँक भाग्य छल जे अँचार फिरि कऽ आबि गेल। हमरा त भरोस नहि छल।

उमाकान्त बजलाह—परन्तु शास्त्री जी सँ भेंट हैत तखन ?

हम कहलिऐन्ह - आब ओ नहि बजताह।

और सरियों पं० मधुरानन्द शास्त्री फेर कहियो ओकर चर्चा नहि कैलथिन।

चिकित्साक चक्र

हम दू टा वस्तुसँ बड्ड डराइ छी। एक कचहरी, दोसर अस्पताल। तेँ जखन केओ प्रणाम करैत अछि त आशीर्वाद दैत छिऐक जे "वकील डाक्टर सँ बाँचल रहब।" परन्तु एक बेर हम स्वयं फेरमे पड़ि गेलहुँ। मोकदमाक फेरमे त नहि, इलाजक फेरमे।

बात ई भेलैक जे पेट बिगड़ि गेल। गेलहुँ कविराजक ओहि ठाम। ओ नाड़ी देखि कऽ बजलाह — छौ मास पथ्य करू।

हम पुछलिऐन्ह — की पथ्य ?

ओ सूत्र रूपेँ बजलाह — प पथ्य, क कुपथ्य।

हम कहलिऐन्ह — वर्णमाला त हमरो पढ़ल अछि। प सँ पथ्य होइ छैक...

ओ बजलाह — से आशय नहि। 'प' अक्षर वला वस्तु अहाँक पथ्य हैत। जेना — परोर, पपीता, पिराड़, पलांकीक साग। क अक्षरवला वस्तु कुपथ्य हैत। जेना — कदीमा, कटहर, करैला, करमीक साग।

हम कहलिऐन्ह — तखन त कबइ कें छोड़ि कऽ पोठिया खाउ। कलाकन्दक स्थानमे पेड़ा। कचौड़ीक बदला पूड़ी ! और पूआ, पिड़ुकिया, पोलाव, पनतुआ सब त पथ्ये हैत ?

वैद्यजी विस्मयपूर्ण नेत्रसँ हमरा दिस ताकि बजलाह — ओजी ! आइ धरि अहाँ सन रोगी हमरा नहि भेटल छल ! जौं हमर दबाइ करक हो त जीभ बाँधि लियऽ।

जखन उसिनल पपीता खाइत खाइत कइएक मास भऽ गेल और 'प' सँ कोनो फल नहि बहराएल त गेलहुँ एक होमियोपैथिक ओतय।

ओ रंगबिरंगक प्रश्न पुछए लगलाह। मीठ नीक लगैत अछि कि नमकीन ? पेटमे हड़हड़ शब्द होइत अछि कि गड़गड़ ? चलए लगै छी त पहिने दहिना पैर उठैत अछि कि बामा ? इत्यादि।

एकाएक हमरा गालक मस्सा पर हुनकर दृष्टि पड़लैन्ह। बजलाह — आब हमरा सिम्पटम (लक्षण) भेटि गेल। नक्स भौमिका १००० अहाँ खाउ।

ई कहि ओ एक सीसी बहार कए हमरा आगाँ राखि देलन्हि। तावत् एक रोगिणी आबि गेलथिन्ह। हुनका जाँच करबाक हेतु दोसरा कोठरीमे लऽ गेलथिन्ह।

हम सीसी कैं खोलि कऽ देखल त सरिसो सन-सन छोट छोट उज्जर दाना भरल अछि। मनमे विचारल एक हजार कहाँ धरि गनैत रहब! मुँह बाबि कऽ ऊपरसँ सीसी कैं उनटा देलिऐक। सभ टा दाना मुँहमे खसि पड़ल। चीनीए त रहैक। जीभ पर पड़ैत देरी सभ टा गलि गेल।

तावत् ओ भीतरसँ पहुँचि गेलाह। बजलाह—ऐं! सीसी कोना खाली भऽ गेलैक?

हम कहलिऐन्ह—अपने कैं बेसी देरी भऽ गेल। तैं हम खा लेलहुँ।

ओ बजलाह—जुलुम भऽ गेल। ओहिमे एक हजार खोराक छलैक!

हम कहलिऐन्ह—अहाँ एक हजार खाय लेल कहने रही।

ओ बजलाह—सर्वनाश! एक हजार त पावर छैक। गोली एकेटा खेबाक छल। ओकरे असर एक मास धरि चलैत। बाप रे बाप! एतेक रासे गोली अहाँ कैं कोना खा भेल!

हम निवेदन कैलिऐन्ह—ई त एक चौठीसँ बेसी नहि छल हैत। यदि एकाध सेर भेटि जाइत त एक लोटा बढ़ियाँ शरबत तैयार भऽ जाइत। आइकाल्हि चीनी नहि भेटैत अछि।

ओ हमरा दिस देखि कऽ तजबीज करैत बजलाह—ओ जी! अहाँक जे सिम्पटम अछि तकर कोनो दवाइ हमरा एखन धरि नहि भेटल अछि। रहू, किताब देखऽ दियऽ।

ई कहि ओ एक मोट ग्रन्थ बाहर कैलन्हि। तदुपर कइएक मास धरि हमरा पर चाइना ओ पल्सेटिलाक प्रयोग करैत रहलाह, किन्तु फल नहि बहरायल।

तदनन्तर हम पड़ि गेलहुँ असली चक्रमे। अर्थात् डाक्टरक महाजालमे।

पहिने गेलहुँ डा० गुहाक ओहिठाम। हुनका ओहिठाम रोगीक मेला लागल रहय। अढ़ाइ घंटा बैसलाक बाद हमर पार आएल। ओ स्टेथोस्कोप लगौलन्हि। दू एक टा बात पुछलन्हि। और जा हम किछु उत्तर दिऐन्ह ता बजलाह—स्टूल एग्जामिनेशन (मल परीक्षा)।

हम जहाँ उठि कए बिदा होमय लगलहुँ कि ओ बाजि उठलाह—हमर फीस।

हम पुछलिऐन्ह—कतेक?

ओ बजलाह—१६)।

'स्टूल एग्जामिनेशन' एहि शब्दक मोल हमरा १६) देबय पड़ल। अर्थात् दू रुपैए अक्षर।

खैर। आब डा० बस्तीदारक दरबार कैल। चारि पाँच दिन हुनका ओहिठाम दौड़ला पर पुरीष-परीक्षाक रिजल्ट भेटल। ओ एकटा चिट पर दू टा शब्द लीखि देलन्हि। सौराठ सभामे सिद्धान्त लिखबामे पंजियार जतबा लैत छथिन्ह ताहिसँ बेसिए ओ चार्ज कैलन्हि।

ओ सिद्धान्त लऽ कऽ हम पुनः डा० गुहाक सेवामे उपस्थित भेलहुँ। तीन चारि घंटा बैसला उत्तर हमर जाँच भेल। ओ हमरा देखि कऽ बजलाह—यूरिन एग्जामिनेशन (मूत्र-परीक्षा)।

खैर। हुनका फीस दऽ कऽ डा० घोषक दरबारमे दाखिल भेलहुँ। तीन चारि दिनक परिश्रमसँ मूत्र परीक्षाक फल प्राप्त कैल। व्याकरणक परीक्षक कैं मध्यमा परीक्षामे जतबा भेटैत छैन्ह ताहिसँ बेसिए मूत्र परीक्षाक मूल्य अदाय करय पड़ल।

अस्तु। मूत्र परीक्षाक फल ओ सूत्र रूपमे लीखि देलन्हि।

ओ सूत्र लऽ कऽ हम पुनः डा० गुहाक शरणमे उपस्थित भेलहुँ। ओ बाहर गेल छलाह। साढ़े तीन घंटा पर ऐलाह। हमर लिस्ट देखि कऽ लिखि देलन्हि—ब्लड एग्जामिनेशन (रक्त परीक्षा)।

पुनः सोलह टका दक्षिणा लागल।

हम देखल जे ई तेहन सोलह बेर पछाड़ा हमरा कपार पर चढ़ि गेल अछि, जाहिसँ पिंड छूटब कठिन अछि।

आब डा० चौकी हमर रक्त चूसय हेतु ऐलाह।

[illegible] पुरुषाक उद्धार करयबला गयाजीक पंडा जतबा पैरपुजाइ वसूल करैत छथिन्ह ततबा ई हमरासँ वसूल कऽ लेलन्हि। और सात दिन हरान कैलाक बाद रिपोर्ट देलन्हि।

परीक्षा फल लऽ कऽ पुनः डा० गुहाक दरबारमे उपस्थित भेलहुँ। मालूम भेल जे कोनो पार्टीमे गेल छथि। चारि घंटा धरि तपस्या करैत रहलहुँ। तखन हुनक दर्शन भेल। ओ एहि बेर रबड़क नली छातीमे बेसी जोरसँ गड़ा कऽ देखलन्हि। ओर एक बेर संक्षेपमे बजलाह—एक्स रे!

ई सुनैत हमर प्राण सुखा गेल। ई सब्दे तेहन भयंकर होइत छैक। ऐक्सरे! अर्थात एक्सरे कुल करबाक लेल तैयार भऽ जाउ, परवाना आबि गेल।

तकरा बाद फेर सोलहक पहाड़ा पढ़य लगलहुँ। एक सोलह डाक्टर! दोसर सोलह एक्सरे! तेसर सोलह रिपोर्ट!

पुनः गुहा साहेबक सेवामे उपस्थित भेलहुँ। एही दौड़-धूपमे सोलह रुपैया क जुता सिया कऽ साफ भऽ गेल।

डाक्टर साहेब देखलन्हि जे सोलहक पहाड़ा हमरा कठस्थ भऽ गेल अछि। आब आगाँक सबक देबक चाही। अतएव प्रेसक्रिपशन (नुस्खा) लीखि देलन्हि पेनिसिलिन इंजेक्शन। चारि चारि घंटा पर।

आब एकर अर्थ भेल जे चौबीस घंटामे छौ बेर कऽ डाक्टर बजाउ। दवाइक दाम ओ इंजेक्शनक फीस जोड़ि कऽ बत्तिस रुपैया रोज।

कृष्णपक्षक चन्द्रमा जकाँ हमर मनीबैग क्षीण होमय लागि गेल। हम देखल जे यदि ई क्रम जारी रहल त अमावस्या पहुँचवामे बेसी देरी नहि लागत। और शरीरक स्थिति सेहो त अमावस्ये दिस जा रहल अछि!

एही बीचमे पहुँचि गेलाह एक नेचुरोपैथ। ओ कहलन्हि जल चिकित्सा करू।

हुनकर आदेशानुसार एक टब बनबाओल गेल। हम ओहीमे बैसय लगलहुँ और विटैमिन ए० बी० सी० सँ लऽ कऽ एक्स, वाई, जेड पर्यन्त अनेक भेटल से घोंटि कऽ पीबि गेलहुँ। परन्तु उत्तरोत्तर कमजोरी बढ़िनाहि गेल। हम अपना सँ निराश होमय लगलहुँ।

× × ×

परन्तु एक दिन तेहन चिकित्सा भऽ गेल जे सम्पूर्ण आधि-व्याधि जड़ि मूल सँ साफ भऽ गेल और हम डाक्टरक चक्र पाशसँ मुक्त भऽ गेलहुँ। ओ घटना तेहन आश्चर्यजनक अछि जे उपन्यास जकाँ लागत।

हाल ई भेलैक जे एक अक्खड़ मित्र अपना बरियातमे हमरा लऽ चलक हेतु अड़ि गेलाह। हम बहुत अनुनय-विनय कैलिऐन्हि जे हम जल चिकित्सा कऽ रहल छी, छोड़ि दियऽ। परन्तु के मानैछ!

ओ कहलन्हि हम आराम के साथ मोटर से ले चलब। धीरे-धीरे हाँकब। कोनो बात के तकलीफ न होएत।

अस्तु। हमरा विवश भऽ जाय पड़ल।

हाथी, घोड़ा और मोटरक कोनो संख्या नहि। बाजा गाजा और बल्लम-बर्छी सहित बरियात चलल और पहर राति बितैत-बितैत जनवासा पर पहुँचल। एकटा छेमामे डेरा पड़ल। सभ केओ बनि ठनि कऽ महफिलमे गेल। हम थाकल ठेहियाएल रही। रातिमे भोजन करहिक नहि रहय। चुपचाप सुति रहलहुँ।

करीब आधा राति कऽ एकाएक निंद टूटि गेल। महफिलमे हल्ला सुनाइ पड़ल। पहिने त भेल जे बरियातक धमगज्जर हैतैक। पाछाँ कऽ किछु किछु ध्वनि स्फुटित होमय लागल पगड़ी'''नाक'''इज्जत'''पन्द्रह हजार'''तिलक'''गहना'''लाठी'''भाला'''बर्छी'''मारो साले को'''खटाक खटाक तड़ाक्।

अरे बाप! तखन कि मारि भऽ रहल छैक! अरे! ई त बरियाती सरि-यातीमे लट्ठम-लट्ठा भऽ रहल छैक!

एतबहिमे देखछी त एक झुण्ड दौड़ल हमरा खेमा दिस आबि रहल अछि। हमर प्राण उड़ि गेल। आइ निश्चय जान गेल।

परन्तु लगमे आएल त देखैछी जे ई लोकनि दुल्हाक कुटुम्ब-वर्ग छथिन्ह। केओ फूफा साहेब, केओ मामा साहेब। किनको कपार फूटल, किनको कनपट्टी सँ धार बहैत।

हम पुछलिऐन्ह जी, कोन बात पर बझलैक? किछु लेन-देन लऽ कऽ भ गेलैक की?

ओ लोक बजलाह चुप! चुप! ओ सभ एम्हरे आबि रहल अछि। जान बचाबक हो त एहि ठामसँ पड़ाउ।

ई कहैत ओ सभ फानि फानि कऽ घोड़ा पर चढ़ैत गेलाह और सड़ सँ बेंह ले पार! हमरो एकटा घोड़ा दिस इशारा कऽ देल।

हे राम! हम चिर रोगी। पैदल चलबाक अभ्यास नहि। घोड़ाक सवारी कोना कऽ सकब?

खेमाक पाछाँ एक [illegible] [illegible] [illegible] घोड़ा बान्हल रहैक। साज-बाजसँ सुसज्जित, गर्दन टेढ़ कैने।

ओकरा देखितहि हमर आधा प्राण निकलि गेल। कतो गोप मे सौंपा द' क' ओहिपर चढ़ब कहैत त हम नहि मानितिऐक। परन्तु डाणक भय ओकरौ की नहि करा दैत छैक !

कहाँसँ हमरामे अनेक साहस आबि गेल, कोना क' ओहि पर चढ़लहुँ से आइधरि पता नहि। जहिना घोड़ाक पीठ पर चढ़ि हम लगाम ढीलिऐक कि ओ चलल। थोड़ेक दूर त ओ ठीक चलल। तत्पश्चात् एहन संयोग जे एक बेर हमर एँड़ी ओकरा पेटमे ठेकि गेलैक। बस, ओ बनि गेल अगिया बैताल ! चाल दैत लटा-उठा क' जे फर्दबाज चालि देखबय लागि गेल से किएक कलहु सकत ? प्रत्येक चालिमे हम दू हाथ ऊपर उड़ि जाइ और फेर क्षण द' घोड़ाक पीठ पर खसी। घोड़ा कोनो पक्का सवारक सिखाओल छल ताहिमे संदेह नहि। ओ त अपन चालि देखाबय लागल। परन्तु हमर जे दशा होमय लागल से दोसर की बूझत ?

घोड़ा सरपट दौड़ल जा रहल अछि। हम रास धैने पीठ पर कुदैत जा रहल छी। कोन दिस जा रहल अछि ताहिसँ कोन मतलब ? हमरा त एकेटा बातक चिन्ता रहय जे खसी नहि। बाज-बाज कहाँ खसि पड़तैक तकर ठेकान नहि। आब ओकर खाली पीठक हड्डी पर हमर हड्डी बजरय लागल। हम रास छोड़ि देल और जी जान अरपि क' घोड़ाक गर्दनि कँ भरि पाँज धऽ क' गरबाँही लगाओल। घोड़ा कहाँ भागल जा रहल अछि से हमरामे सूझय नहि। केवल एतबा बूझि पड़य जे ई खेत अछि ई आड़ी अछि ई सड़क अछि ई डबरा अछि। प्रत्येक क्षण आशंका होइत जे लऽ दऽ क' कतहु खाधिमे नहि खसाबय।

भाग्यवश बाटमे एकटा गाछी पड़ि गेलैक। एक ठाम बूझि पड़ल जे हमरा माथक ऊपर एक मोटगर ठाढ़ि अछि। हम दम द' ओकरा पकड़ि क' लटकि गेलहुँ और ओम्हर घोड़ा राम दुलकी लगबैत अपना सरपट चालिमे आगाँ बढ़ैत चलि गेलाह !

भोर भेला उत्तर पता लागल जे हमर गाम एहिठामसँ चारि कोस पर अछि। प्राण बचबाक खुशीमे तेहन जोश आबि गेल जे दुइए घंटामे घर पहुँचि गेलहुँ। भूख तेहन जागल जे लगले मुँह धोऽ क' पीढ़ी पर बैसि गेलहुँ। सरिसो आबिल द' क' अदौरी-कोंहड़ाक झोर भेल रहैक। और हरिहर मरचाइ देल ओलक सानना। ताहि संग भरि थारी भात खा गेलहुँ।

तहियासँ फेर कहियो डाक्टरक काज नहि पड़ल।

□

रेशमी दोलाइ

नीक जकाँ चढ़हु नहि पौने छलहुँ कि घंटी पड़ि गेलैक और गाड़ी ससरय लागि गेल। आब बैसबाक हेतु चाहकात दृष्टि दौड़ाओल। आधा रातिक समय। सभ निंद सँ भेर भेल छल। केओ बैसले बैसल ओंघाइत, केओ ठरइ पाड़ैत कफरो माथसँ माथ बजरैत!

दू टा गद्दा तँ लोकसँ भरल छल। हुनको बीच खाली जगह नहि। परन्तु तेसर गद्दा पर केवल एक रेशमी दोलाइसँ आच्छादित लम्बायमान मूर्त्ति दृष्टिगोचर भेल। बँचतर एकजोड़ सुन्दर फुलदार चट्टी जेना मूक भाषामे ई कहि रहल हो जे "एहि रूपनीक चरण चुम्बन करबाक अधिकार एकमात्र हमरहि टा अछि। अहाँ लोकनि एहि गद्दा पर ऐबाक साहस नहि करू।" अज्ञात रमणी अपन एहन जागरूक प्रहरीकेँ ड्युटी पर राखि निश्चिन्त भय सूतलि छलीह।

निन्दमे मातलि भद्र महिलाकेँ कोना उठाओल जाय? केओ पुरुष-पात्र संगमे रहितथिन्ह त दोसर बात छल। परञ्च एकाकिनी महिलासँ की कहल जाओ? सेहो साधारण महिला नहि, 'लेडी'। बिऐक ए सेकेंड क्लासमे एकसरे यात्रा करबाक साहस लेडिए बाय संभव छथि। तखन की करी? हिनका गद्दापर एक कात बैसि रही। वा ठाढ़े रही? एही तर्क-वितर्कमे किछु निश्चय नहि कय सकलहुँ। पुनः अपना मन केँ समाधान कैल —हम व्यर्थ ऊहापोहमे पड़ल छी। ई कोठरी एहि युवतीक एकान्त शयनागार तँ छैन्ह नहि। और ने ई गद्दा किछु हिनक खास पलंगक गद्दा छैन्ह। ई सार्वजनिक स्थान थिकैक। ई एतेक अनचिन्हार पुरुषक बीचमे एना निश्चिन्त भऽ कऽ पड़लि छथि, और हम लाजे गठुआ कऽ अकारत जकाँ एकटंगा देने ठाढ़ छी! ई विशुद्ध मूर्खता थीक।

परन्तु, तथापि सहसा ओहि गद्दापर जेबाक साहस नहि भेल। के जाने ओहिपर जइतहि ठेठ उर्दू वा अंग्रेजी भाषाक फुलझड़ी बरिसय लागय! अथवा पंजाबी छापक ···।

हम ओहि गद्दासँ एक हाथ फराके ट्रंकपर बैसि गेलहुँ। आब रेशमी दोलाइ केँ नीक जकाँ निरीक्षण करबाक अवसर भेटल। दोलाइक डीलडौल देखि बूझि

पड़ल जे डीलडौली साधारण अबला नहि छथि। मिथिलाक सुकुमारि अधिकतर कृशाङ्गी होइ छथि, जेना नैनी माछ। बंग-ललना बेसी चाकरि होइ छथि, जेना कतरा माछ। मारवाड़िन प्रायशः बोआरी जकाँ गुलथुल ओ नतराएल होइ छथि। परन्तु ई जे एहन चुआएल रोहु जकाँ मोटल-सोटल, भरल-पुरल देहवाली थिकीह से निश्चय पञ्जाबिनिए होइतीह।

हम ऐह तर्कशास्त्र लगबैत छलहुँ कि युवतीक सीरमामे एक सूटकेस दिस ध्यान गेल। ओहिपर सुन्दर अक्षरमे नाम अंकित छलैन्ह "माधुर्यलता!" हम माधुर्य-रसमे डूबि गेलहुँ। हमरा भान होमय लागल जेना विश्वक समस्त माधुर्य एही दोलाइक भीतर आबि केन्द्रीभूत भय गेल हो।

रेशमी दोलाइ केँ सूक्ष्म दृष्टिसँ भेदन कैला उत्तर बूझि पड़ल जे फलभार-समन्विता लता उत्तान छथि। बिएक तँ दोलाइक किछु अंश ऊपर अलगल छलैक जे रेलक दोलनगतिमे मदमत्त कुंभ जकाँ दलकैत जाइत छल। बिजलीक प्रखर प्रकाश मे ओकर आन्दोलन-अवरोह हृदयमे स्पन्दन उत्पन्न करयवला छल।

हम अपना मन केँ धिक्कारल "छिः! परस्त्री दिस एना नहि ताकक चाही।" परन्तु 'चाही' क अनुसार यदि लोक चलैत तँ कहिया ने जीवनमुक्त भऽ गेल रहैत; फेर ई मायाक संसार कोना चलितैक? रूप-पानक तृष्णा कर्त्तव्यबुद्धि केँ दबा देलक। एहन अतुल रूपराशि जखन आगामे एना बिछाएल पड़ल हो, तखन आँखि मूनि लेब परम अभावुकक काज थीक। वाल्मीकीय रामायणक ओ श्लोक स्मरण भऽ गेल

> परस्त्रीकुचकुम्भेषु कुम्भेषु परदन्तिनाम्।
> निपतन्ति न भीरूणां दृष्टयः शरवृष्टयः॥

गोसाईंओजी त लिखैत छथि 'मानस पुण्य होय, नहि पापा'। तखन एहन अनिन्द्य सौन्दर्यक मानसिक आनन्द लेने कोन दोष? और यदि दोषे होइक त एहि मे हमर कोन अपराध? आकर्षण-शक्ति केँ रोकब ककर साध्य छैक? लोहा सभ मिलि कय जौं संकल्प करय जे चुम्बक दिस नहि खिचाएब, धूलक समूह प्रस्ताव करय जे आँधि सग नहि उड़त, पतंगक झुंड महासभा करय जे आइ दिनसँ दीप पर नहि मड़राएब, त ई कय घड़ी निमहतैक? यदि एकलाख दाढ़ीवला मिलि कऽ दस लाख नीतिशास्त्र बनाबथि, तथापि नवयौवनाक आँचरक एक बसातसँ हुनक सभ पोथी-पत्रा उड़िया जैतैन्ह। सुन्दरी दिस युवकक आँखि जे ऊठ कऽ उठैत एहि सनातन धर्म केँ केओ नहि काटि सकैत अछि।

अस्तु ! रेशमी दोलाइक भीतरसँ उठल ओ समुन्नत कुचमंडल ध्यानक केन्द्रबिन्दु बनि गेल छल । सहयात्री लोकनि फोंफ कटैत छलाह । परन्तु हम एकाग्र-चित्त सँ निर्निमेष दृष्टि सँ जगैत रहलहुँ । "या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ।"

समाधि भंग भेल कखन त जखन पण्डौल स्टेशनमे एकटा नवीन यात्री प्रवेश कैलन्हि । ओ हमरासँ बेशी व्यावहारिक बुद्धि रखैत छलाह । ई सोझे ओहि गद्दा पर जा कऽ बैसि रहलाह । युवतीक पौथानमे । बेश सुभ्यस्त भऽ चुक्कीमाली बैसि गेलाह । हुनक कुली असबाब लय हमरा माथपर ठाढ़ ! एहन तन मन जे हमरे माथपर पेटी राखि देत । अन्यत्र स्थाने कतय रहैक ?

आब हमरो साहस जागल । जखन एक मोटा ओहि गद्दापर मैबे कैलाहे तखन हमहीं किऐक तपस्या करैत रहू ? और ई रमणी कोनो ज्वालामुखी त छथिए नहि जे भभकि उठतीह । और यदि किछु हैबो करत जँ पहिने हुनके (नवागन्तुक) पर बजरतैन्ह ।

हम हुनका सीरमबे आ बैसि रहलहुँ ।

शनैः शनैः धक्का छूटय लागल । हम सूटकेसक 'माधुर्यलता' शब्दपर केहुनी दय ओठङि गेलहुँ । परन्तु कनेक धखाइते-धखाइते कोन ठेकान दोलाइसँ कनेको स्पर्श भऽ गेने ई क्रुद्ध सर्पिणी जकाँ उठि कऽ फुफकार छोड़य लागथि !

परन्तु भाग्यदेवता जखन सहाय होइ छथिन्ह तखन सीके बनटि कऽ आगामे यही लसि पड़ैत छैक । दोलाइवाली तरेतर गमरि कऽ जे एक बेर करोट फेरलन्हि से ओ एकदम हमरा कोरमे आबि गेलीह । दोलाइक तरसँ हुनक अनारक फूल सन लाल रेशमी साड़ी झलकि उठल । हुनक विशाल केशपाश हमरा जाँघपर छितरा गेलन्हि । चुपचाप एक लट कें हाथमे लय नापल त पूरे डेढ़ हाथ ! युवती सुकेशी छथि ताहिमे सन्देह नहि । हमरा भगवानमे विशेष आस्था नहि । कतेक लोक नास्तिको कहैत अछि । परन्तु ओहि समय बूझि पड़ल जे भगवान अवश्य छथि और कृपानिधान छथि नहि तँ ...।

युवतीक ओहन सुखद स्पर्श पाबि हम पुलकित भऽ गेलहुँ । जेना सायुज्य मुक्ति भेटि गेल हो ! मनहि-मन हुनीक वंदना करय लगलिऐन्ह ! हे विश्वक सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी ! हमर कोनो पूर्व जन्मक तपस्या छल जे ई अनुपम सौभाग्य हमरा प्राप्त भेल । दोलाइमे आवृत रहबाक कारण यद्यपि अहाँक मुखचन्द्र हम नहि देखि सकै छी तथापि अहाँ त्रैलोक्य-विजयिनी छी, एहिमे हमरा सन्देह नहि अछि । अहाँ

लक्ष्मी, सरस्वती ओ दुर्गा तीनूक प्रतीक छी । लक्ष्मी छी से रेशमी परिधाने कहि रहल अछि । सरस्वती छी से सूटकेसमे अङ्कित नामे कहि रहल अछि । और शक्तिस्वरूपा छी तकर त ईह प्रमाण जे एकाकिनी निर्भय भऽ यात्रा कय रहल छी । पुन और फुलबाकाँ पीनस अहाँक मांसल यौवन जेना घोषित कय रहल अछि जे 'हम अपन आत्मरक्षा करबा मे समर्थ छी' । हे अपरिचित सुन्दरी ! अहाँ मिस्ट्रेस, नर्स, लेडीडाक्टर वा फिल्म ऐक्ट्रेस जे होउ, हम अहाँकें लक्ष-लक्ष धन्यवाद दैत छी । यदि अहाँ जनानी गाड़ीमे रहितहुँ वा एही ठाम जागलि बैसलि रहितहुँ अथवा पूर्ववत फराक सूतलि रहितहुँ त कि हमरा ई अयाचित अपूर्व स्वर्गीय सुख प्राप्त होइत ? आइ हम तरि गेलहुँ !"

हम हुनक दोलाइ-मण्डित मस्तक कें अपना जाँघपर रखने ओहिना गर्वक अनुभव करय लगलहुँ जेना ओहि गुप्त सौन्दर्यपर हमर एकाधिपत्य हो ।

हमरा मधुबनी उतरक छल । परन्तु ओहि अमूल्य धरोहर कें छोड़ि कऽ उतरि कोना सकैत छलहुँ ? एहन-एहन अवसर कि जीवनमे बारम्बार भेटैत छैक !

गाड़ी जयनगर आबि गेल । सभ यात्री उतरि गेलाह । रहि गेलीह केवल ओ रहस्यमयी सुन्दरी और हुनक अंगरक्षक रूपमे हम । आब उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करय लगलहुँ जे दोलाइक अन्तरालसँ चन्द्रमुखक दर्शन हैत ।

तावत् देखै छी तँ एक झुंड बैरागी ओहि कोठरीमे पैसि देलक । "माधुर्य-लताजी है ? माधुर्यलताजी ! ओ माधुर्यलताजी ।"

सहसा दोलाइ हटल, और ओहि तरसँ माधुर्यलताक जे रूप प्रकट भेल से देखि सिहरि उठलहुँ । हे राम ! दाढ़ी-मोंछ सफाचट ! नकली केश लगौने, रेशमी साड़ीपर रेशमी चोली और चोलीमे बेस सन सन दु टा लत्ताक गेन बना कऽ कसने ! 'रोमांस'क स्थानमे 'रोमाञ्च' भऽ उठल !

बैरागी दल आबि हुनकर स्वागत करय लागल । केओ पैर पखारि कऽ चरणोदक लेलकैन्ह । केओ माला पहिरौलकैन्ह । केओ सूटकेस हाथमे लऽ लेलकैन्ह । सखीजी अपना भक्तमंडलीमे आबि मटकबैत जनकपुरवला ट्रेनमे गेलीह वा गेलाह । 'कोबर' ओ 'फुलवारी' लीला करक हेतु ।

× × ×

मायाक आवरण हटला उत्तर जखन आँखिक चकाचौन्हि दूर भेल तँ देखै छी जे प्लेटफार्म पर फतूरी कका ठाढ़ छथि । पुछलन्हि - की हौ उमेश ? तों कतय सँ ?

हमरा मिटपिटाइत देखि पुनः पुछलन्हि जी त आइ-काल्हि पटने मे रहै छह ? छुट्टीमे गाम नहि गेलाह ?

हम कहलिऐन्ह कनेक जनकपुर चल गेल छलहुँ । परिक्रमा देखक हेतु ।

फतुरी कका परम भक्त छलाह । गद्गद भय बजलाह वाह-वाह ! अवश्य जेबाक चाही । सुनै छी आइकाल्हि प्रीतिलता, माधुर्यलता आदि बहुतो सन्तक लीला भऽ रहल छैन्ह । 'कोबर' देखलह कि नहि ?

जी त नहि गेल । परन्तु कहलिऐन्ह—हँ, माधुर्यलता कें त देखलिऐन्ह ।

फतुरी कका सखीसम्प्रदाय कें मानैत छलाह । बजलाह अहा ! ओ त पहुँचल सन्त छथि । भगवानक अनन्य सखी ! रातदिन ओही रूपमे रहैत छथि । एहन-एहन महात्माक संगतिसँ वैराग्य भऽ जाय ।

हम कहलिऐन्ह—ताहिमे कोन सन्देह ? हमरा त हुनका देखितहि वैराग्य भऽ गेल ।

फतुरी कका बजलाह—वाह ! तोहर निष्ठा देखि बड़ प्रसन्नता भेल । आइकाल्हुक कालेजिया छौंडा कि ई सभ मानैत अछि ! अपना धर्मकर्ममे एहिना भक्ति राखी ।

हम चुपचाप फिरती गाड़ीसँ मधुबनी वापस ऐलहुँ । तहियासँ यदि कोनो महिला कें रेलमे सुतलि देखैत छिऐन्ह त हम ओहि डब्बा कें फराकेसँ प्रणाम करैत छी !

□

बौआक दाम

[बौआक बाप मसनद पर ओङठल छथि। कानसँ किछु कँच सुनैत छथि, तहिं पानदान ओ पिकदान राखल छैन्ह।

एकटा मुंशीजी बही-खाता खोलने हिसाब कऽ रहल छथिन्ह। एकटा मोसाहेब मोसि बना रहल छथिन्ह। खबास पैर जाँति रहल छैन्ह। एक पण्डितजीक प्रवेश साधारण वेश, चिन्तातुर वदन, मुँह पर दीनताक भाव।]

बाबू साहेब—ई के छथि ?

पण्डितजी—हमर नाम श्रीक विद्याधर झा।

मोसाहेब—अपने ?

पण्डितजी—हम साहित्य, व्याकरण ओ न्यायक आचार्य थिकहुँ। सरस्वती विद्यालयक प्रधानाध्यापक छी।

मोसाहेब—की थीक ? कहल जाओ।

बाबू साहेब (चिचियाकऽ)—कने हुनकोँ कहहु। सभ टा अपने बतियैने जाइ छहु।

मोसा०—(जोर सँ) ई बड़ भारी पण्डित छथि।

बाबू०—कोन काजेँ आयल छथि ?

पण्डित हमरा एकटा कन्यादान करबाक अछि। दान योग्य पात्रक हाथेँ करक चाही, ताहूमे कन्या-रत्नक। सुनबामे आयल अछि जे अपनेक बालक बाइ० ए०मे पढ़ि रहल छथि। अपने समाजमे धनवान ओ प्रतिष्ठित व्यक्ति छी। एहि घरमे हमर कन्या सुखसँ रहतीह। तँ हेतु अपनेक ओहि काम आएल छी।

बाबू—की कहै छथुन्ह ? कनेक हमरो बुझा कऽ कहहु।

मोसा०—ई कन्यागत छथि।

बाबू०—की ? बौआक प्रति ?

मोसा०—हँ।

बाबू०—तोरा त सभ बुझले छौह। कहि दहुन्ह

पण्डित—की ?

मोसा०—ई महासभामे हाथ उठौने छथि। तेँ बालकक प्रति टाका नहि गना सकैत छथि।

पण्डित—वाह ! की आदर्श सिद्धान्त ! एहने-एहने उदार विचारक व्यक्तिसँ समाजक अभ्युदय होएत। बाबू साहेब धन्य छथि। हम यैह आशा राखि कऽ आएल छलहुँ।

मोसा०—परन्तु···

पण्डित—परन्तु की ?

मोसा०—बाबू साहेब तिलकमे एको पाइ नहि लेताह। परन्तु बालक कँ पढ़ेबामे जतबा खर्च पड़लैन्ह अछि से···

पण्डित—से की ?

मोसा०—ततबा कन्यागत कँ देबय पड़तैन्ह।

पण्डित—ऐँ ! अपना सन्तति कँ तँ लोक पढ़बितहि अछि। कन्या कँ पोसबामे ओ पढ़ेबामे हमरो खर्च लागल अछि से हम कहाँ मङ्‌ैत छिऐन्ह ?

मोसा०—बाबू साहेबक यैह सिद्धान्त छैन्ह। बालकमे जतबा खर्च पड़लैन्ह अछि से सभटा मुंशीजी कराके बहीमे दर्ज कैने गेल छथि। ओतबा बिनु नेने बाबू साहेब ककरो बालक नहि दऽ सकै छथीन्ह।

पण्डित—ई बात हमरा बुद्धिमे नहि अबैत अछि ! बालक कँ हम किछु कीनि त नहिए लेबैन्ह। हुनके बालक भऽ कऽ रहथीन्ह। तखन दाम कथीक मङ्‌ैत छथीन्ह ?

मोसा०—एतेक दिन पोसबाक।

पण्डित—हम पिता भऽ कऽ कन्या कँ एतेक दिन पोसल। ईहो पिता भऽ कऽ बालक कँ एतेक दिन पोसलैन्ह। हिसाब-किताब बराबरि। तखन पोस की मङ्‌ैत छथीन्ह ? किछु बनकर नेना त पोसिया नहिए लेने छथीन्ह जे लोक पोस देतैन्ह !

बाबू०—(कानपर हाथ दऽ कऽ) की कहैत छथुन्ह ?

मोसा०—बौआक खर्च···

बाबू०—बौआमे हमरा बहुत खर्च पड़ल अछि। मुंशीजी सँ हिसाब देखि लेबै करुन्ह।

पण्डित—(स्वगत) बड़ मुश्किल ! हम हिसाब देबु ? जेना हमरे कर-जडश कैला पर बौआके जन्म देने होथीन्ह !

मोसा०—पण्डितजी ?

पण्डित—हमरा बुझा गेल।

मोसा०—की बुझा गेल ?

पण्डित—जखन अपना औरस पुत्रक ई हाल, तखन हमरा कन्या कँ एहि घरमे निर्वाह कोना हैत ? दस वर्षक बाद कदाचित् हमरो कन्या-दौहित्रक सभटा खेल-खिलल जोड़ि कऽ हमरा सँ ओसूल करै लागथि त कोन आश्चर्य ? हम बाज ऐलहुँ एहन सम्बन्धसँ। ई अपन धन राखथु। हम चललहुँ। नमस्कार !

(पण्डितजी जाइ छथि)

बाबू०—की विचार भेलैन्ह ?

मोसा०—खर्चक नामे सुनि बिदा भऽ गेलाह।

बाबू०—हह ! भड़निएसँ भऽ गइलैन्ह ! एतेक दिन बौआमे हम खर्च कैल अछि से ओहिना दऽ दिऔन्ह ? एहन-एहन कन्यागत कँ मसानक पातसँ मुँह पोछि दइन।

(तावत ओकील साहेबक प्रवेश)

बाबू साहेब—आब ई दोसर के पहुँचलथुन्ह ?

मोसा०—ई ओकील साहेब छथि जे एक बेरि और आयल रहथि।

बाबू०—की बौआक प्रसङ्ग ?

मोसा०—हँ। (ओकील सँ) बैसल जाओ।

बाबू०—हिनका त कहिए देने छिऐन्ह। मुन्शीजी, हिसाब बुझा दहुन्ह।

मुन्शीजी (बही-खाता उनटा-पुनटा कऽ)—

बौआक जन्म सँ ६ वर्षक अवस्था धरि

खेला-खेलैबामे	२०००)
मिडिल पास करैबामे	३०००)
मैट्रिक पास करैबामे	४०००)
कुल जोड़	९०००

येह मोटा-मोटी हिसाब अछि। एहिमे जकर तफसील कहथि बुझा दिलेन्ह।'

ओकील साहेब—एहि हिसाबमे हमरा किछु त्रुटि बूझि पड़ैत अछि।

बाबू०—की कहैत छथुन्ह ?

मोसा०—कहैत छथि जे हिसाबमे किछु गलती अछि।

बाबू०—(खिसिया कऽ)—की गलती अछि ?

मुन्शीजी—सरकार, एको पाइक गलती एहिमे नहि अछि। हम कइएक बेरि जोड़ने छी।

मोसा०—कोन ठाम गलती बूझि पड़ैत अछि ?

ओकील—कने कागज-पेन्सिल मङबा दिअऽ।

(मुन्शीजी कागज-कलम-दवात बढ़ा दैत छथीन्ह, ओकील साहेब लिखि कऽ बुझबैं छथीन्ह।)

(१) बौआक जन्म देबामे बौआक बाप केँ जे परिश्रम पड़लैन्ह तकर मेहनताना— ८४)

(२) बौआक माय, नौ मास दस दिन बौआ केँ जे पेटमे रखलथीन्ह तकर भाड़ा एक रुपैया रोजक हिसाबसँ— २८०)

(३) प्रसव काल जे कष्ट भेलैन्ह तकर हरजाना— ४७६)

(४) आद-गुड़-जिरवानी इत्यादिमे खर्च— १००)

(५) छठिहार, तेल, काजर, भाँट, पमरिया, बधैनी आदिक मदमे— १००)

(६) बौआकेँ अपन दूध जे पिऔलथीन्ह तकर दाम २) सेरक हिसाबसँ दू मन दूधक दाम— १६०)

(७) बौआकेँ स्तनपान करौने यौवनक जे अवनति भेलैन्ह तकर हर्जाना— १०००)

कुल जोड़ २२००

(मुन्शीजी ओ मोसाहेब मुसुकियाइत छथि)

बाबू०—की कहैत छथुन्ह ?

मोसा०—ई कहैत छथि जे बाइस सै टाका बौआके और खर्च सूदम छैन्ह सेहो जोड़ि लिअऽ।

बाबू० (प्रसन्न भऽ)—ठीक, ठीक। जरूर बेसी खर्च पड़ल हैतैन्ह। मुंशीजी केँ जोड़ि देबय कहुन्ह। हुनका बहुत बात ओकालसँ छूटि जाइत छैन्ह। (शोर करैत) मुंशीजी !

(मुन्शीजी चुप्पहि बहीमे जोड़ऽ लगैत छथि)

ओकील०—आब कुल जमा कतेक भेल ?

मुन्शीजी—एगारह हजार दू सै।

ओकील०—एकर सूदि जोड़ू।

बाबू० (मोसाहेबसँ)—की कहै छथि ?

मोसा०—कहै छथि जे एहि रुपैयाक सूदि मुंशीजी नहि जोड़ने छथि।

बाबू० (खिसिया कऽ) मुंशीजी भुस्कोल छथि। अपना अकिलमन्दीक बड़ दाबी रहैत छैन्ह। परन्तु कहियो ई नहि फुरलैन्ह जे एतेक दिनक सूदि जोड़ि कऽ चढ़ा दिऐक। अपना हिसाबमे एक-एक अधी कऽ जोड़ि लैताह। और हमरा बेरि नमकहरामी ! (मुंशीजी चुपचाप सूदि जोड़य लगैत छथि।)

ओकील०—कतबा भेल ?

मुंशीजी—आठ सै सात रुपैया साढ़े एगारह आना।

ओकील०—कुल जोड़ कतेक भेल ?

मुंशीजी—बारह हजार सात रुपैया साढ़े एगारह आना।

ओकील०—एहिमे हमरा किछु छूटो भेटत ?

मोसा० (बाबू साहेब सँ उच्च स्वरेँ)—बारह हजार सात रुपैया साढ़े एगारह आना होइत छैन्ह। पुछै छथि जे एहिमे किछु छूटो भेटत।

बाबू०—सात रुपैया साढ़े एगारह आना छोड़ि दहुन्ह।

ओकील०—बेस त बारह हजार भेल ! हम गनि दैत छी।

(ओकील साहेब नोटक थाक बहार कऽ गनै लगैत छथि।)

बाबू० (प्रसन्न भऽ)—बस, हम एहने कुटुम्ब चाहैत छलहुँ। मुंशीजी मिठाइ लाबह।

ओकील०—करैक परिह गेल छाओ ! पहिने रजिस्ट्री भऽ जाइत त नीक छल।

बाबू०—कोन बातक रजिस्ट्री ?

ओकील०—यैह जे आइ दिन सँ अहाँक बालक हमर बालक भऽ जैताह। ओ जे कमैताह-खटैताह से सभ हमर हैत। अहाँ कें केवल पिण्डदान टा सँ सम्बन्ध रहत।

बाबू०—ऐं-ऐं-ऐं !

ओकील०—हँ, एहि शर्त पर जँ अहाँकें मजूर हो त ई सभ टा नोट हँसोथि लियऽ।

बाबू०—अहाँ हँसी करैत छी।

ओकील०—नहि, नहि, हँसी नहि करैत छी। हम मोसविदा बना कऽ अनैत छी। रजिस्ट्री हमरा कन्याक नामसँ हैतैन्ह।

(मोसाहेब तथा मुंशीजी मुँह झाँपि कऽ हँसैत छथि।)

बाबू० (खिसिया कऽ)—तों सभ ठीठी-ठीठी की करैत छह ?

[ओकील साहेब अपन समटा नोट हँसोथि ओहि ठामसँ विदा होइत छथि।]

ओकील० –(चलैत-चलैत)—बेस, हमरा अहाँक सौदा नहि पटल। नमस्कार !

(पटाक्षेप)

☐

धोखा

हमरामे एकटा भारी दोष अछि जे लोकक मुहठान और नाम बहुत जल्दी बिसरि जाइत अछि। एही द्वारे कतेको ठाम भारी धोखामे पड़ि जाइ छी। मुँह त चिन्हार जकाँ लगैत अछि, कतहु देखने छिऐन्ह जरूर। परन्तु कतऽ और कहिया, से स्मरण नहि। एहना स्थितिमे की कैल जाय ? तेहन कौशलसँ गप्प करऽ पड़ैत अछि जे देखार नहि होइ। परन्तु तथापि कतेक बेर पकड़ाइए जाइ छी।

एक बेर पहलेजा घाट दऽ कऽ जाइत रही। एकटा परिचित सन व्यक्ति कैं अपना डब्बाक सामने अबैत देखलिऐन्ह। एहन-एहन बेर हम अखबारक शरण लऽ लैत छी। के चिन्हारे करी गऽ ? देखितहि पुछय लगलाह – "कहू झा जी, कोम्हर चललहुँ अछि ?"

एहि प्रश्नक भावार्थ ई जे आरामसँ जे बैसल छी से आब घुसुकि जाउ और हमरो जगह दीयऽ। यदि एतबे धरि बात रहैत त कोनो तरेक हर्ज नहि, परन्तु ई त खोधि खोधि कऽ घुड़ीमोड़ार गप्प करय लगलाह। और एम्हर नामो स्मरण नहि। एहना स्थितिमे के ई झंझट बेसाहो ? अतएव हम अखबारमे डूबि गेलहुँ। एहन तन्मय जे हम तल्लीन छी, केओ टोकी जुनि।

परन्तु तथापि ओ महानुभाव ओंघिए देलन्हि –"की औ झा जी ! कहू कुशल।"

हम मनमे कहल – कुशल त अहीं आबि कऽ चौपट कैलहुँ। एखन कुशल नहिए पुछितहुँ ताहीमे कुशल छल।

मकाइयक्षः शिष्टता देखबैत आधा स्थान खाली कऽ देलिऐन्ह। ओ आबि कऽ बैसलाह। हम असमंजसमे पड़ि गेलहुँ। हिनकासँ कोन तरहेँ गप्प प्रारम्भ कैल जाय ? की कहिकऽ संबोधन करिऔन्ह ? स्मृति-पटल पर बहुत बल देल, परन्तु कोनो संज्ञा, विशेषण वा क्रिया एहन नहि बहरायल जकरा आधार पर हिनकासँ वार्तालाप कय सकी। हम एही तारतम्यमे छलहुँ कि ओ पुछि बैसलाह 'की समाचार छैक ?'

आब हमरा उसास भेटि गेल । तेहन विस्तारसँ अखबारक गप्प उठओलन्हि जे हाजीपुर पहुँचा देलिऐन्ह । हम मनाबय लगलहुँ जे ई सज्जन एहीठाम उतरि दोसर लाइन धरथि त भरमा-मर्याद रहि जाय । पुछलिऐन्ह– अपने त पटोरी दिस जाएब ?

ओ अकचका कऽ बजलाह—नहि, पटोरी किऐक जायब ? हम कहलिऐन्ह—ओहिना पुछने छलहुँ ।

परन्तु हुनका मनमे सन्देह भऽ गेलैन्ह । बजलाह—की औ हा जी ! अहाँ हमरा चीन्हल नहि ?

आब कोना कहिऔन्ह जे नहि ? मुँहसँ बहरा गेल—आह ! चीन्हब किऐक नहि ?

ओ अविश्वासपूर्वक हमरा दिस तकैत बजलाह– अच्छा, कहू त हमर नाम की थिक ?

आब महा संकटमे पड़ि गेलहुँ । की उत्तर दिऐन्ह ? एक बेर मुँहसँ फूसि बहरा गेल अछि, तकर रक्षा करब जरूरी थीक । हँसि कऽ बात कें टारय चाहलहुँ । परन्तु ओ कखनो छोड़ऽ बला नहि । बात कें टारय चाहलहुँ । परन्तु ओ कखनो छोड़ऽ बला नहि । बात कें टारय चाहलहुँ ।

एहन कठिन स्थितिमे पड़ि गेलहुँ जे कोनो उपाय नहि सूझय । हारि कऽ एम्हर-ओम्हर ताकय लगलहुँ । हे लीलामय ! कोनहुना लाज राखि लियऽ । और लीलामय सरिपहुँ लाज राखि लेलन्हि । किऐक त बेंचतर हुनकर लोटा राखल रहैन्ह जाहिपर नाम खोदल रहैन्ह 'चुनचुन चौधरी ।' बस, हम बाजि उठलहुँ—भला, चौधरीजी कें नहि चिन्हबैन्ह ?

ई सुनि ओ प्रसन्न भऽ गेलाह । हमरा कान्ह पर हाथ रखैत बजलाह—सैह त कहै छलहुँ ! एतेक जल्दी कोना बिसरि जायब ? औ जी, अहाँ अन्यमनस्क भऽ हमरासँ केवल अखबारक गप्प करय लगलहुँ । तैं मनमे संदेह भेल जे अनचिन्हार जकाँ किऐक करैत छी ?

हमर छाती धड़कय लागल । हे भगवान ! कतय हिनका सँ भेंट अछि से ध्याने पर नहि चढ़ैत अछि । दरभंगामे ? अथवा मधुबनीमे ? अथवा पटनामे ? कतहु फेर ने एहन कोनो बात उठि जाय जाहि सँ हम पकड़ा जाइ । मनमे याहि-

याहि करैत, थाहि थाहि कऽ हुनकासँ गप्प करय लगलहुँ । पुछलिऐन्ह—अपने कतय जाएब ?

ओ बजलाह—एखन त मुजफ्फरपुर । तकरा बाद ओतहि ।

हे भगवान् ! ओतहि कतय ? हमरे ओहि ठाम त नहि ? परन्तु डरे किछु पुछबाक साहस नहि भेल । मने मन जोड़य लगलहुँ भगवानपुर, गोरौल, कुरहनी, तुर्की, मुजफ्फरपुर । एखन पाँच स्टेशन हिनका संग तय करबाक अछि । हे वैद्यनाथ ! कहुना पार लगाउ ।

खैर । किछु दूर धरि हम तेहन अटकरसँ गप्प करैत गेलिऐन्ह जे थाह नहि लागय देलिऐन्ह । "इह ! असाध्य गर्मी पड़ैत छैक । एक कछार वर्षा भऽ जइतैक ! एहू बेर अकालक लक्षण बूझि पड़ैत अछि । धान-पानिक कम्मे आशा । वस्तु सभक दाम आकाश ठेकल जाइत अछि ।" इत्यादि इत्यादि ।

परन्तु थोड़ेक कालक बाद ओ एकाएक पूछि बैसलाह—कहू, पीसीक की समाचार ?

आब लियऽ ! हिनकर हाल त हम जनितहि नहि छिऐन्ह, हिनकर पीसीक हाल कोना कहिऔन्ह ? हे भगवान !

हम तर्कशास्त्र लगओल । "पीसी कोना छथि ?" एहि प्रश्नसँ की निष्कर्ष बहराइत अछि ? हिनकर पीसी हमरा ओहि ठाम रहैत छथिन्ह । परन्तु हमरा घरमे त केवल स्त्री टा छथि । सैह हिनकर पीसी भऽ सकैत छथिन्ह । एतावता ई श्रीमती जीक भातिज होइथिन्ह । अर्थात ई सम्बन्धमे हमरा सरबेटा लगताह ।

एहि प्रकारें तर्क लगबैत हम कहलिऐन्ह—हँ, निकें छथि ।

परन्तु एहि संक्षिप्त उत्तरसँ हुनका संतोष नहि भेलैन्ह । बजलाह—ओ त किछु दुःखिता छलीहि ?

हम देखल जे ई हमरा घरक भितरियो हाल जनैत छथि । अतएव एतबेसँ प्राण नहि छोड़ताह । कहलिऐन्ह—हँ, मन किछु भारी जकाँ रहै छैन्ह । परन्तु कोनो से बिमारी नहि छैन्ह । हुनका कल्याणक योग्यता छैन्ह ।

ई सुनितहि ओ कैना चिहुकि उठलाह । बजलाह—एँ ! कल्याणक योग्यता छैन्ह ! से कहियासँ ?

हम एहि प्रसंग पर विशेष गप्प नहि करय चाहैत छलहुँ। परन्तु हुनक आग्रह देखि कहय पड़ल—पैह दू तीन मासमे।

ई सुनितहि जेना हुनका थाड़ मारि देलकैन्ह। आङ्गुर पर किछु जोड़य लगलाह।

हम देखल, ई त विचित्र आदमी छथि। धिया पुता ककरो बिसारी करय मड़रो ! ई आङ्गुर पर हिसाब कथीक जोड़ि रहल छथि ?

किछु कालक उपरान्त ओ हमरा मुँह दिस ताकि पूछि बैसलाह एहि बीचमे हुनका सँ गप्पो भेल अछि ?

ई और रंगताल लागल ! हम परसूए घरसँ चलल छी। आइ पुनः वापस आ रहल छी। और ई पुछै छथि जे हुनकासँ गप्पो भेल अछि !

हम देखल जे मुजफ्फरपुर अबैत - अबैत या त ई पागल भऽ जैताह अथवा हमरे पागल बना देताह।

नहि जानि ई ककरा विषयमे पूछि रहल छथि ! हम जी जाति कऽ पुछलिऐन्ह अहाँ अपना पीसीएक विषयमे पूछि रहल छी किने ?

ओ कान पर हाथ दैत बजलाह हमरा पीसी कँ मुइना त कम सँ कम बीस वर्षसँ ऊपर भऽ गेल हैतैन्ह।

हम हतबुद्धि होइत पुछलिऐन्ह – तखन अहाँ ककरा विषयमे पूछि रहल छी ?

ओ बजलाह—अहाँक पीसीक विषयमे।

आब हम अकचकैलहुँ। कहलिऐन्ह—हमर पीसी ! हमरा पिता कँ त बहिन भैबे नहि कैलथिन्ह। तखन पीसी कहाँसँ औतीह ?

ओ बजलाह – अहाँक टोलमे जे भुटकुन झा छथि, गामक सम्बन्धे अहाँक बाबा हैताह, हम तिनकै जमाय थिकिऐन्ह।

आब मन पड़ल। भुटकुन बाबाक एक सासुरवास बेटी छथिन्ह। मास छवेकसँ नैहर आएल छथिन्ह। हे राम ! हम हिनका की सब कहि गेलिऐन्ह !

ओ बजलाह - हम अहाँ कँ एक बेर गाम पर देखने छी। ताहीसँ चीन्हि गेलहुँ। परन्तु अहाँ हमरा नहि चीन्हि सकलहुँ। अहाँ एती काल की बूझि गप्प कैलहुँ ?

हम लज्जित होइत कहलिऐन्ह --आब की कहू ? हमरा धोखा भेल जे प्रायः सरबेटाक सम्बन्ध'''

ओ हँसैत बजलाह हँ, से सम्बन्ध त ठीके। परन्तु अन्तर बैह जे हम अहाँक सरबेटा नहि। अहाँ हमर सरबेटा हैब।

हम कहलिऐन्ह—तखन हम अपने कँ प्रणाम करैत छी।

ओहो फक्क दऽ निसास छोड़लन्हि। बजलाह - सैह त कहैत छलहुँ। हम छौ मास सँ अहाँक गामे नहि गेलहुँ तखन हुनका दू तीन मासक'''कोना हैतैन्ह ? खैर। आब कोनो बात नहि। हम अहाँक गाम चलि रहल छी। परन्तु मुजफ्फरपुरमे किछु काज अछि।

तावत मुजफ्फरपुर स्टेशन आबि गेल। ओ उतरि गेलाह।

हम भगवान् कँ धन्यवाद देलिऐन्ह और खिड़की पर ठाढ़ भऽ कऽ लीची कीनय लगलहुँ। गुच्छा हाथेमे छल कि एक दोसर देवता "कहू कुशल ?' कहैत हमरा सीट पर आबि कऽ बैसि गेलाह। ---'हैं हैं हैं हैं ! बहुत दिन पर भेट भेल। लीची त खूब लाल-लाल अछि !'

ई कहैत ओ निर्विकार भावसँ लीचीक जोड़या छोड़ाबय लागि गेलाह। खाइत-खाइत बजलाह—बहुत दिनसँ हमरा गाम नहि गेलहुँ ?

हम मनमे ठेकनाबय लगलहुँ---'ई के भऽ सकै छथि ? टटुआरक पिसिऔत ? वा डीहटोलक मसिऔत ? अरहराडाढ़ीक माम वा शिवरामक भागिन ? बुधनगराक बहिनोय वा सर्वसीमाक'''?'

प्रकाश्यतः कहलिऐन्ह—की कहै छी, फुरसतिए नहि भेटैत अछि !

ओ टेबि-टेबि कऽ लीची खाइत बजलाह—एक्को दिनक हेतु त अबितहुँ ! मामी बाट तकैत रहै छथि !

आब जा कऽ किछु थाह भेटल। एतबा त सूचित भेल जे ई मातृपक्ष थिकाह।

कहलिऐन्ह—हम त बच्चेमे जे ओतय गेल रही से फेर कहियो मौका नहि भेटल। हम छवे मासक रही। ओ हमरा अपन दूध पियौने छथि।

ओ चकर-चकर हमर मुँह ताकए लगलाह। बजलाह—अहाँ कें धोखा त' ने भs रहल अछि ?

हे राम ! फेर वैह संकट ! वैह विकट परीक्षा ! हम घबड़ाइत कहलिऐन्ह—हँ, आब त अवश्य संदेह भs रहल अछि।

ओ जीभिक टाँटनाल फेकैत बजलाह—हम छिऐन्ह अहाँक ससुरक भागिन। चिरंजीव झा। ओतहि रहि कs पढ़ैत छी। द्विरागमनमे त अहाँ हमरा देखनहि हैब। मन नहि हैत। मामी बराबरि अहाँक चर्चा करैत रहै छथि।

हम संकोच सँ गड़ि गेलहुँ। भगवानो एक सँ एक लीला रचबैत रहै छथि ! एहन कतहु परिहास होय ?

\+ \+ \+

तहिया सँ जौं रेल वा जहाजमे केओ अज्ञात सम्बन्धी 'नमस्कार' कय बैसैत छथि त हम विशुद्ध राजनीतिक गप्प लाधि दैत छिऐन्ह। दोसर उपाये की ?



प्रेसक लीला

ओहिदिन पं० गोनौर झा कें आना देखि हम अवाक रहि गेलहुँ। वेंह पं० जी छथि जे सदिखन लाल धोती पर रेशमी चादर सिटने, गालमे पान गिलौरी घसैत छलाह। से आइ फाटल धोती पर मैल अङपोछा धेने छथि। ठोरमे फुफरी पड़ल छैन्ह। जे केश चमेलीक तेलसँ चपचप करैत छलैन्ह ताहिसँ एखन रूसी उड़िया रहल छैन्ह।

हम पुछलिऐन्ह—पं० जी, अपने त बहुआसिन साहिबाक डेउढ़ीमे रहैत छी कि ने ?

पं० जी बजलाह—रहैत छलहुँ। परन्तु आब नहि छी।

हम पुछलिऐन्ह - से किऐक ?

ओ माथ ठोकैत बजलाह कर्म !

हम कहलिऐन्ह—अहाँक त खूब चलती छल। बल्कि ओहिठामक कर्त्ता-हर्त्ता विधाता सभ टा अहीं छलहुँ। तखन ई हाल किऐक ?

पं० जी बजलाह—से सभ टा यथार्थ। बहुआसिन साहिबाक हमरा पर असीम कृपा रहैत छलैन्ह। स्टेटक दिससँ लाखराज ब्रह्मोत्तर सेहो भेटल छल। हमरे परिवार कऽ अनेक औरो गोटा कें वृत्ति भेटैत छलैन्ह। परन्तु आब किछु नहि। बहिर्याति यदा लक्ष्मीः गजभुक्त कपित्थवत्।

हम पुछलिऐन्ह—से किऐक पं० जी ? किछु कारण त अवश्य भेल हैतैक।

पं० जी बजलाह—कारण बूझी त किछु नहि, और बूझी त बहुत किछु। परन्तु इहिठाम गप्प करब ठीक नहि हैत। ओहि घाट पर चलू।

हमरा लोकनि गंगाजीक एकान्त घाट पर ऐलहुँ। पं० जी अङपोछा लऽ कऽ चबुतरा कें झारलन्हि। तखन हमरा अपना लगमे बैसा कऽ कहय लगलाह—बात भेलैक ई जे बहुआसिन साहिबा कें अपन वंशावली छपैबाक इच्छा भेलैन्ह। से भार हमरे पर पड़ल। हम अपना भरि जहाँ धरि भऽ सकल खूब बढ़ा-चढ़ा कऽ हुनक प्रशंसा लिखल। हुनका कुल-खूँटमे जे केओ भऽ गेलथिन्ह अछि तिनको सभक गुणानुवाद कैल। सुना देलिऐन्ह त बड़ प्रसन्न भेलीह। आशा छल जे ग्रन्थ छपि

नेता पर ततबा पुरस्कार दरबारसँ भेटि जाएत जे भरि जन्मक दुःख-दारिद्र्य पार भऽ जाएत। परन्तु भेल उनटे।

हमर उत्सुकता और बढ़ि गेल। पुछलिऐन्ह—से कोना?

पं० जी बजलाह—हम ओ लेख लऽ कऽ एकटा प्रेसमे छापऽ लेल देलिऐक। अहाँ त जनितहि छी जे हमरा लोकनि पंडित आदमी छी। कल-कौशलक हाल बेसी नहि बुझैत छिऐक। ओ कहलक जे एक मासमे छापि कऽ पठा देब। ५००) लागत।

टका दरबारसँ भेटले रहय। हम अगाउए दऽ देलिऐक जे नीक जकाँ छापि देत।

मनमे आएल जे यावत ई छपै अछि ता कनेक वृन्दावनसँ घूमि आबी। झूलनक समय रहैक। भेल जे कनेक रास देखि आबी। परन्तु ओ जी! वैह काल भऽ गेल।

हम पुछलिऐन्ह—की पं० जी! प्रेस धोखा देलक? समय पर नहि छपलक?

पं० जी बजलाह—अहा! से बात रहितैक तखन की छल! परन्तु हम जा वृन्दावनसँ आबी आबी ता पुस्तक छपि कऽ दरबारमे आबियो गेलैक।

हम कहलिऐन्ह—तखन कोन चिन्ता?

पं० जी बजलाह—आहि रौ बाप! सुनबो करब तखन कि? हम जहिना दरबारमे पहुँचैत छी कि भीतर हवेलीसँ बुलाहटि भेल। एक दिस बहुआसिन बैसलि रहथि, दोसरा दिस हुनकर माय। दुहुक मुँह क्रोधसँ तमतमाएल! हमरा त ई दृश्य देखितहि प्राण सुखा गेल!

बहुआसिन कड़कि कऽ बजलीह—अहाँ जाही पत्तलमे खाइ छी ताहीमे छेद करैत छी? एही खातिर दरबारसँ वृत्ति भेटैत छल?

हम हाथ जोड़ि कहलिऐन्ह—सरकार, हमरासँ कोन अपराध भेल अछि?

ओ डाँटि कऽ बजलीह—हमरा सभक विषयमे ओहन-ओहन बात छपबा आएल छी और अन्ठा कऽ पुछि रहल छी?

हम भयभीत होइत पुछलिऐन्ह—कोन बात सरकार?

ओ बजलीह—हमरा नामक पहिने 'वारांगना' शब्द जोड़ैत अहाँ कें लाज नहि लागल?

तावत हुनक माय हमरा लुलुआबय लगलीह—की औ! हमर बाप बहलमान रहथि?

बहुआसिन तमकि कऽ बजलीह—और हमर पिता मुर्गाक प्रेमी छलाह? रण्डीक उपासना करैत छलाह?

तावत मैनेजर साहेब नहि जानि कहाँसँ फानि पड़लाह—की औ! हम स्टेट कें लाहेब करैत छिऐ? अहाँ पर मोकदमा किऐक नहि चलाएल जाय?

हमर त सभटा सिट्टी-पिट्टी गुम्म? किएक मुँहसँ बोल बहराएत?

बहुआसिन बजलीह—अहाँ एतेक दिन जे एहि दरबारक नोन खेलहुँ से वैह सरियत देल अछि? जाउ, आइसँ अहाँ बरखास्त!

मैनेजर बजलाह—और ऊपरसँ मानहानिक दावा सेहो अहाँ पर कैल जाएत। हर्जाक नालिश!

हम बहुत कनलहुँ-कलपलहुँ। किन्तु किछु सुनबाइ नहि भेल। बहुआसिन साहिबा हमरा आगाँ पोथी पटकि देलन्हि—देखू त, [illegible] दऽ अहाँ की लिखने छिऐक? ई जे पढ़त से की कहत?

जे सभ छपल रहैक से देखि कऽ हमहुँ सिहरि उठलहुँ!

हम पुछलिऐन्ह—की सभ छपल रहैक?

पं० जी बजलाह—अरे की कहू? तेहन हड़ासंख छापाखाना छलैक, जे पंक्ति पंक्तिमे अशुद्ध छापि देलकैक। 'वीरांगना' कें 'वारांगना', 'पहलवान' कें 'बहलमान', 'दुर्गा' कें 'मुर्गा', 'चंडी' कें 'रंडी'! हम लिखने रहिऐक—'स्टेटक तरक्की मैनेजर साहेब करैत छथि!' से 'साहेब' कें 'लाहेब' कऽ देलकैक। बुच्चीक प्रशंसा मे लिखने रहिऐन्ह जे 'डेउढ़ी मे बुच्चीक शोभा देखि कऽ लोक मुग्ध भऽ जाइत अछि।' से तेहन संकोचक बात छपा गेलैक जे आब की कहू? हमर कर्मक दोष।

हम पुछलिऐन्ह—तखन की भेलैक?

पं० जी बजलाह—हम कहलिऐन्ह जे हम अपना खर्चसँ शुद्धि-पत्र लगा देने छिऐक। परन्तु हुनका सभ कें से मंजूर नहि भेलैन्ह। किऐक त कतेको ठाम परम अश्लील बात छपि गेल रहैक।

हम पुछलिऐन्ह—से की?

पं० जी बजलाह—सभ बात बजबा योग्य नहि छैक। हम एक ठाम लिखने रहिऐक जे पंडित-गुणी कें 'डेरा' भेटैत छैन्ह। से 'केरा' छपि गेलैक। एक ठाम

रहैक जे गैंनदर साहेब महिला-विद्यालयक हेतु 'फंड' जमा कऽ रहल छथि । परन्तु हमरा अदृष्टक दोषेँ तेना छपि गेलैक जे अनर्थ भऽ गेलैक ।

हम पुछलिऐन्ह — एना किऐक भेलैक ? प्रेसमे प्रूफ नहि देखल गेलैक की ?

पं० जी बजलाह — आब हम की कहू ? असलमे हमर दाना-पानी दरबारसँ उठि गेल छल, तेँ एना भेलैक । नहि त लाख कऽ ओहने ओहन बीहड़ ठाममे कोटा किऐक गड़बड़ा जइतैक ?

हम पुछलिऐन्ह — तखन अन्तमे की भेलैक ?

पं० जी बजलाह — हैतैक की ? मोसम्माती दरबार ! लोक सभ चढ़ा-बढ़ा देलकैन्ह । हमरा जे किछु भेटल छल से सभटा छीनि लेल गेल । बहुत पैर पर खसलिऐन्ह तऽ मोकदमा उठा लेलन्हि ।

हम पुछलिऐन्ह — तखन संप्रति की कऽ रहल छी ?

पं० गोनौर झा नोसि लैत बजलाह — करब की कपार ? एक प्रेसमे प्रूफ-संशोधकक काज भेटि रहल अछि । से करी वा नहि ? अपनेक की विचार ?

हम कहलिऐन्ह — पं० जी, और जे काज करी, परन्तु ई टा काज धरि तऽ नहिए करी । नहि तऽ अपनेक कृपासँ कतेक 'साहेब' 'लाहेब' भऽ जैताह, 'पंडित' 'खंडित' भऽ जैताह । 'अबला' 'प्रबला' भऽ जैतीह, 'अमृता' 'प्रमृता' बनि जैतीह ! 'वैश्या' कें 'वेश्या' और 'वर-वधू' कें 'वार-वधू' होइत देरिए की लगतैन्ह ? कतेको 'सुन्दरी' 'छुछुन्दरी' बनि जैतीह । यदि अपने कें दया हो त ई कर्म नहिए कैल जाय ।

पं० जी बजलाह — हँ, से ठीक कहै छी । जहाँ कनेक आँखि चूकल कि 'सूप' सँ 'सूत्र' भऽ जाएत । ई काज हमरा सभ योग्य नहि थीक । जकरा खूब बिछबाक अभ्यास होइक सैह प्रूफ-रीडरी करय ।

हम कहलिऐन्ह — बेस, तऽ आब आज्ञा भेटो । हमरो एक पुस्तक प्रेसमे छपि रहल अछि । श्रीमान काटजू साहेबक प्रशंसामे लेख छैन्ह । जौं कदाचित ओहीक वंशावली बला परि भऽ गेल त अनर्थ भऽ जाएत !

□

देवीजीक संस्कार

'महाशयजी' पक्का सुधारक छलाह । अर्थात स्त्री कें 'देवीजी' कहैत छलाह, नमस्कारक स्थानमे 'नमस्ते' करैत छलाह और 'श' कें 'स्स' वर्जन छलाह । ओ सनातनी कें खेहाड़ि-खेहाड़ि कऽ बहस कैने भेल फिरैत छलाह । हमरा लोकनि कें जहाँ देखथि कि लगले मूर्त्तिपूजा पर शास्त्रार्थ शुरु कऽ देथि ।

हुनक धर्मपत्नी 'शन्नो देवी' सेहो उपदेशिका छलथिन्ह । ओ जखन स्त्रीक अधिकार पर लेक्चर दैत छलीह त लेहन जोश आबि जाइत छलैन्ह जे गोटेक बटनो टूटि कऽ खसि पड़ैत छलैन्ह ।

किछु दिनक बाद सुनल जे महाशय जी वैदिक धर्मक डंका बजाबक हेतु विलायत गेल छथि और हुनक धर्मपत्नी वृन्दावन महिला व्यायामशालामे अध्यापिकाक पद अलंकृत कय रहल छथिन्ह ।

× × ×

ताही महाशयजी कें आइ चौदह वर्ष पर देखैत छी जे गरमे रुद्राक्षक माला पहिरने, गंगा कात घंटी बजा कऽ महादेवक पूजा कऽ रहल छथि ! और पाछाँमे अनेक बोध तनने हुनक स्त्री दीप लेसि रहल छथिन्ह ! आँखि पर सहसा विश्वास नहि भेल । ई वैह 'महाशयजी' थिकाह ? लगमे जा 'नमस्ते' कैलिऐन्ह । ओ नमस्कार करैत बजलाह कहू, कुशल ?

हम पुछलिऐन्ह अपनेक ई कायापलट कोना भऽ गेल ?

ओ बजलाह की ? कोनो विशेष परिवर्तन देखबामे अबैत अछि ?

वैह महात्माजी छथि जे पहिने षष्ठी कें 'षशठी' वर्जैत छलाह और आइ विशेष कें 'विशेख' कहि रहल छथि !

हम कहलिऐन्ह हमरा बहुत कुतूहल भऽ रहल अछि । एहन आमूल परिवर्तन'''

ओ बजलाह हँ । बहुतो गोटा ई जिज्ञासा करैत छथि । बेस, अपनेक आज्ञा अछि त हम सभटा कहि सुनाएब ।

आश्चर्य ! वैह देवता पहिने 'जिज्ञासा' और 'आज्ञा' उच्चारण करितथि । तखन जे ने कराबय !

ओ स्त्री दिस ताकि बजलाह अहाँ जाउ, गंगाजी कें साँझ देखहिऔन्ह गऽ ।

हुनक स्त्री सराइमे दीप लऽ कऽ घाट दिस विदा भेलथिन्ह । तखन ओ हमरा दिस साकांक्ष भय बजलाह अहाँ ई बूझि कऽ की करब ?

हम कहलिऐन्ह किछु शिक्षा त अवश्ये भेटत ।

पहिने त महाशयजी बहुत टालमटोल कैलन्हि । जखन हम नहि मानलिऐन्ह त कहय लगलाह

"जखन हम नव नव समाजमे गेलहुँ त लेहन जोश उठल जे वैदिक धर्मक झंडा फहराबक हेतु विलायत चल गेलहुँ । ओहि ठाम घूमि घूमि कय हम कतेक व्याख्यान ओ बहस कैल से कहाँ धरि कहू । ओतयसँ हम अफरीका चल गेलहुँ और जंगली जाति सभक बीचमे जा जा उपदेश देमय लगलहुँ । प्रचारक धुनमे बारह वर्ष कोना बीति गेल से बूझि नहि पड़ल ।

जखन घूमैत-फिरैत पुनः लंडनक समाज-मन्दिरमे पहुँचलहुँ त देखैं छी जे एतबा दिनमे हमरा नामसँ जतेक चिट्ठी देशसँ आएल अछि से सभटा एक अड्डाका पुलिन्दामे बान्हल अछि । हम खोलि खोलि कऽ पढ़य लगलहुँ । कोनोमें हर्ष, कोनोमें विषाद, कोनोमें चिन्ता, कोनोमें धैर्य, एवं प्रकार भाव मन में उदय लागल । सभक अन्तमे एक लाल रंगक लिफाफ भेटल जाहि पर महिला धर्मक प्रधान मंत्रीक मोहर छलैन्ह । छौ मास पूर्वक । उत्सुकतावश ओकरा फोलि कय पढ़य लगलहुँ । चिट्ठीमे लिखल छल —

"नमस्ते ।"

विदित हो कि आपकी धर्मपत्नी शन्नो देवी नियमानुसार पूर्ण अवधि पर्यन्त आपकी प्रतीक्षा कर चुकीं । यदि आगामी शिवरात्रि के पूर्व तक आप यहाँ नहीं पहुँचेंगे तो उसी रात को वैदिक धर्मानुसार देवीजी की स्वीकृति से नियोग की व्यवस्था की जायगी ।

॥ इति ॥

—बुद्धीश्वरानन्द ।"

ई चिट्ठी की छल जहरक पुड़िया छल ! हृदय आँखमे ततेक हलाहल भरल छल जे आँखिक आगाँ अन्हार व्याप्त भऽ गेल ! हम बारह बर्षसँ एतय वियोग करैत

छी और ओतय देवीजी के नियोग सुनैत छथिन्ह ! हम पतेड़ा देखल। शिवरात्रि पहिली मार्च के पड़ैत छैक। केवल मात्र दू दिन बाँकी अछि। खैर ! एखन धरि देवीजी बाँचलि छथि। परन्तु एही बीचमे हमरा ओहि ठाम उड़ि कऽ पहुँचि जेबाक चाही। नहि त....

हम हिसाब जोड़य लगलहुँ। तीन दिनमे हवाई जहाज कराची पहुँचत। ओतयसँ पुनः उड़ि कऽ दिल्ली पहुँचब। ओहि ठामसँ रेलक रास्ता बहुत त चारि घंटाक। बेर पर पहुँचि जाएब।

हम दौड़ल एरोड्रोम में गेलहुँ, परन्तु सातो मेल की सभ सीट पहिनहि 'बुक' भऽ चुकल छैक। और दोसर एरोप्लेनक हेतु हमरा तीन दिन और प्रतीक्षा करय पड़त। ई सुनितहि बज्रपात भऽ गेल ! आब कोन उपाय करू ? तार-घर गेलहुँ। ओतय अवगत भेल जे हिन्दुस्तानक 'एयर मेल' जा चुकल छैक और आब दोसर डाक जे जाएत से पहिली मार्चक बाद वृन्दावन पहुँचि सकैत अछि।

तथापि हम हिम्मत नहि हारल। प्राणपणसँ अगिम हवाई जहाजमे अपन सीट रिजर्व करओल। ई तीन दिन कोना बीतल तकर अनुभव भुक्तभोगिए कऽ सकैत छथि। रातिदिन टाइमटेबुल ओ पञ्चाङ्ग देखैत रहलहुँ। अट्ठाइस फरवरीक रातिमे कराची उतरब। पहिलीक भोरमे दोसर हवाईजहाज भेटत से पाँच बजे वृन्दावन पहुँचत। ओतय लगले टैक्सी कऽ लेब। से नहि भेटत त ताङा त भेटबे करत। बहुत त पन्द्रह मिनटक रास्ता हेतैक। सवा पाँच बजे धरि महिलाश्रममे पहुँचि जाएब। ओहि दिन सूर्यास्त पाँच बाजि कऽ बेतालिस मिनट पर हेतैक। अतः नियोगक समयसँ आध घंटा पहिनहि पहुँचि जाएब।

ई विचारि कऽ जी किछु आश्वस्त भेल। अस्तु, छब्बिस फरबरी के वेद भगवानक स्मरण करैत वायुयानसँ बिदा भेलहुँ। तीन दिन धरि वायुवेगसँ उड़ैत रहलहुँ। तथापि बुझि पड़य जेना विमान चुट्टीक चालिसँ चलि रहल हो।

अन्ततः अट्ठाइस तारीखक रातिमे कराची पहुँचि गेलहुँ। आधा राति होइतहि स्टेशनक कलेंडरमे पहली मार्चक तारीख लगा देलकैक। ओ देखितहि महा भयंकर बुझि पड़ल। जेना फाँसीक तारीख हो ! कलेंडर बनाबय बला पर बेही क्रोध भेल। केहन भारी गदहा छल ! आन-आन मासमे तीस दिन, एकतीस दिन। और केवल फरवरीमे एहन कोन हरबरी छलैक जे अट्ठाइसे दिनक बाद पहिली मार्च ! ओ राति आँखिएमे कटल।

पहिली मार्चक सूर्य देखल उगलाह। हम कहलिएन्ह - हे महाराज ! आइ नहि नहि-चलू। अहाँक डूबबसँ पहिनहि हमरा पाँच से मारल तय करबाक अछि ! यदि बिचहिमे डूबलहुँ त हमरो डुबाएब।

अस्तु, निर्दिष्ट समय पर वृन्दावन जायवाली ट्रेनमे सवार भेलहुँ। परन्तु हमर कर्म देखू जे गाड़ी के खुजबामे घंटा सँ ऊपर लेट भऽ गेलैक। मनमे होय जे एंजिन के हाथ लऽ लऽ ठेलि दिऐक। परञ्च अपन साध्ये की ? गाड़ी-महारानी मानिनी नायिका जकाँ अड़लि रहलीह और एम्हर हमर धैर्य स्खलित होमय लागल।

अन्ततः डेढ़ घंटाक बाद एंजिन सीटिआएल और गाड़ी ससरलि। परन्तु ड्राइवर के कोन अपद्रव्य-बध करबाक रहैक जे सरपट गाड़ी दौड़बैत ? गाड़ी अनेक चालिसँ चलय लागलि। कतहु मन्द, कतहु बाद ! कतहु तिलबाड़ा, कतहु चौताल ! कतहु दुन, कतहु विलम्बित !

जहाँ कोनो स्टेशन पर गाड़ी बिलमय कि हम गायत्री मन्त्र जपय लागी - तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। परन्तु उनटे फल भेल। जहाँ गाड़ी के तीन मिनट ठहरबाक तहाँ तेरह मिनट लागि जाइक।

हम घड़ीमे देखल : गाड़ी अढ़ाइ घंटा लेट जा रहल अछि। छोटकी सुइ पाँच पर पहुँचि गेल। वृन्दावन पहुँचबाक टाइम बेह छलैक ! परन्तु एखन सात स्टेशन बाँकी अछि। एहीमे जय अथवा क्षय ! हे वृन्दावन बिहारी !

परन्तु कोन मुँहे वृन्दावन बिहारी के गोहरबितिएन्ह ? भरि जन्म त हुनक व्यंग्ये कैल !

हम मनमे विचारल जे खैर, किछु देरियो सँ वृन्दावन पहुँचब त नियोगक अन्तिम विधि के रोकबा सम्भव। कारण जे सन्ध्याकालसँ दू घटा धरि त वैदिक मंत्र हवन आदि बेह सभ होइत रहतैक। तावत हम पहुँचिए जाएब। आब एहि बीचमे कोनो विघ्न-बाधा नहि पड़य सैह मनाबक चाही। हम रिस्टवाज कानमे लगा लेल और एक-एक सेकेन्डक ध्वनि मनोयोगसँ सुनय लगलहुँ, जेना योगी अनहद नाद सुनैत अछि। कारण जे आब प्रत्येक सेकेन्ड अनमोल छल। सूर्यक गति और गाड़ीक गतिमे जेना बाजी लागि गेल हो ! और हमर एकमात्र प्रार्थना बेह छल जे रेल अगुआ जाय।

परन्तु एही संकट-बेलामे कोनो अभागल चेन खीचि लेलकैक ! बात की भेलैक से त नहि बुझलिऐ परन्तु ओहि ठाम गाड़ी के एक घंटा और लेट भऽ गेलैक।

देखैत देखैत ओही ठाम सूर्यक चक्का डूबि गेलन्हि और सङहि हमरो सौभाग्य-सूर्य अस्त होमय लगलाह। नैराश्यक अन्धकार व्याप्त भऽ गेल।

जखन गाड़ी वृन्दावन स्टेशन पर पहुँचल त पहर रातिसँ ऊपर बीति गेल रहैक। हमर ताङा सरपट महिलाश्रम दिस दौड़ल। ओहि ठाम पहुँचै छी त फाटक भीतरसँ बन्द! हमर छाती जोरसँ धड़कय लागल। जेना फाँसीक सजाय सुनबाक काल होइत छैक।

बहुत हल्ला कैला पर भीतरसँ एक नेपाली दरबान आएल। हम बहुत अनुनय-विनय कैलिऐक परन्तु ओ टससँ मस नहि भेल। "रात में फाटक नहीं खुलेगा। खोलने का हुक्म नहीं है। कल दिन में आइएगा।"

हम कहलिऐक — देखो भाई, हम शन्नो देवी के पति हैं। सिर्फ उनसे कह दो कि आकर एक मिनट के लिये मुलाकात कर जायें।

परन्तु ओ ओकरो किछु नाक पर माछी नहि बैसऽ देलक। जखन बहुत नेहोरा कऽ कऽ दू टा रुपैया हाथमे धरा देलिऐक तखन भीतर गेल और एक महिला कें संग कैने आएल।

ओ अबितहि दबारि कऽ हमरा पुछलन्हि — आप क्या चाहते हैं?

हम कहलिऐन्ह — हम शन्नो देवी से भेंट चाहते हैं।

ओ रुखाइ सँ बजलीह — शन्नो देवी इस समय नियोग में हैं। उनसे अभी भेंट नहीं हो सकती।

हम कहलिऐन्ह — हम शन्नो देवी के पति हैं।

आब ओ महिला दूनू हाथ जोड़ि 'नमस्ते महाशयजी' कैलन्हि और सहानुभूति प्रदर्शित करैत बजलीह — आप थोड़ी देर से चूक गए। अब तो वह शयनागार में चली गईं।

हमरा मुँहसँ 'ओफ्!' बहार भऽ गेल। जाहि बातक डर सँ एतेक कैलहुँ — सात समुद्र पारसँ दौड़ल ऐलहुँ — से आखिर बिसाइये गेल!

देवीजी अफसोस करैत बजलीह — यही तो दस मिनट होते हैं कि हम लोग उनको शयनागार में रख आये हैं। अभी अभी मंत्रीजी वगैरह गए हैं। अब तो जो होना था सो हो गया। आपको पहले आना चाहिये था।

हम अनुनय-विनय करैत कहलिऐन्ह — देखिये, अब तक भी शायद 'सब कुछ' नहीं हुआ हो। जरा किसी तरह से उनके कान में इतना पहुँचा दीजिए कि मैं आ गया हूँ।

देवीजी किञ्चित मुस्कुाइत बजलीह — अब ऐसा होना तो सम्भव नहीं है। उनका कमरा भीतर से बन्द है और वे दोनों... अभी वहाँ कोई नहीं जा सकता। कल सुबह में निकलेंगी तब आप उनसे मिल लीजियेगा।

हम मनहिमन कहलहुँ — त तत ता-हा हन्त हन्त नलिनीं गज उज्जहार' भऽ जाएत!

हारि-थाकि कऽ देवीजीसँ पुछलिऐन्ह — नियोग कोना की किनका संग भेलैन्ह अछि सेहो त कहू।

आब देवीजीक सहृदयताक द्वार फुजि गेलैन्ह। सविस्तर समस्त समाचार कहि गेलीह। सारांश ई जे 'आइ साँझमे वृहत् समारोह छल। समाजक सैकड़ो स्त्री-पुरुष जुटल छलाह। शन्नो देवी कें नववधूक वेषमे बैसा कऽ 'महर्षीय' करवावहुँ' आदि वेदमन्त्र पढ़ाओल गेलैन्ह। वैदिक विधिसँ हवन भेल। उपस्थित जनतामे प्रसाद बाँटल गेल। अन्त मे वरवधू कें आशीर्वादसूचक माला पहिराय अन्तिम विधिक हेतु एकान्त भवनमे पठाय निमन्त्रित सज्जन लोकनि अपन-अपन घर गेलाह। जाहि भाग्यवान कें एहि गुरुतर कार्यक भार भेटलैन्ह तनिक नाम छैन्ह अमोघानन्द-जी! प्रधान मंत्री स्वयं पौरोहित्य कर्म सम्पादन कराय ई दुर्लभ पुण्य लुटलन्हि अछि।"

देवीजी त पुनः 'नमस्ते' कय भीतर चलि गेलीह और हम राति भरि फाटकक बाहर खंभा धैने शिवरात्रिक जगरना करैत ठाढ़ रहि गेलहुँ। गोनू झा बला श्लोक चरितार्थ भऽ गेल।

भोर भेने देखैत छी त एक सज्जन विजय-माल पहिरने मंद मंद मुस्कुराइत बाहर आबि रहल छथि। पुछला मे भाङठ नहि रहल जे वैह अमोघानन्द थिकाह। मन त भेल जे ऊपरसँ एक सोंटा लगाबी। परन्तु ओहि बेचाराक दोषे की रहैक?

हम आश्रमक भीतर जा अध्यक्षा सँ निवेदन कैलिऐन्ह जे शन्नो देवीसँ भेंट करा दियऽ। थोड़बे कालमे देखै छी जे केशर-कुंकुम ओ पुष्पमालासँ विभूषित, नयनालस्यसँ रजनिरहस्य कें अर्द्धव्यंजित करैत, गजमदित मालती जकाँ दलमलित श्रीमती शन्नो देवी केलिभवनसँ बहरा रहलि छथि। ओ हमरा पर नजरि पड़ैत बजलीह — नमस्ते महाशयजी!

जी जरि गेल। हम नमस्तेक उत्तरमे सोझे हुनका पाँहि धैल और लऽ कऽ विदा भेलहुँ।

अध्यक्ष और मंत्रिणी आदि निर्विवाद लगलीह — बिना दयानजी की आज्ञा के आप इनको नहीं ले जा सकते।

परन्तु जा नेपाली दरवान आबय आबय ता हम हुनका लाठा पर बैसा पार भऽ गेलहुँ।

श्री बजलीह — यह तो समाज का नियम नहीं है। आपको आज्ञा ले लेनी चाहिये।

हम कहलिऐन्ह — रहऽ दिय नियम और 'आज्ञा'। हम बाज छी एहन समाजसँ। आब चलू, अहाँ के पहिले गंगास्नान कराएब।

श्री बजलीह — यह आप क्या कह रहे हैं! वेद भगवान् की आज्ञा...

हम कहलिऐन्ह—वेद भगवान जाथु कोठिक कन्हा पर। आइ दिन सँ हम सनातनी भेलहुँ और अहूँ के शुद्ध सनातन धर्मावलम्बिनी बनि कऽ रहय पड़त।

ताहि दिनसँ हम तेहन कट्टर सनातनी भऽ गेल छी जे हुनकासँ चौबीसो एकादशी करबैत छिऐन्ह।



महाराज-विजय

[प्रथम दृश्य]

(नेपथ्यमे,---वीरशिरोमणि चक्रवर्ती महाराजक जय !

(रविनाथ ओ सोमनाथक प्रवेश)

रविनाथ---ऐं हौ संगी ! ई कथीक जयघोष भऽ रहल छैक ?

सोमनाथ---केहन अबाह छह ? एतबा नहि बुझल छौह जे आइ महाराज बहादुर शिकार खेलि कऽ आबि रहल छथि।

रविनाथ ओ ! बूझि पड़ै अछि, एहि बेर कोनो बड़का बाघ वा सिंह मारलन्हि अछि।

सोमनाथ---हे, वैह सिपाही आबि रहल छथि। हिनकेसँ सभ टा पता लागि जाएत।

(सिपाहीक प्रवेश)

रविनाथ---की औ ! अहाँ त शिकारेसँ अबैत छी। कनेक समाचार कहैत जाउ।

सिपाही ---महाराज बहादुर एहि बेर चम्पकवन नामक जंगलमे शिकार खेलाय गेल छलाह। ओहि ठाम एक बड़का टा अरना महिष भेटलन्हि।

दुनू विद्यार्थी---(उत्सुकतापूर्वक) - तखन ? तखन ?

सिपाही ---महाराज बहादुर हाथी पर छलाह सन्धानि कऽ एक बाण चलौलन्हि। किन्तु ओ महिषक दुनू सिंहक बीच बऽ कऽ होइत निकसि गेलैक।

विद्यार्थी --- तखन ? तखन ?

सिपाही ---तखन ओ जंगली जानवर महाराजक हाथी पर आक्रमण कऽ देलकैन्ह।

विद्यार्थी---अरे बाप !

सिपाही महाराज दोसर बाण प्रत्यंचा पर चढ़ौलन्हि; परन्तु तावत महिष तेहन जोरसँ चिग्घार करैत दौड़लैन्ह जे महाराज मूर्छित भय हौदा परसँ खसि पड़लाह ओ धनुष हाथसँ खसि-पड़लैन्ह।

विद्यार्थी--- हरे कृष्ण ! हरेकृष्ण !!

सिपाही – तावत पाछासँ अश्वारोहीक झुंड आबि ओहि भयंकर पशु पर बाण-वर्षा कऽ देलकैक जाहिसँ ओ जन्तु धराशायी भऽ गेल ओर महाराज बहादुरक प्राण बाँचि गेलन्हि ।

विद्यार्थी धन्य भगवान !

सिपाही परन्तु महाराज बहादुर बेहद बुझैत छथि जे अपना साहिस कैं ओ स्वयं अपना भुज-बलसँ परास्त कैलन्हि ।

विद्यार्थी इनिहारी एहन बुझनाइ कैं ! मारथ सिपाही नाम जमादार कैं !

सिपाही परन्तु ई सभ कथा कतहु कहियौक जुनि । जौं कोनो राज-कर्मचारीक कानमे पड़ि गेलैक तँ हमर प्राण नहि बाँचत ।

विद्यार्थी नहि, नहि । भला हमरा लोकनि कैं एहि सभ बात सँ कोन काज अछि ? सागक व्यापारी कैं समुद्रक जहाजसँ कोन प्रयोजन ?

सिपाही सेहह । बेश, त हमरा ड्योढ़ी पर जा कऽ कइएक टा काज करबाक अछि । आज्ञा दिअऽ ।

(झटकि कऽ आगाँ बढ़ैत अछि)

(पुनः नेपथ्यमे) – वीर-शिरोमणि चक्रवर्ती महाराजक जय !

विद्यार्थी चलह । हमरो लोकनि जुलूसक शोभा देखी ।

[द्वितीय दृश्य]

(स्थान अन्तःपुर दू युवतीक पूर्णकुंभ नेने प्रवेश)

मधुरिका है ! एना कती काल कलश नेने ठाढ़ि रहबैक ?

मतल्लिका अहा ! एहन सुकुमारि छलहुँ त परिचारिका किएक भेलहुँ ? महारानिएँ ने होइतहुँ ?

मधुरिका -- नहि है ! अनिवहुँ पुछैत छिओह । आइ की सभ हेतैक ?

मतल्लिका तौं एखन नवे ऐलीह अछि ताहीसँ सभ बात अजगुत लगै छौह । सुनह । ड्योढ़ीक फाटकसँ लऽ कऽ रंगमहल धरि पूर्णकलश वालीक दोबगली कतार लगतैन्ह । ओही बीच दऽ कऽ महाराज चलताह ।

मधुरिका — हमरा लोकनि पाँतीजोड़ कलश नेने ठाढ़ि रहबैक ?

मतल्लिका हूँ । और महाराज सभक मंगलघट कैं अनेक अनेक स्पर्श करैत आगाँ बढ़थिन्ह ।

मधुरिका ताहि सँ फल की ?

मतल्लिका (विहुँसि कय) – फल की ? से त ओही काल बुझबहक । (कान मे किछु कहै छथिन्ह)

मधुरिका जाह ! एहन हँसी हमरा नहि नीक लगैत अछि ।

(चयनिकाक प्रवेश डालीमे फूल नेने)

मतल्लिका – की है ? तों कोम्हर चमकैत जाइत छह ?

चयनिका आइ महाराजक बाहु-पूजा हैतैन्ह । महारानी स्वयं अपना हाथसँ पूजा करथिन्ह । ताही हेतु लताकुंज सँ फूल तोड़ने जा रहल छिऐन्ह ।

मतल्लिका है. कथीक उपलक्ष्यमे बाहु-पूजा हैतैन्ह ?

चयनिका - सुनयमे आएल अछि जे महाराज बड़का टा अपना साहिस कैं मारलन्हि अछि ।

मतल्लिका - (विहुँसि कय) तँ राजमहिषीसँ बाँहि पुजबौताह !

(विचर्चिकाक प्रवेश)

मतल्लिका – ऐ दाइ ! बड़ झटकलि जाइत छी ?

विचर्चिका – हूँ, महारानी स्नानागारसँ बहरैलीह । हम शृंगार करय जाइत छिऐन्ह ।

मधुरिका कोना शृंगार हैतैन्ह ?

विचर्चिका – शृंगार त बहुत रासे हैतैन्ह । नखसँ शिख पर्यन्त सोरहो शृंगार पर सोरह टा परिचारिका छथिन्ह । हम अंगराग पर छिऐन्ह । महारानीक वक्ष स्थल पर चंदन-केसरक चित्रकारी करैत छिऐन्ह ।

मधुरिका ऐँ ! आइ पूजोक दिनमे शृंगार हैतैन्ह ?

विचर्चिका हूँ ! पूजाक अनन्तर दुहु गोटे सोझे केलि-भवनमे जाइ जैताह ।

मधुरिका ओहिमे की सभ होइ छैक ?

मतल्लिका है ! हिनका नीक जका बुझा दहुन । ई एखन मुग्धा छथि ।

विचर्चिका किछु दिनमे अपनहि सभटा बूझि जइतीह ।

मधुरिका (लजाइत) आब बुझलिऐक । ओहि ठाम त एकान्त रहैत हैतैन्ह ?

विचर्चिका – नहि, ओहू ठाम खास-खास परिचारिका मौजूद रहैत छथिन्ह । पंखा डोलबक हेतु व्यंजनिका । मद्य ढारक हेतु मधुलिका । वस्त्राभूषण उतारक हेतु नग्निका ! गुलाबक फोहारा देबक हेतु प्रक्षेपिका । उचित समय पर सहायता करबाक हेतु मर्दनिका, प्रवेशिका, सम्मार्जिका । महाराजक अचेष्ट भऽ गेला उत्तर प्रपानिका आसव पिया होश करबै छथिन्ह ।

मधुरिका—आश्चर्य ! ओहु काल अनकर सहायता बिना काज नहि चलैत छैन्ह ?
चयनिका—से होइतैन्ह त महाराज ओ साधारण लोकमे भेद की ?
मधुरिका—धन्य कहौ ओहि परिचारिकोो सभ कें। ओहन अवस्था मे संकोचो नहि होइत छैन्ह !
मल्लिका—प्रकृति कें पुरुषसँ कोन पर्दा ? अहूँ महाराजक विशेष कृपापात्री हैब त एक दिन ओहि पद पर पहुँचिए जाएब।
मधुरिका—जाउ, ई सभ हमरा नहि सोहाइत अछि।
विचर्चिका—अहाँ एखन नवयुवती छी तें कहै छथि। आइ त महाराजक दृष्टि अहीं पर पड़बे करतैन्ह।
मधुरिका—अहूँ सभ त एक दिन हमरे जकाँ रहल हैब।
विचर्चिका—हमरा लोकनि सभ रंगमे रङि चुकल छी। आब केलि-भवनमे जैवाक वयस टरि गेल। ओहि ठाम त अहाँ सन-सन नवयौवनाक साम्राज्य रहैछ !... बेश, आब आज्ञा दिअऽ। महारानी शृङ्गार-भवनमे अबैत हेतीह।
चयनिका—हमहूँ चलैत छी। आब पूजाक समय लगिचाएल जाइत छै।

(दुनू जाइत छथि)

मल्लिका—चलह, मधुरिका। हमरो लोकनि अपना-अपना स्थान पर जा कऽ ठाढ़ि होइ।

[तृतीय दृश्य]

(स्थान—रंगमहलक डेउढ़ी - डेउढ़ीक फाटक पर सदलबल महाराज बहादुरक प्रवेश—फाटकक बाहरसँ मोसाहेब वर्ग 'महाराजक जय' घोष करैत छथि—भीतरसँ मंगलामुखीगण शङ्खध्वनि एवं पुष्पवर्षा करैत छथि।)

महाराज (पुष्पमाल्यक भारसँ व्याकुल भय—कंचुकी ! कंचुकी ! (कंचुकी आबि कऽ मालाक बोझ उतारि लैत छैन्ह।)

प्रतिहारी—(अन्तःपुरक मार्ग देखबैत)—महाराज ! ई बाट। एहि द्वारसँ।

(एक झुंड प्रमदा महाराज कें अरिआति कऽ भीतर लय जाइत छथिन्ह। महाराज दुइ सुन्दरीक कान्ह पर भर देने चलैत छथि। पाछाँ-पाछाँ कंचुकी ओ विदूषक। अन्यान्य पुरुषकें प्रतिहारी द्वार पर रोकि लैत छैन्ह।)

महाराज (भीतर प्रवेश करैत)—आब कोन बाटें ?
कंचुकी—महाराज ! एहि। जेम्हर सुन्दरीक दल एक-एकटा मंगल-कलश नेने ठाढ़ि छथि।
विदूषक—(राजाक कानमे)—नहि। प्रत्येक सुन्दरी तीन-तीन टा मंगल-कलश नेने ठाढ़ि छथि।
महाराज—तों बड़ड बकैत छह।

(महाराज युवती सभक मंगलकलश दहिना हाथसँ स्पर्श करैत आगाँ बढ़ैत छथि। (मधुरिका पर विशेष दृष्टिपात करैत) ई के ?

कंचुकी—महाराज ! ई नवे आइलि छथि। मधुरिका नाम छैन्ह।
विदूषक—वाह ! जेहने नाम तेहने गुण।

(मधुरिका लजा जाइत छथि। महाराज अपन रत्नहार बहार कय मधुरिकाक मंगल-कलश पर राखि दैत छथिन्ह और अपन औंठी हुनका आङ्गुरमे पहिरा दैत छथिन्ह। नेपथ्यमे हर्षध्वनि सुंदरी सभ आबि कऽ मधुरिकाक कलश लय हुनका माथ पर राजकीय सौभाग्यक चिह्न लगा दैत छथिन्ह—मंगलवाद्य बजैत अछि)

(मंगलिकाक प्रवेश)

मंगलिका—महाराजक जय हो ! महारानी बाहु-पूजनक हेतु मंडप पर बैसलि छथि।
महाराज—आब कोन दिस ?
कंचुकी—महाराज ! एहि बाटे। (आगाँ आगाँ पथ-प्रदर्शन करैत चलैत अछि)
महाराज (अकुला कय) ओम्हर कथीक कोलाहल भय रहल अछि ?
कंचुकी—महाराज ! तातार देशसँ एक युवती आइलि अछि मदन्तिका। ओ अनेक पुरुष कें विजय करैत एहि देशमे आइलि अछि। जे मल्लयुद्धमे ओकरा परास्त कय देतैक तकरे अधीन भऽ कऽ ओ रहति। ओकरे तमाशा देखक हेतु अन्तःपुरक स्त्रीगण जमा भेल छथि।
महाराज (मोंछ पर ताव दैत ओ ताल ठोकैत)—कंचुकी ! कंचुकी !
कंचुकी—महाराज !
महाराज—हम युद्धक वस्त्र पहिरब।
मंगलिका—महाराज ! अपनेक बाहु-पूजा करबाक हेतु महारानी बैसलि छथि।

महाराज—आब पहिने हम मदन्लिका कें विजय कऽ लेब। तखन आगाँ बढ़ब।

विदूषक—महाराज ! अहाँ महारानीसँ ओहि पुजाउ गऽ। तावत हम ओहि मदमत्तासँ लड़ैत छी।

महाराज—फटफट नहि करह। हम ऐखन मदन्लिकाक दर्प-दलन करब। कंचुकी ! मदन्लिका कें तुरत एहि ठाम हाजिर करह।

कंचुकी—जे आज्ञा सरकार। (जाइत अछि—महाराज क्रोधसँ फुफकार छोड़ैत छथि।)

(कंचुकी संग मदन्लिकाक प्रवेश। मदन्लिका मत्त हस्तिनी जकाँ झुमैत आबि कऽ सामने ठाढ़ि भऽ जाइत छैन्ह।)

महाराज—(ओकरा दिस प्रतिस्पर्द्धाक दृष्टिसँ तकैत)—ई के ?

कंचुकी—महाराज ! येह थिकीह मदन्लिका।

महाराज—तों ककरासँ लड़य चाहैत छह ?

मदन्लिका—(औद्धत्यपूर्वक) ककरामे हमरासँ लड़बाक साहस होइक।

महाराज—(दक्षिण भुजा देखबैत)—एहि अभिमानक दंड देबाक हेतु ई भुजा फड़कि रहल अछि।

मदन्लिका—ओहि भुजाक पराक्रम महारानी पर देखबिऔन्ह गऽ। मदन्लिका ओ भुजदंड देखि डेरायवाली नहि।

महाराज—(क्रोध सँ) ऐं ! एतेक दर्प !

मदन्लिका—से त हाथ मिलौनहि बुझि पड़त।

विदूषक—महाराज ! हमरा एहि पीनस्तनीसँ लड़बाक आज्ञा भेटो। एकरासँ हारनहुँ लाभ, जितनहुँ लाभ।

महाराज—(खिसिया कऽ) तों चुप रहह। एहि मदोद्धता कें हम स्वयं अपना हाथसँ दर्प-दलित करय चाहै छी। कः समः करिवरस्य मालतीपुष्पमर्दने !

विदूषक—(स्वगत)—महाराजक अपने जी चपचपा गेलैन्ह अछि। नहि त राजमे ओतेक पहलमान अछि; तकरासँ किऐक नहि भिड़बैत छथिन्ह ?

मदन्लिका—महाराज ! हम लड़य लेल तैयार छी। परन्तु तीन शर्त पर।

महाराज—कोन-कोन शर्त ?

मदन्लिका—पहिल त ई जे हमरा-अहाँक बीचमे केओ तेसर नहि आयब।

महाराज—मंजूर।

मदन्लिका—दोसर जे हारि-जीतक बाद केओ किछु नहि बाजत।

महाराज—मंजूर।

मदन्लिका—तेसर जे हम हारब त आजीवन अहाँक दासी बनि कऽ रहब। और जँ जीतब त अहाँक स्वर्णमुकुट उतारि कऽ नेने जाएब और मुँहमे कारिख-चून लगा देब।

मंगलिका—शान्तं पापम् ! आइ धरि ककरो एहन शब्द बजबाक साहस नहि भेल छलैक।

कंचुकी—(मेयानसँ तरुआरि खींचि कऽ प्रहार करैत)—बस, खबरदार ! एहि जीभक उत्तर केवल तरुआरिसँ भेटि सकैत अछि।

महाराज—(कंचुकी कें रोकैत)—शान्त ! आब जखन वदावदी भऽ गेल तखन हमरा सभ शर्त मंजूर अछि। (गर्व सँ दहिन भुजा उठाय) जे भुजा सहस्रो दुर्दान्त वन्य पशुक गर्व चूर्ण कैने अछि तकरा एक अबला कें परास्त करबामे कतेक समय लगतैक ?

मदन्लिका—महाराज ! पहिने वचन दियऽ जे बिल्कुल धर्मयुद्ध हैत।

महाराज—एवमस्तु। हमर आज्ञा जे केओ दोसर-तेसर बीचमे नहि आबय और ने केओ एकरा पर हाथ छोड़ैक। सावधान !

(फाँड़ कसैत छथि)

मदन्लिका—महाराज ! मदन्लिकासँ भिड़बाक अर्थ होइ छैक अंग-भंग। से विचारि कऽ फाँड़ कसब।

(महाराज क्रोधपूर्वक ताल ठोकि आगाँ बढ़ैत छथि। मदन्लिका सीना तानि सामना करक हेतु तैयार भऽ जाइत छैन्ह।)

कंचुकी—महाराजक जय हो ! एहि ठाम नहि। अखाड़ा पर चलल जाय।

(महाराज ताल ठोकि सिंहनाद करैत अखाड़ा दिस जाइत छथि। मदन्लिको गर्वसँ छाती फुला ओहि दिस विदा होइत अछि।)

(सभक प्रस्थान)

[चतुर्थ दृश्य]

(कंदलिका ओ चर्चरिकाक प्रवेश)

कंदलिका—गे दाइ गे दाइ ! केहन जबर्दस्त मौगि अछि ! कोना मकुना पट्ठा जकाँ धाहि धाहि कऽ ठेंग दैत अछि।

चर्चरिका—जखन मड़कछ भीड़ि कऽ लड़इहि गेलि अछि, तखन ओकरा लाज कथीक ?

कंदलिका—महाराज अवश्य कामिनीक मदभंजन कैने हेताह। एक स्त्री कें पछाड़बामे कतेक विलंब लगतैन्ह ?

चर्चरिका—से तेहन स्त्री ई नहि छैन्ह। देखै छहु ने, कोना हथिनी जकाँ झूमैत-टलकैत पहुँचैने गेलैन्ह अछि ! हमरा त भय होइत अछि जे कतहु महाराज कें...

(नेपथ्यमे डंकापर चोट)

कंदलिका—सुनह। डंका पर चोट पड़ि रहल छैक। चलह तमाशा देखल जाय। एहन तमाशा आइ धरि केओ देखने नहि हैत। (नेपथ्य दिस झाँकि कय) हह ! कतेक भीड़ जमा भऽ गेल छैक ?

चर्चरिका—चलह। ओहि ऊँचका पर चढ़ि अखाड़ाक दृश्य देखल जाय !

(दुनू गोटे एक उच्च स्थान पर चढ़ि नेपथ्य दिस तकैत छथि)

कंदलिका—देखह, एहि ठामसँ नीक जकाँ सुझैत छैक।

चर्चरिका—हह ! छौंड़ी फाँड़ भिड़ने केहन अलमस्त लगैत अछि ! एखन भरपूर जवानी पर अछि। अट्ठारह उन्नैसक करीब !

कंदलिका—देखह, कोना ताल ठोकि कय महाराजसँ हाथ मिलाबक हेतु बढ़लैन्ह अछि !

चर्चरिका—महाराजो ताल ठोकैत बढ़ैत छथि, लेकिन बूझि पड़ैत अछि जेना मनेमन डर होइत होइन्ह।

कंदलिका—हे देखह ! महाराजक दुनू हाथ गसिया कऽ पकड़ि लेलकैन्ह।

चर्चरिका—किन्नहुँ छोड़बे नहि करैत छैन्ह। महाराज छटपट कऽ रहल छथि।

कंदलिका—हाय, हाय ! प्रथमे ग्रासे मक्षिकापातः भऽ गेलैन्ह।

चर्चरिका—महाराजो कें एहन बूझि पड़ैत हैतैन्ह जे कोनो स्त्रीसँ भेंट भेल।

कंदलिका—हे देखह ! एके झपट्टामे महाराज कें तरमे लऽ गेलैन्ह।

चर्चरिका—जाह ! महाराज तरमे चल गेलाह। देखह, कोना कसमसा रहल छथि।

कंदलिका—छौंड़ी पीठ पर सवार छैन्ह। उठय नहि दैत छैन्ह।

चर्चरिका—देखहुन, केहुनाठीसँ गर्दनि दबने छैन्ह।

कंदलिका—महाराज मूड़ी गाड़ने छथि।

चर्चरिका—और करताह की ?

कंदलिका—मुनहट्टीमे पछाड़ितैन्ह त एक टा बातो, ई एतेक लोकक बीचमे बेइज्जति कऽ रहल छैन्ह।

चर्चरिका—खूब होइ छैन्ह।

कंदलिका—देखहुन, महाराज निकसक हेतु कोना कुलबुला रहल छथुन्ह। वैह, जोर लगा कऽ उठि रहल छथि।

चर्चरिका—लैह, फेर छिटकी लगा कऽ खसौलकैन्ह। महाराज कें बेला-बेला कऽ पटकैत छैन्ह।

कंदलिका—हाय, हाय ! एहि बेर महाराज कें बड़ चोट लगलैन्ह। बहुत जोरसँ पटकलकैन्ह अछि।

चर्चरिका—महाराज तरमे अस्थिर भऽ रहल छथि। घामे-पसीने तरबतर छथि।

कंदलिका—और छौंड़ी ऊपरमे सवारी कसने छैन्ह। देखहुन, पीठ पर माँटि हेलोथि रहल छैन्ह।

चर्चरिका—अहा ! जहाँ महाराज उठक हेतु फुरफुराइ छथि कि छौंड़ी एक धक्का मारि कऽ सुता दैत छैन्ह। अहा ! फेर एक झापड़ लगौलकैन्ह।

कंदलिका—महाराजक दम टूटि गेलैन्ह। देखहुन, कोना हाँफि रहल छथि।

चर्चरिका—आइ छौंड़ी पानि पिया कऽ छोड़तैन्ह।

कंदलिका—कहाँसँ ई बखेड़ा बेसाहलन्हि ? आब पछितबैत हेताह।

चर्चरिका—हे देखह, सखियो तरसँ पानि माङि रहल छथिन्ह।

कंदलिका—हँ, मधुलिका पानि पियाबय गेलैन्ह अछि। मदन्तिका कोना मुसकुरा रहलि अछि !

चर्चरिका—आब महाराज फेर ठाढ़ भऽ कऽ लड़ताह।

कंदलिका—लड़ताह कि कपार ? हिम्मत त एतबे कालमे पस्त कऽ देलकैन्ह। देखैत छहुन, ताल ठोकैत कोना डर लगैत छैन्ह ?

चर्चरिका—हे लैह, एकके बेर महाराज कें भरि पाँज धऽ कऽ उठा लेलकैन्ह। आब ओरा जकाँ पटकतैन्ह।

कंदलिका—हाय, हाय ! महाराज अकबकायल छथि। किछु नहि फुरैत छैन्ह। घबरायल छथि।

चर्चरिका—देखह, केहन फुर्तीसँ धोबियापाट लगा देलकैन्ह !

कंदलिका—जाह ! महाराज पटका गेलाह !

चर्चरिका—एहिबेर नीक जकाँ चित्त कऽ देलकैन्ह ।

कंदलिका—हाय, हाय ! महाराज कें पछाड़ि देलकैन्ह । कोना धक्कारि कऽ छाती सँ चपने छैन्ह ।

चर्चरिका—देखहुन, तेहन जोर सँ छाती तर दबौने छैन्ह जे महाराज केवल छिकिया नहि रहल छथि, भितरे-भीतर सभटा दशा भऽ रहल छैन्ह !

कंदलिका—हाय, हाय ! केओ छोड़ाइयो नहि दैत छैन्ह !

चर्चरिका—छोड़ीतैन्ह कोना ? अपने मना कऽ देने छथिन्ह । आब मुँहमे कारी-चून लगा कऽ अपन बात पूरा कऽ लेलैन्ह तखन उठलैन्ह ।

कंदलिका—हाय, हाय ! छौंड़ी सरियों किदन मुँहमे पोति रहल छैन्ह ।

चर्चरिका—खूब होइ छैन्ह । आब ऐहू मुँह लऽ कऽ महारानीसँ बाँहि पुजाबय जैहथि ।

कंदलिका—हाय, हाय ! महाराजक मुँह केहन भूत सन बना देलकैन्ह । बेचारे अनाथ जकाँ चित्त पड़ल छथि ।

चर्चरिका—एहि अपमानसँ त मरणे नीक होइतैन्ह ।

कंदलिका—आबहु एक बेर झाड़ि कऽ ओकरा पटकि किएक नहि दैत छथि ?

चर्चरिका—से कि ई केलि-भवन थिकैन्ह ?

कंदलिका—हाय, हाय ! छौंड़ी माथसँ मुकुट उतारि रहल छैन्ह ।

चर्चरिका—हय ! बेटी चमत्कार नहि करह । बड़ दरेख होइ छौह त जा कऽ आँचरसँ बसात कऽ दहुन गऽ ।

कंदलिका—है ! वास्तवमे आब नहि देखल जाइत अछि । चलह एहि ठामसँ ।

(प्रस्थान)

[पंचम दृश्यः]

(विष्णुदत्त और बटुकभैरव शर्माक प्रवेश)

विष्णु— की औ शर्माजी ? कोम्हर झटकल जाइत छी ?

बटुक— अरे की कहू बालसंगी ! वैद्यराजक ओहि ठाम दौड़ैत दौड़ैत प्रलय भऽ गेल । एखनो दवाइए आनक हेतु जा रहल छी ।

विष्णु— से की बात छैक ?

बटुक— अरे ! वैह, महाराज जे पटकल गेलाह से ओहि दिन सँ उठि नहि सकलाह अछि ।

विष्णुदत्त सीतापति सुन्दर श्याम ।

बटुक—ओकरा छातीमे मुड़ाक माथा रहैक । जोरसँ जे चपलकैन्ह से महाराज कें उरक्षत भऽ गेलैन्ह ।

विष्णुदत्त युवतीक आलिंगनसँ उरक्षत ? सीतापति सुन्दर श्याम ।

बटुक आब राजवैद्य राजरोगक चिकित्सा कय रहल छथिन्ह ।

विष्णुदत्त सीतापति सुन्दर श्याम ! आब केहन अवस्था छैन्ह ?

बटुक अवस्था की रहतैन्ह ? करेजक हाड़-पाँजर पर अंडीक टोपर बान्हल जाइत छैन्ह । पड़ल पड़ल एलादि गुटिका चटैत छथि ।

विष्णुदत्त सीतापति सुन्दर श्याम ! राजवैद्य की कहैत छथिन्ह ?

बटुक कहैत छथिन्ह जे छौ मास धरि कोनो स्त्रीक छाया हुनका लग नहि पड़क चाही । तखन प्राण बचबाक आशा कैल जा सकैत छैन्ह । अन्यथा नहि ।

विष्णुदत्त— ओहि स्त्री कें की भेलैक ?

बटुक मंत्रीक इच्छा त रहैन्ह जे ओहि स्त्री कें नग्न कय गदहा पर चढ़ा नगरमे घुमाओल जाय । परन्च से भेने महाराजक बेइज्जती और दूर धरि पसरि जइतैन्ह । दोसर जे महाराजक वचन हारल रहैन्ह । तैं ओकरा केओ किछु नहि कहलकैक । ओ सोझे सोनक मुकुट उठा लेलकैन्ह और अपन बाट धैलक ।

विष्णुदत्त सीतापति सुन्दर श्याम ! आब महाराज जीवन कोना धारण कैने छथि ?

बटुक पहिने त ग्लानिवश औंठीक हीरा चाटि आत्म-हत्या करबाक हेतु प्रस्तुत भेलाह । पश्चात राजवैद्य एकटा बात बुझा देलथिन्ह त प्राण रखलन्हि ।

विष्णुदत्त से की ?

बटुक ओ कहलथिन्ह जे रसायनक जोर सँ मदनिका पर विजय करा देब । एही प्रतिज्ञा-पूर्तिक हेतु महाराज जीवन धारण कैने छथि ।

विष्णुदत्त सीतापति सुन्दर श्याम !

बटुक बेश, त आज्ञा दिअऽ । एखन मोती-भस्म लाबय जाइत छिऐन्ह ।

(प्रस्थान)

(दोसर दिससँ रसमञ्जरीक प्रवेश)

विष्णुदत्त की ए रसमंजरी ! महारानीक की समाचार ?

रसमंजरी – की कहू ? जो जाही क्षण महाराजक दुर्दशा सुनलथिन्ह ताही क्षण ओ मूर्छित भेलीह से तीन दिन तीन राति धरि चैतन्य नहि भेलन्हि। जखन संज्ञा भेलन्हि, तखनसँ सिवाय हाय महाराज ! हाय महाराज ! और कोनो शब्दे नहि। तहियासँ उन्मादिनी जकाँ रूक्ष केश खोलने, मलिन वस्त्र पहिरने सौभाग्य सिन्दूरक रक्षार्थ नाना प्रकारक मंत्र जप करैत रहै छथि। शृंगारक कोन कथा, अन्न-जल पर्यन्त स्वप्न भऽ गेलन्हि अछि।

विष्णुदत्त – सीतापति सुन्दर श्याम ! एखन कतय चलतहुँ अछि ?

रसमंजरी – राजपुरोहितक विचारसँ महारानी एक महा वृहत् अनुष्ठान कय रहल छथि। ओहिसँ नित्य एक सहस्र ब्राह्मणभोजन होइत छैक। अहूँ कँ पहिनहिसँ कहि रहल छी। हरे-जमाइत खा कऽ पेट सोंगहीने रहू।

विष्णुदत्त – सीतापति सुन्दर श्याम ! भोजमे की सभ होइत ?

रसमंजरी – हलुआ, पूड़ी, रसगर, मधुर।

विष्णुदत्त – सीतापति सुन्दर श्याम ! भोज कतेक दिन धरि चलतैक ?

रसमंजरी – यावत पर्यन्त महाराज उठि कऽ ठाढ़ नहि भऽ जैताह।

विष्णुदत्त – सीतापति सुन्दर श्याम ! तखन हमहुँ अनुष्ठान करय जाइ छी जे कम सँ कम छौ मास धरि महाराज कँ उठि नहि होइन्ह।

रसमंजरी – बाह रे पेटू देवता ! हम जाइ छिऐन्ह महारानी कँ कहि देबय।

विष्णुदत्त – दोहाइ रसमंजरी कँ। हम हँसी करैत छहुँ अछि।

(दुनूक प्रस्थान)

[षष्ठ दृश्य]

(दू टा कर्मचारीक डिगडिगिया पिटैत प्रवेश। दुनू उच्च स्वरसँ बेराबेरी घोषणा करैत अछि।)

पहिल – विदित हो जे चक्रवर्ती महाराज अढ़ाइ वर्ष पर पुनः आरोग्य-लाभ कैलन्हि अछि—

दोसर – एहि आनन्दक उपलक्ष्यमे महारानी रंगमहलक फाटक पर रत्न और बहुभूषण लुटौलीह—

पहिल – महाराजक प्रतिज्ञा छलन्हि जे बिना मदनिकाकें विजय कैने मुकुट धारण नहि करब—

दोसर – परन्तु बहुतो खोज कैला उत्तर मदनिकाक पता नहि लगलैन्ह—

पहिल – अतएव राजगुरुक आदेशानुसार महाराज एक निपुण कारीगरसँ ओकर माटिक प्रतिमा बनबौलन्हि अछि।

दोसर – ओहि प्रतिमासँ काल्हि महाराज युद्ध करताह—

पहिल – और मदनिकाकें परास्त कय अपन वचन पूर्ण करताह—

दोसर – ओहि विजयक उपलक्ष्यमे महाराजक अभिषेक हेतैन्ह—

पहिल – और महारानी यज्ञमंडपमे हुनक बाहु-पूजन करथिन्ह—

दोसर – महाराजक आरती देखक हेतु सकल नगर-निवासी कँ निमंत्रण देल जाइत छैन्ह—

पहिल – आरतीक बाद सभ कँ प्रसाद वितरण हेतैन्ह—

दोसर – और ब्राह्मण लोकनि कँ भोजनोपरान्त प्रचुर दान दक्षिणा भेटतैन्ह—

पहिल – रंगमहलक फाटक पर दरिद्र-भोजन हैत—

दोसर – और तदनन्तर ऊपरसँ द्रव्य लुटाओल जाएत !

(पुनः दुनू डिगडिगिया पिटैत नेपथ्य दिस जाइत अछि)

[सप्तम दृश्य]

(स्थान मल्लशाला—मदनिकाक मूर्त्ति ठाढ़ कैल अछि—चारि टा सुन्दरी महाराज कँ भरसाहा देने नेने अबैत छथिन्ह—महाराज प्रतिमाक समीप पहुँचि लात ठोकि ओकरा चरण सँ प्रहार करैत छथि—प्रतिमा नीचा खसैत अछि—महाराज सिंहनाद कय ऊपरसँ चढ़ि बैसैत छथि—चारू कात सँ 'महाराजक जय !' घोषित होमय लगैत अछि। व्यंजनिका ओरक पाँखि लय महाराज कँ बसात करै छथिन्ह। प्रक्षेपिका गुलाबजलक फोहारा छोड़ैत छथिन्ह। सम्मार्जिका आँचर लऽ कऽ देह पोछैत छथिन्ह। मधुलिका आसव पियबैत छथिन्ह।)

(नेपथ्यमे जयघोष 'वीरशिरोमणि चक्रवर्ती महाराजक जय !')

(एक झुंड सुन्दरी महाराज कँ उठा कऽ यज्ञमंडप पर लऽ जाइत छथिन्ह। ओहि ठाम नाना प्रकारक फूल, माला, अक्षत, धूप, दीप, शङ्ख, नैवेद्य, सराइ, पंचपात्र, अर्घी, घंटी, पूर्णकलश, पल्लव आदि सामग्रीक ढेरी लागल अछि। महारानी साष्टांग प्रणाम कय महाराजक चरण-धूलि माथमे लगबैत छथि। तदुत्तर बाहु-पूजन

आरम्भ होइत अछि। महाराज दक्षिण भुजा उठा कऽ बैसल छथि। महारानी क्रमशः दूध, दही, मधु, घृत ओ तीर्थजलसँ बाहु कँ स्नान करबैत छथिन्ह। पुनः ओहिमे चंदन, रोड़ी, केसर, कुंकुमक लेप करैत छथिन्ह। तदनन्तर फूल, अक्षत, माला चढ़बैत छथिन्ह। अन्तमे महाराज कँ नवीन रत्नजटित मुकुट पहिरा कऽ आरती देखाओल जाइत छैन्ह।)

(नेपथ्यमे वीर-नाद—घड़ी-घंटा ओ शङ्खध्वनि)

एक गवैया तानपूरा पर झिरझिरी तान ओ आलापक संग गबैत छथि—

आजु अनंद उछाह भयो है।

भयो विजय महाराज राज को, आजु अनंद उछाह भयो है।

(बीच-बीच मे 'जय हो' तथा पुष्पवर्षा। गानक उपरान्त उच्च स्वर सँ

जय-जयकार—वीर-शिरोमणि चक्रवर्ती महाराजक जय !

(पटाक्षेप)

▣

'रसमयो'क ग्राहक

श्रीमान सम्पादक जी,

सादर नमस्कार ।

अत्र कुशलं तत्रास्तु । आगाँ सुरति जे अपने मासिक पत्र की बहार कैल हमरा हेतु आफत कैल ! ग्राहक बनैबाक हेतु हमरा जे जे पराभव उठाबऽ पड़ल से कहाँ धरि वर्णन करू ?

पहिने गामक जेठरैयत चौधरीजीक ओहिठाम पहुँचलहुँ । ओ कोल्हुआड़ने बैसल कुसियार चेड़बैत छलाह । हमरा हाथ मे पत्र देखि बजलाह ओ ! ई कोन पोथी थिक ? बेस चहटगर लगैत अछि । कनेक दियऽ त देखू ।

हम कहलिऐन्ह-- लेल जाओ । एही खातिर त ऐलहुँ अछि । ई नवीन पत्र अपना भाषामे बहराएल अछि ।

ओ बड़द हकनिहार कैं एक बेर डाँटि कऽ कहलथिन्ह रौ, तों गप्प की सुनै छें ? अपन काज कर । पुनः हमरा पुछलन्हि हमरा त बिनु चश्मे सुझैत नहि अछि । एहिमे की सभ बात लिखल छैक ?

हम कहलिऐन्ह बहुत सुन्दर वस्तु सभ छैक । एकमें एक चटगर कथा, रसगर गप्प । जतेक पाठक भेटलाह अछि, सभक मुँहें प्रशंसे बहराइत अछि । यदि अपनहुँ पाठक भऽ जाइ'''

जेठरैयत विस्मित होइत बजलाह हमहुँ पाठक भऽ जाइ ?

हम कहलिऐन्ह हँ, तखन'''

जेठरैयत हम कोना पाठक भऽ सकैत छी ?

हम से किऐक ?

जेठरैयत रुष्ट होइत बजलाह--हमर बाप पितामह 'चौधरी' छलाह, तखन हम 'पाठक' कोना भऽ सकैत छी ? अहाँ 'झा' सँ 'मिसर' भऽ सकैत छी ?

हम कहलिऐन्ह से 'पाठक' नहि । हमर अभिप्राय अछि जे अहाँ कैं ग्राहक बनबाक चाही ।

जेठरैयत ग्राहक की ? सोझ सोझ फरिछा कऽ कहू ।

हम—पाँच टाका देल। उनका नामे भरि ई पत्र अहाँक सेवामे अबैत रहत।

जेठरैयत—ताहिमे हमरा की लागल हैत ?

हम—सुन्दर सुन्दर कविता...

जेठरैयत—कवितासँ की हैत ?

हम—साहित्यिक रस...

'साहित्य' सँ जेठरैयत की बुझलन्हि से त कहि नहि, परन्तु 'रस'क अर्थ हुनका लागि गेलन्हि। बजलाह—की ? रस पीबाक इच्छा होइत अछि ? रौ ! ला त एक लोटा।

हम पत्र दिस सकेत करैत कहलिऐन्ह—पहिने एकर निश्चय भऽ जाइत।

ओ पुछलन्हि—एकर दाम कतेक छैक ?

हम—आठ आना।

ओ पत्र कैं गहकी नजरसँ तजबीज करैत बजलाह—हमर सार छौ आनामे एतटा पोथी किनने रहथि ओतेक भेला मे। एहिसँ डबोढ़ा मोट रहैक। एक अठन्नी त बहुत भेल।

हम हुनक तर्कक उत्तर नहि दय विनयपूर्वक कहलिऐन्ह—आइकाल्हि एक अठन्नीक मोले की ? एक साँझक भोजनो नहि। यदि पत्र महगीए दऽ जाइत तथापि त अलमिहार कैं लाभ देबे करितिऐक। हुनका जे सैह भऽ रहल अछि।

ओ बजलाह—हँ, परन्तु सालमे पाँच टाका जे अहाँ कहैत छी सेहो त भारी बात !

हम—देखल जाओ, पाँच टाका भेल आध सेर जीरक दाम। एहीमे साल भरि पत्र भेटैत रहत।

जेठरैयत—हँ, परन्तु ओतेक जीरमे त साल भरि कुटुम्ब आरमा पान खाइत रहताह। एहि कागतसँ की हैत ?

हम—कुटुम्ब-आरमा जखन पान खा कऽ ई पत्र हाथमे उठौताह तखन ई मसालाक काज देतैन्ह।

जेठरैयत—ओ जी ! अहाँ बात बनाबय खूब जनैत छी। एखन रुपैया सैंत क अछि तें फुरैत अछि। परन्तु हम जखन अहाँ पर पाँच रुपैया चौकीदारी टिकस बान्हि देने रही त केहन लागल रहय ? जखन रुपैया देबक पड़ैत छैक त सभटा बिसरि जाइत छैक। अहाँ अपने दाम देलिऐक अछि ?

हम—निश्चय।

जेठरैयत—तखन त ई काज चलिए जायत। अहाँक ओहिठामसँ मङा लेल करब। रौ ! एक लोटा रस त हुनका छानि कऽ।

हम देखल जे आब और जोर करबैन्ह त रसो जे भेटि रहल अछि से गड़बड़ा जायत। अस्तु। ओहिठामसँ आगाँ बढ़लहुँ त वैयाकरण जी भेटलाह। हम कहलिऐन्ह—पं० जी, ई 'रसमयी' पटनासँ बहराबय छैक से देखलिऐक अछि ?

पं० जी हाथमे लय उनटबैत-पुनटबैत बजलाह—'रसमयी' नामक की अभिप्राय ? कि एहि सँ रस चूबि रहल छैक ?

हम कहलिऐन्ह—पं० जी, व्यक्तिवाचक नामक शब्दार्थ नहि देखल जाइत छैक। अपनहुँक नाम त धरणीधर अछि परन्तु अपने कोन पृथ्वी टेकने छी ? यदि गुणेक अनुसार नाम राखल जाय त अपने पुत्रक नाम यदुनन्दन किऐक रखने छी ? हुनक नाम धरणीधर-नन्दन होएबाक चाही।

पं० जी तमसाइत बजलाह—अहाँ हमरा गारि पढ़ैत छी ? अइफ़ाक बोध नहि और हमरासँ शास्त्रार्थ करय चललहुँ अछि ? बेश, तखन लिखऽ। कि नाम प्रतिपादकार्थ-सम्बन्ध लक्षण प्रतिपत्तिः ?

हम—पं० जी, हम अपनेसँ शास्त्रार्थ करय नहि आयल छी। यदि पाँच टाका वार्षिक मूल्य दिऐक त ग्राहकमे अपनेक नाम लिखि ली।

पं० जी बजलाह—इहो अशुद्ध भेल। ग्राहकक अर्थ ग्रहण करय वाला। तखन अहाँ दाता भेल त ग्राहक अहाँ भेलहुँ कि हम ? हम त दाता कहाएब।

हम—परन्तु पत्र जे अपने लेबैक ?

पं० जी—मूल्य दऽ कऽ जे वस्तु लेल जाइत छैक से ग्रहण नहि, 'क्रय' थिक। अतएव 'क्रेता' कहू, ग्राहक नहि।

हम—बेश, सैह रहौ। ई लीनल जाओ।

पं० जी—परन्तु हमरा लोकनि कैं खैबा पहिरबाक वस्तु छोड़ि और किछु किनैत कहिओ देखल अछि ?

हमरा सोचैत देखि पं० जी बजलाह—सोचै छी की ? हमरा एकोटा पण्डितक नाम कहू जे सालमे पाँच टका खर्च कऽ पत्र किनैत होथि। बल्कि मुफ्तो देल जाइन्ह त कतेक गोटे नहिएँ पढ़ताह। हँ, यदि पाँच टका और अपना दिससँ दिऐन्ह, त की करताह ? पढ़ि देताह। खण्डनखण्ड-खाद्य ओ मनोरमा-कुचमर्दनक रसास्वादन कैनिहार कैं एहि रजनी-सजनीमे की आकर्षण भेटतैन्ह ? जाउ, बबुआन सभ कैं धरौ गऽ।

आब बरन्दू बाबूक दरबारमे गेलहुँ । गेला उत्तर देखै छी जे बाबू साहेब मसनद पर ओङठल, मोसाहेब सभसँ घेरल शतरंज खेलबामे संलग्न छथि । हमरा देखितहि बजलाह—भलहि बेर पर अहाँ पहुँचि गेलहुँ । देखू त, ई किस्तीक मात लागि रहल अछि । यदि ई प्यादा बढ़ि दिऐक त की क्षति ?

हम ओहिठाम बैसि गेलहुँ । ओ प्यादा बढ़बैत पुछलन्हि आइ बहुत दिन पर ऊपर भेलहुँ अछि । सभ हाल-चाल बढ़ियाँ छैक ?

हम हँ, सरकार । अपनेक दयासँ सभ बढ़ियाँ छैक । एकटा बड़ सुन्दर पत्र पटनासँ बहार भेल अछि । से अपने कैँ ...

बाबू साहेब अपना प्रतिद्वन्द्वीसँ बजलाह—ओ चालि फेरि दिअऽ । हिनकामे गप्पमे बाझि गेलहुँ । ताहिसँ घोड़ा कटा गेल । ओ घोड़ा दऽ दिअऽ ।

घोड़ा कैँ पुनः अपना स्थान पर स्थापित कए बाबू साहेब बजलाह—ओजी ! टीप बड़ खराब चीज होइत अछि । अहाँक कहने हम प्यादा बढ़ि देल । आब बादशाहक घरे उदास भऽ गेल ।

ई कहि बाबू साहेब अभियोगक दृष्टिसँ हमरा दिस ताकय लगलाह ।

हम कहलिऐन्ह—सरकार ! ई खेल आब छोड़ि देल जाओ । बाजी बुर्ज भेनैक ।

मोसाहेब सभ समर्थन करैत कहलथिन्ह हँ, आब ई खेल किछु नहि हैतैक । हँ, पटना दऽ की कहैत छलहुँ ?

परन्तु प्रतिद्वन्द्वी नहि छोड़लकैन्ह । कहलकैन्ह खेल निश्चय हैतैक । मातुक बाजी छैक ।

बाबुओ साहेब कैँ जोश आबि गेलैन्ह । बजलाह बेश, तखन खेला लिअऽ ।

हम प्रतिद्वन्द्वी कैँ डँटैत कहलिऐक ओ ! अहूँ भारी जिद्दी छी । बूझि पड़ैछ जे पहिले पहिल दरबारमे खेलाइत छी । खेल त बराबरिए पर अछि । बहुत हैत त अढ़ी बाजी हैत ।

ओ हमरा दिस सरोष ताकि बाजि उठल तखन अहीं खेला भऽ देखि लिअऽ । हे लिय, ई शह !

हम कहलिऐक - बेश, त पैह नवका रहऽ दिय ! हम कनेक बाबू साहेबसँ गप्प कऽ लैत छी ।

बाबू साहेब कैँ उत्साह भंग भेलैन्ह । उदास होइत बजलाह—कहू, कोन सेवा हमरासँ भऽ सकैत अछि ?

हम कहलिऐन्ह अपनहि लोकनि सन सहायकक बल पर ई पत्र बहार कैल गेल अछि । अपनेक दरबारमे त कइएक टा ग्राहक भऽ सकैत छथि ।

बाबू साहेब बजलाह - हम त पट्टीदार छी । जौं ओहो चंदा देताह त हमहूँ तैयार छी । रौ किसना ! पैखानामे पानि त राखि आ । और अजुका अखबार देहो ।

बाबू साहेबक गेला पर ज्ञात भेल जे ओ अखबार पैखानेमे बैसि कऽ पढ़ैत छथि । किऐक त एक घंटा समय ओहि मे बितायब पड़ैत छैन्ह । ताहिमे दोसर काज कोन करताह ?

सम्पादकजी ! यदि ओ अहाँक ग्राहक बनि गेलाह त अहाँक रसमयी निश्चय हुनका ओहिठाम ललितगर स्थानक शोभा बढ़बैत रहतीह, ताहिमे सन्देह नहि ।

बाबू साहेबक गेला पर हम कहाँ उठय लगलहुँ कि हुनक प्रतिद्वन्द्वी हमरा टोकलक - औ पड़ाएल कहाँ जाइ छी ? शह जे लागल अछि से के तह करतैक ?

हम कहलिऐक हुजौं ! अहूँ भारी रसिकदत्त छी । देखहीमे पहिले पहिल आएल छी की ? औ, ओ बाजी गेलहु । और बाबू साहेब पैखानासँ आबथि त दोसरे बाजी बुर्ज कऽ देथैन्ह । ओना नहि जीतथि त प्यादा तर फर्जी दऽ देथैन्ह ।

ततः पर दोसरा पट्टीदारक दलान पर गेलहुँ । ओहिठाम दू कुटुम्बमे घोर विवाद छिड़ल छल और बाबू साहेब ओकर रस लैत छलाह । विवादक विषय छल जे घोड़ा आद खाइत अछि कि नहि हमरा देखितहि एक गोटा बजलाह हे लिअऽ ! यहो आबि गेलाह । आब ई फरिछा देताह ।

दोसर गोटे बजलाह फरिछा की देताह ? हम त एतेक दिनक भऽ गेलहुँ परन्तु आइ धरि घोड़ा कैँ आद खाइत नहि देखलिऐक ।

पहिल व्यक्ति कहलथिन्ह —जखन घोड़ा घास खाइते अछि तखन आद किऐक नहि खायत ? आद किछु जहर त होइते नहि छैक ।

हम कहलिऐन्ह त एहि खातिर झगड़ा किऐक ? घोड़ाक आगामे आद राखि कऽ देखिऔक जे खाइत अछि की नहि ।

बाबू साहेब कहलथिन्ह —देखू, अहाँ दुनू गोटा कैँ अपना बुद्धिक बड़े दावी रहैत अछि । ई बात कोनो गोटा कैँ फुरल छल ?

तावत एकटा आठ बर्खक बुनकआ नेना ददाजी, ददाजी करैत आबि कऽ बाबू साहेबक कोरमे बैसि गेलैन्ह। ओ दुलार करैत कहलथिन्ह—की औ बुच्चुन ! अहाँक नानी कौं त कौआ लऽ गेलैन्ह। आब अहाँ की करब ?

बुच्चुन दुलारसँ छिड़ियाइत उत्तर देलथिन्ह—ददाजीक नानी कौं कौआ लऽ गेलैन्ह। आब ददाजी की करताह ?

बाबू साहेब अतीव सन्तुष्ट भए हमरा दिस ताकि कहय लगलाह—हिनक (बुच्चुनक) बुद्धि-संस्कार देखि कऽ त हमरा किछु फुरबे नहि करैत अछि। हमरा सोझाँमे एहेन टा रहौं त किछुक अवगति नहि रहय। और ई एतबे वयसमे तेहन तेहन बात बजैत छथि जे की कहू ! औ बुच्चुन ? कनेक ओ श्लोक त सुना दियौन्ह बालोऽहम्...

बुच्चुन छिड़ियाइत उत्तर देलथिन्ह—नहि सुना देबैन्ह।

बाबू साहेब—बाउ रे, सुना त दियौन्ह।

बुच्चुन—नहि सुना देबैन्ह।

बाबू साहेब—सुना देबैन्ह त बुधियार कहताह।

बुच्चुन—जाउ, हम नहि सुनेबैन्ह।

हम मनमे कहल जे आब काजक बात आबी। कहलिऐन्ह—सरकार ! एक टा नवीन पत्र...

बाबू साहेब बुच्चुन कौं पोल्हबैत कहलथिन्ह—सुना दियौन्ह त मधुर देब। कहु न बालोऽहम् जगदानन्द...

बुच्चुन—बालोऽहम् जगदानन्दम्

बाबू साहेब—न मे बाला ?

बुच्चुन—न मे बाला सरोस्तीम्।

बाबू साहेब—अपूर्ण...

बुच्चुन—ददाजी ! एहि सँ आगाँ हमरा नहि अबैत अछि।

बाबू साहेब—मन पाडू। अपूर्ण पञ्चमे वर्षे...

बुच्चुन—हम बहुत कहि देलहुँ। आब मधुर दिअऽ।

बाबू साहेब मोसाहेब दिस तकैत बजलाह—हिनका सम्पूर्ण श्लोक अभ्यास छैन्ह। परन्तु सभटा नहि कहैत छथि। जखन ई जिद्द धरैत छथि तखन ककरो सकक नहि जे हिनका...

बुच्चुन—ददाजी ! मधुर मङा दिअऽ।

बाबू साहेब—हँ, मङा देब।

बुच्चुन—नहि, एखने मङा दिअ।

बाबू साहेब—अहाँक बाप दड़िभंगा गेलाह अछि। ओतए सँ लेने औताह।

बुच्चुन—ओ नहि औताह।

बाबू साहेब—नहि औताह त हम एक चाट मारबैन्ह।

बुच्चुन—अहाँ नहि मारबैन्ह।

बाबू साहेब—हम अवश्य मारबैन्ह।

बुच्चुन—और जौं नहि मारिऐन्ह ?

बाबू साहेब—तखन हमरे अहाँ मारब।

बुच्चुन—हम एखने मधुर लेब।

बाबू साहेब एक मोसाहेब दिस ताकि कहलथिन्ह—औ ! ई नहि मानताह। एखन मधुर लेबे करताह। कनेक जाउ त अहीं साइकिल पर...

मोसाहेब इशारा पबैत देरी साइकिल पर सवार भेलाह।

हम कहलिऐन्ह—सरकार ! ई पत्र पटनासँ बहार भेल छैक।

बाबू साहेब पत्र कौं अपना हाथमे लऽ उपरका चित्र देखय लगलाह। तावत बुच्चुन बाबू पुनः छिड़िया गेलथिन्ह—ददा जी ! ओ हम लेब।

बाबू साहेब—ई लऽ कऽ की करब ? ई हुनकर छैन्ह।

बुच्चुन—नहि, हम लेबे करब।

बाबू साहेब—अहाँ लऽ कऽ की करब ?

बुच्चुन—हम टोपी बनाएब।

बाबू साहेब हमरा दिस ताकि बजलाह—आब हमरा की कहैत छी ? ई किन्नहुँ नहि मानताह। बेस, सेहब दियौन्ह। अहाँ दोसर कीनि लेब। कतेक दाम छैक ?

हम—सरकार, दामक कोन बात ? पाँच टकामे बारह टा अंक।

बाबू साहेब—औ, ई दर्जनक हिसाबसँ बिकाइत छैक ? पाँच रुपैये दर्जन ? एखन एक टाक दाम कतेक पड़लैक ? की औ गुमाश्ता जी ?

गुमाश्ता जी दाम जोड़ैत बजलाह—छः आना अढ़ाइ कैंचा ओ दू अङ्गुरेजी पाइ।

बाबू साहेब—बुच्चुन ! एहिमे बहुत बखेड़ा छैक। ई अहाँ नहि लियऽ। कनेक सोझुकः दाम बला कीनि देब।

हम — सरकार ! एक प्रतिक दाम आठ आना छैक ।

बाबू साहेब—बच्चू ताहिमे त छोड़ि न दि जैतैन्ह ? की औ गुमाश्ता जी ?

गुमाश्ता जी—हँ सरकार, पाँच कैंचासँ ऊपर फाजिल न दि जैतैन्ह ।

बाबू साहेब — बुच्चुन ! एहिमे छोड़ि लागि जायत । नहि लियऽ । अहाँ हुशियार छी ।

बुच्चुन आन बुधियारीक अर्थ परिचय दैत कहलथिन्ह — हम लाली यैह लेब । ई कहैत बुच्चुन उपरका निब खई द फाड़ि लेलन्हि और ओ तेंने भीतर दिस पड़ैलाह ।

बाबू साहेब अवशेष हमरा फिरता करैत बजलाह—औ, लियऽ । अहाँक भाग्य नीक छल जे पुनः भेटि गेल । नहि त हुनका हाथमे पड़ल वस्तु कि ककरो भेटि सकैत छैक ? की औ बोध बाबू ?

बोध बाबू अनुमोदन करैत कहलथिन्ह—त । एक बेर हमर दाढ़ी अपना हाथमे लऽ लेलन्हि से किन्नहुँ छोड़बे नहि करथि । जखन भैरव जी मना कैलथिन्ह त हमर दाढ़ी छोड़ि हुनके टीक पकड़ि लेलथिन्ह । तखन जा कऽ हमर प्राण छूटल । एहन मनस्वी नेना बहुत कम देखल अछि ।

बाबू साहेब बजलाह—आश्चर्य छथि । एक बेर जे मनमे धरताह से किन्नहुँ छोड़ताह नहि ।

भैरवजी बजलाह—और हाथ की सक्कत छैन्ह ! एही बयसमे एहन अतुल पराक्रम, आगाँ नहि जानि की करताह ।

बाबू साहेब सुपौत्रक प्रशंसासँ मुग्ध होइत बजलाह - अहाँ लोकनि प्रार्थना करिऔन्ह जे भगवती चिरायु करथिन्ह जे ई कुलक नाम उजागर करथि । 'स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम् ।'

तावत पुनः बुच्चुन बाबूक आहुटि सुनाइ पड़ल । बाबू साहेब हमरा संकेत कैलन्हि—अहाँ ससरू । नहि त फेर पोथी देखताह त जिद्द करताह ।

हमरा पुनः किछु अनुरोध करबाक साहस नहि भेल । चुप्पे अपन बाट धैलहुँ ।

आगाँ भेटलाह वकील साहेब । कहलन्हि की औ ? कतय झटकल जाइ छी ?

हम कहलिऐन्ह—वकील साहेब ! बहुत हर्षक विषय थिक जे एकटा मासिक पत्र मिथिला भाषामे बहराएल अछि ।

वकील साहेब जेना केओ आमिल घोरि कऽ पिया देने होइन्ह तेना मुँह बनबैत बजलाह मिथिला भाषामे ?

हम हँ, मिथिला भाषामे ।

वकील साहेब मिथिला भाषा के पढ़त ?

हम—किऐक ? आब तँ सब शिक्षित युवक जे समाज मे छथि...

वकील साहेब—हम त अङ्गरेजी पेपर पढ़ैत छी । हिन्दिओक मासिक पत्र मङबैत छी सुधा, माधुरी, चाँद । मिथिला भाषा मे छैहे की जे पढ़ू ?

हम तैं त मैथिलीमे ई पत्र बहराएल अछि । अपने कैं एकर ग्राहक बनक चाही ।

वकील साहेब कै अंक बहरायल छैक ?

हम ई प्रथम अंक छैक ।

वकील साहेब तखन हमरा विश्वास नहि जे ई पत्र चलि सकत । हम वार्षिक मूल्य दऽ दी और आगाँक अंक नहि बहराय त ओकर देनदार के हैत ? यदि अहाँ गारंटी दऽ सकी जे तेहना हालतिमे हमर दाम फिरता कैल जाएत त हम ग्राहक बनि सकैत छी, अन्यथा नहि ।

हम पत्र चलबामे अहाँ कैं सन्देह किऐक होइत अछि ? यदि एको हजार ग्राहक भऽ जाथि त पत्र स्थायी रूपसँ चलि सकैत अछि ।

वकील साहेब—बेस, जखन नौ सौ नेन्नानबे ग्राहक पुरि जैताह तखन हजारमे हमरे नाम लीखि लेब ।

हम—परन्तु यदि सब एहिना कहए लागि जाथि त प्रथम ग्राहक के हैत ?

वकील साहेब—तकर हम की कऽ सकैत छी ?

वकील साहेबसँ ई उत्तर पाबि हम महंथजीक दरबारमे पहुँचलहुँ । ओहि ठाम आरती ओ बालभोगक आयोजन भऽ रहल छल । हमरा देखितहि महंथ जी उल्लसित भऽ बजलाह —दण्डवत ! कहू, कुशल क्षेम !

हम—दंडवत् सरकार, अपन समाचार कहल जाओ ।

महंथजी—बैरागीक समाचारे की ? ठाकुरजीक सेवामे लागल रहैत छी ।

हम सरकार । एकटा नवीन मासिक पत्र बहार भेल अछि । 'रसमयी' ।

महंथजी—रसमयी ? अहा ! बड़ सुन्दर ! बड़ सुन्दर ! अहाँ सब विद्वान लोक छी । जरूर बहार करक चाही ।

हम—सरकार ! ई मिथिला भाषामे छैक।

महंथजी—मिथिला भाषामे ? वाह वाह ! तखन और सुन्दर। एहन मधुर भाषा और कोन अछि ? भाषा जानकीक भाषा ! धन्य छी अहाँ लोकनि।

ई कहैत महंथजी गद्‌गद भऽ गेलाह। आत्म-विभोर होइत जानकी जीकेँ प्रणाम कैलन्हि। हम देखलहुँ जे लक्षण नीक अछि। पत्र आगाँ बढ़ा कऽ कहलिऐन्ह—एकर उपरका चित्र फाटि गेल छैक।

महंथजी उनटा-पुनटा कऽ देखैत कहलन्हि—बहुत सुन्दर ! बहुत सुन्दर ! देखि कऽ बहुत प्रसन्न भेलहुँ। वाह !

हम कहलिऐन्ह—एकर वार्षिक मूल्य पाँच टाका छैक। अपने तऽ ग्राहक बनबे करबैक ?

महंथजी बजलाह—अवश्य, अवश्य। परन्तु हम सभ त संत रहलहुँ। केवल धार्मिक पोथी चाही जाहिमे ठाकुरजीक भजन कीर्त्तन हो। गृहस्थक पोथी लऽ कऽ हम की करब ? ई सभ त सांसारिक लोकक हेतु छैक।

"लिअ, पान खाउ" ई कहि महन्थजी डिबिया बढ़ौलन्हि। हम हुनका अभिवादन करैत एक खिल्ली उठा लेल। ओ पुछलन्हि—जरदा खाइ छी ? बनारसी जरदा छैक।

हम—जरदा त सरकार, हम नहि खाइ छी।

महन्थजी—बहुत सुन्दर, बहुत सुन्दर ! अहाँ कोनो नीक वस्तु नहि होइत अछि। वाह, अहाँ सँ भेंट भेने मन आनन्द भऽ गेल !

हम—सरकार ! एहिमे सभ तरहक विषय छैक। अपनहुँक योग्य…

महन्थजी—बहुत सुन्दर ! बहुत सुन्दर ! हमरा ठाकुरवाड़ी मे बहुत तरहक लोक अबैत रहैत छथि। ओहो सभ पढ़ैत जैताह। बेस, त अहाँ मनेजर साहेबसँ गप्प कऽ लेब। एकर सभटा हाल वैह जानथि।

तावत घड़ी घंटा ओ झाँझक तुमुल निनाद होमय लागल। 'बेस आब एखन आजा' कहैत महन्थ जी हटकल ओहि दिस बिदा भेलाह।

हम मनेजरक मुँह ताकय लगलहुँ। ओ कहलन्हि—ओ जी ! एहि ठाम अहाँक कार्य सिद्ध नहि हैत।

हम—से किएक ? महन्थ जी त बहुत प्रेमी लोक छथि।

मनेजर—हँ, से त छथिए। परन्तु सभटाक प्रश्न ऐला उत्तर ओ मनेजर पर छोड़ि दैत छथिन्ह। एही खातिर त हम दाखल भेल छी।

हम—तखन त हमर काज बनिए गेल। रसीद-बही बहार करू ?

मनेजर—औ महाराज ! से जौं करब त कालिहुए दोसर मनेजर हमरा जगह पर आबि जैताह। यदि अहाँ चाही जे हमर दाना-पानी एहि ठाम किछु दिन और रहि जाय त अपन रसीद-बही समेटि लिअऽ।

हम—परन्तु महन्थ जी त अहीं कें अधिकार देने छथि।

मनेजर—ओ हुनकर संकेत छन्हि। आने रोची व्यक्ति छथि। ककरो साफ भऽ कऽ नहि कहैत छथिन्ह। तें हमरे दुर्जन बनाबक हेतु रखने छथि। करबाक त सभ अपने करै छथि। हम केवल शिखण्डी मात्र छिऐन्ह।

हम—आब महन्थ जी कतेक कालमे औताह ?

मनेजर—आब आइ हुनका सँ भेंट नहि हैत। ओ बालभोग पाबि सोझे शयनमे चल जैताह। कालिह जौं अहाँ फेर पहुँचबैन्ह त हमरा एकान्तमे बजा कऽ फरमाशि करताह। अतएव जौं हमरा ऊपर दया हो त आब दोबारा चन्दाक हेतु जुनि आबी।

ओहि ठामसँ निराश भऽ फिरलहुँ। बाटमे भेटल मिसरजीक औषधालय।

मिसरजी बेस चटपटिया ओ व्यावहारिक लोक छथि। फालतू गप्प एकोटा नहि करताह। रोगी सभक मेला लागल रहैन्ह। हम कहलिऐन्ह—मिसर जी ! नमस्कार।

मिसरजी कानसँ ऊँच सुनैत छथि। कहलन्हि—नगद लेबऽ ऐलहुँ अछि कि उधार ?

हम कहलिऐन्ह—पहिने रोगी सभ कें दबाइ दऽ दिऔक तखन गप्प करब।

जखन रोगी सभ छटि गेलैन्ह तऽ हमरा दिस ताकि पुछलन्हि—अहाँ कें की चाही ?

हम कहय लगलिऐन्ह—एकटा मासिक…

मिसरजी चटपट पुछलन्हि—कोन रंगक ?

हम—बड़ बढ़ियाँ। ऊपर मे लाल रंग…

मिसरजी—मोट की पातर ?

हम—एखन धारे...

मिसरजी—प्रवाह कैहन ?

हम—बेश बढ़िया । धारावाहिक रूप सँ...

मिसरजी—नियमित कि अनियमित ?

हम—ई प्रथमे छैक ।

मिसरजी—बेश, त कोनो चिन्ता नहि । अहाँ बैसू ।

थोड़ेक कालमे मिसरजी भीतरसँ एक पुड़िया नेने बहरैलाह और बजलाह—ई लियऽ रजःप्रवर्तनी बटी । एहिसँ नियमित भऽ जैतैन्ह । मूल्य सवा टाका ।

हे भगवान ! ई त और बीस्ता लागल । हम जोरसँ चिचिया चिचिया कऽ बहुत कठिनतापूर्वक हुनका बुझाओल । बात बुझैत देरी ओ चरपइ पत्र कँ हाथ पर लऽ थकऽ मचारय लगलाह जेना कोनो जौहरी चानीक भार उठा कऽ अंदाज कऽ रहल हो ।

हम पुछलिऐन्ह—की ठेकनैबैत छिऐक ?

ओ बजलाह—पावभरिसँ बेसी नहि हैत ।

हम अवाक भऽ हुनक मुँह ताकय लगलहुँ ।

मिसरजी बजलाह—हमरा ऐहीं भागलक काज पड़ैत अछि—पुड़िया बनाबक हेतु । जौं छौ आने सेर दी त लऽ सकैत छी । एकरा बदलामे हम डेढ़ आनाक पाचक दऽ देब ।

ई कहि वैद्यजी पत्र नेने भीतर चल गेलाह । हम मुँह तकैत रहि गेलहुँ ।

श्री सम्पादकजी ! एहि तरहेँ अहाँक काजे सात फाटक पानि पीबय पड़ल । ग्राहक की बनत जे अपनो प्रति गमौलहुँ । कुशल एतबे भेल जे मिसरजीक स्थानमे मिसराइन जी नहि छलीह । नहि त 'मासिक'क चर्चा होइत देरी दोसरे रंग लागि जाइत !

आब हम कान ऐंठैत छी जे फेर एहन काजमे नहि पड़ब । अहाँ कँ ग्राहक-संख्या बढ़ाबक हो त अपन दोसर एजेंट बहाल करू । हम कमीशनसँ बाज ऐलहुँ । विशेष नमस्कार । इति शुभम् ।

अपनेक—
भद्रनाथ झा



वकील साहेब जेना केओ आमिल घोरि कऽ पिया देने होइन्ह तेना मुँह बनबैत बजलाह—मिथिला भाषाक ?

हम—हँ, मिथिला भाषामे ।

वकील साहेब—मिथिला भाषा के पढ़त ?

हम—किऐक ? अपने सन सन शिक्षित युवक जे समाज मे छथि...

वकील साहेब—हम त अङ्गरेजी पेपर पढ़ैत छी । हिन्दिओक मासिक पत्र मङबैत छी—सुधा, माधुरी, चाँद । मिथिला भाषा मे छैहे की जे पढ़ू ?

हम—तैं त मैथिलीमे ई पत्र बहराएब अछि । अपने कँ एकर ग्राहक बनबक चाही ।

वकील साहेब—कै अंक बहरायल छैक ?

हम—ई प्रथमे अंक छैक ।

वकील साहेब—तखन हमरा विश्वास नहि जे ई पत्र चलि सकत । हम वार्षिक मूल्य दऽ दी और आगाँक अंक नहि बहराय त ओकर देनदार के हैत ? यदि अहाँ गारंटी दऽ सकी जे तेहना हालतिमे हमर दाम फिरता कैल जाएत त हम ग्राहक बनि सकैत छी, अन्यथा नहि ।

हम—पत्र चलबामे अहाँ कँ सन्देह किऐक होइत अछि ? यदि एको हजार ग्राहक भऽ जाथि त पत्र स्थायी रूपसँ चलि सकैत अछि ।

वकील साहेब—बेश, जखन नौ सौ नेन्नानबे ग्राहक पूरि जैताह तखन हजारमे हमरे नाम लीखि लेब ।

हम—परन्तु यदि सभ एहिना कहय लागथि तखन त प्रथम ग्राहक के हैत ?

वकील साहेब—तकर हम की कऽ सकैत छी ?

वकील साहेबसँ ई उत्तर पाबि हम महंथजीक दरबारमे पहुँचलहुँ । ओहि ठाम आरती ओ बालभोगक आयोजन भऽ रहल छल । हमरा देखितहि महंथ जी उल्लसित भऽ बजलाह—दंडवत ! कहू, कुशल क्षेम !

हम—दंडवत् सरकार, अपन समाचार कहल जाओ ।

महंथजी—वैरागीक समाचारे की ? ठाकुरजीक सेवामे लागल रहैत छी ।

हम—सरकार । एक टा नवीन मासिक पत्र बहार भेल अछि । 'रसमयी' ।

महंथजी—रसमयी ? अहा ! बड़ सुन्दर ! बड़ सुन्दर ! अहाँ सभ विशाल लोक छी । जरूर बहार करक चाही ।

हम—सरकार ! ई मिथिला भाषामे छैक।

महंथजी—मिथिला भाषामे ? वाह वाह ! सरल और सुन्दर। एहन मधुर भाषा और कोन अछि ? मातृ आत्मीय भाषा ! धन्य छी अहाँ लोकनि।

ई कहैत महंथजी गद्‌गद भऽ गेलाह। आत्म-विभोर होइत जानकी जी कैं प्रणाम कैलन्हि। हम देखलहुँ जे लक्षण नीक अछि। पत्र आगाँ बढ़ा कऽ कहलिऐन्हि —एकर उपरका चित्र फाटि गेल छैक।

महंथजी उनटा-पुनटा कऽ देखैत कहलन्हि—बहुत सुन्दर ! बहुत सुन्दर ! देखि कऽ बहुत प्रसन्न भेलहुँ। वाह !

हम कहलिऐन्हि—एकर वार्षिक मूल्य पाँच टाका छैक। अपने तऽ ग्राहक बनबे करबैक ?

महंथजी बजलाह—अवश्य, अवश्य। परन्तु हम सभ त गेन ठहरलहुँ। केवल धार्मिक पोथी चाही जाहिमे ठाकुरजीक भजन कीर्तन हो। गृहस्थक पोथी लऽ कऽ हम की करब ? ई सभ त सांसारिक लोकक हेतु छैक।

"लिय, पान खाउ"। ई कहि महन्थजी डिबिया बढ़ौलन्हि। हम हुनका अभिवादन करैत एक खिल्ली उठा लेल। ओ पुछलन्हि—जरदा खाइ छी ? बनारसी जरदा छैक।

हम—जरदा त सरकार, हम नहि खाइ छी।

महन्थजी—बहुत सुन्दर, बहुत सुन्दर ! जरदा कोनो नीक वस्तु नहि होइत अछि। वाह, अहाँ सँ भेंट भेने मन आनन्द भऽ गेल !

हम—सरकार ! एहिमे सभ तरहक विषय छैक। अपनहुँक योग्य···

महन्थजी—बहुत सुन्दर ! बहुत सुन्दर ! हमरा ठाकुरबाड़ी मे बहुत तरहक लोक अबैत रहैत छथि। ओहो सभ पढ़ैत छैताह। बेस, त अहाँ मनेजर साहेबसँ गप्प कऽ लिय। एकर सभक हाल वैह जानथि।

तावत घड़ी घंटा ओ झालिक तुमुल निनाद होमय लागल। 'बेस आब एखन आज्ञा' कहैत महन्थ जी झटकल ओहि दिस विदा भेलाह।

हम मनेजरक मुँह ताकय लगलहुँ। ओ कहलन्हि—औ जी ! एहि ठाम अहाँक कार्य सिद्ध नहि हैत।

हम—से किएक ? महन्थ जी त बहुत प्रेमी लोक छथि।

मनेजर—हँ, से त छथिए। परन्तु सभदीक प्रश्न ऐहा उत्तर ओ मनेजर पर भारि दैत छथिन्ह। एही खातिर त हम राखल गेल छी।

हम—तखन त हमर काज बनिए गेल। रसीद-बही बहार करू ?

मनेजर—औ महाराज ! से जौं करब त काल्हिए दोसर मनेजर हमरा जगह पर आबि जैताह। यदि अहाँ चाही जे हमर दाना-पानी एहि ठाम किछु दिन और रहि जाय त अपन रसीद-बही समेटि लियऽ।

हम—परन्तु महन्थ जी त अहीं कैं अधिकार देने छथि।

मनेजर—ओ हुनकर संकेत छैन्ह। अपने रोची व्यक्ति छथि। ककरो साफ भऽ कऽ नहि कहैत छथिन्ह। तैं हमरे दुर्जन बनाबक हेतु रखने छथि। करबाक त सभ अपने करैं छथि। हम केवल शिखण्डी मात्र छिऐन्हि।

हम—आब महन्थ जी कतेक कालमे औताह ?

मनेजर—आब आइ हुनका सँ भेट नहि हैत। ओ बालभोग पाबि सोझे शयनमे चल जैताह। काल्हि जौं अहाँ फेर पहुँचबैन्ह त हमरा एकान्तमे बजा कऽ फरमाति करताह। अतएव जौं हमरा ऊपर दया हो त आब दोबारा चन्दाक हेतु जुनि आबी।

ओहू ठामसँ निराश भऽ फिरलहुँ। बाटमे भेटल मिसरजीक औषधालय।

मिसरजी बेस चटपटिया ओ व्यावहारिक लोक छथि। फालतू गप्प एकोटा नहि करताह। रोगी सभक मेला लागल रहैन्ह। हम कहलिऐन्हि—मिसर जी ! नमस्कार।

मिसरजी कानसँ ऊँच सुनैत छथि। कहलन्हि—नगद लेबऽ एलहुँ अछि कि उधार ?

हम कहलिऐन्हि—पहिने रोगी सभ कैं दवाइ दऽ दिऔक तखन गप्प करब।

जखन रोगी सभ छाँटि गेलैन्ह तऽ हमरा दिस ताकि पुछलन्हि—अहाँ कैं की चाही ?

हम कहय लगलिऐन्हि—एकटा मासिक···

मिसरजी चटपट पुछलन्हि—कोन रंगक ?

हम—बड़ बढ़ियाँ। ऊपर मे लाल रंग···

मिसरजी—मोट की पातर ?

हम—एहन पातरे'''

मिसरजी—प्रवाह केहन ?

हम—बेस बढ़िया। धारावाहिक रूप सँ'''

मिसरजी—नियमित कि अनियमित ?

हम—ई प्रथमे छैक।

मिसरजी—बेश, त कोनो चिन्ता नहि। अहाँ बैसू।

थोड़ेक कालमे मिसरजी भीतरसँ एक पुड़िया नेने बहराइलाह और बजलाह—ई लिअ रजःप्रवर्तनी वटी। एहिसँ नियमित भऽ जैतैन्ह। मूल्य सवा टाका।

हे भगवान ! ई त और बौला लागल। हम जोरसँ चिचिया चिचिया कऽ बहुत कठिनतापूर्वक हुनका बुझाओल। बात बुझैत देरी ओ चटपट पत्र कें हाथ पर लऽ चक्रमयारय लगलाह जेना कोनो जौहरी मानीक यार उठा कऽ अंदाज कऽ रहल हो।

हम पुछलिऐन्ह—की ठेकनेबैत छिऐक ?

ओ बजलाह—पावभरिसँ बेशी नहि हैत।

हम अवाक भऽ हुनक मुँह ताकय लगलहुँ।

मिसरजी बजलाह—हमरा रद्दी कागतक काज पड़ैत अछि—पुड़िया बनाबक हेतु। थौ छौ आने सेर दी त लऽ सकैत छी। एकरा बदलामे हम डेढ़ आनाक पाचक दऽ देब।

ई कहि वैद्यजी पत्र नेने भीतर चल गेलाह। हम मुँहे तकैत रहि गेलहुँ।

ओ सम्पादकजी ! एहि तरहेँ अहाँक काजे सात घाटक पानि पीबय पड़ल। ग्राहक की बनत जे अपनो प्रति गमौलहुँ। कुशल एतबे भेल जे मिसरजीक स्थानमे मिसराइन जी नहि छलीह। नहि त 'मासिक'क चर्चा होइत देरी दोसरे रंग लागि जाइत !

आब हम कान ऐंठैत छी जे फेर एहन काजमे नहि पड़ब। अहाँ कें ग्राहक-संख्या बढ़ाबक हो त अपन दोसर एजेंट बहाल करू। हम कमीशनसँ बाज ऐलहुँ। विशेष नमस्कार। इति शुभम्।

अपनेक —

लद्दूनाथ झा

□

पाँच पत्र

[ई कथा 'मिथिला दर्शन' (मइ '५६)मे सर्वप्रथम छपल आ तकरा बाद 'चर्चरी' ('६०)मे संगृहीत भेल। हिन्दी ('धर्मयुग' १२ मार्च '६०) तथा अंग्रेजीमे सेहो एकर अनुवाद भेल।

पाँच टा छोट-छोट पत्रक शिल्पमे चालिस वर्षक एक टा सम्पूर्ण जीवन जाहि तरहेँ एहि कथामे समेटि लेल गेल अछि, से विलक्षण लेखकीय सामर्थ्यक परिचायक अछि। दाम्पत्य जीवनक आरम्भिक रस कोना समयक प्रभावसँ क्रमशः पातर होइत अन्ततः शुष्कतामे परिवर्तित भऽ जाइछ तथा जीवनक विभिन्न पड़ावपर यथार्थसँ संघर्ष करैत लोकक सम्बन्ध कोना स्वाभाविक रूपेँ शनैःशनैः ऊष्मा-विहीन भऽ सेरा जाइछ, एहि शाश्वत सत्यकेँ कथा बड़ प्रभावकारी आ पाँच टा छोट-छोट पत्रक माध्यमे बड़ कलात्मक ढंगसँ प्रस्तुत करैत अछि। कथ्य आ शिल्प दुहू दृष्टिएँ ई कथा मैथिलीक श्रेष्ठतम कथामेसँ अछि। कथा अन्तमे जे समग्र प्रभाव दैत छैक से एकटा विलक्षण करुण अवसादक होइत छैक जे पाठकक सोचकेँ आगाँ धरि खीचि लऽ जाइत छैक।]

(१)

दड़िभंगा
१-१-१९

प्रियतमे,

अहाँक लिखल चारि पाँती चारि सँ बेर पढ़लहुँ। तथापि तृप्ति नहि भेल। आचार्यक परीक्षा समीप अछि। किन्तु ग्रन्थमे कनेको चित्त नहि लगैत अछि। सदिखन अहीँक मोहिनी मूर्त्ति आँखिमे नचैत रहैत अछि।

राधा रानी! मन होइ अछि जे अहाँक ग्राम वृन्दावन बनि जाइत आ हिंमे केवल अहाँ आ हम राधा-कृष्ण जकाँ अनन्त काल धरि विहार करैत रहितहुँ।

परन्तु हमरा जे अहाँक बीचमे बाधी भयल छथि अहाँक बाप-पित्ती जे दू मास बाद फागुनामे हमरा आबक हेतु लिखै छथि। ६० वर्ष बूढ़ केँ की बुझि पड़तैन्ह जे ६० दिनक विरह केहन होइ छैक।

प्राणेश्वरी, अहाँ एक बात करू। माघी अमावस्यामे सूर्यग्रहण लगै छैक। ताहिमे अपना माइक संग सिमरिया घाट आउ। हम ओहिठाम पहुँचि अहाँकेँ ओहि लेब। हँ, एक टा गुप्त बात लिखै छी। जखन स्त्रीगण ग्रहण-स्नान करय चलि जैतीह, तखन अहाँ कोनो बाथ कऽ कऽ वासा पर रहि जाएब। हमर एकटा संगी फोटो खींचय जनै अछि। तकरा सँ अहाँक फोटो खिचबाएब। देखब, ई बात केओ बूझय नहि। नहि त अहाँक बाप-पित्ती जेहन छथि से जनले अछि।

हृदयेश्वरी, हम अहाँक फरमाइशी वस्तु (चन्द्रहार) कीनि कऽ रखने छी। सिमरियामे भेंट भेला पर चुपचाप दय देब। मुदा केओ जानय नहि। हमरा बापकेँ पता लगतैन्ह त खर्च बन्द कऽ देताह। हँ, एहि पत्रक जबाब फिरती डाक सँ देब। टिकट लिफाफक भीतर लिफाफ पठा रहल छी। पत्रोत्तर पठैबामे एको दिनक विलम्ब नहि करब। हमरा एक-एक क्षण पहाड़ सन बीति रहल अछि। अहाँक प्रतीक्षामे आतुर।

—अहाँक कृष्ण।

पुनश्च—चिट्ठी ककरो केँ छोड़क हेतु नहि देबैक। अपने हाथसँ लगाएब। चतिगरे ओबरमे नुकौने आएब और जखन केओ नहि रहैक त लेटरबक्समे खसा देबैक।

(१)

हलुआ संस्कृत विद्यालय
१-१-२६

प्रिये,

बहुत दिन पर अहाँक पत्र पाबि आनन्द भेल। अहाँ लिखै छी जे कनकिरबी आब तुसारी पूजत। से हम एकटा चाठहत्थी नूआ शीघ्र पठा देबैक। बंगट आब स्कूल जाइ अछि कि नहि? बदमाशी त नहि करैत अछि? अहाँ लिखै छी जे छोटकी बच्चीकेँ दाँत उठि रहल छैक से ओकरा दवाइ वैद्यजीसँ मँगवा कऽ दऽ देबैक। अहूँकेँ एहि बेर घाम पर बहुत दुर्बल देखलहुँ। जीरकादि पाक बना कऽ सेवन करू। पाइकाबाले देह नहि जुटत त दिन दिन और दुस्त भेल जाएब। ओहिठाम दूध उठौना करू। कमसँ कम पाव भरि नित्य पिउल करब।

हम किछु दिनक हेतु अहाँकेँ एहिठाम मँगा लितहुँ। परन्तु एहिठाम डेराक बड्ड असौकर्य। दोसर जे विद्यालयसँ कुल मिला साठि टाका मात्र भेटैत अछि। ताहिमे एहिठाम पाँच गोटाक निर्वाह हैब कठिन। तेसर ई जे फेर खूजी लग के रहतीह। ईह सभ विचारि कऽ रहि जाइ छी नहि त अहाँके एतय रहने हमरो नीक होइत। दुनू साँझ समय पर सिद्ध भोजन भेटैत। बंगटोकेँ पढ़बाक सुभीता होइतैक। छोटकीकनकिरबीसँ मन बहटैत। परन्तु कैल की जाय?

बड़की ननकिरबी किछु और छँटगर भऽ जाय त ओकरा बूढ़ीक परिचर्या मे राखि किछु दिनक हेतु अहाँ एतय आबि सकैत छी। परन्तु एखन त घर छोड़ब अहाँक हेतु सम्भव नहि। हम फगुआक छुट्टीमे गाम ऐबाक यत्न करब। यदि नहि आबि सकब त मनीआर्डर द्वारा रुपैया पठा देब।

—अहाँक देवकृष्ण

(२)

हलुआ संस्कृत विद्यालय
१-१-२९

शुभाशीर्वाद।

अहाँक चिट्ठी पाबि हम अथाह चिन्तामे पड़ि गेलहुँ। एहि बेर धान नहि भेल। तखन सालभरि कोना चलत? मासक श्राद्धमे पाँच सँ कर्ज भेल। तकर सूदि दिन दिन बढ़ले जा रहल अछि। दू मासमे बंगटक इम्तिहान हेतैन्ह। करीब पचासो टाका फीस लगतैन्ह। जौँ कदाचित् पास कऽ गेलाह त पुस्तकोमे पचास टाका लागिए जैतैन्ह। हम ताही चिन्तामे पड़ल छी। एहिठाम एक मासक अगाउ दरमाहा लऽ नेने छिऐक। तथापि ऊपरसँ नब्बे टाका एतय हमरे पर भऽ गेल अछि। एहना हालतिमे हम ६२ मालगुजारी हेतु कहाँ सँ पठाउ? जौँ भऽ सकय त तमाकू बेचि कय पछिला बकाया चुकता कऽ देबैक। भोलबा जे खेत बटाई कैने अछि ताहिमे एहि बेर केहन रब्बी छैक? कोठीमे एको धान योग्य चाउर नहि अछि। ताहि पर लिखै छी जे ननकिरबी सासुर सँ दू मासक खातिर आबय चाहैत अछि। ई जानि हम किंकर्तव्यविमूढ़ भऽ गेल छी। ओ चिल्हकाउर अछि। छूटा भैना छैक। सभकेँ देख अहाँके कुी पार लागत? आब छोटकी बच्ची सेहो १० वर्षक भेल। ई कन्यादानक चिन्ता अछि। भरि-भरि राति यैह सभ सोचैत रहै छी। परन्तु अपन साध्ये की? देखा चाही भगवान कोन तरहेँ पार लगबै छथि।

शुभाभिलाषी
देवकृष्ण

पुनश्च—आरम निघटि गेल अछि त उत्तरवरिषः हस्ताक्षे सीसो पँगया लेब। हम किछु दिनक हेतु गाम अबितहुँ। किन्तु जखन नहिखिए बिसुकि गेल अछि तखन आबि कऽ की करब ?

(४)

हमुआ संस्कृत विद्यालय
१-१-४६

आशीर्वाद।

हम दू मास सँ बड्ड जोर दुःखित छलहुँ। तेँ चिट्ठी नहि दय सकलहुँ। अहाँ लिखैं छी जे बंगट बहु कें लऽकऽ कलकत्ता गेलाह। से आइ काल्हिक बेटा-पुतोहु जेहन नालायक होइ छैक से त जानले अछि। हम हुनका खातिर की की नै कैल! कोन तरहेँ बी० ए० पास करौलिऐन्ह् से हमहीँ जनैत छी। तकर आब प्रतिफल दऽ रहल छथि। हम त ओहि दिनं हुनक आस छोड़ल जहिया ओ हमरा जिबिते मोछ छटाबय लगलाह्। साधुक कहबमे पड़ि गौरलगौक दबैया हमरा लोकनिकें देखय नहि देलन्हि। जौँ जनितहुँ जे कनियाँ अबितहि एना करतीह त हम कथमपि बकिल भर बिवाह नहि करबितिऐन्ह। १५००) गना कऽ हम पाय कैल तकर फल भोगि रहल छी। ओहिमे सँ आब पन्द्रहोटा कैंचा नहि रहल। तथापि बेटा बुझी छथि जे बाबूजी तनयैत नाइनहि छथि। ओ आब किछु टा नहि देताह। और ने पुतोहु बहुँक कहबमे रहतीह। हुनका उचित छलैन्ह् जे बड़ीक मग रहि मानस-बात करितथि, सेवा-शुश्रूषा करितथि। परंच ओ अहाँक इच्छाक विरुद्ध बंगटक संग लागलि कलकत्ता गेलीह।

ओहिठाम बंगट के १५० मे अपने खर्च चलन मुश्किल छैन्ह। कनियाँकें कहाँसँ खोआबथिन्ह ? जे हमरा लोकनि २० वर्षमे नहि कैल से ई लोकनि द्विरागमनसँ ३ मासक भीतर कऽ देखौलन्हि। अस्तु। की करब ? एखन गदह-पचीसी छैन्ह। जखन लोक हेताह तखन अपने सभटा सुझतैन्ह। भगवान सुमति देथुन्ह। विशेष की लिखू ? कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।

—देवकृष्ण

पुनश्च—जौँ बर्षक तकलीफ हो त छौ कट्ठा बीह जे अहाँक नाम पर अछि से भरना धऽ कऽ काज चलायब। अहाँक हार जे बन्धक पड़ल अछि से अहिना भगवानक कृपा हैतैन्ह् तहिया छुटबे करत।

(५)

काशीतः
१-१-४९

स्वस्ति श्री बंगट बाबू कें हमर शुभाशिषः सन्तु। अत्र कुशलं तत्रास्तु। आगा सुरति जे एहि जाड़मे हमर दम्मा पुनः उखरि गेल अछि। राति-राति भरि बैसि कऽ ढकासैं करै छी। आब काशी विश्वनाथ कहिया उठबै छथि से नहि जानि। संग्रहणी सेहो नहि छूटैत अछि। आब हमरा लोकनिक दवाइए की ? औषधं जाह्नवी तोयं वैद्यो नारायणो हरिः। एहिठाम सत्यदेव हमर बड्ड सेवा करै छथि। अहाँक मायकें बातरस धैने छैन्हि से जानि कऽ दुःख भेल। परन्तु आब उपाये की ? वृद्धावस्थाक कष्ट त भोगनहि कुशल। बूढ़ीकें चलिनेफरि होइ छैन्हि कि नहि। हम आबि कऽ देखितिऐन्ह्, परंच ऐना-जैबामे तीस चालिस टाका व्यर्थ खर्च भऽ जायत। दोसर जे आब हमरो यात्रामे परम क्लेश होइत अछि। अहाँ लिखैं छी जे ओहो काशीवास करय चाहै छथि। परन्तु एहिठाम बूढ़ीकें बड्ड तकलीफ हैतैन्ह। अपन परिचर्या करय योग्य त छथिए नहि, हमर सेवा की करतीह ? दोसर जे जखन अहाँ लोकनि सन सुयोग्य बेटा-पुतहु छथिन्ह तखन घर छोड़ि एतय की करय औतीह ? मन चंगा त कठौती मे गंगा! ओहिठाम पोता-पोती कें देखैत रहै छथि। चि० पौत्र हमरो देखबाक हेतु हमरो मन लागल रहै अछि। परंच साध्य की ? उपनयन धरि जिबैत रहब त आबि कऽ आशीर्वाद देबैन्ह। अहाँक पठाओल ३०) पहुँचल। एहि सँ पथ्य प्राय कीनि कऽ खा रहल छी। भगवान अहाँ कें निकेँ राखथु।

चि० पुतहुकें हमर शुभाशीर्वाद कहि देबैन्ह। ओ गृहलक्ष्मी थिकीह। अहाँकें माय जे हुनकासँ झगड़ा करै छथिन्ह से परम अनर्गल करै छथि। परन्तु अहाँकें त बूढ़ीक स्वभाव जानले अछि। ओ भरि जन्म हमरा दुःखे दैत रहलीह। अस्तु! कुमाता जायेत क्वचिदपि कुपुत्रो न भवति, एहि उक्ति कें अहाँ चरितार्थ करब।

—इति देवकृष्णस्य

पुनश्च—यदि कोनो दिन बूढ़ि कें किछु भऽ जाइन्ह त अहाँ लोकनिक बदौलति सद्गति हैबे करतैन्ह। जाहि दिन सौभाग्य होइन्ह ताहि दिन एक काठी हमरो दिसर्सँ धऽ देबैन्ह।

—इति देवकृष्ण स्य

कन्याक जीवन

[ई कथा 'रंगशाला' ('७६) में संगृहीत अछि।

मैथिल नारीक सम्पूर्ण कथा-व्यथाकेँ जाहि समग्र रूपमेँ एहि छोट कथामे समेटि लेल गेल अछि, से विलक्षण लेखकीय सामर्थ्यक नीक उदाहरण अछि। कथाक कारुण्य पाठकक मर्मकेँ भीतर धरि छूबि ओकर सोचकेँ जाग्रत कऽ दैत छैक। माटि-पानिक सोन्हगर गंध कथाक अतिरिक्त विशेषता थिक। कथाक करुण संवेदना एवं अत्यधिक तीव्र प्रभाव छोड़बामे समर्थ भेल छैक, तँ एहिमे कथाक शिल्पक महत्त्वपूर्ण भूमिका छैक। मात्र दू टा चित्र—एक टा बाल्यावस्थाक आ एक टा १४ वर्षक बाबक—माध्यमेँ तितिर दाइक सम्पूर्ण जीवने नहि, हुनक सम्पूर्ण व्यथो आकार भऽ उठल अछि। आ तितिर दाइ कोनो एकटा व्यक्ति नहि, कोनो 'टाइप' नहि, सम्पूर्ण तत्कालीन मैथिल नारीक प्रतिनिधित्व करैत छथि। कथ्य, शिल्प, परिवेश, वातावरण—सभ दृष्टिएँ ई कथा मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ कथामेसँ अछि।]

—हे औ पाहुन ! देखू, फेर हमरा बस पड़ल। आब अहाँक गोटी कटा गेल।

—ए तितिर दाई। झगड़ा नहि करू। अहाँकेँ दू खुदरा पड़ल अछि।

—नहि ? दस पड़ल अछि। एकटा कौड़ी चित्त छैक से नहि सुझै अछि ?

—नहि ! दू टा कौड़ी चित्त छल। अहाँ कखनासँ घुसका देलिऐक ताहिसँ एकटा पट भऽ गेल। एना बेइमानी नहि करू।

—बेइमानी त अहाँ करैत छी। हारय लगै छी एहिना कटा करऽ लगै छी। जाउ, आब अहाँ सँ नहि खेलाएब।

ई पचीसीक झगड़ा चलिते छल कि 'धप्प द' गाछोमे एकटा आब सिनुरिया आम खसलैक। तितिर दाइ दौड़लीह। और हमहुँ त आखिर दस वर्षक रही, आम लूटय लेल नहि दौड़ितहुँ त फेर बाल्यावस्था कहौबितैक की ? फल ई भेल जे हम गाछे लग दुनू गोटे एके बेर ओहि आम लग जा कऽ थपलहुँ। तितिर

ओहि आम केँ कबकबा कऽ मुट्ठी में थैने ! और हम तितिरक मुट्ठी केँ अपना मुट्ठी में कसने छोड़य लेल तैयार नहि।

तितिर बजलीह—हे औ पाहुन ! ई आम हम पौलहुँ अछि। अहाँ हमर मुट्ठी छोड़ि दिअऽ, नहि त आब हम दाँते काटब से कहि दैत छी।

हम जा जबाब दिऐन्ह ता तितिरदाइ तरेक ओर सँ दाँत काटि देलन्हि जे हम चिकिया उठलहुँ और सब कऽ हाथ छोड़ि देलिऐन्ह। तितिर दाइ ओ आम लय पड़लीह।

हम अप्रतिभ भऽ गेलहुँ। तितर दाइ मचान पर बैसलि दाँत सँ कुतरि-कुतरि आम खाय लगलीह। हमरा उदास देखि बजलीह—की औ पाहुन ! अहूँ खायब ? एहि दिस निरैठ छैक। अहाँ खा लिअऽ !

हम कहलिऐन्ह—बेस, रहऽ दिअऽ। हमर जनउ भऽ गेल अछि।

ओ बजलीह—अहाँ पाहुन छी। हमरा अहाँ सँ छीनि कऽ नहि लैबाक चाही छल। ई अनुचित भेल। आओ अहाँ खा लिअऽ। खूब मीठ छैक।

हम कहलिऐन्ह—हमही दौड़लहुँ से अनुचित भेल ई कि हमर गाछी थिक ?

ओ लज्जित होइत बजलीह—ई अहाँ की कहै छी ? बहिन-बहनोयक प्रश्न की अनकर होइ छैक ? भौजी सुनतीह त हमरा कतेक कज्जति करतीह ? अहाँ के हमरे सप्पत अछि, ई आम लऽ लिअऽ।

तावत् हमर नजरि हुनक पहुँची पर पड़ल। कहलिऐन्ह—ऐँ ! ई शोणित कोना बहैत अछि ?

ओ बजलीह—बाह रे पुछनाइ ! अपने चूड़ियो फोड़ि देलन्हि अछि और पुछैत छथि कोना शुभशाश्र भऽ कऽ ?

हम सिहरि उठलहुँ। कहलिऐन्ह—देखू, बहिन केँ नहि कहबैन्ह।

ओ ठकमाली सँ बजलीह—बाह ! कहबैन्ह ने त की ? चैयो केँ देखा देबैन्ह !

हम भय सँ अवाक् रहि गेलहुँ। नेहोरा करैत कहलिऐन्ह—तितिर दाइ, अहाँ केँ हमरे सप्पत अछि जौं बहिन वा ओझाजी केँ कहबैन्ह त हम बाइए अपना गाम चलि आएब।

ओ बजलीह—तखन ई आम खा लिअऽ।

अगत्या विवश भऽ कऽ हमरा स्वीकार करब पड़ल। परन्तु अहिना एक चोभा लगबैत छी कि तितिरदाइ थपड़ी पारैत खिलखिला उठलीह—जाउ, अहाँ केँ भका देलहुँ, हम कथा केँ कहि-देबैक जे अहाँ जहूर ऐंठ खैलहुँ अछि।

ई कहैत तिरिर दाइ आमक अलखरी हाथमे उठौलन्हि और घर दिस विदा भऽ गेलीह। हमहुँ हुनकर पाछाँ लगलहुँ।

आङ्गनमे अएलहुँ त देखै छी जे दीदी ठाँव-बाट कैने बैसलि छथि। बजलीह—आइ कतेक देरी भऽ गेलीह! एखन धरि पानिओ ने पिउने छह।

हम पैर धो कऽ पीढ़ी पर बैसि गेलहुँ। पहिनहिसँ चूड़ा थारीमे भिजौने छलीह। तिरिर ओहीठाम पहुँचि गेलीह।

हमरा देखि बजलीह—की औ पाहुन! ओ बात हम भौजीसँ कहि दिऔन्ह?

हम अनुरोधपूर्वक कहलिऐन्ह—अहाँ कहबैन्ह त हमहुँ कहि देबैन्ह। देखू, अहाँ जे दाँत काटि लेलहुँ से एखन धरि चकमका रहल अछि।

ई कहि हम हुनका अपन हाथ देखाबय लगलिऐन्ह। ओहि पर चारिटा दाँतक चिह्न ओहिना अंकित रहय। तावत् बहिन एक बाटी आमक रस लेने पहुँचि गेलीह।

हमर हाथ देखि बजलीह—ऐं! ई की भेलीह अछि!

तिरिर दाइ ओहिठामसँ पड़ैलीह और जा कऽ अमोट पारय लगलीह। बहिन कें नहि जानि कोना बुझा गेलैन्ह। ननदि कें उठैत बजलीह—जाउ, अहाँकें एको रत्ती ज्ञान नहि भेल अछि। विवाहक वयस भऽ गेल और हमरा भायसँ एकपिठिया जकाँ करैत छी। कालिह्सँ अहाँक संग गाछी नहि जाय देबैक।

एकरा बादक गप्प ठीक जकाँ स्मरण नहि अछि। हँ, एतबा मन अछि जे जाहि दिन हम गाम जाय लगलहुँ तहिया गाछीक कोनमे तिरिर दाइ ठाढ़ रहथि। हमरा सड़कक बाट धरैत देखि ओ बाजि उठलीह—हे औ पाहुन! कनेक सुनैत जाउ।

हम लगमे गेलिऐन्ह त ओ बजलीह—हमरा सँ कतेक अपराध भ गेल हैत से कहल-सुनल माफ करब।

ई कहि ओ हमरा हाथमे एकटा सिनुरिआ आम धऽ देलन्हि।

हम कहलिऐन्ह—दीदी बहुत रासे आम हमरा संग कऽ देने छथि। देखैत छिऐक नहि ओ खबासक माथ पर चङेरा!

परन्तु ओ बजलीह—अहाँ नहि लेब तऽ हमरा मनमे बड़ दुःख हैत।

ई कहि ओ अपन आँचरसँ अपन आँखि पोछय लगलीह। हम ओ आम जेबीमे धऽ लेल।

१४ वर्ष बाद। एहि बीचमे हम एम० ए० कऽ गेलहुँ। [illegible] भऽ गेलहुँ। ठाम-ठाम सँ विवाहक प्रस्ताव आबय लागल। परन्तु हम एके जबाब दिऐक—पहिने जीवन में प्रवेश कऽ लायब अर्थात् जीविका स्थिर भ जायत तखन।

एहि बीचमे ओझाजीक पत्र आयल—अहाँक बहिन दुःखिता छथि। आबि कऽ देखि जैयौन्ह।

हम ओतय पहुँचलहुँ त देखैत छी—ने ओ नगरी ने ओ ठाम! एहि चौदह वर्षमे जेना सभ किछु परिवर्तन भऽ गेल होइक। जे विशाल हवेली हमर देखल रहय तकरा स्थानमें पुरान पोखरिक भीड़ पर एकटा छोट-छीन टाटक मड़ैया देखय में आएल जे पूर्वक उपहास करैत छल। जहाँ सात-सात टा अखारी रहैत छल तहाँ केवल एकमात्र टूटल भुसखाड़ टा ठाढ़ छल। ओझा जी परम विकट हालत में छथि ई बुझबामे आउठ नहि रहल।

आङन पहुँचलहुँ त बहिन अनुरोध करैत बजलीह—एऽ! एक युग पर तोरा मन पड़लौह। हमरा लोकनि कें एकदममे बिसरि गेलाह!

तदुपरान्त ओ अपना दुःखक महाभारत पसारलन्हि। कौशिकीक बाढ़ि सँ एहि दशा में प्राप्त भऽ गेल छथि। साले-साल अन्न बहा आइत छैन्ह। खेत बेचि कऽ बैसाह चलैत छैन्हि। सासु मरि गेलथिन्ह। हुनका काजमे कर्ज भऽ गेलैन्ह। महाजन ऋण दिन-दिन बढ़ल जाइ छैन्ह। कलमबागो भरना पड़ल छैन्ह। देयादिनी भिन्न भऽ गेलथिन्ह। रातिदिन पट्टीदारी चलैत रहैत छैन्हि। ओझाजी कें तेहन गठिया धैने छैन्ह जे आब अकार्यक भऽ गेलाह। बहिन अपने सुखि कऽ काँट भऽ गेलीह अछि।

हुनक विवर्ण मुँह देखि मन कानि उठल। कहय लगलीह—हमरा छौ मास सँ पेट में पिलही अछि; केओ देखनिहार नहि। आब बेसी दिन नहि बचबौह। माय सँ भेंट करा देह, ताहि खातिर बजौलिऔह अछि।

हमरा आँखिसँ टपटप नोर खसय लागल। ओ हमर आँखि पोछैत बजलीह—दुर बताह! कनै छह किऐक? दुर जो! हमहुँ कहल छी जे तोरा अबितहि अपन रामायण सुनाबय लागि गेलिऔह। एकर की कोनो अन्त छैक! चलह पैर धोअह।

बहिन हमरा हाथ पकड़ि कऽ पीढ़ी पर लऽ गेलीह। हम संदेशमें जे पेड़ा लऽ गेल रहिऐन्ह ताहिमे सँ चारि टा हमरा आगाँ में राखि देलन्हि। ओहिना कोना रहलथि? तैं पानिल सँ धोइ कऽ मारऽ बहार कैलन्हि।

तावत् एकटा नेना जे पोखरि में बसी बैलाइत रहैक से दू चारि टा गरइ माछ लऽ पहुँचि गेलीह। बहिन उल्लसित भय बजलीह—बौआ! तोरा भाग्यक बड़

सीख रहै छोह। नहुँ-नहुँ बा। दु टा पका कऽ खाना कऽ दैत छिलीह। हे गे बड़ट, बाड़ीसँ हरियर मरिचाइ तोड़ि ला।

तावत् एकटा मलिन-वस्त्रा प्रौढ़ सेहो पोखरिसँ स्नान कैने पहुँचलीह। गर मे तुलसीक माला, हाथमे अँजुरुजल, गंगास्तव पाठ करैत। वैधव्यक साकार मूर्ति छली। हम बहिन कैं पुछलिऐन्ह—हिनका नहि चिन्हलिऐन्ह ?

ओ माछ पकड़ैत बजलीह—चिन्हबहुन्ह कोना ? एहिठाम अबैत रहितह तखन ने ! ई हमर परिहारपुर वाली ननदि थिकीह।

ओ हमरा देखि किछु लजैलीह। बहिन कहलथिन्ह—ई हमर भाय थिकाह। नहि कोनो हर्ज।

विधवा हाथक लोटा तुलसीचौरा पर रखैत बजलीह—धन्य भाग ! एतबा दिन पर बहिन मोन पड़लनि। कोन दिन हिनकर चर्चा नहि होइत छलैन्ह ?

हम देखल जे उनका वस्त्रमे ठामठाम पैबन्द लागल छैन्ह जाहि कारणें समस्त ऐंठामे संकोच भऽ रहल छैन्ह। ओ तीतल नूआ नेने सोहो पछुआड़मे चलि गेलीह और प्रायः ओहिठाम बैसि नूआ सुखाबय लगलीह। हम बहिन कैं पुछलिऐन्ह—ईहो तोरे संग रहैत छथुन्ह ?

ओ खानामे मरिचाइ गुड़ैत बजलीह—की कहै छह ? विपत्ति पर विपत्ति ! हिनका सासुरमे झिझोर कऽ दुःख दैत छैन्ह। ओ मास सँ एतहि छथि।

हम पुछलिऐन्ह—हिनका धिया-पुता ?

ओ बजलीह—एकटा बेटा छथिन्ह और तीन टा कन्या। एक कन्या सासुर बसै छथिन्ह। दु टा कुमारिए छथिन्ह। ओ ई चतुर्दशी थिकैक। ई महादेव पुजै छथि। तैं दुनू बहिन पोखरिसँ माटि लाबए गेलि छैन्ह।

हम पुछलिऐन्ह—हिनका स्वामी कैं की भेलैन्ह ?

ओ बजलीह—विधाता दुरन्त कऽ देलथिन्ह। पूर्णिया जिलामे नौकरी करैत रहथिन्ह। ओहीठाम मलेरिया धऽ लेलकैन्ह। आब हिनका दु दु टा बेटीक कन्यादानक करबाक आठ-दिन चिन्तामे डूबलि रहै छथि।

तावत् दु टा बालिका ओठँगलै माटि नेने पहुँचि गेलथिन्ह। बहिन बजलीह—ईह स्वरवा और पार्वती आबि गेलि। हे गे ! पाहुन ऐलथुन्ह अछि। तरकारी बनतैक। गै स्वामा ! चार पर कदीमाक फूल छैक है ओ चारिटा तोड़ि दै। और हे गै पार्वती ! तों झट दऽ बाड़ीसँ पटुआक साग तोड़ने आ !

बाहि बालिका कैं देखि हमरा मनमे हठात् तितिरक रूप नाचि उठल। हम

बहिन कैं पुछलिऐन्ह—दीदी ! हम बिरागमनमे तोरा संग आएल रहियौक त एकटा एहने छौंड़ी रहैक। प्रायः तित्तिर नाम रहैक। ओकर कतय विवाह भेलैक ?

बहिनक ठोर पर हँसी आबि गेलैन्ह। बजलीह— आब तों ओकरा देखबहीक त चिन्हबहीक ?

हम कहलिऐन्ह—जरूर चिन्हबैक। ओ चलय काल एकटा आम हमरा देने रहय से ओहिना मोने अछि।

तावत् परिहारपुरवाली सेहो नूआ बदलि कऽ ऐलीह और माटिक महादेव बनाबय लगलीह। हमरा बूझि पड़ल जेना हुनका शरीरक समटा शोणित पानि बनि कऽ आँखिक मार्ग सँ खसि पड़ल होइन्ह। केवल अस्थि ओ चर्म टा शेष रहि गेल छैन्ह।

हम जलखइ करी से घोंटल नहि जाय। बहिन पंखा होँकैत-होकैँत पुछि बैसलीह—बौआ, तों विवाह किऐक नहि करैत छह ?

हम कहलिऐन्ह...मन लायक कन्या भेटय तखन ने ?

बहिन हँसैत पुछलन्हि—केहन कन्या चाहैत छह ?

हम कहलिऐन्ह—ओही तितिर सन। जौं ओकर विवाह नहि भेल होइक''''

बहिन बजलीह—धुर बताह ! तों एके रंग सब दिन रहि गेलाह। वैह तितिर बाइ तोरा सोझामे बैसल छथुन्ह से नहि चिन्हैत छहुन ?

ई सुनैत परिहारपुरवाली लज्जा कऽ मुँह झाँपि लेलन्हि। और हमरा त आश्चर्यक कोनो सीमा नहि रहल। एतबे दिनमे ई अन्तर ! कहाँ ओ अज्ञातयौवना ! कहाँ ई अकालवृद्धा ! कहाँ ओ स्वच्छन्द चहकयवाली तितिर ! कहाँ ई बंगटक गाय !

हम अविश्वासक स्वरमे बहिनकेँ पुछलिऐन्ह- एँ ! वैह तितिर दाइ थिकीह ? हम ई एक संग खेलाएल छी। हम एखन जीवन मे प्रवेशो नहि कैलहुँ और हिनकर सभटा समाप्त भऽ गेलैन्ह !

एहि बेर पूर्व परिचित स्वरक किछु किछु आभास सुनाइ पड़ल'''हे औ पाहुन ! अहाँ अपना सँ हमरा किऐक मिलान करैत छी ? अहाँ पुरुष छी। और हमरा लोकनि जखने कन्या भऽ कऽ जन्म लैत छी तखने सभ किछु अवधारि लैत छी। ओहि समय नेनामे ज्ञान नहि रहय तैं अहाँ सँ बराबरी करैत रही। हमरा सँ जे अपराध भेल हो से बिसरि जायब।''' एँ ! अहाँ पुरुष भऽ कऽ कनैत छी ? दुर ! तखन हमरा लोकनि कोना धैर्य धारण करब ? जौं हम सभ अपन नोर बहाबय लागी त गामक गाम दहा जाय !

□

रेलक अनुभव

[ई कथा सर्वप्रथम 'गल्पाञ्जलि' (सं० श्री कृष्णकान्त मिश्र-'४८) मे छपल आ तकरा बाद 'रंगशाला' मे संगृहीत भेल।

मोहभंगक संग रचनात्मकताक सशक्त समन्वयक एकटा नीक उदाहरणक रूपमे ई कथा लेल जा सकैत अछि। कथा अन्तमे जे प्रश्न ठाढ़ करैत छैक, से पाठकक मनकें बहुत काल धरि उद्वेलित करैत छैक। प्रश्नक उत्तर यद्यपि कथेमे देल गेल छैक, परन्तु स्थितिक करुण अवसादपूर्ण विडम्बना प्रश्न आ उत्तर दुनूकें पार कऽ मोने पाठकक मर्ममे प्रवेश कऽ जाइत छैक आ ओकरामे एकटा संकल्प-बल जगबैत छैक। ई उद्बोधनात्मक प्रभाव कथाक एकटा अतिरिक्त विशिष्टता बनि जाइत छैक। प्रभावक अन्विति जे एतेक तीव्र भऽ पबैत छैक, तें ताहिमे शिल्पक महत्त्वपूर्ण योगदान छैक। दूटा परस्पर प्रतिलोमी दृश्य-खण्ड समानान्तर राखि कथ्यकें सहजहिं धार दऽ देल गेल छैक। तहिना चटर्जी परिवारक आगमनसँ पूर्व आ बाद बंगाली बाबूक दूटा परस्पर विरोधी रूप सजातीय प्रेम आ अपनत्वक मूल्यकें अधिक गहराइ दैत छैक, संगहि बंगाली बाबूक पूर्वक समटा हास्यास्पदताकें एकटा मूल्य आ गरिमा दऽ दैत छैक।]

वैद्यनाथधामसँ गाम अबैत रही। ओहि डिब्बामे एक बंगाली सज्जनक परिवार छलैन्ह। बंगाली बाबू, हुनक स्त्री, एक युवती कन्या तथा एक स्तनन्धय शिशु। ओ लोकनि एक सम्पूर्ण गद्दा पर अपन एकाधिकार स्थापित कएने छलाह। ओहि बेंच पर और केओ आबि कए बैसए से हुनका लोकनि कें अभीष्ट नहि छलन्हि। तें खूब पसरि कए बैसल छलाह। सन्दूक-पेटी- बिस्तर ओ अन्य समानक तेहन चक्रव्यूह बनौने छलाह जकरा भेदि कए प्रवेश करबाक ककरो हेतु सहज नहि छलैक। आगन्तुक सभसँ मोर्चा लेबाक हेतु बंगाली बाबू स्वयं अगिला मोहड़ा पर बैसल छलाह।

शेष सभ लोकसँ भकाभक भरल छल।

झाझामे दूटा मारवाड़ी सज्जन चढ़लाह। बेस भारी भरकम। अढ़ाइ-अढ़ाइ मनसँ कम नहि। बंगाली बाबू आक्रमणकारी कें आयल देखि अपन दुर्ग-रक्षाक हेतु सन्नद्ध भए गेलाह। दुनू सज्जन एम्हर ओम्हर ताकि बंगाली बाबू कें सम्बोधन कय कहलथिन्ह—उधर भी तो जगह है! आप जरा खिसक जाइये तो हमलोग भी बैठ जायँ।

बंगाली बाबू बिगड़ि कय बजलाह—जगह कहाँ है? दोसर डब्बा देखिये!

मारवाड़ी—बाबू साब! और कहीं जगह नहीं है। जरा आप ही तकलीफ कीजिए।

परन्तु बंगाली बाबू टस-सँ-मस नहि भेलाह। अन्तत दुनू मारवाड़ी सज्जन हमरा लोकनिक बर्थ लग आबि ठाढ़ भए गेलाह। कोनो-कोनो तरहेँ बैसबाक समावेश कयल गेलन्हि।

ओम्हर बंगाली बाबू अपन प्रौढ़ा पत्नी कें आरामसँ ओङठि जयबाक व्योंत लगाबय लगलाह। हुनका कष्ट नहि होइन्ह तदर्थ एकटा गलतकियो राखि देलथिन्ह।

मधुपुरमे एकटा वृद्धा चढ़लीह। दीनतापूर्ण दृष्टिसँ बंगाली बाबू दिस तकैत ठाढ़ि भए गेलीह। परन्तु बंगाली बाबू ओहि मूक-प्रार्थनासँ विचलित होमयवला जीव नहि छलाह। ओ दोसर दिस ताकय लगलाह, जेना लोक भिक्षुकसँ आँखि फेरि लैत अछि।

अन्तमे ओ बुढ़ी स्पष्ट शब्दें एक बीत बैसबा योग्य स्थानक भिक्षा मङलथिन्ह। बंगाली बाबू एहि हेतु पहिनहिसँ तैयार छलाह! कहलथिन्ह—जेनानी गाड़ीमे जाइये, जेनानी मे!

बुढ़ी कहलथिन्ह—जनानी गाड़ीमे स्थान नहि छैक। हमरा एके स्टेशन जयबाक अछि। जमुइमे उतरि जाएब।

बंगाली बाबू उत्तर देलथिन्ह—एक स्टेशन जाना है। तब तो इसी माफिक खड़े-खड़े भी चोलने सोकता है।

ई कहि बंगाली बाबू और पसरि कए बैसि गेलाह। हम स्वयं ट्रंकपर बैसि गेलहुँ आ बुढ़ाकें अपना स्थानपर बैसा देलिअन्हि। ओ हमरा आशीर्वाद दैत बैसि गेलीह और जमुइ पहुँचला पर उतरि गेलीह।

जमुइमे तीनटा गोरखा चढ़ल। डाँड़मे एक-एक हाथक खुखरी खोंसने। ओसभ सोझ बंगाली बाबू दिस धावा कय देलकन्हि।

बंगाली बाबू फराकेसँ घुड़की देलथिन्ह—इधर कहाँ आने माङता है ? दोसर डोब्बामे जाओ।

परन्तु नेपाली बोको की बुझी ! हुनक किछावन्दीकेँ घइँस-घुइँस लगमे पहुँचि गेलन्हि। बंगाली बाबू भयभीत होइत बजलाह—ओ रे बाबा ! जोनाना डोभ के गुड़ी पर बोलेगा की ? हम एलाम खींचवा है।

बंगाली बाबू धड़फड़ा कए जिंजिर खिचबाक हेतु उद्यत भेलाह। ई देखि नेपाली सभ हँसैत दोसरा कोठलीमे चल गेल।

आब बंगाली बाबू सुस्थस्त भए थर्मस बहार कएलन्हि। हुनक स्त्री पिआला सभमे चाह भरि भरि कए बाँटए लगलथिन। कन्या टिफिन-केरिअरसँ बिस्कुट बहार कएलथिन्ह। सभगोटे चाह-पानिमे लगलाह।

तावत् गाड़ी किउल पहुँचि गेल। एक सज्जन हाथमे 'आनन्द बाजार पत्रिका' नेने कोठलीक सामने पहुँचलाह। हुनका पाछाँ हुइटा स्त्री गड़का परिधानमे छलथिन्ह आर एक टा दस वर्षक बालक।

हुनका देखितहि बंगाली बाबू सोर कएलथिन्ह—शोनाय ! एइदिगे आशुन !

हुइए मिनटक भीतर दूहू परिवार दुध-चीनी जकाँ घुलि-मिलि कए तेना एकाकार भऽ गेल जे अनठिआक हेतु फुटकाएब कठिन छलैक।

हम अनुमान कयल जे नवागन्तुक व्यक्ति बंगाली सज्जनक कोनो आत्मीय सम्बन्धी होइथिन्ह। परन्तु जखन दुनूमे वार्तालाप होमए लगलन्हि, तखन बुझल जे हिनका दुनूकेँ पूर्वमे कहियो भेंट नहि छलन्हि। बङलामे जे बातचीत भेलन्हि ताहिसँ हमरो किछु परिचय भेटि गेल।

ई जे सज्जन पहिलेसँ बैसल छथि तनिक नाम छन्हि राखाल बनर्जी। नदिया जिला घर छन्हि। मेरठमे ठिकेदारी करैत छथि ! दुर्गा पूजामे देश आयल छलाह। आब पुनः काज पर जा रहल छथि। कन्या आइ० एस-सी० पढ़ि रहल छथिन्ह।

नवागन्तुक छथि अतुल बनर्जी। घर छन्हि मुर्शिदाबाद। जमालपुरमे डाक्टरी करैत छथि। बड़का भाइ बम्बइक एक मिलमे इंजीनिअर छथिन्ह। भतीजी बी० ए० मे पढ़ैत छथिन्ह, तनिक बियाह हुएतन्हि। तें माय तथा स्त्री-पुत्र केँ लऽ कऽ भौतए जा रहल छथि।

आब बनर्जी तथा चटर्जी परिवारमे शिष्टाचारक आदान-प्रदान होमऽ लागल। बनर्जीक पत्नी चटर्जीक माता कें आँचर ओड़ि कऽ प्रणाम कएलथिन्ह। चटर्जीक पत्नी बनर्जीक शिशुकेँ कोरामे लऽ दुलार करऽ लगलथिन्ह। बनर्जीक कन्या

चाह बिस्कुट लऽ कऽ चटर्जीक पत्नीक आगा बढ़ा देलथिन्ह। बनर्जी महाशय चटर्जीक बालककेँ पुछलथिन्ह—बलो, की पड़ छऽ।

चटर्जी साहेब नीचाँ उतरि कऽ पूरी तरकारी लऽ अएलाह। चटर्जीक पत्नी परसय लगलथिन्ह। बनर्जीक पत्नी टिफिन-केरिअरसँ क्षीरमोहन बहार कए ओहिमे मिला देलथिन्ह। सभ गोटे तेना सहज भावसँ खाय लगलाह जेना एके परिवारक होथि।

ई दृश्य देखि हमरा अपूर्व आनन्द भेल। मनमे अनेक भावक तरंग उठए लागल। एहि दुनू परिवार कें कहियो पूर्वक भेंट नहि। प्रायः एकरा बाद पुनः भेंट हैबाक संभावनो नहि। तथापि एतबे काल मे, आर एतबे कालक हेतु, दुनूमे कतेक अपनैती भऽ गेलैक अछि। इएह कारणेँ थिक जे एहि जातिक सर्वत्र अभ्युदय छैक। इएह बनर्जी महाशय जे थोड़ेक काल पहिने पाथरक मूर्ति भेल बैसल छलाह, तनिकामे एकाएक सरसताक स्रोत कोना फूटि पड़लन्हि ? ई 'आनन्द' बाजार पत्रिका'-क माया थिक। बंगभाषामे एहेन शक्ति छैक जे दू नितान्त अपरिचित व्यक्तिकेँ क्षण भरिमे ऐक्य-सूत्र मे बान्हि देलक। यदि कदाचित् बंगलाक भाषाक ई प्रताप मैथिलिओमे आबि जइतैक ? परन्तु...

इएह सभ सोचैं- सोचैत मोकामाघाट आबि गेल। इच्छा तँ रहए जे ई अभिनव दृश्य—जे अपना देशमे देखब दुर्लभे अछि – किछु और दूर धरि देखैत चली। परन्तु मोकामाघाटमे उतरबाक छल।

□

जहाजसँ गंगा पार कए अपना भूमिपर पयर देलहुँ सिमरिया घाटमे ट्रेन लागल छल। परन्तु ओहिमे जे दृश्य देखल से आइ धरि ओहिना आँखिमे नाचि रहल अछि।

हाथमे गंगाजली नेने एकटा वृद्धा चढ़ए चाहैत छथि, परन्तु लोक चढ़ए नहि दैत छन्हि। गाड़ीक भीतर मल्लयुद्ध भय रहल अछि। वृद्धाक बेटा दरवाजा खोलि कऽ भीतर जयबाक हेतु भगीरथ प्रयत्न कए रहल छथि और ओम्हरसँ तीन-चारि गोटे गरदनिया दऽ कऽ बाहर ठेलि रहल छन्हि।

वृद्धाक हाथमे एकटा साजी आओर गंगाजली छन्हि। पाछाँमे पुतहु अपन दुधपा शिशुकेँ नेने ठाढ़ि छथिन्ह।

वृद्धाकेँ अपन एकमात्र सरवन पुत्रक भरोसा छन्हि। तेँ चुपचाप ठाढ़ि छलीह। परन्तु जखन देखलन्हि जे बेटाक कंठ पर चारि गोटे सवार अछि तऽ चिचिआ उठलीह—हे औ बाबू लोकनि ! हम नेहोरा करै छी। हमर सरवन पूत छओ माससँ दुखिताह छथि। हुनका चढ़ऽ दिऔन्हु।

परन्तु वृद्धाक अनुनय पर केओ ध्यान नहि देलकन्हि। सरवन पूतकें बाहर धकेलि कऽ भीतर सँ दरबाजा बन्द कऽ लेलकन्हि।

वृद्धा कलपि कऽ कहए लगलथिन्ह—हे औ बाबू! हमरो लोकनिकें चढ़ा लिअऽ। हम सब ठाढ़िए जाएब। बोहाइ बाबु भैया के! बहुत पुण्य हएत।

परन्तु वृद्धाक कातर प्रार्थना अरण्यरोदन भेलन्हि। पुतहु बेचारी नेनाकें नेने असमञ्जसमे पड़लि। जहाँ स्वामी ओ सासु बज्रनिहार मौजूद छथि तहाँ ओ की बज-तीह? अपन स्थान पर संकुचित भेलि ठाढ़ि रहलीह। कुलवधूक अनुरूप शालीनतापूर्ण मर्यादाकें ओ एहठाम नहि छोड़ि सकलीह। कोना छोड़थु? मिथिलाक कन्याक जन्मे एहि हेतु होइ छन्हि जे ओ पृथ्वी जकाँ सर्वसहा बनि कऽ रहथि। तखन ओ बेटी अपन जन्मसिद्ध कुलीनताक कोना त्याग करथु? सहिष्णुताक मूर्ति बनल ठाढ़ि रहलीह!

जखन हमरा नहि देखल गेल तखन ओहिठाम जा पहुँचलहुँ और कोठलीक भीतरवाला यात्री सभकें सम्बोधन कय कहलिअन्हि—देखू, एतीकालसँ अहाँक एकटा देशी भाइ नेहोरा कऽ रहल छथि, संगमे वृद्धा माता छथिन्ह, प्रसूतिका स्त्री छथिन्ह। अहाँ लोकनिककें कनेको विचार नहि अछि?

एक गोटे बजलाह—देशी भाइ छथि तँ कि माथ पर उठा लिऔन्ह? एहिमे जगह कहाँ छैक?

हम कहलिऐन्ह—देखू, अहाँ लोकनि जँ अपन मोटरी नीचाँ राखि ली तँ ई तीनू गोटे खुशी सँ बैसि जा सकैत छथि।

एक गोटे उत्तर देलिन्ह—मोटरीमे खएबा-पिउबाक वस्तु अछि। नीचाँ कोना रहत?

हम—तँ ऊपर बर्थ पर राखि दिऔक। हैं, बेचारे कहुना ठाढ़े भेल चल जए-ताह, परन्तु ई दु टा अबला छथि! अहूँ लोकनिक संगमे स्त्रीगण छथि। हुनके बीच मे बैसा दिऔन्हि।

दोसर गोटे बजलाह—से कोना हएतन्हि? ओहिठाम बच्चा सूतल छैक। ओकरा हम घिचाए दिऔक?

हम—अहाँक बच्चा नहि घिचाएत। ई लोकनि ओहि कोनमे सटि कऽ बैसि जइतीह! हिनको सङमे तँ ओहू सँ छोट नेना छन्हि। अपने सन्तान जकाँ दोसरोकें बूझक चाही।

आब तरह-तरहक बोली भीतर सँ आबए लागल।

एक—ओकील बनि कऽ पैरवी करए आएल छथिन्ह।

दोसर—समटा कानून एहीठाम झाड़य आयल छथि।

तेसर—बड़ दरेग होइ छन्हि तऽ अपने जगह पर किएक ने लऽ चाइत छथिन्ह।

चारिम—हमरालोकनि जाएत बैसल छी, ततए सँ किन्तहु नहि हटि सकैत छी।

हम विनयपूर्वक कहलिअन्हि—बेस, तँऽ अहाँ लोकनिकें कनेको घुसुकबाक प्रयोजन नहि। ई बूढ़ सासु-पुतहु एहि पेटी पर बैसि रहतीहि। और हिनका कतहु ठाढ़ होएबाक जगह दिऔन्ह।

कोठलीक यात्रीगण एक दोसराक मुँह ताकए लगलाह। एक गोटाक मनमे किछु दयाक संचार भऽ उठलन्हि। कहलथिन—की करबहक? आबऽ दहक।

हम श्रवणकुमारक कें सम्बोधन करैत कहलिअन्हि—अहाँ लोकनि अबै जाउ। ई लोकनि जाए। देखा देखि, बैसि जाउ।

श्रवणकुमार आगाँ बढ़लाह। हुनका पाछाँ वृद्धा माता। तदनन्तर सलज्जा पुत्रवधू।

हम आश्वस्त भय अपना डिब्बा मे गेलहुँ। जीवनमे एकटा पुण्य कार्य तँ भाइ गेल!

एतबे विचारैत खिड़की सँ बाहर देखैत छी कि देह सिहरि उठल। श्रवण कुमार कोठलीक मुँह मे आधा प्रवेश कएने छथि, वृद्धा माता रेलक पाओदानपर ठाढ़ि एक पैर भीतर देबय चाहैत छथि, गजगामिनी पुत्रवधू एक चरण प्लेटफार्म पर ओ दोसर पाओदान पर देने छथि। गाड़ी छुटबा-छुटबा पर अछि।

तावत् पाछा सँ एक झुंड भोगण हू-हू करैत पहुँचि गेल और वृद्धा तथा पुत्रवधूकें ठेलि कऽ नीचा करैत, श्रवणकुमारकें धकेलि बाहर करैत, अपने सभ भीतर चलि गेल। गाड़ी चलए लागि गेल। श्रवणकुमार नीचाँ खसि पड़लाह। वृद्धा माताक ओ करुण दृष्टि और कुलवधूक मुख पर ओ विवशताक चिन्ह एखनधरि हमरा नहि बिसरैत अछि। ओ बिसरबाक वस्तुओ नहि।

□□

तहिआ सँ हम नहि जानि कतेक बेर एहि प्रश्न पर विचार कैने हैब। चटर्जीक माता ओ बनर्जीक पत्नीमे जे मर्यादा छलन्हि सएह मर्यादा तँ एहू वृद्धा ओ युवतीमे छलन्हि। परन्तु हुनक नारीत्वक आदर किएक नहि भेलन्हि? बंगालिनी वृद्धा जकाँ एहू वृद्धा कें केओ अपना स्थान सँ उठि हाथ धऽ कऽ किएक नहि बैसौल-

कन्हि ? आर ई जे गृहिणीत्वक गरिमासँ मण्डित कुलवधू छथीह से कि बनर्जीक पत्नीक समान आसन पर बैसाबए योग्य नहि छथीह ? हुनकर कैओ उचित सत्कार किएक नहि कएलकन्हि ? गाड़ीमे तँ कतेको स्त्री छलीह, किएक ने किनको भेलन्हि जे बनर्जीक पत्नी जकाँ आगाँ बढ़ि प्रेम-पूर्वक अपना लग लऽ बैसबन्हि ? बनर्जीक शिशु जकाँ हुनको बच्चाकेँ दुलार करएबला केओ किएक ने भेटलैन्ह ?

हम जतेक अधिक एहिपर सोचै छी ततेक समस्या जटिल भेल जाइत अछि। गाड़ीमे भरि कऽ अपन देशवासी रहथि ! परन्तु जखन चारि टा आगा पहुँचि गेलन्हि कि सभ सकदम ! किनको बजबाक साहस नहि पड़लैन्ह। टुकर-टुकर माता ओ कुलवधूक अपमान देखैत रहि गेलाह। शोणितमे रंचमात्र उफान किऐक ने उठलन्हि ? किऐक ने केओ शिविर छिनबाक हेतु ठाढ़ भेलाह ? किऐक ने केओ सपूत एहन बहरएलाह जे श्रवणकुमारक हाथ धए भीतर लऽ अबितथि और साधु-पुरुषक मार्ग प्रशस्त बना कहितथिन्ह—अहाँ लोकनि अबै जाउ !

बात अछि जे बंगवासी अपना लोककेँ माथपर चढ़बैत छथि और हमरा सभ अपना लोककेँ पएरसँ ठोकरबैत छी।

थोड़बे दूरक तँ अन्तर छैक। तखन बंग ओ मिथिलाक भूमिमे एतेक भिन्नता किऐक ? 'पद्मा' ओ 'कमला' तँ एकहि अर्थक वाचक थिकीह, तखन दुनूक पानिमे एतबा अन्तर किऐक ?

□

ग्रामसेविका

[ई कथा सर्वप्रथम 'वैदेही' (दिसम्बर '५५) मे छपल आ बादमे 'चर्चरी' मे संगृहीत भेल। हिन्दी ('धर्मयुग' ३ फरवरी '५७) तथा गुजराती ('श्री रंग) मे सेहो एकर अनुवाद भेल अछि।

एहि कथाक विशिष्टता एहि बातमे अछि जे ई नहि केवल एकटा जाग्रत एवं आर्थिक रूपेँ स्वतन्त्र नारि-चरित्रकेँ प्रतिष्ठित करैत अछि, अपितु नारीक एकटा एहन मंजुल मंगलमय मूर्तिक स्थापना करैत अछि जे अपन सेवा-भावना आ कर्त्तव्य-परायणता सँ परम्परावादी रूढ़िग्रस्त समाजमे बदलाव अनैत अछि। एकटा नव्य समाजक निर्माण क' त अछि आ अन्ततः बूढ़ो-पुरानक हृदय जीति सभक आशीर्वादक पात्र बनैत अछि ! यथार्थक धरातलपर कथा एकटा स्वस्थ कल्याणकर आदर्शवादकेँ जाहि तरहेँ स्थापित करैत अछि से एक दिस जतऽ पाठककेँ कल्पना जकाँ सुन्दर आ मनोहर लगैत छैक, ततहि दोसर दिस बड़ सहज आ स्वाभाविक सेहो। यथार्थ आ आदर्शक, रोड़्व्यता आ मनोरंजकताक नीक समन्वय कथा करैत अछि। प्रगतिशील मूल्यक स्थापना कऽ कथा समग्र रूपमे बड़ शीतल, सुखद, आशाप्रद व प्रेरक प्रभाव छोड़ि जाइत अछि।]

मकुनाही पोखरि पर लूटन मिसर वैद्यकेँ मुँह धोइत देखि काशीनाथ कहल-थिन्ह—वैद्यजी, एकटा नव गप्प सुनलिऐक अछि ?

वैद्यजी साकांक्ष होइत पुछलथिन्ह—की ? कोन बात भेलैक अछि ?

काशीनाथ बजलाह—अपना इलाकामे एक टा ग्रामसेविका आएल अछि।

वैद्यजी पुछलथिन्ह--'ग्रामसेविका'क की अर्थ ? कि ओ संपूर्ण गामक पैर दबाओति ?

काशी०—ओ घर-घर घमि क' स्त्रीगणकेँ शिक्षा देति।

वै०—की शिक्षा देति ?

पं० जी किछु सोचि कय बजलाह—जखन समटा पीढ़ी पानि ठीक भऽ जाय तखन बचनूकेँ कहबैक । बजा अनलन्हि । पाँचे वर्षक अछि तेँ की ? बेस डिम्मर अछि । की हौ बचनू ! पाहुन कें बजा अनबहुन से हैतौह किने ? कहिअहुन्ह—'चल, खाय लेल ।' तखन हम तोरा लेल बाजार सँ लड्डू लेने ऐबौह ।

ई कहि पं० जी बचनूकें दुलार सँ चुम्मा लेलथिन्ह और पनही पहिरि दलान पर एलाह । चौधरीजीकें कहलथिन्ह—चौधरी जी, कहैत हैं संकोच होइत अछि । परन्तु एहन संयोग जे आइए एकटा मामिलाक तारिख छैक, से हमरा दस बजे कचहरी पहुँचब जरूरी अछि । अपनेकें एतए एसकर छोड़ि कऽ जाएब त बड़ा अनुचित लगैत अछि, परन्तु कैल की जाय ? हम सायंकाल धरि आपस आबि जायब । यदि अपनेक आज्ञा हो त.....

चौधरी जी कहलथिन्ह—नहि नहि, कोनो बात नहि । अपने अवश्य गेल जाओ । ई त हमर अपन घर थिक । और बियाहुता छैहे । संध्याकाल फेर भेंट हैबे करत । अपने कोनो बातक चिन्ता नहि कैल जाय । गेल जाओ ।

पं० जी पुनः एक बेर उचिती ओ क्षमाप्रार्थना करैत झटकल कचहरी दिस विदा भेलाह ।

आब आङनक हाल सुनू । पंडिताइन चाह देवाकेँ निति भानस-भात मे जुटि गेलीह । ओसारा पर छनन-मनन होमय लागल । और थोड़बे कालमे बड़ बड़ी ओ तरुआक पथार लागि गेल । चाह जनी तेहन अफस्यांत रहथि जे हिनका अपना देहक होश नहि रहैन्ह । सभ थामे पसीने तर । मुँहो धोएबाक अवकाश नहि । परन्तु घरक बुतीहु कर्णपुर वाली कनियाँ अविचलित भावसँ स्नान कय अपन केश थकरि रहल छलीह । ई देखि सासु लोकनि अपनामे कनखी-मटकी चलाबय लग-लीह । आसय ई जे हमरालोकनि त फाटि रहल छी और हिनका देह सीटक बेरि छैन्हि । परंच कनियाँक स्वभाव सभकेँ जानल छलैन्ह तेँ हिनका ओर सँ बजबाक साहस नहि भेलैन्ह ।

ता दालान पर पाहुन कँ भूख लागि गेल छलैन्ह । परन्तु दैवी लीला ! बचनू कोम्हरो सँ खेलाइत-धुपाइत ओहिठाम पहुँचि गेलाह । हुनका ई दयलैन्ह जे फुर-सैन्ह, पाहुनक पैर धऽ उठावय लगलथिन्ह—की औ पाहुन ! सुतले रहब ? खाय लेल नहि चलब ?

चौधरीजी धड़फड़ा कऽ आँखि मिड़ैत उठलाह । पुछलथिन्ह—की ? भऽ गेलैक ? बेस, चलू ।

चौधरीजीक पैर खड़ाम खोजय लगलैन्ह । परन्तु से नहि छलैन्ह । एखन

घरबैया रहितथि त एहन त्रुटि नहि होइत, ई सोचैत चौधरी जी खालिए पैर बचनूक संग विदा भऽ गेलाह ।

ओम्हर आङनमे ककरो खबर नहि जे बचनू पाहुनकेँ बिझो करैने आबि रहल छथि । फलस्वरूप तमाशा लागि गेल । ओसारा पर नवहथवाली पसाह लगौने सजमनिक चक्का कटैत छलीह । एकाएक देखै छथि जे बीच आङनमे पाहुन ठाढ़ भेल छथि । ई देखितहि ओ पड़ैलीह । भारी भरकम शरीर । तमतमाइत दौड़लीह त चिलहथवाली सँ टकरा गेलीह । दुनू गोटाक नाक थौआ भऽ गेलैन्ह । चिलहथवाली ठाढ़ भऽ कऽ अठोरी-भोटाक ओर ताकैत छलीह । ओहो करछू फेंकि आँचर सम्हारैत कोनियाँ घरमे जा नुकैलीह । भटसिम्मरिवाली घाठि फेंटैत छलीह । ओहो घठियाहे हाथे मरैत काढ़ि चुल्हा दिस पड़ैलीह । पंडिताइन पीढ़ी पर बैसि नहाइत छलीह । एक लोटा पानि देह पर देने रहथि और दोसर लोटा ढारैत रहथि, तावत् ई कांड उपस्थित भऽ गेल । ओ जहिना भीजल-तीतल रहथि तहिना लत्ते-पत्ते चहुआइ दिस पड़ैलीह ।

एके क्षणमे तेहन भगदड़ मचि गेल जेना कोनो बाघ आबि गेल हो । चौधरी जी बीच आङनमे किङ्कर्त्तव्यविमूढ़ ठाढ़ रहलाह । पाछा फिरि कऽ बचनूक दिस तकलन्हि, परन्तु एहि बिहाड़िमे बचनू कखन लंक लऽ कऽ पड़ैलाह तकर पता नहि । चौधरीजी 'शैलाधिराजतनया न ययौ न तस्थौ' जकाँ गङ्गुरित भेल ठाढ़ छलाह । ओ प्रायशः फिरि कऽ दलान पर चलि जैतथि, परञ्च एही कालमे एक अद्भुत घटना भऽ गेल । आङन सँ और-ओर स्त्रीगण त पड़ा गेलीह, परन्तु कर्णपुरवाली कनियाँ दही-चूड़ा-चीनी जलपान करैत छलीह से करिते रहलीह । पछुआड़सँ सासु थपड़ी पाड़ि इशारा दैमय लगलथिन्ह । कोनियाँ-घरसँ चुनू देया-दिनी चुटकी बजावय लगलथिन्ह । चुल्हासँ भटसिम्मरिवाली गर औंटि भऽ कहल-थिन्ह—ऐ, अहाँके पड़ा नहि होइ अछि ? पाहुन देखैत छथि ! केहन गब्बर छी ?

परन्तु कर्णपुरवाली हिनको दिस कर्णपात नहि कैलन्हि । ओ निर्विकार भावसँ पाहुनकेँ सम्बोधित कय बजलीह—चौधरीजी ! ओना थकमकाएल ठाढ़ किऐक छी ? आउ ।

चौधरीजी स्तम्भित रहि गेलाह । मैथिलक आङनमे अट्ठारह वर्षक नवयौवना पुतोहुमे एतवा साहस भय सकैत छैक, ई कहियो कल्पनामे नहि आएल छलैन्ह । आइ जीवनमे प्रथम बेर ई दृश्य देखि विस्मय-विमुग्ध भऽ गेलाह ।

युवति अपन जलखइ समाप्त करैत कहलथिन्ह—अहाँ केँ बचनू किछु पहिनहि बजा अनलक । बेस, कोनो हर्ज नहि । अहाँ तावत् बैसू । हम पाँच मिनट मे सभटा ठीक कय दैत छी ।

ई कहि पुष्पी हुनका एक छोट चौकी पर बैसाय हाथ मुँह धोबाक हेतु एक लोटा जल देलथिन्ह और आसन लगाकऽ थारीमे भात सौठय लगलीह। चौधरी सावे कठुआ कऽ माङ नीचा कय लेलन्हि। एहन अभूतपूर्व दृश्य देखि स्त्रीगण दाँत तर जीभ काटय लगलीह। पंडिताइन तामसे भूत भ' गेलीह। ओ बारंबार पछुआड़मे खखसय लगलीह। अभिप्राय ई जे – हे औ पाहुन ! कनियाँ त सहजे बताहिए अछि, परन्तु अहाँ त सज्ञान छी ! आबो था कऽ कनेक काल बाहर बैसु गऽ। एम्हर सभ ठीक भए जाएत तखन आएब। ई बतही कोना परसत, की देत की नहि देत तकर कोन ठेकान ?

परन्तु पंडिताइन खखसिते रहि गेलीह। एम्हर कर्णपुरवाली बेस मुस्यस्त भए चौधरीक संग गप्प करैत हुनका भोजन करावय लगलथिन्ह। पछुआड़मे पंडिताइन छाती पीटि कानय लगलीह—बाप रे बाप ! ई कलियुगही अब जीति लेलक। एहि घरक आइ नाक काटि लेलक। हमरा लोकनि एना करितहुँ तँ सासु जिबितहिँ माटि तर गाड़ि दितथि।

कोनियाँ घरमे बूनू देयादिनी फुसफुसाय लगलीह—कुलबोरनी नाश कऽ देलक। हमरा सभ भरि थारी भात औंति क' परिसितिऐक। से ई लुच्ची पाव भरि चाउरक भात देलकैक अछि। बाप रे बाप ! पाहुन मनमे की कहैत हेतैक !

—देखथुन्ह ऐ दीदी ! तरकारी जे चोखि क' देत छैक ! हुथकट्टीकेँ जी नहि सहैत छैक। हे, देखथुन्ह सभटा तरकारी एकै तश्तरीमे परसि देलकैक ! हमरा लोकनि सात टा बाटी लगबितिऐक।

दुरुखा सँ भटसिम्मरिवाली कनफुसकीक स्वरमे बाजय लगलीह— हे भगवान ! नैवेद्य उत्सर्गक हेतु पात कहाँ पड़लैन्ह ? घृत फराक बाटीमे परसल जइतैन्ह।

तावत् कर्णपुरवाली घी कड़कड़ा कऽ दालि-भात पर धऽ देलथिन्ह।

ओम्हर पछुआड़मे पंडिताइन पुतोहुकेँ गारि देबय लगलीह—जो गय धोँछी ! केओ झाँपि लेबै से नहि होइत छौ। माथ उघारने बैसल छैँ। आब कनेक पाहुनकेँ जाय दहीक तखन ने तोहर दशा करैत छिऔक !

कर्णपुरवाली पन्द्रह मिनटमे पाहुन कैँ खोआ-पिआ कऽ बिदा कऽ देलथिन्ह।

पाहुनक बाहर होइतहि भाक सासु पुतोहु पर छुटलीह। परन्तु कर्णपुरवाली कोनो बातमे अपन गलती मानय लेल तैयार नहि भेलथिन्ह। तखन पंडिताइन खिसियाक पीढ़ीसँ अपन कपार फोड़ि लेलन्हि। देयादिनीसभ हरदि-चून लगाबय लगलथिन्ह। बचनू कतय पतनुकान लेलक तकर ठेकान नहि। कनियाँ

कालेजक पता सँ अपना स्वामीकेँ चिट्ठी लिखय लगलीह। केओ अन्नजल ग्रहण नहि कैलक।

पं० जी सन्ध्याकाल धाम ऐलाह। ता पाहुन जलाशय दिस गेल छलाह। पं० जी आङन आबि देखै छथि त चारूकात सुन्न। पंडिताइन केँ सोर कय पुछल-थिन्ह—ऐ, की बात छैक ? ई कपार पर टोपर किऐक लगौने छी ?

पंडिताइन कैँ पहिने त कंठे नहि फुटलैन्ह। पश्चात् आँचर सँ नोर पोछैत बजलीह—धर्मक नाश ! आइ एहि घरक मर्यादा नष्ट हैबाक छलैक से नष्ट भऽ गेलैक।

पं० जी सशंकित चित्त सँ बजलाह—से की ?

ततःपर पंडिताइन कनैत-कलपैत सभटा कथा आद्योपान्त कहि सुनौलथिन्ह।

पं० जी किछु काल धरि गुम्म रहि गेलाह। तदन्तर दीर्घ श्वास छोड़ैत बजलाह—अनका बतहे हँसी, अपना बतहे कानी ! एहि बतही केँ नैहर पठा देबक चाही। नहि त समाजमे रहब कठिन भऽ जाएत। कनकिरबुक दोसर विवाह करौनाइ आवश्यक भ' गेल।

तावत् पाहुन पोखरि दिससँ आबि गेल छलाह। पं० जी सकुचित होइत हुनका लग जा कहलथिन्ह—चौधरीजी, हमरा परोक्षमे त आइ अपनेँक बड्ड कष्ट भेल।

चौधरीजी बजलाह—नहि, कष्ट किएक हैत ?

पं० जी किछु अप्रतिभ होइत कहलथिन्ह—हमरा घरमे एकटा कनियाँ छथि जे किछु झनकाहि जकाँ छथि। ओहि बताहिसँ यदि किछु अनट-बिनट भेल हो त से प्रकाश नहि कैल जाय।

चौधरीजी नाकक पूड़ामे नोसि दैत गम्भीर भावसँ बजलाह—हमरा त एहि घरमे सभ सँ बेसी सम्मत वैह बुझि पड़ैत छथि। बुझि पड़ल जेना हमर अपने कन्या होथि। वैह चाही। आइ हमरो आँखि फुजि गेल। यदि प्रत्येक घरमे एहने तेजस्विनी बेटी-पुतहु रहतथि त फेर मिथिलाकेँ शिथिला के कहि सकैत अछि ?

पं० जी मुँह बौने अवाक् रहि गेलाह। □

मर्यादाक भंग

[ई कथा सर्वप्रथम 'वैदेही' (मई'५३) मे छपल आ तत्पश्चात् 'मर्यादिका' (सं० श्री कृष्णकान्त मिश्र-'५३) तथा 'तीर्थयात्रा' (५३) मे लेल गेल। बादमे 'चर्चरी' मे संगृहीत भेल।

निरर्थक तथा अप्रासंगिक भेल जाइत पारम्परिक मूल्यसभक बीचमे प्रगतिशील मूल्यक स्थापना ई कथा जाहि यथार्थवादी आ सहज ढंगसँ करैत अछि, से एकरा एकटा विलक्षण प्रभाव प्रदान करै छैक। नारी-जागरणक अपन सन्देशमे बहुत स्पष्ट रहितो कथाक कथात्मकता कतहुँ सँ खंडित नहि होइत छैक, तेँ से एहि कारणेँ जे संदेश कथापर कतहुँ सँ थोपल वा लादल नहि छैक, अपितु कथामे तेना स्वाभाविक रूपेँ गुम्फित छैक जे कथाक अन्तमे पाठककेँ ई बुझि पड़ैत छैक जे ओकरा सोचबाक लेल एकटा बातो दऽ देल गेल छैक, आ कथा ओकर सोचकेँ किछु आगाँ धरि लऽ जाइत छैक। कथा अपन प्रभावमे अत्यन्त सफल प्रायः एहू कारणेँ भेल अछि जे नव्य मूल्यक स्थापना लेल पुरना मूल्य सभपर कतहु चोट वा व्यंग्य करब आवश्यक नहि भेल छैक; कथा केवल स्थितिक निर्माण कऽ देल छैक, जाहिमे पुरना मूल्यसभ स्वतः मनोरंजक आ हास्यास्पद भऽ नवकाक मार्ग प्रशस्त कऽ दैत छैक।]

आइ पण्डितजीक आङनमे हुलिमालि उठल छैन्ह। कारण जे एक पाहुन आबि गेल छथिन्ह। सेहो विशिष्ट लोक। दुलारपुरक चौधरी। हुनक सेवासत्कारमे कोनो त्रुटि नहि होमक चाही। परन्तु समस्या ई जे पं० जी केँ कचहरीक काज सँ ऐखन लहेरियासराय जैबाक छैन्ह। आब की हो?

पंडिताइन कहलथिन्ह – धीर ओर औरिआओन त हमरा लोकनि सभटा कय देबैन्ह। एकटा भाँटा-अदौड़ी भऽ जेतैन्ह। चार पर सजमनि छैहे। भटबर हेतैन्ह। तिलकोरक सात तरि देबैन्ह। तखन बड़-बड़ी, पापड़-तिलौड़ी। परन्तु भारी बात त ई जे भोजनक हेतु बजाबय के जैतैन्ह?

का० – येह् जे पर्दा तोड़िक सभ काज करै जाइ।

वैद्यजी दार्शनिक जिभिया फेरैत बजलाह् – आब जे जे ने हो!

फुदन चौधरी खाटपर बैसल खोटा मँजैत रहथि। ई गप्प सुनि बजलाह् – ओकर वयस की हेतैक?

काशीनाथ ठिकियबैत कहलथिन्ह – येह् करीब अठ्ठारह-उन्नैस।

चौ० – विवाहित अछि कि कुमारि?

का० – देखबामे त कुमारिए जकाँ लगैत अछि।

चौ० – तखन ओ अनका सिखौतैक? नतिनी सिखाबय बुढ़दादीकेँ!

का० – चौधरीजी, से नहि कहिऔक। ओ बहुत पढ़लि छैक। तेँ सरकार एहि काज पर ओकरा बहाल कैने छैक।

चौधरीजी कुरड़ करैत बजलाह्—हौ, तोँ सरकारकेँ की बुझैत छह? अनकर बहु-बेटीकेँ नचाकऽ देखबामे बड़ मोन लगैत छैक। पतिव्रता सँ ओकरा कोन काज?

तावत् स्नान पर जनउ चढ़ौने पहुँचि गेलाह् पंडितजी। बजलाह् – एहि युगमे भ्रष्टक उदय छैक। जे स्वयं भ्रष्ट रहैत अछि से सभकेँ अपने सन बनबय चाहैत अछि। ओ आबि कऽ सौंसे गामक स्त्रीगणकेँ दूरि कय छोड़ि देत। तखन कि एकोटा बेटी-पुतोहु कथा मानत? ओकरा 'ग्रामसेविका' नहि 'ग्रामशोधिका' बुझू।

बौकूबाबू एतेकाल धरि ढोँढ़ी पर्यन्त जलमे ठाढ़ भेल 'अघमर्षण सूत्र' जपैत छलाह्। आब नहि रहि भेलैन्ह। बजलाह् – हम त किन्नहु ओहि छौंड़ीकेँ अपना आङनमे नहि ढुकय देबैक।

काशी० – ओना छौंड़ी नहि कहिऔक। ओ अफसर भऽ कऽ आइलि अछि।

बौकू बाबू उत्तेजित होइत बजलाह्—एहि गाममे अफसरी खान नहि चलतैक। जँ हमरा घरकेँ बिगाड़य आओति त झोँट धऽ कऽ मारि करबीकेँ, मारि करचीकेँ चूड़ तोड़ि देबैक।

तावत् बौकू बाबूक पीन हुकबैत औहिठाम पहुँचि गेलैन्ह। बौकू बाबू पुछलथिन्ह—की हौ भुटकुन! एना दौड़ल किऐक ऐलह् अछि? घरमे साँप बहरैलाह् अछि की?

भुटकुन हँफैत-हँफैत कहय लगलथिन्ह—एकटा मौगी खूब उज्जर मूआ पहिरने आइलि अछि। दलानमे कुर्सीपर बैसल अछि। कहै छैक जे आङन जा कऽ सभसँ

भेंट करब। माय काकी त तैयार छथिन्ह। परन्तु दादी कहबन्हि जे दौड़ि क' अपना बाबासँ बुझने आबह।

बौकू बाबू सशंकित होइत पुछलथिन्ह—ओ के थीक ? की करय आइलि अछि ? हमरा आङनसँ कोन काज छैक ?

भुटकुनकेँ चुप देखि काशीनाथ पुछलथिन्ह—की हौ भुटकुन ! ओकर साथ बघारे छैक कि ने ?

भुटकुन—हैं !

काशी०—हाथमे थैंगो छैक ?

भुट०—हैं।

काशी०—तखन निश्चय वैह थीक।

बौकू बाबू क्रोध सँ बताह भजलाह—हरामजिनी केँ और कोनो घर नहि भेटलैक ? सभ सँ पहिने हमरे शोधय आयल अछि।

पं० जी, वैद्यजी ओ चौधरी जी आनन्द सँ मुसकुरा उठलाह। बौकू बाबू केँ किछु नहि फुरलैन्ह, चट्ट दऽ एक थापड़ कसि कऽ भुटकुनक गालमे लगा देलथिन्ह।

जखन बौकू बाबू आङन पहुँचलाह त चकित भऽ उठलाह। जकरा ओ भरि बाढ़ डाइन, राकसी, कुलटा आदि नाना प्रकारक उपाधि दैत आयल छलथिन्ह तकरा देखै छथि जे आँचर कसने, एक हाथमे झाड़ू ओ दोसरामे फेनाइल नेने, हुनका आङनक मोदी साफ करबामे लागल अछि और अपना आङनक स्त्रीगण मरौत काढ़ने पाछाँ ठाढ़ि भेल बक्कर-बक्कर ताकि रहल छथिन्ह। बौकू बाबू केँ आङनमे पैर दिनहि मोढ़िक गन्ध लगैत छलैन्ह। नित्य प्राणायाम करैत अबै छलाह। से आइ खुलि कऽ साँस लेलन्हि। ओसारा पर सभ दिन कूरा-कचराक ढेरी टपि कऽ जाय पड़ैत छलैन्ह। आइ देखैत छैथि त एकदम 'लाइन क्लीयर' ! कतहु एकटा फालतू चीज नहि। चौकठ लग एकटा कोइला सन कारी लालटेन टाङल रहैत छलैन्ह से कै दिन माथमे ठेकि गाइल छलैन्ह। आइ देखै छथि त ओ लालटेन साफ चमकैत एक कोनमे खुट्टी सँ लटकल अछि। हुनका घरमे छौ मास सँ जे झोल जमल छलैन्ह तकर आइ नामोनिशान नहि। ई कायापलट कोना भऽ गेलैक ? बौकू बाबू सोचय लगलाह—अहा ! एहने संस्कार वाली यदि अपनो घरमे रहैत तखन नित्य किएक गदहकिच्चन होइत ?

बौकू बाबू पूजा पर बैसलाह त बँगला सँ देखाइ पड़लैन्ह जे ओ लड़की पछुआड़मे ठाढ़ि अछि। कान्हमे एकटा बैग लटकौने, जाहि पर सुन्दर अक्षरमे

'विमला देवी' अंकित छैक। एकटा नेबोक गाछमे कीड़ा लागल छलैक। ताहिमे ओ कोनो दबाइ घोरिक पिचकारी दय रहल अछि। बीच-बीचमे स्त्रीगणकेँ किछु बुझा रहल छन्हि।

देखैत-देखैत एकटा आश्चर्य बात भय गेल। जे बरहुइया वाली सासुक देखा-देखी सदिखन नाक झपने रहैत छलीह से एकाएक विमला देवीक निर्देशानुसार भरकछ भीड़ि हाथमे कोदारि लेलन्हि और बाड़ीमे नेना द्वारा अपवित्र कैल माटिकेँ काटि कय फेकय लगलीह। देखैत-देखैत बाड़ी साफ भय गेल।

थोड़ेक काल बाद विमला देवी साबुन लऽ कऽ हाथ धोलन्हि। एक मिनट बच्चाकेँ दुलार कैलथिन्ह। तदुपरान्त दुनू हाथ जोड़ि सभकेँ 'नमस्ते' कय विदा भऽ गेलीह। बौकूबाबू मन्त्रमुग्ध भय देखैत रहलाह। ई त चाण्डालिन जकाँ नहि, मुनि-कन्या जकाँ लगैत अछि। जतहि जाएत, ततहि तपोवन बना देत। व्यर्थहुँ बेचारीक प्रति ओतेक अपशब्द कहलिऐक। बौकूबाबू दुर्गा पाठ करय लगलाह। किन्तु घुरि-फिर कऽ वैह लाल ठोपवाली श्वेतवसना ध्यानमे आबि जाइन्ह।

भोजनकाल बौकूबाबू स्त्रीकेँ कहलन्हि—देखलिऐक, बंगालिन लड़कीक पानि ?

स्त्री कहलथिन्ह—ओ बंगालिन नहि, देशीए अछि।

बौकूबाबू कहलथिन्ह—ई हम मानि नहि सकैत छी। ओ पानि एम्हर कहाँ पानी।

स्त्री कहलथिन्ह—बंगला गुआ देखने नहि बुझिऔक। मैथिलानीएक थीक। कमलपुर घर छैक।

ई सुनैत बौकूबाबूकेँ धक्क दऽ करेज लागि गेलकैन्ह। पहिलुक प्रफुल्लता विलीन भऽ गेलैन्ह। स्याह होइत मनमे सोचए लगलाह—बंगालिन किंवा पञ्जाबिन रहैत त ई सभटा छजितैक। परन्तु मैथिल कन्या भऽ कऽ एना करैत अछि ! अनकच्छल बात। खाजन चललीह बगड़ाक चालि, अपनो चालि बिसरि गेलीह। देखी मुँ विलायती बोल। प्रकाश्यतः बजलाह—एकरा माय-बाप नहि छैक की। एखन धरि कुमारिए किएक अछि।

स्त्री कहलथिन्ह—हम पुछलिऐक 'हे दाइ। तों एहन सुन्नरि छह। विवाह किएक ने करैत छह।' तखन हँसय लागलि। बाजलि—'बच्चा उत्पन्न करयवाली देशमे बहुत गोटा छथि। एखन सेवा करयवालीक कमी छैक। तैं हम येह मार्ग अपनौने छी।' हम कहलिऐक...'हे दाइ, तोरा एतबे टा मे एतेक शास्त्र बुद्धि कोना भऽ गेलौह।' तखन खेर हँसय लागि गेल।

बौकूबाबू कहलथिन्ह—अन्य देखी रहैत त हम सभटा बात शिरोधार्य कऽ लितिऐक। परञ्च एहि माटिसँ बहरा कऽ ई एतबा शान देखाओति से कोना मानि लैतैक। कतबो अंगला मुआ बहिरयु, परन्तु बापु त तिरहुतिए छैन्ह। ई चाली भऽ कऽ साँपक देखाउस करै छथि। किछु भऽ जैतैन्ह त सभटा फुसफुस्सी बाहर भऽ जैतैन्ह।

किछुए दिनमे विमलादेवीक ज्योति सँ घर-घर आलोकित भऽ उठल। मुखोली-वालीक इनार मे कीड़ा सह-सह करैत छलैन्हि से आब ब्लीचिंग पाउडर पड़ि गेलैन्ह। जहाँ सभ घैल सतत मुँह बौने रहैत छलैन्ह, तहाँ आब साफ मलमलक टुकड़ासँ झाँपल रहैत छैन्ह। रुपौलीवालीक नेनाक देहपर सेर भरि रिट्ठा-रिट्ठी लादल रहैत छलैन्ह से उतरि गेलैन्ह। जहाँ बंगटक नाकमे सतत पोटा लटकल रहैत छलैन्ह, तहाँ आब हाइड्रोजन पेरोक्साइड दऽ कऽ हुनक कान साफ कैल जाइ छैन्ह। ठकोलीवालीक बच्चा जहाँ कुरुयेमे नदी फीरि दैत छलथिन्ह तहाँ आब घर सँ बाहर जाकऽ नदी कऽ अबैत छथिन्ह। सिसौनावाली बारह बजे मुँह धोबय बैसैत छलीह से आब सूर्योदयसँ पहिनहि स्नान कय लैत छथि। मुरौनावालीकेँ नित्य बेरु पहर खुटौनावालीसँ झगड़ा होइत छलैन्ह। से आब दुनू गोटा बैसि कऽ ऊनी मोजा बुनैत छथि। एवं प्रकारेँ गामक आमूल परिवर्तन भऽ गेल। विमलादेवीक डरसँ कोनो बच्चाक आँखिमे कीची नहि। सभक नख साफ। कोनो सड़कपर नाक सुनधाक काज नहि। सभक बाड़ी-झाड़ीमे कोबी, टमाटर ओ मटरक छीमी लहराइत। मिट्ठोवाली पर्यन्त मिर्दंगिन बुनय लागि गेलीह।

नारी-समाज ई नव जागरण केवल घर धरि सीमित नहि रहल। बाहरो ओकर किरण प्रस्फुटित होमय लागि गेल।

एक दिन पंच लोकनि दलान पर बैसल रहथि। देखै छथि जे समौलवाली मोहम्मादि गामने खेतमे मोड़ापर बैसि धान कटा रहल छथि। ई देखैत पंडितजीकेँ खिसि देलकैन्ह। बजलाह—आब गाममे अकरहर भऽ रहल अछि।

काशीनाथ कहल—घरमे पुरुष,पात नहि छैन्ह। तँ स्वयं कटबा रहल छथि। एहिमे दोष कोन।

पं० जी बजलाह—सैह छलैन्ह त दोग-दागसँ कटबा लितथि। एना बीच ठामहुँमहोखा जकाँ बैसि कऽ पुरुषक छाती पर मूँग किऐक दलैत छथि।

काशीनाथ कहलथिन्ह—ग्रामसेविका....

ग्रामसेविकाक नाम सुनतहि पं० जीक कोधाग्नि भड़कि उठलैन्ह। हुनका पहिने घर-घरसँ नेओत पड़ैत रहै छलैन्ह। विमला देवीक ऐलासँ बहुत किछु कम्म

भऽ गेलन्हि। एहि डरें ओ खौंझाएल रहैत छलाह। बजलाह—गाममे तेहन ने बाढ़ालिन आइलि अछि जे आब एकोटा धर्म-कर्म एहि गाममे नहि रहय देत। एतबा दिनक संचित मर्यादा आब नालीमे बूड़ल जा रहल अछि।

वैद्यजी ग्रामसेविका पर विशेष प्रसन्न नहि छलाह। कारण जे विमला देवी बभनटोलीसँ लय मुसहरटोली धरि घर-घर जा का स्त्रीगणकेँ मुफ्त दबाइ दऽ अबैत छलथिन्ह। कतेक युवतीकेँ इंजेक्शनो देनाइ सिखा देने छलथिन्ह। एहि सभसँ वैद्यजीक आमदनी मारल जाइ छलैन्ह। ओ फुफकार छोड़ैत बजलाह—सभ फसादक जड़ि थीक ई ग्रामसेविका। वैह केँचुआ सभकेँ फूकि फूकि साँप बना रहल अछि। जौं किछु दिन और एहि गाममे रहि गेल त हमरा लोकनिक निर्वाह हैब कठिन।

फुदन चौधरीकेँ अपना घरक मर्यादा पर गर्व छलैन्हि। बजलाह—जौं हमरा घरक स्त्री एना करय त गरदनिमे ...

एतबा कहैत कहैत चौधरी जी एकाएक चिहुँकि उठलाह। जेना सहसा बिजलीक धक्का लागि गेल होइन्ह। सड़कक कात कोल्हुआरमे हुनक स्त्री स्वयं ठाढ़ भऽ कऽ युवक नेकी बनबा रहल छलथिन्ह। चौधरीजी चुप्प भऽ गेलाह।

वैद्यजी पं० जी दिस आँखि मारलथिन्ह। पं० जी बजलाह—'कलिकाल जे ने कराबय।' वैद्यजी उत्तर देलथिन्ह—'कलिकाल की करतैक। हमरा आङनमे कथमपि एना नहि भऽ सकैत अछि।'

परन्तु वैद्यजीक गर्व होइत देरी नहि लगलैन्ह। कारण जे जेसन ओ पं० जीक संग सड़क पर ऐलाह कि देखै छथि जे वैदाइन अपना पाँच वर्षक बच्चाकेँ आङुर धरा कऽ स्कूलमे नाम लिखाबय लऽ जा रहल छथि। वैद्यजी अनठा कऽ दोसर बाट धऽ लेलन्हि।

पं० जी मुस्का उठलाह। हुनका विश्वास भऽ गेलन्हि जे ग्रामसेविका सभ स्त्रीकेँ बहुरा बना देलकैन्ह। केवल हुनके पण्डिताइन टा बाँचल छथिन्ह। एहि विचारसँ प्रसन्न होइत पं० जी अपना दलानमे ऐलाह त स्तम्भित रहि गेलाह। पंडिताइन दरबाजा पर ठाढ़ि भेल अपना समधिसँ निर्धोख गप्प कऽ रहल छलीह। पं० जी केँ देखि सलज्ज लाल स्वरमे बजलीह—देखू, कलीकान्तक समधि बैसल छथि। आउ अपन दुनू गोटा गप्प करू। हमरा आङनमे काज अछि।

पं० जी ई दृश्य देखि अवाक् रहि गेलाह।

●

एक दिन सम्पूर्ण गामक लोक आँखि खोलि कऽ देखि लेलन्हि जे नारी-समाजक

सामूहिक शक्ति केहन होइ छैक। विमला देवीक नेतृत्वमे गामक समस्त बेटी-पुतहु आँचर कसने श्रमदान द्वारा महिला-पुस्तकालयक नेव देयब आ रहल छथि। बूढ़ लोकनिक मुँह तेहन भऽ गेलैन्ह जेना केओ चिरैताक काढ़ा पिया देने होइन्ह। बूढ़ी लोकनिकेँ बूझा गेलैन्ह जे आब जंतसाइ-पिसनाइ ओ ढील हेरनाइ गेल। किन्तु एहि प्रवाहकेँ रोकब असंभव छल।

थोड़बे दिनमे 'महिला-सदन' तैयार भऽ गेल। जे बात स्वप्नोमे विश्वास करबा योग्य नहि छल से आब प्रत्यक्ष होमय लागल। बुचीलीवाली नित्य अखबार पढ़य लागि गेलीह। पंडिताइन आ वैदाइन ग्रामसुधारक योजना बनाबय लगलीह। बरहरबानाली ओ भगराइनवाली समाजवाद पर बहस करय लगलीह। सनौतावाली तानपुराक सुर चढ़ाबय लगलीह। मुन्नीमा ओ खुटौनावाली बैडमिंटन खेलाय लगलीह।

दुइए वर्षमे गामक कायाकल्प भऽ गेल। तेहन उत्साहक लहरि आयल जे फूबन चौधरीक भावहु स्कूलमे मास्टरी करय लगलीह, वैदाइनक बेटी नर्तक काज सीखय लगलीह और पण्डिताइनक पुतहु रेडियो मे जा कऽ गाबय लगलीह।

ग्रामसेविका नारी-समाजक उन्नति देखि पुलकित भऽ उठलीह। एतबा कम दिनमे एहन क्रान्ति। हुनका आशातीत सफलता भेटल छलैन्हि। जेना ककरो रोपल कलम दुइये वर्षमे फरय लागि जाइक, तेहने आनन्दसँ हुनक हृदय भरि गेलन्हि। परन्तु आइ ओ अपन उद्यानकेँ छोड़ि कऽ जा रहल छथि। हुनक दोसर इलाकामे बदली भऽ गेल छैन्ह।

आइ विमला देवी गामसँ विदा भऽ रहल छथि। ताहि उपलक्ष्यमे सभा आयोजित अछि। पुरुषोसँ बेसी महिलाक संख्या देखबामे अबैत अछि। आबाल-वृद्धवनिता सभक आँखिमे नोर भरल अछि। जेना कोनो बेटी सासुर जा रहल हो। अथवा मन्दिरसँ प्रतिमाक विसर्जन भऽ रहल हो। नवयुवती सभ विमला देवीकेँ फूलक माला पहिरौलथिन्ह। युवक लोकनि मानपत्र देलथिन्ह। वृद्ध लोकनि दूर्वाक्षत लय आशीर्वाद देलथिन्ह। वृद्धागण खोँइछ देलथिन्ह। सभसँ वयोवृद्ध छलीह पंडितजीक पितामही। ओ कहलथिन्ह—बेटी, तोहर गुण हमरा लोकनि कहियो नहि बिसरब। आँखि निपट्ट छल। से तोँ आबि कऽ खोलि देलह। भगवान तोहर कल्याण करथुन्ह।

विमला देवी अत्यन्त नम्रता ओ शालीनतापूर्वक उत्तर देलथिन—हम अहीँ लोकनिक बेटी थिकहुँ। सेवा करब हमर धर्म थीक। हम केवल अपना कर्त्तव्यक पालन कैलहुँ अछि। एहिमे हमर बड़ाइ कोन। सफलताक श्रेय अहीँ लोकनिकेँ

अछि जे सभ गोटा मिली कऽ हमरा सहयोग दैत गेलहुँ। अहाँलोकनि हमरा जे स्नेह प्रदान कैलहुँ से हम जीवन भरि स्मरण राखब। एहि अधिकार पर हम एक वस्तु मँगैत छी। एहि गाममे जे ज्योति जागल अछि तकरा मिझाय नहि देब। यैह हमर सभसँ बड़का विदाइ थीक।

लोकक आँखि भरि ऐलैक। भगवान करथु घर घरमे एहने विमला सन बेटी होथि। गामक बेटी पुतहु श्रद्धापूर्वक विमलाक आरती उतारय लगलीह। एक युवती हारमोनियम पर सगदाउनि उठौलन्हि।

ताहीकाल टमटम सँ उतरलाह अवधु बाबू। वैह बाबूक बड़का भाय, जे आइ तीन वर्ष पर कामाख्यासँ आबि रहल छथि। स्त्री पुरुषक एहन अद्भुत अभूतपूर्व सम्मेलन देखि ओ क्षुब्ध भय किछु काल आँख फाड़ि तकैत रहलाह। एहिठाम एना भैरवी-चक्र किऐक लागल अछि। पुनः अपन आँखि-कान टोएलन्हि जे कतहु धोखा त ने भऽ रहल अछि। फेर अपन माथ ठोकलन्हि जे कतहु गड़बड़ त ने अछि। तखन पौत्र केँ सोर कैलन्हि—की हौ, बुच्चुन छऽ हौ ? तोँ से गाम बताह भऽ गेल अछि कि हमहीं बताह भऽ गेल छी।

बुच्चुन पैर छुबैत कहलथिन्ह—बाबा, एकी शब्द बजियौक नुनि। आबे गाम सम्मत भेल अछि।

■

तिरहुताम

(ई कथा 'वैदेही' (जुलाइ, ५६) मे छपल आ तत्पश्चात् 'पर्जरी' मे संगृहीत भेल।

अपन जातीय संस्कारमे बहुत रास एहन वस्तु अछि, जे आधुनिक संदर्भमे अप्रासंगिक आ निरर्थक तँ भए गेल अछि, हमरा सभक पछुआयल रहबाक प्रमाणो मानल जा सकैत अछि। ई कथा ओहन निरर्थक होइत परम्परागत प्रवृत्ति पर समधानि कऽ चोट करैत अछि, आ पाठककेँ सोचबाक लेल एकटा ठोस प्रश्न दऽ दैत अछि। अपन संदेशमे बहुत स्पष्ट आ सपाट होइत कथा मनोरंजक स्थिति सभसँ साक्षात्कार करबैत अन्तमे पाठकक सोचकेँ उकसबैत अछि।)

हमरा पुर्णियाँ जेबाक छल। परन्तु जे गाड़ी ७ बजे साँझमे कटिहार पहुँचबाक रहय से पहुँचल ६ बजे रातिमे। परिणाम ई भेल जे कनेक्शन छुटि गेल। अब भोरमे ५ बजे गाड़ी भेटत। राति भरि एतहि स्टेशनमे रहय पड़त। अगत्या वेटिंगरूमक बाट धैलहुँ। कुली माथपर ट्रंक-बिस्तर लऽकऽ पाछाँ पाछाँ चलल।

एतबहिमे एक विशालकाय सज्जन हमरा ठिकिया कऽ ताकय लगलाह। ओ हमर नाम पुछलन्हि और पुर्णियाँ जेबाक बात बुझि अपना आदमीकेँ हुकुम देलन्हि—रौ मलंगवा, तकैं की छैं? कुलीसँ सभटा वस्तु छीनि ले।

हमरा बकर-बकर मुँह तकैत देखि ओ बजलाह—अपने हमर सम्बन्धी थिकहुँ। अपनेक भाग ओ हमर पीसि द्दूनू साक्षात बहू। तखन हमरा कटिहारमे रहैत अपने भरि राति वेटिंगरूममे सुती, ई कतहु होय।

हम लाख अनुनय-विनय कैल, परन्तु सभटा व्यर्थ भेल। ओ कहय लगलाह—हम कटिहारमे ठीकेदारी करै छी। अपनो मकान बनि रहल अछि। बड़ भाग्यसँ अपनेक पदार्पण भेल अछि। अब चलिकऽ ओहि स्थानकेँ पवित्र कऽ दिऔक।

ओ पुनः अधिकार पूर्ण स्वरमे अपना आदमीकेँ आदेश देलन्हि। आदमियो तेहन जबर्दस्त छल जे तुरन्त सभटा वस्तुजात उठा कऽ काँध तर पजिया लेलक।

हमरा प्रतिवाद करबाक शक्ति कुंठित भऽ गेल। तथापि विनम्र स्वरेँ कहलिऐन्ह—भोरगरे पाँच बजे ट्रेन पकड़बाक अछि तेँ एहिठाम वेटिंगरूममे——

ओ बात कटैत बजलाह—राम-राम। एहिठाम वेटिंगरूममे रहब। ई हमरा अछैत नहि भऽ सकैत अछि। पाँच बजेक कोन कथा, हम चारिए बजे गाड़ी पर बैसा देब।

हम पुछलिऐन्ह—अपने कतवा दूर पर रहै छी।

ओ बजलाह—दूर किछु नहि। एहिठामसँ दु डेग छैक। ओहिठाम पाँचषि सिद्ध पाउर भेटत। निश्चिन्त भऽ अपना मड़ैयामे सूतब। और एहिठाम कटिहारमे आबि कऽ भला गाड़ी छुटि जायत। साठीक हाथे रोकि लेबैक।

हुनका स्वरमे तेहन आत्म-विश्वास भरल रहैन्हि जे पुनः किछु पुछब उचित नहि बुझि पड़ल। ओ आदमीकेँ हुकुम देलन्हि—तों आगाँ बढ़ि कऽ डीबा कऽऽ रख। हम हिनका नेने अबै छिऐन्ह।

ओ आदमी आगाँ बढ़ि गेल और हम हुनका पाछाँ-पाछाँ चलय लगलहुँ। जखन एक-डेढ़ माइलक करीब चलल भऽ गेल तखन हम विनय पूर्वक कहलिऐन्ह—एकटा रिक्शा कऽ लेल जाइत त नीक होइत।

ओ बजलाह—आब त पहुँचि गेलहुँ। दूर रहितैक त हम स्टेशन पर रिक्शा नहि कऽ लितहुँ।

आब हम की करू। चुपचाप हुनक पदानुसरण करय लगलहुँ। जखन पुनः एक-डेढ़ माइल भऽ गेल, तखन ओ आश्वासन देमय लगलाह—बैह जे अगिला लालटेन आगू देखैत छिऐक, ओहिसँ सटले गलीमे अपन मकान अछि। बस एक पौआ बुझू।

अन्ततोगत्वा हमरा लोकनि एक उबड़-खाबड़ गलीमे प्रवेश कैल। ओ बजलाह—आब आबि गेलहुँ। कनेक बचा कऽ चलल जाय।

हम टार्च लेसि कऽ देखल त सामने मेघ पड़ल छलैक। यदि एको डेग आगाँ बढ़ितहुँ त ओहि खाधिमे चलि जैतहुँ।

घरैया बजलाह—मकान एखन बनिये रहल अछि। दु कोठरी पर छत पीटल छैक, दु टा पर बाँकी छैक, मानस-घरक दीवार आधा तैयार भेल छैक और एहिठाम पैखानाक मेघ देल गेल छैक।

हम हुनका पाछाँ-पाछाँ खाधिकेँ टपैत, ईंटा-सुर्खीक बीच दऽ कऽ बालु-चूनक ढेरी बचबैत, ओहिठाम पहुँचलहुँ जहाँ राज मिस्त्री बाँस ठाढ़ कैने छल। वैह मचान मकानक प्रवेश-द्वार छल। हमरा लोकनि बाँसक सर बाझ निहुरा भीतर कोठलीमे गेलहुँ जे एखन तैयार होइत छल। तकरा पार कय हम सभ एक कोठलीमे ऐलहुँ जाहिमे फर्श पीटक हेतु रोड़ा-गिट्टी बिछाओल छलैक। एकटा चौकी ओहिमे राखल छलैक। ताही पर ओछाओन ओछाओल छल। एक कोनमे लालटेन मद्धिम प्रकाशसँ जरि रहल छल।

गृहपति अपना आदमीकेँ सोर कैलन्हि—रौ मलंगवा, पानि ला।

मलंगवा एक बाल्टी पानि लऽ कऽ पहुँचल। चौधरीजी कहलथिन्ह—रौ, लोटा आन, अढ़िया आन, अङपोछा आन, पैर धोआ पहुन।

मलंगवा दौड़ि कऽ लोटा अङपोछा लऽ अनलक। चौधरीजी कहलथिन्ह—रौ अढ़िया कतय छौक।

मलंगवा कहलकैन्ह—अढ़ियामे त दालि चढ़ल छैक।

चौधरीजी कहलथिन्ह—तखन एकटा थारिए लऽ आन। ई कुटुम्ब थिकाह! एतबो नहि बुझैत छहीक।

हुनकर इशारा पबितहि मलंगवा हमरा हाथसँ लोटा छीनि लेलक। ओकरा सरी खेलाएल देह छलैक। तेहन झटकासँ हमर एकटा पैर खीचि कऽ उठौलक जे हम तलमलाइत-तलमाइत खसय लगलहुँ। परन्तु लगमे पाया छलैक, ताहिसँ बाँचि गेलहुँ। मलंगवा हमर तरबा तेना रगड़ऽ लागल जेना सईस घोड़ाकेँ रगड़ैत अछि। हमरा शरीरक सन्तुलन राखब कठिन भऽ रहल छल। परन्तु ओहि हर-खुट्टाकेँ तकर कोन परवाहि। ओ बहुत दिनपर मौका पाबि अपन कलाक प्रदर्शन कऽ रहल छल।

प्रायः दस मिनटमे जखन ओकरासँ छुटकारा भेटल तखन हम कानपर जनउ चढ़ा लोटा हाथमे लेल। चौधरीजी बतलाह—पैखाना एखन नहि बनलैक अछि। ता ओहि पजेबाक ढेरी लग एकटा टाट ठाढ़ करबा देलिऐक अछि। रौ मलंगवा। लोटा लऽ जाहुन।

मलंगवा फेर हमरा हाथसँ लोटा छिनलक और टटघरा लग हमरा पहुँचा कऽ फिरि आएल। हम अन्हारमे टौर्च लऽ कऽ देखलिऐक तँ दू टा ईंट बैसाओल रहैक। तकरा बीचमे प्रायः केओ खूब पाकल कटहर खा कऽ गदी फेकने रहए। तेहन दु'गी-धाक अभर्कत छल जे नाक देब कठिन। परन्तु एहनो स्थितिमे दोसर साध्ये की

छल। लोटा रखबाक स्थाने नहि भेटल, हाथमे रखने रहलहुँ। ता अन्धकारमे टाटक बीचमे किछु चमकि उठलैक। टौर्च लऽ कऽ देखैत छी त एकटा छुआएल गहुमन मुँह बौने तकैत अछि। हम टौर्च-लोटा लेनहि पड़ैलहुँ।

ओम्हर खवास साबुन-तौलिया लेने ठाढ़ छल। समाचार सुनि बाजल—एहिठाम पजेबाक ढेरीमे साँप सहसह करैत छैक एहु कोठरीमे काल्हिए राति डेढ़ हाथक केँचुआ बहराएल रहैक।

आब सिवाय इष्ट देवताकेँ स्मरण करबाक उपाये की छल।

हम एही गुन-धुनमे चौकीपर पड़ल छलहुँ कि दोसरा कोठरीसँ शब्द सुनाइ पड़ल—

—भात, दालि, आलूक तरकारी, परोरक भुजिया आर आमक चटनी भेल अछि।

—अरे एतबा त सब दिन होइत अछि। ई कुटुम्ब देवता ने आबि गेल छथि।

—तखन तिलौरी सेहो छानि दैत छिऐन्ह।

—कम-सँ-कम सात टा तरकारी होमय चाहिऐन्ह। दू-तीन प्रकारक तरुओ कऽ दिऔन्ह।

—तखन भाँटा, कदीमा ओ तिलकोर तरि दैत छिऐन्ह। सात टा पुरि जैतैन्ह।

एक बाटी मे घृत देतैन्ह। एक टा मे दही। एक टा मे खोआ। बाँकि बाटी लगा कऽ एगारह टा पुरि जैतैन्ह।

—एतेक बाटी कहाँ सँ आओत। घरमे त चारिए टा अछि।

—सात टा बाटी मेस सँ मँगवा लियऽ।

—मेस त आब बन्द भऽ गेल हेतैक।

तखन मलंगवा केँ पठबिऔक। चौहान झा के उठा देतैन्ह। हमर नाम कहतैन्ह। ओम्हरे हलुआइक दोकानसँ दही मधुर सेहो नेने आओत। पान सेहो मँगा लियऽ। खोआक हेतु कम सँ कम एक सेर दूध कतहुँ ऊपर करय पड़त।

—एतेक राति कऽ दूध कतय भेटत।

—कुटुम्बवाली बात। एक रातिक हेतु ऐलाह अछि। खोआ नहि देतैन्ह त सबमे की कहताह। एक बात करू। मलंगवाकेँ कहिऔक जे भोटकी मोदिआइन-वाली गायकेँ दुहि कऽ नेने आओत। जतबे होइक।

—परन्तु ओ त मरखाहि छैक। लथार मारतैक।

—हे जे ही । ई गुड़ खैने काम छेदैने । मर्यादाक पालन त करहि पड़त । हम

अपनहि जा रहल छी ।

ई वार्तालाप सुनितहि हमरा आकाशक तारा सूझय लागल । साहसपूर्वक सोर

कैलिऐन्ह—चौधरी जी, कनेक सुनल जाओ ।

चौधरी जी आबि कऽ उचिती करय लगलाह—अनेक भोजन में किंचित्

विलम्ब भऽ गेल । कारण जे आइ अपन गाय पिया गेलैक । दोसर ठाम सँ दूधक

प्रबन्ध भऽ रहल अछि ।

हम कहलिऐन्ह—दूध छोड़ि देल जाओ । हमरा पचिती नहि अछि ।

ओ बजलाह—भला कहु त । ई किन्हहु भऽ सकै अछि । अपने एक दिनक

हेतु संयोग सँ आबि गेल छी ।

हम प्रार्थना कैलिएन्ह—हमरा आमाशय पचाइल छल । दूध अपकार करत

ओ बजलाह—एकै रत्ती खोआ मुँह मे दऽ देबैक । विधि भऽ जेतैक । फे

अपने काढ़िया भेटब ।

ई कहैत ओ तेजी सँ बहरा गेलाह ।

हम मनमे कहल—आइए सभटा विधि पुरा लिऽ । कनेको क सरि नहि

राखू । फेर के जाने कहिया अवसर भेटय ?

घड़ी बेबल एगारहु बाजि रहल अछि । हम मन मारि कऽ पड़ि रहलहुँ ।

जखन निसभेर सूतल रही तखन चौधरी जी आबि कऽ उठौलन्हि-उठल जाओ

भोजन प्रस्तुत अछि ।

हम आँखि मिड़ैत उठलहुँ । घड़ीक दुनू सूइ एक पर रहय । फेर धोबय

गेलहुँ त चौधरीजी अपने हाथमे लोटा नेने ठाढ़ । हमरा किन्नहुँ अपना हाथे पानि

ढारय नहि देलन्हि । हमरा आसन पर बैसाय अपने पता लऽ कऽ बैसलाह । हम

कहलिऐन्ह—अपनहुँ संग बैस जाय ।

ओ बजलाह—हम पाछाँ कऽ भोजन करब ।

हम देखल, बेस आडम्बरपूर्वक सँचार लागल अछि । एगारह टा बाटी

बड़का थारमे डेढ़ सेर चाउरक भात परसल अछि ।

हम निवेदन कैलिऐन्ह—हम एकर चरिआँशो नहि खा सकब । एकटा बासन

मँगाओल जाय । हम अपना योग्य राखि बाँकी बाहर कऽ देबैक ।

परन्तु ओ कथमपि राजी नहि भेलाह । बजलाह—ई त परदेशमे किछु

नहि भऽ सकत । घर रहितय त अलबत्त किछु ओरिआओन होइत । यदि एहुमे

अपने छोड़ि देबैक त हमर अभाग्य ।

एहना स्थितिमे की कैल जाय ? हमरा बतबा सकक लागल तखना भोजन

कय चूर लेबय लगलहुँ । तावत् ओ कसि कऽ हमर हाथ धऽ लेलैन्हि-ई की करै

छिऐक अपने ? एखन त केवल नैवेद्य टा खोटल भेल अछि । अपने भोजन कहाँ कैल

अछि । सभटा त पड़ले अछि । और भात सनियौक । अन्न महग छैक । एना दूरि

नहि करिऔक ।

जे बात हमरा कहक चाही से जेह करि देलन्हि । आब हम की करू ? हम

कनेक भात और दही सनलहुँ । ओ बजलाह—दही नहि छोड़बाक चाही । सभटा

सनियौक ।

हम कोनो-कोनो तरहेँ ओतबा दहीकेँ सधाओल । यावत् हम पानि पिबय

लगलहुँ तावत ओ बाम जकाँ झपटि कऽ ओतबा दही और हमरा आगमे उझीलि

देलन्हि ।

हमरा आँखिक आगाँ अन्हार भऽ गेल । ई सहजमे पिंड छोड़यबला व्यक्ति

नहि छथि । हम कलपैत स्वरसँ कहलिऐन्हि—आब नहि चलैत अछि । क्षमा कएल

जाओ ।

ओ सरोष—एहनो कतहु क्षमा होइ ? दही त पाचक होइत अछि ।

हम सभय कहलिऐन्ह—कनेक नोन मँगा दियऽ ।

ओ बजलाह—भला कहु त, से कि घरमे चीनी नहि छैक ? हो चीनी

बहुत ।

हुनक आज्ञाकारी भजनीया एक लप चीनी दही पर उझीलि देलन्हि

हमरा हक्क-बक्क किछु ने फुरय जे की करी । परन्तु बेसल ते बिना खैने उपाय

नहि । तीन-तीन [illegible] ठाढ़ छथि । एहना स्थितिमे उठि कऽ पड़ाएब सम्भव नहि ।

अगत्या आँगुरसँ दही लगा कऽ चाटय लगलहुँ ।

चौधरी बजलाह—खोना मधुपर्क की करै छी ? सपासप खैयौक ।

हम जान अवधारि कऽ कोनहुना सभटा दही उदरस्थ कय जहिना उठय चाहै

छी कि परसैया पैनहि हमर गट्टा—ओतेक परिश्रमसँ खोआ बनल अछि से अपने

छुइओटा नहि कैलिऐक ।

हमर प्राण कंठगत होमय लागल । आब हम खोआ की खायब ? खोए हमरा

खा जायत ।

परन्तु ओ टस सँ मस नहि भेलाह । कहलाह—मायाक कतहु अनादर कैल जाय । ई सभटा खाय पड़त ।

ई कहि खोआक वट्टा ओ हमरा थारीमे उलटा देलन्हि । हमरा मनमे आएल जे आब भोकारि कऽ कानी । परन्तु के सुनैत । धरवैयाक एहन सन क्रम जे कोना नहि खाएब त जबर्दस्ती कौरी लगा कऽ खोआएल जाएत । आखिर कुटुम्ब छी कि ठट्ठा ?

हम बलिदानक बकरा जकाँ बाध्य भऽ खोआ मुँहमे देबए लगलहुँ । प्रत्येक कौरमे बुझि पड़य जे आब वान्ति भऽ जाएत, आब वान्ति भऽ जाएत ।

तावत् गृहपति एक थारी मधुर आनि हमरा आगाँमे उझीलि देलन्हि । कहलाह—आब मधुरेण समापयेत् ।

हम देखलहुँ जे आब 'समापयेत' क अर्थ अपनाकेँ 'समापयेत्' । एककेटा रस गुल्ला बमगोलाक काज करत । ईत आठ टा अछि । आइ हमर अर्थीए एहि नवका मकानसँ उठत ।

हम भगवानकेँ गोहराबय लगलहुँ । ता एकटा युक्ति फुरि गेल । हम कहलहुँ—यदि घरमे कोनो पाचक हो त...

एतबा सुनितहि तीनू गोटा दौड़ि कऽ भंडार दिस गेलाह । तावत् हम सभ टा रसगुल्ला चुपचाप खिड़कीक बाहर फेंकि देल ।

गृहपति लवणभास्कर लऽ कऽ ऐलाह त मधुरकेँ निःशेष देखि सन्तोषक श्वास छोड़लन्हि । कहलाह—लियऽ, आब एहि जोरपर थोड़ेक आम कटहर सेहो भऽ जाय । हौ, कहाँ गेलह ?

परन्तु तावत् और यमदूत सभ आबय-आबय ता हम हाथ पैर छाड़ि पड़ि गेल छलहुँ । अस्तु । गृहपति हमरा सुतबाक प्रबन्ध कय स्वयं भोजन करय गेलाह ।

हमर जी अकबक रहय । बड़ी कालधरि कच्छमच्छ करैत रहलहुँ । बाह्य भूमि दिस जैबाक वेग बुझि पड़य, परन्तु सर्प-भयसँ बहरैबाक साहस नहि पड़ल । अन्न पचाबक हेतु कोठरीमे एम्हरसँ ओम्हर टहलय लगलहुँ । दु चारि बेर लवणभास्कर खा कऽ पानि पिलहुँ । ई सभ करैत करैत अढ़ाय बाजि गेल । तखन जा कऽ आँखि लागल । जखन एक निन्द सूति कऽ उठलहुँ त देखैत छी जे साढ़े चारि बाजि रहल अछि ।

केवल आध घंटा ट्रेनमे देरी अछि और स्टेशन दूर । आब जल्दी विदा हैबाक चाही ।

परन्तु मकानमे ककरो आहटि नहि बुझि पड़ल । हम गर्द कैल—चौधरीजी ! बाबाजी ! मलंगवा ! परन्तु कोनो उत्तर नहि भेटल । हम चारू कात खोजि कऽ देखल । ककरो पता नहि ।

अगत्या रिक्शाक खोजमे विदा भेलहुँ । परन्तु ओहिठाम एकोटा रिक्शा, टमटम वा कुली नहि भेटल । खाली रहितहुँ त पैदलो झटकि कऽ चलि जैतहुँ । परन्तु एतबा समान लऽ कऽ एतेक दूर कोना जाइ ?

हम एहि पेशोपेशमे पड़ल छलहुँ कि बाबाजी देखाइ पड़लाह । हाथमे चायक चुक्कियाँ—की औ बाबाजी ?

ओ कहलाह—मालिक कहलन्हि अछि जे बिना चाह पिऔने नहि जाय देबैन्ह । तेँ आँच जोड़य आ रहल छी ।

हम कहलिऐन्ह—हमरा ट्रेन पकड़बाक अछि अछि । जल्दी सँ रिक्शा आनि दियऽ ।

ओ कहलाह—एहिठाम लगमे सवारी नहि भेटत ।

हम कहलिऐन्ह—मलंगवा कतय अछि । ओकरे कहियौक पहुँचा देत ।

ओ कहलाह—ओ दूध लाबऽ गेल अछि । अहाँक चाह खातिर ।

हम पुछलिऐन्ह—एहिठाम कुली भेटत ?

ओ कहलाह—एखन एकोटा नहि भेटत । छौ बजे जन-मजदूर अबै अछि । तखन जनेक चाही ।

हम पुछलिऐन्ह—मालिक कहाँ छथि ?

ओ कहलाह—अहाँक खातिर इन्जिनियर साहेबसँ मोटर मँगनी करय गेल छथि ।

आब एहना स्थितिमे हम की करू ? चुपचाप ठाढ़ भऽ कऽ घड़ीक प्रगति देखय लगलहुँ । मिनटवला सुई क्रमशः ८ पर जाबि गेल । आब केवल २० मिनट समय अछि । ई गाड़ी छूटि जाएत त फेर १२ बजे धरि कोनो ट्रेन नहि । तखन त सभाक समय धरि पुर्नियाँ पहुँचिओ नहि सकब ।

सैह सोचैत छलहुँ कि मलंगवा धूम भऽ कऽ अबैत दृष्टिगोचर भेल । हम कहलिऐक—हौ, स्टेशन पहुँचा दैह ।

ओ बाजल—मालिक हवागाड़ी लऽ कऽ अबैत हैताह । सैह स्टेशन पहुँचा देताह ।

पौने पाँच बजे चौधरीजी मोटर लेने पहुँचलाह। हमरा कतहुँसँ की मे जी आएल। हम मलंगबाकेँ कहलिऐक—सामान लाद।

चौधरीजी बजलाह—अपने स्थिर रहू। एखन १५ मिनट देरी छैक। ५ मिनटमे पहुँचि जाएब। तावत् चाह पीबि लियऽ। गाड़ी पकड़बाक भार हमरा ऊपर।

हमर इच्छा नहियो रहैत हुनका डरेँ जल्दी-जल्दी तप्ते चाय घोँटऽ लगलहुँ। परन्तु ओ अभ्यस्त भऽ फूकि-फूकि कऽ चुस्की लेबय लगलाह। तखन निश्चिन्तता-पूर्वक मलंगबाकेँ समान लादबाक आदेश देलथिन्ह। ओहो कोहबरक वर जकाँ नहुँ-नहुँ डेग दैत चलल।

एहन दीर्घसूत्रता देखि मनेमन त बहुत क्रोध भेल। किन्तु बाजू की?

चौधरीजी केँ कहलिऐन्ह—हम बड़ी कालसँ तैयार छी।

ओ बजलाह—एहि ठामसँ दू डेग स्टेशन। हम सभ त दिनमे चारि बेर भऽ अबै छी। परन्तु अपने राति एतबे दूरमे थाकि गेलहुँ। तेँ हम अनरोखे उठि कऽ गाड़ीक बन्दोबस्तमे निकलि गेलहुँ।

हम कहलिऐन्ह—कोन काज छलैक? हम रिक्शा सँ चलि जइतहुँ।

ओ बजलाह—भला कहू त। तखन दोस्तक गाड़ी रहने कोन फल? आब एहिसँ विशेष पाहुन के भेटताह!

जखन मोटर स्टार्ट भेल त पाँच बजबामे केवल पाँच मिनट बाँकी रहैक। हमर उद्विग्नता देखि चौधरीजी बजलाह—अपने कोनो चिन्ता नहि करू। यदि कटिहार स्टेशनमे गाड़ी छूटि जाएत त हम सात बर्खसँ एहिठाम ठीकेदारी किऐक करैत छी?

हम घड़ी दिस ताकब छोड़ि देल। जा कटिहार स्टेशन पर मोटर पहुँचय-पहुँचय ता ट्रेन फक-फक धुआँ छोड़ैत प्लेटफार्म के पार कए चुकल छल।

चौधरीजी बजलाह—आह! केवल दू मिनटसँ गाड़ी महारानी छूटि गेलीह! स्टेशन पर घरितिऐन्ह त देखितिऐन्ह जे कोना छुटै छथि।

आब एहिपर हम की टीका टिप्पणी करू? कुली केँ कहलिऐक—वेटिंगरूम लऽ चलो।

चौधरीजी बजलाह—आब त १२ बजेसँ पहिने अपने केँ कोनो ट्रेन नहिए भेटत। एतबा काल स्टेशन पर बैसि कऽ की करब? चलल जाओ, ओहिठाम स्नान भोजन विश्राम कय साढ़ेबज्जी ट्रेनसँ विदा भए जायब।

पुनः कुली केँ डटैत कहलथिन्ह—रौ, समान फेर मोटरमे धर।

आब हमरा नहि रहि भेल। चौधरीजीक चरण पर खसैत कहलिऐन्ह-आब हमरा पर दया कैल जाओ। हमर जान बकसि देल जाओ। अपने हमरा हेतु बड़ कष्ट उठाओल। हम कृतज्ञता भारसँ थकि गेल छी। आब और भार पड़त त पिच कऽ मरि जाएब।

एतबा कहैत-कहैत हमरा आँखिमे नोर भरि आएल। चौधरी जी एक क्षण स्तब्ध रहलाह। पुनः विरक्तिपूर्ण दृष्टि सँ हमरा दिस तकैत बजलाह—बेस, त जाउ। हम सम्बन्धी जानि जहाँ पर जे अपन अधिकार बूझल से अपराध कैल।

ई कहि ओ बिना नमस्कारे कैने मोटर पर बैसलाह और फुर्र भऽ विदा भऽ गेलाह।

हम किछु काल किंकर्तव्यविमूढ़ भऽ वेटिंगरूममे बैसल रहलहुँ। तदुपरान्त ई कथा लिखय लगलहुँ।

एखन दस बजे वेटिंगरूममे ई कथा समाप्त कय हम सोचि रहल छी जे चौधरीजीकेँ हमरा लऽ गेने कोन लाभ भेलैन्ह? और हमरे कोन लाभे भेल? उभय पक्षकेँ नितान्त कष्ट ओ असुविधा! अन्तमे सम्बन्ध सेहो टूटि गेल। एहिसँ कतहु नीक होइत जे रातिमे एतहि वेटिंगरूममे खा-पी कऽ आरामसँ सुतितहुँ। भोरे ट्रेनमे सवार भऽ एखन धरि पुर्णियाँ पहुँचि गेल रहितहुँ। हमरो सुविधा होइत, हुनको तरद्दुद नहि करय पड़ितन्हि। सामंजस्य सेहो कायम रहैत। ककरो कष्ट नहि होइतैक। सर्वोदयवला सिद्धान्त चरितार्थ होइत। परन्तु 'आचार' मे 'अति' लागि गेने 'अत्याचार' बनि गेल। ताही द्वारेँ हमरो कानय पड़ल और हुनको कानहि पड़ल हैतैन्ह।

हम पुछै छी, एहन विरहुआमसँ कोन फल?

△

टोटमा

(ई कथा सर्वप्रथम 'स्वदेश' (फरवरी' ४८) तथा 'आमक जनवरी', जकर नाम बाद मे 'अपन सुमन' भऽ गेल (सं० श्री योगानन्द झा) मे छपल आ तत्पश्चात् 'रंगशाला'मे 'अद्भुत टोटमा' शीर्षकसँ संगृहीत भेल। हिन्दी मे सेहो एकर अनुवाद भेल अछि। शुद्ध हास्य-कथाक एकटा नीक उदाहरणक रूपमे ई कथा राखल जा सकैत अछि। ओना कथाक [illegible] ओहि 'डाक्टर' क चरित्र पर आइल छैक, जकर प्रतिनिधित्व कथामे घूटरकका करैत छथि, यद्यपि व्यंग्यक स्वर सम्पूर्ण कथामे कतहु मुखर नहि भेल छैक आ ओ कथामे समग्र रूपसँ अन्तर्निहित रहैत छैक। मुदा प्रायः तेँ एही कारण लिक जे कथा हास्य-कथाक रूपमे बड़ शुद्ध, शिष्ट आ स्वस्थ प्रभाव छोड़बामे समर्थ भेल अछि।)

बहुत दिन पर परदेश सँ गाम अबैत रही। घरक हाल-चाल बुझना साल वर्ष भऽ गेल रहय। बुझितहुँ कोना? चिट्ठी-पत्री छाड़त तखन ने? परन्तु हम तँ कुशल रही। कहाँ-कहाँ घुमलहुँ रुपैयाक हेतु—जमशेदपुर, कलकत्ता, रंगून। और गाम घाटक पानि पीबि आइ पुन: देश जा रहल छी। अहाँ नूनूकका छथि, भाइ छथि, भौजी छथि, मुन्ना अछि। सभक लेल सनेस नेने जाइत छिऐन्ह। मुन्ना मोटर देखितहि नाचय लागत। भौजीकेँ साड़ीक कोर खूब पसिन्न पड़तैन्ह। भाइ ओ नूनूककाक आगाँ रुपैयाक मोटरी पटाक देबैन्ह जे लियऽ, आब भेल? एही खातिर दिन-राति महाभारत मचैत छल। आब त खुशी भेलहुँ?' पहिने चिट्ठि देने रहितिऐन्ह त स्टेशन पर गाड़ी अबैत। आब एकाएक हमरा देखि कऽ सभ गोटे अकचकाइ जैताह।

ईह सभ सोचैत, मनमे नाना प्रकारक भावना करैत चल अबैत छलहुँ। जखन ट्रेन बरौनी पहुँचल त मातृभूमि केँ मनहि-मन बन्दना कय कहल—आ भगवानक इच्छा होइतैन्ह त एके पहरमे अहाँक दर्शन भऽ जायत। एहि सात वर्षमे नहि जानि की की परिवर्त्तन भेल हेत? गाम पर के कोना अछि? कोनो गौआँ भेंट भऽ जाइत त सभटा हालचाल बुझि जइतहुँ।

हम ईह सोचैत छलहुँ कि देखाइ पड़लाह घूटर कका—झोरी, कम्मल ओ गंगाजलक सुराही हाथमे नेने, प्लेटफार्म पर दौड़ैत! जेना कोनो निधि भेटि गेल हो तहिना प्रसन्नता भेल। खिड़की सँ माथ बाहर कय सोर केलिऐन्ह—घूटर कका!

घूटर कका हमरा देखि चकित भऽ गेलाह—के? श्रीकान्त? हौ, तोँ कतय सँ? इह! कतेक दिन पर तोँ ऊपर भेलाह? एना केओ घर-द्वार छोड़ैत अछि?

हम प्रेमपूर्वक हुनक चरण-धूलि लऽ अपना लग बैसा कऽ पुछलिऐन्ह—कहू घूटर कका, सभ कुशल-मंगल छैक?

घूटर कका बजलाह— बड़ बढ़ियाँ। तोँ अपन कहह, कोना छलह? एकटा चिट्ठिओ-पत्री त कहियो दितहुन!

हम बात बदलैत कहलिऐन्हि—एखन कहाँ से आबि रहल छिऐक?

घूटर कका बजलाह—सिमरियाघाट गेल छलहुँ गंगाजल लेबक हेतु।

हम—कहू घूटर कका, वैदगिरी खूब चलैत अछि कि नहि?

घूटर—देहातमे की चलत? केओ कि दाम खर्च करऽ चाहैत अछि?

ई कहैत घूटर कका हमरा दिसि गम्भीर दृष्टिसँ तकलन्हि। जेना कोनो बात लक्ष्य करैत होथि। पुन: दोसर दिस ताकि एक दीर्घ निश्वास छोड़लन्हि।

हमरा हृदयमे धुकधुकी होमय लागल—रे बाप? की बात छैक?

पुछलिऐन्ह—घूटर कका, हमरा ओहिठाम सभ लोक निकेँ अछि किने? कोनो अनिष्ट घटना त नहि भेलैक अछि?

घूटर कका बटुआसँ तमाकू बहार करैत बजलाह—अहाँक घोड़ी मरि गेल।

हम—अहा! घोड़ी मरि गेल? हम कहैत छलहुँ जे एहि बेर गाम आएब त ओहि पर खूब चढ़ब। कोना मुइलैक?

घूटर०—दलानक पछुअतिमे बान्हल रहय। जखन दलानमे आगि लगलैक त ओहि संग ओहो जरि गेल।

हम—बाहि रौ बाप! हमर दलानो जरि गेल? से कोना?

घूटर०—जखन घरमे आगि लागल त दलानमे छड़ लेलकैक। जा लोक मिझाबय-मिझाबय ता साफ भऽ गेलैक। रातिक समय रहैक कि ने?

हम माथ पर हाथ दऽ कऽ निस्तब्ध रहि गेलहुँ। हाय रे कर्म! एतबा दिन घर घर जा रहल छी त आब घरे नहि!

शंकित चित्त सँ पुछलिऐन्ह—कोनो शोक त नहि नोकसान भेलैक ?

घूटर०—नहि। शोक नहि भरल। किएक त....

हम फक दऽ निसास छोड़ल। खैर, शोक त बाँचल। चीज-वस्तु, आन बचतैक त फेर भऽ जैतैक। परन्तु जौं मुन्ना....। ई सोचैत देह सिहरि उठल। पुछलिऐन्ह—की ? ई आगि कोना लगलैक ?

घूटर कका बजलाह—अहाँक नूनूककाक एकादशाह दिन जे दूध औंटल गेलैन्ह तकरे आगि...

ई सुनैत हमरा आँखिक आगाँ अन्हार भऽ गेल। ऐं ! आब नूनूकका कैं नहि देखबैन्ह ? हे भगवान ! हम केहन पापी भेलहुँ !

हमरा आँखि पोछैत देखि घूटर कका बजलाह—एना कैओ अधीर होअए ? जन्म-मरण त लोक कैं लगले रहैत छैक। एहि संसारमे कैओ जीबय आयल अछि ?

हम हिचकैत-हिचकैत पुछलिऐन्ह—हुनका की भेल छलैन्ह ?

घूटर०—कोनो तेहन रोग-व्याधि त नहि छलैन्हि। अहाँक भौजीक एकोदिष्ट कएने रहथि, ताहि दिन पेटमे तेहन दर्द उठलैन्ह जे...

—हाय ! हाय ! भौजी पहिनहि बिदा भऽ गेलीह ! आब बैंगनी कोरक ओ साड़ी के पहिरत ?

हम फफकि-फफकि कऽ कानय लगलहुँ। घूटर कका चुप करैत बजलाह—एना कैओ बताह होअए ? ओ लछमी छलीह। चलि गेलीह। जे दिन जिबितथि से त कष्टे होइतैन्हि !

हमरा मुँह पर विस्मयबोधक चिह्न देखि घूटर कका बजलाह—ओ त जहिये सँ विधवा भेलीह तहिये सँ...

आहि रौ बाप ! भैयो नहि रहलाह ! हम पुक्की पाड़ि कानय लगलहुँ। भैया-भौजी दूनू बिदा भऽ गेलीह। आब मुन्ना कैं के रखने हैतैक ? कोना हैत ?

बड़ी काल धरि नोर-झोरक आवेग सँ बाजि नहि सकलहुँ। ओम्हर घूटर कका निर्विकार भावेँ तमाकू चुनबैत रहलाह। कतेक काल पर कोनहुना घड़घड़ाएल कंठसँ पुछलिऐन्ह—मुन्ना कोना अछि ?

घूटर कका ठोरमे तमाकू रखैत बजलाह—ओकर शोक मे त अहाँक भा मुइलाह। कोना ने होउन्ह ? ने खेगाई ने पिगाइ ..

हम निष्पन्द रहि गेलहुँ। जे अन्तिम बन्धन छल सेहो टूटि गेल। भैया, भौ नूनूकका, मुन्ना सभ समाप्त ! आब ककरा खातीर गाम जाउ ? और जा

की देखब ? संसारे उजड़ि गेल ! ने ओ राम ने ओ अयोध्या ! आब के मोटर पाबि नाचत ? के साड़ी देखि कऽ खुशी हैत ? ककरा पर स्नेहक अभिमान करबैक ?

तावत् गामक स्टेशन पहुँचि गेल—समस्तीपुर जंकशन। हम छाती कैं बज्र कऽ बजलहुँ—घूटर कका, हम त आब सोझे हरिद्वार जायब। सन्यासी कैं रुपैया पैसा सँ कोन काज ? अहाँ ई मोटरी लऽ लियऽ और तास-खासे हुनका लोकनिक निमित्त ब्राह्मण-भोजन करा देल करबैन्ह।

घूटर कका पुनः हमरा दिस गम्भीर दृष्टि सँ तकलन्हि जेना किछु लक्ष्य करैत होथि। पुनः बजलाह—हैं ठीक, आब उतरह।

हम अनुरोध करैत कहलिऐन्ह—अहाँ कैं एकोरत्ती दया नहि होइत अछि ? हमर घर उजड़ि गेल, निर्वंश भऽ गेलहुँ आर अहाँकि खेल धन सन। जाउ, हमर जे डीह-डाबर अछि से अहीं जोति कऽ खाएब।

परन्तु घूटर कका पर एको रत्ती प्रभाव नहि पड़लैन्ह। ओ तमाकूक सिट्ठी फेकैत हमरा हाथ धऽ नीचा उतारय लगलाह। हम हाथ झाड़ैत कहलिऐन्ह—देखू घूटर कका ! हम कहि दैत छी ! जबरदस्ती नहि करू। हम अपना होशमे नहि छी।

घूटर कका बजलाह—तों बेह श्रीकान्त रहि गेलाह। एखन धरि नेनमति नहि छुटलौह अछि। तोहर घर-द्वार, लोक-वेद सभ ओहिना अगामति छौह। चलह, उतरह।

हम कहलिऐन्ह—घूटर कका ! परतारू जुनि। आब हम बच्चा नहि छी।

घूटर०—तोरा विश्वास नहि होइत छौह त चलि कऽ देखि लैह।

हम—त मुन्ना जीविते अछि ?

घूटर०—हँ।

हम—और भैया ?

घूटर०—ओहो।

हम—भौजी ?

घूटर०—ओहो।

हम—आ नूनूकका ?

घूटर०—खूब मस्त छथुन्ह।

हम—और घर ?

घूटर०—ओहो बाँचल छौह।

हम—तखन जलानो नहि जरल ?

घूटर०—नहि ।

हम—और थोड़ी ?

घूटर०—खूब हिनहिनाइत छौह ।

हम—तखन अहाँ एतेक बना कऽ किऐक कहलहुँ ?

घूटर०—हौ ! बरौनीमे हम देखल जे तोरा हिचकी उठल छौह । ओना बन्द नहि होइतौह । तैं हम एतेक काल धरि तेहने तेहने बात कहैत ऐलिऔह जाहि सँ खूब आतंक भऽ जाओ । ई हिचकीक टोटमा थिकैक । देखै छह नहि, आब हिचकी कहाँ गेलौह ?

हमरा धक् दऽ प्राण आएल । घूटर ककाक पैर पर खसैत कहलिऐन्ह—धन्य छी महराज ! हमर प्राण छूटैत छल आर अहाँ टोटमा करैत छलहुँ । तेहन चिकित्सा करय लगलहुँ जे हमर प्राणे जाय लागल ? बाप-रे-बाप ! ओतेक अशुभ बात सभ कोना फुरल ? हमरा त एखन धरि देह काँपि रहल अछि !

घूटर०—की करबहक ? हुनका लोकनिक आयुर्दा और बढ़ि गेलैन्ह । हिचकीक टोटमा' एहिना होइत छैक ।

तीर्थयात्रा

[ई कथा सर्वप्रथम एही शीर्षकसँ प्रकाशित संग्रहमे छपल छल तदुपरान्त 'चर्चरीमे' संगृहीत भेल ।

एकटा दल संगठित कऽ देशाटन करबाक अनुभवक ब्याजसँ अपन समाजमे व्याप्त रूढ़ि सभपर कथा प्रहार करैत अछि । दलक सदस्य चाहे ओ अलोपीनाथ होथ वा मुसाइमामा, गूजर बाबा वा ललकाकी, बड़की बाबा वा सहजोपीसी—सभ एकटा 'टाइप' छथि जे कोनो ने कोनो एहन प्रवृत्तिक प्रतिनिधित्व करैत छथि, ताहिपर चोट करब कथाक अभिप्रेत छैक । कथाक सभ चरित्र तँ 'टिपिकल' रूपसँ मनोरंजक अछि । हास्य-व्यंग्यक संग-संग स्थितिक विडम्बना पर सोच---मनोरंजक संग-संग शिक्षा---कथामे संग-संग चलैत अछि ।]

एकबेर कलकत्तामे जे दृश्य देखल से औखन आँखिमे नाचि रहल अछि । बोटैनिकल गार्डेन मे गेल रही । विशाल वटवृक्षकेँ देखि मनमे एक भावना उठल । एके मूलकेँ कतेक शाखा-प्रशाखा फुटकल छैक ! तहिना ई मानव समाज अछि । परन्तु यदि एहि सामान्य बातकेँ लोक स्मरण राखि सकैत !

हम ई सोचिते रही ता एकटा एहन सुन्दर दृश्य उपस्थित भेल जे अद्यावधि स्मृतिपटल पर अंकित अछि ।

सामने मैदानमे हरियर घास पर किछु लोक गोलाकार पंक्ति बना कय बैसल छथि । ओहि गोलमे आबालवृद्धवनिता सभ निर्विकार भावसँ सम्मिलित छथि । स्त्री पुरुषक कोनो भेद भाव नहि । सभक आगामे पत्तल ओ माटिक चुक्कामे पानि राखल छैन्ह । एक युवती अत्यन्त चुमकीसँ पूड़ी परसैत छथि । एक किशोरी ओहने फुर्तीसँ तरकारी परसैत छथि । देखैत-देखैत सभक पात चीनी, अँचार, रायता ओ मधुर सँ भरि गेल । सभ केओ एक संग तृप्तिपूर्वक भोजन कैलन्हि । भोजन शेष भेला उत्तर किछु नवयुवक पत्तल ओ चुक्का सभ उठा कय कूड़ाक ढेरी पर फेंकि ऐलाह । मैदान पूर्ववत् साफ भऽ गेल । जेना ओहिठाम किछु भेले नहि हो । ई सभ सिनेमाक चित्र जकाँ भऽ गेल ।

हमरा अपन गमैया भोज स्मरण भऽ आएल। एतबा गोटा खैतथि त धम-गज्जर मचि जाइत। 'रौ पानि ला ! हौ, एकटा पात एम्हर चाही। औ, तरकारी उठाउ। हाँ, हाँ हम आब नहि लेब। नहि नहि, हुनका और दही दिऔन्ह। औ ! हुनका अपने लेबक मन छैन्ह !' इत्यादि। परन्तु एहि ठाम निःशब्द सभ कार्य सम्पादित भऽ गेल।

ई लोकनि के थिकाह ? कतय सँ आयल छथि ? कतय जैताह ? एहिठाम भोजक की उद्देश्य ? आदि अनेक प्रश्न हमरा मनमे उठय लागल।

तावत् देखल जे दलक नर-नारी अपन-अपन बैग-थर्मस कन्हामे लटकाय विदा भऽ रहल छथि।

कुतूहलवश एकटा स्काउट वेशधारी नवयुवककेँ पुछलिऐन्ह। हुनकासँ ज्ञात भैल जे ई लोकनि चौबिस परगन्नाक निवासी थिकाह। सम्प्रदायक। करीब बीसो पारिवारिक लोक एहि दलमे सम्मिलित छथि। परन्तु एक सम्मिलित आश्रम जकाँ तीर्थाटन कय रहल छथि। सभ अपन-अपन रुपैया पहिनहि अगाउ बन्हा देने छथि। ओहिसँ खर्च होइत अछि। एक गोटा हिसाब रखैत छथि। केओ यात्राक प्रोग्राम बनबैत छथि। केओ डेराक प्रबन्ध करैत छथि। एवं प्रकार यथायोग्य सभक काज बाँटल छैन्ह। आइ विचार भेलैन्ह जे एहिठाम आबि पिकनिक कैल जाय। एहि दलमे स्त्री-स्वामी, भाय-बहिन, सासु-पुतोहु, सभ छथि। परन्तु सभ एक सङ मिलि सहयोग पूर्वक काज करैत छथि। आब एतयसँ ई लोकनि पुरी, वाल्टेयर, मद्रास, रामेश्वरम आदि नाना स्थान होइत एक मासमे घुरि क गाम अबै जैताह।

ई बात देखि हमरा मनमे एक सिहन्ता भेल। अहा ! यदि अपनहुँ देशमे एहने सहयोग सम्भव होइत ! जखन बंगभूमिमे एतबा पारस्परिक सौहार्द भऽ सकैत छैक तखन मिथिलाक माटि पर किऐक नहि ?

हम निश्चय कैल...जे हो। एकबेर हमहुँ अपना गाममे एहिना दल संगठित कय देशाटन करब।

☐

गाम पहुँचि हमरा दल संगठित करबामे केहन-केहन अनुभव प्राप्त भेल, से एक पृथक् अध्याय थीक।

संक्षेपमे एतबा कहि दैत छी जे गुजर बाबाक दलानसँ चार डकाक खरिहान पं० जीक मकानसँ अलोपीनाथक बथान, मुसाइ मामाक दोकानसँ पोखरि घाट बह्मस्थान धरि दौड़ैत-दौड़ैत पनही खिया गेल।

स्त्रीगणमे तीर्थयात्राक नामे सुनि तेहन उत्साहक तरंग आबि गेलैन्ह जे सभ मिलि श्रीजगन्नाथजीक गीत उठा देलथिन्ह—'श्रीजगन्नाथजीक चरणकमलमे नैन हमारो अटको !'

बड़कीबाबी, सहजोपीसी, लालकाकी, फुच्चुनमाय, बड़हरियावाली, पंडिताइन, जगदम्बा, सभक सभ अपन साड़ी-धोती अजबारय लागि गेलीह। बारह-चौदह गोटाक दल तैयार भए गेल।

परन्तु अगाउ खर्च बन्हाएब किनको स्वीकार नहि भेलैन्ह। सभकेँ अपन-अपन खर्च फुट्टे करबामे नफा बुझि पड़लैन्ह।

देखैत-देखैत चाउर, चूड़ा, सातु ओ पकमानक मोटरीक ढेरी लागि गेल और एक दिन 'जय जगन्नाथ' कहैत हमरा लोकनि रेलमे सवार भए गेलहुँ।

सिमरियाघाट पहुँचला उत्तर लोक जहाज पर चढ़य लागल। जखन सभ सामान जहाज पर लदा चुकल तखन बड़कीबाबी घोषणा कय देलथिन्ह जे एहिठाम बिना गंगास्नान कैपने हम आगाँ नहि बढ़ब। सहजोपीसी, लालकाकी ओ पंडिताइन सेहो अपन-अपन साड़ी कोंचिया हुनका पाछाँ लागि गेलथिन्ह। अलोपीनाथ हुनका लोकनिकेँ स्नान करायब घाट दिस लए गेलथिन्ह।

बड़कीबाबी लचि कय तेना धनुषाकार भए गेल रहथि जे हुनक माथ निहुरि कय ठेहुनक समक्ष आबि गेल रहैन्ह। तथापि पुण्य लुटबाक लोभेँ ओ हाथमे एक टा फराठी टेकने निहुरल-निहुरल विदा भऽ गेलीह। सहजोपीसी ओ लालकाकी डेग-डेग पर हुनका भरसाहा देने जाथिन्ह। तखन ओ चुट्टीक चालिसँ आगाँ ससरथि। एवं प्रकारेँ जा ओ गंगामे एक डूब देलथिन्ह ता जहाज सीटी दऽ देलकैक। परिणाम ई भेल जे चारूगोटे ओही पार छुटि गेलीह।

जहाज पर दारकका लालकाकी पर तमसाय लगलथिन्ह और पण्डितजी पंडिताइन पर। 'हिनका लोकनिकेँ कोन काज छलैन्ह जे एहि बूढ़ीक संग मुड़िया मारय गेलीह ! आब रहथु साँझधरि सभ गोटे एकादशी करैत। मोटा-चोटा त सभ जहाजे पर छैन्ह आर अलोपीनाथ खाली देहे एकटा लोटा डोलबैत गेलाहु अछि। संगमे कौँचो नहि छैन्हि जे दु पाइक फरही यो किनताह।'

अन्तमे सभक क्रोध बड़कीबाबीक धर्मान्धता पर जा कऽ केन्द्रित भेलैन्ह।

तावत एकटा और समस्या उठल। गुजरबाबाक पेट किछु खराब रहैन्ह। हम जहाज परक पैखाना देखा देलथिन्हि। परन्तु ओ हमरा डटैत कहलन्हि—'लोक गंगामाइक पूजन करय अबैत अछि और हम तीर्थमे आबि हिनका पर यैह कर्म करू ?' तावो बुलौगा उत्तर ओ नहि मानलन्हि। बजलाह—'तों नास्तिक थिकाह। परन्तु हम अपन आस्तिकता कोना छोड़ ?'

एक घंटा धरि गुजरबाबा पेट पर हाथ धैने बैसल रहलाह। अन्ततोगत्वा

मोकामाघाट ऐला पर हुनक समस्या हल भेलैन्ह।

मोकामामे गाड़ी आएल और चलि गेल। कारण जे सिमरियाघाटमे चारि गोटे चौकी लगौने छथि से आबि जैतीह, तखन ने ई काफिला आगाँ बढ़त ? आब साँझ धरि प्लैटफार्म पर बैसल तपस्या करू। शनैः शनैः चूड़ा, सातु ओ साँचक मोटरी सभ फूजय लागल। पुरुष लोकनिक भोजन समाप्त भेला उत्तर फुच्चनमाय चुटकी सँ हमरा बजाय कहलन्हि—हे ! कनेक पुरुष पातकेँ ओम्हर टहलि जाय कहिऔन्ह त एम्हरो जनीजात किछु पानि पिबै जैतीह।

हमरा लोकनि ओहिठामसँ टरि गेलहुँ त स्त्रीगण भरि मुँह तागि झाँपल मुँहमे ठकुआ खोँटि कऽ देबय लगलीह।

गुजरबाबा फराक सतरंजी ओछाय पड़ि रहलाह। पं० जी एक हत्था पाकल केरा लेलन्हि। केरा खा कऽ खोइया जहिँ तहिँ फेंकि देलथिन्ह। हम उठाबय चललहुँ त मना कऽ देलन्हि।

सन्ध्याकाल अलोपीनाथ बड़कीबाबी आदि केँ लेने पहुँचलाह। अबितहि सभ पर बरसि पड़लाह—अहाँ लोकनिकेँ कनेको विचार नहि अछि। हमरा सभकेँ छोड़ि एहि पार चलि एलहुँ। कोन-कोन बैकट उठौलहुँ अछि से हमही जनैत छी। पाँचो गोटाकेँ सोरहो दंड एकादशी भऽ गेल। ताहि पर एकटा कनहा टी० टी० सी० से किन्नहु आबहि नहि दैत छल। ई महोखा जकाँ जे बैसल छथि सेहो जौं अपन मोटरी लऽ कऽ उतरि गेल रहितथि त हम किऐक एतेक पराभवमे परितहु ?

ई कहि अलोपीनाथ फुच्चुनमाय पर छुटलाह। परन्तु यारकका रोकि लेलथिन्ह। कहलथिन्ह—जे भऽ गेलैक से भऽ गेलैक। आब सभसँ पहिने अहाँ लोकनि खा-पी कऽ सुभ्यस्त होइ जाउ।

किछु कालक उपरान्त चारू बूढ़ोक थोप तरौंमुँह चलय लगलन्हि। बड़कीबाबी एकटा रसगुल्ला मुँहमे देलन्हि से हुनका कंठ मे जा कऽ बैसि गेलैन्हि। तेना अटकि गेलैन्ह जे आँखि उनटि गेलैन्ह, चाउन्ह आबि गेलैन्ह। ओ सहजोपीसीक कोरमे खसलीह। लालकाकी पानिक छिटका देमय लगलथिन्ह। पंडिताइन पंखा होंकय लगलथिन्ह। फुच्चुनमाय नोर-पोटा पोछय लगलथिन्ह। जखन थोड़ेक पानि पिया-ओल गेलैन्ह त एक बेर सरकलैन्ह और बूढ़ी आँखि तकलन्हि।

ओम्हर गुजरबाबा पेटकुनियाँ देने परल रहथि। हम लऽगमे जाऽ कऽ पुछ-लिएन्ह—की बाबा ! किछु खाएब ?

ओ बजलाह—खायब त नहि, हँ, जौं कागजी नेबोक शरबत पियाबह त पिउब।

कागजी नेबो त नहि भेटल। फेरीवलाकेँ एक गिलास शरबत लऽकऽ गुजर-बाबाक हाथमे देलिऐन्ह। ओ ओहिना हाथमे नेने रहलाह।

हम पुछलिऐन्ह—बाबा ! पिबैत छी किऐक नहि ?

ओ बजलाह—हम कि तोरा सभ जका अङरेजिया छी जे गट्ट-गट्ट पीबि जाएब ? पहिने हाथ-पैर धोएब, कुरड़ करब, तखन ई पीब कि ओहिना ? पहिने एक लोटा जल आनह।

हुनका जल दीते छिऐन्ह कि गाड़ीक धमक सुनाइ पड़ि गेल। 'गाड़ी आबि गेल ! गाड़ी आबि गेल !' चारूकात हुलिमालि उठि गेल। गुजरबाबा हड़बड़ा कऽ उठय लगलाह से तलमला गेलाह। हुनका अलोपीनाथ सम्हारि लेलथिन्ह। ओम्हर सहजोपीसी ओ लालकाकी बड़कीबाबी केँ भऽ कऽ उठाबय लगलीह।

गाड़ी अबैत देरी मुसाइमामा अपन मोटा लय दौड़लाह। परन्तु दुर्भाग्यवश पण्डितजीक फेकल केराक खोइया पर हुनक पैर पड़ि गेलन्हि। ओ सोझे नाकक भरे खसि पड़लाह। मोटरी सँ लोटा ओंघरा कऽ कहाँसँ कहाँ चलि गेलैन्ह। यावत् ओ उठथि-उठथि ता मुसाफिर सभ तेहन रेड़ा कैलक जे साँचक मोटरी लतखुर्दन भऽ गेलैन्ह। सभ ओही पर छड़पि गाड़ी पर चढ़य लागि गेल।

बड़कीबाबी ओ गुजरबाबाकेँ कोनो-कोनो तरहेँ रेलमे चढ़ाओल गेलैन्ह। जखन गाड़ी चलय लगलैक त बाबी लालकाकी सँ पुछलथिन्ह—'की ऐ ? गाड़ी छुटि गेलैक ? हमरा लोकनि एतहि रहि गेलहुँ ?' तखन लोक बुझौलकनि जे अहूँ गाड़िएमे बैसल छी।

किउलमे एकटा दोसर कांड भऽ गेल। मुसाइमामाक ठेहुन फूटि गेल रहैन्ह। बीच-बीचमे कुहरैत जाइत रहथि। किछु गोटाकेँ चाय लैत देखि हुनको सौख भेलैन्ह जे कनेक पीबि कऽ देखिऐक जे केहन होइ छैक। खिड़कीसँ बाहर माथ कय जहिना मुँहमे ढारय लगलाह कि जीभ पाकि गेलैन्ह। तेना छिलमिला उठलाह जे शीसाक गिलास हाथसँ डामहि खसि पड़लैन्ह। गर्म चाय एक मुसाफिरक पैर पर खसलैक और गिलास चूर-चूर भऽ गेलैक। आब मुसाइमामा अवग्रहमे पड़ि गेलाह। ओ मुसाफिर युद्ध करक हेतु टीक पकड़ि लेलकैन्ह। ओम्हर चायवला गिलासक दाम वसूल करक हेतु फराक कण्ठ पर सवार ! तावत गाड़ी फूजि गेल। मुसाइ-मामाकेँ सहसा एकटा युक्ति फुरि गेलैन्ह ; ओ अपन छुऐलहा साँचक मोटरी हुनुक बीचमे फेंकि देलथिन्ह और एवं प्रकारेँ दुनू यमदूतसँ अपन पिण्ड छोड़ौलन्हि। मुसाइमामाक एहन प्रत्युत्पन्नमति देखि पंडित जी बहुत प्रशंसा कैलथिन्ह।

झाझा पहुँचैत-पहुँचैत बड़कीबाबी पियासे व्याकुल भऽ गेलीह। ओ कलक पानि नहि पिबैत छलीह। अलोपीनाथ बोतलसँ गंगाजल देबय लगलथिन्ह। किन्तु रेलक ओहि 'वरडवर्णा' डब्बामे जल पिउब हुनका स्वीकार नहि भेलैन्ह। बजलीह—आब एके बेर बाबाक धाम पर पहुँचि कऽ जल पिउब।

जसीडीह उतरितहि यात्री-दल पर पंडाक आक्रमण आरम्भ भऽ गेल। खास कऽ बड़कीबाबी ओ गुजरबाबाकेँ देखि ओ लोकनि तहिना मड़राय लगलैन्ह जेना शव पर गिद्ध मड़राइत अछि। 'बाबू कोन जिला घर ? कोन परगन्ना ? गाँव कोन ?

देखैत देखैत, एकटा पंडा जोंक जकाँ हमरा सभमे सटि गेलाह । साथ
छारलो उत्तर हटयवला नहि । बैद्यनाथधाम धरि हमरालोकनिक संग ऐलाह आर
जखन हमरा सभ धर्मशालामे आबि डेरा कैलहुँ तखनो सँगे लागल रहलाह । ओ
बारबार प्रत्येक स्त्री सँ पुछय लगलथिन्ह—माताराम ? कोन तरहेँ दर्शन हैतैक ?
कोन जल लऽ कऽ पूजन हैतैक ? हरद्वारक जल सँ कि नर्मदाक जलसँ ? कि समुद्रक
जलसँ ? कतेक केर संकल्प हैतैक ? कैटा ब्राह्मण-भोजन हैतैक ?
हम कहलिऐन्ह—औ महाराज ! एखन त जान छोड़ू । हमरालोकनि खाएब,
पीउब, आराम-करब । कालिह भोरमे आबि कऽ दर्शन करा देबैन्ह ।
ई कहब छल कि बड़कीकाकी हमरा पर बिगड़लीह—तोरा लोकनि त सभ
धर्म-कर्म उठा देलह । जा दर्शन नहि हैत ता हम पानि कोना पिउब ।
गुजरीबाबा हुनक अनुमोदन कैलथिन्ह । फलस्वरूप सभ गोटे शिवगंगामे स्नान
कय पंडाक संग बाबाक मन्दिर जाइत गेलाह । केवल हम और मुसाइमामा डेरा
ओगरय लेल रहि गेलहुँ । थोड़ेक कालमे अलोपीनाथ सेहो फिर कऽ आबि गेलाह ।
हम पुछलिऐन्ह—की औ ? अहाँ दर्शन करय नहि गेलहुँ ।
ओ बजलाह—जल्दीसँ लोटा बाहर करू । पैखाना कोम्हर छैक ।
ई कहि ओ कानपर जनउ चढ़बैत हड़बड़ाएल विदा भेलाह ।
दस मिनटक बाद अलोपीनाथ आबि कय 'ओ-ओ' वमन करय लगलाह ।
मुसाइमामा पुछलथिन्ह—की औ ! पैखाना केहन छल ?
ई प्रश्न सुनैत अलोपीनाथकेँ और वेग सँ वमन भेलैन्ह ।
आश्वस्त भेला पर बजलाह—हमरा त अन्हारमे किछु सुझल नहि । परन्तु
गन्ध जे भभकैत छलैक से बाप रे बाप ! एखन धरि मगज फाटल जाइत अछि ।
हमरा त चौकठिक भीतर जैबाक साहस नहि पड़ल । बाहरे बैसि गेलहुँ । आब
दोसराक जैबा योग्य नहि छैक ।
मुसाइमामा बजलाह—तखन आब हम की करू ? अहाँ केँ दीप लऽ कऽ
जाएब उचित छल ।
अलोपीनाथ बजलाह—हँ, एकटा दीप त एहिठाम आवश्यक अछि ।
मुसाइमामा कहलथिन्ह—एकटा प्रकाश अवश्य रहक चाही ।
हम देखल जे ई दुनू गोटा 'चाही' सँ आगाँ बढ़लाह । बुझि छथि जे गर्जे त
दोसरा गोटाकेँ छैन्ह । तखन अलोपीनाथ अपना डरिसँ कैंचा फिऐक बाहर
करताह ? और मुसाइमामा हुनकालेँ कोन कष्ट जे अपन पढ़ुआ खोलताह ? परन्तु
केवल प्रस्ताव कैने त प्रकाश हैब नहि । अतएव हम उठलहुँ और बाहर सँ मोम-
बत्ती-सलाइ कीनि कऽ बेसने ऐलहुँ ।
मुसाइमामा मोमबत्ती लऽ भीतर गेलाह । पुनः वापस आबि कहलथिन्ह—

हमरा भीतर नहि बैसल हैत । बाहर मैदान सँ भऽ अबैत छी ।

इनारपरक दृश्य और विचित्र छल । चारूकात पिच्छर, काइ लागल । नीचा मे भरि ठेहुन किचकाहिन । ठाम-ठाम तामसिक कुच्ची ओ जिभियाक ढेरी लागल । माटि शुद्ध ताकब से कतहु भेटनाइए नहि । जाहिठाम हाथ दी ताहीठाम भुरभुरी । अलोपीनाथ बीच चबूतरा पर हाथ मटियबैत धर्मशालाक लोकक आलोचना करय लगलाह—पपियाहा सभ आबि कऽ घिना दैत अछि ।

हम कहलिऐन्ह—अलोपीभाइ ! अहूँ त एहि काजमे योगे दऽ रहल छिऐक । कालिह जे एहि चबूतरापर स्नान करय आओत से अहूँ के यैह दान कहत ।

अलोपीनाथ उठलाह त हम एक बाल्टी पानि लऽ कऽ चबूतरा केँ धोखारि देलिऐक ।

अलोपीनाथ बजलाह—ई त फेरि एहिना भऽ जेतैक । व्यर्थ बाल्टीक पानि खर्च कैलह ।

ई कहि ओ एक हाथमे लोटा और दोसर हाथमे मोमबत्ती लय विदा भेलाह ।

हम कहलिऐन्ह—अलोपीभाइ ! इनार पिच्छर छैक । बचा कऽ चलब ।

अलोपीनाथ बजलाह—हम कि मुसाइ छा जकाँ अनुरि छी जे पिछड़ि कऽ खसि पड़ब ।

ई कहैत अलोपीनाथ पिछड़ि गेलाह । बहुत सम्हारक कोशिश कैलन्हि तथापि भरि ठेहुन थालमे ओंघरा गेलाह । धोती लतपत भऽ गेलैन्ह ।

हम अंदाज सँ हुनका हाथ धऽ कऽ उठाओल । ओ कुहरैत बजलाह—डाँड़ टुटि गेल । आइ भोरे मुसाइझाक मुँह देखि उठल छलहुँ, तकरे फल थीक । आब सोझे शिवगंगा भऽ चलह ।

मुसाइमामा शिवगंगा पर कुरड़ करैत रहथि । अलोपीनाथ केँ देखि भभा कऽ हँसि पड़लाह । कहलथिन्ह केहन बकझड़ाह छी ? कतेक देखि कऽ चली ।

अलोपीनाथ उत्तर देलथिन्ह—अनका बेरिमे एहिना फुरै छैक । अहाँ जे मोकामा घाटमे मुँहक भरे खसल ! इखनो नाक थकुचायल अछि ।

हम देखल जे कदाचित् बात बढ़ि जाय । तेँ दुनू गोटाकेँ शान्त करैत पुछलिऐन्ह अहाँ लोकनि एखन भोजन की करै जाएब ?

अलोपीनाथ बजलाह—हमरा संग त चूड़क सातु अछि । चून सोन्हगर । हरियर मरचाइ और नोन सेहो संग मे लऽ नेने छी । आब लेट सानि कऽ मुठरा बना लेब और ऊपर सँ एक लोटा पानि चढ़ा लेब । बस, बमभोला । तकरा बाद कालिह दिनमे देखल जैतैक ।

मुसाइमामा सँ पुछलिऐन्ह त ओ सोझिआय लगलाह—हमर खाएक मोटरी त किउले मे रहि गेल । एखन विशेष भूख नहि अछि । तैँ अपना खातिर जे

अनबह ताहिमेसँ एक दू टा सोहारी हमहूँ खा लेबौह।

अलोपीनाथ प्रेम सँ खातु घोरय लगलाह। हमहूँ अपना हेतु किछु लाबक हेतु बाजार दिस विदा भेलहुँ। से देखि मुसाइमामा मन पारि देलन्हि—देखह, हम दु-चारि टा सोहारी सँ बेसी नहि खैबौह। से हमरा हेतु चारि-पाँच टा सँ बेसी नहि लीहऽ पाँच-सात टा सँ बेसी हमरा नहि खाएल हैत।

हम दू गोटाक हेतु आधा सेर गर्मागर्म पूड़ी-तरकारी लए अनलहुँ। मुसाइ-मामा कान पथने सूतल छलाह। हमर आहट पाबि फुरफुरा कऽ उठलाह। हम दोना पत्तल हुनका आगाँमे राखि अपना हेतु पानि आनय इनार पर गेलहुँ। ओहिठाम पिच्छर रहैक। तेँ बहुत सावधानी सँ नहुँ नहुँ आङुर रोपि कय ओहिपर पानि भरलहुँ और कुल्ल-आचमन कय, हाथ पैर धो लोटामे जल नेने प्रत्यागत भेलहुँ।

तो देखइ छी जे मुसाइमामा सभटा पूड़ी निःशेष कय पत्तल फेंकि रहल छथि। बजलाह—वाह! बड्ड विलक्षण सोहारी बनौने छल। तोँ नीक कैलह जे दोकाने पर भोजन कैने चलि ऐलह। परन्तु हौ जी! बहुत रासे अनने छलह। हमरा एतबाक प्रयोजन नहि छल।

ई कहैत मुसाइमामा तृप्तिसूचक ढेकार फैलन्हि। हमरा त मनमे आयल जे कहि दिऐन्ह—औ महाराज! हमरो अंश त अहीँ उदरस्थ कऽ लेल। स्वाइत एहन ढेकार भऽ रहल अछि! परन्तु संकोचवश नहि कहना गेल। हम चुपचाप दोकान पर जा भोजन कए ऐलहुँ।

ता दर्शनार्थिनी सभक झुण्ड प्रत्यागत भेल। हिनका लोकनिकेँ एखन बाहरे सँ दर्शन भेलैन्ह अछि। काल्हि भोरमे विधिवत् पूजन करै जैतीह।

जाहि ओसारा पर हमरा सभकेँ डेरा भेटल छल से अन्हार-कुप छल। मोम-बत्तीक प्रकाशमे देखल त जे सभ धर्मात्मा ओहिमे पहिने ठहरल छलाह से प्रचुर परिणाममे अपन स्मृति-चिह्न छोड़ने गेल छथि। थूक, खखार, ओ ऐठकूठ सँ ओ नरकुण्ड बनल अछि। हम दोकानसँ एकटा झाड़ू आनि ओकरा बहारि कऽ साफ कैल। एक बाल्टी पानि सँ नीक जकाँ धोएल। तखन बड़का सतरंजी ओछा कऽ सभगोटा कैँ कहलिऐन्ह—अबै जाउ।

परन्तु ऐलाह केवल पुरुषवर्ग। स्त्रीगण ओहिना बीच आँगनमे ठाढ़िए रहली। तखन हमरा अपन मूर्खताक बोध भेल। जाहि सतरंजी पर गूजर बाबा, बारकका, पंडित जी प्रभृति बैसलाह, ओहि पर बड़कीबाबी, लालकाकी, पंडिताइन प्रभृति कोना आबि सकैत छथि? जे नारी सहस्रो वर्षसँ अपनाकेँ शूद्र तुल्य बुझैत आयल छथि से आइ ब्राह्मणक समक्ष भऽ कोना बैसतीह? और जौँ एहन दुःसाहसो करितथि ता कि पुरुष-वर्ग कैँ से सहन होइतैन्ह? गूजरबाबाक नाक कटा जइतैन्ह। बार ककाक मोछ मुड़ा जइतैन्ह। पण्डितजीक पाग खसि पड़ितैन्ह।

अस्तु। हम तुरन्त अपना त्रुटिक परिमार्जन कैल। गूजर बाबाकेँ सम्बोधन करैत कहलिऐन्ह—की? अपने सभक ओछाओन एहि पर कऽ दियऽ?

ओ बजलाह—नहि, नहि। तोँ नहि। अलोपीनाथ कऽ देताह। और तोहूँ ओहिकात अपन कम्बल ओछा लैह।

हम हुनक मुँह ताकय लगलिऐन्ह त बजलाह—तोँ बुझै छह नहि। एखन बारहो वर्णक ऐंठ उठौलह अछि। यावत् स्नान नहि करबह ता अछोप तुल्य रहबह। की औ पंडितजी?

पं० जी माथ डोला अनुमोदित कैलथिन्ह। अगत्या हम फराक अपन कम्बल ओछाओल। स्त्रीगण एक कोनेमे जेम्हर सभसँ बेसी अन्हार रहैक दबकि कऽ पड़ि रहैत गेलीह।

भोरे स्त्रीगण कखन उठि अपन नित्यकृत्य करैत गेलीह से हमरा ज्ञात नहि भेल। निन्द टुटला पर देखै छी जे सभ गोटे शिवगङ्गामे स्नान कय मन्दिर जैबाक तैयारी कऽ रहल छथि। गूजरबाबाक मुँह किछु भारी देखिलिऐन्ह। पुछलिऐन्ह—की बाबा, रातिमे निन्न खूब पड़ल कि नहि?

एतबा पूछब छल कि बाबा बुमकार छोड़लन्हि—तोँ हमरा सँ चौल करैत छह! भरि राति हमरा पेटमे मुसरी दण्ड पेललक अछि और तोँ पुछैत छह जे निन्न खूब पड़ल?

हम सविनय हाथ जोड़ि कहलिऐन्ह—बाबा! अहाँ त राति अपनै कहलिऐक जे भोजन नहि करब।

गूजरबाबा बजलाह—हँ, परन्तु तोरा अपना की उचित छलौह? और किछु नहि त अमौटो घोरि कऽ त दऽ जइतह? तोरा की कहिऔह? बूढ़ि अलोपीनाथकेँ एतबा नहि फुरलैन्ह। आब हम देखै छी जे अपटी खेतमे प्राण जाएत।

अलोपीनाथ अमौट घोरक उपक्रम करय लगलाह त गूजरबाबा डाँटि कऽ कहलथिन्ह—हौ अथाह! एतबा नहि प्रज्ञा छौह जे एखन बिना बाबा पर जल ढारने मुँहमे किछु कोना देब?

अस्तु। सभगोटे एक-एक लोटा जल लय बाबाक मन्दिर जाइत गेलाह। केवल हम डेराक अगोरबाहीमे रहि गेलहुँ। बैसल-बैसल धर्मशालाक दृश्य देखए लगलहुँ। हमरालोकनि पवित्र स्थानकेँ कोना भ्रष्ट करै छी से देखबाक हो त कोनो धर्म-शालामे जा कऽ देखू।

एकटा बाबाजी बीचे आँगनमे दातमनि कय ओहिठाम कुच्ची आ जिभिया फेंकि खखार करैत छलाह। हम टोकलिऐन्ह, तँ बजलाह—'धरम साला' किसी का खरीदा हुआ है?

हम कहलिऐन्ह— नहीं बाबा, 'धरम शाला' तो आपही का है। जो करना हो

कीजिए ।

जे धर्मकेँ अपन 'सार, बूझि सकैत छथि से सुरालयोकेँ अपन श्वसुरालयमे परिणत कऽ सकैत छथि । एहन-एहन यात्रीकेँ स्वर्गमे नहिए स्थान भेटक चाहिऐन्हा किएक त धर्मशाला केँ 'जर्मशाला' बना सकैत छथि तनिका 'अमर टोली' केँ 'चमर टोली' बनैबामे कतेक देरी लगतैन्ह ?

एक भिनसरसँ भेल-भेल भक्त लोकनि ठीक १२ बजे प्रत्यागत होइत गेलाह । सभ गोटेक मुँह विवर्ण भेल रहैन्ह । ज्ञात भेल जे ई लोकनि तेना पंडाक फेरमे पड़ैत गेलाह जे कोनो दमा बाँकी नहि रहलैन्ह । बड़कीबाबी मन्दिरमे पीतीमाल भय गेलीह । अधमरू भेल हकमैत ऐलीह अछि । गुजरबाबाकेँ अलोपीनाथ फेरमे उठौने आयल छथिन्ह । सहजोपीसीकेँ पंडा बेना कऽ संकल्प पढ़ौलकैन्ह जे जतबा रुपैया अनने छलीह सभटा लऽ लेलकैन्ह । लालकाकीकेँ बाइस ठाम प्रणाम करबा कऽ बाइस टा रुपैया लऽ लेलकैन्ह । फुच्चुनमायकेँ एक सीसी पानि दय पाछाँ दस टाका असूलि लेलकैन्ह । अलोपीनाथक कपार पर लोटा बजारि देलैन्ह से बड़का टा टेटर भऽ गेल छैन्ह । एवं प्रकारेँ सभकेँ एक ने एक चरण लागि गेल छैन्ह ।

आब विचार होमय लागल जे आगाँ की कैल जाय ? वृद्ध लोकनिकेँ असक्क देखि पारकका ओ पं० जीक राय भेलैन्ह जे गुजरबाबा ओ बड़कीबाबी आब आगाँ नहि बढ़थि । पं० जीक मसियौत मुसन झा एहिठाम धामपर पूजापाठ करैत छथिन्ह । वैह घर पहुँचा देथिन्ह । परन्तु ई विचार ने बाबाकेँ मान्य भेलैन्ह ने बाबीकेँ ।

गुजरबाबा बजलाह—हम बाँचि आयब त तीर्थ कैने घर फिरब । नहि, यदि बाटेमे किछु भऽ गेल त तोरा लोकनि छऽहे, एक काठी लगा दिहऽ । उभय हाथ मुद मंगल मोरे । एहि खातिर सोच किऐक करैत जाइ छह ?

बड़कीबाबी सेहो साथ बुझौला उत्तर नहिए मानलथिन्ह । बजलीह—आह ! यदि ई शरीर जगन्नाथ जीक काज आबि जाय त एहिसँ बढ़ि और की आनन्द भऽ सकैत अछि ? जहाँ खसि पड़बीह तहीँ फूकि दीह ।

अगत्या पुनः सभक मोटा-चोटा बन्हाय लागि गेल । भोजनोत्तर सभ केओ गुप्त परामर्श कय रहल छथि । हमरा देखि अलोपीनाथ बजलाह---हौ बाबू ! तोँ कहैत छह जे कलकत्ता होइत पुरी चली । परन्तु पं० जीक विचार होइ छैन्ह जे आसनसोल सँ सोझे खड़गपुर होइत पुरी गेने महसूल कम लागत । तखन लोक कलकत्ता ध' किऐक जाएत ? ओ की कोनो तीर्थ छैक ?

हम कहलिऐन्ह---केवल थोड़बेक अन्तर किरायामे पड़त । परन्तु ताहिसँ बहुत अधिक सुविधा हैत और कलकत्तामे कतेको देखबा योग्य वस्तु छैक सेहो देखैत चलब ।

अलोपीनाथ सभक रुचि देखि उचितवक्ता जकाँ बजलाह—हौ बाबू । हम सभ छी गरीब आदमी । जाहिमे कम खर्च पड़त ताही बाटेँ चलब । परन्तु तोरा यदि अपना तीख होइ छौ जे सभकेँ कलकत्ता देखबैत चली, तखन जतबा अधिक लगैक से तोँ दिअहौक ।

जा हम सभ किछु उत्तर दिऐन्ह-दिऐन्ह ता मुसाइमामा बाजि उठलाह—ई कोन भारी बात छैक ? दस गोटामे दस टाका लगतैन्ह से ई देथिन्ह । हौ, जखन ई अग्रेज भऽ कऽ सभकेँ लाएल छथि तखन एखन धरि ककरो देह-नेह किछु भऽ जाइक त फेर सभटा हिनके खर्च लगतैन्ह कि ककरो आनका ?

हम देखल जे एहि विषयमे अलोपीनाथ ओ मुसाइमामा एकमत्य छैन्ह, रंचमात्र भेद नहि । ता सहजोपीसी हमरा देखि—हम त जे अनने छलहुँ से सभटा एहिठाम पंडा लऽ लेलक । आब आगाँ जे खर्च पड़तैक से तोँ कैने जाह । हम गाम पहुँचि कऽ दऽ देबौह ।

अस्तु । भगीरथ प्रयासक अनन्तर हमरालोकनि कोनहुना कलकत्ताक गाड़ीमे चढ़ैत गेलहुँ । के कोन डिब्बामे चढ़ल तकर ठेकान नहि रहल ।

प्रातःकाल हावड़ा स्टेशन पर जखन सभ लोक उतरल त गिनती होमय लागल । लोक पुरि गेल, तखन सामानक जोड़ होमय लागल । और सभ वस्तु त भेटि गेल, केवल एकटा पेटीक पता नहि लागल । सभ एक दोसराकेँ दोष देबय लगलथिन्ह । रहैत जाउ ।

पुरीक गाड़ी रातिमे भेटत, ता एतहि समय बितावय पड़त । दिन भरि प्लाट-फार्म पर बैसि कऽ की करब ? ता घूमिफिरि कऽ कलकत्ता किऐक ने देखल जाय ?

परन्तु हावड़ाक हड़बड़-खड़बड़ देखि गुजरबाबाकेँ साहस नहि पड़लैन्ह । बजलाह—ई मायापुरी थीक । हम एहि भूमि पर पैर नहि देब । तोरा लोकनि नव नौतार छह, जा कऽ देखि अबै जाह । हम आइ दिन भरि एहीठाम आराम करब ।

पारकका ओ पं० जीकेँ कलकत्ता देखल रहैन्ह । अतएव ओही दुनू गोटे पसन्द कैलन्हि । शेष स्त्रीगण हमरा संग कलकत्ता देखय लेल चललीह । मुसाइमामा आ अलोपीनाथ सेहो संग लगलाह ।

हावड़ा स्टेशनसँ बाहर आबि सभ गोटाकेँ ट्राम लग लऽ ऐलिऐन्ह । मुसाइ-मामा ट्रामगाड़ीकेँ हाथ सँ नीक जकाँ ठोकि-बजाकऽ बजलाह—अजब सवारी अछि । कोन सीरा छैक कोन पुच्छी, से किछु बुझिए नहि पड़ैत छैक । बिजलिए पर चलै अछि । धन्य कहो अङरेज बहादुरकेँ जे एहन-एहन वस्तु बना कऽ राखि देल अछि ।

तावत ट्राम ससरय लागि गेल। मुसाइमामा चिचिया उठलाह—हौ ! ई त हमरा नेने जाइत अछि।

ओ बजलाह, नहि, नहि। एहन बेअखितयारी सवारी पर नहि चढ़क चाही। कखन चलि देत, कहाँ लऽ जाएत, तकर ठेकान नहि। सवारी त ओकरा कही जे जहाँ कही 'हे ओ रेह !' कि ठाढ़ भऽ जाय।

तावत् दोसर ट्राम आबि गेल। हम स्त्रीगणकें कहलिऐन्ह—चढ़ै जाउ, आगाँ कुर्सी पर बैसि जाउ। परन्तु डढ़ियावाली पंडिताइनक मुँह ताकऽ लगलीह, पंडिताइन ओ फुच्चुनमाय लालकाकीक मुँह। तावत् एक झुण्ड बंगालिन पाछाँ सँ आबि खटाखट फानि कऽ चढ़ि गेलीह और 'लेडीज सीट' के दखल कऽ लेलन्हि। ई लोकनि मुँह तकैत रहलीह।

एहने-एहने स्थल पर अनुभव होइत छैक जे अपन ओ अन्य देशीय महिलाक पानि मे की अन्तर होइ छैन्ह। 'गंगा बहथि, जनिक दक्षिण दिश, पूर्व कौशकी धारा। पश्चिम बहथि गंडकी, उत्तर हिमवत बन विस्तारा'—एहि चौहद्दी मे ओ पानि भेटब दुर्लभ अछि।

अखन एकाएक ट्राम चलब लागल त फुच्चुनमाय तलमला कऽ डढ़ियावाली पर आबि गेलीह और हुहुक धक्कासँ लालकाकी ठामहि बैसि गेलीह। मुसाइमामा बजलाह—हम पहिनहि कहै छलहुँ जे एहन सवारी पर नहि चढ़ी। ई त रक्ष रहल जे बड़की बाबी नहि छथि, नहि त एहि धक्का मे भवसागर पार भए जैतथि।

ट्राम धर्मतल्ला पहुँचि गेल। सभकें उतारल। आब एहिठामसँ काली घाटवला ट्राम पर चढ़ब। परन्तु देखै छी त अलोपीनाथ पता नहि। ओ कतय लोप भए गेलाह।

मुसाइमामा बजलाह—हम हुनका खड़ाम पहिरने 'टड़ाम' पर चढ़ैत देखलिऐन्ह, तकरा बाद की की भए गेलाह से नहि कहि सकैत छी।

लालकाकी बजलीह—हुनका एतए गमल-बुझल नहि छैन्ह। एसकर भुतिया जैताह। आब सभ सँ पहिने हुनका खोजि कऽ ऊपर करक चाही।

हे भगवान ! एहि कलकत्ता नगरीक विशाल जनसमुद्रमे अलोपीनाथक पता कहाँ लगाओल जाय ?

हम एही चिन्तामे निमग्न छलहुँ कि अलोपीनाथ देखाइ पड़लाह। कान पर जनउ चढ़ौने ओ आगाँ-आगाँ दौड़ल अबैत छलाह और पाछाँ-पाछाँ एकटा ट्राम हुनका पछुऔने अबैत छलैन्हि। हम दौड़ि कऽ हुनका हाथ धैने नेने ऐलिऐन्हि।

ओ बजलाह—हह ! आइ कटाइत-कटाइत बचलहुँ ! गेल छलहुँ कतेक लघुशंका करय। से जतहि बैसी, ततहि हड़हड़ करैत एकटा 'टड़ाम' पहुँचि जाय।

हौ बाबू ! जेम्हरे देखी तेम्हरे एकटा गनगोआरि जकाँ ससरल चल अबैत। हम घेरा गेलहुँ। और पड़ैलहुँ त एकटा पाछाँ सँ खेहारने चल अबै छल से देखबे केलहु अछि। आब एहन स्थानमे नहि रहक चाहि।

काली घाटक ट्राम पर सवार भऽ हम सभ कालीजीक मन्दिर अबैत गेलहुँ। ओहीठाम एक झुण्ड पण्डा ओ पण्डाइन हमरा सभके घेरि लेलैन्हि। सभलोक घाटपर स्नान कय मन्दिरमे फल फूल प्रसाद चढ़ाय दर्शन कैलक। स्त्रीगण ओंजल जुआ एक कात पसारि देलन्हि और मन्दिरक प्रांगणमे बैसि भगवतीक गीत उठा देलन्हि—'जय जगनन्दिनि असुरनिकन्दिनि भवतारिणि जगदम्बे।'

अलोपीनाथ बजलाह—खाली गीतसँ पेट नहि भरत। हम जाइ छी ओहि दोकान पर।

मुसाइमामा कहलथिन्ह—चलू, हमहुँ चलैत छी।

दुनू एक दोसरासँ 'अहाँ खाआउ' 'अहाँ खाआउ' करैत सामने मधुरक दोकान पर गेलाह। हम चुपचाप ठामहिं बैसल दुहू गोटाक गति-विधिक निरीक्षण करय लगलहुँ। अत्यन्त मनोरंजक दृश्य देखबामे आयल। दुनू गोटा कुर्सी पर पल्था मारि डटि गेलाह और गरमागरम पूड़ी-जिलेबी पर हाथ फेरय लगलाह।

आइ मुसाइमामा और अलोपीनाथम किछु विशेष मित्रता भऽ गेल छलैन्ह। तें एक सग सम्मिलित भय एक टेबुल पर बैसलाह।

अलोपीनाथ विचारलन्हि जे यदि पहिने खा कऽ उठि जायब त हलुआइ हमरे सँ दाम माङत। अतएव पहिने हिनके उठऽ देबक चाही। ई विचारि ओ अन्तिम जिलेबीकें अत्यन्त मन्द गति सँ खोंटय लगलाह।

एम्हर मुसाइमामा अपने फटकनाथ गिरधारी, जिनका लोटा ने थारी ! ओ अपने अन्तिम सोहारीकें और मन्द गति सँ खोंटय लागि गेलाह। दुहू दोस्तमे 'स्लो ईटिंग कम्पिटिशन' चलय लगलैन्ह।

अन्तमे मुसाइमामा विजयी भेलाह। अलोपीनाथ उठि कऽ हाथ धोबक हेतु बढ़नइमे गेलाह। ओहिठाम जानि बुझि कऽ बड़ी कालें खरिका करय लगलाह। परन्तु मुसाइमा अपने एक चलाक। अलोपीनाथ चलाकी देखि ओ बुझलन्हि जे हिनकर खरिका जल्दी समाप्त होमयवला नहि छैन्ह। बस, ओ चट दऽ लोटामे पानि लय कानपर जनऊ चढ़ा एक दिस विदा भऽ गेलाह।

अलोपीनाथ परास्त भऽ गेलाह। अगत्या दुहू गोटाक भोजन दाम १।।।=) हुनका जेबसँ बाहर करय पड़लैन्ह। ओ मसोसि कऽ रहि गेलाह। मनमे लक्ष-लक्ष गारि मुसाइमामाकें देलथिन्ह।

जखन मुसाइमामा नकली बाह्यभूमिसँ प्रत्यागत भेलाह त अलोपीनाथ हुनक धृष्टता देखि भीतरे-भीतर झुकरि कऽ रहि गेलाह ! परन्तु बजताह की ?

परञ्च एहि क्षुद्र घटनाक परिणाम आगाँ आ कऽ बहराएल। दुनू गोटाक क्षणिक मैत्रीक कोमल तन्तु पर तेहन मार्मिक आघात लगलैन्हि जे ओ मृणाल-सूत्र बीचेसँ दू खण्ड भऽ गेल।

जखन स्त्रीगण प्रसाद पाबि चुकलीह त हम लालकाकीकें पुछलिऐन्ह—आब कौम्हर चलब ?

ओ बजलीह—जेम्हर लऽ चलह।

हम कहलिऐन्ह—चिड़ियाखाना चलू।

लालकाकी—ओतय कि कोनो देवता छथि ? तखन जा कऽ की करब ? कोनो देवस्थान लऽ चलह।

हम कहलिऐन्ह—बेस, तँ पारसनाथ मन्दिर चलू।

ओतय पहुँचि अलोपीनाथ ओ मुसाइमामामे झगरि गेलैन्ह। मुसाइमामा बजलाह—न गच्छेत् जैनमन्दिरम्। एहि मन्दिरमे नहि जेबाक चाही।

अलोपीनाथ कहलथिन्ह—अहाँ पंडिताइ छँटैत छी। एतेक लोक जा रहल अछि से बुड़िबक अछि और एकटा अहीं बुधियार छी।

मुसाइमामा कहलथिन्ह—अहाँ शास्त्र नहि पढ़ने छी, त की बुझबैक ?

अलोपीनाथकें १।।।=) क बिष रहैन्ह। ई बात सुनि ज्वाला भभकि उठलैन्ह। बजलाह—ओ ! अहाँ दछिनाहा बाभने भऽ कऽ की बाजब ?

मुसाइमामा क्रुद्ध भए बजलाह—अहाँक कुल-खूटमे आइधरि केओ शास्त्रक मुँहो देखलक अछि ? बाप फरठिया बाभन रहथि। अपने बोड़ी बेचैत छी ब्राह्मणक कोखिमे जन्म लऽ बनियाक वृत्ति करैत छी। और ताहि पर लाज नहि होइ अछि वैश्यात्मक नाम कैत छी ? पतित !

एतबा सुनि अलोपीनाथ मुसाइमामाक कण्ठमे हाथ धऽ देलथिन्ह। मुसाइमामा गोंगियाय लगलाह—अरे दौड़ह जो ! ई चाण्डाल ब्रह्महत्या कऽ रहल अछि।

हम आगाँ बढ़ि गेल रही। मुसाइमामाक आर्त्तनाद सुनि पाछाँ फिर कऽ देखैत छी त दुनू गुत्थमगुत्थी भऽ रहल अछि। हम दौड़ि कऽ दुनूकें छोड़ओल।

तावत् स्त्रीगणकें तेना बखरा लागि गेल रहैन्ह जे सभ ठकुआइल ठाढ़ि रहथि। आब सभ केओ अलोपीनाथकें दस हजार गञ्जन करय लगलीह। लालकाकी फज्जति करैत कहलथिन्ह—छिः ! तोहर बुद्धि केहन भेलौह ? परदेशमे आबि मारि करैत छह ? अपनासँ श्रेष्ठ पर केओ हाथ छोड़य ? आब हम कतहु नहि जायब। हे लोकनि ! एखन अढ़ाइ मुहूर्त्त चिती अछि। आब फिरि कऽ घर चलब स्टेशने पर।

स्टेशन पर आबि देखल जे गुजरबाबाकें ज्वर लागि गेल छैन्ह। पारकका पंखा हौंकि रहल छथिन्ह। ओम्हर सहजोपीसी बड़कीबाबीक माथामे गुलरोगन ... रहल छथिन्ह। पंडितजी सामान पर बोड्ठल नमदेइ स्तोत्र पाठ कऽ रहल छाँ

दस बजे रात्रिमे हमरा लोकनि एक्सप्रेसमे सवार भेलहुँ और दोसरा दिन प्रातःकाल पुरी पहुँचि गेलहुँ। स्टेशनपर उतरैत देरी हमरा लोकनि धाकड़ाक पण्डाक चक्रव्यूहमे फँसि गेलहुँ। एक गोटा गुजरबाबाक हाथ धऽ लेलकैन्ह। दोसर गोटा बड़कीबाबीक साजी उठा लेलकैन्ह। तेसर गोटा पंडितजीकें घिसिआबय लगलैन्हि।

हमरा सभ लाख प्रयत्न कैलो उत्तर ओहि नागपाशसँ अपनाकें नहि छोड़ा सकलहुँ। अगत्या शिकारी कुकुरसँ घेरल मृगीक झुण्ड जकाँ हमरालोकनि समुद्रक कात स्वर्गद्वार अबैत गेलहुँ। पंडासभ स्त्रीगणक हाथमे अक्षत नारियल आदि दय संकल्प पढ़ाबय लगलैन्ह। तखन ओ लोकनि लहरि लेबाक हेतु पाँती जोरि कऽ बालुमे मुट्ठी गोँति बैसि गेलीह।

एके बेर समुद्रक लहरि आयल और ताहीमे सभ स्त्रीगण भसिआ गेलीह। बड़की बाबी ऊबडूब होमय लगलीह। सहजोपीसी हुनका सम्हारय गेलीह त अपनो कईएक घुड़मुड़िया खा कऽ उठलीह। लालकाकीकें चारि हाथ ऊपर फेंकि देलकैन्हि। पंडिताइनकें तेना लोट-पोट कैलकैन्ह जे पीठ पाँजर सभ चैंछा गेलैन्ह। फुच्चुनमायक चन्द्रहार बहा कऽ कहाँ गेलैन्ह तकर पता नहि। ता जगदम्बा चिचिया उठलीह—बाबू, डड़ियावालीकें बहौने जा रहल छैन्ह।

वास्तवमे समुद्रक हिलकोर डड़ियावालीकें अपना संग पाछाँ घुड़ैने लेने जा रहल छलैन्ह। ओ अपन बहाइत भूआकें पकड़बाक निष्फल चेष्टा करैत छलीह। ता दोसर हिलकोर आबि हुनका घाटपर फेंकि देलकैन्ह। ओ उठ दऽ भूआ सम्हारि उठय लगलीह। परन्तु मुँह-नाकमे बहुत रासे समुद्री पानि चलि गेल छलैन्ह। वमन होमय लगलैन्ह जाहिसँ बेसुध भऽ गेलीह। लालकाकी हुनक पीठ ससारय लगलथिन्ह। तावत् बर्द पड़ल जे बड़कीबाबीकें दाँती लागि गेलैन्ह अछि।

एके लहरिमे त ई हाल, पुनः दोसर लहरि लेबाक किनको साहस नहि पड़लैन्ह। स्त्रीगण ई दशा देखि पुरुषो लोकनि सतर्क भऽ गेलाह। गुजर बाबा एक चुरू जल लऽ कऽ फराकेसँ सिक्त कऽ लेलन्हि। पारकका ओ पं० जी घुट्ठी भरि जलमे चुक्कीमाली बैसि कय लहरि लऽ पड़ैलाह। हम, अलोपीनाथ ओ मुसाइ-मामा अथाह पैसि गेलहुँ। अलोपीनाथ ओ मुसाइमामा दुनू एक दोसराक हाथ धऽ आगाँ बढ़य लगलाह। तावत् एक बड़का हिलकोर आएल जे अलोपीनाथक खड़-पीढ़ा बहा कऽ लऽ गेलैन्ह और मुसाइमामाक डाँरसँ कुंजीक झब्बा ! दुनू समुद्रकें गारि पढ़ैत बाहर ऐलाह।

जगन्नाथजीक मन्दिरमे पहुँचला उत्तर जे दुर्दशा भेल से वर्णनीय नहि। जहिना हमरा लोकनिक दल सिंहद्वार पर पहुँचल कि चट दऽ एक गोटा लपकि कऽ गुजर बाबाक कपारमे ठोप कऽ देलकैन्ह। गुजर बाबा एकटा कैंचा देलथिन्ह त फेंकि देलकैन्ह और भोजनक साटि करऽ लगलैन्ह। एक गोटा पारककाक हाथमे

जबरदस्ती एकटा फूल धऽ देलकैन्ह और टाका माँगय लगलैन्ह । एक गोटा पब्रिजीक
गरमे माला पहिरा कऽ नव वस्त्रक हेतु चढ़िवावय लगलैन्ह । एक गोटा बड़की
बाबीकेँ पिरियावय लगलैन्ह जे अटका पर कतेक चढ़ायब ?

एवं प्रकार पद-पदपर सत्कार प्राप्त करैत भक्तगण मन्दिरक भीतर
पहुँचल ह ।

जे किछु कसरि छलैन्ह से वर्णन करबा काल पूर्ति भऽ गेलैन्ह । दुइ कातक
रेडाक बीचमे बड़कीबाबी गर्मीसँ बेदम भऽ गेलीह । हुनका पंडा अपना कन्हा पर
चढ़ाय बाहर लऽ अनलकैन्ह । पानि छिटला पर होश भेलैन्ह ।

बड़कीबाबी जा कऽ बत्तीस टाका अटका पर चढ़ा ऐलीह । बजलीह—ई
जमा ओहिठाम काज देत । और कि किछु संग जाइ छैक ?

बड़कीबाबीक भक्ति देखि पंडा सभ जयजयकार कऽ देलकैन्ह ।

तखन लालकाकी सेहो बत्तीस टाका बाहर कैलन्हि । देखा-देखी होड़ लागि
गेल । क्रमशः पण्डिताइन, कड़ियावाली, कुच्चुनमाय सभ अपन-अपन गेँठी खोलय
लागि गेलीह ।

तावत् एक झुण्ड देवता सभक पाछाँ लागि गेलथिन्ह जे ब्राह्मण-भोजन
कराउ । हमरा लोकनिमे केओ लैने नहि । सभ भूखे लहालोट, और ताहि पर
भिक्षुकक दल कण्ठपर सवार ! एहन दृश्य धर्म-प्राण भारतवर्ष छोड़ि और कोन
देशमे भेटि सकैत अछि ?

अस्तु । होइत-होइत ब्राह्मण-भोजन भेल । तदुपरान्त दक्षिणाक हेतु बबंडर
उठल । एवं प्रकार बारहसँ दू बाजि गेल । तखन लोक धर्मशालामे आबि डेरा
देलक । ककरो होश नहि रहैक । जखन पण्डाजी भरि थड़रा महाप्रसाद अनलन्हि
त सभकेँ जेना चैतन्य भेलैन्ह । पाछाँ जा कऽ ज्ञान भेल जे एहि प्रसादक मूल्य
केहन होइ छैक । किएक त फिरतीकाल पंडाजी यारककासँ हैण्डनोट लिखाय एकर
चारि बर दाम वसूल कय लेलथिन्ह ।

अस्तु । सायंकाल पंडाजी आबि सभकेँ आरती देखावय मन्दिर लऽ गेलथिन्ह ।
और एहि ब्याजसँ पुनः एक बेर शोषणक अवसर हुनका भेटि गेलैन्ह । लोक सभ
निचोरल नेबाक सिट्ठी बनि गेल, तथापि हुनका सन्तोष लाभ नहि भेलैन्हि ।

दोसरा दिन प्रातःकाल लोक सभ तालाबमे स्नान कय जनकपुर गेल ।
ओहिठाम भिक्षुकक पलटन हमरालोकनिकेँ घेरि लेलक । बहुत भलाएल कैँचा
संगमे रहय से सभ बाँटि देलिऐक, तथापि जान छोड़ाएब कठिन भऽ गेल । एकके
देला पर चारि गोटा घुमि जाय और ककरा नहि देलक सेह सर्वेश्वर जकाँ पाछाँ
लागि जाय । हम मनमे सोचय लगलहुँ जे एकर मुख्य कारण की ? दरिद्रता ?
लोभ ? मूर्खता ? अथवा एहि देशक अन्ध दानशीलता ?

रातिमे घूमि फीरि कऽ धर्मशाला ऐलहुँ त देखैत छी जे तीन तिरहुतिया तेरह
पाक चरितार्थ भऽ रहल अछि । यारकका ओ पं० जीमे एतेक मैत्री रहलो उत्तर
दूइ गोटाक चूल्हि फराक पजरि छैन्ह । सहुजोपीती फराके अपन खिच्चड़ि
दभका रहल छथि । आलोपीनाथ दुनू बेकती गोइठा जोड़ि लिट्ठी ओ परोड़क सान्ना
बना रहल छथि । मुसाइमामा अटकापरक प्रसाद चारि कैंचाक कीनि लेलाह अछि
सैह भोग लगा रहल छथि । एवं प्रकारेँ सभक भिन्ने बथान छैन्ह ।

हम रातिमे सूतल-सूतल विचारय लगलहुँ—कि ओ कलकत्तावला स्वप्न
आखिर नहिए फलित हैत ? कि ओ एकता ओ सहयोग हमरा समाजमे असंभवे
अछि ? हम कोन उत्साहसँ ई दल संयोजित कैल और की फल भेल ? 'विनायकं
प्रकुर्वाणः रचयामास वानरम् ।' कि एतबा श्रम ओ व्यर्थ गेल ? आबो प्रयास
कऽ कऽ देखक चाही जे एहि दिशामे कहाँ धरि सफलता भेटैत अछि ।

भोरे उठि हम मंडलकेँ सविनय निवेदन कैलिऐन्ह जे आइ सभ गोटाकेँ हमरा
दिससँ निमंत्रण अछि । ई सुनि सभकेँ प्रसन्नता भेलैन्ह ।

पं० जी बजलाह—वाह ! वाह ! बड़ उत्तम विचार । ई अहीँ सँ हो किऐक
ने ? किऐक ने ?

यारकका बजलाह—औ बाबू ! अहाँ आदर्श नवयुवक छी । हम गाम पहुँचब
तखन दस लोकमे अहाँक प्रशंसा करब ।

गुजरबाबा अनुमोदन करैत कहलथिन्ह—ताहिमे कोन सन्देह ? हिनक वंश
केहन छैन्ह ? पक्षधर मिश्रक सन्तान !

यावत् भक्तगण मन्दिरमे दर्शन करय गेलाह ता हम भोजनक ओरिआओनमे
लगलहुँ । अलोपीनाथ आ मुसाइमामाकेँ संग लऽ दोकान पर गेलहुँ । ओहिठाम
चंगेरामे पूरी, तरकारी, चटनी, रायता, मधुर, अँचार, दही, चीनी सभ वस्तु पर्याप्त
कऽ नेने अबैत गेलहुँ ।

धर्मशालाक पाछाँमे एकटा छोटाछीन फुलबारी छलैक । ओकरे बीचमे मखमलक
गलीचा जकाँ हरियर घासक चकला देखऽमे आयल । हम वैह स्थान टेबि लेल ।
सभ सामान लऽ कऽ ओहिठाम अरबाओल । मुसाइमामा ओ अलोपीनाथकेँ पान-
पानिक भार देलिऐन्ह । तावत् कड़ियावाली ओ जगदम्बा दर्शन कय आबि गेलीह ।
हम कड़ियावालीकेँ कहलिऐन्ह—अहाँ पूरी-मधुर परसब । जगदम्बाकेँ कहलिएन्ह—
तों तरकारी दही चीनी परसिहेँ ।

एवं प्रकारेँ हम कार्य बटैत रही ता शेष स्त्रीगण सेहो पहुँचि गेलीह । हम
सभकेँ गोल पाँतीमे बैसा देलिऐन्ह । बड़कीबाबीकेँ नहि बूझि पड़लैन्ह । बजलीह—
की एहिठाम कोनो पूजा हैतैक ?

अलोपीनाथ कहलथिन्ह—हँ, असली पूजा हैतैक !

लालकाकी बजलीह—तोरा सभकें कोन-कोन खेल फुरैत रहैत छौह ? एहिठाम लोक खाएत कोना ? ने चौका, ने बहारल; ने एकबट्टी भेल।

हम सविनय कहलिऐन्ह—एहि ठाम परदेशमे ई सभ नहि लगैत छैक। ओर ई त क्षेत्र थिकैक।

जलोधीनाथ ओर मुसाइनाथा सेहो कनेक लजाइत अपन पात-पानि ल पाँतीमे बैसि गेलाह।

तखन हम शेष पुरुषकें बजाबय धर्मशालाक भीतर गेलहुँ।

बारकका पुछलन्हि—कोनठाम भोजनक प्रबन्ध छैक ?

हम कहलिऐन्ह—उद्यानमे।

पं० जी व्यंग्य करैत पुछलन्हि—की ? कुर्सी-टेबुलक इंतिजाम छैक।

हम कहलिऐन्ह—नहि, नीचेमे आसन लगाओल छैक।

गुजरबाबा पुछलन्हि—की सभ सोहिऐहोक ?

हम कहलिऐन्ह—पूरी, तरकारी, मधुर, अँचार, दही, चीनी।

गुजरबाबा बजलाह—हम त मीन देल तरकारी खैबोह नहि। हँ, कनेक दही-चीनी लऽ क मधुरकें क लेबोह। चलह, इहो भोज देखिए लेल जाय।

तीनू गोटा प्रसन्न चित्तसँ हमरा पाछाँ चललाह। परन्तु भोजस्थान पर दृष्टि पड़ितहि एकाएक ठमकि कऽ सभ केओ ठाढ़ भऽ गेलाह। जेना वज्रजर लागि गेल होइन्ह ! स्त्रीगण पातपर बैसलि छथि और उड़ियावाली तथा जगदम्बा आँचर कसि परसि रहल छथि ! एहन अभूतपूर्व दृश्य देखि तीनू गोटा स्तंभित रहि गेलाह।

पं० जी बजलाह—हमरा त होइ छल जे स्त्रीगण पाछाँ कऽ खैतीह। जखन बहु लोकनि पहिने बैसि गेलीह तखन हमरा लोकनिक किछो एतय किऐक कराओल गेल ?

बारकका बजलाह—ओहि गोलमे बूटा पुरुषो कें बैसल देखैत छिऐन्ह। जोचमे चारिटा आसन खाली देखैत छिऐक। की ? हमरो लोकनिकें लऽ जा कऽ अहाँ ओही बीचमे बैसाबय चाहै छी ?

गुजरबाबा पित्ते थरथर कपैत बजलाह—तों एहिठाम भैरवी-चक्र लगाबय चाहैत छह ? एही खातिर हमरा सभकें एहिठाम लऽ आएल छह ?

हमरा मुँहसँ किछु उत्तर नहि बहराएल। अपराधी जकाँ मौन रहलहुँ। आब हमरा बिना कऽ बड़कीबाबी ओ सहजोपीसीकें वस्तुस्थितिक बोध भेलैन्ह। बाबी हमरा दिस अग्नेय नेत्रसँ तकैत बजलीह—तों पुरुषक बीचमे हमरा सभकें बैसा बेइज्जत करै छह ? नव-नव चालि चलाबय चाहैत छह ? सभकें भठमेरि करक चाहैत छह ? जे केओ नहि कैलक से तों करबह ? से यावत् धरि हमरालोकनि जिबैत छी ता धरि नहि होमय देबोह। राखह मधुर अपना कपार पर !

ई कहि ओ पात उठा फेंकि देलन्हि।

सहजोपीसी आगिमे घी ढारैत बजलीह—हौ बाबू ! तों धनिक छह त अपना घर रहह। अनका बहु-बेटीकें किऐक दूरि करैत छहोक ? जे कहियो नहि देखल से आइ देखि रहल छी। हः हः हः ! तों त कलियुगोकें जितलह। एक साँझ खाय खातिर लोक अपन धर्म गमा देत !

ई कहि ओ पातकें ममोड़ि-चमोड़ि और बेसी जोरसँ दूर फेंकलन्हि।

पंडितजी पंडिताइनकें फज्झति करैत कहलथिन्ह—अहूँ अपटुडेट बनक चाहैत छी ? मारि करचीकें पूठ तोड़ि देब, नहि त उठू।

बारकका लालकाकीकें डटैत कहलथिन्ह—अहाँ जे मझुना माधव जकाँ पत्था लगौने बैसल छी से लाज नहि होइ अछि ? उठू।

अपन पक्षक बहुमत देखि सहजोपीसी और बाघिन बनि गेलीह। शेष स्त्रीगण पर अग्निवर्षा करैत बजलीह—ऐ फुच्चुनमाय ! अहू बड़ गब्बर छी। एतेक भऽ गेल और अहाँ पात लेने बैसले छी ? की मधुर कहियो आँखिसँ देखने नहि छी ? ओर उड़ियावालीकें ने देखिऔन्ह ! केहो छमकम कय परसय गेल छलीह ! सभ सखी झुम्मर पाड़य, तुम्हीं कहय हमहुँ ! सिहु कदाच परऽमे मिज्झर होबै जाइत छथि। और जगदम्बा जे एतेक फुच-फुच करैत अछि से हम की कहिऔक ? ओदह दर्बक भऽ गेलि। आब की बाकी छैक ? कुमारि-बारि कतहु एना करय ! परन्तु के बाजौ हम की आन्हर छी ? सभटा देखइ छी। परन्तु बूझि कऽ हेत की ? आइ-कालिह की कोनो विचार छैक ?

फलस्वरूप पंडिताइन, लालकाकी, जगदम्बा, उड़ियावाली ओ फुच्चुनमाय सभ गद्गद् होइत उठि विदा भऽ गेलीह। जलोधीनाथ ओ मुसाइमामा देखलैन्हि जे आब सभ उठि गेल, त अगत्या ओहो दुनू गोटा मुड़ठाह भऽ पात परसँ उठि गेलाह।

आब गुजरबाबा वज्र-कठोर शब्दमे हमरा सम्बोधन करैत बजलाह—एखन तों गाममे रहितह त पाँचटा पंच मिलि कऽ जुरमाना करितौह। परन्तु परदेशमे छह तेँ हम छोड़ि दैत छिऔह। तोहर स्वभाव एहने छै तों ऐतन अपन लोकी-लपटा लऽ कऽ डेरा अलग लऽ जाह। हम सभ एक मिनट तोरा संग नहि रहि सकैत छी। हम सभ तोहर गाहिकसँ देखैत आबि रहल छी। परन्तु भीतरमे एतेक राय गुड़ छलौ जहर छौह से भाँसल नहि होइ छल। आब सभ बात दर्पण जकाँ झलकि रहल अछि। तों नीक लोकक बहु-बेटी संग रहय योग्य नहि छह। या तँ तोंही आन ठाम डेरा करह अथवा हमहीं सभ अन्यत्र चल जाइत छी। बस आब तोहर एकोटा शब्द नहि सुनबोह।

बारकका ओ पं० जी अपनाकें किछु आधुनिक विचारक बुझैत छलाह। परन्तु एखन एको अक्षर हुनको मुँहसँ नहि बहरैलैन्ह।

हम चुपचाप अपन सूटकेस ओ बिस्तर उठाओल और रिक्शापर चढ़ि पराजित सैनिक जकाँ स्टेशन दिस विदा भेलहुँ। बाटमे जगन्नाथजीक चमकैत कलशकें प्रणाम करैत कहलिऐन्ह—हे बाबा जगन्नाथ ! हम धन-धान्य, आरोग्य-सन्तति नहि माँगैत छी। जों अहाँमे यथार्थ सामर्थ्य हो तँ हमरा जातिकें बुद्धि प्रदान करू।

अलंकार-शिक्षा

[ई कथा 'वैदेही' (अप्रैल' ५६) मे अलंकारक प्रथम पाठ' शीर्षकसँ प्रकाशित भेल आ तदुपरान्त 'चर्चरी'मे संगृहीत भेल। एकर अनुवाद हिन्दी (छात्र-बन्धु'-५६: 'परिहास'-६१) आ गुजराती ('चित्रलेखा-नव०' ५६) मे सेहो भेल अछि।

'केल-खेलमे शिक्षाक'क सिद्धान्त एहि कथामे बड़ नीक जकाँ चरितार्थ भेल अछि। दैनन्दिन साधारण व्यवहार आ गप्पमे लोक कतेक रास सिद्धान्त प्रतिपादन-अज्ञात रूपेँ कऽ दैत अछि, से लक्ष्य करबाक लेल दृष्टि चाही। झगड़ा-दन्न—विशेष कऽ जनीजातिक—मे काकु, वक्रोक्ति आ चमत्कार स्वाभाविक रूपेँ फुटि पड़ैछ। परन्तु झगड़ाक एहि पक्षकेँ ओकरा व्यावहारिक ज्ञान आ उपयोगिताक वस्तु बनायब एक टा नऽव बात तँ भेबे कयल अछि, बेजायो वस्तुसँ नीक तत्त्व बाहर कऽ लेबाक एक टा दृष्टि सेहो ई कथा दैत अछि।

भोलबाबा नोसि सनकैत रहथि। हमरा देखि पुछलन्हि—की हौ, कतय चलल अछि ?

हम कहलिऐन्ह—अहाँक ओहिठाम किछु अलंकार ज्ञान प्राप्त करय आयल छी।

भोलबाबा एक क्षण गुम्म भऽ गेलाह। पुनः गम्भीरतापूर्वक बजलाह—तखन आङन चलह।

हमरा चकमकाइत देखि कहलन्हि—एहिठाम दलानपर जतबा मास दिनमे सिखबह, ततबा आङनमे एक्के घंटामे सीखि जैबह। परन्तु देखिहऽ, खखासिहऽ नहि।

ओ चुपचाप हमरा दुरखामे भऽ गेलाह। ओतय सिरकीक भीतर कोठीक आड़मे हमरा बैसा देलन्हि।

ओम्हर स्त्रीगणमे उत्तर-चोरी भए रहल छलैन्ह। बाबा नहुँ-नहुँ बजलाह—तों कागज-पेंसिल बाहर करह और जल्दी-जल्दी नोट कैने जाह। अलंकारक वर्षा भऽ रहल अछि।

एक जनी दोसराकेँ कहलथिन्ह—ऐ! ओंठ सन कचकच बोल किऐक बजै छी ?

बाबा कहलन्हि—देखह, एहिठाम 'ओंठ' ओ 'बोल' मे अनुप्रास छैक। 'ओंठ' उपमान, 'बोल' उपमेय, 'सन' वाचक, 'कचकच' धर्म। ई पूर्णोपमा अलंकार भेलैक।

तावत् दोसर जनी बजलीह—अहूँक बात त विषे सन होइ अछि।

बाबा बजलाह—एहिठाम 'विष' उपमान, 'बात' उपमेय, 'सम' वाचक। धर्म लुप्त छै तेँ ई लुप्तोपमा अलंकार भेल।

तेसर जनी बजलीह—जेहन ओ छथि तेहने अहाँ छी, और जेहने अहाँ छी तेहने ओ छथि।

बाबा बजलाह—देखह, उपमेयक उपमा उपमानसँ और उपमानक उपमा उपमेयसँ देल गेल छैक। ई उपमेयोपमालंकार थीक।

तावत् चारिम टिपलथिन्ह—अहूँ सन अहीं छी।

बाबा बजलाह—ई अनन्वयालंकारक उदाहरण भेल।

पुनः केओ बजलीह—बाप रे बाप! रातदिन भदहुकिच्चन! ई घर मछहट्टोसँ बढ़ि गेल।

बाबा बजलाह—एहिठाम उपमेय 'घर' मे उपमान 'मछहट्टा' सँ अधिक उत्कर्ष देखाओल गेल छैक। ई व्यतिरेक अलंकार भेलैक।

दोसर जनी बजलीह—ऐ! अहाँ लोकनिक मुँहमे लगाम नहि अछि ? जीभ अछि की चरखी ?

बाबा बजलाह—देखह, एहिठाम 'लगाम' क वाच्यार्थ नहि लय लक्ष्यार्थ ग्रहण करक चाही—लगभग सन निरोधक वस्तु। जीभमे चरखीक संशय भेने संदेहालंकार भेलैक।

पुनः एक गोटा बजलीह—एहि घरमे कक्को के ? लकामे बड़ छोट से उनचास हाथ!

बाबा बजलाह—एहिठाम काकु द्वारा व्यञ्जित कैल गेल अछि जे केओ कम्म झगड़ाउ नहि। तात्पर्य जे अहूँ भारी झगड़ाउ छी। लोकोक्तिक प्रयोगसँ एहि भावकेँ और अधिक सम्पुष्ट कैल गेल छैक।

दोसर बजलीह—बाजू बाजू। नहि बाजब त पेटक अन्न कोना पचत ?

बाबा बजलाह—'बाजू बाजू' एहि द्विरुक्तिमे वीप्सालंकार छैक। अन्न पचबाक विलक्षण कारण 'बाजब' कल्पित कैल गेल अछि। ई विभावना अलंकार भेलैक।

तेसरि बजलीह—बात शुरुओ ने कैलन्हि, तावत् लेसि देलकैन्ह।

बाबा बजलाह—एहिठाम कारणसँ पहिने कार्यहिक उत्पत्ति कहल गेलैक अछि। अतएव अक्रमातिशयोक्ति अलंकार भेलैक।

ओ पुनः बजलीह—दह! मुँह कोना बनौने छथि जेना केओ आमिल घोंहिकऽ पिया देने होइन्ह ?

बाबा बजलाह—ई उत्प्रेक्षालंकार भेल। एहिठाम हेतूत्प्रेक्षा छैक। आधार सिद्ध छैक तेँ सिद्धास्पद।

ता दोसर जनी बजलीह—ई घर नहि, नरक थीक। हमर बाप आन्हर छलाह जे एहन ठाम क' देलन्हि। जे एहि घरमे एलीह।

बाबा बजलाह—अलंकारक बाढ़ि आबि गेल। एहिठाम 'घर' उपमेयक निषेध कय 'नरक' उपमानक विधान कैल गेल छैक। ई शुद्धापह्नुति अलंकार

भेलैक। दोसर वाक्यमे बाप' उपमेयमे 'आन्हर' उपमानक निषेध रहित आरोप कैल गेल छैक। तें रूपक अलंकार भेलैक। तेसर वाक्यमे 'ऐलीह' ओ 'गेलीह'मे परस्पर विरोधक प्रतीति भेने विरोधाभास अलंकार छैक।

पुनः तेसर कंठसँ बाहर भेल—हूँ। हिनकर बाप त धन्ना सेठ छथिन्ह ! नैहर सँ एकटा कारकौआ त ऐबे ने करै छैन्ह। जौं अबितैन्ह तखनात पृथ्वी पर पैरो नहि धरितथि।

बाबा बजलाह—देखह, स्वरभंगिमासँ ई तात्पर्य बहरैलैक जे हिनक बाप सेठ नहि छथिन्ह। अर्थात् दरिद्र छथिन्ह। एहिठाम काकु द्वारा विपरीतार्थक व्यंजना छैक। कौआक अर्थ 'कौआ सन तुच्छ दूत'। एहिठाम वाचक, धर्म ओ उपमेय—तीनू लुप्त छैक। तें वाचकधर्मोपमेयलुप्ता उपमा अलंकार भेलैक। 'पृथ्वीपर पैर नहि धरब' ई अतिशयोक्ति अलंकार भेल।

चारिम कंठ सँ बहरायल—अहाँक नैहर त धनिक अछि। तें ने अछिजलेक व्यवहार होइछ !

बाबा बजलाह—देखह, एहिठाम ध्वनि छैक जे अहाँक नैहर दरिद्र अछि। नैहरक अभिप्राय माय-बाप भाय-भाउज आदि। ई शुद्धा प्रयोजनवती उपादानलक्षणा भेलैक। अछिजलमे व्याज निन्दा छैक। तात्पर्य जे भृत्यक अभावमे अपने हाथे पानि भरै जाइ छथि। ई गूढ़ प्रयोजनवती लक्षणा भेलैक।

तावत् केओ बाजि उठलीह—चालनि दुसलन्हि सूपकें जिनका सहस्र टा छेद ! अहूँक हाथमे त एखन धरि घट्ठ पड़ल अछि।

बाबा बजलाह—एहिठाम लोकोक्तिक प्रयोग द्वारा प्रस्तुत 'चालनि'क व्याज सँ प्रस्तुत देयादनी पर आक्षेप कैल गेल छैन्ह। तें अन्योक्ति अलंकार बूझह। दोसर वाक्यक भाव निकलैक जे नैहरमे कुटाओन-पिसाओन करैत-करैत अहाँक हाथमे चिह्न पड़ल अछि। एहु ठाम गूढ़ प्रयोजनवती लक्षणा निकलैक।

पुनः कोनो कंठसँ बहरायल—हमर बाप करठिया नहि।

बाबा बजलाह—एहिठाम काकु-वैशिष्ट्यसँ आर्थी व्यंजना बहराइछ जे 'अहाँक बाप करठिया थिकाह।'

तत्पश्चात् सिसकीक स्वर सुनाई पड़ल। केओ गर फँसबैत बजलीह—जे हमरा माथमे सिन्दूर देलन्हि तिनका आँखि पर पट्टी बान्हल छलैन्ह जे करठियाक बेटीकें उठा अनलन्हि।

बाबा बजलाह—सोझे 'स्वामी' नहि कहि 'जे हमरा माथमे सिन्दूर देलन्हि' एना घुमा-फिराकऽ ब्राह्मिकी प्राणायाम कैल गेल अछि। ई पर्यायोक्ति अलंकार भेलैक।

एकरहिमे केओ नहूँ-नहूँ किछु बिन्हुलबिन्हु से सुनाई नहि पड़ल। ताहि पर दोसर जनी उत्तेजित भऽ फुफकार छोड़लन्हि—जे हमरा एना गंजन करबै छथि आब तिनके आ कऽ ढ़ुम बला करै दिऐन्हि।

ई कहैत ओ मसुर लऽ कऽ दुरखा दिस बढ़लीह।

बाबा बजलाह—आब पड़ाह। नहि त सभटा अलंकार बहार भए जैतौह। बलुका पाठ एतबे धरि रहय दैह।

बाबाक संस्कार

[ई कथा स्व० रमानाथ झाक अनुरोधपर लिखल गेल छल से हुनका द्वारा सम्पादित 'कथा-संग्रह, (६४) मे प्रकाशित भेल।

व्यंग्य, विडम्बना, हास्य, करुण्य—सभक सम्मिलित स्वाद लेने ई कथा अपन प्रभावमे विशिष्ट भऽ सफल अछि, तकर कारण प्रायः ई जे हास्य आ व्यंग्य मूल संवेदना कारुण्यक सहयोगी भऽ कऽ आयल छैक। कथाक अन्तिम पंक्ति कथाकें एक भऽ-काक संग अर्थ-विस्तार दऽ दैत छैक, प्रभावक प्रक्षेपण आर आगाँ धरि कऽ दैत छैक, आ कथा एकटा बृहत्तर आयाम लऽ लैत छैक। कथा पाठककें अन्तमे एकटा दोसर उच्चतर धरातल पर ठाढ़ कऽ दैत छैक जतऽ सँ ओ एकटा संदेश सेहो ग्रहण करैत अछि जे ओकरा 'जेनरेशन गैप' अथवा 'पीढ़ीक संघर्ष'कें बुझऽमे सहायक प्रभाव व्यंग्यमे होइत छैक, परन्तु मूल संवेदना कथामे कारुण्ये छैक जे सम्पूर्ण कथामे पसरल छैक।]

भगीरथ बाबा जखन बूढ़ भऽ गेलाह त सातो बेटा उकछि गेलथिन्ह। एही बेटाक खातिर भगीरथ बाबा कामरु बोधने रहथि, सातो-साल अजगैबीनाथ सँ गंगाजल बोधि बाबा बैद्यनाथ पर ढारने रहथि। वरदान-स्वरूप एकटा के कहय, सात-सात पुत्र भेलथिन्ह।

भगीरथ बाबा गद्-गद भऽ गेलाह। बहु परिश्रमसँ धाम चुआकऽ परती भूमि कें तामि-कोड़ि कऽ भीट खेत बनौने रहथि, बैसाख-जेठमे बैलक बैल पानि पटा कऽ कलमबाग लगौने रहथि। बेटा सब कें भरल बखारी भेंटलैन्ह, फरल मालदहु भेंटलैन्ह। भगीरथ बाबा स्वयं मट्ठा पीबि बेटा सभकें छाल्हो पर पोसने रहथि।

बाबा बहरघरामे सुतथि। सेहो बेटा लोकनिकें आँखि लगैन्ह। कहिया ओ घर खाली हो जे माल-जाल बान्हल जाय। कोना त स तो भायकें सातरंगक विचार रहैन्ह, परन्तु पिताकें बीजे सद्गति भऽ जाइन्ह एहि बातमे सभ एकमत रहथि।

परन्तु बूढ़ाक हार-काठ तेहन जे कहियो माथो नहि दुखाइन्ह। बेटासभ खिसिया कऽ बाजथि—ई बूढ़ा कहियो नहि मरताह। लोमश ऋषिक आयु लऽ कऽ आएल छथि। हमरा लोकनिक औंठी खा लेताह। यमराजकें हिनक बही हेरा गेलैन्ह।

बूढ़ा गदगद सभटा सुनथि और दालि-भातक कौर संग घोंटि जाथि। बूढ़ाक भोजनकाल पाचनक्ति तेहन तीव्र आलोचना होइन्ह जे बूढ़ा अनेक काल हाथ बारिकऽ बैसि जाथि। परन्तु के आबि कऽ मनबैन्ह जे 'बाबूजी, और खाउ'। बूढ़ा अपने रुसथि, अपने बौंसथि। एक दिन मन भेलैन्ह जे अमौट खाइ। अमौट त एक दिन आमाशय उखड़ि गेलैन्ह। डेराइत-डेराइत अजलाह—कनेक कोंच बेल पका कऽ केओ दैत। उत्तरमे उपदेश भेटलैन्ह—'औषधं जाह्नवीतोयं वैद्यो नारायणो हरिः!' ताहि दिनसँ बूढ़ा उकासियो नहि करथि जे लगले काशी पहुँचा देत।

बाबाकें ई बुझबामे आबइ नहि रहलैन्ह जे हुनक स्वास्थ्य ओ दीर्घायुसँ सभ सकच्छ भऽ रहल अछि। आब जीवित रहि ओ अपराध कऽ रहल छथि।

एकदिन बाबा कछनी काछि कऽ पड़ि रहलाह। एकबेर हिचकी उठलैन्ह। सुपुत्र लोकनि बाटे तकैत छलथिन्ह। तुरन्त गंगा लऽ जेबाक आयोजन भेलैन्ह। अत्यन्त तत्परतापूर्वक काँच बाँस कटबाय, अर्थी बनबाय, बाबाकें ओहीपर सुताय, सातो पुत्र कान्ह लगाय चौबम घाट लऽ चललथिन्ह। बाटमे बाबा जहाँ किछु बजाय चाहथि कि 'रामनाम सत्य'क तुमुल निनादमे ओ विलीन भऽ जाइन्ह।

माघ मास रहैक। पछबाक लहरिमे लोक जाड़ें ठिठुरैत रहय। बाबाकें भरि छाति पानीमे—गंगाक हिलकोरमे बैसा देल गेलैन्ह। आब बाबाकें पछताबा होमय लगलैन्ह जे कहाँसँ एहि फंदमे फँसि गेलहुँ। परंच आब घुरब कठिन छलैन्ह। सुपुत्र लोकनि चाककातसँ माथ गोंति गंगालाभ करावय लगलथिन्ह। बूढ़ा थरथर काँपय लगलाह। बर्फ सन शीतल जलमे देह सर्द भऽ गेलैन्ह। पुत्र सभकें हाथ थम-थम नेहोरा करय लगलाह—'हौ अजय! जाड़ होइ अछि! हौ विजय! ऊपर लऽ चलह। हौ संजय! आगि तापब। हौ धनंजय! भूख लागल अछि। मृत्युञ्जयो कम्मल ओढ़ाबह।' परन्तु सभटा कातर-कलरव अरण्यरोदन सिद्ध भेलैन्ह। केओ कर्णपात नहि कैलकैन्ह। कारण जे ओहिदिन पुण्य तिथि—माघी पूर्णिमा—छलैक। एहन पर्वमे मृत्यु! एहिसँ बढ़ि सौभाग्य बूढ़ा के और भऽ सकै छैन्ह? आइ नहि मुइने भदबा पड़ि जैतैन्ह। दोसर जे सुपुत्र लोकनिकें एखन रब्बीक ताल छैन्ह, कुसियारक रर्जी कटैबाक छैन्ह, तम्बाकू मरचाइ बेचबाक छैन्ह, हाटसँ बकुब किनबाक छन्ह अतएव आइ बाबाक मृत्यु भेनाइ आवश्यक, नहि त बहुत हर्ज हैतैन्ह।

सातो भाय कृतसंकल्प भऽ तेतेक डुबकुनियाँ देलथिन्ह जे वृद्ध संज्ञाशून्य भऽ गेलाह। सातो भाय हाथोहाथ हुनका उठा श्मशानमे लऽ गेलथिन्ह। सात मन लकड़ीक चिता पर भीष्म पितामह जेकाँ हुनका सुताओल गेल। अकस्मात् वृद्धक देह कनेक सुगबुगा उठलैन्ह। बुझि पड़ल जेना ओ हाथसँ किछु संकेत करैत होथि। से देखितहि चिनभकित लोकनि ऊपर सँ मोटर चिल्ली राखय लगलथिन्ह। जेना जुड़शीतलमे खरहक शिकारमे ढेप बरिसैत अछि तहिना वृद्धक ऊपर चेरा बरिसय लगलैन्ह। बाबाक सौंसे देह तोपा गेलैन्ह। केवल मुँह टा देखाइ पड़ैन्ह। मुर्दा बाबा तेहन कठजीव रहथि जे एतेकें भेलो पर प्राण नहि गेलैन्ह। ओ प्रायः किछु बाजक हेतु मुँह खोललन्हि त जेष्ठ पुत्र ओहि मे ऊक लगा देलथिन्ह और सभ मिलि बाँसक फट्ठा लय बाबाक कपाल-क्रिया करय लगलथिन्ह।

चिता प्रज्वलित भऽ उठल और अग्निदेव सातो जिह्वा सँ चटचट आहार करय लगलाह। देखैत देखैत बाबाक शरीर भस्मावशेष भऽ गेलैन्ह। केवल किछु अस्थिखण्ड टा रहि गेलैन्ह जे सातो सुपुत्र श्रद्धापूर्वक बीछि गंगाक प्रवाहमे भसा देलथिन्ह।

मास पर आबि सातो भाय श्राद्धक भोज कैलन्हि। सात गाम जयवार। दही चूड़ा चीनी मुड़वा। जयजयकार भऽ गेल। उत्तरी टुटलाक बाद उत्तराधिकारी स्वच्छन्द भऽ गेलाह। महापात्र लोकनि नेहाल भऽ गेलाह। केओ बाबक पलंगो लेलन्हि, केओ छाता केओ पाग, केओ खड़ाम। एव प्रकारेँ बाबाक अस्तित्वक सभटा चेन्ह मेटा देल गेलैन्ह।

द्वादशाक उपरान्त सर्वप्रथम कार्य ई भेल जे सातो भाय भगीरथ बाबाक नाम कटबाय अपन-अपन नाम खतियानमे दर्ज करबौलन्हि। तेहने उल्लास वा उमंगसँ जेना नव पीढ़ीक किछु कर्मठ किन्तु उताहुल साहित्यकार होथि।

□

द्वादशनिदान

[ई कथा 'मिथिला मिहिर' (८ सित०' ७४) मे छपल अछि ।
सामयिक राजनीतिक-सामाजिक स्थितिकेँ लऽ कऽ लिखल व्यंग्य-कथामे ई अपन विशिष्ट स्थान एहि कारणेँ रखैत अछि जे अपन छोट कलेवरमे ई कथा नौकरशाही पर बड़ पैघ चोट करैत अछि । जनताक मूलभूत समस्या सभक निदानक खाढ़ लऽ व्यवस्था कोना उच्चस्तरीय समितिक माध्यमे अपन 'उल्लू सीधा' करैत अछि । तकरा कथा बड़ सशक्त ढंगसँ उभारि कऽ रखैत अछि । कथा सामयिक परिचित यथार्थसँ जाहि सहज आ सघन रूपेँ पाठकक साक्षात्कार करबैत अछि, से ओकरु सोचकेँ सहजहिँ दूर धरि लऽ जाइत छैक । स्थितिक विडम्बना एक दिस खतः पाठकमे दुःख आ करुण संवेदनाक संग एक प्रकारक छटपटाहटि उत्पन्न करैत छैक, ततहि दोसर दिस कथाक व्यंग्य ओकरामे यथास्थितिक प्रति रोषकेँ जन्म दैत छैक ।]

ओहि दिन जनताक कल्याणपर विचार करबाक हेतु एक उच्चस्तरीय समिति बैसल छल । दूर-दूर सँ सदस्यगण आयल छलाह । एक एक सज्जन बजलाह—सभ अनर्थक जड़ि थिक ई महगी । मुद्रास्फीतिक कारण वस्तुक दाम नित्य बढ़ल जाइत अछि । यावत् धरि ई मूल्यवृद्धि नहि रोकल जायत तावत् लोकक कल्याण नहि । तेँ हमर विचार जे सर्वप्रथम चोरबजार आ भ्रष्टाचारक उन्मूलन कयल जाय ।

दोसर गोटा कहलथिन्ह—कोना कयल जाय ? चोटका चोरकेँ पकड़बाक भार जकरापर छैक से बड़का चोर अछि । इनना-पोठियाक ऊपर रहु-भाकुर बैसल अछि । ई मत्स्य-न्याय समस्त देशमे पसरल अछि । नीचाँसँ ऊपर धरि । एहना स्थिति भ्रष्टाचार कोन दूर भऽ सकैत अछि ? तेँ हमर विचार जे सर्वप्रथम राष्ट्रीय चरित्रक निर्माण हैव आवश्यक अछि ।

तेसर गोटा बजलाह—चरित्रक निर्माण के करत ? 'स्वयमसिद्धः कथ परान् साधयति !' केवल नैतिकताक उपदेश देने कोनो फल नहि । यावत् कोडरसँ कठोर दंड-विधान नहि हैतक तावत् भ्रष्टाचार दूर नहि हैत । 'बिनु भय होहि न प्रीति ।'

चारिम गोटा बजलाह—दण्ड-विधान तँ छैके । किन्तु ओ कार्यान्वित कहाँ

होइत अछि ? एहि खातिर प्रशासन-यंत्रमे दृढ़ता अनबाक चाही । जमाखोरी आ मिलावट करऽबलाकेँ तेहन सजाय देल जाइक जे फेर ककरो साहस नहि होइक ।

पाँचम गोटा कहलथिन्ह—केवल कानूनी दंडसँ काज नहि चलतैक । भ्रष्टाचारीक सामाजिक बहिष्कार हेबाक चाही । यदि समाजमे एहन चेतना जागि जाइक, तखन भ्रष्टाचार दूर भऽ सकैत अछि ।

छठम गोटा कहलथिन्ह—केवल भ्रष्टाचारे दूर भेने समस्याक समाधान नहि भऽ सकत । यावत् उत्पादनमे वृद्धि नहि हैत तावत् वस्तु सुलभ नहि हैत । तेँ हमरा सभकेँ चाही जे अधिक सँ अधिक उत्पादन करबामे समस्त शक्ति लगा दी ।

सातम गोटा बजलाह—केवल उत्पादनेम बढ़ौलासँ काज नहि चलत । देशक जनसंख्या भयंकर रूपसँ बढ़ल जा रहल अछि । एतेक रास मुँह भरल कोना जायत ? एक अनार, हजार बीमार । तखन अँटक मुँहमे जीरक फोड़नसँ की हैतैक ? तेँ हमर विचार जे युद्धस्तर पर परिवार-नियोजनक अभियान चलाओल जाय ।

आठम गोटा कहलथिन्ह—केवल सरकारी डोल पिटने गर्भाधान नहि रुकि सकैत अछि । स्त्री-पुरुष स्वेच्छया इन्द्रियसंयमक अभ्यास करथि, तखन संतति-निरोध भऽ सकैछ । तेँ हमर विचार जे ब्रह्मचर्य-शिक्षा पर जोर देल जाय ।

नवम गोटा बजलाह—देशमे वीर नागरिक हो तखने राष्ट्र सबल भऽ सकैत अछि । से पौष्टिक आहार बेतेक नहि भऽ सकैत छैक । तेँ हमर विचार जे प्रत्येक व्यक्ति हेतु उचित मात्रामे शुद्ध दूधक व्यवस्था हो ।

दशम गोटा बजलाह—जहाँ अन्ने दुर्लभ तहाँ शुद्ध दूध सभकेँ कहाँस भेटतैक ? चाराक अभावमे लचार भऽ लोक गाय पोसनाइ छोड़ि रहल अछि । गोरस सुखायल जा रहल अछि । तेँ हमर विचार जे कृषि आ पशुपालन पर सभसँ अधिक ध्यान देल जाय ।

एगारहम गोटा बजलाह—परंच खाद, बीज, जोताई आ सिंचाइक साधन ततेक कठिन भऽ गेल छैक जे खेतिहर सभ कानि रहल अछि । ताहि पर साले-साल ई भीषण बाढ़ि आ रौदीक चपेट लोकक रीढ़ तोड़ि देलकैक अछि । जनताक पेट पीठमे सटल जाइत छैक आ सरकारी 'रिलीफ' बाँटऽ बला अफसरक धोधि और बेसी फूलल जा रहल छनि । 'एंटिकरप्शन डिपार्टमेन्ट' केँ और अधिक सक्रिय बनेबाक चाही ।

बारहम गोटा कहलथिन्ह—किन्तु खैराति पर जनता कतेक दिन खेपत ? आत्मनिर्भरता हैब बहुत जरूरी छैक । गरीबी आ बेरोजगारी दूर हेबाक चाही । शिक्षामे आमूल परिवर्तन हेबाक चाही । उद्योग-व्यवसायक वृद्धि हेबाक चाही । 'परकैपिटा' आमदनी बढ़बाक चाही । एखन लाखक एहन व्यक्ति अछि जकरा

भरि पेट जनैरोक रोटी भेटब कठिन छैक। तेँ सरकारके चाही जे विलासिता आ फिजूलखर्ची पर कड़ा रोक लगा देथए।

सभाध्यक्षक एहि भाषणक समर्थनमे जोरसँ करतल-ध्वनि भेल।

तावत् 'लंच टाइम' भऽ गेलैक।

सेक्रेटरी टेबुलपरक घंटी बजा देलथिन। तत्क्षण सभक आगाँमे चाय, कटलेट करी, पोलाव, केक, पुडिंग, रस-मलाइ आ आइसक्रीमक पथार लागि गेलथि। सदस्य लोकनि जनताक असीम कष्टसँ करुणार्द्र चित्त होइत भोजनमे दत्तचित्त भऽ गेलाह।

तदनन्तर रुमालसँ हाथ-मुँह पोछि सभ गोटे 'बिल फार्म' पर अपन-अपन यात्रा-भत्ताक हिसाब जोड़ि आफिसक किरानीक हाथमे थम्हा देलथिन जकर कुल राशि दू सहस्र टाका भेलैन्ह। सदस्यगणक सम्मिलित विचार भेलैन्ह जे एक दिनमे तेँ सभ समस्याक समाधान हैब असम्भव, तेँ पुनः अग्रिम बैसकमे सुव्यवस्थ भऽ विस्तारपूर्वक विचार कयल जाय। पन्द्रह दिनक भीतर दोसर तिथि निर्धारित कयल गेल। तदुपरान्त सभ गोटे सुरुट पिबैत अपन-अपन कारमे जा बैसलाह।



ग्रेजुएट पुतोहु

पण्डित काकाक आङनमे आइ बी० ए० पास कनिञा आबि रहल छथिन्हि। ई सुनितहिं सौंसे गाममे कुतूहलक बाढ़ि आबि गेल। स्त्रिगणक देहमे गुदगुदी लागए लगलन्हि पण्डिताइनक करेज भालरि जेकाँ काँपए लगलन्हि। आइ-कालिह ए० बी० पढ़एवाली कनिञाक ज्ञानमे जुमब कठिन। बी० ए० वालीकें के टेबि सकैत अछि? बड़की पुतोहुकें पुछलन्हि—अए दुलुकरानी! अङरेजीवाली कनिञाकें एहि घरमे नीक लगतन्हि? हुनका कुर्सी पर बैसिकें अखबार पढ़बाक हिस्सक होएतन्हि, एहि ठाम हमरा सभक संग चिनवार नीपल पार लगतन्हि।

मुजौनावाली तुलसी चौरा पर दीप लेसैत बजलीह—एतबा डर छलन्हि त अङरेजीवालीक सओखि किएक भेलन्हि? कोनो हमरे सभ सन हरही-सुरही अनितन्हि त भरि दिन खटैत रहितन्हि।

सासु गंभीर होइत कहलथिन्ह—अए कनिञा! भावी पर ककरो सक्क चलै छैक? नहि त ओहन धनीक जमीदारक बेटीकें छोड़ि श्रीकान्त ओहि मास्टरनीक बेटिए पर किएक ढुलि गेलाह? बिनु दामे ओकरा हाथ बिका गेलाह? नहि जानि छौंड़ीक देहमे कोन गुण छैक? सुमित्रा मिडिलमे पढ़ैत छलि। माइक बात सुनि बाजलि—तों सभ ओकरा देहक गुण की बुझबहीक?

मुजौनावाली बजलीह—बदलि त जएबे करैत छैथ। पण्डिताइन कहलथिन्ह—बेसी लुब-लुब नहि कर। 'तोहूँ पढ़ै लगलेहें'। जा त अपन देह। ओहिमे घुट्ठी काटि देखैत छिऔक।

एतबहिमे मोटरक आवाज सुनाइ पड़ल। तीनू जनी दुरुखा दिस दौड़लीह। देखैत-देखैत सौंसे टोलक आइमाइ पछुआड़ बाटे आबि जमा भए गेलीह। नवहथवाली अपना आङनमे चाउर छटैत छलीह। ओ सूप फेंकिकें दौड़लीह। नागवड़वाली राहड़ि उलबैत छलीह। ओ खापरि पटकिकें दौड़लीह। इनार पर तनौतावालीकें रामवती-बाइसँ एकटा रजमनिक खातिर झगड़ा होइत छलन्हि। पों पों सुनैत बेरी दुनू गोटे झगड़ा छोड़ि दौड़लीह। सहुओ पीसीकें चालि नहि होइत छलन्हि। हुनका सुभद्राबाइ हाथ धराकें लए अएलथिन्ह। एवं प्रकारें पण्डिताइनक आङनमे मेला लागि गेल।

तावत मोटर दरबाजा पर पहुँचि गेलन्हि।

पण्डिताइन आइमाइकेँ सम्बोधित कए कहलथिन्ह—आब शुभ-शुभ कए चलै चलथु। पुतोहुकेँ उतारथु।

आइमाइक छाती धड़कए लगलन्हि। मोटरमे ओहार लागल होएतैक। एक कोनमे कनिञा घोघ तनने दबकलि सुटकलि बैसल होइतीह। सासु मुँह उघारिकेँ लोककेँ देखओथिन्ह। कनिञा लजाकेँ आँखि मूनि लेतीह। मुनै छिऐक बड़ सुन्दरि छैक। देखा चाही केहन मुँह छैक।

एक झुण्ड स्त्रिगण मड़ौत काढ़ने कनिञाकेँ उतारक हेतु दरबाजा दिस बिदा भेलीह। परन्तु बिचबहिमे तेहन अभूतपूर्व घटना घटित भेल जे सभ आइमाइ मुँह बओने ठाढ़ि रहि गेलीह।

नवकनिञा चमकैत चश्मा लगओने उघारे माथ मोटरसँ उतरलीह आओर स्वामीक संग चट्टी पर खटखट करैत सोझे आङनमे पहुँचि गेलीह। आइमाइक आँखि चोन्हिआ गेलन्हि। कनिञा परसोनेलिटी (व्यक्तित्व) वाली छलीह। कदसँ एक बीत ऊँच। देहोदशा खूब भरल पुरल। ओहिना तारकुल जेकाँ रस उबडुब करैत। मानिए दोसर। जेना पितड़िया बासनक बीचमे एकटा स्टेनलेस कसहुसँ आबि गेल हो।

कनिञा अपन रिमलेस चश्मासँ एक बेर विहंगम दृष्टि दैत स्वामीसँ बजलीह— हम त एहि ठाम किनको चिन्हैत नहि छिअन्हि। परिचय करा दितहुँ त नीक होइत।

सभ आइमाइ अवाक् रहि गेलीह। नथहुकवाली नागवहुवालीकेँ चुट्टी काटए लगलथिन्ह, नागवहुवाली तनौतावालीकेँ। श्रीमान्‌ अपना माए दिस संकेत कए कहलथिन्ह—ई अहाँक सासु थिकीह!

कनिञा अपना पर्सकेँ बगलमे दाबि दुनू हाथसँ अञ्जलि जोड़ि सासुक चरण स्पर्श कएलन्हि। पण्डिताइन लाजे कठुआ गेलीह। नीक जेकाँ नाककेँ झाँपि लेलन्हि।

तत: पर अन्यान्य स्त्रिगणक यथायोग्य अभिवादन करैत कहलथिन्ह—अहाँ लोकनि ठाढ़ि किएक छी? बैसइ जाउ। ई कहि कनिञा आङनमे ओछाओल शतरंजी पर बैसि गेलीह। पुनः ननदि दिस ताकि बजलीह—पहिने एक गिलास ठंढा शरबत पिआउ।

आइमाइ दाँत तर जीभ काटए लगलीह। फेर क्रमश: सभ गोटे शतरंजी पर आबि बैसैत गेलीह।

सुमित्रा भौजीकेँ शरबत दए स्त्रिगणकेँ कहलथिन्ह—अहाँ लोकनि चुप्प किएक छी? शुभ समयमे गीतनाद होमक चाही। नागवहुवाली उठओलन्हि—

'हे जगदम्ब हरु सभ संकट त्रिभुवन तारिणि ए'—गीत त बेस टहंकारसँ उठओलन्हि किन्तु सम्भारमे नहि रहलन्हि। अंतरा पर अबैत-अबैत भसिआ गेलन्हि।

कनिञा शरबत पीबिकेँ बजलीह 'एहि गीतकेँ एना लयमे बान्हिकेँ कहिऔक आओर अङुरसँ ताल दैत गाबए लगलीह—हे ज' ग। दम्ब। हरु स' भ। संकट त्रिभुवन। तारिणि'''पुनः स्वामी दिस ताकि बजलीह—हमर बेहाला त आनि दिअ। हम तेतालामे ई पद गाबिकेँ सुना दैत छिअन्हि। एम्हर कनिञाक तेताला समाप्तो नहि भेल छलन्हि कि बाहरसँ ससुरक चौताला शुरु भए गेलन्हि। पण्डित जी एकाएक बिहाड़ि उठबैत आङनमे आबि पहुँचलाह आओर पण्डिताइन पर गरजैत बजलाह— एहि ठाम नाच भए रहल अछि कि मोजरा भए रहल अछि? हमरा घरमे ई सभ निर्लज्जता नहि चलत से कहि दैत छी। अहाँ लोकनिकेँ नाच करब हो त कटकीबजारमे जा कए नाच करू गए। आओर ई आइमाइ लोकनि जे जमा भेल छथि से सभ अपन-अपन घर जाइ जाथु।

ई कहैत पण्डित जी ओरसँ खड़ाम खटखटबैत बाहर गेलाह। सभ केओ सन्न रहि गेल। तखन सहुओ पीसी निस्तब्धता भंग करैत बजलीह—की अए आइमाइ सभ! आबो घर चलब घरबैआसँ मारि खा कए उठब? आबो किछु संस्कारमे भाङठ अछि? चलीं, अहाँ लोकनि तेल सिन्दूर लेल बैसलि रहू। हम चलैत छी।

ई कहि सहुओ पीसी तरांक कए बिदा भए गेलीह। हुनका उठितहिँ सम्पूर्ण मण्डली पाछाँ लागि गेलन्हि। आब बाटमे गरमागरम समालोचनाक फुलझड़ी उड़ए लागल। सहुओ पीसी पेनी छलन्हि—ह: ह: ह:। जे संसारमे नहि भेल छल से आइ पण्डितक आङनमे देखि लेल। हम सत्तरि बरखक भेलहुँ परन्तु आइ धरि एहन कनिञा कतहु नहि देखने छलहुँ। तनौतावाली टीप देलथिन्ह—ह:।

ई सभ अकड़हुए कए देलक।'''नागवहुवाली व्याख्या करैत बजलीह—वास्तवमे ई मौगी जग जितने अछि। लाज संकोचक एको रत्ती छूति नहि छैक। जेना आँखिक पानि ढरि गेल होइक। एकाठोस केहन? ससुरोक अएलापर माथ झपलकै? रामबतीदाइ टिप्पणी कएलथिन्ह—अहूँ चमत्कारे करैत छी। जे अंग स्त्रीक लज्जा थिकैक से त झपनहि नहि छल आओर अहाँकेँ केवल माथे टा सुझैत अछि। नवहुकवाली पुष्ट कएलथिन्ह—हम त लाजे मरि गेलहुँ। जखन आधा छाती उघाड़े रहतैक त लोक आङी पहिरबे करत किएक?

शुभकलादाइ परिस्कार करैत बजलीह—अए, आइ काल्हि एहने फैसन चलल छैक अछि। ओ हमरा सभ जेकाँ देहातीनि नहि छैक जे तोपड़ कए आँचर राखत। रामबतीदाइ खण्डन कएलथिन्ह—मारू बाढ़नि एहन फैसनकेँ। हमरा लोकनिकेँ एहि युगमे एना कए होएत?

पिलखवाड़वाली बजलीह—त; हमरा लोकनि सासुर अएलहुँ त छओ मास धरि केओ उकासियो नहि सुनलक। बीस वर्ष सासुर बसला भेल तथापि ओखन धरि पलटीक बापसँ अनका सोझाँ बजैत संकोच होइत अछि। आओर ई त अबितहिँ टापिसँ टुम-टुम बाजए लागि गेल। जेना श्रीकान्त ओकर सरभँैया होथिन्ह।

सुभकलादाइ टिपलथिन्ह—सरभँैया त छथिन्हे। दुहू गोटे कलकत्तामे सङहि-सङ बी० ए० पास कएने छथि; एक्के कालेजसँ।

नागदहवाली बजलीह—तेँ ने श्रीकान्तकेँ किछु गुदानैत नहि छन्हि। एकपिठिया जेकाँ लगैत छन्हि।

तरौनावाली संशोधन करैत कहलथिन्ह—एकपिठिया नहि पितियाइन कहू। श्रीकान्त ओकरा आगाँ छुच्छहुन लगैत छथिन्ह। यदि ओ कसि कए एक थापड़ लगबन्हि त' श्रीकान्तकेँ उठि कए पानि पीबाक होश नहि रहतन्हि।

सहजो पीसी समर्थन करैत कहलथिन्ह—धुर जो। एहन ताड़गाछ कतहु मौगि भेलए! पीठ केहन चाकर छैक जेना सुखदेव पहलमान हो।

सुभकलादाइ पक्षान्तर ग्रहण करैत बजलीह—अहाँ जे कहिऔक। परन्तु हमरा त होइ छल जे देखिते रहिऐक। ओहन सुन्दर गठल देह सिनेमे टामे देखने छिऐक!

नवहथवालीकेँ छुस वए लगलन्हि। चमकि कए कहलथिन्ह ई अहाँ की बजैत छी। एहि गाममे एकसँ एक सुन्नरि अछि! पिलखीवाली कि ओकरासँ कम्म गोरि छथि? हँ, तकर ई कहु ने ओ मेम जेकाँ फैसन बनओने रहैत अछि।

सुभकलादाइ प्रतिवाद करैत बजलीह—केवल गोर भेने नहि होइत छैक। ओकरा मुँहपर जे पानि छैक से पिलखीवालीकेँ एहि जन्ममे हेतन्हि? पीअर मुँह सुखाएल समतोला सन सटकल गाल। आओर ओकरा देखिऔक, अंगूर जेकाँ—छलकैत अछि।

नागदहवालीकेँ बेसि देलकन्हि। व्यंग्य करैत कहलथिन्ह—आओर अहाँ कि सुखा क' मोनक्का भए गेलहुँ अछि?

सुभकलादाइ प्रत्युत्तर दैत बजलीह'''से आब अहाँ जकरा कए जे कहू परन्तु हम बात कहब सत्ते। अहाँ लोकनि देहकेँ पुआरय बनैत छी। आपनामेँ ततेक दबा कए, लिबा कए, निङ्ग्रा कए रखैत छी जे सिट्ठी बनि जाइ छी। पिलखीवालीकेँ लिअ। बीससँ कम्मेमे चुसिकए निमकी बनि गेल छथि। आओर ओहि कनिञाकेँ देखिऔक। बाइस चौबीससँ कम नहि होएत। परन्तु ढँभाएत लताम सन अछि।

आब रामवतीदाइकेँ नहि रहि भेलन्हि। बजलीह—हे गए! बहुत सुनलिऔक। हमरा लोकनिक बेटी पुतोहु ओना उतरा भए क' छमकत से छमकए देबैक?

हमर कनिञा जँ ओना साँय लग बैसि फदिआय लागत त छाउर लगाकए सङ्ग दए जीह खीँचि लेबैक। हमरा त होइत अछि जे ई अजाति थीक।

भौजपड़ौलवाली नहि-नहि बजलीह—अए दाइ। बूझू त हमरो मनमे एहि बात आएल छल। किन्तु डरे नहि बजलहुँ। जँ ई कुलकन्या रहैत त माए सिखओने नहि रहितैक?

सुभकलादाइ सफाइ दैत कहलथिन्ह—एकर माए स्कूलमे काज करैत छैक। ओहो बराबरि बोडिंगमे रहैत आइलि। तेँ सामाजिक व्यवहार नहि बुझल छैक।

सहजो पीसी उत्तेजित होइत बजलीह—तखन एकर माइयो बेलाइलि हैतैक। केहन अगिया बड़-जा कए एहन बेटी जनमओलक से नहि कहि।

नवहथवाली बजलीह—पण्डितकेँ कि ई कथा कहिओ फुटलो आँखिएँ सोहएलन्हि बराबरि विरोध करैत रहलथिन्ह। तेँ ने विवाहमे गेलथिन्ह, ने द्विरागमनमे। ई त बूझू जे श्रीकान्तक जिद्'''''

पिलखवाड़वाली पुछलथिन्ह—बेटाकेँ रोकलन्हि किएक ने? नवहथवाली कहलथिन्ह—आइएलि एकर बेटा वशमे रहैत छैक? आओर बेठ भाइक मुहेँ श्रीकान्त बुलरुआ भए गेलाह। जँ पण्डित जीकेँ बुद्धि पड़ितन्हि जे अन्त एना बिसाएत त श्रीकान्तकेँ कथमपि कलकत्ता राखि नहि पढ़बितथिन्ह।

सहजो पीसी अध्याय समाप्त करैत बजलीह जे बड़ गर्जैत अछि तकरा एहिना होइत छैक। ई पण्डित अनका बड्ड दुसैत छलथिन्ह। आब लेथु। तेहन कपार पर पड़लन्हि आछु जे सब पोथी पतड़ा घोसाड़ जएतन्हि। हए लोकनि, हमर बात गीरह बान्हि लैत जाइ। यदि ई मौगी एक दिन पण्डितजीक माथ पर नहि नाचन्हि त हमरा नामे एकटा कुकुर पोसि लिह।

रातिमे भोजन काल पण्डित जी स्त्रीकेँ कहलथिन्ह—देखू। अपना पुतोहुकेँ सम्हारू नहि त हमरा गाम छोड़ए पड़त। पण्डिताइन घबड़ाइत पुछलथिन्ह से किएक? पण्डित जी—ओ जे भोरे उठि सड़क पर टहलए जाइत छथि से देखि सौंसे गाम हँसैत अछि। पण्डिताइन—ओ कहैत छथि जे भोरमे टहलबाक हिस्सक छन्हि। एहिसँ स्वास्थ्य बनैत छैक।

पण्डित जी हमर नाक कटा रहल अछि आओर ओ अपन स्वास्थ्य बनबैत छथि! आब हुनका डारे हमरा बाड़ी भूमिओक बाट बन्द भए जाइत अछि।

पण्डिताइन डेराइत डेराइत कहलथिन—कि करबैक? कनेक आँखि मूनि लेथु।

पण्डित जी उत्तेजित भए बजलाह—की बजलहुँ। हम आँखि मूनि लिअ। आओर ओ चश्मा पहिर कए सौंसे गाम बुलल घुरथु।

पण्डिताइन दही परसैत कहलथिन्ह—ओ कहैत छथि जे ओहि प्रात नहि बहरएने जो औनाए लगैत अछि। एही ठाम मुनीनाबाली त हमरो लोकनिसँ भरि मुँह नहि बजैत छथि आओर नबकी कनिञा काल्हि स्कूलक मास्टरोसँ गप्प कएलन्हि अछि।

पण्डित जी थारी पटकैत बजलाह—आब हम कतहु पड़ा जाएब। भला मास्टरसँ हुनका कोन काज छलन्हि ?

पण्डिताइन—मास्टरकेँ हुनकासँ किछु बुझबाक छलन्हि। जखन श्रीकान्त बुझे नहि भेलन्हि त कनिञा बुझा देलथिन्ह। पं० जी बजलाह—श्रीकान्त हुनका सिक्का पर चढ़ा रल छथिन्ह। जखन टीक धरतन्हि त बुझि पड़तन्हि। ऐ ! ओम्हर की भए रहल अछि ?

पण्डिताइन—अहाँक पुतोहु इसराज बजा रहल छथि।

पण्डित जी—आइ इसराज बजा रहल छथि। काल्हि नचतीह। ताहिसँ बरु कहिऔन्हि जे एके बेर'''। पण्डिताइन—ओ मुनियाकेँ सिखा रहल छथिन्ह।

पण्डित जी—ओ ओकरो बूरि कए रहल छथिन्ह।

पण्डिताइन कहलथिन्ह—अए कि करबैक ? जे होइ छैक से होमए दिऔक। अहाँ खाउ। थोड़े आओर दही लिअ। पण्डिताइन एक बाटी छछिहगर दही आगाँमे दैत पुछलथिन्ह—अए ! एकटा बात कहू ? तामस त ने होएत ?

पण्डित जी—की ?

पण्डिताइन मेहिया मेहिया कए कहए लगलथिन्ह पुतोहुकेँ एहि ठाम खाली बैसल नहि मन लगैत छन्हि। ओ आगाँ पढ़ए चाहैत छथि। पटना दरखास्त पठा देने छथिन्ह। यैह छथि जे जुलाइमे नाम लिखाएब। ओतए होस्टलमे रहतीह कहैत छलीह जे बाबूजीकेँ पहुँचुन्ह जे एक सय टाका मास देल करताह।

पण्डित जीक आगाँ अन्हार भए गेलन्हि। बजलाह—घरमे डोरी होएत ?

पण्डिताइन—से किएक ?

पण्डित जी—आब हम फाँसी लगा कए मरि जाएब। पुनः बजलाह—फाँसी त घरमे ओही दिन लागि गेल जहिआ हमर कुलबोरन ओहन ठाम भखिया गेलाह। एहुमे छओ हजार दैत रहन्हि। अकौरमे सात हजार दैत रहन्हि। लगमामे आठ हजार दैत रहन्हि। से सभटा छोड़ि एहि हड़ाखिनीक फेरमे पड़ि गेलाह। बी० ए० धो कए कि लोक चाटत ? एकटा मकुनीकेँ उठा लएलाह। आब सय टका मास हिनका

ह्यारा देल करिऔन्ह। श्रीकान्त दोसर ठाम विवाह करितथि त हमर बोझ हल्लुक होइत। पुतोहु अबैत से अहाँक बोझ हल्लुक करैत। आओर ई एकटा ढोल गरदनिमे लटकओने अएलाह अछि। श्रीकान्त त पढ़ि कए कमएताह। हुनक बहु एम० ए० पास हएल की करथिन्ह ?

पण्डिताइन कहलथिन्ह—से नहि बुझल, ओहो कमैतीह तँ पढ़बा लेल एतेक व्यग्र छथि। कहै छली जे जँ बाबूजी खर्च नहि देताह त हम अपना गहना बेचि कए पढ़ब।

पण्डित जी सानल दही चीनी छोड़ि क' बजलाह—ओ बिना हमर प्राण लेने नहि रहती। हुनका जे मनमे अबन्हि से करथु। हम हरद्वारक बाट धरैत छी। आब बिना वानप्रस्थे हमरा दोसर उपाय नहि। यदि एहि ठाम रहब त फाँसी लगाब' पड़त।

ई कहैत पण्डित जी तमकि कए हाथ धोबए हेतु विदा भेलाह। परन्तु आङनसँ बाहर होइतहि कियनमे लटपटा कए खसि पड़लाह। ओतहिसँ चिचिअएलाह—'अए' हमरा फाँसी लागि गेल। पण्डिताइन लालटेन लए दौड़लीह। पं० जी अपना स्थूल शरीरकेँ गाबसँ छोड़बैत बजलाह—ई रस्सा के टङने अछि ?

पण्डिताइन भयभीत होइत कहलथिन्ह—कनिञा एकटा खेल खेलाइ छथि ? जिदन कहैत छैक—बडमिन्टन तकरे जाल लगओने छथि ?

पण्डित जी खिसिआ क' बजलाह—आओर गामक छौंड़ा सभ सेहो खेलाए आओत ? सारिटा छुच्छा लफंगा एहि आङनमे जमा होएत आर हमर पुतोहु सभक बीचमे कुदतीह ? ई सभ हम नहि होमए देब। लाउ एखने सलाइ खरड़ि कए एहि जालमे लगा दिऔक। पण्डिताइन कहलथिन्ह—अए ! बुझे बवाल गेलैक त अहाँ किएक कौआइत छी ? चलू, दलान पर हम हरदि चून लगा दैत छी।

× × ×

आधारातिक समय पण्डित जी, दलान पर सुतल रहथि। परन्तु निन्द नहि पड़न्हि। कछमछ करैत भगवानकेँ गोहराबए लगलाह—हे मधुसूदन, कोना ई बवाल माथ परसँ उतरत ? हे चक्रधारी, कोनहुना एहि जालकेँ काटू।

तावत पण्डिताइन दौड़ल अएलथिन्ह। पं० जीक देह झमारि कए उठाबए लगलथिन्ह—अए उठू, उठू ! अनर्थ भए गेल। पण्डित जी—से की ?

पण्डिताइन—घरमे सुतल छलीह। ऊपर चारसँ साप खसि पड़लन्हि। ठोरेमे हबाक देने छन्हि।

पं० जी—कोना बुझलिऐक ?

पण्डिताइन—श्रीकांत अपना आँखिसँ देखलथिन्ह। जोअ'एल गहुमन छलैक।

पण्डित जी हड़बड़ा कए उठलाह। घरमे जाए देखैत छथि कनिञा अचेत पड़ल छथि; मुँहसँ गाजि चलि रहल छन्हि।

भरि राति झाड़फूक भेल। अनेको डाक्टर वैद्य अएलाह। दवाइ पड़लन्हि। परन्तु कनिञाकेँ आँखि नहि फुजलन्हि। ओ तेहन स्थान डसलीह जाहिमे बाँचब असम्भव। सासु ननदि देयादनी इत्यादि छाती पीटए लगलथिन्ह। अड़ोसिन पड़ोसिन घओना पसारलन्हि। स्वामी जे माथ पर हाथ दए गुम्म भेलथिन्ह से गुम्मे रहि गेलथिन्ह। पण्डित जी लोक सभकेँ सम्बोधित कए कहलथिन्ह—आब ककर की बाट छह? अर्थी उठाबह।

श्रीकांत कनिञाक बाजा, पुस्तक, कविताक कापी आर खेलक सामग्री सभटा वस्तु चिता पर सजा देलथिन्ह। देखैत-देखैत आगिक लपट उठल आओर कनिञा अपन साथ सासुरक सब पण्डित जीक घर सर्वदाक हेतु खाली कए देलथिन्ह।

अन्त्येष्टि क्रियाक अनन्तर पण्डित जी घर अएलाह त देखै छथि जे पण्डिताइन सिसकि रहलि छथि।

पण्डित जी हुनका बुझा कए नहुँ नहुँ कहलथिन्ह—अहाँ कनै छी किएक? श्रीकांतिकेँ दस हजार ल' कए दोसर विवाह करा देबन्हि। तेहेन कनिञा आनि देब जे अहाँक सरबा रगड़ैत रहत। ई त बुझू जे गरक पेच टरि गेल। भगवान जे करै छथि से नीकेक हेतु।

पण्डिताइन कनैत-कनैत कहलथिन्ह—ओ फुलकुमारि एहि घरक योग्य नहि छलि। मड़ुआक खेतमे धनहु केदार लगलैक अछि। भगवानकेँ अनकच्छल लगलन्हि। तेँ उठा लेलथिन्ह।

ब्रह्माक शाप

एक दिन ब्रह्मा मनुष्यक मूर्त्ति गढ़ैत रहथि। ताहि बीचमे की फुरलैन्ह जे भाङ पीबि लेलन्हि। भाङ रहैक तेज। तुरत नशा चढ़ि गेलैन्ह। जेना शिवजी ताण्डव नृत्य करै छथि, तहिना ओही 'भांडव' नृत्य करय लगलाह। सम्पूर्ण ब्रह्मलोक डोलि उठल। सृष्टिशालाक भांड सभ ओङ्ढाय लागल। कतेको उनटल, कतेको पलटल। कतेको चकनाचूर भऽ उठल। ओहि नशाक तरंगमे ब्रह्माकें बूझि नहि पड़लैन्ह जे की कऽ रहल छी। जखन बड़ी कालपर जा कऽ हुनका होश भेलैन्ह त देखै छथि जे महान अनर्थ भऽ गेल अछि।

विषधर गढ़बाक हेतु एक मटका विष राखल रहैन्ह, से ओ मटका फूटि कऽ कारी विषक धार लह-लह करैत बहि रहल अछि, मनुष्यक मस्तिष्कमे एक बुंद बुद्धिक तेजाब देबाक छलैन्ह, से भरलो पातिल फूटि कऽ ओही विष संग मिझरा गेल अछि। ऊपरसँ ईर्ष्याक अर्क, द्वेषक सिरका, निन्दाक नौसादर, कटूक्तिक काढ़ा, सभ ओहीमे मिलि कऽ एकाकार भऽ गेल अछि। मनुष्यवला माटि, जे पानि लऽ कऽ सनबाक छलैन्ह से ओही भयंकर मिश्रणमे सना गेलैन्ह। भाङक नशामे बुढ़ाकें किछु ठेकान नहि रहलैन्ह। गढ़ुमन लोथकें ममोड़ि कऽ अंतड़ी बना देलथिन्ह। हृदय-प्रदेशमे विषपिपरीक छत्ता उझीलि देलथिन्ह। कंठमे संखिया घोरि कऽ दऽ देलथिन्ह। जीभमे बिच्छूक डंक भरि देलथिन्ह। ठोरपर सौंगिया मरचाइक बुकनी छीटि देलथिन्ह।

जखन ई भीषण कृत्य देखि ब्रह्मा चारू मुँह बाबि देलन्हि। भयसँ हुनका आठो आँखि पथरा गेलैन्ह। परन्तु आब हो की? जा चेत होइन्ह-होइन्ह ता त मूर्त्तिमे प्राण-प्रतिष्ठा भय चुकल छल।

सजीव होइतहि जो मूर्त्ति लगलैन्ह ब्रह्माकें बौकियाबय- 'हे औ बूढ़ि, अहाँ अपनाकें बड्ड बुधियार बुझै छी? मुँह ने देखिऔन्ह। अपने चारि टा मुँह रखलाह और आन एक्के टा राखी। परन्तु चारि टा मुँह रहने की हैत? हम एक मुँहसँ जतबा चिचियाएब ततबा अहाँ चारू मुँहसँ नहि सकब। ई बूढ़ि रे!' ई कहि ओ तेहन पिचकारी देलकैन्ह जे ब्रह्मा हाथक कुच्ची छोड़ि पड़ैलाह।

ओ मूर्त्ति ब्रह्माकें खेहारलकैन्ह। जाइत-जाइत ब्रह्मा इन्द्रक दरबारमे पहुँचलाह। ओहू ठाम ओ मूर्त्ति पहुँचि गेलैन्ह। इन्द्र पुछलथिन्ह - 'की बात छैक?' ब्रह्मा कहलथिन्ह --

महाराज! हम भाङक जोशमे एकरा मनुष्य गढ़लहुँ से हमरोसँ बेसी तेजगर बहार भऽ गेल। आब ई भस्मासुर जकाँ हमरे माथपर हाथ देबय चाहैत अछि।

इन्द्र मूर्त्तिसँ पुछलथिन्ह - की औ! की बात छैक?

मूर्त्ति कहलकैन्ह - एकांतमे कहब। ओम्हर चलू।

नन्दन वाटिकामे जा कय ओ इन्द्रकें कानमे कहय लगलैन्ह - एहि ब्रह्माकें बुद्धि नहि छैन्ह। देखू ने, अहाँक ऐरावतकें कान त देलथिन्ह सूप सन-सन, और आँखि केहन त कर्जनी सन-सन। बकरीओक आँखि एतेकटा नहि। एहिसँ बढ़ि बुड़िब और की भऽ सकै अछि? और नाक ततेक टा बना देलथिन्ह जे भूमिपर लोहराइत चलै छैक।

इन्द्र कहलथिन्ह - औ जी, अहाँ कहैत छी बेजाय नहि।

मूर्त्ति कहलकैन्ह - महाराज! जौं हुनका मडुआ भरि बुद्धि रहितैन्ह त हाथीकें चारि टा पैर और मकड़ाकें आठ टा पैर दितथिन्ह? हमरा अपनेकें दू टा पैर और गनगोआरिकें सहस्र टा। हुनका अनुपातक ज्ञान नहि छैन्ह। नहि त कर्कुलकें कतहु ओतेक टा टाँग होइक! जिराफकें कतहु ओतेक टा गरदनि होइक। गदहाक माथपर कतहु बैजयंतीक पात सन-सन कान होइक!

इन्द्र कहलथिन्ह - औ जी! आब त कनेक हमरो बूझि पड़ै अछि जे ....

मूर्त्ति बाजल - महाराज! यदि हुनकर बेवकूफी गनाबय लागी त चारू वेदसँ टपि जाएत। ओहन सुन्दर मयूर बना कय खोरनाठ सन पैर गढ़ि देलथिन्ह। मधुवर्षिणी कोएलकें कोइला सन कारी कुरूप कऽ देलथिन्ह। ओहन सुगंधित चंदनक वृक्षमे फूल नहि लगा भेलैन्ह। यदि कुसियारक गाछमे फल लगबितथि त केहन मीठ होइतैन्ह। परन्तु से नहि फुरैलैन्ह। मिठुआ अनारक गुद्दाकें तीत अकवत कऽ देलथिन्ह। शरीफा बनौलन्हि त गुद्दासँ बेसी आँठिए भरि देलथिन्ह। बेलमे ओतेक रासे लस्सा देबाक कोन काज छलैन्ह? मखानक पात मे ओतेक रासे काँट देबाक कोन प्रयोजन छलैन्ह? यदि सिंही-माँगुर माछमे सौन्दर्यवला सूँग नहि दितथिन्ह त की बिगड़ितैन्ह? बढ़ियाँ पोखरिमे फूल नहि, और कादोवला डबरामे कमल। हिनका बुद्धिकें की कहल जाओ? बुझू त ब्रह्माकें ब्राह्मी घृतक सेवन करक चाहिऐन्ह।

इन्द्र कहलथिन्ह - औ जी! ब्रह्मा त निपुण कारीगर कहल जाइ छथि।

मूर्त्ति बाजल - सरकार! से जौं कारीगर रहितथि त हाथे कँपितैन्ह। सोझ हाथ रहै छैन्ह त ताड़क गाछ बनि जाइ छैन्ह। हाथ काँपय लगै छैन्ह त टेढ़-मेढ़ खजूर भऽ जाइ छैन्ह। यदि सिद्धहस्त रहितथि त ऊँट, खजूर, बड़हड़ सन ऊभड़-खाबड़ वस्तु किऐक बनबितथि?

इन्द्र अपना दाढ़ीपर हाथ फेरय लगलाह। से देखि मूर्त्ति बाजल - ई दाढ़ी मोंछ बनैबाक हुनका कोन प्रयोजन छलैन्ह? स्त्रीकें तीन ठाम केश देलथिन्ह। पुरुषकें पाँच ठाम किऐक देलथिन्ह? व्यर्थक जपाल। और (कानमे फुसुर-फुसुर) सरकार, यदि ई अपनेक शुभचिन्तक रहितथि त वृत्तासुरक हड्डी ओहन मजबूत किऐक बनबितथि।

ब्रह्मा देखलन्हि जे ई त इन्द्रकेँ मिला लेलक। ओ भागल-भागल शची महारानीक अर्चनमे गेलाह। ओहू ठाम मूर्त्ति पछुऔनहि गेलैन्ह। शची महारानी आब प्रौढ़ावस्थामे पहुँचि रहल छलीह। मूर्त्ति हुनका ठिकियबैत एक कोनटामे ऐबाक संकेत कैलकैन्ह। तखन नहूँ-नहूँ कानमे कहय लगलैन्ह - बुझू त विधाता भारी नीरस छथि। युवतीक यौवन जाहि माटि लऽ कऽ गढ़ै छथि तकरा कड़ा सनितथि जे सर्वदा एकरंग सक्कत बनल रहैत। ई बुढ़ट तेहन नरम माटिसँ बनबै छथि जे लगले ढिल-ढिल भऽ जाइ छैन्ह। हिनकासँ त कुम्हार नीक।

शची बजलीह - हे औ ब्रह्मा, ई बात त ठीके कहै छथि। अहाँकेँ तक्कत माटि नहि भेटैत अछि की?

ब्रह्मा चारू मुँह फोललन्हि, परन्तु बकार नहि बहरैलैन्ह। मूर्त्ति कहलकैन्ह—ई बजताह की? अपने त हाथसँ गढ़ैत छथि परन्तु आन प्राणीसँ कोना सृष्टि करबैत छथि से त देखिऔन्ह। सृष्टिक प्रणालीए अश्लील बनौने छथि। नहि त पुत्र और मूत्र कतहु एक बाटसँ बहराय! दोसर जे ई पक्षपाती सेहो थिकाह। पुरुषकेँ त एक्कोरत्ती कष्ट नहि, और स्त्रीकेँ दस मास धरि जे भोगबैत छथिन्ह से वैह जनैत होइतीह।

शची कहलथिन्ह - हे औ ब्रह्मा! एकर जबाब अहाँ की दैत छी? ब्रह्मासँ किछु जबाब पार नहि लगलैन्ह। पड़ाएल-पड़ाएल चन्द्रमाक दरबारमे ऐलाह। मूर्त्ति ओहू ठाम पाछाँ नहि छोड़लकैन्ह। चन्द्रमाकेँ कहलकैन्ह - देखू, एहि बूढ़ ब्रह्माक डाह। हिनकर खुटकचालि नहि गेलैन्ह अछि। अहाँक अभ्युदय हिनका देखल नहि जाइ छैन्ह। जहाँ अहाँ पूर्णिमापर पहुँचलहुँ कि ई लगै छथि नखसँ खोंटय। खोंटैत-खोंटैत जावत अमावस्यापर नहि पहुँचा दै छथि, तावत हिनका चैन नहि पड़ै छैन्ह। ई तेहन भारी दुष्ट छथि जे अहाँक एहन सुन्दर चमकैत मुखमण्डलमे धब्बा लगा देने छथि। ताहूसँ सन्तोष नहि भेलैन्ह त राहु बना कऽ धऽ देलन्हि।

ब्रह्मा ओहि ठामसँ पड़ाकऽ तारालोकमे गेलाह। ओ मूर्त्ति संगहि पछुऔने गेलैन्ह। तारा सभकेँ सम्बोधित कय कहलकैन्ह -- देखिऔन्ह एहि ब्रह्माक करतूत। चन्द्रमाकेँ रूपयाक आकार देलथिन्ह, और अहाँलोकनिकेँ राइ जकाँ आकाशमे छिड़िया देलन्हि। एतबा सामग्री नहि छलैन्ह जे चौअन्नियो- दुअन्नियो भरि अहाँसभकेँ बना सकितथि। भारी दरिद्र-छिम्मड़ि छथि!

तारासभ मिलि कय ब्रह्माकेँ दूर छी करय लगलथिन्ह। ब्रह्मा ओहू ठामसँ पड़ा कऽ सूर्यलोकमे पहुँचलाह। इहो मूर्त्ति संगहि लागल पहुँचलैन्ह। सूर्यकेँ कहलकैन्ह - ई ब्रह्मा अहाँकेँ सातो घोड़ापर दौड़बैत-दौड़बैत बेदम कऽ देलाह। अपने त कमलासनपर बैसल रहै छथि और अहाँकेँ दौड़हा जकाँ भरि दिन दौड़बैत रहै छथि। रबिओ दिन जोतनहि रहै छथि। दोसर हिनका जगहपर रहैत त सप्ताहमे कमसँ कम एक दिन छुट्टी त अवश्ये दैत।

सूर्यक नेत्रसँ तीव्र ज्वाला बहराइत देखि ब्रह्मा ओहू ठामसँ पड़ैलाह। ओ क्रमशः अग्निलोक, वरुणलोक, यमलोक सभ ठाम गेलाह। परन्तु कतहु शरण नहि भेटलैन्ह।

कारण जे ओ मूर्त्ति छाया जकाँ हुनका पछोहि धैने सभ ठाम पाछाँ-पाछाँ पहुँचि गेलैन्ह। अग्निकेँ कहलकैन्ह - ब्रह्मा अहाँकेँ सतत जरबैत रहै छथि। लाल जीभ दय देलन्हि। स्वाइत अहाँकेँ सर्वभक्षी बनय पड़ल अछि। वरुणकेँ कहलकैन्ह - ई ब्रह्मा संसार भरिक सोंस, गोहि, घरियार लऽ कऽ अहाँक साम्राज्यमे भरि देलन्हि अछि। यमकेँ कहलकैन्ह - ई ब्रह्मा अपने त प्रजापति कहा कऽ पुजबैत छथि और अहाँकेँ महिषपर चढ़ा हाथमे कुड़हरि दय हत्याराक काज लैत छथि।

ब्रह्मा देखलन्हि जे सभ देवता बागी भेल जाइ छथि त विष्णुक शरणमे पहुँचलाह। ओ मूर्त्ति सेहो संग लागल गेलैन्ह। विष्णुकेँ कहलकैन्ह - अपने पालनकर्त्ता छी। परन्तु जाहि हिसाबेँ ई लोक गढ़ने जाइ छथि से देखलासँ त थैह बुझि पड़ै अछि जे लोक अपनेक सँसे क्षीरसागर मुँहमे फोंफी लगा कऽ सुड़कि जाएत। ई ब्रह्मा अपनेक घर फुटकाबयबला छथि। शेषनाग ओ गरुड़मे तेहन बैर करा देने छथिन्ह जे एक दोसराक जानी दुश्मन भेल रहैत छथि। अपनेक चारि टा बाहु देखि कऽ ई सहस्रबाहु नामक राक्षस गढ़लन्हि। तेहने त ई दुष्ट छथि।

ई रवैया देखि ब्रह्मा चुपचाप घुसुकि कऽ लक्ष्मीक दरबारमे ऐलाह। ओ मूर्त्ति लक्ष्मीकेँ कहलकैन्ह - देखिऔन्ह एहि बूढ़ाक विवेक। अहाँक सौतिन सरस्वतीकेँ त हंसवाहिनी बना देलथिन्ह और अहाँक खातिर हिनका उल्लू छोड़ि कऽ और नहि किछु भेटलैन्ह।

ई देखि ब्रह्मा शिवलोक पहुँचलाह। ओ मूर्त्ति होइ ठाम धरि गेलैन्ह। महादेव जीकेँ कहलकैन्ह - बाबा! ई चतुर्मुख छथि। अपने पंचमुख छी। से देखि कऽ ई जरैत छथि! अपनेक प्रिय फूल अकौन-धतूरमे ई जानि कय सुगंध नहि देलथिन्ह, तेहन त जरनियाह छथि! अपनेक ई पुरान मुद्दइ थिकाह। एही द्वारेँ कामदेवकेँ उत्पन्न कैलन्हि परन्तु ताहिसँ भेलैन्ह की? ओ भस्मे भय गेलाह।

शिवजीक तृतीय नेत्र उघरबासँ पूर्वहि ब्रह्मा ओहिठामसँ पड़ैलाह। से पड़ाएल पड़ाएल सोझे अपना आङनमे जा कऽ हरा कऽ पड़ि रहलाह। ब्रह्माणी पुछलथिन्ह जे की भेल अछि? ब्रह्मा बजलाह - हे, पैड चल अबै अछि। ब्रह्माणी कहलथिन्ह - त आइ अहाँ अपन कमंडलु किऐक बिसरि गेलहुँ? जल छीटि कए शाप दय दिऔन, मर्त्यलोकमे चलि जैताह।

ब्रह्मा अपन कमंडलु आनय दौड़लाह। तावत ओ मूर्त्ति ब्रह्माणी लग आबि कहय लगलैन्ह-हे देखू! ई ब्रह्मा बूढ़ भय गेलाह। पुरान साँचा सभ रद्दी भय गेलैन्ह। आब ई पेंशन लऽ कय बैसथु। बूढ़ लोकसँ कतहु सृष्टिक कार्य चललैक अछि? आब ई शिथिल भेलाह। हिनकामे आब सामर्थ्य नहि छैन्ह। देखू, हम हिनका जगहपर बैसि कऽ केहन कार्य करै छी।

एहि प्रकारेँ ओ ब्रह्माणीकेँ पटियबैत रहय कि पाछाँसँ ब्रह्मा एक चुरू जल छीटि कय ओहि मूर्त्तिकेँ शाप दय देलथिन्ह। ओ धम्म दऽ मर्त्यलोकमे खसि पड़ल। एक पहाड़ ओ तीन नदीक बीचमे।

ब्रह्मा शाप दैत कहलथिन्ह - जाह। आब एकसँ अनेक होअहगऽ। और अनेक भऽ कऽ आपसमे भरि जन्म कटाउझ करैत रहऽगऽ। बुद्धिमे-तर्कमे तोरासँ केओ नहि जिततौह। परन्तु ओ बुद्धि तों सभ अपने बीच लड़वामे खर्च करबह। से यावच्चन्द्र दिवाकरौ ई शाप छुटयबला नहि छैक।

('चर्चरी' सँ–1960)

आदर्श भोजन

हमर एक मित्र छथि शर्माजी। अमीर लोककें किछु ने किछु व्यसन रहिते छन्हि। हिनका नेचुरोपैथीक सनक छैन्ह। एकबेर हुनकर निमंत्रण भेटल। ओ दुःख छुटबाक उपलक्ष्यमे महाभोजक आयोजन कैने रहथि। हमरा देखितहि उल्लसित भऽ बजलाह - 'कहू, झाजी! अहाँ कतय भोजन करब? समदरबा (सर्वसाधारण) मे अथवा हमर खास महालमे ?

आब कहू, के एहन मूर्ख हैत जे विशेष छोड़ि कऽ सामान्यक ग्रहण करत? आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।

एहन एहन समय मिथ्या संकोच घातक होइ छैक। अतएव हम नम्रतापूर्वक सूचित कय देलिऐन्ह जे जखन कण खैनिहार कणादो 'विशेष' कें महत्त्व दय गेल छथि तखन हम त सम्पूर्ण तण्डुल खैनिहार थिकहुँ।

अस्तु। नियत समयपर मित्र महोदय हमरा भीतर लय गेलाह। रईस त रहबे करथि। सुन्दर कमलपत्री गलीचावला आसन। चानीक चमकैत थारी-बाटी लोटा-गिलास। देखि कऽ मन प्रसन्न भऽ गेल। दू टा आसन लागल रहय। एक हुनका हेतु, एक हमरा हेतु, मित्र महोदय आदरपूर्वक अपना संग बैसौलन्हि।

थोड़ेक कालमे परसन शुरू भेल। पहिने एक-एक फाँक कागजी नेबो थारीमे राखि देलक। तदुपर एक-एक आँजुर पत्ताकोबी सागक मेंही कतरा। सलादक कतरल पत्ती। एक मुट्ठी अँकुरल मूङ। उसिनल चिनिया बादाम। दू चारि टा गाजर ओ चुकन्दर। चारि पाँच टा लाल-लाल टमाटर। अन्तमे चोकरक एक-एक मोटगर रोटी।

हम मनमे विचारय लगलहुँ - हा भगवान! ई और वस्तु आनत कि एतबेपर 'अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा' करय पड़त?

हम एही तारतम्यमे छलहुँ कि मित्र महोदय बजलाह-आब होउ, नमोनारायण करू।

हमरा संशय भेल जे मित्र महोदय कतहु दिल्लगी त ने कय रहल छथि। परन्तु मुखाकृतिसँ परिहासक कोनो टा आभास नहि भेटल। अगत्या हम ओही पर नैवेद्य खोंटय लगलहुँ।

शर्माजी अत्यन्त रुचिपूर्वक भोजन करय लगलाह। हमहूँ हुनक देखादेखी सलादक पत्तीमे कागजी नेबो गाड़य लगलहुँ।

शर्माजी पलाकीक पात चिबबैत बजलाह - बहुत गोटाकें एहन भोजन पसन्द नहि पड़ैत छैन्ह। कतेक मित्र त हमर उपहासो करैत छथि। परन्तु हमरा त एहिमे अपूर्व स्वाद भेटैत अछि।

तदनन्तर ओ भोजनक वैज्ञानिक व्याख्या करय लगलाह - देखू, एहिमे सभ प्रकारक भिटैमिन भरल छैक। टमाटरमे भिटैमिन ए, अँकुरीमे भिटैमिन बी, नेबोमे भिटैमिन सी, चक्क चीकसमे 'स्टार्च' 'प्रोटीन' दुनू भेटि जाएत। चुकन्दरसँ 'शुगर' (चीनी) ओ चिनियाबादामसँ 'फैट' (चरबी)। पलाकीमे 'आयरन' (लोह) गाजरमे 'कैलशियम' (चूनक अंश) सलादमे 'फोसफरस'। कहबाक अभिप्राय ई जे शरीरक हेतु जतेक पोषक उपादान होइत छैक से सभटा एहि भोजनमे भरल अछि। तदनन्तर ओ 'कैलोरी' (मात्रा)क हिसाब बुझाबय लगलाह। फल्लाँ उपादान एतेक मात्रामे, चिल्लाँ उपादान ओतेक मात्रामे .... । एवं प्रकार ई एकदम बैलेंस्ड फूड, अछि। सारांश ई जे स्वास्थ्यक दृष्टिएँ ई आदर्श भोजन थीक।

हम गटगट सभटा सुनैत गेलहुँ। मित्र महोदय बजलाह - हम बारह वर्षसँ पैह 'हाइजिनिक फूड' (स्वास्थ्यकर भोजन) चला रहल छी, तँ हमर स्वास्थ्य देखू........।

हम देखल जे मित्र महोदय अपने सनटिटही जकाँ लगैत छथि। हाड़-हाड़ उगल छैन्ह। करौंकुल सन बगय। देहमे दम्म नहि। तथापि अपना स्वास्थ्यक गर्व रखैत छथि। आब एहन ठाम की बाजल जाओ?

शर्माजी चोकरक रोटी चिबबैत बजलाह - यदि एही प्रकारक सात्त्विक आहारपर लोक रहय त एक सौ वर्ष जीबि सकैत अछि।

हम मनमे कहल - तखन जीबि कऽ करबे की करत? हम बाज ऐलहुँ एहन जिउनाइसँ।

शर्माजी टमाटरक चोभा लगबैत बजलाह - अहा! की अपूर्व वस्तु थीक ई टमाटर! अमेरिकामे एकरा 'गोल्डेन एपुल' (सोनहुला सेब) कहैत छैक। परन्तु अपना देशमे लोक 'हाइजिन' (स्वास्थ्यविज्ञान) नहि बुझैत अछि। कतेक मूर्ख हमर भोजनपर हँसैत अछि। चैसी दूर किएक जाएब? हमरा अपने घरमे वैज्ञानिक भोजनक महत्त्व केओ ने बुझैत अछि। हम लाख चेष्टा कैल, तथापि हमर 'लाइन' (मार्ग) पर केओ नहि अबैत अछि। आइए देखू ने, भोरेसँ पूरी-कचौरी छना रहल अछि। सभ केओ ओहीमे लागल अछि। हमरा संग बैसक लेल केओ तैयार नहि भेल। आइ बहुत दिनपर संयोगवश अहाँ एक टा संगी भेटि गेलहुँ अछि।

हम मनमे भगवानक स्मरण कैल - हे नारायण! ई कोन दिनक बदला चुकैल? और और नोतिहारी सभ पूड़ी कचौड़ी उड़ा रहल छथि और हमरा कर्ममे ई भिटैमिन बला चोकर लिखल छल!

बाहरसँ हलुआ ओ मालपुआक सुगन्ध आबय लागल। शर्माजी बजलाह — लोकक रुचि बिगड़ल छैक। मैदा ओ चीनी बुझू त जहर थीक। 'नेचरोपैथी' (प्राकृतिक चिकित्सा)

मे एकरा 'ह्वाइट प्वाएजन' (श्वेतविष) कहैत छैक। एही द्वारे हम दूधमे चीनी नहि मिलाबय दैत छिऐक। पीबि कऽ देखियौ ने।

ई कहि ओ एक बाटी दूध हमरा दिस बढ़ा देलन्हि। मुँहमे लगा कऽ देखल एको रत्ती मीठ नहि। हे मधुसूदन! मित्र महोदय अहूँसँ टपि गेलाह। अहाँ मधु दैत्यसँ युद्ध कैल। ई मधुर मात्रसँ युद्ध ठनने छथि।

हमरा दूध पिबैत देखि शर्माजी मना कैलन्हि - हाँ, हाँ। ओना नहि। चाह जकाँ सीपि-सीपि कय पीबू। एके छाकमे पीबि गेनाइ 'हाइजिन' क विरुद्ध थीक।

हम मनहि मन कहल - हे हाइजिन देवी। तों कहाँसँ हैजा जकाँ टपकि पड़लीह। हमरे लेल बथाएल छलीह? सेहो अजुके दिन खातिर? हम कोन अपराध कैने छलिऔह?

मित्र महोदय पुनः जहर उगिलय लगलाह - चटनी अँचारकेँ त हम हाथसँ नहि छुबैत छी और ने अपना हित-बन्धुकेँ छूबय दय सकैत छी। परन्तु आइ चारि दिनसँ रंग-बिरंगक अँचार रायता खटमिट्ठी चटनी बनि रहल अछि। औ जी! हम पुछैत छी जे ई सभ किऐक? जिह्वाकेँ क्षणिक तृप्ति देबक हेतु 'सिस्टम' (शरीर यन्त्र) केँ किऐक खराब करय? चटकार खाइत-खाइत एक त अभ्यास पड़ि जाइत छैक, दोसर बेसी खैना जाइत छैक जे 'हाइजिन' क सर्वथा विरुद्ध थीक।

मनमे आएल जे साफ कहि दिऐन्ह - औ जी मित्र महोदय! हम बाज ऐलहुँ एहन हाइजिनसँ। अहाँ राखू अपन भिटैमिन। हम जाइ छी ओही दलमे जहाँ हलुआ-कचौड़ी परसाइत अछि। अनिरतो अहाँक वास्ते जहर रहौ, हमरा वास्ते अमृते थीक। ई ऐन भोजक अवसरपर किऐक डाका दैत छी?

परन्तु शिष्टाचारवश एना नहि कहि भेल। चुपचाप पलाकीक पात कचरए लगलहुँ।

शर्माजी बजलाह - अहाँ बहुत जल्दी-जल्दी खाइत छी। ई 'हाइजिन' क विरुद्ध थीक। प्रत्येक कौरकेँ बत्तिस बेर चिबाबक चाही जाहिसँ मुँहमे ओकर रस तैयार भऽ जाय। देखू, हम कोना खाइत छी।

ओ एकटा पलाकीक पत्ती लऽ कऽ दाँतसँ पीसय लगलाह।

हमहूँ हुनका अनुसरण करैत मनमे सोचय लगलहुँ - 'यद्धात्रा लिखितं ललाटपटले तन्मार्जितुं कः क्षमः ?' एखन सभ भाग्यशाली मिष्टान्न कचरि रहल अछि और हमरा प्रारब्धमे घास-पात लिखल छल। शर्माजी! आइ समस्त 'नेचरोपैथी' क अभ्यास हमरा करा दियऽ। फेर एहन दोसर मूर्ख जल्दी नहि फँसत। खाइत ओतेक प्रलोभन दऽ कऽ अहाँ अपना वैशेषिक जालमे बझाओल? ई बलिदानक बकरा बनक हेतु दोसर के भेटैत?

हमरा गुम्म सुम्म देखि शर्माजी बजलाह - अहाँ खाइ छी नहि। प्रत्येक समर्थ व्यक्तिकेँ तीन हजार कैलोरी खैबाक चाही। ओही हिसाबसँ परसल गेल अछि। एहन पौष्टिक भोजनकेँ छुतबाक नहि चाही। अहाँ चुकंदर नहि खाइत छी?

हम उसिनल चुकंदर मुँहमे देल। मुँहो चुकन्दरे सन भऽ गेल। मित्र महोदय पुछलन्हि - की? नीक नहि लागल? एकरामे बहुत-बहुत 'भिटैमिन' छैक। सब टा खाउ। हाँ, और चुकन्दर दहुन।

हमरा आगाँ एक आँजुर चुकन्दर उझीलि देलक। हम जी जाँति कऽ अनासक्त योगी जकाँ चुकन्दर घोंटय लगलहुँ।

एतेक दिनपर अपन एक अनुवर्त्ती पाबि मित्र महोदय हमरापर अत्यन्त प्रसन्न भेलाह। भनसीयाकेँ बजा कऽ कहलथिन्ह - देखह, रातियो हमरे सङ्ग हिनक प्रबन्ध हैतैन्ह खास हमर थौकामे। हमरा दिस ताकि कऽ बजलाह - सोयाबीन त अहाँ नहि खैने हैब। राति हम अहाँकेँ सोयाबीनक दर्रा खोआएब और अनेंवाक घंट।

हम विनयपूर्वक कहलिऐन्ह -- आब एहि बेर क्षमा कैल जाय। दोसरा बेर आएब त घंट खा लेब।

अँचायब हेतु बाहर ऐलहुँ त देखै छी जे ओसारापर नोतिहारी लोकनिक पंचति लागल अछि और एक चङेरा लाल-लाल अमिरती, जे कड़ाहसँ तुरन्त छानल गेल अछि, पातपर परसा रहल अछि। एक दिस दहिबड़ उठल। दोसर दिस आलूदम। ई रायता जा रहल अछि। ओम्हर किशमिशक चटनी आबि रहल अछि। ई तेतरिक खटमिट्ठी। तावत सक्करौड़ीक पातिल उठल! केवड़ाक सुगन्धसँ मन भरि गेल।

हम विलम्बसँ खरिका करय लगलहुँ। मित्र महोदय पुछलन्हि - ओम्हरका भोज देखि रहल छी?

हम कहलिऐन्ह - हँ।

शर्माजी मुँह बिचका कऽ बजलाह - हम त ओहिमहक एकोटा वस्तु मुँहमे नहि दय सकैत छी। ओहि भोजक कुल इन्तिजाम हमरा स्त्रीक हाथमे छैन्हि। हमर खास पाहुन बुझू त एकमात्र अहीं टा छी।

हम मनमे कहल - हँ, कर्मलेख जे हमर चेली प्रबल छलाह से लाल-लाल अमिरतीक स्थानमे लाल-लाल टमाटर देखा देलन्हि और सकरौड़ीक स्थानमे चुकन्दर! अहाँ अपने त पुराकृत कैनहि छी, हमरो कोनो विशेष पुण्य छल जे आइ अहाँक खास पाहुन भेलहुँ।

मित्र महोदय खैनिहार सभक दिस संकेत करैत बजलाह - हमरा त हिनका सभक बुद्धिपर दया अबैत अछि। ई लोकनि तेहन 'अनबैलैंस्ड फूड' (असन्तुलित भोजन) खा रहल छथि जे अपना 'सिस्टम' केँ खराब कऽ रहल छथि।

हम कहलिऐन्ह - सम्भव जे हुनको लोकनिकेँ हमरा बुद्धिपर दया अबैत होइन्ह।

मित्र महोदय व्यंग्य त नहि बुझलन्हि। बजलाह - हँ। ओ लोकनि की बुझताह? एहि विषयक ज्ञाने कोंक छैन्ह?

आँगनसँ बहरैबाक काल देखल जे पललभपर रसगुल्लाक वर्षा भऽ रहल अछि। परन्तु सागरमे रहनहु ढेरिए रहने की? कर्मो त होमक चाही!

बाहर दलानमे ऐलापर गृहपति उचिती करैत बजलाह - 'नेचरोपैथी' (प्राकृतिक चिकित्सा) मे त पान-सुपारी सभ मना छैक। तैं अहूँकेँ आग्रह नहिए करब। हम केवल सौंफ खाइ छी। अहूँ लऽ लिय'।

मित्र महोदय पानक तश्तरी दिस उपेक्षापूर्ण दृष्टिसँ ताकि जेबीसँ एक चुटकी सौंफ बहार कैलन्हि और हमरा दिस बढ़ा देलन्हि।

देह त जरि गेल। परन्तु कैल की जाय! हम सौंफ लय मित्र महोदयकेँ धन्यवाद दैत ओहि ठामसँ प्रस्थान कैल।

मनमे कोन प्रकारक भाव उठल तकर अनुभव केवल भुक्तभोगी कऽ सकैत छथि। एहि प्रसंगमे एकटा दृष्टान्त स्मरण भऽ जाइत अछि।

एक साहित्याचार्य काशीमे बारह वर्ष धरि काव्य अलङ्कार नायिकाभेद आदि पढ़ि, रसक पूर्ण ढेना भय, देश अबैत रहथि। ताहि दिन रेल त रहैक नहि। लोक मास-मास दिन पैरे चलि कऽ आबय। आचार्यकेँ एक दिन जंगलमे राति भऽ गेलैन्ह।

भादवक अन्हरिया राति, ताहूमे फूही पड़ैत। जैताह कतय? महा अवग्रहमे पड़ि गेलाह। अन्दाजेसँ टोइया-टप्पर दैत एक साधुक कुटी लग पहुँचलाह।

भीतरसँ आवाज ऐलैन्ह - के अछि?

ई अपन हाल कहलथिन्ह त साधु बाबा केवाड़ खोलि देलथिन्ह। भितरोमे तहिना अन्हार कुप्प!

बाबाजी कहलथिन्ह - हे औ! दुइए टा कंबल हमरा कुटीमे अछि। एक टा पर हम सूतल छी, दोसरापर बच्चा। अहाँ कोनपर सूतब?

ई विचारलन्हि, कोन ठेकान अन्हारमे बच्चा कतहु पिचा-तिचा जाइ, ताहिसँ बरु हिनके लग सूति रही। बेचारे कोनो तरहेँ ओहि दढ़ियल बाबाजीक कम्बलपर घुसिया-फुसिया कऽ राति कटलन्हि।

बाबाजी त ब्राह्मीए मुहूर्त्तमे उठि कऽ अपन प्रातः कृत्यक हेतु बहरा गेलाह। ई थाकल ठेहिआएल रहथि। विलम्बसँ निन्द टुटलैन्ह। जखन उठि कऽ विदा होमय लगलाह त देखैत छथि जे एकटा अट्ठारह वर्षक पूर्णयौवना फूल तोड़ि रहल छथि। रसिक त रहबे करथि। मुग्ध भऽ गेलाह। एहि निर्जन प्रान्तमे एहन अप्सरा कहाँसँ आबि गेलीह? पुछलथिन्ह - अहाँ कतय रहैत छी?

सुन्दरी कहलथिन्ह - हम एही कुटीमे रहैत छी।

ई पुछलथिन्ह - राति हम आयल रही तखन अहाँ कतय रही?

सुन्दरी बिहुँसि कय उत्तर देलथिन्ह - ओही कुटीमे।

ई और अधिक विस्मित होइत पुछलथिन्ह - बाबाजी त कहने रहथि जे ओहिमे केवल बच्चा अछि।

सुन्दरी कटाक्षपूर्वक मुसकुराइत कहलथिन्ह - से नहि बुझलहुँ? हमहीं ने बच्चा थिकहुँ। अहाँक नाम की थिक?

साहित्याचार्य स्तम्भित रहि गेलाह! अपन कपार ठोकैत बजलाह - आब की कहू? यदि अहाँक नाम बच्चा त हमर नाम अभागल शिरोमणि कर्मनेढ़ाचार्य!

सैह विशेषण अपनामे लगबैत हमहूँ घरक बाट धैलहुँ।

('रंगशाला' सँ—1949)

सासुरक चिह्न

ओहि दिन सन्ध्याकाल पोखरिक घाटपर लालधोतीक जमघट लागल रहय। गामक नवयुवकवृन्द, जनिक विवाह एहि शुद्धमे भेल छैन्ह, सासुरसँ विदा भऽ कऽ आएल छथि। रसिक मित्रक गोष्ठी, नव उमंग, एकान्त स्थान, सन्ध्याक समय—एहन ठाम रसक गप्प नहि हो त हो कतय? ओहि मंडलीमे सभ केओ गदहपचीसीक भितरे छलाह। अतएव गुप्तसँ गुप्त विषयक आलोचना निर्धोख भऽ कऽ चलि रहल छल।

शोभाकान्त बजलाह - हौ यार! ओना त सासुरमे सभक मानि-दानि होइतहि छैक परन्तु हमरा जेहन होइत छल तेहन किनको नहि भेल हैतैन्ह। ओछाओनपर सुतले रहैत छलहुँ कि भोरे दूध-मिश्री बादाम-किशमिश पहुँचि जाइत छल। हम कहैत छलिऐन्ह -- एखन त मुँहो नहि धोएलहुँ अछि। परन्तु के मानैये? माय (सासु) तेहन छोहगरि छथिन्ह जे भरि दिन बुझह त कड़ाहिए चढ़ौने रहैत छलीह। कौखन पिरुकिया, कौखन अनरसा, कौखन खजूर, कौखन पूआ, अपन माय कहियो एना कथी लय करतीह? ओहि ठाम दिनमे दू बेर कऽ ओछाओन बदलल जाइत छल।

रतिकान्त कहलथिन्ह - बुझलियौह। बेसी जनौड़ा जुनि करह। तोरा धनिक सासुर भेटलौह अछि तैं घंटे-घंटे चादर बदलल जाइत छलौह। परन्तु हमरा गरीबे सासुरमे जे आवेश भेटल से बहुतो गोटाकैं तिहन्ने रहतैन्ह। हमर विधिकरी अपने हाथसँ सानि कऽ हमरा मुँहमे खोआ दैत छलीह। वैह स्नान करबैत छलीह। अपना आँचरसँ माथ पोछि दैत छलीह।

कामेश्वर पुछलथिन्ह - के विधिकरी छथुन्ह? की वयस?

रतिकान्त गर्वपूर्वक उत्तर देलथिन्ह - हमर जेठसारि। वर्ष अठारहम।

कतोक गोटाक मुँहपर ईर्ष्या ओ सन्तापक लहरि दौड़ि गेलैन्ह।

कामेश्वर पुछलथिन्ह - धियापुता भेल छैन्ह?

रतिकान्त अभिमानपूर्वक कहलथिन्ह - दुर छौ! एखन धियापुताक कोन गप्प? एकदम चढ़न्तीपर छथि। बुझह त हमरा हुनकामे कोनो भेद नहि रहैत छल। अभेद लागल छल। अहा! चलबाक काल जे समदाउनि गबैत-गबैत हुनका आँखिसँ नोर झहरय लगलैन्ह ताहिसँ काजर धोखरि कऽ गालपर टघरि गेलैन्हि। हम चादर लऽ कऽ पोछि देलिऐन्हि। से देखह, एखन धरि दाग लागल अछि।

ओ काजरक दाग दर्शनी हुंडी बनि गेल। शोभाकान्तकेँ नहि रहि भेलैन्हि। चादर झपटि कऽ छातीमे सटा लेलन्हि। रतिकान्त 'हीरो' (नायक) जकाँ मुसकुराय लगलाह।

ई देखि कामेश्वर बजलाह - एतेक गजह सुनि। हमरो सरहोजि कम दुलरुआ नहि छथि। एहन विनोदिनी ओ चंचल जे की कहिऔह? फुदुकैत रहैत छलीह। बात-बातमे हास-परिहास! कहियो हमरा जीतय नहि देलन्हि। जहाँ हाथमे पुस्तक देखथि कि छीनि कऽ फेकि देथि। कौखन लालटेमे मिझा देथि। कहियो बाङक पात तरि कऽ देथि। कहियो पानमे भाङक बुकनी दऽ कऽ। कहियो धोतिए घोरा कऽ धऽ राखथि। सदिखन कोनो ने कोनो टोना-बेनी करिते रहथि। जेना एकमिठिया होथि। परन्तु हौ यार! ई सभ लागय नीक। आब सुन्न लगैत अछि। चलबा काल कहलिऐन्ह जे अपन किछु स्मारक दियऽ त पागपर पीक धऽ देलन्हि। ओ सूटकेसमे राखल अछि।

एहि पर तेहन पिहकारी पड़ल जे सौंसे पोखरि गूँजि उठल।

जखन हँसीक तोड़ कम भेल तँ दीर्घनारायण बजलाह - हमरा त सारि-सरहोजिक सुख नहि भेल। सासुरमे सासुक अलावे जे किछु छथि से बैह। परन्तु की कहिऔह? एतबा छोट अवस्थामे एहन सज्ञान लोक नहि देखल। एखन चौदहमे चढ़लैन्ह अछि, परन्तु ज्ञानमे बूढ़िक कान कटै छथि। हमरा कहियो ने जानऽ ने सुनऽ से पहिले रातिसँ हमर सभटा परिचर्या करय लागि गेलीह। नित्य अपना आँचरसँ हमर पैर पोछि दैत छलीह। जाँतय लगैत छलीह से किन्नहु छोड़ितहि नहि छलीह। हम कहलिऐन्ह - किऐक एतेक हरान होइत छी? त बजलीह - आब त वैह चरण हमर सर्वस्व थिकथि। हुनका सेवा नहि करब त ई जन्म कोना सार्थक हैत? हौ यार! की कहिऔह? सीता-सावित्री आदि पतिव्रताक उपाख्यान पढ़ि हुनका तेहन ज्ञान भऽ गेलैन्ह अछि जे ऐखनसँ हमरा 'प्राणनाथ' कहय लागि गेल छथि। एहन आज्ञाकारिणी स्त्री एहि युगमे भेटब कठिन। चलबाकाल एक रुमाल देलन्हि अछि जाहिमे 'चरणसेविका दासी' कऽ कऽ अपन नाम काढ़ने छथि।

दीर्घनारायणक सौभाग्यपर ककरो विशेष ईर्ष्या नहि भेलैक। केवल एक गोटाक मुँहसँ फक्क दऽ निसास छुटलैन्ह। ई छलाह सहदेव। हुनक निःश्वास सुनि सभ केओ हुनके दिस साकांक्ष भेल।

शोभाकान्त कहलथिन्ह - बाह यार! तों त अपन हाल किछु कहबे नहि कैलह। सभ केओ सासुरसँ मोटा कऽ अबैत अछि। तों और खिया कऽ आएल छह। सासु खाय नहि दैत छलथुन्ह की? पहिनहुसँ बेसी सनटिट्ठी भऽ गेल छह।

रतिकान्त बजलाह - ई ओतुक्का ध्यानमे मग्न छथि। चुप्पा लोक बेसी भयंकर होइत अछि। ई जेहन कैने हैताह तेहन केओ नहि कैने हैत।

कामेश्वर - हिनक बियाह तँ नेपाल तराइमे भेल छैन्ह। तेहन-तेहन जबर्दस्त पहाड़ी माउगि ओहिठाम होइत अछि जे एक-एक टा तोपे बूझह। हिनका एक धक्का मारि देन्ह त उठि कऽ पानिओ पीबाक होश नहि रहैन्ह।

दीर्घनारायण - कहह यार, तों सासुरसँ कोन चिड़ लायल छह?

परन्तु सहदेवक गंभीरता भंग नहि भेलैन्ह। ओ जेना किछु कवयासँ शपथ लैने होथि। आब समस्त मंडली हुनकापर लागि पड़लैन्ह। जखन चारू कातसँ लोक नोचय लगलैन्ह त सहदेव बजलाह - बेश, कहैत छिऔह। परन्तु दू टा शर्तपर। एक त आब लंगोबंगो नहि करैत जाह। दोसर जे ई गप्प कतहु बजिहऽ जुनि।

नवयुवक लोकनिक हृदयमे गुदगुदी लागय लगलैन्ह। बजलाह - तोहरे शपथ खाइ छिऔह जे कतहु बाजी। परन्तु सभटा बात खोलि कऽ कहय पड़तौह। एको रत्ती छपौलह तँ बूझि जाह।

सहदेव एम्हर-ओम्हर ताकि कहय लगलथिन्ह - हमरा तँ जेना भेल तेना ककरो नहि भेल हैतैक। ओ बात कहबा योग्य तँ नहि छैक, परन्तु जखन नहि मानैत छह तँ कहि दैत छिऔह। हम तँ तेहन फेरमे पड़लहुँ जे जाने जाय लागल। परन्तु बुझह तँ अपने करनीसँ।

श्रोतागण श्वास रोकि सुनय लगलाह। सहदेव कहय लगलथिन्ह - हम प्रथम रात्रिमे 'हुनका' स्त्रीधर्मक उपदेश देबाक हेतु एक स्पीच (भाषण) तैयार कऽ कऽ लऽ गेल रही। भावार्थ ई जे अबलाकेँ सबला बनक चाही, जाहिसँ केओ बलात्कार नहि कय सकय। सतीत्व-रक्षामे समर्थ हेबाक चाही। झाँसीक रानी लक्ष्मीबाई जकाँ पराक्रमशालिनी होइ, जाहिसँ आक्रमणकारीक दर्प चूर्ण भऽ जाइक। इत्यादि।

व्याख्यान पहिनहिसँ रटल छल। अतएव एके सुरमे कहि गेलिऐन्ह। जखन हुनका सभटा सुनल भऽ गेलैन्ह त मुसुकिया कऽ बजलीह - एतबे रटल अछि कि और किछु?

हौ यार! ई सुनितहि हमरा ऊपर नौ मन पानि पड़ि गेल। एके वाक्य मे पस्त कऽ देलक। हम देखल जे ई पहिले पासा उनटा जा रहल अछि। जौं प्रथमे बोहनि गड़बड़ा गेल त भरि जन्म गड़बड़ाएले रहत। तँ झपटि कऽ कहलिऐक - रटल किऐक रहत? ई सभ बात हम अपना अनुभवसँ कहलहुँ अछि।

ओहो तड़ दऽ छुटैत जवाब देलक - अहाँक अपन अनुभव किछु नहि अछि। केवल पोथीक बात रटने छी।

बात त यथार्थ, किन्तु ओकरासँ हारि कोना मानितहुँ? हम अपना पौरुष देखबैत कहलिऐक -- अहाँ लोकनि अबला होइ छी। पुरुष जे चाहय से कय सकैत अछि।

हम मनमे विचारल - जौं दाम्पत्य जीवनक आदिएमे हम परास्त भऽ जाएब तँ पाछाँ कऽ ई स्त्री हमरा की गौदानति? ऐखन एकरा तेना कऽ सासरु चाही जे बराबरि सरि भेलि रहय। अतएव हम रोब जमबैत कहलिऐक - अहाँकेँ पुरुषसँ भेंट नहि भेल अछि। ऐखन जे चाही से अहाँकेँ हम कय सकैत छी। मानि लियऽ हम परपुरुष छी, अहाँ अपनाकेँ बचा सकैत छी?

परन्तु ओहो तेहने अखड़ियल। तुरन्त डटि गेल। बाजलि - अहाँ बुते हमर किच्छु नहि भऽ सकैत अछि। कऽ कऽ देखि लियऽ।

स्त्रीक मुँहसँ एहन शब्द सुनितहि हमर समस्त पौरुष जागि उठल। हम कहलिएकै - बेश तँ तैयार भऽ जाउ। हम देखै छी जे अहाँ कोना ठठैत छी।

ओहो अड़ि गेल। बाजलि - बेश, तँ सेहो परीक्षा भइए जाय।

ई कहि ओ तनि कऽ ठाढ़ भऽ गेलि।

हम अन्तिम चेतावनी दैत कहलिऐक - देखू, हम कोनो दशा बाँकी नहि राखब।

ओहो आँचर कसैत बाजलि - तखन हमहूँ किछु उठा नहि राखब, से कहि दैत छी। पाछाँ कऽ हमरा दोष नहि देब।

हौ जी, एहन शनगरि स्त्रीसँ हमरा भेट नहि छल। हम कि जनैत छलहुँ जे ओ सरिपों अखाड़ा रोपि देत? परन्तु आब जखन एना भऽ कऽ बदाबदी भऽ गेल तखन हम पाछाँ हटै छी कोना?

हम लपकि कऽ आगाँ बढ़लहुँ। परन्तु ओ चट लालटेने मिझा देलक। आब अन्हारमे भेटब मुश्किल। हम देखल जे ई खेलाइलि अछि। पहिले वारमे छक्का देलक। एहि चतुरासँ पार पाएब कठिन। परंच आब हारि कऽ बैसि रही सेहो तँ उचित नहि। जखन रण ठानि देलहुँ त अपन पुरुषार्थक झंडा गाड़ब जरूरी अछि।

हम चारू कात टो-टो कऽ ओकरा ताकय लगलहुँ। परन्तु जाबत एक कोनमे जाइ ताबत दोसरा कोनसँ खिलखिलाहटि! घड़ीकाल धरि चैह चोरिया-नुकिया चलैत रहल। ओ हमरा खेला खेला कऽ बेदम कऽ देलक। अन्तमे घड़ीकाल धरि लुइया धलार होइत होइत ओ आखिर धरैलीह। हम गरिया कऽ बाँहि धऽ लेल। परन्तु ओ बिजली जकाँ अपन बाँहि छोड़ा कऽ चट दऽ हमर दुनू गट्टा पकड़ि लेलक।

हौ यार, की कहिऔह? स्त्रीक हाथ ओहन सक्कत भऽ सकैत छैक से अनुभव हमरा नहि छल। तेहन जोरसँ चकरका कऽ धैलक जे हमर दुनू हाथ सकपंज भऽ गेल। आब लाख कोशिश करै छी, हाथ छुटबे नहि करै अछि! और ओ टससँ मस होमयवाली नहि।

हम बहुत जोर लगाओल। परन्तु हमर पातर गट्टा ओकर सबल मुट्ठीमे तेना कऽ कसा गेल जेना केओ सीहक हथकड़ी पहिरा देने हो। हम घोर प्रयत्न करय लगलहुँ। परन्तु हाथ किन्नहुँ बहारे नहि होय। हम एक बडर जोर लगाबी त ओ सवा बडर जोर लगा कऽ दाबि दीअय।

आब की होय? अपना मूर्खतापर पछितावा होमय लागल। कहाँसँ एहि नेपालिन बोकोसँ भिड़लहुँ? ओकर भरल पुरल कठमस्त देह—मोट-मोट मांसल बाँहिए देखि कऽ हमरा बूझक चाहैत छल जे ई कोमल मुग्धा नहि, जुआएल तरुणी थीक - अवश्ये बेसी बलगरि हैत। परन्तु पहिने त ई विचारल नहि, आँखि मूनि कऽ ताल ठोकि देल। आब जखन ओ अपन जवानीक जोश देखाबय लागि गेलि तखन एम्हर छठिहारक दूध बहराय लागल।

जखन लोककेँ बेसी भीर पड़ैत छैक तँ इष्टदेवता स्मरण होइत छथिन्ह। हमहूँ महावीर स्वामीकेँ गोहारि करय लगलिऐन्ह - हे बजरंगबली! आब सभटा प्रतिष्ठा अहींक हाथमे अछि। कोनहुना भरमा-मर्यादा राखि लियऽ। यदि आइ राति एकरासँ हारि गेलहुँ

तँ भरि जन्म हारले रहब। हे संकटमोचन! कोनहुना एहि संकटसँ उबारि लियऽ। यदि एहि पहाड़ी कन्याक वज्र मुष्टिसँ छोड़ा देलहुँ तँ काल्हि अहाँकेँ रोट-लड्डू चढ़ाएब।

परन्तु कोनो देवता-पितर काज नहि ऐलाह। ओ पूर्ववत हमर दुहू पहुँचा पकड़ने ठाढ़ि रहल। अन्हारमे मुँह तँ नहि सुझय परन्तु बूझि पड़य जेना ओ हमर विवशतापर बिहुँसि रहल हो - 'आब कहाँ पुरुषार्थ गेल? बड़ आएल छलहुँ हमरापर जोर देखाबय! आब ओ फुफकार की भेल? मर्द छी तँ हमरा मुट्ठीसँ अपन हाथ छोड़ लियऽ।'

हौ यार, हम त लाजे मरय लगलहुँ! ई त वैह परि भेल जे कमरिया साधुकेँ नहि छोड़य। हमरा विश्वास भऽ गेल जे आइ भरि राति हमर दुनू हाथ एहिना बन्हकी पड़ल रहत और जखन पह फटलापर खिधिकरी दाइ एहि वीरांगनाकेँ बहरेबाक हेतु बाहरसँ जिंजीर खटखटा कऽ संकेत देमय लगथिन्ह तखने जा कऽ हमर पौंकी छूटत! .... परन्तु एतबा कालमे तँ लभटा दशा भऽ जाएत।

हम हाथ छोड़ेबाक अन्तिम चेष्टा कैल, परन्तु ओ ततेक जोरसँ कसि देलक जे हम किकिया उठलहुँ! ई सुनि ओ बक्क दऽ हमर हाथ छोड़ि देलक और भर्त्सनाक स्वरमे बाजलि - 'छि:!'

हौ जी! हम तँ कटि कऽ रहि गेलहुँ। जौं पृथ्वी फाटि जाइत तँ सोझे समा जैतहुँ। आब कोन मुँहसँ एकरापर शान जमैबैक? परन्तु कर्मलेख प्रबल होइ छैक। जौं एतबहुपर सन्धि कऽ लितहुँ त कुशल छल। परंच एम्हर तँ और दुर्दशा लिखल छल। तेँ तेहने बुद्धि भऽ गेल।

हम हेहर जकाँ पुनः लड़बाक हेतु ताल ठोकि देल। ओहो बाँहि रोपि देलक। हम लपकि कऽ आँचर दिस हाथ बढ़ौलिऐक कि ओ क्रुद्ध सिंहिनी जकाँ तेहन चाट हमरा गालमे लगौलक जे कान झनझना उठल। आँखिक आगाँ अन्हार व्याप्त भऽ गेल। बाप-रे-बाप! ओ चोट एखन धरि नहि बिसरैल अछि।

परन्तु ओकर कोन दोष? ओ त अपन सतीत्व-रक्षा कऽ कऽ देखबैत छलि। सेहो सिनेमा स्टाइलसँ।

हम जहाँ पुनः हाथ बढ़ौलिऐक कि गद दऽ तेहन मुक्का पीठपर लागल जे हम ठामहि बैसि गेलहुँ।

मूर्खा स्त्री! एतेक जोरसँ मुक्का लगैबाक कोन प्रयोजन छलैक? हम कि सरिपों बलात्कार करक चाहैत छलिऐक? परन्तु ओ बूँदीक नकली लड़ाइ जकाँ खेलोमे हारि मानयवाली नहि! हरदि चून बजबाइए कऽ छोड़लि।

हम देखल जे जतो काल लड़ाइ चाइल रहत ततो काल हमहीं दुइीमे रहब। एक बेर तँ मनमे आएल जे कहि दिऐक—हे वीरांगने! अहाँ परीक्षामे पास भऽ गेलहुँ। आब बेशी चालनी देबाक प्रयोजन नहि। अहाँपर जे चढ़ाइ करत तकरा अहाँ पानि पिया कऽ छोड़बैक, एहिमे हमरा रंचमात्र संदेह नहि रहल।

परन्तु मुँहसँ एतेक बजबाक साहस नहि भेल। पुरुष भऽ कऽ स्त्रीसँ पराजय कोना स्वीकार करितहुँ — सेहो अपना स्त्रीसँ।

हम पुनः दाढ़ भय हुनका दिस लपकलहुँ और चोटी पकड़ि कऽ खींचि लेलिऐन्ह।

हीं जी, चोटी पकड़ब छल कि ओ चोटाएल सर्पिणी जकाँ हमरापर छूटलि और तेहन जोरसँ ठेलि देलक जे हम कय हुनमुनिया खाइत पाछाँ भरे खसि पड़लहुँ। माथ खट्ट दऽ पलंगक पौआपर बजरल। तदनन्तर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड अन्धकारमय। की भेलैक से किछु नहि बुझलिऐक।

श्रीमतीजी रंग कुरंग देखि लगले खिल्ली खोलि कऽ ससकि गेलीह।

हमरा मुँहसँ चीत्कारक शब्द सुनि सारि, सरहोजि, सासु, पिधिकरी सभ जागि गेलीह —'ऐं! ओझाकेँ की भेलैन्ह? लालटेन त लेसह।'

धोड़बहिमे स्त्रीगणक झुंड आबि कऽ घेरि लेलक। आँखि फुजला उत्तर देखै छी जे हम पलंगक नीचा चिलमचीपर पड़ल छी। डाँड़मे ओकर कनखा गड़ल अछि और चिलमची उनटलासँ धोती भीजि गेल अछि। नाक कपार ओ बानि लहुलहान भेल अछि। पलंगपर शोणितक धारा बहि रहल अछि।

हमर ई अवस्था देखि धैओना उठि गेल!

पिधिकरी बजलीह - बुझि पड़ै अछि बच्ची (श्रीमती) लगले फिरि कऽ बाहर चल ऐलैक और खिल्ली ओहिना खुजले छोड़ि देलकैक। एहन संकोच कोन काजक?

सरहोजि नहूँ-नहूँ बजलीह - हम त बड़ी कालसँ घरमे धपर-धपर सुनैत छलिऐक। जेना पछरा-पछरी होइत होइ। परन्तु जानि बुझि कऽ अंठा देलिऐक जे हिनके दुनू गोटामे अपन किछु होइत हैतैन्ह।

सासु घिघिया उठलीह - दाइ गे दाइ। हमरा जमायकेँ खून कऽ देलक। देखू त शोणितमे नहाएल छथि। हे भगवान। जे मुइइ ई दशा कैलकैन्ह अछि तकर संहार होउक।

मनने त कहल जे ई दशा कैनिहारि अहींक सुपुत्री थिकीह। और के रहत? परंच अपन हारल, बहुक मारल, आइ धरि केओ बाजल अछि जे हम बजितहुँ?

फुहरैत-फुहरैत कहलिऐन्ह - हम निन्दसँ सुतल छलहुँ। कखन के आएल से पता नहि। भरिलक सुतलेमे लाठी लगौलक। तकरा बाद की भेलैक से नहि बुझि पड़ल।

लालटेन लऽ कऽ सन्दूक देखल गेल त सभ वस्तु अनामति। हमर ससुर आबि कऽ बजलाह - खैर, चोरकेँ किछु हाथ नहि लगलैक, सैह गनीमत बूझक चाही। एना केबाड़ खोलि कऽ नहि सूतक चाही। ई त लगले जाग भऽ गेलैक तेँ ओ भागि गेल। नहि त सन्दूकक ताला तोड़ि कऽ सभटा द्रव्यजात लऽ जाइत। आइ बड़का रक्ष रहल जे केवल हिनके मारि पीटि कऽ पड़ा गेल।

सासु बजलीह - धन्य भगवान जे बेटीक सिन्दूर कायम रहल। काल्हि भगवतीकेँ सवा हाथक आँचर चढ़ा देबैन्ह।

हमरा माथमे पट्टी बान्हल गेल। कतेक टाम हरदि-चून लगाओल गेल। दिन भरि उपचार होइत रहल।

दोसर राति शयनागार एकांत भेलापर देखैत छी जे मकुना पाड़ा जकाँ थाहि-थाहि कऽ डेग दैत, मस्त हस्तिनी जकाँ मदसँ भरलि श्रीमतीजी शनैः शनैः पदार्पण कय रहलि छथि। ओ बदमाशीसँ मुसकुराइत हमरा मलहम-पट्टी दिस तकैत पूछि बैसलीह - की? आइ फेर परीक्षा हैतैक?

हौ यार! हमरा त भेल जे पृथ्वी फाटि जाय और हम ओहिमे समा जाइ!

परन्तु ओ हमरा दिस करुण दृष्टिसँ ताकि जेना अभय दऽ रहल होथि तेना बजलीह - अहाँ लजाइ छी किएक? हम असली बात ककरो नहि कहबैक। परन्तु हे औ! पुरुषकेँ एतेक अचल नहि होमक चाही। अहाँकेँ माय नेनामे दूध नहि पिऔलनि। बाप दंड-बैसक नहि करौलन्हि। जौं सरो खेलाइत रहितहुँ त एहन दुर्दशा नहि होइत। खैर, आबहु कसरत करू। एहि बेर गाम जा कऽ देह बनाउ। बल बढ़ाउ तखन सासुर आएब।

हौ जी, हुनकर एक-एक टा बात हमरा छातीमे बर्छी जकाँ चुभि गेल। हम तँ संकल्प कैने छलहुँ जे ई बात आजीवन ककरो नहि कहबैक। परन्तु तोरा लोकनि नहि मानैत गेलाह तखन प्रतिज्ञा भंग करय पड़ल। सैह देखियो लैह। ई जे कपारमे चेन्ह अछि से ओकरे निशानी थीक। और लोक सासुरसँ रंग-बिरंगक बिदाइ नेने अबैत अछि। हम सैह चेन्ह नेने आएल छी।

ई कहि सहदेव पुनः निःश्वास छोड़लन्हि और गम्भीर भऽ गेलाह।

संगी-साथीमे थोड़ेक कालक हेतु निस्तब्धता व्याप्त भऽ गेल। तदुपरान्त शोभाकान्त बजलाह - हौ यार! तों तँ तेहन सुनौलह जे सभकेँ मात कैलह। परन्तु छह धरि नसिबगर। हमरा जौं एहन वीरपत्नी भेटैत तँ दुनू साँझ पूजा करितिऐक।

रतिकान्त कहलथिन्ह - तोरा सद भेटल होइतुन्ह तँ बदमाशक सिहन्ता होइ छौह। जकर स्त्री दुब्बरि रहैक तकरा मोट देखि कऽ सिहन्ता होइ छैक। और मोट स्त्रीबलाकेँ पातर देखि कऽ। तहिना गंभीर स्त्रीबलाकेँ चंचला पसिन्द पड़ैत छैक और चंचल स्त्रीबलाकेँ गम्भीरा। सैह पुरुषक स्वभाव थिकैक।

कामेश्वर पुछलथिन्ह - की हौ, सहदेव! आब कहिया सासुर जैबह?

सहदेव बजलाह - आब ओना नहि। आइसँ व्यायाम करब आरंभ कैल अछि। जखन खूब स्वास्थ्य बनि जाएत और ओहि हथिनीक गर्व चूर करबाक शक्ति आबि जाएत तखन उत्तर मुँहक यात्रा करब नहि तँ.....।

तावत सहदेवक पित्ती हाथमे लोटा नेने पोखरि दिस अबैत दृष्टिगोचर भेलथिन्ह। ई देखितहि सभा विसर्जित भऽ गेल।

('रंगशाला' सँ—1949)

कालीबाड़ीक चोर

आइसँ प्रायः बीस वर्ष पहिलुक बात कहैत छी। हम आइ. ए. मे पढ़ैत रही और मुजफ्फरपुरमे ससुरक डेरामे रहैत रही। आब ससुर त नहि रहलाह परन्तु कालीबाड़ीक ओ मन्दिर औखन वर्तमान अछि। ओहि मन्दिरक चारूकात ओहि समय सघन जंगल रहैक। प्राकृतिक दृष्टिएँ ओ स्थान परम रमणीय। परन्तु पं. जी (हमर ससुर) क ध्यान ओहि रमणीयतापर नहि जाइन्ह। कारण जे ओ चोरसँ तंग-तंग रहथि। कोनो मास एहन नहि जाइन्ह जाहिमे सेन्ह नहि पड़ैन्ह। कहियो जाग भऽ जाइन्ह त चोर पड़ा जाय, कहियो ओकरा परि लगैक त सभ किछु हँसोथि कऽ लऽ जाइन्ह। एही डरे पं. जी सतत अपना संग पाँच-सात गोटाकेँ राखथि। चारि टा विद्यार्थी रहथिन्ह। दू-एक टा पण्डित ज्योतिषी रहथिन्ह। परन्तु तथापि चोरी भइए जाइन्ह।

एक रातिक गप्प कहै छी। भादवक अन्हरिया रहैक। तीसरो वर्षा झहरय लगलैक। पं. जी कहलथिन्ह - "आइ राति फेर कुकुर भुकैत छैह, चोर ऐतैह। सभ गोटे सीरनमे लाठी लऽ कऽ सुतै जाइ और जागरण करैत जाइ।"

आधा राति धरि सब लोक खाइत-पिबैत गेल। तत्पश्चात पं.. जी भविष्य-पुराण पढ़य लगलाह। ज्योतिषी जी एकटा टीपनि खोलि कऽ बैसि गेलाह। विद्यार्थी लोकनि हिस्ट्री रटय लगलाह। कोन समय हिनका लोकनिक आँखि बन्द भेलैन्ह से पता नहि, परन्तु भिनसरमे जखन आँखि खुजलैन्ह, त देखै छथि जे पुबरिया छर्दवालीक बीचोबीचसँ ऊषाक लालिमा अपन प्रकाश फेंकि रहल अछि और डेराक कपड़ा-लत्ता बर्तन-बासन सभ गायब अछि। आङनमे एक कात ऐंठ थारी-बाटी पड़ल रहैक सेहो सभटा पार। असगनीपरसँ सभक धोती-कुर्ता उतारि कऽ लऽ गेलैक। ज्योतिषीक अङ्गपोछा और बटुआ सीरमे रहैन्ह सेहो लऽ गेलन्हि। लोक पहिरल से धोती नहि। जेह वस्तु ताकय से नहि भेटैक। कतेक दिन धरि सोक पातेपर खाइत रहल। सभ वस्तु जुटबैत-जुटबैत कतेक दिन लागि गेलैक।

आब लोक और विशेष रूपसँ सतर्क रहय लागल। रातिमे ड्यूटी बँटा गेल। बारह बजे राति धरि पं. जी भविष्य पुराण बाँचथि। तत्पश्चात् ज्योतिषीजीकेँ जगबाक भार होइन्ह। ओ तीन बजे राति पर्यन्त टीपनि बनाबथि। तदनन्तर विद्यार्थी लोकनिकेँ उठा देथिन्ह। विद्यार्थी सभ जोर-जोरसँ पढ़ैत-पढ़ैत भोर कऽ देथि। येह क्रम चलय लागल।

आश्विनक इजोरिया आबि गेल। ज्योतिषीजीकेँ कोजागराक भार पठेबाक रहैन्ह। ओ सभ दिन कऽ संरक्षगणसँ कोनो ने कोनो वस्तु नेने आबथि और अपना कोठरीमे जमा कैने जाथि। थोड़बे दिनमे ज्योतिषीजीक कोठरी मेवा-मखान तथा कपड़ा-लत्तासँ भरि गेलैन्ह। ज्योतिषीजी सदिखन अपना कोठरीमे ताला लगौने रहथि। भीतर जाथि त खोलि कऽ जाथि और बहराथि त पुनः ताला बन्द कऽ कऽ खूब नीक जकाँ झकझोरि कऽ देखि लेल करथि। कुंजी बराबरि डाँड़ेमे रहैन्ह।

पूर्णिमाकेँ दू दिन बाँकी रहैक। ज्योतिषीजीकेँ चोरक आशंकासँ राति कऽ निन्द नहि पड़ैन्ह। जहाँ कुकुरक भुकब सुनथि कि जोरसँ मंत्र पढ़य लागथि - 'कार्तिक! चौरान् नाशय नाशय नाशय।'

दू बजे रातिक करीब ज्योतिषीजी लघी करय बाहर गेलाह। एक तीथीक झोंझमे हुनकर लघुशंकाक स्थान रहैन्ह। ज्योतिषीजी जहिना ओहि झोंझमे बैसलाह कि देखै छथि जे चारि टा चोर हुनका कोठरीक भीतमे सेन्ह दऽ रहल अछि। डरक मारे ज्योतिषीजीक प्राण सुखा गेलैन्ह। लघी की करताह, हाथमे गिलास नेने थरथर काँपैत बैसल रहलाह। तावत एक चोर सेन्ह दऽ कऽ कोठरीक भीतर पैसि गेलैन्ह। ज्योतिषीजीक सौंसे देह भुलकय लगलैन्ह। चाहलन्हि जे गर्द करी—'चोर चोर'। परन्तु लाखो यत्न कैलापर कण्ठसँ शब्द नहि बाहर भऽ सकलैन्ह। व्यंजनक कोन कथा, स्वरो नहि स्फुटित भेलैन्ह।

तावत चोर मखानक चङ्गेरा लऽ कऽ बहरायल। टहाटही इजोरियामे उज्जर मखान। चिन्हबामे ज्योतिषीजीकेँ कनेको भाङठ नहि रहलैन्ह। हाय, हाय! ओसारापर सात गोटे सूतल छथि और बंद कोठरीमे की भऽ रहल अछि से ककरो खबरि नहि।

विद्यार्थीमे सबसँ बेसी कठमस्त रहथि लम्बोदर झा। ज्योतिषीजी एक बेर अपन समस्त शक्ति बटोरि चिचिऐलाह - 'हौ लम्बोदर! चोर!'

परन्तु ई सातो अक्षर कण्ठक भीतरे रहि गेलैन्ह। केवल जिह्वा ओ ठोर पटपटा कऽ रहि गेलैन्ह।

तावत चोर काठक संदुकची लऽ कऽ बाहर भेल। एहीमे ज्योतिषीजी एक माससँ कोजागराक कपड़ा-लत्ता जोगा कऽ सैंतैत छलाह। ज्योतिषीजी पुनः जोर लगौलन्हि - 'हौ लम्बोदर! सन्दुकची नेने जाइ छौह।' परन्तु कण्ठसँ शब्द स्फुटित नहि भेलैन्ह। देखैत-देखैत ज्योतिषीजीक आँखिक सामने एक-एकटा वस्तु बाहर कऽ लेलकैन्ह। परन्तु ज्योतिषीजीकेँ लेहन बकजर लागि गेलैन्ह, जे जावत धरि चोर माल ढोइत रहलैन्ह, तावत पर्यन्त ने उठि सकलाह ने बाजि सकलाह। केवल भीतरे भीतर - 'हौ लम्बोदर! छाता नेने जाइ छौ!' 'हौ लम्बोदर! कलौड़ नेने जाइ छौ!'

जखन चोर सभ वस्तु लऽ कऽ चलि गेलैन्ह तखन ज्योतिषीजी हाँफैत भीतर ऐलाह और पछड़ि कऽ चौकीपर खसलाह - 'रौ डकूबा सभ रौ डकूबा सभ! तौं सभ सुतले रहि गेलें और हमरा लूटि कऽ लऽ गेल।

कोठरी खोलि कऽ देखल गेल त चोर ओहिमे विश्वबन्धन पर्यन्त नहि छोड़ने छलैन्ह। ज्योतिषीजी ओंगड़नियाँ देबय लगलाह और क्रमशः सभ हाल कहि सुनौलथिन्ह।

विद्यार्थी सभ कहलकैन्ह—हुइए डेग त आङ्गन छल। आबि कऽ हमरा सभकेँ उठा किएक नहि देलहुँ?

ज्योतिषीजी कनैत-कलपैत बजलाह - हमरा कर्मकेँ कीदन कैने छल। ओहि काल जेना हाथ पैरमे लकवा मारि देलक।

पं. जी पुछलथिन्ह - अहाँक आँखिक सामने सभटा वस्तु दो कऽ लऽ गेल और अहाँकेँ गर्द नहि कऽ भेल?

ज्योतिषीजी कुहरैत-कुहरैत कहलथिन्ह - की कहै छी! ओहि काल तेहन गराबकौर लागि गेल जे एको बेर कण्ठे नहि फुजल। ई सार कण्ठ तेहन गोड़ भऽ गेल जे ......

ई कहैत ज्योतिषीजी अपना कण्ठकेँ काटक हेतु उद्यत भऽ गेलाह।

पं. जीक एकटा भागिन ऐलथिन्ह - 'मुनिजी'। हुनका सदिखन नाकेपर पित्त रहैन्ह। ओ सर्वदा सभसँ असंतुष्टे रहथि। हुनका अपना बुधियारीक किछु बेशी दाबी रहैन्ह। कहलथिन्ह - "मामा! सुनैत छी एहिठाम चोर बड़ उपद्रव करैत अछि, और अहाँ लोकनि बुते पार नहि लगैत अछि। आब हम आबि गेलहुँ। देखू, कोना चोर पकड़ैत छी।"

मुनिजी एक मजबूत सिपाहीकेँ अपना सासमे लऽ ऐलाह। सिपाहीजी तीन वस्तुकेँ हरदम सिटैत रहथि - मोंछ, मुरेठा और लाठी। हुनका ऐलासँ लोककेँ बहुत भर भेलैक। जहाँ कुकुर भूकय कि मुनिजी सिपाहीजीकेँ कहथिन्ह - सिपाहीजी, बन्दूक बहार करू। बाहर चोर ठाढ़ अछि।

सिपाही जी मोंछपर ताव दैत कहथिन्ह - चलू, हम पिस्तौल लऽ कऽ चलैत छी।

तखन मुनिजी जोरसँ सुना कऽ कहथिन्ह - "लम्बोदर, तों भाला लऽ लय। हम गड़ाँस लै छी। ज्योतिषीजी, अहाँ बर्छा लऽ लियऽ।"

परन्तु ई सभ केवल चोरकेँ सुनाबय लेल होइक। वस्तुतः डेरामे लाठी छोड़ि और कोनो वस्तु नहि रहय और सेहो चलैबाक हाल केवल सिपाहिए जी टा जानथि।

मुनिजी एकटा युक्ति और कैलन्हि जे पं. जीक पेटी-बाकसक पाछाँ कंटरपर कंटर धऽ ऊपरसँ टीनक चदरा राखि देलथिन्ह जे चोर भीतमे सेन्ह देत, त टीन टनटना उठत। तखन एके बेर सभ गोटा पछुआड़ दिस दौड़ब और चोरकेँ पकड़ि लेब।

एक रातिक घटना आइ धरि नहि बिसरैत अछि। जाड़कालाक राति रहैक। प्रायः पूस मास। करीब दू बजे राति कऽ एकाएक पं. जीक कोठरीमे टीन हड़हड़ा उठलैन्ह। मुनिजी धरफरा कऽ उठलाह और सिपाहीजी जोरसँ छड़पि कऽ चललाह। सभ लोक लाठी नेने पछुआड़ दिस दौड़ल। ज्योतिषीजी लालटेन नेने दौड़लाह। परन्तु तेहन सनसन बसात चलैत रहैक जे चौकठिसँ बाहर होइतहि लालटेन मिझा गेलैक। चारू कात अन्हार घुप्प। हाथकेँ हाथ नहि सुझैत।

पछुआड़मे एकटा ताड़क गाछ रहैक। जहिना लोक लाठी लऽ कऽ पहुँचल कि ओ हड़हड़ा उठलैक। सिपाही तान कड़कि कऽ बजलाह—बस साले, आज पकड़ लिया!

मुनिजी विद्यार्थीसभकेँ ललकारा दैत कहलथिन्ह - चारू कातसँ ताड़केँ घेरि कऽ बैसइ जाह। सार जैताह कतऽ?

पं. जी कहलथिन्ह - सभ गोटे खूब सावधान रहह। एहन ने हो जे ऊपरहि सँ छड़पि कऽ भागि जाओ।

ज्योतिषीजी पुनः लालटेन लेसि कऽ आनय लगलाह परन्तु ओ अबैत-अबैत बाटेमे मिझा गेलन्ह।

मुनिजी बजलाह - कोनो हर्ज नहि। आब रातिए कतेक छैक? एक पहरमे फरिच्छ भऽ जाएत। सभ गोटे एही ठाम घेरि कऽ बैसि जाह और रामायण गबैत जाह।

सिपाहीजी रामायणी रहथि। उठौलन्हि - जेहि सुमरत सिधि होय .... और सम्पूर्ण मण्डली संग देबए लागल।

हइ! ओहि रातिमे ओहन ठिठुराबयवला सर्द बसात नहि कहल जाय और ओहि खुलला मैदानमे चारि घंटा धरि ओ रामायणक पाठ नहि कहल जाय।

ओ दृश्य एखन मन पड़ैत अछि त हँसी लगैत अछि। परन्तु ओहि समयमे सभक छाती धड़कैत रहैक जे चोर कतहु माथेपर नहि कूदि पड़य। अस्तु।

थोड़ेक कालमे सभकेँ विश्वास भऽ गेलैक जे चोर निःशस्त्र अछि, नहि त एतबा काल धरि चुपचाप बैसल नहि रहैत। ई बूझि सभक मंसूबा बढ़ि गेलैक। जखन-जखन गाछक ऊपर खड़भड़ होइक कि ज्योतिषीजी लागथि चोरकेँ गरियाबए - "सार सुटकल बैसल छथि। आइ उतरइ तखन सभ टा मखान बहार करैत छी।"

भोर भेलापर लोक देखैत अछि त गाछपर कतहु किछु नहि। एकटा सुखायल छज्जा लटकल अछि। वैह कोखन काल बसातक जोरसँ हड़हड़ा उठैत अछि। वैह तालपत्र एतेक त्रास लगौलक अछि। रज्जौ यथाहेर्भ्रमः! वेदान्ती लोकनिक मत छैन्ह जे एही प्रकारक भ्रम थीक ई संसार!

एखनो कालीबाड़ीक ओ ताड़ देखैत छी त ओहि कालक सम्पूर्ण चित्र आँखिमे नाचि जाइत अछि।

('रंगशाला' सँ—1949)

कालाजारक उपचार

अखबारमे बड़का-बड़का मोट हेडलाइनमे बहरायल — 'कालाजार फेर आबि गेल।'

चारू कात खलबली मचि गेल। कालाजारक-उन्मूलन करबाक हेतु पचास करोड़क पंचवर्षीय योजना बनल छल। घोषणा कयल गेल छल जे ''कालाजार सर्वदाक हेतु देशसँ विदा भऽ गेल। जे व्यक्ति कालाजारक समाचार देताह तनिका एक हजार टाका पुरस्कार भेटतनि।''

आपत्कालीन सभा भेल। कालाजारक विरुद्ध एकसँ एक जोरदार भाषण होबऽ लागल। ''कालाजार राक्षस थिक। ई जोंक जकाँ लोकक शोणित पीबि रहल अछि। एहि भयंकर रोगकेँ शीघ्र देशसँ भगयबाक चाही।''

एक उच्चस्तरीय आयोग बैसाओल गेल। जाँचक विषय निर्धारित कयल गेल जे —

1. कालाजार कि सरिपों आबि गेल अछि?
2. ई कोम्हरसँ कोना आ किएक आबि गेल?
3. एकर अयबाक हेतु के उत्तरदायी छथि?
4. कालाजारकेँ कोना जड़ि-मूलसँ नष्ट कयल जाय जे फेर भविष्यमे एकर अयनाइ असंभव भऽ जाइक?

आयोगक समक्ष दस हजार गवाही पेश भेल। भिन्न-भिन्न वर्गक लोकसँ बयान लेल गेल। दस मासक अथक परिश्रमसँ एक हजार पृष्ठक रिपोर्ट बहरायल। अध्यक्षक वक्तव्य एक लाख शब्दमे प्रकाशित भेल।

एहि सभ कार्यकलापमे देशक चारि करोड़ टाका व्यय भेल। समुद्र-मंथनक फलस्वरूप निष्कर्ष रूपमे चारि टा महावाक्य सामने आयल--

1. कालाजार सरिपों आबि गेल अछि।
2. ई वस्तुतः देशसँ गेल नहि छल, दबल छल, पुनः उभड़ि गेल अछि।
3. एकर अयबाक हेतु उत्तरदायी छथि समाजक लोक जे स्वास्थ्य-रक्षाक नियम पूर्णतः पालन नहि करैत छथि।
4. कालाजारक समस्त कीटाणुकेँ तेना समूल नष्ट कऽ देबाक चाही जाहिसँ फेर भविष्यमे एकर अयनाइ असंभव भऽ जाइक।

आयोगक सिफारिश भेलैक जे कालाजारक विभीषिकाकेँ देखैत सभ मोर्चापर ओकर सामना कयल जाय। प्रत्येक संभव उपाय कयल जाय।

सरकार दिससँ चौबीस-सूत्री कार्यक्रम निर्धारित भेल आ राति-दिन भोंपूपर ओकर प्रचार होबऽ लागल।

राष्ट्रीय स्तरपर प्रान्तीय स्तरपर, जिला स्तरसँ लऽ ब्लॉक स्तरपर नाना समिति आ उपसमिति संघटित कयल गेल। किछु सरकारी, किछु अर्द्धसरकारी, किछु गैर-सरकारी। भिन्न-भिन्न झंडाक तर कालाजारक विरुद्ध निन्दाक प्रस्ताव पास कयल गेल। विचार भेल जे पुनः पंचवर्षीय अभियान चलाओल जाय, आर जोर-शोरसँ।

विशेषज्ञ लोकनिक टीम बनाओल गेल जे देश-विदेशमे घूमि कऽ कालाजारक अध्ययन करथि, अनुसंधान करथि जे आन-आन ठाम एहि रोगक कोना निवारण आ उपचार कयल जाइत छैक। एलोपेथिक, होमियोपेथिक, आयुर्वेदिक, यूनानी आ प्राकृतिक चिकित्सा वला सभकेँ प्रतिनिधि-मंडलमे आनुपातिक स्थान भेटलनि। कोनो जाति-धर्म, वर्ग वा अल्पसंख्यक समुदायक लोक छूटल नहि पाबथि, ताहिपर विशेष ध्यान राखल गेल।

विश्वविद्यालय सभमे कालाजारपर शोध करबाक हेतु छात्र आ अध्यापक-गणकेँ लाखक लाख अनुदान भेटलनि। शोधसंस्थानमे वेद-पुराण-रामायण, महाभारत आदिमे कालाजारक उत्पत्तिपर 'रिसर्च' होबऽ लागल। स्कूल-कॉलेजमे कालाजार विषयक निबंध ओ विवाद-प्रतियोगिता आयोजित होबऽ लागल। आकाशवाणीमे नित्य कालाजारपर वार्त्ता, परिचर्चा आ लघुनाटिका प्रसारित होबऽ लागल।

अस्पताल सभमे नोटिस टाङल गेल - 'कालाजारसँ सावधान'। किछु बेसी देशभक्त डाक्टर 'सँ' केँ काटि देलथिन - 'कालाजार सावधान!' मेडिकल कालेजक छात्र, छात्रा, नर्स, डाक्टर, सभ कालाजारक विरोधमे बाँहिपर कारी पट्टी लगौलनि - 'कालाजार देशक शत्रु थिक।' लोककेँ पकड़ि-पकड़ि कऽ जबर्दस्ती कालाजारक सुइ देबऽ लागि गेलथिन। शहरसँ लऽ देहात पर्यन्त प्रभातफेरी आ नाराक स्वर गूँजि उठल -- 'कालाजार मुर्दाबाद।' एकटा कवि 'कालाजार-संहार' नामक महाकाव्य एगारह सर्गमे प्रस्तुत कयलनि।

अखबार सभमे धुरझाड़ कालाजारपर सनसनीदार लेख-कविता आ चित्र प्रकाशित होबऽ लागल। किछु पत्र-पत्रिका 'कालाजार विशेषांक' बहार कयलनि।

रेलमे, बसमे, देवालपर कालाजार विरोधी पोस्टर साटल गेल। डाक-विभागक दिससँ पोस्टकार्ड, लिफाफ पर्यन्तपर कालाजार-विरोधी टिकट लगाओल गेल। सड़कक नुक्कड़पर सम्मेलन होबऽ लागल --

आयल कालाजार छै
मरैत हजार छै
गरमट बजार छै
लोक बेजार छै
रक्षक सरकार छै

कालाजार-कोष संग्रहक हेतु 'चैरिटी शो'क आयोजन कयल गेल। नृत्य मंदिरमे कालाजारपर भरतनाट्यम् भेल। कलाभवनमे कालाजार विषयक एकांकीक मंचन भेल।

टेलीभीजनपर कालाजारक भयंकर दृश्य देखाओल जाय लगलैक, जाहिसँ दर्शकक मनमे ओकरा प्रति घृणा जागृत होइक।

प्रचार विभाग एक करोड़क लागतसँ एक रंगीन फिल्म बनाबऽ लागल जाहिसँ कालाजार फेर कहियो अपन मुँह नहि देखा सकय।

पण्डितो लोकनि पाछाँ नहि रहलाह। ठाम-ठाम कालाजार-संहारक हेतु यज्ञ आ पुरश्चरण करऽ लगलाह। अहर्निश मंत्र पढ़ि हवन करऽ लगलाह - 'ओम् वषट् कालाज्वराय स्वाहा।'

साधु-समाजक एक प्रधान नेता महाकालानन्द स्वामीजी अनशनपर बैसि गेलाह - यावत ई दुष्ट कालाजार देशसँ नहि जायत, तावत पर्यन्त अन्न-जल ग्रहण नहि करब।

महिलागण जोर लगौलनि। गाम-गाम, घर-घर, घूमि कऽ गृहिणीसभकेँ आँचर कसि कालाजार विरोधी अभियानमे योगदान देबाक हेतु आह्वान कयलथिन। आङनमे रेडियोक लोकगीत भोंभिया उठल —

> भाग-भाग हमरा घरसँ रे,
> लुचवा कालाजरवा।
> बाढ़निसँ तोरा मारबौ रे,
> धरकट - कालाजरवा।।

परन्तु बहिरा कान जकाँ कालाजारपर एहि सभक कोनो प्रभाव नहि पड़लैक। ओ बढ़िते गेल। अजगर साँप जकाँ मोटाइते गेल।

विधान सभामे, लोक सभामे, विधान परिषद्मे, राज्य सभामे, प्रश्नपर प्रश्न बौछार होबऽ लागल।

सांख्यिकी विभागसँ बुलेटिन बहरयलैक जे विगत वर्षक एहि मासमे कालाजारक जतबा प्रकोप छलैक, ताहिमे मात्र 0.0001 क वृद्धि भेल अछि।

परन्तु एहि उत्तरसँ लोककेँ संतोष नहि भेलैक। सरकारक दिससँ पुनः दोसर आयोग बैसल। एहि बेर युद्धस्तरपर कालाजारक मोकाबिला करबाक हेतु एक अरबक योजना बनल।

कालाजारकेँ राष्ट्रीय अपराध घोषित कऽ देल गेल। कठोरसँ कठोर कानूनक धारा बनाओल गेल। कैकटा अधिसूचना जारी भेल। राज्य-मंत्री घोषणा कयलनि -- "हम सभ कालाजारकेँ निर्मूल करबाक हेतु कृतसंकल्प छी, कटिबद्ध छी।"

केन्द्रमंत्री एलान कयलथिन - "यदि कालाजार आब आर उपद्रव करत तँ हमसभ चुप नहि बैसल रहब।"

पहिने चेतावनी देल गेल, तखन अपील कयल गेल। जखन अपीलसँ काज नहि चलल तँ पुनः चेतावनी देल गेल। जखन चेतावनीसँ काज नहि चलल तँ पुनः अपील कयल गेल।

एहि बेर कालाजारसँ जुझबाक हेतु युद्धस्तरीय सैन्य दलक मोर्चा संघटित कयल गेल। तकर मुख्य सेनानी बनाओल गेलाह एक तेहन 'महाचिकित्सापाल' जे संग्राममे 'परम वीरचक्र' प्राप्त कयने रहथि।

ओ अबिते घोषणा कयलनि जे छौ मासक अभ्यंतर कालाजार आ ओकर सहायक तत्त्वकेँ नष्ट कऽ देल जायत। ककरो कालाजारसँ मरऽ नहि देल जायत।

लोकक मनमे आशा जगलैक जे जहिना चाणक्य कुशक जड़िमे मट्ठा पटाकऽ ओकरा निर्मूल कऽ देने रहथिन, तहिना आब कालाजार जड़ि-मूलसँ साफ भऽ कऽ रहत।

परन्तु ओ आशा बकाण्ड-प्रत्याशा मात्र सिद्ध भेल। एक दिन अकस्मात् रेडियोसँ समाचार घोषित भेलैक - "खेदक विषय जे महाचिकित्सापाल कालाजारसँ मरि गेलाह। ओ कालाजारसँ लड़ैत-लड़ैत वीरगतिकेँ प्राप्त कयलनि। देश-कल्याणमे शहीद भऽ गेलाह। हुनक अन्त्येष्टि-क्रिया पूर्ण राजकीय सम्मानसँ कयल जयतनि।

आब समस्या अछि, दोसर सेनानी ककरा बनाओल जाइनि?

(असंग्रहीत—'मिथिला मिहिर'मे प्रकाशित-1977)

विनिमय

गाड़ी तीव्र गतिसँ जा रहल छल। 'एयरकंडीशन' क तीन गद्दापर तीन जोड़ दंपति विराजमान छलाह - बंगाल, पंजाब आ केरलक, जेना त्रिभुजक तीन विंदु।

रातुक साढ़े दस बाजि रहल छल। तीनू पति पढ़बामे तल्लीन छलाह। पत्नीलोकनि अपना-अपना टिफिन-कैरियरसँ भोजन निकालि कऽ परसि रहल छलीह।

बंगाली महोदय 'आनन्द बाजार पत्रिका'क अओड़सँ देखलनि -- केरल कन्या पातर-छरहर सुन्दरी, लगभग उनैसक वयस, खोपामे फूलक मुकुट लगौने राजकुमारी सन लगैत छथि। कत्थइ साड़ीपर बैंगनी रंगक चोली जेना नीलकमलसँ स्पर्द्धा करैत होइनि। इडली, दोसा, रसम् संबरम् आदि विविध पदार्थ परसि रहल छलीह।

बंगाली माशाक मुँहमे पानि भरि अयलनि। ओ लुब्ध आँखिसँ भोज्य सामग्रीक संग-संग परसऽ वालीक रस लेमऽ लगलाह। आखिर रहल नहि गेलनि। बाजि उठलाह - दोक्खिनी भोजन तो बोहुत अोच्छा होता है।

केरल-किशोरी चौंकिकऽ अपन आँचर ठीक करऽ लगलीह। ता केरल युवक 'फिल्मफेयर'क अओड़सँ ओहि पंजाबिन युवतीक मांसल सौंदर्य पीबि रहल छलाह जे तश्तरीमे लालरंगक रसदार आलू-छोला, कीमा-मटर आ शूलर-कबाब सजा रहलि छलीह। पंजाबिन सोंटल देहक युवती छलीह। छब्बीससँ छत्तीसक बीचमे। रेशमी शलवारपर किशमिशी रंगक कुर्ती ओ प्याजी रंगक ओढ़नी हुनकर गुलाबी गोराइपर सान चढ़ा रहल छलन्हि। ठोरक लाली देखि बूझि पड़ैत छल जेना एखने टटका शोणित पीबि आयल होथि। केरल युवक तरे-तरे आँखिएँ ओहि गदरायल यौवनक स्वाद लऽ रहल छलाह।

बंगाली माशाक बात सुनि अकस्मात केरल युवक चौंकि उठलाह। जेना चोर सेन्हपर पकड़ा गेल हो। सिटपिटाइत बजलाह--यू लाइक साउथ इंडियन फूड, बट आइ लव पंजाबी डिशेज। (आहाँकेँ दाक्षिणात्य भोजन पसिन्न अछि, मुदा हम तँ पंजाबी भोजनक प्रेमी छी।)

ई चाटुकारिता देखि पंजाबिनक सेब सन गालपर किछु आर गुलाबी रंग भरि गेलनि। ओ छनाइत मालपुआ जकाँ खिलि उठलीह।

आब पंजाबी सज्जनकेँ अपन मनोभाव प्रकट करबाक अवसर भेटि गेलनि। बजलाह -- आपको पंजाबी खाना पसंद है, लेकिन मुझे तो बंगाली चीजें ऐट्रैक्ट (आकृष्ट) करती हैं।

हुनक कहब अकारण नहि छलनि। किएक तँ बंगवधू जे चर्चरी, डालना, माछक प्लेट सजा रहल छलीह, तकर सुगंधसँ सौंसे कोठरी गमगम कऽ रहल छल। स्वयं बंगबालाक आकर्षणो साधारण नहि छलनि। ओ दीप-शिखा जकाँ चमकि रहल छलीह। श्वेत पद्म सन शुभ्र नायलनमे तुषारहार-धवला सरस्वती जकाँ प्रतीत होइत छलीह। हुनक चंपकवर्ण आभा मिनीगोल्डक रंगकेँ लजबैत छल। भालपर कुंकुमक गोल बिंदी जेना सौन्दर्यपर मोहरक छाप लगौने होइनि।

पंजाबी सज्जनक खुशामदी बात सुनि ओ संपुटित अधरमे मुस्का उठलीह आ अपना पति दिस ताकऽ लगलीह।

बंगाली माशा प्रस्ताव कयलथिन - तो फिर आइये न। आज लें बंगाली खाना।

केरल युवक बंगाली माशाकेँ निमंत्रित करैत कहलथिन -- देन यू ऑलसो कम हियर। यू लाइक साउथ इंडियन फूड। (तखन अहूँ एहि ठाम आबि जाउ। अहाँकेँ दाक्षिणात्य भोजन पसिन्न अछि।)

आब पंजाबी सज्जनक पार छलनि। ओहो केरल-युवककेँ कहलथिन - तब आप मेरी जगह ले लीजिए। बस, हिसाब बैठ जायगा।

एके क्षणमे दृश्य बदलि गेल। इंदीवर-दल-श्यामा केरल-कन्या अपना लग बैसल बंगालीकेँ दोसाक रसास्वादन करा रहल छलीह। नवनीत-कोमला बंग-सुकुमारी हेनाक मुलायम कचौरी पंजाबीकेँ प्रदान कऽ रहल छलीह। तेसर गद्दापर विशाल-यौवना पंजाबिन दाक्षिणात्यकेँ तंदूरी रोटी खुआ रहल छलीह।

तीनू गोटे आनन्दसँ भोजनक रस लैत वार्त्तालाप करऽ लगलाह। बंगाली माशा नारियरक चटनीकेँ जीभपर दैत बजलाह - इशी माफिक कोभी-कोभी श्वाद बोदलना जोरुरी होता है।

पंजाबी सज्जन चर्चरीक रसास्वादन करैत अनुमोदन कयलथिन - इस में क्या शक? रोज वही रोटी-सालन मिले तो फिर जिंदगी में लुत्फ क्या?

केरल युवक काबुली चनाक स्वाद लैत समर्थन कयलथिन -- लाइफ मीन्स चेंज। वी मस्ट हैव सम डिविएशन्स फ्राम डेली रुटीन। (जीवनक अर्थ नवीनता। दैनिक क्रममे किछु ने किछु परिवर्तन होयबहिक चाही।)

बंगाली माशा बजलाह-- आज-कोल कोलचरल इंटरमिक्शचर (सांस्कृतिक सम्मिश्रण) का जमाना है। शोबसे शोबका निकटतम शोम्बन्ध होनेका जोरूरत है।

पंजाबी सज्जन कहलथिन -- यह तभी हो सकता है जब हम प्रान्तीयता की दीवारें लाँघकर एक बन जाँय।

केरल युवक बजलाह -- इन्टरनेशनल मैरेज कैन साल्व द प्राब्लेम आफ वर्ल्ड युनिटी। द स्लोगन ऑफ ब्रदरहुड हेज बिकम रादर ओल्ड। इट शुड नाउ बी रिप्लेस्ड

बाइ युनिवर्सल ब्रदर-इन-लॉ हुड। (विश्वमे एकता स्थापित करबाक हेतु अन्तर्राष्ट्रीय विवाह होमक चाही। भाइ-भाइक नारा आब पुरान पड़ि गेल। आब मनुष्य-मनुष्यमे सार बहिनोयवला मधुर संबंध कायम होयबाक चाही। उदार चरितानां तु संसारःश्वशुरालयः।)

पंजाबी सज्जन अट्टहास करैत कहलथिन - यह भी आपने एक ही कही। रूस-अमेरिका में ससुराली रिश्ता कायम हो जाय तो फिर झगड़ा किस बात का? बल्कि मैं तो कहता हूँ कि सभी मुल्कों की औरतें आपसमें बहन-बहनका रिश्ता जोड़ लें। फिर चीनी, जापानी, हिन्दुस्तानी, पाकिस्तानी - सभी साढ़ू बनकर मौज के साथ होली का रंग उड़ावें। यही तो आनंद मार्ग है।

महिलासभ कनखीसँ एक दोसराक दिस देखलनि। हुनकोलोकनिक ठोरपर मुसकी आबि गेलनि। बंगाली माशा बजलाह - जोरू लोग खाता क्यों नहीं है? आप लोग भी शोरू कीजिये न।

तीनू देवी आधुनिका छलीह, तथापि कनेक थकमका गेलीह जे पर-पतिक संग सह-भोजन कोना करू। परन्तु आँखिये-आँखिमे पतिक संकेत पाबि हुनकालोकनिक संकोच दूर भऽ गेलनि।

आब आर मनोरंजनक दृश्य उपस्थित भऽ गेल। बंगाली माशा केरल युवतीक संग रसमू पिबैत छलाह। केरल युवक पंजाबिन संग रोगन जोश उड़ा रहल छलाह। पंजाबी सज्जन बंग-सुन्दरीक संग तड़ल माछक स्वाद लऽ रहल छलाह।

वार्तालापमे आर अधिक प्रगति आबि गेल। सह-अस्तित्व, सहिष्णुता आर उदार दृष्टिकोणक जोर-जोरसँ समर्थन होमऽ लागल। बूझि पड़ैत छल जेना विशाल-हृदय सहयात्री-लोकनि विश्वक समग्र भेदकेँ मेटाकऽ आइये राति पूर्ण एकता स्थापित कऽ लेताह।

केरल युवक बजलाह -- वी मस्ट कास्ट एसाइड आल सैरो प्रिज्युडिसेज। बुर्जुआ मोरेलिटी हेज टु बी बरीड नाउ। (पुरान कुसंस्कार सभकेँ दूर कऽ आब रूढ़िवादी धर्मशास्त्रकेँ माटिमे मिला देबक चाही।)

बंगाली बाबू अनुमोदन कयलथिन - 'चेस्टिटी' (सतीत्व) को ही लीजिए। यह मिड्ल एज (मध्ययुग) की मोरलिटी (नैतिकता) है। ट्वेंटिएथ सेंचुरी (बीसवीं शताब्दी) में चोल नहीं शोकता।

पंजाबी सज्जन समर्थन कयलथिन--अजी, इन चीजों में क्या रक्खा है? ये पोंगापंथी खयालात न नीचे-वालों में है, न ऊपरवालों में। कुछ बीचवाले लोग इन्हें ढोये फिरते हैं। वह भी महज दिखावे के लिए। यह सब बिल्कुल ढकोसला है।

केरल युवक सिगरेट जरबैत बजलाह - इन दिस स्पुटनिक एज सेक्स कैन नॉट रिमेन कनफाइन्ड टु मैरेज। द मोनोपोली आफ द हसबैंड मस्ट गो। (एहि चरम वैज्ञानिक युगमे यौन-संबंध विवाहक संकीर्ण सीमामे बान्हल नहि रहि सकैछ। पतिक एकाधिकार आब भंग होमहिक चाही।)

पंजाबी सज्जन सिगारक धुआँ उड़बैत बजलाह--अजी, ये सब बातें अब आप से आप मिटती जा रही हैं। जो कुछ बची-खुची बेवकूफियाँ हैं, उन्हें जमाना धो बहा ले जायगा।

बंगाली माशा केरल कन्याक हाथसँ पानक बीड़ा लैत बजलाह--मोरल रिवोल्यूशन (नैतिक क्रांति) तो कोरना ही होगा। हाम 'एजुकेटेड' (शिक्षित) लोग 'लीड' (नेतृत्व) नहीं लेगा तो फिर कौन लेने शकेगा?

पंजाबी सज्जन गर्वपूर्वक बजलाह--'थियोरी प्रीच' करना (सिद्धान्त बघारना) तो आसान है, लेकिन 'प्रैक्टिस' (व्यवहार) में भी लाया जाय तब तो। भाई, मैं तो 'थ्योरी' और 'प्रैक्टिस' में कोई फर्क नहीं रखता।

केरल युवक जोशमे आबि कहलथिन--आइ डू नेवर प्रीच ह्वाट आइ डु नॉट प्रैक्टिस। (हमहूँ जे कहैत छी से कऽ देखबैत छी।)

बंगाली माशा मंद-मंद बिहुँसैत बजलाह - बाबा! हाम भी किशीसे कोम प्रगतिशील नहीं है। सर्वोदय का सिद्धान्त श्वीकार कोरता है।

तीनू गोटे एक दोसराकेँ देखलनि। सहसा जेना बिजली चमकि उठल। आँखिये आँखिमे एक मूक संधि भऽ गेल।

रेलक बत्ती अकस्मात् मिझा गेलैक। अन्हार गुज्जमे सभ किछु एकाकार भऽ गेल—भैरवी चक्र जकाँ। जे जहाँ बैसल छलाह से ततहि रहि गेलाह। फेर कोनो शब्द सुनाइ नहि पड़ल।

गाड़ी तीव्र गतिसँ चलि रहल छल--कतेक नदी-नालाकेँ पार करैत। बाहर भयंकर बिहाड़ि चलैत छल। मुदा शीत-ताप नियंत्रित कक्षमे पूर्ण शांति छल। गाड़ी अपना लीखपर चलि रहल छल। यात्री अपन-अपन गन्तव्य स्थान दिस बढ़ल जा रहल छलाह। तीनू जोड़ पति-पत्नी समानान्तर रेखामे चलि रहल छलाह। केवल किछु क्षणक लेल ओ बहकि गेल छलाह। जेना हवाक एक टा हल्लुक झोंका आयल आ तीन टा वृक्षक कोमल शाखा एक दोसराकेँ कने स्पर्श कऽ गेल। बस।

नव प्रभातक प्रथम प्रकाशमे सहयात्री लोकनि एक दोसराकेँ देखलनि। सभ अपन-अपन उचित स्थानपर उपस्थित छलाह। अपूर्व आनंद ओ उल्लासक मस्ती हुनकालोकनिक आँखिमे छलकि रहल छलनि। तीनू देवी सद्यः प्रस्फुटित पुष्प जकाँ प्रफुल्ल छलीह। ओ सभ खिड़की खोलिकऽ उन्मुक्त पक्षी जकाँ फुदुकि फुदुकिकऽ अपना-अपना पतिसँ गप्प करैत छलीह, निर्विकार भावसँ, जेना किछु भेले ने हो। जेना एक लहरि आयल ओ चल गेल।

गृहिणी लोकनि नहा-सोना कऽ स्वच्छ भेलीह आ अपना-अपना थर्मससँ चाह ढारि कऽ अपना-अपना पतिदेवकेँ पियाबऽ लगलीह। एहि बेर किनको विनिमयक आवश्यकता नहि बूझि पड़लनि।

अगिला जंक्शनपर तीनू दंपति उतरि गेलाह, एक दोसराकेँ बाइ-बाइ (नमस्ते) कयलनि और अपन बाट धयलनि। ओम्हर पंजाब मेल चलैत रहल, चलैत रहल, चलैत रहल......

(असंग्रहीत—'मिथिला मिहिर'मे प्रकाशित 1961)

दरोगाजीक मोंछ

मुंशी नौरंगीलालकेँ शुरुएसँ जासूसी उपन्यास पढ़बाक शौक रहैन्ह। चन्द्रकान्ता, भूतनाथ, मायामहल, पढ़ैत पढ़ैत हुनको जासूस बनबाक सनक सवार भऽ गेलैन्ह। और संयोग एहन जे बी. ए.क तिलिस्म तोड़ैत उत्तर कतो तेहने भेटि गेलैन्ह। नौरंगीलाल दरोगा भऽ गेलाह।

दरोगा नौरंगीलालकेँ अपना मुंछियारीक हरसँ बेशी माथी रहैन्ह। ओ कड़ा-कड़ा मोंछ रखने रहथि और बराबरि ओहिपर ताव फेरैत रहथि। हुनक सिद्धान्त रहैन्ह जे स्त्री-जातिक कोनो विश्वास नहि, तेँ विवाह नहि करी। परन्तु जखन चारूकातसँ बहुत दबाव पड़लैन्ह, त बहुत ठोंकि बजा कऽ एकटा सुन्दरीक पाणिग्रहण कैलन्हि। दरोगाजी अपने तीससँ ऊपर रहथि और वधू रहथिन्ह षोडशी। अतएव ओ जखन बाहर जाथि तखन डेरामे बाहरसँ ताला लगा कऽ और कुंजी अपना संगे नेने जाथि।

स्त्री-चरित्रक कोनो ठेकान नहि। तेँ अपना परोक्षमे दाइयो काज करऽ अबैन्ह से हुनका मंजूर नहि। किऐक त 'आदौ वेश्या ततो दासी पश्चात् भवति कुट्टिनी।' के जाने ओ ककर दूती बनि कऽ आबय? अतएव जखन दरोगाजी डेरामे आबथि तखन बैसि कऽ अपना सामने चौका-बर्तन कराबथि।

नववधूक नाम रहैन्ह चंचला। ओ हँसमुख ओ विनोदिनी रहथि। ओना बन्द घरमे रहब हुनका जेल जकाँ बुझि पड़ैन्ह। किछु दिनक हेतु मुंशीजीक बहिन सरयूदाइ आबि गेलथिन्ह। तखन चंचलाकेँ कतहुसँ प्राण ऐलैन्ह। ननदि संग हँसथि-बाजथि। हुनकर बच्चाक संग खेलाथि। आनन्दसँ समय कटि जाइन्ह।

परन्तु आङनमे एहि तरहक रंग-रभस दरोगाजीकेँ पसिंद नहि पड़लैन्ह। ओ दसे दिनक बाद बहिनकेँ विदा कऽ देलन्हि।

पुनः वैह सुनसान भूतक डेरा! चंचला देबीकेँ घर काटय लगलैन्ह। बाहर सँ ताला बन्द। ककरा संग गप्प करथु? चुपचाप खिड़कीपर बैसलि अपना कर्मक विवेचना कैल करथि। जखन रातिमे दरोगाजी अबथिन्ह तखन ओ मनुष्यक दशामे आबथि।

एक राति चंचला कहलथिन्ह - एना मन नहि लगैत अछि। छोटकी दाइकेँ फेर बजा दिऔन्ह।

दरोगाजी कहलथिन्ह - हूँ।

चंचला कहलथिन्ह - अहाँ नहि बजैबैन्ह, त हमहीं लीखि देत छिऐन्ह।

दरोगाजी फेर बजलाह - हूँ।

परन्तु हुनका मनमे संदेह भऽ गेलैन्ह। जरूर एहिमे कोनो रहस्य हैतैक। स्त्रियश्चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं देवो न जानाति कुतो मनुष्यः।

ओहि दिनसँ ओ और विशेष रूपसँ सावधान रहय लगलाह। चंचलाक प्रत्येक गतिविधिकेँ सूक्ष्म दृष्टिसँ विश्लेषण करय लगलाह।

एक राति चंचला कहि उठलथिन्ह - अहाँक मोंछ हमरा गड़ैत अछि। कटा किऐक नहि लैत छी?

दरोगाजी ताव फेरैत कहलथिन्ह - वैह मोंछ त नौरंगीलालक शान छैन्ह। ई ताही दिन कटाएत जाहि दिन हमर जासूसी फेल कऽ जायत।

चंचला करौट फेरि कऽ सूति रहलीह। परन्तु नौरंगीलालकेँ संदेह भऽ गेलैन्ह—एकरा ई इच्छा किऐक भेलैक?

दरोगाजीक मनमे सन्देहक भूत जनि गेलैन्ह। ताहि दिनसँ ओ और चौकस भऽ गेलाह। आब नीक जकाँ जासूसी करक चाही। ई हमरा परोक्षमे कोन तरहेँ रहैत अछि? की करैत अछि?

दोसरा दिन दरोगाजी कहलथिन्ह - हमरा एक चोरीक तहकीकात करक अछि। आइ राति डेरापर नहि आयब।

ओहि राति चंचलाकेँ निन्द नहि पड़लैन्ह। डेरामे केओ दोसराइत नहि, आर जेठक गर्मी। कौखन उपन्यास पढ़थि, कौखन खिड़कीपर जा कऽ बैसथि। कोनहुना कछछ-मछछ करैत प्रात कैलन्हि।

ओम्हर आधा रातिक बाद मुंशी नौरंगीलाल भेष बदलि कऽ अपना डेराक सामने ऐलाह त देखैत छथि जे धर्मपत्नी खिड़कीपर बैसलि छथि। ककरो प्रतीक्षामे तेहन तल्लीन भेलि छथि जे ओम्हरोक सुधि नहि! आधा देह ओहिना उघारे छैन्ह। सामने त मरैत काढ़ैत रहै छथि और एखन डाँड़सँ ऊपर नूए नहि!

दरोगाजीक सन्देह विकराल रूप धारण कैलकैन्ह। ओ दोसरा दिन गुप्त रूपसँ खिड़कीक परीक्षा कैलन्हि! बुझि पड़लैन्ह जे एकटा छड़ डिल-डिल करैत अछि। केओ चाहय त ओकरा उखाड़ि कऽ भीतर आबि सकैत अछि और पुनः लगा दऽ सकैत अछि।

दरोगाजी मोंछपर ताव देलन्हि - आब सूत्र भेटि गेल। जौं बिना पता लगौने रहिऐन्हि त हमर नाम मुंशी नौरंगीलाल नहि।

तहियासँ दरोगाजी आधा राति बिता कऽ घर आबय लगलाह। कहियो ने कहियो त चोर पकड़ाइए जायत!

और एकदिन सरिपहुँ मुंशी नौरंगीलालक जासूसी सुतरि गेलैन्ह। करीब बारह बजे रातिक अंदाज ओ अपना घरक पछुआड़मे ठाढ़ भेल रहथि। चोर जकाँ कान पथने। एम्हर-ओम्हर तजबीज करैत। तावत एक मोड़ल कागजपर हुनक नजरि पड़ि गेलैन्ह।

ओ लपकि कऽ ओकरा उठौलन्हि और टार्चक रोशनीमे ओकरा पढ़य लगलाह। पढ़ैत पढ़ैत दरोगाजी मोंछपर ताव फेरैत खुशीसँ उछलि पड़लाह - यह मारा! चोर पकड़ लिया!!

ओ पुर्जा एक ननडोरिया स्लिपपर लिखल छलैक और चंचला देवीक हस्ताक्षर छलैन्ह, ताहिमे त कोनो संदेह नहि।

पाठकक उत्सुकता शान्त करबाक हेतु चिट्ठीक हुबहू नकल नीचाँ देल जाइत अछि।

परम प्रिय

सप्रेम आलिंगन और
बारंबार मुख चुंबन।
हम अहाँक ऐबाक
बाट ताकि रहल छी।
बारह बजे रातिक बाद
अहाँ आबि जाउ।
हम व्याकुल छी।
राति दिन विचित्र
पागल भेल रहैत
छी। अहाँकेँ हृदय
मे साटबाक हेतु
काल्हिसँ छटपटाइत
छी। अहाँसँ मिलक हेतु
छाती धड़कि रहल अछि।
हम लाज खोलि कऽ लिखै छी।
अहाँ आबि कऽ प्राण बचाउ।
हम खिड़कीपर बैसलि
रहब। विशेष भेंट भेलापर

अहाँक
चंचला
14-3

दरोगाजीकेँ जेना तिलिस्मक कुंजी हाथ लागि गेलैन्ह। यत्न-पूर्वक जेबीमे राखि लेलन्हि। तारीख देखलन्हि त 14 मार्च! अर्थात अजुके वादा थीक। आब समय नहि। चटपट करक चाही। नहि त हाथमे आएल चिड़इ उड़ि जायत। खिड़कीक सामने एक जामुनक झंखार गाछ रहैक। दरोगाजी फुर्तीसँ ओहिपर चढ़ि गेलाह और बन्दूकक़ें टोकठने अड़ा कऽ एक मोटगर ठाढ़िपर बैसि गेलाह।

थोड़ेक कालक बाद दरोगाजी देखै छथि जे चंचला देवी खिड़कीपर आबि कऽ बैसलि छथि। दरोगाजीक छाती धड़कय लगलैन्ह। तावत देखै छथि जे एक नौजवान आबि कऽ खिड़कीसँ सटि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। मुंशीजीक छाती जोर-जोरसँ उधकय

लगलैन्ह। ओ बन्दूक हाथमे लय लेलन्हि। जौं ई भागि गेल, त सभ जासूसी व्यर्थ भऽ जायत। चोरकेँ सेन्हपर पकड़ी तखन बहादुरी। थोड़ेक काल धरि चंचला देवी और ओहि नवयुवकमे हँसि-हँसि कऽ बात होइत रहलैन्ह। दरोगाजीक देहमे आगि लागि गेलैन्ह। ओ बन्दूकक निशाना ठीक कैलन्हि। तावत नवयुवक आगाँ बढ़ि कऽ खिड़कीक भीतर हाथ पैसा देलकैन्ह। आब दरोगा जी नहि देखि सकलाह। चट दऽ फायर कऽ देलन्हि। तड़ाक दऽ बन्दूक छूटल और ओम्हर नवयुवक काटल गाछ जकाँ धम्म दऽ खसि पड़लाह।

दरोगाजी मोंछपर ताव फेरैत ओहिठाम ऐलाह त देखै छथि जे कुहराम मचल अछि। चंचला देवी खिड़कीक छड़सँ अपन माथ-कपार फोड़ि रहल छथि।

मुंशीजीकेँ देखि ओ और जोरसँ विलाप करय लगलीह - हमरा भाइसँ अहाँकेँ कोन शत्रुता छल जे गोली मारि देलिऐक?

मुंशीजी डाँटि कऽ कहलथिन्ह - आब ई त्रियाचरित्र रहय दियऽ। हम ऐयार तेजसिंह छी। ई अहाँक भाय नहि, यार थीक!

चंचला देवी कनैत बजलीह - हे राम! अहाँ सनकि त ने गेलहुँ? आँखि अछि कि कपार! बिरजू भैयाकेँ नहि चिन्हैत छिऐन्ह? हाय हाय! कोना छटपट कऽ रहल छथि? हम त बन्द छी। पानिओ कोना कऽ दिऔन्ह? कहाँसँ एहन दाम ऐलो कैलाह!

आब मुंशीजी टार्च लेसलन्हि त अपन सार ब्रजनाथकेँ देखि हतबुद्धि भऽ गेलाह। तावत महल्लाक लोक जमा भऽ गेल। ब्रजनाथकेँ पानि पिया कऽ होश कराओल गेलैन्ह और तुरन्त डाक्टरकेँ बजा कऽ मलहम-पट्टी कैल गेलैन्ह। गोली पैरमे लागल रहैन्ह तैं प्राण बाँचि गेलैन्ह।

दरोगाजी सभकेँ कहलथिन्ह जे चोरक धोखा भऽ गेल। थानासँ चल अबैत रही। अन्हारमे खिड़कीक सामने आधा रातिकऽ ठाढ़ देखलिऐन्ह। भेल जे केओ छड़ काटि रहल अछि, फायर कऽ देलिऐक।

सभक चल गेलापर चंचला देवी कहय लगलथिन्ह--दुर! अहाँक बुद्धि केहन भऽ गेल? हम बिरजू भैयाक शब्द सुनि दौड़लहुँ, परन्तु बाहरसँ ताला बन्द। भीतर अबितथि कोना? तखन हमरा लोकनि खिड़कीपर आबि कऽ गप्प करय लगलहुँ। हुनका पिआस लागल रहैन्ह। हम एक गिलास पानि देबय लगलिऐन्ह। ओ हाथ बढ़ा कऽ लैत रहथि कि अहाँ गोली मारि देलिऐन्ह। हाय राम! हमरा लोकनि अहाँक कोन कसूर कैने छलहुँ।

मुंशीजी कहलथिन्ह - हमरा आगाँ बेशी सत्यवंती नहि बनू। ई त संयोगसँ अहाँक भाय बीचमे आबि गेलाह, नहि त अहाँक यारक लाश एखन लड़पैत रहैत।

स्त्री कहलथिन्ह - अहाँ निश्चय पागल भऽ गेल छी। हमर यार के रहत?

मुंशीजी कहलथिन्ह - जकरा अहाँ आइ राति खिड़कीपर आबक हेतु बजौने रहिऐक।

चंचला देवीक मुँह उड़ि गेलैन्ह। अकचका कऽ पुछलथिन्ह -- हम बजौने रहिऐक?

मुंशीजी - हँ, चिट्ठी लिखि कऽ।

चंचला पुछलन्हि - अहाँ साबित कय सकैत छी?

मुंशीजी जेबीसँ ओ चिट बहार कऽ हुनका आगाँमे फेकि देलथिन्ह। जेना शिकार फँसलापर व्याधा प्रसन्न होइत अछि तहिना ओ मोंछपर हाथ फेरय लगलाह।

एकाएक चंचला देवीक मुँहपर मुस्कान दौड़ि गेलैन्ह। ओ पुछलथिन्ह - ई चिट्ठी अहाँकेँ कतय भेटल?

मुंशीजी अपना मोंछकेँ मरोड़ैत कहलथिन्ह - पछुआड़क नालीमे।

चंचला देवी कहलथिन्ह - ई चिट्ठी हम छोटकी दाइकेँ लिखने छलिऐन्ह। फाड़ि फाड़ि कऽ फेकि देलिऐक। ओही ठाम खोजि कऽ देखिऔक, दोसरो टुकड़ा प्रायः हेबे करतैक।

जासूस राम पुनः टार्च लेसि कऽ गेलाह और एक ओहने दोसर टुकड़ा खोजि कऽ नेने ऐलाह।,

चंचला देवी कहलथिन्ह - आब दुनू टुकड़ा जोड़ि कऽ देखिऔक त।

दुनू टुकड़ा जोड़ल गेल त संपूर्ण चिट्ठी एहि तरहेँ पढ़ल गेल--

परम प्रिय छोटकी दाइ

सप्रेम आलिंगन और स्नेहमयी बच्चीकेँ बारंबार मुड़ चुम्बन। अहाँ कहिया आयब? हम अहाँक ऐबाक समाचार सुनि प्रतिदिन बाट ताकि रहल छी। अहाँक भाय आइकाल्हि बारह बजे रातिक बाद घर अबैत छथि। अहाँ आबि जाउ। तखन सभ टा बुझब। हम व्याकुल छी। अहाँक भाय साहेब राति दिन विचित्र संदेहक फेरमे पागल भेल रहैत छथि। लिखि नहि सकै छी। अहाँकेँ हृदय क व्यथा की कहू? लिफाफ मे साटबाक हेतु टिकट नहि छल। तैं काल्हिसँ छटपटाइत छलहुँ। आइ लगा रहल छी। अहाँसँ मिलबाक हेतु हम व्यग्र छी। चिन्तासँ छाती धड़कि रहल अछि। और कहबे ककरा करिऔक? हम लाज खोलि कऽ लिखै छी। हुनका हमरेपर सन्देह छैन्ह। अहाँ आबि कऽ प्राण बचाउ। प्रत्येक ट्रेनक समयमे हम खिड़कीपर बैसलि रहैत छी से स्मरण रखने रहब। विशेष भेटभेलापर कहब

अहाँक भौजी
चंचला देवी
14.3. 48

चिट्ठी पढ़ैत देरी दरोगाजी लाजें पानि-पानि भऽ गेलाह। बजलाह—तखन आब की लोमक चाही?

चंचला देवी चुपचाप उठि कऽ गेलीह और शेविंग-सेट (हजामत बनैबाक सामान) लऽ ऐलीह। तखन साबुनसँ कुच्चीं भिजा, हुनका मोंछकेँ खूब नीक जकाँ रगड़ि, ओहि पर नहूँ-नहूँ सेफ्टी रेजर (छुरा) चलाबय लागि गेलीह। देखैत-देखैत दरोगाजीक मोंछ साफ भऽ गेलैन्ह।

('रंगशाला' सँ—1949)

शास्त्रार्थ

एक बेर रेलमे जे मनोरंजक दृश्य देखलहुँ से अद्यावधि नहि बिसरल अछि। हम काशीसँ पटना अबैत रही। सामने एक भारी भरकम पंडित बेस भड़कदार मुरेठा बन्हने बैसल छलाह। हुनका देखि एक गोटे कहलथिन -- प्रणाम, नैयायिक जी!

नैयायिक जी कहलथिन - अशुद्ध भेल। प्र उपसर्गपूर्वक नम् धातुमे घञ् प्रत्यय लगला उत्तर 'प्रणाम' बनैत छैक। प्रकर्षेण नमन अर्थात् माथ नमयबाक व्यापार होमक चाही। ओहि तरहेँ सोझ गर्दनिसँ प्रणाम करब वदतोव्याघात दोष भेल।

ओ सज्जन संकुचित भऽ गेलाह। नम्रतापूर्वक पुछलथिन - अपने निकेँ छी कि ने?

नैयायिकजी तड़ दऽ जवाब देलथिन--हँ, गद्दापर पलथा लगाकऽ बैसल छी। रूइदार दपकन पहिरने छी। ऊपरसँ दोलाइ ओढ़ने छी। नीकेँ नकी तँ छीहे।

ओ सज्जन अप्रतिभ होइत बजलाह--हमर अभिप्राय जे आनंद तँ छैक?

नैयायिकजी कहलथिन - देखू सत्यदेवजी, आनन्दक वृत्ति स्थायी नहि होइत छैक। एखने एक घंटा पहिने सोहारी-मधुर जलपान करैत काल आनंद भेल। फेर दौड़ि कऽ गाड़ी पकड़बामे कष्ट भेल। जगह भेटि गेल, आनंद भेल। सुतबाक स्थान नहि भेटल, कष्ट भेल। अहाँकेँ देखि कऽ आनंद भेल। अहाँक स्थूल बुद्धिसँ कष्ट भऽ रहल अछि। एहि प्रकारेँ सुख-दुःखक वृत्ति क्षण-क्षण बदलैत रहैत छैक। अहाँ कोन क्षणक बात पूछि रहल छी?

सत्यदेव सशंकित भावसँ बजलाह--वर्तमानक।

नैयायिकजी कहलथिन - देखू, 'वर्तमान' नामक कोनो वस्तु नहि होइत छैक। जेखन अहाँ बजलहुँ वर्तमान कि वर्तमान चलि गेल। ओ भूत बनि गेल।

सत्यदेव चुप भऽ गेलाह। एहि वितंडावादसँ सहयात्री लोकनिकेँ आनंद भेटऽ लगलनि।

एक गोटे सत्यदेवक पक्ष लैत कहलथिन - पंडितजी, हिनकर आशय छनि जे आइ-काल्हि कुशलपूर्वक छी ने?

नैयायिकजी एक चुटकी नोसि लैत बजलाह - बेस, तँ आब अहाँ अखाड़ामे आयल छी। तँ लियऽ - 'आइ' आर 'काल्हि'मे बहुत अन्तर भऽ जाइत छैक। काल्हि हमरा माथमे दर्द छल। आइ आराम अछि। आब कोन शब्द कहू जे आइ ओ काल्हि दुनूपर लागू हो?

ओ उत्तर सोचऽ लगलाह। तावत दोसर गोटे बजलाह - नैयायिकजी, हिनक तात्पर्य छनि जे साधारणतः केहन समाचार अछि?

नैयायिकजी कहलथिन - देखू, 'समाचार'क अर्थ छैक 'सम्यक आचार'। यथा, हम स्नान कयने छी, पूजा कयने छी, जलपान कयने छी, भोजन करब शेष अछि। आर कोन सम्यक आचार जानऽ चाहैत छी?

तेसर कहलथिन - पंडितजी, ई अनुका गप्प नहि पुछैत छथि। एहि बीचक हाल-चाल केहन से कहियौन।

नैयायिक जी कहलथिन -एहि बीचक की अर्थ? कतेक दिनक बीच?

चारिम गोटा कहलथिन - मानि लेल जाओ, एक मास।

नैयायिक जी बजलाह - एक मासक अभ्यन्तर दुनू तरहक बात भेल अछि। गाय बिया गेल, प्रसन्नता भेल। महिंस बिसुकि गेल, शोक भेल। करैलक अँचार खयलहुँ, आनंद भेल। आँखि उखड़ि गेल, कष्ट भेल। बिदाइमे धोती भेटल, लाभ भेल। चश्मा हेरा गेल, हानि भेल। एकठामसँ दही-केराक भार आबि गेल, हर्ष भेल। भरियाकेँ बिदाइ देमऽ पड़ल, कष्ट भेल। एहि प्रकारेँ हर्ष ओ विषादक माला तँ नित्य गँथाइते रहैत छैक। एक शब्दमे कोना कहू?

प्रश्नकर्ता निरुत्तर भऽ गेलाह। तखन पाँचम सज्जन बजलाह - पंडितजी, हिनकर आशय छनि जे घरपर सभ लोक प्रसन्न छथि किने?

किन्तु नैयायिक जी सहजमे छोड़ऽ बला जीव नहि छलथिन। कहलथिन--तखन सुनू। प्रसन्नता अभीष्ट वस्तुक प्राप्तिसँ होइत छैक। हम चाहैत छी जे नेना फक्किका पढ़थि। नेना चाहैत छथि जे फोंफी दैत रहथि। हमर इच्छा जे गहना बेचि कऽ आर खेत कीनल जाय। स्त्रीक इच्छा जे खेत बेचि कऽ आर गहना कीनल जाय। हम चाहैत छी जे कन्यालोकनि माटिक महादेव बनाबथि। ओ लोकनि चाहैत छथि जे महादेवकेँ माटि बना दियनि। हम चाहैत छी जे खवास अल्प-भोजी बनय। ओ चाहैत अछि जे भोजन शक्तिमे आर वृद्धि होइक। हम घरक लोककेँ बताह कऽ कऽ बुझैत छियनि जे तर्कविरुद्ध बात किएक करैत छथि। घरक लोक हमरा बताह कऽ कऽ बुझैत छथि जे हम प्रत्येक बातमे तर्क किएक लगबैत छी। आब अहीं कहू जे सभ एक संग प्रसन्न कोना रहि सकैत छथि?

एहि तरहेँ सभ मिलि पंडितजीकेँ चालु जालमे घेरबाक प्रयत्न करऽ लगलथिन आ ओ चतुर खेलाड़ी जकाँ सभ बेर जल्दी काटि कऽ निकलैत चलि गेलाह। कोनो तरहेँ धराइ नहि देलथिन। अन्तमे हारि-दारि कऽ प्रश्नकर्तालोकनि कहलथिन - पंडित जी, हम सभ अपन प्रश्न आपस लैत छी। अपनेसँ कुशल पुछबामे कुशल नहि।

पंडितजी अपना विजयपर मुस्कुराय लगलाह।

एक गोटा पुछलथिन - पंडितजी, अपने करैत छी की?

नैयायिक जी कहलथिन - कृ क धात्वर्थ छैक क्रियामात्र। हम बहुत किछु करैत छी। चलैत छी, फिरैत छी, उठैत छी, बैसैत छी। एखन बाजि रहल छी।

दोसर गोटा कहलथिन - जीवन यापनक हेतु की करैत छी?

नैयायिकजी उत्तर देलथिन - खाइत छी, पिबैत छी, श्वास लैत छी।

तेसर पुछलथिन--अपनेक व्यवसाय?

नैयायिक जी कहलथिन - हमर व्यवसाय थिक शास्त्रार्थ करब। हम जे चाही सिद्ध कऽ सकैत छी।

एक सज्जन भोजन कऽ रहल छलाह। कहलथिन - तँ सिद्ध करू जे हम भोजन छी।

नैयायिकजी कहलथिन - ई कोन भारी बात? चुटकी बजबैत सिद्ध कऽ देब। अहाँ नहि, अहाँक गोटे एहि ठाम छथि, सेहो भोजन छथि।

श्रोतागणक उत्सुकता चरम-बिंदुपर पहुँचि गेलनि। पुछलथिन - से कोना?

पंडितजी कुशल धनुर्धर जकाँ तरकशसँ चुनि चुनि कऽ तर्कक बाण बाहर करऽ लगलाह। प्रथम तीर छोड़लनि — देखू, अहाँ लोकनिक शरीर जेना एखन अछि तहिना सर्वदासँ अछि?

श्रोता - नहि।

नैयायिकजी - गर्भावस्थामे कनेक टा मांसपिंड छल। छल ने?

श्रोता - हँ।

नैयायिक जी - ओ मांसपिंड कतऽसँ आयल ? एक बुन्द धातुक विकसित रूप थिक। थिक ने ?

श्रोता - हँ।

नैयायिक जी - ओ धातु की थिक? भोजनक रसक परिणाम थिक। थिक ने?

श्रोता - हँ।

नैयायिक जी - बस, सिद्ध भऽ गेल हमर प्रतिज्ञा। सभ लोक मूलतः भोजन थिकाह। भोक्ता ओ भोज्य पदार्थ एके वस्तुक भिन्न-भिन्न रूप थिक। क्यो करताह खंडन?

नैयायिक जी व्याघ्रदृष्टिसँ चारू दिस तकलनि। किनको विरोध करबाक साहस नहि भेलनि। नैयायिकजी विजय सूचक नोसि लेबऽ लगलाह। पुनः ललकारैत बजलाह - आब अहाँ लोकनिकमेसँ जिनका आगाँ अयबाक होइनि, आबि जाथि आ कोनो बात सिद्ध कऽ कऽ देखाबथि।

एक व्यक्ति साहस कऽ कऽ आगाँ बढ़लाह। बजलाह - देख, तँ हम कहैत छी, एखन दिन अछि।

नैयायिक जी वीरासन लगाकऽ बैसि गेलाह। बजलाह - बेस, तँ सिद्ध करू। अहाँ जैह, कहब, हम खंडन करैत जायब।

ओ - एखन प्रकाश छैक तँ दिन।

नैयायिकजी - अशुद्ध। किएक तँ प्रकाश ओ दिनमे अव्यभिचरित संबंध नहि छैक। कोखन दिनोमे अंधकार रहैत छैक। आ कौखन रातियोमे प्रकाश रहैत छैक, चन्द्रमा, अग्नि वा विद्युतक कारण।

दोसर - परन्तु दिनक प्रकाश दोसरे होइत छैक। जखन दिनबला प्रकाश होइक तखन दिन बुझबाक चाही।

नैयायिक जी - ईहो अशुद्ध। परिभाषामे परिभाषेय शब्द नहि अयबाक चाही, जखन दिनेक लक्षण निर्दिष्ट नहि भेल, तखन 'दिनबला' क अर्थ की? अन्योन्याश्रय दोष भऽ जायत।

तेसर - बेस, तँ दोसर परिभाषा लिअऽ। जखन सूर्यक प्रकाश देखाइ पड़य तँ दिन थिक।

नैयायिक जी - ईहो अशुद्ध। एहि लक्षणक अनुसार तहखानाक भीतर कहियो दिन होयबे नहि करत। एहिमे अव्याप्ति दोष छैक।

चारिम- बेस, तँ मैदानमे देखला संताँ जखन सूर्य देखाइ पड़थि, तखन दिन थिक।

नैयायिक जी - ईहो अशुद्ध। मेघाच्छन्न दिनमे मैदानोसँ सूर्य देखाइ नहि पड़ैताह। सूर्यग्रहण काल सेहो सूर्य अदृश्य भऽ जाइत छथि। की ओहि समयकेँ राति कहबैक?

पाँचम - बेस, तँ ई लक्षण लिअऽ। सूर्योदयसँ सूर्यास्त पर्यन्तक समयकेँ दिन कहबैक।

नैयायिकजी - ईहो अशुद्ध। सूर्य वस्तुतः ने उदित होइत छथि ने अस्त होइत छथि। हमरा लोकनिक दृष्टि दोषसँ ओ चलायमान प्रतीत होइत छथि। अतएव उदय ओ अस्त प्रत्यक्षाभास मात्र थिक।

छठम - बेस, तँ उदयाभास ओ अस्ताभासक बीचबला समय दिन थिक।

नैयायिक जी - ईहो अशुद्ध। एकके समयमे दू व्यक्तिकेँ भिन्न-भिन्न आभास भऽ सकैत छनि। जेना देवदत्त नीचा मैदानमे छथि। यज्ञदत्त पहाड़पर ठाढ़ छथि। देवदत्तकेँ सूर्य अदृश्य भऽ जाइत छथिन। परन्तु यज्ञदत्त ऊँचपर रहबाक कारणेँ सूर्यकेँ देखि रहल छथि। आब ओहि समयकेँ दिन कहबैक कि राति? की एकके समय एकक हेतु दिन ओ दोसरक हेतु राति थिक? तखन तँ आन्हरक हेतु बराबरि रातिए राति रहतैक?

एहि तरहेँ नैयायिकजी तर्कक गड़ाँससँ सभ लक्षणकेँ कुट्टी जकाँ कटैत चलि गेलाह। दिनकेँ सिद्ध करऽमे दुपहरसँ तीन राति गेल। किन्तु ओ दिन सिद्ध नहियेँ होमऽ देलथिन।

क्रमशः सभ प्रतिपक्षी परास्त भऽ गेलाह। सभकेँ निरुत्तर देखि नैयायिकजी दिग्विजयी जकाँ चारू कात तकलनि आ सिंह-गर्जन करैत बजलाह - की छथि आर क्यो मैदानमे? तँ आबि जाथु अखाड़ामे।

श्रोतालोकनि पुनः हाथ जोड़ैत कहलथिन - नैयायिकजी, हमरालोकनि मानि लेलहुँ। अपने दिनकेँ राति ओ रातिकेँ दिन सिद्ध कऽ सकैत छी।

नैयायिकजी पुनः गर्व-पूर्वक मुस्कुराय लगलाह।

एक गोटा पुछलथिन - नैयायिकजी, अपने कतऽ जा रहल छी?

नैयायिकजी - एक शास्त्रार्थमे जयबाक अछि।

दोसर गोटे कहलथिन - अपनेक समक्ष के टिकि सकैत छथि?

नैयायिक जी दर्पपूर्वक बजलाह - हम काशीक न्यायदिग्गज छी। जे लड़ऽ आओत से चूर-चूर भऽ जायत।

तेसर पुछलथिन - अपनेक प्रतिद्वन्द्वी के थिकाह?

नैयायिक जी कहलथिन - ओहो कम धुरंधर नहि छथि। नवद्वीपक तर्ककेसरी छथि। प्रतिपक्षि-भयंकर कहबैत छथि। हालमे पूनासँ शास्त्रार्थमे हजार रुपैयाक बाजी मारिकऽ आयल छथि। आब देखी, केहन भिड़न्त होइत अछि।

चारिम पुछलथिन - शास्त्रार्थक विषय की थिक?

नैयायिक जी कहलथिन - विषय तँ बड़ जटिल छैक। कइएक मास कइएक वर्ष प्रत्युत जीवन पर्यन्त एहिपर शास्त्रार्थ चलि सकैत अछि। तथापि अन्तिम निष्कर्षपर पहुँचब असंभव।

पाँचम पुछलथिन - कोन बातपर बहस होयतैक? कनेक हमरो सभकेँ बुझा दियऽ।

नैयायिक जी कहलथिन - देखू विषय ई थिकैक जे घटमे घटत्व समवेत छैक। जखन घट फूटि गेलैक तँ घटत्व कतऽ गेलैक?

एक गोटा कहलथिन - ई बात तँ माथमे नहि धसल।

नैयायिक जी कहलथिन - धसत कोना? एहि हेतु अत्यन्त सूक्ष्म बुद्धिक आवश्यकता छैक। नव्यन्याय पढ़ऽ पड़त। अनुयोगिता प्रतियोगिताक ज्ञान प्राप्त करऽ होयत। ई बुझऽ पड़त जे घटाभाव की वस्तु थिकैक।

दोसर गोटे कहलथिन - घटाभावक अर्थ भेलैक घटक अभाव, अर्थात घैलक नहि रहब। एहिमे बुझबाक कोन वस्तु छैक?

नैयायिकजी कहलथिन - केवल एतबेसँ काज नहि चलत। घटाभाव प्रतियोगितावच्छेदक छैक घटत्व। अतएव घटाभाव घटत्वनिष्ठ अवच्छेदकतानिरूपित प्रतियोगिताक अभाव थिक। बुझलिऐक एकर अर्थ? अछि कोनो गोटाक दिमागमे एतेक गुदा?

ई कहब छल कि एकाएक विस्फोट भऽ उठल। जेना बारूदमे पलीता लागि गेल हो। एक भीमाकार मल्ल जे एनबा कालसँ फोंफ कटैत छलाह, अकस्मात घोंटायल अजगर जकाँ फुफकार छोड़ैत उठि बैसलाह। जेना कोनो ज्वालामुखी एकाएक भभकि उठल हो तहिना हुनका मुँहसँ अवच्छेदकताक फुलझड़ी छूटऽ लागल — घटाभावाभावक प्रतियोगी घटाभाव-प्रतियोगितावच्छेदक घटत्वनिष्ठ, अवच्छेदकता अतएव घटनिष्ठावच्छेदकता निष्ठावच्छेदकता निरूपित प्रतियोगितानिष्ठ अवच्छेदकता ......

आब जे दुनू दिससँ अवच्छेदकताक बौछार चलल तँ 'छकार'क लच्छा छूटऽ लागल। दुनू दिग्गज एक संग बाजि रहल छलाह। क्यो चुप होमऽ बला नहि छल। जोरमजोर मोकाबिला छल। किएक तँ काशीक दिग्गजकेँ नवद्वीपक केसरीसँ मुठभेड़ भऽ गेल छलनि।

शास्त्रार्थ क्रमशः मल्लयुद्धक स्तरपर उतरि आयल। दुनू दिग्गज पर्योक्तिक संग एक दोसरकेँ ललकारऽ लगलाह।

एक गोटा कहलथिन - अहाँ 'जल्प'क कुश्ती चाहैत छी?

दोसर जबाब देलथिन - अहाँ 'वितंडा'क दंगल चाहैत छी?

वादी - तँ फेर देखाउ दाव ?

प्रतिवादी - तँ हमहूँ लगाउ पेंच?

वादी - हम अवच्छेदकताक जालमे ओझरा देब।

प्रतिवादी - हम प्रकारताक रस्सामे बान्हि देब।

वादी - हम हेत्वाभासक चाबुकसँ बेदम कऽ देब।

प्रतिवादी - हम निग्रहस्थानक डंटासँ होश ठंढा कऽ देब।

वादी - तेहन धोबियापाट लगायब जे चारू खाना चित्त कऽ देब।

प्रतिवादी - तेहन डाक मारब जे उठि कऽ पानि पिउबाक होश नहि रहत।

वादी - हम एहन कऽ पछाड़ब जे धोधि लटका देब।

प्रतिवादी - हम तेना कऽ पटकब जे छठिहारक दूध बोकरबा देब।

वादी - तँ फेर भऽ जाय।

प्रतिवादी - भऽ जाय।

वादी - जँ हरदि-चून नहि बजबा देलहुँ तँ हम भट्ट नहि।

प्रतिवादी - जँ करिखा-चून नहि पोति देलहुँ तऽ हम भट्टाचार्य नहि।

वादी गरजि कऽ हुंकार कयलनि - कः समः करिवंशस्य भालतीपुष्पमर्दने।

प्रतिवादी सिंह-गर्जन कयलनि — पलायध्वं पलायध्वं भो भो तार्किक दिग्गजाः। सिंह भटः समायाति सिद्धान्त गजकेसरी।

ता गाड़ी एक स्टेशनपर आबि कऽ ठाढ़ भेल। दुनू पुछऽ लगलथिन--आब डुमराँव कतेक दूर अछि ?

श्रोतागण कहलथिन - डुमराँव तँ पाछाँ छूटि गेल। ई रघुनाथपुर थिक। अपने लोकनि शास्त्रार्थक प्रवाहमे पच्चीस किलोमीटर आगाँ बढ़ि अयलहुँ।

एक दिग्गज कपार ठोकैत बजलाह - अनर्थ भऽ गेल। आब की होयत?

दोसर दिग्गज माथ पिटैत बजलाह - सर्वनाश। आब तँ शास्त्रार्थक समय पहुँचियो ने सकब।

एक गोटा कहलथिन - अहींक द्वारे डुमराँव छूटि गेल।

दोसर गोटा कहलथिन - नहि, अहींक द्वारे छूटल।

प्रथम बजलाह - तखन एही बातपर शास्त्रार्थ भऽ जाय।

द्वितीय बजलाह - भऽ जाय। हम तैयार छी।

श्रोतागण कहलथिन - महाराज। अपने लोकनि दुनू गोटे धन्य छी, आब गाड़ी खूजि रहल अछि। ईहो स्टेशन छूटि जायत।

दुनू गोटे आग्नेय नेत्रसँ एक दोसराकेँ तकैत प्लेटफार्मपर उतरलाह।

तकरा बादक घटना संक्षिप्त अछि। केवल एक झलक खसैत गाड़ीसँ भेटल। दुनू योद्धा एकके टमटमपर बीचमे लगौने आमने-सामने बैसल छलाह। सड़कपर टमटम चलि रहल छल। दुनू गोटे हाथ चमका-चमका कऽ अपन-अपन पक्षक प्रतिपादन कऽ रहल छलाह। प्रतिपक्षक खंडनमे बोंहियो संग दऽ रहल छलनि। लगैत छल जे आब जे घड़ी गुत्थम-गुत्थी नहि भेल अछि। टमटमवला जोशमे आबि गेल। ओ घोड़ाकेँ एहेन जोरसँ चाबुक लगौलक जे टमटमे उनटि गेल। दुनू दिग्गज एकके संग चित्त भऽ गेलाह। तावत ट्रेन आगाँ बढ़ि गेल।

(अप्रकाशित—'मिथिला मिहिर' मे प्रकाशित 1962)

विकट पाहुन

भादवक राति। साँझेसँ जे झपसी लधलक से क्रमशः बढ़िते गेल। जखन एगारह बजे रोशनी मिझा गेलैक त समस्त होस्टल अन्हार घुप्प भऽ गेल। चारू कात निस्तब्ध। केवल फूही झहरबाक स्वर एक तालसँ नीरवता भंग करैत छल। हमहूँ पुस्तक कैं सीरमा मे राखि निद्रादेवीक आवाहन करय लगलहुँ।

वर्षाक झहर-झहर शब्द सुनैत कखन आँखि मुना गेल से पता नहि। प्रायः एक घंटा धरि स्वप्नराज्य मे विचरण कैने हैब कि नीचा केवाड़ खटखटैबाक शब्दसँ नींद टूटि गेल।

बारह बजे राति कऽ के एना केबाड़ पीटि रहल अछि? जी अकच्छ भऽ गेल। नीचा उतरि कऽ देखैत छी जे दरबान ठाढ़ अछि। पुछलिऐक - क्या है जी?

ओ कहलक – चार ठो बाबू आये हुए हैं। नाम नहीं बतलाते हैं। लेकिन कहते हैं कि हुजूर से बहुत-जरूरी काम है, इसी वक्त मुलाकात चाहिए।

हम किछु रुष्ट जकाँ भऽ कहलिऐक – कहा क्यों नहीं कि सोये हुए हैं?

दरबान बाजल – बहुत कहा कि सुपरेंटेंडेंट साहब सो गये, कल भोर में आकर मिलियेगा। लेकिन बिगड़ने लगे कि अभी फौरन जगा दो, नहीं तो बहुत नुकसान होगा और पीछे साहब तुम्हीं पर ाराज हो जायँगे।

हम सोच ा लगलहुँ, ई के व्यक्ति छथि जे एहन विकाल रातिमे, एहि मुसलाधार वर्षाक मय, एना ऐबाक कष्ट उठौने छथि? हमरासँ कोन एहन ज री कार्य छैन्ह? के जाने, घरसँ कोनो अनिष्ट संवाद लाएल होथि!

एक बेर अज्ञात आशंकासँ देह सिहरि उठल। कहलिऐक – अच्छा, जाओ ले आओ।

पुनः मन कैं बुझाबय लगलहुँ – कोनो विद्यार्थीक गार्जियन होइथिन्ह। तेहने भयंकर विपत्ति पड़ल हैतैन्ह तखन त एहि बदरीमे भिजैत-तितैत बारह बजे राति कऽ आबि पहुँचल छथि।

एही तर्क-वितर्क मे छलहुँ कि जोरसँ गर्जन भेल। सम्पूर्ण होस्टल हड़हड़ा उठल। विद्युल्लताक प्रकाशमे देखैत छी जे चारि टा भीम सन-सन व्यक्ति आबि रहल छथि। निकट ऐलापर एक गोटा आगाँ बढ़ि पुछलन्हि – की? अपनहि परमेश्वर बाबू थिकहुँ? कुशल-क्षेम ठीक कि ने? नेना-भुटका सभ निकें छैक? हें-हें-हें-हें!

हमर त वाणिए कुण्ठित भऽ गेल। ई के महानुभाव थिकाह जे एहन भयंकर

निशीथमे अयाचित कृपा कय एतेक आत्मीयता देखा रहल छथि! बहुतो मन पाड़लाप ध्यानमे नहि आएल जे एहिसँ पूर्व जीवनमे कहियो हिनका देखने होइऐन्ह। परन्तु एतबा बुझबामे भाङठ नहि रहल जे ई केओ असाधारण व्यक्ति थिकाह जनिक कृपा आब हमरा और 'परमेश्वर' मे केवल तीने डिग्रीक अन्तर रहि गेल अछि।

हमरा असमंजसमे पड़ल देखि ओ स्वयं आरम्भ कैलन्हि — हे-हे-हे-हे! अप जे फिने से हमरा नहि चिन्हने हैब। चीन्हब कोना? कहियो देखने रही तखन ने! हम अपनेक मसियौतक जे फिने से साढ़ूक पिसिऔत भाइ हैबैन्ह! हे-हे-हे-हे! हमर लोकनि पिंड देबाक हेतु गया जा रहल छी। कालि भोरमे गाड़ी भेटत। पता लागल जे अपने बाँकेपुरमे शुपरडंट छी। तखन बिनु भेंट कैने कोना जइतहुँ? डेराक पता लगबैत-लगबैत एतेक राति भऽ गेल। हे-हे-हे-हे! ई हमर वैमात्रेय भाय छथि। और ओ हमर सरबेटा थिकाह। ईहो लोकनि अपनेक दर्शन करक हेतु हमरा संग चल ऐलाह। और ई हमर बालक थिकाह। हौ, प्रणाम करहुन।

हुनक सुयोग्य पुत्र अन्हारेमे हमरा दिशि बढ़य लगलाह। जहिना प्रणाम करब हेतु निहुड़लाह कि हुनका काँखतरक मोटरीसँ पितरिया लोटा बाहर भय ढन्न द हमरा पैरपर खसि पड़ल। चोटसँ जी लोहछि गेल। औंठा थकुचा गेल। एहन विकट प्रणामक आशीर्वाद की दितिऐन्ह? सिसिया कऽ रहि गेलहुँ।

हमर सीत्कार सुनि हुनक पिता बजलाह — की, अपने कैं बेशी चोट त ने लागल?

पुनः अपना बालक कैं फज्झति करैत कहलथिन्ह — तों बड़ड बूड़ि छह। मोटरियो रखबाक लूरि नहि छौह। पहिने मोटरी राखि लितह, तखन प्रणाम करितहुन।

ई कहि ओ भीजल छाता और मोटरी टेबुलक ऊपर राखि देलन्हि। पुनः अपन भीजल धोतीक साँची गाड़ैत अपना दल दिसि ताकि बजलाह-की.हौ! तों सभ त नीक जकाँ भीजि गेलाह? हे-हे-हे-हे! हमहूँ भीजि-गेलहुँ। आब पहिरबह की? मोटरियो सभ त भिजिए गेलौह।

ई कहि ओ बलहँसी हँसय लगलाह।

तावत दरबान लालटेन लेसि कऽ नेने आयल। प्रकाशमे चारू अभ्यागतक भीमकाय मूर्त्ति देखल।

सभक देह लथपथ। धोतीसँ पानि चुबैत। टेबुलपर नजरि पड़ल त देखैत छी जे भीजल छाताक जलसँ समस्त शुष्क फाइल आर्द्र भऽ गेल अछि और मोटाक भारसँ दाबात उनटि कऽ कज्जलसरिता बहा रहल अछि।

तावत पाहुन हमर उपकारार्थ अपना सभक नामावली कहि सुनौलन्हि — स्वयं भीमेन्द्रनाथ, वैमात्रेय गजेन्द्रनाथ, बालक बज्रेन्दनाथ (ओ 'ब्रजेन्द्रनाथ' क एहिना उच्चारण कैलन्हि जे हमरा अधिक सुसंगत बुझना गेल), ओ सरबेटा दिगम्बरनाथ।

आब ई चारू नाथ पहिरताह की? एकटा फाजिल धोती रहय से भीमेन्द्रनाथ कैं देलिऐन्ह। गजेन्द्रनाथ हमरवला लुंगी लपेटि लेलन्हि। ब्रजेन्द्रनाथ कैं एक पुरान एक

तहून बाहर कय देलिऐन्ह जे हुनका घुट्ठी सँ एक बीत ऊपरे रहि गेलैन्ह। दिगम्बरनाथ ओहिना रहि गेलाह। अन्तमे कैंवाड़क पर्दा उतारि हुनक पर्दाक इन्तिजाम भेल गेल! आब ई लोकनि महादेवक बरियात बनि गेलाह।

जखन दरबान ओछाओन माँगय ऐलैन्ह त पाहुन कहलथिन्ह — ओछाओन त हे-हे-हे-हे! हमरा सभ नहि अनलहुँ अछि। एकटा फाटल दरी मे मोटरी बान्हल छैक सेहो भीजिए गेलैक। की हैतैक? एके रातिक त बात! कतहु पड़ि रहै जाएब। हे-हे-हे-हे!

दरबान 'कामन रूम' सँ बड़का सतरंजी आनि बिचला हौलमे ओछा देलकैन्ह। हिनका लोकनिक सुतबाक प्रबन्ध लगा ओ अपना काज पर चल गेल, और हमहूँ ऊपर बिदा भेलहुँ।

दुइए सीढ़ी चढ़ल हैब कि पाछासँ पहुन पुछै छथि — की, अपने भोजन त एखन नहिए कैने हैब?

एक बजे राति कऽ एहन असंभाव्य प्रश्न सुनि हम अवाक रहि गेलहुँ। परन्तु हुनक अभिप्राय बुझबामे भाङठ नहि रहल। पुछलिऐन्ह — की, अहाँ लोकनि बिनु खैनहि छी?

एहि पर पाहुन जे उत्तर देत भेलाह से सुनू — हे-हे-हे-हे! एखन कोन अगुताइ छैक? तावत ई तीनू गोटा किछु जलपान कऽ लेताह। हे-हे-हे-हे! हमरा त तेहेन भूख नहि अछि। एके बेरि जे हैतैक से खा लेब। हे-हे-हे-हे! घरे थिकैक। ई कोनो बात छैक? की हौ गजेन्द्र! हम कहलिऔह ने जे ई बिना आग्रह कैने नहि मानथुन्ह। बज्रेन्द! एहि ठाम कोनो संकोच नहि। तोहर त घर छौह। जलखइ करै जाह हे-हे-हे-हे!

आब एहि हे-हे पर हम सूतय कोना जाउ? रामटहल अपना कोठरीमे निसभेर सूतल रहय। तकरा जा कऽ जगाओल और छाता रुपैया दऽ कऽ बाजार पठौलिऐक। ओहन घनघोर वर्षामे डेढ़ बजे राति कऽ कोन अभागल दोकान खोलि कऽ बैसल रहैत? आध घंटाक बाद ओ छप-छप करैत, खाली हाथ डोलबैत, फिरल आएल।

आब कोन उपाय हो? एक नाथ रहत नहि पाए। चारि-चारि टा नाथ! ताहिमे 'एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्!'

भनसीया कैं उठौलिऐक। ओ आँखि मिड़ैत आबि कऽ कहलक जे सरकार, आब त दू बजैत छैक। एखन जँ चोइला पजारबगऽ त भोरे भऽ जैतैन्ह।

बात त यथार्थ। आब हम करै छी की? पाहुन मे सँ केओ कनेको औंघाय बला नहि। प्रत्युत एहि ताकमे जे कतहु घरबैया अंटा कऽ सूति नहि रहथि।

हमरा चिन्तित देखि पाहुन आश्वासन देबय लगलाह — कोनो चिन्ता नहि, हमरो लोकनिक संग किछु खैबा-पिउबाक वस्तु अछि। की हौ गजेन्द्र? बाहर करह तिलरिक खटमिट्ठी। दू-चारि फाँक अमड़ाक अँचारो हैतौह।

एक त ओहिना जठराग्नि प्रदीप्त। ताहिपर उद्दीपन सामग्री! अगत्या ह लालटेन लय भंडारघर गेलहुँ। एतेक वस्तु देखबामे आयल — एकटा अधपक्कू कटहर एक हत्था केरा, एक बोतल घृत।

पाछाँ फिरि कऽ देखैत छी त चारू पाहुन ठाढ़! हम रामटहल कैं पुछलिऐक- देखही तऽ ई कटहर खैबाक योग्य भेलैक अछि?

ओ तजबीजे करैत छल कि पाहुन ओकरा हाथसँ कटहर उचाडि क कहलथिन्ह — तों की बुझबहिक? एम्हर ला। वाह! खूब गमकैत अछि। एतिमे खजबा को बहरैतैक। की हौ गजेन्द्र!

ओसारापर पानिक झटक अबैत रहैक। तैं भंडारे घरमे एक दिशि आसन-पानि धरबा देलिऐन्ह। चारू गोटे ढाथसँ ऐँड़ी कैं हँसोथि बैसैत गेलाह। बीचमे कटहर राखि देल गेलैन्ह। जाबत रामटहल धारी-दाटी माँजि कऽ आनय-आनय ताबत कमरी समेत सभटा कोआ साफ! केवल, ओंठी और नेढ़ा मात्र शेष रहि गेलैन्ह। भीमेन्द्रनाथ सरबेटा दिसि ताकि बजलाह — आब की खैबह! केरा?

दिगम्बरनाथ कहलथिन्ह- हँ पिउसा, केरा त पाचके हैत।

किन्तु चारि-चारि छीमीसँ की हो? ऊँटक मुँह मे जीरक फोरन! सरबेटा घृत दिशि ताकय लगलथिन्ह। पिउसा पुछलथिन्ह — की? चखबाक मन होइत छौह?

ओ बामा हाथे ढारि-ढारि दहिना हाथे घृतक आस्वादन करय लगलाह। चटैत चटैत चारू गोटे समटा घृत चट कऽ गेलाह।

हम देखल जे पाहुन लोकनि छुछुआएले बैसल छथि, केओ उठबाक नाम नहि लैत छथि। उदरकुंडक जठराग्नि-ज्वाला घृतक आहुतिसँ और क्रुद्ध भय जेना सातो जिह्वा लपलपाय माँगि रहल छैन्ह — हविषं देहि समिधं देहि।

आब हम और हविषा कतयसँ आनू? दवाइक आलमारी मे एक डिब्बा 'माल्टेड मिल्क' रहय सेहो धेरि कऽ चारू गोटे कैं दऽ देलिऐन्ह। किन्तु ओहि चरणोदक सँ की हो?

तावत ब्राह्मणदेवताक भाग्य देखिऔन्ह जे मेसक एक हलुआइ नमकीन बना कऽ बेचैत रहय से एक पसेरी दालमोट बना कऽ रखने रहय। ई पता लगैत भरलो थार ओकरा आतय सँ मङबा लेल गेल। एक थरिका अमौट पाहुनक मोटरीमे रहैन्ह चारू गोटा अमौट घोरि, ओहिमे दालमोट सानि-सानि तृप्तिपूर्वक कौर मारय लगलाह।

जखन सम्पूर्ण परात साफ भऽ गेलैन्ह तखन भीमेन्द्रनाथ हमर तोषार्थ बजलाह — हें-हें-हें-हें! ई जलपान की भेल जे मानू भोजने भय गेल। की हौ गजेन्द्र! आब त तोरो लोकनि कैं ततेक भूख नहिए हैतौह?

ई कहि ओ पुनः हें-हें-हें-हें करय लगलाह। अन्तमे हमरे पराजय स्वीकार करय पड़ल। कहलिऐन्ह — त बेश, आब अपने लोकनि अचाओल जाय। दू सँ ऊपर भेल। हमरो आज्ञा भेटय।

हमरा सबेरे उठि एकटा रिपोर्ट लिखबाक रहय। तैं ऊपर जा सुतबाक उपक्रम करय लगलहुँ। गर्जन तथा वर्षणक वेग क्रमशः बढ़िते गेलैक। बुझि पड़य जे आइ सौंसे पटना दहा देत। अढ़ाइ बजे राति कऽ जे पुनः बिछाओनपर ऐलहुँ त बेहोश भऽ पड़लहुँ। किन्तु मुश्किलसँ आध घंटा बीतल हैत कि ककरो वज्र सन कठोर हाथक स्पर्शसँ नींद उचटि गेल। हम अकचका कऽ छड़पय लगलहुँ कि 'औ परफेश्वर बाबू! हम छिकहुँ' ई कहि पाहुन हे-हें-हें-हें करय लगलाह।

हमर त देह जरि गेल। तथापि सभ्यताक रक्षा करैत पुछलिऐन्ह — की थीक?

पाहुन बजलाह — हें-हें-हें-हें! नीचा लालटेन मिझा गेलैक। और हमर सरबेटा दिगम्बरनाथ जे किने से नदी दिश जैताह। एहि ठाम त किछु गमल-बुझल छैन्ह नहि। निकास कोम्हर छैक?

हम कनेक औंघायले जकाँ उत्तर देलिऐन्ह — नीचा भंडारघरसँ सटले पैखाना छैक। ताहि मे जाय कहिऔन्ह।

ई कहि हम पुनः आँखि मूनि सूति रहलहुँ। किन्तु दसे मिनटक बाद नीचा फेर गर्द पड़ल — औ परफेश्वर बाबू! पानि नहि भेटैत अछि। बालटी कतय छै? अन्हारमे माटि नहि भेटैत छैन्ह! हाथ कोना मटिऔताह?

आब की करू? पुनः नीचा उतरय पड़ल। पानि ओहिना झहरैत रहैक। रामटहल अपना कोठरीमे जा कऽ सूतल रहय। पुनः ओकरापर अत्याचार करब उचित नहि बूझि पड़ल। हम स्वयं टार्च लऽ कऽ माटि देखा देलिऐन्ह और ओ बालटीक उद्देश्यें बाथरूम गेलाह। ओहिमे जहिना पैर दैत छथि कि फच्च दऽ किछु माखि गेलाह। टार्चक प्रकाशमे देखला उत्तर स्पष्ट भऽ गेल जे ई दिगम्बरनाथक प्रसाद छिड़ छिकैन्ह। ओ स्नानागारे कैं शौचागार बूझि अपन कोष्ठ-शुद्धि तथा हमर प्रकोष्ठ-शुद्धि कऽ देने छथि!

हम ऊपर गेलहुँ कि पाहुन पुनः गर्द कैलन्हि — औ परफेश्वर बाबू! कनेक हमरो लोकनि बाह्य-भूमि दिशि जाएब। घरमे बैसबाक अभ्यास नहि अछि। बाहर मैदानक रास्ता देखा दियऽ। दिगम्बरोनाथ कैं खूब खुलासा नहि भेलैन्ह। फेर जैताह।

आब देखू तमाशा। अन्धकारमे हाथ कैं हाथ नहि सुझैत, पानि झहरैत, ठनका ठनकैत। और ई लोकनि बाहर जैताह!

अन्ततः नहिए मानैत गेलाह। चारू गोटे कान पर जनउ चढ़ा बिदा भऽ गेलाह। सदर फाटक बंद रहैक। अतएव पछुआड़क रस्तासँ हिनका लोकनि कैं हाता पार करा देलिऐन्ह और 'टार्च' हाथ मे दय देलिऐन्ह।

प्रतीक्षामे बैसल-बैसल साढ़े तीन बाजि गेल। परन्तु पाहुन लोकनिक पता नहि। थोड़ेक कालक उपरान्त दूर सँ आर्त्तनाद सुनबा मे आयल — औ परफेश्वर बाबू! हमरा लोकनि भुतिया गेलहुँ। अन्हारमे तारवला काँटमे ओझराएल छी। ई भुकभुक्की हमरा सभ बुते नहि बरैत अछि। कोन बाटे आउ?

अस्तु कोनो कोनो तरहें गजेन्द्र मोक्ष कैल गेल।

चारि बजे जे सुतलहुँ से पूरे सात बजे नींद टूटल। मन मे कहलहुँ पाहुन स
भिसरबी गाड़ीमे चढ़ि पुनपुन पहुँचि गेल हैताह। नीके भेल जे पिंडदानक यात्री सभ
पिंड छूटि गेल। नहि त चलय काल फेर हें-हें करय लगितथि त उचिती-मिनतीमे ए
घंटा लागि जाइत।

ई विचारैत जहिना नीचा उतरैत छी कि देखै छी जे भीमेन्द्रनाथ, गजेन्द्रनाथ
ब्रजेन्द्रनाथ ओ दिगम्बरनाथ, चारू गोटे नहाएल तथा सोन्हाएल, चानन-टोप कैने
कथुक प्रतीक्षामे तैयार बैसल छथि।

दलक सरदार हमरा देखैत बजलाह--हें-हें-हें-हें। हमरा लोकनि त भोरे वि
भऽ जैतहुँ। परन्तु बिनु अपनेसँ भेंट कैने हें-हें-हें-हें सूतलमे कोना उठबितहुँ! औ
आब त उदय भऽ गेलैक। बृहस्पति दिन दक्षिण मुँह जाएब कोना? की हौ गजेन्द्र

गजेन्द्रनाथ कहलथिन्ह — हँ, आब आइ त गया जैबा मे दिक्शूले पड़ि गे

अस्तु। भनसीया कैं बजा पठौलिऐक। हम अपने पथ्याहार करैत रही। अतए
ओ पुछलक — हिनका सभक हेतु की बनतैन्ह?

हम तावत किछु उत्तर दिऐक तावत पाहुन कहए लगलाह — हमरा ती
गोटाक त जे किने से घरे थिक। किन्तु हमर सरबेटा दिगम्बरनाथ हें-हें-हें-हें कि
सौजने भात कोना खैताह? हिनका लेल छनुआ सोहारी, अनोन तरकारी बना देबैन्ह
मेधुरस संग खा लेताह। हमरा लोकनिक त हें-हें-हें-हें घरे थिक। भोजन मे जे कि
से भात, दालि, तरकारी, घृत, दही, चीनी। बस, और की? हँ, हमरा संगमे एकट
जमीरी नेबो अछि से दूरि भेल जाइत अछि। तैं थोड़ेक माठो मंडा लेब। और बेसी
विन्यास करबाक कोन काज? हमरा लोकनि कि पाहुन छी? और ई कि घर थिकैक
तावत हिनका लोकनि कैं किछु जलखइ आनि देबैन्ह त आनि दिऔन्ह। की हौ बजेन्द्र

ब्रजेन्द्रनाथ लजाइत कहलथिन्ह — नहि, कोनो तेहन आवश्यक नहि। दस
मिनटक बादो अबै त कोनो हर्ज नहि।

पुत्रक एहि संकोचशीलतापर टिप्पणी करैत पिता बजलाह — हें-हें-हें-हें!
हमर बालक जे छथि से जे किने से बड़ लजकोटर छथि। एखन नेने बुझिऔन्ह। दाढ़ी
मोछ भेने की हैतैन्ह? हौ, तोहर त ई अपन घर छौह। माँगि कऽ खेबाक चाहियौह
और हिनका कि भगवतीक प्रसाद सँ कथूक कम्मी छैन्ह? की ओ परफेसर बाबू
दरमाहा कतेक भेटैत अछि? किछु बाइलिओ प्राप्ति त जे किने से अवश्ये भय जाइत
होएत। हें-हें-हें-हें!

तावत मक्खनवला पहुँचि गेल। जहिना एक गोली देबाक हेतु थार नीचाँ थैलक
कि पाहुन पुत्र कैं कहलथिन्ह — देखह, एहिठाम लेऽ एलिऔह तैं ने एहन भोग्य पदार्थ
देखै छह! ई नेनु कतय भेटितौह? एहिसँ दिमाग तर रहैत छैक। तों की बुझबहक?

ई कहि ओ थार कें अपना सुपुत्रक आगाँमे घुसका कऽ लय गेलाह। सुयोग्य पुत्र निर्विकार भावसँ सभटा माखनक गोली मिश्रीक गोला समेत हँसोथि कऽ उठा लेलन्हि और पिताक आज्ञा कैं परम धर्म मानि अपन दिमाग तर करय लगलाह।

हमरा आवश्यक कार्य सभ रहय। तैं झटपट तैयार भय दस बजे कालेज चल गेलहुँ।

तावत एम्हर पाहुन लोकनि भनसीयासँ घनिष्ठता स्थापित करय लगलाह — की नाम अछि? कतय घर? की मूल? कुजिलवार उल्लू? वाह! नीक लोक छी। कतेक दिनसँ एहि ठाम काज करैत छी? अहाँक शुपरडंट साहेब हमर खास सरोकारी छथि। हम लाख छट्ट-पट्ट कैल किन्तु आइ किन्हु जाय कहाँ देलन्हि? कहलन्हि जे भला कहू त? से कोना हैत? जावत अहाँ लोकनि जे किने से विन्यासपूर्वक भोजन नहि कय लेब तावत जाएब कोना? देखब, एक्को रती संकोच नहि करब। जे-जे खेबाक हो से भनसीया कैं कहबैन्ह। दही दूध दुनू खाएब। घृत पर्याप्त कऽ देबय कहबैन्ह। जौं कोनो वस्तुक त्रुटि रहतैन्ह त हम बिना 'जरिमाना' कैने नहि छोड़बैन्ह। की हौ बजेन्द! तोरो बहुत मानैत छथुन्ह। कहि गेल छथि हिनका आइ माछ अवश्य भेल तवैन्ह। की औ बाबू, एहि ठाम त धारक बड़्यौँ रोहु भेटैत हैतैक? कतेक दूर छैक? परफेसर बाबू त आब चारि बजेसँ पहिने नहिए औताह। बेचारे अगुताइमे केवल समतोले खा कऽ चल गेलाह। परंच हमरा लोकनि कैं कोन अगुताइ अछि? "बारह बाजी, एक बांजी, कैयो बाजी। अपन घर अछि। जखन हैत तखन खाएब। की हौ गजेन्द्र! तावत पहिने दिगम्बरनाथक हेतु छनुआ छानि दिऔन्ह।

एवं प्रकारें भनसीया कैं तेना पट्टी पढ़ौलथिन्ह जे सौंसे घर गमागम छनाछन होमय लागल।

अपन-अपन कर्म होइत छैक। हम त पथ्य खा कऽ अपना कार्य पर गेलहुँ और ई सभ चढ़लें कड़ाही सँ गरमागरम कचौड़ी और भफाएल हलुआपर हाथ फेरय लगलाह। भोजन करैत-करैत हिनका लोकनि कैं दू बाजि गेलैन्ह।

जखन चारि बजे हम कालेजसँ ऐलहुँ त देखैत छी जे चारू भोजन-मल्ल धामसँ तरबतर भेल, मेघनाद-कुम्भकर्ण जकाँ बाजी लगा फोंफ काटि रहल छथि। सम्पूर्ण घर छिन्न-भिन्न अवस्थामे देखि पड़ल। ड्राइंगरूममे मैल नूआ पसरल, आराम कुर्सीपर गजेन्द्रनाथक फाटल गंजी सुखाइत। लिखा-पढ़ीबला टेबुलपर ब्रजेन्द्रनाथक पितरिया लोटा। टाइपराइटर पर भीमेन्द्रनाथक पनही। आलमारीक सभ पुस्तक उकटल जकाँ बूझि पड़ल। उपरो गेलहुँ तँ वैह दशा। वस्तु-मात्र गजपट भेल। कमोड पर्यन्त खुजल। ओहिमे देखैत छी त थोड़ेक खटमिट्ठी राखल अछि!

रातुक उजगीक कारणे किछु ठेही जकाँ बूझि पड़ैत छल। तैं हम चुपचाप पड़ि रहलहुँ। जखन थोड़ेक काल पर नीचाँ उतरलहुँ त पाहुन ढेकरैत बजलाह — ईह! आइ अजीर्ण भोजन भेलैक। हें-हें-हें-हें! एना त सासुरो मे नहि खैने छलहुँ। माछ त अपूर्व

बनल छल। ब्रजेन्द्रनाथ कैं किछु बेशी खैना गेलैन्ह से अवकलक्क छथि।

ई कहि पाहुन पुनः डेकार कय पेटपर हाथ फेरैत मंत्र पढ़य लगलाह – आतापी भक्षितो येन वातापी च महाबलः। समुद्रः शोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु। .....हँ, ऊपर अपनेक हेतु थोड़ेक खटमिट्ठी राखि देलहुँ अछि। कहलहुँ जे खाली हाथ परफेश्वर बाबूक ओहिठाम कोना जायब? ई खटमिट्ठी ब्रजेन्द्रक माय अपनहि हाथसँ बनौने छथि।

तावत गजेन्द्रनाथ कहय ऐलथिन्ह जे ब्रजेन्द्र कैं रद्द भऽ रहलैन्ह अछि।

नीचा कोठरी मे जा कऽ देखैत छी त ब्रजेन्द्रनाथ सफरीपर बैसल अखबारक फाइलपर बोकरि रहल छथि। ई देखि गजेन्द्रनाथ हुनक पीठ ससारक हेतु बैसय लगलथिन्ह, किन्तु हुनक भार पड़ैत देरी सफरी चर्र दऽ बीचे सँ फाटि गेल और दुहू पित्ती-भातिज पृथ्वीपर आबि गेलाह। तावत दिगम्बरनाथ एम्हर-ओम्हर ताकि हमर टेनिसबला रैकेट उतारि लेलन्हि और वमनयुक्त कागज ओहि पर उठा कऽ बाहर सीढ़ी पर फेंकि ऐलाह।

हम देखल जे सम्पूर्ण मकान और सामान पर पाहुन लोकनिक तेहन स्वयंसिद्ध अधिकार जमि गेल छैन्ह जे प्रतिवादक चेष्टा करब व्यर्थ थिक। अगत्या चुपचाप लौन दिशि टहलय विदा भऽ गेलहुँ।

एक-डेढ़ घंटाक उपरान्त जखन फिरलहुँ त पाहुन बजलाह – गजेन्द्रक देह किछु गर्म लगैत छैन्ह। हिनका 'थर्मामोटर' मङा दिऔन्ह।

गजेन्द्रनाथ कैं थर्मामीटर लगाबए हेतु देल गैलैन्ह। किन्तु ओ ततेक जोरसँ काँख दबौलन्हि जे सीसा फूटि कऽ पारा छिटकि गेलैक। पाहुन बजलाह – परफेश्वर बाबू, थर्मामोटर त फूटि गेल। ई कच्चा शीशा छल की?

होस्टलक बढ़िया थर्मामीटर। हम की बाजू? तावत पाहुन कहय लगलाह – ज्वर नहि छैन्ह। कनेक हरारति छैन्ह। राति मे दूध साबुजदाना खैताह। हम त जे भानस हैतैक ताहीमे भोजन करब, केवल दिगम्बरनाथ फेर रातिओ मे छनुए खैताह। और ब्रजेन्द्र कैं वमन भेल छलैन्ह, एखन किछु फले-फलाहार कऽ लेथि से हमर विचार। की हौ ब्रजेन्द्र!

ई कहि पाहुन डाँड़सँ बाकू बाहर कैलन्हि और टेबुलपर जे शोभाक हेतु माटिक रंगीन सेव राखल छलैक से उठा ब्रजेन्दनाथ कैं कतरक हेतु दऽ देलथिन्ह। जा हम मना करिऐन्ह-करिऐन्ह ता ब्रजेन्द्रनाथ ओकरा दू फाँक कऽ देलन्हि।

पाहुन बजलाह – ई त नकली स्यौ अछि। हे-हे-हे-हे! असली स्यौ बजारसँ मँगा दियौन्ह। और गजेन्द्रक हेतु साबुजदाना चाहिऐन्ह। की हौ गजेन्द्र। तीन पाव साबुजदानामे त भऽ जैतौह?

रातिमे पुनः हिनका लोकनिक भोजन-पथ्यादिक व्यवस्था करैत-करैत बारह बाजि गेल। जखन हम सूतय गेलहुँ तखन पाहुन कहलन्हि – हमरा लोकनि रातिगरे

विदा भऽ जाएब, परन्तु ओहि काल त अन्हार रहतैक और फाटक सेहो बंदे रहतैक। तैं हमरा लोकनिक जैबाक बन्दोबस्त होएबाक चाही।

हम कहलिऐन्ह – अहाँ लोकनि पछुआरक रास्ता दने चल जाएब। लालटेन और सलाइ लय लियऽ। ओहि समय लेत्ति कऽ काज चलाएब। और रामटहल कैं उठा देबैक जे फेर भीतरसँ केवाड़ बंद कऽ लेत।

ई कहि हम हुनका लालटेन और सलाइ देखा देलिऐन्ह। परन्तु तथापि ओ ठाढ़े रहलाह। हम कहलिऐन्ह – और किछु चाही की?

पाहुन विचित्र प्रकारक भावभंगी देखबैत गोंङिआइत बजलाह – हे-हें-हे-हे! हमरा लोकनि कैं हें-हें रुपैया-कैंचा किछु घटैत अछि। दिगम्बरनाथ कैं हम कहलिऐन्ह जे हौ, जखन परफेश्वरे बाबूक ओहि ठाम चलै छह त रुपैया-कैंचा ओ भला घटय देथुन्ह? हें-हें-हें-हें!

हमरा किछु तारतम्यमे पड़ल देखि ओ बजलाह – हें-हें! अपने दिगम्बर बाबू कैं नहि चिन्हैत छिऐन्ह। ई जे किने से अपना गामक जेठरैयत थिकाह। साल मे नब्बे टाका लाट दाखिल करैत छथि। असामी सभ डरें धोती गे लधी करैत छैन्ह। गाम जा कऽ जयवारी करताह त सात मन चूड़ा-दही लगतैन्ह। एहि बेर क्षेत्रक मेलामे हाथी कीनय औताह। तखन अपनेक टाका अवश्य नेने औताह।

हम किछु सशंकित होइत पुछलिऐन्ह – की? कतबा घटैत छैन्ह?

पाहुन उत्तर देलन्हि – हें-हें-हें-हें! पिण्डदानमे त खर्चक कोनो संख्ये नहि। जतबा लगा सकी। तखन पचास टा टाका एखन दय देल जाउन्ह जे तत्काल कार्य चलतैन्ह। ओहिठाम गेला उत्तर बूझल जैतैक। यदि पंडाक पैरपुजाइ मे किछु घटतैन्ह त ओहिठाम मुंसिक साहेबसँ देया देबैन्ह। एक सै, दू सै, जतेक चाहताह। ओ अपन सरोकारी व्यक्ति छथि। जे कहबैन्ह, से देबहि पड़तैन्ह। ई कि कोनो बात छैक? हे-हें-हे-हें!

हम पाँच टा दसटकही नोट बाहर कय हुनका हाथमे देलिऐन्ह। पाहुन डाँड़मे खोंसैत बजलाह – ई टाका अपने कैं कार्त्तिकी पूर्णिमा धरि अवश्य भेटि जायत। जखन ई हाथी लेबाक हेतु सोनपुर औताह त पहिने बाँकेपुर आबि अपनेक रुपैया दऽ जैताह। की औ दिगम्बर बाबू! पहिने हिनके टाका दऽ देबैन्ह। अवश्य, अवश्य। पाछाँ कऽ हाथी मे कतेक लागत तकर कोन ठेकान? हें-हें-हे-हें! बेश, त अपने आब सूतू। गयाजीसँ फीरब त अपनेसँ भेंट करैत जाएब। आब कि हमरा लोकनि अपने कैं छोड़ब? हँ, एक बेर हमरो ओहिठाम जे किने से अपने कैं कृपा करय पड़त। ब्रजेन्द्रक माय शपथ दऽ कऽ कहने छथि। यदि अग्रहणमे ऐबाक कष्ट करी त हम अपनेक वास्ते कनकजीरक नवका चूड़ा कुटबा कऽ रखने रही। हमरा लोकनि त गरीब छी। की सेवा करब? परन्तु गरीबो कैं त देखहि बूझय। बेश, आब अपने सूतूगऽ।

एवं प्रकार उचिती-मिनती कैलाक अनन्तर पाहुन लोकनि नीचाँ गेलाह।

भोर भेलापर जखन नींद टूटल त पछुआड़क केवाड़ ओहिना फूजल देखलिऐक। नीचाँ जा कऽ देखैत छी त पाहुन लोकनि अपन बोरिया-बधना तथा बड़का शतरंजी सहित, दक्षिणा मे लालटेन और सलाइ नेने, प्रस्थान कऽ गेल छथि! कामनरूनक बड़का शतरंजीक दाम हमरा अपना दिशि सँ दाखिल करय पड़ल।

पाछाँ कऽ भनसीयासँ ज्ञात भेल जे पाहुन ओकरोसँ पाँच टाका ई कहि कऽ पैंच लऽ लेलथिन्ह जे शुपरडंट बाबू हमर खदुका छथि। गयाजीसँ अबैत छी त हुनका सँ वसूल कय अहाँ कें दय देब!

आइ सात वर्षसँ ऊपर भेल। तहिया सँ पुनः कहियो ओहि पाहुन लोकनिक दर्शन नहि भेल। केवल एकमात्र स्मारक हुनका लोकनिक रहि गेल अछि जे धोखासँ हमरे ओहिठाम छूटि गेलैन्ह। ओ थिकैन्ह भीमेन्द्रनाथक थिपी लागल पनही। भरतजीक खड़ाम जकाँ यैह मात्र आश्वासन हमरा हेतु छोड़ि गेल छथि।

तहियाँ सँ जँ कोनो पाहुन देवताक नाम सुनैत छिऐन्ह त पहिने मनहिमन ई स्तोत्र पढ़ि प्रणाम कऽ लैत छिऐन्ह --

अनिवार्य! अनाहूत! अथिकित्स्य! अनिश्चित!
अव्ययोऽपि महाभाग धन्योऽसि विकटातिथिः।।



आदर्श कुटुम्ब

एक बेरि लहेरियासरायमे कपड़ाक दोकान पर जे दृश्य देखल से एखनो धरि सिनेमाक दृश्य जकाँ आँखिमे नाचि रहल अछि।

हम कुर्ताक कपड़ा लैत रही। तावत देखैत छी जे तीन व्यक्ति उच्च स्वरसँ बजैत, दोकानक सोझाँ आबि, धक्कमक्क होइत ठाढ़ भऽ गेलाह।

पहिने तीनू गोटाक हुलिया सुनि लियऽ। एक व्यक्ति जोलहउ धोती पर मोटिया बालाबर्ज पहिरने, पैरमे चमरउ पनही, हाथ मे बटुआ नेने। अवस्था पचासक लगभग। दोसर गोटे तारक गाछ जकाँ लम्बा, नंग-धड़ंग, कान्हपर एक मैल अँगपोछा, लग्गा सन लाठी नेने, तमाकू चुनबैत। अवस्था करीब पैंतीस। तेसर व्यक्ति कुंडाबोर गुलाबी धोती सीटि कय पहिरने, माथपर ओड़हुलक फूल सन लाल पाग, फूलदार रेशमी चादरि ओढ़ने। अवस्था करीब बीस।

लाल पागधारी जमाय थिकाह, ई बुझबा मे त कोनो भाँगठे नहि। कनेक काल मे इहो बुझना गेल जे बटुआधारी वृद्ध ससुर थिकथिन्ह और लट्ठधारी युवक हुनक भातिज। जमाय विदा होइथिन्ह तैं अपने पसिन्दसँ कपड़ा कीनक हेतु संग लागल आएल छथिन्ह।

आब आगाँक गप्प सुनू!

जमाय कें धड़धड़ाएल दोकान दिशि बढ़ैत देखि ससुर महोदय भातिज कें कहलथिन्ह — हौ, ओन्हर अपने मने हनहनाइत कहाँ बढ़ल जाइत छथुन्ह? जनिका खेबा नहि से अगिले माँगि! ओहन पैघ दोकानमे किनबाक हमर सामर्थ्य नहि अछि। कहून, आगाँ कोनो छोट-छीन दोकानमे जे सक्क लागत से कीनि देबैन्ह।

ई कहि ससुर महाशय आगाँ बढ़बाक उपक्रम कैलन्हि। किन्तु जमायो जोड़म-जोड़ रहथिन्ह। ओ अड़ि गेलथिन्ह जे बस, हम कपड़ा पसिन्द करबैन्ह त एही दोकानमे, नहि तँ एही ठाम सँ घुरि जेबैन्ह। जँ कीनक सक्क नहि छलैन्ह त हमरा चारि कोस पैदल हरान किऐक कैलन्हि?

ससुर जमायमे मुँहाबज्जी नहि छलैन्ह। तैं दुहू गोटा मध्यस्थ व्यक्ति (अजब लाल) कें सम्बोधन कय अपन-अपन उद्गार प्रकट करय लगलाह।

ससुर कहलथिन्ह — हम किऐक हरान करबैन्ह? अपने दौड़ल ऐलाह! परन्तु ऐने की? जतबा हेबाक रैह हैतैन्ह। चारि कट्ठा भरना राखि कऽ हिनका एक मास

खोआओल अछि। आब आठ कट्ठा केवाला कऽ कऽ हिनका लेल 'फोशाक' बनबिऔन्ह त हमर धीया-पुता कतय जाएत?

एहि पर जमाय रिड़िया कऽ स्टेशन दिशि बिदा भेलाह जे बेश, तखन अपन कन्या कैं राखयु। हम वैह बिदा भेलिऐन्ह।

आब सभ केओ अपन-अपन काज छोड़ि वैह तमाशा देखय लागल।

नंग-धड़ंग सार राम बहिनोयक पाछाँ दौड़लाह और हुनकासँ पछड़ा-पछड़ी करैत कोनो तरहें खिचैत-तिरैत लऽ ऐलथिन्ह।

अन्त मे जमायेक जिद रहलैन्ह।

ससुर कहलथिन्ह — जखन ऊखरि मे माथ देल त मूसरक चोट सहियारहि पड़त। मुर्दाक देह पर जेहने नौ मन तेहने एक मन और। कहून, कोन कपड़ा पसन्द करैत छथुन्ह? सेठजी, एक टा कम दामक गंजी बहार कऽ दिऔन्ह। हम गरीब आदमी छी।

ता जमाय चट दऽ कहि उठलथिन्ह - सबसे बेशी दाम की गंजी निकालिये — रेशमी, जालीदार।

सेठजीक व्यापारिक बुद्धि ओहू काल संग नहि छोड़लकैन्ह। ओ जमायक पक्ष ग्रहण करैत बजलाह — आइये, बाबू साहब, एक-से-एक बढ़ियाँ जालीदार दिखाऊँ। फैन्सी, न्यू डिजाइन, सिल्क, मरसिराइज्ड।

अंग्रेजीमे गिटपिट सुनि लुट्टी झा कैं बुझना गेलैन्ह जे ई माड़वाड़ी हमरा जमाय सँ मिलि हमरा नीक जकाँ मूड़ऽ चाहैत अछि। बजलाह — सेठ जी, रुपैया-कैंचा हमरे संग अछि और हिसाबे सँ अछि। और बहुतो वस्तु गुदड़ी बाजारमे कीनक अछि, हिनके बिदा करक खातिर। हम देहाती आदमी छी। बेशी लफलंफा नहि जनैत छी। गंजी जेहन सभ पहिरैत अछि, तेहने एकटा मामूली सन बहार कऽ दियौन्ह जे सभसँ कम दामक हो।

सेठजी वणिक बुद्धिक परिचय दैत कहलथिन्ह — कम दाम की गंजी हमारे यहाँ नहीं मिलेगी। देखिये, यह सब चीज हमारे पास है।

ई कहि सेठजी रंग-विरंगक बेशकीमती गंजी जमायक आगाँमे पसारि देलथिन्ह। जमाय कैं ओहिमे सभसँ बेशी चटकदार जे बूझि पड़लैन्ह से उठा लेलन्हि।

ससुर महोदय जान अवधारि कऽ पुछलथिन्ह — सेठ जी, एकर दाम कतेक?

सेठजी कहलथिन्ह — कुछ नहीं। अभी और कपड़े तो इनको पसन्द करने दीजिए। पीछे एक दफा कुल जोड़ देंगे। कमीज का कपड़ा दिखलाऊँ, बाबू शाब?

जमाय त फुलि कऽ कुप्पा भऽ गेलाह। ओम्हर ससुरक प्राण कण्ठगत होमय लगलैन्ह जे केहन भारी संकटमे आबि कऽ फँसि गेलहुँ।

तावत सेठ जी जमाय कैं कहय लगलथिन्ह — देखिये, बाबू साहब! क्रेप, ट्वीड पौपलिन, चैक, सेलूला। पसन्द कीजिये।

ई कहि हुनका आगाँ दस-बारह तरहक डिजाइन पसारि देलकैन्ह। आब जमाय अवग्रहमे पड़ि गेलाह। कोन लियऽ, कोन छोड़ू! ओ सब कैं उठा-उठा तजबीज करय लगलाह। कोनो नापसंद नहि होइन्ह।

ई देखि सेठजी कहलथिन्ह — बाबू साहब, कहिये तो सब में से एक-एक कमीज का कपड़ा फाड़ दूँ।

ई सुनैत ससुरक देहमे आगि लागि गेलैन्ह। सेठ कैं डाँटि कऽ कहलथिन्ह — सेठजी, अहाँ बेशी लुबलुब नहि करू। अहाँ चढ़बैत छिऐन्ह से हम बुझैत छी। दाम देबय पड़त हमरा। तखन आग्रह करऽ बाला अहाँ के? कनेक अपना दिससँ बनबा दितिऐन्ह तखन ने बुझितहुँ। और-और लोक कैं जेहन मामूली कपड़ा देखबैत छिऐक तेहने हिनको किऐक ने देखबैत छिऐन्ह? ओ सभ समेटू। जेहन हमर बालाबर्ज अछि तेहन कपड़ा बहार करू।

ई सुनतहि जमाय खिसिया कऽ आगाँबला कपड़ा सभ कैं ममोड़ि-धमोड़ि कऽ फेंकय लगलाह।

ई देखि सेठजी बजलाह — हाँ-हाँ, ए महाराज! यह क्या करते हो? कपड़ा हमारा है। ससुर-दामाद में झगड़ा है। हमारा माल क्यों नुकसान करते हो?

पुनः ससुर दिशि सरोष दृष्टि सँ ताकि कहलथिन्ह — हमारे यहाँ घटिया माल नहीं मिलेगा। मोटिया लेना हो तो किसी जुलाहे के यहाँ जाइये।

ससुर त चाहिते रहथि। चट उठि विदा भेलाह। परन्तु जमाय भारी-भरकम बनि, मुँह फुलौने बैसले रहलथिन्ह। सार कैं कहलथिन्ह — एना बेइज्जति करबाक छलैन्ह त हमरा अनलन्हि किऐक?

अजबलाल चिचिया कऽ गर्द कैलथिन्ह — हौ काका, ई नहि मानथुन्ह। एही दोकान मे लेथुन्ह।

लुट्टी झा सभ टा क्रोध हुनके पर उतारैत जवाब देलथिन्ह — तों त गदहा छह। पहिनहि कहलियौह जे हम अपने नहेरियासरायसँ किनने-बेसाहने आएब, त तोंही पैर धीचय लगलह जे 'ओझो चलताह, ओझो चलताह।' आब बूझह!

अजबलाल अपना पर दोषारोपण होइत देखि बजलाह — हम कि अपना मन सँ कहने रही? वैह उकठा कऽ जान मारि देलन्हि जे हमहूँ चलब, अपने पसन्दसँ कीनब। तखन हमरा की कहै छी?

लुट्टी झा कहलथिन्ह — बेश, नेने ऐलहुन त आब तोंही किना दहुन। हम जाइत छी।

ई कहि लुट्टी झा लग्गा सन-सन डेग दैत गुदड़ी बाजार दिशि बढ़लाह। पुनः भातिज सन हुनका पाछाँ छुटलाह और लपकि कऽ कोनो तरहें हुनका भरि पाँज धैने दोकानपर नेने ऐलथिन्ह।

आब ससुर महाशय मौन धारण कैलन्हि। दोकानक एक कात मे मम मारने

सांख्यक पुरुष जकाँ केवल द्रष्टा बनल देखैत रहलाह।

जमाय देखलन्हि जे पैह मौका अछि। ससुरक एहि उदासीनतासँ लाभ नहि उठौलहुँ त किछु नहि। अतएव झट दऽ कमीजक कपड़ा फड़बाय कहलथिन्ह - अब कोट का बढ़ियाँ कपड़ा दिखलाइए।

पित्ती-भातिजमे आँखिए-आँखि इशारा भेल। भातिज आँखिसँ कहलथिन्ह — आब कोन उपाय करबह, हौ काका?

पित्ती उपेक्षासूचक मुँह बनौलन्हि। एहन सन क्रम जे जे होइ छैक से होमय दहीक। हमरा कोनो हर्ष विषाद नहि! ओ गीताक अनासक्त योगी जकाँ 'लाभालाभौ जयाजयौ' दुहूमे एक समान अविचलित रहबाक मुद्रा बनौलन्हि।

तावत् एम्कर सर्ज, फलानेन, पशमीना, काश्मीरा आदिक पथार लागि गेल। कोन बढ़ियाँ, कोन घटिया, ई विवेचना करबा मे जमाय असमर्थ भऽ गेलाह। अतएव सेठजी कैं कहलथिन्ह — इसमें सबसे ज्यादा दाम का जो हो सो दे दीजिये।

ससुर महोदय ओही तरहें जान अरोपि कऽ बैसल रहलाह जेना लोक धाव चिरावय काल बैसैत अछि।

सेठ पुछलकैन्ह — किस स्टाइल का कोट बनेगा? जैसा कहिये दर्जी से नपवा दे।

जामाता महोदय कैं जीवन मे कोट बनबैबाक ई प्रथमे अवसर छलैन्ह। अतएव ओ तारतम्य मे पड़ि गेलाह जे की कहियौक।

दोकानदार पुनः पुछलकैन्ह — कहिये न इंगलिश कोट बनेगा या पारसी?

आब ससुरजी कैं नहि रहल भेलैन्ह। ओ मौन-भंग करैत बुमकार छोड़लन्हि— आब बिनु बाजल नहि रहल जाइत अछि। हिनका कुलखूँटमे केओ दोसरो कहियो इंगलिश कोट बनबौलथैन्ह अछि कि पैह आइ पहिले पहिल बनबौताह? बाप पितामह मिर्जइ पहिरैं छथिन्ह और ई फारसी कोट सियौताह। बापक गर घोंघा, पूतक गर रुद्राक्ष! पढ़ल-लिखल साढ़े बाइस, कोट धरि भेल चाहय अङरेजीए। साहेबवला कोट पहिरि कऽ गाममे महीस चरौताहगऽ। अपना गामसँ आयल छलाह से कोन कोट पहिरि कऽ? धन दरभंगा जे दोहरी अंगा! एखन जे लाले लाल छथि से ककर देल?

एतबा सुनैत देरी जमाय बिढ़नी जकाँ नाचय लगलाह। ओ लाल पाग फेंकैत लाल धोतियो खोलि कऽ फेंकबाक हेतु उद्यत भऽ गेलाह और तमकि कऽ पुनः स्टेशन दिशि बिदा भेलाह।

पुनः अजबलाल हुनका पाछाँ छुटलाह। ससुर महोदय चिकड़ि कऽ बाजय लगलाह — जाय दहुन, पड़ाय दहुन। हम सन्तोष कैल। ई त घसकट्टीएक दिनसँ पड़ाइत छथि। आब हम कहाँ धरि डेराउ? जैखन एहन जमाय कैलहुँ तैखन ने कर्म फूटि गेल। जैं एहन विसखोपड़ा छथि तैं ने दोसर फेरि देने रहैन्ह। तखन हम जा कऽ लऽ अनलिऐन्ह। तकरे ई आब भलमनसाहत चुका रहल छथि। कोन पापसँ एहन लंठ कुटुम्ब भेल से नहि जानि। ई बड़द लेब त ओ महीस लेब! साइकिल लेब, हरमुनिया

लेब, गरामोफोन लेब, सब शौख सासुरमे आबि कय पुरौताह! जेना हिनकर पुरुखाक हम किछु धारने रहिऐन्ह। जहिया ई बिदा भऽ कऽ जैताह तहिया बुझब जे भारी ग्रह टरल।

तावत अजबलाल बहिनोय कैं थैने पहुँचलाह। बजलाह — कका, अहाँ किछु जुनि बाजू। हिनका जेहन मन अबैन्ह तेहने कपड़ा दर्जी सँ नपबा दिऔन्ह।

आब दर्जी फीता लऽ कऽ पहुँचल। पुछलकैन्ह — कहाँ तक नीचे रहेगा?

ससुर सँ पुनः नहि रहि भेलैन्ह। बजलाह — इह! हमरो लोकनिक विवाह दान भेल रहय। लेकिन कहाँ एतेक लष्टम-खष्टम भेल? तर मे गंजी, ताहि पर सँ कमीज, तकरो ऊपर सँ कोट! ई तीन-तीन टा पहिर कऽ चलताह से खौंत नहि फुकतैन्ह? हमरा त देखिए कऽ खौंत फूकि दैत अछि।

जमाय दर्जी कैं थकमकाइत देखि कहलथिन्ह — जहाँ तक नीचे जा सके जाने दो।

ससुर दर्जीक हाथ सँ फीता लऽ कऽ कहलथिन्ह — से नहि हैतैन्ह। गंजी अपना पसंद सँ लेलन्हि। कमीजो कोट मे हमर युक्ति नहि चलल। आब नापो मे पैह अपन टेक रखताह से कोना हैतैन्ह? एको टा बात त हमर रहय। जाहि मे कम कपड़ा लगैन्ह तेना कऽ नापि दहुन। हम बहुत सहलिऐन्ह, आब नहि सहबैन्ह। ई चाहताह जे घुट्ठी भरि सोहरैत रहैन्ह से कोना हैतैन्ह? डाँड़ धरि नापि लहुन।

दर्जी जहिना जमायक डाँड़ धैलकैन्ह कि ओ ओकर फीता छीनि कऽ ससुरक कपार पर फेंकलैन्हि। ससुरक भौंहमे लगलैन्ह। आँखि कनेके सँ बाँचि गेलैन्ह।

आब सभ केओ जमाय कैं दुर-छी करय लगलैन्ह। ओ भीजल बिलाइ जकाँ सहमि गेलाह। ई सुयोग देखि ससुर जी दर्जी कैं डँटैत कहलथिन्ह — तकै छह की? डाँड़ धरि नापि लहुन।

आब पुनः जमाय कैं आपत्ति करबाक साहस नहि भेलैन्ह।

कपड़ा फड़ौला उत्तर ससुर महोदय जी-जान अवधारि कऽ दोकानदार कैं कहलथिन्ह - सेठजी, आब झटपट अपन दाम जोड़ू।

वृद्ध महोदय अपना मन मे हिसाब कैने रहथि — एक टका गंजी, दू टका कमीज, कोट बहुत त चारि टका, ताहि मे एक टका मारवाड़ी नफा करत। सभ मिला कऽ आठ टका लेत। ई सोचि ओ एक दसटकही नोट दोकानदारक हाथ मे दैत कहलथिन्ह — लियऽ अपन दाम काटि कऽ फिरता दियऽ।

परन्तु बुड़्ढीहा पर एकाएक वज्रपात भऽ गेलैन्ह जखन सेठ कहलकैन्ह — पचास रुपया और लाइये। देखिये तीन रुपया गंजी, कमीज का कपड़ा नौ रुपया, कोट का कपड़ा अड़तालीस। कुल जोड़ साठ होता है। आपके दामाद साहब ने खुद पसन्द कर कपड़ा कटवाया है। अब वापस नहीं हो सकता। निकालिये टेंट से रुपया।

आब ससुर अपन करेज पिटैत चीत्कार प्रारम्भ कैलन्हि — डकूबा रौ डकूबा! डाका देलैं रौ! हम नहि बुझल जे तों फाँसी दैबे रौ!

ससुर महोदय काटल गाछ जकाँ तलमला कऽ खसि पड़लाह। आँखि उनटि गेलैन्ह। दाँती लागि गेलैन्ह।

आब दोसरे ताल लागल। अजबलाल भोकाड़ पाड़ि कऽ कानय लगलाह — हौ काका! हौ काका! कतय चलि गेलाह हौ काका?

दोकान पर भीड़ लागि गेल। सेठ रान विचारलन्हि जे कदाचित् ई बूढ़ा मरि गेल त भारी बखेड़ा मे फँसि जायब। एखने पुलिस आबि कऽ घेरि लेत। अतएव ओ अपना लाभक आशा परित्याग कय अजबलाल कैं कहलथिन्ह — अच्छा, दुकान से भीड़ हटाइये। इनको फौरन यहाँ से उठाकर ले जाइये और मैदान में हवा खिलाइये।

पुनः जमाय कैं गंजन करैत बजलैन्ह — छिः छिः! गाँठ में दाम नहीं, बाँकीपुर की सैर! चले थे सूट बनबाने! शर्म नहीं आती। तुमको तो चुल्लू-भर पानी में डूब मरना चाहिए। कपड़ा कटवाकर नुकसान कर दिया।

जमायक फज्झति सुनि जखन ससुर कैं विश्वास भऽ गेलैन्ह जे आब सेठ नोकसान सहय लेल तैयार भऽ गेल अछि तखन ओ कनछिया कऽ आँखि तकलन्हि।

अजबलाल हुनका भरसाहा दऽ कऽ बैसौलथिन्ह। जमाय मुँह बिधुआ कऽ बैसले रहलाह।

आब हमरो नहि रहि भेल। जमाय कैं पुछलिऐन्ह — अहाँक की सभ फरमाइश अछि?

जमाय रटाओल सुग्गा जकाँ एके तार मे सुना गेलाह — कोट, कमीज, गंजी। जूता, पैताबा, गार्टर। छड़ी, छाता, टार्च। औंठी, घड़ी, फाउन्टेनपेन। साइकिल, हारमोनियम।

तदनन्तर ससुर महोदयसँ पुछलिऐन्ह — अहाँ हिनका की सभ करार कैने छिऐन्ह?

ससुर कलपि कऽ बजलाह — औ बाबू, हम किछु करार नहि कैने छिऐन्ह। बजार देखबाक सौख भेलैन्ह, तैं संग लागल ऐलाह। हमहूँ विचारल जे बेश, अपना पैरें चलताह, हमरा की लागत?

हम पुनः प्रश्न कैलिऐन्हि — अहाँक संगमे कतेक रुपया अछि?

एहि प्रश्न सँ वृद्ध महोदय किछु असमंजस मे पड़ि गेलाह। पुनः बजलाह — औ धर्मतः पुछैत छी तँ चालिस टाका लऽ कऽ हम चललहुँ जे एहि मे जे भऽ सकतैन्ह से कीनि देबैन्ह।

ई कहि ओ धोतीक अड़ कऽ चारि टा दसटकही नोट बाहर कऽ देखौलन्हि।

जमाय चट्ट दऽ कहि उठलथिन्ह — ई फूसि बजैत छथि। और नोट बटुआ मे चोरा कऽ रखने छथि। नहि त फोलि कऽ देखाबथु।

वृद्ध महोदय हमरा हाथ मे बटुआ दैत बजलाह — देखि लियऽ औ बाबू! अहाँ तेहल्ला छी। देखू जे एहि मे सरौता, सुपारी ओर चुनौटी-तमाकू छोड़ि और किछु अछि? झाड़ि कऽ देखा दिऔन्ह।

सुपात्र जमाय कहि उठलथिन्ह — तखन डाँड़मे खोंसि कऽ रखने हैताह।

एहि पर लुट्टी झा खिसिया कऽ डाँड़ सँ एक पचटकही नोट बाहर करैत हमरा कहलन्हि — लियऽ, इहो देखि लियऽ। ई हम फराक कऽ लाएल छलहुँ जे बेर-कुबेर मे घटत त काज आओत। सेहो हिनका आँखि मे गड़ि गेलैन्ह। एहि सँ काबिल जौं एको कैंचा हमरा संग मे हो त देह नहि काज आबय।

पकठोसल जमाय कहलथिन्ह — तखन ई पैंतालीस टाका हमरा दऽ देथु और बाँकी बस्तुक दाम जोड़ि कऽ हैंडनोट बना देथु।

परन्तु आब सभ लोक बिगड़ि गेलैन्ह। कहलयैन्ह — नहि, से नहि भऽ सकै अछि। पैंतालिस टाका मे जे लेबाक हो से पसन्द करू। एहि मे हारमोनियम लियऽ अथवा साइकिल लियऽ अथवा कपड़ा बनबाउ।

जमाय असमंजस मे पड़ि गेलाह। किछु काल धरि सोचि कऽ बजलाह — बेस, त साइकिले कीनि देथु।

ई कहि ओ उठब लगलाह कि डनकनिया सेठ धैलक हुनक गट्टा। कहलकैन्ह — उधर कहाँ चले महाराज? कोट का कपड़ा जो कटवाया है सो लेते जाइये।

ई कहि ओ पैंतालिस टाका लऽ लेलकैन्ह और बाकी तीन टाकाक हेतु जमाय कैं गसिया कऽ धैलकैन्ह।

आब जमाय कठिनता मे पड़ि गेलाह। गुप्त रूप सँ दू टा टाका धोतीक खूँट मे बान्हल रहैन्ह। से दऽ कोनहुना पिंड छोड़ौलन्हि और हारल जुआरी जकाँ ससुरक पाछाँ बिदा भेलाह। बीच मे अजबलाल तमाकू चुनबैत कोटक कपड़ा काँख तर दबौने बिदा भेलथिन्ह।

हम फराके सँ ओहि मंडली कैं प्रणाम करैत प्रार्थना कैल जे एहन ससुर और एहन जमाय सँ भगवान बचौने रहथि। किऐक त —

असाध्यः क्षुद्रजामाता असाध्यः श्वसुरः शठः।
उभयोर्यदि संयोगः दर्शकानां पराभवः।।



साझी आश्रम

वर्तुहारीक प्रसंग मे बहुतो तरहक अनुभव लोक कैं प्राप्त भऽ जाइत छैक। एक ठाम हमरो तेहन भयंकर सत्कार भेल जे स्मरण कय औखन देह सिहरि उठैत अछि।

घटकराज सोनमनि चौधरी कहलन्हि — अमुक गाम मे एकटा बड़ सुन्दर कथा हमरा नजरि मे अबैत अछि। ओ उच्च वंशक छथि, प्रायशः पंजीचन्द्रे मे सरोकार करैत छथि। घरो बेश सुखितगर। चास-वास, हर-बरद, कथूक कम्मी नहि। अस्सी बीघाक चकला त घरे लग छैन्ह, थड़िंयाँ लाखराज जमीन। पाँच बीघा कलम। कोल्हुआड़ो चलैत छैन्ह। अपना पोखरि मे मछहर होइत छन्हि। गुजराती महिष रखने छथि। बुझू जे कन्या कैं दूध, दही, माछ कथुक कम्मी नहि रहतैक। समाङो सभ अपूर्व संस्कारी। ओहि घर मे कथा भऽ जाय त कन्याक भाग्य बुझू। हमरा दूरक सम्बन्ध मे मसियौत हैताह। तैं ई कथा पटि जाय से संभव।

घटकराज महोदय हुनक सुन्दर गृहस्थीक तेहन आकर्षक वर्णन कैलन्हि जे हमरा हुनका संग लय ओहि गाम जाही पड़ल।

नीक दिन ताकि घटकराजक संग-ओहि ठामक हेतु प्रस्थान कैलहुँ। तीन-चारि कोस त एक्का पर गेलहुँ। तदुपरान्त तेहन विकट रास्ता भेटल जे एकमान जवाब दऽ देलक। घटकराज कहलन्हि — आब एहि ठाम सँ लगातार थाल-कीच भेटैत जाएत।

अगत्या ओहि ठाम सँ पैदल जाय पड़ल। करीब डेढ़ घंटाक उपरान्त गामक सिमान पर पहुँचलहुँ। परन्तु यात्रा नीक छल। किऐक त सिमाने पर घरबैया सँ भेंट भय गेल। वृद्ध भगीरथ झा घटकराज कैं चीन्हि, भरि पाँज धऽ लेलथिन्ह! कहलथिन्ह — अहोभाग्य! आइ एतेक दिन पर दर्शन भेल। कहु, कोना-कोना मन पड़ल?

घटकराज हमर परिचय दैत कहलथिन्ह — ई एकटा बालक जोहैत छथि।

वृद्ध महोदय कान सँ किछु ऊँच सुनैत छलाह। पुछलथिन्ह — की? मालदह आम जोहैत छथि? ओ कलम त खट्टिकक हाथे बिका गेलैक। आब बिज्जूक गाछी रहि गेल अछि। से जौं बधुआ आम लेबक होइन्ह त...

घटकराज जोर सँ सुना-सुना कऽ कहय लगलथिन्ह — ई वर्तुहार भऽ कऽ आएल छथि।

ई सुनतहि वृद्ध महोदयक मुद्रा बदलि गेलैन्ह। ओ बजलाह — अहा! तखन चलथु घर पर। हमरा घर मे और सभ समाङक त विवाह-दान भेल छैन्ह। केवल एकटा भातिज वेंकटेश्वर बाबू कुमार छथि। मोछक पम्ह चललैन्ह अछि। लघुकौमुदी

पढ़ैत छथि। बालकक पिता स्वर्गीय छथिन्ह। यदि हुनका माइक विचार भऽ जैतैन्ह त बालक भेटि सकैत छथि।

हम घटकराज कैं कहलिऐन्ह — पुछिऔन्ह त आश्रम सम्मिलित छैन्ह कि भिन्न-भिन्न?

घटकराज चिचिया कऽ पुछलथिन्ह — सभ गोटे साझी छी कि फराक-फराक?

वृद्ध सज्जन चलैत-चलैत अपन परिवारक साङोपाङ परिचय देबय लगलाह — हमरा लोकनि सभ गोटे साझी छी। खूब पैघ आश्रम अछि। हमर स्त्री हथौड़ीक थिकीह। तनिका सँ दू बालक, तीन कन्या। एक पुतहु काँटीक, दोसर बहुटाक। कन्या मे एकटाक विवाह सोहास भेल छैन्ह। दू टा कुमारिए छथि। हमर एक विधवा बहिन तेहो आश्रमे मे रहैत छथि। तनिका एक बालक, जनिक स्त्री धीरपुरक छथिन्ह और एक कन्या, जनिक विवाह बरहट्टा छैन्ह। हमर ज्येष्ठ भाय छलाह, तनिक स्त्री बनकटहीक थिकथिन्ह। हुनका दू कन्या, तीन बालक। ताहि मे एक बालकक विवाह हड़िया, दोसरक भटरिम्परि। तेसर बालक कुमार छथिन्ह जनिका प्रति अहाँ लोकनि चलि रहल छी।

पुनः वृद्ध महोदय जनसंख्याक गर्व करैत बजलाह — हमरा आश्रम मे लोकक कमी नहि। भगवतीक कृपा सँ सभ पुतहु कैं शाखा-सन्तति छैन्ह। और साले-साल वृद्धियो भेल जा रहल छैन्ह। एखन हमरा घर मे सत्ताइस गोटाक भानस दिन और सत्ताइस गोटाक भानस राति होइत अछि। दुनू साँझ मे साढ़े चारि पसेरी चाउर लगैत अछि। तकर नोन, तेल, दालि, तरकारी। बुझू जे एक भोजक आयोजन नित्य। स्त्रीगण अन्हरोखे सँ जे सूरसार करय लगैत छथि से खाइत-पिबैत बेर डूबि जाइत छैन्ह। और पुनः साँझे सँ जे उद्योग मे लगैत छथि से बेरा-बेरी सभ कैं खोअबैत-पिअबैत भिनसरबी राति भऽ जाइत छैन्ह। नित्य यैह क्रम चलैत अछि।

एवं प्रकारें वृद्ध महोदय भरि बाट अपन पारिवारिक विशालताक जमीड़ा करैत गेलाह।

थोड़ेक कालक उपरान्त एक बड़का टा दलान दृष्टिगोचर भेल। चालिस हाथ सँ कम नहि। पुरान झाझनक टाट, माटिसँ लेपल, टाम-टाम भहरल। ऊँच-नीच बाँसक खंभा पर पुरान बेमरम्मती चार। छिन्न-भिन्न कोरो बाती सँ अड़कल। सड़ल खड़ माथ पर खसबाक हेतु मुँह बौने। पहिलुक चलितहल्था लड़बड़ पाग जकाँ प्राचीनताक मर्यादा निमाहैत। दलानक अधिकांश भाग खुट्टी, कुट्टी, घास, गोबर और गोत सँ प्रधान रूप मे परिणत छल। ताहिपरक गर्दा-झोल झाड़ घरबैया बजलाह — अपने लोकनि एक क्षण बिलमल जाओ, हम ओछाओन नेने अबैत छी।

तावत आङन सँ धुआँधार झगड़ाक शब्द बहराय लागल।

— हे बड़ शौख! चकुटावाली बैसल रहथु आर हड़ियावाली सभटा काज करथु।

— बनकटहीवाली की बजलीह? ऐं! राति‍यो हमहीं भानस करी और दिनो मे

हमही भानस करी? से नहि हैतैन्ह। हथौड़ीवाली कहाँ गेलीह? भटसिम्मरिवालीक माथ दुखाइ छैन्ह त हमरो माथ दुखाइत अछि। तखन सँ कड़ियावाली खटै छथि। एकसरिए कुटलन्हि अछि, फटकलन्हि अछि, आब भानसो बैह करथु। जकरा भूख होइक से अपन आँच पजारौ गऽ। हम ने आइ खाएब, ने ककरो खाए देबैक। देखैत छी, आइ कोना भानस होइत अछि। ...इत्यादि।

वृद्ध महाशय कैं ई सभ किछु सुनबा मे नहि ऐलैन्ह। ओ बजलाह – धन्य भाग्य जे आइ अपने लोकनिक चरण एहिठाम पहुँचल! एखन नौकर-चाकर सभ हरवाही मे गेल अछि। समाङो सभ, केओ कलम गेल छथि, केओ खेत पर। कोनो नेनो-भुटका नहि अछि जे अपने लोकनिक सेवा करय। बेस, त आज्ञा देल जाओ। हम तुरन्त आङन सँ भेने अबैत छी।

गृहस्वामीक भीतर जैतहि आङन मे पुनः कलह उठि गेल। वृद्ध महाशय नहूँ-नहूँ किछु कहलथिन्ह से त हमरा लोकनि कैं नहि सुनना गेल, किन्तु चंडी स्वरूपा गृहस्वामिनीक प्रचंड स्वर जे टाटक अंतराल कैं फाड़ि हमरा लोकनिक कर्णकुहर कैं विदारय लागल, ताहि सँ आशय बुझबा मे भाङठ नहि रहल।

– कहाँ रसय, कहाँ बसय, खैबाक बेर नसियैत भाइ। मसियैत पिसियैत हम नहि जानी। बजा लेलिऐक अछि त अपन खोआबिऔक गऽ। हमरा बुते भानस कैल पार नहि लागत।

गृहस्वामी अनुनयक स्वर मे कहय लगलथिन्ह – ऐ एतेक जोर सँ नहि बाजू। बरतुहार अछि। सुनत त की कहत?

एहि पर गृहस्वामिनी और जोर सँ चिकड़ि कय बजलीह – सुनि कऽ हमर की करत? अहाँ कैं उपाय नहि छल त नेने किऐक ऐलिऐक? घर मे खर्च नहि, बाहर डेकार! नाक कटाएत त अहाँ कैं। हमर की?

गृहस्वामी पुनः विनम्र भाव सँ बुझबैत कहलथिन्ह – ऐ। एके पहर रहि कऽ चल जाएत। बंगट कैं देखय ऐलैक अछि। लाउ, एक लोटा पानि दियऽ। खड़ाम कतय छैक? सतरंजी बहार करू।

गृहस्वामिनी और अधिक उत्तेजित भऽ उत्तर देलथिन्ह – बंगट पर आएल छैन्ह त बंगटक माय पैर धोअबथुन गऽ। हम कोन दही-दौड़ा पर नाचू! धिया पुता ककरो धौकारी करय मङरो। बस, हमर सतरंजी रह दियऽ।

आब रंग-विरंगक स्वर भीतर सँ बहराय लागल। जेना केओ मधुमाछीक छत्ता छुबि देने हो तहिना सम्पूर्ण आङन मे भनभन होमय लागि गेल। के की कहैत अछि से त नहि बुझना गेल, किन्तु निम्नोक्त शब्द स्पष्ट सुनबा मे आएल –

कनेया काकी कैं नयका सतरंजी छैन्ह। बड़ शौख, हम अपना बिछाओनक सतरंजी देबैन्ह?...ही बाबू, हथौड़ीवालीक कम्बल जुनि छुबहुन। देखथुन्ह त हाथ तोड़ि देथुन्ह...। हे दाइ, हमर लोटा जुनि उठबैत जाह। हम अछिंजल रखने छी।...हाँ-हाँ ओ खड़ाम मझिला बौआक छैन्ह...कोढ़िया कहाँ सँ आबि कऽ सभ कैं दुख देलक। खैबाक बेर दू टा गजाधर सन-सन पहुँचि गेल... इत्यादि।

थोड़ेक कालक उपरान्त गृहपति संकुचित भेल एकटा कंबल तथा एक लोटा पानि नेने पहुँचलाह। कंबल ओछबैत बजलाह – ताबत अपने लोकनि पैर धोएल जाओ। हम दू गिलास शरबत बनबाय नेने अबैत छी।

ई कहि बिना उत्तरक प्रतीक्षा कैनहि ओ झटकि कय दुरुखा मे प्रविष्ट भऽ गेलाह। आब आङन मे पुनः रणभेरी बाजि उठल। एगोटा बजलीह – जौं आदिए गेलैक त ई चिनीअसि होए? एही घर मे राभक धिया-पुता दिन भरि चीनी भकसैत रहैत छैक। एखन केओ बहार करति?

दोसर कंठ सँ बहिर्भूत भेल – हँ, हम त पेटी मे ताला बन्द कऽ चीनी रखने छी। नहि बहार करब। केओ की करत?

तेसर बजलीह – हम त छौ मास सँ जौं चीनी मुँह मे देने होइ त बुढ़ाक कोढ़ करेज खैने होइ।

भगीरथ झा खेखनियाँ करैत बजलाह – कनेक चहुटावाली कने[illegible] अपन हिरगमनिया पौती झाड़ि कऽ देखय कहुन।

आध घंटाक बाद भगीरथ झा एक चीनीक पुड़िया नेने बहरैलाह। करिब एक कनमा चीनी कागज मे सटि कऽ एकाकार भऽ गेल छलैक जाहि मे गोर बीसेक चुट्टीक टाँग देखबा मे आएल।

हम चीनी देखि सिहरि उठलहुँ। किन्तु कैल की जाय?

भागीरथ झा पुनः आङन गेलाह। आब घोल पड़ल – दैव रे दैव! पानि एको चूरु छैहे नहि। कोन बाटे भरि कऽ लबियौक। बरतुहरबा सोझे मे बैसल छैक।...है, के चिकतीह? मरौल काढ़ि कऽ लय आयह।...नहि हो! कोढ़िया टुकुर-टुकुर तकैत छैक।

किछु कालक अनन्तर भगीरथ झा एकटा लोटा और एक पितरिया गिलास नेने बहरैलाह जे सन्दूक मे धैल-धैल बिझा गेल छलैन्ह। लोटा मे चीनी बला कागज घोरि मैलका अँगपोछा लऽ कऽ छानय लगलाह।

हम सर्दीक बहाना कय बाँचि गेलहुँ। फलस्वरूप घटकराज कैं घट्ट-घट्ट कऽ ओ विषक प्याला पीबि जाय पड़लैन्ह।

गृहपति आङन मे किछु आदेश दय स्नान करक हेतु पोखरि गेलाह। एम्हर हमरा लोकनि कैं श्रव्य-काव्यक आनन्द भेटय लागल।

केओ फुसुर-फुसु नेनाक कान मे कहलथिन्ह – देखही गऽ तऽ, किछु सनेसो लाएल छौक कि खालिए हाथ डोलबैत आएल छौक।

नेना बाजल – जौं मधुर लाएल होएत तखन त हम पंखो हौंकि देबैक।

स्त्री कहलथिन्ह – लाएल रहितौक त पठबितौक नहि? अच्छा, जो देखही गऽ तऽ। फेड़न मोटरी छैक?

बस, एक दस-बारह वर्षक बालक दौड़ल-दौड़ल आबि कऽ हमरा लोकनिक आगाँ मे ठाढ़ भऽ गेल। आब की कैल जाओ? हम मनीबैग सँ एक टाका बाहर कय सोनमनि चौधरी कें देलिऐन्हि।

घटकराज ओ रुपैया बालकक हाथ मे दैत कहलथिन्ह — जाउ, एकर मधुर कीनि कऽ खाएब।

बालक रुपैया पबैत आङन दिशि भागल। पुनः भीतर सँ स्त्री-कंठ सुनबा मे आएल — की रे! किछु देबो केलकौक कि नहि?

हमरा लोकनि टाट मे कान अड़ा देलहुँ जे की जबाब दैत छैक। किन्तु बालको छल एक नम्बरक प्राजी। कहलकैक — किछु नहि देलक।

हमरा लोकनि जी मसोसि कऽ रहि गेलहुँ।

पुनः स्त्री-कंठ बहिर्गत भेल — आब कोढ़िये खा लिहथि दही-अनौट! मखानक पात लऽ कऽ मुँह पोछि देबैन्ह।

घटकराज भयभीत भऽ हमर मुँह ताकय लगलाह। हम कहलिऐन्ह — की करब? यद् भाव्यं तद् भविष्यति।

आब ककरो घबराएल शब्द सुनि पड़ल — दैब रे दैब! बंगट महिष लऽ कऽ पानि पियाबय गेलैक अछि। आब चल अबैत हैतैक। बर्तुहरबा दलाने मे बैसल छैक। आब कोन उपाय हैतैक? कोनो गोटा दौड़ि कऽ जाह। कहि दही गऽ जे पछुआड़क बाटे आबय। बुच्चुन, अहीं दौड़ि जाउ। बाउ ने!

ताबत देखै छी जे एक सोलह वर्षक छौंड़ा महिष पर चढ़ल गीत गबैत आबि रहल अछि। पुनः हमरा लोकनि कें देखि ठिठकि गेल। पुछलक — कहाँ रहैत छी? पुनः हमरा सभ कें अभ्यागत बूझि बाजल — जाउ, आगू डेरा दियऽ गऽ। घरबैया नहि छथि।

तदनन्तर महिष कें खुट्टा मे बान्हि आङन गेल। आब आङन मे दोसरे ताल उठल।

मोसम्माति बंगट पर ललकैत कहलथिन्ह — रे कोढ़िया, तों सभ लाहेब कैलैं। थैह बेर महीस चराबक छलौक? दरबाजा पर बर्तुहार बैसल छौक। आ, तेल-कूड़ लगा दैत छियौक। सोनक यन्त्र पहिरि ले।

ताबत बूढ़ाक कोनो दोसर समाङ गाछी सँ एक जलखरी काँच-पाकल आम नेने आङन मे गेलथिन्ह। थोड़बे काल मे मचल कोलाहल। 'टुनमा कें पाकल आम भेटलैक। गुनमा कें काँचे छैक। भोलबाक आम बंगट छीनि लेलथिन्ह।... हौ बाबू, ओकर आम दऽ दहक।... हाँ-हाँ! पछड़ा-पछड़ी जुनि करै जाह। वाह! ई की सधोरि? ओकरा केहन ने हैतैक। टुगर छैक, तैं? जाह! बिलटी कें कना देलथिन्ह।

आब आङन मे नेनाक भोकरब प्रारम्भ भेल। प्रायः कोनो देयादिनी अपना नेनाक हाथ सँ आम छीनि कऽ फेकि देलथिन्ह और लगलथिन्ह ओकरा ठेङाबय। ई

देखि दोसरो देयादिनी अपना बेटा कें डाँटि कय कहलथिन्ह — तोंहू आम फेक रे कोढ़िया। किन्तु बालक रोहिनिया आमक लोभ संवरण नहि कय सकल। आम नेने पड़ाएल। तदुपरान्त वाग्युद्ध होइत-होइत मुशलयुद्ध प्रारम्भ भऽ गेल। कुशल एतबे जे हमरा लोकनि निशानाक बाहर रही। तथापि मूसरक साम एक बेर टाट फाड़ि कऽ कनेक बहराइए गेल।

हम घटकराज सँ कहलिऐन्ह — आब पूर्णाहुति भऽ गेल। चलू। जान बाँचत त फेरि दोसरा खेप आबि कऽ सत्कार करबा लेब।

ताबत एक दोसरे कांड उठल। ओ बालक जे पड़ाएल से ओकरा डाँड़ सँ रुपैया खसि पड़लैक। से रुपैया कोनो देयादिनीक बेटा लुझि लेलकैक। एहि पर जे तुमुल युद्ध मचल तकर ठेकान नहि।

एक जनी तीव्र स्वरें पुछलथिन्ह — ई रुपैया तों हमरा हाथ मे किऐक ने देलीं? आब तोरा बान्हि कऽ पिटिऔक?

बालक बाजल — ई त हमरा मधुर खाय लेल देलक अछि।

दोसर जनी बोल मारलथिन्ह — आन नेना कें कि मधुर खैबाक मुँह छैक जे हिस्सा भेटतैक?

ओम्हरसँ तेसर जनी कहलथिन्ह — है दाइ! ओ पाहुन खास हम्मर अछि। बंगट पर ऐलैन्ह अछि। एहि मे किनको हिस्सा-रत्ती नहि हैतैन्ह। लाबह, ओ रुपैया हम्मर भेल।

ताबत भगीरथ झा स्नान कैने आङन पहुँचलाह। स्त्रीगण कें पुछलथिन्ह — की? पाहुनक भोजन तैयार छैन्ह?

ई सुनैत तत्काल सँ सभ केओ बूढ़ा कें लुलुआबय लगलैन्ह। एक जनी कहलथिन्ह — घर भूजी भाँग नहि, चूड़ा लेताह चूड़ा! बड्ड नीड़ी नफर ने रखने छथि जे घर मे चूड़ा कूटि कऽ रखने रहतैन्ह। बजैत लाजो ने होइत छैन्ह।

दोसर जनी कहलथिन्ह — कूटि-पिसि आबथि जीरा, गाँड़ पसाबथि हीरा। तरबा रगड़ऽ लेल छोड़ छैन्ह हथौड़ीवाली कें और हुकुम चलाबय बेर बनकटही वाली पर।

ताबत तेसर बजलीह — चूड़ा त हमहीं एक पसेरी कुटने रही से सभक पेट मे चल गेलैक। एखन कि केओ गाल लागऽ देत? खाय काल सभ केओ, कूटय काल केओ नहि।

भगीरथ झा मृदुल स्वरें एक जनी कें पुछलथिन्ह — की, घर मे थोड़बो दही हैत? एखन प्रतिष्ठाक बात अछि।

ई प्रश्न सुनब छल कि ओ तड़ातड़ अपन कपार पीटय लगलीह — ई बूढ़ा हमरा दूरि करैत छथि। हम कुंडी की चोरनी जे अपना लेल दही जोगा कऽ राखब? अपने बूढ़ा कें एक लाख पूत सवा लाख नाती छैन्ह। सभ छालिए खैनहार। एक

मिसिया डाढ़ी त घर मे बाँचहि नहि पबैत छैन्ह, ताहि पर दहीक खोज करै छथि।

ई कहि ओ करुण राग मे धेओना पसारलन्हि। गृहपति क्षुब्ध भय कहलथिन्ह — अच्छा, हम हाथ जोड़ैत छी। अहाँ लोकनि चुप रहू। हम कतुना खोआ देबैक।

भगीरथ झा ककरो सँ अमौटक पुछारी करय गेलाह। उत्तर भेटलैन्ह — एक धरिका चहुटा गेलैक, एक धरिका सोझाँस गेलैक, आब एक धरिका बचलैक अछि से बरलबट्टा जैतैक। एहि मे पाहुन कि पाहुनक बापो कैं नहि भऽ सकैत छैन्ह।

किछु कालक बाद आङन मे चूड़ा कुटबाक धमाधम शब्द होमय लागल। प्रत्येक चोट हमरा लोकनिक करेज पर बजरय लागल।

धमगज्जर सुनैत सुनैत हमरा सभ कैं झक लागि गेल। करीब तीन बजे भगीरथ झा आबि हमरा लोकनि कैं उठा देलन्हि। बजलाह — आब चलल जाओ, भोजन कैल जाओ।

हमरा लोकनि कैं पैर उठैबाक साहस त नहि होइत छल। किन्तु गृहपतिक दयनीय दशा देखि हुनका और अधिक दुःख पहुँचाएब उचित नहि बूझि पड़ल। अतएव हुनक तोषार्थ उठहि पड़ल।

गृहपति दू टा खड़ाम हमरा लोकनिक आगाँ मे राखि देलन्हि। परन्तु दुहू एक्के पैरक, और खुट्टी ढिलढिल करैत। हम घटकराज कैं आग्रह कैलिऐन्ह त बजलाह — भला कहू त! ई कोना भऽ सकैत अछि? अहाँ पहिरू।

अगत्या हमरे पहिरय पड़ल। एक बड़का टा तुरुक्क दने भगीरथ झा हमरा लोकनि कैं भीतर लय चललाह। दसे डेग चलल हैब कि खड़ामक खुट्टी पैर सँ फराक भऽ गेल।

भगीरथ झा किछु अप्रतिभ भय बजलाह — कोनो हर्ज नहि। एही ठाम छोड़ि दिऔक।

ओसारा पर मोरीक कन्नी पर पैर धोबाक हेतु पीढ़ी-पानि राखल छल। हम घटकराज कैं कहलिऐन्ह — आगाँ बढ़ल जाओ।

परन्तु ओहि ठाम तेहन पिच्छर छल जे पैर रोपब कठिन। घटकराज जहिना पीढ़ी पर एक पैर रखलन्हि कि पीढ़ी ससरि कऽ ऐंठार मे चलि गेलैन्ह। घटकराज ओही संग लागल नीचा खसि पड़लाह।

हम हाथ धऽ कऽ ऊपर खींचि लेलिऐन्ह।

भगीरथ झा लोटा मे पानि लय पैर धोअबैत पुछलथिन्ह — की? किछु अभिघात त नहि भेल?

सोनमनि चौधरी बजलाह — नहि, केवल थाल लागि गेल अछि। कनेक और जल मङाएल जाओ।

भगीरथ झा सोर पारलथिन्ह — टूना बाबू! एक कलशी जल नेने आउ। मूना बाबू! कतय गेलहुँ? औ गूना बाबू! गूना बाबू?

जखन कोनो उत्तर नहि भेटलैन्ह त गृहपति स्वयं ढेलसीरी दिस विदा भेलाह।

पाद-प्रक्षालनक अनन्तर भगीरथ झा हमरा लोकनि कैं घरक भीतर लऽ गेलाह। सम्पूर्ण घर अन्हार कुप्प। चारू कात सँ निमुन्न। बूझि पड़ल जेना हाथीक पेट मे पैसि गेल होइ। हम थाहि-थाहि कऽ अन्दाज पर चलय लगलहुँ। तथापि एक ठाम मरुआक ढेरी पर पैर पड़िए गेल।

भगीरथ झा बजलाह — एम्हर आएल जाओ। एहि दिस पीढ़ी-पानि अछि।

पीढ़ी पर बैसला उत्तर घरक दृश्य देखल। सोझा मे चाउरक कोठी, जकरा तर मे असंख्य मूस बियरि कैने। और कइएक मासक बढ़ारन-सोहारन जमा कैल, जाहि मे लोइयाक लोइया केश। दोसरा दिस मचान पर टूटल-फूटल पेटी और बाकसक ऊपर मकइक थालि, तमाकू और पटुआक कचरा ढेरी कैल राखल। कतहु सँ मरल मूसक दुर्गन्ध आबि रहल छल। एक त अन्धकारपूर्ण घर ओहिना भभकैत छल, ताहि पर टाँब तेहन सड़ल गोबर सँ कैल छल जे नाक देब कठिन।

आब भोज्य पदार्थक वर्णन सूनू।

आगाँ मे खाली थारी, सूप मे धनहा चूड़ा। एक बट्टा मे मुँहठी काटल आम। पात पर नोन मिरचाइ, करैलक अँचार, और खोरनाठ सन कारी गुड़।

एही सामग्री पर भगीरथ झा उचितीओ करय लगलाह — अपने लोकनि कैं आइ बहुत कष्ट भेल। भोजन मे अतिकाल भऽ गेल। स्त्रीगण आइ एक व्रत कैने छथि तैं किछु विशेष ओरिआओनो नहि भऽ सकल। केवल नोन-चूड़ा मात्र अछि।

ई कहि ओ दू-दू लप चूड़ा हमरा दुनू गोटाक थारी मे राखि देलन्हि। बजलाह — आब चूड़ा भिजाएल जाओ। कोनो संकोच नहि कैल जाय। हँ, दही त घर मे एखन सठल छैक। थोड़ेक दूध छैक से नेने अबैत छी।

ई कहि भगीरथ झा दोसरा घर मे गेलाह। ओतय किछु फुसुर-फुसुर होमय लगलैन्ह। ध्वनि सँ बुझना गेल जे दूध देबाक प्रस्ताव पर विवाद छिड़ल अछि और विरोधी पक्षक प्रबलता अछि। किएक त निम्नलिखित प्रश्नोत्तरी स्पष्ट सुनबा मे आएल —

— ई दूध येह दुनू कोढ़िया ढकोसि लेत त राति चहुटावालीक नेना की पिउतैन्ह, इडोर?

— बेस, नेनाक लेल थोड़ेक राखि लियऽ, और हम दऽ अबैत छिऐक।

— बस बस, रहऽ दियऽ। एहि मे सँ एको मिसिया नहि भेटि सकैत अछि। बंगट पर ऐलैन्ह अछि त बनकटहीवाली छाल्ही खोअबथुन गऽ। ई नहिष चहुटावालीक नैहरक छैन्ह। ओ अपन दूध केहन देथिन्ह?

— ऐ! कुच्छ चूड़ा खा कऽ जाएत — मन मे की कहत? बंगट कैं तैयो नहि जैतैन्ह।

— अहा हा! बंगट कैं जे रुपैया देतैन्ह से हिनके त जेना थाँरि कऽ दऽ देतैन्ह।

बस, ओ दूध छुइलहुँ त हम तमाशा लगा कऽ देखा देब, से कहि दैत छी।

एतबा सुनलो उत्तर दूधक प्रतीक्षा करय मूर्खता होइत। अतः हमरा लोकनि आशा परित्याग कय चूड़ा भिजाबय लगलहुँ। किन्तु सोनमनि चौधरी कैं पानि ढारक काज नहि पड़लैन्ह। कियैक त एक दू-अढ़ाइ वर्षक नेना कोम्हरो सँ आबि, टाड़े-टाढ़ हुनका थारी पर लघी कऽ देलकैन्ह। ओ गा हुम् हुम् करैत डाँटथि ता चूड़ाक ऊपर जलप्लाव भइए गेलैन्ह।

छिटकाक सम्पर्क सँ हमरो थारी दूरि भऽ गेल। तावत बालक ओही ठाम बैसि कय 'लघ्वी पुरा बृद्धिमती च पश्चात्' करय लागल।

भोजनक आशा पर पानि फिरि गेल। तावत गृहपति आबि बजलाह – ऐं! अपने लोकनि एखन धरि नैवेद्यो नहि देल अछि। हाथ कियैक बारने छी? ऐं! ई नेना एतय कोना आबि गेल? राम-राम! ई की कऽ देलक?

ई कहि भगीरथ झा ओकर दुनू बाँहि पकड़ि, अपना सँ एक हाथ फराके कऽ उठौने, बाहर लऽ गेलथिन्ह। हम अवसर देखि उठि विदा भेलहुँ। घटकराजो हड़बड़ा कऽ उठलाह। किन्तु हुनक खल्वाट चानिक ठीक ऊपर सीक मे अँचार लटकल रहैन्ह। झोंक सँ जे उठलाह से माथ और पातिल दुनू एकै बेर भइ दऽ फुटल। माथ सँ पातिल फुटल अथवा पातिल सँ माथ फुटल, ई त नैयायिकक विषय थिकैन्ह। परन्तु घटकराज कैं चोट धरि अवश्य लगलैन्ह।

हम कहलिऐन्ह – भोजन-दक्षिणा त भेटि गेल। आब चलू, घरबैयाक आबय सँ पहिनहि निकसि चलू। नहि त गृहचंडी भांडक दाम वसूल कैने बिना नहि छोड़तीह।

हमरा लोकनि जान छोड़ा कऽ भगलहुँ। ओसारा पर जाँत, चकड़ी, ढेकी, ऊखरि आदि नाना विघ्न-बाधा पार करैत, दुरुखा मे लटकल लालटेन सँ टकराइत, हुरुक मे थान्हल असगनीक फंदा सँ गरदनि छोड़बैत, कोनहुना बाहर आबि फक दऽ निसास छोड़लहुँ।

ओम्हर आङन मे भगीरथ झा क्रोधोन्मत्त भय चीत्कार कैलन्हि – ई छौंड़ा की करय ओहि घर मे गेल छल? आइ हम घेंट दबा कऽ मारि देबैक। पाहुन राभ बिनु खेनहि उठि गेल। हमरा की कहत?

हमरा लोकनि दलान पर ऐलहुँ। ओम्हर आङन मे भीषण महाभारत मचि गेल। नेनाक माय नेना कैं बाढ़नि सँ झाँटय लगलथिन्ह – कोढ़िया कैं अपना घर मे पेट नहि भरलैक। तैं छिछिआएल ओहि कोठरी मे पात चाटय गेल छल। एहि सँ मरिए जाए सैह नीक।

एहि पर वाग्युद्ध होइत-होइत परिणाम ई भेल जे नेनाक माय बच्चाक टोंठ धैने ओकरा समेत इनार मे खसबाक हेतु विदा भेलीह।

हमरा लोकनि जाहि ठाम बैसल रही ताहि सँ सटले एक कोलह्की मे इनार छलैक। अतएव सभटा शब्द स्पष्ट रूपें कर्णगोचर होइत छल और भीतरक सभटा

गतिविधि अनुमान सँ लक्षित होइत जाइ छल। हम सोनमनि चौधरी कैं कहलिऐन्ह – घटकराज, आब अनर्थ भऽ रहल अछि। दू-दू टा ब्रह्मवध होमय जा रहल अछि। तकर हत्या हमरे अहाँ पर पड़त। जाउ, धरिऔन्ह गऽ। नहि त जौं एहिना चुक्कीमाली पाहुन बनल बैसल रहब त थोड़बे काल मे हथकड़ियो पड़ि जाएत।

तावत इनार मे छभ्भ शब्द भेलैक। हम सोनमनि चौधरी कैं कहलिऐन्ह – चलू, पड़ाउ एहि ठाम सँ। नहि त आब सभटा पहुनाइ बाहर हैत।

तावत भीतर कोलाहल मचल – जाह! बीरपुरवाली इनार मे खसि पड़लीह। ऐं! खसि पड़लीह? दैबा-रे-दैबा! आब कोन उपाय हैत? नहि, बीरपुरवाली त ओतऽ ठाढ़ि छथि, चहुटावाली लग। बच्चे खसि पड़लैक। नहि-नहि! बच्चा त बैह ठैक ढढ़ियाबालीक कोर मे। इनारक कँगनी टुटि कऽ खसि पड़लैक अछि। हः हः! भटसिम्मरिवाली जा कऽ भरि पाँज धऽ लेलथिन्ह नहि त आइ अनर्थ होइत।

ई सुनि हमरा लोकनि कैं कतहु सँ प्राण आएल।

तावत गृहपति जनउ-सुपारी नेने पहुँचलाह। ओ बुझैत छलाह जे आभ्यन्तरिक स्थिति बर्तुहार लोकनि कैं किछु टा विदित नहि छैन्ह। तैं सोनमनि चौधरी कैं कहलथिन्ह – अहाँक भाभहु कुशल-क्षेम पुछैत छथि और अनुरोध करैत छथि जे भैया एतेक दिन सँ कहियो कृपा कियैक नहि करैत छलाह।

हमरा लोकनि ठाढ़ भय अंचितीक उचित उत्तर दैत कहलिऐन्ह – बेश, त आब आज्ञा देल जाओ।

गृहस्वामी बजलाह – भला, कहू त? ई कतहु भऽ सकैत अछि? एखन अपने लोकनिक सौजन्य त भेबे नहि कैल अछि। राति सिद्ध भोजन कय, आङन मे ऐंठ पानि डेरा, पवित्र कऽ देल जाओ, तखन काल्हि जैबाक विचार कैल जाएत। एहि घरक पीढ़िओ-पानि त देखि लेब।

भगीरथ झाक ई असीम धैर्य देखि हम चकित रहि गेलहुँ। सोनमनि चौधरी कहलथिन्ह – पीढ़ी-पानि त देखले-देखल अछि। हिनका बड्ड जरूरी काज छैन्ह तैं आइ छोड़ि देल जाउन्ह।

भगीरथ झा कहलथिन्ह – बेश, त कम-सँ-कम बालको कैं त देखि लिऔन्ह।

हमरा लोकनि कैं पुनः बैसि जाय पड़ल। करीब आधा घंटा मे बालक बनि-ठनि कय बाहर ऐलाह। एखन हुनकर दोसरे साज देखबा मे आएल। थकरल टीक, पोछल मुँह, लाल टोप, गर मे सोनक यंत्र।

भगीरथ झा बजलाह – यैह थिकाह हमर भातिज बेंकटेश्वर बाबू। हिनका सँ किछु पुछिऔन्ह।

सोनमनि चौधरी पुछलथिन्ह – किं पठ्यते?

बालक टनकि कऽ उत्तर देलथिन्ह – व्याहकरणम्।

गृहपति प्रसन्न होइत बजलाह – देखू, केहन टनकि कऽ उत्तर देलन्हि। हम

त पण्डितजी कहलहुँ जे बालक संस्कारी छथि। की? किछु और पुछबैन्ह?

हम कहलिऐन्ह – नहि, एतबहि सँ बुझना गेल। आब और किछु पुछबाक काज नहि।

भगीरथ झा बजलाह – तखन परिचय-पात लिखि लिऔन्ह।

ई कहि ओ भीतरसँ दवात, कलम, कागज लाबय गेलाह। आङन मे पुनः खड़भड़ प्रारम्भ भेल।

– कागज त कनेयाँ कालीक पेटी मे छलैन्ह। दवात की भेलैक? चक्का पर राखल छलैक। फूटि गेलैक। के फोड़लक? पकड़ त भोलबा कैं। मोसि अछि? उहूँ। अच्छा त ललका रंग बाटी मे घोरि लियऽ। कलम की भऽ गेलैक? कालि टुनमा लऽ कऽ खेलाइत छल। कहाँ गेल टुनमा? इत्यादि।

करीब आधा घंटाक बाद गृहपति लाल रंग और काठी नेने पहुँचलाह। कहलन्हि – एखन मोसि कलम त नहि भेटैत अछि। एही सँ लिखि लेल जाओ।

भगीरथ झा घटकराज कैं वरक परिचय लिखबय लगलथिन्ह – 'बालक बुधवारे महिसी। मातृक दरिहड़े राजनपुरा, सखुआ पाँजि। मातृमातृक हरिअम्बे बलिराजपुर, कछुआ पाँजि। पितृमातृक दिघवे सन्नहपुर, शशिपुर डेरा, फेटकटाइ पाँजि।

घटकराज कहलथिन्ह – बेश, आब गाम गेला उत्तर जे विचार होएत से अपने कैं सूचित करब।

भगीरथ झा बजलाह – बेश, से त हैबे करतैक किन्तु अहाँ हमर साक्षात भरिऔतं। आबि गेल छी त दू-चारि दिन रहि कऽ आम खाउ। एहि बेर 'लाटकम्पू' खूब फरल अछि।

बहुत कठिनता सँ हमरा लोकनि वृद्ध महोदय सँ पिंड छोड़ाओल।

जखन ओहि घर सँ विदा भय किछु दूर ऐलहुँ त भगवान सँ प्रार्थना कैलिऐन्ह जे हे भगवान्! एहि आश्रमक रक्षा अहींक हाथ मे अछि। नहि त एहन-एहन सातो टा भगीरथ मिलि कय प्रयत्न करताह तथापि एहि घरक उद्धार नहि भऽ सकैत अछि।

पुनः ओहि गृहस्थाश्रम कैं ई श्लोक पढ़ि कऽ प्रणाम कैल –

सर्वदा कलहाक्रान्तं, कोलाहलसमाकुलम्।
अहर्निशं कुरुक्षेत्रं, वन्देसम्मिलिताश्रमम्।।

□

घरजमाय

बबुआनीजी मोसम्मातिक एकमात्र कन्या छलथिन्ह। तेहन दुलरुआ बेटी जे बारह वर्ष धरि खवासक कान्हे पर चलथिन्ह। दूध मे छाल्ही कम बूझि पड़ैन्ह त भरलो बट्टा उनटा देथिन्ह।

चौदहम वर्ष पार करैत-करैत बबुआनीजी तेहन विशाल भऽ गेलीह जे शरीरक भार सम्हारब कठिन भऽ गेलैन्ह। तखन मोसम्माति कैं एकटा जमायक प्रयोजन बूझि पड़लैन्ह। एहन दुलरुआ बेटी कैं आँखिक ओझर कोना होमय दितथि? अतएव तेहन जमायक तलाश होमय लागल जे बबुआनीजीक दबाब तर रहि सकथि।

दू टा वस्तु चोरैबा मे दोख नहि होइत छैक – शालग्राम और पंजीबद्ध वर। अतएव मोसम्माति चुल्हाइ झा कैं चोरबा मङौलन्हि। ओ नकद् झा पाँजि छलाह। सम्पत्तिक नाम पर घर मे केवल चानन-चन्द्रौटा छलैन्ह। मुग्धबोध व्याकरण पढ़ैत छलाह, किन्तु साधनक अभाव सँ परीक्षा नहि दय सकैत छलाह। मोसम्माति कैं आज्ञाकारी घरजमाय भेटि गेलथिन्ह।

एक मास धरि त जमायक खूब आदर-सत्कार भेलैन्ह। खिचड़ी मे गुलाबजामुनो देल जाइन्ह त सोहि कऽ, जे कतहु ओझाक कंठ मे नहि गड़ैन्ह। भोरे आँखि मे काजर कऽ देल जाइन्ह जे ओझा कैं नजरि-गुजरि नहि लगैन्ह। पनबट्टा सदिखन संगे छलैन्ह। पैखाना मे लोटाक संगे पंखो धऽ देल जाइन्ह।

परन्तु तदनन्तर कृष्णपक्षक चंद्रमा जकाँ चुल्हाइ झाक सम्मान जे घटय लगलैन्ह से घटैत-घटैत अमावस्या पर पहुँचि गेलैन्ह।

आब छौ मास बादक वृत्तान्त सुनू। जे ओझा बादामक हलुआ खा कऽ दूध पिबैत छलाह से आब बदामक फुटहा खा कऽ पानि पीबय लगलाह। जनिका भोजन करैत काल गीत होइ छलैन्ह तनिका नदिओ करैत काल गंजन होमय लगलैन्ह। जे पहिने 'मान्य जन' छलाह से शनैः शनैः केवल 'जन' मात्र रहि गेलाह।

चुल्हाइ झा अन्यान्य नौकर-चाकरक देखादेखी सासुर कैं 'डेउढ़ी', मोसम्माति कैं 'मलकीनीजी' और अपना स्त्री कैं 'बबुआनीजी' कहैत छलाह।

'मलकीनीजी'क दरबार मे 'दमाद साहेब'क दिन-दिन तरक्किए भेल गेलैन्ह। पहिने खेत-पथार जाय लगलाह। तदनन्तर जन-बनिहारक खाएको अङपोछा मे बान्हि कऽ लऽ जाय लगलथिन्ह। अन्त मे ओझाजी बोझो बान्हय लागि गेलाह।

चुल्हाइ झाक जगह-जमीन भरना पड़ल छलैन्ह। तकरा छोड़ाबक हेतु बबुआनीजी

सँ कजे लय हुनका नामे अपन घर-द्वार पर्यन्त मकफूल कऽ देलथिन्ह। अतएव मलकीनीजी निश्चिन्त भऽ गेलीह जे जमायक टीक आब अपना हाथ मे आबि गेल, एसि कऽ जैताह कतय? कोनो बात चलैक त कहथिन्ह – ई हमरा बेटीक खरिदुआ गुलाम छथि। जेना जे कहतैन्ह से करय पड़तैन्ह। कौरा खाइ छथिन्ह एकर त पाछु धरथिन्ह ककर? जौं एकर ताव नहि सहियारि होइन्ह त सभ टा सूद जोड़ि कऽ दय देथुन्ह।

बेचारे ओझाजी माहुरक घोंट पीबि कऽ रहि जाथि। भागि कऽ जैताथि कतय?

किछु दिनक बाद दरमाहा नहि भेटलाक कारण मोसम्मातिक भनसीया जवाब दऽ देलकैन्ह। आब भानस के करी? मोसम्माति कैं मेद रोग रहैन्ह और बबुआनीजी आगि लग कोना बैसतीह? अगत्या दू साँझ धरि त असिद्धे चलल। किन्तु एना कतेक दिन चलैत? तेसर साँझ खवासिन आँच पजारि कऽ अधन तैयार कैलक। ओझाजी कैं कहलकैन्ह – 'मेहमान, मलकीनीजी के तबीयत खराब हैन और बबुआनीजी चौका मे जाय लायक न हथ, तनी आइसे चाउर मेरा कऽ पसा दियौ।'

ओझाजी भानस कैलन्हि और थार परसि बबुआनीजीक खास कमरा मे दऽ ऐलथिन्ह।

तहिया सँ घुल्हाइ झाक 'चुल्हाइ' नाम सार्थक भऽ गेलैन्ह।

एक दिन खवासिन बबुआनीजी कैं मालिश करैत रहैन्ह। जमाय बेचारे दबल कंठ सँ कहलथिन्ह – 'ऐ सुबुधमनि! दालि मे हरदि पड़तैक। कनेक पीसि दितिऐक।'

शहरक खेलाइलि दाइ ओझा कैं की बुझितैन्ह? सुनिओ कऽ अनठा देलकैन्ह। किन्तु मोसम्मातिक कान मे जमायक शब्द पड़ि गेलैन्ह। ओ जलखइ पर बैसलि रहथि। तमसा कऽ बजली – हः हः! एको खन खवासिन कैं पलखति देथिन्ह से नहि। बबुइ कैं कनेक मालिशो करतैक से छुट्टी नहि दैत छथिन्ह। कनेक अपने दू गिरह हरदि रगड़ि कऽ दालि मे दऽ देथिन्ह त कि हाथक मेंहदी झड़ि जैतैन्ह?

ई सुनि ओझाजी कैं पुनः सुबुधमनि कैं सोर करबाक साहस नहि पड़लैन्ह। चुपचाप अपने हाथ सँ मसाला पीसि लेलन्हि। बबुआनीजी कैं आमिल-मिरचाइ बिना घोंटले नहि जाइन्ह। अतएव ओझाजी कैं चटनीओ पीसय पड़लैन्ह।

थोड़ेक कालक बाद सुबुधमनि ओझा पर तमकैत ऐलैन्ह – आइस केतना हल्ला करे लगली? बबुआनीजी के एगो जाँघ बाँकीए रह गेलन। निम्मन सकती मालिशो न हो सकलैन। लाउ, कहाँ है मसाला?

ओझाजी संकुचित होइत कहलथिन्ह – भात दालि तरकारी और चटनी त भऽ गेलैक। पुछिऔन्ह जे आब एकरवट्टी कऽ नेने अबिऔन्ह?

एक दिन सासु बजा कऽ प्रेमपूर्वक कहलथिन्ह – आइ-कालिह चाउर-दालि कपूर-कस्तूरी भऽ रहल अछि। एहना कठिन समय मे बहुत हिसाब सँ खर्च करक

चाही। कोनो हिनकर बापक थाती गाड़ल छैन्ह जे अनधुन खर्च करताह?

ओहि दिन सँ ई इन्तिजाम भेल जे मोट अन्नक व्यवहार हो। परन्तु एके दिनक उपरान्त एहि प्रबन्ध मे संशोधन करय आवश्यक भऽ गेल। कारण जे बबुआनीजी अँकड़ा चाउरक भात सूँघि कऽ छोड़ि देलथिन्ह, और माँजी खेसारीक दालि जे खैलन्हि त पेट फूलि गेलैन्ह। अतः माँजी पुनः प्रेमपूर्वक जमाय कैं बजा कऽ कहलथिन्ह – राति बबुइ कैं ई कोन ज्ञाने मोटका भात परसि देलथिन्ह? ओकर फुलकुम्हरि बला देह छैन्ह। अखंड-नखंड वस्तु हिनका पचतैन्ह, किऐक त ई घसकट्टाक बेटा छथि, मुदा ओ त गोबरधनीक बेटी नहि। ओकरा हेतु फुलका छानि देल करथुन्ह। और हमरा जे खेसारीक दालि खोआ देलन्हि से राति सँ हुड़हुड़-गुड़गुड़ कऽ रहल अछि। ई हरठिया-फरठिया छथि। जागरो देसरिया खा कऽ पचा लेताह मुदा हमरा सभ कैं त मालभोगी पेट मे गड़ैत अछि।

ताहि दिन सँ चुल्हाइ झा कैं दू पाक करय पड़ैन्ह। अपना सभ लेल बकोन, और सदर हवेलीक हेतु बासमती। राति कऽ दुहू माइ-धीक हेतु पूड़ी तरकारी बना कऽ दऽ आबय पड़ैन्ह। दूध दही घृत चीनी बबुआनीजीक खास चाजे मे रहैन्ह।

ताहू पर बेचारे जमाय कैं चैन नहि। सुबुधमनि बात बात मे भीतर जा कऽ हुनक चुगली लगा देल करैन्ह। एक दिन माँजी कैं कहलकैन्ह – 'ए मलकीनीजी, ए मलकीनीजी! दमाद साहेब डेढ़ सेर से कम न खाइ छथ।'

तहिया सँ माँजी अपने हाथे चाउर नापि कऽ देबय लगलथिन्ह।

एक दिन बबुआनीजी कैं चढ़ा देलकैन्ह जे मेहमान सभ रात तीन-चार ठो पूड़ी अपना वास्ते चोरा कऽ धऽ रखै छथ। तहिया सँ बबुआनीजी सानल आँटाक लोइया गनि कऽ, और घृत नापि कऽ पठाबय लगलथिन्ह।

एक दिन रोहु माछ बिकाय ऐलैक। बबुआनीजी अपने हाथ सँ खंड काटि, गनि कऽ पठा देलथिन्ह जे 'हमरा खातिर एतेक तरल रहत, एतेक झोराओल जाएत और सीराक मुड़घंट बनत।' चुल्हाइ झा थारी मे सभ माछ लऽ कऽ बाड़ी मे धोबय गेलाह। जा खवासिन इनार सँ पानि लाबय गेलैन्ह ताबत एक बिल्लोरि ओझाजीक हाथ नोचैत सीरा झपटि कऽ लऽ गेलैन्ह। भय और अफसोसक मारे ओझाजी दिन भरि कुसियारक खेत मे नुकाएल रहलाह।

एक राति नित्य जकाँ सभ कैं खोआय-पियाय चुल्हाइ झा बाहर दलान मे सूतल रहथि। पानि बरसैत रहैक। ताबत डेउढ़ीक भीतर हल्ला भेल जे बबुआनीजी कैं भूत लागि गेलन्हि। माँजी दौड़लि बहरैलीह और जमाय कैं फज्झति करैत बजलीह – हमर बेटी मरैत अछि और ई कौड़िभच्छ थैने अफरा कऽ सूतल छथि। तकै छथिन्ह की? जाधु कतहु सँ ओझा कैं बजा लबथुन। बाप-रे-बाप! हमर धी बिदा भऽ रहल छथि। तेहन अभागल सँ सम्बन्ध भेलैक जे बेचारी कहियो सुख नहि देखलक।

ई कहि माँजी बेओना पसारलन्हि।

आब ओझाजी ओझाक खोज मे विदा भेलाह। डेढ़ कोस पर जा कऽ एक दुसाध भगता भेटलैन्ह। ओकरा बहुत हाथ पैर जोड़ि कऽ कोनो तरहें राजी कैलथिन्ह। ओ बबुआनीजी कैं देखैत अपन आडंबर पसारलक – कुश चाही, अक्षत चाही। ओड़हुल के फूल मङाउ। खसी के कान मङाउ। हम होमाद करब, तब झाड़बैन।

आब सभ वस्तु जुटबैत-जुटबैत ओझाजी कैं प्रलय भऽ गेलैन्ह। कुश खोजैत-खोजैत कतेक ठाम काँट गड़लैन्ह। खसीक कानक बदला मे अपन कान कटाय लगलैन्ह।

तावत भगता कहलकैन्ह जे 'बबुआनीजी के ऊपर सास चढ़ल छथिन।'

ई सुनैत देरी माँजी जमाइक मुइलो माइक सातो पुरखाक उद्धार करय लगलथिन्ह।

आब बबुआनीजी बकय लगलीह – हमरा पूत कैं नोन चटा देलक। भेंड़ा बना कऽ रखने अछि। घर नहि आबय दैत अछि। हम संहार कऽ देबैक। बुढ़िया कैं खोरि कऽ डाहबैक। इत्यादि।

माँजी कनैत बजलीह – बाप-रे-बाप। हमरा बेटी कैं छुच्छी की कऽ देलक से नहि जानि। सौख ने देखियौन्ह! हमरा खोरि-खोरि कऽ डाहतीह! लोहे धिपा कऽ दागि देबैन्ह।

खबासिन कहलकैन्ह – माँजी, गारी न दिऔ। औरो उछन्नर करत। ढेला बीगत, ईंटा बरसाएत। हार-गोर गिराएत।

आब माँजी अपन क्रोध जमाय पर उतारय लगलीह – हाय रे हमर कर्म! बेह पंचलक्षण वर बबुइक लेल बथाएल छलथिन्ह। जनितहुँ जे हिनकर माय एहन हाँकलि डाइन छैन्ह जे मुइलो पर हमरा सभ कैं चैन नहि लेबय देति त हिनका अपना दुरुखाक भीतर नहि ढुकय दितिऐन्ह।

तावत भगता अपन देवता जगाबय लागल। सौंसे देह बैत जकाँ थर-थर कँपबैत गरजि कऽ बाजल – दोहाइ गौरा पार्वती के! जय काली कामाक्षावाली! जय काली कलकत्तावाली। जल बान्हौं थल बान्हौं, बान्हौं रहन बाबा – तीन भुवन पृथ्वी बान्हौं सतगुरु के दाया। दोहाइ पितर गौरा महादेव पार्वती! धिक्कार तोरा लुखेसरी देवी। तों लोक छह कि भूत छह कि प्रेत छह कि योगिनी?

भूत बाजल – हम केओ छी ताहि सँ तोरा मतलब? जान लऽ कऽ भाग नहि त मूड़ी चिबा जैबौक। तोरा सन-सन भगत कैं हम जाँघ तर खेलबैत छी।

भगता बाजल – चल, चल, बड़ी ऐलीहे खेलाबय बाली। अच्छा, हम तोहर दवाइ करैत छी।

ई कहि ओ बबुआनीजीक नाक लग मिरचाइक धूनी लऽ गेलैन्ह। तैक सँ भूत कैं अपन भविष्य सुझय लगलैक। कनेक सहमि कऽ बाजल – तों हमर जड़ि किऐक ला... छैं? एखन भगाइयो देबैं कि फेर अबैत हमरा देरी लागत? बहुत दिक करबैं

त हम एकरा छोड़ि कऽ तोरे पर चढ़ि जैबौक।

भगता आब भूत कैं पोल्हाबय लागल – तों की चाहै छह? जे मङबह से देबौह। खसी लेबह कि दारू लेबह कि लोक लेबह....?

भूत बाजल – किछु नहि लेब। हम खाली एकरे लेबैक।

माँजी कानय लगलीह।

भगता बाजल – तोहर ई की बिगाड़लकौह अछि? एकरा जान छोड़ि दहौक। हम तोरा सिंदुर-पटोर मङा दैत छिऔह।

आब प्रश्नोत्तरी प्रारम्भ भेल।

भगता – तों कतऽ रहै छह?

भूत – हम दछिनबरिआ इमली पर रहैत छी।

माँजी बजलीह – बाप-रे-बाप! कालिहए इमलीक गाछ कटा देबक चाही।

भूत उत्तर देलकैन्ह – बुढ़िया, तों बेसी बक-बक नहि कर। नहि त सुतला मे टोंट दाबि कऽ मारि देबौक।

बूढ़ी थर-थर काँपय लगलीह।

भगता बाजल – अच्छा हम हाथ जोड़ैत छिऔह। हम तोरा पाठा देबौह। तों अपन घर जाह।

भगता आब अपन टाटक पसारलक। माँजी कैं कहलकैन्ह – एक कारी खसी मङाबह। एक बोतल दारू। लाल पटोर। मटिया सिंदूर।

आब ओझा कैं पुनः सात गाम दौड़य पड़लैन्ह। सभ वस्तु संग्रह करैत-धरैत आधा राति सँ दुपहर भऽ गेलैन्ह।

एम्हर भगता खीरक भोग लगौलक और दुहू माइ-धी कैं अपन प्रसाद देलकैन्ह। तावत चुल्हाइ झा भूखे-पियासे, रौदे लहालोट होइत पहुँचलाह। हिनका देखितहि भगता बैत घुमबैत पुछलकैन्ह – बोल, तों एतना देरी कहाँ लगेलें? बोल! ला खसी काट। एक्के छौ मे काट।

ओझाजी कुंठित होइत सबुधमनि कैं कहलथिन्ह – हमरा खसी काटय त नहि अबैत अछि। ताहि मे एक्के छौ मे हमरा बुते कोना हैत?

ई सुनि सासु गंजन करय लगलथिन्ह – हिनका कथुक लूरि नहि छैन्ह। जाबु कोनो पुरुष कैं बजा लबधुन्ह।

भगता भरलो बोतल दारू चढ़ाय, लाल-लाल आँखि कय बाजल – अच्छा, ला तरुआरि। हम अपने काटब।

भगता खसी काटि कऽ मुंड अपना हाथ मे लेलक। धड़ जमाय कैं देखा कय कहलकैन्ह – ई नेने चल, हमरा ब्रह्मस्थान पर।

बेचारे चुल्हाइ झा खसी कैं उठा कऽ भगताक घर पर नेने गेलथिन्ह। तखन ओ कहलकैन्ह – जो आब पूजा खातिर पटोर, सिन्दूर और पाँच ठो रुपैया नेने आ।

जमाय बेचारे दौड़ले गेलाह और सभ चीज लऽ कऽ पुनः हाजिर भेलाह। तखन भगता थोड़ेक काँच मांस दऽ कऽ कहलकैन्ह — जो, ई प्रसाद खोआ दही गऽ और ई जड़ी बान्हि कऽ भभूत लगा दही। भूत भाग जतउ।

घुल्लाइ झा दौड़ा-दौड़ी यंत्र-मंत्र और प्रसाद नेने डेउढ़ी पर पहुँचलाह।

माँजी और सुबुधमनि मोहनभोग बना कऽ बबुआनीजी कैं धरबैत छलथिन्ह। अतएव बेचारे घुल्लाइ झा स्वयं आगि-काठी पजारि मांस बनावय गेलाह। ई सभ करैत-धरैत साँझ भऽ गेलैन्ह। तखन एक बट्टा मांस लऽ कऽ आदर्श गृहिणीक सेवा मे उपस्थित भेलाह।

और सभ लोक त प्रसाद पौलक। परन्तु घुल्लाइ झा कैं के पुछैन्ह? ओहि बेचारे कैं हरिबासर भऽ गेलैन्ह।

एक बट्टा मांसक झोर पिबैत देरी बबुआनीजी कैं खौंत फूँकि देलकैन्ह। आब ओझाजी कैं पंखा होंकैत-होंकैत बिपत्ति। माँजी ओ सुबुधमनि त सुतय चलि गेलीह। बेचारे ओझाजी सीरम मे ठाढ़ भऽ पंखा डोलबैत रहलाह। बबुआनीजीक पलंग पर बैसबाक त साहसे नहि कऽ सकैत छलाह। ठाढ़ भेल-भेल पैर भरि गेलैन्ह। ताहू पर जहाँ कनेको हाथ मंद पड़ैन्ह कि बबुआनीजी कच्छ-मच्छ करय लगथिन्ह।

रात्रि शेष भेला पर बबुआनीजीक भूत उतरि गेलैन्ह। तखन ओ स्वामी पर दृष्टि पड़ैत चिहुँकि उठलीह और अपन उघार-पघार देह कैं झँपैत बजलीह — अहाँ हमरा 'कमरा' मे ककरा हुकुम सँ ऐलहुँ? एना चुपचाप चोर जकाँ किऐक ठाढ़ छी? हम माँजी कैं जगबिऔन्ह?

घुल्लाइ झा कैं पत्नीक एकान्त शयनागार मे एना जैबाक ई प्रथमे अवसर छलैन्ह। भय सँ थरथर काँपैत बजलाह — हम अपना मन सँ नहि ऐलहुँ। माँजी पंखा होंकय कहलन्हि।

बबुआनीजी रोसा कऽ पुछलथिन्ह — अहाँ हमर उघार देह किऐक देखलहुँ?

घुल्लाइ झा अपराधी जकाँ भयभीत भऽ बजलाह — हम त.... हम त....। नीचा दिशि ताकि कऽ पंखा होंकैत छलहुँ।

बबुआनीजी तमकि कय पुछलथिन्ह — अहाँ हमरा सँ की चाहैत छी?

घुल्लाइ झा देखलन्हि जे आइ भाग्यदेवता प्रसन्न भय वरदान दऽ रहल छथि। एहन मौका फेरि नहि भेटत। अतएव अपन चिर-संचित अभिलाषा प्रकट करैत बजलाह — जौं सरकार हमरा सेवा सँ प्रसन्न छी तँ डेढ़ टके सैकड़ जे सूदि चलि रहल अछि से आधा माफ कय बारह आना कऽ देल जाओ। और हम किछु नहि चाहैत छी। आधा माफ भऽ गेने हमर उद्धार भऽ जाएत।

ई कहि घुल्लाइ झा जनउ जोड़ि कऽ ठाढ़ भऽ गेलाह। तावत सूदि शब्द कान मे पड़ैत माँजीक नीन्द टूटि गेलैन्ह। ओ बिकाड़ि उठबैत बजलीह — ओझा की बजलाह? कनेक फेर त बाजथु। निर्लज्ज ढेकरथि त आद-गुड़ माङथि! हिनके

सुलच्छनी माइक चलते हमरा आइ पचीस रुपैया दंड लागि गेल अछि। और ई ऊपर सँ घाव पर नोनक बुकनी छिटैत छथि। बड़ बापक बेटा बनि कऽ रुपैया सधावय ऐलाह अछि! बेश, जौं एहने छैन्ह त एखने बसुइ कैं सभटा सूद-मूर जोड़ि कऽ बेबाक कऽ देथुन्ह।

ई सुनैत घुल्लाइ झाक बोलती बन्द भऽ गेलैन्ह। ताहि दिन सँ पुनः कहियो सूदि घटैबाक चर्चा नहि कैलन्हि। माँजी अपना बेटी कैं सख्त ताकीद कऽ देलन्हि जे — देख, तोरा एसकरि मे पौतौक त सूद माफ करब हेतु तंग करतौक। तैं छिटकले रहल कर।

माताक आज्ञानुसार सुपुत्री जैखन स्वामी कैं देखथि कि गर्द करथि — माँजी, कहाँ छी?

दैवयोग सँ बबुआनीजी कैं गर्भ रहि गेलैन्ह। ई सुसंवाद पबितहि माँजी एक चङेरा लड्डू पीर पर चढ़ाबय गेलीह। नित्य सोहर होमय लागल। एक मास पूर्वहि बकरी कीनल गेल जे सभ दिन कऽ घुल्लाइ झा कैं चराबय पड़ैन्ह। जेना-जेना दिन लगिचाएल जाइन्ह तेना-तेना ओझाजी कैं खढ़-खूढ़ जुगबैत-जुगबैत प्रलय होइन्ह।

पूर्ण समय भेला पर बबुआनीजी कैं प्रसव-वेदना उठलैन्ह। ओझाजी चमैनिक घर पर दौड़ाओल गेलाह। आधा राति कऽ बबुआनीजी प्रसव कैलन्हि। माँजी दम्म सधने छलीह। चमैन सँ पुछलथिन्ह — बेटा कि बेटी?

चमैन कहलकैन्ह — बेटी।

आब आङन मे कुहराम मचि गेल। सबटा छार-भार जमाइक ऊपर पड़लैन्ह। माँजी हुनका दस हजार फज्झति कैलथिन्ह। ग्लानिक मारे घुल्लाइ झा दू दिन धरि किछु नहि खैलन्हि।

संयोगवश बेटीक रंग भेलैन्ह श्याम वर्ण। आब माँजी और माथ-कपार पीटय लगलीह — हमर बेटी त गोर अछि। तखन हिनके दोष सँ सन्तान कारी भेल। एकर बिवाह कोना हैतैक? ई हमरा वंश कैं चौपट कऽ देलन्हि।

आब घुल्लाइ झा कैं मुँह देखैबाक साहस नहि होइन्ह। बबुआनीजी कैं दूध नहि उतरलैन्ह। अतएव बच्चा कैं बकरीक दूध मे पिहुआ भिजा कऽ चटाओल जाइक। सेहो भार घुल्लाइ झा पर पड़लन्हि। कौखन काल औरो परिचर्या हुनके कराबय पड़ैन्ह।

एक राति बबुआनीजी नेनाक संग पलंग पर सूतल रहथि। करौट जे फेरलन्हि से नेना पिचा गेलैन्ह। बबुआनीजी करेज पर हाथ देलथिन्ह त धक्क दऽ करेज उड़ि गेलन्हि। नाक पर हाथ देलथिन्ह त साँस नदारद। ओ चुपचाप नेना कैं चादर ओढ़ा, बाहर दलान मे जा, सूतल स्वामी कैं हाथ धऽ उठौलन्हि। घुल्लाइ झा आँखि फोललन्हि त अपना आँखि पर विश्वासे नहि भेलैन्हि। बुझि पड़लैन्ह जे स्वप्न थिक। तैं पुनः मुँह झाँपि कऽ सूति रहलाह। बबुआनीजी कहलथिन्ह — उठू, हमहीं छी।

अहाँ सँ काज अछि।

चुल्हाइ झा हड़बड़ा कऽ उठलाह और स्वामिनीक पाछाँ चललाह। बबुआनीजी अपना कोठरी मे आबि कहलथिन्ह — हमरा पेट मे दर्द होइत अछि। दाइ सँ ससरचावय जाइत छी। तावत अहाँ बच्चा कैं देखैत रहियौक।

भोर भेला पर गर्द पड़ि गेल जे ओझाजी बच्चा कैं रखने छलथिन्ह से नहि जानि किदन कऽ देलथिन्ह। आब सभ केओ 'दुर छी' करय लगलैन्ह। ओझाजीक माथ पर कलंकक टीका लागि गेलैन्ह। किन्तु करथु की? बेचारे अपना पर हत्या नेने, कान पर शव उठा श्मशान गेलाह।

चुल्हाइ झा श्मशान सँ फिरि कऽ ऐलाह त बबुआनीजी कैं पुनः भूत लागि गेलैन्ह। ओ बकय लगलीह — हमर पहिलौठ पोती कैं खा गेल। आब हम ककरो बाँचय नहि देबैक। नहि त हमरा एहि ठाम सँ लऽ चली।

पुनः दुसाध भगता आएल। झाड़-फूक कैलक। देवता खेलैलक, खसी लेलक। अपना घर गेल। और कहलकैन्ह जे 'बबुआनीजी कैं तीरथ घुमा दहुन।'

आब तीर्थाटनक विचार भेल। घरक अगोरबाही सुबुधमनि पर छोड़ि माइ-धी रातो-राति गाड़ी हँका विदा भऽ गेलीह। चुल्हाइ झा पाछाँ-पाछाँ लालटेन लय चललथिन्ह।

स्टेशन पहुँचला उत्तर बैद्यनाथ धामक तीन टा टिकट कटाओल गेल। दुहू माइ-धी सेकेंड क्लास मे बैसलीह। ओझाजी मोटरी चोटरी लऽ कऽ नीकरवला डब्बा मे ठाढ़ रहलाह।

धाम पहुँचला उत्तर शिवगंगाक धर्मशाला मे डेरा पड़ल। माँजी जमाय कैं कहलथिन्ह — गर्मी सँ हमर मिजाज घुमैत अछि। पहिने हमरा सभ कैं स्नान करा देथु। तखन भानस-भातक ओरिआओन करैत रहिहथि।

ई कहि ओ दू टा फर्स्ट क्लास साड़ी बहार कय जमायक हाथ मे देलन्हि। पुनः बेटी कैं कहलन्हि — अपन सभ गहना पहिरि ले। कोन दिन लेल रहतौक?

अतएव बबुआनीजी षोडशो शृंगार बत्तीसो आभरण सँ युक्त भय, चश्मा लगाय माइक संग विदा भेलीह। माँजी एक पीताम्बरी पहिरि, रेशमी रामनामा ओढ़ि, कान मे सोन लटका, हाथ मे पितरिया फुलडाली नेने भगतीनी माइ जकाँ स्नान करय चललीह।

चुल्हाइ झा दुहू माइ-धीक साड़ी-तौलिया, साबुन-कंघी तथा अपन फटलाही धोती नेने पाछाँ-पाछाँ विदा भेलाह।

दुनू माइ-धी एक घंटा धरि शिवगंगा मे स्नान कैलन्हि। दर्शक सभ हिनका शोभा देखि छकित भऽ गेल। गुलाब ओ केवड़ाक खुशबू सँ घाट मँहमँह करय लागल। माँजी और बबुआनीजी सीढ़ी पर नूआ फेरि ऊपर ऐलीह। चुल्हाइ झा दुनू साड़ी अखारि, पानि गाड़ि, कान्ह पर धैलन्हि।

अकस्मात माँजी घोड़ा-गाड़ी सँ अपन बहिन-बहिनधी कैं उतरैत देखि ठमकि गेलीह। पुछलथिन्ह — रानीदाइ! तों कतय सँ?

रानीदाइ अपन कन्या कैं कहलथिन्ह — भवानी, अपना मौसी कैं प्रणाम कर।

पुनः बहिन दिशि ताकि बजलीह — दीदी, तोरा आशीर्वाद सँ ई बहुत नीक ठाम गेलि। जमाय बड़ सुपात्र। बाप नामी वकील छथिन्ह। हजार-दू-हजार मास मे कमाइ छथिन्ह। सासु बड्ड माने छैक। जमाय बाबू एखन वकालत पढ़ै छथि। छुट्टी छैन्ह। तैं हमरा सभ कैं कतेक ठाम घुमबैत-फिरबैत धाम पर लऽ आएल छथि। बैह गाड़ी मे बैसल छथि।

ई सुनि माँजीक सर्वांग मे बिच्छू डंक मारि देलकैन्ह। रानीदाइ बबुआनीजीक ठाटबाट देखि कहलथिन्ह — वाह! आब त ई खूब लगैत अछि। नेना मे खियौटी रहय। आब त बेस मधुना-माधव भऽ गेलि। की गै, मौसी कैं चिन्हबो करै छैं? कतेक दिन पर एकरा देखलिऐक अछि। दस वर्ष सँ कम नहि भेल हैतैक। एकरा विवाहो मे हमरा खबरि नहि देलह। वर त खूब धनिक होइथिन्ह, बड़का रईस? तैं ने ए[illegible] एतेक साज-बाज देखैत छिऐन्ह। जमाय कतय छथुन्ह? हुनका देखऽ लेल मन लागल अछि। संग मे औरो पुरुष-पात छौड़ कि ओहिना अबैत गेलीह अछि? ई ब्राह्मण देवता के छथि?

माँजी चट जमाय दिशि आँखि मारि कहलथिन्ह — ई भनसीया थिकाह। बैह संग मे आएल छथि।

पुनः बजलीह — हँ, बबुइक वर अपना स्टेटक काज देखैत छथिन्ह। चालिस-पचास हजारक आमदनी छैन्ह। दरबाजा पर हाथी छैन्ह, मोटर छैन्ह। नौकर-चाकरक कोनो कमी नहि। एकरा प्राण सँ बेशी माने छथिन्ह। तेसरा दिन पर आदमी छुटैत छैक। तैयो ओहन राजसी ठाट कैं छोड़ि अभगली छौंड़ी कैं हमरे संग दुःख काटय मे मन लगैत छैक। की गै, आब एहू बेर जैबहीक कि फेर आदमी फिरता कऽ देबहीक?

रानीदाइ कहलथिन्ह — वाह! भगवान एकरे सन भाग्य सभक करथुन्ह।

पुनः बहिन कैं कहलन्हि — दीदी, तों डेरा कतय देने छह? धर्मशाला मे किऐक रहबह? चलह, जे दू-चारि दिन रहब, संगे रहि जाएब।

ई कहि ब्राह्मण देवता कैं कहलथिन्ह — जाह, ऊपर सँ सभ सामान उठा कऽ लऽ आबह और गाड़ी पर लादह।

सभ गोटे घोड़ागाड़ी मे बैसलीह। नवीन जमाय सभ कैं प्रणाम कैलथिन्ह। चुल्हाइ झा कैं जखन पेटी-बिस्तर आदि गाड़ी पर लादल भऽ गेलैन्ह त जमाय बाबू कहलथिन्ह — बाबाजी, तों जा, ऊपर कोचमानक संग बैसह। देखिहऽ, कोनो चीज खसी नहि।

नीचा गाड़ी मे बहिन-बहिनधी गुलछर्रा उड़बैत चललीह। चुल्हाइ झा सभक भीजल साड़ी लदने कोचमानक बगल मे बैसलाह।

एक नीक बङ्लाक सामने आबि कऽ गाड़ी लागल। बबुआनीजी प्रभृति कैं त जमाय बाबू आदरपूर्वक गाड़ी सँ उतारि भीतर लऽ गेलथिन्ह। चुल्हाइ झा पेटी माथ पर लादि कऽ डेरा मे लऽ चललाह।

रानी दाइ माँजी कैं कहलथिन्ह — दीदी एतय डेरा मे भनसीया नहि छैक। तावत तोरे भनसीया सँ काज चलत। एकर नाम की छैक?

माँजी कहलथिन्ह — नाम भने त किदन छैक। हमरा लोकनि बाबाजी कहैत छिऐक।

आब माँजीक पेट मे डर होमय लगलैन्ह जे कतहु असली भेद नहि खुलि जाय। मौका पबैत चुल्हाइ झा कैं एकान्त मे लऽ जा कऽ कहलथिन्ह — देखिहथि, एहिठाम हमरा लोकनिक नाक नहि कटबिहथि। हम और बबुइ दू-चारि दिन 'बाबाजी' कहि कऽ सोर पारबैन्ह त हर्ज की? रोष नहि मानिहथि। ई त अपने सज्ञान छथि। हम की बुझबिऔन्ह?

आब ओझाजी कैं सभ केओ 'बाबाजी' बुझि अड़ाबय लगलैन्ह।

भवानी दाइ 'सेकेंड बुक' धरि पढ़ने छलीह। अतएव हुनका अङरेजिओक दाबी छलैन्ह। ओ चुल्हाइ झा कैं बात-बात मे 'फुलिश' 'स्टुपिड' कहि कऽ डाँटय लगलथिन्ह।

सन्ध्या काल कहलथिन्ह — बाबाजी, 'चौप' बनाबय अबैत छौह?

चुल्हाइ झा मुँह ताकय लगलथिन्ह। भवानी दाइ भभा कऽ हँसि पड़लीह। कहलथिन्ह — 'इडियट' जकाँ तकै छह की? माथ पर एक बोझा टीक रखने छह ताहि सँ 'ब्रेन' 'वर्क' नहि करैत छौह। दीदी! कोन जंगल सँ एहन 'डोल्ट' कैं उठा लैलह? एकरा कतेक 'पे' दैत छहीक?

चुल्हाइ झा कटि-कऽ रहि गेलाह। भवानी दाइ पुछलथिन्ह — की? चाबो बनाबय अबैत छौह की नहि? जाह, पानि गर्म कऽ कऽ नेने आबह। और एहि ठाम 'मिल्क', 'शुगर', 'टी', (दूध, दही, चीनी, चाय) सभ आनि कऽ धरह। हम सिखा दैत छिऔह। हमरा चार्ज मे तीन दिन रहह त ट्रेनिंग दऽ कऽ आदमी बना देबौह।

ई कहि भवानी दाइ मुसकुरा उठलीह। बबुआनीजी संग दैत कहलथिन्ह — तों एके दिन मे अकच्छ भऽ गेलीह। हमरा त दिन-राति एही जानवर सँ काज लेबऽ पड़ैत अछि।

भवानी दाइ पुछलथिन्ह — हिनकर विवाहो भेल छैन्ह कि कुमारे छथि? एहन बेलूरि कैं के पुछतैन्ह। की हे दीदी?

बबुआनीजी कटि कऽ रहि गेलीह। चुल्हाइ झा कैं ठाढ़ देखि आँखि कड़ा कैत कहलथिन्ह — बाबाजी, तों अपना 'ड्यूटी' पर जाह। एहि ठाम ठाढ़ भऽ कऽ हमरा सभक गप्प किऐक सुनैत छह?

चुल्हाइ झा ओहि ठाम सँ किछु हटि कऽ पानि औंटक सूर-सार करय लगलाह।

भवानी दाइ पुछलथिन्ह — की है दीदी! अपना 'हसबैंड' (स्वामी) क हाल त कहबे नहि कैलह? केहन माने छथुन्ह? खूब 'लभ' (प्रेम) करैत छथुन्ह कि नहि? हमरा त तेहन 'ओबीडिएंट' (आज्ञाकारी) भेटल छथि जे की मजाल कोनो बात अपना मन सँ करताह। जे हमर 'आर्डर' हैतैन्ह सैह करय पड़तैन्ह। एहि ठाम सँ 'कैलकटा' जैबाक प्रोग्राम अछि। ओतय एक हफ्ता रहि खूब सिनेमा-थियेटर देखब। 'ट्रामवे'मे सैर करब। 'फैन्सी' चीज सभ खरीदब। की दीदी, तोंहू चलबह?

बबुआनीजीक छाती पर आरा चलय लगलैन्ह। प्रकाश्यतः बजलीह — चलबा लेल त कोनो हर्ज नहि लेकिन हमरा त दिन मनाएल अछि। कै बेर मोटर किरि गेलैक अछि। एहि बेर जैतहि फेर मोटर पहुँचतैक। और कलकत्ता गेनाइ कोन भारी बात छैक? ओतय त एकटा खास मकाने खरीद होमय लेल छैक। तखन त साल मे छौ मास ओही ठाम रहबैक।

तावत नवीन जमाय पहुँचि गेलथिन्ह। भवानी दाइ चमकि कऽ बबुआनीजी कैं कहलथिन्ह — दीदी, ओ आबि गेलथिन। आइ सँ हुनकर सभ भार तोरे ऊपर। जाह, देखहुन गऽ।

पुनः चुल्हाइ झा दिशि देखि बजलीह — माइ गौड! (हे भगवान)! एखन धरि आँचो पजारल नहि भेलैक अछि। बाबाजी, तों बड़ धिम्मर छह। हुनका लेल चाय और फुलका बनतैन्ह।

बबुआनीजी बहिनोइक स्वागत मे गेलीह। भवानी दाइ बाबाजीक पीठ पर सवार भय, ऐस-तैस झाड़ैत, काज करबाबय लगलीह। ता घर मे जमाय बाबूक फरमाइश पर मलार उठि गेल। एम्हर चुल्हाइ झा कैं धुआँ सँ नाक फाटय लगलैन्ह।

एक घंटाक बाद बबुआनीजी तमतम करैत बहिनोइक घर सँ बहरैलीह — ऐं! एखन धरि जलखइ तैयार नहि भेलैन्ह! ओ लदुआएल पड़ल छथि। की दिऔन्हगऽ?

भवानी दाइ बजलीह — होपलेस! हमर 'कूक' (भनसीया) एहन 'स्लो' (मन्द) रहैत त बिना फाइन (जुर्माना) कैने नहि छोड़ितिऐक।

बेटीक शब्द सुनि माँजी और रानी दाइ बहरैलीह। माँजी गाल पर हाथ धरैत बजलीह — ऐं! एखन धरि जमाय बाबू कैं चाय नहि भेटलैन्ह। कहू त भला! एहि बाबाजी कैं किछु नहि उमियाइत छैक। थोड़ेक हलुओ बना कऽ त दऽ आएल रहितैन्ह।

रानी दाइ बेटी कैं कहलन्हि — गै बच्चा! हमरा साजी मे थोड़ेक मधुर हैतैक। से बाहर कऽ बौआ दाइ कैं दहिक। तावत दऽ औतैन्हगऽ।

बबुआनीजी तश्तरी मे पेड़ा-बर्फी लऽ कऽ जमाय बाबूक सेवा मे गेलीह। रानीदाइ बाबाजी कैं कहलथिन्ह — तों पानो लगैबह से हैतौह कि नहि?

चुल्हाइ झा कैं धूआँक कारण आँखि भरल छलैन्ह। ओ अङपोछा सँ आँखि पोछलन्हि और उठि कऽ पान लगाबय गेलाह।

पान लगा कऽ जहिना देबक हेतु बिदा भेलाह कि रानी दाइ डँटलथिन्ह —

बाबाजी! तों केहन भारी भुच्च छह! ओहि घर मे सारि बहनोइ, और तों धड़धड़ाएल चलि जाइत छह! पहिने खखसि लैह, तखन भीतर जाह।

चुल्हाइ झा खखास करबाक चेष्टा कैलन्हि, परन्तु मुँह सँ शब्दे नहि बाहर भेलैन्ह। तखन मौंजी जोर सँ सुना कऽ कहलथिन्ह – गे बौआ, बाबाजी पान लऽ कऽ जाइ छौक।

चुल्हाइ झा पनबट्टी लऽ कऽ भीतर गेलाह और जमाय बाबू अपन कल्ला मे पान भरि लेलन्हि। किन्तु रत्ता चबैत देरी जमाय बाबू थू-थू करैत थुकड़य लगलाह। बाबाजी कैं गारि फज्झति दैत कहलथिन्ह – 'रास्कल' कहीं का! एक मुट्ठी चूना दे दिया। यू डिजर्व टु बी बीटन (मार खाने के लायक काम किया है)।

जीभ कटैलाक कारण जमाय बाबू सी-सी करय लगलाह और बबुआनीजी अपना आँचर सँ हुनकर मुँह पोछय लगलथिन्ह।

रानी दाइ, भवानी दाइ और मौंजी सभ दौड़लि दुरुखा पर ऐलीह और बाबाजी कैं सातो पुरुषाक उद्धार करय लगलथिन्ह। रानी दाइ झट दऽ एक बोतल मधु भीतर पठा देलथिन्ह। बबुआनीजी आङुर मे मधु लऽ लऽ कऽ जमाय बाबू कैं चटाबय लगलथिन्ह। चुल्हाइ झा किंकर्त्तव्यविमूढ़ भेल ठाढ़ रहलाह। चारू कात सँ हुनका पर धिक्कारक वर्षा होमय लगलैन्ह।

मौंजी कहय लगलथिन्ह – जंगली आदमी! कहियो नीक लोकक बीच मे रहय तखन ने नीक लोकक कैदा बात बुझय।

रानीदाइ कहलथिन्ह – आब जमाय बाबू राति मे कोना खैताह? जीभ छनछनाइत हैतैन्ह।

भवानी दाइ बजलीह – एहन 'कूक' ⁖ त लगले 'डिसमिस' कऽ देबक चाही।

बबुआनीजी चुल्हाइ झा पर शान झाड़ैत कहलथिन्ह – गदहा आदमी! आब तोरा जगह पर हम दोसर आदमी राखि लेब। तोरा सँ हमरा काज नहि चलत।

एतबा दिन सहैत-सहैत चुल्हाइ झाक आत्म-सम्मान-रूपी अग्नि मिझा कऽ राख भऽ गेल छलैन्ह। ताहि छाउर मे सँ आइ एकाएक चिनगारी प्रकट भऽ गेलैन्ह।

ओ बजलाह – बेश, तखन हम चल जाइत छी।

मौंजी और बबुआनीजी विस्मय और क्रोध सँ क्षुब्ध रहि गेलीह। चुल्हाइ झाक ई धृष्टता! मौंजी गरजि कऽ कहलथिन्ह – ऐं! बाबाजी! तोहर एत गोट दर्प जे जखन मन ऐतौह तखने विदा भऽ जैबह? और कर्ज जे एहि लोकक धारने छहौक से के अदाय करतैक?

बबुआनीजी माइक पक्ष लैत बजलीह – जौं असल बापक बेटा हो त एखने देबाक कऽ देओ, नहि त टीक पकड़ि कऽ वसूल कऽ लेबैक।

पत्नीक मुँह सँ एहन 'चैलेंज' सुनि चुल्हाइ झाक ब्रह्मतेज धधकि उठलैन्ह। एकाएक बबुआनीजी कैं धरि पाँज गसिया कऽ उठा लेलथिन्ह।

एहन कल्पनातीत दृश्य देखि सभ लोक अवाक रहि गेल। बबुआनीजी पित्ते चुल्हाइ झाक देह नोचय लगलथिन्ह। अपमानक ज्वाला सँ हुनक छाती जोर-जोर सँ उधकय लगलैन्ह। किन्तु तथापि चुल्हाइ झा हुनका नहि छोड़लथिन्ह।

मौंजी चिचिऐलीह – बाप-रे-बाप! बाबाजी सनकि गेल। हमरा बेटी कैं पिचने अछि।

भवानी दाइ चिचिया उठलीह – 'रेप! रेप!' (बलात्कार!)

हल्ला सुनि चारू कात सँ लोक जमा भऽ गेल। चुल्हाइ झा पर तत मारि पड़ल जे ओ बेदम भऽ कऽ बबुआनीजी कैं नेने-देने मुँहे भरे खसि पड़लाह। बबुआनीजी तर मे किकियाय लगलीह और ओझाजीक पीठ पर लाठी बजरय लागल।

जखन चुल्हाइ झा बेहोश भऽ गेलाह तखन बबुआनीजी तर सँ कोनो-कोनो तरहें खींचि कय बाहर कैल गेलीह। हुनक साड़ी चिरी-चिरी भऽ गेल छलैन्ह और छाती परक चेन टूटि कऽ दाना छिड़िया गेल छलैन्ह। बेटीक एहन बेइज्जती देखि मौंजी क्रोध सँ बताहि भऽ गेलीह।

तावत नवीन जमाय पुलिसक आदमी कैं नेने ऐलाह। ओ चुल्हाइ झा कैं पकड़ि कऽ थाना लऽ जाय लगलैन्ह। तखन चुल्हाइ झा सभक आगाँ मे असली रहस्य प्रकट कैलन्हि। बबुआनीजीक भंडा फूटि गेलैन्ह।

भेद खुजितहि मौंजी कैं चाउन्हि आबि गेलैन्ह और बबुआनीजी कैं भूत लागि गेलैन्ह। रानी-भवानी मौंजीक उपचार मे लगलीह और नवीन जमाय बबुआनीजीक माथ पर गंगाजलक फोहारा देबय लगलथिन्ह।

एम्हर चुल्हाइ झा अपन मुग्धबोध व्याकरण समेटि अपना घरक बाट धैलन्हि।

डेउढ़ी पहुँचला उत्तर मौंजी कइएक बेरि चुल्हाइ झा कैं बजैबाक हेतु आदमी पठौलथिन्ह। परन्तु चुल्हाइ झा पुनः ओहि मृगमरीचिका मे नहि फँसलाह।

बबुआनीजी खिसिया कऽ हुनका पर नालिश दायर कैने छथिन्ह और मौंजी अपना सुपुत्री कैं प्रोत्साहन दैत छथि जे जौं ओहि बाभनक डीह-डाबर पर्यन्त नीलाम नहि करौलह त तों असल बापक बेटी नहि।

एम्हर चुल्हाइ झा श्यालग्राम छोड़ि, शालग्रामक पूजा करैत छथि और विपथगाक स्थान मे त्रिपथगाक सेवा मे चित्त लगौलन्हि अछि।

आब बिनु पढ़नहि हुनका मुग्धबोध भऽ गेल छैन्ह। किऐक त दुर्गापाठ करैत काल ओ नित्य जप करैत छथि जे –

वीर्यं देहि, बलं देहि पौरुषं स्वावलम्बनम्।
न देहि श्वशुरागारे, स्त्रीमुखापेक्षिजीवनम्।।

□

धर्मशास्त्राचार्य

महामहोपाध्याय पं. धुरन्धर शास्त्री धर्मशास्त्रक कट्टर अनुयायी छलाह। ओ सभ कार्य स्मृतिक अनुसारे करैत छलाह। षट्कर्मी तेहन, जे जारनो कैं बिनु धोएने भानस मे नहि जाय दैत छलाह। नित्य अरबे-अरबान भोजन। अछिंजलक व्यवहार। कहियो फलाहार, कहियो पंचगव्य। ककरो सँ बिनु त्रुटि भेलैक कि लगले प्रायश्चित्त। हुनका ओहि ठाम चीनी-गुड़ सँ बेशी बालुए-गोबरक खर्च छलैन्ह।

शास्त्रीजीक धर्मशास्त्र सँ लोक त्राहि-त्राहि करैत रहैत छल। जहाँ केओ एक रत्ती चिरचिरिओ पारलक कि — हुम्! न चैव प्रलिखेद्भूमिम्। ककरो खढ़ो खोंटैत देखलथिन्ह त — हुम्! न छिन्द्यात् करजैस्तृणम्। केओ गुनगुनैयो कैल त — हुम्! न नृत्येदथवा गायेत्। ककरो पैरो सेदैत देखलथिन्ह त — हुम्! न च पादौ प्रतापयेत्।

एवं प्रकारें जैह कार्य लोक करौ ताही मे हुम् कऽ कऽ टोकि दैत छलथिन्ह और कोनो-ने-कोनो वचन पढ़ि दैत छलथिन्ह। ई 'हुम्' सभक होश गुम कैने रहैत छल।

विद्यार्थी कैं त प्रत्येक बात मे हुथाड़ सहय पड़ैत छलैन्ह। कोन तरहें, तकर दृष्टान्त लियऽ।

एक गदाधर नामक विद्यार्थी रहथिन्ह। पढ़बाक हेतु लग मे बैसलथिन्ह। शास्त्रीजी टोकलथिन्ह — हुम्! ई बैसब अशुद्ध भेलौह। कारण जे —

प्रतिवातेऽनुवाते च नासीत गुरुणा सह। — मनु

एखन जे बसात बहैत छैक से तोरा दिशि सँ हमरा दिशि आबि रहल अछि। अतएव ओहि ठाम सँ उठि जाह।

गदाधर उठि कऽ दोसरा दिशि जाय लगलाह कि शास्त्रीजी फेर टोकलथिन्ह — हुम्। इहो अशुद्ध किऐक त —

देवतानां गुरोराज्ञः स्नातकाचार्ययोस्तथा।

नाक्रमेत् कामतश्छायां बभ्रुणोदीक्षितस्य च।। — मनु

गुरुक छाया नाँघि कऽ चलबा मे दोष होइत छैक।

गदाधर फराक भऽ कऽ एक कात जा बैसलाह कि शास्त्रीजी पुनः टोकलथिन्ह — हुम्! इहो अशुद्ध भेलौह। कारण जे तों आब अनुवात सँ प्रतिवात मे आबि गेलाह। अर्थात् हमर बसात तोरा दिशि जैतौह। तैं ओहू ठाम सँ उठि जाह।

तावत एक बिलाड़ि दुनू गोटाक बीच दऽ कऽ छड़पैत चलि गेलैन्ह।

शास्त्रीजी कहलथिन्ह — बस, आब एक अहोरात्रक अनध्याय भऽ गेलौह। किऐक त —

पशुमण्डूकमार्जारश्वसर्पनकुलाखुभिः।

अन्तरागमने विद्यादनध्यायमहर्निशम्।। — मनु

यदि गुरु शिष्यक बीच दऽ कऽ बिलाड़ि वा बेङ आदि जन्तु निकलि जाय त ओहि दिन अध्ययन वर्जित। अतएव ग्रन्थ बंद करह।

गदाधर कैं चौबीस घंटाक छुट्टी भेटि गेलैन्ह। किन्तु संगहि संग एकटा बखेड़ो लागि गेलैन्ह। शास्त्रीजी कहलथिन्ह — बिलाड़ि तोरा देह मे ठेकि गेल छलौह। अतएव तोरा स्नान करय पड़तौह। किऐक त लिखैत छैक जे —

अभोज्यसूतिकाषण्डमार्जाराखुश्वकुक्कुटान्।

संस्पृश्य शुध्यति स्नानादुदक्या ग्रामशूकरौ।। — मनु

बिलाड़ि, मूस आदिक स्पर्श भेला सन्ताँ स्नान कैने शुद्ध हो।

गदाधर पोखरि सँ स्नान कऽ कऽ ऐलाह त गुरु पूजापर बैसल रहथिन्ह। शंख दीप लाबक हेतु कहलथिन्ह। गदाधर शंख आनि कऽ आगाँ मे राखि देलथिन्ह।

पं. जी हाँ-हाँ करैत बजलाह — हुम्! तों आब अग्रिम जन्म मे कोढ़ी हैबह।

गदाधर कानय लगलाह।

शास्त्रीजी कहलथिन्ह — हम शाप नहि दैत छिऔह। ई ब्रह्मवैवर्त्त पुराणक वचन छैक — भूमौ शंखं च संस्थाप्य कुष्ठं जन्मान्तरे लभेत्। शंख कै भूमिपर रखने जन्मान्तर मे कुष्ठ-व्याधि सँ पीड़ित हो।

गदाधर भयभीत भऽ शंख उठा माथपर राखि लेलन्हि।

शास्त्रीजी कहलथिन्ह — ओकरा पीढ़ी पर राखह और दीप लेसि कऽ लाबह।

गदाधर दीप लेसि कऽ लैलाह और एक कात मे राखि देलथिन्ह।

शास्त्रीजी बजलाह — हुम्! हुम्! तों आब सात जन्म धरि आन्हर होएबह। किऐक त लिखैत छैक जे —

भूमौ दीपं योऽर्पयति सोऽन्धः सप्तसु जन्मसु। — ब्रह्मवैवर्त्त

भूमि पर दीप रखने सात जन्म आन्हर हो। दीप तर एकटा खढ़ राखि दितहौक त बाँचि जैतह।

गदाधर फूक दऽ दीप कैं मिझौलन्हि।

शास्त्रीजी कहलथिन्ह — हुम्! हुम्! हुम्! ई की कैलक? आब तोरा सात जन्म धरि भगजोगनीक योनि मे जन्म लेबय पड़तौह। किऐक त लिखैत छैक जे —

कूष्माण्डच्छेदिका नारी, दीपनिर्वापकः पुमान्।

वंशच्छेदमवाप्नोति खद्योतः सप्तजन्मसु।। —स्मृतिसंग्रह

स्त्री कुम्हर काटय त कुलक नाश करय और पुरुष दीप मिझाबय त सात जन्म भगजोगनी हो।

गदाधर कैं एतबे काल मे पन्द्रह जन्मक हिसाब लागि गेलैन्ह। भय सँ थर-थर काँपय लगलाह।

तावत शास्त्रीजी हुनक फाटल ठोर मे कनेक घी लागल देखलथिन्ह। पुछलथिन्ह – ई घृत कतय सँ लैलह?

विद्यार्थी डेराइत-डेराइत उत्तर देलथिन्ह – अपनेक घुक्की मे सँ।

शास्त्रीजी कहलथिन्ह – हुम्! आब तोरा सेपनौर भऽ कऽ जन्म हैतौह। किएक त लिखैत छैक जे –

धान्यं हृत्वा भवेत्याखुः कांस्यं हंसो जलं प्लवः।
मधु दंशः पयः काको रसं श्वा नकुलो घृतम्।। –मनु

दूध चोरौने कौआ, रस चोरौने कुक्कुर और घृत चोरौने सेपनौरक कोखि मे जन्म होइक।

विद्यार्थी गुरुक पैर धय कहलथिन्ह – आब हमर उद्धार कैल जाओ।

शास्त्रीजी हुम्! हुम्! करैत कहलथिन्ह – इहो अशुद्ध भेलौह। किएक त लिखलकैक अछि –

व्यत्यस्तपाणिना कुर्यादुपसंग्रहणं गुरोः।
सव्येन सव्यः स्प्रष्टव्यः दक्षिणेन च दक्षिणः।। – मनुस्मृति

गुरुक वाम चरण कैं वाम हस्त और दक्षिण चरण कैं दक्षिण हस्त सँ स्पर्श करक चाही।

गदाधर शास्त्रोक्त पद्धति सँ गुरुक चरणस्पर्श कैलन्हि। शास्त्रीजीक दुनू हाथ मे पूजाक फूल रहैन्ह। अतएव माथक संकेत सँ आशीर्वाद दैत कहलथिन्ह – शुभं भूयात्। तावत शास्त्रक वचन मन पड़ि गेलैन्ह –

पुष्पहस्तः पयोऽहस्तस्तैलाभ्यङ्गो जले तथा।
आशीःकर्ता नमस्कर्त्ता भवेतां पापभागिनौ।। –स्मृतिसंग्रह

हाथ मे फूल अछैत जे प्रणाम वा आशीर्वाद करथि से पापभागी होथि। बस, लगले शास्त्रीजीक मुद्रा बदलि गेलैन्ह। विद्यार्थी कैं धुरैत कहलथिन्ह – हौ भुसकौल! जखन हमरा हाथ मे फूल छल तखन प्रणाम किऐक कैलह? तोरा आशीर्वाद देने आब हमरो माथपर पाप चढ़ि गेल। तों अपनो गेलाह और संगे-संग हमरो लेलह!

तावत गदाधर कैं छींक भेलैन्ह। शास्त्रीजी कहलथिन्ह – हुम्! हुम्! दहिन कान छुबह। किऐक त –

क्षुते पतितसंभाषे दक्षिणश्रवणं स्पृशेत्। –शातातपस्मृति

छिका भेला उत्तर तुरन्त दक्षिण कान स्पर्श करक चाही।

गदाधर अपन कान धैलन्हि तथापि शास्त्रीजी नहि छोड़लथिन्ह। कहलथिन्ह – तकै छह की? धोती बदलि कऽ आचमन करह गऽ। किऐक त वृद्ध-शातातप कहैत छथि –

क्षुत्वा निष्ठीव्य वासं तु परिधायाचमेत् बुधः।
कुर्यादाचमनं स्पर्शं गोपृष्ठस्यार्कदर्शनम्।।

गदाधर त ई सभ करय गेलाह। ओम्हर शास्त्रीजी भोजन करय बैसलाह। सुलबाहिक कारणे एक मुट्ठी मड़गिल भात ओ केराक साना मात्र खैलन्हि।

पं. जी कैं मंदाग्नि रहैन्ह। किन्तु विद्यार्थी बुद्धिक मंद रहलो उत्तर जठराग्निक तीव्र रहथिन्ह। जखन गदाधर भोजन करय बैसलाह त पं. जी देखलथिन्ह जे आगाँ मे तीन पाव चाउरक भात, राहड़िक दालि, कदुरक तरकारी और मरचाइक अँचार। ई देखितहि पं. जी कैं फूकि देलकैन्ह। विद्यार्थीक एहन धृष्टता!

पं. जी हुनका रेड़ि कऽ सोझ करय लगलाह – हुम्! हुम्! मनुजी लिखैत छथि – हीनान्नवस्त्रवेषः स्यात्सर्वदा गुरुसन्निधौ। विद्यार्थी कैं सर्वदा गुरु सँ न्यून भोजन करक चाही। हमरा लोकनि छुच्छ भात खा कऽ फक्किका पढ़ने रही। गर लागय त दालिक जल सँ कण्ठ सिक्त कय ली। और तरकारी त भोजनान्त मे कनेक जीभ दगवा लेल होइत छैक। परन्तु हिनका ने देखिऔन्ह। ग्रास-ग्रास मे तरकारी और ऊपर सँ अँचारो! हिनका के एतेक परसि देलकैन्ह अछि? काल्हि सँ ई हमरा अध्यक्षता मे बैसि कऽ भोजन कैल करथु।

गदाधर कैं गरा बकौर लागि गैलैन्ह। मुँहक कौर ने घोंटैत बनैन्ह ने उगिलैत। जहाँ ओ परसन लितथि तहाँ बेचारे कैं सानलो भात छोड़ि कऽ उठि जाय पड़लैन्ह।

ओही राति गदाधर अपन बस्ता समेटि घसकलाह।

एवं प्रकारे जे विद्यार्थी आबथि से थोड़बे दिन मे अपना घरक बाट धरथि।

परन्तु पंडिताइन कतय जाथु ? पं. जीक सम्पूर्ण धर्मशास्त्रक भार हुनके सहियारक पड़ैत छलैन्ह। आइ रवि कैं अनोना, त काल्हि सोम कैं सोमवारी। परसू एकादशीक उपवास, त चारिम दिन द्वादशीक पारण। एवं प्रकार तीसो दिन, बारहो मास, किछु ने किछु टंट-घंट लगले रहैत छलैन्ह।

ताहि पर भक्ष्याभक्ष्यक विचार त और जान मारैत छल। पड़िब कैं कुम्हर नहि। द्वितीया कैं परोर नहि। तृतीया-चौठ कैं मुरइ नहि। पंचमी कैं बेल नहि। इत्यादि।[1]

एहि हिसाब-किताब मे जहाँ कनेको गड़बड़ भेलैन्ह कि मचय महाभारत।

एक दिन पंडिताइन अपना मन सँ खीर-पूड़ी बनौलन्हि। जखन पं. जीक थारी मे पड़लैन्ह त खाइत-खाइत पुछलथिन्ह – वाह! बेश स्वादिष्ट भेल अछि। कोन देवताक निमित्त बनौने छलहुँ?

पंडिताइन उत्तर देलथिन्ह – ओहिना अपने सभ लेल बनल छैक।

---

१. प्रतिपत्सु च कूष्माण्डमभक्ष्यमर्थनाशनम्।
द्वितीयायां पटोलंच शत्रुवृद्धिकरं परम्।
तृतीयायां चतुर्थ्यांञ्च मूलकं धननाशकम्।
कलङ्ककारणञ्चैव पञ्चम्यां बिल्वभक्षणम्।

पं. जी बजलाह – जाउ! तखन त प्रायश्चित्त लागि गेल। किएक त शंखमुनि कहैत छथि जे –

> वृथा कृषरसंयावपयसापूपशष्कुलीः।
> भुक्त्वा त्रिरात्रं कुर्वीत, व्रतमेतत् समाहितः।।

बिना निमित्तक खीर-पूड़ी खा लेने आब त्रिरात्रक व्रत करय पड़त।

फलतः जे-जे लोकनि खीर-पूड़ी खैने रहथि तनिका सभ गोटा कैं चालुगोंयर गिड़य पड़लैन्ह।

पंडिताइन पर केहन कठोर अनुशासन रहैन्ह तकर दृष्टान्त लियऽ। जाड़कालक राति रहैक। पंडिताइन पोआरक सेजौटपर सूतलि रहथि। आधा राति कऽ एक बिलाड़ म्यों-म्यों करैत आएल और पंडिताइनक सीरक तर सन्हिया गेलैन्ह। भरि राति हुनके संग गरमा कऽ सूतल रहलैन्ह।

प्रातःकाल जखन पं. जी कैं ई समाचार विदित भेलैन्ह त गंभीर भाव सँ पंडिताइन कैं कहलथिन्ह – आब अहाँक सतीत्व भंग भऽ गेल। आइ सँ भानस मे जुनि जाउ। पंडिताइन पुछलथिन्ह – से हमरा की भेल अछि?

पं. जी – अहाँक पातिव्रत्य धर्म नष्ट भऽ गेल।

स्त्री – हमर धर्म कोना नष्ट भेल?

पंडित और किछु सहन कय सकैत छथि किन्तु अपना वचनक खण्डन नहि सहन कय सकैत छथि। ताहू मे स्त्रीक मुँह सँ। पत्नीक मुँह सँ प्रश्न सुनैत देरी महामहोपाध्यायक वीर-मुद्रा जागल। बजलाह – तखन शास्त्रार्थ कऽ लियऽ –

किं नाम सतीत्व लक्षणम्? परपुरुषसंसर्गाभावः। मार्जारस्तु पतिभिन्नः। तस्य तूलकशयने शरीरसंयोगः। अत्राक्षिप्येत। 'कथं नाम मार्जारस्य जारत्वम्? पशोः नार्यां गमनाशक्यत्वात्।' इति चेन्न। नृपशुसम्बन्धसम्भवात्। यथाऽश्वमेधे। छद्मवेषे देवागमनसंभवाच्च। यथेन्द्राचन्द्रमसोः। उभयथा व्यभिचारशङ्का। व्यभिचाराभाव-प्रमाणानुपपत्तेः।

पुनः कहलथिन्ह – अहाँ ई सभ की बुझबैक? सोझेसोझ बूझू जे आब अहाँ 'धर्मपत्नी' नहि रहलहुँ। 'पत्नुनो यज्ञ संयोगे।' से कोनो यज्ञकार्य आब हमरा संग बैसि

> नारिकेलफलं भक्ष्यमष्टम्यां बुद्धिनाशनम्।
> तुम्बी नवम्यां गोमांसं दशम्याञ्च कलम्बिका।
> त्रयोदश्यां तु वार्ताकीभक्षणं पुत्रनाशनम्। –ब्रह्मवैवर्त्त

अर्थात पड़िब कैं कुम्हर खैने धनक नाश हो; द्वितीया कैं परोर खैने शत्रुक वृद्धि हो। तृतीया-चौठि कैं मुरइ खैने धनक नाश हो। पंचमी कैं बेल खाइ त कलंक लागय। अष्टमी कैं नारिकेर खाइ त बुद्धि भ्रष्ट हो। नवमी कैं सजमनि और दशमी कैं करमीक साग महापापकारक हो। त्रयोदशी कैं भाँटा खाइ त पुत्रनाश हो। इत्यादि।

कय अहाँ नहि कय सकैत छी।

पंडिताइन बजलीह – परन्तु हम की कैलहुँ अछि?

पं. जी रुष्ट होइत कहलथिन्ह – पुनः अहाँ तर्क करय लगलहुँ। हम जे कही से आँखि मूनि कऽ मानने जाउ। अहाँ क्षेत्रक्षेम करय लगैत छी तैं पुत्र नहि होइत अछि। और अपुत्रस्य गतिर्नास्ति। अहाँ पुत्र प्रसव नहि करब त हमरो नरक मे जाय पड़त। पुम् नाम नरकात् त्रायते इति पुत्रः। अहाँक चलते हमरो गति नहि हैत। पुत्रार्थे क्रियते भार्या। जखन अहाँ सँ पुत्रे नहि भेल तखन फल कोन?

पंडिताइन विषण्ण होइत बजलीह – तखन एहि मे हमर कोन दोष?

पं. जी कहलथिन्ह – दोष ईह जे अहाँ पुत्रप्राप्तिक हेतु पूर्ण यत्न नहि करैत छी।

स्त्री – कोना यत्न करू?

पं. जी – शालिवाहनक बेटा जीमूतवाहनक पूजा करू।[1] कार्तिक मे आकाश दीप लेसू।[2] अपना पितामहक पिंड खाउ।[3]

जखन पंडिताइन बहुत कनलीह-कलपलीह त पं. जी कहलथिन्ह – बेश, जाउ एक तप्तकृच्छ्र पर अहाँ कैं स्वस्ति दऽ दैत छी।

स्त्री – तप्तकृच्छ्र की?

पं. जी – शास्त्रक वचन छैक –

> त्र्यहमुष्णं पिबेत्तोयं त्र्यहमुष्णं घृतं पिबेत्।
> त्र्यहमुष्णं पयः पीत्वा वायुभक्ष्यस्त्र्यहं भवेत्।। –शंखस्मृति।

तीन दिन गर्म पानि पीबि कऽ रहय पड़त। तीन दिन गर्म घी पीबि कऽ रहय पड़त। तीन दिन गर्म दूध पीबि कऽ रहय पड़त। और तीन दिन धरि केवल बसात पीबि कऽ रहय पड़त। तखन आ कऽ शुद्ध हैब।

एवं प्रकारें पंडिताइनक प्रायश्चित्त भेलैन्ह।

ई बात प्रायः अनुभवसिद्ध अछि जे अधिक पूजा-पाठ करयवला पंडित कैं कन्या अधिक होइ छैन्ह, बालक कम। एहू पं. जी कैं पाँच टा कन्ये मात्र छलथिन्ह, जनिक ओ पंचकन्या नाम धैने छलाह। पंचकन्या मे अहल्या, द्रौपदी, तारा विवाहिता छलथिन्ह, कुन्ती, मन्दोदरी कुमारि।

---

१. शालिवाहनराजस्य पुत्रो जीमूतवाहनः।
तस्यां पूज्यः स नारीभिः पुत्रसौभाग्यलिप्सया। –भविष्यपुराण

२. यस्तु केशवमुद्दिश्य दीपं दद्यात्तु कार्तिके।
आकाशस्थं ज्वलन्तं च शृणु तस्यापि यत्फलम्।
धनधान्यसमृद्धस्तु पुत्रवानीश्वरो भवेत्।। –वर्षकृत्य

३. मध्यमं तु ततः पिंडमद्यात् सम्यक् सुतार्थिनी। –मनुस्मृति

एक बेर माघ मास छोटका जमाय ऐलथिन्ह। कर्मकांडीक जमाय कैं सासुर मे जेहन सुख भेटैत छैन्ह से भुक्तभोगीए जनैत हेताह। जमाता महोदय कैं पद-पद पर विपत्ति होमय लगलैन्ह।

राति मे सँचार लगलैन्ह और गीत होमय लगलैन्ह। जमाय कैं दालि मे घृत ढारव बिसरि गेलैन्ह। पाछाँ दू-एक कौर खैला पर मन पड़लैन्ह।

दुर्भाग्यवश ओही समयमे श्वसुर महोदय भोजनक निरीक्षण करय हेतु पहुँचि गेलथिन्ह। ऐंठ मे घृत पड़ैत देखि पं. जीक क्रोधाग्नि भभकि उठलैन्ह। बजलाह — हुम्! फेकथु-फेकथु। उच्छिष्ट मे घृत खाएब गोमांस-भक्षण तुल्य थिक।

ताम्रपात्रे पयः पानमुच्छिष्टे घृतभोजनम्।

दुग्धं लवणसार्धंच, सद्यो गोमांसभक्षणम्।। –ब्रह्मवैवर्त्त

आब जमाय कोना खैतथि? बेचारे अप्रतिभ भऽ पानि पीबय लगलाह। ई देखतहि पं. जी पुनः टोकलथिन्ह — हुम्! हुम्! नष्ट कैल। आब सभ धर्म सँ बहिष्कृत भऽ गेलहुँ। कारण जे —

उत्थाय वामहस्तेन तोयं पिबंति यो नरः।

सुरापी स च विज्ञेयः सर्वधर्मबहिष्कृतः।। –ब्रह्मवैवर्त्त

बाम हाथ सँ उठा कऽ जल पिउनाइ मद्य पिउनाइ थिक।

जमाय तुरन्त गिलास मुँह सँ फराक कय नीचा रखलन्हि। तावत पं. जीक दृष्टि सँचार पर गेलैन्ह। तामक सराइ मे भँटबर परसल रहैन्ह जाहि मे सँ थोड़ेक खोंटि कऽ जमाय खैने रहथिन्ह। ई देखि पं. जी क्रोधान्ध भऽ गेलाह। बजलाह— हुम्! हुम्। हुम्! अपने जे कौर मुँह मे देल अछि से विष्ठे देल अछि। अत्र प्रमाणम्—

भोजनं ताम्रपात्रेषु जलपात्रं च वामतः।

ग्रासे-ग्रासे मलं भुङ्क्ते तज्जलं सुरया समम्।। –ब्रह्मवैवर्त्त

ताम्र पात्र सँ भोजन कैने प्रत्येक ग्रास मे मलभक्षणक फल हो। आब अपनेक पुनः यज्ञोपवीत संस्कार हैत तखन ब्राह्मण बनब। कारण जे मनुजी कहै छथि —

अज्ञानात् प्राश्य विण्मूत्रं सुरासंस्पृष्टमेव च।

पुनः संस्कारमर्हन्ति त्रयो वर्णा द्विजातयः।।

अज्ञानकृत मल-भक्षण कैने पुनः उपनयन आवश्यक। तावत अपने शूद्र कोटि मे रहब।

पं. जी अपने सँ ठाढ़ भऽ कऽ सभटा सँचार पछुआर मे फेकबौलन्हि। पंचकन्या कैं बजा कय कहलथिन्ह — देखह। ओझा कैं यावत पुनः संस्कार नहि होइन्ह तावत पर्यन्त तोरा लोकनि हिनका सँ कोनो प्रकारक सम्पर्क नहि रखैत जाह।

आब ओझा राति मे भीतर कोना सुततह? पं. जीक आदेशानुसार बहरघरा मे ओछाओन कऽ देल गेलैन्ह। ओझा मुँह विधुऔने सूतय गेलाह। निन्द किऐक पड़तैन्ह? हुनका कच्छमच्छ करैत देखि अहल्या दाइ गेलथिन्ह। पुछलथिन्ह — की ओझा, कोनो बातक कष्ट त नहि अछि?

ओझा एक टा मच्छर मारैत बजलाह — एहिठाम बड़ कटैत छैक।

अहल्या अपना पिता सँ ई समाचार कहय गेलीह। पुछलथिन्ह — ओझाक की व्यवस्था कैल जाउन्ह?

पं. जी कैं बुझि पड़लैन्ह प्रायश्चित्तक व्यवस्था। कहलथिन्ह — मशक कैं मारलन्हि अछि त एक शूद्रवधक प्रायश्चित्त करा दहुनगऽ। किऐक त मनुजीक वचन छैन्ह — पूर्णेचानस्यनस्थ्नां तु शूद्रहत्याव्रतं चरेत्। मच्छड़ कैं हड्डी नहि होइत छैक तैं केवल शूद्रहत्याक दण्ड लगतैन्ह।

पं. जी स्वयं जामाताक व्यवस्था करबाक हेतु चललाह। जमाय पूब मुँहे सूतल रहथिन्ह। ई देखि पं. जी कहलथिन्ह — हुम्! हुम्! अपने कोना सूतल छी? खाट कैं दक्षिण सीर कऽ सेज जाओ। किऐक त — स्वगृहे प्राक्शिराः स्वप्यात् श्वासुरे दक्षिणा शिराः। अपना घर मे पूब मुँहे सूती, किन्तु सासुर मे आबि कऽ दक्षिण मुँहे सुतबाक चाही।

जमाय मने-मन कुफरैत खाट घुमाबय लगलाह। ता द्रौपदी आबि कऽ बजलीह — ओझाजी कैं सोनक औंठी छलैन्ह से आइ हेरा गेलैन्ह।

पं. जी कान पर हाथ धरैत बजलाह — शांतं पापम्। आब जतबा भरि सोन छलैन्ह ततबा और अपना दिशि सँ दान करय पड़तैन्ह। किऐक त —

प्रमादतस्तु यन्नष्टं तावन्मात्रं नियोजयेत्। –द्वैत परिशिष्ट

कुन्ती टुभ दऽ बाजि उठलथिन्ह — और सोन छैन्हे कहाँ जे दान करताह?

पं. जी बजलाह — तखन सोन चोरैबाक दण्ड लगतैन्ह। किऐक त लिखैत छैक जे —

अन्यथा स्तेयभागी स्याद्धेम्न्यदत्ते विनाशिनि। –द्वैत परिशिष्ट

नहि दान करय त चोर बुझल जाय।

मन्दोदरी पुछलथिन्ह — सोन चोरैबाक दण्ड की छैक?

पं. जी बजलाह — सोन चोरैबाक असल दण्ड त छैक मुसरक मारि।

गृहीत्वा मुशलं राजा सकृद्धन्यात्तु तं स्वयम्। –मनु

राजा अपने हाथ सँ मुसर लऽ कऽ चोट सहियारि कऽ लगाबथ। किन्तु हिनका हेतु काष्ठा वचन देखा दैत छिऐन्ह।

ब्राह्मणः स्वर्णहारी तु रुद्रजापी जले स्थितः। –याज्ञवल्क्य

ई जल मे ठाढ़ भय शतरुद्रीक जप करथुगऽ तखन जा कऽ शुद्ध हेताह।

ई व्यवस्था दय पं. जी सूतय गेलाह।

जखन एक पहर राति बाँकी रहैक तखन पं. जी जमाय कैं शतरुद्री जपबाक हेतु जगबय गेलाह। किन्तु जमाय त दुपहरिए राति कऽ अन्तःपुर प्रवेश कऽ गेल रहथिन्ह।

पं. जी कैं पंचकन्याक षड्यंत्र बुझा गेलैन्ह। दौड़ल आङन गेलाह। स्त्री कैं

पुछलथिन्ह — हुनका के भीतर लऽ गेलैन्ह?

पंडिताइन त डरें अवाक।

पं. जी बजलाह — तखन अवश्ये अहूँक संङ छल हैत। एखने हुनका महाश्‍ढी जप करबाक समय छलैन्ह से... से... से... आब हुनका संसर्ग सँ कन्यो दूषित भऽ गेलि हैत। अहल्या द्रौपदी कतय अछि?

पंडिताइन कहलथिन्ह — एखने त ओहि घर मे लऽ गेल छैन्ह।

पं. जी क्रुद्ध भय बजलाह — तखन ओकरो सभ कैं एक-एक चरण लागि गेलैक। किएक त परपुरुष कैं देह धऽ कऽ जगैबा मे त अंगस्पर्श भइए गेल हैतैक। अहूँ हमरा सँ छल कैलहुँ। आब सभ गोटा कैं प्रायश्चित्त करय पड़त। और आइ सँ ओझा हमरे लग सुतताह।

ई कहि पं. जी गो-मूत्रक खोज मे बहरैलाह। जमाय घर मे दम सधने छलथिन्ह। ससुरक जैतहि मौका भेटि गेलैन्ह। अन्हारे मे चुपचाप चोर जकाँ घर सँ बाहर भय छान-पगहा तोड़ि पड़ैलाह।

एवं प्रकारें पं. जीक ओहिठाम जे सर-कुटुम्ब अबैत छलथिन्ह तनिका पड़ाइत बाट नहि सुझैत छलैन्ह।

दैवयोगवश पं. जी कैं एकटा पट्टशिष्य भेटि गेलथिन्ह — सत्यदेव। पं. जी हुनका सदाचार-शिक्षा देबय लगलथिन्ह। आह्निक कृत्य सँ प्रारम्भ भेलैन्ह। सायंकाल सत्यदेव लोटा लऽ कऽ बाह्यभूमि दिशि गेलाह। किन्तु कतहु बैसबा योग्य भूमि नहि भेटलैन्ह। किऐक त पुरीषोत्सर्गक विधि मे पढ़ने छलाह —

> न देवायतने वृक्षमूले न च जले नदे
> न नदीकूपमार्गेषु न वापी गोष्ठभस्मसु
> न चिताग्निश्मशानेषु नोषरे न द्विजालये
> नाम्भः समीपे न पुण्ड्रे नाकाशे न च शाद्वले
> न शस्यक्षेत्रे न खले पुष्पोद्याने न चत्वरे
> न फालकृष्टकेदारे न तिष्ठंश्च कदाचन
> न गोव्रजे नदीतीरे निलयस्थाने न गोमये
> द्विजो न देहच्छायायां शकृन्मूत्रविसर्जनम्
> कुर्याद् यद्वेष्टकाकूटे न च शस्त्राग्निगर्त्तके। —पद्मोत्तरखण्ड

एहि वचनावलीक अनुसार सत्यदेव ने ऊसर भूमि मे बैसि सकैत छलाह, ने जोतल मे। ने खेत मे, ने कलम मे। ने गाछ तरं, ने मैदान मे। ने डीह-डाबर मे, ने खाइ खत्ता मे। ने पोखरि दिशि, ने नदी दिशि। तखन बैसथु कतय? फिरल-फिरल गुरुक आश्रममे आबि किंकर्तव्यविमूढ़ भऽ ठाढ़ रहि गेलाह। एहन आदर्श शिष्य पाबि गुरु कृतकृत्य भऽ उठलाह।

दोसरा दिन दन्तधावनक प्रकरण पढ़ौलथिन्ह। सत्यदेव भोरे उठि कोनो कार्यवश

आङन गेलाह। अहल्या द्रौपदी दातमनि करैत रहथि। सत्यदेव पुछलथिन्ह — अहाँ दुनू गोटाक स्वामी परदेश छथि। तखन दातमनि किऐक करैत छी?

> गते देशान्तरे पत्यौ गन्धमाल्याञ्जनानि च।
> दन्तकाष्ठं च ताम्बूलं वर्जयेद्वनिता सती।। —स्मृतिरत्नाकर

पति विदेश मे रहथि तखन दन्तकाष्ठ नहि करक चाही।

ई सुनितहि दुनू युवती खिलखिला उठलीह। सत्यदेव क्षुब्ध होइत बजलाह — यदि एहि वचन मे सन्देह हो त दोसर प्रमाण लियऽ —

> श्राद्धे यज्ञे च नियमे तथा प्रोषितभर्तृका।
> रजस्वला सूतिका च वर्जयेद्दन्तधावनम्।। —नित्यकृत्यार्णव

गुरुआइनो मुँह धोइत रहथिन्ह। कहलथिन्ह — हौ सत्यदेव। तों त दुइए दिन मे पंडित भऽ गेलाह।

सत्यदेव बजलाह — हाँ, हाँ! एखन बजने दोष हैत। किऐक त —

> पुरीषे मैथुने होमे प्रस्त्रावे दन्तधावने।
> स्नानभोजनजप्येषु सदा मौनं समाचरेत्।। —अत्रिस्मृति

स्नान, दातमनि, भोजन आदि काल मे मौन रहक चाही।

तावत सूर्यक बिम्ब प्रकट भऽ गेलैन्ह। सत्यदेव बजलाह — फेकू। फेकू। सभ गोटा दातमनि फेकैत जाउ। नहि त गोमांस-भक्षणक प्रायश्चित्त लागि जाएत। कारण जे लिखैत छैक —

> उदिते च यदा सूर्ये दन्तकाष्ठं करोति यः।
> सविता भक्षितस्तेन सद्यो गोमांसभक्षणम्।। —स्मृतिसंग्रह

सूर्योदय भऽ गेलाक अनन्तर जे दातमनि करय से सद्यः गो.......

तावत गुरु सोर पाड़लथिन्ह। सत्यदेव दौड़ल गेलाह। गुरु पुछलथिन्ह — आङन मे कथिक शास्त्रार्थ होइत छलैह? सत्यदेव सभ वृत्तान्त कहि सुनौलथिन्ह।

गुरु पुछलथिन्ह — तों अपने कखन दातमनि कैलह?

सत्यदेव कहलथिन्ह — सूर्योदय सँ आध पहर पहिनहि।

गुरु कनेक काल विचारि कय बजलाह — तखन तोंहू प्रायश्चित्ती भेलाह। किऐक त षष्ठी तिथि मे दातमनि कैलह अछि। से परम निषिद्ध। कारण जे देवी भागवत मे लिखैत छैक —

> प्रतिपद्दर्श षष्ठीषु नवम्येकादशी रवौ।
> दन्तानां काष्ठसंयोगो दहेदासप्तमं कुलम्।।

परिव, अमावस्या, षष्ठी, नवमी, एकादशी, रवि, एहि दिन मे दाँत कैं काठ सँ संयोग भेने सातो कुल दग्ध भऽ जाय।

फलस्वरूप ओहि दिन दन्तधावनक प्रायश्चित्त मे सभ गोटा कैं बालु-गोबर खाय पड़लैन्ह।

एवं प्रकार स्नान-भोजन आदि समस्त प्रकरण पढ़ि कय सत्यदेव आचार-शास्त्र मे पारंगत भऽ गेलाह। ओ साक्षात् धर्मराज युधिष्ठिर बनि गेलाह। परन्तु स्त्रीगण कैं प्रलय भेलैन्ह। किऐक त आङन मे जहाँ किछु होइक कि सत्यदेव जा कऽ गुरुदेवक सेवा मे निवेदन कऽ देथि और लगले पंचगव्यक आदेश सभ गोटा कैं भेटि जाइन्ह।

पंचकन्या बाजथि — कहाँ सँ ई लुतरीलगौना आबि गेल जे सभ बात बाबूजीक कान मे पहुँचा दैत छैन्ह। एकरा द्वारें किछु करब कठिन। कोना एकरा सँ पिंड छूटत?

एक दिन पंचकन्या पोखरि मे नहा कऽ ऊपर भेलीह त देखै छथि जे सत्यदेव भीड़ पर आँखि मुनने सन्ध्यावन्दन कय रहल छथि। सत्यदेव एक पैर पर ठाढ़ भय सूर्योपस्थान मंत्र पढ़य लगलाह। पंचकन्या आ कऽ चारू कात सँ घेरि लेलथिन्ह। सत्यदेव आँखि फोललन्हि त अवाक्। खिसिया कऽ पुछलथिन्ह — तों सभ एहिठाम किऐक ठाढ़ि छह? वेदमंत्र त ने कान मे पड़लौह?

मन्दोदरी कहलथिन्ह — पड़ल त! कहै छलहो ओम्.....

सत्यदेव डँटलथिन्ह — चुप! तोरा सभ कैं प्रणव उच्चारण करबाक अधिकार नहि छौक।

कुन्ती बजलीह — हमरा त गायत्रीओ मंत्र अबैत अछि। सुनह — भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्र.....

सत्यदेव कान पर हाथ दैत कहलथिन्ह — चुप, चुप। तोरा सभ कैं आइ की भऽ गेलौक अछि जे एना करैत छैं? हम जाइ छिऐन्ह गुरुजी कैं कहि देबय।

तारा दाइ अनखा कऽ बजलीह — सभ बात मे जाइ छिऐन्ह गुरुजी कैं कहि देबय। कनेक हँसिओ लोक करैत छौह त एना बिगड़ि किऐक जाइत छह?

सत्यदेव कहलथिन्ह — आइ एकादशी कैं हँसी किऐक करबह?

अनन्पानं च ताम्बूलं मैथुनं केशमार्जनम्।
द्यूतक्रीड़ानृतं हास्यमेकादश्यां विवर्जयेत्।। —स्मृतितत्त्व

एकादशी कैं अन्न, जल, पान..... ऐं ऐं ऐं... ऐं ऐं ऐं... एकटा और कार्य, केश थकरब, जूआ खेलाएब, फूसि बाजब, हँसी करब, ई सभटा वर्जित छैक।

एहि पर पंचकन्या खिलखिला उठलीह।

द्रौपदी साड़ी कोंचियबैत बजलीह — हौ, पतड़ा देखि कऽ हँसी नहि कैल जाइत छैक।

अहल्या केश गाड़ैत बजलीह — ई सासुरो जैताह त पतड़े आगाँ मे राखि कऽ सभ कार्य करताह।

तारा नुआ फेरैत बजलीह — ऐं ऐं ऐं क की कहलहौक से नहि बुझलिऐक। कनेक फरिछा कऽ कहौक।

सत्यदेव कुंठितबुद्धि भऽ गेलाह। तावत अहल्याक अंचल खसकि गेलैन्ह। सत्यदेव आँखि मूनि लेलन्हि। ओहि दिन हुनका सम्पूर्ण दिन उपवास करय

पड़लैन्ह। किऐक त पढ़ल छलैन्ह —

नग्नां परस्त्रियं दृष्ट्वा दिनमेकं व्रती भवेत्।। —शंखस्मृति

ओहि राति प्रकृतिक कोनो अज्ञात रहस्यक कारणें सत्यदेवक जीवन मे एक नवीन घटना घटित भेलैन्ह जे स्वप्नावस्था मे ब्रह्मचर्यक नियम भंग भऽ गेलैन्ह। निंद टुटैत देरी भयभीत होइत, गुरुक सेवा मे उपस्थित भेलाह।

गुरु पहिने त दस हजार गंजन कैलथिन्ह। तखन शास्त्रक व्यवस्था देलथिन्ह—

स्वप्ने सिक्त्वा ब्रह्मचारी द्विजः शुक्रमकामतः।
स्नात्वार्कमर्चयित्वा त्रिः पुनर्मामित्यृचं जपेत्।। —मनुस्मृति

ऐखन जा कऽ सचैल स्नान कय आबह। तखन सूर्योपासना कैलाक अनन्तर मंत्र जपय पड़तौह।

सत्यदेव चललाह कि गुरु टोकलथिन्ह — सुनह। एकटा और विधान छैक। याज्ञवल्क्यक मत छैन्ह —

यन्मेऽद्यरेत इत्याभ्यां स्कन्नं रेतोऽभिमंत्रयेत्।
स्तनान्तरं भ्रुवोर्मध्यं तेनानामिकया स्पृशेत्।।

'यन्मेऽद्यरेतः' मंत्र पढ़ि निःसृत धातु कैं अनामिका आङुर सँ लगा, हृदय और कपार मे ठोप करय पड़तौह।

बेचारे सत्यदेव कैं की-की ने करय पड़लैन्ह? ओहि दिन कोनो दशा बाकी नहि रहलैन्ह।

गुरु कहलथिन्ह — देखह। आब सँ जौं एना करबह त अवकीर्णीक प्रायश्चित्त लगतौह। किऐक त वशिष्ठक मत छैन्ह — एतदेव रेतसः प्रयत्नोत्सर्गे दिवा स्वप्ने च। तकर कीं विधान छैक से जनैत छह?

अवकीर्णी तु काणेन रासभेन चतुष्पथा।
पाकयज्ञविधानेन यजेत निर्ऋतिं निशि।। —याज्ञवल्क्यस्मृति

राति मे बीच चौराहा पर जाय, कनाह गदहा कैं लऽ कऽ पाकयज्ञ करय पड़तौह। तखन निर्ऋति देवता सन्तुष्ट होइथुन्ह।

पुनः एकान्त मे बुझबैत कहलथिन्ह — देखह, आब तों युवत्वधर्मापन्न भऽ गेलाह। आइ सँ अपना गुरुआइन कैं फराके सँ प्रणाम कैल करिहहुन। कारण जे मनुजी लिखैत छथि —

गुरुपत्नी तु युवतिर्नाभिवन्द्येह पादयोः।
पूर्णविंशतिवर्षेण गुणदोषविजानता।।

तदनन्तर पंचकन्या कैं बजा कय डाँटि देलथिन्ह जे सत्यदेव कैं केओ दिक नहि करैन्ह।

ताहि दिन सँ सत्यदेवक ई व्यवस्था भेलैन्ह जे राति मे कोपीन पहिरि, भूमिपर खजूरक पटिया बिछाय, माथतर ईंट राखि सूतल करथि।

किछु दिनक उपरान्त महामहोपाध्याय कें अपन जीवित श्राद्ध करबाक विचार भेलैन्ह। बात ई भेलैक जे एक दिन हुनका पैर पर गिरगिट खसि पड़लैन्ह। उदास भय, लोक सभ कें बजा कय कहलथिन्ह – आब अमर अन्तकाल समीप आबि गेल। किऐक त – पादयोर्जघने जान्वोः गुदे गुह्ये तु मृत्युदा। चरण पर पल्लीपतन मृत्युक सूचक थिक। तखन हमरा पुत्र त अछि नहि जे वेदविहित श्राद्ध करत। ताहि सँ उत्तम ईह जे हम स्वयं अपन श्राद्ध कय आबी।

ई नेयारि, धर्मशास्त्राचार्य सत्यदेव कें संग लय सिमरियाघाट पहुँचलाह। स्नानादि कृत्यक अनन्तर भोजनक समस्या उठल। सत्यदेव कहलथिन्ह – एहिठाम हलुआइक दोकान मे पूड़ी मिठाइ छैक।

पं. जी बजलाह – ओ खैने प्रायश्चित्त लागय। किऐक त मनुजी लिखैत छथि – नाद्यात् शूद्रस्य पक्वान्नं विद्वानश्राद्धिनो द्विजः। शूद्रक बनाओल पकमान पंडित ब्राह्मणक हेतु अभक्ष्य थिक। ओ खैना जाय त एकरात्र व्रत कर' पड़य।

विद्यार्थी बजलाह – दोकान मे चूड़ो छैक।

गुरु कहलथिन्ह – ओहो अभक्ष्य। किऐक त शास्त्रकार लिखैत छथि –

अभक्ष्यं ब्राह्मणानां च शूद्रभ्रष्टं चिपीटकम्। –ब्रह्मवैवर्त्त

शूद्र सँ छुआएल चूड़ा ब्राह्मणक हेतु अभक्ष्य थिक।

सत्यदेव पुछलथिन्ह – तखन केवल दहिए खा क' रहि जाएब?

पं. जी बजलाह – सेहो अभक्ष्य। किऐक त लिखैत छैक –

अभक्ष्यं महिषीणां च दुग्धं दधि घृतं तथा। –ब्रह्मवैवर्त्त

महिषक दूध, दही, घी ब्राह्मण कें नहि खैबाक चाही।

सत्यदेव पुछलथिन्ह – और यदि गाइक दूध वा दही दोकान मे भेटि जाय?

पं. जी कहलथिन्ह – सेहो अशुद्ध। किऐक त अंगिराक बचन छैन्ह जे –

शूद्रवेश्मनि विप्रेण क्षीरं वा यदि वा दधि।

निवृत्तेन न भोक्तव्यं शूद्रान्नं तदपि स्मृतम्।।

शूद्रक घर मे दहिओ दूध भोजन करब शूद्रान्नक तुल्य थिक। केवल फल भेटय त खा सकैत छी।

संयोगवश एक तुरहिन ओहिठाम केरा बेचय हेतु पहुँचि गेलि।

पं. जी पुछलथिन्ह – कोना दैत छही?

तुरहिन बाजलि – पैसा मे अढ़ाइ गो।

ई सुनितहि पं. जी कान पर हाथ धरैत बजलाह – हुम्! हुम्! शान्तं पापम्। सभ केरा दूरि भ' गेल। ई 'गो' कहि देलक। गो क अर्थ गोत्वावच्छेदकावच्छिन्न। ई विशेषण लगने केरा 'वाग्दुष्ट' भ' गेल। आब एहन केरा के खाएत? सभटा ल' जाय कहौक।

तुरहिन अपन केरा समटैत ओहिठाम सँ पड़ाइलि।

आब गुरु-शिष्य की खैताह? अन्ततोगत्वा स्वयंपाकक विचार भेल। सत्यदेव अत्यन्त पवित्रतापूर्वक गोबर सँ ठाम कय, जारन कें सिक्त कय, नवीन मृद्भाण्ड मे गंगाजल सँ पाक करय लगलाह। प्रहर रात्रि बितैत-बितैत भानस सम्पन्न भेलैन्ह। परन्तु एकेटा बखेड़ा रहय तखन ने? पछिने परसबाक समस्या उठल!

सत्यदेव बजलाह – जाइ छी, दोकान सँ दू टा थारी मांगि लाबय।

पं. जी कहलथिन्ह – हुम्! ओकरा थारी मे खैने प्रायश्चित्त लागत। लिखैत छैक–

शूद्राणां भाजने भुक्त्वा, भुक्त्वा वा भिन्नभाण्डके।

अहोरात्रोषितो भूत्वा पंचगव्येन शुद्ध्यति।। –संवर्त्तस्मृति

शूद्रक बासन मे भोजन कैला सन्ताँ एक अहोरात्र उपवास कय पंचगव्य लेबय पड़तौह।

सत्यदेव दोकान सँ पुरैनिक पात ल' ऐलाह। ई देखि पं. जी कहलथिन्ह – ओहि पर तों भोजन क' सकैत छह, किऐक त ब्रह्मचारी छह। किन्तु हमरा भोजन कैने प्रायश्चित्त लागि जाएत। कारण जे लिखैत छैक –

पलाशपद्मपत्रेषु गृही भुक्त्वैन्दवं चरेत्। –स्मृतिसंग्रह

पुरैनिक पात पर यदि गृहस्थ भोजन करय त ऐन्दव नामक प्रायश्चित्त लागि जाइक।

विद्यार्थी कहलथिन्ह – तखन अपने कथी मे खाएब? कही त हम हाथे क' देने जाइ।

गुरु कहलथिन्ह – सेहो अशुद्ध। हारीत कहैत छथि –

हस्तदत्तभोजनेऽब्राह्मणसमीपे भोजने, दुष्टपंक्तिभोजने।

.......त्रिरात्रमभोजनम्।।

हाथ मे देल भोजन कैने, ब्राह्मणेतर वर्णक निकट भोजन कैने अथवा दुर्जनक पंक्ति मे बैसि कय भोजन कैने, तीन रात्रिक उपवास कर्तव्य।

विद्यार्थी कहलथिन्ह – गुरु, तखन अपने भांडे मे भोजन कैल जाओ। हम अपना लेल पातपर बाहर कय लैत छी।

अन्ततोगत्वा कोनो-कोनो तरहें ई समस्या हल भेल। किन्तु गुरु-शिष्यक भाग्य मे भोजन रहैन्ह तखन ने?

गुरु नैवेद्य काढ़ि, पंचग्रास बाहर कय, मंत्रपूर्वक उत्सर्ग करैत, एक कौर मुँह मे रखलन्हि। विद्यार्थीओ पैर धो, आधा धोती ओढ़ने, अपना आसन पर ऐलाह। ई देखि पं. जी टोकबाक हेतु सुगबुगाय लगलथिन्ह। परन्तु भोजन काल बाजथु कोना?

सत्यदेवक आसन छोट रहैन्ह। पलथी लगायब योग्य नहि। अतएव चुकीमाली बैसि गेलाह।

पं. जी 'हुम्' कैलन्हि। मुदा विद्यार्थी कें आशय नहि बूझि पड़लैन्ह।

भात किछु बेसी तप्पत रहैक। अतएव सत्यदेव फूकि-फूकि क' खाय लगलाह। परन्तु जै बेर सत्यदेव मुँह मे देथि तै बेर गुरु हुम् क' देथिन्ह। आब महा कठिन।

गुरु-शिष्य दुनू त मौने रहथि। आशय प्रकट हो त कोना!

सत्यदेव कें अभिप्राय नहिए बुझि पड़लैन्ह। ओ पूर्ववत् भोजन करैत रहलाह।

आब गुरु कें नहि रहि भेलैन्ह। घूर लैत बजलाह – हुम्! हुम्! हुम्! तों पतित भऽ गेलाह। क्रतुक वचन छैन्ह –

आसनारूढपादो वा वस्त्रार्द्ध प्रावृतोऽपि वा।
मुखेन धमितं भुक्त्वा कृच्छ्रं सान्तपनं चरेत्।।

आसन पर पैर रोपि कऽ वा आधा धोती ओढ़ि कऽ अथवा मुँह सँ फूकि कऽ भोजन कैने लोक प्रायश्चित्ती हो। तों तीनू एके संग कैलह। आब बिना 'कृच्छ्र सान्तपन' कैने उपाय नहि छौह।

सत्यदेव पुछलथिन्ह – ताहि मे की करय पड़त?

पं. जी कहलथिन्ह –

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्।
एकरात्रोपवासश्च कृच्छ्रं सान्तपनं स्मृतम्।। –मनु

गोंत, गोबर, दूध, दही, घृत ओर कुशक जल सँ पारण तथा एक रात्रिक उपवास।

सत्यदेवक खैनाइ गेलैन्ह।

पं. जी अचवैत बजलाह – तों अपना संग-संग हमरो भोजन नष्ट कैलह। किऐक त बिनु बजने बुझितह नहि। और हम घूर नहि लितहुँ त बचितहुँ कोना?

एहि तरहें भेल भानस दुहू गोटा कें उपवास करय पड़लैन्ह। आब शयनक प्रश्न उठल। हलुआइक दोकान मे एकटा चौकी खाली रहैक। सत्यदेव कहलथिन्ह – गुरु, अपनेक ओछाओन एही पर कय दैत छी। हम नीचा पटिया पर सूति रहब।

ई कहि सत्यदेव चौकी कें झाड़य लगलाह। ओहिपर एकटा पेयाज रहैक। सत्यदेव ओकरा उठा कऽ नीचा धरय लगलाह।

पं. जी पुछलथिन्ह – की थिकैक?

विद्यार्थी पेयाज देखबैत कहलथिन्ह – देखल जाओ। यैह 'पिआउजु' तरकारी मे दऽ दऽ कऽ लोकक जाति भ्रष्ट करैत अछि।

पं. जी नाक मूनि हुम्! हुम्! करैत बजलाह – फेकह, फेकह। आब तोहूँ भ्रष्ट भऽ गेलाह।

सत्यदेव ओकरा फेकैत बजलाह – गुरुजी, हम कि एकर भक्षण कैल अछि जे दोषी होएब?

महामहोपाध्याय क्रुद्ध होइत कहलथिन्ह – तों शास्त्रार्थ करैत छह! तखन सैह देखह। बृहस्पतिक वचन छैन्ह –

सुरापलाण्डुलशुनस्पर्शे कामकृते द्विजे।
त्र्यहं पिबेत् कुशजलं सावित्री च जपेत्तथा।।

तों जानि-बुझि कऽ पलांडुक स्पर्श कैलह अछि। आब तीन दिन धरि केवल कुशक जल पीबि कऽ रहय पड़तौह। तदुपरान्त सावित्री जपलाक उत्तर शुद्ध हैबह।

ई कहि पं. जी लघुशंका दिशि गेलाह।

परन्तु एहन संयोग जे पंडितोजी कें प्रायश्चित्त लागिए गेलैन्ह। किऐक त सत्यदेव अन्हारमे पेयाज थाहर फेकने रहथि ताही पर हुनक पैर पड़ि गेलैन्ह।

पं. जी बजलाह – आब हमहूँ अशुद्ध भऽ गेलहुँ।

विद्यार्थी कहलथिन्ह – अपने त जानि कऽ स्पर्श नहि कैल अछि। केवल पैर धो लेल जाओ।

पं. जी उत्तर देलथिन्ह – नहि। आब हमरो ऐखन स्नान करय पड़त। किऐक त याज्ञवल्क्य कहै छथि जे – पलाण्डुलशुनस्पर्शे स्नात्वा नक्तं समाचरेत्। धोखो सँ पेयाउजु वा लहसुनक स्पर्श भऽ गेने स्नान-पुरःसर नक्तव्रत कर्त्तव्य थिक।

अगत्या गुरु-शिष्य दुहू गोटा घाट पर गेलाह।

पं. जी कहलथिन्ह – पापप्रक्षालनक निमित्त पहिने नीक जकाँ कर्दम लेपन करक चाही। गंगाजीक कादो लेपने शरीरक सभ टा मल धोआ जाइत छैक।

विद्यार्थी हन्हारे मे टोइया टप्पा देबय लगलाह।

एक ठाम बेस चिक्कन लसगर माटि बुझि पड़लैन्ह। थोड़ेक गुरु कें देलन्हि, थोड़ेक अपने लेलन्हि। दुहू नैष्ठिक आचारी हाथ-पैर आदि समस्त अवयव मे लेप करैत ई मंत्र पढ़य लगलाह –

त्वत्कर्दमैरतिस्निग्धैः सर्वपापप्रणाशनैः।
मया संलिप्यते गात्रं मातर्मे हर पातकम्।।

लेप करैत-करैत गुरु कें किछु गन्ध बुझि पड़लैन्ह। ओ हाथ कें नाक लग लऽ गेलाह कि ओ...ओ...कऽ वान्ति होमय लगलैन्ह। ओम्हर विद्यार्थीओ वमन करय लगलाह।

आब गुरु-शिष्य कें कोनो संदेह नहि रहलैन्ह। दुहू गोटे हाहाकार करय लगलाह।

गुरु विलाप करैत कहलथिन्ह – हमर दुनू हाथ भ्रष्ट भऽ गेल। आब हवन-पूजन कथी सँ करब?

शिष्य बजलाह – हमर सम्पूर्ण त्वचा दूषित भऽ गेल। आब ई शरीर राखि कऽ की करब?

गुरु-शिष्य आकंठ जल मे पैसलाह। शिष्य कहलथिन्ह – गुरो! आब आज्ञा हो त एहि देह कें गंगाजी मे विसर्जन कऽ दी।

गुरु कहलथिन्ह – हुम्! ताहू मे प्रायश्चित्त छैक। आत्मघाती कें गति नहि – आत्मा रक्षितो धर्मः.....

एतबा कहैत पं. जीक पैर उखड़ि गेलैन्ह। धार तेज रहैक। पं. जी आर्त्तनाद करैत भसियाय लगलाह। सत्यदेव कसि कऽ गुरुक चरण गहि लेलन्हि जे हिनके संग-संग वैतरणी पार उतरि जाएब।

हेलनाइ त किनको अबिते नहि रहैन्ह। किऐक त मनुजीक आज्ञा छैन्ह – न बाहुभ्यां नदीं तरेत्। दुनू गोटे उब-डूब होमय लगलाह।

तावत चीत्कार शब्द सुनि घाट परक मलाह सभ पानि मे कूदल। हिनका लोकनि कैं कोनो-कोनो तरहें खींचि-तीरि कय ऊपर कैलकैन्ह और कुम्हारक घर पर लऽ जा कऽ चाक पर घुमा देलकैन्ह। ओतय भरि राति दवाइ-बिरो और मालिश भेलैन्ह। सुसुम-सुसुम दूध-लपसी घटैलापर दुनू गोटाक आँखि फुजि गेलैन्ह। गुरु-शिष्य वैतरणीक एही पार रहि गेलाह।

मृत्युक चपेटाघात लगैत देरी पं. जी परमहंस बनि गेलाह। हुनक कहरता जाइत रहलैन्ह।

विद्यार्थी पुछलथिन्ह – गुरो! निषादक स्पर्श सँ जे छूति भेल तकर प्रायश्चित्त?

पं. जी – कोनो प्रायश्चित्त नहि। मनुजी कहैत छथि जे –

तीर्थे विवाहे यात्रायां संग्रामे देशविप्लवे।
नगरे ग्रामदाहे च स्पृष्टास्पृष्टिर्न विद्यते।।

तीर्थ मे स्पर्श-दोष नहि लगैत छैक।

विद्यार्थी – परन्तु शूद्रक हाथ सँ जे दवाइ मुँह मे पड़ल, से? अपनहि कहने छी जे –

शूद्रहस्तेन यो भुंक्ते पानीयं वा पिबेत् क्वचित्।
अहोरात्रोषितो भूत्वा पंचगव्येन शुद्ध्यति।। –क्रतु

तखन बिनु प्रायश्चित्त कैने कोन उपाय?

पं. जी – नहि, औषधार्थ मदिरो-मांस भक्षण मे दोष नहि लगैत छैक। लिखलकैक अछि – औषधार्थं सुरां पिबेत्।

भक्षयन्नपि मांसानि शेषभोजी न लिप्यते।
औषधार्थमशक्तो वा नियोगात् यज्ञकारणात्।। –देवल

विद्यार्थी – परन्तु शूद्रक घर मे खैना गेल तदर्थ त बालु-गोबर गीड़हि पड़त?

पं. जी – नहिं, कोनो प्रयोजन नहि। शास्त्रकार कहैत छथि –

आपत्काले तु विप्रेण भुक्तं शूद्रगृहे यदि।
मनस्तापेन शुद्ध्येत द्रुपदां वा शतं जपेत्।। –आपस्तम्ब

आपत्तिकाल मे शूद्रक घर खैने केवल मनस्तापे सँ ब्राह्मण शुद्ध भऽ जाथि।

विद्यार्थी मुँह ताकय लगलथिन्ह। कहलथिन्ह – गुरो! अपने कैं जीवित-श्राद्ध त करबाक अछि।

पं. जी बजलाह – जीवित-श्राद्ध त भइए गेल। बाँकिए की रहल? आब शरीर पर और बेसी अत्याचार करब धर्म नहि थिक। बृहस्पति कहैत छथि –

शरीरं पीड्यते येन सुशुभेनापि कर्मणा।
अत्यन्तं तन्न कर्त्तव्यमनायासः स उच्यते।।

विद्यार्थी पुछलथिन्ह – तखन आब की कर्त्तव्य?

पं. जी – कर्त्तव्य की? स्नान-भोजन कय घरक हेतु प्रस्थान करी।

विद्यार्थी – परन्तु एहिठाम भोजन की कैल जाएत?

पं. जी – किऐक? दोकान त छैहे। जे इच्छा हो से लय आबह।

विद्यार्थी खिसिया कऽ बजलाह – गुरु! इच्छा त कचौड़ी-रसगुल्ला पर होइत अछि। परन्तु शास्त्र मे कि तकर विधान छैक?

पं. जी – हँ, छैक।

गोरसं चैव शक्तुं च तैलं पिन्याकमेव च।
अपूपान् भोजयेत् शूद्रात् यच्चान्यत् पयसाकृतम्।। –याज्ञवल्क्य

'अपूप' कहने कचौड़ी और 'अन्यत् पयसाकृतम्' कहने रसगुल्ला, पन्तुआ आदि सभटा आबि जाइक छैक।

विद्यार्थी व्यंग्य कैलथिन्ह – हँ, चिक्कनी वस्तु मे दोष नहि। जे दोष छैक से केवल तेलही कचरी-फुलौरी मे।

पं. जी निर्विकार भाव सँ बजलाह – नहि। सेहो खा सकैत छह।

कंदुपक्वं स्नेहपक्वं पायसं दधि शक्तवः।
एतानि शूद्रान्नभुजो भोज्यानि मनुरब्रवीत्।।

खापड़ि मे भूजल और तेल मे छानल वस्तु खैबा मे कोनो दोष नहि। और एखन त परदेश मे छह। घरवला नियम चाहबह से कोना हैतौह? तैं स्मृतिकारक अनुमति छैन्ह जे – पथि शूद्रवदाचरेत्।

सत्यदेव कैं विश्वास नहि भेलैन्ह। बजलाह – गुरु, अपने हमरा परतारैत छी। पहिने ई सभ वचन किऐक नहि कहैत छलहुँ?

तावत एक परदेशी सज्जन अपना युवती स्त्री कैं नेने पं. जीक ओहि ठाम पहुँचलाह। एकान्त मे कहलथिन्ह – ई विधर्मीक हाथ मे पड़ि गेल छलीह। आब शुद्ध भऽ सकैत छथि?

पं. जी बजलाह– स्त्री कतहु दूषिता होथि? आपस्तम्ब कहैत छथि –

न दुष्येत् संतता धारा, वातोद्धूताश्च रेणवः।
स्त्रियो वृद्धाश्च बालाश्च न दुष्यन्ति कदाचन।।

जहिना बहैत नदी मे कोनो दोष नहि, तहिना स्त्रीओ मे कोनो दोष नहि। ओ सर्वदा पवित्र रहैत छथि।

आगन्तुक कहलथिन्ह – परन्तु हिनका कोनो टा संसर्ग बाँकी नहि रहलैन्ह।

पं. जी बजलाह – तथापि ई पवित्रे थिकीह। अत्रिक वचन छैन्ह –

न स्त्री दुष्यति जारेण ब्राह्मणो वेद कर्मणा।
नापो मूत्रपुरीषाभ्यां, नाग्निर्दहति कर्मणा।।

जेना वैदिकी हिंसा जन्य दोष ब्राह्मण कैं नहि लगैत छैन्ह तहिना जारकृत कर्मक

दोष स्त्री कैं नहि लगैत छैन्हि।

आगन्तुक कहलथिन्ह – परन्तु हिनका गर्भो रहि गेल छैन्ह।

पं. जी बजलाह – तकरो वचन छैक –

असवर्णस्तु यो गर्भः स्त्रीणां योनी निषिच्यते।
अशुद्धा सा भवेन्नारी यावद्गर्भं न मुञ्चति।।
विमुक्ते तु ततः शल्ये रजश्चापि प्रदृश्यते।
तदा सा शुद्ध्यते नारी विमलं काञ्चनं यथा।। –अत्रिस्मृति

ई यावते धरि गर्भवती छथि तावते धरि अशुद्ध। पुनः जहाँ पुष्पवती होइतीह कि निर्मल स्वर्ण बनि जैतीह।

परदेशी – तखन हिनक शुद्धि कोन प्रकारें हैतैन्ह?

पं. जी – मासिक धर्म होइतहि स्वतः शुद्ध भऽ जैतीह। और कोनो वस्तुक अपेक्षा नहि। देखू, स्मृतिकार कहैत छथि –रजसा शुद्ध्यते नारी। और वचन लियऽ –

शौच सुवर्णनारीणां, वायुसूर्येन्दुरश्मिभिः। –आपस्तम्ब

स्त्री सोन थिकीह। वायु तथा सूर्य-चन्द्रमाक प्रकाश लगितहि हुनक देह शुद्ध भऽ जाइत छैन्ह।

परदेशी – त हिनका सँ आब कोन प्रकारक व्यवहार करक चाही?

पं. जी – व्यवहार कोन प्रकारक करक चाही? ऋतुकाल ऐलापर सेवन करक चाही। शास्त्रकारक मत छैन्ह –

न त्याज्या दूषिता नारी, न कामोऽस्या विधीयते।
ऋतुकाल उपासीत, पुष्पकालेन शुद्ध्यति।। –अत्रिस्मृति

परदेशी पुछलथिन्ह – अपने हिनक छुइल जल पिबैन्ह?

पं. जी कहलथिन्ह – किऐक नहि?

युवती किछु संकुचित होइत एक गिलास जल आगाँ बढ़ा देलथिन्ह। पं. जी घट्ट-घट्ट कऽ पीबि गेलाह।

सत्यदेव फराके सँ सभटा देखैत-सुनैत छलाह। दम्पतिक गेलापर गुरु कैं कहलन्हि – आब हमरो जैबाक आज्ञा भेटौ। अपनेक संग एको दिन रहि गेलहुँ त जतबा धर्मशास्त्र सात वर्ष मे पढ़लहुँ अछि से सभटा एके दिन मे ध्वस्त भऽ जाएत।

पं. जी मुसकुराइत कहलथिन्ह – धर्मशास्त्रक की तत्त्व छैक से बुझितो छहौक? केवल श्लोक रटने धर्मशास्त्रक ज्ञान नहि होइत छैक।

विद्यार्थी क्षुब्ध होइत बजलाह – अपने जे व्यवस्था ओकरा देलिऐक अछि ताहि सँ सामाजिक मर्यादा रहि सकैत अछि? यदि सभ केओ ओही सिद्धान्त पर चलए लागय .....

पं. जी – एहन कोनो सिद्धान्ते नहि छैक जे सभक हेतु सभ अवस्था मे लागू होइक। धर्मशास्त्र अनन्त समुद्र थिक। एहि मे नाना प्रकारक विधान भरल छैक। देश,

काल, पात्र विचारि जखन जेहन वचन समाजक कल्याण हेतु उपयुक्त बुझना जाय तखन तेहन व्यवस्था देबक चाही। ओहि स्त्रीक हेतु यदि हम ओहि प्रकारक व्यवस्था नहि दितिऐक त ओकर स्वामी ओकरा त्याग कऽ दितैक और ओ पुनः विधर्मिणी बनि जाइत। तखन ओकर सन्तति दिन-दिन विधर्मीक संख्या-वृद्धि करैत जइतैक। तैं व्यासजी कहैत छथि –

देशकालनिमित्तानां भेदैर्धर्मो विभिद्यते।
अन्यो धर्मः समस्थस्य विषमस्थस्य चापरः।।
न हि सर्वहितः कश्चिदाचारः सम्प्रवर्त्तते।
तस्मादन्यः प्रभवति सोऽपरं बाधते पुनः।।
आचाराणामनैकाग्र्यं तस्मात् सर्वत्र दृश्यते।
नहीवैकान्तिको धर्मः धर्मस्त्वावस्थिकः स्मृतिः।। –महाभारत (शांतिपर्व)

धर्म आपेक्षिक वस्तु थिकैक। एक व्यक्तिक हेतु एक धर्म होइत छैक, दोसर व्यक्तिक हेतु दोसर धर्म होइत छैक। एक अवस्था मे जे धर्म थिक सैह दोसर अवस्था मे अधर्म भऽ सकैछ। जाहि ठाम जेहन देशाचार, ताहि ठाम तेहने धर्म।

येषु स्थानेषु यच्छौचं धर्माचारश्च यादृशः।
तत्र तन्नावमन्येत, धर्मस्तत्रैव तादृशः।।

धर्मशास्त्रक अर्थ ई नहि जे आँखि मूनि कय एके लाठी सँ सभ कैं हाँकि देल जाय। सभ बातक बुद्धिपूर्वक विवेचना कय कर्त्तव्यक निरूपण करक चाही।

सत्यदेव कुण्ठितबुद्धि भऽ बजलाह – गुरु, अपने हमरा ततेक रंगक वचन कहि दैत छी जे बुद्धि भँवरजाल मे पड़ि जाइत अछि। कोनो एक टा सिद्धान्त कहल जाओ जाहि सँ मति स्थिर रहय।

पं. जी – बेश, त सुनह। वचनक अनन्त जंगल मे कहाँ धरि बौआइत रहबऽ? सै वचनक एक वचन कहि दैत छिऔह से मूलमन्त्र बूझह –

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।।

जाहि सँ लोकक उपकार होइक से धर्म, और जाहि सँ कष्ट पहुँचैक से अधर्म थिक।

सत्यदेव कुपित भय बजलाह – जखन एतबे बात थिकैक तखन त व्यर्थे एतेक दिन धर्मशास्त्र पढ़लहुँ। सभ स्मृतिग्रन्थ कैं गंगाजी मे भसिया देबक चाही।

गाम पहुँचला उत्तर सत्यदेव घोल कऽ देलन्हि जे गुरु अजातिक हाथ सँ जल पीबि भ्रष्ट भेलाह।

जखन पं. जी ई बात स्वीकार कऽ लेलथिन्ह त सौंसे गामक लोक हुनका बारि देलकैन्ह।

पंडिताइन कहलथिन्ह – जाउ, अहाँक की ज्ञान भेल? सभ धर्म-कर्मक विचार उठि गेल। हम किछु नहि कैने रही ताहि पर त अहाँ हमरा ओतेक प्रायश्चित्त करौलहुँ। और ओ भ्रष्टा केवल चन्द्रमाक प्रकाशे लगने शुद्ध भऽ गेलि! ओकरा हेतु अहाँ अपन जातियो गनौलहुँ। परन्तु हमरा लोकनि अहाँक सम्पर्की बनि प्रायश्चित्ती नहि भऽ सकैत छी। अहाँ धर्मशास्त्र कैं उठा दिय, परन्तु हमरा लोकनि त मानिते रहब।

पं. जी बजलाह – हम त अपन श्राद्ध कऽ आएल छी। आब जीवन्मुक्त भऽ गेलहुँ। विधि-निषेधक बन्धन स्थूलबुद्धि जनताक हेतु छैक। हमरा आब सूक्ष्म अनुभव भऽ गेल।

मन्दबोधोपकारार्थं धर्मशास्त्रं विनिर्मितम्।
लोककल्याण मार्गं हि, पश्यन्ति सुधियः स्वयम्।।

तहिया सँ पं. जी समाज और घर सँ बहिष्कृत भय बहरघरा मे रहय लगलाह। पंडित जी गामक लोक पर हँसैत छथिन्ह, गामक लोक पंडितजी पर हँसैत छैन्ह।

□

ज्योतिषाचार्य

गाम मे दू टा ज्योतिषी रहथि। एक फोंचाइ झा, दोसर खट्टर झा। दुहू ज्योतिषी अगाध विद्वान। परन्तु दुहू मे अश्वमाहिष्य योग लागल रहैन्ह। एक ईर घाट, त दोसर वीर घाट। एक जे बाजथि तकरा दोसर बिनु कटने नहि रहथि।

विशेषतः जितिया और छठि मे दुहू दिग्गजक भिड़ान देखबा योग्य होय। एक पूर्व-दिन त दोसर पर-दिन! पन्द्रह दिन पूर्वहि सँ विवाद सुनैत-सुनैत लोकक कान भोथ भऽ जाइक। तथापि किछु निष्पत्ति नहि बहराय। परिणाम ई जे आधा गाम खरना होय त आधा गाम परना। दुदिनाक प्रसादात् प्रसाद धरि लोक दुनू दिन खाय और शास्त्रार्थ देखय से मुफ्त।

दुहू ज्योतिषी मे कोना उतरा-चौरी चलैन्ह तकर दृष्टान्त लिय।

गामक जमींदार भोल बाबू कैं मोकदमाक तारीख मे दरभंगा जैबाक रहैन्ह। फोंचाइ झा कैं दिन गुनक हेतु बजा पठौलथिन्ह। फोंचाइ झा पतड़ा खोलि बजलाह – 'शनौ चन्द्रेत्यजेत्पूर्वाम। सोम दिन त पूर्व मुँहे दिक्शूल छैत। तैं एक दिन पूर्व रविए कैं विदा भऽ जाउ से हमर विचार।'

खट्टर झा ई सुनलन्हि त कहलथिन्ह – रवि दिन जे ओ यात्रा करय कहैत छथि से – 'अर्के क्लेशमनर्थकञ्च गमने.....' मार्ग मे क्लेशो हो और कार्यो सिद्धि नहि हो। और सोम दिन जे दिक्शूल दोष देखबैत छथि तकर शान्तियो त छैक – 'रविवारे घृतं भुक्त्वा सोमवारे पयस्तथा'। सोम दिन दिक्शूल शान्ति दुग्धपान सँ भऽ जाइत छैक।

ई सुनि भोल बाबू पुनः फोंचाइ झा कैं बजा पठौलथिन्ह। फोंचाइ झा अपन बात कटाइत देखि आगि बबूला भऽ उठलाह। बजलाह – कोन मूर्ख अहाँ कैं दूध पीबि कऽ यात्रा करबाक विचार देलक अछि?

त्र्यहं क्षीरं च पञ्चाहं क्षौरं सप्तदिनं रतिम्।
वर्ज्यं यात्रादिनात् पूर्वम्..................

यात्राक तीन दिन पूर्वहि सँ दूध वर्जित अछि। और यदि ओही दिन लोक दूध पीबि कऽ यात्रा करय तखन त व्याधिग्रस्त भऽ फिरय! किऐक त –

कटुतैलगुडक्षीर पक्वमांसाशन तथा।
भुक्त्वा यो यात्यसौ मोहात् व्याधितः स निवर्तते।।

अहाँ रविए दिन दड़िभंगा विदा भऽ जाउ। एक त दिग्वल भेटत। दोसर सम्मुख चन्द्रमा पड़त। हरति सकलदोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः। त्रयोदशी रवि कें सिद्धियोग। तखन कार्यसिद्धि मे कोन सन्देह? ईह सभ विचार कऽ त हम रविक दिन बनौने छी।

एहि पर पुनः खट्टर झा बजाओल गेलाह। ओ चुपचाप नक्षत्र कें चारि सँ गुणा कय पाँच सँ भाग देलन्हि, शेष शून्य भेलैन्ह। प्रसन्न होइत बजलाह – देखिऔन्ह। फोंचाइ झाक बनाओल दिन मे यात्रा कैने मृत्यु हो, कारण जे –

पीड़ा स्यात् प्रथमे शून्ये, मध्यशून्ये महद्भयम्।
अन्त्यशून्ये तु मरणम्..........

से नक्षत्र भाग मे शून्य शेष होइत अछि। अतः यात्राक फल मृत्यु हो।

ई सुनैत फोंचाइ झा पोथी-पतड़ा पसारि, भोल बाबूक टीपनि मङ्गौलन्हि। हुनका जन्म-नक्षत्र सँ सोम दिनक नक्षत्र धरि गनि, नौ सँ भाग देलन्हि, शेष चारि बचलैन्ह। बस, ललकारैत बजलाह – जौं हमरा यात्रा मे मृत्यु हो त हिनको यात्रा मे मृत्यु हो। देखू –

रासभे अर्थनाशश्च धनलाभश्च घोटके।
लक्ष्मीप्राप्तिर्गजाख्ये हि मेषे च मरणं ध्रुवम्।।

से चारि शेष रहने मरण ध्रुव – की नाम जे – निश्चित थीक।

परिणाम ई भेल जे भोल बाबूक मन भटकि गेलैन्ह। ओ प्राणभय सँ ने रवि दिन प्रस्थान कैलन्हि, ने सोम दिन। ओतय मुद्दइ पाटी कें एकतरफा डिग्री भेटि गेलैक।

एक बेर और तमाशा लागल। गाम मे बड़दू बाबूक बालक पर दू ठामक बर्तुहार ऐलथिन्ह। बड़दू बाबू कहलथिन्ह – हमरा रुपैयाक लोभ नहि। भगवान अपने बहुत देने छथि। तखन दुहू कन्या मे जिनकर कुण्डली उत्तम हैतैन्ह तिनके सँ कंटीरक विवाह करैबैन्ह।

बस, दुहू ज्योतिषीजी बजाओल गेलाह। आब भेल जुझौअलि। फोंचाइ झा पुबारि गामवाली कन्याक पक्ष ग्रहण कैलन्हि, खट्टर झा पछबारि गामवाली कन्याक।

फोंचाइ झा बजलाह – जौं पछबारि कन्या कें एहि बालक सँ विवाह हैतैन्ह त किन्नहु नहि बाँचि सकैत छथि। कारण जे कन्या छथि सर्प-योनि, और वर छथि नकुल अर्थात् सपनौर योनि। अतएव वर कन्या कें खा जैथिन्हि।

आब चलल तुमुल शास्त्रार्थ। खट्टर झा उत्तेजित होइत बजलाह – यदि पछबारि कन्या नहि बचतीह त पुबारियो कन्या नहिए बचतीह। किऐक त वर-कन्या दुहूक अन्त्य नाड़ी होइ छैन्ह। पृष्ठनाड़ीविधा कन्या म्रियते नात्र संशयः। अतएव कन्याक मृत्यु मे कोनो टा संदेह नहि।

आब घनघोर मचल। फोंचाइ झा वीरासन लगा बजलाह – तखन गणक विचार करु। अहाँक कन्या छथि राक्षसगण, वर मनुष्यगण। मृत्युर्मानवरक्षसाम्। अतएव कन्या वर कें खा जैथिन्ह।

खट्टर झा बजलाह – तखन अहूँक कन्या वर कें खैबे टा करथिन्ह। किऐक त – मूर्ती करोति विधवां दिनकृत् कुजश्च। से हिनका लग्न मे सूर्य छथिन्ह। तैं निश्चय विधवा होथि।

फोंचाइ झा कहलथिन्ह – अहाँक कन्या त आठमे वर्ष मे विधवा भऽ जैतीह, किऐक त आठम स्थान मे चन्द्रमा छथिन्ह – म्रियते चाष्टमे वर्षे पतिश्चन्द्रोऽष्टमे यदि।

खट्टर झा बजलाह – तखन अहूँक कन्या कें पाँचम ठाम चन्द्रमा छथिन्ह, से पुत्र नहि होबय देथिन्ह। केवल कन्ये-कन्या हैतैन्ह। कन्याप्रसूतिनिरतां कुरुते शशाङ्कः। एतबे नहि। हुनका दूधो कम हैतैन्ह। किऐक त चारिम ठाम शनि छथिन्ह। स्वल्पं पयो भवति सूर्यसुते चतुर्थे।

फोंचाइ झा कहलथिन्ह – अहाँक कन्या कें त पुत्र-कन्या किछु हैबे नहि करतैन्ह। किऐक त लग्न मे राहु छथिन्ह। लग्ने च सिंहिकापुत्रे रण्डा भवति कन्यका। भरि जन्म बाँझे रहि जैतीह।

खट्टर झा बजलाह – तखन अहूँक कन्याक गर्भ सँ जीवित सन्तान नहिए बहरैतैन्ह। किएक त आठम स्थान मे मंगल छथिन्ह।

गुरौ शुक्रे मृतापत्या मृतगर्भा च मंगले।
अष्टमस्थो ग्रहो नूनं न स्त्रियाः शोभनो मतः।।

फोंचाइ झा उत्तेजित होइत बजलाह – अहाँक कन्या केवल वन्ध्ये टा नहि होइतीह। ओ आङने-आङन छिछिआएलो भेल फिरतीह। किऐक त कर्क राशि मे मंगल छैन्ह – कर्कराशिस्थिते भौमे स्वैरा भ्रमति वेश्मसु।

ई सुनैत खट्टर झाक पारा गरमाएल। बजलाह – अहाँ संकेत सँ गारि पढ़ैत छी। त लियऽ, हम खुलिए कऽ कहैत छी। अहाँक कन्या कुलटा होइतीह। किऐक त अश्लेषा नक्षत्र मे जन्म छैन्ह।

विशाखजा देवरघ्नी ज्येष्ठजा ज्येष्ठनाशिका।
मूलजा च गुरुं हन्ति व्यालजा कुलटाङ्गना।।

तैं यदि शास्त्र सत्य त ओ किन्नहु पतिव्रता नहि रहि सकैत छथि।

फोंचाइ झा पित्ते कँपैत बजलाह – तखन अहाँक कन्या और नाम करतीह। किऐक त छठम स्थान मे बुध छथिन्ह –

चन्द्रः करोति विधवामुशना दरिद्रां।
वेश्यां शशांकतनयः कलहप्रियाञ्च।।

यदि ज्योतिषक वचन प्रमाण त हुनका बिना वेश्या भेने कोनो उपाये नहि छैन्ह। और भगजोग जेहन होइतीह से त नगरक लोक देखतैन्ह।

खट्टर झा हाथ चमकबैत उत्तर देलथिन्ह – तखन अहाँक कन्या दुनू वंशक नाश करतीह। किऐक त –

पापयोरन्तरे लग्ने चन्द्र वा यदि कन्यका।
जायते च तदा हन्ति पितृश्वशुरयोः कुलम्।।

आब दुहू कन्याक दोष गुणक जे विवेचन होमय लागल, से कहबा-सुनबा योग्य नहि।

फोंचाइ झा हाथ पटकैत बजलाह – जौं अहाँक कन्या वन्ध्या, विधवा ओ दुराचारिणी नहि बहराय त हम जनउ तोड़ि कऽ फेंकि दी।

खट्टर झा किटकिटा कऽ उत्तर देलथिन्ह – जौं अहाँक कन्या कुलटा, पति-घातिनी ओ कुलनाशिनी नहि बहराय त हम चमारक पानि पीबि भठि जाइ।

एहन-एहन विकट प्रतिज्ञा सुनि बड्डू बाबू दुहू कथा अस्वीकार कऽ देल। कुशल एतबे जे ओहिठाम कन्यागत मौजूद नहि रहथिन्ह, नहि त दुहूं ज्योतिषाचार्य कैं दक्षिणो भेटि जइतैन्ह।

तावत बड्डू बाबूक हथेली सँ पुछारी भेलैन्ह जे आङन मे नवकी कनेयाँ कैं जे नेना भेलैन्ह अछि तकरा कोन छाती लगाओल जाइक।

आब पुनः मल्लयुद्ध प्रारम्भ भेल। फोंचाइ झा गणना कय कहलथिन्ह – कनेयाँक बाम स्तन प्रशस्त छैन्ह।

खट्टर झा कहलथिन्ह – नहि, कनेयाँक दक्षिण स्तन उत्तम छैन्ह।

आब दुनू स्तन पर ततेक जोर-जोर सँ खण्डन-मण्डन होमय लागल जे आङन धरि पहुँचि गेल। नवकी कनेयाँ त लाजे कठुआ गेलीह।

एक बेर एहन संयोग जे दुहू ज्योतिषीजी एक बरियात मे सम्मिलित भेलाह। फोंचाइ झाक विद्यार्थी आदित्यनाथ, खट्टर झाक विद्यार्थी मार्त्तण्डनाथ। दुहू प्रचण्ड। युद्ध करबा मे मेष, विषय बुझबा मे वृष। विद्या-बुद्धि मे दुहू उपरा-उपरी रहथि। दुहूक सिद्धान्त रहैन्ह – श्लोकानां नित्यमावृत्तिः बोधादपि गरीयसी।

ओहि बरियात मे एकटा वेश्यो जाइत रहय। ओकरा देखि मार्त्तण्डनाथ पुछलथिन्ह – ई के थिक?

आदित्यनाथ कहलथिन्ह – ई गणिका थिक।

एहि पर दुहू विद्यार्थी कैं यात्राक श्लोक मन पड़ि गेलैन्ह –

अग्रेधेनुः सवत्सा वृषगजतुरंगा दक्षिणावर्त्त वह्निः
दिव्यस्त्री पूर्णकुम्भो द्विजवरगणिका पुष्पमाला पताका।
मत्स्यो मांसं घृतं वा दधि मधु रजतं काञ्चनं शुक्लवर्णम्
दृष्ट्वा स्पृष्ट्वा पठित्वा फलमिह लभते मानवो गन्तुकामः।।

गणिकाक स्पर्श कैने यात्रा बनि जाय। ताहि मे एके संग रजत, कांचन, शुक्लवर्ण पुष्पमाला सभक स्पर्श भऽ जायत।

ई विचारि दुहू मेधावी छात्र वेश्याक सम्मुख पहुँचि, उपर्युक्त श्लोक पढ़ैत

ओकरा अङ्गस्पर्श करबाक हेतु हाथ बढ़ौलन्हि। बाम भाग आदित्यनाथ, दक्षिण भाग मार्त्तण्डनाथ!

वेश्या त भौंचक! तावत ई लोकनि ओकरा चन्द्रहार पर हाथ राखि देलथिन्ह। ओ चीत्कार कय उठलि। चारू कात सँ लोक जमा भऽ गेल। जखन दुहू दैवज्ञ अपन वास्तविक परिचय देलथिन्ह तखन सभ केओ बूझि गेलैन्ह जे ई एक जोड़ा नमूना थिकाह। गणकक बुद्धि पर गणिको हँसि देलकैन्ह।

दुहू विद्यार्थी कैं एतबा भरि फल अवश्य प्राप्त भेलैन्ह जे सम्पूर्ण बरियात मे प्रख्यात भऽ उठलाह।

जखन बरियात निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचल त लोक विनोदार्थ तरह-तरहक प्रश्न करय लगलैन्ह और दुनू विद्यार्थी अपन प्रकाण्ड ज्योतिर्विद्या सँ गुरुक नाम उज्ज्वल करय लगलाह।

बरियात मे एकटा बालटी हेरा गेल रहैक। आदित्यनाथ कहलथिन्ह – प्रश्न करू। हम उचारि दैत छी।

तदनन्तर ओ तिथि, बार, नक्षत्र जोड़ि तीन मिला पाँचसँ भाग देलन्हि, शेष तीन बचलैन्ह। कहलथिन्ह – बालटी आकाश मे लटकल अछि।

एहि पर सभ केओ भभा कऽ हँसि पड़ल। आदित्यनाथ तमसा कऽ बजलाह – हमरा त गुरु एहिना पढ़ौने छथि –

तिथि वारं च नक्षत्रं लग्नं वह्निविमिश्रितम्।
पंचभिस्तु हरेद्भागं शेषं तत्वं विनिर्दिशेत्।
पृथिव्यां तु स्थिरं ज्ञेयमप्सु व्योम्नि न लभ्यते।।

तैं ई बालटी भेटयवाला नहि अछि।

तावत एहन संयोग जे ओ बालटी भेटि गेल! मार्त्तण्डनाथ थपरी पाड़य लगलथिन्ह।

एहि पर आदित्यनाथ लाल भऽ उठलाह। लोक कैं कहलथिन्ह – अच्छा, देश। हिनके किछु पुछिऔन्ह तऽ।

मार्त्तण्डनाथ शान सँ बजलाह – जे पुछबाक हो से पुछू।

ओहि समय कन्याक पिता आबि पहुँचलाह। पुछलथिन्ह – अच्छा, बुझू त हमरा मन मे की अछि?

मार्त्तण्डनाथ आङुर पर गणना करैत कहलथिन्ह – अहाँक मन मे गर्भक चिन्ता अछि।

ई सुनितहि लोक अवाक रहि गेल। कन्याक पिता ओहिठाम सँ लगले ससरि गेलाह।

मार्त्तण्डनाथ बजलाह – हमरा त गुरु एहिना पढ़ौने छथि –

मेषे च द्विपदां चिन्ता वृषे चिन्ता चतुष्पदाम्।
मिथुने गर्भचिन्ता च व्यवसायस्य कर्कटे।।

से एखन मिथुन लग्न वितैत अछि। एखन जे प्रश्न करत तकर यैह उत्तर हैतैक।

एहि पर आदित्यनाथ चौल करय लगलथिन्ह। मार्त्तण्डनाथ खिसिया कऽ बजलाह – बेश, अहाँ बड़ सुबोध छी त बुझू त हमरा मुट्ठी मे की अछि?

आदित्यनाथ गणना करैत कहलथिन्ह – अहाँक मुट्ठी मे नील रंगक वस्तु अछि। किऐक त – मेषे रक्तं वृषे पीतं मिथुने नीलवर्णकम्।

मार्त्तण्डनाथ चट मुट्ठी खोलि कौड़ी देखबैत बजलाह – फुसियाहा कहाँ कें! आब यैह कौड़ी तोरा नाक मे बान्हि दियौह?

आदित्यनाथ किछु अप्रतिभ होइत बजलाह – मुष्टि-प्रश्न मे उज्ज्वल रंगक उल्लेखे नहि छैक त हम की करू? ई ग्रन्थ-कर्त्ताक दोष थिकैन्ह।

एहि पर मार्त्तण्डनाथ थपरी पाड़ि हँसय लगलथिन्ह।

आदित्यनाथ कचकचा कऽ बजलाह – तोहर गुरुए कहि सकै छथुन्ह जे मुट्ठी मे की अछि?

बस, आब भेल टीका-टिप्पौअलि। आदित्यक टीक मार्त्तण्डक हाथ मे, मार्त्तण्डक टीक आदित्यक हाथ मे। केओ छोड़य वला नहि। मार्त्तण्ड बेसी जोरगर रहथि, किन्तु एहन संयोग जे हुनक बाम आँखि फड़कय लगलैन्ह। बिचारलन्हि जे आब त युद्ध मे हारिए जाएब, किऐक त – नेत्रस्याधः स्फुरणमसकृत् संगरे भंगहेतुः। अतएव थक्क दऽ आदित्यक टीक छोड़ि देलथिन्ह। आदित्य हुनका पर चढ़ि बैसलथिन्ह। ता दर्शक सभ बीच मे पड़ि दुहू कें छोड़ा देलकैन्ह।

जखन ई समाचार गुरुद्वय कें ज्ञात भेलन्हि त ओहो अपना मे मुहाबज्जी बन्द कऽ लेलन्हि।

किन्तु थोड़बे कालक उपरान्त हुनको दुनू गोटा मे बजरिये गेलैन्ह। किऐक त बियाहक मुहूर्त्त लऽ कऽ भारी विवाद उठि गेल। एक गोटाक मत बेआलिस दण्ड छप्पन पल। दोसर गोटाक मत चौआलिस दण्ड सत्रह पल। दुहू ज्योतिषी अपना-अपना सिद्धान्त पर अड़ि गेलाह।

फोंचाइ झा कहलथिन्ह – जौं हमर बात नहि रहत त हम ऐखन बरियात सँ बिदा भऽ जाएब।

खट्टर झा कहलथिन्ह – जौं हिनके बात रहतैन्ह त हम यैह बिदा भेलहुँ।

बरक बाप महा विपत्ति मे! किनकर बात राखल जाय?

खट्टर झा कहलथिन्ह – जे कोदो दऽ कऽ पढ़ने हैत सैह चौआलीस दण्ड सत्रह पल कहत।

फोंचाइ झा बजलाह – जकरा मगज मे भुस्सा भरल हैतैक सैह बेआलिस दण्ड छप्पन पल कहत।

खट्टर झा क्रुद्ध भय बजलाह – औ फोंचाइ झा! अहाँ बेशी फर-फर नहि करू। अहाँ छी प फ ब भ म मूषिक वर्ग, हम छी क ख ग घ मार्जार वर्ग। हमरा सँ बाँचल रहू।

फोंचाइ झा बजलाह – अहाँ मार्जार वर्ग छी त हम सिंह वर्ग छी। राशिक नाम चवर्ग पर अछि। और हमरा जन्मलग्नक रिपु स्थान मे मंगल छथि। हमरा सँ जे शत्रुता करताह से नाश कें प्राप्त हैताह। तें हमरा सँ जुनि लागू।

आब दुहू गोटा मे तेहन कटाउझि चलल जे अन्त मे छाता-छतौअलि भऽ गेल। परन्तु दुहू ज्योतिषीक छाता पुराने रहैन्ह। युद्धक आदिए मे टूटि गेलैन्ह। तावत लोक सभ हाँ-हाँ करैत रोकि लेलकैन्ह।

आब दुहू ज्योतिषी अपना-अपना शत्रुनाशक उपाय सोचय लगलाह। ओहि दिन अष्टमी बुध रहैक। फोंचाइ झा गणना कैलन्हि –

सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता शेषे गुणेऽभ्रे भुवि वह्निवासः।
सौख्याय होमे शशियुग्म शेषे प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च।।

अष्टमी मे एक जोड़ने नौ, बुध दिनक चारि, योग भेल तेरह। चारि सँ भाग देने एक बाँचत, जकर फल प्राणनाश। अतः आइ जे होम करताह से जैताह।

शत्रुनाशक एहन सरल युक्ति देखि ओ बरक बाप सँ एकान्त मे कहलथिन्ह – आइ खट्टर झा सँ अवश्य हवन करा लियऽ।

तावत खट्टर झा दोसरे गणना कैलन्हि –

तिथिं च द्विगुणीकृत्य बाणैः संयोजयेत् ततः।
सप्तभिश्च हरेद्भागं शिववासं समुद्दिशेत्।।
श्मशाने सप्तमे चैव शिववास इतीरितः।
श्मशाने मरणं ज्ञेयं फलमेवं विचारयेत्।।

आइ अष्टमीक आठ दूना सोलह, सोलह पाँच एकैस – ताहि मे सात सँ भाग देने शून्य शेष। अतः आइ महादेवक पूजा कैने मृत्युफल हो।

बरक बाप सँ जा कऽ कहलथिन्ह – आइ फोंचाइ झा सँ महादेवक पूजा करबा लियऽ।

यजमानक आदेशानुसार खट्टर झा होम करय लगलाह, फोंचाइ झा महादेवक पूजा। दुनू कें एक दोसराक षड्यन्त्र दिशि ध्यान नहि गेलैन्ह। दुनू अपना-अपना मन मे प्रसन्न जे प्रतिद्वन्द्वी पर मारण प्रयोग भऽ रहल अछि।

किन्तु आश्चर्य जे होम-पूजा कैलो उत्तर दुनू मे किनको मृत्यु नहि भेलैन्ह। प्रत्युत दुनू ज्योतिषी बेश बर-बिदाइ नेने सकुशल घर पहुँचैत गेलाह।

एक दिन खट्टर झा तेल लगबैत रहथि कि मार्त्तण्डनाथ आबि कऽ एक मुट्ठी माटि तेलक माली मे धऽ देलथिन्ह। गुरुक ताड़न-दण्ड उठल, किन्तु शास्त्रक आगाँ हुनकर शस्त्र व्यर्थ भऽ गेलैन्ह। मार्त्तण्डनाथ कहलथिन्ह – गुरु! आइ मंगल कैं तेल लगौने अपनेक मृत्यु भऽ जाइत। किऐक जे – तैलाभ्यङ्गे रवौ तापः सोमे शोभा कुजे मृतिः। तैं दोष परिहारार्थ हम एहि मे माटि मिला देलिऐक। कारण जे अपनहि पढ़ौने छी –

रवौ पुष्पं गुरौ   दुर्वां भूमिं भूमिजवासरे।

गोमयं शुक्रवारे च तैलाभ्यङ्गे न दोषकृत्।।

ई भस्मासुर वला प्रयोग देखि गुरु मार्त्तण्डनाथक बाप कैं बजा पठौलथिन्ह। ओ अक्खड़ देहाती। आबि कऽ कहलथैन्ह – महाराज! जौं अहाँक शास्त्र सत्य तखन त हमर बालक उचिते कैलक अछि। उपराग किऐक दैत छी? और जौं अहाँक शास्त्रे मे फूसि लिखल अछि त से पढ़ौलिऐक किऐक?

ज्योतिषीजी बापक खीस बेटा पर उतारलथिन्ह। मार्त्तण्डनाथ कैं धुरैत कहलथिन्ह – तों एतेक टा भऽ गेलाह। बियाहो-द्विरागमन भऽ गेलौह। तथापि किछु बोध नहि भेलौह अछि। चुचेचोला अश्विनीए मे लटकल छह। आब तोहर कुंडली देखि लेबौह, तखन आगाँ पढ़ैबौह।

मार्त्तण्ड जा कऽ अपन कुंडली लऽ ऐलाह। गुरु मीन-मेष करैत कहलथिन्ह – तोरा विद्या नहि भऽ सकैत छौह। कारण जे मकर राशि मे तोहर जन्म छौह – मूर्खत्वं मकरे घटे चतुरता मीनेत्वधीरा मतिः। तैं तोरा पढ़ैया मे आब हम व्यर्थ परिश्रम नहि करब।

मार्त्तण्डनाथ फोंचाइ झाक पाठशाला मे पहुँचलाह।

फोंचाइ झा गणना करैत कहलथिन्ह – मकर राशि मे तोहर जन्म भइए नहि सकैत छौह। किऐक त एहि टीपनिक अनुसार तोरा छठम स्थान मे बुध छथुन्ह और से बालक चारि वर्ष सँ बेशी जिबिए नहि सकैत अछि।

षष्ठोऽष्टमस्तथामूर्त्ती जन्मकाले यदा बुधः।

चतुर्थवर्षे   मृत्युश्च   यदि   रक्षति शंकरः।।

यदि तोहर जन्म ठीक ओहि लग्न मे भेल रहितौह त साक्षात् महादेबो तोरा नहि बचा सकितथुन्ह। अतएव ई टीपनिए अशुद्ध छौह।

ओहि दिन सँ मार्त्तण्डनाथ हुनके पाठशाला मे पढ़य लगलाह। आदित्यनाथ ओ मार्त्तण्ड मे चढ़ा-चढ़ी चलय लगलैन्ह।

एक बेर आदित्यनाथ हरतार्क मे अन्हरौखे खंजन देखलन्हि। प्रसन्न भय

बजलाह – हौ यार! हमरा आब सुन्दरी स्त्री भेटत। किऐक त उत्तर दिशा मे खंजन देखलहुँ अछि। वायव्यां वरवस्त्रमन्नविभवो दिव्याङ्गना चोत्तरे। तोंहू देखिए लैह।

किन्तु मार्त्तण्ड जाबत देखक हेतु घुमलाह ता चिड़इ ईशान कोण मे आबि गेल। मार्त्तण्ड अपन कपार पीटय लगलाह। किऐक त – ऐशान्यां मरणं ध्रुवं निगदितं दिग्लक्षणं खंजने। दुखी होइत बजलाह – तोरा त सुन्दरी भेटतौह और हमरा मृत्युक फल भेटत।

आदित्यनाथ कहलथिन्ह – हम भागवंत छी, तों अलच्छ छह।

तावत मार्त्तण्डनाथक माथ पर चार सँ एक गिरगिट खसि पड़लैन्ह। मार्त्तण्ड खुशी सँ फूलि उठला जे राजा बनि जाएब। शीर्षे राज्यश्रियः प्राप्तिः। बजलाह – आब कहह। के भागवंत और के अलच्छ? हमरा त आब राज्ये भेटि जाएत तखन सुन्दरीक कोन कमी?

आदित्यनाथ कहलथिन्ह – बेशी ठकह नहि। उरसि शिरसि कंठे पृष्ठभागे च मृत्युः। माथ पर गिरगिट खसने मृत्यु हो।

दुनू विद्यार्थी शास्त्रार्थ करैत गुरुक समीप पहुँचलाह। ओ स्वप्नावस्था मे चिचिआइत छलाह। मार्त्तण्डनाथ देह धऽ कऽ जगा देलथिन्ह।

गुरु खिसियाइत कहलथिन्ह – किऐक जगा देलह? आब भिंसरबी राति कऽ निंद त नहिए पड़त। दुःस्वप्न देखलहुँ अछि से फलित भऽ जाएत।

प्रातः स्वप्नश्च फलदस्तत्क्षणं यदि बोधितः।

वदेत् काश्यपगोत्राय यदि निद्रां न कारयेत्।।

जाह, कोनो काश्यप गोत्रबला कैं बजा लबहौक। ओकरा कहि देने दुःस्वप्नक फल कटित भऽ जाएत।

क्रमशः दुनू विद्यार्थी ज्योतिषिक बहुत रासे विषय सीखि गेलाह। कोन लग्न मे धान रोपी? कोन मुहूर्त्त मे काटी? कहिया खरिहान मे मेह गाड़ी? कोन दिन दाउनि करी? कोन नक्षत्र मे ओसौनी करी? कहिया कोठी मे भरी? कोन तिथि मे चूल्हि गाड़ी? कोन लग्न मे नववधू भानस करथि? इत्यादि कंठस्थ भऽ गेलैन्ह।

एतबे नहि। वधूक गर्भाधान करबाक मुहूर्त्त, सौरी जैबाक मुहूर्त्त, दबाइ खैबाक मुहूर्त्त, दूध पिऐबाक मुहूर्त्त, बहरैबाक मुहूर्त्त, स्नान करबाक मुहूर्त्त, नूआ पहिरबाक मुहूर्त्त, नेना कैं खाट पर सुतैबाक मुहूर्त्त, कान छेदैबाक मुहूर्त्त, कोनो विषय बाँकी नहि रहलैन्ह। स्वप्न-विचार, शकुन-विचार, छिका-विचार, हस्तरेखा-विचार, ठकना यंत्र[1]

[1]. प्रसव वेदना काल बेशी बिलम्ब होइत देखि ज्योतिषी ठकना मे किछु अंक लिखि कऽ सूतिकागृह मे पठा दैत छथिन। ज्योतिषी लोकनिक विश्वास छैन्ह जे ओ देखितहि गर्भिणी कैं प्रसव भऽ जाइत छैक।

आदि समस्त विषय मे पारंगत भऽ गेलाह।

एक बेर ज्योतिषी फोंचाइ झा हाथ मे इसरगत बन्हने तकर ज्योतिःशास्त्रोक्त प्रभाव वर्णन करैत कहलथिन्ह –

शुचिसितदिनकरवारे करमूले बद्धपुलिकमूलस्य।
नागारेरिव नागाः प्रयान्ति किल दूरतस्तस्य।।

आषाढ़ शुक्लपक्ष मे रवि दिन इसरगत बन्हने साँप तहिना दूर पड़ाय जेना गरुड़ कैं देखि कऽ। तेँ लोकनि अगिला रवि कैं बन्हैत जैहऽ। किऐक त – अकृत्वा पुलकैर्बन्धं प्रायश्चित्तीयते नरः।

अग्रिम रवि कैं दुहू शिष्य कैं लय नीक लग्न ताकि इसरगत उखाड़क हेतु खढ़ौर दिशि विदा भेलाह। खढ़ौरक बीच मे पहुँचि जहिना ज्योतिषीजी इसरगतक जड़ि लग पहुँचलाह कि छौ हाथक जुआएल अधसर पैर मे लपटा गेलैन्ह।

विद्यार्थी कहलथिन्ह – गुरुजी, अपनेक हाथ मे त इसरगत बन्हले अछि। छोड़ा लेल जाओ।

तावत साँप जाँघ पर चढ़ि गेलैन्ह। गुरु जहिना इसरगत बला हाथ बढ़ौलन्हि कि साँप फुफ्कार छोड़ैत ओही लल्हुआ कैं हबकि लेलकैन्ह। गुरु सर्पदंश सँ चीत्कार कय उठलाह।

आदित्यनाथ फराके सँ कहलथिन्ह – गुरु, आब? गरुड़वला प्रभाव की भेल?

गुरु कनैत-कनैत कहलथिन्ह – रौ अभगला! पाछाँ शास्त्रार्थ करिहैं। एखन लऽ चल झड़बायब लेल।

मार्त्तण्डनाथ कहलथिन्ह – गुरु, आब कोनो झाड़-फूँक काज नहि देत। कारण जे आइ विशाखा नक्षत्र मे साँप कटलक अछि। और अपने स्वयं पढ़ौने छी! –

यः कृत्तिकामूलमघाविशाखासार्पान्तकार्द्रासु भुजंगदष्टः।
स वैनतेयेन सुरक्षितोऽपि प्राप्नोति मृत्योर्वदनं मनुष्यः।।

तेँ आब साक्षात गरुड़ो आबि अपनेक प्राणरक्षा नहि कय सकैत छथि। अतएव हम अपनेक अंत्येष्टि क्रियाक प्रबन्ध करय जाइत छी।

ई कहि ओ गुरुआइन कैं संवाद देबाक हेतु चललाह।

आब आदित्यनाथ गुरुक समीप पहुँचलाह। दाढ़ तजबीज करैत काल आदित्यनाथ कैं गुरुक औंठा मे यवक चिह्न देखबा मे ऐलैन्ह। आदित्यनाथ कैं सामुद्रिको पढ़ल रहैन्ह। प्रसन्न होइत बजलाह – गुरु, आब पट्टी बन्हबाक कोनो प्रयोजन नहि। किऐक त अपनहि पढ़ौने छी जे –

अङ्गुष्ठोदरमध्ये तु यवो यस्य विराजितः।
उन्नतं भोजनं तस्य शतं जीवति मानवः।।

अंगुष्ठ भाग मे यव रहने लोक शतायु हो। तखन सर्पक कटनहि की? हम अन्त्येष्टि क्रियाक प्रबन्ध रोकबाक जाइत छी।

ओहो शीघ्रता सँ विदा भेलाह। गुरुआइनक ओतय पहुँचि मार्त्तण्डनाथ गुरुक टीपनि देखय लगलाह। आदित्यनाथ गुरुआइनक जन्मकुण्डलीक गणना करय लगलाह। दुहू विद्यार्थी मे घोर शास्त्रार्थ छिड़ि गेलैन्ह।

मार्त्तण्डनाथ कहलथिन्ह – गुरु कैं भारी मारकेश लागल छैन्ह। बाँचब कठिन छैन्ह।

आदित्यनाथ कहलथिन्ह – गुरुआइन कैं वैधव्य योग लगिते नहि छैन्ह। तखन गुरु मरताह कोना?

गुरुआइन कनैत कहलथिन्ह – एखन ई शास्त्रार्थ रहय दैह। हुनक दवाइ बिरो करै जाहुन्ह।

दुहू सुयोग्य विद्यार्थी उत्तर देलथिन्ह – यदि गुरुक ग्रह प्रतिकूल छैन्ह त – ग्रहेषु प्रतिकूलेषु नानुकूलं हि भेषजम्। कोनो दवाइ काज नहि करतैन्ह। और यदि ग्रह अनुकूल छैन्ह तखन दवाइक प्रयोजने की?

ता ज्योतिषीजी झाड़-फूक करौने घर पहुँचलाह। अबितहि दुहू विद्यार्थी कैं गुरुहत्याक प्रायश्चित्त लिखि देलथिन्ह। दुनू शिष्य ग्लानि सँ आत्महत्या करबा पर तैयार भऽ गेलाह। तावत विशाखा सँ अनुराधा नक्षत्र भऽ गेल रहैक। दुनू विद्यार्थी देखलन्हि जे आइ अनुराधा रवि कैं मृत्युयोग अछि –

त्यज रविमनुराधे वैश्वदेवे च सोमम्।
रविसुतमपि हस्ते मृत्युयोगा भवन्ति।।

अतएव इनार-पोखरि मे जा कऽ डुबबाक कोन काज? एही योग मे यात्रा कऽ दी, अनायासे मृत्यु भऽ जायत। ई विचारि आत्मघात करबाक उद्देश्य सँ दुनू विद्यार्थी ओही क्षण यात्रा कऽ देलन्हि। किन्तु दुनू मे किनको अभीष्ट सिद्ध नहि भेलैन्ह। अर्थात् दुनू जीविते रहि गेलाह।

मार्त्तण्डनाथ गाम जा कऽ खेती करय लगलाह। किन्तु आदित्यनाथ एक प्रसिद्ध शहर मे किछुए दिन मे सिद्धजी बनि बैसलाह। ओतय सात हाथक साइन बोर्ड लगबौलन्हि –

आश्चर्य ज्योतिष कार्यालय

यदि फलित ज्योतिष का चमत्कार देखना हो तो यहाँ आइये और श्री १०८ त्रिकालदर्शी सिद्धजी से अपना अभीष्ट सिद्ध कराइये। यहाँ जप, पूजा, अनुष्ठान और पुरश्चरण के द्वारा ग्रहशांति कर कठिन रोगों का इलाज किया जाता है और यंत्र, मंत्र, तंत्र के द्वारा सभी मनोरथ सिद्ध किये जाते हैं।

तदनन्तर निम्नलिखित विज्ञापन छपवौलन्हि –

अद्‌भुत आविष्कार

१. शान्ति कवच – त्रिकालदर्शी सिद्धजी ने नवों ग्रहों से समझौता करके एक ऐसे यंत्र का आविष्कार किया है कि इच्छामात्र से कार्य सिद्ध हो जाता है। मूल्य–९१ रु.।

२. गर्भ कवच – इसके प्रयोग से नपुंसक स्त्री भी गर्भ-धारण कर पुत्र प्रसव करती है। मूल्य – १४ रु.।

३. परीक्षा कवच – इसके धारण से मंदबुद्धि परीक्षार्थी भी पास कर जाता है। मूल्य – ३२ रु.।

४. जीविका यंत्र – इसके प्रभाव से अच्छी नौकरी मिलती है। जितने अधिक पावर का लिया जायगा उससे दूना वेतन मिलेगा जैसे ५० रु. का यंत्र लेने से १०० रु. की नौकरी मिलेगी। मूल्य २५ रु. से लेकर ५०० रु. तक।

५. विजय यंत्र – इसके प्रयोग से हाकिम की बुद्धि पर ऐसा प्रभाव पड़ जाता है कि लिखा हुआ फैसला भी बदल जाता है।

६. व्यापार तंत्र – इसके प्रयोग से तेजी-मंदी पर कुछ ऐसा प्रभाव पड़ता है कि व्यापारी को मनचाहा लाभ होता है।

७. मृत्युंजय मंत्र – इसके प्रभाव से मृत्यु के मुँह में पड़ा हुआ रोगी भी बचा लिया जाता है। दक्षिणा – १०१ रु.।

एक दिन संयोगवश मार्त्तण्डनाथ घुमैत-फिरैत ओहि शहर मे आबि पहुँचलाह। उपर्युक्त साइनबोर्ड और विज्ञापन देखि चकित रहि गेलाह। तावत देखैत छथि जे दाढ़ी बढ़ौने एकरंगा पहिरने, लाल टोप दैने, आदित्यनाथ खड़ामपर चलल अबैत छथि।

मार्त्तण्डनाथ एतेक दिन पर अपन बालसंगी कैं पाबि, भरि पाँज धरय लेल बढ़लाह और पुछलथिन्ह – आदित्य, तों एतय ई वेष बनौने की करैत छह?

आदित्यनाथ पाछाँ हटैत कहलथिन्ह – चुप चुप! हम एहि ठाम सिद्ध जी कहबैत छी। एखन कार्यालय मे बैसि कऽ तमाशा देखह। पाछाँ राति मे सभ हाल कहबौह।

मार्त्तण्डनाथ ज्योतिष कार्यालयक ठाट-बाट देखि गुम्म रहि गेलाह। एक वैद्यजी अपना स्त्रीक हेतु गर्भकवच लेबय आएल छथि। एक चरिसल्ला विद्यार्थी परीक्षा-कवच लेबक हेतु बैसल छथि। एक सेठजी मंदी-तेजी बूझक हेतु व्यग्र छथि। एक मोखतार साहेब उन्नैस वर्षक कुमारि कन्या कैं नकली टीपनिक जोर सँ चौदह वर्षक बनाबय चाहैत छथि।

एवं प्रकार केओ बीमारीक मारल, कओ मोकदमाक हारल, केओ नौकरीक

उमेदवार, केओ सगुन करौनिहार। कतेक आएल, कतेक गेल। सिद्धजी ककरो यंत्र देलथिन्ह, ककरो कवच, ककरो हाथ मे भस्मक पुड़िया, ककरो पुनः एकान्त मे आबय कहलथिन्ह।

राति एगारह बजे धरि एहिना लोकक ताँता लागल रहलैन्ह। बारह बजे राति कऽ जखन दुनू बालसंगी खा-पी कऽ निश्चिन्त भेलाह त सिद्धजी कहलथिन्ह – देखलह तमाशा? कोना रुपैया झहरैत छैक? साँझ सँ एखन धरि चौरासी रुपैया पड़ल अछि। ततेक गुरुजी कैं सात मासमे पाठशाला सँ भेटैन्ह।

मार्त्तण्डनाथ कहलथिन्ह – हौ संगी, तों एतेक टक-विद्या कोना सीखि गेलाह। एहन भारी टाटक पसारने छह से लोक बुझैत छौह नहि?

सिद्धजी – हौ, हमरा ओहिठाम तेहने-तेहने लोक पहुँचैत अछि जे अपना गरजे आन्हर भेल रहैत अछि। जकर कार्य सिद्ध भऽ जाइ छैक से बुझैत अछि जे हमरे प्रसादात् भेलैक। जकरा नहि होइत छैक से अपना अदृष्ट कैं दोष दैत घर जाइत अछि।

सिद्धजी अभिमानपूर्वक एक बड़का पोथा मार्त्तण्डनाथक आगाँ पटकैत कहलथिन्ह – देखह, केहन-केहन सर्टिफिकेट (प्रशंसा-पत्र) छैक। ई कलक्टर साहेबक, ई कमिश्नर साहेबक, ई जज साहेबक, ई सदरआला साहेबक। कहाँ धरि देखबह? जखन ई सभ छपतैक तखन बुझबहक।

मार्त्तण्डनाथ मुग्ध होइत पुछलथिन्ह – ऐं हौ संगी! एहन-एहन लोक कैं कोना परतारि लेलहक?

सिद्धजी अगराइत-अगराइत कहय लगलथिन्ह – हौ, बातो बनैबाक लूरि होइत छैक। हम तेहन अँटकर सँ फल कहैत छिऐक जे प्रायशः दस मे पाँच कैं मिलिए जाइत छैक। देखह, कालिह हलुअइया मोकदमा जीति गेल त एक परात मधुर दऽ गेल। परसू सिनेमाक मैनेजर कैं बेटा भेलैक त मुफ्त टिकट पठा देलक। एहि ठामक वकील-मोखतार सभ हमर यजमाने अछि। बड़का-बड़का आफिसक टीका हाथ मे रखने छी। दोकानदार सभ चेले अछि। जाहि वस्तुक काज पड़ैत अछिसे मङनीए मङा लैत छी। जेम्हरे चलैत छी तेम्हर चढ़ौना चढ़ैत अछि। हमरा कि किछु अपना दिशि सँ खर्च लगैत अछि?

मार्त्तण्ड कहलथिन्ह – हौ संगी, हम गोलाध्याये मे लटकल रहि गेलहुँ और तों त्रिकालदर्शी बनि गेलाह। ज्योतिषक फल अनका भेटौक वा नहि, तोरा धरि त खूबे फलित भेलौह।

सिद्धजी गमकैत कहलथिन्ह – यदि तोंहू एहिठाम रहि जाह त हम प्रांति करा दऽ सकैत छिऔह। एहि ठाम नित्य दस-बीस ब्राह्मण कैं पुरश्चरण देया दैत छिऐक। सभ ह्ठी खी करैत हलुआ-पूड़ी उड़बैत अछि और हमर जयजयकार मनबैत अछि। तोरो महामृत्युंजय मंत्रक अनुष्ठान देआ देबौह। प्रतिदिन सवा टका दक्षिणा भेटल

करतीह। गाम पर जे खेसारी कटैबहगऽ ताहि सँ एहिठाम बैसल-बैसल लड्डू पाड़ह। यदि कनेक आडम्बर करय अबैह त हम तोरा तान्त्रिकजी कहि कऽ प्रसिद्ध कऽ देबौह।

मार्त्तण्डनाथ कहलथिन्ह – बेश, ई सभ त होइते रहतैक। आब अपना घर परक हाल-चाल कहह।

सिद्धजी कहलथिन्ह – हौ! तोरा सँ कोन पर्दा? घरक हाल की कहियौ? पारिवारिक दुःख सँ तंग-तंग रहैत छी। एकटा देयादी झगड़ा चलि रहल अछि, जमीन लऽ कऽ। ताहि मे हजारो रुपैया भुरकुस भऽ गेल। आखिर मोकदमो हारि गेलहुँ। आब बासलात देबय पड़त। छोट भाइ कैं एकटा कपड़ाक दोकान खोलि देने छलिऐन्ह से सबटा पूँजीए डुबा देलन्हि। भातिज कैं अंग्रेजी स्कूल मे नाम लिखा देने छिऐन्ह, परन्तु तीन साल सँ फेले कैने जाइत छथि। स्त्री छथि से सभ दिन दुःखिते रहैत छथि। अपने देह लऽ कऽ झखैत रहैत छथि, शाखा-सन्तति की हैतैन्ह?

तावत एक व्यक्ति घबराएल ओतऽ आबि कऽ कहलकैन्ह – सिद्धजी! सिद्धजी! भारी अनर्थ भऽ गेल। आइ एगारह दिन सँ जकर पुरश्चरण भऽ रहल छैक तकरा घरमे एखन कन्नारोहटि भऽ रहलैक अछि। बूझि पड़ैत अछि जे नहि बचलैक।

सिद्धजी कहलथिन्ह – तों छह भारी बूड़ि। हम कहने रहओह जे सभटा दक्षिणा पहिनहि हथिया लैह। आब कि एक्को कौड़ी देतौह?

मार्त्तण्डनाथ कनेक काल धरि गुम्म रहि बजलाह – हौ संगी, हमरा जाय दैह। ई छल-विद्या हमरा बुते पार नहि लागत। एतेक फूसि-फटाक्का कऽ कऽ जे टाका उपार्जन करब ताहिसँ अपना घर परक गृहस्थीए नीक।

- सिद्धजी कहय लगलथिन्ह – तों रहि गेलाह सोझे देहाती बूड़ि! हौ! फूसि सँ केओ बाँचल अछि? ई संसारे फूसि थिक। जनता त मूर्ख होइत अछि। हम नहि ठकबैक त आन केओ ठकि लेतैक। चतुर सर्वदा सँ मूर्ख कैं ठकैत आएल अछि। फलितक जे एतेक महाजाल रचल गेल छैक से कि निष्फल छैक? हमरा लोकनिक बुद्धिमान पूर्वज नवग्रहक तेहन फाँस बना गेल छथि जे जन्म सँ मरण पर्यन्त लोक कैं नथने रहैत अछि। हम ग्रहक नाम पर ग्रहण करैत छी। यजमानक मन मे शान्ति आबि जाइत छैक। दुनू कैं एक दोसरा सँ लाभ छैक। हम नहि रही त ओकर अदृष्ट के देखतैक? और ओ नहि रहय त हमर अदृष्ट कोना बनत? ई व्यवसाय कि उठयबला छैक? ओ हमरा चातुर्यक दक्षिणा दैत अछि। हम ओकरा सँ अज्ञानताक कर लैत छिऐक। एहि मे अन्याय कोन? वैद्य फीस लऽ कऽ शरीर मे शान्ति दैत छथिन्ह, हम फीस लऽ कऽ आत्मा मे शान्ति पहुँचबैत छिऐक। जाहि दिन ई विद्या संसार सँ लुप्त भऽ जाएत ताहि दिन एक बड़का सहारा लोकक उठि जैतैक। काव्य और संगीत सँ क्षणिक आनंद भेटैत छैक, किन्तु अदृष्ट शास्त्र सँ आजीवन सान्त्वना भेटैत रहैत

छैक। फलित ज्योतिष अपूर्व वस्तु थिक।

मार्त्तण्डनाथ गामक यात्रा स्थगित कैलन्हि।

दोसरा दिन सिद्धजीक आश्चर्य ज्योतिष कार्यालय मे एक नवीन विज्ञापन दृष्टिगोचर भेल –

तान्त्रिकाचार्य

मौनी बाबा श्रीमार्त्तण्डनाथ स्वामी

आप बारह वर्षों तक हिमालय की कन्दरा में तपस्या करने के अनन्तर नगर-निवासियों के सौभाग्य से यहाँ पधारे हुए हैं। आप हस्त-रेखा और मुखाकृति देखकर ही संकेत द्वारा पूर्व-जन्म और पर-जन्म का वृत्तान्त बतला देते हैं। जिन सज्जनों को अपना भूत-भविष्य जानने की इच्छा हो, वे महात्माजी के दर्शन से लाभ उठावें।



पंडित जी

जखन पं. जी कें निमन्त्रण-पत्र भेटलैन्ह त आङन मे पंडिताइन कें कहलथिन्ह – एहि कागतक अर्थ बुझलिऐक? एकर अर्थ छैक केहुनिया खाजा, बेढ़सेरा मुङ्वा.....

पंडिताइन मुँह ताकय लगलथिन्ह।

पंडित जी बजलाह – मधुवन डेउढ़ी मे उपनयन छैक। कुमरम सँ रातिम पर्यन्त पंडित लोकनिक डेरा रहतैन्ह। चारू दिन चिखर्जाक मधुर आओत। विद्यार्थी-खवास जोड़ि कऽ उपाति भेटत। ओ सभ कथी मे कऽ आनब? बड़का पेटी अनवाक।

पंडिताइन चिन्तित होइत बजलीह – बड़का पेटी त दऽ नहि अछि। कब्जा भङ्ठल छैक।

पं जी कहलथिन्ह – कोनो चिन्ता नहि। पाड़ि लऽ कऽ बान्हि दिऔक। ताला-कुंजी हमरा ठीक सँ लगाबहु नहि अबैत अछि। खुलला रहत त अपने हाथ सँ धरब-उसारब। ओना ताला फोलक हेतु बारंबार विद्यार्थीक काज पड़ैत।

पुनः स्त्रीक पेओन लागल साड़ी देखि बजलाह – आब ई साड़ी पनिभरनी कें दऽ देबैक। बिदाइ मे एक थान मलमल भेटबे करत। ताहि मे सँ चादर हम अपना लेल फाड़ि बाँकी अहाँ कें दऽ देब। आब अहाँक भाग्य सँ ओहि मे जे टा साड़ी बहराय।

पंडिताइन प्रसन्न होइत पुछलथिन्ह – कहिया जैबैक?

पं. जी बजलाह – आब दिन कहाँ छैक? परसू कुमरम। काल्हि सन्ध्याकाल धरि ओहिठाम पहुँचि जैबाक चाही। अनुके उषा मे यात्रा करक हैत।

पंडिताइन पुछलथिन्ह – विद्यार्थी खवास मे ककरा नेने जयबैक?

पं. जी कहलथिन्ह – विद्यार्थी मे छकौड़ीलाल बेश होशियार अछि। ओकरा टिकटो कटाबय अबैत छैक। लालटेनो लेसय जनैत अछि। और खवास मे ठिठरा कें बजा पठबैत छिऐक। ओ रहत त भरिगर पेटी उठा सकत। केवल एके टा आपत्ति ओकरा मे छैक जे खाधुर बेशी अछि। किन्तु ओहिठाम कि कोनो हमरा अपना दिशि सँ डाँड़ लागत?

तावत छकौड़ीबाल दोकान सँ फिरल ऐलाह। कहलथिन्ह – गुरुजी, चीनी त उधार नहि देलक। पछिला कैंचा पड़ैत अछि।

पं. जी कहलथिन्ह – सार राखौ अपन चीनी। ओही लऽ कऽ अपन तेरहाक

श्राद्ध करौ। आब त मधुरक खानिए मे जा रहल छी। ओ एक चुटकी चीनी तौलि कऽ पुड़िया मे दीत। और ओहिठाम त आँजुरक आँजुर चीनी.....

छकौड़ीलालक जी छटपटाय लगलैन्ह। पुछलथिन्ह – कतहु सँ नेओत आएल छैक की?

पं. जी कहलथिन्ह – हँ। साधारण स्थान सँ नहि। रजवाड़ा सँ। कतेक भोज खैबह? जाह, ठिठरा कें बजा लबहौक।

छकौड़ीलाल नचैत विदा भेलाह।

पं. जी अपना स्त्री कें कहलन्हि – ऐखन सँ चीज-वस्तु सरियाबय लागि जाउ। नहि त हड़बड़ी मे कोनो वस्तु छुटि जाएत।

पंडिताइन क्रमशः सभ वस्तु जुटाबय लगलीह। पाग, डोपटा, चपकन, बटुआ, पूजाक झोरी, आसन, खड़ाम, लोटा-डोरी आदि समस्त प्रयोजनीय वस्तु एकत्र कैला उत्तर पं. जी कें पुछलथिन्ह – देखियौ त किछु छुटलैक त नहि?

पं. जी सभ वस्तु तजवीज करैत बजलाह – असले वस्तु छुटि गेल। नोसि कतय अछि?

पंडिताइन दौड़ि कऽ नसिदानी लऽ ऐलीह।

पं. जी एक चुटकी नोसि नाकक पुड़ा मे दैत बजलाह – यैह त शास्त्रार्थ मे टेक राखत। हँ, एकटा और वस्तु छुटि गेल। सभ सँ मुख्य वस्तु। बुझू त की?

पंडिताइन कहलथिन्ह – हमरा ध्यान मे त नहि अबैत अछि।

पं. जी – अहाँक ध्यान मे आओत कोना? भरि जन्म त पटुआक झोर-भात खाइत-खाइत दिन बीतल। जीवन मे कहियो मिष्टान्न सँ इच्छापूर्ण भोजन भेल रहैत तखन ने! जाउ, कठोर मे सँ भोजन-भस्म चूर्ण नेने आउ।

डेउढ़ी पहुँचला उत्तर पं. जीक डेरा पुरनका फीलखाना मे पड़लैन्ह। ओही मे तीन टा पंडित और रहथि। वैदिकजी, मीमांसकजी और नैयायिकजी।

जखन पं. जी पहुँचलाह तखन मीमांसक ओ नैयायिक मे शास्त्रार्थ छिड़ल रहैन्ह। मीमांसकक पक्ष रहैन्ह जे कर्मक फल स्वतः भेटैत छैक। नैयायिकक कथ्य रहैन्ह जे नहि, कर्मक फलदाता ईश्वर थिकाह। एहिपर घोर विवाद चलि रहल छल।

शास्त्रार्थक गन्ध लगैत देरी पं. जी ओहिठाम जा पहुँचलाह। ई पहुँचितहि अपन वेदान्तक मत-प्रतिपादन करय लगलाह – सर्व मिथ्या (सभ किछु मिथ्या थिक)।

नैयायिक तर्क करैत कहलथिन्ह – सभ किछु मिथ्या थिक त अहूँ मिथ्या, अहाँ जे कहैत छी सेहो मिथ्या।

वेदान्तजी बजलाह – हम अहाँ दुनू गोटा मिथ्या। जे किछु कर्म हमरा लोकनि करैत छी से सभ मिथ्या थिक।

ई सुनितहि मीमांसकक कान ठाढ़ भऽ गेलैन्ह। बजलाह – जखन सभ कर्म मिथ्या थिक तखन धर्म और अधर्म मे भेद की रहल?

पं. जी वीरासन लगा बजलाह – धर्म-अधर्मक केवल व्यावहारिक सत्ता छैक। पारमार्थिक दृष्टि सँ केवल ब्रह्ममात्र सत्य थिकाह। ब्रह्म सत्यम्, जगन्मिथ्या। सम्पूर्ण संसार प्रपंच थिक।

आब वेदान्तीजी कैं नैयायिक ओ मीमांसक, दुहू गोटा सँ धजरि गेलैन्ह।

मीमांसक पुछलथिन्ह – का नाम व्यावहारिक सत्ता (व्यावहारिक सत्ता ककरा कहैत छिऐक)?

नैयायिक पूछि बैसलथिन्ह – ब्रह्मणः किं लक्षणम् (ब्रह्मक लक्षण की)?

छकौड़ीलाल कैं भय होमय लगलैन्ह जे आब कदाचित अपन गुरुजी परास्त नहि भऽ जाथि।

वेदान्तीजी पहिने अपना नाकक दुनू पूड़ा मे भरिगरहा चुटकी नोसि कोंचलन्हि। तदुपरान्त प्रश्नक उत्तर करबाक हेतु खखसि कऽ सन्नद्ध भेलाह। तावत व्यावहारिक सत्ता स्वयं साकार रूप मे पहुँचि गेलैन्ह। चारि चँगेरा मधुर जलपानक हेतु आबि गेल। समस्त पंडित-विद्यार्थी ओही दिशि साकांक्ष भय गेलाह। आब निराकार ब्रह्मक सत्ता कें के देखैत अछि? सत्य-मिथ्या लऽ कऽ जे शास्त्रार्थ उठल छल से मधुरेण समापयेत् भऽ गेल।

पं. जी विद्यार्थी ओ खवास कैं जल लाबक हेतु इनार पर पठौलथिन्ह और अपने कोठरी मे आबि चँगेराक ऊपर सँ पात हटौलन्हि। हृदय गद्गद् भऽ उठलैन्ह। पाँच प्रकारक मधुर। अमिरती, बालूशाही, लवंगलता, गुलाबजामुन और मेहीदानाक लड्डू। प्रत्येक पाँच-पाँच टा। तकरा नीचा तीन गेंट सोहारी। तर मे आलू, भाँटा, सीम और ओलक अँचार। एक बासन मे दही। एक बासन मे चीनी।

पं. जी पेटी फोलि कऽ सभ टा मधुर अँचार ओ चीनी ओहि मे धऽ रखलन्हि। तखन ओकरा पाछ़ि सँ नीक जकाँ बान्हि देलथिन्ह। केवल सोहारी तथा दहीक बासन आगाँ मे लऽ कऽ बैसलाह। तावत विद्यार्थी-खवास जल लऽ कऽ पहुँचि गेलन्हि।

पं. जी अपना खैबा योग्य मोलायम-मोलायम सोहारी बीछि कऽ पात पर धैलन्हि और ऊपर सँ छहिगर दही काढ़ि कऽ लऽ लेलन्हि। शेष विद्यार्थी-खवासक हेतु छोड़ि देलथिन्ह।

इच्छा भेलैन्ह जे कोनो मधुरो लितहुँ त नीक होइत। परन्तु मन कैं रोकलन्हि – 'नहि, यदि अपने लेब तखन सभ कैं देबय पड़त। ताहि सँ बरु चीनिए लऽ ली।' परन्तु सेहो जी नहि सहलैन्ह्। एहीठाम खा लेब त गाम पर की नेने जाएब? और ओहि ठाम त बिनु कैंचे देत नहि।

अगत्या पं. जी सोहारिए-दहीपर नैवेद्य काढ़लन्हि। दु-चारि कौर खैलापर जीभ

चटपटाय लगलैन्ह जे कोनो अँचार खैतहुँ। परन्तु कोन अँचार बाहर कैल जाय? सभ त लैबे जैबा योग्य अछि। कोनो दूरि होमय बला नहि। तृष्णा भेलैन्ह जे कनेक सीमवला चाखी। परन्तु सदसद्विवेचिनी बुद्धि परामर्श देलकैन्ह – 'विद्यार्थी कैं एखन पेटी फोलय कहिऐन्ह से उचित नहि। और सीमक अँचार हम अपने खाएब त छकौड़ीलाल खैताह, ठिठरो खाएत। सभटा एहीठाम सठि जाएत। तखन गाम की जाएत?

परन्तु किछु चटकारो त भेल चाहय। नहि त घोंटाएत कोना? पं. जी ठिठरा कैं कहलथिन्ह – 'जो भंडारघर सँ नोन-मरचाइ मङने आ। देखिहें, तीन टा हरियर मरचाइ नेने अबिहें।' विद्यार्थी कैं मधुर-अँचार देखल रहैन्ह। किन्तु मङबाक साहस नहि भेलैन्ह।

ओहो पैर धो कऽ चुपचाप दही-सोहारी सानय लगलाह।

जखन ठिठरा मरचाइ लऽ कऽ पहुँचल तखन पं. जी बजलाह – वाह! दहीक संग हरियर मरचाइक योग भऽ जाय तखन और की चाही? हँ, तोंहू अपन हिस्सा लऽ जो। गाम पर रहितैं त मरुआक रोटी खइतैं। एहन मोमदार सोहारी कतय भेटितौक? आइ तोंहू भरि पेट चिक्कनी सोहारी खा कऽ जन्म सार्थक कऽ ले।

पं. जी सूति कय विद्यार्थी सँ थकनी दूर करावय लगलाह। परन्तु दुइए – चारि चोट मे लोहछि उठलाह। छकौड़ीलाल कैं डँटैत कहलथिन्ह – तों मुक्की लगबैत छह कि मुक्का? हरमुंठ जकाँ चोट लगा देलह। आइ कथिक कोढ़ सधबैत छह?

एतबहि मे भोजनक हेतु एक चँगेरा उपाति भंडारघर सँ पहुँचि गेलैन्ह। पं. जी हड़बड़ा कऽ उठलाह। छकौड़ीलाल कैं कहलथिन्ह – लालटेन तेज करह।

पुनः विद्यार्थी कैं ओहिठाम सँ साहक हेतु बजलाह – आह, ठिठरा कैं लऽ जा कऽ भंडार घर सँ थोड़ेक कड़ूक तेल देया दही गऽ जे राति मे मालिश करत।

विद्यार्थी-खवासक गेला पर पं. जी एकान्त मे भोज्य पदार्थक निरीक्षण करय लगलाह। ओकरा दू वर्ग मे विभक्त कैलन्हि – रक्षणीय ओ भक्षणीय। प्रथम कोटिक वस्तु अदौरी, दनौरी, तिसौरी, पापर, घृत, मसाला पेटीक मध्य स्थान पौलक। द्वितीय कोटिक वस्तु चाउर, दालि, नोन, तेल, आलू, भाँटा, चङेरा मे रहल।

परन्तु मेंही कनकजीरक दाना देखि पं. जीक जी ककचय लगलैन्ह – एहन बढ़ियाँ गमकौआ चाउर गाम पर कहाँ भेटत? ई खीर बनैबा योग्य अछि।

ई विचारि पं. जी ओकरो पेटिए मे राखि लेलन्हि।

तावत विद्यार्थी-खवास पहुँचि गेलथिन्ह।

पं. जी बजलाह – ही, सीधा दऽ गेल अछि। किन्तु एखन त भानस करबाक प्रयोजने नहि। की रौ ठिठरा? भूख त नहिए हैतौक?

परन्तु ठिठरा रोच मे पड़यवाला व्यक्ति नहि छल। कहलकैन्ह – मालिक! भूख किऐक नहि रहत? राति बड़की टा होइत छैक। चारि टा फुलकी सँ हमरा सभ कैं की हैत? ओ त कखन ने पेट मे बिला गेल!

पं. जी कैं पश्चात्ताप होमय लगलैन्ह जे किऐक एहन व्यक्ति कैं नेने ऐलहुं। विद्यार्थी कैं पुछलथिन्ह – की हौ, छकौड़ीलाल, तों अपन हाल कहऽ।

छकौड़ीलाल बजलाह – जखन सभ सामग्री प्रस्तुत छैक तखन हमरा भानस करबा मे की लागत? ठिठरा आँच पजारौ गऽ। होइत कि देरी लगतैक?

विद्यार्थीक एहि तत्परता सँ गुरु कैं प्रसन्नता नहि भेलैन्ह। मनहि मन खिसिया कऽ बजलाह – बेश, तखन भानस करह गऽ। किन्तु अरबा चाउर दऽ गेल अछि से त हमरा पचत नहि, कोनो दोकान सँ उसिना चाउर लऽ आबह।

ई कहि पं. जी एक टा दुअन्नी ठिठराक आगाँ फेंकि देलथिन्ह।

ठिठरा बाजल – मालिक, एहि राति कऽ दोकान कहाँ खोजने भेल फिरबैक?

पं. जीक क्रोधाग्नि मे घृत पड़ि गेलैन्ह। डाँटि कऽ कहलथिन्ह – नमकहराम! एही खातिर तोरा हम एतय अनलियौक? बात बनबैत छैं? चल, हम अपने दोकान देखा दैत छिऔक गऽ।

ई कहि पं. जी ठाढ़ होमय लगलाह कि तावत वैदिकजी पहुँचि गेलथिन्ह। पं. जी सिटपिटा गेलाह। छकौड़ीलाल कैं कहलथिन्ह – जाह। ठिठरा कैं तोंही लऽ जाहीक। बुझलह कि ने?

वैदिकजी पुछलथिन्ह – कतय लऽ जा रहल छथिन्ह?

पं. जी असली बात छपबैत बजलाह – की कहू? ई खवास महा अनभुआर अछि। किछु गमल-बुझल नहि छैक। निकासो देखाबक हेतु विद्यार्थी कैं संग लगाबय पड़ैत अछि।

ई कहि पं. जी बलाइँसी हँसय लगलाह। किन्तु मन मे भयो होमय लगलैन्ह जे कदाचित वैदिकजी एहीठाम बैसल रहि गेलाह त थोड़बे काल मे रहस्योद्घाटन भऽ जाएत। हिनका कोनो तरहें एहिठाम सँ टारक चाही।

ई विचारि पं. जी कहलथिन्ह – हम त अपनहीक ओहिठाम जाय लेल छलहुं। बल्कि ओहीठाम चलबे करी छी। अपनेक डेरो देखि लेब।

ई कहैत पं. जी उठि विदा भेलाह और कोठरीक जिंजीर बाहर सँ बंद कय वैदिकजीक पाछाँ चललाह।

वैदिकजीक कोठरी मे पहुँचि पं. जीक आँखि चौन्हिया गेलैन्ह। एक बड़का परात मे रंग-बिरंगक मनोहर मधुर ओ मोरब्बा, सोना-चानीक बरक लपेटल, गमगम करैत।

पं. जीक मुँह विवर्ण भऽ गेलैन्ह। वैदिकजी हुनक मनोभाव बूझि कहलथिन्ह – हमरा आइ एकादशी अछि। तैं ई सभ फलाहारी वस्तु आएल अछि।

पंडितजी विषादपूर्वक बजलाह – वाह! फलाहारक त एहिठाम अपूर्व विन्यास देखैत छी।

वैदिकजी कहलथिन्ह – हँ, फलाहारी लोकनिक हेतु एहिठाम विशेष रूप सँ

प्रबन्ध कैल गेल अछि, बनारसक सभ सँ नामी कारीगर मँगाओल गेल अछि। ई सभ वस्तु ओकरे बनाओल छैक।

वैदिकजी नमूनाक तौरपर किछु वस्तुक परिचय देबय लगलथिन्ह – ई उजरका 'कलाकन्द' छैक। ओ पिअरका नारंगीक बर्फी, ई हरियरका परोरक मिठाइ। ओ ललका मलाइक मालपुआ। ई जे रस सँ भरल देखैत छिऐक से 'रसमाधुरी' कहबैत छैक।

ई कहैत वैदिकजी एकटा रसमाधुरी हाथ मे उठौलन्हि। केवड़ाक खुशबू सँ पं. जीक मिजाज भरि गेलैन्ह। बजलाह – रहऽ दिऔक। ओहि पथिया मे की छैक?

वैदिकजी झँपना हटबैत कहलथिन्ह – ई विरूजीक हेतु आएल छल।

एक कात बादाम, अखरोट, पिस्ता, किशमिश ओ अपजोश। दोसरा दिशि नाशपाती, सेव, अनार, नारंगी ओ अंगूर।

पं. जीक आँखि नहि ठहरि सकलैन्ह। बजलाह – झाँपि दिऔक।

वैदिकजी मोरब्बा देखबैत कहलथिन्ह – एहि मे प्रत्येक वस्तु अपूर्व बनौने अछि। ई अजनासक मोरब्बा थिकैक। और ई थिक कुसियारक मोरब्बा। सम्पूर्ण गुल्ली रसगुल्ला जकाँ घोंटा जाएत। एको रत्ती सिट्ठी नहि बहराएत।

पं. जी ऊपरक मन सँ हँसैत बजलाह – वाह! आश्चर्य कैने अछि।

वैदिकजी और अधिक उत्साहित भय देखाबय लगलथिन्ह – देखल जाओ, एहि माटिक बरुका मे गरीक खीर थिकैक। ओहि बरुका मे किशमिशक हलुआ। एहि बरुका मे पिस्ताक मोहनभोग। ओहि बरुका मे केसरिया राबड़ी........

पं. जी और बेसी नहि सुनि सकलाह। बजलाह – बेश, त आब हमरा आज्ञा भेटी। एखन अपने कैं फलाहार मे विलम्ब भऽ जाएत। ओहि कात मे एकटा और घइला देखैत छिऐक?

वैदिकजी किछु सिटपिटाइत बजलाह – हँ। ओहि मे सोहारी-मधुर छैक। विद्यार्थी-खवासक हेतु।

डेरा पर आबि पं. जी हता कऽ पड़ि रहलाह। मन मे हूर मारय लगलैन्ह। हाय-हाय! पहिने बुझले नहि छल। वैदिक फलाहारक आडम्बर पसारि ओहन-ओहन बढ़िया भोग्य पदार्थ सभ मङ्गबा लेलक। और हम ओहिना रहि गेलहुं! वैदिकवा भारी चालाक अछि। विद्यार्थी-खवासक नाम पर सोहारी ओ मधुर मँगा लेलक अछि, से खाएत और नफा मे ओतेक वस्तु हाथ लागि गेलैक। हमरो बुझल रहैत त ओहिना करितहुँ। परन्तु आब त तीर हाथ सँ छुटि गेल। वैदिकवाक चलाकी लहि गेलैक। हमही ठुट्ठी मे रहलहुँ।

पं. जी एही गुनधुन मे मुँह झँपने पड़ल छलाह कि छकौड़ीलाल आबि कऽ सूचना देलथिन्ह – गुरुजी, खिचड़ि तैयार भऽ गेल।

पं. जी डपटैत कहलथिन्ह – दुर बुड़ि! हमरा अपने माथ दुखाइत अछि। और ई शंखासुर जकाँ आबि कऽ नींद तोड़ि देलन्हि। जा, परसह गऽ।

पं. जी तेहन जोर सँ डपटलथिन्ह जे छकौड़ीलाल कैं धुल, पापड़ तथा अँचार मँगवाक साहस नहि पड़लैन्ह!

पं. जी कैं सोचक मारे खा नहि भेलैन्ह। राति भरि पेट मे हर बहैत रहलैन्ह – कोन प्रकारें ओ मधुर-मोरब्बा सभ हाथ लागत? यदि ओ सभ वस्तु गाम नहि लऽ जा सकलहुँ त एतय ऐवाक और पेटी अनबाक फले की? आब कोन युक्ति लगाओल जाय?

एही भावना मे पं. जी कैं निंद नहि पड़लैन्ह। भोरे विद्यार्थी कैं कहलथिन्ह – जाह, भंडारी कैं कही गऽ जे आइ गुरुजी फलाहारे करताह। टिठरा कैं नेने जाहीक। जे जे फलाहारक सामग्री होइक से सभ टा लय आबह। देखिहऽ, कोनो वस्तु छुटीह नहि। भोजन और छिखजी, दुहू नेने अबिहऽ। बल्कि तोंहू दुनू गोटा अपना खातिर फलाहारीए सामग्री नेने अबिहऽ।

छकौड़ीलाल कैं एहि आकस्मिक परिवर्तनक रहस्य नहि बूझि पड़लैन्ह। ओ टिठरा कैं संग लय बिदा भेलाह।

एम्हर पं. जी आशान्वित भय पूजा पर बैसि गेलाह। भक्तिपूर्वक विष्णु सहस्रनाम पाठ करय लगलाह। किन्तु संगहिसंग मधुरो सभक नाम मन मे आबय लगलैन्ह – कलाकन्द एक, नारंगीक बर्फी दू, परोरक मिठाइ तीन, रसमाधुरी चारि...

थोड़ेक काल मे सभ पंडितक हेतु छिखजीक सोहारी-मधुर पहुँचि गेलैन्ह। परन्तु अपना पंडितजीक ओहिठाम नहि ऐलैन्ह। पं. जी भविष्यक मधुर कल्पना सँ आनन्दित भऽ उठलाह – विद्यार्थीक पठौनाइ काज कैलक। तै सर्वसाधारण वला चँगेरा नहि आएल अछि। विशेष वस्तु सभ पठैबा मे त समय लगबे करतैक। जतेक अधिक विलंब हो, ततेक अधिक लाभ।

ई विचारि पं. जी पुनः पाठ मे मन लगौलन्हि। अन्ततः सहस्रो नाम समाप्त भऽ गेलैन्ह। तथापि नामक फल-प्राप्ति नहि भेलैन्ह। देखैत-देखैत एगारह सँ बारह, और बारह सँ एक बाजि गेल।

क्रमशः पं. जीक उद्वेग बढ़य लगलैन्ह। ओ चित्तवृत्तिक निरोध करबाक हेतु योगवाशिष्ठ लऽ कऽ बैसि गेलाह। किन्तु कतबो यत्न कैला उत्तर मन कैं एकाग्र नहि कय सकलाह। चंचल चित्त कौखन मलाइक मालपुआ पर दौड़ि जाइन्ह, कौखन केसरिया रावड़ी पर। आखिर नहिए रहि भेलैन्ह। पं. जी योगवाशिष्ठ कैं बंद कय उद्विग्न चित्त सँ खड़ाम पर टहलय लगलाह।

तावत विद्यार्थी ओ खबास अबैत दृष्टिगोचर भेलथिन्ह। टिठराक माथ पर चँगेरा, हाथ मे पथिया। विद्यार्थीक दुनू हाथ मे एक-एक टा कोहा।

आब पं. जीक तर्कशास्त्र लागल – 'पथियाक अर्थ मेवा ओ फल। चँगेराक अर्थ मधुर ओ मोरब्बा। एक कोहाक अर्थ मरीक खीर। एक कोहाक अर्थ केसरिया रावड़ी। तीनू गोटाक अंश बरुका मे नहि अटलैक, तैं कोहे मे भरि देलकैक। भंडारी

होशियार अछि। आब वैदिकजी बुझथु। बड़े गजैत छलाह। आब हुनका सँ तीन घर हमरा आबि गेल।'

पं. जी आश्वस्त भय पुनः पूजा पर आबि बैसलाह और आँखि मुनि जप करय लगलाह। एहन रान क्रम जे 'हमरा कोनो अपेक्षा नहि छल। धनी, लऽ ऐलाह त एक कात राखह।'

विद्यार्थी ओ खबास कनेक काल प्रतीक्षा कय पानि लाबक हेतु चलि गेलाह। तखन पं. जी इष्टदेवता कैं प्रणाम कय आँखि फोललन्हि।

आँखि फोलला उत्तर पं. जीक जे दशा भेलैन्ह तकर वर्णन नहि भऽ सकैत अछि। पथिया मे केरा! चँगेरा मे कुम्हड़! एक कोहा मे दही, एक कोहा मे चीनी। समस्त न्यायशास्त्रक अनुमान खण्डित भऽ गेलैन्ह।

तावत छकौड़ीलाल पानि नेने पहुँचलाह। बजलाह – गुरुजी!

पं. जी घुमकार छोड़ैत कहलथिन्ह – आ दुर बूड़ि। 'गुरुजी' 'गुरुजी' करय ऐलाह अछि!

विद्यार्थी – कनेक सुनि लेल जाओ।

पं. जी – कपार सुनि लेल जाओ। गदहा नहितन। एक भिनसर गेलाह से नेने-नेने बेर डुबा देलन्हि। ओतय जा कऽ भंडारीक नाङड़ि मे सटल छलाह। और नेने की ऐलाह त काँच कुम्हड़! कपार पर राखह।

पं. जी क्रोधान्ध भय ततेक जोर सँ कुम्हड़ कैं उठा कऽ पटकलन्हि जे ओ फच्च दऽ फूटि गेल। छकौड़ीलाल मुँह बौने ठाढ़ रहलाह। पं. जी हुनका फज्झतिक तर करैत कहलथिन्ह – मुँह ने देखियौन्ह चुहार सन! ई दुहू गोटे बुधियार बनि कऽ गेल छलाह। लैलाह की, त केरा! छुछुन्नर कहाँ कैं! जेहने ई बेवकूफ, तेहने टिठरो गदहा। दुनू नकडुब्बा।.

टिठरा अपन विशेषण सुनि फराके सँ घसकि गेल।

पं. जी आब भंडारी पर लगलाह – देखू त भंडारीक पजिपना। दिन भरि सभ कऽ जान लेलक और एखन पठबै अछि की त काँच कुम्हड़! खजांचीक सार बनल अछि। जाह, फिरता कऽ अबहीक गऽ। ओ की बुझैत अछि? हम एहि ठाम कुम्हड़ खाय ऐलहुँ अछि? चलह, ऐखन एहिठाम सँ बिदा होअह! हमर ई अपमान!

ई कहि पं. जी थर-थर कँपैत बिदा भेलाह! हुनका शाप मे शक्ति रहितैन्ह त भंडारी कैं तत्क्षण भस्म कऽ दितथि।

तावत भंडारी कैं ज्ञात भेलैन्ह जे वेदान्तीजी रुष्ट भऽ कऽ पड़ायल जा रहल छथि। ओ भंडार बंद कय पं. जी कैं मनैबाक हेतु ऐलाह। पुछलथिन्ह – की? अपने भोजन कैलँ?

पं. जी कहलथिन्ह – दुरजी! भोजन की करब, कुम्हड़?

भंडारी – किऐक? और फलाहारी वस्तु त पठौने छलहुँ।

पं. जी – घास पठौने छलहुँ। वैदिकजीक खातिर नाना तरहक फलाहारी मधुर ओ मोरब्बा, और हमरा खातिर केरा-कुम्हड़? हम जाइ छिऐन्ह राजमाता सँ इत्तलाय करय।

भंडारी – कनेक सुनि लेल जाओ। काल्हि एकादशी रहैक। तैं खास कऽ फलाहारी मधुर-मोरब्बा बनबाओल गेल छलैक। फलाहारी लोकनि सँ जे उबरलैक से रातिए कुटुम्ब-आत्मा कैं पठा देल गेलैन्ह। आइ फलाहारक कोनो इन्तिजाम नहि। तखन हम की पठबितहुँ।

पं. जी – ओ बनारसी हलुअइया कहाँ गेल?

भंडारी – ओ आइ भोरे सँ सोहारी छनैत अछि। सभ डेरा पर सोहारी-मधुर गेलैक अछि। अपनहुँ के आएल रहैत। किन्तु वैह विद्यार्थी जा कऽ मना कऽ ऐलाह।

पं. जी छकौड़ीलाल दिशि आग्नेय नेत्र सँ तकैत बजलाह – ई त अथाहे छथि। छौ कौड़ी के कहय, एको कौड़ी मे महग छथि। भोरे जे गेलाह से नेने नेने दू प्रहर धरि.....

भंडारी कहलथिन्ह – एहि मे हिनक दोष नहि छैन्ह। हम सोहारी-मधुर बटबा मे बाझल रही। एको पलक अवकाश नहि भेल जे हिनका दऽ कऽ बिदा करतिऐन्ह। और दही-केरा छोड़ि कऽ दैबे की करितिऐन्ह? जखन बारह बजेक बाद कनेक पलखति भेल तखन फलाहारी वस्तुक खोज मे गेलहुँ। काल्हि बनारसी हलुआइ जे मोरब्बा बनौने छल ताहि मे एकटा कुम्हड़ संयोगवश बाँचल छलैक। से लऽ कऽ देलिऐन्ह और कहलिऐन्ह जे 'एखन हलुआइ कैं त फुरसति नहि छैक। चीनी नेने जाउ, मोरब्बा बना लेब।' आब कहल जाओ, हमर कोन ठाम दोष अछि?

पं. जी बजलाह – हिनका? हिनका जौं मोरब्बा बनैबाक लूरि रहितैन्ह त ई हमरे संग रहितथि? हँ, खैबाक हेतु देल जाइन्ह त से धरि लूरि बेश छैन्ह। आब ई कुम्हड़ लऽ कऽ कहाँ धरि अपन माथ फोड़ैत रहताह? हम बाज ऐलहुँ एहन फलाहार सँ। जाउ, सोहारीए मधुर पठा दिअऽ।

भंडारी दौड़ल गेलाह और पं. जीक खातिर बानाचे सभ वस्तु पहुँचि गेलैन्ह। सोहारी, तरकारी, पँचमेल मधुर, अँचार, दही, चीनी। पर्याप्त रूप मे।

पं. जीक कोधक पारा बहुत किछु नीचा उतरि ऐलैन्ह।

ठिठरा कैं कहलथिन्ह – आब उद्द जकाँ तकै छैं की? ठाम कर।

तावत एहन संयोग जे भीतर राजमाताक कान मे ई खबरि पहुँचि गेलैन्ह। ओ एक बड़का थार मे सभ टा फलाहारी मधुर मोरब्बा साँठि कऽ पं. जी कैं पठा देलथिन्ह। पं. जी गद्गद् भऽ गेलाह।

इच्छा भेलैन्ह जे कनेक-कनेक खोंटि कऽ सभ मे सँ चाखी। परन्तु जी नहि सहलैन्ह। चखबाक लोभ कैं रखबाक लोभ पछाड़ि देलकैन्ह। पेट भरब सँ बेशी आवश्यक पेटी भरब छलैन्ह। से करीब तीन सीस भरि गेलैन्ह।

पं. जी भोजन काल एतबा उदारता आइ अवश्य देखौलन्हि जे सोहारी दहीक संग अँचारो परसबाक आज्ञा देलथिन्ह, और मधुरक स्थान मे केरा।

राति मे डेउढ़ीक भीतर भोजन रहैक। पं. जी विद्यार्थी-खवास कैं शिक्षा देलथिन्ह – आइ जतेक जे खैबाक हो से खाइ जैहऽ। पाछाँ कऽ ई नहि कहिहऽ जे मधुर सँ अछो नहि भेल। भुसकन पर बेशी जोर नहि करी। पुरकन सँ पेट भरी।

ओहि राति माछ-मांस ओ मधुरक कचरमकूट भऽ गेल। सेहो मुद्राक लोभ दऽ दऽ। पंचमकार मे थोड़बेक कसरि रहि गेल।

पं. जीक उपदेश व्यर्थ नहि गेलैन्ह। किऐक त ठिठरा कैं डेरा पर अबैत-अबैत वमन होमय लगलैक और छकौड़ीलाल कैं पेट फूटि गेलैन्ह। पं. जी कैं भोजन-भस्म चूर्णक फक्की लेला उत्तर दस्त-दस्त जारी भऽ गेलैन्ह। भरि राति कान पर जनउ चढ़ले रहलैन्हि।

भोर होइत-होइत गर्द पड़ि गेल जे वेदान्तजी कैं हैजा भऽ गेलैन्ह। झुंडक झुंड व्यक्ति पं. जीक जिज्ञासा करक हेतु पहुँचय लगलाह। वेदान्तीजी गीताक श्लोक पढ़ि-पढ़ि लोक कैं शरीरक निःसारता बुझाबय लगलथिन्ह –

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।

X X X

गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पंडिताः।।

X X X

देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमारं यौवनं जरा।

तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति।।

X X X

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।

तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।।

परन्तु वेदान्तीजी कैं मनहिमन चिन्तो होमय लगलैन्ह जे कदाचित एहिठाम किछु भऽ गेल त पेटी गाम पर कोना पहुँचत?

लोकक गेला पर कुहरैत-कुहरैत विद्यार्थी कैं कहलथिन्ह – हौ छकौड़ीलाल, आइ हमरा दुखित जानिकऽ कतहु बिखजी नहि छोड़ि देबय। जाह, अपने सँ भंडार जा कऽ चँगेरा लेऔने आबह।

विद्यार्थी कहलथिन्ह – गुरुजी, एखन अपने कैं छोड़ि कऽ हम कोना जा सकैत छी?

पं. जी खिसिया कऽ बजलाह – बेश, तखन हम मरैत छी। तों बचाबह।

ई कहि पं. जी पेट फुला ऊर्ध्वश्वास छोड़य लगलाह। छकौड़ीलालक सभ टा छक-पंजा बिसरि गेलैन्ह। बजलाह – बेश, हम जाइ छी।

जखन विद्यार्थी प्रत्यागत भेलाह त पं. जी बेहोश रहथि। चँगेराक आहट पाबि

आँखि फूजि गेलैन्ह। पकमानक गन्ध अर्कंकपूर सँ बेशी काज कैलकैन्ह। किऐक त ओहू हालतिमे उठि बैसलाह। कहलथिन्ह – पेटी घुसका कऽ एम्हर लावह।

थोड़बे कालक बाद उपनयन प्रारम्भ भेलैक। निमंत्रित व्यक्ति सभ मंडप पर गेलाह। पं. जी कुहरैत-कुहरैत बजलाह – हौ छकौड़ीलाल, आब गोटा बटैयाक बेरि भऽ गेल हैतैक। जाह, हमर अंश लऽ आबह।

एक घंटा पर विद्यार्थी मड़बा पर सँ फिरलाह। पं. जी कुहरैत-कुहरैत पुछलथिन्ह – गनह त, कै गाही सुपारी छौह?

विद्यार्थी गनि कऽ कहलथिन्ह – नौ गाही मे एकटा घटैत अछि।

पं. जी रुष्ट भय कहलथिन्ह – ठीक सँ गनह। कम नहि हैतौह।

विद्यार्थी पुनः गनि कय बजलाह – दू बीस, चार टा होइत अछि।

पं. जी प्रसन्न भय कहलथिन्ह – हँ, आब ठीक भेलौह। लावह त देखियौह, केहन सुपारी छौह?

पं. जी पाँच-सात टा सुपारी छाँटि कऽ कहलथिन्ह – तोरा बुड़िबक जानि कऽ ठकि लेलकौह। ई चारि टा सड़ल दऽ देलकौह। तीन टा खखरी छौह। तों आँखि मूनि कऽ उठौने ऐलाह। जाह, ई सभ बदलि लावह। नीक-नीक कतरा योग्य सुपारी लीहऽ।

जैबाक दिन धरि पं. जीक पेटी नीक जकाँ उम्दाम कऽ भरि गेलैन्ह। विदाइक धोती पर्यन्त नहि अटैन्ह। बहुत कसमस कऽ कोनहुना अटौलन्हि। तथापि पेटीक मुँह किछु अलगले रहि गेलैन्ह। तखन चारि-पाँच भत्ता पाढ़ि लऽ कऽ ओकरा बन्हलन्हि। खूब कसि कऽ गिरह देलथिन्ह।

थाना बिहपुर स्टेशन पहुँचला उत्तर पं. जी देखैत छथि जे भीड़ मे केओ ठीक ओही आकार-प्रकारक पेटी नेने पार भऽ रहल अछि। बजलाह – दौड़ह छकौड़ीलाल! पेटी नेने जाइ छौह।

विद्यार्थी कहलथिन्ह – नहि, गुरुजी! पेटी ओकरे छैक।

पं. जी तमसा कऽ बजलाह – हौ बूड़ि! पाढ़ि लऽ कऽ बान्हल नहि सुझैत छौह? ओ चोर थिक। दौड़ि कऽ पकड़ह। ओ गदहवा (टिटरा) कहाँ गेल?

टिटरा आगाँ बढ़ि कऽ कहलकैन्ह – हैह त छी सरकार! पेटी त हमरा माथ पर अछि।

पं. जी अपन पेटी देखलन्हि तखन विश्वास भेलैन्ह। तथापि मनक खुटखुटी नहि छुटलैन्ह। ओहि पेटीवलाक लग जा परिचय पुछलथिन्ह। ज्ञात भेलैन्ह जे ई वैद्य थिकाह। बस, आब की थीक? पं. जी घुट्ठीसोहार मित्रता जोड़ब शुरू कैलन्हि। कहलथिन्ह – हमरा रातिए सँ धुआइन ढेकार दऽ रहल अछि। कोनो पाचक हो, त बहार करु।

वैद्यराज मिर्जइक जेबी सँ अजीर्ण-नाशक बटी बाहर कैलन्हि।

पं. जी बजलाह – वाह! खूब चटकार अछि। यात्रा नीक छल जे अहाँक संग भऽ गेल।

वैद्यराज – अहोभाग्य हमर जे अपनेक दर्शन भेल। अपने कतय जैबैक?

पं. जी – हम बेगूसराय उतरब। अहाँ?

वैद्य. – हम दलसिंहसराय उतरब।

पं. जी – वाह! तखन तँ सराय लऽ कऽ दुनू गोटा मे बादरायण सम्बन्ध भऽ गेल। किछु काल धरि त संग रहत।

वैद्य. – किछु काल किऐक? अपने दू बजे राति कऽ बेगूसराय पहुँचब। तावत धरि संग रहब।

जखन ट्रेन ऐलैन्ह त दुनू गोटा एके ठाम बैसलाह। कविराज कहलथिन्ह – अपनेक संगति सँ लाभ उठाबक चाही। किछु वेदान्तक चर्चा कैल जाओ।

कोठरीक औरो यात्री सभ बाजि उठलाह – हँ, हँ, किछु ज्ञानक बात होऐ। हमहूँ सभ सुनब।

वेदान्तजीक उपदेश चलय लगलैन्ह –

बुद्धिमान कैं चाही जे विषय मे आसक्त नहि होथि। वैह विषय सभ दुःखक मूल कारण थिक।

> ये हि संस्पर्शजा भोगाः दुःखयोनय एव ते।
> आद्यन्तवन्तः कौन्तेय! न तेषु रमते बुधः।।

मन कैं रोकि कऽ अपन वश मे करक चाही।

> यतो यतो निश्चरति मनश्चंचलमस्थिरम्।
> ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येतं वशं नयेत्।।

जाहि विषय पर चित्त दौड़य, ताहि दिशि सँ ओकरा मोड़ि कऽ अपना अधीन राखक चाही।

ज्ञानी के थिक?

> न प्रहृष्येत प्रियं प्राप्य नोद्विजेत् प्राप्य चाप्रियम्।
> स्थिरबुद्धिरसंमूढो ब्रह्मविद् ब्रह्मणि स्थितः।।

जे ने प्रिय वस्तु पाबि हर्षित हो, ने ओकरा अभाव मे उद्विग्न हो, सैह ज्ञानी थिक।

> समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।
> शीतोष्णसुखदुःखेषु समः संगविवर्जितः।।
> तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी सन्तुष्टो येन केनचित्।
> अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान् मे प्रियो नरः।।

शत्रु मे, मित्र मे, अपमान मे, जाड़ मे, गर्मी मे, सुख मे, दुःख मे, निन्दा मे, मे, सभ मे एक समान रही।

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते।।

जकरा दुःख मे उद्वेग नहि होइक, सुख मे आकांक्षा नहि होइक, जे भय, क्रोध और इच्छा कैं जितने हो, सैह यथार्थ ज्ञानी थिक। धीर होइ, वीर होइ, जितेन्द्रिय होइ।..

इत्यादि, इत्यादि।

श्रोताक मंडली मे अधिकांश व्यक्ति उपदेशामृत पान करैत-करैत औंघाय लागि गेलाह। तथापि वेदान्तीजीक धाराप्रवाह चलिते रहलैन्ह।

वेदान्तीजीक उपदेश और चलितैन्ह। किन्तु तावत बेगूसराय स्टेशन आबि गेल। पं. जी एकाएक आध्यात्मिक सँ आधिभौतिक जगत मे आबि गेलाह। गर्द कैलन्हि – छकौड़ीलाल! ठिठरा! स्टेशन आबि गेलैह। उतरै जा।

छकौड़ीलाल निसभेर सूतल छलाह और ठिठरा ठरड़ पारैत छल। पं. जीक बहुत गर्द कैला पर छकौड़ीलाल कुनमुनैलाह और आँखि मिड़ैत, ठिठरा कैं देह धऽ उठाबय लगलथिन्ह।

तावत एक झुण्ड बरियात ओहि कोठरी मे धावा कऽ देलक। नटुआक गिरोह, बजनियाक दल, बल्लम-बर्छाबलाक जमात। सभ भेड़ियाधसान कऽ देलक। लोकक ताँता लागि गेल। पं. जी कैं उतरबाक बाट बंद भऽ गेलैन्ह। तावत गाड़ी फुजबाक घंटी पड़ि गेलैक। पं. जी आर्त्तनाद कैलन्हि – छकौड़ीलाल!

परन्तु ओहन भीड़-भड़क्का मे के सुनैत अछि? कोठरी मे रोशनी नदारद। अन्हार मे अपार जनसमूहक बीच छकौड़ीलाल ओ ठिठराक पता लागब असंभव। तावत गाड़ी चलय लागि गेल।

पं. जी हतबुद्धि भऽ गेलाह। गीतावला स्थितधीक लक्षण बिसरि गेलैन्ह।

तावत विद्यार्थी नीचा सँ गर्द कैलथिन्ह – गुरुजी। उतरू।

पं. जी प्रश्न कैलथिन्ह – पेटी?

विद्यार्थी बजलाह – हँ। उतरि गेल। थैह, ठिठराक माथ पर अछि।

पं. जी चिचिया कऽ बजलाह – कोना कऽ हेठ होउ?

वैद्यजी कहलथिन्ह – अपने हड़बड़ाउ नहि। हम खिड़की बाटें अपने कैं ससारि कऽ उतारि दैत छी।

कोनो-कोनो तरहें पं. जी लटका कऽ उतारल गेलाह। ठिठराक माथ पर पेटी कैं सही-सलामत देखि फक्क दऽ निसास छोड़लन्हि। बजलाह – हमरा त भरोस नहि छल जे तोरा लोकनि पेटी लऽ कऽ उतरि सकबह। अस्तु। एखन टहाटही इजोरिया छैक। ऐखन विदा भऽ गेने रतिगरे गाम पहुँचि जाएब। चलै चलह।

भुरुकवा उगैत-उगैत पं. जी घर पहुँचि गेलाह। जाइत देरी गर्द कैलथिन्ह – कहाँ छी ऐ? केवाड़ फोलू।

पण्डिताइन धड़फड़ा कऽ उठलीह और केवाड़ फोलैत बजलीह – कतेक राति

कऽ चललिऐक जे एतेक झोलफले पहुँचि गेलिऐक?

पं. जी कहलथिन्ह – दिन मे अबितहुँ त सभ पेटिए तजबीज करैत अबैत। ताही सँ रातिए मे चल ऐलहुँ।

पंडिताइन पुछलथिन्ह – से ओहि मे की छैक?

पं. जी – से त जखन फोलबैक तखन ने बुझबैक। ओ सभ वस्तु एहि जन्म मे देखनहुँ नहि होएब। सबेरे हाथ-मुँह धो कऽ तैयार भऽ जाउ।

छकौड़ीलाल ठिठराक माथ पर सँ पेटी उतारि कऽ नीचा धैलन्हि।

पं. जी कहलथिन्ह – ई भानुमतीक पेटारी थीक। देखू ने कोन-कोन रंगक पदार्थ एहि मे सँ बहराइत अछि! अहाँ फोलि कऽ देखू। ता हम जलाशय सँ भेने अबैत छी।

ई कहि पं. जी [illegible] लय पोखरि दिशि गेलाह।

जखन पं. जी कुरुड़-आचमन कैलाक उपरान्त आङन ऐलाह त देखैत छथि जे पंडिताइन विधुआइलि बैसलि छथि। पुछलथिन्ह – अहाँ एना गुम्म-सुम्म किऐक भेल छी?

पंडिताइन बजलीह – अहाँक मन जे रास गाउ?

पं. जी बजलाह – अरे? आइ झगड़ा ठनैत छी? रंग-बिरंगक मिष्टान्न सभ आएल अछि से देखब कि रूसाफुल्ली करब?

पंडिताइन मुँह फुलाय कय कहलथिन्ह – बेश, रहऽ दियऽ। हम ओहन छुछुआएल नहि छी जे मधुरक हेतु जी रकटल रहत! गरीबक बेटी भेलहुँ त दूरि गेलहुँ।

पं. जी बजलाह – आहि रौ बाप! ई की? अहाँ अबितहि झगड़ा बेसाहि लेलहुँ? लाउ, पेटी कहाँ अछि?

पेटीक उपरका पल्ला अलगबैत देरी पं. जी अवाक रहि गेलाह। हे भगवान! ई कोन इन्द्रजाल भेल? सौंसे पेटी मे भरि कऽ हर्रे, बहेड़ा ओ अमलतास! चोपचीनी ओ विदारीकंद!

पं. जी हाहि मारय लगलाह – ई निश्चय वैद्यवला पेटी थिक। ठिठरा सार डाका देलक। गदहवा गेल कहाँ?

ठिठरा फराके सँ बाजल – हमरा त जे विद्यार्थी बाबू माथ पर धऽ देलन्हि से उठौने ऐलहुँ। हम कि फोलि कय देखय लगलिऐक?

पं. जी छकौड़ीलाल कैं रेड़य लगलथिन्ह – ई बुड़ि रे! अपन पेटी रेल मे छोड़ि देलन्हि। वैदवाला नेने ऐलाह। बुधियारक नाङड़ि बनैत छथि! मुँह ने देखिऔन्ह चुकरीभट्ट सन!

छकौड़ीलाल सिटपिटाइत बजलाह – हम त पाड़ि लऽ कऽ बान्हल देखलिऐक!

पं. जी [illegible]जित भय बजलाह – धौ बुड़ि। ओ लाल पाड़ि सँ बान्हल रहैक। ई पीयर पाड़ि छैक, से नहि सुझैत छौह? आँखि पर मकड़जाला लागि गेल छलौह?

छकौड़ी. – तखन अन्हार मे कि रंग सुझैत छलैक? तेहन भीड़ मे धऽ देलकैक जे पेटीक ठेकाने नहि रहल। एगोटा बेंचक तर सँ खींचि कऽ बाहर कऽ देलक तखन हम खिड़कीक बाटे टिटराक माथ पर धऽ देलिऐक। इहो त कहैत जे हल्लुक लगैत अछि।

पंडित जी टिटरा पर क्रुद्ध होइत बजलाह – ई नकरा किऐक एको बेर बाजल? एकरा त गँवे भेलैक जे कम भारी होयब पड़लैक।

ई कहि पं. जी सोंटा लय ओकरा पर छुटलाह। टिटरा ओहिठाम सँ पड़ायल। छकौड़ीलाल रंग कुरंग देखि घसकि गेलाह।

पं. जी अपन माथ-कपार पिटैत बजलाह – हमरो सँ बुड़िब भऽ गेल जे सुड़िया कऽ ओकरे लग [illegible] गेलहुँ। सटीर कैलाक फल भेटल जे ओतबा दिनक सभटा संचित वस्तु पार भऽ गेल। बैदबा पूर्वजन्मक शत्रु छल। सर्वनाश कऽ देलक।

पंडिताइन तोष-भरोस दैत कहलथिन्ह – आब सोच कैने कोन फल? जकरा अंश मे छलैक तकरा भेटलैक।

परन्तु पं. जी कैं रहि-रहि कऽ जोआरि आबय लगलैन्ह। हाय-हाय! मोरब्बा सभ चखबो नहि कैलहुँ! नारंगीक थकी ओहिना आँखि मे नचैत अछि। हरिबक्सा परोरक-मधुर छोड़ि कऽ भरे उठौने ऐलहुँ। हे नारायण! ओतेक राखे चीनी जमा कैने छलहुँ। से दलसिंहसराय चल गेल और घर आयल घोपनीचो! बैदबा कतौक उड़ाऔत और हम बिदारीकंद। बैदाइन कैं सेव-अंगूर हाथ लगतैक आओर अहाँ कैं अनन्नास। ई कर्मक बात।

स्त्री कहलथिन्ह – आब की करबैक? जे होएबाक छलैक से त भऽ गेलैक। अमलतासो कोनो काज मे आबिए जैतैक।

पं. जी बजलाह – आब घाव पर नोनक बुकनी नहि छीटू। बैदक नामो गाम त बिसरि गेल। तेहन बेदान्ती गप्प मे फँसा देलक जे ओही मे बाझि गेलहुँ। दोसरा बातक सोहे नहि रहल। आब कि ओकर पता लागत? यमराजक छोड़ा!

पंडितजी बैदराज कैं चुनि-चुनि कय विशेषण देमय लगलथिन्ह।

पंडिताइन कहलथिन्ह – आब मुँह-हाथ धोउ। अन्न-पानि खाउ। तखन मन स्थिर हैत।

पंडितजी बजलाह – खाउ की? हम आइ अपन मूर्खताक प्रायश्चित्त करब।

पंडितजी कोठरीक केवाड़ बन्द कय मुँह झाँपि पड़ि रहलाह। पंडिताइनो दिन भरि भुखले रहि गेलीह।

रात्रिशेष मे पंडितजी केबाड़ खोलि कऽ बाहर ऐलाह। पंडिताइन कैं जगा कय कहलथिन्ह – ऐ! हमरा आब दिव्यज्ञान भऽ गेल। वास्तव मे ई संसार किछु नहि थिक। लोक मृगमरीचिकाक पाछाँ दौड़ि रहल अछि। विचारि कऽ देखू त आब त बालूशाही और बहेड़ा मे भेदे की? हमरा आब यथार्थ वैराग्यक उदय भऽ रहल अछि।

पंडिताइन कैं हँसी लागि गेलैन्ह।

वेदान्तीजी रुष्ट भऽ पुछलथिन्ह – अहाँ हँसलहुँ किऐक?

पंडिताइन कहलथिन्ह – अहाँक वैराग्यक हाल हमरा बुझल अछि।

पं. जी बजलाह – पहिलुका बात सभ बिसरि जाउ। एहि बेर हमरा ब्रह्मज्ञान भऽ गेल अछि। आब ई विषय-वैराग्य कथमपि नहि हटि सकैत अछि। इन्द्रियक सुख कोनो वस्तु नहि थिक। चाँटी तर गेने माटी! आब ओहि पेटीक खातिर हमरा एको रत्ती हर्ष-विषाद नहि अछि। केवल अनासक्ति ओ तितिक्षा.....

एतबहि मे छकौड़ीलाल कहैत ऐलथिन्ह – गुरुजी, दलसिंहसराय सँ एक आदमी चिट्ठी आ पेटी नेने आएल अछि।

पं. जीक 'तितिक्षा' मुँहे मे रहलैन्ह। बजलाह – ऐं अपन पेटी आबि गेल? कहाँ अछि?

ई कहैत पं. जी धड़फड़ा कऽ उठय लगलाह। तावत पेटी आङन पहुँचि गेलैन्ह।

पं. जी विद्यार्थी कैं कहलथिन्ह – जाह। आदमी कैं बाहर बैसबहौक गऽ।

पंडिताइन कैं कहलथिन्ह – हँसू लाउ, पाढ़ि काटू।

पेटी फुजैत देरी गमगम करय लागल। पं. जी देखलन्हि – सभ किछु अनामति राखल अछि।

पंडिताइन कैं कहलथिन्ह – आब बड़का चँगेरा आनू।

पं. जी एक दिशि सँ गनि-गनि कऽ मधुर-मोरब्बा बाहर करय लगलाह और पंडिताइन कैं चिन्हा-चिन्हा कऽ चँगेरा मे राखय लगलाह।

तावत छकौड़ीलाल आबि कऽ कहलथिन्ह – बैद्यजीक पेटी कहाँ छैन्ह? ओ आदमी ऐखन चल जाएत।

पं. जी बिगड़ि कऽ कहलथिन्ह – ओहिठाम मोरी लग हरे बहेड़ा फेंकल छैक। जाह बीछि कऽ दऽ अबहौक गऽ।

विद्यार्थीक गेला पर पं. जी स्त्री कैं कहलथिन्ह – भीतर सँ किल्ली त लगौने आउ। नहि त फेर केओ पहुँचि जाएत।

पंडिताइन किल्ली लगा ऐलीह। पुछलथिन्ह – आब की कहैत छी?

पं. जी कहलथिन्ह – आब पैर धो कऽ बैसू। हम सभ मे सँ एक-एक टा देने जाइत छी। अहाँ चाखि-चाखि कऽ स्वाद कहने जाउ।

पंडिताइन कहलथिन्ह – भला, ई कोना भऽ सकैत अछि? अहाँ दू साँझक उपासल छी। हम जाइ छी भानस चढ़ाबय।

पं. जी कहलथिन्ह – बताहि, आइ कतहु भानस होऐ! एहने अछि त हमरो एक-एक टा सभ मे सँ परसि दियऽ।

पंडिताइन परसि कऽ जाय लगलीह कि पं. जी बाँहि धऽ कऽ खींचि लेलथिन्ह – आइ से नहि हैत। संग देबय पड़त।

पंडिताइन कैं पुनः हँसी लागि गेलैन्ह।

वेदान्तीजी पुछलथिन्ह – अहाँ हँसलहुँ किऐक?

पंडिताइन कहलथिन्ह – अहाँक विषय-वैराग्य कतय गेल?

वेदान्तीजी कनेक काल गुम्म रहि बजलाह – हँ, ई त वेश मन पारि देलहुँ। परन्तु प्रवृत्ति ओ निवृत्ति कि लोक कैं अपन वश छैक? जे मायाक खेल रचने छथि सेह सभ कैं नचा रहल छथि। एक क्षण पहिने मनमे वैराग्यक असर चढ़ा देने छलाह, आब पुनः रागक रंग भरि रहल छथि। हम अपने त कर्ता छी नहि। तखन हमर कोन दोष? ई सभटा ब्रह्मक लीला थिकैन्ह। ई कहैत वेदान्तीजी एकटा रसमाधुरी पण्डिताइनक मुँह मे धऽ देलथिन्ह।



कविजी

कविजी मे तीन टा विलक्षण गुण छलैन्ह। ओ अत्यन्त भावुक छलाह। एतेक भावुक, जे कल्पित नायिकाक व्यथा सँ आँखि मे नोर भरि अबैत छलैन्ह। दोसर, जे ओ नख सँ शिख पर्यन्त सौन्दर्यक उपासक छलाह। एहन रसिक, जे अपन उपनाम 'अंचल' रखने छलाह। तेसर, जे ओ प्रगतिशील छलाह। अर्थात महिला एवं मजदूरक स्वतंत्रता पर क्रान्तिपूर्ण कविता लिखैत छलाह।

कविजीक पत्नी सुन्दरी छलथिन्ह। हुनक देह 'गिनी गोल्ड' जकाँ चमकैत छलैन्ह। प्रत्येक अंग दर्पण जकाँ झलकैत छलैन्ह। नाम त छलैन्ह 'कामिनी', किन्तु कविजी दुलार सँ 'शोभा' कहैत छलथिन्ह।

कविजी कैं जखन कविताक प्रेरणा होइत छलैन्ह तखन शोभा कैं सामनें बैसा लैत छलथिन्ह। एक दिन वियोगिनी पर लिखबाक रहैन्ह। कहलथिन्ह – शोभा! एहिठाम आबि कऽ बैसू। कनेक केश छिरा लियऽ, मुँह म्लान कऽ कऽ बैसि जाउ।

गृहिणी चाउर फटकैत उत्तर देलथिन्ह – और भानस मे जे अबेर भऽ जाएत।

'अंचल' जी कान पर हाथ रखैत बजलाह – हाय! हाय! कहाँ कल्पनाक नन्दन-वन मे विचरण करैत छलहुँ से अहाँ एकाएक चूल्हि मे पटकि देलहुँ। एखन विरहिणीक मुद्रा बना कऽ हमरा सामने बैसू।

'शोभा' उदास मन सँ बैसि गेलीह। कविजी हुनका मुँह तकने जाथिन्ह और ओहि सँ जे प्रेरणा भेटैन्ह से पंक्तिबद्ध कैने जाथि।

देखैत-देखैत आधा कविता तैयार भऽ गेलैन्ह। कविजी हुनका आँखि पर आँखि गड़ा कऽ उपमा सोचय लगलाह।

शोभा अगुता कऽ पुछलथिन्ह – आब और कती काल बैसय पड़त? ओम्हर अधन सुसुआ रहल अछि।

'अंचल' जीक ध्यान भंग भऽ गेलैन्ह। बजलाह – ओफ! रस-भंग कऽ देलहुँ। एखन अधन कैं गोली मारू। जेना पहिने विषादपूर्ण नेत्र कैने बैसलि छलहुँ तहिना फेर बना लियऽ और जोर-जोर सँ उच्छ्वास लेबय लागू।

कविजीक कविता तैयार भऽ गेलैन्ह त शोभा कैं छुट्टी दैत कहलथिन्ह – आब कवि सम्मेलन मे जे स्वर्णपदक भेटत से अहींक हृदयहार बनत। एहन रूपसीक

गिरिसन्धि मे निवास कय ओहो धन्य भऽ जाएत।

शोभा चिन्तित होइत बजलीह –एखन जारन त छैहे नहि। भानस कथी सँ हैतैक?

आब कविजी पद्य सँ गद्य पर आबि गेलाह। केवल रूपसीक रूप-शोभा पान कैने त पेट नहि भरत! उदरदरी कैँ भरबाक हेतु सिद्ध तण्डुल चाही और तकर आवश्यक साधन शुष्क काष्टक अभाव अछि।

कविजी सोचय लगलाह – अभाव! अभाव! अहा! की सुन्दर वस्तु थिक अभाव! अदृश्य! अजेय! निर्मल! निराकार! एहि पर सूक्ष्म सँ सूक्ष्म भावक कविता कैल जा सकैत अछि।

परन्तु कविपत्नी व्यावहारिक धरातल पर छलीह। बजलीह – पहिने दू आनाक गोइठा मङा दियऽ। तखन 'अभाव' पर कविता लिखब।

कविजी कहलथिन्ह – एखन हमरा रद्दी कविताक फाइल सँ काम चला लियऽ। काल्हु सँ रुपैया आबि जाएत तखन गोइठा के कहै, केसर-कस्तूरी मँगवा देब।

तावत बाहर डाकपिउन सोर कैलथैन्ह। 'नवयुग' कार्यालय सँ मनिआर्डर। कूपन पर लिखल – अहाँक 'कृषक कन्या' पर पचास टाका पुरस्कार जा रहल अछि। अग्रिम अंक हेतु 'मजदूर' पर कविता पठाउ।

कवि गृहिणीक आगाँ मे नोट फेकैत बजलाह – आब केसर और गुलाबजल दऽ कऽ बादामक हलुआ बनाउ। आइ महत्त्वपूर्ण विषय पर लेखनी उठैबाक अछि।

तराबटि पीला उत्तर कविजीक मस्तिष्क मे भाव-तरंग उठय लगलैन्ह। ओ मसनदि पर ओठङि कय चिन्तन करय लगलाह। आँखि मे अश्रुक बिन्दु आबि गेलैन्ह।

पत्नी पुछलथिन्ह – ई की? कनैत छी किऐक!

कविजी कस्तूरी सँ सुवासित रुमाल लऽ कऽ अपन आँखि पोछैत बजलाह – मजदूरक दशा सोचि कऽ हृदय द्रवित भऽ रहल अछि। हाय-हाय!

हे श्रमिक! कष्ट लखि कय अहाँक,
भय हृदय जाइत अछि फाँक-फाँक।
माघक भोरे उठि बिनु रजाइ,
पड़ती मे तामक हेतु जाइ।
जेठक दुपहरमे हर जोती,
चुअबैत लख घामक मोती।
रौदो बसात छथि जाइत हारि,
बूझी न अहाँ अन्धड़ बिहारि।

परन्तु तकर फल अहाँ कैँ की भेटैत अछि?

नित अहाँ खटै छी दिवस-रैन,
निश्चिन्त करै छथि धनिक चैन।

ई अहिंक बदौलति थिक मजूर!
जे पैघ कहाबथि 'जी हजूर'।
छथि अहिंक बदौलत्ति मोट सेठ,
जे गद्दी सँ नहि होथि हेठ।
डूबी अहाँ समुद्र जा जा,
मोतिक मुकुट पहिरथि राजा!
सुखी ओ चून अहाँ सानी,
पँचमहला पर सूतथि रानी!
गलबैत माटि मे अहाँ हाड़,
दोसर कहबै अछि जमींदार!

एतबे नहि।

नित सूखल रोटी अहाँ खाइ,
अनका हित दय खोआ मलाइ!
धनिकक कुकुर हलुआ चटैत,
बच्चा अहाँक अछि मुँह तकैत!
तरसैत हाय! दू दिनक सहल,
भरि पेट अन्न बिनु बिलटि रहल
ज्वर लगलो उत्तर दूध बिना,
रकटैत रहै अछि राति दिना,
औषध देबेक खेलबैत धूनि,
जग सँ चलि दैत अछि आँखि मूनि!

कवि जी पत्नीक मुँह दिशि ताकि बजलाह – शोभा! अहाँक नेत्र सँ मोती नहि झरैत अछि? से किऐक? नारीक हृदय त स्नेहक माखन थिक जे करुणाक आँच पबैत देरी पिघलि उठैत अछि। देखू, हम कोना वर्णन कैने छी –

अयि! अनन्त कोमल करुणे!
विगलित स्नेहक रस धारा,
दिव्य लोक सँ उतरलि प्रीतिक
पयस्विनी सुखसारा!
अंचल सँ मधु धार दैत
पोषक शीतलताकारी,
पृथ्वी मे अवतीर्ण भेल छी,
नाम अहिंक अछि नारी।

कविपत्नी कहलथिन्ह – खाली नोर बहौने ओकर कोन उपकार भऽ जैतैक?

किछु दुःख बाँटि लिऐक तखन ने!

कविजी भावावेश मे आबि बाजलय लगलाह – ओ केवल दयाक पात्र नहि, अपितु श्रद्धाक पात्र थिक। अहा!

हे हे मजूर! हे हे मजूर!
छी अहाँ तपस्वी कर्मशूर,
वैभव विलास सँ परम दूर,
अविराम श्रान्ति सँ चूर-चूर।
हे जन! श्रमजीवी! मुनि समान।
छी अति सहिष्णु कर्मठ महान,
सन्तुष्ट, जितेन्द्रिय, धैर्यवान,
त्यागी, उपकारी, गुणनिधान।
उपजाबी शस्य, अन्नदाता!
जे अही सकल लोकक त्राता।
निःसीम कष्ट सहि करी काज,
ताही सँ जीवित अछि समाज।
के अहाँ सदृश छथि वीर अन्य!
हे योगिराज! छी धन्य-धन्य!

पुनः पत्नी कैं अविचलित देखि बजलाह – शोभा! अहाँ एखन धरि पूर्णतः प्रभावित नहि भेलहुँ। नहि त अन्तिम पंक्ति सुनैत देरी दुनू हाथ जोड़ा जाइत।

पत्नी संकुचित होइत कहलथिन्ह – ओ वास्तव मे महात्मा थिक, प्रणाम करबा योग्य। किन्तु और लोक बुझक तखन ने?

कविजी उत्तेजित होइत बजलाह – आब पूँजीपतिक अत्याचार बेशी दिन धरि नहि चलतैन्ह। क्रान्तिक विस्फोट हैब अवश्यंभावी आछ।

हे वीर! हलायुध! धरु खड्ग,
शोषित, उत्पीड़ित श्रमिक वर्ग!
जागू, जागू, हुंकार भरू,
नवयुगसंदेश प्रचार करू,
थिक विजय शस्त्र हाँसू अहाँक,
प्रतिमूर्त्ति हथौड़ी थिक गदाक।
क्रान्तिक बनि जाऊ अग्रदूत,
छी अहाँ वीर राष्ट्रक सपूत।
जागू मजूर! किछु करू बोध,
अन्यायी सँ ठानू विरोध

आर्थिक वैषम्यक अन्त करू,
जनता मे साम्यक भाव भरू।
पूँजीपति जे शोषण करैछ,
सर्वस्व अहाँ सभ कैं हरैछ,
तकरा विरुद्ध रण ठानि दियऽ,
निज न्यायोचित अधिकार लियऽ।
हे श्रमिक! आब हुंकार भरू,
अत्याचारक प्रतिकार करू,
दासत्व शृंखला तोड़ि दियऽ,
स्वार्थी वर्गक संहार करू।

कविजी एही प्रवाह मे बहैत छलाह कि हरवाह आबि कऽ गर्द कैलकैन्ह – मालिक पनपियाइ चाही।

कविजी खिसिया कऽ बजलाह – ई कतौँ सँ आबि कऽ सूअर जकाँ चिचियाय लागल। सभ प्रवाहे नष्ट कऽ देलक। जाउ किछु दऽ कऽ जल्दी एकरा हटाउ।

किछु कालक उपरान्त पत्नी प्रत्यागत भेलथिन्ह। कहलथिन्ह – एक मुट्ठी मकइ दैत छलिऐक से नहि लेलक।

कविजी बजलाह – तखन की लेत? मेवा? रड़पनी करैत अछि?

पत्नी – एक बजे हर जोति कऽ आएल अछि, पियासेँ लहालोट छल। किछु खा कऽ पानि पीबक हेतु मङलक। किन्तु घर मे और किछु त छल नहि जे दितिऐक।

कवि – नीक कैलहुँ। एकरा सभ कैं जतेक बेशी आदर करबैक, ततेक माथ पर चढ़ल जाएत।

पत्नी – परन्तु ओकर सुखाएल मुँह देखि कऽ हमरा दया लागि गेल। मेवाक हलुआ जे छलैक से ओकरा दऽ देलिऐक।

कवि – अहाँ पागल त ने भऽ गेलहुँ? बानर कि जानय गेल आदक स्वाद! ओ गमार हलुआ की बूझत? ओ त केवल सेर-पसेरी बुझैत अछि। फेनफानि कऽ भरि पेट दूसल ताकय। ओहि गदहा कैं मेवा खैबाक मुँह छैक?

पत्नी – ओकरा एखन रुपैयाक काज छैक। पाँच टा मड़ैत अछि। घर मे बेटा दुखित छैक। कहैत अछि जे दू-चारि दिन काज करय नहि आएब।

कवि – देखू त पाजीक डल। ताक पर ऐबो नहि करत और पहिला रुपैया लऽ लेत। झूटमूठ लाथ कऽ कऽ ठकय चाहैत अछि। देखब, बदमाश कैं एक्को कौड़ी नहि देब।

पत्नी – परन्तु हमरा त लाथ जकाँ नहि बूझि पड़ल। पाँच टा रुपैया ओकरा दऽ देलिऐक। कोन ठेकान यदि वास्तव मे नेना दुखित होइक तखन कोन उपाय

करैत? और ओकर जे कमाएल छैक से माडब त उचिते छैक।

कवि – आब हम की कहू? एहने बुद्धि अहाँक रहत तखन अहाँक ज़े वस्तु पाओत से दोसर ठकि कऽ लऽ जाएत। खैर, जाय दियऽ। ओ कविता आइ पठा देबाक अछि। हँ, सुनू त केहन लगैत अछि!

हे हे मजूर! हे हे मजूर
जीवन अहाँक अछि चूर-चूर!
धिक लोक समाजक केहन क्रूर?
अन्यायी, लोभी, स्वार्थशूर!
जोतैत अहाँ छी धूर-धूर,
ओ तदपि कहै अछि दूर-दूर!
लखि दुःख उठै अछि हृदय हूर!
भय नयन जाइत अछि अश्रुपूर!

राति मे 'अंचल' जी कविता समाप्त कय घर मे सूतल रहथि कि बाहर सँ केबाड़ पर टक् टक् शब्द बूझि पड़लैन्ह। पत्नी कैं उठबैत बजलाह – शोभा! चोर आबि गेल। आब उठू। साहस देखाउ।

शोभा आँखि मिड़ैत कहलथिन्ह – हमरा की करय कहैत छी?

कवि – अहाँ वीर महिला जकाँ केबाड़ फोलि कऽ जाउ और चोर डाकू जे हो तकर छक्का छोड़ौने आउ।

तावत पुनः टक् टक् होबय लागल। कविजीक छाती धड़कय लगलैन्ह। पत्नी कैं प्रोत्साहित करैत बजलाह – देखू अहाँक बहिन अहल्याबाइ, दुर्गाबाइ, लक्ष्मीबाइ इत्यादि केहन वीराङ्गना भऽ गेलि छथि। हुनकर सभक चरित्र स्मरण करू।

पुनः पत्नी कैं थकमकाइत देखि बजलाह – शोभा! अहाँ कुंठित किऐक भेल छी? नारी त शक्तिरूपा होइत छथि। अहाँ असि धारिणी दुर्गा जकाँ जा कऽ महिषासुर मर्दन करू। तावत हम अहाँक विजयक प्रार्थना करैत छी। हमर चंडी-स्तवन मन पाड़ि लियऽ –

अयि! प्रचंड चंडिके!
कराल खड्ग धारिणी,
असंख्य सैन्य मर्दिनी,
विपक्ष नाश कारिणी,
अपार शक्ति संयुता
मदान्ध दर्प हारिणी

अखण्ड दण्ड दायिनी,
अदम्य दुष्ट दारिणी!

तावत दरवाज़ा पर और जोर सँ धक्का देलकैन्ह। कातर स्वर मे बजलाह – शोभा! शत्रु दुर्ग पर आबि गेल। आब आलस्य करबाक समय नहि अछि। आगाँ बढ़ू। ऐं! एखन धरि अहाँक बाहु नहिं फड़कैत अछि। मुखमंडल मे ओजक लाली नहि आएल अछि! बेश, त हम झाँसीक रानीवला कविता सुना दैत छी –

घोड़ा पर फानि चढ़ि गेली, तानि छाती, केश
राशि कैं लपेटि औ समेटि निज साड़ी ओ।
एक हाथ बर्छी तीक्ष्ण, दोसर मे तरुआरि,
दाँत सौं लगाम धैने कैलन्हि सवारी ओ।
शत्रु वक्ष भेदि भेदि, रुण्ड मुण्ड छेदि छेदि,
चलली चढ़ैत शक्तिरूपा अवतारी ओ।
एक बाण भाल बीच, दुइ बाण छाती बीच,
शोभित अहा हा! छली धन्य वीर नारी ओ।

अहूँ केसरिया रंगक साड़ी पहिरि शत्रुक शोणित सँ भाल मे बिंदी लगौने आउ।

कामिनी उठि विदा भेलीह। किन्तु दुइए-एक डेग चललाक बाद फिरि ऐलीह – नहि ऐं! हमरा डर होइत अछि। कोन ठेकान की कऽ देबय!

कवि – शोभा! अहाँ विजयिनी भऽ कऽ आउ, तखन अहाँक स्मारक मे वीराङ्गना विजय नामक अमर काव्य-रचना कऽ देब।

शोभा – परन्तु यदि कदाचित ओकरे विजय भऽ गेलैक तखन की करब? अहाँ पुरुष छी। अपने किऐक नहि जाइत छी?

कविजी आकाश पर सँ खसैत बजलाह – ऐं! अहाँ कैं हमरा प्राणक मोह नहि अछि! तखन अहाँ मे नारी-हृदय नहि अछि। देखू, एक स्त्री सावित्री एहन छलीह जे यमराजक मुँह सँ पति कैं खींचि कऽ लऽ ऐलीह। और एक स्त्री अहाँ छी जे जानि बूझि कऽ हमरा यमराजक मुँह मे पठा रहल छी। बेश, त हम जाइ छी मृत्युक आलिंगन करय। किन्तु पाछाँ कऽ हमरा दोष नहि देब।

ई कहि कविजी केबाड़ लग गेलाह कि ओ जोर सँ भड़भड़ा उठल। कविजी उनटे पैर वापस आबि पत्नी कैं कहलथिन्ह – देखू। एकटा बात कहब छुटि गेल, तैं फिरि आएल छी। अहाँक वैधव्य वेषक करुण दृश्य हमरा नेत्र मे नाचि उठल अछि। ओ देखबाक हेतु हम फेर त आएब नहि। अतएव अहाँ ऐखन चूड़ी-सिंदूर हटा कऽ एक झलक देखा दियऽ। ... हँ, एक बात और। पुनः हमरा अहाँक मिलन त हैत नहि, अतएव अन्तिम विदा-गान सुनि लियऽ –

प्रिये! हम जाइत छी ओहि पार।
जतय जाय केओ घुरि ने अबै अछि कहियो फेरि किनार।
क्षमू आब अपराध हमर सभ, अछि छुटैत संसार।
पुनि नहि मिलन हैत एहि तन मे नहि पुनि ई व्यवहार।
अन्तिम चुंबन दिय हृदयेश्वरि! अन्तिम स्नेहक धार।

तावत दरबाजा पुनः जोर सँ ठकठक्का उठल। पत्नी कहलथिन्ह – वेश, त अहाँ रहू। हमही जाइत छी। अहाँ कैं दाढ़ी मोछ नहिए अछि। स्त्री जकाँ केश रखनहि छी। हमरबला साड़ी-चूड़ी पहिरि लिय5। केओ पुरुष नहि बूझत। लाउ, अपन बला धोती दिय5।

कविजी बजलाह – अहा हा! ई केहन सुन्दर कटाक्ष भेल अछि! समय रहैत त पुरस्कार दितहुँ। परन्तु शोभा! यदि ओ अहाँ कैं नेने-देने चलि गेल तखन हम की करब? सभ लोक कहत जे 'अंचल' जी अंचल तर नुका रहलाह और आँखिक सोझा अंचलक धन लूटि क5 ल5 गेलैन्ह।

पत्नी कहलथिन्ह – तखन अहीं जाउ।

कविजी विचारि क5 बजलाह – प्रिये हमरा गेने अहाँ विधवा भ5 जाएब और अहाँक गेने हम अनाथ भ5 जाएब। अतएव एक बात करू जे दुनू गोटा संगे मिलि क5 चलू।

सभ पावनि संग मिलि कय कैलहुँ,
सुख-दुख भोगल संगे।
अन्तिम पावनि मरणक आएल,
किए करब व्रतभंगे?

अंचल जी नेओतल छागर जकाँ पत्नीक पाछाँ-पाछाँ चललाह। कामिनी साहस कय केवाड़ फोललन्हि। केवाड़ फुजैत देरी एक बिलाड़ि छड़पि क5 पड़ाएल।

'अंचल' जी बेहोश रहथि। पत्नी कहलथिन्ह – आँखि फोलू, डाकू नहि अछि। बिलाइ छल।

'अंचल' जीक वीरता आब प्रकट भेल। बजलाह – ई अहाँ की कहै छी? डाकू जरूर आएल छल। किन्तु वीर रसक ओजैस्वी कवित्त सुनि क5 पड़ा गेल। अफसोस! अहाँक रक्षाक खातिर आइ शोणितक धार एहिठाम बहि जाइत। किन्तु कायर शत्रु शब्दे सुनि क5 रणक्षेत्र सँ भागि गेल।

दोसर दिन सन्ध्याकाल 'अंचल' जी कैं जाग्रत महिला मंडल सँ एक पत्र भेटलैन्ह। 'नव-नारी' क सम्पादिका लिखने छलथिन्ह – आधुनिक नारी सर्वथा बन्धनमुक्त भ5 क5 रहय चाहैत अछि। ओ अपन सर्वाधिकार कोनो एक पुरुषक हाथें

बेचि देब व्यक्तित्वक अपमान बुझैत अछि। मैह स्वतन्त्रताक आदर्श स्वाभाविक तथा वांछनीय थिक। एहि सिद्धांतक प्रतिपादन करबाक हेतु हमरा लोकनि एक क्रान्तिकारी काव्य प्रकाशित करय चाहैत छी। ई अहीं सन प्रगतिशील कविक लेखनी सँ भ5 सकैछ। युवती मात्रक हृदय मे जे प्रसुप्त आकांक्षा रहैत छैक, स्वाभाविक उद्दीपन पाबि ओ जेना जागरित भ5 उठैत छैक और उद्दाम वासनाक स्वाभाविक प्रवाह जाहि तरहें कृत्रिम नियन्त्रणक शृंखला कैं तोड़ि क5 भसिया दैत छैक, तकर सफल चित्रांकण होमक चाही। प्रकृतिरूपा नारी यौवनक चंचल तरंग मे जे किछु करैत अछि और रहस्यक आवरण मे निहित रखने रहैत अछि, तकर स्पष्ट एवं सजीव चित्रण करैत, सूक्ष्मतम मनोभावक विश्लेषण करब अहीं सन प्रतिभावान तथा सिद्धहस्त कलाकारक कार्य थिक। हमरा लोकनि आशा करैत छी जे 'महिला-मंडल' कैं अहाँक सहयोग प्राप्त हैतैक। मंडलक अध्यक्षा श्रीमती प्रमदा देवी एहि रचनाक निमित्त एक हजार टाका धरि पुरस्कार देबक हेतु तैयार छथि।

पत्र पढ़ैत 'अंचल' जी उछलि उठलाह। हुनक कल्पना-समुद्र मे लहरि आबि गेलैन्ह। पेंसिल कागज लय गुनगुनाय लगलाह –

हे प्रगतिशील महिला समाज!
जग मे स्वतंत्र भय करू राज।
प्राचीन रूढ़ि कैं तोड़ि आज,
कय दूर धाख, संकोच, लाज,
आधुनिक युगक लय साज-बाज,
सीखू पुरुषोचित सकल काज।
हाँकू मोटर, साइकिल चलाउ,
एरोप्लेनक चक्का घुमाउ,
चूड़ी कंकण कर सँ उतारि,
बंदूक हाथ मे लिय5 नारि।
थिक पुरुष प्रतिद्वन्द्वी अहाँक
उर ओकर विदारू फाँक-फाँक।
शत्रुक दल मे निर्भय विचरू,
निःशंक रेल मे सफर करू।
होटल मे जा एकसरि ठहरू,
एकसरि प्रदर्शनी सैर करू।
देखबैत चलू उन्मुक्त रूप,
शृंगार, वेश, फैशन, अनूप,
यौवन-शोभा प्रकटाउ खूब,

हो सकल शत्रुदल उ‌‌‍‌ब्डूब,
मरि जाय पुरुष पापी सिहाय,
छटपटा उठय कहि हाय हाय!
  गर्वित, उन्नत अंचल सँवारि,
  होउ विश्वविजयिनी अहाँ नारि!

पुरुषक आगाँ नहि होउ दीन,
दासी न बनू ककरो अधीन,
वैवाहिक बंधन थिक कलंक,
विचरक चाही जग मे अशंक।
चेतन जग मे स्वच्छन्द वृत्ति।
थिक एक मात्र जीवनक भित्ति।
सभ जीव जन्तु विहरय स्वतंत्र,
ई थिक आनन्दक मूलमंत्र।
थिक विश्वव्यापी नियम पैह,
व्यभिचार कहाबय कतहु सैह!
दासत्व घोर थिक पातिव्रत्य,
सभ मनगढ़न्त बंधन असत्य।
आदर्श सतीत्वक थिक कल्पित,
स्वार्थी वंचक पुरुषक निर्मित,
जीवन-विज्ञानक अति विरुद्ध,
यौवन-प्रवाह कय दैछ रुद्ध।
ठानू एकरा सँ घोर युद्ध,
बनि जाउ अबाधित प्रकृति शुद्ध।
अपवाद थीक दाम्पत्य धर्म,
बूझी तकरे व्यभिचार कर्म।
  सभ कृत्रिम बंधन दूर करू,
  स्वामीक गर्व कैं चूर करू।

सभ कुसंस्कार कैं छोड़ि छाड़ि
सामाजिक बन्धन तोड़ि ताड़ि,
रूढ़िक पुरान घट फोड़ि फाड़ि,
क्रान्तिक झंडा फहराउ नारि!
  हे प्रगतिशील महिला समाज!
  गतिहीन पुरुष पर करू राज!

कामिनी देवी आबि कय पुछलथिन्ह – की? फेर कोनो कविता बनि रहल छैक की? कविजी भयभीत भऽ बजलाह – अहाँ सुनैत त नहि छलहुँ?

कामिनी सुनैत ने छलहुँ त की?

सभ कृत्रिम बंधन दूर करू
स्वामीक गर्व कैं चूर करू

कनेक दियऽ त, देखिऔक।

कविजी कविता नुकबैत कहलथिन्ह – अरे अरे! अहाँ कोन नेपथ्य मे ठाढ़ि भऽ कऽ सुनैत छलहुँ? ई कविता अहाँक देखबा योग्य नहि अछि।

तावत कामिनी कापी उचकि कऽ पड़ा गेलथिन्ह। कविजी हुनका पाछाँ छुटलाह – शोभा! शोभा! ओ कापी लाउ। ओहि मे बहुत बात लिखल छैक जे अहाँक पढ़ऽ योग्य नहि अछि। शोभा!

परन्तु शोभा जे लंक लऽ कऽ पड़ैलीह से फेर किऐक धराइ देथिन्ह?

पूर्णिमाक रात्रि। शोभा स्नान कय अपन शृंगार करैत छलीह। 'अंचल' जी चुपचाप ठाढ़ भय एकटक निहारय लगलाह। अनायास मुँह सँ विद्यापतिक पद बहरा गेलैन्ह –

चंदन चरचु पयोधर रे, गृम गज मुक्ताहार
भसम भरल जनु शंकर रे, सुरसरि जलधार!

शोभा चेहा कऽ ताकय लगलीह। फूजल केशक किछु लट आगाँ मे आबि गेलैन्ह। 'अंचल' जी कहलथिन्ह – अहा! एखन अहाँक शोभा केहन लगैत अछि! महाकविक शब्द मे –

कुचयुग परसि चिकुर फुजि पसरल,
  तैं अरुझायल हारा।
जनि सुमेरु ऊपर मिलि ऊगल
  चाँद विहिन सभ तारा।

शोभा संकुचित भय आँचर सम्हारैत पुछलथिन्ह – अहाँक अभिप्राय की अछि, से कहू।

'अंचल' जी कहलथिन्ह – एखन दूधक वर्षा भऽ रहल अछि। फुलवारी मे चलू। ओहिठाम अहाँ कैं बैसा कय चन्द्रमा सँ मिलान करब।

टहाटही इजोरिया मे एकान्त चबूतरा पर बैसि, कविजी फूल सँ पत्नीक शृंगार करय लगलाह। खोपाक बीच गुलाब खोंसि देलथिन्ह। कान मे लंकेश्वरक कली। छाती पर बेलाक गजरा। तखन गुनगुनाय लगलाह –

जनम अवधि हम रूप निहारल, नयन न तिरपित भेल।

हाय हाय! अहाँ कैं जै बेर देखैत छी, तै बेर नवीन सौन्दर्य देखय मे अबैत अछि। प्रतिपल नवीन प्रेमक उदय होइत अछि।

सेहो प्रीति अनुराग बखानिय, तिल-तिल नूतन होय!

एहि रूप पर के ने बिका जाएत? लाखो खून एहि पर माफ भऽ सकैछ।

'अंचल' जी कामिनीक दुलार करैत कहलथिन्ह – देखू, हम एक एहन महाकाव्य लिखब चाहैत छी जे साहित्य-संसार मे अमर कीर्त्ति हो। ओ अनुपम वस्तु भऽ सकैत अछि, यदि अहाँ हृदय खोलि कऽ हमर सहायता करी। ओहि खातिर एक हजार पुरस्कार भेटि रहल अछि। परन्तु तकर प्राप्ति अहाँक हाथ मे अछि।

कामिनी लजाइत कहलथिन – हम कथी योग्य छी जे अहाँक सहायता करब?

'अंचल' जी उत्साह दैत कहलथिन्ह – अहाँ एहि विषय मे जतेक सहायता कऽ सकैत छी ततेक दोसर केओ नहि। देखू, अहाँक फूल सन रूपयौवन पर असंख्य भ्रमर लुब्ध भेल हैत। अहाँ अपन सभ टा गुप्त रहस्य हमरा कहि दियऽ! ओही आधार पर हम 'रमणी-रहस्य' नामक काव्य प्रस्तुत करब।

कामिनी मुसकुराइत बजलीह – अपन सभटा गुप्त रहस्य कहि देब त अहाँ फेर एतेक मानब?

'अंचल' जी उल्लसित भय बजलाह – एहू सँ बेशी मानब। देखू, आधुनिक पति-पत्नी मे मित्रताक भाव रहैत छैक। हम जे-जे कैने छी से अहाँ कैं कहि दी। अहाँ जे सभ कैने होइ से हमरा कहि दी।

कामिनी कहलथिन्ह – तखन पहिने अहीं शुरू करू।

'अंचल' जी – बेस, त सुनू। हम प्रत्येक रमणी कैं प्रेमिका रूप मे देखैत छी। ई संसार एक विशाल सासुर थिक, जहाँ –'मधुर युवति जन संग, मधुर-मधुर रस रंग।'

कामिनी टोकैत कहलथिन्ह – किन्तु अहाँ अपन 'मातृवंदना' कविता मे त नारीमात्र कैं 'माता' कहि कऽ सम्बोधन कैने छिऐक?

कवि – हँ। किन्तु ओ त अनका बुझैबाक हेतु छैक। यथार्थतः तीन प्रकारक भाव स्त्री कैं देखि कऽ उदित होइत छैक। वृद्धा मे मातृभाव, बालिका मे कन्या भाव, और युवती मे पत्नी-भाव। यैह स्वाभाविक थिकैक।

पत्नी – अनकर युवती स्त्री कैं देखि कऽ बहिनक भाव किऐक नहि उत्पन्न होइत अछि?

कवि – संसार मे सभक सार बनक हेतु हम जन्म नहि नेने छी। ताहि सँ बरु अहीं सभ सँ बहिनपा जोडू जे सभ सुन्दरी हमर सारि भऽ जाथि। अथवा पुरुष सभ सँ भाइक सम्बन्ध राखू त सभक स्त्री कैं हम सरहोजि रूप मे देखबैन्ह।

पत्नी – और यदि आनो पुरुष एहिना बिचारय, तखन त हमहूँ सभक सरहोजि बनि जैबैक। ओहना स्थिति मे सभ केओ हमर नंदोसिए भऽ जाएत।

कविजी दुलार सँ पत्नीक गाल तिरैत बजलाह – अहाँ बेश चतुरा छी। घुमा फिरा कऽ हमरे गारि पढ़ा देलहुँ। बेश, ई सभ त हास-परिहास भेल। आब कार्यक गप्प होए।

कामिनी गंभीर भऽ कऽ कहलथिन्ह – की पुछबाक अछि, से पूछू।

कविजी पत्नीक कोमल हाथ अपना हाथ मे लैत बजलाह – देखू, निम्न कोटिक स्त्री-पुरुष लज्जा वा भय सँ अपन-अपन गुप्त रहस्य एक दोसरा पर प्रकट नहि करैत अछि। आजीवन छपौने रहि जाइत अछि। परन्तु जहाँ अखण्ड विश्वास नहि तहाँ प्रेम की? दाम्पत्य सम्बन्ध त ओकरा कही जहाँ अन्तःकरण एक हो। पति-पत्नीक हृदय मे भेदे की?

ई कहि 'अंचल' जी अपना पत्नी कैं छाती मे सटा लेलन्हि। कामिनीक हृदयक स्पन्दन हुनका नीक जकाँ अनुभव होमय लगलैन्ह। बजलाह – जहिना दुनू हृदयक बाह्यरूप मिलि कय एकाकार भऽ गेल अछि तहिना आभ्यन्तरिको एक भऽ जैबाक चाही। अहाँ अपन सम्पूर्ण हृदय हमरा हृदय मे उझीलि दियऽ।

कामिनी सरलताक अभिनय करैत कहलथिन्ह – कोन तरहें उझीलि दियऽ? अहाँ अपने भीतर पैसि कऽ काढ़ि लियऽ।

कवि – बेश, त हम काढ़ैत छी। अहाँ किछु छपाएब त नहि?

कामिनी – अपना जनैत त नहि छपाएब।

'अंचल' जी कामिनी कैं कोड़ मे बैसा हुनक अनंचल रूपक शोभा देखैत बजलाह – देखू, मधुर रसाल फल देखि भाँति-भाँतिक पक्षी ओहि पर पहुँचि जाइत छैक। मधुर मकरंद पान करबाक हेतु रसलोभी मधुप त सभ ठाम मड़राइते रहैत अछि। कोनो फूल एहन नहि जकरा भौंरा नहि सुँघने हो। अहूँ कैं देखि कऽ कतेक लोभाएल हैत। दीप-शिखा पर अनन्त पतंग आबि कऽ जरि मरैत अछि।

कामिनी अपना प्रशंसा पर मुसकुराइत बजलीह – त एहि मे दीपक कोन अपराध? यदि हमरा देखि कऽ केओ मरऽ लागय त हमर कोन दोष?

कवि – दोष यैह जे अहाँ मे एतेक गुण किऐक भेल? और यदि भेल त याचक कैं दान किऐक नहि कैल?

कामिनी – यदि पहिनहि सँ दान करय लगितहुँ त अहाँक हेतु संचित कोना रहैत?

कवि – तखन आइ धरि अहाँ कहियो सदाबर्त्तक पुण्य नहि लुटलहुँ।

कामिनी – नहि।

कविजीक उत्साह मंद पड़ि गेलैन्ह। बजलाह – अहाँ कैं एखन धरि हमरा ऊपर पूर्ण विश्वास नहि भेल अछि। हम बर्बर युगक पुरुष नहि छी जे अपना स्त्रीक

गुप्त चरित्र जानि क्रोध वा ईर्ष्या करब। आधुनिक स्वामी तेहन उदार होइत अछि जे स्त्रीक प्रत्येक स्वच्छन्दता ओकरा रुचिकर प्रतीत होइत छैक। अहाँ कोनो बातक भय वा संकोच नहि करू। लज्जाक आवरण हटा कऽ अपन सभ टा गुप्त वृत्तान्त कहि दियऽ।

कामिनी कहलथिन्ह – हमरा अहाँ जकाँ ओतेक भूमिका बान्हि कऽ बाजय नहि अबैत अछि। सोझ-सोझ बात पूछू और जवाब लियऽ।

कवि – बेश, त सोझे पुछैत छी। अहाँक शरीर कैं परपुरुषक स्पर्श भेल अछि कि नहि?

कामिनी – स्मरण त नहि भऽ रहल अछि।

कवि – एहन हम मानिए ने सकैत छी। कहियो ने कहियो अवश्य भेल हैत। खूब मन पाड़ि कऽ देखि लियऽ।

कामिनी मन पाड़य लगलीह और 'अंचल' जीक हृदय धड़कय लगलैन्ह। लजाइत बजलीह – हँ, एकटा त मन पड़ैत अछि।

कविजी निष्पन्द भऽ उठलाह। तथापि उत्साह बढ़बैत कहलथिन्ह – देखू, एको रत्ती छपाएब नहि। अहाँ हमर प्राण छी। सभ टा कहि दियऽ।

ई कहैत कविजी कामिनीक आलुलायित केश सोहरावय लगलथिन्ह। मनहि मन सोचय लगलाह – एहन सौन्दर्य मे विष भरल! हाय रे नागिनी!

कामिनी बजलीह – ओ हमरा बड्ड मनैत छल। प्राणो सँ बढ़ि कऽ।

कविजी उछलि उठलाह – ऐं! हमरो सँ बेशी? ओ निश्चय लम्पट छल। धूर्त्त, वंचक!

कामिनी चुप भऽ रहलीह। बजलीह – अहाँ कैं एतबे मे लेसि देलक। आब आगाँ नहि कहब।

'अंचल' जी गिड़गिड़ाय लगलाह – प्राण हमर! कहने जाउ। आब हमरा एको रत्ती क्षोभ नहि हैत। हँ, तखन की भेलैक?

कामिनी – ओ हमरा खातिर बहुतो वस्तु अनैत छल। कक्बा, साबुन, तेल.....

कविजी उत्तेजित होइत बजलाह – हम बूझि गेलहुँ। ओ सभटा अहाँ कैं रिझाबक हेतु लबै छल। लुच्चा, पाजी, बदमाश!

कामिनी बजलीह – अहाँ कैं तुरन्त क्रोध भऽ जाइत अछि। आब नहि कहब।

कविजी पुनः पोल्हाबय लगलथिन्ह – प्राणप्रिये! हमरे शपथ अछि। सभ टा कहने जाउ। ओ अहाँ कैं की सभ दैत छल? तेल लबैत छल त अहाँ फेरि किछेक नहि दैत छलिऐक?

कामिनी – ओ लबिते नहि छल। अपने हाथ सँ लगाइयो दैत छल।

कविजी जी मसोसि कऽ रहि गेलाह। बजलाह – ओ अहाँ खातिर मिठाइयो लबैत छल होएत।

कामिनी – अहाँक अनुभव ठीक अछि। ओ मुँह कऽ खोआइयो दैत छल।

कविजीक मुँह विवर्ण भऽ गेलैन्ह। किछु थकाइत बजलाह – तखन ओ निश्चय अहाँक चुंबनो कैने हैत।

कामिनी दाइ लजा गेलीह।

कविजी कहलथिन्ह – बाजू, बाजू, लजाउ नहि।

कामिनी उत्तर देलथिन्ह – जखन अहाँ बुझिए गेलहुँ त कहू की?

कविजी उपरका मन सँ प्रसन्न होइत बजलाह – शाबाश! एहने साहस चाही। अहाँ आदर्श पत्नी छी। एहिना सभटा कहैत जाउ। ओ कोन ठाम चुम्बन लैत छल?

कामिनी किछु संकुचित होइत बजलीह – ओना त कतेको ठाम। किन्तु अधिकतर गाल पर और ठोर मे।

कविजी कामिनीक मधुमय अधर देखि सोचय लगलाह – एहन सुन्दर अमृतक प्याली मे हालाहल विष भरल! हाय रे मायाविनी!

पुनः जी गौंति कऽ पुछलथिन्ह – अहूँ त ओकरा स्नेहक प्रतिदान दैते छल हैबैक?

कामिनी बिहुँसि उठलीह। दन्तच्छटा सँ बिजली चमकि उठलैन्ह। बजलीह – ओ सभ बात की आब मन अछि? हँ, एक बेर हम ओकरा गाल मे दाँत काटि नेने रहिऐक से बहुत दिन धरि चिह्न बनल रहलैक।

कविजीक मर्मस्थान मे 'टीस' मारि देलकैन्ह। ओ एक सूक्ष्म व्यथाक अनुभव करय लगलाह।

कामिनी हुनक मनोभाव बुझि पुछलथिन्ह – की सोचैत छी। यदि ई सभ सुनि कय दुःख होइत हो त हम नहि कही।

'अंचल' जी अपना कैं सम्हारैत बजलाह – बेह सभ त हम सुनय चाहैत छलहुँ। और बेह सभ टा घटना त जीवनक रस छैक। हमहूँ अपन अनुभव सुनाबय लागब त पोथा तैयार भऽ जाएत। किन्तु साधारण स्त्री-पुरुष कैं एतबा साहस कहाँ होइत छैक जे एहि तरहें हृदय फोलत। अहाँ सन स्पष्टहृदया स्त्री लाख मे गोटेक बहराय त बहराय। शोभा! अहाँ धन्य छी।

परन्तु भीतरे-भीतर एक नवीन चिन्ता 'अंचल' जी कैं सालय लगलैन्ह। ओकरा जतेक दबाबक यत्न करथि, ततेक बढ़ले जाइन्ह। अन्त मे नहि रहि भेलैन्ह। ओ अपन

उच्छ्वासपूर्ण हृदय कें एक हाथ सँ दाबि पुछलथिन्ह – शोभा! एक बात पुछैत छी, से छपाएब नहि। देखू, ई प्रश्न करैत किछु संकोच होइत अछि। किन्तु हमरा अहाँ मे भेदे की? अहाँक जाहि भाग पर बेलाक गजरा झूलि रहल अछि से त ओकरा हाथ मे नहि पड़ल हैतैक?

कामिनी दाइ चुप रहि गेलीह।

कविजी गजरा हाथ मे लैत बजलाह – देखू छपाउ नहि। नहि त हमर हृदय दू खण्ड भऽ जायत।

कामिनी – अहाँ सँ हम किछु टा नहि छपाएब। ओ अवश्य देह-हाथ धऽ कऽ दुलार करैत छल। हमहूँ कहियो रोकैत नहि छलिऐक।

'अंचल' जी एहन निर्दय आघात नहि सहन कय सकलाह। ओ बच्चा जकाँ कामिनीक वक्षःस्थल मे सन्हिया कऽ सिसकय लगलाह। पत्नी कोमल आङुर सँ हुनका अशान्त मस्तक पर हाथ फेरय लगलथिन्ह। परन्तु शोभाक आङुर हुनका बिच्छू जकाँ डंक मारय लगलैन्ह। बेलाक गजरा साँप जकाँ डँसय लगलैन्ह। जे वस्तु पहिने अमृतकलश जकाँ शीतलता प्रदान करैत छलैन्ह से विषकुम्भ जकाँ दाह उत्पन्न करय लगलैन्ह।

आब कविजीक मानस मे एक अन्तिम सन्देह विकराल रूप धारण कऽ उठलैन्ह। हुनका मस्तिष्क मे ज्वालामुखी भभकय लगलैन्ह। ओ फुलवारी मे टहलय लगलाह। किन्तु शान्ति नहि भेटलैन्ह। माथ मे जतेक अधिक शीतल सुगन्ध समीर लगैन्ह ततेक अधिक ओ धीपल तावा बनल जाइन्ह।

आखिर 'अंचल' जी घर मे गेलाह और कोनो वस्तु धोती तर नुकौने ऐलाह। पत्नी पूर्ववत निर्विकार बैसलि छलथिन्ह।

'अंचल' जी अपना छाती पर पाथर राखि अन्तिम प्रश्न पुछबाक हेतु तैयार भेलाह। समस्त साहस बटोरि कऽ पुछलथिन्ह – सत्य सत्य कहू। अहाँ ओकरा अंक मे कहियो ... शयन ... त नहि ... कैने हैबैक?

कामिनी दाइ असीम साहस और धैर्यपूर्वक उत्तर देलथिन्ह – फूसि कोना कहू? अनेको बेर ओकरा कोड़ मे सूतल हैबैक।

'अंचल' जी कें जेना बिजलीक 'करेंट' मारि देलकैन्ह। मस्तिष्क शून्य भऽ गेलैन्ह और चारू कात अन्धकार नाचय लगलैन्ह। थोड़ेक कालक हेतु हृदय-यन्त्र धक् दऽ बंद भऽ गेलैन्ह। ओ छुरा बाहर करैत बजलाह – जनैत छी, ई की छैक?

कामिनी कहलथिन्ह – हम पहिनहि बूझि गेल छलहुँ जे अहाँ छुरा लाबय गेल छी।

'अंचल' जी कामिनीक छाती मे छुराक नोक अड़ा कऽ बजलाह – खबरदार जौं हमरा सँ एको बात छपौलहुँ। अहाँ कें सभ टा बात कहय पड़त।

ई कहि कविजी छुराक नोक और जोर सँ गड़ा कऽ उत्तरक प्रतीक्षा करय लगलाह।

कामिनी कनेको विचलित नहि भेलीह। शान्त भाव सँ उत्तर देलथिन्ह – अहाँक छुराक हमरा भय नहि अछि। जे सत्य बात छैक से कहब। अहाँ सुनहिक चाहै छी त सुनू। ओकरा सँ हमरा कोनो पर्दा नहि छल। हमर कोनो अंग एहन नहि जे ओ नहि देखने हो। ओ राति-दिन हमर पाछाँ व्यग्र रहैत छल। और हमहूँ ओकरा पर जान दैत छलिऐक। ओकरा बिना एको घड़ी मन नहि लगैत छल। और जहाँ ओ लग मे पहुँचल कि सभ दुख बिसरि जाइत छल। ओकरा देखितहि इच्छा होइत छल जे भरि पाँज धऽ कऽ लपटि जाइ। ओहि तरहक प्रेम आब एहि जीवन मे ककरो सँ नहि भऽ सकैत अछि। ..... अहाँ कें जे करबाक हो से करू।

'अंचल' जी कें जे सुनबाक छलैन्ह से सुनि चुकलाह। पत्नीक अतीत-गाथा सँ हुनका मुँह पर कालिमा पोता गेलैन्ह। समस्त कवित्व विलीन भऽ गेलैन्ह और पशुत्व प्रकट भऽ उठलैन्ह। ओ उन्मत्त भऽ कऽ कामिनीक ठोंठ धऽ लेलथिन्ह और जोर सँ दबबैत कहलथिन्ह – पापिनी! आब तौं मरऽ लेल तैयार भऽ जो।

ई कहि कविजी हुनक गरदनि रेतक हेतु छुरा बाहर कैलन्हि।

कामिनी मूर्त्तिवत अचल रहलीह।

कविजी पुछलथिन्ह – कलंकिनी! मृत्यु सँ पूर्व एक प्रश्नक उत्तर देने जो। ओ के छल?

कामिनी अविचलित रूप सँ बजलीह – ओकर नाम छलैक मदन।

कविजी उत्तेजित होइत बजलाह – म ... द ... न! ओफ। तैं ने? अच्छा, एक बात और। जखन ओ तोरा ओना करैत छलौक त एको रत्ती लज्जाक उदय किऐक नहि होइत छलौक?

कामिनी सहज शान्त स्वर मे बजलीह – ओहि समय लज्जाक उदय हैब असम्भव छल किऐक त हम पाँचे वर्षक छलहुँ। और मदन खवास अस्सी वर्षक बूढ़ छल।

कविजीक मुँह सँ बहार भेलैन्ह – ऐं।

कामिनी बजलीह – हँ, ओ हमरा बड्ड मानैत छल। और हमहू दिन-राति ओकरे मे रितिआइल रहैत छलिऐक। बेह खोअबैत छल, पियबैत छल, खेलबैत छल,

सुतबैत छल। रुसैत छलहुँ त मनबैत छल, कनैत छलहुँ त चुप करैत छल। आब ओकरा जकाँ के मानत?

कविजी लज्जा सँ अवाक रहि गेलाह। हुनक छुरा धला हाथ नीचा ससरि ऐलैन्हि। कुण्ठित होइत बजलाह – तखन एतेक फूसि किऐक बजलहुँ?

कामिनी कहलथिन्ह – हम एको बात अहाँ कैं फूसि नहि कहलहुँ अछि। देखाउ जे कोन बात फूसि थिक? आब छुरा चलबैत की होइत अछि?

कविजी लज्जित होइत बजलाह – शोभा! आब और बेसी नहि बनाउ। अहाँ एना छकौलहुँ किऐक?

कामिनी उत्तर देलथिन्ह – अहाँक प्रेमक परीक्षा जे करबाक छल! अहाँ कैं रमणी-चरित्रक रहस्य भेटी वा नहि, किन्तु हमरा त पुरुष-चरित्रक रहस्य भेटि गेल।



भदेशक नमूना

सरस्वती दाइ अत्यन्त संस्कारिणी ओ चमत्कारिणी छलीह। दुर्गा ओ गीता पाठ करयवाली। बजबाक चमत्कार तेहन जे अरिकोंच कैं 'अरिकंचन' कहैत छलीह, और बँसबाड़ी कैं 'वंशवाइरि'।

परन्तु भगवानो त विचित्र कौतुकी छथि। हुनक विवाह भेलैन्ह भदेशक मौजे लाल झा सँ जे निट्ठाह दछिनाहा गृहस्थ छलाह। साल मे पाँच सै मन अल्हुआ उपजौनिहार। जहाँ सरस्वती दाइ छवि कऽ सजमनि कैं 'साजमैनि' कहैत छलथिन्ह तहाँ मौजेलाल झा 'कदुआ' बजैत छलाह। विवाह काल सहस्रो प्रयत्न कैला उत्तर हुनका मुँह सँ सहस्रशीर्षा मन्त्र नहि बहरा सकलैन्ह।

प्रथमे रात्रि सँ सरस्वती दाइ अपना स्वामी कैं थूसय लगलीह। पुछलथिन्ह – की? अहाँ मिथिला भाषा बाजि सकैत छी? हमरा सँ गप्प करू त।

परन्तु दीयरक कात रहयवाला मौजेलाल झा पंचक्रोशक कन्या सँ की बजितथि? चुप्पे रहलाह।

जखन सरस्वती दाइ बहुत दिक कैलथिन्ह त बजलाह – हमरा के जैसने बोले आएत वैसने न बोलब! हीन उछन्नर बड़े करइ छथ।

सरस्वती दाइ झमा कऽ रहि गेलीह। माथ पर हाथ दऽ कऽ बैसि रहलीह।

आब मौजेलाल झाक कंठ फुजलैन्ह। पुछलथिन्ह – अब चुप्प बड़े हो गेलन? एतना देर से फटफट करैत रहलन। अब बोलती काहे बन्द हो गेलइन?

ओही राति सरस्वती दाइ संकल्प कैलन्हि जे आजन्म ब्रह्मचारिणी रहब चरु कबूल, किन्तु एहन गमार सँ अपना शरीरक स्पर्श नहि होमय देब।

ओ नीचाँ मे कुशासन बिछा कऽ सूति रहलीह।

मौजेलाल झा पुराइ कैलथिन्ह – ले बलैया! हिन चटइया पर बड़े चल गेलन? भुँइया मे ओतना तकलीफ करे के कौना काम है?

ई कहैत मौजेलाल झा पहुँचि गेलथिन्ह। सरस्वती दाइ आँखि मुनि कऽ सूति रहलीह।

मौजेलाल झा पुछलथिन्ह – ऊ गोर के अङुरीमे की हो गेल है? कैसे कऽ छूटत?

सरस्वती दाइ आँखि झँपनहि कहलथिन्ह – सामान्य व्रण अछि। नीमक तेल सँ छूटि जाएत।

ई कहि सरस्वती दाइ सूति रहलीह। परन्तु मौजेलाल झा कैं निंद नहि पड़लैन्ह। ओ अपन योग्यताक अभाव शुश्रूषा द्वारा पूर्ति करय चाहलन्हि। चुपचाप भानसघर मे जा नोन तेल सानि कऽ मुट्ठी मे नेने ऐलाह और सूतल पत्नीक पाँव पर औंसि देलथिन्ह।

सरस्वती दाइ छिलमिला उठलीह। बजलीह – अहाँ हमर कनगुरियो आङुर स्पर्श करबा योग्य नहि छी। फराक रहू।

मौजेलाल झा अप्रतिभ होइत बजलाह – देखू धन्धा! अपनहीं बोललन जे नीमक तेल लगैला से छूटत। आब हमरा के उलटुदुत्तू करै छथ। 'नीमक तेल' ऐसन न होइत है, तब कैसन होइत है?

तहिया सँ मौजेलाल झा नाना उपाय कऽ कऽ हारि गेलाह, किन्तु सरस्वती दाइ सन्तुष्ट नहि भेलथिन्ह।

सासुरो गेला उत्तर सरस्वती दाइ अपन टेक नहिए छोड़लन्हि। मौजेलाल झा कैं पृथक् शय्या विधान त पसन्द नहि छलैन्ह, परन्तु पंडिता पत्नीक समीप जैबाक साहस नहि पड़ैत छलैन्ह। अभिमानिनी भार्याक दर्प चूर्ण करबा मे असमर्थ छलाह। अतएव लज्जित और पराजित जकाँ रहैत छलाह।

तथापि एक राति मौजेलाल झा किछु साहस कैलन्हि। पुछलथिन्ह – अब एडत केतना रोज चलत? हमरा के की हुकुम मिलैत है?

गर्विता पत्नी उत्तर देलथिन्ह – अहाँ पहिने हमरा सँ गप्प करबा योग्य होउ। मिथिला भाषा सीखू।

मौजेलाल झा बजलाह – हमरा के कौना वखत फुरसत रहैयऽ जे सीखब। एसकरुआ आदमी ठहरली। दिन भर खेती-बारी के धन्धा है, माल-जाल है। फेर हाट-बाजार है, मामला-मोकदमा है। तब कइसे काम चलत?

सरस्वती गर्वपूर्वक कहलथिन्ह – अहाँ नित्य रात्रि मे दू घंटा कऽ हमरा सँ पढ़ल करू।

तहिया सँ मौजेलाल झा अपना पत्नीक विद्यार्थी बनि गेलाह।

सरस्वती दाइ कहलथिन्ह – पहिने अहाँ शब्दक शुद्ध उच्चारण हमरा सँ सीखू। हमर नाम बाजू त।

मौजेलाल झा बजलाह – सरोसत्ती।

सरस्वती दाइ बजलीह – छि! 'सरस्वती' कहू।

मौजेलाल झा लाखो प्रयत्न कैला उत्तर 'सरस्वती' नहि कहि सकलाह।

पत्नी भर्त्सना करैत कहलथिन्ह – अहाँ कालिदास बला परि करैत छी। मन मे अबै अछि जे ... किन्तु की कहू? जखन एतबा भऽ जाएत तखन हम आगाँ पढ़ाएब।

सरस्वती देवी सूति कऽ उपन्यास पढ़य लगलीह और मौजेलाल झा भरि राति 'सरोसत्ती' 'सरोसत्ती' रटैत रहलाह।

सरस्वती खिसिआ कऽ बजलीह – 'कन्यादान'क लेखक कैं हम की कहिऔन्ह? हुनका 'बुच्चीदाइ' त सुझलथिन्ह, किन्तु एहन-एहन भुच्च मूर्खराज सभ नहि सुझैत छथिन्ह। हमरा त उनटे कपार पर पड़ल। एहि पर लिखयबला केओ नहि।

दोसरा दिन मौजेलाल झा बथान जाय लगलाह त पत्नी कहलथिन्ह – देखू, आइ आर्द्राक पावनि हैतैक। पर्याप्त दूध चाही।

मौजेलाल झा बजलाह – दूध के कौना कम्मी है? मगर आइरा के पतड़ा के हाल केकरा कऽ बुझा गेल? अच्छा, त सँकरात कौना रोज है?

सरस्वती पंचांग देखैत बजलीह – 'संक्रान्ति' कहिऔक।

मौ. – लगपँचो त अब लगचाएले होएत?

सरस्वती कान मुनैत बजलीह – ओह! कान मे जेना गोली दागि देलहुँ। 'नागपंचमी' बाजू।

मौ. – तब आइ अरदरा के पबनी मे की करे के होतइ?

स. – खीर-पूरी बनतैक। ब्राह्मण भोजन होयतैक।

मौ. – तब केकरा केकरा के नेओता देवे के होतइ?

स. – जे विद्वान होथि, गायत्री जपैत होथि ...

मौ. – विद्दोमान त एह जयवार मे एगो जगरनाथ ओझा छथ। मगर गाएतरी जपे के हाल ...

स. – राम! राम! शब्द सभ कैं एना लद्द नहि मारिऔक।

मौ. – जगरनाथ, हरिचन्नर, सततरायन ...

सरस्वती शुद्ध करैत बजलीह – जगन्नाथ, हरिश्चन्द्र, सत्यनारायण।

मौ. – हँ, एइ तीनू के जिम्मा देबइ। संदुकची मे से बड़का-गड़का छीपा कटोरा निकाल लेब। और घर मे त सब कुछ मौजूदे हवे। घीउ, रहड़ी के दाल...

स. – 'घृत', 'राहड़िक दालि' कहिऔक। तरकारी कथीक हैतैक?

मौ. – छप्पर पर कदुआ फरले है। बाड़ी मे से अडुआ उखाड़ लेब।

सरस्वती दाइ शुद्ध करैत बजलीह – 'साजमैनि', 'आडु'।

मौ. – हँ, ऊहे। हमरा के एतना जीभ ऐंठ कऽ बोले न अबैए। आब बथानो जाए के बखत हो गेल।

सरस्वती दाइ माथ पर हाथ धऽ कऽ झखय लगलीह – हाय-हाय! केहन भारी गमारक हाथ मे हम पड़ि गेलहुँ? एहि मूर्खमंडली मे हमर गुण के बूझत?

राति मे सरस्वती देवी अपना स्वामी कैं खूब गंजन कैलन्हि। मौजेलाल झा कैं निपट्ट गमार, वज्र बनिहार, प्रचंड भठियार, निठट्ठ महिसवार आदि नाना उपाधि सँ विभूषित करैत कहलथिन्ह – अहाँ कैं हमरा सँ विवाह करबाक कोन अधिकार छल? हमरा गामक हरहो-सुरहा सभ अहाँ सँ नीक बजैत अछि। अहाँ कैं संस्कृतिक लेशमात्र गन्ध नहि अछि। साहित्य ओ कला सँ कोनो सम्पर्क नहि। भोनू भाव न जानय, पेट

भरल सों काम। एको रत्ती लज्जा नहि होइत अछि? साहित्यसंगीत कलाविहीनः साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः। इत्यादि, इत्यादि।

क्रोध और ग्लानिक द्वारें सरस्वती दाइक नेत्र सँ झरझर अश्रुपात होमय लगलैन्ह।

जखन मौजेलाल झा कँ सभटा सुनल भऽ गेलैन्ह त पत्नी कँ आश्वासन दैत बजलाह – आय लोर चुऐला से कौन फैदा? हींया खाउ, पीउ, मौज करु। चार चार गो भैंस है। दही दूध घीउ खूब ठेल कऽ खाउ। एमरी छैनी बिकाएत तब निम्मन सारी महनार से लेलें आएब। अगर ऊख के घलती हो गेल तब गहनो बनवा देब। बोलू, कौन कौन चीजके खाहिश होइअऽ? बाजू, बिजौठ, हँसुली, कमरकस्स .....

सरस्वती दाइ अधिक नहि सुनि सकलीह। कहलथिन्ह – हाय हाय! कान मे वछी किऐक भोंकैत छी? हमरा एहि सभ बातक कष्ट नहि अछि।

मौजेलाल झा बजलाह – तब कौन बात के रंजिश हे? असलीयत मे देखू त कुच्छ बात न है। और अगरचे इहाँ जास्ती तकलीफ बुझाय त नैहरा खत भेज दिऔन जे कुछ रोज के वास्ते रोखसदी करा करके ले जैतन।

स. – अहाँ हमरा हृदयक भाव नहि बूझि सकैत छी।

मौ. – अगर ...

स. – फेर अगर! 'यदि' बजैत की होइत अछि?

मौ. – मगर ...

स. – मगर नहि, 'किन्तु'।

मौ. – अहाँ त हमर जुबाने पकड़ लइ छी, तब हम बोलू केब्बत कऽ? बिहान अछुतिया मे ...

स. – अछुतिया नहि, 'प्रातःकाल'।

मौ. – अच्छा भाइ, सेहे रहो। मगर बातो त सून लिउ। कहे के मतलब ई है जे ...

स. – 'कथाक तात्पर्य' कहू।

मौ. – बाप रे बाप! अहाँ के नैहरा मे एतना 'संस्कीरित' की पढ़ा देलक जे हमरा जान के आफत कैलक।

स. – हे भगवान! अहाँक जिह्वा कोन धातु सँ बनल अछि? संस्कृतक ओना संस्कार नहि करिऔक।

मौ. – अच्छा तब मोख्तसर मे बात ई है जे हमरा के कचहरी मे लाट दाखिल करे के है। बिहान मुजफ्फरपुर जाए के पड़त। अगर कोई चीज के जरूरत होय त बोलू जे लेले आएब।

स. – हमरा एक टा गीता चाही। और की कहू? यदि भेटि जाय त एकटा 'भलमानुसो' नेने आएब।

मौ. – गीत के किताब त जौन-जौन रंग के मिलत से हम लेले आएब। गजल, ठुमरी, कजरी, लावनी, बरहमासा। मगर भले आदमी अहाँ के वास्ते हम कहाँ-कहाँ खोजने भेल फीरब? और जौन बात कहू मगर ई बात – जे है से – हमरा के बरदाश्त न हो सकैयऽ।

स. – मियाँ बुझलन्हि पेयाउजु! 'भलमानुस' उपन्यासक नाम छैक। और गीता मे श्लोक छैक, गीत नहि। यदि गीते अनबाक हो त विद्यापतिक पदावली नेने आएब।

मौ. – की बोलली? बिद्यापद्दावली? हमरा के एतना नाँव इयांद रहनाइ मोशकिल है। एकठो पुर्जी मे लिख कऽ हमरा अधबाँही के जेबी मे रख दीउ। देखब, कैथी हरुफ मे लिखब।

मौजेलाल झा मुजफ्फरपुर गेलाह त ओतय मामिला मे ओझरा गेलाह। दू एक किता नालिस दायर करबाक रहैन्ह, एक मामिला मे पैरवी करबाक रहैन्ह। ताहि सभ मे पन्द्रह दिन लागि गेलैन्ह।

सरस्वती दाइ उपालम्भपूर्ण पत्र लिखि पठौलथिन्ह। सारांश ई जे – 'अहाँ कालिदासक अभिशापित यक्ष जकाँ प्रवासी बनि गेलहुँ। ओ त भला मेघ कँ दूत बना कऽ अपना बिरहिणी नायिकाक ओतय पठौलक। किन्तु अहाँ एक टा पत्रो पठाएब आवश्यक नहि बुझैत छी, प्रोषितपतिका नवोढ़ाक व्यथा अहाँ कँ अनुभव करक चाही। हम एकान्तवासिनी योगिनी जकाँ जीवन व्यतीत कय रहल छी। यदि ऐबा मे विलम्ब हो त कृपया दू अक्षर लिखियो कऽ पठाउ जे वियोगानल सँ दग्ध हृदय कँ शान्ति भेटय।' इत्यादि।

जखन पत्नीक अलंकृत भाषामय पत्र मौजेलाल झा कँ भेटलैन्ह त ओ घबरा गेलाह। किऐक त जहाँ सरस्वती दाइ काव्य रचना करैत छलीह तहाँ मौजेलाल झा केवल हुड्डा धरि पढ़ने छलाह। अतएव ओ दौड़ल कचहरी मे मुन्शीजी सँ राय-मोशविरा करय गेलाह। मुंशीजी कँ केवल कचहरीए उर्दू मे मोंछ पाकल रहैन्ह। प्रेमपत्र पढ़बा वा लिखबाक कहियो काज नहि पड़ल रहैन्ह। अतएव ओहो मुश्किल मे पड़ि गेलाह। परन्तु फेर त ओ मुन्शीएजी रहथि। मजमूनक अन्दाज लगा, जवाबक बाजाप्ता मोसबिदा तैयार कऽ देलथिन्ह जकर नकल नीचा देल जाइत अछि –

मनके मौजेलाल झा, वल्द कुंजीलाल झा मोतापा, साकिन मौजे भैसबाड़ा, थाना बरियारपुर, प्रगन्ना दिआरा की तरफ से मोसम्मात सरोसत्ती देवी को मुनासिब सलाम बंदगी पहुँचे। हाल गुजारिश यह है कि चंद जरूरियात की वजह से मनमुकीर वक्त मुकर्रिर पर हाजिर नहीं हो सका, जिसके लिये फिदवी को निहायत रंज वो अफसोस है।

मुंसिफ दोएम के इजलास मे तमस्सुक वाला मामला पेश है। तमादी वाला मुकदमा अदमपैरवी से खारिज हो गया और सदरआला साहब के यहाँ सानी तजवीज होने मे अभी देर है। इन सब मुतफरकाती कार्रवाइयों के लिये हम और एक हफ्ते

की मोहलत के लिये आपसे इस्तगासा करते हैं जो आपके कबूलो मंजूर करने से शुक्रगुजार होंगे। बमूजिब फिहरिस्त तीन अदद किताबें तीन रुपया बारह आना मे जिसका निस्फ एक रुपया चौदह आना होता है, आपके वास्ते खरीद हुई है, जिनकी रसीद आने पर पेश की जायगी। और मुहब्बत मे जुदाइ का सदमा होना कायदे की बात है। हमको भी आपके बगैर बहुत नुकसान पड़ रहा है जो इस तहरीर मे बयान नहीं हो सकता।

आपका शौहर
मौजेलाल झा बाकलम खास।

जखन ई पोस्टकार्ड सरस्वती दाइ कैं पहुँचलैन्ह त हुनका पुनः दोसर प्रेमपत्र लिखबाक साहस नहि भेलैन्ह।

मौजेलाल झा गाम ऐलाह त सरस्वती दाइ अभिरोष करैत कहलथिन्ह – स्त्री कैं ओहिना चिट्ठी लिखल जाइत छैक? अहाँ मे एको रत्ती रस नहि अछि। रस-ककरा कहैत छैक से बुझितो छिऐक?

मौ. – दुत्तोरी के भला? रस के मतलब कल्ला न बुझाएत? आम के रस, कटहर के रस, ऊख के रस .....

स. – बस, बस, रहऽ दियऽ। अहाँ सोझेसोझ मोटका अर्थ जनैत छी। लक्षणा व्यंजना सँ कोनो सम्पर्क नहि। व्यंग्यक आशय बुझैत छिऐक?

मौ. – आब अहूँ हमरा से दिल्लगी करे लगली। भला बेङ के न चीन्हत। लड़िकारी मे केतना बेङ डाबुस के मार देले होएब।

स. – हाय राम! कोना बुझाउ? अहाँ साहित्य पढू। आइ सँ अहाँ कैं विद्यापतिक पदावली पढ़ाओल करब।

राति मे जखन भोजनादि सँ निश्चिन्त भय दम्पति शयनागार मे ऐलाह त सरस्वती देवी पदावली खोलि कऽ बैसलीह। पद मे नखशिख-वर्णन छलैक।

भउँहक कथा पुछह जनु।
मदन जोड़ल काजर धनु।।

सरस्वती दाइ बुझाबय लगलथिन्ह – देखू, एहि मे सुन्दरीक भौंहक वर्णन छैक। दुनू भौंह केहन लगैत छैक त जेना कामदेव दूटा काजरक धनुष जोड़ि कऽ राखि देने होथि। अहा! की सुन्दर उत्प्रेक्षा छैक। कवि उपमा देबय मे हद कऽ देने छथि। मौजेलाल झा कैं कविक चमत्कार पर दृष्टि गेलैन्ह वा नहि से त दैब जानथि, किन्तु पत्नीक भौंह कैं ओ गौर सँ तकलन्हि। सरस्वती दाइ आगाँ बढ़लीह –

मुख मनोहर अधर रँगे।
फूललि मधुरी कमल सँगे।।

एहि मे सुन्दरीक मुखमण्डलक वर्णन छैक। मुखक शोभा कमल समान मनोहर। तकरा बीच मे ठोरक लाल रंग मधुरीक फूल जकाँ। कवि उत्प्रेक्षा करैत छथि

जे कमलक संग-संग जेना मधुरीक फूल फुलाएल हो। की? बुझलिऐक।

मौजेलाल झा अध्यापिकाक ठोर कैं गहकी नजरि सँ तजबीज करय लगलाह।

आगाँक पद और कठिनाह छलैन्ह –

पीन पयोधर दूबरि गता।
मेरु उपजल कनक लता।।

सरस्वती दाइ थकमकाय लगलीह। तावत मौजेलाल झा निर्विकार भाव सँ पूछि बैसलथिन्ह – पीन माने त बुझली जे पीनी तमाखू। मगर ई पयोधर कौना चीज के नाम है?

सरस्वती दाइ कठिन संकट मे पड़ि गेलीह। कहलथिन्ह – आब कोना कऽ अहाँ कैं बुझाउ? ई त साधारण शब्द छैक। देखू, पीन माने पुष्ट और 'पयोधर' मेघो कैं कहैत छैक, किन्तु एहिठाम से अर्थ नहि छैक।

मौ. – तब जौन अरथ होय से खुलासा समझा कर कहू। हमरा जादे फुरसत न हबे। एक ठो दस्तावेजो खोजकर अभी निकाले के है।

सरस्वती दाइ बजलीह – बड़ मुश्किल, कोना अहाँ कैं बुझाउ? अच्छा, पहिने उपमे बुझा दैत छी। देखू। गोर नारि दुब्बरि पातरि स्त्री कैं सोनक लता सँ उपमा देल गेल छैक। दुब्बरि अछि, तैं लता, चमकैत अछि, तैं सोन। तेहन लता मे दूटा फल उत्पन्न भेल छैक। से दुनू फल तेहन विशाल बूझि पड़ैत अछि जेना एक जोड़ पर्वत राखल हो। आब बुझिलिऐक?

मौ. – बाप रे बाप! अहाँ त बुझौअल बुझावे लगली। सोना के लत्ती मे पहाड़ कैसे कऽ फरतइ? ई अजगुत बात। कोहड़ा-कदुआ कहिती त भला पतिआइओ जयती। जौन ई बात लिखलक है से भारी झुट्ठा है।

स. – ई 'अलंकार' कहबैत छैक।

मौ. – अलंकार-फलंकार हम न जानी। जे असलियत बात होय से साफ-साफ खोलकर बतलाउ।

सरस्वती दाइ आँखि निहुरा कऽ अपना दिशि ताकय लगलीह। शिक्षार्थीओक ध्यान ओम्हरे आकृष्ट भेलैन्ह।

एकाएक मौजेलाल झा कैं पदक अर्थ लागि गेलैन्ह। बजलाह – ओहो। आब बुझली। ई बात एतना रोज से काहे न कहैत रहली?

सरस्वतीक छाती धड़कय लगलैन्ह जे ई गमार अपना मन मे की बुझलक से नहि जानि।

तावत मौजेलाल झा आगाँ बढ़लाह।

सरस्वती दाइ पाछाँ हटैत बजलीह – आब आगाँक पद बुझू।

मौजेलाल झा बजलाह – आगू के पद रहे दीउ। हम त मूरुख हती। जास्ती बात बनावे न अबैयऽ। काम से मतलब।

सरस्वती दाइ अपना कैं छोड़बैत चिचिया उठलीह – छोडू। हमरा किऐक धैने छी? मूर्ख, पशु, गमार!

मौजेलाल झा बजलाह – आब चाहे कुच्छो कहू। मगर बँच न सकैत हती। केतनो पढ़ल रहू, लेकिन हती त आखिर मेहरारुए। ताकत मे हमरा से न जीत सकैत हती। हम अहाँ के लेखे बुड़बक हती लेकिन एहि मौजे मे डेढ़ पाइ के मिलकीयत त हमरे है। एक बार जौन बात हमरा दिल मे पैठ गेल से फेन हट न सकैयऽ। अहाँ के नैहरा के गरभ (गर्व) है त हमरो के गरभ करे अबैयऽ।

'भकार' क एहन प्रयोग देखि सरस्वती दाइ सिहरि उठलीह। बजलीह – गरभ नहि, गर्व।

मौजेलाल झा बजलाह – 'गरभ' 'गरब' सब एके चीज है। आब हमरा के जास्ती न सिखाउ।

सरस्वती दाइक सभटा चमत्कार व्यर्थ गेलैन्ह। ओ आब 'गर्विणी' नहि रहि सकलीह।

ओही दिन मौजेलाल झाक साहित्य-शिक्षा समाप्त भऽ गेलैन्ह।



बीमाक एजेंट

संसार मे दू वस्तु सँ बचबाक उपाय नहि। एक यमदूत सँ, दोसर बीमा कम्पनीक एजेंट सँ! यमदूत त जीवन मे एके बेर दर्शन दैत छथिन्ह, किन्तु बीमाक भूत जहाँ एक बेर प्रवेश कैलन्हि तहाँ जोंक जकाँ सटि जाइत छथि। हुनका जतेक झाड़क कोशिश करु ततेक और भीतर पैसल जैताह।

एक बेर हमरो पर एक भूत लागि गेलाह – ध्रुवनन्दन प्रसाद। सतुआ सम्मार बान्हि कऽ हमरा पाछाँ लागि गेलाह। नित्य नियम संध्याकाल पहुँचि जाथि, बैसथि, गप्प करथि और अन्त मे दैह प्रस्ताव जे 'जिन्दगी क बीमा करा लियऽ। एहि मे फायदे-फायदा अछि। कम-सँ-कम पाँचो हजार क 'पालिसी' लऽ लियऽ।'

हम लाख कहलिऐन्ह जे 'औ महाराज! हमरा एखन बीमा करैबाक नहि अछि।' परन्तु के सुनैत अछि! ओ जवाब पैलो उत्तर बैसले रहि जाथि। बीच-बीच मे कतेको लोक आबय, कतेको लोक जाय। किन्तु बाबू ध्रुवनन्दन प्रसाद ध्रुव जकाँ अपना स्थान पर अचल। हमरा खाय लेल बजाबऽ आबय् तौखन उठबाक नाम नहि। भोजनोत्तर पुनः गप्प लाधि देथि। भद्रलोक कें कोना कहल जाय जे आब कृपा करु। अगत्या हुनका खातिर दू घंटा और बैसऽ पड़य। जखन ११ बजेक बाद हमरा औंघाएल सन क्रम देखथि त अपन कागज-पत्र समेटैत बाजथि – बेश, एखन चलै छी। कालि सबेरे पुनः सेवा मे हाजिर भऽ जायब।

नित्यप्रति बैह क्रम चलय लागल। हम महा संकट मे पड़ि गेलहुँ। कोनो कार्य करब से कठिन। हुनका सँ जान छोड़ैबाक बहुत चेष्टा कैलहुँ, किन्तु सभ व्यर्थ।

अन्त मे एक उपाय कैलहुँ। हुनका ऐबाक बेर सँ पहिनहि कोठरी मे ताला बंद कऽ हरिकीर्त्तन मे चल गेलहुँ। जखन डेढ़ पहर राति बीति गेलैक और हमरा विश्वास भऽ गेल जे बाबू ध्रुवनन्दन प्रसाद आबि कऽ फिरि गेल हैताह तखन डेरा ऐलहुँ। परन्तु फाटक लग अबितहि देखैत छी जे ओ खंभा जकाँ ठाढ़ भेल छथि। बजलाह – हम दू घंटा सँ एहिठाम ठाढ़ भेल बाट ताकि रहल छी।

हम चाहलहुँ जे ठाढ़े-ठाढ़ गप्प कऽ कऽ हुनका विदा कऽ दी। किन्तु ओ त

सहज जीव छलाह नहि। हमरा पाछाँ लागल भीतर चल ऐलाह और ओहि राति १२ बजे धरि बैसल रहलाह।

ओकरा बाद जेना-जेना हम अपन दिनचर्या बदलैत गेलहुँ तहिना ओहो अपना गतिविधि मे परिवर्तन करैत गेलाह। हम डारि-डारि त ओ पात-पात! खाइत-पिबैत, सुतैत-उठैत जखन देखी, बाबू ध्रुवनन्दन प्रसाद आबि कऽ माथ पर सवार!

आब हम हुनका सँ जान छोड़ैबाक हेतु एक कौशल रचलहुँ। कालेज सँ अबितहि भीतर सँ कोठरी बंद कऽ देलहुँ और बाहर सँ ताला बंद करबा देलिऐक। नौकर कैं सिखा देलिऐक – देख, जौ ओ बाबू अबथुन्ह त ई नहि कहिअहुन जे हम भीतर मे छी। ताला बंद देखि कऽ अपने फिरि जैथुन्ह तखन खिड़कीक बाटें हमरा कहि दिहें।

हम बन्द घर मे अपन लिखा-पढ़ीक काज मे लगलहुँ। थोड़बे कालक बाद बाबू ध्रुवनन्दन प्रसादक आहटि बूझि पड़ल। ओ ऐलाह और ताला बन्द देखि थमकि गेलाह। परन्तु ओ साधारण व्यक्ति त छलाह नहि जे सगले फिरि जैतथि। ओ पहिने ताला कैं खींचि कऽ देखलथिन्ह। नहि फुजलैन्ह। तखन किछु काल बरामदा पर ठाढ़ रहि, अछता-पछता कय बिदा भेलाह। हमरा जान-मे-जान आँएल।

जखन बूझि पड़ल जे ओ चल गेलाह तखन फर्क दऽ निसास छोड़लहुँ। तावत पाछाँ मे खिड़कीक झिलमिली उठल। हम बिनु देखनहि पुछलिऐक – की रौ ठगना! ओ गेलथुन्ह?

परन्तु उत्तर सुनैत हृत्कम्प भऽ गेल। ठगनाक स्थान मे स्वयं बाबू ध्रुवनन्दन प्रसाद ठाढ़ छलाह! बजलाह – की! लिखा-पढ़ी भऽ रहल छैक? हमरा तैखन सन्देह भेल जे भितरे मे त नहि छथि। तैं पछुआड़ सँ आबि कऽ देखल। बाहर ताला किऐक बंद छैक?

हम ठगना पर अपन क्रोध उतारैत कहलिऐन्ह – बेबकूफ धोखा सँ बंद कऽ कऽ कतहु चल-गेल अछि। आब आओत तखन ने?

एजेंट महोदय बजलाह – कोनो चिन्ता नहि। हमरा कुंजीक झब्बा मे 'मास्टर की' अछि। लगा कऽ देखैत छिऐक।

दू मिनटक भीतर एजेंट महोदय केवाड़ फोलि भीतर प्रविष्ट भऽ गेलाह।

ईहो चालाकी व्यर्थ गेल। आब कोन युक्ति रचल जाओ? दोसरा दिन रवि रहैक। हम चछनी काछि कऽ पड़ि रहलहुँ। ठगना कैं सिखा देलिऐक – देख, अबथुन्ह त कहि दिअहुन जे मालिक दुखित छथि।

परन्तु ओहि दिन हमरा और सजाय भऽ गेल। बाबू ध्रुवनन्दन प्रसाद अपना कंपनीक डाक्टर कैं बजा कऽ लऽ ऐलाह। और भरि दिन हमरा लग मे बैसि लेक्चर

दैत रहलाह जे जिंदगीक कोनो ठेकान नहि। जल्दी बीमा करा लेयाक चाही।

हम मने-मन कहलहुँ – औ महाराज! पहिने अहाँ सँ जिंदगी बाँचि जाय तखन ने एकर बीमा कराबी!

दू-चारि दिनक बाद पूजाक छुट्टी मे कालेज बन्द भऽ गेल। हम एजेंट महोदय सँ जान छोड़बैत हजारीबागक टिकट कटौलहुँ।

हजारीबाग पहुँचि कऽ एक मकान किराया लेल और शान्तिपूर्वक रहय लगलहुँ। एजेंट महोदयक कृपा सँ शरीरक जे शोणित सुखा गेल छल से क्रमशः भरय लागि गेल।

एक दिन झीलक कात पुल पर बैसल कमलक शोभा देखैत रही कि एक अप-टु-डेट नवयुवती अबैत दृष्टिगोचर भेलीह। पातर छरहर शरीर मे शान्तिपुरी साड़ीक ऊपर लाल कोट। सौम्य मूर्ति। पृथ्वी पर अन्दाज सँ तौलि-तौलि कऽ चरण दैत। ओ हमरा दिशि बिनु तकनहि, शालीनतापूर्वक अपन बाट धैने, लवेंडरक खुशबू छोड़ैत, आगाँ बढ़ि गेलीह।

दोसरा दिन हम पुस्तकालय मे बैसल रही कि वैह रमणी आबि पहुँचलीह। एहन संयोग जे हमरे लिखल एक पुस्तक ओ माङि बैसलथिन्ह। हमरा मुँह पर एक आनन्दमिश्रित कुतूहलक भाव आबि गेल जे तीक्ष्णबुद्धि रमणी कैं लक्षित भऽ गेलैन्ह। पुस्तक उनटबैत-पनटबैत एक बेर हमरा दिस तीव्र दृष्टि सँ तकलन्हि।

'लाइब्रेरियन' हमर परिचय दैत कहलथिन्ह – वैह पुस्तकक लेखक थिकाह।

देवीजी दुनू हाथ जोड़ि कय अभिवादन कैलन्हि और अपना स्मृति पर बल दैत बजलीह – अहाँ कैं प्रायः हम कतहु देखने छी।

हम – काल्हि सन्ध्याकाल झीलक किनार मे बैसल रही।

ओ – हँ, क्षमा करब। हम ओहि समय चीन्हल नहि। एहि ठाम कतेक दिन रहब?

हम – भरि छुट्टी एतहि रहबाक विचार अछि।

ओ – डेरा कतय अछि?

हम अपन पता कहलिऐन्हि।

रमणी बजलीह – हम एकटा कष्ट देबक चाहैत छी। हमरा किछु पढ़बाक अछि। यदि डेरा पर आबी त किछु समय दऽ सकैत छी?

हम जा किछु सोची-सोची ता मुँह सँ बहरा गेल – 'अवश्य'। रमणी धन्यवाद दैत बिदा भेलीह।

दोसर दिन हम अपन बरामदा पर बैसल अखबार पढ़ैत रही कि वैह

युवती शिष्याक मुँह सँ एहन दोषारोपण सुनि हम स्तम्भित रहि गेलहुँ।

ओ बजलीह – काननबाला अहाँ कैं केहन लगैत छथि?

हम उत्तर देलिऐन्ह – हुनका कंठ मे अपूर्व माधुर्य छैन्ह। जेना कल्पनाक स्वर मे।

ई सुनि मंजुला देवी कैं ईर्ष्याक भाव मन मे आबि गेलैन्ह जे हमरा प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर भेल।

तावत 'कल्पना' ओ पुरुषार्थवती दुहू संगे-संग पहुँचि गेलीह।

मंजुला हँसैत-हँसैत स्वागत कैलथिन्ह – अबैत जाउ, काननबाला और दुर्गा खोटे! अहाँ लोकनि कैं बैड 'टाइटिल' भेटल अछि।

कल्पना देवी प्रायः हमरा लोकनिक वार्त्तालाप बाहर सँ सुनैत छलीह। विहुँसैत उत्तर देलथिन्ह – हँ, परन्तु देविकारानी बनबाक सौभाग्य त अहीं कैं प्राप्त अछि।

मंजुलाक आभापूर्ण गाल पर लज्जाक लालिमा दौड़ि गेलैन्ह।

ओहि राति सुन्दरी सभक अनुरोध सँ हमरो सिनेमा जाय पड़ल।

एवं प्रकार किछुए दिन मे मंजुला बहुत समीप आबि गेलीह। एक दिन बजलीह – अहाँक 'वाइफ' त एतय छथि नहि। खैवा-पिउबा मे बहुत तकलीफ होइत हैत।

• हम कहलिऐन्ह – नहि। ठगना अछि, से पूरी बना दैत अछि। भात खैबाक मन होइत अछि त अपने बना लैत छी।

मंजुला बजलीह – ओह! हमरा अछैत अहाँ कष्ट कऽ रहल छी! एखन की बनबैत अछि?

हम कहलिऐन्ह – माछ तरि रहल अछि।

ओ बजलीह – माछक हाल ओ की जानय गेल? हम अपने जा रहल छी।

ई कहि ओ चट्टी पर चटर-चटर करैत भानसघर मे पहुँचि गेलीह। ओहिठाम ललका कोट खुट्टी पर टाङि, स्टूल पर बैसि गेलीह।

हमरा मन मे एक अपूर्व भाव उदित होमय लागल।

थोड़ेक काल मे मंजुला एक 'प्लेट' मे तरल माछ ओ भात नेने ऐलीह। हम कहलिऐन्ह – ओह! अहाँ आइ बहुत कष्ट कैलहुँ।

ओ बजलीह – कष्ट कोन? ई त हमर काजे अछि। आब सँ हम सभ दिन अपने हाथे बना कऽ खोआएल करब। हँ, तखन होउ ने।

हम कहलिऐन्ह – ई कोना भऽ सकैत अछि? अहूँ खाउ।

ओ लजाइत बजलीह –बेश, हमहूँ पाछाँ कऽ खायब। पहिने अहाँ त खा लियऽ।

अन्त मे विशेष आग्रह कैला उत्तर ओहो हमरा संग बैसि गेलीह। ठगना मुँह बनबैत ओहिठाम सँ चल गेल।

छुट्टी पुरबा मे दुइए दिन बाँकी रहि गेल। मंजुला कैं बहुत किछु पढ़बाक शेष रहि गेलैन्ह। आब कोना पूर्ति हैतैन्ह? हम चिन्ता मे पड़ि गेलहुँ। सोचैत-सोचैत माथ भारी भऽ गेल।

राति मे ओछाओन पर पड़ल एही भावना मे मग्न रही कि मंजुला आबि पहुँचलीह। हमरा खाट लग कुर्सी खींचि कऽ बैसि गेलीह। हमर हाथ अपना हाथ मे लय बजलीह – ज्वर त नहि अछि। माथ मे दर्द होइत अछि की?

ओ हमर कपार टोएलन्हि और फुर्र दऽ उठलीह। दस मिनट मे कतहुँ सँ 'यू-डी-कोलोन' नेने ऐलीह। लगबैत बजलीह – की, आब किछु 'रिलीफ' (शान्ति) बूझि पड़ैत अछि?

हम मुग्ध होइत कहलिऐन्ह – मंजुले! अहाँ धन्य छी। आदर्श देवी! अहाँक उपकार हम आजन्म नहि बिसरब। एहि ऋण सँ हम कोना उऋण भऽ सकैत छी?

मंजुला बजलीह – हम कि पुरस्कार पाबक हेतु अहाँक सेवा कैलहुँ अछि? ई त हमर कर्त्तव्ये थिक। किन्तु यदि अहाँ हमरा पर प्रसन्ने छी त एकटा सहायता कऽ सकैत छी।

ई कहि मंजुला देवी एकटा 'फार्म' बाहर कैलन्हि। बजलीह – हम एक 'इन्स्योरेंस' (बीमा) कम्पनीक 'एजेंसी' नेने छी। यदि अहाँ एकटा 'पालिसी' लऽ ली त हमर किछु उपकार भऽ जाय।

हम मन मे कहलहुँ – हे भगवान्! धन्य अहाँक माया। एहू ठाम बीमाक चक्र लगले आएल!

हम यंत्रवत फार्म कैं भरय लगलहुँ।

सुन्दरीक प्रस्ताव कोना अस्वीकार कैल जाय! ओ हमरा हाथ मे फार्म धरा देलन्हि और कोटक भीतर सँ 'फाउंटेनपेन' बहार कय बजलीह – एकरा भरू त।

ओ सभटा पढ़ि कऽ बजलीह – और सभ त ठीक अछि। केवल ५०००) जे अहाँ लिखने छी से ठीक नहि। एहि मे हम एक अंक अपना दिस सँ जोड़ि दैत छी। इहो एकटा स्मारके रहत।

ई कहि ओ ५ सँ पूर्व १ जोड़ि, १५०००) कऽ देलथिन्ह।

हम मंजुलाक माथ मे सिंदूरक सूक्ष्म बिंदु देखि पुछलिऐन्ह – अहाँक स्वामी कतय छथि? की करैत छथि?

मंजुला बजलीह – हुनका कोनो सर्विस त नहि छैन्ह। 'बिजनेस' करैत छथि। किन्तु हम हुनका पर 'बर्डेन' (भार) भऽ कऽ नहि रहय चाहैत छिऐन्ह। बल्कि हमहीं अपना 'अर्निङ्ग' (कमाइ) सँ हुनका 'हेल्प' (सहायता) कऽ दैत छिऐन्ह। एहि 'पालिसी' मे हमरा ६००) कमीशन भेटत। ताहि सँ हुनकर बहुत काज चलि जैतैन्ह।

ई कहि मंजुला देवी यत्नपूर्वक अपन सभटा कागत-पत्र समेटि, अटैची केस मे धैलन्हि और कृतज्ञता सूचक स्वर मे बजलीह – एहि कृपाक हेतु हम हार्दिक धन्यवाद दैत छी।

हम जा किछु उत्तर दिऐन्ह-दिऐन्ह ता बाहर सँ कर्कश आवाज आएल – प्रोफेसर साहब!

स्वर चिन्हैत देरी नहि भेल। ई ध्रुवनन्दन प्रसाद! ई आखिर एहुठाम धरि खेहारने ऐलाह! जी अकच्छ भऽ गेल। दालि भात मे मूसरचन्द! ई एखन कहाँ सँ आबि गेलाह!

हम सोहछि कऽ जवाब देलिऐन्ह – हमरा एखन फुरसति नहि अछि। कालिह दिन मे आएब। एखन एकटा भद्र महिला एहिठाम छथि।

बाबू ध्रुवनन्दन प्रसाद भीतर अबैत बजलाह – प्रोफेसर साहब! अपने प्रायः धोखा मे छी। ई हमरे 'वाइफ' थिकीह।

मंजुला देवी शरारत भरल मुसकान सँ हमरा दिशि ताकि बजलीह – ई छथि हमर 'हसबैंड' (स्वामी) मिस्टर डी. एन. प्रसाद। बेश, त आब एखन आज्ञा भेटी। नमस्ते।

□

अंगरेजिया बाबू

मधुकान्त बाबू जखन कालेज मे नाम लिखौलन्हि त शौक भेलैन्ह जे सूट बनबायी। जखन सूट बनबौलन्हि त शौक भेलैन्ह जे ई पहिरि कऽ सासुर जाइ।

अतएव फगुआ सँ चारि दिन पहिने जखन लाल रंगक फूलदार लिफाफ डाकपिउन हाथ मे देलकैन्ह तैखन ओ बुझलन्हि जे आब सूट पर इस्त्री चढ़ाबक अवसर आबि गेल। ओ कोठरी बन्द कय, इष्टदेवताक स्मरण करैत लिफाफ फोललन्हि और उछलैत हृदय सँ पढ़य लगलाह। रस भरल दोहा-कवित्त मे सानल जे तत्त्व बहराएल से ई जे एहि फगुआ मे अवश्य आउ। नइुआरोयला आबय लेल छथि। यदि अहाँ नहि आएब त रंग मे भंग भऽ जाएत।

मधुकान्त बाबू ओहि पत्रक कइएक आवृत्ति पाठ कय गेलाह। तखन 'सुपरेंटेंडेंट'क नाम सँ एक दरखास्त लिखलन्हि जे हमर माय मरणासन्न छथि, अतएव सात दिन होस्टल सँ गैरहाजिर रहय पड़त।

तदनन्तर म्लानय सन मुँह बना शशिकान्तक कोठरी मे गेलाह। कहलथिन्ह – हौ संगी! गाम पर माय बहुत जोर दुःखित छथि। हालिक्स, ग्लूकोज, बेदाना, ई सभ लऽ जैबाक अछि। बीस टाका पैंच देह।

रुपया लय मधुकान्त बाबू सोझे 'न्यू मार्केट' गेलाह। ओतय स्नो, क्रीम, पोमेड आदि जतेक जे उपकरण आवश्यक बुझि पड़लैन्ह से लऽ ऐलाह। फगुआक हेतु अबीर, गुलाबजल, कुमकुम, ओ पिचकारिओ नहि बिसरलाह।

तखन मन पड़लैन्ह जे कपड़ा त बाँकिए रहि गेल। दौड़ल 'फैंसी स्टोर' गेलाह। ओतय साड़ी और 'ब्रेसरी' (लघुकंचुकी) पसन्द कैलन्हि। दाम भेलैन्ह पैंतालिस टाका। आब ई टाका कतय सँ आबय?

मधुकान्त बाबू 'होस्टल' आबि कऽ जीबछलाल दासक कोठरी मे गेलाह। ओतय एकान्त मे गम्भीर मुद्रा बना कहलथिन्ह – दासजी, एकटा बड्ड जरूरी काज सँ आएल छी।

दासजी 'मेस'क मैनेजर छलाह। कोन 'बोर्डर' सँ कतेक रुपया वसूल भेल छैक और ककरा जिम्मा कतेक बाँकी छैक तकर हिसाब करय मे लागल छलाह। कहलथिन्ह – कोन काज अछि? अहूँक गाम पर किछु बकाया अछि।

मधुकान्त बाबू कहलथिन्ह – हमरा गाम सँ एक चिट्ठी आएल अछि। कचहरी

मे छेआलीस रुपया पन्द्रह आना दाखिल करब जरूरी छैक। रुपया पठौने छथि। से कालि पहुँचत। तावत मेसक रुपया मे सँ दऽ कऽ हमर काज चला दियऽ। कालि मनिआर्डर आओत त पछिला बकाया समेत जोड़ि कऽ लऽ लेब।

दासजी किछु चिन्तित होइत बजलाह – मेस मे त 'फीस्ट' (भोज) होबय लेल छैक। खैर, अहाँ कैं तेहने जरूरी अछि त रुपया लऽ जाउ, लेकिन कालि 'मेस'क 'एकाउन्ट' (हिसाब) बेबाक कऽ देबय पड़त।

मधुकान्त बाबू रुपया लय, अपना 'फ्रेंचकट' पर ताव फेरैत, सोझे 'फैंसी स्टोर'क बाट धैलन्हि और पसन्द कैल वस्तु लऽ ऐलाह।

जखन सभ वस्तु सूटकेस मे तहिया कऽ राखय लगलाह त मन मे ऐलैन्ह – ई सासुर वला 'सूटकेस' नेने जाएब से ठीक नहि हैत। नर्मदेश्वर कैं 'लेदर' वला 'सूटकेस' छैक, सैह लऽ आबी।

मधुकान्त बाबू चमड़ाक सूटकेस माङि कऽ लऽ ऐलाह। किन्तु ओहि मे एक बातक गड़बड़ भऽ गेलैन्ह। ऊपर मे पुष्ट अक्षर सँ लिखल रहैक एन. झा। मधुकान्त बाबू अपना मन मे समाधान कैलन्हि – एम और एन मे कनेके भेद होइ छैक। केओ पूछत त कहि देबैक जे एम केर अन्तिम रेखा मेटा गेने एन जकाँ बूझि पड़ैत अछि।

तदुत्तर अपन रिस्टवाच पर ध्यान गेलैन्ह। ईहो त सासुरेक देल थीक। तखन एकरो किऐक ने बदलि लेल जाए? सभ सँ बढ़िया 'डिजाइन'क घड़ी सुरेश कैं छैक। दू-चारि दिनक हेतु कि अदला-बदली नहि करत?

मधुकान्त बाबूक ईहो अभीष्ट सिद्ध भऽ गेलैन्ह।

तखन एकटा और सिहन्ता भेलैन्ह। यदि ककरो सँ ग्रामोफोन भेटि जाइत त सासुर नेने जैतहुँ। हाय-हाय! यदि फगुआक अवसर पर ग्रामोफोन नहि लऽ गेलहुँ त किछु नहि।

मधुकान्त बाबू दौड़ल वृन्दावन बिहारीक कोठरी मे गेलाह। कहलथिन्ह – हमरा गाम पर कालि भातिजक उपनयन अछि। दू दिनक हेतु अपन ग्रामोफोन दियऽ। हम खूब हिफाजत सँ नेने आएब।

वृन्दावन कहलथिन्ह – लऽ जाउ। किन्तु अपने 'चार्ज' मे राखब। रेकार्ड सभ जे पसन्द हो से छाँटि लिय।

अन्हरा चाहय दुनू आँखि। मधुकान्त बाबू चुनि-चुनि कऽ एक सँ एक लहरदार रेकार्ड बहार कऽ लेलन्हि।

आब मधुकान्त बाबूक ठाट पूर्ण भऽ गेलैन्ह। प्रसन्न भय सोचय लगलाह – 'एहि ग्रामोफोन कैं चारू कात सँ घेरि कऽ सासुरक रसिका स्त्रीगण बैसइ जैतीह युवती जेठसारि, सरस-सरहोजि, विनोदिनी विधिकरी। सभ त हमरे मे लपटायल रहतीह। तखन नडुआरवला लग के बैसतैन्ह?

'हँ, और की सभ लऽ चली जे सासुर मे रंग जमि जाय! ओतय हा

नहियावक हेतु एकटा साबुन और मुँह धोवक लेल ब्रश लऽ चलक चाही। जखन खवासिन दतमनि लऽ कऽ आओति त हम डाँटि कऽ कहबैक – यू सिली गर्ल (गमार लड़की)! ब्रूश लाओ।

'हँ, संदेश मे की नेने जाइ? हम त नडुआरवला जकाँ देहाती छी नहि जे एक छिट्टा साँच-पिड़ुकिया नेने जैबैन्ह, और दही-केराक भार! ओ त सभक लेल लालपीयर नुआ-लहठी नेने जैथिन्ह। नवहथ वालीक खातिर चिलकत्ती साड़ी। छिः! केहन-केहन देहाती लोक दुनियाँ मे होइत अछि? एहि ठाम सँ तेहन-तेहन अंग्रेजी मिठाइ नेने चली जे ओहिठाम केओ देखनहुँ नहि होए। 'जैम', 'जैली', 'मार्मलेट', 'चाक्लेट' .....।

'और एहिठाम छुरी-काँटा सँ पावरोटी खाइ छी से ओतुका लोक कोना बुझत? एकटा नेने चली। विधिकरी पुछतीह – ओझा, ई की थिकैक? तखन कहबैन्ह – ई 'लोफ' कहबैत छैक। एहि मे मक्खन मिला कऽ साहेब सब 'छोटा हाजिरी' करैत अछि। एना छुरी सँ काटि कऽ एना काँटा मे देल जाइक छैक। ई देखि चकित विधिकरीक नेत्र और गाल कोना चमकि उठतैन्ह?'

एहि तरहक आनन्दमय कल्पना करैत मधुकान्त बाबू नाना प्रकारक वस्तु लऽ ऐलाह।

राति मे कोठरी बन्द कय सभ वस्तु पसारलन्हि। रंग-बिरंगक शीशी और डिब्बा सँ घर चमकि उठलैन्ह। मनोहर खुशबू सँ मन मस्त भऽ गेलैन्ह। ओ भिन्न-भिन्न आकार-प्रकारक कंचुकी सभ हाथ मे लय उनटा-पनटा कऽ देखय लगलाह। गुलाबी, अंगूरी, नारंगी, बैगनी! कोनो साँपक केंचुआ जकाँ पातर, झलझल करैत! कोनो केराक बीर जकाँ कोमल, छलछल करैत! प्रत्येक सपरीक खप्पा जकाँ दू-दू ठाम अलगल!

मधुकान्त बाबूक कल्पना मे रस आबि गेलैन्ह। नवयौवना 'चंमेली'। पूर्णयौवना 'रेशमी'। पुष्टयौवना 'अनारकली'। उत्तंगयौवना 'मालदहवाली'। सभक चित्र आँखि मे नाचि उठलैन्ह।

एहि मे कोन किनका अटतैन्ह? मधुकान्त बाबू कैं अँटकर लगैबा मे अपूर्व माधुर्य भेटय लगलैन्ह। ओ एहि रस मे निमग्न छलाह कि बाहर केवाड़ पर ठक-ठक शब्द भेलैन्ह। ओ झटपट चारू 'ब्रेसरी'क ऊपर 'चैम्बर्स डिक्शनरी' राखि केवाड़ फोललन्हि।

सुपरेंटेंडेंट पुछलथिन्ह – योर मदर इस सिरियसली इल? ह्वाट इज शी सफरिंग फ्रॉम? (अहाँक माय बेशी दुखित छथि? की होइत छैन्ह?)

मधु. – फ्रॉम एपेन्डिसाइटिस सर (हुनका अँतड़ीक भीतर घाव भऽ गेल छैन्ह)।

सुप. – देन यू आर लीविंग बाइ द मॉर्निंङ ट्रेन? (तखन अहाँ भिनसरुका गाड़ी सँ जाय चाहैत छी)?

मधु. – यस सर (जी हाँ)।

सुपरिंटेंडेंटक गेला उत्तर मधुकान्त बाबू पुनः केवाड़ बंद कय यत्नपूर्वक सभ वस्तु तकिया-तकिया कऽ सूटकेस मे सॉठय लगलाह। ओहि आगाँ भूखो-पियास बिसरि गेलैन्ह। उल्लासक मारे ओहि राति दू कौर सँ बेशी नहि खा भेलैन्ह। सभ किछु सम्तूल भेला पर आधा रातिकऽ ओछाओन पर गेलाह। परन्तु निंद किऐक पड़तैन्ह? यदि ओहि राति निंदे पड़ि जइतैन्ह त ओतेक रासे सिनेमाक फिल्म किऐक देखलन्हि?

ओ कवित्वमय कल्पनाक तरंग मे प्रवाहित होमय लगलाह –

'अर्द्धविकसित बेलीक कली सन कोमल पत्नी! चन्द्रकलाक फूल सन मधुर जेठसारि। प्रस्फुटित गुलाब सन प्रफुल्ल सरहौजि। शतदल कमल समान विकसित विधिकरी। जुआएल सूर्यमुखीक फूल सन दलगरि मालदहवाली। सासुर की थीक? एक मनोहर उपवन। एक विशाल कमलदह। जाहि मे रंगबिरंगक कमल फुलाएल रहैत अछि। कोनो छोट, कोनो पैघ। जे जी मे आबय से तोड़ि लियऽ। अथवा सूँघि कऽ छोड़ि दियऽ।'

तावत 'सिनेमा हाउस'क गीत कान मे पड़लैन्ह। मधुकान्त बाबूक कल्पना मे रंगीन पाँखि लागि गेलैन्ह।

'हमहूँ ओतय पहुँचि कय एहिना ग्रामोफोन बजाएब। चारूकात सँ चंचला तरुणी सभ घेरि कय बैसइ जैतीह। सभ यौवनक ज्योति सँ जगमग करैत। केओ कोमल आङुर सँ सुइ बकार करतीह। केओ चूड़ी खनखनबैत चाभी घुमौतीह। केओ अपना आँचर सँ रेकार्ड पोछि कऽ हमरा हाथ मे देने जैतीह। और हम अंग्रेजी गाना बजाबय लागब। युवतीगण कहतीह – हमरा लोकनि त किछु बुझये नहि करैत छिऐक। देशी गीत चढ़ावियौक। तखन हम शान सँ कहबैन्ह जे हमरा सभ हिन्दुस्तानी गाना नहि पसन्द करैत छी। 'बॉल डान्स' (मेमक नाच) मे 'पियानो' कोना बजैत छैक से सुनू। चित्र-विचित्रक स्वर-ताल सुनि युवतीगण मे विनोदक बाढ़ि आबि जैतैन्ह। कतेक हास-परिहास चलत!

'जखन रंग-रभस होइत-होइत बहुत राति बीति जैतैक त नयहथवाली दुरुखा सँ किछु फराके ठाढ़ि भय बेटी सभ कैं कहतीह – ऐं गे! तों सभ भरि राति रभसैते रहबैं कि ओझा कैं खोऐबो करबहुन? खाली तोरा सभ कैं देखले सँ त पेट नहि भरतैन्ह।

'विधिकरी दाइ अपन गोर गुदगर बाँहि उघारि, शरबती चूड़ी कैं कनेक ऊपर खसका, चम्पकवर्ण हाथ सँ ठाम करय बैसतीह। तखन हम कहबैन्ह – एकर कोन काज? हमरा लोकनि त कुर्सी-टेबुल पर बैसि कय खायवला छी। एही ठाम पलंग लग 'स्टूल' धऽ दियौक।

'रसमयी अनारकली शरबत लऽ कऽ पहुँचतीह। हम कहबैन्ह – पहिने एकरा और बेशी मधुर बना दिऔक तखन हम पिउब। ओ कहतीह – से कोना? तखन हम शीशाक गिलास हुनका अधर मे लगा देबैन्ह। ओ चकित हरिणी जकाँ भयभीत भऽ

कहतीह – छोड़ि दियऽ। लोक देखत त की कहत? हम कहबैन्ह – चोरिएक रसपान मे त बेशी आनन्द छैक। अहा! ओहि समय कतेक रस भेटत!

'बिजलीक बल्ब जकाँ चमकैत रेशमी दाइ तश्तरी मे मालपुआ लऽ कऽ औतीह। मधुमकरन्दशालिनी मालदहवाली बाटी मे मलाइ नेने पहुँचतीह। हम कनेक मालपुआ खोंटि कऽ कहबैन्ह जे आब भूख नहि अछि। तखन रेशमी दाइ छमछम करैत कहतीह – वाह रे वाह! से कोना हैत? एना लजाइ छी किऐक?

'ओ जबर्दस्ती हमर हाथ धऽ मालपुआ पर लय जैतीह। हम एक रत्ती छुबि कय पुनः हाथ घारि लेबैन्ह। तखन दोलायमान मधुकलश सँ तरंगायित अंचल कैं सम्हारैत, माछदहवाली आगाँ बढ़तीह। रस सँ छलकैत छालीक प्याला आगाँ करैत कहतीह – वाह! एखन मलाइ त बाँकिए अछि।

'ई कहि ओ छलछल कऽ भरलो प्याला छाल्ही मालपुआ पर उझीलि देतीह और रसमलाइ सानि-सानि बरजोरी हमरा खोआबय लगतीह। अहा! माधुर्यक लहरि आबि जाएत! रस सँ उजबुज भऽ जाएब।'

मधुकान्त बाबू उत्तेजित भऽ फगुआक रंगीन दृश्य देखय लगलाह – 'जखन चंचला युवतीगण फगुआ खेलाय औतीह त रंग सँ नहा देबैन्ह। सम्पूर्ण रेशमी कैं फोहारासँ शराबोर कय देबैन्ह। तारुण्य सँ अरुणायित अनार कैं कुमकुमक वर्षा सँ लाल कऽ देबैन्ह। मत्त हस्तिनी जकाँ गजकुंभक भार सँ थलथल करैत मालदहवाली आगाँ औतीह तनिका तिकाय पिचकारी छोड़बैन्ह। तखन कतेक रसक स्रोत फूटि पड़त? थइ-थइ भऽ जाएत।'

मधुकान्त बाबू आँखि मूनि कऽ ओहि रसक तरंग मे ऊबडूब होबय लगलाह।

नाना प्रकारक रंगीन चित्र मन मे आबय लगलैन्ह। कुल चारि राति रहबाक अछि। एहि मे सभ किछु भऽ जैबाक चाही। कोन वस्तुक उपयोग कोन ठाम, कोन समय मे करक चाही, यैह प्लैन (कार्यक्रम) बनबैत राति बीति गेलैन्ह।

तखन मधुकान्त बाबू मुँह-हाथ धो 'शेव' कैलन्हि (दाढ़ी बनौलन्हि) और 'सूट' पहिरक हेतु ऐनाक सामने ठाढ़ भेलाह। 'हैट' लगा कऽ देखलन्हि।

'जखन ई टोप सासुर पहुँचत त धियापुता देखितहि पड़ाएत। वृद्ध स्त्रीगण विस्मित भय पुछथिन्ह – है, ई कोन साहेब थिकैक?

'तखन तरुणीवर्ग सँ उत्तर भेटतैन्ह – ई त फूल बाबूक जमाय थिकाथिन। भारी दर्जा मे पहुँचि गेल छथिन्ह तैं टोप लगौने छथिन्ह।

'नडुआरवला पाग पहिरि कऽ जैताह। ओहि बेचारे कैं के पुछतैन्ह?'

मधुकान्त बाबू साहेब बनि, सभ सामान सँ लैस भय स्टेशन जैबाक हेतु रिक्शा पर चढ़लाह। 'वार्ड सर्वेन्ट' कैं कहलथिन्ह – जाओ, एक घड़ा पानी भरकर ले जाओ। मेसक 'कूक' कैं आर्डर देलथिन्ह – एक छाँछ दही लाकर दिखला दीजिए।

ई सभ सगुन कय मधुकान्त बाबू नवीन उमंग सँ सासुरक यात्रा कैलन्हि। आब

देखा चाही आगाँ जा कऽ केहन फल भेटैत छैन्हि।

मधुकान्त बाबू एगारह बजे घोघरडीहा स्टेशन उतरलाह त एकटा देहाती एक्का भेटलैन्ह। एकमान कहलकैन्ह जे दू बजे तक पहुँचा देब।

ई सुनि मधुकान्त बाबू कैं खुशी नहि भेलैन्ह। किऐक त रसिक व्यक्ति प्रायः सूर्यास्त सँ पहिने सासुर पहुँचक नहि चाहैत छथि। रात्रिक तमोमय अन्धकार मे गेने 'ड्रामाटिक एफेक्ट' (नाटकीय प्रभाव) पड़ैत छैक। दिनक शुष्क गद्यमय समय मे ओ रोमांस कहाँ! दोसर बात जे 'साहेबी ड्रेस मे ओहन टिकटिकही एक्का पर चढ़ल लोक देखत त की कहत? राति मे त ककरो बूझि नहि पड़तैक!

ई विचारि मधुकान्त बाबू एकमान कैं नाश्तापानी और इनामक लोभ दय, दिन भरि रोकने रहलाह और साँझ कऽ एक्का पर सवार भेलाह जे ठीक 'रोमांस'क समय सासुर पहुँचि जाइ।

आब एक्काक हाल सुनू। ओ 'एक्का' नाम सार्थक करैत छल। अर्थात एक टा कोनो वस्तु लादू। एकमान ग्रामोफोन लादय त सूटकेस नहि अटैक। सूटकेस लादय त बैसबाक जगह नहि भेटैक। अस्तु, कोनो-कोनो तरहें समावेश भेलैक।

जखन साहेब बहादुर बैसि गेलाह त छौ घंटाक गरमाएल घोड़ा अपन करामात देखाबय लगलैन्ह। एकमानक तीन बेर टिटकारी देला पर ओ एक डेग बढ़य। और दू डेग आगाँ बढ़ला उत्तर पुन चारि डेग पाछाँ हटि जाय। चाबुक लगला पर जाहि दिशि खाधि देखय ताही दिशि कऽ मुँह करय। एहि चालि सँ कोसे भरि जाइत-जाइत पहर राति बीति गेलैन्ह।

मधुकान्त बाबू त्रैराशिक लगा कऽ देखलन्हि जे यदि यैह गति रहल त 'सासुर बाड़ी' पहुँचैत-पहुँचैत 'ठाकुरबाड़ी'क भोरुक्का घड़ी-घंट बाजि जाएत। तखन त सभ 'रोमांस' घाटे मे समाप्त भऽ जाएत।

एक्काक मंथर गति देखि मधुकान्त बाबूक धैर्य नष्ट होमय लगलैन्ह। परन्तु घोड़ा कैं कोन सासुर पहुँचबाक अगुताइ रहैक? ओ एक चौराहा पर जा कऽ जे अड़ल से की समधी विदाइक हेतु अड़ताह!

साहेब बहादुर कहलथिन्ह – लगो कसि कऽ चारि सटका।

सटका लगला पर घोड़ा और बेशी दुलत्ती झाड़य लागल। आब साहेब बहादुर कैं नहि रहि भेलैन्ह। ओ खिसिया कऽ एक 'बूट' लगौलथिन्ह।

ठोकर लगैत देरी घोड़ा तेहन अलफ उठौलक जे एक्का टामडि उनटि गेल और साहेब बहादुर आकाश सँ पृथ्वी पर आबि गेलाह। घोड़ा अपन छान-पगहा तोड़ि कऽ जे पड़ाएल से सरपट भागले चल गेल। एम्हर तर मे साहेब बहादुर, ऊपर सँ रेकार्डक डब्बा, ताहि पर एकमान, तकरा ऊपर एक्का। यैह नक्शा करीब दू मिनट धरि बनल रहल।

साहेब बहादुर पर अनभ्र वज्रपात भेलैन्ह। इस्त्री कराओल सूट माटि मे मिलि

सभटा शान कैं माटि मे मिला देलकैन्ह। रेकार्ड सभ चूर-चूर भय सकल मनोरथ कैं चूर-चूर कय देलकैन्ह।

दू मिनटक बाद एकमान ससरि कऽ निकसल और साहेब बहादुर कैं एक्काक तर सँ बाहर कैलकैन्ह। चमड़ाक सूटकेस हत्ता मे ओड़ड़ा गेल छलैन्ह। ओकरा खोलि कय टार्च सँ देखलन्हि त साहेब बहादुरक रहलो सहल धैर्य नष्ट भऽ गेलैन्ह। अबीर और गुलाबजल मिलि कय सभ कपड़ा पर होरी खेला देने छलैन्ह। रेशमी साड़ी पर 'लाइमजूस'क श्वेत धारा टघरि कऽ आलताक लाल रंग सँ एकाकार भऽ रहल छलैन्ह। धोआएल धोती पर 'शैम्पू' और सोहागबिंदीक रस परस्पर संयोग कऽ रहल छल। 'सेंट'क शीशी फूटि कऽ 'ब्रेसरी' कैं तर कऽ देने छल।

साहेब बहादुर जी मसोसि कऽ रहि गेलाह। ओ जाहि वस्तु सभक उपयोग अपना हाथ सँ करितथि से स्वयं भगवाने कऽ देलथिन्ह। अपन सोचल 'प्रोग्राम' श्वशुरग्राम धरि नहि पहुँचि सकलैन्ह!

झमेली साहु अपन टूटल एक्का तजबीज करैत बाजल – 'एक्का त बेकार भऽ गेल। एकटा पहिये टूटि गेलैक। आब ई आगाँ नहि बढ़ि सकैत अछि।' ई कहि ओ घोड़ाक तलाश मे चलल।

आब साहेब बहादुर कैं आकाशक तारा सूझय लगलैन्ह। ओ निरुपाय भय एकमानक गड्डा धैलन्हि और अपन सभ क्रोध ओकरे पर उतारय लगलथिन्ह – इडियट (बेवकूफ)! उधर कहाँ जाता है? हमारा पाँच सौ रुपए का नुकसान किया। अभी पकड़कर थाना ले चलते हैं। तुम पर 'डैमेज सूट' (हर्जाना) दायर करेंगे। जानता नहीं कि हम कौन हैं?

साहेब बहादुर ओकरा खिचैत-तिरैत लय चललथिन्ह। एकमान कहलकैन्ह – बेश, लऽ चलू जहाँ लऽ चलब। हम की जानि-बूझि कऽ एक्का उनटौलहुँ अछि? अहीं त जूताक ऐंड़ा मारलिऐक। हमर पूँजिए चौपट भऽ गेल।

साहेब बहादुर लऽ त चललथिन्ह, किन्तु मन मे विचारलन्हि जे एहिठाम ग्रामोफोन और सूटकेस के अगोरत? एकमान कैं कहलथिन्ह – सब चीज उठाकर ले चलना होगा।

आब एकमानो अड़ि गेलैन्ह – हम कुली नहि छी जे सामान ढोएब।

साहेब बहादुर ओकरा 'डैम-फूल' कहैत एक 'बूट' लगौलथिन्ह। आब एकमानो कैं ताड़ीक नशा जोर कैलकैक। ओ लपकि कऽ नेकटाइ समेत गरदनि पकड़ि लेलकैन्ह। साहेब बहादुर देखलन्हि जे एकमान बुत्गर अछि और एहि ठाम लग मे गामो-घर नहि छैक जे चिचिऐला पर लोक जमा भऽ जाएत। अतएव एकरा सँ लागब ठीक नहि हैत।

तावत नशा सँ बुत्त भेल एकमान साहेब बहादुर कैं ततेक जोर सँ धकेलि देलकैन्ह जे ओ चित्ते खसि पड़लाह। टोप, चश्मा ओ मडनीक घड़ी चकनाचूर

भऽ गेलैन्ह।

एकमान अपन एका गुड़कवैत 'थैह ले थैह ले' पार भऽ गेल।

साहेब बहादुर कें होश भेलैन्ह त डाँड़ धऽ कुहरय लगलाह। आब की लऽ कऽ सासुर जैताह? सकल करण-उपकरण व्यर्थ भऽ गेलैन्ह। सासुरक सीमा पर आबि तेहन आसुर प्रयोग भेलैन्ह जे सभटा शृंगार-भाव शृंगारहार जकाँ चूबि गेलैन्ह। जहाँ रसमय रंगक्रीड़ा होइतैन्ह तहाँ असमय धूलि क्रीड़ा भऽ कऽ रहि गेलैन्ह। जे कपार रोड़ी सँ लाल होइतैन्ह से रोड़ा सँ लाल भऽ गेलैन्ह। जे गरदनि चमेली दाइक कोमल बाहुपाश मे पड़ितैन्ह से झमेली साहुक कठोर बाहुपाश मे पड़ि गेलैन्ह।

केवल एके बातक संतोष मन मे छलैन्ह जे ई दुर्दशा केओ देखलक नहि। यदि एहन फटीचर अवस्था मे केओ सासुरक लोक देखि लैत त कोन मुँह देखबितहुँ? ताहि लज्जा सँ त मरणे नीक।

एहि आशंका सँ साहेब बहादुर सिहरि उठलाह। तावत किछु दूर पर कंठस्वर सुनाइ पड़लैन्ह। अकानि कऽ सुनलनि त होश गुम भऽ गेलैन्ह। ई त नड़ुआर वला आबि रहल छथि।

मधुकान्त बाबू कें आब किछु सोचबा-विचारबाक अवसर नहि रहलैन्ह। झट दऽ थकुचल टोप हाथ मे उठा, नड़ड़ाइत-नड़राइत राहरिक खेत मे जा नुकेलाह।

जखन नड़ुआरवला ओहिठाम पहुँचलाह त निर्जन सड़कपर ग्रामोफोन देखि थमकि गेलाह। भरिया कें कहलथिन्ह – रौ! देखैछिक त, एहिठाम लोक-वेद केओ नहि, ई वस्तु सभ ककर छैक? हाक पाड़ही त।

भरिया दू-चारि हाक पाड़लक किन्तु कोनो उत्तर नहि।

नड़ुआरवला आगाँ बढ़ि कहलथिन्ह – रौ, एकटा सूटकेस देखैत छिऐक। प्रायः मालिक नदी दिशि गेल हैतैक। थोड़ेक काल देखि लेबाक चाही।

परन्तु केओ कतहु नहि। भरिया थरथर काँपैत बाजल – सरकार, आब हमरा डर होइत अछि। एहि बाध मे कोस भरि कोनो गाम घर नहि। सामने जे गाछी देखैत छिऐक से भुतही गाछी छैक। ओही भूतक ई कारबाइ अछि। आब हमरा लोकनिक जान बाँचब कठिन।

नड़ुआरवला डाँटि कऽ कहलथिन्ह – रौ! भूत-तूत किछु नहि। कोनो एका एहि बाटे गेलैक अछि। चिह्न देखि लहीक। प्रायशः ओही पर सँ ई सभ खसलैक अछि। देखही ने, कोना छड़रायल छैक। साहू आबय लेल छलाह। कतहु हुनके वस्तु त ने छैन्ह?

ई कहि ओ सूटकेस लग ऐलाह। मधुकान्त बाबूक छाती धड़कय लगलैन्ह। नड़ुआरवला बजलाह – नहि, हुनकर नहि छैन्ह – एहि पर एन. झा लिखल छैक। हुनकर नाम त मधुकान्त छैन्ह। ई कोनो दोसर व्यक्तिक थिकैक।

मधुकान्त बाबूक जी आश्वस्त भेलैन्ह। नड़ुआरवला सूटकेस कें तजवीज करैत बजलाह – रौ, ई फूजल छैक। ई निश्चय कोनो चोरक काज थिक। हमरा लोकनिक आहट पाबि भागि गेल हैत। कतहु एहि राहरि मे त ने नुकाएल छैक?

मधुकान्त बाबू और बेशी झाँझक बीच मे जा नुका रहलाह।

नड़ुआर वला सूटकेस खोलि कऽ देखलन्हि त 'सेंट'क खुशबू सँ मिजाज तर भऽ गेलैन्ह। बजलाह – ककरो रहौक। आब ई माल लावारिस थिक। एहिठाम पड़ल रहतैक त केओ ने केओ उठा कऽ लइए जैतैक। ताहि सँ हमही किऐक ने नेने चली? चोरक धन छिपारे खाय।

ई कहि ओ पुनः एक बेर उच्च स्वर सँ गर्द कैलन्हि – हौ बाबू! जकर हौऔक से आबि कऽ अपन वस्तु लय जाह। नहि त हम लैह नेने जाइत छिऔह।

भरिया कें कहलथिन्ह – बहिंगा उतार। पकमानक बँगेरा तर सूटकेस लादि ले और दहीवला मटकूर पर ग्रामोफोन राख। जखन अनायासे धर्मसाँप खसि पड़ल अछि त छोड़ब किऐक?

भरिया सभटा वस्तु लादि लेलक और मधुकान्त बाबूक छाती पर कोदो दलैत दुलकी लगौलक। साहेब बहादुर चुपचाप देखैत रहि गेलाह और हुनकर ओतेक यत्न सँ संचित अमूल्य निधि लुटा गेलैन्ह। जाहि शस्त्र सँ ओ सासुर मे विजय प्राप्त करितथि से अनका हाथ मे पड़ि गेलैन्ह। सेहो के त असली प्रतिद्वन्द्वी!

मधुकान्त बाबू सन्तापक ज्वाला मे दग्ध होमय लगलाह।

जखन निर्जन भऽ गेलैक त मधुकान्त बाबू राहरि सँ बहरैलाह और रातोराति पुनः स्टेशन पहुँचलाह। ओतय चोर जकाँ वेटिंग रूम मे नुका रहलाह। अन्हार मे खाली बेंच पर ओठंगि, भावनाक तरंग मे भसियाय लगलाह – 'हाय हाय! की सोचने छलहुँ और की भऽ गेल!'

'आइ राति सासुर मे की-की नहि भेटैत? एखन एकान्त शयनागार मे पलंग पर ओठङल रहितहुँ। गुलगुल तोशक पर मलाइ सन चिक्कन चादर रहैत। स्वीट ड्रीम (मधुर स्वप्न) वला तकेया पर माथ देने मधुमयी चमेली देवीक प्रतीक्षा करैत रहितहुँ। एकाएक मृदुल पाजेबक झंकार सुनि पड़ैत। हम निःशब्द भऽ मुँह झाँपि पड़ि रहितहुँ। ओ नहूँ-नहूँ आबि कऽ हमरा मुँह पर सँ चादर हटबितथि। हम व्याज-निद्रा मे पड़ल रहितहुँ। तखन ओ फलबल हमरा देह पर निहुरि कऽ बैसि जैतथि। फुलाइत चमेलीक मधुमय सौरभ सँ सम्पूर्ण शय्या गमगम कऽ उठैत। जयाकुसुम सँ सीचल नागिन हमरा ऊपर लहराय लगैत। तथापि हम आँखि मुननहि रहितहुँ। तखन ओ अपन रसगुल्ला सन मुँह हमरा मुँह पर अनितथि। बस, हम घट दऽ.....'

तावत जाँघ मे उड़ीस काटि लेलकैन्ह। साहेब बहादुर छिलमिला उठलाह। कल्पनाक रंगीन तार टूटि गेलैन्ह। आब वस्तुस्थिति पर ध्यान गेलैन्ह – बेंच मे उड़ीस भरल अछि। कोठरी मे मच्छड़ भनभना रहल अछि। खिड़की सँ सर्द पुरबाक लहरि आबि रहल अछि।

मधुकान्त बाबू जाड़ सँ ठिठुरय लगलाह। भूखें अँतरी कुलबुलाय लगलैन्ह। जेबी मे हाथ देलन्हि त पावरोटी बहरैलैन्ह। छिः छिः। कहाँ ओ रेशमी दाइक मधुर मालपुआ! मलदहवालीक सरस मलाइ! और कहाँ ई सुखायल पावरोटी।

मधुकान्त बाबू ओकरा खिड़कीक बाहर फेकलन्हि। पुनः प्रकृतिस्थ भेला उत्तर पछतावय लगलाह – आब एहिठाम की खाएब? घोघरडीहाक घुघनी?

साहेब बहादुर कैं नडुआरवलाक मौंस दिशि ध्यान गेलैन्ह। ओ एखन सासुरक मालपुआ पर हाथ फेरैत हैताह। मलाइक रस लैत हैताह, और हम एहिठाम बैसल मच्छड़ मारैत छी। ओ कोबरक आनन्द लैत हैताह और हम एहि हवालात मे पड़ल छी। हमर जाँघ कचकि रहल अछि से केओ ससारय वला नहि। ओतय नडुआरवला कैं मालिश होइत हैतैन्ह।

साढ़ूक सौभाग्य सोचि-सोचि मधुकान्त बाबू कूढ़ी होमय लगलाह। जतेक अधिक सोचथि ततेक अधिक ज्वाला बढ़ल जाइन्ह।

तावत कतहु सँ फगुआ सुनाइ पड़लैन्ह। देहाती सभ डंफ-झालि पर धमार उड़ौने छल –

कन्त हमर नहि ऐला सखी! ककरा संग खेलू अबीर!

मधुकान्त बाबूक करेज पर डंफो सँ बेशी चोट पड़य लगलैन्ह। ओ बाहर प्लेटफार्म पर आबि टहलय लगलाह।

तावत लाइन क्लियरक घंटी पड़लैक। रामपुरिया सँ गाड़ी छोड़लक। निशीथकालीन नीरव स्टेशन किछु क्षणक हेतु मुखरित भऽ उठल।

मधुकान्त बाबू पुनः कोना गाम गेलाह? इम्तिहानक नाम पर कोन तरहें घर सँ रुपैया झिटलन्हि? और, होस्टल पहुँचला उत्तर जीवछलाल दास तथा वृन्दावन बिहारी सँ कोन तरहें फरिऐलैन्ह? ई सभ वृत्तान्त लिखब एहि कथाक उद्देश्य नहि।

नौ मासक बाद मधुकान्त बाबू कैं पुनः सासुर जैबाक मौका भेटलैन्ह। किएक त बाप लिखलथिन्ह जे अग्रहण शुदि पंचमी कैं द्विरागमनक दिन होइत छैह। हम दुःखित छी। एहिठाम सँ और केओ नहि जा सकतीह। तौं अपने जा कऽ बिदागरी करौने अबिहऽ। विधि-व्यवहारक हेतु 'मनिआर्डर' जाइत छैह। फिहरिस्तक मोताबिक वस्तु सभ कीनि कऽ नेने जैअऽहैक।

जे रोगी के भावय से वैदा फरमावय! मधुकान्त बाबू साढ़ी लहटीक देहाती फिहरिस्त कैं फाड़ि रद्दीक टोकरी मे फेकलन्हि और अपना मन सँ लिस्ट तैयार करय लगलाह – 'लेडीज वाच', 'हाइहील शू', 'ब्यूटी बॉक्स' (जनानी हाथक घड़ी, ऊँच एँड़ीक जनानी जूता, शृंगार-मंजूषा) इत्यादि।

एहि बेर एक संगी सँ फोटोक 'कैमरा' और दोसरा सँ बन्दूक मँगनी कैलन्हि। तखन शिकारी सूट पहिरि, हाथ मे चाबुक घुमबैत, शान सँ सासुर पहुँचलाह!

सासुर पहुँचि साहेब बहादुर चारि दिन धरि जेहन आतंक जमौने रहलाह तकर वर्णन एहि लेखनीक सामर्थ्य सँ बाहर अछि।

परन्तु भाग्यो त कोनो वस्तु थिकैक। नहि त माछ रन्हैला उत्तर ककरो छुलका किऐक पड़ि जाइत छैक? परसल रसगुल्ला पात पर सँ किऐक गुड़ुकि जाइत छैक?

सैह अदृष्ट मधुकान्त बाबू कैं सासुर पहुँचलो उत्तर एकाकी शयन करबा पर बाध्य कैलकैन्ह। पुष्पधन्वाक पाँचो बाण पर 'कंट्रोल'क मोहर लागि गेलैन्ह।

तीन राति धरि ओ ब्रह्मचर्यक आनन्द लैत रहलाह। सामाजिक नियमवश एको क्षणक हेतु भेंटो नहि भऽ सकलैन्ह। और चारिम राति जहिया भेंट होइतैन्ह तहिया दिनगरे बिदागरी भऽ गेलैन्ह। मधुकान्त बाबूक सकल संचित मनोरथ बारूदक गोली जकाँ बन्द भेल स्टेशन पहुँचलैन्ह। आब एके बेर ट्रेन मे बम फुटतैन्ह।

'वेटिंग रूम' मे मधुकान्त बाबू 'डुनका' सुना कय अपना छोटका सार कैं कहलथिन्ह – देखू, रेल मे अहाँक बहिन कैं 'अपटुडेट लेडी' (सुसंस्कृत महिला) जकाँ बैसय पड़तैन्ह। केओ चिन्हार त रहतैन्ह नहिए। 'फर्स्ट क्लास' मे हमरा संग बैसतीह। कनेको धड़ैबाक काज नहि।

मधुकान्त बाबूक मन मे एके भावना नृत्य करय लगलैन्ह जे – हे भगवान! कहुना 'फर्स्ट क्लास' खाली आबय। तखन 'वाइफ' कैं कालेज गर्ल बला फैशन बना कऽ फोटो खिचबैन्ह। गाम पर एहन मौका कहाँ भेटत? यदि ई नहि भेल त एकान्त यात्राक आनन्दे की?

बारह बजे राति कऽ जखन ट्रेन आएल त मधुकान्त बाबू खवासिन, भरिया तथा छोटका सार कैं सब सामान सहित दोसर डब्बा मे चढ़ा देलथिन्ह और अपना हाथ मे बंदूक लय, 'वाइफ'क हाथ मे 'कैमरा' धरा, 'फर्स्ट क्लास' मे आबि कऽ बैसलाह।

भाग्यवश डब्बा एकदम खाली रहैन्ह। मधुकान्त बाबू कैं पूर्ण स्वराज्य भेटि गेलैन्ह। आब कोन परवाहि? दुइए स्टेशन त जैबाक अछि। निर्मली, रहरिया। और एहि बीच मे दोसर के फर्स्ट क्लास मे अबैत अछि।

घोघरडीहा स्टेशन छुटैत देरी मधुकान्त बाबू नववधूक घोघ हटा कऽ फेकलन्हि और कहलथिन्ह – आब ई साज-बाज उतारू और दोसर 'सेट' जे हम दैत छी से पहिरू। तखन अहाँक फोटो लैत। केवल एक घंटा 'टाइम' अछि। एहि बीच मे सभटा भऽ जैबाक चाही।

मुग्धा नववधू कैं लजाइत देखि मधुकान्त बाबू स्वयं अपना हाथ सँ मडटीका बहार कऽ देलथिन्ह। तखन पहुँची उतारैत कहलथिन्ह – ई छौ छौ टा लहठी जे अछि से बहार कऽ फेकू और 'रिस्टवाच' लगा दियऽ। लाउ हम पहिरा दैत छी। तदुपरान्त कहलथिन्ह – आब ई झालर गोटावला 'ब्लाउज' बाहर करू और हम जे दैत छी से पहिरू।

षोडशी 'चमेली' ब्लाउज उतारबाक नाम सुनि कदम्ब-पुष्पवत कंटकित भऽ उठलीह।

तखन मधुकान्त बाबू अधीर होइत कहलथिन्ह – एहि ठाम के देखैत अछि? झट दऽ करू। नहि, अहाँ ओना नहि मानब।

आब श्रीमतीजी हस्तक्षेप करैत कहलथिन्ह – बेश, अहाँ छोड़ि दियऽ। हम अपने बाहर करैत छी।

चमेली दाइ आब बेबीक कली नहि छलीह। ओ खिलि कऽ बेला भऽ गेलि छलीह। मधुकान्त बाबू हुनक आशातीत अभ्युदय देखि चकित रहि गेलाह। किन्तु संगहिसंग एक भारी कठिनता पड़ि गेलैन्ह। किऐक त पहिलुक अन्दाज सँ कीनल लघुकंचुकी अत्यन्त तुच्छ प्रमाणित भेलैन्ह।

कठोर संग्राम छिड़ि गेल। एक दिशि हिंसात्मक बल प्रयोग, दोसर दिशि अहिंसात्मक सत्याग्रह। अन्ततः दमनपाशक क्षुद्र परिधि विद्रोही कें नियंत्रित करबा मे असमर्थ भेल। गर्वोन्नत अपराधी अनुशासनक सीमा कें उल्लंघन कय अपना स्वाधीनताक पूर्ण झलक देखबैत रहल।

आब मधुकान्त बाबू साड़ी सँ युद्ध ठनलन्हि। बजलाह – हाय-हाय! ई की देहाती जकाँ कोंचा लटकौने छी और आँचर मे धानक मोटरी बन्हने छी। छिः! ई पीयर साड़ी खोलि कऽ राखि दियऽ और हम जे 'अंडर वीयर' दैत छी से पहिरू। ई कहि मधुकान्त बाबू एक झिलमिल पारदर्शी साया बाहर कैलन्हि।

श्रीमतीजी कटाक्ष करैत कहलथिन्ह – आब अहाँ नीक जकाँ हमरा बेपर्द करय चाहैत छी से नहि हैत। जे भेल से भेल।

मधुकान्त बाबू खेखनिया पूर्वक बजलाह – देखू, देखू। आब फनेक लय सब गुड़ गोबर नहि करू। आधा राति कऽ एहन अन्हार मे बाहर सँ ककरा सुझतैक? हे लियऽ। हम लाइटो (रोशनी) मिझा दैत छिऐक। आब त भेल?

बहुत नाज-नखराक बाद श्रीमती अपन छिरगमनिया साड़ी खोलि कऽ फराक कैलन्हि और कहलथिन्ह – लाउ, साया कहाँ अछि?

चमेली दाइ गुलाबी साया मे पैर देने छलीह कि मधुकान्त बाबू 'स्विच' दबौलन्हि। बिजलीक प्रकाश मे अर्द्धनग्न सौन्दर्य सँ मादकताक किरण फूटि पड़ल। एहि वेष मे 'वाइफ' केहन 'स्मार्ट' (कटगरि) लगैत छथि! मधुकान्त बाबू रूपमाधुरी पान कय छकित होमय लगलाह।

चमेली मुस्कुरा कऽ कहलथिन्ह – आब साड़ियो देब कि तकिते रहब?

मधुकान्त बाबूक ध्यान भंग भेलैन्ह। ओ पेयाजक छोइया सन पातर-पेयाजी रंगक साड़ी बहार कैलन्हि और सिखाबय लगलथिन्ह – एकरा बङ्गला 'स्टाइल' सँ पहिरू। हाँ-हाँ, ओना नहि। बाँहिक तर दऽ कऽ लाय दियौक। नया फैशन मे दहिना बाँहि उघार रहैत ठीक। आब चुनिया दैत छी। आँचरक फूल पीठ पर फहराइत रहत। हँ, आब ठीक भेल।

एवं प्रकार मधुकान्त बाबू कलापूर्ण ढंग सँ पत्नी कें साड़ी पहिरौलन्हि।

तदुपरान्त हुनक छड़ और घड़ी बहार कय ऊँच ऍड़ीक 'लेडी शू' कोनहुना पैर मे कसि कऽ अँटा देलथिन्ह। तखन कहलथिन्ह – अहाँ स्कुलिया लड़की सन त भऽ गेलहुँ। आब चलू, तेहन 'मेकअप' कऽ दैत छी जे 'सिनेमा-स्टार' बनि जाएब। तखन फोटोग्रैफिक्स आएत।

मधुकान्त बाबू 'ब्यूटी बाक्स' बहार कैलन्हि और पत्नी कें बाथरूम मे लऽ गेलाह। ओतय स्नो, क्रीम, पफ, पाउडर, लिपिस्टिक, नेल-पालिश आदि शृंगार सामग्रीक अम्बार लागि गेल।

मधुकान्त बाबू पत्नीक नेत्रनिमीलित मुखमण्डल पर 'स्नो' लगाबय लगलाह। तहिना मनोयोग सँ, जेना कोनो पूजक देवीक प्रतिमा पर चन्दनक अनुलेप करैत हो।

ओ देवीजीक आँखिपरक फेन पोछक हेतु तौलिया उठौनहि छलाह कि एकाएक गाड़ी रुकि गेल।

मधुकान्त बाबू पत्नी-पूजा मे तेहन तल्लीन छलाह जे समयक गति दिशि ध्यान नहि छलैन्ह। ट्रेन कोना 'होम सिग्नल' पार कय निर्जनीक प्लेटफार्म पर पहुँचल से हुनका विदित नहि भेलैन्ह। दोसर, हुनका विश्वास छलैन्ह जे भपटियाही सँ एम्हर केओ 'फर्स्ट क्लास' मे नहिए आओत। अतएव ओ निश्चिंत भय पुनः पत्नीक प्रसाधन मे लगलाह।

परन्तु एकान्तक सुख विधाता सँ नहि देखल गेलैन्ह। केओ दरवाजा पर धक्का मारलकैन्ह। आकस्मिक बाधा पाबि मधुकान्त बाबू स्थग्न भऽ गेलाह। ई के असमय बेर पर आबि रंग मे भंग कैलक? सभटा स्कीमे (योजने) गड़बड़ा देलक।

तावत पुनः दरवाजा भड़भड़ाएल। मधुकान्त बाबू जल्दी जल्दी स्त्री कें बुझाबय लगलाह – देखू, मुँह पोछि कऽ पाउडर लगा लेब। ई गाल रंगबाक 'पेन्ट' अछि। ई 'लिपिस्टिक' अछि, ठोर रँगबाक। ई 'नेल पालिश' अछि, नख रँगबाक। देखू, एको टा किछु छूटय नहि। आब हम जाइ छी। अहाँ भीतर मे अपन सभटा कऽ धऽ कऽ बहराएब। सभ टा बूझि लेलहुँ ने? और हँ, डब्बा मे कोनो 'जेंटलमैन' (भद्रव्यक्ति) आबि रहल अछि। तैं बहरैला पर इंगलिश 'पेपर' (अखबार) उठा कऽ पढ़य लागब जाहि सँ अहाँ कें 'एजुकेटेड गर्ल' (शिक्षिता लड़की) बुझय।

ई कहि मधुकान्त बाबू फट्ट दऽ बाथरूमक केवाड़ बाहर सँ बन्द कऽ चुरुट पजारलन्हि। ता ओम्हर दरवाजा फुजल आ कुलीक पाछाँ एक सज्जन भीतर ऐलाह।

आगन्तुक कें देखितहि मधुकान्त बाबू जरैत 'सिगार' मुट्ठी मे बान्हि लेलन्हि। ओ पुछलथिन्ह – की हौ मधुकान्त। तों कतय सँ?

ई मधुकान्त बाबूक पित्ती महेश बाबू छलथिन्ह। मधुकान्त बाबू किछु संकुचित होइत हुनक पैर छूबि कहलथिन्ह – द्विरागमन करौने अबै छिऐक।

महेश. – की? नीक जकाँ बिदा कैलकौह कि ने? कनेयाँ कतय छथुन्ह? जनानी गाड़ी मे?

मधुकान्त बाबूक मुँह सँ अनायास बाहर भऽ गेलैन्ह – जी हँ। अपने कतय

जा रहल छिऐ?

महेश. – हमहूँ गामे जा रहल छी। एतय निर्मली मे एक गोलेदारक ओहि दाम किछु रुपया बाँकी छल से वसूल करय आएल छलहुँ।

ताबत गाड़ी चलय लागि गेल। महेश बाबू हुनका लग बंदूक देखि पुछलथिन्ह – ई बन्दूको ओत्तहि देलकौह अछि?

मधुकान्त बाबू विषण्ण होइत कहलथिन्ह – जी हँ। अपने राति मे एतेक तकलीफ कऽ कऽ किऐक विदा भेलहुँ? भिनसरुका ट्रेन सँ ऐने बेशी आराम होइत।

महेश बाबू हँसि कय कहलथिन्ह – लहना-तगादाक कारोबार मे आराम नहि देखल जाइ छैक। काल्हि भोरे एक खादुका कैँ तीन हजार देबक अछि। यदि अपन आराम ताकय लागी त गरीबक काज कोना चलैक?

ई कहि महेश बाबू कान पर जनउ चढ़ा 'बाथरूम' दिशि विदा भेलाह।

मधुकान्त बाबू भयभीत भय कहलथिन्ह – ओहि मे एकटा 'लेडी' गेल छथि।

महेश बाबू पुनः अपना सीट पर बैसैत पुछलथिन्ह – केहन 'लेडी' छथि?

मधुकान्त बाबू अनजान बनैत कहलथिन्ह – कहि ने के छथि। प्रायः कोनो बंगालिन लेडी छथि। बेस 'कल्चर्ड' (सुसंस्कृता) बुझि पड़ैत छथि।

ई गप्प होइतहि छल कि 'बाथरूम' फुजल। श्रीमतीजी 'फैशन' कैने बहरैलीह। हुनक चेहराक रंग देखि मधुकान्त बाबूक रंग उड़ि गेलैन्ह। हे भगवान! ई की! श्रीमतीजी सभटा चौपट कैलन्हि। नाक पर 'स्नो' लागल! कनपट्टीपर 'पाउडर' पोतल! गालपर 'लिपिस्टिक' हेउरल! ठोर पर 'नेल पालिश' चभरल। हाय हाय! बहुरुपियाक वेष बना लेलन्हि!

मधुकान्त बाबू डरेँ दोसर दिशि ताकय लगलाह। चमेली दाइ दुहू हाथ सँ 'ब्यूटी बॉक्स' नेने कसल जूता मे कष्टपूर्वक तौलि-तौलि कऽ डेग दैत आगाँ बढ़लीह। किन्तु ओहन ऊँच एँड़ी पर 'बैलेंस' (संतुलन) ठीक नहि रहि सकलैन्ह। पैर लड़खड़ाइत देरी ओ नचैत-नचैत 'ब्यूटी बॉक्स' नेने-देने, महेश बाबूक आगाँ जा खसलीह। हड़बड़ा कऽ उठय लगलीह कि ओतेक विन्यासपूर्वक लपेटल चिकन 'जारजेट' साँपक केचुआ जकाँ ससरि कऽ फराक भऽ गेलैन्ह। आब मधुकान्त बाबू कैँ बूझि पड़लैन्ह जे पुरुषक हाथ सँ बान्हल साड़ीक गेँठि बेशी काल नहि टिकि सकैत अछि।

ककाजी एक बेर कनछिया कऽ श्रीमतीजी दिशि तकलथिन्ह और मुसकुरा कऽ अपन कागज देखय लगलाह। मधुकान्त बाबू पर नौ मन पानि पड़ि गेलैन्ह। हे भगवान! सभटा कैल-धैल व्यर्थ भऽ गेल।

दू मिनट बाद मधुकान्त बाबू किछु आश्वस्त भेलाह। किऐक त श्रीमतीजी आब अपना सीट पर आ चुपचाप अखबार लऽ कऽ बैसि गेलीह। मधुकान्त बाबू कैँ सन्तोष भेलैन्ह जे खैर, आब अंगरेजी पेपरक आड़ मे सभ टा दोष छपि जैतैन्ह।

परन्तु हे भगवान! ई की? श्रीमतीजी उनटे 'सर्चलाइट' हाथ मे लय पढ़य

लगलीह। कोना संकेत कैल जाइन्ह जे सुनटा लियऽ। ककाजी पुनः एक बेर मुसकुरा देलथिन्ह। मधुकान्त बाबू कटि कऽ रहि गेलाह। कतहु काकाजी कैँ लक्ष्य त नहि भऽ गेलैन्ह?

महेश बाबू ओहि स्त्री कैँ अन्य भाषा-भाषिणी जानि मधुकान्त बाबू कैँ पुछलथिन्ह – ई कतय जैतीह?

मधुकान्त बाबू अंठा कऽ कहलथिन्ह – पता नहि कतय जैतीह! प्रायः भपटियाही उतरथि से संभव।

कहबाक त कहि गेलथिन्ह, किन्तु मधुकान्त बाबूक करेज थर-थर काँपय लगलैन्ह। काकाजी त संगे चलैत छथि। तखन आब कोन उपाय हैत?

जेना-जेना रहरिया स्टेशन लगिचाएल जाय तेना-तेना मधुकान्त बाबूक छाती धड़कल जाइन्ह। अन्ततः रहरिया स्टेशन पहुँचिए गेल।

महेश बाबू प्लेटफार्म पर महफा लागल देखि कहलथिन्ह – देखह, कनेयाँ कैँ सवारी त पहुँचल छैन्ह। तोँ जा, पहिने हुनका जनानी गाड़ी सँ उतारि लहुन गऽ। तखन चटपट कहार सभ सँ सामान उतरबबिहऽ। तीने मिनट गाड़ी ठहरै छैक। ताबत हमहूँ अपन बिस्तर ससरिअबैत छी।

मधुकान्त बाबू बंदूक नेने कुली सँ दोसर डब्बा मे गेलाह और भरिया, खवासिन तथा सार कैँ उतारलन्हि। सभ वस्तु उतरि गेलैन्ह।

ओम्हर महेश बाबू अपना डब्बाक सामने प्लेटफार्म पर ठाढ़ छलाह। कनेयाँ कैँ नहि देखि पुछलथिन्ह – कनेयाँ कैँ किऐक नहि उतरैत छहुन्ह?

मधुकान्त बाबू जनानी गाड़ीक समीप जा घबरायल सन मुद्रा बना कऽ बजलाह – आह! ककाजी! एक टा भारी गड़बड़ भऽ गेल।

महेश बाबू पुछलथिन्ह – से की?

मधुकान्त बाबू बजलाह – जनानी गाड़ी मे कतहु देखिते नहि छिऐक। घोघरडीहा मे सब केओ सामान चढ़াবय लागि गेल। ओ प्रायः महफे मे रहि गेलैक।

महेश बाबू क्षुब्ध भय बजलाह – ऐँ! तोरा लोकनि ओतेक गोटे छलाह और कनेयाँ ओत्तहि छूटि गेलथुन्ह। वाह रे वाह! ई त औपन्यासिक घटना भऽ गेल। अच्छा चलह, घोघरडीहा तार दहीक।

मधुकान्त बाबू थोड़ेक दूर धरि मुँह बनौने पित्तीक पाछाँ चललाह। ताबत घंटी पड़ि गेलैक।

मधुकान्त बाबू एकाएक हड़बड़ा कऽ कहलथिन्ह – आह! ककाजी। हमर 'कैमरा' त गाड़िए मे छूटि गेल।

ई कहि ओ दौड़लाह और चलैत गाड़ी मे छड़पि कय चढ़ि गेलाह। ककाजी मुँह बाबि कऽ तकिते रहि गेलाह। भातिज भीतर सँ दरवाजा बंद कय लेलथिन्ह।

अनुभवी ककाजी कैँ आब तार देबाक प्रयोजन नहि बूझि पड़लैन्ह। कहार

सभ कें कहलथिन्ह – वर-कनेयाँ भपटियाही गेलथुन्ह। आब तौंहू सभ भरि राति आराम करै जो।

गामक खवास बाजल – घर पर बूढ़ा मालिक बड़ जोर खिसिऐथिन्ह। सूर्योदय सँ पहिनहि कनेयाँ कें गृह-प्रवेश करबाक मुहूर्त छलैन्ह। ताही सँ राताराती कहार-महफा लऽ कऽ ऐलिऐन्हि। आब हमरा सभ एहिठाम थैरि कऽ की करै जाउ?

तावत स्टेशन मास्टर टिकट चार्ज करक हेतु पहुँचि गेलथिन्ह। भरिया खवासिन तथा सार, सभक टिकट मधुकान्ते बाबूक संग रहैन्ह। सब केओ जक-थक भय घुमाओनक डाला लग ठाढ़ भेल धन्हकी पड़ल रहलाह।

महेश बाबू क्षुब्ध होइत बजलाह – देखू, आइकालिक अङरेजिया छौंड़ा सभ केहन आवारा बहराइत अछि? हमरो सभक विवाह-द्विरागमन भेल, मुदा कहियो एना कैलहुँ? ई त सभक नाक कटलक। हमरो सँ गुण्डइ कैलक। कालेज मे पढ़ि कऽ यैह सभ लखेरपनी सिखैत अछि? भला कहू त! एहि लुचपनी सँ कोन लाभ? हँ, एखन युवावस्थाक तरंग छैन्ह। जे ने करथैन्ह! जखन गदहपचीसी छुटतैन्ह तखन लोक हैताह।

ओम्हर रहरिया और भपटियाहीक बीच मे की सभ घटना घटित भेल से पाठक-पाठिकाक कल्पना पर छोड़ि देल जाइत छैन्ह।



समर्पण

जे भंगक तरंगमे काव्य-शास्त्र-विनोदक धारा बहा दैत छथि;
जनिक प्रवाहमे थोड़ेक कालक हेतु वेद-पुराण, धर्मशास्त्र,
सभटा भसिया जाइत अछि; जे बात-बातमे अद्‌भुत
रस ओ चमत्कारक चाशनी घोरि दैत छथि;
जे मर्मस्पर्शी व्यंग्य द्वारा लोकक अन्तस्तल
मे पहुँचि गुदगुदी लगा दैत छथि;
तेहन चिर आनन्दमूर्त्ति,
परिहास-प्रिय
खट्टर कका कैं—
त्वदीयं वस्तु पितृव्य ! तुभ्यमेव समर्पितम्

खट्टर ककाक परिचय

खट्टर कका छथि मस्त जीव। सर्वदा आनन्दमूर्ति। हुनका ठंढइ धरि भेल चाहैन्ह। और कथू सँ प्रयोजन नहि। जखन लहरिमे आबि जाइत छथि तखन के हुनकर बराबरी कऽ सकैत अछि? तेहन विनोदक वर्षा करय लगै छथि जे आनन्दक बाढ़ि आबि जाइत अछि। और जहाँ कनेक बीचमे टोकारा दिऔन्ह कि फेर देखू जे केहन लुत्तीक फुलझड़ी उड़य लगैत अछि!

ओहि दिन देखै छी तऽ खट्टर कका पलथा लगौने कुसियारक रसमे दूध फोंटि रहल छथि। हमरा देखितहि बजलाह—आबह, आबह! असली बेर पर जुमि गेलाह।

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, हम एक काज सँ आएल छी।

खट्टर कका बजलाह—हमरा ओहिठाम केओ काज सँ नहि अबैत अछि! हँ, गप्प करबाक हो त आबह।

हम कहलिऐन्ह—एही लोभेँ त आएल छी। हम चाहै छी जे अपनेक गप्प-सप्प पुस्तकाकार छपा दी।

खट्टर कका रसमे अणाचीक बुकनी छिटैत बजलाह—हौ, केहन बलेल छह? बलहुँ अपनो गारि सुनबह, हमरो सुनैबह।

हम पुछलिऐन्ह—से किऐक, खट्टर कका?

खट्टर कका रसमे गुलाबजल मिलबैत बजलाह—हौ, हम छी मदक्की। तरंगमे कखन की बजा जाइत अछि तकर कोन ठेकान? एक त ओहिना बदनाम छी। केओ नास्तिक कहैत अछि, केओ चार्वाक! पोथी छपा कऽ और किऐक दुर्नाम करैबह? हँ, रस पीबह!

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, रस त अहाँक गप्पेमे भेटैत अछि। तेहन रस, जे की उपन्यास-नाटकमे भेटत?

खट्टर कका बजलाह—आब तों काव्य करय लागि गेलाह। हौ, एतेक प्रशंसा जे करै छह ताहि सँ बरु एक साँझ नेओत दऽ कऽ खोआइए दैह।

हम कहलिऐन्ह—अहाँ कैं त सभ बातमे विनोदे रहैत अछि!

खट्टर कका रसमे केसर घोरैत बजलाह—हौ, जीवनमे और छैहे की?

असारे खलु संसारे इष्टमेतच्चतुष्टयम्
मिष्टान्नं मिष्टपानं च मिष्टवाक् मिष्टभाषिणी।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, अहाँक एक-एक टा गप्प लाख टकाक होइत अछि। यदि एहि समयमे राजा भोज सन गुणज्ञ रहितथि त.....

खट्टर कका–त एक-एक बात पर एक-एक कलश अशर्फी उझीलि दितथि ! परन्तु एखन त एक-एक कोहा थर्मीओ उझिलयवाला केओ देखयमे नहि अबैत छथि। लैह, रस पीयह !

खट्टर कका एक गिलास रस हमरा आगाँमे बढ़ा देलन्हि। पुछलन्हि–केहन भेलैक अछि ?

हम कहलिऐन्ह–अपूर्व भेल अछि। परन्तु अहाँक गप्प छपि जायत त एहू सँ बेशी अपूर्व हैत।

खट्टर कका बजलाह–हौ जी, हमर गप्प शुद्ध शरबते नहि होइत अछि। मरीचक बुकनीओ ओहिमे कम नहि रहैत छैक।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, ताही सँ त ओ और बेशी चटकार होइत अछि।

खट्टर कका बजलाह–हँ, परन्तु ओकरा पचाबक हेतु सामर्थ्यो चाही। हमर बात होइ अछि ओलक टोंटी। कतेक गोटा कें भक् दऽ लगतैन्ह। कतेक गोटा कें आमाशय उखाड़ि जैतैन्ह। तों कहाँ धरि सभक ठोरमे दही-चीनी लगबैत फिरबहुन ! जिनका साहित्यिक मंदाग्नि होइन्ह से हमर गप्प नहिए पढ़थि।

हम–त बेस, भूमिकामे ई बात हम लिखि देबैक।

खट्टर कका–तोरा लिखने की हैतौह ? विशेषण जे सभ भेटबाक से भेटबे करत। खैर संज्ञा वा विशेषण सँ हमरा ततेक भय नहि होइ अछि, भय होइ अछि क्रिया सँ। ....हौ जी, जौं गप्प छपाबहीक हो त हमर असली नाम-गाम नहि खोलिहऽ से कहि दैत छिऔह।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, हमरा त डर होइ अछि जे लोक कतहु हमरे ने खट्टर कका बूझि बैसय !

खट्टर कका बजलाह–अनका बुझने तऽ ततेक बेसी हर्ज नहि। हँ, तोहर काकी एना नहि बुझथुन्ह से देखिहऽ।

हम–खट्टर कका, अहाँ कें त सभ सँ हँसिए रहैत अछि।

खट्टर कका–हौ, हमर मुँह अपन सक्क नहि अछि। एही द्वारे त सभा-सोसाइटीमे नहि जाइ छी। के जाने, कतय की बजना जाय ? हम छी झनकाह लोक। झोंकमे कखन कोन दिस बहि जाएब तकर कोन ठेकान ? तौंहू त ने मुँहमे झीक दैत छह !

हम–खट्टर कका, जखन अहाँक प्रवाह चलैत अछि तखन के अहाँकें रोकि सकैत अछि !

खट्टर कका–एही द्वारे त ककरो सँ पटैत नहि अछि। सभ सँ झगड़ा ठनि जाइत अछि।

हम–परन्तु, अहाँक गप्प तेहन रोचक होइत अछि जे झगड़ो कैनिहार कैं रस भेटैत छैन्ह। जखन अहाँक गप्प छपत त गारिओ देनिहार रातिमे चोरा कऽ पढ़बे करताह।

खट्टर कका–बेस। जौं हमरा गप्प सँ लोक कें किछु रस भेटि जाइक त छपाबह।

खट्टर कका पुनः बजलाह–हौ, हम छी मुँहफट्ट। लाइ-लपटाइ जनबे नहि करै छी। तैं ठाँइ-पठाँइ बात लोक कें कहि दैत छियैक। संभव जे किछु गोटा कें बेस तीख-चोख लगैन्ह, परन्तु किछु गोटा कें तेहन झँसिगर लगतैन्ह जे आँखि-नाक सँ पानि बहय लगतैन्ह। तैं सभटा गप्प जुनि छपाबह। जे बहुत उत्कट होइक से बात छपौनहि कुशल।

हम कहलिऐन्ह–बेश, त हम चुनि चुनि कऽ खटमधुर गप्प दैत छिऐक।

खट्टर कका बजलाह–खटमधुरोमे लोंगिया मरचाइक बुकनी हैबे करतैक।

हम कहलिऐन्ह–बेश, तखन आशीर्वाद दियऽ।

खट्टर कका हँसैत बजलाह–आशीर्वाद यैह दैत छिऔह जे महापंडित लोकनिक फराठी सँ कपार बाँचल रहि जाओ।

× × ×

और सैह खट्टर ककाक तरंग अपनेक हाथमे अछि।

खट्टर कका सँ भेट

खट्टर कका इनारक सब्जी पर बैसल कुरुड़ करैत रहथि। हम कहलिऐन्ह–खट्टर कक्का! अहाँक नाम तऽ दूर-दूर धरि प्रख्यात भऽ गेल।

खट्टर कका बजलाह–हँ, सुक्रिये नाम कि कुक्रिये नाम! तों तेहन-तेहन गप्प छपीलह जे चारू कात पसरि गेल। संपूर्ण मिथिलामे।

हम–केवल मिथिले किऐक कहैत छिऐक? आनो आन भाषामे अहाँक अनुवाद छपि रहल अछि। हिन्दी, बङ्गला, गुजराती, मराठी......

खट्टर कका बजलाह–हाँ, हम छी भङेरी! कखन की बाजि जाएब तकर कोनो ठेकान रहैत अछि? ताहि गप्प कैं कतहु एतेक महत्त्व देल जाइक!

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, 'सत्यं वद' 'धर्मं चर' कहयवाला त बहुत गोटे छथि। परन्तु अहाँ सन कहयवला एकटा अहीं मात्र छी। जे एकटा गप्प अहाँक सुनि लैत अछि से दोसर जोड़ने भेल फिरैत अछि। तैं जहिया सँ अहाँक गप्प छपल अछि, तहिया सँ लोक लालायित अछि जे खट्टर ककाक और-और गप्प कहिया बहराएत।

खट्टर कका बजलाह–एक बेर तों छपौलह त तेहन बिढ़ाड़ि उठल जे छौ मास धरि चलैत रहल।[1] आब फेर बवंडर उठैबाक इच्छा होइ छौह?

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कक्का, पंडित लोकनि जे सभ बजैत छथि तकर अहाँ ठीक उनटा कहैत छिऐक। तैं ओ लोकनि अहाँक नाम सँ हड़कैत छथि।

खट्टर कका बजलाह–हौ, की कहै छह! हम अपना स्वभावे सँ लाचार छी। जे बात बहुत गोटाक मुँह सँ सुनैत छिऐक से बिनु कटने हमरा रहले नहि जाइत अछि।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, किछु गोटे कहैत छथि जे अहाँ अपना तरंगमे एहि देशक संस्कृति कैं भसिया दैत छिऐक।

खट्टर कका हँसैत बजलाह–हौ बताह! एहि देशक संस्कृति की बताशा छैक जे हमरा भाङक लोटामे पड़ैत देरी गलि जैतैक? नखक्षत सँ कतहु पहाड़ ढहलैक अछि?

---

१. 'मिथिला-मिहिर'मे खट्टर कका कैं लऽ कऽ कइएक मास धरि मनोरंजक विवाद चलैत रहल। (१९५४, मइ सँ नवंबर धरि)

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, किछु गोटाक आक्षेप छैन्ह जे अहाँ पर पाश्चात्य रंग चढ़ल अछि।[1]

खट्टर कका भभा कऽ हँसि पड़लाह। बजलाह–हौ, हम धोती-अङ्पोछा बला आदमी। कहियो टाइ-टोप लगौने देखलह अछि?

हम–नहि।

खट्टर कका–हम आगिल देल राड़िक दालि खाइ छी। कहियो छुरी-काँटा सँ खाइत देखलह अछि?

हम–नहि।

खट्टर कका–हम कान पर जनउ चढ़ा, लोटा लऽ कऽ, मैदान जाइ छी। कहियो कागतक व्यवहार करैत देखलह–देखबह कोना? –सुनलह अछि?

हम–नहि।

खट्टर कका–तखन हम कथी सँ साहेब भेलहुँ? एहन एहन आलोचक कैं महाप्रणम्य देवता कऽ कऽ बूझक चाही।

हम कहलिऐन्ह–हुनकर कथ्य ई छैन्ह जे अहाँ केवल पाश्चात्य सभ्यताक समर्थक छी। परन्तु प्राच्य ओ पाश्चात्य–दुहूक समन्वय होमक चाही।

खट्टर कका तरंगि कऽ बजलाह–हौ, येह बात त हमरा बुझबामे नहि अबैत अछि। कोन प्रकारें समन्वय करय कहैत छह? आब सँ शिवजीक माथ पर 'सोडावाटर' ढारि दिऐन्ह? भगवानक नैवेद्यमे 'बिस्कुट' चढ़ा दिऐन्ह? भगवती कैं आँचरक बदला 'गाउन' ओढ़ा दिऐन्ह? कुल-देवता कैं 'लिपस्टिक' लगा दिऐन्ह? श्राद्धमे 'केक' लऽ कऽ पिंड दी? ब्राह्मण-भोजन करा कऽ हाथमे 'बिल' दऽ दिऐन्ह? जनउ धोबक हेतु 'लौंड्री' मे दऽ दिऐक? तोरा काकी कैं अङरेजीये समदाउनि गाबय कहिऐन्ह?

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, अहाँक मुँह सँ एहने गप्प सुनबाक हेतु आलोचको लोकनि कान पतने रहैत छथि।

तावत काकी एक थार लाल-पीयर आम नेने ओहि ठाम पहुँचि गेलीह और हमरा दुनू गोटाक बीचमे राखि देलन्हि। पात पर सरिसोक पीयर चटनी सेहो।

हमरा संकोच करैत देखि खट्टर कका बजलाह–हौ, आम सन अमृत फल कैओ छोड़य? एहन फल पृथ्वी पर दोसर छैक? देखह केहन सुन्दर उत्प्रेक्षा कैल गेल छैक!

> श्यामा जंबूः स्फुटितहृदयं दाडिमफलम्
> भयादन्तस्तोयं तरुशिखरजं लांगलिफलम्
> समाधत्ते शूलं हृदयपरितापं च पनसः
> समुद्भूते चूते जगति फलराजे प्रभवति।

१. मिथिला-मिहिरमे एक आलोचक खट्टर कका पर ई आक्षेप कैने छलथिन्ह।

"आमक उत्कर्ष देखि और-और फलक की हाल होइ छैन्ह? जामुनक मुँह कारी स्याह भऽ जाइ छैन्ह। अनारक छाती फाटि जाइ छैन्ह। नारिकेर पानि-पानि भऽ जाइ छथि। कटहरक हृदयमे शूल (नेढ़ा) पैसि जाइत छैन्ह।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका! अहूँ कैं देखि कऽ किछु गोटाक येह हाल भऽ जाइ छैन्ह।

खट्टर कका बजलाह–बेसी प्रशंसा नहि करह। आम खाह। ई गोपी थिकैक, ई मिठुआ, ई कर्पूरिया, ई मधुकुपिया। देखहौक, केहन विलक्षण सौरभ छैक!

हम आस्वादन करैत कहलिऐन्ह–वाह! एक सँ एक अपूर्व! जेहने अहाँक गप्प होइ अछि।

खट्टर कका हँसैत बजलाह–आइ बड्ड काव्य करैत छह! फेर किछु छपैतह की?

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, दस-बारह टा और नव नव गप्पक आज्ञा दियऽ।

खट्टर कका बजलाह–हौ, हम मदक्की लोक! कखन की बाजि जाइ छी से कि मन रहैत अछि?

हम–परन्तु हम त अहाँक एक-एक टा बात नोट कैने जाइ छी?

खट्टर कका–हौ बाबू, तखन त तोरा सँ डर मानक चाही। तोरा काकिओ कैं सावधान कऽ देबाक चाही। ऐ....कहाँ गेलहुँ?... सुनै छी?

हम–खट्टर कका, अहाँ कैं त सभ बातमे परिहासे रहैत अछि। हम शास्त्र-पुराण, धर्म-कर्म, स्वर्ग-नरक, पाप-पुण्य पर अहाँक दृष्टिकोण राखय चाहैत छी।

खट्टर कका सोभा लगबैत बजलाह–हौ, हमर कि कोनो स्थायी विचार रहैत अछि? जखन जे सूरमे चढ़ि गेल। ई रस-लहरी सभक हेतु थोड़बे होइ छैक? जिनका ओतेक रस नहि पचतैन्ह से विष-वमन करथुन्ह। छौ-मसिया नेना कैं यदि एक बाटी आमक गारा पिया दहौक त की हाल हैतैक?

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, अहाँ अपना दिस सँ त किछु बजितहि ने छी। सभमे शास्त्रक प्रमाण दैत छिऐक? तखन लोक अहाँ कैं किऐक दोष देत?

खट्टर कका–हौ, एहि देशक जानल नहि छौह?

> मिथ्या ब्रूयात्, प्रियं ब्रूयात्
> न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।

यदि हमरो घुमाफिरा कऽ बाजय अबैत त लोक बड़का विद्वान कऽ कऽ बुझैत। परन्तु हम त सोझ-सोझ कहि दैत छिऐक। तेँ बदनाम भऽ जाइ छी। स्पष्टवक्ताक कतहु गुजर होइ छैक?

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, एकटा बात कहू? अहाँ ई सभ भितरिया मन सँ कहैत छिऐक कि केवल लोक कैं हँसाबक हेतु?

खट्टर कका मालदहक कतरा खाइत बजलाह–आब तों हमर सभटा भेद एक्के दिनमे बुझि लेबह ? हौ, हम गंगेश ओ गोनू झा–दुहूक वंशज छी। एहि बात कें किऐक बिसरि जाइत छह ? ....तों हाथ किऐक बारि देलह ? एखन आमक बादशाह मालदह त पड़ले छौह। बिना सुमेरुक माला की ?

हम एकटा मालदह लैत कहलिऐन्ह–तखन आज्ञा दियऽ जे हम दोसर भाग छपाबी। परन्तु एहि बेर हम अहाँक असली नाम-गाम खोलि देब।

खट्टर कका बजलाह–अरे! एहन बात करबो जुनि करिहऽ। एहिठाम मेला लागि जाएत। घरमे जतबा चूड़ा-आम अछि से दुइए दिनमे निघटि जाएत। तोरा काकी कें चूल्हि फुकैत-फुकैत प्रलय हैतैन्ह।

हम कहलिऐन्ह–बेस, त आब आशीर्वाद दियऽ जे....

खट्टर कका वाम हाथें अपन भङ्घोटना हमरा माथ मे ठेकबैत बजलाह–हम आशीर्वाद दैत छी जे एहिबेर चुनल-चुनल गारि अहाँ कें सुनऽ पड़य। इहकनो सँ बेसी।

हम कहलिऐन्ह–ई त शाप भेल। आब उद्धार कहल जाओ।

खट्टर कका सरिसोक चटनी मुँह मे दैत बजलाह–उद्धार हैत जे जखन फेर हमरा दोसर सूर चढ़त त एहि तरंगक जबाबो लिखा देबौह। हौ, खट्टरक उत्तर खट्टरे दऽ सकैत छथि। गजानां पंकमग्नानां गजा एव धुरंधराः।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, से जौं करी, तखन त जयजयकार भऽ जाय! फूल, माला, आरती लऽ कऽ। और अहाँक संग हमरो।

खट्टर कका मुसकुराइत बजलाह–ई कोन भारी बात छैक ? दू चारि दिन नेओत दऽ कऽ खूब चटकार भोजन करा देह। और हमर बला बात सभ ककरो अनका बाजऽ कहोक। तखन देखह जे हम केहन धुरीं-धुरीं उड़ा दैत छिऐक!

हम कहलिऐन्ह–ताहिमे त देरी लागत। तावत.....

खट्टर कका बजलाह–चर्नी! छर्मो! किछु रमन-चमन त होय। परिहास-विजल्पितं सखे! बिना हास-परिहासक जीवन की ?

नवीन संस्करणक भूमिका

निवेदन

खट्टर कका विनोदी व्यक्ति छथि। हुनकर प्रत्येक बात विनोदपूर्ण होइ छैन्ह। बल्कि संपूर्ण जीवने विनोदमय बूझू।

खट्टर कका कें लोक अभिनव चार्वाक कहै छैन्ह। कारण जे हुनको सिद्धान्त छैन्ह–यावज्जीवेत् सुखं जीवेत्। सूर चढ़ै छैन्ह त स्वर्ग-नरक, आत्मा-परलोक, पुनर्जन्म-मोक्ष, धर्म-अधर्म, सभ कें भंगक तरंगमे बहा दैत छथि। वेद-पुराण, धर्मशास्त्र, तंत्र-मंत्र, ज्योतिष, आयुर्वेद–सभक धज्जी उड़ा दैत छथि। भगवानो सँ परिहास करबामे नहि चुकै छथि। पाखंडक खंडनमे ततबा रस भेटैत छैन्ह जे सामाजिक रूढ़ि या अंधविश्वास पर प्रहार करबाक हेतु सदा सोंटा नेने तैयार रहै छथि। तर्कक दावपेंच लगा कऽ ओ प्रतिपक्षी कें चित कऽ दैत छथि और बिनु 'हरदि चून' बजबौने नहि छोड़ै छथि।

किन्तु खट्टर कका शुष्क तार्किके टा नहि छथि। सरस साहित्यिको छथि। हुनकर बात-बातमे तेहन श्लेष, यमक, वक्रोक्ति आदिक चमत्कार भरल रहै छैन्ह जे श्रोता मुग्ध भऽ जाइ छथि। कोनो कोनो व्यंग्य त तेहन होइ छैन्ह जे–

अर्थो गिरामपिहितः पिहितश्च कश्चित्
सौभाग्यमेति मरहट्टवधूकुचाभः।
नांध्रीपयोधर इवातितरां निगूढ़ः
नो गुर्जरीस्तन इवातितरां प्रकाशः।

खट्टर ककामे तीक्ष्ण तर्क ओ मृदुल परिहासक सम्मिश्रण देखि संस्कृत कविक ई गर्वोक्ति स्मरण भऽ जाइछ–

येषां कोमलकाव्यकौशलकला लीलावती भारती
तेषां कर्कशतर्कवक्रवचनोद्‌गारेऽपि किं हीयते
यैः कान्ताकुचमंडले कररुहाः सानन्दमारोपिताः
तैः किं मत्तकरीन्द्रकुंभशिखरे नारोपणीयाः शराः!

जे जेहन रसज्ञ, तिनका खट्टर ककामे ततेक अधिक रस भेटतैन्ह।

खट्टर कका स्वच्छंद चिन्तन ओ बुद्धिविलासक प्रतीक थिकाह। सामान्यतः जाहि बात कें लोक ठीक कऽ कऽ बुझैत अछि, तकरा विलक्षण युक्ति सँ काटि, ओकर उनटा सिद्ध करबामे और अद्‌भुत बात कहि श्रोता कें चकित करबामे, हुनका बड्ड मन लगैत छैन्ह। एहि कलामे ओ तेहन प्रवीण छथि जे चुटकी बजबैत उनटे गंगा बहा दैत छथि। हँसी-हँसीमे तेहन मार्मिक बात कहि दैत छथिन्ह–

हास्यक पुट दैत तेहन सूक्ष्म नश्तर लगा दैत छथिन्ह—जे श्रोता तिलमिला उठैत छथि और खट्टर कका हुनका विस्मयविमूढ़ देखि मुस्कुरा उठै छथि। ई छैन्ह खट्टर ककाक विशेषता, जाहि सँ ओ लोक कें आकृष्ट करै छथि।

खट्टर ककामे एक गुण किंवा अवगुण छैन्ह जे ओ स्पष्टवक्ता छथि। धाख-संकोच वा लाइ-लपटाइ नहि रखै छथि। तेँ किछु गोटे हुनका पर ग्राम्यता वा अश्लीलताक दोषारोपण करैत छथिन्ह। परंच वैह यथार्थवादिता लऽ कऽ त खट्टर ककाक 'खट्टरत्व' छैन्ह। यदि भिन्न-भिन्न प्रसंग सँ ओहन-ओहन अंश हटा देल जाइन्ह, त ई तहिना हैत जेना ओलक चटनी सँ चुनि-चुनि कऽ हरियर मरचाइ ओ आदक खंड बहार कऽ देल जाय। अतएव हम खट्टर कका कें यथावत राखि देने छिऐन्ह। आब हुनक गप्प सुनू और रस लियऽ।

× × ×

खट्टर कका सर्वप्रथम एहि अभिनव रूपमे उपस्थित कैल जा रहल छथि।

प्रथम प्रवाहमे केवल बारह टा तरंग बहराएल रहैन्ह। दही चूड़ा चीनी सँ ब्रह्मानन्द धरि। द्वितीय प्रवाहमे बारह टा और तरंग बहरैलैन्ह।

एहि पुस्तकमे नव-पुरान मिला कऽ तीस टा तरंग छैन्ह। तीन टा परिशिष्टमे। पाठक ओही सँ प्रारंभ करथि त उत्तम। पहिनहि खट्टर कका सँ परिचित भऽ जैताह। अन्तमे खट्टर ककाक टटका गप्प अर्थात वर्तमान काल (वा अकाल ?) पर खट्टर ककाक विनोदपूर्ण विचार-लहरी छैन्ह, जे पाठकक विशेष रूप सँ मनोरंजन करतैन्ह।

नव-नव तरंग, यथा 'पुरातन सभ्यता', 'मिथिलाक संस्कृति', 'दर्शनशास्त्रक रहस्य' केर अतिरिक्त, पहिलुको तरंग सभमे ततेक परिवर्तन ओ परिवर्द्धन कैल गेल छैक जे ओहो सभ रस-मर्मज्ञ पाठक कें नवे जकाँ लगतैन्ह।

खट्टर ककाक कलेवर प्रायः तेवर पुष्ट भऽ गेलैन्ह। वेश-भूषामे सेहो आधुनिकता आबि गेल छैन्ह। खट्टर कका कें एहि आकर्षक रूपमे प्रस्तुत करबाक श्रेय 'भारती भवन'क उत्साही संचालक श्री मोहित मोहन बोस कें छैन्ह। हम समस्त मैथिली-साहित्य-प्रेमी समुदायक दिस सँ हुना धन्यवाद प्रदान करैत छिऐन्ह। एहि प्रकाशन कें सुंदर बनैबामे 'तपन प्रिंटिंग प्रेस'क कर्मठ संचालक श्री निशीथ कुमार बोस, मित्रवर अयोध्यानाथ सिंह ठाकुर तथा प्रियवर गोपेश जी जे रुचि नेने छथि, तदर्थ हम आभारी छिऐन्ह।

आशा अछि, खट्टर ककाक ई नवीन, परिष्कृत ओ परिवर्द्धित तरंगावली पाठक लोकनि कें और अधिक आनन्द प्रदान करतैन्ह।

—लेखक

रानीघाट, पटना
१८-९-१९६७

सूची

दही चूड़ा चीनी

खट्टर कका दलान पर बैसल भाङ घोंटैत छलाह। हमरा अबैत देखि बजलाह–हौं-हौं......ओम्हर मरचाइ रोपल छैक, घूमि कऽ आबह।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, आइ जयवारी भोज छैक, सैह सूचित करय आयल छी।

खट्टर कका पुलकित होइत बजलाह–वाह वाह! तखन सोझे चलि आबह। दु एकटा धङैये करतैक त की हैतैक?......हँ, भोजमे हैतैक की सभ?

हम–दही चूड़ा चीनी।

खट्टर–बस, बस, बस। सृष्टि मे सभ सँ उत्कृष्ट पदार्थ वैह थीक। गोरसमे सभ सँ मांगलिक वस्तु दही–अन्नमे सभक चूड़ामणि चूड़ा–मधुरमे सभक मूल चीनी। एहि तीनूक संयोग बुझह तँ त्रिवेणी-संगम थीक। हमरा त त्रिलोकक आनन्द एहिमे बुझि पड़ैत अछि। चूड़ा भूलोक! दही भुवर्लोक! चीनी स्वर्लोक!

हम देखल जे खट्टर कका एखन तरंग मे छथि। सभटा अद्भुते बजताह। अतएव काज अछैतो गप्प सुनबाक लोभें बैसि गेलहुँ।

खट्टर कका बजलाह–हम त बुझै छी जे एही भोजन सँ सांख्य दर्शनक उत्पत्ति भेल अछि।

हम चकित होइत पुछलिऐन्ह–ऐं! दही चूड़ा चीनी सँ सांख्य दर्शन! से कोना?

खट्टर कका बजलाह–एखन कोनो हड़बड़ी त ने छौह? तखन बैसि जाह। हमर विश्वास अछि जे कपिल मुनि दही चूड़ा चीनीक अनुभव पर तीनू गुणक वर्णन कऽ गेल छथि। दही सत्त्वगुण। चूड़ा तमोगुण। चीनी रजोगुण।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, अहाँक त सभटा कथा अद्भुते होइत अछि। ई हम कतहु नहि सुनने छलहुँ।

खट्टर कका बजलाह–हमर कोन बात एहन होइ अछि जे तों आनठाम सुनि सकबह?

हम–खटर कका, त्रिगुणक अर्थ दही चूड़ा चीनी, से कोना बहार कैलियैक ?

खट्टर कका–देखह, असल सत्त्व दहिएमे रहैत छैक, तेँ एकर नाम सत्त्व। चीनी गर्दा होइछ, तेँ रज। चूड़ा रुक्षतम होइछ, तेँ तम। देखै छह नहि, अपना देशमे एखन धरि 'तमहा' चूड़ा शब्द प्रचलित अछि!

हम–आश्चर्य! एहि दिस हमर ध्यान नहि गेल छल!

खट्टर कका व्याख्या करैत बजलाह–देखह, तमक अर्थ छैक अन्धकार। तेँ छुच्छ चूड़ा पात पर रहने आँखिक आगाँ अन्हार भऽ जाइ छैक। जखन उज्जर दही ओहि पर पड़ि जाइ छैक तखन प्रकाशक उदय होइ छैक। तेँ सत्त्वगुण कैँ प्रकाशक कहल गेलैक अछि। 'सत्त्वं लघु प्रकाशकमिष्टम्'। तेँ दही लघुपाकी तथा सभ कैँ इष्ट (प्रियगर) होइत अछि। चूड़ा कोष्ठ कैँ बान्हि दैत छैक। तेँ तम कैँ अवरोधक कहल गेल छैक। और बिना रजोगुणे त क्रियाक प्रवर्तन हो नहि। तेँ चीनीक योग बेत्रेक खाली चूड़ा दही नहि घोंटा सकैत छैक। आब बुझलहक ?

हम कहलिऐन्ह–धन्य छी खट्टर कक्का। अहाँ जे ने सिद्ध कऽ दी!

खट्टर कका बजलाह–देखह, सांख्यक मत सँ प्रथम विकार होइ छैक महत् वा बुद्धि। दही चूड़ा चीनी खैला उत्तर पेटमे फूलि कऽ पसरैत छैक। यैह महत् अवस्था थिकैक। एहि अवस्थामे गप्प खूब फुरैत छैक। तेँ महत् कहू वा बुद्धि–बात एक्के थिकैक। परन्तु एकरा हेतु सत्त्वगुणक आधिक्य होमक चाही अर्थात दही बेशी होमक चाही।

हम–अहा! सांख्य दर्शनक एहन तत्त्व दोसर के कहि सकैत अछि।

खट्टर कका बजलाह–यदि एहिना निमन्त्रण दैत रहह त क्रमशः सभ दर्शनक तत्त्व बुझा देबौह। त्रिगुणात्मिका प्रकृति द्रष्टा पुरुष कैँ रिझबैत छथि। एकर अर्थ जे ई त्रिगुणात्मक भोजन भोक्ता पुरुष कैँ नचबैत छथि। तेँ–नृत्यन्ति भोजनैर्विप्राः।

हम कहलिऐन्ह–परन्तु खट्टर कका! पछिमाहा सभ त दही चूड़ा चीनी पर हँसैत छथि।

खट्टर कका अङपोछा सँ भाङ छनैत बजलाह–हौ, सातु लिट्टी खैनिहार दधि-चिपटान्नक सौरभ की बुझताह! पश्चिमक जेहन माटि बज्जर, तेहने अन्न बजरा, तेहने लोको बज्र सन! अपना देशक भूमि सरस, भोजन सरस, लोको सरस! चूड़ा पृथ्वी तत्त्व। दही जल तत्त्व। चीनी अग्नि तत्त्व। तेँ कफ पित्त वायु–तीनू दोष कैँ शमन करबाक सामर्थ्य एहिमे छैक। देखह, अनादि काल

सँ दही चूड़ा चीनीक सेवन करैत-करैत हमरा लोकनिक शोणित ठंढा भऽ गेल अछि। तेँ मैथिल जाति कैँ आइ धरि कहियो युद्ध करैत देखलहक अछि ?

हम–खट्टर कका, कहाँ सँ कहाँ शङ चला देलहुँ! बीच-बीच मे तेहन मार्मिक व्यंग्य कऽ दैत छिऐक जे......

खट्टर कका–व्यंग्य नहि, यथार्थ कहैत छिऔह। देखह, भोजने सँ प्रकृति बनैत छैक। चाली माटि खा कऽ माटि भेल रहैत अछि। साँप बसात पीबि कऽ फनकैत अछि। साहेब सभ डबल रोटी खा कऽ फूलल रहैत अछि। मुर्गा खैनिहार मुर्गा जकाँ लड़ैत अछि। और हम सभ साग-भाँटा खा कऽ साग-भाँटा भेल छी। हमरा लोकनि भक्त (भात)क प्रेमी थिकहुँ, तेँ एक दोसरा सँ विभक्त रहैत छी। ताहू पर की त द्विदल (दालि)क योग भेले ताकय! तखन एक दल भऽ कऽ कोना रहि सकैत छी ?

हम–अहा! की अलंकारक छटा!

खट्टर कका–केवल अलंकारे नहि, विज्ञानो छैक। कोनो जातिक स्वभाव बुझबाक हो त देखी जे ओकर सभ सँ प्रिय भोजन की थिकैक ? देखह, बंगाली ओ पच्छाँहीक स्वभावमे की अन्तर छैक ? ......जैह भेद रसगुल्ला ओ लड्डूमे छैक। रसगुल्ला सरस ओ कोमल होइछ, लड्डू शुष्क ओ कठोर। रसगुल्ला पूर्वक प्रतीक थीक, लड्डू पश्चिमक। तेँ हम कहैत छिऔह जे ककरो जातीय चरित्र बुझबाक हो त ओकर प्रधान मधुर देखी।

हम–खट्टर कका, अपना सभक प्रधान मधुर की थीक ?

खट्टर कका–अपना सभक प्रधान मधुर थीक खाजा। देहातमे मिठाइ कहने ओकरे बोध होइछ। खाजा ने रसगुल्ला जकाँ स्निग्ध होइछ, ने लड्डू जकाँ ठोस। तेँ हमरा लोकनिमे ने बंगालीवला स्नेह अछि, ने पंजाबीवला दृढ़ता। ......तखन खाजामे प्रत्येक परत फराक-फराक रहैत छैक, से अपनो सभमे रहितहि अछि।

हम–वाह! ई त चमत्कारक गप्प कहल! मौलिक!

खट्टर कका–ऐंठ वा बासि बात हम बजितहिँ ने छी।

हम–वास्तवमे खट्टर कका! अहाँ ठीक कहै छी। गाम-गाममे गोलैसी, घर-घर मे पट्टीदारी झगड़ा। कचहरीमे पागे पाग देखाइत अछि। से किऐक ?

खट्टर कका–एकर कारण जे हमरा लोकनि आमिल मरचाइ बेसी खाइत छी। तीख चोख भेले ताकय। तीतोमे कम रुचि नहि। नीम-भाँटा, करैल, पटुआक झोर......। हौ, जैह गुण कारणमे रहतैक सैह ने कार्यमे प्रकट हैतैक!

कटुता, अम्लता ओ तिक्तता हमरा लोकनिक अंग बनि गेल अछि। स्वाइत हम सभ अपनामे एतेक कटाउझ करैत छी!

हम–परन्तु बंगाली सभमे एतेक प्रेम किऐक?

खट्टर कका भाङमे एक आँजुर चीनी मिलबैत बजलाह–ओ सभ प्रत्येक वस्तुमे मधुरक योग दैत छथि। दालिओ मीठ, तरकारिओ मीठ, माछो मीठ, चटनिओ मीठ! तखन कोना ने माधुर्य रहतैन्ह? अपनो जातिमे एहिना मीठक व्यवहार होमऽ लागय तखन ने! तैं हम कहैत छिऔह जे अपना जातिमे जौं संगठन करबाक हो त मधुरक बेसी प्रचार करह। केवल सभा कैने की हैतौह? –'भोज ने भात ने, हरहर गीत!' गाम सँ दुगोला दूर करबाक हो त 'दही चूड़ा चीनी लवण कदली लाडू बरफी'क भोज करह।

ई कहि खट्टर कका भाङक लोटा उठौलन्हि और दू-चारि बुंद शिवजीक नाम पर छीटि घट्टघट्ट कय सभटा पीबि गेलाह।

चाणक्यक जन्म-भूमि

खट्टर कका कैं ओहि दिन भाङ घोटैत घोटैत पुरातत्त्वक सनक सवार भऽ गेलैन्ह। दूर-दूरक बात फुरय लगलैन्ह। हमरा देखितहि सोर कैलन्हि–हौ, कहाँ जाइ छह? एम्हर आबह।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, एकटा जरूरी काज अछि।

खट्टर कका–जरूरी काज पाछाँ कऽ हैतैक। एखन एकटा टटका आविष्कार कैल अछि से सुनने जा।

हमरा बैसला उत्तर खट्टर कका बजलाह–हमर अनुमान अछि जे चाणक्य मैथिल रहथि।

हम–एहि अनुमानक आधार की?

खट्टर कका भाङ घोरैत बजलाह–सभ सँ पहिल आधार हुनक जीवनी। देखह, विवाह करय जाइत रहथि, पैरमे कुश गड़ि गेलैन्ह। आन रहैत त दोसर बाटे जा कऽ विवाह कऽ अबैत। परन्तु ई तिल-कुश गंगाजल लऽ कऽ संकल्प कैलन्हि जे आब कुशक अस्तित्वे निर्मूल कऽ देब। विवाह त गेल कोठी-कान्ड पर। ई कुशक जड़ि उखाड़ि उखाड़ि मट्ठा पटाबय लगलाह। और अन्तमे जड़िमूल सँ ओकरा साफे कऽ देलन्हि। हौ, हम पुछैत छिऔह जे एहन रगड़ियल, मैथिल छोड़ि कऽ और के भऽ सकैत अछि? राजाक भोजमे अपमान भेलैन्ह। आब 'जावत नन्दवंशक विनाश नहि करब तावत टीक नहि बान्हब!' ई प्रतिज्ञे कहि रहल अछि जे हुनक जन्म तिरहुतमे भेल छलैन्ह। और एहि ठामक प्रधान गुण जे थिकैक कूटनीति, तकरा बलें ओ नन्दवंश कैं 'लेपभागभुजस्तृप्यन्ताम् स्वाहा' कऽ देलन्हि। हौ, एहन ब्रह्मतेज दोसर कोन जातिमे भेटतौह?

हम–परन्तु बहुत गोटाक मत छैन्ह जे चाणक्य काश्मीरी ब्राह्मण छलाह।

खट्टर कका विगड़ि कऽ बजलाह–कथमपि नहि। काश्मीरी गोर होइत अछि और चाणक्य कारी छलाह। दोसर, जे काश्मीरमे साँपक बेसी उपद्रव नहि। यदि चाणक्यक घर ओहि देशमे रहितैन्ह त 'ससर्पे च गृहे वासो मृत्युरेव न संशयः' ई नहि लिखितथि।

हम–परन्तु......

खट्टर कका–परन्तु की ? चाणक्य-नीति-दर्पण मिथिलामे प्रारंभे सँ नेना कैं अभ्यास कराओल जाइत छैक। तकर कारण की ? ई हमरा लोकनिक खास अपन वस्तु थीक। जेना शङ्कर मिश्रक–

बालोऽहं जगदानन्द न मे बाला सरस्वती।
अपूर्णे पञ्चमे वर्षे वर्णयामि जगत्त्रयम्॥

ई श्लोक मिथिलाक घर-घरमे नेना कैं कंठस्थ कराओल जाइत छैक।

हम–परन्तु चाणक्यक श्लोक त आनो-आनो प्रान्तमे प्रचलित छैन्ह।

खट्टर कका–रहौन्ह, परन्तु जड़ि मिथिलेमे छैन्ह। एहि ठाम त चाणक्यक नामो हमरा सभक भाषामे घुलि मिलि कऽ भाववाचक शब्द बनि गेल अछि। देखह, मैथिलीमे एकटा शब्द प्रयुक्त होइछ–चानकि! जेना, ''हुनका तेहन चानकि (शिक्षा) भेटि गेलैन्ह जे आजीवन नहि बिसरतैन्ह।'' वैह 'चानकि' कालक्रमे 'चौंकि' बनि गेल। जेना ''अहाँ कैं एहि बातक चौंकि (ध्यान) रहक चाही।'' ई दूनू शब्द और कोनो टा भाषामे नहि भेटतौह। एहि सँ की सिद्ध होइत अछि ?

हम देखल जे खट्टर कका आब भाषाविज्ञानक धारामे बहल जा रहल छथि। परन्तु तरंगोमे जे बात कहि रहल छथि से ततेक असम्बद्ध नहि।

खट्टर कका बजलाह–सोचैत छह की ? श्लोकक गंधे सँ बुझा जाइत अछि जे चाणक्य मैथिल छलाह। देखह,

हस्ती हस्तसहस्रेण शतहस्तेन वाजिनः

हाथी देखितहि हजार हाथ दूर पड़ा जाइ। घोड़ा देखितहि सै हाथ फराक हटि जाइ। हौ, एहन वीर हमरा लोकनि कैं छोड़ि और के भऽ सकैत अछि ?

हम–खट्टर कका, ई त भारी कटाक्ष कैल!

खट्टर कका भाङमे चीनी दैत बजलाह–हौ, हमर त अनुमान अछि जे चाणक्य खौंटी बिकौआ वंशक छलाह।

हम–से कोना ?

खट्टर कका–देखह; चाणक्य कहै छथि–

आत्मानं सततं रक्षेत् दारैरपि धनैरपि।

'टका लऽ कऽ हो, स्त्री लऽ कऽ हो,अपन रक्षा सदैव करक चाही।' एहन परिपक्व विचार भलमानुस छोड़ि और किनका मनमे उदित भऽ सकै छैन्ह ?

हम–खट्टर कका, तखन चाणक्यक वासस्थान कतय मानल जाय ?

खट्टर कका–एकर उत्तर चाणक्य स्वयं दऽ गेल छथि–

धनिकः श्रोत्रियो राजा नदी वैद्यस्तु पंचमः।
पंच यत्र न विद्यन्ते वासं तत्र न कारयेत्॥

एहि श्लोक सँ सूचित होइछ जे चाणक्य सोतिपुराक वासी छलाह। किऐक त श्रोत्रिय अन्यत्र भेटब दुर्लभ। अपना देशमे चनौर–चानपुरा–चनका, ई तीन टा गाम हुनका नामसँ मेल खाइत अछि। संभव जे एही तीनूमे कतहु हुनक डीह होइन्ह।

हम–परन्तु ओ अपना देशक छलाह तकर अन्यान्य प्रमाण ?

खट्टर कका भाङ घोटैत बजलाह–प्रमाण एक दू नहि, अनेक। देखह, चाणक्य कहै छथि–नराणां नापितो धूर्तः। अपना देशक नौआ तेहन चलाक होइत अछि जे गोनूझा कैं पर्यन्त छका देलक। पुनः एक ठाम ओ लिखै छथि ''भृत्यश्चोत्तरदायकः।'' एहन उतराचौरी करयवला खवासो तिरहुतेमे भेटत। चाणक्यक उक्ति छैन्ह–'वस्त्रपूतं पिबेज्जलम्।' औखन अंगपोछा सँ छानि कऽ जल पीबाक प्रथा मिथिलेमे अछि। और प्रमाण लैह–'निमन्त्रणोत्सवाः विप्राः।' एहन उत्सव और कोन देशमे भेटतौह ? 'शतं विहाय भोक्तव्यम्।' भोजनक प्रति एहन अगाध प्रेम और कोन जातिमे छैक ? 'न विप्रपादोदकर्दमानि' ......नेओतल ब्राह्मणक हेराओल पानि सँ पिच्छड़ आँगन औखन धरि अपने देशक शोभा बढ़बैत अछि! 'आतिथ्यं शिवपूजनं प्रतिदिनं मिष्टान्नपानं गृहे।' एहिमे जेना कोनो मैथिलक आत्मा स्पष्ट बाजि रहल हो। घरमे महादेवक पूजा, मधुर भोजन, बीच-बीचमे पाहुनक सत्कार! एहि सँ बेसी और की चाही ? मिष्टान्न ओ महादेवक प्रेम मिथिला सँ बाढ़ि और कतय भेटत ? एक प्रकारें बूझू त मिथिलामे 'म' अक्षरैक माहात्म्य अछि! माछ, मखान,मधुर, महादेव.......

हम–खट्टर कका, ई त खूब मिलाओल! परन्तु एकटा शंका हमरा मनमे उठैत अछि। मैथिल त मुख्यतः शाक्त होइत छथि। तखन मिथिलामे एतेक महादेवक मन्दिर किऐक ? गाम-गाममे शिवालय; घर-घरमे चतुर्दशीक व्रत, प्रत्येक काज तिहारमे महेशवानी ओ नचारी! एतेक त कोनो देवताक नहि होइत छैन्ह। एकर कारण की ?

खट्टर कका पुनः नोसि लैत बजलाह–एकर कारण जे महादेव मैथिल छलाह।

हम–ऐं! महादेव ?

खट्टर कका–हँ, साक्षात महादेव। पार्वतीपति, दक्ष प्रजापतिक जमाय।

हम–ओ मैथिल छलाह, तकर प्रमाण की ?

खट्टर कका लाल-लाल आँखि सँ हमरा दिस तकैत बजलाह–प्रमाण ? भाङ-धतूर खाइते छलाह, भोलानाथ छलाहे, ससुर-जमायमे झगड़ा भेबे कैलैन्ह।

तथापि तों और प्रमाण जोहैत छह ! की एतवा लक्षण मैथिलत्व सिद्ध करबाक हेतु पर्याप्त नहि ?

हम—धन्य छी खट्टर कका ! बीच-बीचमे तेहन शड चला दैत छिऐक जे......

खट्टर कका—हमर शड घोड़ाक होइत अछि जाहिमे तह नहि देल जाय। हँ, की कहैत छलिऔह ?

हम—यैह जे महादेव मैथिल......

खट्टर कका—हँ, हमरा त बूझि पड़ैत अछि जे महादेव झा पाँजि हुनके नाम पर चलल छैन्ह। दड़िभंगा जिलोक नाम त हुनके कारण पड़ल अछि।

हम—से कोना ?

खट्टर कका—महादेवक द्वार पर भाङक अकाय जंगल रहैन्ह ताहि सँ हुनक वास-भूमि 'द्वारभंगा' वा दड़िभंगा बनि गेल। औखन धरि प्रायः एक्को टा घर एहि जिलामे नहि भेटतीह जकरा आगाँ वा पाछाँ भाङक गाछ नहि होइक।

हम—परन्तु खट्टर कका ! यदि हमरा लोकनि सरिपहुँ महादेवजीक वंशज छी त हुनकरवाला गुण हमरा सभमे किऐक ने अछि ?

खट्टर कका लोटा भरि भाङ गट्ट-गट्ट पीबि गेलाह। तखन बजलाह—गुण त अछिए। देखह; महादेव त्रिलोचन छलाह। हमरो लोकनि त्रिलोचन छी। तेसर आँखि सँ केवल अनकर छिद्र टा सुझैत अछि। महादेव नीलकण्ठ रहथि। हमरो लोकनिक कंठमे केहन विष रहैत अछि से दू गोटाक विवाद भेला पर प्रत्यक्ष देखि लैह। महादेवक छाती पर साँप लोटाइत रहैन्ह। हमरो लोकनि कँ स्वजातीयक अभ्युदय देखि छाती पर साँप लोटाय लगैत अछि। महादेव त्रिशूलधारी रहथि हमरो लोकनि कँ अपना भाइबन्धुक उत्कर्ष देखि मस्तकशूल, हृदयशूल ओ उदरशूल—ई तीनू प्रकारक शूल उत्पन्न भऽ जाइत अछि। महादेव सभ सँ एकौर भऽ कऽ रहैत छलाह। हमरो लोकनि फुट्ट भऽ कऽ रहैत छी। महादेवक कपारमे अर्द्धचन्द्र छलैन्ह। हमरो लोकनिक कपारमे जतय जाउ अर्द्धचन्द्रे लिखल रहैत अछि।

हम—अहा ! की अलंकारक छटा ! अहाँ त खट्टर कका ! रूपक बान्हि दैत छिऐक ! परन्तु वास्तवमे हमरा लोकनिक स्वभाव एहन किऐक अछि ?

खट्टर कका—ई सीताजीक शाप थिकैन्ह—

> रणे भीताः गृहे शूराः परस्परविरोधिनः।
> कुलाभिमानिनो यूयं मिथिलायां भविष्यथ॥

हमरा लोकनिक समस्त वीरता अपनेमे लड़याक हेतु होइत अछि। हमरा सभ कँ संगठित करब तहिना असंभव जेना तीन टा जीवित ढाबुस कँ एक पाँतीमे बैसाएब।

हम—तखन एकर उपाय ?

खट्टर कका—उपाय यैह जे हम कऽ रहल छी।

हम—अर्थात ?

खट्टर कका—अर्थात भाङक सेवन।

हम—अहाँ कँ त सभ बातमे हँसिए रहैत अछि।

खट्टर कका—हँसी नहि करैत छिऔह। सरिपहुँ कहैत छिऔह। देखह सीताजीक इष्ट रामचन्द्र। रामचन्द्रक इष्ट महादेव। महादेवक इष्ट भाङ। तेँ हिनके सेवन कैला सन्ताँ ओहि शाप सँ उद्धार भऽ सकैत अछि। यदि सभ इनारमे भाङ पड़ि जाय, त आइए मेल भऽ जाय। हमरा लोकनि बेसी बुद्धिमान छी तेँ आपसमे लड़ैत छी !...... हौ, कोनो अनठेकनगर बात त ने बहराएल अछि ? तालु सुखा रहल अछि।

हम—खट्टर कका, दू टा बाङक दुसी नेने आउ ?

खट्टर कका—हौ, 'ब' नहि,'भ'। 'ब' अक्षर बुड़िबक होइत अछि—बूढ़, बताह, बकलेल, बहीर, बाकल......। 'भ' भागवन्त होइ अछि—भोज-भात, भार-दोर, भोग-राग और यैह......

ई कहैत खट्टर कका अवशिष्ट भाङ उठा कऽ पीबि गेलाह।

माछक महत्त्व

ओहि दिन माछ पर शास्त्रार्थ बजरि गेल। बात भेलैक जे खट्टर कका पोखरि सँ स्नान कैने चल अबैत रहथि। हम पुछलिऐन्ह–की खट्टर कका, माछ खाइ ?

खट्टर कका बजलाह–अवश्य, अवश्य। कोन माछ छौह ? नेयो छौह कि बाड़ी सँ नेने चलू ?

हम कहलिऐन्ह–केवल सिद्धान्तक दृष्टिएँ पूछल अछि।

खट्टर कका बजलाह–तखन महा अनर्थ कैल अछि। भोजन काल ककरो पुछिऐक जे की, दही खाइ ? और पाछाँ कहिऐक जे केवल सिद्धान्तक दृष्टिएँ पूछल अछि। ई कोनो नीक बात थीक ? जौं माछक गप्प करबाक हो त सिद्धान्तक दृष्टिएँ करक चाही।

हम–एकटा वैष्णवजी आएल छथि से सभ लोक कैं कंठी बान्हय कहैत छथिन्ह।

खट्टर कका–पहिने हुनक इष्टदेवता रामचन्द्र कहियो कंठी बन्हलथिन्ह ? देखह बियाहमे–

'मीन पीन पाठीन पुराने, भरि-भरि भार कहारन आने'

महाराज रामचन्द्र कैं त मृगयो सँ प्रेम छलैन्ह। क्षत्रिय भऽ कऽ शिकार नहि करितथि, मांस नहि खैतथि त कि बकरीक दूध पीबि कऽ रहितथि ?

"अन्नशाक-प्रियः शूद्रो वैश्यो दुग्धदधिप्रियः।
मत्स्यमांस-प्रियः क्षत्री ब्राह्मणो मधुरप्रियः॥"

और सीताजी त आजन्म सौभाग्यवती रहलीह। माछ किऐक छोड़ितथि ?

हम–वैष्णवजीक सिद्धान्त छैन्ह जे माछ ककरो नहि खैबाक चाही।

खट्टर कका–तखन की खैबाक चाही ? काँट ?

हम–ओ माछ कैं अखाद्य बुझैत छथि।

खट्टर कका–से किएक ?

हम–ओहिमे जीव छैक तैं।

खट्टर कका–जीव त वनस्पतिओमे होइत छैक। तखन माटि खाथु।

हम–अन्न और फलक दोसर बात होइत छैक।

खट्टर कका–दोसर बात की होइ छैक ?

हम–ओकर चैतन्य प्रस्फुटित नहि रहैत छैक।

खट्टर कका–से त अंडोमे नहि रहैत छैक।

हम–वैष्णवजीक कथ्य छैन्ह जे मनुष्य स्वभावतः निरामिषभोजी थीक।

खट्टर कका–कदापि नहि। यदि मनुष्य स्वभावतः निरामिषभोजी रहैत त माछ कैं देखितहि मालजाल जकाँ सूँघि कऽ छोड़ि दैत। खैबाक चाही कि नहि, ई प्रश्ने नहि उठैत।

हम–तखन अपनेक की विचार ?

खट्टर कका–विचार दैह जे हमरा लोकनि भेड़ी-बकरीक श्रेणी मे नहि छी।

हम–अर्थात मांसाहारी छी, शाकाहारी नहि ?

खट्टर कका नोसि लेलन्हि, तखन कहय लगलाह–एक ठाम पहुनाइमे गेलहुँ त पुछलक जे दही खाएब कि दूध ? हम उत्तर देलिऐक–'दही-दूधमे परस्पर विरोधक सम्बन्ध त छैक नहि। दो त दूनू आनि सकैत छी।' तहिना मांस और शाकमे त कोनो विरोध छैक नहि। हमरा लोकनि उभयभोजी प्राणी थिकहुँ। दूध माछ दूनू मे कोनो बाँतर नहि। झिंगो बेस, झिंगुनिओ बेस।

हम–वैष्णवजी दाँतक रचना सँ सिद्ध करैत छथि जे मनुष्य वानर जकाँ शुद्ध फलाहारी जीव थीक। मांस खैबा योग्य दाँत हमरा लोकनि कैं अछिए नहि।

खट्टर कका–अछिए नहि, तखन खाइ छी कोना ? हम जे माछ खाइ छी से कि बिलाड़िक दाँत पैंच लऽ कऽ ? जहाँ धरि दाँतक प्रश्न छैक, वैष्णवजी कैं चिन्ता करबाक कोनो प्रयोजन नहि। हँ, वेदाँतक भऽ गेला उत्तर त लोक वेदांती बनिए जाइत अछि।

हम–परन्तु शास्त्रक दृष्टिएँ त मांसाहार......

खट्टर कका–परम विहित। 'यज्ञार्थं पशवः सृष्टाः।' कोन स्मृतिक प्रमाण चाहैत छह ? मनु याज्ञवल्क्य आदि त खैबा योग्य माछक नामो गना गेल छथि।

हम–स्मृतिक बात जाय दियऽ। जीव-दयाक दृष्टि सँ विचार करू।

खट्टर कका–हम जौं माछ पर दये करबैक ताहि सँ की ? बगुला त दया नहि करतैक। चिल्होड़ि त नहि छोड़तैक। ओकरा खायबला बहुत जन्तु छैक। हमरा मुँह सँ छूटि कऽ सोंस-घरियारक मुँहमे जाएत। एहि सँ माछक की उपकार हैतैक ?

हम–ओकर उपकार होउक वा नहि, किन्तु हमर अपन उपकार त हैत।

खट्टर कका–हमर उपकार की हैत ?

हम–माछ-मांस उत्तेजक पदार्थ होइत अछि। ओ खैला सँ मनमे नाना प्रकारक विकार उत्पन्न होइत छैक। ताहि सभ सँ बाँचब।

खट्टर कका–तखन त सुन्दरी युवती सँ विवाह नहि कय लोक अस्सी वर्षक कुरूपा वृद्धा सँ विवाह करय, जकरा देखि कऽ मनमे कोनो विकार नहि उठैक।

हम–वैष्णवजीक आशय छैन्ह जे माछ तामस भोजन थीक–हानिकारक।

खट्टर कका–आब तों आयुर्वेद पर ऐलाह। तखन निघंटु उठा कऽ देखह जे रोहु, कतरा, माङुर आदि मत्स्यक की गुण छैक।

हम–किन्तु खटाइ-मरचाइ आदि पड़बाक कारण माछ गुरुपाकी भोजन भऽ जाइत अछि।

खट्टर कका–तखन त सभ सँ लघुपाकी वस्तु होइत अछि साबुजदाना। सैह उसीनि कऽ दूनू साँझ खैबाक चाही ?

हम–वैष्णवजी एकटा और युक्ति दैत छथि। माछक उत्कट गंधे सिद्ध करैछ जे ओ मनुष्यक स्वाभाविक खाद्य नहि। लोक जर्वदस्ती तेल-मसालाक योग दय ओकरा खैवा योग्य बना लैत अछि। माछमे यथार्थ स्वाद रहितैक त लोक ओहिना किऐक ने खाइत ?

खट्टर कका–तखन वैष्णवजी ओहिना काँच ओलक टोंटी किऐक नहि चिवबैत छथि ? एतेक विन्यास कऽ कऽ जे हलुआ-पूड़ी बनबैत छथि से सोझे गहूम किऐक ने फाँकि जाइत छथि ? तेल-मसाला केवल माछे मे पड़ैत छैक कि तरकारी मात्रमे ? तखन सभ पित्त माछे पर किऐक ?

हम–वैष्णवजीक कथ्य छैन्ह जे माछ अपवित्र स्थानमे रहैत अछि, अपवित्र वस्तु खाइत अछि, तैं अखाद्य थीक।

खट्टर कका–तखन वैष्णवजी मधु किऐक खाइ छथि ? मधुमाछी कहाँ-कहाँ जाइत अछि, कथी-कथीपर बैसैत अछि, तकरा देह सँ निचोड़ि कऽ जे मधु बहराइत अछि, से जखन हविष्य, त माछ त भला जलक जीव थीक।

हम–तखन अहिंसामे अहाँ कैं विश्वास नहि अछि ?

खट्टर कका–कोना रही ? संसारमे यैह देखबामे अबैत अछि जे 'जीवो जीवस्य भक्षणम्'। प्रकृतिक नियमे छैक जे छोटका जीव कैं बड़का जीव खा जाइत छैक। इचना कैं पोठा, पोठा कैं सौरा, सौरा कैं बोआर, बोआर कैं तिमि, तिमि कैं तिमिंगल...... यैह 'मत्स्य न्याय' सर्वत्र दृष्टिगोचर होइत अछि। सृष्टिक चक्रे हिंसा पर चलैत छैक। यदि भक्षक अपना भक्ष्य सँ प्रीति करत त खाएत की ?

हम–परन्तु एहि देशमे त 'अहिंसा परमो धर्मः'......

खट्टर कका–यैह 'धर्मः' त हमरा लोकनि कैं चौपट कय देलक ! पृथ्वी पर वैह जाति जीवित रहि सकैत अछि जकरामे भक्षण करबाक सामर्थ्य छैक।

यदि अहिंसाक अर्थ होइक भक्ष्य बनि कऽ रहब, त सभ सँ बड़का अहिंसक थिक जनेरक गाछ, जे ककरो किछु नहि बिगाड़ैत छैक। जकरा मनमे अबैक छोपि लेओ। हौ बाबू, हम त एहन जनेर बन'क हेतु तैयार नहि छी।

हम–वैष्णवजीक तात्पर्य छैन्ह जे कोनो जीव कैं निरर्थक क्लेश नहि पहुँचायक चाही।

खट्टर कका–हम कहाँ क्लेश देबऽ जाइत छिऐक ? परन्तु जखन झोर बनि कऽ आगाँमे आबि जाइत अछि, तखन ओकरा छोड़ने की लाभ ? ओकरा कर्ममे त जे क्लेश सहबाक से भइए गेलैक, तखन अपनो आत्मा कैं क्लेश पहुँचावी, एहिमे कौन बुद्धिमानी ?

हम–परन्तु अपना देशक जलवायु, संस्कृति ओ परम्परा कैं देखैत......

खट्टर कका–माछ खाएब परमावश्यक। खास कऽ मिथिला ओ बंगालक आर्द्र भूमिमे। एही द्वारे मैथिल ओ बंगाली कुशाग्रबुद्धि होइत छथि। कंठी बन्हने बुद्धि कुंठित भऽ जाइत छैक। तैं अधिकांश १११ नम्बरवाला संठी सन भेल रहैत छथि। यदि सभ ओहने भऽ जाय त बड़का-बड़का पोखरिक अधमन्ना रोहु की हैत ? धार ओ चौर सभमे जे एतेक माछ होइत अछि से व्यर्थ भऽ जाएत। देश कैं कतेक भारी आर्थिक क्षति पहुँचत ! लाखो गोटाक जीविका बन्द भऽ जैतैक। मलाह कथी पर चाँचर उठौताह ? मलाहिन कथी पर मूड़ाक माला पहिरतीह ? कवि लोकनि की खा कऽ रस भरल पदावलीक रचना करताह ? माछ गरीबक आहार ओ अमीरक शृंगार थीक। ई छूटि गेने अनेको सनातनी प्रथा टुटि जाएत। दही-माछक भार बंद भऽ जाएत। पितृ-कर्ममे माछ-मांसक भोज उठि जाएत। लोक की देखि कऽ यात्रा करत ? स्त्रीगण जितियामे मड़ुआक रोटी कथी संग खैतीह ? तखन सधवा ओ विधवामे भेद की रहत ? लोक बाड़ीमे जमीरी नेबो किऐक रोपत ? सरिसो आनिल लऽ कऽ की करत ? माछ तरबा काल जे दिव्य सुगन्ध वायुमण्डलमे उड़ि पड़ोसियाक जी सिहबैत अछि, से सौरभ कतय भेटत ? समाज कैं तेहन भारी धक्का लगतैक जे मैथिल संस्कृतिक आधारशिला चूर्ण भऽ जाएत। दड़िभंगा बोधगयामे परिणत भऽ जाएत। और हमरा लोकनि बुद्धू (बुद्धदेवक अनुयायी) बनि जीवन यापन करय। तखन भगवतीक पूजा के करतैन्ह ? भगवान ने करथु जे मिथिला कैं एहन दिन देखय पड़ैन्ह !

खट्टर कका हाथ जोड़ि कऽ प्रार्थना करय लगलाह–हे भगवती ! भगत लोकनि रामचन्द्रजीक प्रिय निषाद कैं विषादक सिन्धुमे डुबावय चाहैत छथिन्ह। हुनका लोकनि कैं सुबुद्धि दिऔन्ह।

पुनः हमरा दिस ताकि कऽ बजलाह–हम छी दुद्धा शाक्त। परम्परा सँ मीनावतारक उपासक। हमर पित्ती मट्टर कका एकटा भजन गबैत रहथि तकर किछु पद सुना दैत छिऔह।

हरि हरि! जनम किऐक लेल?
रोहु माछक मूड़ा जखन पेट नहि भेल?
मोदिनीक पलइ तरल जीभ पर ने देल!
घृत महँक भुजल कवइ कठमे ने गेल!
लाल-लाल झिंगा जखन दाँत तर ने देल!
माडुरक झोर सँ चरणामृत ने लेल!
माछक अंडा लय जँ नैवेद्य नहि देल!
माछे जखन छाड़ि देब, खाएब की बकलेल!
सागेपात चिबैबाक छल त जन्म किऐ लेल! हरि हरि०

हम–धन्य छी, खट्टर कका! एकादशीओ कैं छोड़ैत छिऐक कि नहि?

खट्टर कका–हौ, हमर शास्त्र चलय त एकादशीक कोन कथा, एकादशा पर्यन्त कैं नहि छोड़ी। हमरा पतड़ाने त दुइए टा तिथि अछि। जाहि दिन माछ भेटल से पूर्णिमा, जाहि दिन नहि भेटल से अमावस्या।

हम–अलबत्त! शाक्त हौ त अहाँ सन।

खट्टर कका–परन्तु हौ जी, हम केवल शाक्ते नहि छी। थोड़ेक-थोड़ेक सभ पटलमे छी। पञ्चामृत लेबऽ काल वैष्णव। भगवतीक प्रसाद काल शाक्त। शिवजीक बूटी बेर शैव।

ई कहि खट्टर कका बूटीक आराधनामे तत्पर भऽ गेलाह।

आयुर्वेद

खट्टर कका–भाङ घोंटइत रहथि। हमरा संग एक व्यक्ति कैं देखि पुछलथिन्ह–ई के थिकाह?

हम कहलिऐन्ह–ई थिकाह वैद्यजी।

खट्टर कका हुनका हाथमे एक पुस्तक देखि पुछलथिन्ह–ई कोन पोथी थीक?

वैद्यजी–भावप्रकाश।

खट्टर कका–अहा, की सुन्दर काव्य थीक–भावप्रकाश!

वैद्यजी विस्मित होइत बजलाह–भावप्रकाश आयुर्वेदक प्रामाणिक ग्रन्थ थिकैक। तकरा अपने काव्य कहैत छिऐक?

हम पुछलिऐन्ह–खट्टर कका, अहाँ कैं भाङ त ने लागल अछि?

खट्टर कका–भाङक पानि पसबैत बजलाह–भाङ त हमरा सदिखन लागले रहैत अछि। नहि तँ गोनूझाक भिन्न बयान किऐक रहैत? हमरा त आयुर्वेदो काव्ये बुझना जाइत अछि।

हम–से कोना?

खट्टर कका (वैद्य सँ)–कहू त, ज्वरक उत्पत्ति?

वैद्य–'दक्षापमानसंक्रुद्धः रुद्रनिःश्वाससंभवः।' अर्थात जखन दक्ष प्रजापतिक ओहि ठाम महादेवजीक अपमान भेलैन्ह तखन जे ओ खिसियाकऽ फुफकार छोड़लन्हि, ताहि फुफकार सँ जे रोग उत्पन्न भेल सैह ज्वर थीक।

खट्टर कका (हमरा सँ)–आब कहह। कोनो डाक्टरक मगज मे एहन बात आबि सकैत छैन्ह? एही द्वारे हम आयुर्वेद कैं काव्य कहैत छिऐक।

वैद्य–परन्तु आयुर्वेदमे जे एतेक रास द्रव्य-गुणक विवेचना भरल छैक?

खट्टर कका–ताहूमे वैह अलंकार। कहू त, पारा की थीक?

वैद्य–'शिवाङ्गात् प्रच्युतं रेतः पतितं धरणीतले।' शिवजीक धातु पृथ्वी पर खसि पड़लैन्ह, सैह पारा थीक।

खट्टर कका–तैं उज्जर! तैं चिक्कन! तैं रसराज। और गन्धक की थीक?

वैद्य– 'श्वेतद्वीपे पुरा देव्याः क्रीडन्त्याः रजसाप्लुतम्
दुकूलं तेन वस्त्रेण स्नातायाः क्षीरनीरधौ
प्रसृतं तद्रजस्तस्माद् गन्धकः समुदीरितः ।'

अर्थात एक समय श्वेतद्वीपमे क्रीड़ा करैत-करैत देवी स्खलित भऽ गेलीह। तखन जाकऽ क्षीर समुद्रमे स्नान कैलन्हि। ओहिमे नूआ सँ धोखरि कऽ जे रज खसलैन्ह, सैह गन्धक थीक।

खट्टर कका–तेँ ललीन! तेँ गन्धयुक्त! तेँ ओकरे टा मे पारद कें शोधबाक सामर्थ्य। की औ वैद्यजी! (हमरा दिस ताकि) कहह, एहन सरस कल्पना कोनो साइंस (विज्ञान) मे भेटि सकैत छौड?

हम–वास्तवमे खट्टर कका ! आब त हमरो बूझि पड़ैत अछि। आयुर्वेदमे एहि तरहक बात कोना ऐलैक?

खट्टर कका–हौ, एहि देशक जलवायुक कण-कणमे रसिकता सन्हियाएल छैक। जहाँ विज्ञान कनेक माथ उठौलक कि तुरन्त कविता-कामिनी आबि कऽ छाती पर सवार भऽ जाइत छथिन्ह। बूझह त अपना देशक विज्ञान कैं खा गेल काव्य। 'काव्येन गिलितं शास्त्रम्।' आयुर्वेद कैं काव्य तेना भऽ कऽ ग्रसित कैने छैक जे भावप्रकाश ओ भामिनी-विलासमे विशेष अन्तर नहि। एही द्वारें हम वैद्य लोकनि कैं कवि कहैत छिऐन्ह। कवियोमे साधारण कवि नहि, कविराज!

हम–वाह! खट्टर कका ! ई त नवीने कहल। वैद्य कैं कविराज किऐक कही से कारण हमरा नहि भेटैत छल।

खट्टर कका–हमरा सँ त सभटा नवीने सुनबह। महादेव कैं वैद्यनाथ किऐक कहल जाइ छैन्ह से जनैत छह?

हम–नहि।

खट्टर कका–तखन सुनह। महादेवक श्वास सँ ज्वर बहराएल जाहि सँ वैद्य लोकनिक जीविका चलैत छैन्ह। हुनके धातु सँ पारा बहराएल जाहि सँ वैद्य लोकनि मकरध्वज बनबैत छथि। हुनके बूटी (भाङ) सँ वैद्य लोकनि मदनानन्द मोदक बना रुपयामे तीन अठन्नी बनबैत छथि। तखन महादेव जौं वैद्यनाथ नहि कहाबथि, त के वैद्यनाथ कहाबय?

हम–धन्य छी, खट्टर कका।

खट्टर कका–हौ, बूझह त वैद्यो एक प्रकारक महादेवे होइ छथि। हुनके जकाँ भस्मक प्रेमी। बूटीक पाछाँ बेहाल। हुनका कंठमे विष छैन्ह, हिनका

पुड़ियामे विष रहैत छैन्ह। दूनू, हर वा संहारकर्त्ता। ओ भस्मासुरक संहार कैलन्हि, इहो भस्मक रोगक संहार करैत छथि। ओ त्रिपुरक अन्त कैलन्हि। ई कतेक पुरक अन्त करै छथि, से नहि जानि।

वैद्यजी खिसियाकऽ बजलाह–परन्तु वैद्य रक्षो त करैत छथि। आयुर्वेदमे एक सँ एक चमत्कारी रस भरल छैक।

खट्टर कका–सभ सँ बाढ़ि शृंगार रस।

हम–एँ! आयुर्वेदमे शृंगार रस!

खट्टर कका–किछु एहन-ओहन? धरि ठेहुन। की औ वैद्यजी! लोलिम्बराज दाहक केहन रसगर उपचार देखबैत छथि!

'हारावलीचंदनशीतलानां सुगन्धपुष्पाम्बरशोभितानाम्।
नितम्बिनीनां सुपयोधराणामालिङ्गनान्याशु हरन्ति दाहम्॥'

और सुनू–

'जघनचक्रचलन्मणिमेखला सरसचन्दनचन्द्रविलेपना।
वनलतेव तनुं परिवेष्टयेत् प्रबलदाहनिपीड़ितमङ्गना॥'

हम–खट्टर कका, कनेक अर्थो बुझाकऽ कहियौक।

खट्टर कका–तों भातिज थिकाह। बेशी खोलिकऽ कोना कहिऔह? आशय त बुझिए गेल हैबहक। आब कहह, एहि रसिकताक धार कैं की नाम देबक चाही? चिकित्साशास्त्र अथवा कोकशास्त्र?

वैद्य–परन्तु आन रोगक एहन उपचार देखाउ त?

खट्टर कका–महाराज! घबराइ छी किऐक? सर्दिओक उपचार तेहने छैक। भावप्रकाशमे देखियौक–

'तं स्तनाभ्यां सुपीनाभ्यां पीवरोरुर्नितम्बिनी।
युवतिर्गाढ़मालिंगेत् तेन शीतं प्रशाम्यति॥'

विशेषण सभ देखैत छिऐक? एहन उपचार कोनो डाक्टरी ग्रन्थमे भेटत? जाड़ो मे युवती! गर्मो मे युवती! ई युवती की भेलीह, चाहक प्याली भेलीह। औ महाराज! जखन युवतिओ औषधे वर्गमे छथि तखन और-और दवाइक संग हुनको आलमारीमे किऐक नहि रखैत छिऐन्ह?

हम–खट्टर कका, एहन-एहन नुसखा आयुर्वेदमे कोना आबि गेलैक?

खट्टर कका भाङक पत्ती छनैत बजलाह–हौ, बात ई छैक जे आयुर्वेद मुख्यतः राजा लोकनिक हेतु बनल अछि, जनिक एकमात्र व्यायाम छलैन्ह नखक्षत करब। मन कैं उत्तेजना देबय पर कवि रहथिन्ह, तन कैं उत्तेजना देबय पर कविराज। एक रस द्वारा, दोसर रसायन द्वारा। काव्य और आयुर्वेद,

दुहू मसिऔत एक्के दरबारमे पोसाएल अछि। तेँ जैह रंग जगन्नाथराज पर छैन्ह, सैह लोलिम्बराज पर। कालिदासक ऋतुसंहार पढ़ू वा सुश्रुतक ऋतुचर्या–एक्के बात थीक।

वैद्य–से कोना?

खट्टर कका–देखू–

'कस्तूरीवरकुंकुमागरुयुतामुष्णाम्बुशीचं तथा।
स्निग्धं स्त्रीषु सुखं गुरूष्णवसनं सेवेत हेमन्तके॥'

ई हेमन्तचर्या ककरा हेतु छैक? जे केसर-कस्तूरी-चर्चित कामिनीक झुंड सँ घेरल रहय। हमरा सभक हेतु त 'अग्रहणे' नाम सार्थक। आयुर्वेद राजा-महाराजक वस्तु थिकैक। तेँ ऋतुचर्याक अर्थ जे कोन समयमे कोन रूपेँ भोग करी।

वैद्य–एकर अभिप्राय छैक जे भोग कैँ मर्यादाक सीमामे राखल जाय।

खट्टर कका सोँटा कुंडी कैँ थोइत बजलाह–एही सीमा लऽ कऽ त आचार्य लोकनिमे घोंघाउंज मचैत छैन्ह। एक गोटा कहैत छथि–

'त्रिभिस्त्रिभिरहोभिर्हि रमेयत् प्रमदां नरः।'

अर्थात तीन-तीन दिन पर रमण करबाक चाही।

दोसर आचार्य कैँ एतबा सँ सन्तोष नहि। कहैत छथि–

'प्रकामं तु निषेवेत मैथुनं शिशिरागमे।'

जाड़कालामे कोन हिसाब-किताब! जतेक मन हो ततेक बेर रमण करी।

तेसर आचार्य हुनको सँ टपैत छथि–

नित्यं बाला सेव्यमाना नित्यं वर्धयते बलम्।

जाड़काला की और गर्मी की? प्रतिदिन बालाक सेवन करक चाही।

चारिम आचार्य समयोक तालिका बना देत छथि–

'शीते रात्रौ दीवा ग्रीष्मे वसन्ते तु दिवानिशि।
वर्षासु वारिदध्वान्ते शरत्सु सरसस्मरः।'

जाड़क रातिमे, गर्मीक दिनमे, वसन्त ऋतुमे राति वा दिन कोनो बेर, वर्षाऋतुमे जखन मेघक गर्जन हो, शरदृऋतुमे जैखन इच्छा हो, तैखन रमण कर्त्तव्य थीक।

पाँचम आचार्य हुनको सँ बेशी गुरुघंटाल बहराइत छथि–

'निदाघशरदोर्बाला हिता विषयिणां मता।
तरुणी शीतसमये प्रौढ़ा वर्षावसन्तयोः।'

गर्मी ओ शरदमे बाला (१६ वर्ष धरिक), जाड़कालामे तरुणी (३२ वर्ष पर्यन्तक), और वर्षा तथा वसन्त ऋतुमे प्रौढ़ा (३२ वर्ष सँ ऊपरवाली) पथ्य

होइत छथि। आब ई तीन-तीन टा 'सेट' प्रतिवर्ष राखल जाय तखन ने ऋतुचर्याक पालन हो। ई केवल राजा-महाराजक हेतु संभव छैन्ह, जनिका उद्यानमे बारहो मास बदरीफल सँ लय श्रीफल पर्यन्त विद्यमान रहैत छैन्ह। तेँ हम कहैत छिऔह जे आयुर्वेद रोगशास्त्र नहि, भोगशास्त्र थीक। बूझह त आयुर्वेदक जन्मे एही निमित्त भेल छैक।

वैद्य–अहाँ जे ई कहै छी तकर की प्रमाण?

खट्टर कका–प्रमाण आयुर्वेदक इतिहासे।

'भार्गवश्च्यवनः कामी वृद्धः सन् विकृतिं गतः।
वीर्यवर्णस्वरोपेतः कृतोऽश्विभ्यां पुनर्युवा॥'

जखन वृद्ध च्यवन भोग करबामे असमर्थ भऽ गेलाह तखन आदिवैद्य अश्विनीकुमार रसायनक जोर सँ हुनका पुनः युवा बना देलथिन्ह। जेना आदिकवि कैँ क्रौंच पक्षीक मैथुनेच्छा सँ काव्यक प्रेरणा भेटलैन्ह, तहिना आदिवैद्य कैँ वृद्ध मुनिक भोग-तृष्णा सँ आयुर्वेदक प्रेरणा भेटलैन्ह। एक अनुष्टुप छंदक आविष्कार कैलन्हि, दोसर च्यवनप्राशक। तहिया सँ आयुर्वेदक विकास एही दृष्टिएँ होमय लागल जे रतिमल्लताक संग्राममे राजाक विजयपताका फहराइत रहैन्ह। राजाक ध्वजा-भंग नहि होइन्ह से देखवा पर राजमंत्री रहथिन्ह, ध्वज-भंग नहि होइन्ह से देखबा पर राजवैद्य रहथिन्ह।

हमरा मुसकुराइत देखि खट्टर कका बजलाह–हँसी नहि करैत छिऔह। राजा लोकनि कैँ जीवनमे दुइएटा वस्तु सँ त प्रयोजन रहैन्ह। आहार ओ विहार। तेँ वैद्य लोकनि बूझह त दुएटा वस्तु बनाबय पर रहथि–पाचक कि मोदक। भोजन-शक्ति कैँ उद्दीप्त करबाक हेतु क्षुधाग्निसंदीपन। भोगशक्ति कैँ उद्दीप्त करबाक हेतु कामाग्नि-संदीपन। तेसर वस्तु सँ प्रयोजने की? ओ लोकनि निश्चिन्त भय कुमारिकासव पान कैल करथि।

खट्टर कका भाङ घोटैत बजलाह–हौ, राजा लोकनि कैँ एतबे त काज रहैन्ह। नित्यप्रति वैह दिनचर्या। कहाँ धरि सकताह? तेँ बेचारे वैद्यलोकनि राति-दिन वाजीकरणाक पाछाँ बेहाल रहथि। एक सँ एक स्तम्भनवटी, वानरी-गुटिका, कामिनी-विद्रावण......एही बातक 'रिसर्च' मे समस्त बुद्धि खर्च होमय लागल।

हम–की औ वैद्यजी! अहाँ नहि किछु बजैत छी!

खट्टर कका–बजताह की? हिनको त वैह सभ रटाओल गेल छैन्ह। एक आचार्य केहन खीर बनौने छथिन्ह जे–

'भुक्त्वा हृष्यति जीर्णोऽपि दश दारान् व्रजत्यपि।'

बूढ़ो खाथि त दश टा प्रमदाक मानमर्दन कऽ सकथि।

दोसर आचार्य तेहन चूर्ण बनबैत छथिन्ह जे–

'एतत्समेतं मधुनावलीढ़ं, रामाशतं सेवयतीव षण्ढः।'

नपुंसको फाँकि जाथि त एक सै कामिनीक दर्प चूर्ण कऽ सकथि–

द्रव्योगुणक जे अनुसंधान भेल अछि से मुख्यतः एही दृष्टि सँ। देखह, निघंटुकार अवरख दऽ की कहैत छथि–

'तारुण्याढ्यं रमयति शतं योषितां नित्यमेव।'

अर्थात एकरा जोर सँ नित्य एक सै स्त्री सँ संभोग कैल जा सकैत अछि! जेना स्त्रीक भोगे जीवनक चरम लक्ष्य होइक और तकरे साधन उपयोगिताक मानदंड! कनेक विचारि कऽ देखह, जे नित्य एक सै बेर भोग करत से दोसर काज कोन बेर करत? ओ टहरत कतेक दिन? तेँ राजा लोकनि कैं तुरन्त क्षय धऽ लेन्ह, और वैद्य लोकनि ओकरा कहथिन्ह राजरोग! आब तोंही कहह, एहन शास्त्र कैं आयुर्वेद कहक चाही अथवा आयुर्मेद?

वैद्य–परन्तु आनो आन रोगक निदान ओ चिकित्सा त आयुर्वेदमे छैक।

खट्टर कका–छैक! परन्तु ताहूमे तेहन-तेहन मुरखाहा टोना भरल छैक जे चिकित्सामे विचिकित्सा (संशय) भऽ जाइत छैक।

वैद्य–से कोना? एकोटा दृष्टान्त दियऽ।

खट्टर कका भाङमे सौंफ-मरीच दैत बजलाह–वन्ध्यारोगक चिकित्सा लियऽ–

'पुष्योद्धृतं लक्ष्मणायाः मूलं दुग्धेन कन्यया।

पिष्टं पीत्वा ऋतुस्नाता गर्भं धत्ते न संशयः॥'

ऋतुस्नाता स्त्री पुष्य नक्षत्रमे उखाड़ल लक्ष्मणाक जड़ि कैं कुमारि कन्या सँ दूधमे पिसवाकऽ पिबथि त निश्चय गर्भ धारण करथि, ताहिमे सन्देह नहि। आचार्य कैं सन्देह नहि छैन्ह, परंच हमरा अवश्य अछि। प्रथम प्रश्न त ई उठैत अछि जे गर्भ धारण करैवाक शक्ति कथी मे छैक? लक्ष्मणाक जड़िमे? अथवा पुष्य नक्षत्रमे? अथवा कुमारि कन्याक हाथमे? अथवा तीनूक योगमे? एहि प्रयोग कैं वैद्यक कही? वा ज्योतिष? अथवा तंत्र? अथवा तीनूक खीचड़ि?

वैद्य–परन्तु एहनो-एहनो उपचार त छैक, जाहिमे नक्षत्रक बन्धन नहि छैक?

खट्टर कका–ई छैक! जेना–

'पत्रमेकं पलाशस्य पिष्ट्वा दुग्धेन गर्भिणी।

पीत्वा पुत्रमवाप्नोति वीर्यवन्तं न संशयः॥'

पलाशक एकटा पात दूधमे पीसि कऽ पीबि लेला उत्तर गर्भिणी कैं निश्चय पुत्र होइन्ह, सेहो साधारण नहि, वलवान! ओ, हम कहैत छी, जौं बलवान पुत्रक प्राप्ति एतेक सुगम छैक त डंका पीटि कऽ प्रचार करू जे ई भारतवर्षक आविष्कार थीक और सम्पूर्ण संसारमे एहि वस्तु कैं खिरा कय देशक गौरव वढ़ाउ। और यदि ई फूसि थीक त आइए एहि वचन कैं काटि कऽ आयुर्वेद सँ बहार करू। एहन-एहन मूर्खता, पाखंड ओ धूर्ततावला बात जौं आयुर्वेदमे भरल रहत, त कोन वैज्ञानिक एकर आदर कऽ सकैत अछि?

क्रोध सँ खट्टर ककाक आँखि लाल भऽ गेलैन्ह। ओ जोर सँ भाङ रगड़य लगलाह। थोड़ेक कालमे गोला तैयार भऽ गेलैन्ह।

हम हुनका शान्त करवाक उद्देश्य सँ कहलिऐन्ह–खट्टर कका! ठीक कहै छी। एहि देशमे अन्धपरम्परा बड्ड छैक। कोनो शास्त्र चलल कि तुरन्त क्षेपकक भरमार होमय लागि जाइत छैक। जकरा मनमे ऐलैक से दूटा श्लोक जोड़ि कऽ घुसिया देलक। और वैह कालक्रमे प्रमाण वनि जाइत अछि।

खट्टर कका लोटामे अङपोछा लगा भाङ घोरैत बजलाह–से नहि होइतैक त आयुर्वेदक प्रामाणिक ग्रन्थमे कतहु एहन-एहन श्लोक पाओल जाइत?

'कृष्णवर्णाश्वपुच्छस्य सप्तकेशेन वेणिका।

तो वध्वा च गले दन्तकड्गडीं हन्ति मानवः।'

कारी रंगक घोड़ाक नाङड़िमे सँ सातटा केशक लट वनाकऽ नेनाक गरमे वान्हि दिऐक त दाँत कटकटाएव दूर भऽ जाइक! ई वात जौं कोनो डाक्टर सुनय त कतेक हँसत? परन्तु एखन धरि आयुर्वेदक आचार्य लोकनि ई सभ श्लोक पढ़बैत छथि और आयुर्वेदक विद्यार्थी लोकनि घोंटि जाइत छथि। एहि सँ बेसी उपहासक वात और की भऽ सकैत अछि?

खट्टर कका भाङमे चीनी मिलबैत बजलाह–आन देशमे चिकित्साक विकास वैज्ञानिक प्रणाली पर भेल छैक। परन्तु एहि देशमे त सभ बात गुपचुप रीति सँ होइ छैक। जे केओ शास्त्रक परीक्षा करय चाहैत अछि, तकरा नास्तिक कहि कऽ तिरस्कार कैल जाइत छैक। तेँ जहाँ डाक्टरी विद्या आइ उन्नतिक शिखर पर पहुँचि गेल अछि, तहाँ आयुर्वेद एखन धरि प्रदरान्तक रसमे डूबल अछि। जहाँ आइकाल्हुक सर्जन धन्वन्तरिक कान कतरि रहल अछि, तहाँ वैद्य लोकनि मरिचादि मलहम सँ आगाँ नहि बढ़ि सकलाह अछि।

हम–वास्तव मे अपना शास्त्रक पुनः परिष्कार होमक चाही। की औ वैद्यजी! अहाँ लोकनि एहि दिस किऐक ने ध्यान दैत छिऐक?

खट्टर कका लोटामे भाङ घोरैत बजलाह–'गद' नाम रोगक थिकैक। तकरा अंधाधुंध हनन करबाक काज जे राति-दिन करैत छथि से एहि दिस कोना कऽ ध्यान देताह? ओतेक समय कहाँ छैन्ह? शास्त्रक भार-वहन सँ अवकाश भेटैन्ह तखन ने?

हम देखल जे वैद्यजी अप्रतिभ भेल छथि। हुनक तोषार्थ बजलहुँ–खट्टर कका! अहाँ आइ वैद्य पर लागि पड़लिऐन्ह! परन्तु बेचारे कैं राजकीय आश्रय प्राप्त नहि छैन्ह। की करथु?

खट्टर कका व्यंग्यपूर्वक बजलाह–हँ! एक बेर राजकीय आश्रय भेटलैन्ह त हजारो वर्ष धरि मुसलीपाक ओ चोपचीनीक मोदक बनबैत रहलाह। आब पुनः राजकीय सहायता भेटतैन्ह त पाक ओ चीनीक गोली बनौताह।

एकाएक खट्टर ककाक ध्यान वैद्यजी पर गेलैन्ह। ओ सकदम्म भेल बैसल छलाह। ई देखि खट्टर ककाक 'मूड' (धारा) बदलि गेलैन्ह। बजलाह–हौजी! और जे कहह, वैद्य लोकनि पाचक धरि बेस चटकार बनबैत छथि। लवणभास्कर! हिंग्वष्टक! दाड़िमाष्टक! एक सँ एक स्वादिष्ट! एहन-एहन वस्तु डाक्टरीमे कहाँ पायी! तैं वैद्य सँ हमरा मित्रता रहैत अछि। जखन पाचक खा कऽ पानि पिबैत छी त वैद्यक सभटा दोष बिसरि जाइत अछि। और दोसर दवाइक त हमरा प्रयोजने नहि पड़ैत अछि। जखन वैद्यनाथेक बूटी राधने छी, तखन वैद्यक कोन नेहोरा?

ई कहि खट्टर कका भाङक लोटा ऊपर अलगौलन्हि और किछु छिटका शिवजीक नाम पर दय घट्-घट् सौंसे लोटा चढ़ा गेलाह।

रामायण

खट्टर कका रामनवमीक हेतु फलाहारक ओरिआओन करैत रहथि। हम पुछलिऐन्ह–आइ पुरना पोखरि पर रामलीला छैक। चलब कि ने?

खट्टर कका बजलाह–तोरा लोकनि छौंड़ा-माड़र छह। तमाशा देखह गऽ। बूढ़-सूढ़ कैं एहि सभ सँ कोन प्रयोजन?

हम–से किऐक, खट्टर कका? एहिमे त सभ कैं जैबाक चाही। मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्रजीक लीला छैन्ह। ओ एक सँ एक आदर्श देखा गेल छथि।

खट्टर कका–हँ, से त देखाइए गेल छथि। कोना अबला पर पराक्रम देखाबी। कोना स्त्री पर तीर छोड़ी। कोनो स्त्रीक नाक-कान काटि ली। कोनो स्त्री कैं जंगलमे छोड़ि दी। बुझह त स्त्रीएक हत्या सँ रामक वीरता प्रारम्भ होइत छैन्ह। और स्त्रीएक हत्या सँ अन्तो होइत छैन्ह। जीवनमे एतबे त काज कैलन्हि।

हम–परन्तु......

खट्टर कका–परन्तु की? असलमे बूझह त हुनका आदिए सँ नीक शिक्षा नहि भेटलैन्ह। विश्वामित्र सन गुरु भेटलथिन्ह, जे ताड़काक वध सँ श्रीगणेश करौलथिन्ह। नहि त अबला पर कतहु क्षत्रियक बाण छुटय? एहिमे विश्वामित्रक दोष छैन्ह। परन्तु विश्वामित्रक त सभ टा बात उनटे होइन्ह। ब्रह्माक सृष्टि कैं उनटौलन्हि, पाणिनिक व्याकरण कैं उनटौलन्हि, वर्णाश्रमधर्म कैं उनटौलन्हि। तखन यदि नीति-मर्यादा कैं उनटौलन्हि त से कोन आश्चर्य!

हम–खट्टर कका, रामचन्द्रजी न्यायक मर्यादा देखा गेल छथि। एही न्यायक हेतु सीता समान पत्नीयो कैं बनबास देबामे कुंठित नहि भेलाह।

खट्टर ककाक मुँह तमतमा गेलैन्ह। बजलाह–हौ, न्याय कि थिकैक जे ककरो कहि देला पर ककरो फाँसी चढ़ा दी? न्याये करबाक छलैन्ह त वादी-प्रतिवादी दुहू कैं राजसभामे बजबितथि, दुहू पक्षक वक्तव्य सुनि, न्याय-सभाक जे निष्पक्ष निर्णय होइतैन्ह से सुना दितऽथिन्ह। परन्तु ई सभ नहि कैलन्हि नहि। चुपचाप जंगलमे पठवा देलथिन्ह। सेहो की, त छल सँ। ई कोन आदर्श भेलैन्ह? एक साधारण प्रजा कैं जतबा अधिकार भेटक चाही सेहो सीता महारानी कैं नहि भेटलैन्ह!

हम–परन्तु हुनका त प्रजारंजनक आदर्श देखैबाक रहैन्ह......

खट्टर कका–फूसि बात। अयोध्याक प्रजा ई कथमपि नहि चाहैत छल। तेँ रातोराति चोरा कऽ रथ हाँकल गेल। और लक्ष्मण त सभमे हाजिर। शूर्पनखाक नाक काटह, त चाकू लऽ कऽ तैयार! सीता कैँ वनमे धऽ अबहुन, त रथ लऽ कऽ तैयार! भोर भेने प्रजा कैँ खबरि भेलैक त हाहाकार मचि गेल। सम्पूर्ण अयोध्या क्रन्दन करय लागि गेल! परन्तु रामचन्द्र अपना जिद्दक आगाँ प्रजाक नेहोरा सुनबे कहिया कैलन्हि? अपना वनवासक समयमे प्रजाक कोन तोष रखलन्हि जे सीताक वनवासमे रखितथि?

खट्टर कका मखान छोड़बैत बजलाह–मानि लेह, जौं अयोध्याक प्रजा एक स्वर सँ ई कहितैन्ह जे सीता कैँ राज्य सँ निर्वासित कय दियौन्ह तथापि हिनक अपन कर्त्तव्य की छलैन्ह? जखन ई जनैत छलाह जे महारानी निर्दोष थिकीह, अग्निपरीक्षामे उत्तीर्ण भऽ चुकलि छथि–तखन संसारक कहनहि की? ई अपना न्याय पर अटल रहितथि। यदि प्रजा-विद्रोहक आशंका बूझि पड़ितैन्ह त वरु पुनः भरत कैँ गद्दी पर बैसाय दुनू प्राणी वनक बाट धरितथि। तखन आदर्श-पालन कहबितैन्ह। परन्तु राजा राम केवल राज्ये टा बुझलन्हि, प्रेम नहि। सीता त अपन पत्नीधर्मक आगाँ संसारक साम्राज्य तुच्छ बूझि कऽ ठोकरा दितथि, परन्तु रामचन्द्र पतिधर्मक आगाँ अयोध्याक मुकुट नहि छोड़ि सकलाह!

हम–खट्टर कका, बूझि पड़ै अछि, सीताक वनवास सँ अहाँ कैँ बड्ड क्षोभ अछि।

खट्टर कका–कोना ने हो? सीताक जन्म विरोगे गेल! बेचारी कैँ कहियो सुख नहि! कहाँ-कहाँ रने-वने स्वामीक संग फिरलीह। और जखन सुखक बेर ऐलैन्ह त स्वामी दूधक माछी जकाँ फराक कय देलथिन्ह। वनमे त–हाय सीता! हाय सीता! हुनका हेतु आकाश-पाताल एक कैल गेल। समुद्र पर पुल बान्हल गेल। और से सीता ऐलीह त घरमे रहय नहि पौलन्हि! स्याइत लोक कहैत अछि जे पछिम भर कन्या नहि देबक चाही।

हम देखल जे खट्टर ककाक आँखिमे नोर भरि ऐल छैन्ह। ओ कनेक काल क्षुब्ध भऽ गेलाह। पुनः कहय लगलाह–सीता सन देवीक एहन करुण अन्त! ओ भरि जन्म राम कैँ सेवलन्हि। हुनके तोषार्थ आगि पर्यन्तमे कूदि पड़लीह। परन्तु ओहि सर्वश्रेष्ठ सतीक प्रति हुनका लोकनिक केहन व्यवहार भेलैन्ह? आठम मासमे घर सँ निकालि बाहर कऽ देलथिन्ह। एहन बेइज्जती सँ त कंठ दबा कऽ मारि दितऽथिन्ह से नीक! बेचारी मिथिलाक कन्या छलि। सी अक्षर बाजयवाली नहि, तेँ। दोसरा ठामक रहितैन्ह त बुझा दितैन्हि। हौ, हम पुछैत छिऔह, जौं सम्बन्धे तोड़बाक छलैन्ह त बापक घर जनकपुर पठा दितऽथिन्ह। ओहन घोर जंगलमे कोना पठाओल गेलैन्ह? एहन निष्ठुरता पछिमहे सँ हो। बलिहारी कही ओहन हृदय कैँ। बेचारी कैँ एहि पृथ्वी पर न्यायक आशा नहि रहलैक त पाताल प्रवेश कऽ गेलि। जाहि माटिक कोखि सँ बहराइलि ताहीमे विलीन भऽ गेलि। विश्वक इतिहासमे आइ धरि एहन अन्याय ककरो संग नहि भेलैक अछि! स्याइत पृथ्वी फाटि गेलीह।

हम सान्त्वना देबाक निमित्त कहलिऐन्ह–खट्टर कका, असलमे ओ धोबी-धोबिनियाँ फसादक जड़ि भेल।

खट्टर कका लाल-लाल आँखि सँ हमरा दिश तकैत बजलाह–हम तोरा सँ पुछैत छिऔह जे कोनो धोबी कैँ अपना घरमे झगड़ा होइक, ओ रुसि कऽ गदहा पर सँ खसि पड़य, त कि हम तोरा काकी कैँ नैहर पठा देबैन्ह? हम राजा रहितहुँ तँ ओकरा धरबा मङबितहुँ, और दू-चारि सटका लगवा कऽ पुछितिऐक–की रौ नढ्ढा! छोट मुँह, खोट बात! तों अपना बहु कैँ सीता सँ परतर देमय चललैं अछि! कनेक अपनो बहु कैँ आगिमे पैसय त कह। कहाँ राजा भोज, कहाँ भोजवा तेली! ......परन्तु रामचन्द्र कैँ त सदाय छोटके लोक सँ बेसी संग रहलैन्ह। निषाद-मलाह, शबरी-भिल्लनी, जटायु-गिद्ध, भालु-वानर–एही सभक बीच त रहलाह। नीक लोकक संगति कहाँ भेलैन्ह? तखन धोबीक बात कोना ने सुनथु? बाप नौड़ीक बात पर अपना वनवास देलथिन्ह, अपने धोबीक बात पर स्त्री कैँ वनवास देलन्हि। हुनका वंशमे सोलकन्हेक युक्ति चलैत छलैन्ह। घरमे मंथरा, बाहरमे दुर्मुख!

हम–खट्टर कका, नीतिक रक्षार्थ......

खट्टर कका हमरा डँटैत बजलाह–नीति नहि, अनीति। जखन क्षत्रिय-धर्मक आदर्श देखैबाक छलैन्ह तखन बालि कैँ ओना गाछक ओट सँ किऐक मारलथीन्ह? आमने-सामने लड़ि कऽ मारितथिन्ह। ओहि बेर 'कालहु डरै न रन रघुवंशी' बला वचन कहाँ गेलैन्ह? यदि मर्यादाक रक्षा करबाक छलैन्ह त वैह अनीति करबाक कारण सुग्रीवो कैँ किएक नहि दंड देलथिन्ह? विभीषण कैँ किऐक नहि मारलथिन्ह? प्राणदंड देलथिन्ह ककरा त बेचारा शम्बूक कैँ जे चुपचाप सात्त्विक वृत्ति सँ तपस्या करैत रहय।

हम–परन्तु मर्यादा पुरुषोत्तम कैँ......

खट्टर कका–तों मर्यादा-पुरुषोत्तम कहुन्ह, परन्तु हमरा त हुनका रस अगुताहे नहि भेटैत अछि। जंगलमे हरिणक पाछाँ की दौड़लाह? सीताक वियोगमे गाछ धऽ धऽ कऽ की कनलाह? कहाँ त सुग्रीव सँ घुरछीसोहार

मित्रता, और जहाँ बेचारा कैं सीताक खोजमे दु-चारि दिन देरी भेलैक कि लगले धनुषबाण लऽ कऽ तैयार! ने समुद्रक पूजे करैत देरी, ने ओकरा पर प्रत्यंचे करैत देरी! और जखन लक्ष्मण कैं शक्तिबाण लगलैन्ह त रणभूमिमे विलाप करय लगलाह। एहन अधीरता कतहु लोक कैं शोभा देलकैक अछि? ताहूमे क्षत्रिय कैं?

हम–खट्टर कका, ओ मनुष्यक अवतार लऽ कऽ ई सभ लीला देखौने छथि। तैं हेतु......

खट्टर कका किशमिशक काठी विछैत बजलाह–असलमे बुझह त रामक दोष नहि छैन्ह। हुनक बापे अगुताह रहथिन्ह। महाराज दशरथक सभटा काज त तेहने भेल छैन्ह। शिकार खेलाय गेलाह। घाट पर शब्द सुनलन्हि। चट दऽ तीर छोड़ि देलन्हि। ई नहि विचारय लगलाह जे लोको त पानि भरि सकैत अछि। बेचारा श्रवणकुमार कैं बेधि देलथिन्ह। आन्हर पिता कैं पुत्र-वियोगमे प्राण गेलैक। तकर फल भेरलैन्ह जे अपनो पुत्र-वियोगमे प्राण गेलैन्ह। हौ, दू टा पटरानी रहने करथिन्ह। तखन बुढ़ारी वयसमे तेसर विवाह करबाक सौख की भेलैन्ह? और 'वृद्धस्य तरुणी भार्या प्राणेभ्योपि गरीयसी!' कैकेयीने तेहन लिप्त भऽ गेलाह जे युद्धक्षेत्रोमे हुनका विना रथ पर नहि चलथि। और रथो केहन रहैन्ह जे असले बेर पर टुटि गेलैन्ह। नाम की त दशरथ! और एको टा रथ काजक नहि। नहि त कैकेयी कैं पहियाक धुरीमे अपन पहुँचा किऐक देबय पड़ितैन्ह? और बलिहारी कही ओहि पहुँचो कैं! तैं ने करेजो ओहन सक्कत छलैन्ह। कोनहुना पत्नीक प्रतापैं वृद्ध राजाक प्राण बाँचि गेलैन्ह। स्त्री कैं आँखि मूनि कय वचन देलन्हि–'अहाँ जे माङब से हम देब।' एतबा विचार नहि जे जौं आकाशक तारा माङि बैसतीह त कहाँ सँ देबैन्ह? और जखन ओ राम-वनवास मङलथिन्ह त राजा कैं छटपट्टी छूटय लगलैन्ह। कैकेयी त बहुत रक्ष रखलथिन्ह। जौं कतहु कोढ़-करेज माङि बैसितऽथिन्ह तखन सत्यपालक दशरथ महाराजक की अवस्था होइतैन्ह? हौ, जखन राजपूती शानमे एक बेर वचन दइए देलथिन्ह तखन पाछाँ कऽ एतेक विलाप किऐक? चौदह वर्षक बाद त फेर बेटाक राज होयबे करितैन्ह। तावत बुझितथि जे कोरट लागल अछि। धैर्य सँ प्रतीक्षा करितथि। नहि, जौं बहुत अधिक पुत्रस्नेह छलैन्ह त अपनो संग लागल वन जैतथि। से सभ त कैलन्हि नहि। "हा राम! हा राम!" करैत छाती पीटि कऽ मरि गेलाह। क्षत्रियक हृदय कतहु एहन कमजोर होइक!

हम देखल जे खट्टर कका जकरा पर लगै छथिन्ह तकरा शोधि कऽ छोड़ि दैत छथिन्ह। एखन दशरथजी पर लागल छथिन्ह। प्रकाश्यतः कहलिऐन्ह–और लोक सभ रामायणक चरित्र सँ शिक्षा ग्रहण करैत अछि......

खट्टर कका–शिक्षा त हमहुँ ग्रहण करितहि छी। विनु देखने तीर नहि चलाबी। विनु विचारने वचन नहि दी। वचन दी त छाती नहि पीटी।

हम–खट्टर कका, अहाँ केवल दोषे टा देखैत छिऐक।

खट्टर कका–तखन गुण तोंही देखाबह।

हम–देखु, महाराज दशरथ केहन सत्यनिष्ठ छलाह जे......

खट्टर कका–जे फुसिए श्रवणकुमार बनि अन्ध कैं परतारय गेलाह।

हम–रामचन्द्रजी केहन पितृभक्त छलाह जे......

खट्टर कका–जे पिताक मृत्युओक समाचार सुनि सोझे दक्षिण भर बढ़ल चल गेलाह। पाछाँ फिरिओ कऽ नहि तकलन्हि।

हम–लक्ष्मण केहन भ्रातृभक्त छलाह जे......

खट्टर कका–जे एक वैमात्रेयक दिस सँ दोसर वैमात्रेय पर धनुष तनबामे एको रत्ती कुंठित नहि भेलाह।

हम–भरत केहन त्यागी छलाह जे......

खट्टर कका–जे चौदह वर्ष धरि भाइक कहियो खोज-खबरि नहि लेलन्हि। राजधानीक राजकाज सँ फुरसति भेटितैन्ह तखन ने जंगलक पता लगबितथि। हौ, यदि ई अयोध्या सँ सेना साजि कऽ लऽ जैतथि त कोन दुःखे राम कैं वानरक नेहोरा करय पड़ितैन्ह।

हम–हनुमानजी केहन स्वामिभक्त छलाह जे......

खट्टर कका–जे अपन स्वामी सुग्रीव कैं छोड़ि अनका गाहि लेलन्हि।

हम–विभीषण केहन आदर्श छलाह जे......

खट्टर कका–जे घरक भेदिया लंका डाह करौलन्हि। एहन विभीषण सँ भगवान देश कैं बचाबथु।

हम–तखन अहाँक जनैत रामायणमे एकोटा पात्र आदर्श नहि?

खट्टर कका–हमरा सौंसे रामायणमे एकेटा पात्र आदर्श बूझि पड़ैत अछि।

हम–के?

खट्टर कका केसौर सोहैत बजलाह–रावण।

हम–अहाँ कैं त खट्टर कका! सभ बातमे हँसिए रहैत अछि।

खट्टर कका–हँसी नहि करैत छिऔह। तोंही रावणमे एकोटा दोष देखाबह।

हम–धन्य छी खट्टर कक्का ! सभ लोक कें रावणमे दोषेदोष सुझैत छैक और अहाँ कें एकोटा दोष नहि सुझैत अछि।

खट्टर कक्का–तखन तोंही सुझाबह।

हम–सीता कें जे हरि क लऽ गेलन्हि......

खट्टर कक्का–ई मर्यादा-पुरुषोत्तम कें शिक्षा देबाक हेतु जे 'ककरो बहिनिक नाक-कान नहि काटी। परदेशमे रहि रारि नहि बेसाही। मृगमरीचिकाक पाछाँ नहि दौड़ी। कोनो स्त्रीक अपमान नहि करी।' देखह, लंको लऽ जा कऽ रावण नाक-कान नहि कटलकैन्हि, रनिवासमे नहि लऽ गेलन्हि, अशोक-वाटिकामे रखलकैन्हि। लोक राक्षस कहौक, परन्तु ओकर व्यवहार तेहन सभ्यतापूर्ण भेलैक अछि जे मनुष्यो कें शिक्षा लेबाक चाही।

हम–खट्टर कक्का, अहाँ त उनटे गंगा बहा देत छिऐक। रावण सन अन्यायीक पक्ष ग्रहण कय सीतापति सुन्दर श्याम कें......

खट्टर कक्का–'सीतापति निष्ठुर श्याम' कहह। विदेहक कन्या अवध गेलीह, तकर फल भेलन्हि जे कहियो सासुरक सुख नहि भोगि सकलीह और ने फिरि कऽ नैहरैक मुँह देखि सकलीह। तेंआइ त हमरा लोकनि पछिमाहा सँ हड़कैत छी। कोन लग्नमे विवाह भेलन्हि से नहि जानि। दिन त वशिष्ठे तकने रहथिन्ह–अग्रहण-शुक्ल-पंचमी। परन्तु कहाँ धारलकैन्हि ? एही डरें मिथिलामे आब केओ अग्रहण मासमे कन्यादान करक हेतु जल्दी तैयार नहि होइत अछि।

हम–खट्टर कक्का, अहाँ कें सीता-वनवास लऽ कऽ हार्दिक पीड़ा अछि। बूझि पड़ैत अछि, जौं रामचन्द्रजी सँ अहाँ कें भेंट होइत त विना झगड़ा कैने नहि रहितिऐन्हि। प्रणामो करितिऐन्हि कि नहि ?

खट्टर कक्का–प्रणाम कोना करितिऐन्हि ? हम ब्राह्मण, ओ क्षत्रिय। तखन आशीर्वाद दितिऐन्हि–''नीक बुद्धि हो। दोसर अवतारमे एना जुनि करी। कोनो हमरे सन ब्राह्मण कें मंत्री बनाबी। एहन काज नहि करी जाहि सँ लोक 'ए राम ! कहय।''

हम–खट्टर कक्का, तखन अहाँ रामनवमी व्रत किऐक करैत छी ? मनमे त देवता कऽ कऽ बुझिते हेबैन्ह।

खट्टर कक्का–बुझैत छिऐन्हि से कोनो अपना गुण पर नहि। सीता सन भगवतीक पति, तेँ भगवान। यदि ओ महारानी नहि भेटितथिन्ह त सोझे दशरथक बेटा वा अयोध्याक राजा कहबितथि। जे जे काज ओ कैने छथि से सभ त क्षत्रिय राजा करितहि अछि। केवल एकटा कार्य ओ विशेष कैने

छथि जे दोसर विवाह नहि कैलन्हि। जानकीक प्रतिमा बना कऽ शेष जीवन बितौलन्हि। एही बात पर हम हुनकर सभटा कसूर माफ कऽ देत छिऐन्ह। सीते लऽ कऽ रामक महत्त्व। तेँ पहिने सीता तखन राम।

हम–खट्टर कक्का, अहाँ कें सीताजीमे एतेक स्नेह अछि तखन रामचन्द्रजी कें एना किऐक कहैत छिऐन्ह ? हुनका पुरुखा समेत कें अहाँ नहि छोड़लिऐन्ह।

खट्टर कक्का प्रसादक थारमे तुलसीदल रखैत बजलाह–हौ, तों एतबो नहि बुझैत छह ? हम हुनक सासुरक लोक छिऐन्ह कि ने ! सासुरक हजामो गारि पढ़ैत छैक से प्रियगर लगैत छैक और हम त ब्राह्मण छिऐन्ह। दोसर एना कहतैन्ह से दर्प छैक ? परन्तु मिथिलावासी त कहबे करतैन्ह। मैथिलक मुँह बंद कऽ देथिन्ह, एतवा सामर्थ्य भगवानोमे नहि छैन्ह।

दुर्गापाठ

खट्टर कका विजयाक नशामे मस्त रहथि। आँखि लाल रहैन्ह। हमरा दुर्गापाठ करैत देखि बजलाह–तोरा लोकनि पाठ की करैत छह, 'तूफान मेल' छोड़ैत छह। जेना चटिया सभ पहाड़ा पढ़ैत अछि। कनेक स्थिरता सँ श्लोक बाँचह जे नीक जकाँ अर्थ बुझऽ मे आबय।

हम पढ़य लगलहुँ–

रूपं देहि, जयं देहि, यशो देहि............

खट्टर कका बिचहि मे टोकन्हि–बस, खाली देहि-देहि-देहि। यैह भिक्षुक मनोवृत्ति त हमरा लोकनि कैं पंगु बना देलक। हौ, विजय कतहु भीख मङला सँ भेटैत छैक? जे जाति बेसी पराक्रमी होइत अछि तकरे विजयलक्ष्मी वरण करैत छथिन्ह। से पराक्रम त करबह नहि। केवल आँखि मूनि, आसन पर पलथी लगा, 'जयं देहि, जयं देहि' घोंपबह। तहिसँ की हैतौह?

हम आगाँ बढ़लहुँ–

पत्नीं मनोरमां देहि, मनोवृत्तानुसारिणीम्

आब खट्टर ककाक ठोर पर कनेक हँसी आबि गेलैन्ह। बजलाह–हौ, हम त पाठ करैत-करैत बूढ़ भऽ गेलहुँ, परन्तु मनोवृत्तानुसारिणी कहाँ भेटलीह। भेटलीह केहन त साक्षात चंडिकाक अवतार, तेहने प्रतिज्ञावाली जे–

यो मां जयति संग्रामे, यो मे दर्पं व्यपोहति।

यो मे प्रतिबलो लोके, स मे भर्त्ता भविष्यति।

से हुनक युयुत्सा शान्त करबाक सामर्थ्य हमरामे नहि। तैं भर्त्ताक स्थानमे भोंटाक भर्त्ता बना कऽ राखि देत छथि। चंडिका त मधुपान कैला उत्तर सिंहगर्जन करैत छलीह–

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ! मधु यावत् पिबाम्यहम्।

परन्तु ई त बिना पिउनहि तेहन दर्पदलन करैत छथि जे हमहीं दाबनैत छी।

हम देखल जे खट्टर कका भंगक तरंग मे भसियाएल जा रहल छथि। अतएव टोकलिऐन्ह–खट्टर कका!

परन्तु के सुनैये? ओ अपना तरंगमे बहैत रहलाह। ''हौ बाबू! हुनका वशीभूत करबाक निमित्त कामबीज सँ सम्पुट कय एकैस दिन धरि नित्य बारह आवृत्ति पाठ कैल। परन्तु ओ वशीभूत की होइतीह जे और प्रचंड भऽ उठलीह। तहिया सँ विश्वास उठि गेल।

एकाएक खट्टर कका पूछि बैसलाह–तों कथी सँ सम्पुट करैत छह?

हम कहलिऐन्ह–इत्थं यदा यदा बाधा.....

खट्टर कका बजलाह–'इत्थं यदा यदा बाधेति श्लोकजपे महामारी-शान्तिः।' अहा! केहन-केहन उपाय हमरा लोकनिक पूर्वज देखा गेल छथि! देशमे केहनो भारी मरकी उठौ, एक श्लोक सँ ओकरा भगा दिअऽ। हैजा-प्लेगक दबाइ बहार करबाक प्रयोजने की? कोनो देश कैं एहन युक्ति फुरल हैतैन्ह? परन्तु हौ! तखन एकटा काज किऐक नहि करैत छह? एखन मलेरियाक द्वारे गामक गाम साबुजदानाक भोज भऽ रहल अछि। से 'रोगानशेषान्' बला श्लोक सँ सम्पुट करह जे एके बेर मलेरिया फलेरिया आदि समस्त रोग देश सँ पड़ा जाय।

हम किछु अप्रतिभ होइत कहलिऐन्ह–खट्टर कका! श्रद्धापूर्वक पाठ कैने अवश्य फल प्राप्त हैत–विश्वासः फलदायकः। परन्तु से विश्वास रहय तखन ने!

खट्टर कका बजलाह–हौ! विश्वास त तेहन रहय जे जखन महाजन सभ तगादा करय लागल त सभ काज छोड़ि 'अनृणी अस्मिन्निन्त्यृणम्' पाठ करय लगलहुँ जे कर्ज सधि जाएत। परन्तु कर्ज सधत की, और बढ़ले गेल। तखन 'कांसोस्मीत्यृचम्'क पाठ प्रारम्भ कएल जे लक्ष्मीप्राप्ति हैत त एके बेर सधा देबैक। परन्तु भेल की? लक्ष्मी त नहि ऐलीह, एकटा कन्या अवश्य जन्म लेलन्हि। तहिया सँ पाठ कैनाइ छोड़ि देलहुँ।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका! तखन त फल भेटिए गेल। कन्या त लक्ष्मी होइते छथि।

खट्टर कका व्यंग्य करैत बजलाह–अवश्य। तेखन ने लगले दरिद्र-नारायणो घरमे पहुँचि जाइत छथि।

पुनः कहय लगलाह–हौ, ई सभ बात किछु नहि। एहि देशमे लोक कैं मनमोदक खेबाक अभ्यास छैक। आन-आन देशमे जे वस्तु लोक बाहुबल वा बुद्धिबल सँ प्राप्त करैत अछि से हम बैसल-बैसल मन्त्रबल सँ पैबाक आशा रखैत छी। यैह अकर्मण्यता त देश कैं चौपट कैलक। खेतमे पानि पटाएब नहि, आसन पर बैसि कय वरुणक जप करब जे ऊपर सँ वर्षा बरसि जाय! ताहि निमित्त महादेव पूजब, इन्द्र कैं गोहराएब, दुर्गाजी कथी पर चढ़ि कऽ अबै छथि, से विचार करब, लाखो रुपैया स्वाहा कऽ कऽ यज्ञ करब, किन्तु असली काज जे अछि–खेतमे पानि पटाएब, से नहि करब। सालोसाल रौदी-दाही सँ तबाह होइत आइ छी, तथापि नहरि ?रब से उद्योग पार नहि लगैत अछि। तैं जहाँ अमेरिका बिनु जपे कैने धन-धान्य ओ अतुल ऐश्वर्यक अधिकारी भऽ रहल अछि, तहाँ हमरा लोकनि जप कैलो सन्तों अन्न बेत्रेक डकन्न कानि रहल छी।

हम क्षुब्ध होइत पुछलिऐन्ह—खट्टर कक्का! तखन अहाँक की अभिप्राय जे पूजापाठ सभ व्यर्थ थीक?

खट्टर कक्का नोसि लैत बजलाह—नहि। से हमर तात्पर्य नहि। पूजापाठक उपयोग छैक, किन्तु अपना स्थान पर। जहाँ एकाग्रता तथा मनः शुद्धिक प्रश्न छैक, तहाँ पूजा-पाठ सुन्दर वस्तु थीक। परन्तु एकर अर्थ ई नहि जे सभ साध्यक हेतु एकरे साधन बनावी। सैह त हमरा लोकनिमे भारी आपत्ति अछि। जहाँ कोनो बढ़ियाँ वस्तु हाथ लागल कि मोहान्ध बनि ओकरे लऽ कऽ 'त्वमर्कस्त्वं सोमः' करय लागब। पाश्चात्य देशक लोक कार्य-कारण-शृंखलाक अनुसन्धान करैत अछि तेँ कोनो वस्तुक अन्धभक्त नहि होइ अछि। पूजा चित्तशमनक हेतु बढ़ियाँ साधन थीक। परन्तु हम एहि साधन कैं साध्यक सिद्धिमे नहि लगा, साध्यान्तरमे नियोजित करै छी, यथा शत्रुशमन, रोगशमन, दुर्भिक्षशमन। सैह त मूर्खता थिक। तुलसीमे बहुत गुण छैक। एकर अर्थ ई नहि जे तुलसीएक गाछ उखाड़ि शत्रु सँ युद्ध करी। गाँधीजी [illegible] पैघ लोक छलाह, तेँ कि गामा सँ कुश्तीओ लड़बाक हेतु हुनके ठाढ़ कऽ दितिऐन्ह? प्रत्येक वस्तुक महत्त्व ओकर अपने क्षेत्रमे सीमित रहैत छैक। हमर कथ्य ई जे जँ शत्रु आबय त लाठी लियऽ, रोग पहुँचय त दवाइ करू। परन्तु यदि लाठी सँ कोष्ठबद्धता दूर करक चाही वा मदनानन्द मोदक सँ शत्रु कैं पछाड़ऽ चाही, त की हाल हैत? सैह हाल हमरा लोकनिक भऽ रहल अछि। हम अर्गला ओ कील-कवचक पाठ द्वारा शत्रु सँ अपन रक्षा चाहै छी। हौ, शत्रु कैं पछाड़बाक छौह त लोहक कील कवच तैयार करह। यदि श्लोके सँ शत्रु मरि जइतैक त अपना देशमे विधर्मीक राज किऐक होइतैक? आबहु आँखि खोलह। परन्तु से ज्ञान तोरा लोकनिमे कहाँ हेतौह? तोरा त एकटा 'भानुमतीक पेटारी' चाहिऔह जाहि सँ धन, धान्य, सन्तति, आरोग्य, लाभ, यश, सौभाग्य, स्त्री, घर, द्वार, स्वराज्य सभ एके बेर भेटि जाओ।

हमरा मुँह तकैत देखि खट्टर कक्का बजलाह—हम कि फूसि कहैत छिऔह? ओही दुर्गाक पोथीमे स्वराज्यो लेबक उपाय छैक—'ततो वव्रे नृपो राज्यमिति मन्वस्य जपे पुनः स्वराज्यलाभः।' हौ, बेचारे गाँधीजी कैं ई बूझल रहितैन्ह त किऐक एतेक हरान होइतथि? दस टा पंडित कैं बैसा कय पाठ करा लितथि। अपनहिं अङरेज सभ राज छोड़ि पड़ा जाइत।

खट्टर कक्का पुनः विरक्त स्वरमे बाजय लगलाह—छिः! हमरो लोकनि केहन मूर्ख छी जे एहन-एहन बात पर आँखि मूनि विश्वास कऽ बैसैत छी। एही अज्ञानक कारण हमर अजिया ससुरक प्राण गेलैन्ह। ओ चंडीक परम भक्त रहथि। एक बेर पीठमे भयंकर घाव भेलैन्ह। हुनका विश्वास रहैन्ह जे बीस

आवृत्ति दुर्गापाठ कैने घाव स्वतः छूटि जाएत। 'महाव्रणविमोक्षार्थं विंशावृत्तिं पठेन्नरः।' बस, लगलाह पाठ करय। परन्तु व्रणक व्यथा बढ़ले गेलैन्ह। पाठ समाप्त होइतहि जीवनलीला समाप्त होमय लगलैन्ह। परन्तु वाह रे हमर ससुर! मरितो काल विश्वास नहि हटलैन्ह। लोक कैं कहलथिन्ह—निश्चय एक आवृत्ति बेसी पाठ कैना गेल हैत। तेँ प्राण छूटि रहल अछि। किऐक त लिखलकैक अछि—'एकविंशति-पाठेन भवेद्बन्धविमोचनम्।' ई धर्मान्धिता कतेक गोटाक प्राण नेने हैत तकर कोन ठेकान?

हम डेराइत-डेराइत कहलिऐन्ह—खट्टर कक्का! अहाँ कैं दुर्गाक माहात्म्य पर विश्वास नहि अछि?

खट्टर कक्का छूटैत पुछलन्हि—दुर्गाक माहात्म्य पर अथवा दुर्गा पोथीक पाठक माहात्म्य पर?

हम कनेक काल सोचि कहलिऐन्ह—दूनूक विषयमे कहू।

खट्टर कक्का बजलाह—यदि दुर्गा सँ शक्तिक बोध हो, त अवश्य हुनक आराधना करक चाही। परन्तु ओहि पोथी कैं हजार बेरि सुग्गा जकाँ रटने अर्थ, धर्म, काम वा मोक्ष प्राप्त भऽ जाएत से विश्वास हमरा नहि अछि।

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कक्का, अहाँ त नास्तिक जकाँ बजैत छी। दुर्गामे जे कथा वर्णित छैक से अहाँ मानैत छी कि नहि?

खट्टर कक्का बजलाह—ओहि कथा कैं हम एक सुन्दर रूपक बुझैत छी जाहिमे सम्मिलित शक्तिक महिमा देखाओल गेल छैक। दुर्गा की थिकीह? 'निःशेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्तिः।' जे कार्य देवता सभ पृथक रूपें नहि कय सकलाह से हुनक सामूहिक शक्ति द्वारा सम्पन्न भऽ गेल। तात्पर्य ई जे संगठन सँ एहन अजेय शक्ति बहराइछ जकरा आगाँ केहनो प्रभावशाली व्यक्ति नहि ठहरि सकैछ।

'यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो
ब्रह्मा हरश्च नहि वक्तुमलं बलं च।'

सैह शक्ति एखन पाश्चात्य देशमे आबि गेल छैक जाहि सँ समस्त भूमंडल पर ओकर विजयपताका फहराइत छैक। हमरा लोकनि त केवल शक्तिपूजाक स्वाँग मात्र रचैत छी। दुर्गाक मूर्त्ति बना पानिमे भसा दैत छी। असली दुर्गा देखबाक हो त यूरोप-अमेरिका जा कऽ देखह।

हम कहलिऐन्ह—किछु हो, दुर्गा छथि त हमरे।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभान्ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥

खट्टर कका डँटैत बजलाह—ईह त गलती थीक। दुर्गा, लक्ष्मी ओ सरस्वती ककरो पोस नहि मानैत छथिन्ह। मंदिरमे पट बंद कऽ कऽ अथवा धूप-आरतीक लोभ देखा कऽ केओ हुनका नहि राखि सकैत छैन्ह। ओ तकरे होइत छथिन्ह जे हुनका हेतु सभ सँ अधिक तपस्या करय। दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, तीनू पश्चिम गेलीह। जे हजार वर्ष सँ अनवरत साधनामे लीन अछि तकरा छोड़ि ओ हमर कोना हैतीह? कतबो आँचर वा छागरक प्रलोभन देला उत्तर ओ हमरा दिस नहि तकै छथि। किएक तकतीह? चिनवार पर नौ दिनक जनमल यव कैं दसम दिन कटने जनिक साधना समाप्त भऽ जाइन्ह अथवा निरीह अजापुत्र पर पराक्रम देखेबामे जनिक वीरता निःशेष भऽ जाइन्ह, तनिका लग दुर्गा जैथिन्ह किऐक?

हम कहलिऐन्ह—की खट्टर कका! तखन अहाँक विचार जे दुर्गापूजा उठि जाओ?

खट्टर कका बजलाह—दुर्गाक पूजा हमरा लोकनि करिते कहाँ छिऐन्ह? पूजा करै छैन्ह यूरोप-अमेरिका। हमरा लोकनि त खेल करै छी। नाच-तमाशा सँ चित्त बहटबैत छी।

हम—परन्तु संगहि संग पाठो त करैत छिऐन्ह। अहाँ ओकरो खेले बुझैत छिऐक की?

खट्टर कका—ईह बात त हमरा आइ धरि बुझऽ मे नहि आएल जे आखिर दुर्गापाठ लोक करैत अछि किऐक? मानि लियऽ, अहाँ कथा नहि, इतिहासे बूझू। परन्तु इतिहासो त जपबाक वस्तु नहि थीक। एक बेरि पढ़ि कऽ बूझि लिअऽ जे दुर्गा एना महिषासुरक वध कैलन्हि, चंडमुंड कैं निर्मुण्ड कैलन्हि, शुंभ-निशुंभ कैं मारलन्हि, रक्तबीजक संहार कैलन्हि। ओहि सँ किछु शिक्षा भेटय त ओहि पर मनन करू और जीवनमे चरितार्थ करू। परन्तु बेह "सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः". सँ लऽ कऽ "सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः" एतबा श्लोक कैं हजार, दस हजार वा लाख बेर उच्चारण कैने की लाभ होएत से हमरा बुद्धिमे नहि अबैत अछि।

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका! धर्म मे तर्क नहि चलैत छैक। धर्मग्रन्थ कैं आँखि मूनि कऽ मानक चाही। ई आलोचना सँ बहिर्भूत विषय थिकैक। अहाँ आर्यसमाजी जकाँ तर्क करैत छी।

खट्टर कका बजलाह—बेस, आब तर्क नहि करबौह। तों पाठ करह। हमरा जनैत एकैटा श्लोक ओहि मे छैक जे बारंबार हमरा लोकनि कैं पाठ करक चाही।

हम पुछलिऐन्ह—से कोन?

खट्टर कका नशा सँ भेर होइत बजलाह—

या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः॥

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, आइ विजयादशमी छैक।

खट्टर कका बजलाह—विजयादशमीक एकैटा अर्थ हमरा लोकनिक हेतु भऽ सकैत अछि। विजय त जेहन हमरा लोकनि प्राप्त कऽ रहल छी से देबे जनैत छथि। तखन विजयाक सेवन अलबत्त कऽ सकैत छी। से एखनो एक गिलास छानह त दिमाग तर भऽ जाय।

हम कहलिऐन्ह—अहाँ त खट्टर कका पिउनहि छी। आओर बेशी लागि जाएत।

खट्टर कका बजलाह—हौ, पाँचो कर्मेन्द्रिय त शिथिल भइए चुकल अछि। पाँच टा ज्ञानेन्द्रिय बाकी अछि। सेहो जखन लुप्त भऽ जाय, तखन ने 'दशहरा' नाम सार्थक!

ब्राह्मणभोजन

खट्टर कका भाङ घोटैत रहथि कि हम जा कऽ कहलिऐन्ह–खट्टर कका, निमंत्रण दैत छी।

खट्टर कका अत्यन्त प्रसन्न होइत बजलाह–अहा हा! आबह, बैसह। आइ कोनो नीक लोकक मुँह देखि उठल छलहुँ। कथीक उपलक्ष्यमे खोऐबह?

हम कहलिऐन्ह–आइ हमरा ओहि ठाम ब्राह्मणभोजन अछि।

खट्टर कका बजलाह–वाह, अत्यन्त सुन्दर! एहि देशक मर्यादा कथीमे छैक से जनै छह?

हमरा मुँह तकैत देखि खट्टर कका बजलाह–एहि देशक मर्यादा छैक ब्राह्मणभोजनमे। पृथ्वी पर आन कोनो देशमे ई बात नहि। एही पुण्यक प्रसादात भगवानक सभटा अवतार एही भूमि पर भेल छैन्ह।

हम–परन्तु ब्राह्मण कैं भोजन करैबाक विधान किऐक?

खट्टर कका–किऐक त 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्'। हमरा लोकनि ब्रह्माक मुँह थिकहुँ। मुख कैं त भोजन सँ प्रयोजन। जे सभ हाथ-पैर छथि से सभ काज करथु। हमरा लोकनि मुखक जे काज थिकैक–भोजन और भाषण–सैह टा करबाक हेतु उत्पन्न भेल छी। जखन आदिपुरुष ब्रह्मे चारिटा मुँह बौने प्रकट भेलाह, तखन हमरा लोकनि हुनक सन्तान भऽ अपना वंशक टेक कोना छोड़ि सकैत छी? तैं ब्राह्मण लोकनि खैबाक हेतु सतत मुँह बौने रहै छथि।

हम–परन्तु जौं हमरा लोकनि सरिपों ब्रह्माक मुँह सँ वहराएल छी त ओ तेज कहाँ अछि।

खट्टर कका–तेज अछि उदरकुंडमे। ओहिमे निरन्तर ब्रह्मतेज धधकैत रहैत अछि। बेशी ज्वाला भेला उत्तर जिह्वाक बाटें बहराइत अछि। तैं हमरा लोकनिक बातमे लुत्तीक असर रहैत अछि। जिनके पर लगैत छिऐन्ह तिनका भस्म कऽ कऽ छोड़ि दैत छिऐन्ह।

हम–परंच ताहि दिनक ब्राह्मणमे विशेष सामर्थ्य रहैन्ह।

खट्टर कका–औखन क्षीरसमुद्र कैं सोखयवला अगस्त्य हमरे लोकनिमे विद्यमान छथि। हौ, जाही धातु सँ 'ब्रह्म' बनल छथि ताही सँ 'ब्राह्मणो' बनल छथि। तैं 'ब्रह्माण्ड' ओ 'ब्रह्मोदर' दूनू कैं सहोदरे बूझक चाही। दूनू विराट, दूनू पृथुल, दूनू गोलाकार, दूनूक पार पायब असंभव।

हम–परन्तु ताहि दिनक ब्राह्मणमे वरदानो देवाक शक्ति रहैन्ह।

खट्टर कका–औखन वर ठीक करबाक भार ब्राह्मणे पर रहैत छैन्ह। पूर्वक ब्राह्मण सिद्धान्तक परिपाक करैत छलाह, आबक ब्राह्मण सिद्धान्नक परिपाक करैत छथि। ओ लोकनि अग्निहोत्री छलाह, इहो लोकनि दूनू साँझ अग्निहोत्र करितहि छथि। अन्तर एतबे जे पूर्वज लोकन 'बाबा' कहबैत छलथिन्ह, वंशज सभ 'बाबाजी'! एक अक्षर बृद्धिए भेलैन्ह!

हम–खट्टर कका, अहाँ त व्यंग्य करैत छी। परन्तु वास्तवमे ब्राह्मण जातिक एहन दुर्दशा किएक भेलैक?

खट्टर कका–बेसी तेजक कारण।

हम–से कोना?

खट्टर कका–देखह, एक ब्राह्मण खिसिया कऽ लक्ष्मीक स्वामी कैं एक चरण लगा देलथिन्ह। तहिया सँ लक्ष्मी ब्राह्मण सँ हड़कि गेलीह और हमरा सभक कप्पार पर जे दरिद्रा सटि गेलीह से सटले छथि। ई त धन्य सरस्वती जे हमरा लोकनिक पुरुखा लक्ष्मीवाहन सभ सँ किछु-किछु झिटैत ऐलाह अछि।

हम–परन्तु समस्त धर्मशास्त्रक निर्माण त ब्राह्मणे द्वारा भेल अछि।

खट्टर कका–धर्मशास्त्र नहि कहह, अर्थशास्त्र। आन-आन जाति हर-फार लऽ कऽ खेती करैत छल। ब्राह्मण केवल बुद्धिएक खेती करैत छलाह। यजमान कैं बड़द सँ काज चलैत छलैन्ह। ब्राह्मण कैं यजमाने सँ काज चलि जाइत छलैन्ह। तखन ओ बड़द किऐक पोसथु?

श्रमजीवी भवेच्छूद्रः धनजीवी कृषी वणिक्।
बलजीवी भवेत्क्षत्री, बुद्धिजीवी हि ब्राह्मणः॥

एही बुद्धिक प्रसादात हमरा लोकनिक पुरुखा भोजनक समस्या कैं जेना हल कैलन्हि–सेहो बिना हलक सहायता सँ–तेना आइ धरि केओ कय सकल अछि?

हम पुछलिऐन्ह–ई बात कोना भेलैक, खट्टर कका?

खट्टर कका भाङक गोला चिकनबैत बजलाह–हौ, ताहि दिनक लोक बुड़िबक रहय। भूदेव जेना कऽ चाहथिन्ह, ठकि लेथिन्ह। आइ देवता निमित्त खोआ। कालि पितर निमित्त खोआ। शुभ होउ त खोआ। अशुभ होउ त खोआ। पुण्य कर, ताहिमे खोआ। पाप कर, ताहिमे खोआ। केओ जनमी, ताहिमे खोआ, मरी, ताहूमे खोआ। अगहनमे नव धान होउक, त चूड़ा खोआ। वैशाखमे रब्बी तैयार होउक, त पूड़ी-बड़ी खोआ। माघमे गरमागरम घी-खीचड़ि खोआ। आर्द्रा नक्षत्रमे आम खोआ। उपजाबौ केओ, परन्तु भोग लगाबय काल–'अग्रे-अग्रे विप्राणाम्।' हौ, एहन 'परमुंडे फलाहार' करबाक बुद्धि और ककरोमे छैक?

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, बारहो मास त किछु ने किछु लगले रहैत छैन्ह।

खट्टर कका चीनी घोरैत बजलाह–हौ, बारहो मास की थीक जे ब्राह्मणक बारह टा मास (मिलकीयत) बूझह। आश्विनक कृष्णपक्षमे पितृपक्ष। शुक्लपक्षमे

देवीपक्ष। दूहू पक्ष लड्डू। कार्त्तिकोमे अन्नकूटे रहैत छैक। अमावस्यामे लक्ष्मीपूजा। पूर्णिमामे सत्यदेवक पूजा। एकादशी कैं विष्णुक नाम पर। चतुर्दशी कैं महादेवक नाम पर। चौठ कैं चन्द्रमाक नाम पर। षष्ठी कैं सूर्यक नाम पर। हौ, एक-दू टा रहय तखन ने! कहाँ धरि गनाओल जाय! सभटा पर्व त भोजने करक हेतु बनल अछि।

हम–तखन एतबा रास जे व्रतक विधान कैल गेल छैक तकर आशय की?

खट्टर कका भाङमे चीनी मिलबैत बजलाह–'वृणोति सुन्दरभोजनम् अनेन इति व्रतम्' हम त यैह अर्थ बुझैत छी। छठिक अर्थ ठकुआ। चौठ-चन्द्रक अर्थ पिड़ुकिया। तिलासंक्रान्तिक अर्थ चुड़लड्डू। होलिकाक अर्थ पूआ। ध्वजाक अर्थ रोट। सत्यदेवक अर्थ शीतलप्रसाद। दुर्गाक अर्थ महाप्रसाद।

हम–तखन एतेक उपवासक जे नियम छैक.....

खट्टर कका–से पहिने सँ लोक उदर-दरी कैं सोन्हा कऽ रखैत अछि।

विशेषभोजनलोभात् सामान्यभोजनविरहः उपवासः।

दोसर ई, जे पवनैतिन सभ कतहु पहिने अपनहि नहि भोग लगा लेथि, तैं ब्राह्मण देवता कठोर सँ कठोर नियम बना देलथिन्ह अछि।

अन्नाहारात् शूकरी स्यात् फलभक्षे तु मर्कटी।
जलपाने जलौकाः स्यात् पयःपाने भुजंगिनी॥

अर्थात जौं व्रत काल अन्न खा लेथि त सुगरनी भऽ कऽ जन्म हैतैन्ह; फल खाथि त बनरनी भऽ कऽ। पानि पिबथि त जोंक होथि, दूध पीबथि त साँपिन। कोनो पवनैतिनक दर्प छैन्हि जे हरतालिका व्रतमे एको घोंट पानि पिउतीह? और एहन-एहन वचन पर हरताल फेरऽ बला केओ नहि। पवनैतिन सभ तीन-तीन दिन सहि कऽ हरिवासर करथु और खैबाक बेर पहिने ब्राह्मण देवता पैर धो कऽ तैयार! एही द्वारे खरना-परनाक एतेक जाल रचल गेल अछि। हौ, जखन सोमवारीमे झुण्डक झुण्ड लाल पीयर स्त्रीगण कैं १०८ बेर पीपरक चारू कात घुमैत देखै छिऐन्ह त दौनीक दृश्य मन पड़ि जाइत अछि। एहि सँ सोझे किऐक नहि कहब जे 'दे। ओतेक घुमा कऽ नाक छुइबाक कौन प्रयोजन? परन्तु सोझ आँगुरे त घी बहराय नहि। तैं 'माघ मास यजमानिनी भोरे स्नान करथु और गर्मी मे निर्जला एकादशी!' ब्राह्मण देवता तेना कऽ सधने छथिन्ह जे की 'सरकस' बला अपना जानवर कैं साधत?

हम–परन्तु ज्योतिषी-पुरोहितक बिना लोकक काजो त नहि चलि सकैत छैक, खट्टर कका!

खट्टर कका लोटामे भाङ घोरैत बजलाह–ओ कर उगाहब छोड़ि और काजे कौन करैत छथिन्ह? यजमानक घरमे प्रसवो नहि भेलैन्ह कि पहिनहि सँ ठकना लऽ कऽ तैयार। जन्म होइत देरी बही-खाता लऽ कऽ तैयार। नौ टा ग्रह की

भेल, नौ टा हुण्डी भेलैन्ह। किछु राहुक नाम पर दे, किछु केतुक नाम पर दे। शनिक नाम पर उड़ीद दे। मंगलक नाम पर मसुरी दे। जाहि-जाहि वस्तुक व्यग्रता रहतैन्ह से भिन्न-भिन्न ग्रहक नाम पर उगाहि लेताह। जेना सभ ग्रहक ठीकेदार वैह रहथि। धन्य नवग्रह जे ज्योतिषिआइनक बाँहिमे नवग्रही पड़ैत छैन्ह। धन्य कुंडली जे नेनाक कानमे कुंडल पड़ैत छैन्ह। यदि यजमानक सोरहो संस्कार नहि होइन्ह त पुरोहितक पत्नीक सोरहो शृंगार कथी पर चलैन्ह? मुंडन होइ छैन्ह यजमानक नेना कैं और मुड़ा जाइ छथि स्वयं यजमान। दशकर्म करैत-करैत बेचारे कैं सभ कर्म भऽ जाइ छैन्ह। ब्राह्मण देवता तेना ने नथने छथिन्ह जे बात-बातमे कर ओसुलैत छथिन्ह! जन्म पर कर! मृत्यु पर कर! विवाह पर कर! द्विरागमन पर कर! यजमान कैं कहियो उसास नहि। जन्मे सँ जे ऋणपत्र गर मे लटकि जाइ छैन्ह से श्राद्ध पर्यन्त नहि उतरैत छैन्ह। बिनु ब्राह्मणे उद्धार नहि।

हम–परन्तु ब्राह्मण कैं दान देबामे फलो कतेक छैक, खट्टर कका!

खट्टर कका–हैं, से त अवश्य। ब्राह्मणक पेट 'लेटरबक्स' छैन्ह। हुनका लड्डू खोआ दिऔन्ह और सोझे पितर कैं पैठ भऽ जाएत। ब्राह्मण कैं कहिया की दान करी सेहो मोसविदा त ब्राह्मणेक बनाओल छैन्ह। जाड़काला मे तुराइ दान करिऔन्ह। गर्मी मे पंखा दान करिऔन्ह। बरसातमे छाता दान करिऔन्ह। सोन भेटि जाय त ब्राह्मण कैं दान करू, सोन हेराय तैयो ब्राह्मण कैं दान करू। गाय बियाय त पहिल दूध ब्राह्मण कैं दियऽ। आम फरय त प्रथम फल ब्राह्मण कैं दियऽ। हौ जी, ई लोकनि भारी चलाक छलाह। सरकार एतेक सिपाही बन्दूक रखलो उत्तर ओतेक मालगुजारी नहि वसूल कय सकैत अछि। ब्राह्मण देवता त केवल एक शापक बल पर असंख्यो कर वसूल करैत आबि रहलाह अछि। तैं कहलकैक अछि जे–

धिग्बलं क्षत्रियबलं, ब्रह्मतेजो बलं बलम्।

हम देखल जे खट्टर कका कैं सूर चढ़ल छैन्ह। एखन ब्राह्मण पर लागल छथि। कहलिऐन्ह–खट्टर कका, एतेक शास्त्र पुराण त ब्राह्मणेक बनाओल छैन्ह।

खट्टर कका बजलाह–तैं त ओहूमे केवल वसुलबाधार कैने छथि। ब्राह्मण कैं अमुक वस्तु दान करी त अश्वमेध यज्ञक फल हो, अमुक वस्तु दान करी त सोझे वैकुण्ठ प्राप्त हो। मनु, याज्ञवल्क्य, सभमे त यैह भरल अछि। कतहु एकादशीक माहात्म्य, कतहु द्वादशीक माहात्म्य। परन्तु सभ तीर्थ-व्रतक उद्देश्य एकैटा–ब्राह्मण कैं दान! अन्नदान, वस्त्रदान, शय्यादान, गोदान, स्वर्णदान, भूमिदान, वृक्षदान, फलदान, कन्यादान! ब्राह्मण कैं चारू वर्णक कन्यामे अधिकार। ओ हत्यो करथि त फाँसी नहि पड़थि। अपने हाथमे कलम रहैन्ह। जे जे कानून मनमे ऐलैन्ह, बना लेलन्हि। पुराणोमे त केवल अपने 'प्रोपगंडा' भरल छैन्ह। राजा हरिश्चन्द्र स्वप्नोमे ब्राह्मण कैं समस्त राज्य दान कऽ देलन्हि

त ओही सत्य पर दृढ़ रहि गेलाह। राजा नृग ब्राह्मण कें दान कैल धेनु पुनः लय लेलथिन्ह त हजारो वर्ष धरि इनारमे गिरगिट भऽ कऽ रहय पड़लैन्ह! सभ पुराणमे त एहने-एहने कथा भरि देने छथिन्ह।

हम कहलिऐन्ह–परन्तु खट्टर कका, समस्त धर्मशास्त्रक विवेचन त ब्राह्मणे कैने छथि।

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधः दशकं धर्मलक्षणम्॥

खट्टर कका हमरा डँटैत बजलाह–तों एखन नेना छह। धर्मक रहस्य की बुझबहीक? ई सभ स्त्री, शूद्र और यजमान कें परतारक हेतु छैक।

खट्टर ककाक भाङ तैयार भऽ गेल रहैन्ह। ओ दु-चारि बुन्द शिवजीक नाम पर छीटि गट्टगट्ट सौंसे लोटा पीबि गेलाह। तखन हमरा दिस साकांक्ष होइत बजलाह–देखह, ई दशो धर्म ओकरा हेतु बनाओल छैक जकरा सँ अपन सेवा लेबाक रहय। जेना ब्राह्मण लोकनि खवास सँ काज लैत रहथि। आब ओकरा ई उपदेश देब जरूरी छलैन्ह जे 'तों धैर्य (धृति) राख, अर्थात मडुआक रोटी खाय पड़ौक तथापि सन्तोष कर। हम गारियो दिऔक त क्षमा कर। मनमे विकार नहि आन। अर्थात क्षोभ कें दमन कर। हमरा घरमे कतेको नीक-नीक वस्तु देखबें से चोरबिहें जुनि। किऐक त चोरी करबें त पाप लगतौक। मलिन रहबें त तोहर भरल पानि कोना पीबि हैत? तें सफाइ (शौच) राख। तों बाहर-भीतर सभ ठाम जाइ छें, तें इन्द्रिय-निग्रह राख। एकदम बुड़िबक भऽ कऽ हमर सेवा करबें त नहि ठजिऐतौक। तें किछु बुद्धि (धी) सेहो राख। अपन धर्म (अर्थात ब्राह्मणक सेवा) बुझबाक हेतु थोड़ेक ज्ञान (विद्या) सेहो राख। और फूसि बाजय लगबें तखन त हमरा कतेक बेर ठकबें, हानि करबें, तें सत्य बाज। और हम मारबो करियौक त तों क्रोध नहि कर।' हौ, यैह दशो धर्मक तात्पर्य छैक। जैह बात शूद्रक हेतु लागू छैक, सैह स्त्रीओक हेतु, सैह यजमानोक हेतु।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, परन्तु ब्राह्मण अपनो त एहि सभ धर्मक पालन करैत रहथि।

खट्टर ककाक आँखि लाल भऽ गेलैन्ह। बजलाह–फूसि बात। जे सामर्थ्यवान अछि तकरा लेल धर्म की? ई सभ उपदेश अनका हेतु होइत छैक। जौं ब्राह्मण क्रोध कें त्याज्य कऽ कऽ बुझितथि त विष्णु भगवान कें लाते मारितथिन्ह! भृगु, दुर्वासा, परशुराम सभ त ब्राह्मणे छलाह। जौं ब्राह्मण कें धैर्य रहितैन्ह त लगले तिल-कुश-गंगाजल लऽ कऽ शाप देबऽ पर उद्यत भऽ जैतथि? जौं ब्राह्मण क्षमाक पाठ पढ़ने रहितथि त नन्दवंश कें ओना समूल नाश करितथि? जौं विद्या कें आवश्यक बुझितथि त 'अविद्यो वा सविद्यो वा ब्राह्मणो मामकी तनुः' एहन वचन बनबितथि! और यदि ब्राह्मण सत्य पर कायम रहितथि त समाजक ई

दुर्दशा होइत? जहिया सँ ब्राह्मण लोभमे पड़ि गेलाह तहिये सँ छल, क्षुद्रता, स्वार्थ, पाखण्डक सृष्टि होअय लागल। हौ, जखन माथेमे मवाद भरि जैतैक त शरीरक की दशा हैतैक?

हम कहलिऐन्ह–तखन अहाँ असली ब्राह्मण ककरा बुझैत छियैक, खट्टर कका!

खट्टर कका बजलाह–असली ब्राह्मण आइ-काल्हि यूरोप-अमेरिकामे छथि।

हम कहलिऐन्ह–अहाँ कें त हँसिए रहैत अछि, खट्टर कका!

खट्टर कका बजलाह–हँसी नहि करैत छियौह। ब्राह्मण-वृत्तिक अर्थ छैक ज्ञानोपार्जनमे अपन जीवन लगा देब। से सैकड़ो हजारो वर्षक अनवरत तपस्या सँ जे जाति विद्या प्राप्त कय रेल, तार, बिजली आदि वस्तु संसार कें देलक अछि सैह यथार्थमे ब्राह्मण जाति थीक। हम तों त केवल 'उदरम्भरिः ब्राह्मणः' शब्द कें सार्थक करै छी।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, एहन-एहन बात लोक सुनत त ब्राह्मणभोजनो उठा देत।

खट्टर कका बजलाह–हौ, हम एहने बताह छी जे अनका आगाँ एहन बात कहबैक। और एगोटाक बजनहि की? तेहन कऽ पक्का नीव गाड़ल छैक जे एहि देश सँ ब्राह्मण-भोजन नहि उठि सकैत अछि। 'चार्वाक' चिचिया कऽ रहि गेलाह। 'कम्युनिस्टो' चिचिया कऽ रहि जैताह। हँ, खोऐबह कखन?

हम–अपने स्नान-पूजा कैल जाओ। हम सबेरे बिझो करावय पहुँचि जाएब।

खट्टर कका बजलाह–पूजा त पाते पर हैतैक। तखन नहा-सोन्हा कऽ तैयार अवश्य रहबौह। परन्तु बिझो किछु देरिये सँ करबिहऽ। कारण जे भोजमे हम तीन साँझक हिसाब-किताब बेबाक कैने अबैत छी। एक साँझ पहिने उपसर्ग रूपमे, एक साँझ बाद प्रत्यय रूपमे। किऐक त–परान्नं दुर्लभं लोके शरीरं तु पुनः पुनः।

ई कहि खट्टर कका कान पर जनउ चढ़ौलन्हि और लोटा लऽ कऽ बाध दिस विदा भेलाह।

सत्यदेवक कथा

खट्टर कका भाङक हेतु सौंफ-मरीच बिछैत रहथि। हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका ! पूजाक हँकार देने जाइ छी।

खट्टर कका–कथीक पूजा ?

हम–आइ हमरा ओहि ठाम सत्यदेवक पूजा छैन्ह।

खट्टर कका–सत्ते ?

हम–सत्य नहि त फूसि ?

हमरा मुँह तकैत देखि खट्टर कका बजलाह–परन्तु, हौ जी, हमरा त संदेह होइ अछि जे सत्यक नाम पर कतहु असत्य....

हम बात कटैत कहलिऐन्ह–खट्टर कका, सत्यनारायण महाराजक विषयमे हँसियो सँ एहन बात नहि बाजक चाही, नहि त.....

खट्टर कका–नहि त ओ रुष्ट भऽ कऽ अनिष्ट कऽ देताह। जेना महाजन कैं बन्हवा देलथिन्ह। सैह ने ? यदि ओ सरिपों एहन दुष्ट होथि त फेर नर और नारायणमे अन्तर की ?

हम–परन्तु जे हुनक पूजा करैत छैन्ह तकरा फलो त दैते छथिन्ह।

खट्टर कका–तखन ई कहह जे ओ खुशामदी छथि। जे हुनक दरबार करतैन्ह तकर उपकार करथिन्ह। जे नहि करतैन्ह तकरा कुन्नह चढ़ा डाँड़ लगौथिन्ह। एहन भगवान और बबुआनमे भेदे की ?

हम–खट्टर कका, भगवानक प्रभुता अनन्त छैन्ह।

खट्टर कका–परन्तु यदि सत्यनारायणक कथा प्रमाण त हुनक हृदय अत्यन्त संकीर्ण छैन्ह। बेचारा महाजन कैं पूजा करब बिसरि गेलैक त फुसिए चोरीक तोहमति लगा कऽ सिपाही सँ धरबा देलथिन्ह। और एहन प्रपंच करयबला कैं तों कहत छहुन्ह 'सत्यनारायण' !

हम–खट्टर कका, हमही कहै छिऐन्ह कि संसारे कहैत छैन्ह।

खट्टर कका–तौं त संसारे कैं हम बताह कऽ कऽ बुझैत छिऐक। हौ, हम पुछैत छिऔह जे नारायण अपने छद्म वेषमे छल करय गेलथिन्ह से त असत्य नहि भेल और बेचारा महाजन कनेक बाजल जे नावमे लतापत्रादि छैक त से असत्य भऽ गेल। ई कोन न्याय ?

हम–खट्टर कका, हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता।

खट्टर कका–हैं, जैं अनन्त तैं ने महाजन कैं बन्हवाइयो देलथिन्ह। और जखन ओकर बेटी पूजा चढ़ौलकैन्ह त फेर छोड़बाइयो देलथिन्ह। ई भगवान की भेलाह, जमींदार भेलाह !

हम–खट्टर कका, ओ आदर्श देखौलन्हि अछि।

खट्टर कका सौंफक काठी फेंकैत बजलाह–हौ, कलावती राति भरि दोसरक आङनमे हिनक पूजा देखैत रहि गेल से त हिनका बड़ पसिंद पड़लैन्ह। परन्तु एक बेर बेचारी कैं हड़बड़ीमे प्रसाद खाएब छूटि गेलैक त ई ओकरा पतिए कैं डुबा देलथिन्ह। ओ छौंड़ी अपना स्वामीक आगमन-वार्त्ता सुनि दौड़लि त हिनका एतेक डाह किऐक भेलैन्ह ? एतेक काट त सतुआरियोमे नहि चलैत छैक।

हम–खट्टर कका, अहाँ भगवान कैं मनुष्य सँ किऐक तुलना करैत छिऐन्ह ?

खट्टर कका–हौ, मनुष्य सन रहितथि तखन त रहबे करितथि। ई त बिकौओ भलमानुसक कान कटलन्हि। "हमर पूजा कर त सुख-संतति-सौभाग्य सभटा हैतौक नहि त तेहन कऽ देबौक जे भरि जन्म हकन्न कनैत रहि जैबें।" ने दैत देरी ने बिगड़ैत देरी। कनेको धैर्य नहि। एहन अगुताह कतहु लोक होय ?

हम–खट्टर कका, अहाँ एना किएक कहैत छिऐन्ह ?

खट्टर कका–कोना ने कहिऔन्ह ? पहिने त निर्दोष वणिक कैं जामाता समेत बन्हवा देलथिन्ह और जखन कलावतीक कला सँ वशीभूत भऽ गेलाह त उनटे चन्द्रकेतुए पर बिगड़ि गेलथिन्ह। स्वप्न देलथिन्ह–भोरे दूनू ससुर-जमाय कैं छोड़ि दहीक, यथेष्ट विदाइयो करहीक। नहि त राज-पाट नाश कऽ देबौक। बेटाक संहार कऽ देबौक। आब सँ तोरे पर लागि जेबौक। जेना घुसखोर दरोगा डरबैत छैक–"दे, नहि त फँसा देबौक, जेर कऽ कऽ छोड़ि देबौक। लुटबा लेबौक।" जे डाला चढ़ौलक तकर सै खून माफ। जे नहि चढ़ौलक से फाँसी पड़ौ। और एहन चरित्र कैं तों कहै छह सत्यनारायणक कथा ! नारायण ! नारायण !

हम कान मुनैत कहलिऐन्ह–खट्टर कका, भगवानक एना निन्दा नहि करक चाही।

खट्टर कका भाङ घोटैत बजलाह–हौ, हम भगवानक निन्दा थोड़बे करैत छिऐन्ह ? जे ई कथा गढ़ि कऽ हुनका नाम पर चलौने छैन्ह तकर आलोचना करैत छिऐक। एहि कथामे आदि सँ अन्त धरि भगवानक छलक्षुद्रता ओ स्वार्थपरता देखाओल गेल छैक। सुनला उत्तर बैह लगैत छैक जेना नारायण एक नम्बरक लोभी, दुष्ट ओ ईर्ष्यालु रहथि। एहन कथा सँ लोकमे भक्ति की हैतैक ? उनटे अभक्ति भऽ जाइत छैक।

हम–खट्टर कका, कथा सुनने लोक कैं हृदयमे भय होइत छैक।

खट्टर कका–एही द्वारे त कथा रचले गेल छैक। सत्यनारायणक पूजा करहुन, नहि त शनैश्चर जकाँ पाछा पड़ि जैथुन्ह। बारह वर्ष धरि डिरियाइत रहि जैयह।

हुनका प्रसाद खोअवहुन, नहि त राहु जकाँ टप्प दऽ गिड़ि जैथुन्ह। जेना बनिया कैं धऽ लेलथिन्ह, तहिना तोरो धऽ लेथुन्ह। नारायण की वेलाइ बुइया भेलाह ! एहन भगवान सँ लोक कैं की प्रेम हैतैक ?

हम–खट्टर कका, कहल छैक 'बिनु भय होहि न प्रीति।'

खट्टर कका–ई प्रीति नहि भीति। हमर एक पिउसा छलाह–लुट्टी झा। तेहन खिसियाह जे लोक 'खटाँस झा' कहैत छलैन्ह। जहाँ कनेक जलखइमे देरी होइन्ह कि डइकम्प उठा देथि। एक दिन पीसीक नाक खैंचा पर उद्यत भऽ गेलथिन्ह। और जहाँ आगाँ मे दही चूड़ा चीनी केरा पड़लैन्ह कि शान्त। पीसी कैं पुछलथिन्ह जे, 'कहू, कैं भरिक नकमुन्नी चाही ?' तैं जखन हम सत्यदेवक कथा सुनैत छिऐन्ह त लुट्टी झा मन पड़ि जाइत छथि। एहन देवता कैं डेबव बड्ड कठिन।

हम–परंच ओहि कथामे इहो त देखाओल गेल छैक जे एहि पूजा सँ की सभ लाभ होइत छैक।

खट्टर कका भाङक गोला बनबैत बजलाह–हँ, कथा की थिक, बीमा कम्पनीक विज्ञापन थीक !

दुःखशोकादिशमनं सर्वत्र विजयप्रदम्।
धनधान्यसन्ततिकरं सर्वेषामीप्सितप्रदम्॥

एक लकड़िहारा पूजा कैलक त बिक्रीमे दुन्ना नफा भेलैक। एक ब्राह्मण दरिद्र सँ धनिक भऽ गेलाह। एक महाजन कैं बेटी भेलैक। एक राजा कैं बेटा भेलैक। येह ने चारू कथाक सारांश छैक ? हौ, ई सभ बात त राति-दिन संसारमे होइतहि रहैत छैक। चाहे लोक पूजा करौ या नहि करौ। एही ठाम अवदुल्ला मियाँ कहिया कथा बँचबौलक जे हाँजक हाँज बेटा-बेटी छैक। और जकरा नहि हैबाक रहैत छैक तकरा कतबो शंख फुकने नहिए होइत छैक। एही ठाम मुसाइ झा मासेमास पूजा करैत छलाह, परन्तु स्त्रीक पेट सँ एकटा मुसरियो नहि बहार भेलैन्ह। हौ, मासिक पूजा सँ कतहु मासिक धर्म बन्द होइ ? नेनमनि झा भरि जन्म पूजा करैत मरि गेलाह तथापि कहियो चार पर खपड़ा नहि चढ़लैन्ह और दमड़ी साहु लकड़ीक रोजगार सँ दुइए वर्षमे पक्का मकान उठा लेलक। लकड़िहारा कैं सत्यनारायणक कृपा सँ दुगुन्ना नफा भेलैक। दमड़ी साहु कैं चोरनारायणक कृपा सँ दसगुन्ना नफा भेलैक। आब तोंही कहह–कोन बेसी तेज ?

हम–खट्टर कका, केवल लौकिके लाभ नहि। पूजा सँ पारलौकिको लाभ छैक।

खट्टर कका–हँ, से त छैहे। दलाल पक्का छथि। कहै छथि–

धनधान्यसुतारोग्यदाता मोक्षप्रदस्तथा।
न किंचिद्विद्यते लोके यन्न स्यात्सत्यपूजनात्॥

रुपैया कैंचा सँ लऽ कऽ मोक्ष पर्यन्त एहन कोनो वस्तु नहि जे एहि पूजा सँ उपलब्ध नहि हो। लकड़िहारा पूजा कैलक और सोझे वैकुण्ठ चल गेल।

इह लोके सुखं भुक्त्वा चान्ते सत्यपुरं ययौ।

लोक एक बेरि सत्यदेव-कथा सुनि लेथय और सभ प्रकारक दुःख सँ मुक्त भऽ जाय।

यत्कृत्वा सर्वदुःखेभ्यो मुक्तो भवति मानवः।

हौ, यदि मोक्षक प्राप्ति एतेक सुगम रहितैक त गामक गाम एखन धरि जीवन्मुक्त भऽ गेल रहैत। कतहु दुःख देखहिमे नहि अबैत।

हम–त कि अहाँक विचारें ई कथा बनौनिहार फूसि लिखलक अछि ?

खट्टर कका–हमरा त येह देखबामे अबैत अछि जे आदि सँ अन्त धरि केवल फुसिए छैक–यजमान कैं फँसाबक हेतु। जेना हमरा लोकनि नेना कैं परतारैत छिऐक–'रौ बाउ कान छेदा ले, त गुड़ भेटतौक, मिसरी भेटतौक, किशमिश भेटतौक।'' तहिना ओहू मे लोभ देल छैक–''रौ बाउ ! ई पूजा कर त बेटा भेटतौक, धन भेटतौक, स्वर्ग भेटतौक।'' बस, लोभीशिरोमणि लोकनि भक्तराज बनि जाइत छथि। परन्तु हम ने ओहन लोभी छी, ने बच्चाबला बुद्धि रखैत छी।

हम–खट्टर कका ! तखन अहाँक जनैत जे पूजा करैत अछि से बच्चाबला बुद्धि रखैत अछि ?

खट्टर कका भाङ गोला चिकनबैत बजलाह–से कोना कहिऔह ? एक बेर क्षेत्रक मेलामे गेलहुँ। ओहि ठाम रंग-बिरंगक खेलौना बेचैत रहय। ''सस्ता वाला आ गया, जापान वाला आ गया, हाथी ले लो दस पैसा, घोड़ा ले लो दस पैसा, मोटर ले लो दस पैसा, हरएक माल दस पैसा'' । चारू कात सँ लोकक झुंड टूटि पड़ल। हमरो संगमे एक टा नेना रहय। ओ जा कऽ एकटा घड़ी लऽ आएल–''देखू ककाजी, दसे पाइमे घड़ी।'' परन्तु जहिना हाथमे पहिरय लागल कि रबरक फीता टूटि गेलैक और गोल कऽ काटल कागत नीचाँ खसि पड़लैक। हम कहलिऐक–''देखह ! दस पाइक घड़ी एहने होइत छैक। नकली मालक फेरमे नहि पड़ी।'' तहिना दू चारि पातिल केरा गुड़ घोरि कऽ जे ओकरा बदलामे स्वर्ग वा मोक्ष पैबाक आशा रखैत छथि, तनिक और ओहि बच्चाक बुद्धिमे हमरा विशेष अन्तर नहि बुझि पड़ैत अछि।

हम–खट्टर कका, जौं सत्यनारायणक कथामे किछु तत्त्व नहि छैक त लोकमे एतेक प्रचार किऐक छैक ?

खट्टर कका–किऐक त अधिकांश लोक लोभी और मूर्ख होइत अछि। लोक चाहै अछि जे कम्मे खर्चमे, कम्मे समयमे कम्मे प्रयासमे सभ किछु भऽ जाय।

स्वल्पश्रमैरल्पवित्तैरल्पकालेश्च सत्तम।
यथा भवेन्महापुण्यं तथा कथय सूत नः॥

एही द्वारे नकली मालवला पहुँचि जाइत छैक। एक गोटे कोनो दिस सँ ठाढ़ भऽ गेल और बाजि देलक–

सत्यनारायणस्यैतत् व्रतं सम्यग्विधानतः।
कृत्वा सद्यः सुखं भुक्त्वा परत्र मोक्षमालभेत्॥

बस सभ केओ आँखि मूनि कऽ ओकरे पाछाँ दौड़ताह। एहन सस्ता माल और कतय भेटत? सवा टका खर्च करू और मोक्ष लऽ लियऽ। तेँ कागतवला घड़ीक परि होइत छैन्ह। ई मोक्ष की भेल, साग-भाँटा भऽ गेल। हौ! एहन सस्तौआ मोक्ष हमरा नहि चाही।

हम–परन्तु लिखैं छैक "व्रतं सम्यग्विधानतः" यदि पूजाक फल नहि भेल त बुझी जे विधानपूर्वक नहि भेल।

खट्टर कका–हौ, यैह त चलाकी छैक। यदि तंत्र-मंत्र सँ फल नहि हैत त तांत्रिक कहताह जे प्रयोगमे कतहु त्रुटि रहि गेल। परन्तु सत्यदेवक कथामे ई चलाकी कोना चलतैन्ह? ओहिमे जे विधान देल छैक से त ठीक करितहि अछि।

रम्भाफलं घृतं क्षीरं गोधूमस्य च चूर्णकम्।
अभावे शालिचूर्णं वा शर्करा च गुडं तथा॥

पाकल केरा, घृत, दूध, शक्कर, गुड़, गहूमक आँटा, नहि त चौरट्ठे धोरि कऽ.....। हौ जी, जे ब्राह्मण ई बनौलक से छैल धरि बेस चटकारी। हमरे सन मधुरक प्रेमी! बढ़िया प्रसाद चला गेल अछि। .....हँ, की कहैत छलिऔह?

हम–वैह प्रसाद।

खट्टर कका–हँ, तखन–

प्रसादं भक्षयेत् भक्त्या नृत्यगीतादिकं चरेत्।
ततस्तु स्वगृहं गच्छेत् सत्यनारायणं स्मरन्॥

लोक प्रेमपूर्वक प्रसाद पावय, किछु नाच-गान होय और भगवानक स्मरण करैत आनन्दपूर्वक सभ केओ अपन-अपन घर जाय। बेचारा ब्राह्मण बनौलक बेजाय नहि। और अन्तमे अपनो उपाय कऽ गेल अछि–

विप्राय दक्षिणां दद्यात् कथां श्रुत्वा जनैः सह।
एवं कृते मनुष्याणां वांछासिद्धिर्भवेद्ध्रुवम्॥

यजमानक वांछा सिद्ध होउन्ह वा नहि किन्तु पुरोहितक वांछा धरि त तत्काले सिद्ध भऽ जाइत छैन्ह।

हम–खट्टर कका, प्रसाद ओ नृत्यगीत त उपांग मात्र थीक। मुख्य वस्तु थीक भगवानक पूजा।

खट्टर कका कैं हँसी लागि गेलैन्ह। बजलाह–भगवानक जे पूजा कैल जाइत छैन्ह से त भगवाने जनैत हैताह। हमरा त ओ खेले जकाँ बुझना जाइत अछि।

हम–खट्टर कका, ओतेक विन्यास सँ भगवानक षोडशोपचार पूजा कैल जाइ छैन्ह से अहाँ कैं खेल बुझि पड़ैत अछि?

खट्टर कका भाङक गोला एक कात रखलन्हि, तखन कहय लगलाह–भगवानक पूजा तोरा लोकनि कोना करैत छहुन? पहिने आवाहन करैत छहुन जे "इहागच्छ" अर्थात–आएल हाओ। तखन "इह तिष्ठ" अर्थात–बैसल होओ। तखन 'पाद्यार्घः" अर्थात–पैर धोएल जाओ। तदुत्तर हाथ मुँह धोवक हेतु आचमनीयम्। ततः पर स्नान कराय, नव वस्त्र, नव यज्ञोपवीत पहिरा दैत छहुन। चंदन, पुष्पमाला, धूप ओ कर्पूरक सुगन्ध सँ हुनक मन प्रसन्न करैत आगाँमे मधुर नैवेद्य राखि दैत छहुन। भोजनक उपरान्त आचमन कराय, मुख-शुद्धि दय, जैबाक घंटी बजाय दैत छहुन–"पूजितोऽसि प्रसीद। स्वस्थानं गच्छ।" 'सत्कार जे हैबाक छल से भऽ गेल। आब अपन घर गेल जाओ।' ठाढ़ भऽ कऽ आरती देखाय अरियाति दैत छहुन। हौ! ई सभ खेल नहि त और की थीक? हमरा त एहिमे काव्यक आनन्द भेटैत अछि। कथा–उपन्यास, पूजा–नाटक!

हम–खट्टर कका, तखन नर्मदेश्वर पर अहाँ कैं विश्वास नहि?

खट्टर कका–नर्मदेश्वरक अर्थ हम बुझैत छी 'नर्म परिहासं ददाति इति ईश्वरः' अर्थात हँसी खेलवला भगवान। तोरा लोकनि हुनका सँ खेलाइ छह। छौंड़ी सभ कनेया-पुतरा सँ बहिनपा जोड़ि कऽ खेलाइ अछि। तों सभ नर्मदेश्वर कैं समधि बनाकऽ खेलाइ छह।

हम–से कोना, खट्टर कका!

खट्टर कका लोटाक मुँहमे अङपोछा लगबैत बजलाह–देखह, समधिक ऐला पर जे सभ सत्कार होइ छैन्ह सैह सभ त भगवानो कैं होइ छैन्ह। आसन, पानि, धूप, चंदन, माला, भोजन, नव धोती, जनउ, सुपारी। तखन भेद यैह जे शालग्राम कैं एक चूरू जलमे स्नानीय, आचमनीय सभ किछु भऽ जाइ छैन्ह। दू जोड़ धोतीक स्थानमे दू टा सूतो धऽ देने काज चलि जाइत छैन्ह। और प्रसाद जे चढ़ाओल जाइत छैन्ह से घरवैया कैं अनामति बाँचि जाइत छैन्ह। एहन पाहुन के ने चाहय! आधे घंटामे सभ विधि समाप्त कय बिदा कऽ दियौन्ह–"स्वस्थानं गच्छ।" असली समधि देवता कैं एना कहल जाइन्ह त अनर्थ भऽ जाय। परन्तु भगवान त ककरो समधी छथिन्ह नहि। समधीक अर्थ समान बुद्धिवला। यदि भगवानोमे एतबे बुद्धि रहितैन्ह त एतबा टा सृष्टि कोना चलबितथि?

हम–खट्टर कका, एना बजबैक त लोक नास्तिक कहत।

खट्टर कका–से त कहितहि अछि। परन्तु के आस्तिक, के नास्तिक, एकर मीमांसा कैनिहार के अछि? जखन हम भारी भारी धोधिवला यजमान कैं प्रसादक पातिल दूनू हाथैं उठा कऽ अधपीआ शालग्राम पर चढ़बैत देखैत छिऐन्ह वा

गुलाबजामुन सन नर्मदेश्वर कैं पहिरायक हेतु पुरोहित कैं अपना बाँहि सँ नापि कय जनउ गेठियबैत देखइ छिऐन्ह, त हुनका सभक बुद्धि पर दया आबि जाइत अछि। परन्तु बड़का-बड़का पंडित कैं ई नहि बूझि पड़ै छैन्ह जे ई सभ केवल स्वाँग मात्र भय रहल अछि।

खट्टर कका अङ्पोछामे भाङ घोरय लगलाह। पुछलिऐन्ह–खट्टर कका, अपना देशक पंडित लोकनि एहि पर विचार किऐक नहि करैत छथि?

खट्टर कका भाङ घोरैत बजलाह–एकर कारण ठैक जे अपना देशमे संस्कृतक विद्यार्थी लघुकौमुदी सँ प्रारंभ करैत छथि। 'नत्वा सरस्वतीं देवीं' सँ श्रीगणेश ऐंरैत छैन्ह। आदिए सँ जे 'अहं वरदराजभट्टाचार्यः' रटय लागि जाइत छथि से संस्कार आजन्म बनल रहि जाइत छैन्ह। एही द्वारे ओ पंडितो भेला उत्तर अपना बुद्धि सँ सोचि नहि सकैत छथि। परन्तु हौ जी! ई बात बजिहह जुनि। नहि त देशमे तहन-तेहन महावैयाकरण छथि जे हमर कपारे भाङि देताह।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, अहाँक बात तुत्तिए सन होइत अछि।

खट्टर कका बजलाह–तैं त हमरा ककरो सँ नहि पटैत अछि। हँ, 'रम्भाफलं घृतं क्षीरं गोधूमस्य च चूर्णकम्' से सभ सामान पर्याप्त छौह कि ने? 'अभावे शालिचूर्णम्' त ने करबह?

हम–नहि खट्टर कका! मालभोग केराक शीतलप्रसाद बनतैक।

खट्टर कका–अहा! तखन त हम अवश्ये आएब। कथा त जनले अछि। शंख बाजय लगतौह त पहुँचि जैबौह। हम केवल प्रसादेक लोभ सँ पूजामे जाइत छी। से हम अपन बड़का कलगइयाँ लोटा नेने ऐबौह।

खट्टर कका भाङ तैयार कऽ दू बुन्द इष्टदेवताक नाम पर छिटैत बजलाह–"वाह, आइ तरावटिक सामान भऽ गेल। जे हो, ई पूजा जे परचारलक से छल धरि बुद्धिमान, ताहिमे संदेह नहि।"

ई कहि खट्टर कका भरलो लोटा भाङ चढ़ा गेलाह।

ज्योतिष

ओहि दिन ज्योतिषी मुसाइ झा हमरा ओहिठाम पतड़ा देखैत रहथि कि खट्टर कका भङघोटना नेने पहुँचि गेलाह। हुनका देखितहि मुसाइ झा अपन पोथी-पतड़ा समेटय लगलाह। परन्तु खट्टर कका पुछिए बैसलथिन्ह–की औ मुसाइ झा, की होइ छैक?

मुसाइ झा सिटपिटाइत बजलाह–दिन ताकि रहल छी।

खट्टर कका–एकर की अर्थ? दिन त एखन छैहे। चारू कात सूर्यक प्रकाश पसरल छैन्ह। से अहाँ कैं नहि सुझैत अछि की?

ज्योतिषी–से नहि। हिनका आङन सँ एखन नैहर छथिन्ह। ओ कहिया औथिन्ह सैह.....

खट्टर कका–जहिया मन हैतैन्ह तहिया आबि जैथिन्ह। ओहि खातिर अहाँ किऐक व्यग्र भऽ रहल छी?

ज्योतिषी–परन्तु औथिन्ह त नीके दिनमे?

खट्टर कका–हँ, जाहि दिन बदरी-बिकाल नहि रहतैक ताहि दिन आबि जैथिन्ह। 'मेघाच्छन्नं हि दुर्दिनम्'। से दुर्दिनमे त नहिएँ चलतीह।

ज्योतिषी–परंच एहि मासमे त एको टा दिन नहि हैतैन्ह।

खट्टर कका–एहि मासमे तीस टा दिन हैतैन्ह। जहिया सुविधा हैतैन्ह, आबि जैथिन्ह।

ज्योतिषी–परंच काल जे एखन पूब छथिन्ह?

खट्टर कका–औ मुसाइ झा! हमरा जुनि ठकू। काल कि अहाँक चितकबरी घोड़ी छथि जे एखन पुबरिया हत्तामे चरय गेल छथि? काल कोन घड़ी कोन ठाम नहि रहै छथि से त कहू।

ज्योतिषी–अहाँ त शास्त्र मानितहि नहि छी। एखन सूर्य दक्षिणायन छथि।

खट्टर कका–जाड़कालामे त सूर्य दक्षिणायन रहबे करैत छथि। गर्मीमे अपने उत्तरायण भऽ जैताह। एहिमे हिनकर दूनू गोटाक कोन अपराध छैन्ह, जे बिदागरी रोकबा रहल छिऐन्ह?

ज्योतिषी–हम की करिऔन्ह? एखन तीन मास दिन नहि बनैत छैन्ह।

खट्टर कका–से किऐक?

ज्योतिषी–देखू, पूसमे त बिदागरी हो नहि।

खट्टर कका–किऐक नहि हो ?

ज्योतिषी–पूस प्रशस्त नहि।

खट्टर कका–पूस मास कोन दोष कैने अछि ?

ज्योतिषी–आब अहाँ सँ के झगड़ा करौ ? माघ-फागुनमे सम्मुख काल पड़ि जाइत छथिन्ह। चैतमे चन्द्रमा वाम भऽ जैथिन्ह।

खट्टर कका–हिनकर बिधाते वाम छथिन्ह जे अपन दिन अहाँक हाथमे देने छथि। नहि त फागुन मास कतहु कालक विचार होइक ? चैतक चन्द्रमा कतहु वाम होथि ?

ज्योतिषी–तकरा उपरान्त भदबे पड़ि जाइत छैन्ह।

खट्टर कका–भारी भदवा त छिऐन्ह अहाँ। हमरा कहथि त कल्लुके दिन बना दिऐन्ह।

ज्योतिषी–काल्हि त दिक्शूले लागि जैतैन्ह !

खट्टर कका–कोना लागि जैतैन्ह। बाटमे कि कतहु खुट्टी गाड़ल छैक ?

ज्योतिषी–अहाँ त नास्तिक जकाँ बजैत छी। 'शनौ सोमे त्यजेत् पूर्वाम्.....'

खट्टर कका–किऐक त्यजेत् ? यदि सरिपों त्यजेत् त ओहि दिन सकरी सँ निर्मली वाली गाड़ी किऐक चलेत् ? मंगल दिन दरभंगा सँ जयनगरक ट्रेन किऐक फुजेत् ?

ज्योतिषी–जे दिक्शूलमे चलै अछि से अनुचित करै अछि। दिग्बलमे चलक चाही।

खट्टर कका–अहाँक बात हम सोरहो आना मानि लितहुँ जँ दिग्बलमे चलने कतहु रुपैयाक तमघैल बाटमे भेटि जाइत। परन्तु हम त सभ दिन सभ दिस जाइत छी। ने दिक्शूलमे कहियो शूल गड़ल अछि, ने दिग्बलमे फूल झरल अछि।

ज्योतिषी–तखन अहाँक लेखे दिक्शूल किछु नहि ?

खट्टर कका–ओ केवल अहाँक दृक्शूल अर्थात आँखिक दोष थीक।

ज्योतिषी–तखन अहाँक लेखे वार-दोष किछु नहि ? जँ कनियाँ कात्ति यात्रा करतीह त हुनका वार-दोष नहि लगतैन्ह ?

खट्टर कका–रोंइयो भरि दोष नहि लगतैन्ह।

ज्योतिषी–जखन शास्त्रे उठा दी, तखन त कानो बाते नहि। एतेक रास जे कालक विचार कैल गेल छैक.....

खट्टर कका–सैह काल त हमरा सभक काल भऽ गेल। आइ मासान्त, कात्ति संक्रान्ति, परसू भदवा। एकटा टाट वान्हक हो त नौ दिन पतड़ा देखैत बैसल रहू। ओ, संसारक और कोनो देश भदवा मानैत अछि ? भद्रा महारानी मे वास्तविक सामर्थ्य छैन्ह त ओकरा सभ कैं किऐक नहि धरैत छथिन्ह ? पृथ्वी

पर और-और जाति कैं दिक्शूल किऐक नहि लगैत छैक ? यूरोप-अमेरिका वला कैं अवपहरा किऐक नहि धरैत छैक ? सभ सँ बुड़िबक दीनानाथ हमरे लोकनि छी ?

खट्टर कका ई बजितहि छलाह कि ओम्हर सँ दीनानाथ चौधरी पहुँचि गेलाह। मुसाइ झा कैं कहलथिन्ह–औ ज्योतिषीजी, हमरा आङनमे ऐखन नेनाक जन्म भेलैन्ह अछि। तैं अहाँक घर गेल छलहुँ। दौड़ले आबि रहल छी।

खट्टर कका बिहुँसैत कहलथिन्ह–तखन एहि खातिर आब तोरा अपस्याँत हैवाक कोन काज ? तोहर जे काज छलौह से पहिनहि सम्पन्न भऽ चुकलौह।

दीनानाथ बजलाह–केहन लग्न-कर्म ठीक से देखथिन्ह।

खट्टर कका बजलाह–हाय रे कर्म ! यैह बुद्धि त हमरा लोकनि कैं चौपट कऽ देलक। हौ, कर्म करत अपना बुद्धिएँ। एहिमे मुसाइ झा की देखथिन्ह ?

ज्योतिषीजी अप्रतिभ भऽ चुपचाप पतड़ा देखय लगलाह। दीनानाथ सँ पुछलथिन्ह–कतेक काल पहिने नेनाक जन्म भेलैक अछि ?

दीनानाथ बजलाह–यैह करीब दस मिनट होइ छैक।

ज्योतिषीजी हिसाब जोड़ैत-जोड़ैत एकाएक छिलमिला उठलाह–अरे बाप !

हम पुछलिऐन्ह–की ज्योतिषीजी ? की भेल ? बिढ़नी त ने काटि लेलक ?

ज्योतिषीजी माथ पर हाथ दय बजलाह–नहि महाराज, बिढ़नी कटैत त कोन बात छल ! ई त भारी अनर्थ भेलैक !

दीनानाथक मुँह सुखा गेलैन्ह। हुनकर पहिनहि सँ करेज धड़कैत छलैन्ह। थरथर कपैत पुछलथिन्ह–झट दऽ कहू औ ज्योतिषीजी !

ज्योतिषीजी बजलाह–कहू की कपार ? सर्वनाश भऽ गेल। मूल नक्षत्रक प्रथम चरणमे जन्म भेलैक अछि–गंडयोगमे। से अहीं पर आ कऽ बिसाएत।

दीनानाथ पर वज्र खसि पड़लैन्ह। ओ पुक्की फाड़ि कऽ कानय लगलाह।

ज्योतिषी गंभीर भाव सँ कहय लगलथिन्ह–एकर हुइएटा उपाय छैक। या त नेना कैं कतहु फेकि दी अथवा बारह वर्ष धरि ओकर मुँह नहि देखी। नेना कैं आइए माइक सँग मातृक पठा दियौक। नहि त अहाँक प्राण बाँचब कठिन अछि–मूलाद्यपादे पितरं निहन्यात्। ई अहाँक नाश करबाक हेतु जन्म लेलक अछि।

ई कहि ज्योतिषी पुनः गंभीर भऽ गेलाह।

दीनानाथ हाथ जोड़ि पुछलथिन्ह–किछु शान्तिक उपाय ?

ज्योतिषीजी कहलथिन्ह–से सभ त एखन सँ करहि पड़त। दद्याद् धेनुं सुवर्णं च ग्रहांश्चापि प्रपूजयेत्। गोदान, स्वर्णदान, नवग्रहपूजा.....

आब खट्टर ककाक क्रोध तेज भेलैन्ह। ओ भकथोटना पटकैत बजलाह–जे केओ ई सभ लिखने अछि से पाखंडी थीक।

ज्योतिषी बजलाह–परन्तु मुहूर्त्तचिन्तामणि.....

खट्टर कका डँटैत कहलथिन्ह–मुहूर्त्तचिन्तामणि नहि, धूर्त्तचिन्तामणि!

ज्योतिषी गोङियाइत बजलाह–तखन ग्रह-नक्षत्रक जे एतबा विचार कैल गेल अछि से जाल थीक?

खट्टर कका–जाल नहि महाजाल। जाहिमे बड़का सँ बड़का महाजन फँसय। नक्षत्रक आड़मे ज्योतिषी अपन नक्षत्र बनबैत छथि।

ज्योतिषीजी विषण्ण होइत बजलाह–तखन भृगु पराशर आदि जे एतबा रासे लिखि गेलाह अछि से सभटा फूसि थीक?

खट्टर कका फेर डँटलथिन्ह–यैह नाम बेचि कऽ त अहाँ सभ हजारो वर्ष सँ ई ठक-विद्या चला रहल छी। जे अपना मनमे आबय से श्लोक गढ़ि कऽ जोड़ि दिऔक और ठोकि दिऔन्ह पराशरक माथ पर। औ, हमहूँ भृगुसंहिता, पाराशर होरासार देखने छी। तेहन-तेहन वचन ओहिमे भरल छैक जेना यजमान कैं जानि बूझि कऽ बूड़ि बनाओल गेल होइक।

ज्योतिषी अविश्वासक भाव सँ पुछलथिन्ह–अपने प्रमाण दऽ सकैत छी?

खट्टर कका कहलथिन्ह–एक दू नहि, अनेको!

तावत भाङ तैयार भऽ चुकल छल। हम खट्टर ककाक आगाँ लोटा बढ़बैत कहलिऐन्ह–पहिने ई भऽ जाय तखन.....

खट्टर कका एक्के छाकमे लोटा खाली कऽ गेलाह। तत्पश्चात ज्योतिषी कैं कहय लगलथिन्ह–आब सुनू। चु चे चो ला औ गोलाध्यायमे लटकल धूर्त्तराज सभ केहन ढोंग रचने छथि!

उपपदे बुधकेतुभ्यां योगसम्बन्धके द्विज।
स्थूलांगी गृहिणी तस्य जायते नात्र संशयः॥

यजमानक पत्नी मोटाइलि होइथिन्ह सेहो ज्योतिषी कुंडली देखि कऽ बुझि जाइत छथिन्ह। एतबे नहि, यजमानिनीक स्तन केहन छैन्ह सेहो पर्यन्त पतड़ा सँ ज्ञात भऽ जाइत छैन्ह

कठिनोर्ध्वं कुजाचार्ये श्रेष्ठस्थूलोत्तमस्तना।

यजमानक टीपनि देखला सँ हुनका पता लागि जाइ छैन्ह, जे यजमानक स्त्री अनका सँ फँसलि छथिन्ह।

जामित्रे मंदभौमस्थे तदीशे मंदभूमिजे।
वेश्या वा जारिणी वापि तस्य भार्या न संशयः॥

नेनाक टीपनिए देखि कऽ ओ जानि जाइत छथिन्ह जे ओ बापक जनमल नहि थीक।

भग्नपादर्क्षसंयोगाद् द्वितीया द्वादशी यदि।
सप्तमी चार्कमंदारे जायते जारजो ध्रुवम्॥

ततबे टा नहि। देवरक वीर्य सँ ओकर उत्पत्ति भेल छैक सेहो गन्ध हुनका लागि जाइ छैन्ह।

ग्रहराजे स्थिते लग्ने चतुर्थे सिंहिकासुते।
स्वदेवरात् सुतोत्पत्तिर्जाता तस्याः न संशयः॥

हौ, ई सभ लंठइ नहि त और की थीक? और एहन-एहन पाखंडी कैं एहि देशमे उपाधि की देल जाइत छैन्ह–'ज्योतिर्विद्यार्णव'! छिः! एहन मूर्ख देश पृथ्वी पर और कतहु भेटतौह?

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, जौं ज्योतिष सत्य नहि त ग्रहणक हाल ई लोकनि पहिनहि कोना जानि जाइ छथि?

खट्टर कका बजलाह–हौ, समुद्रक कात जे मलाह रहैत अछि से ज्वार-भाटाक हाल पहिनहि कहि देतौह। परन्तु तकर अर्थ ई नहि जे तोरा काकीक जाँघमे कोन ठाम तिलया छैन्ह सेहो ओ कहि देत। जे आकाशक निरीक्षण करैत अछि से पहिनहि कहि देतौह जे आइ राति भुरुकबा कखन उगत। परन्तु ओकरा सँ जौं हम पुछियै गऽ जे भुरकुरबा वाली कैं नेना कहिया हैतैन्ह त ई केहन भारी मूर्खता हैत! सैह मूर्खता एहि देशक लोक कऽ रहल अछि। और धूर्त्तराज सभ एहि मूर्खता सँ लाभ उठा रहल छथि। ग्रहणक हाल कहैत-कहैत पाणिग्रहणक हाल सेहो कहय लागि जाइत छथिन्ह। एही विश्वास पर यजमान-यजमानिनी मूँड़ल जाइ छथि।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, अहाँ जे सभ वचन कहलिऐक अछि से सभ कि वास्तवमे ज्योतिषक ग्रन्थमे लिखल छैक?

खट्टर कका बजलाह–नहि त कि हम अपना दिस सँ गढ़ि कऽ कहलिऔह अछि? ज्योतिषक आचार्य त एहि ठाम बैसले छथुन्ह। पूछि लहुन्ह जे ई सभ श्लोक ग्रन्थमे छैन्ह कि नहि। सेहो ग्रन्थ केहन त 'पाराशर होरासार'!

ज्योतिषीजी माथ कुड़ियबैत बजलाह–हँ, वचन त अवश्ये ग्रन्थमे छैक। परञ्च ओकर सत्यता पर अहाँकैं विश्वास किऐक नहि होइत अछि? जातकविचार कैं अहाँ मिथ्या बुझैत छिऐक?

खट्टर कका लाल-लाल आँखि कय बजलाह–मिथ्ये नहि, लंठपनी। तेहन-तेहन अश्लील गारि ओहिमे भरल छैक जेहन आइ-काल्हि बरियातोमे नहि होइ छैक।

मुसाइ झा पुछलथिन्ह–अपने दृष्टान्त दऽ सकै छी?

खट्टर ककाक स्पिरिट और तेज भऽ गेलैन्ह। बजलाह–तखन सुनू–

धनेशे सप्तमे वैद्यः परजायाभिगामिकः।
जाया तस्य भवेद्वेश्या माताऽपि व्यभिचारिणी॥

की डहकनमे एहि सँ बेशी गारि होइत छैक?

हुनका निरुत्तर देखि खट्टर कका बजलाह–एतबहिमे चुप भऽ गेलौंह ! देखू, सहोदरा बहिन दऽ की कहैत छैक ?

सहोदरासंगममाहुरन्ये दारेश्वरे क्रूरयुते सुखस्थे।
पापेक्षिते पापसमानमेव क्रूरादिषड्वर्गशसमन्विते वा ॥

औ, एहन हँसी-मसखरी त आब सारो-बहिनोइमे नहि होइत छैक।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, ज्योतिषमे एहनो-एहनो बात सभ हैतैक से हमरा नहि अंदाज छल।

खट्टर कका बजलाह–तों ज्योतिष पढ़लह कहिया ? बृहज्जातक, पाराशर आदि देखह तखन पता लगतौह।

आब मुसाइ झा कैं नहि रहि भेलैन्ह। बजलाह–ई सभ फूसि थीक तकर प्रमाण ?

खट्टर कका शास्त्रार्थक मुद्रामे उत्तर देलथिन्ह–प्रमाण स्वयं हमहीं। हमरा टीपनिमे राजयोग लिखैत अछि।

वाहनेशस्तथा माने मानेशो वाहने स्थितः।
लग्नधर्माधिपाभ्यां तु दृष्टौ चेदिह राज्यभाक् ॥

परन्तु राज भेटबाक कोन कथा जे टाट लेबक हेतु एकटा राज पर्यन्त नहि भेटैत अछि।

मुसाइ झा पुछलथिन्ह–तखन अहाँ कैं टीपनिमे विश्वास नहि अछि ?

खट्टर कका कहलथिन्ह–मडुओ भरि नहि। अहाँ जे लाल मोसि लऽ कऽ लंझार चक्र बनबै छी से सरासर जाली दस्तावेज थीक ! चाहे राजयोग लिखिऔक वा जारयोग, दूनू फर्जी थीक !

ज्योतिषी पुछलथिन्ह–से कोना ?

खट्टर कका कहलथिन्ह–राजयोगक असत्यता त प्रत्यक्ष देखा देलहुँ। रहल जारजयोग। से कनेक तर्कशास्त्रक योग लगा कऽ देखिऔक। औ, व्यभिचार पतड़ा देखि कऽ नहि होइ छैक। और ओहि सँ जे गर्भ होइत छैक सेहो कोनो लग्नक हिसाब जोड़ि कऽ पेट सँ नहि बहराइत छैक। तखन ज्योतिषी अनकर कोन कथा जे अपनो सन्तानक जारजयोग नहि पकड़ि सकैत छथि।

मुसाइ झा एहि चोट सँ तिलमिला उठलाह। बजलाह–ज्योतिषक सभटा वचन सत्य और प्रामाणिक थीक। शास्त्रकार लोकनि स्पष्टवादी छलाह।

खट्टर कका–तखन अहाँ कैं अपना जन्मकुंडलीक फल पर पूर्ण विश्वास अछि ?

ज्योतिषी–अवश्य।

खट्टर कका–बेश, त अपन जन्मकुंडली कनेक हमरा देखऽ दियऽ।

ज्योतिषीजी किछु धखाइत अपन कुंडली बस्तामे सँ बाहर कऽ खट्टर ककाक हाथमे देलथिन्ह।

खट्टर कका कुंडली देखि कऽ कहलथिन्ह–की औ ज्योतिषी ! हम फल कहू ? अहाँ पड़ाएब त नहि ?

ज्योतिषी–पड़ाएब किऐक ?

खट्टर कका–बेश त सुनू। पाराशर होरासाक वचन छैक–

भौमांशकगते शुक्रे भौमक्षेत्रगतेऽपि च।
भौमयुक्ते च दृष्टे च भगचुम्बनभाग् भवेत् ॥

ई वचन छैक कि नहि ? आब अपन शुक्रक स्थान देखू। ई योग अहाँमे लगैत अछि की नहि ? आब यदि अहाँ कही त हम भाषा-टीका कय सभ कैं अर्थ बुझा दिऐक।

ई सुनैत देरी मुसाइ झा अपन पोथी-पत्रा समेटैत बिदा भऽ गेलाह। खट्टर कका बारंबार सोर करैत रहि गेलथिन्ह–'औ ज्योतिषीजी ! औ ज्योतिषीजी ! मुखशुद्धि लऽ लियऽ।'

परन्तु के घुरैये !

महाभारत

हम प्रातःकालक श्लोक सभ पढ़ैत चल अबैत रही–

'पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः'

आकि बाटेमे भेटलाह खट्टर कका। बजलाह–की भोरे भोरे अगत्ती सभक नाम लैत छह!

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, धर्मराज.....

खट्टर कका टोकैत बजलाह–धर्मराज नहि, बुड़िराज। एहन बुड़ि आइ धरि संसारमे केओ भेल अछि जे जुआक पाछाँ अपन राजपाट ओ स्त्री पर्यन्त हारि वने-वन छिछिआएल फिरय? हुनकर जोड़ा एकेटा छथिन्ह–राजा नल। ओहो तेहने छलाह। जुआक पाछाँ अपन सर्वस्व गमा जंगलमे हकन्न कानय गेलाह और ओहू ठाम स्त्री कैं सुतले छोड़ि कऽ पड़ैलाह। जेहने युधिष्ठिर अथाह, तेहने नल नकड़ुब्बा! दूनू एके जूआमे जोतय योग्य। तैं जे ई श्लोक बनौलक अछि से खूब जोड़ा लगौलक अछि।

हम–खट्टर कका, ई लोकनि महाभारतक आदर्श महापुरुष थिकाह, जनिक जीवनी सँ लोक असंख्य शिक्षा ग्रहण कऽ सकैत अछि।

खट्टर कका–हँ, युधिष्ठिरक जीवन सँ तीन बातक शिक्षा भेटैत अछि। प्रथम त ई जे जुआ नहि खेलाइ। दोसर, जौं बेइमानीक लूरि नहि हो त और नहि खेलाइ। तेसर, जौं खेलबै करी त स्त्री कैं दाव पर नहि चढ़ाबी। एकरा अतिरिक्त औरो कइएक टा उपदेश भेटैत अछि। जेना संसारमे फूसि सँ केओ नहि बाँचल अछि। जे धर्मराज कहबैत छथि तिनको 'अश्वत्थामा हतः' कहि कऽ छल करय पड़लैन्ह। संसारमे केहनो शुद्ध व्यक्तिक विश्वास नहि करक चाही। सभ सँ बड़का त ई शिक्षा भेटैत अछि जे कुलमे एकटा बुड़ि उत्पन्न भेने सम्पूर्ण देश कैं संहार कऽ दैत छैक। यदि युधिष्ठिर जुआरी नहि बहरैतथि त महाभारतक युद्ध किऐक होइत?

हम–खट्टर कका, अहाँक त सभटा अद्भुते बात होइत अछि। सभ लोक कहैत अछि जे कौरवक अन्याय सँ महाभारतक युद्ध भेल और अहाँ उनटे युधिष्ठिर कैं दोष दैत छिऐन्ह!

खट्टर कका–तों अपने विचारि कऽ देखह। यदि युधिष्ठिर महाराज जुआ खेलाय नहि जैतथि त एतेक होइत किऐक? और हारि गेलाह, एहिमे अनकर कोन दोष? ललकारा पर पासा भजैत गेलाह। हौ, बुड़िबक कैं त लोक ललकारा

देबे करैत छैक। एहिमे दुर्योधन और शकुनिक कोन दोष? और जखन हारिए गेलाह तखन अपना बात पर रहितथि। ई की जे हारियो जाएब आ राज्यो चाहब?

हम–खट्टर कका, द्रौपदीक ओतेक अपमान कैलकैन्ह, चीरहरण कैलकैन्ह; और अहाँ कहै छी.....

खट्टर कका–हौ, द्रौपदी रहबे तेहने करथि। हुनका कहियो भैंसुरक विचार रहलैन्ह? महल बनबौने रहथि। दुर्योधन देखय ऐलथिन्ह। संगमरमर तेहन झलकैत रहैक जे देखला उत्तर हुनका संदेह भेलैन्ह जे ई जल थीक कि स्थल थीक। एहिमे हँसबाक कोन बात रहैक? परन्तु द्रौपदी ऊपर सँ खिलखिला उठलीह। ओतबे नहि, सुना कऽ कहलथिन्ह–''आन्हरक बेटा आन्हरे होइ छैक!'' कहू त, ई केहन मर्मवेधी वाक्य भेलैन्ह! वृद्ध ससुर धृतराष्ट्रक प्रति हुनका एहन बात बाजय उचित छलैन्ह? और कौरव सभ त पाण्डव सन भुसकौल छल नहि जे अपमान घोंटि कऽ पीबि जइतैन्ह। ओ सभ अगिया-बैताल छल। द्रौपदी अपनहि बिढ़नीक छत्ता खोंचारय गेलीह। तखन ओ सभ जे कैलकैन्ह से ठीके कैलकैन्ह। बूझह त महाभारतक जड़ि द्रौपदीए थिकीह।

हम–खट्टर कका, अहाँ पाण्डव सभ कैं भुसकौल किऐक कहैत छिऐन्ह?

खट्टर कका–भुसकौल त रहबे करथि। भरल सभामे द्रौपदीक देह सँ साड़ी खींचि कऽ नग्न कऽ देलकैन्ह और पाँचो पाण्डव मूड़ी गाड़ने बैसल रहि गेलाह। ओहि काल भीमक गदा और अर्जुनक गांडीव कहाँ गेलैन्ह?

हम–खट्टर कका, ओहि ठाम मौका नहि रहैन्ह।

खट्टर कका–हौ, आब ओहि सँ बेशी मौका केहन होइ छैक? बूझह त पाण्डव सभ भारी गैयाह छलाह।

हम–परन्तु अर्जुन भीम केहन रहथि?

खट्टर कका–हौ, अर्जुन पुरुष रहितथि त मोछ-दाढ़ी मुड़ा, साड़ी पहीरि, स्त्री बनि कऽ राजकन्या कैं नाचे सिखाबय पर रहितथि? एहि सँ बरु घोड़ाक सईसी करितथि त से नीक। अपना जिबितहिमे द्रौपदी कैं अनका महलमे रहि नौड़ीक काज करैत देखि जिनका कौर घोंटल जाइन्ह से पाण्डव धन्य छलाह। भीम त सोझे भनसीये छलाह। 'भोनू भाव न जाने पेट भरन सों काम।' खाली मोटाइ भेने की हैतैन्ह?

हम–खट्टर कका, ओ लोकनि अज्ञात-वासमे छलाह।

खट्टर कका–अज्ञात-वास करबाक छलैन्ह त तेहन ठाम जैतथि जतय केओ मुँह नहि देखितैन्ह! हौ, ई लोकनि वास्तवमे मुँह देखाबय योग्य नहि छलाह।

हम–खट्टर कका अर्जुन सन वीर कैं अहाँ एना कहैत छिऐन्ह?

खट्टर कका–हौ, माछे चिड़इ पर निशान लगौने लोक वीर कहाबय त मलाहो सभ वीर थीक। यदि अर्जुन यथार्थमे वीर रहितथि तखन गोआर गोढ़ि सभ स्त्री-

गण कैं घेरिकऽ छीनिए लितैन्ह? ओहि बेर गाण्डीवक घमण्ड कतय गेलैन्ह?–वैह धनुषा वैह पारथ, हरि विनु को पुरिहैं पुरुषारथ? असलमे अर्जुन कृष्णक बलें कुदैत छलाह। जेना खुट्टाक बलें पड़रू चुकड़ैत अछि। यदि कृष्ण सन सारथी नहि भेटितऽथिन्ह त कर्णक हाथ सँ अर्जुनक प्राण कहियो बचितैन्ह? कर्ण असली वीर रहथ। परन्तु ओकरा संग जे अन्याय भेलैक से किऐक ककरो संग हैतैक? अर्जुन कैं ओ अपना सामने कहियो टेरलकैन्ह? धर्मयुद्ध भेला उत्तर देखा दितैन्ह। परन्तु छलिया कृष्ण से नहि होमय देलथिन्ह। कुन्ती सन दू रंग करय वाली माय भगवान ककरो नहि देथुन्ह। एक बेटाक प्राण बचैबाक हेतु दोसराक संग घोर अन्याय कैलन्हि। जौं ओ कर्णक कवच-कुण्डल धोखा दऽ कऽ नहि लऽ लितऽथिन्ह त अर्जुन कथमपि कर्ण सँ नहि जीति सकितथि। परन्तु ई बात जानियो कऽ वीर कर्ण अपन अमोघ अस्त्र स्वार्थी माय केर हाथमे प्रदान कऽ देलन्हि। वीरता सराही त एकरा। कर्ण सन वीर पुत्र और कुन्ती सन घातिनी माय ने आइ धरि भेल, ने हैत। अर्जुन जेहन धोखा दऽ कऽ जयद्रथ कैं मारलथिन्ह से संसार जनैत अछि। यदि ओहि दिन कृष्ण अपन चक्रचालि नहि लगबितथि त अर्जुन कैं जरि कऽ भस्म भऽ जाय पड़तैन्हि। परन्तु हुनका खातिर की की ने जाल कैल गेल! और जे कृष्ण अर्जुनक हेतु एतेक कैलथिन्ह–गीता सन उपदेश देलथिन्ह–तिनके बहिन सुभद्रा कैं ओ अर्जुन हरण कय लऽ गेलथिन्ह। ईहो विचार नहि जे मामक बेटी मसिऔत बहिन थीक। एहने कैं तों प्रशंसा करैत छह? हौ, पांडव सन पतित केओ भेल? अर्जुन अपन ममिऔत बहिन कैं लऽ ऐलाह और भीम अपना मसिऔत बहिन कैं। सेहो द्रौपदी सन पत्नी अछैत!

हम–मसिऔत बहिन कोना?

खट्टर कका–हौ! शिशुपालक माय और कुन्ती दूनू सहोदरा बहिन। भीम शिशुपालक बहिन सँ विवाह कैलन्हि। से मसिऔत भेलैन्ह कि नहि? हिनका लोकनि कैं कोनो विचार रहैन्ह?

खट्टर कका पुनः बजलाह–विचार रहितैन्ह कोना? पाण्डव लोकनि कैं ओरे सँ बिगड़ल छलैन्ह। ई लोकनि जारज सन्तान छलाह। पाण्डु त भरि जन्मक रोगी। हुनका विवाह करबाक सौखे की भेलैन्ह? सेहो दू टा! कुन्ती ओ माद्री। हौ, जकरा एक सँ भातिज रहैक तकरा कतहु एतेक वंश बढ़ायक चिन्ता होइक? सेहो अनके भरोसे। यदि पाण्डु भीष्म जकाँ अविवाहित रहि जैतथि त राजगद्दीक हेतु झगड़े नहि उठैत। धृतराष्ट्रक वंशज राष्ट्र कैं धारण कैने रहितऽथिन्ह। परन्तु पाण्डुक वर्णसंकर सन्तान देश कैं चौपट्ट कऽ देलथिन्ह। कुलमे दाग लगने वैह परिणाम होइत छैक। परन्तु कुन्तिए-माद्रीक कोन दोष? पाण्डुक अपनो जन्म त नियोगे सँ भेल छलैन्ह। यद्यदाचरति श्रेष्ठः तत्तदेवेतरोजनः। जाहि पाण्डवक पुरखे विचित्रवीर्य छलथिन्ह, तिनका कुलखूँटमे एना भेलैन्ह से कोन आश्चर्य!

खट्टर कका सँ के बहस करो! हम अपन प्रातःश्लोक पढ़ैत आगाँ बढ़लहुँ–

अहल्या द्रौपदी तारा कुन्ती मन्दोदरी तथा।
पंचकन्याः स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम्॥

खट्टर कका टोकलन्हि–केवल श्लोके टा पढ़ैत छह कि अर्थो बुझैत छहौक? अहल्या, द्रौपदी, तारा, कुन्ती, मन्दोदरी–पाँचो त विवाहिता छलीह। तखन 'पंच-कन्या' किऐक कहैत छहुन? और कोन बात लऽ कऽ हिनका लोकनि कैं प्रातःस्मरणीय बुझैत छहुन? अहल्या तेहन कर्म कैलन्हि जे पाथरे भऽ गेलीह। तारा ओ मन्ददोदरी एक कैं धऽ कऽ नहि रहलीह। कुन्ती कुमारिएमे पाँच टा कैं आवाहन कैलन्हि। और द्रौपदी महारानी बराबरि पाँच पुरुषक दुलरुआ बनल रहलीह। जखन सासुए ओहन शीलवन्ती छलथिन्ह तखन ई कोना ने पाँच गोटाक तोष राखथु!

पंचभिः कामिता कुन्ती पंचभिः द्रौपदी तथा।
सती वदति लोकोऽयं यशः पुण्यैरवाप्यते॥

हिनका लोकनिक देखाउस तोहर काकी करथुन्ह से हम करय देबैन्ह? देखह, हमरा आँगनमे ई श्लोक नहि पढ़िहऽ से कहि दैत छिऔह।

हम–खट्टर कका, बूझि पड़ैछ जे ओहि समयमे स्त्रीगण कैं किछु अधिक स्वतन्त्रता रहैन्ह।

खट्टर कका–किछु किऐक? बहुत अधिक। आइ हमर बेटी जौं सावित्री जकाँ करय त हम जीबय देबैक? मानि लैह जे हम ओकरा बैधनाथधाम लऽ जइऐक और ओहि ठाम तपोवनमे कोनो विद्यार्थी कैं देखि कऽ ओ अड़ि जाय जे हम विवाह करब त एकरे सँ, चाहे जे भऽ जाय, त हमरा केहन लागत? तैं हम सती-सावित्रीक उपाख्यान ओकरा नहि पढ़य दैत छियैक। सती वा सावित्री केओ अपना बापक कथा मानलन्हि? हौ, हमर बेटी जौं आइ द्रौपदी वा दमयन्ती जकाँ स्वयंवरा भऽ कऽ जकरा जी मे अबैक तकरे माला पहिरा दैक, त हमर पाग रहत? ओ यदि दमयन्ती जकाँ कुमारिएमे अनका सँ चिट्ठी-चपाती करय लागि जाय त हमरा नीक लागत? तैं हम सावित्री वा दमयन्तीक कथा अपना घरमे नहि जाय दैत छी।

हमरा मुँहठाह देखि खट्टर कका बजलाह–महाभारत पढ़ह तखन बहुतो बातक पता लगतौह। ताहि दिन कन्या खूब युवती भेला पर विवाह करथि। देखह, अम्बा, अम्बिका, अम्बालिका–तीनू बहिन केहन समर्थ रहथि, तखन हरण भेलैन्ह। द्रौपदी स्वयंवर-कालमे पूर्णयौवना रहथि। सुभद्रो खूब सेयानि रहथि। उत्तरा कैं विवाह सँ सातमे मास पर परीक्षित जन्म लेलथिन्ह। और कुन्ती कैं त सन्तान भऽ चुकला पर विवाह भेलैन्ह। ओहि समय एक सँ एक प्रौढ़ा कन्या रहैत छलीह। शकुन्तला तेहन जुआइलि छलीह जे प्रथमे साक्षात्कारमे दुष्यन्त

सँ गर्भाधान भऽ गेलैन्ह। देवयानी ओ शर्मिष्ठा तेहन पकठोसि छलीह जे कच और ययाति कैं तंग-तंग कय छोड़लथिन्ह। शल्यपर्वमे त एक एहन कुमारिक कथा आएल छैन्ह जे यौवन ढरि गेलाक बाद स्वेच्छा सँ अपन विवाह कैलन्हि। हौ, ताहि दिनमे कोनो पर्दाक बन्धन त रहैक नहि। कुमारि कन्या सभ स्वच्छन्द भऽ कऽ घूमथि। सुभद्रा रैवतक पर्वत पर मेला देखय गेलि रहथि, ओटी ठाम हरण भेलैन्ह। एक बेर द्रौपदी केश फोलने बाहर ठाढ़ि रहथि, ओही काल जयद्रथ हरण करय लगलैन्ह। चोली त ओ लोकनि पहिरबे नहि करथि। स्वाइत दिनदहाड़े हरण कऽ लऽ जाइन्ह।.......और एक बात कहिऔह? कुमारि सभ कैं अपनो प्रायः सैह नीक लगैन्ह। सुभद्राक हरण भेलैन्ह से अपने इच्छा सँ। रुक्मिणीओक हरण तहिना भेलैन्ह। भाय रोकऽ गेलथिन्ह त हुनका रथेक पहियामे बन्हवा देलन्हि। बूझह त ताहि दिन कन्या लोकनि विवाहक हेतु खेखनियाँ करैत छलीह। अनुशासन-पर्वमे त साफे लिखलकैक अछि......

हम—खट्टर कका, अहाँ जौं कतहु व्यासगद्दी लगा कऽ महाभारत बाँची त अनर्थे हो।

खट्टर कका—हौ, व्यासक नाम नहि लैह। ओ खुशामदी छलाह। आदि सँ अन्त धरि पाण्डवक पक्षपात कैने छथि।

हम—एकर कारण की?

खट्टर कका हमरा कान लग आबि नहूँ-नहूँ बजलाह—कारण यैह जे व्यास अपनो वर्णसंकर छलाह। व्यासो मत्स्योदरीयः—तखन जारज पाण्डव सभक पक्ष कोना ने लेथुन्ह?

हम—खट्टर कका, अहाँक त सभ बाते अद्‌भुत होइत अछि।

खट्टर कका—परन्तु कहै छिऔह यथार्थ। सौंसे महाभारत देखने यैह बूझि पड़ैछ जे कुरुक्षेत्रमे धर्मयुद्ध नहि भेल। पाण्डव लोकनि अन्याय ओ छल-कपट सँ काज नेने छथि। कर्ण, द्रोण, भीष्म, जयद्रथ—सभक वध त अधर्म सँ कैल गेलैन्ह। और ताहि पर व्यास कहैत छथि—यतो धर्मस्ततो जयः। हौ, हमरा त महाभारत देखला उत्तर यैह बूझि पड़ैत अछि जे--यतोऽधर्मस्ततो जयः।

खट्टर कका थोड़ेक काल चुप रहि पुनः बजलाह—परन्तु ओतेक अन्याय जे करय से अन्तमे गलबे करय। स्वाइत ई लोकनि हिमालयमे गलि गेलाह! युधिष्ठिरक संग राज-पाट त गेलैन्ह नहि, एकटा कुकुर मात्र संग गेलैन्ह! भ्रातृ-विरोध कैने की फल भेलैन्ह? परन्तु तैयो त हमरा लोकनिक आँखि नहि फुजैत अछि!

देवताक चरित्र

खट्टर कका भाङ पिउने बुत्त रहथि। हमरा हाथमे लोटा देखि पुछलन्हि—आइ भोरे-भोर कहाँ चललाह अछि?

हम—आइ शिवरात्रि थिकैक। महादेव पर जल ढारय जाइत छिऐन्ह।

खट्टर कका—ई जाड़ मास। कनकन करैत। ताहिमे तों भोरे-भोर पानि ढारय जाइत छहुन। से महादेव तोहर की बिगाड़लथुन्ह अछि?

हम—खट्टर कका, अहाँ कैं त सभ बातमे हँसिए रहैत अछि।

खट्टर कका—हँसी नहि करैत छिऔह। शिवजी त अपने शीतवीर्य थिकाह। हुनका पर जल ढारबाक कोन प्रयोजन? ताहि सँ बरु एक लोटा पानि हमरा नेबो क गाछमे पटा देल करितह त फलो बहराइत।

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, अहाँ कैं देवतामे भक्ति नहि अछि?

खट्टर कका बजलाह—कोन देवतामे भक्ति राखय कहै छह?

हम—सभ देवता त पूज्ये छथि।

खट्टर कका—कोन बात लऽ क?

हम—धर्म लऽ कऽ।

खट्टर कका—तखन कोन देवता अधर्म सँ बाँचल छथुन्ह? हम त सभक उतेढ़ि जनैत छिऐन्ह। जिनकर बखिया कहह, उघारि कऽ राखि दिऔह! बल्कि बूझह त देवता सँ दैत्यक चरित्र उत्तम।

हम—खट्टर कका, अहाँ धन्य छी! सभ ठाम उनटे गंगा बहा दैत छिऐक।

खट्टर कका—तखन देवासुर-संग्राम पढ़ह। दैत्य सभ वीर छल और वीर जकाँ लड़ि कऽ मरैत छल। देवता लोकनि केवल छल सँ जितैत छलाह। ई लोकनि अन्यायी तेहन छलाह जे समुद्र-मंथन सँ जे अमृत बहराएल से अपने सभ पिवैत गेलाह और विष बहराएल से ओकरा सभक आगाँ परसि देलथिन्ह। भीरु हद सँ बेसी। जहाँ असुर सभ चढ़ाइ करैन्ह कि लगले त्राहि-त्राहि कऽ दौड़थि ब्रह्माक ओतय सँ विष्णुक ओतय, विष्णुक ओतय सँ महेशक ओतय। स्वार्थी एक नम्बरक। अपने गरजें आन्हर। एतबा विवेक नहि जे ककरा सँ कोन वस्तु माङी। दधीचि मुनि सँ पीठक हड्डी माङि लेलथिन्ह। स्वाइत ओ वज्र बनि गेल। एहन ठाम त वज्र खसि पड़य!

हम—खट्टर कका, अहाँ एकतरफा फैसला करैत छी। देवता लोकनि केहन केहन काज कैने छथि से ने देखिऔन्ह।

खट्टर कका पित्तें कपैत बजलाह–हौ, काज त तेहन-तेहन कैने छथि जे हुनका जल सँ लघुशंका नहि करी। देवताक राजा इन्द्र, से तेहन कर्म कैलन्हि जे देहमे सहस्र टा छेद भऽ गेलैन्ह। दुष्ट तेहन भारी जे जहाँ ककरो तपस्या करैत देखथिन्ह कि हिनका पेटमे हर बहय लगैन्ह जे कतहु इन्द्रासन ने छिना जाय। जहाँ कोनो यज्ञकार्य होमय लागल कि लगले विघ्न करक हेतु तैयार! एखनो धरि कि ई बानि छुटलैन्ह अछि?

हम–परन्तु ओ वीर केहन रहथि?

खट्टर कका–तेहन वीर रहथि जे मेघनाद बान्हि कऽ लऽ गेलैन्ह। जे राति-दिन अमरावतीमे पड़ल-पड़ल अप्सरा सभक अधरासव पिबैत रहताह से युद्धमे की ठठताह? सहस्राक्ष भेने की हैतैन्ह? लड़बाक खातिर सहस्रबाहु होमक चाही। परन्तु ई त केवल सिंचन करबामे बहादुर। 'अहल्या' कैं उर्वरा बनैबामे चोख!

हम–खट्टर कका, देवते लोकनिक पुण्य-प्रताप सँ पृथ्वी स्थिर छथि। जावत पर्यन्त सूर्य चन्द्रमा.....

खट्टर कका–सूर्य-चन्द्रमाक नाम नहि लैह। सूर्यक प्रताप सैह छैन्ह जे हनुमानजी मुँहमे धऽ लेलथिन्ह। केतु कतेक बेर उगिलि कऽ छोड़ने छैन्ह तकर ठेकान नहि। बूझह त सूर्य ऐंठ छथि। और पुण्य जे छैन्ह तकर हाल ऊषा और कुन्ती जनैत छथिन्ह। त्याइत ज्योतिषमे हिनका पापग्रह कहैत छैन्ह! तखन गायत्री मन्त्रमे तेज कहाँ सँ आबौ? कतबो 'धियो योनः प्रचोदयात्' कैने किछु फल नहि बहराइत अछि। जौं 'सविता'क कोनो गुण हमरा लोकनिमे अबैत अछि त वैह जे 'प्रसविता'क कार्य बढ़िया जकाँ सम्पादन करैत छी। और चन्द्रमा त तेहन कीर्ति कऽ गेल छथि जे अद्यावधि मुँहमे विद्यमान छैन्ह। ई लांछन 'यावच्चन्द्रदिवाकरौ' छूटयवला नहि। त्याइत क्षयरोग सँ ग्रसित भेलाह! गुरुपत्नीओक विचार नहि। एहन महापातकमे त गलित-कुष्ठ भऽ जाय। पांडुरोग भेलैन्ह से कोन आश्चर्य!

हम–खट्टर कका, देवतागण अज अविनाशी होइत छथि.....

खट्टर कका–हँ, 'अज' कही बकरा कैं और 'अवि' नाम भेड़ाक छैक। तकर नाशक त अवश्य होइ छथि। अजापुत्रं बलिं दद्यात् देवो दुर्बलघातकः। से यज्ञक भाग लेबा काल ई लोकनि अपनामे तेना उपरौंझ करै जाइ छथि जे की महापात्र (कंटाह) सभ करताह!

हम–खट्टर कका, छोटका-छोटका देवता कैं छोड़ू। बड़कामे तीन टा छथि–ब्रह्मा, विष्णु, महेश।

खट्टर कका बजलाह–तखन बड़कोक सुनिए लैह। ब्रह्मा सोझे बोका थिकाह। चारिटा मुँह रहने की हैतैन्ह? कहियो कोनो काज हुनका बुतें पार नहि लगलैन्ह। जखन-जखन देवता सभ सहायतार्थ पहुँचल छथिन्ह तखन-तखन की त विष्णुक ओतय जाउ अर्थात हमरा सँ किछु नहि हैत। ई अपने साक्षी-गोपाल जकाँ पद्मासन लगौने बैसल! एहन भुसकौल त कोनो देवता नहि।

हम–खट्टर कका, सृष्टिक आदि मूल कैं अहाँ एना कहैत छिऐन्ह?

खट्टर कका–आदि मूल की रहताह? ओ त अपने विष्णुक ढोंढ़ी सँ बहराएल छथि–कमलनाल सँ। और नहिए बहरैतथि सैह नीक छल। सत्ययुगमे जन्म लऽ कऽ ओ जेहन कृत्य कैलन्हि तेहन कलियुगोमे केओ नहि कैलक। चारू वेदक कर्ता और से कतहु अपना कन्याक.....

हम–खट्टर कका, ओ सभक पितामह थिकाह।

खट्टर कका–यदि ओ वास्तवमे सभक पितामह त सौंसे संसार छगरेगोत्र बूझह। नामो त 'अज' (बकरा) छैन्ह। बूझह त ई सृष्टिए वर्णसंकर थीक। एही द्वारे ब्रह्मा एखन धरि बारल छथि। पंचदेवतोक पूजामे हिनका स्थान नहि छैन्ह। मिथिलामे ब्रह्माक मंदिर कतहु देखलहुन अछि? सभ देवताक पूजा भऽ चुकला उत्तर दू चारि टा अक्षत जे शेष बचैत छैक से हिनका पर छीटि देल जाइ छैन्ह। जेना अछोपक पात पर भात!

हम–खट्टर कका, सभमे पैघ छथि विष्णु भगवान।

खट्टर कका बजलाह–ओहन छलिया त केओ नहि। कतहु मोहन रूप बनि स्त्री कैं फुसियबैत छथि। कतहु मोहिनी रूप बनि पुरुष कैं परतारैत छथि। मधु-कैटभ, सुन्द-उपसुन्द; सभ कैं त छले सँ मारलन्हि अछि। जालंधरक स्त्री वृन्दा सँ तेहन जाल कैलथिन्ह जे अन्तिम बिन्दु धरि पहुँचा देलथिन्ह। एहन जालिया दोसर के हैत?

हम–परन्तु ओ अवतार लऽ कऽ केहन-केहन काज कैने छथि से नहि देखैत छिऐन्ह?

खट्टर कका–सभ काज त तेहने छैन्ह। छल, कपट ओ स्वार्थ सँ भरल। बेचारा बलि सँ तेहन छल कैलथिन्ह जे ओ बलिदाने पड़ि गेल। हमरा त बूझि पड़ै अछि जे ओही सँ 'बलिदान' शब्द बनल अछि। एहन प्रपंची कतहु लोक भेल अछि? कतहु भाइ सँ भाइ कैं फुटका लेब, कतहु बाप सँ बेटा कैं। कतहु स्वामी सँ स्त्री कैं। कशिपु सँ बैर, प्रह्लाद सँ नाता! रावण कैं मारि विभीषण कैं राज! वृषभानुक जमाय सँ संगे नहि, और हुनका बेटी सँ रास! दुःशासन एक टा चीरहरण कैलक ताहि पर त महाभारत मचि गेल और जे एतेक चीरहरण कैलन्हि से भागवते भऽ कऽ रहि गेल! हमरा त बूझि पड़ैत अछि जे वैह चोरौलहा साड़ी सभ द्रौपदीक आगाँ ढेरी लगा देने होइथिन्ह। जावत अपन स्वार्थ रहलैन्ह ता धरि त

वृन्दावनविहारी बनल रहलाह और काज निकसि गेला पर सोझे मथुराक बाट। फेर किऐक एको बेर घुरि कऽ पुछारी करथिन्ह जे राधा वा ललिता कोना छथि। जे यशोदा ओतेक माखन-मिसरी खोऐलथिन्ह तिनके कोन यश देलथिन्ह ? बूझी त ई ककरो दोस्त नहि। अपन मतलबक यार। अपन काज साधक हेतु माछ, काछु, वराह–कोन-कोन रूप ने धारण कैलन्हि अछि ! एहन बहुरुपिया के हैत ? ने नरसिंह रूप धारण करैत देरी, ने बुद्धदेव बनैत। राम बनि धनुषा तोड़ैत छथि, परशुराम बनि फरुसा भजैत छथि। कहियो स्त्री कैं घरमे छोड़ि वनक बाट धरलाह। एहने-एहने अङबेङल काज करबमे त मने लगैत छैन्ह। एक अवतारमे माइक घेंट छोपै छथि, दोसरमे मामकैं पटकि कऽ मारैत छथि। आब कल्कि अवतार लऽ कऽ नहि जानि की करताह !

हम–खट्टर कका, ई सभ त भगवानक लीला थिकैन्ह।

खट्टर कका–हँ, भगवान खेलाइत रहै छथि ! असलमे केओ 'गार्जियन' त ऊपरमे छैन्ह नहि। जेना-जेना मनमे अबै छैन्ह से करै छथि। ई नेननमति कि कहियो छुटयबला छैन्ह ! भरि जन्म बूझह त नाबालिगे रहताह। एही द्वारे राम वा कृष्णक मूर्त्तिमे कतहु दाढ़ी-मोंछ देखलहुन अछि ?

हम–खट्टर कका, ई त बेश कटगर गप्प कहल। परन्तु विश्व कैं पालन करबाक भार त हुनके ऊपर छैन्ह ?

खट्टर कका–पालन की करताह ? तेहन भारी आलस्यविलासी जे सदा क्षीर-सागरशयन ! सदिखन सासुरेमे पड़ल ! देवता सभ बहुत गोहारि करथिन्ह त एक बेर गरुड़ पर चढ़ताह और जा कऽ सुदर्शन चक्र सँ काज कऽ औताह, तकरा बाद फेरि वैह लक्ष्मी-मुखकमल-मधुव्रत ! राति-दिन सासुरमे पड़ल-पड़ल लोक मौगियाह भऽ जाइत अछि। हौ, जकरा पर संसार भरिक हिसाब-किताब करबाक भार होइक से कतहु एहन अहदी भेल रहय ? परन्तु हिनका डाँटी के ? कहियो भृगु सन ब्राह्मण सँ पाला पड़ि जाइत छैन्ह तखन बुझैत छथि। असलमे तैं ई ब्राह्मण सँ हड़कलो रहैत छथि। जौं हिनकामे कनेको ब्राह्मणक भक्ति रहितिन्ह त हमरा कपार पर दरिद्रा किऐक रहितथि ?

हम–तखन त आब एकेटा बाँकी रहलाह–महेश !

खट्टर ककाक आँखि और लाल भऽ गेलैन्ह। बजलाह–महेश त सहजे अलबटाहे छथि। आक-धथूर चिबौने, बेमत्त भेल ! हुनका ने जाति-पाँतिक ठेकान, ने छूआ-छूतिक विचार। भूत-प्रेत-वैतालक संग डाँड़मे चाम लपेटने, हाड़-मुंड लऽ कऽ श्मशानमे क्रीड़ा करैत ! लोक एना करय त अघोरी कहाबय। एही द्वारे महादेवक प्रसाद केओ खाइत छैन्ह !

हम–वास्तवमे महादेवक प्रसाद लोक नहि खाइत छैन्ह। परन्तु हमरा ई कारण नहि ज्ञात छल।

खट्टर कका–कारण वैह जे महादेव नास्तिक छलाह। ई ने कहियो टीक रखलन्हि ने जनउ। माथ पर जटा, गरमे साँप। हौ, बड़द पर केओ चढ़ैत अछि ? ई त सभटा धर्म-कर्म डुबा देलन्हि। बूझह त हिनका सन नास्तिक आइ धरि केओ नहि भेल। स्वाइत सभ मिलि कऽ हिनका जहर दऽ देलकैन्ह !

हम–खट्टर कका, महादेवजी निर्विकार छथि।

खट्टर कका–सोझे निर्विकार नहि बुझहुन। ससुर नेओत नहि देलकैन्ह त गर्दनिए छोपि लेलथिन्ह। एम्हर ससुरक त ई हाल और ओम्हर ससुरक बेटी कैं सदिखन माथे पर चढ़ौने ! ई त कलियुगो कैं जितलन्हि।

हम–परन्तु महादेवजी आशुतोष छथि। हुनका प्रसन्नो होइत ने देरी।

खट्टर कका–हँ, जहाँ केओ दू टा बेलपात चढ़ा देलकैन्ह कि लगले–वरं ब्रूहि। वर देमय काल औढर ढरन। तैं की भेलैन्ह जे भस्मासुर अपने माथ पर हाथ देमय लगलैन्ह। सभ दैत्य बूझी त हिनके सह्काओल अछि। देवतामे एहन भोलानाथ दोसर भेटबे कोन करितैक ? ओखन धरि 'धनिकक बुड़िबक शिव अवतार' कहबैत छथि। हौ, हम त अपना भरि चेष्टा कैल जे बमभोला सँ किछु झीटी, परन्तु कहाँ एखन धरि हाथ लगलाह अछि ? एहन मदक्कीक कोन भरोस ?

हम–खट्टर कका, तखन सभ देवतामे श्रेष्ठ अहाँ किनका बुझैत छिऐन्ह ?

खट्टर कका–कोना कहिऔह ? स्वयं देवतो लोकनि एकर मीमांसा नहि कय सकलाह अछि। महादेव विष्णु कैं पैघ मानैत छथिन्ह। विष्णु महादेव कैं पैघ मानैत छथिन्ह। रामजी रामेश्वर महादेव बना कऽ पुजैत छथि। महादेव राम नाम कैं गुरुमंत्र बूझि जप करैत छथि। सीताजी गौरीक पूजन करैत छथि। गिरिजा सीताजीक ध्यान धरैत छथि। पार्वती महादेवक आराधना करैत छथि। महादेव दुर्गाक स्तुति करैत छथि। तेहन गड़बड़ाध्याय छैक जे देवतो लोकनि कैं नहि बूझि पड़ैत छैन्ह जे के छोट के पैघ। नहि त महादेवक विवाहमे कतहु गणेशक पूजन हो ! बापक विवाहमे बेटाक पूजा ! देवताक बाते सभ उटपटांग होइत छैन्ह।

हम–ई देवता लोकनिक सौजन्य थिकैन्ह। जे जेहन पैघ से ततेक विनयी।

खट्टर कका–तों 'देवानां प्रियः' थिकाह ! हौ, देवता सन झगड़ाहु के भेटतौह ? ई लोकनि अपनामे तेना लड़ैत गेलाह अछि जे की बटेर लड़त ! पहिने त "अहाँ हमर पूज्य त अहाँ हमर पूज्य।" और जहाँ केओ कनेक सनका देलक कि लगले भिड़न्तो होइत देरी नहि। इन्द्र और कृष्णमे, कृष्ण और महादेवमे, महादेव और गणेशमे, कोना-कोना उठापटक भेल छैन्ह से बुझबाक हो त पुराण देखह। और अन्तमे फेर वैह स्तुति। अहाँ पैघ त अहाँ पैघ ! हौ, ई लोकनि असाध्य छलाह।

हम–खट्टर कका, सभ देवता कें त अहाँ अकार्यके बुझैत छिऐन्ह, तखन सृष्टिक काज कोना चलैत छैक ?

खट्टर कका भङघोटना हाथमे लैत बजलाह–असलमे बूझह त एक्के टा देवता तेज छथि। और ओ छथि कामदेव। ब्रह्मा, विष्णु, महेश–तीनू हुनका सँ हारल छथि। जखन बड़केक ई हाल त–कुत्र गण्यो गणेशः ! हिनका पछाड़यबला आइ धरि केओ नहि जन्म लेलक। तेँ हिनका हम सभ सँ प्रबल देवता मानैत छिऐन्ह। जावत पर्यन्त सृष्टिक प्रवाह चलैत छैक तावत पर्यन्त कामदेवक सत्ता के अस्वीकार कय सकैत अछि ? ई पंचभूतमय शरीर हिनके पंचशरक प्रसाद थीक। और जाहि दिन ई देवता अपन वाण तरकसमे राखि प्रस्थान करताह ताहि दिन प्रलये बूझह। सृष्टिक लोपे कें त प्रलय कहैत छैक !

हम–तखन कामदहनक जे उपाख्यान छैक ?

खट्टर कका–तकर उनटे अर्थ पौराणिक लोकनि बुझैत छथि। कामदहनमे तृतीया-तत्पुरुष छैक–कामेन दहनम्। चौरासियो लाख योनि हिनका अग्नि सँ दग्ध होइत अछि। देखह, हिनक जतेक नाम छैन्ह सभ सँ वैह बात सूचित होइ अछि। सभ कामना सँ प्रबल–तेँ कामदेव। लोक कें मत्त कैनिहार–तेँ मदन। मन कें मथि कऽ छोड़ि दैत छथिन्ह–तेँ मन्मथ। विरहिणीक जान मारैत छथिन्ह–तेँ मार। आनन्दक स्वामी थिकाह–तेँ रतिपति।

हम–तखन महादेवजी हुनका नहि जितने छथिन्ह ?

खट्टर कका–महादेव हुनका की जितथिन्ह ? वैह महादेव कें जितने छथिन्ह। जाहि सँ एखन धरि महादेवजी अर्द्धनारीश्वर कहबैत छथि। पौराणिक बुझै छथि जे शिवजी मदन कें भस्म कऽ देलथिन्ह। हम बुझैत छी जे मदने हुनका भस्ममय बनौने छथिन्ह। नहि त स्त्रीक वियोगमे दोसर केओ किऐक ने भस्म रमबैत अछि ? हँ, यदि ओ वास्तवमे मदन-विजय कैने रहितथि त गणेशक श्रीगणेश कोना होइतैन्ह ?

हमरा निरुत्तर देखि खट्टर कका पुनः अपना तरंगमे बहय लगलाह। बजलाह–हँ, असलमे बूझह त कामदेव महादेव, सभ एक्के थिकाह। जैह हर, सैह मार। जैह अनंग, सैह दिगम्बर। मनमे उत्पन्न होइ छथि तेँ मनोभव। हिनके सँ सृष्टि उत्पन्न होइ अछि तेँ भव। बूझह त असल सृष्टिकर्त्ता वैह थिकाह। ब्रह्मा, विष्णु, महेश–सभ हिनके भिन्न-भिन्न स्वरूप थिकथिन्ह। अपने सँ उत्पन्न भऽ जाइत छथि तेँ स्वयंभू। देखऽमे नहि अबै छथि तेँ निराकार। सभ ठाम व्याप्त छथि तेँ सर्वव्यापी। अन्त नहि छैन्ह तेँ अनन्त। 'भग' सँ संयुक्त, तेँ भगवान। एखन शिवलिंग पर जे जल ढारऽ लेल जाइ छहुन से हिनके पूजा होइ छैन्ह कि अनकर ?

हम–खट्टर कका, अहाँक त सभ टा बात अद्भुते होइ अछि।

खट्टर कका–ठीक कहैत छिऔह। असली देवता थिकाह कामदेव। वैह सृष्टिक मूलकर्त्ता छथि। तेँ सर्वदा सँ हुनके पूजा होइत आएल छैन्ह। केओ एक अंगक पूजा करैत अछि, केओ दोसर अंगक। परन्तु विचारि कऽ देखने तत्त्व एक्के–चाहे शैवमे देखह वा शाक्तमे। लिंगपूजाक मर्म बुझबाक हो त लिंगपुराण देखह–

लिंगवेदी उमादेवी लिंगं साक्षान्महेश्वरः।
तयोः सम्पूजनादेव देवी देवश्च पूजितौ॥

मूलतत्त्व वैह थिकैक। आब लोक ओकरा द्वैतवाद कहौ वा अद्वैतवाद अथवा विशिष्टाद्वैत। ताहि सँ हमरा झगड़ा नहि।

हमरा मुँह तकैत देखि खट्टर कका बजलाह–तोँ भातिज थिकाह। बेसी खोलि कऽ कोना कहिऔह ? एखन शिवालयमे जा कऽ ध्यान सँ देखह गऽ त शिवलिंग ओ जलढरी–दुहूक रहस्य बुझबामे आबि जैतौह !

ब्रह्मानन्द

ओहि दिन फगुआ रहैक। खट्टर कका केसर बादाम दऽ कऽ भाङ छनैत रहथि। हमरा देखितहि बजलाह—आबह-आबह। आइ केसरिया छनैत छैक। एक गिलास तोहूँ पीबि लैह।

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, हम त नहि पिबैत छी।

खट्टर कका—तखन किऐक जिबैत छी ? नोनकाढ़ा पीबक हेतु ? हौ, ई मानव जन्म बारंबार नहि भेटतौह।

हम—खट्टर कका, हमरा डर होइ अछि।

खट्टर कका बजलाह—हौ, आर्यकुलक नाम किऐक हँसबैत छह ? अपना वंशक सनातन धर्म केओ छोड़य ?

हम—ई सनातन धर्म कोना भेल ?

खट्टर कका—वेद पढ़ह तखन बुझबहीक जे हमरा लोकनिक पूर्वज कोना सोमपान करैत छलाह। ऋग्वेदक प्रथमे मंडल सँ जे सोमक स्तुतिगान आरंभ भेल अछि से किऐक सभ पर आओत ? नवम मंडलमे त तेहन सोमरसक प्रवाह छूटल छैक जे सभ किछु ओहीमे डूबि गेल अछि।

हम—परन्तु सोमरस भाङे थीक तकर प्रमाण ?

खट्टर कका—प्रमाण एक दू नहि, अनेको। देखह, ओ कुंडी सोंटा सँ घोटल जाइ छल।[1] लोढ़ा लऽ कऽ पीसल जाइ छल।[2] वस्त्र सँ छानल जाइ छल।[3] दूध वा पानिमे घोरल जाइ छल।[4] ओहिमे कइएकटा मसाला पड़ैत छलैक।[5] ओ तीन रंगक छानल जाइत छल—हरियर, उज्जर ओ पीयर अर्थात सादा, दुधिया ओ केसरिया। एहि तीनू रंगक वर्णन वेदमे आएल अछि। .....यदि एतबो पर तोरा संदेह हो जे ओ भाङ नहि थीक तखन बुझबाक चाही जे तोरा बुद्धिएमे भाङ पड़ल छौह।

हम—परन्तु किछु गोटा सोमरसक अर्थ ज्ञान अथवा चन्द्रमाक किरण लगबैत छथि।

खट्टर कका—हुनका लोकनि कैं बुद्धिक अजीर्ण हैतैन्ह। जेना कतेक गोटा कैं विद्यापतिक विपरीत वर्णनमे आत्मा परमात्माक संयोगक भेटि जाइत छैन्ह। परन्तु हौ जी ? हम त सोझ-सोझ बात बुझैत छी। यदि सोमक अर्थ ज्ञान त ओ मूसर सँ कोना कूटल जाइत छल ? यदि चन्द्रमाक किरण, त लोढ़ा सँ कोना पीसल जाइत छल ?

१. ऋग्वेद (१।२८।७)। २. (९।२७।१)। ३. (९।६६।२)। ४. (९।६६।१६)। ५. (८।२।११)।

हम—तखन सोम भाङे छल।

खट्टर कका—अवश्य। अध्यायक अध्याय त एकरे वर्णन सँ भरल अछि। कतहु छानबाक वर्णन[1]। कतहु घोरबाक वर्णन[2]। द्रष्टा लोकनि कैं एहिमे अपूर्व आनन्द भेटैत छलैन्ह। देखह, देवताक राजा इन्द्र ततेक पिबैत छथि जे बुत्त भऽ जाइत छथि[3]। तेना पिबैत छथि जे दाढ़ी-मोंछ पर्यन्त रस सँ भीजि जाइ छैन्ह[4]। दाढ़ी सँ चुबैत रस कैं झाड़ैत छथि[5]। आबक लोक की पिउत ?

हम—परन्तु यदि सोमरस वास्तवमे भाङ छल तखन मनीषी लोकनि ओहन गंभीर तत्त्व.....

खट्टर कका—हौ, गाढ़ रंग छनले उत्तर त गंभीर तत्त्व सुझैत छैक। तैं वैदिक ऋचाकार लोकनि सोमरसक प्रवाहमे तेहन रस बहा देने छथि जे कलम—कलम त नहिए रहैन्ह—काठी तोड़ि देने छथि। वेदमे जेहन शृंगार रस छैक तेहन संसारक कोनो साहित्यमे नहि भेटतौह।

हम चकित होइत पुछलिऐन्ह—ऐं! वेदमे शृंगार-रस ? हमरा त होइ छल जे वेदमे केवल भगवानेटाक चर्चा हैतैन्ह।

खट्टर कका बजलाह—तों वेद देखलह कहिया ? जे वेदक नामे टा सुनने छथि से एहिना बुझैत छथि। परन्तु वेद खोलि कऽ देखह तखन ने बुझबहीक जे ओहिमे की सभ छैक। सहस्रशीर्षा मन्त्र सँ लऽ कऽ सौतिन कैं मारबाक उपाय पर्यन्त ओहिमे भेटि जैतौह।

हमरा मुँह तकैत देखि खट्टर कका बजलाह—हमरा लोकनिक वेद की थीक जे भानुमतीक पेटारी थीक। जे चाही से ओहिमे सँ निकालि लियऽ। तैं वेद सँ केओ हवाइ जहाज बाहर करैत छथि, केओ रेडिओ बाहर करैत छथि। हम भाङ बाहर कऽ लेल त कोन अनुचित कैल ?

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, एकटा बड़का महामहोपाध्याय सिद्ध करैत छथि जे रेलोगाड़ी बर्णबाक मन्त्र वेदमे छैक।

खट्टर कका बादाम घोरैत बजलाह—हँ, लेकिन ओहि रेलगाड़ीक एंजिन हुनके दिमागक भीतर सीटी दैत छैन्ह। हौ, हम पुछैत छिऔह जे देशमे हँजक हँज पंडित भरल छथि जे राति-दिन 'गणपतिग्वं हवामहे' करैत रहैत छथि। किऐक ने सभ गोटा मिलि कऽ 'शुद्ध वैदिक रेलवे' चला लैत छथि ? रेलक कोन कथा, एकटा साइकिलो ई लोकनि आइ धरि बाहर कय सकलाह अछि ? और जखन एक बिलायतक बच्चा 'एटम बम' आविष्कार कऽ संसारक दिग्विजय कऽ लैत अछि त हिनका लोकनिक निंद टुटै छैन्ह। हाफी लैत, चुटकी बजबैत गलथोथी

१. ऋग्वेद (९।६८।७)। २. (९।७३।७)। ३. (७।१८।७)। ४. (१०।२६।४)। ५. (२।११।१७)।

करय लागि जाइत छथि–'आः ! ई वस्तु त हमरा अथर्ववेदक थीक।' हौ, एकरे कहै छैक थेथरपनी–एकां लज्जां परित्यज्य सर्वत्र विजयी भवेत् !

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, वास्तवमे रेल, तार, बिजली, रेडिओ, ग्रामोफोन, टेलीफोन, एरोप्लेन, रौकेट सभ किछु त वैह सभ बाहर कैलक। अपना देशक पंडित की कैलन्हि ?

खट्टर कका भाङमे मलाइ मिलबैत बजलाह–अपना देशक पंडित केवल घोंघाउज कैलन्हि। कहियो जितिया लेल। कहियो छठि लेल। कतहु 'घटो घटः' लऽ कऽ। कतहु 'नीलो घटः' लऽ कऽ। अतीचार कहिया पड़ैत अछि ? दुर्गाजी कथी पर चढ़ि कऽ अबैत छथि ? एहि सभ बात सँ फुरसति होइतैन्ह तखन ने हेलिकोप्टर वा टेलिभिजन बाहर करितथि ?

हम कहलिऐन्ह–परन्तु आध्यात्मिक विषयमे.....

खट्टर कका बजलाह–आब बेसी तामस जुनि उठावह। 'आध्यात्मिक' शब्द सुनि कऽ हमर देह जरि जाइत अछि।

हम–से किऐक खट्टर कका ?

खट्टर कका–वैह 'आध्यात्मिक' हमरा लोकनि कैं चौपट्ट कऽ देलक।

हम–से कोना ?

खट्टर कका–ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या–वैह वेदान्त त हमरा लोकनि कैं अकर्मण्य बना देलक। संसार मिथ्या, शरीर मिथ्या, धन मिथ्या, जन मिथ्या, जीवन मिथ्या, सुख मिथ्या–सर्व मिथ्या। बस, वस्तुमात्र कैं स्वप्नवत् कऽ कऽ बुझैत रहू। चीनमे हफीम, भारतमे वेदान्त ! हौ, एशियाक दौर्य बताह छैक।

हम–परन्तु, आनोआन देशक लोक त वेदान्तक प्रशंसा करैत अछि ?

खट्टर कका–हँ, हमरा लोकनि जतेक अधिक वेदान्ती बनल रही ततेक आन देशक कैं फायदा छैक।

हम–से कोना ?

खट्टर कका–जखन ओ सभ चढ़ाइ कऽ देत त हमरा लोकनि 'सोऽहम्' जपैत रहि जाएब। वैह 'सोऽहम्' करैत-करैत त हम सभ 'सोहल सुथनी' भऽ गेलहुँ।

हम–परन्तु पारमार्थिक दृष्टिएँ.....

खट्टर कका–फेर वैह बात ? हौ, पारमार्थिक दृष्टिएँ हमरा लोकनि कोन जग जितने छी ? किनका ब्रह्मक साक्षात्कार भेलैन्ह अछि ? हमरा त आइ धरि केओ ब्रह्मज्ञानी नहि भेटलाह अछि। जौं गप्प सुनबाक हो तखन त 'बढ़मथान' मे बढ़म बाबा पूजयवला भगतो एहि देशमे वेदान्त छटैत अछि ! कलौ वेदान्तिनः सर्वे फाल्गुने बालका इव।

हम–परन्तु जकरा ब्रह्मानन्दक रस प्राप्त भऽ गेल छैक से.....

खट्टर ककाक दुधिया भाङ तैयार भऽ गेल छलैन्ह। बजलाह–ब्रह्मानन्दक रस वैह थिकैक। हम त रस, आनन्द ओ ब्रह्म, एहि तीनू कैं एक्के कऽ बुझैत छी।

ई कहि खट्टर कका लोटा उठौलन्हि और पिबैत-पिबैत आनन्दमे विभोर भऽ गेलाह।

हम पुछलिऐन्ह–खट्टर कका, अहाँ रसक अनन्य प्रेमी थिकहुँ। परन्तु षट्रसमे बेसी आनन्द भेटैत अछि कि नवरसमे ?

खट्टर ककाक आँखिमे लाली आबि गेलैन्ह। बजलाह–हम दूनूमे कोनो भेद नहि बुझैत छी। साहित्यक नवो रस हमरा षट्रसमे भेटि जाइत अछि। शृंगार और मधुर एक्के थीक। जैह रस विद्यापतिक 'बरयौवति' मे छैन्ह, सैह रस हमरा मालदह आम मे भेटि जाइत अछि। हास्यक स्वाद हमरा अम्मतमे भेटि जाइत अछि। जैह गोनू झाक चुटकुल्ला, सैह तेतरिक खटमिट्ठी। वीर ओ रौद्रक अनुभव हमरा लौड़िया मरचाइमे भऽ जाइत अछि। और वीभत्सक अनुभूति तीतमे। करुण रसक तत्त्व लवणमे भेटि जाइत अछि और शान्त रसक तत्त्व कषायमे। वैराग्यशतक पढ़ू अथवा त्रिफलाचूर्ण फाँकू, एक्के बात थीक। अद्‌भुत रसक आनन्द हमरा पिपरमिंटमे भेटि जाइत अछि।

हम पुछलिऐन्ह–खट्टर कका, अहाँ कैं कोन रसमे विशेष आनन्द भेटैत अछि ?

खट्टर कका बजलाह–हमरा रस मात्रमे आनन्द भेटैत अछि। चाहे ओ रस अनारक हो या कविताक। साहित्यक रस हो वा कुसियारक। विचारि कऽ देखल जाय त सभ रस एक्के थीक। चाहे ओ मदिरामे हो वा मदिराक्षीमे ! मृगनैनीमे वा नैनी माछमे। कंचुकमे वा कंचुक पातमे ! गोपीमे अथवा गोपी आममे।

खट्टर कका तरंगमे आबि गेलाह। बजलाह–रस की वस्तु थीक ? जलक सूक्ष्मतम कण। वैह कण पुष्पमे जा मधु बनि जाइत अछि, अंगूरमे जा आसव बनि जाइत अछि, मोतीमे जा 'आभा' बनि जाइत अछि, तरुणीक गाल पर जा ओज बनि जाइत अछि। अरुणाइ पर अबैत काश्मीरी सेव और तरुणाइ पर अबैत काश्मीरी गाल एक्के उपादानक दू भिन्न स्वरूप थीक। तेँ तात्त्विक दृष्टिएँ डंभक लताम और मुग्धा नायिकामे कोनो भेद नहि। एहि विषयमे हम शुद्ध अद्वैतवादी छी। काव्य-रस ओ द्राक्षा-रसमे, गंगाजल ओ गुलाबजलमे, चरणामृत ओ अधरामृतमे हमरा भेद नहि बूझि पड़ैत अछि। छेनाक संदेश हो वा प्रियतमाक, दुनू मे हमरा समान माधुर्य भेटैत अछि। कविता ओ कामिनीक पदमे हमरा एक्के कोमलताक अनुभव होइछ। बेला फुला गेल, इजोरिया छिटकि गेल, सुन्दरी मुसकुरा उठलीह। बात एक्के थीक। कलकंठी खिलखिला उठलीह वा शेफालिकाक फूल झहरि गेल अथवा चाशनीमे बुनिया उझिला गेल–एहि तीनूमे भेद की ?

हम कहलिऐन्ह–अहा ! माधुर्यक बाढ़ि आबि गेल। खट्टर कका, आब अहाँ असली रंग पर आबि गेलहुँ।

खट्टर कका अपना प्रवाहमे बजैत गेलाह–हौ, एही रस कैं सच्चिदानन्द, परब्रह्म वा भगवान आदि नाना नाम देल गेल छैन्ह। ई 'नाना रूपधरो हरिः' थिकाह। कतहु वैखरी रूपमे योगी कैं नचबैत छथि, कतहु किन्नरी रूपमे भोगी कैं नचबैत छथि। कतहु सरोज बनि भ्रमर कैं रिझबैत छथि, कतहु उरोज बनि रसिक कैं रिझबैत छथि। कतहु सुरालय (देवालय) बनि आस्तिक कैं मोहैत छथि, कतहु सुराऽलय (मदिरालय) बनि नास्तिक कैं। कतहु कंचन रूपमे लोभबैत छथि, कतहु कंचनी रूपमे। कतहु वारांगना रूपमे, कतहु वीरांगना रूपमें।

ई रस नित्य ओ शाश्वत थिकाह। अनादि कालसँ हिनक उपासना होइत आबि रहल अछि। वैदिक युगक सोम वा आधुनिक युगक चाय, हिनके रूप थीक। सत्ययुगक रंभा, उर्वशी ओ मेनका एखन चित्रपटक तारिका रूपमे अवतीर्ण भेल छथि। एहि परम्पराक कहियो अन्त होमयवला नहि। ई रस अक्षय ओ अनन्त थिकाह।

वैह रस सृष्टिकर्त्ता थिकाह। सृष्टिक मूल थीक रसवृष्टि। अंडज, पिंडज, उद्भिज–सभक उत्पत्ति रसैक बिन्दु सँ छैक। और पालन-पोषण–सभ किछु त रसे पर निर्भर छैक। जन्म होइतहि शिशु पयोधर दिस लपकैत अछि। और तरुणो भेला उत्तर सैह संस्कार बनल रहि जाइत छैक। रस मूलतः एक्के थीक, चाहे ओ उमड़ल पयोधर सँ बरसौ अथवा उभड़ल पयोधर सँ। मयूर सँ हजूर पर्यन्त ओ देखि कऽ नाचि उठैत छथि। अतएव वैह रस ब्रह्मा ओ विष्णु दूनू थिकाह।

और संहारकारी महेशो वैह थिकाह। जे मधु चुट्टी कैं अमृतकण पियबैत छैक सैह अपनामे लपटा कऽ प्राणो लैत छैक। दीपक ज्योति पतंगक हेतु जीवन-मरण दूनू थिकैक। विषय-रस जिऐबो करैत छैक, मारबो करत छैक। तैं ओकरा अमृत कहू वा विष। बात एक्के थीक।

वैह रस ब्रह्म वा ब्रह्मानन्द थिकाह। चौरासी लक्ष योनि हिनके पाछाँ नाचि रहल छथि। भिन्न-भिन्न व्यक्ति भिन्न-भिन्न रूपेँ हिनक आराधना करैत अछि। केओ राजा बनि पृथ्वीक सुख भोगैत छथि। केओ तपस्वी बनि स्वर्गक सुख लूटय चाहै छथि। वेदान्ती कैं मोक्षमे चरम आनन्द भेटैत छैन्ह। चार्वाकपंथी कहै छथि–नीविमोक्षो हि मोक्षः।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, अहाँ चरम आनन्द कथीमे मानैत छी ?

खट्टर कका बजलाह–सुनह। संसारमे पाँच टा आनन्द मुख्य थीक। शास्त्रानन्द, काव्यानन्द, संगीतानन्द, विषयानन्द, भोजनानन्द। एहिमे कोन ककरा सँ बलवान से एहि श्लोक सँ बूझह–

काव्येन हन्यते शास्त्रं, काव्यं गीतेन हन्यते।
गीतं नारी-विलासेन, क्षुधया सोऽपि हन्यते।।

शास्त्रक चर्चा प्रियगर लगैत छैक। परन्तु जहाँ काव्यामृतक वर्षा होमय लागल कि लोक ओकरे रसास्वादनमे लागि जाइत अछि। और जखन मधुर रागिणीक स्वरलहरी झंकृत भेल तखन फेर कविता के सुनैत अछि ? परन्तु ओहू सँ बेशी प्रबल होइ छथि कामिनी। हुनक नूपुर-झंकारक आगाँ कोन गीत-वाद्य ठहरि सकैत अछि ? परन्तु एक शक्ति एहन अछि जे हुनको पछाड़ि दैत छैन्ह। ओ थीक उदरक ज्वाला। तैं भोजनानन्द कैं हम सभ सँ प्रबल मानैत छी ! रसना कैं जाहि वस्तु सँ तृप्ति भेटय, सैह ब्रह्म थिक। अन्नं ब्रह्म। मधुरं ब्रह्म।

दधि मधुरं मधु मधुरं द्राक्षा मधुरा सितापि मधुरैव।
तस्य तदेव हि मधुरं यस्य मनो यत्र संलग्नम्।।

अतएव हमरा सँ यदि केओ पूछय जे जीवनक चरम आनन्द की थीक ? त हमर उत्तर अछि रसो वैसः अर्थात रसगुल्ला। रसगुल्ला कैं हम साकार ब्रह्मक प्रतीक मानैत छी, जकर सायुज्य सँ सद्यः अनिर्वचनीय आनन्दक प्राप्ति होइछ। निर्गुण निराकार ब्रह्म लऽ कऽ कि चाटब ? तैं हम सगुण ब्रह्मक उपासना करै छी–

अखण्डमण्डलाकारं श्वेतवर्णं रसान्वितम्।
सर्वानन्दकरं दिव्यं रसगोलं भजाम्यहम्।।

परन्तु ओहि ब्रह्मक पूर्ण आनन्द लेबक हो त भंग-भवानीक आराधना करब आवश्यक। तैं हम भंग-भवानी कैं मोक्षक साधन बुझैत छी। वैह भवानी हमर आराध्य देवी थिकीह।

सदा रसमयी देवी मधुरानन्ददायिनी।
यस्याः चुम्बनमात्रेण ब्रह्मानन्दः प्रजायते।।

हमरा लोकनिक पूर्वज पिउबाक आनन्द जनैत छलाह।

एकेन शुष्कचणकेन घटं पिबामि
वापीं पिबामि सहसा लवणार्द्रखंडैः
संलभ्यते यदि च रोहितमत्स्यखंडः
गंगां पिबामि यमुनां सह सागरेण।

हुनका लोकनिक सिद्धान्त छलैन्ह–

पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा यावत्पतति भूतले....

हौ, आब ब्रह्मानन्दमे लीन भऽ रहल छी....."

एतबा कहैत खट्टर कका अचेत भऽ गेलाह।

ओम्हर दुरुखा सँ काकी आबि कऽ बजलीह–तावत किछु काल हुनका ओहिना छोड़ि दियौन्ह। हम अबि कऽ सम्हारि देबैन्ह।

शास्त्रक वचन

ओहि दिन खट्टर कका सँ शास्त्रचर्चा छिड़ि गेल। बात ई भेलैक जे खट्टर कका चार छरबैत रहथि। हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, भदबेमे छावनी करबैत छिऐक?

खट्टर कका बजलाह–हौ, अनदिना जन नहि भेटैत अछि। तेँ घरहठक काज हम भदबेमे करा लैत छी।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, अहाँ शास्त्रक वचन नहि मानैत छिऐक?

खट्टर कका बजलाह–कोन-कोन वचन मानय कहैत छह?

हम कहलिऐन्ह–शास्त्रमे जे किछु लिखल छैक से हमरा लोकनिक कल्याणार्थे। सभमे किछु ने किछु अभिप्राय भरल छैक। मनु, याज्ञवल्क्य, पराशर आदि कि एकोटा वचन निरर्थक लिखने छथि?

खट्टर कका मुसकुरा उठलाह। बजलाह–तखन हम एकटा पुछैत छिऔह। मनुक वचन छैन्ह–

न दिवीन्द्रायुधं दृष्ट्वा कस्यचिद्दर्शयेद्बुधः।

जौं आकाशमे इन्द्रधनुष देखी त दोसरा कैं नहि देखाबी। एहिमे कोन अभिप्राय छैक? और उदाहरण लैह। स्मृतिसमुच्चयमे लिखैत छैक–

स्वगृहे प्राक्शिराः स्वप्यात्, श्वाशुरे दक्षिणाशिराः।
प्रत्यक्शिराः प्रवासे च न कदाचिदुदङ्मुखः।

अर्थात अपना घरमे पूब मुहेँ सूती। सासुरमे दक्षिण मुहेँ सूती। परदेशमे पश्चिम मुहेँ सूती। एहिमे की तात्पर्य छैक?

हमरा निरुत्तर देखि खट्टर कका बिहुँसैत बजलाह–एहि वचनक अनुसार यदि गामक जमाय चलऽ लागथि त भारी समस्या भऽ जैतैन्ह।

हम कहलिऐन्ह–से किऐक, खट्टर कका?

खट्टर कका ताख पर सँ सोंटा कुंडी उतारैत बजलाह–हौ, गामक बेटी अपना घरमे पूब भर माथ कऽ कऽ सुततीह और वरक सिरमा दक्षिण भर रहतैन्ह। तखन वर कि पड़ल पड़ल बड़ीर खोंटताह?

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, संभव जे एहूमे किछु गूढ़ आशय होइक।

खट्टर कका भाङ रगड़ैत बजलाह–तोहर बात सुनि कऽ एकटा कथा मन पड़ि जाइत अछि। एकटा यजमान श्राद्ध करैत छलाह। ओहि ठाम एकटा बिलाड़ि आबि कऽ बारंबार मड़राय लागल। से देखि पुरोहित कहलथिन्ह–एकरा बान्हि

दिऔक। यजमानक बालक ई बात देखैत रहथिन्ह। जखन किछु दिनक उपरान्त ओ यजमान मरि गेलाह और वैह बालक हुनक श्राद्ध करय लगलथिन्ह त अपना पुरोहित सँ पुछलथिन्ह–एखन धरि बिलाड़ि नहि बान्हल गेल? पुरोहित कहलथिन्ह–पद्धतिमे त एहि कर्मक विधान नहि छैक। यजमान-पुत्र बजलाह–'हमरा कुलक यैह रीति अछि। हम स्वयं अपना आँखि सँ देखि चुकल छी।' तखन एकटा बिलाड़ि कतहु सँ अनाओल गेल और ओकरा गरमे रस्सी बान्हल गेल। तहिया सँ ओहि वंशमे बिलाड़ि बन्हबाक प्रथा चलि अबैत अछि। वंशज लोकनिक कैं होइ छैन्ह जे मार्जारबंधनमे गूढ़ तात्पर्य भरल हैतैक। हौ, एही तरहेँ एहि देशमे कतेक रासे अन्धविश्वास पसरल अछि, जकर ठेकान नहि।

हम–तखन आचार्य लोकनि एतेक रासे वचन कि अकारण बनौने छथि?

खट्टर कका भाङमे सौंफ मरीच दैत बजलाह–हौ, संसारमे अकारण कोनो वस्तु होइ छैक? कोनो पंडित कैं सासुरमे घर चुबैत छल हैतैन्ह। दक्षिण भर किछु निचू देखि खाट घुसका नेने हैताह। और श्लोक बनौने हैताह–श्वाशुरे दक्षिणाशिराः। कोनो आचार्य कैं शनि दिन पूबभर ठेस लागि गेल हैतैन्ह। ताहि दिन सँ सिद्धान्त बनौने हैताह–शनिवारे त्यजेत् पूर्वाम्। हुनके देखादेखी ई नियम चलि गेल हैत। तहिना कोनो आचार्य रातिमे तिलबा खैने हैताह से नहि पचल हैतैन्ह। बस, एकटा श्लोक बना देलन्हि–

सर्वं तु तिलसम्बद्धं नाद्यादस्तमिते रवौ।
मनु (४।७५)

'अर्थात रातिमे तिलक बनल कोनो वस्तु नहि खैबाक चाही।' ....और हमरा लोकनि ओही सभ स्मृति कैं एखन धरि ढाइत आबि रहल छी।

हम–खट्टर कका, भऽ सकैत अछि, एहू सभमे कोनो वैज्ञानिक रहस्य होइक।

खट्टर कका व्यंग्यपूर्वक बजलाह–हँ। जेना कतेक गोटा बुझैत छथि जे टीक रखने मस्तिष्कमे विद्युत प्रवाहित होइ छैक। तेँ पैघ टीक रखैत छथि। प्रायः ओही बिजलीक कारणेँ हुनका लोकनि कैं एहन एहन बात फुरैत छैन्ह।आन आन देश बला त टीक रखितहिं ने अछि, फुरतैक कोना? हौ, असलमे बूझह त हमरा लोकनि कैं बुद्धिक अजीर्ण अछि।

हम–खट्टर कका, एतेक आचार-विचार और कोनो देशमे छैक?

खट्टर कका सौंफ मरीच पिसैत बजलाह–हौ, और देश कैं एतेक फुरसति एहन कहाँ छैक? जौं यूरोप-अमेरिका हमरा सभक कृत्यसारसमुच्चय लऽ कऽ आह्निक कृत्य करऽ बैसय, तखन हवाइ जहाज ओ ट्रैक्टर के बनाओत? हमरा लोकनिक ऋषि कैं कोनो काज रहबे नहि करैन्ह। बैसल बैसल वचन गढ़ल करथि। कै आङुरक दातमनि करी? कै टा कुरुड़ करी? कोन दिन तेल लगाबी? कहिया केश कटाबी? कोन समय नव वस्त्र पहिरी? सभटा बुद्धि एहीमे खर्च होमय

लगतैन्ह। जे आचार्य ऐलाह से दस टा वचन जोड़ने गेलाह। फलस्वरूप विधि-निषेधक तेहन महाजाल बनि गेल जे लोक कैं नदिओ फिरबामे स्वतंत्रता नहि रहलैक।

हम–से कोना, खट्टर कका?

खट्टर कका–स्मृति देखह।

> मूत्रोच्चारसमुत्सर्गं दिवा कुर्यादुदङ्मुखः।
> दक्षिणाभिमुखो रात्रौ संध्ययोश्च यथा दिवा॥
> (मनु ४।५०)

लघी नदी कोन मुँह भऽ कऽ करी तकरो विधान छैक। दिनमे उत्तर मुँह। रातिमे दक्षिण मुँह। हौ, यदि आइ हमरा लोकनि मनुस्मृतिक अनुसार चलऽ लागी त देशमे लाखो पैखाना तोड़ि कऽ दोसर बनवावऽ पड़त। दिनक लेल एक तरहक, रातिक लेल दोसरा तरहक।

हमरा मुँह तकैत देखि खट्टर कका पुनः बाजय लगलाह–एतबे नहि। धर्मशास्त्रक अनुसार चलने देशक सभटा 'शेविंग सैलून' (हजामतक दोकान) टूटि जाएत और समस्त 'लौंड्री' (धोबीक दोकान) कैं तीन दिन बंद राखय पड़त।

हम–से किऐक, खट्टर कका?

खट्टर कका–देखह, शास्त्रमे लिखैत छैक जे–

> नापितस्य गृहे क्षौरं शिलापृष्ठे तु चन्दनम्।
> जलमध्ये मुखं दृष्ट्वा हन्ति पुण्यं पुराकृतम्॥
> (नीतिदर्पण)

जौं हजामक ओहिठाम जाकऽ केश कटावी त पहिलुको सभटा पुण्य नष्ट भऽ जाय। और,

> आदित्यसौरिधरणीसुतवासरेषु
> प्रक्षालनाय रजकस्य न वस्त्रदानम्।
> शंसन्ति कीरभृगुगर्गपराशराद्याः
> पुंसां भवन्ति विपदः सह पुत्रदारैः॥
> (रुद्रधरीय वर्षकृत्य)

जौं शनि, रवि ओ मंगल दिन धोबी कैं कपड़ा धोवक हेतु दिऐक त स्त्री-पुत्र समेत नाना विपत्तिमे पड़ि जाइ। शुक्र, भृगु, गर्ग और पराशर आदिक यैह मत थिकैन्ह।

हम–खट्टर कका, ई सभ आचारक बंधन छैक।

खट्टर कका–परन्तु जखन 'अति' भऽ जाइत छैक त आचारो 'अत्याचार' बनि जाइत छैक। सैह अपना देशमे भेलैक अछि। पड़िव कैं कुम्हड़ नहि खाइ, द्वितीया कैं कटहर नहि खाइ, तृतीया कैं नोन नहि खाइ, चौठ कैं तिल नहि खाइ,

पंचमी कैं आमिल नहि खाइ, षष्ठी कैं तेल नहि खाइ, सप्तमी कैं धात्रीफल नहि खाइ, अष्टमी कैं नारिकेर नहि खाइ, नवमी कैं कदीमा नहि खाइ, दशमी कैं परोर नहि खाइ.....

हम–खट्टर कका, ई सभ कि सरिपहुँ शास्त्रक वचन छैक?

खट्टर कका–त कि हम अपना दिस सँ बना कऽ कहैत छिऔह? देखह, पराशरक वचन छैन्ह–

> कूष्माण्डं बृहतीफलानि लवणं वर्ज्यं तिलाम्लं तथा
> तैलं चामलकं दिवं प्रवसता शीर्षं कपालान्त्रकम्।
> निष्पावाश्च मसूरिका फलमथो वृन्ताकसंज्ञं मधु
> द्यूतं स्त्रीगमनं क्रमात् प्रतिपदादिष्वेवमाषोडश।

हम–तखन त प्रत्येक गृहिणी कैं ई भक्ष्याभक्ष्यक चार्ट बना कऽ राखय पड़तैन्ह?

खट्टर कका–केवल भक्ष्याभक्ष्येक किऐक? बहुतो बातक। परन्तु तों भातिज थिकाह। सभ बात कोना कहिऔह?

हम–खट्टर कका, शास्त्रमे एहन एहन बात किऐक भरल छैक?

खट्टर कका भाङक गोला बनबैत बजलाह–हौ, पंडित लोकनि चालाक छलाह। जनता मूर्ख छल। तैं ओकरा काबूमे करबाक हेतु ई लोकनि नाना प्रकारक बन्धन तैयार कैलन्हि। जेना मालजालक हेतु छान-पगहा तैयार कैल जाइ छैक। और ई लोकनि तेना कऽ एहि देश कैं नथलन्हि जे की अङ्रेज नथने छल! जे काज शस्त्रक बल सँ नहि होइतैन्ह से शास्त्रक बल सँ भऽ गेलैन्ह। ई लोकनि बात बात पर 'कंट्रोल' (प्रतिबंध) लगौलन्हि। अङ्रेज त भला रवि दिन छुट्टिओ दैत छलैक। परन्तु ई लोकनि त और लगाम कसि देलथिन्ह। एक आचार्यक हुकुम भेलैन्ह–

> मत्स्यं मांसं मसूरं च कांस्यपात्रे च भोजनम्।
> आर्द्रकं रक्तशाकं च रवौ हि प्रवर्जयेत्॥
> (ब्रह्मवैवर्त)

अर्थात रवि दिन केओ माछ, मांस, मसुरीक दालि, आद ओ लाल साग नहि खाय। कासाक थारी-बाटीमे सेहो भोजन नहि करय। दोसर आचार्यक फरमान बहरैलैन्ह–

> क्षौरं तैलं जलं चोष्णमामिषं निशि भोजनम्
> रतिं स्नानं च मध्याह्ने रवौ सप्त विवर्जयेत्
> (स्मृतिसंग्रह)

अर्थात रवि दिन ने केओ केश कटावी, ने तेल लगावी, ने गर्म पानिक व्यवहार

करी, ने रातिमे भोजन करी, ने दुपहरमे स्नान करी, और ने..... कहाँ धरि कहिऔह ? तों भातिज थिकाह।

हम–खट्टर कक्का, एहन, एहन वचन पर लोक कैं आस्था कोना कराओल गेलैक ?

खट्टर कक्का भाङ घोंटैत कहय लगलाह–स्वर्गक लोभ ओ नरकक भय देखा कऽ। एही दूनू पहिया पर धर्मशास्त्रक गाड़ी चलैत छैक। ओना केओ अपन दुधार गाय ब्राह्मण कैं किऐक दितैन्ह ? तैं एहन वचन बना देलथिन्ह जे 'जे ब्राह्मण कैं दुधार गाय दान करताह से स्वर्ग जैताह।' परन्तु गाय टरतीह त ओढ़तीह की ? ओढ़ना चाही। और ब्राह्मण दूध पिउताह कथीमे? कासाक बट्टामे। अतएव सभ टा विचारि कऽ पक्का मोसविदा बना देलथिन्ह–

धेनुंच यो द्विजे दद्यादलंकृत्य पयस्विनीम्
कांस्यवस्त्रादिभिर्युक्तां स्वर्गलोके महीयते।

(मनुस्मृति)

बस, स्वर्गक लोभें यजमान लोकनि ओढ़ना ओ बट्टा समेत अपन अपन दुधार गाय लऽ कऽ ब्राह्मणक दरबाजा पर पहुँचय लगलाह। हौ, एहन एकबाल कि नवाबीओ हुकूमतमे चलल छलैक ?

खट्टर कक्का चीनी घोंटैत बजलाह–हौ, स्वर्ग ओ नरक दूनू त अपने हाथमे छलैन्ह। जे बात पसिंद पड़लैन्ह ताहि पर स्वर्गक मोहर लगा देलथिन्ह। जे बात नापसिंद ताहि पर नरकक छाप लगा देलथिन्ह। कतेक ठाम त एना बूझि पड़ैत छैक जेना खिसिया कऽ शाप दऽ रहल होथि वा गारि पढ़ि रहल होथि। कोनो आचार्य कैं स्त्री सँ झगड़ा भेल हैतैन्ह। एकटा वचन ठोकि देलथिन्ह–

ऋतुस्नाता तु या नारी भर्त्तारं नोपसर्पति
सा मृता नरकं याति विधवा च पुनः पुनः।

अर्थात 'ऋतुस्नानक उपरान्त जे स्त्री स्वामीक सेवन नहि करथि से नरक जाथि और अग्रिम जन्ममे बारंबार विधवा होथि।' तहिना कोनो पंडित कैं भावी श्वशुर कन्यादानमे किछु विलंब कऽ देने होइथिन्ह। बस, सातो पुरुखाक उद्धार भऽ गेलैन्ह–

प्राप्ते तु द्वादशे वर्षे यः कन्यां न प्रयच्छति।
मासि मासि रजस्तस्याः पिबन्ति पितरोऽनिशम्॥

अर्थात 'कन्याक बारहम वर्ष भेलो उत्तर यदि विवाह नहि होइन्ह त हुनकर मासिक शोणित पितर लोकनि पिबैत छथिन्ह।' एवं प्रकारें जिनका जे मनमे ऐलैन्ह से एकटा श्लोक जोड़ि कऽ चला देलन्हि। 'इदं कुर्यात्, इदं न कुर्यात्' दैह दूनू तानी-भरनी लऽ कऽ तेहन महाजाल बूनल गेल जे लोक ओझरा कऽ रहि गेल। एक त संस्कृतक श्लोक, ताहि पर विधिलिङ् लकार। एक बेर जे

श्लोक बनि गेल से वज्रलेख भऽ गेल। आब के पूछौ जे 'कथं न कुर्यात् ?' यदि केओ साहस कय मुँह खोललक त 'नास्तिक' कहौलक। एहना स्थितिमे शास्त्रक विरोध के करौ ? एही द्वारें सत्यासत्यक परीक्षा एहि देशमे नहि भऽ सकल।

हम–खट्टर कक्का, अपना देशमे वैज्ञानिक नहि छलाह जे एहि सभ बातक समीक्षा करितथि ?

खट्टर कक्का भाङमे चीनी मिलबैत बजलाह–हौ, एहि देशक जलवायु विज्ञानक अनुकूले नहि छैक। जे विज्ञान जन्मो लेलक से शास्त्रक मसियौते बनि गेल। जे बात धर्मशास्त्र सँ छुटल छलैक से ज्योतिष पूरा कऽ देलक। मनु, याज्ञवल्क्य आदि, लोक कैं धर्मक हथकड़ी लगौने छलथिन्ह, भृगु ओ गर्ग प्रभृति कालक बेड़ी पहिरा देलथिन्ह। ई काल बूझह त हमरा देशक महाकाल भऽ गेल। टाट बान्हू त दिनक विचार। खाट घोरू त दिनक विचार। बाट चलू त दिनक विचार। हाट जाउ त दिनक विचार। घाट जाउ त दिनक विचार। पाट कीनू त दिनक विचार। हौ, एतेक कतहु टंट-घंट भेलय ? जहाँ और और देशक लोक विमानक बलें आकाशमे उड़ि रहल अछि तहाँ हमरा लोकनिक शास्त्र पैरमे छान लगा देने अछि। यात्रा करू त मुहूर्त्त देखि कऽ। विवाह करू त मुहूर्त्त देखि कऽ। द्विरागमन करू त मुहूर्त्त देखि कऽ। और कहाँ धरि, गर्भाधान करू त मुहूर्त्त देखि कऽ।

हम–खट्टर कक्का, ई अहाँ अतिशयोक्ति कय रहल छी। गर्भाधान कतहु पतड़ा देखि कऽ भेलैक अछि ?

खट्टर कक्का–तखन वचन सुनि लैह।

षष्ठ्यष्टमी पंचदशी चतुर्थी चतुर्दशीरप्युभयत्र हित्वा
शेषाः शुभाः स्युस्तिथयो निषेके वाराः शशांकार्यसितेंदुजाश्च।

षष्ठी, अष्टमी, पूर्णिमा, अमावास्या, चौठ, चतुर्दशी–ई सभ तिथि एहि कार्यमे वर्जित थीक। दिनमे सोम, बुध, शुक्र प्रशस्त थीक। नहि विश्वास हो त बृहज्ज्योतिषसार उनटा कऽ देखह।

हम–खट्टर कक्का, अहाँ कैं ज्योतिष पर विश्वास नहि अछि ?

खट्टर कक्का–हौ, फलित ज्योतिष जौं फलित हो तखन ने विश्वास हो ? परन्तु से होइत त एखन धरि हम कम सँ कम अढ़ाइ हजार बेर मरि चुकल रहितहुँ।

हम–से कोना, खट्टर कक्का ?

खट्टर कक्का–देखह, ज्योतिषक वचन छैक जे–

रविस्तापं कांतिं वितरति शशी भूमितनयो
मृतिं लक्ष्मीं सौम्यः सुरपतिगुरुर्वित्तहरणम्
विपत्तिं दैत्यानां गुरुरखिलभोगानुगमनम्
नृणां तैलाभ्यंगात् सपदि कुरुते सूर्यतनयः।

अर्थात रवि दिन तेल लगौने कष्ट, सोम दिन कांति, मंगल दिन मृत्यु, बुद्ध दिन लक्ष्मी, बृहस्पति दिन दरिद्रता, शुक्र दिन विपत्ति और शनि दिन सुखक भोग हो। एहिमे कोन कारण-कार्य सम्बन्ध छैक से त साइंस वला जाँच करथु। परन्तु हम करीब पचास वर्ष सँ सभ दिन तेल लगा रहल छी। एतबा दिनमे २५०० मंगल त अवश्य पड़ल हैत। परन्तु आइ धरि हम जिबितहिं छी। तथापि तों ज्योतिषमे विश्वास करय कहैत छह?

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, एकर उत्तर त कोनो ज्योतिषीए दऽ सकैत छथि।

खट्टर कका अङपोछा सँ भाङ छनैत बजलाह–ज्योतिषी की उत्तर देताह? अपने फंदा सँ गरमे फाँसी लागि जैतैन्ह। हौ, एकेटा दृष्टान्त दैत छिऔह जे केहन गड़बड़ाध्याय लागि जाइत छैन्ह। देखह, ऋतु प्रकरणमे कहैत छथि जे–

आदित्ये विधवा नारी (सोमे चैव मृतप्रजा)

अर्थात जौं कन्याक सर्वप्रथम ऋतुदर्शन रवि दिन होइन्ह त ओ विधवा होथि। और पुनः कहै छथि जे–

पंचम्यां चैव सौभाग्यं (षष्ठ्यां कार्यविनाशनम्)

अर्थात यदि पंचमी तिथिमे ऋतुदर्शन होइन्ह त कन्या सौभाग्यवती होथि। आब हम पुछैत छिऔह जे जौं पंचमी रवि कें कन्याक ऋतुदर्शन होइन्ह तखन ओ की होथि?

हमरा चुप्प देखि खट्टर कका बजलाह–और देखह, एक वचन छैन्ह जे–

(पौषे तु पुंश्चली नारी) माघे पुत्रवती भवेत्

अर्थात माघमासमे रजोदर्शन भेने पुत्रवती होथि। और दोसर वचन छैन्ह जे–

कृत्तिकायां च वंध्या स्यात् (रोहिण्यां चारुभाषिणी)

अर्थात कृत्तिका नक्षत्रमे रजोदर्शन भेने वंध्या होथि।आब ज्योतिषी सँ पुछहुन जे यदि माघमास कृत्तिका नक्षत्रमे किनको रजोदर्शन होइन्ह तखन त वंध्या-पुत्रक जन्म भऽ जैतैन्ह?

हमरा निरुत्तर देखि खट्टर कका पुनः बजलाह–और तमाशा देखह। एकठाम त कहैत छथि जे–

धने पतिव्रता ज्ञेया (मांसहीना च नक्रके)

अर्थात धन राशिमे रजस्वला भेने पतिव्रता होथि। और दोसर ठाम कहै छथि जे–

मंदे च पुंश्चली नारी (ज्ञेयं वारफलं शुभम्)

अर्थात शनि दिन रजस्वला भेने व्यभिचारिणी होथि। आब तोंही कहह जे यदि धन राशिमे शनि दिन कन्या रजस्वला भऽ जाथि तखन ओ की करथि? हौ, कहाँ धरि कहिऔह? ततेक पाखंड भरल छैक जे सभटाक उद्घाटन कैने

महाभारतक पोथा बनि जाय। तथापि पंडित लोकनिक आँखि नहि फुजैत छैन्ह।

हम क्षुब्ध होइत कहलिऐन्ह–खट्टर कका, तखन की करबाक चाही?

खट्टर कका बजलाह–हमरा लोकनि शास्त्रक नाम पर जे फूसि फटाकाक माला गाँथि कऽ पहिरने छी तकरा विसर्जन करबाक चाही। बाधित वचन सभ पर हरताल लगैबाक चाही। दू परस्पर-विरोधी श्लोकमे सँ जे मिथ्या सिद्ध हो तकरा ग्रन्थ सँ दूर करबाक चाही। परन्तु हमरा लोकनिक माथ पर सँ ओ बड़का भूत उतरय तखन ने?

हम–कोन भूत, खट्टर कका?

खट्टर कका–'लिखलाहा'क भूत। सभ किछु टरि सकैत अछि किन्तु 'लिखलाहा' नहि टरैत सकैत अछि। जहाँ कोनो पंडित सँ गप्प करह कि वैह माथ परक भूत बाजय लगतैन्ह–"लिखल छैक जे.....।" हुनका कहून्ह जे "औ बिलौं! लिखल छैक त रहऽ दिऔक। ओकरा नामें कि अहाँ दमामी पट्टा लिखि देने छिऐक? अपन बुद्धि कि कतहु बंधक राखल अछि?" परन्तु जावत धरि ओ भूत माथ पर रहतैन्ह तावत कि पंडित लोकनि अपना मस्तिष्क सँ किछु सोचि सकै छथि?

हम–तखन ओ भूत भगैबाक उपाय?

खट्टर कका–उपाय थैह जे पंडित लोकनि किछु दिन हमर सत्संग कैल करथु। परन्तु ओ लोकनि त हमरा गारिए पढ़ैत हैताह।

हम–खट्टर कका, जे यथार्थ पंडित हैताह से अहाँ कें गारि नहि पढ़ताह।

खट्टर कका लोटामे भाङ घोरैत बजलाह–आब जे करथु। परन्तु हम मुँहदेखल त नहिए कहबैन्ह। एहि देशमे अन्धविश्वासक मूल स्रोत अछि शास्त्र। स्मृति, पुराण, ज्योतिष, कर्मकांड। एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्! सहस्रो वर्ष सँ लोक अज्ञानक बंधनमे पड़ल अछि। भदबाक बंधन, दिक्शूलक बंधन, अधपहराक बन्धन अतीचारक बंधन, ग्रहक बंधन, नक्षत्रक बंधन! हौ, एतेक कतहु बंधन भेलय? त्याइत एहि देशक लोक मोक्षक पाछाँ बेहाल रहैत अछि?

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, ई त मार्मिक गप्प कहल।

खट्टर ककाक भाङ तैयार छलैन्ह। हाथमे लोटा उठा बजलाह–हौ, हमहीं कहाँ धरि सोच करू? जखन दस दसटा अवतार आबि कऽ एहि देशक उद्धार नहि कय सकलाह तखन बेचारे एकटा खट्टर झा एसकर की करताह? एही द्वारें त हम चिन्ताहरण बूटी कें सधने छी।

ई कहि खट्टर कका भरलो लोटा भाङ चढ़ा गेलाह।

प्राचीन आदर्श

खट्टर कका हमरा हाथमे मोटगर पुस्तक देखि पुछलन्हि—हौ, ई की थिकौह ?
हम कहलिऐन्ह—आदर्श चरितावली।

खट्टर कका उनटबैत-पनटबैत बजलाह—ई सभ पढ़ने माथा खराब भऽ जैतौह।

हम—खट्टर कका, ई की कहैत छी ? एहिमे एकसँ एक आदर्श चरित्र भरल छथि जिनकर अनुसरण कैने परम पद प्राप्त भऽ जाय।

खट्टर कका मुसकुराइत बजलाह—परम पद हो वा नहि, किन्तु परम आपद धरि त अवश्ये भऽ जाय!

हम—से कोना, खट्टर कका ?

खट्टर कका ताखपर सँ सोंटा-कुंडी उतारैत बजलाह—हौ, आइ जँ केओ माखन-चोर वृन्दावन-विहारी जकाँ चीर-हरण करैत 'गोपी-पीन-पयोधर-मर्दन-चंचल-करयुगशाली'क अनुकरण करय लागि जाथि त की गति हैतैन्ह ? जेल, अस्पताल वा पागलखाना!

हम—खट्टर कका, अवतारक त गप्प हो नहि। ओहन लीला कि मनुष्य कऽ सकैत अछि ? परन्तु मानव-चरित्र देखू।

खट्टर कका—तोरा कौन मानव-चरित्र सभ सँ बेसी आदर्श बूझि पड़ैत छौह ?

हम—सत्यवादी दानवीर राजा हरिश्चन्द्र।

खट्टर कका भाङक पुड़िया बाहर करैत बजलाह—आइ जँ हम हुनक अनुकरण करय लागि जाइ त लोक हरीमे ठोकि देत।

हम—से कोना ?

खट्टर कका—मानि लैह, जे रातिमे हम स्वप्न देखल जे तोरा काकी कें कुशतिल गंगाजल लऽ संकल्प कय, अब्दुल्ला मियाँ कें दान कऽ देलिऐन्ह। आब जँ हम अन्नपानि त्यागि 'हाय अब्दुल्ला! हाय अब्दुल्ला!' करय लागी और कतहु सँ ओकरा जोहि, जबर्दस्ती तोरा काकी कें ओकरा पाछाँ लगा दिऐन्ह त लोक की कहत ? सम्मत वा बताह ?

हम—खट्टर कका, ओहिठाम तात्पर्य छैक सत्यक महिमा देखैबाक, जे स्वप्नोमे देल वचन पालन करक चाही।

खट्टर कका भाङ रगड़ैत बजलाह—हौ, एहीठाम त मूर्खता आरंभ भऽ जाइत छैक। स्वप्नमे लोक कतेक उटपटांग बात देखैत अछि। जँ तकरा सत्य मानि

लोक चलऽ लागय त कि एको दिन निमहि सकैत छैक ? मानि लैह, स्वप्नमे तों हमर खेत केवाला लेलह। त कि जगला पर हम तोरा दस्तावेज बना देबौह ? परन्तु की कहिऔह ? एहि देशमे त जाग्रत अवस्था सँ बेसी स्वप्नेक महत्त्व छैक।

हम—से कोना, खट्टर कका ?

खट्टर कका—देखह, एहि देशक दर्शन की छैक ? वेदान्त। और वेदान्तक भवन कथी पर ठाढ़ छैक ? स्वप्नक अनुभव पर। संपूर्ण संसार स्वप्नवत् थीक। पृथ्वीक अन्यान्य देश जाग्रत अनुभव पर चलैत अछि। परन्तु हमरा लोकनिक आदर्श अछि सुषुप्तावस्था। बल्कि एक डिग्री ओहू सँ बेसी—तुरीयावस्था! हौ, हम पुछैत छिऔह, यदि आइ समस्त भारतीय तुरीयावस्था कें प्राप्त कय मुर्दा सँ बाजी लगा कऽ पड़ि रहथि त देशक की दशा हैतैक ?

हम—खट्टर कका, हमरा सभक सिद्धान्त थीक—

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः॥

खट्टर कका व्यंग्यपूर्वक बजलाह—हँ। जखन समस्त संसार जगैत अछि तखन हम फोंफ कटैत छी और रात्रिक अंधकारमे हम जगैत छी। भऽ सकैछ जे कोनो पक्षी-विशेष सँ हमरा लोकनि कें ई प्रेरणा भेटल हो।

हम—खट्टर कका, अहाँक व्यंग्य बड्ड तीक्ष्ण होइत अछि।

खट्टर कका मुसकुराइत बजलाह—हम कि कोनो बेजाय कहैत छिऔह ? एहि देशक पक्षीओ सभ तत्त्वदर्शी होइ छथि। शुक, जटायु, गरुड़, काक—सभ त हमरा सभक गुरुए थिकाह। और उलूक पक्षीक त कोनो कथे नहि। यदि हुनकामे विशेष महत्त्व नहि रहितैन्ह त वैशेषिक-कर्त्ता कणाद कें वैह नाम किऐक पड़ितैन्ह ?

हम क्षुब्ध होइत कहलिऐन्ह—खट्टर कका, एहि पुस्तकमे एतेक रास उपाख्यान छैक, ताहिमे एकोटा आदर्श चरित्र अहाँ कें नहि भेटैत अछि ?

खट्टर कका—तोंही देखाबह।

हम—देखू, भीष्म पितामह केहन आदर्श छलाह जे.....

खट्टर कका—जे कौरवक भरल सभामे द्रौपदी कें नग्न होइत देखलथिन्ह, तथापि चुपचाप घाड़ खसौने बैसल रहलाह!

हम—प्रह्लाद ओ विभीषण केहन आदर्श छलाह जे.....

खट्टर कका—एक गोटा बाप कें मरबौलन्हि, दोसर भाइ कें। भगवान नै करथु जे एहन एहन आदर्श फेर भारतवर्षमे जन्म लेथि।

हम—परन्तु कहल जाइ छैक जे—

अश्वत्थामा बलिर्व्यासः हनूमांश्च विभीषणः
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः।

खट्टर कका–एकर असली अर्थ बुझलहक? दरिद्र ब्राह्मण, मूर्ख राजा, खुशामदी पंडित, हुड्ड सेवक, कृतघ्न भाइ, दंभी आचार्य, एवं क्रोधी विप्र–ई सातो आदर्श एहि भूमि पर बहुत दिन धरि कायम रहताह। ई एहि देशक दुर्भाग्य बुझह।

हम–खट्टर कका, अहाँ त सभटा अद्‌भुते अर्थ लगबैत छी। परंच एही देशमे शिबि ओ दधीचि सन आदर्श दानी सेहो भऽ गेल छथि।

खट्टर कका व्यंग्य करैत बजलाह–हँ। राजा शिबि अपन मांस काटि कऽ दान कैलन्हि और दधीचि अपन हड्डी। यदि हमहूँ ककरो मङला पर अपन नाक काटि कऽ दऽ दिऐक त तों हमरा आदर्श कऽ कऽ बुझबह?

हम–खट्टर कका, अहाँ त तेहन छी लगबैत छिऐक जे जड़िए सँ साफ कऽ दैत छिऐक। आब ककरो नामो लैत डर होइ अछि। राजा नल कैं अहाँ केहन बुझैत छिऐन्ह।

खट्टर कका–कापुरुष।

हम–से किऐक?

खट्टर कका भाङ्क गोला बनबैत बजलाह–हौ, आइ यदि तों जूआमे अपन घर-द्वार, खेत-पथार, डीह-डाबर, सभ किछु गमा,आबह और हमरा भतिज-पुतोहु कैं लय जंगलक बाट धरह और ओहिठाम अकाय बनमे हुनका सुतले छोड़ि–बल्कि हुनका देह सँ चुपचाप नूआ फो, हुनके साड़ीक आँचर पहिरि–कतहु पड़ा जाह, त तोरा हम की कहबौह? महापुरुष अथवा कापुरुष?

हम–खट्टर कका, राजा नृगक उपाख्यान लियऽ।

खट्टर कका पुनः व्यंग्य करैत बजलाह–हँ, राजा नृग सहस्रो गाय दान कैलन्हि से त गेल कोठीक कान्ह पर। और एकटा गाय धोखा सँ वापस आबि गेलैन्ह त ओही पाप सँ हजारो वर्ष धरि इनारमे गिरगिट भेल पड़ल रहलाह। हौ, राजा नृग कैं जौं कनेको संस्कारक लेश छल हैतैन्ह त फेर दोसर जन्ममे एकोटा गोदानक नाम नहि नेने हैताह।

हम–खट्टर कका, शंख ओ लिखित केहन छलाह?

खट्टर कका–दूनू उपर्युपरि छलाह। यदि ओहने बुद्धि सभ कैं भऽ जाइक त सम्पूर्ण देश पागलखाना बनि जाय।

हम–से कोना, खट्टर कका?

खट्टर कका भाङ छनैत बजलाह–मानि लैह, हम तोरा पछुआड़मे भाङ तोड़य गेलहुँ। तोरा सँ भेंट नहि भेल। हम दु चारि टा टुस्सी तोड़ि लेल। पछाति तोरा कहि देलिऔह। तों बजलाह–नीक कैल जे लऽ लेल। यदि एहू पर हम संतुष्ट नहि होइ और एहि बात पर अड़ि जाइ जे तों पथरिया हँसू लऽ कऽ हमर हाथ

काटिए लैह त तों हमरा की बुझबह? और तो यदि सरिपहुँ हमर हाथ काटि लैह त तोरा लोक की बुझतौह? हौ, ई लोकनि अजायब-घरमे राखय योग्य छलाह।

हम–खट्टर कका, अहाँ सँ के बहस करौ? परन्तु एही भारतभूमि पर एक सँ एक नामी राजा भेल छथि, जेना महाराज दुष्यन्त, राजा ययाति......

खट्टर कका–हँ, सुक्रिये नाम कि कुक्रिये नाम। दुष्यन्त तपोवनमे जा मुनिकन्या कैं गर्भ कऽ देलथिन्ह और पाछाँ कहलथिन्ह जे हम एहि युवती कैं चिन्हबो नहि करैत छिऐन्ह। एहन भारी लंपट और कायर के हैत? कोनो अँगरेजक बेटी रहितैन्ह त ओही ठाम गोली मारि दितैन्ह। ....और ययाति कैं हम की कहिऔन्ह? बुढ़ारीमे सौख भेलैन्ह त बेटा सँ यौवन पैंच लऽ कऽ भोग कैलन्हि। हिनकर जोड़ा विश्वमे कतहु भेटतौह? परन्तु हम की बाजू? एहि देशक त इनारेमे भाङ घोराएल छैक।

खट्टर कका दू बुन्द उत्सर्ग कय भरि लोटा भाङ चढ़ा गेलाह। पुनः तीव्र स्वरमे कहय लगलाह–एहि देशक राजा सन कामुक ओ स्त्रैण पृथ्वी पर कतहु नहि भेटतौह। बूझह त पुराणमे दुइएटा चरित्र मुख्य। राजा ओ ब्राह्मण। एक कामी, दोसर क्रोधी। और दुहू लोभी। केओ राज्यक पाछाँ, केओ स्वर्गक पाछाँ। से यदि काम, क्रोध ओ लोभक शिक्षा लेबाक हो त पुराण पढ़ह।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, ई अहाँक अन्याय थीक। राजा दऽ त हम नहि कहब। किन्तु ब्राह्मण एहठामक आदर्श भऽ गेल छथि। देखू, देवर्षि नारद केहन ज्ञानी छलाह.....

खट्टर कका–जिनका बिना झगड़ा लगौने कहिओ पेटक अन्न नहि पचलैन्ह।

हम–खट्टर कका, ब्रह्मर्षि द्रोणाचार्य केहन तेजस्वी छलाह.....

खट्टर कका–जे स्वार्थवश एकलव्यक औंठा कतरबा लेलथिन्ह। आबक विद्यार्थी रहितैन्ह त फराके सँ औंठा देखा दितैन्ह।

हम–राजर्षि विश्वामित्र केहन तपस्वी रहथि.....

खट्टर कका–जे अन्हार रातिमे चुपचाप वशिष्ठ मुनिक घेंट काटक हेतु छपकि कऽ ठाढ़ भऽ गेलाह!

हम–खट्टर कका, अहाँ त हमर मुँहे बंद कऽ दैत छी। परन्तु देखू, हम गुरु-भक्तिक दृष्टान्त दैत छी। आरुणि केहन आदर्श रहथि?

खट्टर कका–मूर्ख रहथि। गुरुक खेतमे पानि रोकबाक रहैन्ह त आरि बन्हितथि। अपने की पड़ि रहलाह? हौ, ओहि तरहें लोक कतेकाल धरि क्रियाकर्म रोकने पड़ल रहि सकैत अछि? एतबा नहि फुरलैन्ह जे जैखन उठब तैखन सभटा पानि बहि जाएत। एहने एहने विद्यार्थी भरि दिन पात खरड़ि रातिमे धधरा कय पढ़ैत छलाह।

हम क्षुब्ध होइत कहलिऐन्ह—खट्टर कक्का, तखन एहन एहन कथाक कोनो उपयोगिता नहि ?

खट्टर कका बजलाह—उपयोगिता अवश्य। ताहि दिनक गुरु चलाक रहथि। विद्यार्थी भुसकौल होथि। एहन एहन उपाख्यान गढ़ि पंडित लोकनि चेला सँ चैला चिरवावथि, गाय चरबावथि, खेत कमवावथि। एहि तरहें सभ कथामे किछु ने किछु अभिप्राय भरल छैक। कोनो ब्राह्मणक गाछ सँ केओ नेबो-लताम तोड़ि नेने हैतैन्ह। तकरा लजाबक हेतु शंखक खिस्सा गढ़ि देलथिन्ह। कोनो ब्राह्मण कैं राजा गाय दऽ कऽ छीनि नेने हैतैन्ह। तकरा डराबक हेतु नृगक पिहानी रचि देलथिन्ह। एवं प्रकारें अनेको आख्यान बनि गेल। कोना राजा कैं ठकक हेतु; कोनो विद्यार्थी कैं परतारक हेतु; कोनो शूद्र कैं सरि करक हेतु; कोनो स्त्री कैं नाथक हेतु। कथाकार लोकनि तेना बढ़ा-चढ़ा कऽ टाटक ठाढ़ कैने छथि जेना कौआ-कुकुर कैं डरैबाक हेतु मकइक खतमे ढेलवाँस बनाओल जाइ छैक। परन्तु आबक लोक कैं एना परतारब कठिन।

हम पुछलिऐन्ह—तखन पौराणिक आदर्शक किछु मूल्य नहि ?

खट्टर कका बजलाह—वैह मूल्य जे 'म्युजियम'मे राखल ढालि-तरुआरिक होइत छैक। ओ प्रदर्शन लेल रहैत छैक, व्यवहारक हेतु नहि।

हमरा सोचैत देखि खट्टर कका कहय लगलाह—हौ, बात ई छैक जे पुराणमे जाहि नैतिक आदर्शक चित्रण कैल गेलैक तकरा पराकाष्ठा पर पहुँचा देल गेलैक। परिणाम ई भेलैक जे ओकर स्वाङ (विद्रूप) बनि गेल छैक। आतिथ्यक महिमा देखैबाक भेल त 'फल्लाँ बेटा कें काटि कऽ थारीमे परसि देलन्हि।' सतीत्वक महिमा देखैबाक भेल त 'फल्लांक कोंचा सँ आगि बहरा गेलैन्ह।' कोनो सती सूर्यक चक्का रोकि दैत छथि, केओ यमराज कें पछाड़ि दैत छथि। बिना अतिशयोक्ति हमरा लोकनि कैं बाजहि नहि अबैत अछि। कोनो बात पसिंद त सहस्र अश्वमेधक तुल्य ! नापसिंद त कोटि ब्रह्महत्याक समान ! जकर स्तुति करय लागब तकरा 'त्वमर्कः त्वं सोमः' करैत आकाशमे टेका देब ! जकर निंदा करय लागब तकरा असुर वा ससुर बनबैत पातालमे धसा देब ! ई बात वैदिके युग सँ आबि रहल अछि। बूझह त अतिशयोक्ति हमरा सभक वंशज गुण थीक।

हम—खट्टर कका, अतिशयोक्ति त किछु ने किछु सभ देशक साहित्यमे भेटत।

खट्टर कका कतरा करैत बजलाह—हँ। परन्तु हमरा लोकनिक रोम-रोममे भीजल अछि। वेद, पुराण, धर्मशास्त्र, ज्योतिष, आयुर्वेद, साहित्य, संगीत, चित्रकला, मूर्तिविद्या—सभमे वैह बात भेटतौह। आँखि पैघ नीक, त कान धरि सटा देल गेल। पयोधर पुष्ट नीक, त कलश सन-सन बना देल गेल। कवि लोकनि कैं ओहू सँ मन नहि भरलैन्ह त गजकुम्भ सँ उपमा दैत दैत पर्वत धरि टेका

देलथिन्ह। हौ, सभ बातक एकटा सीमा होइत छैक। एहि ठाम त कोनो सीमे नहि। मुखमस्तीति वक्तव्यं दशहस्ता हरीतकी। जिनका जे फुरलैन्ह से लिखि गेलाह। फलस्वरूप अतिशयोक्तिक बाजार लागि गेल। केओ पहाड़ उठा लैत छथि। केओ समुद्र सोखि जाइत छथि। केओ पृथ्वी कैं दात तर धऽ लैत छथि। केओ सूर्य कैं घोंटि जाइ छथि। मुँह ओ हाथक कोनो संख्ये नहि। केओ चतुरानन, केओ पंचानन, केओ षडानन ! केओ चतुर्भुज, केओ अष्टभुज, केओ सहस्रभुज ! केओ एक सहस्र वर्ष युद्ध कैलन्हि, केओ दस सहस्र वर्ष तपस्या कैलन्हि, केओ बीस सहस्र वर्ष भोग कैलन्हि ! .....बूझह त वैह अतिशयोक्ति हमरा सभ कैं खा गेल !

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कक्का ! त कि ई सभ बात कपोलकल्पित छैक ?

खट्टर कका व्यंग्यपूर्वक बजलाह—जावत पर्यन्त अपना देशक धौत-परीक्षोत्तीर्ण पुराणाचार्य लोकनि जीवित छथि तावत एहन बात बजबाक दुःसाहस के कय सकैत अछि ? हमर एकटा महावीरजी आबि जाथि त समस्त संसारक सेना कैं नाङड़िमे लपेटि लेथि। एकटा अगस्त्य मुनि आबि जाथि त सभ जहाज समेत समुद्र कैं चुरूमे उठा कऽ पीबि जाथि। एकटा बमभोला तेसर नेत्र उघारथि त सभ बमगोला बला बम बाजि जाथि। एकटा बराह भगवान अवतार लेथि त पृथ्वी कैं फुटबाल जकाँ उठा कऽ फेंकि देथि। तखन आन आन देश बला बाप बाप कऽ चिचिया उठताह। यूरोप अमेरिका आविष्कार करैत रहथु। हमरा लोकनिक काज अवतारे सँ चलि जाइत अछि। एकटा अवतार एखन भऽ जाइत त सभ टा समस्या हल भऽ जाइत। कोशी कैं डाँटि दितथि, बाढ़ि बन्द भऽ जाइत। नख लऽ कऽ चीरि दितथि, नहर बनि जाइत। पृथ्वी कैं एक वाण मारितथि, अन्न उपजि जाइत। देहक मैल छोड़ा कऽ फेंकि दितथि, कल-कारखाना बनि जाइत। देश तेहन समृद्ध भऽ जाइत जे लोक घृते लऽ कऽ लघुशंका करैत।

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कक्का, अहाँ त अतिशयोक्तिक धारे बहा देलिऐक !

खट्टर कका बिहुँसैत बजलाह—हौ, वंशज ककर छी ? रक्तक धर्म कतहु छुटलैक अछि ? विज्ञानक उन्नति करबा लेल त पृथ्वी पर और और जाति अछिए। कल्पना-विलासक भार सेहो त ककरो ऊपर रहक चाही। से मनमोदक बनैबाक भार हमरा लोकनि पर अछि।

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कक्का, मानि लियऽ जे किछु अतिरंजनो होय, तथापि आब ओ सत्ययुगी आदर्श पृथ्वी पर भेटि सकैत अछि ?

खट्टर कका नोसि लैत बजलाह—हौ, सत्ययुगक लोक कोनो दोसर प्रकारक जीव नहि होइत छलाह। सभ युगमे मनुष्यक स्वभाव एक्के रंग होइत छैक। तखन परिस्थितिक भेद सँ व्यवहारमे अन्तर पड़ैत छैक। देखह, पहिने लोकक

संख्या कम्म छलैक। जतवा अन्न फल उपजैत छलैक सैह नहि खा सकैत छल। एहिठाम अत्रिक आश्रम, दू कोस दूर वशिष्ठक आश्रम। बीचमे ककरो घर नहि। अत्रि कें एक हजार गाय, वशिष्ठ कें दू हजार गाय। आब एतेक दूध-दही की हो? तें अतिथि-देव कें खेहारि खेहारि कऽ सत्कार कैल जाइन्ह। ओतवा घृत के खा सकैत? जे बचैत छल से जरा कऽ होम कऽ देल जाइ छल। ताहि दिन सभ कें अपना जरूरति सँ फाजिले छलैक। केओ चोरी किऐक करैत? परन्तु आइ जनसंख्या बहुत बढ़ि गेलैक अछि। पृथ्वी ओतबे, खैनिहार दसगुना बेसी। तें अत्रि-वशिष्ठक सन्तान पेट खातिर एक दोसरा कें छोपि रहल छथिन्ह। यदि लोकक आबादी कम्म भय दशमांश पर आबि जाय त फेर सत्ययुग पलटि आबय। पुनः गोरसक धार बहऽ लागय।

हम–तखन सत्ययुग ओ कलियुगमे अन्तर कोन बात लऽ कऽ?

खट्टर कका–हौ, लोक सँ खाद्य बेसी त सत्ययुग। खाद्य सँ लोक बेसी त कलियुग। पूर्वहुमे कहियो अकाल पड़ि जाइत छलैक त चोरी आदि कलिक धर्म प्रकट भऽ जाइत छलैक। एक बेर अश्वत्थामा कें दूध नहि भेटलैन्ह त पिठार घोरि कऽ पिउलन्हि। एखन देशमे करोड़ो अश्वत्थामा मौजूद छथि।

हम–तखन प्राचीन ओ नवीन युगमे धर्ममूलक भेद नहि छैक?

खट्टर कका–धर्ममूलक नहि, अर्थमूलक भेद छैक। एही आर्थिक आधार पर समाज नैतिक आदर्श बनैत छैक। हम त बुझैत छी जे अर्थे धर्मक मूल थीक। जौं अर्थ हटा दी त कोनो आदर्शक मूल्य नहि।

हम–से कोना? खट्टर कका?

खट्टर कका–देखह, सभ सँ बड़का धर्म अछि दान ओ दया। दू मुट्ठी अछि त दोसरा कें एक मुट्ठी दिऔक। जकरा रहबे नहि करतैक से अनका देतैक की? तें हम कहैत छिऔह जे धर्मक मूल अर्थ।

हम–परन्तु आनो आन धर्म त छैक?

खट्टर कका–हँ। परन्तु विचारि कऽ देखह त अर्थ विना कोनो धर्मक अर्थ नहि। गौ-गंगा-गीता सभ आदर्श ओही भित्ति पर ठाढ़ छथि।

हम–ई बात नीक जकाँ बुझबामे नहि आएल।

खट्टर कका–देखह, गौ सँ दूध ओ खेतीमे सहायता। तें ओ माता। गंगाजीक प्रसादात सिंचाई ओ वाणिज्य। तें ओ पूज्य। गीताक कृपा सँ सभ अपन अपन स्वधर्म (व्यवसाय) मे लागल रहय, केओ दोसराक वृत्ति वा जीविकामे हस्तक्षेप नहि करैक। तें ओ मान्य। सभमे गूढ़ तात्पर्य भरल छैक।

हम–तखन एकटा संदेह होइछ, खट्टर कका! एहि देशमे अर्थ कें एतेक तुच्छ दृष्टि सँ किऐक देखल गेल छैक?

खट्टर कका बजलाह–हौ, यैह त ढोंग छैक। ऊपर सँ कहब जे द्रव्य तुच्छ थीक। और भितरे भीतर टका धर्मः टका कर्म टका हि परमा गतिः। ओही खातिर एतेक रासे दान-दक्षिणाक माहात्म्य गाओल गेल छैक। द्रव्यमे एतबा शक्ति छै जे कतबो पाप कैला उत्तर पाक भऽ जाउ। गोदान वा स्वर्णदान करू, व्यभिचारक दोष मेटा जाएत। सोना-चानीमे हत्या पचैबाक सामर्थ्य छैक। आइयो और ताहू दिन। एहि भूमि खातिर ताहू दिन कुरुक्षेत्र मचैत छल, आइयो मचैत अछि। मनुष्य कहाँ बदलल अछि? सम्पत्तिक महिमा सभ दिन सँ छैक। छुच्छ आदर्शक कोन मोल? परन्तु हौ बाबू, ब्राह्मण देवता चलाक छलाह। जौं द्रव्य कें तुच्छ नहि कहितथिन्ह त लोक दितैन्ह कोना? ओही तुच्छ द्रव्यक निमित्त एतेक रासे राजा हरिश्चन्द्र ओ नृग सन दानीक उपाख्यान पसारल गेल अछि।

भूतक मंत्र

खट्टर कका भाङ धो कऽ पसबैत रहथि। हमरा संग एक अपरिचित व्यक्ति कें देखि पुछलन्हि–हौ, ई के छथुन्ह ? यदि ककरो हाथमे कुश देखी त कुशल नहि।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, राति बथेयाबाली कें भूत लागि गेलैन्ह। हुनके झाड़क हेतु आएल छथिन्ह। ई बड़का भारी ओझा छथि। बारह वर्ष कामाख्या रहि मंत्र सिद्ध कैने छथि।

खट्टर कका कें हँसी लागि गेलैन्ह। बजलाह–ई त स्वयं भूत छथि। जकरा पर चढ़थिन्ह तकर निस्तार नहि।

ओझा तरँगि कऽ बजलाह–हम कि अपना मने कतहु जाइ छी ? जे बजबैत अछि, तकरा ओहि ठाम जाइ छी।

खट्टर कका पुछलथिन्ह–अहाँ लोक कें एना ठकै छिऐक किऐक ?

ओझा बिगड़ि कऽ कहलथिन्ह–अहाँ हमरा सँ नहि लागू। हम मंत्र जनैत छी। मंत्र सँ की नहि भऽ सकैत छैक ?

खट्टर कका उत्तर देलथिन्ह–बेस, त हम एकटा जोंक अहाँकें लगा दैत छी। अहाँ जतेक मंत्र जनैत छी से पढ़ि कऽ ओकरा भगाउ। मुदा हाथ सँ हटाबऽ नहि देब। यदि कतबो 'ह्रीं-क्लीं' कैने ओ छोड़ि देबय त हम बूझब जे अहाँक मंत्रमे शक्ति अछि।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, ई अखड़िपल छथि। हरताह नहि।

खट्टर कका बजलाह–बेस ! ओहि जामुनक गाछमे एकटा घोड़नक छत्ता छैक। तावत सैह उतारि कऽ धोतीक बीच राखि दहुन। ऐखन मंत्रक परीक्षा भऽ जैतैन्ह।

ई रंग-ढंग देखि ओझा ओहि ठाम सँ घसकि गेलाह।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, ई कहैत छथिन्ह जे बथेयावालीक देह पर जिन्न चढ़ल छैन्ह।

खट्टर ककाक ठोर पर मुसकी आबि गेलैन्ह। सोंटा-कुंडीमे भाङ रगड़ैत बजलाह–हौ, ठीठर भरि जन्म रोगियाँठ। डाँड़मे बातरस धैने। ताहि पर बुढ़ारीमे दोसर विवाह कय एकटा हथिनी उठा अनने छथि। तखन आङनमे जिन्न पहुँचि जाइ छैन्ह त से कोन भारी बात ?

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, अहाँ कें त सभ बातमे हँसिए रहैत अछि।

खट्टर कका बजलाह–हँसीक बात त थिकैहे। जकरा शरीर नहि, सेहो हमरा लोकनिक स्त्रीगण पर चढ़ि जाइत छैन्ह। अबलक बहु, सभक भौजाइ। भूतो कें एही देशमे देवर बनबाक सिहंता होइ छैन्ह।

हम–खट्टर कका, अहाँ भूत नहि मानैत छी ?

खट्टर कका–हौ, हम भूत, भविष्य, वर्तमान–तीनू मानैत छी। पूर्णभूत, सामान्यभूत, संदिग्धभूत......

हम–से भूत नहि।

खट्टर कका–तखन कोन भूत ?

हम–जे भूत लोक पर चढ़ि जाइत छैक।

खट्टर कका एक छन सोचि कऽ बजलाह–हँ, सेहो भूत मानैत छी। हमरा लोकनिक माथ पर सरिएहुँ भूत चढ़ल अछि।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, अहाँ व्यंग्य करैत छी। परन्तु पद्मपुराणमे देखिऔक जे कतेक रासे भूतक वर्णन देल छैक।

खट्टर कका भाङमे मरीच मिलबैत बजलाह–वैह भूत तोरा माथ पर सँ बाजि रहल छौह। बड़का-बड़का पंडितक कपार पर ई भूत चढ़ल रहैत छैन्ह। जहाँ किछु पुछहुन कि–'फल्लाँ ठाम लिखल छैक !' आन-आन देश नव नव आविष्कार कऽ रहल अछि। हमरा लोकनिक आँखि पर पुराणक जाला छारने अछि।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, एक दिन हमरो देशमे बहुत रासे विज्ञान छल। हमरो पुष्पक विमान छल, अग्निवाण छल.....

खट्टर कका बिच्चहिमे टोकैत बजलाह–फेर वैह भूत बाजि रहल छौह। 'भूत'क भूत। हाथी चलि गेल, हथिसार चलि गेल। परन्तु हम हाथमे सिक्कड़ नेने छी। की त 'एक दिन हमहुँ हाथीबला छलहुँ।' आब की छी, से ने देखू। सूती खड़ तर, स्वप्न देखी नौ लाखक ! रस्सी जरि गेल, ऐंठन नहि जरैत अछि। आन-आन देश हिमालयक चोटी पर चढ़ि गेल; हम खाधिमे पड़ल बजैत छी–'एक दिन हमरो पुरुखा चढ़ल छलाह।' आन-आन देशक आँखि भविष्य पर छैक; हम भूत दिस मुँह फेरि कऽ बैसल छी। ई भूत जान छोड़य तखन ने आगाँ बढ़ी।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, अहाँकें भूत-प्रेतमे विश्वास नहि अछि। परन्तु कतेको लोक अपना आँखि सँ देखैत अछि। कतेको कें भूत खेहारैत छैक। से कोना होइ छैक ?

खट्टर कका एक चुटकी सौंफ भाङमे मिझरबैत बजलाह–हौ, ओ थिकैक भयक भूत। अज्ञानक कारण। अन्हार रातिमे सुनसान गाछीक बीच कोनो चोर वा जारकें भूत मानि कतेक गोटे गायत्री-मंत्र जपय लगैत छथि। कृष्णाभिसारिका

कैं यक्षिणी बूझि हुनक धोती ढील भऽ जाइ छैन्ह। मस्तिष्कविकार सँ केओ प्रलाप करैत अछि त ओ भूतक बकनाइ भऽ गेल! केओ चुपचाप आङनमे पजेबा-खपटा बरसा देलक त ओ प्रेतक उपद्रव भऽ गेल! रातिमे चीरक बीच 'फासफोरस' चमकल त राकस! साँप नहि देखाइ पड़ल त भुतसप्पा! आगि कोना लागल से ज्ञात नहि त ब्रह्माग्नि! हौ, ई सभ अविद्याक अन्धकार थिकैक। रज्जौ यथाऽहेर्भ्रमः।

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, अहाँ कैं अलौकिक बातमे विश्वास नहि अछि। परन्तु औखन एहि देशमे तेहन-तेहन गुणी छथि जे कर्ण-पिशाच कैं वश कय परोक्षक बात जानि जाइत छथि, मंत्र द्वारा पिलही कटैत छथि, चित्ती कौड़ी फेकि साँप कैं नथैत छथि, बट्टा चला कऽ चोरक पता लगा लैत छथि, बैताल सिद्ध कय जे चाहथि से मँगा सकैत छथि। एतबे नहि, ओ लोकनि तन्त्र द्वारा मारण, उच्चाटन, वशीकरण—सभटा कय सकैत छथि।

खट्टर कका जोर-जोर सँ भाङ रगड़ैत बजलाह—फूसि बात। यदि एहिमे एकोटा सत्य रहितैक त हम मुसरे ढोल पिटा दितहुँ। पिलहीक दवाइ वा इंजेक्शनमे जे देशक करोड़ो टका बाहर जाइ अछि से बाँचि जाइत। सरकार खुफिया पुलिस हटा कऽ बट्टा चलैबाक महकमा खोलि दैत। सिंचाई मंत्री पुरश्चरण द्वारा वर्षा करवा लितथि। महामारीक समयमे डिस्ट्रिक्ट बोर्डक चेयरमैन महामृत्युञ्जय पाठ करबितथि—'त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।' प्रधानमंत्री रेडियोक स्थानमे एकटा कर्णपिशाची राखि लितथि। परराष्ट्रनीति सँ जे काज नहि चलितैन्ह से मोहन वा उच्चाटनक प्रयोग सँ सिद्ध भऽ जइतैन्ह। पलटनक मदमे जे ओतबा खर्च होइ छैन्ह से बाँचि जइतैन्ह। कोनो देशक सेना आक्रमण करैत त एक झुंड तान्त्रिक कैं ठाढ़ कय देल जइतैन्ह। ओ 'हुम् फट् स्वाहा' कऽ कऽ सभ कैं भगा दितऽथिन्ह। अथवा तेना कऽ स्तंभन कऽ दितऽथिन्ह जे ओ सभ आगाँ बढ़िए नहि सकैत। अथवा तेहन वशीकरण कऽ दितऽथिन्ह जे लड़ब छोड़ि हमरा सभक पैर दाबय लगैत। हौ, ई सभ त बड़का बात छैक। हम एकटा साधारण परीक्षा कहैत छिऔह। यदि अपना देशक तांत्रिक कैं वशीकरणक दावा छैन्ह त पहिने वरक बाप पर प्रयोग कऽ कऽ देखथु। यदि ओ बेटाक दाम मङनाइ छोड़ि देथिन्ह त हम बूझब जे तंत्र-मंत्र सफल। नहि त एकरंगा ओ लाल ठोप व्यर्थ।

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, ओझा आइ राति भूत झाड़थिन्ह, ताहि खातिर बहुतो वस्तु चाहिऐन्ह। उनटा सरिसव। कारी बाछीक गोबर। तेलिया मसानक भस्म। श्यामकर्ण घोड़ाक नाङड़ि। ताही सभक जोगारमे गेल छथि।

खट्टर कका भाङक गोला बनबैत बजलाह—एकरे नाम छैक सुच्चा पाखंड। भला उनटा सरिसव और भूत पड़ैबामे कोन कार्य-कारण सम्बन्ध छैक?

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, तंत्र-मंत्रक रहस्य गुप्त होइ छैक, तेँ आधा राति कऽ एकान्तमे बथेयावालीक भूत झाड़ल जैतैन्ह।

खट्टर कका डंटा पटकैत बजलाह—एकर नाम थिक गुंडपनी। आन-आन देशक विद्या डंकाक चोट पर चलैत अछि, और हमरा सभक विद्या कनफुसकीमे रहि जाइत अछि। हौ, चोर कतहु इजोत सहय! ठकविद्या अंधकारेमे चलैत छैक। पाश्चात्य विज्ञान कैं देखहौक जे कोना सोन जकाँ प्रकाशमे चमकैत छैक। ओ रेडियो बहार करैत अछि त सम्पूर्ण पृथ्वीमे खिरा दैत अछि। परन्तु अपना देशक कोनो पंडित कैं ई विद्या हाथ लागल रहितैन्ह त नहि जानि कतेक आडम्बर पसारितथि! कहितऽथिन्ह जे सोझे वैकुंठ सँ आकाशवाणी आबि रहल अछि। यजमान कैं सचैल स्नान करा, अहोरात्र उपवास करा, शुभ नक्षत्रमे सुवर्ण-धेनु दान करा, अमावास्या रात्रिमे एकान्त श्मशानमे लऽ जा, कोनो मुइल लोकक स्वर सुना दितऽथिन्ह, और सिद्ध बनि भरि जन्म पुजबैत रहितथि। रेडियो कैं चंडीक मूर्त्ति बना, एकरंगा सँ झाँपि, यक्षपिशाचक मंत्र पढ़ि, अक्षत सिंदूर छीटि, यथार्थ वस्तु पर तेहन आवरण चढ़ा दितथि जे केओ असली भेद नहि बूझि सकय। और मरबा काल चुपचाप अपना बेटाक कानमे गुप्त मंत्र दय हुनको सिद्ध बना जैतथि।

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, अहाँ मंत्र कैं पाखंड बुझैत छिऐक?

खट्टर कका भाङ घोंटैत बजलाह—हौ, मन्त्रक अर्थ थिकैक उचित परामर्श। यदि तोरा पेटमे कृमि छौह तऽ हम विचार देबौह जे बायभिडंग खाह। परन्तु यदि हम तोरा कहियौह जे पेटमे एकटा गुल्लरिक गाछ जनमि गेलौह अछि, त ई पाखंड भेल। यदि कहियौह जे ओ गाछ कटबाक हेतु एकटा जप करय पड़त, त ई महा-पाखंड भेल। यदि कहिऔह जे ओहि जप कैं फलित करय हेतु थोड़ेक ऊँटक नकटी, बिलाड़िक गोंजी, बादुरक काँची, भगजोगनीक नेड़ी तथा पाँच भरि स्वर्ण चाही, त ई महा-महा-पाखंड भेल। एही प्रकारक महा-महा-पाखंडी समाजमे सिद्धतांत्रिक आदि नाम सँ पुजबैत छथि। लोक १०८ श्री हुनका नाममे लगा हुनक अंगुष्ठोदक पिबैत छैन्ह। हमर वश चलय त सोझे ४२० दफा लगा दिऐन्ह। खट्टर-पुराणक एकटा श्लोक सदा स्मरण राखह—

तांत्रिकः मांत्रिकश्चैव हस्तरेखाविशारदः।
भूतवक्ता भविष्यज्ञः सर्वे पाखंडिनः स्मृताः॥

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, तंत्रो अहाँ कैं जाले बुझना जाइछ?

खट्टर कका भाङमे चीनी दैत बजलाह—हौ, असली तंत्र थीक रसायनशास्त्र। दू वस्तुक संयोग सँ एक तेसर वस्तुक आविर्भाव भऽ जाइ छैक। एहि विज्ञान सँ आन देश एतेक उन्नति कैलक अछि। परन्तु तकरे नकल पर झूठ फूसि आडंबर पसारि, माटिकैं चीनी, पानिकैं घृत अथवा तामकैं सोन बनैबाक ढोंग करब

ठकपनी थीक। एही छल-विद्याकेँ धूर्त्तगण तंत्रक नामसँ प्रसिद्ध कैने छथि। अमुक नक्षत्रमे अमुक मंत्र पढ़ि अमुक लेप लगा लियऽ, त अदृश्य भऽ जाएब। ही बाउ, जौँ ई सत्य रहितैक त हम रेलमे डेरा खसा दितहुँ। टी० टी० आइ० टिटियाइते रहि जैतथि। सभ ठाम परमुंहे फलाहार चलैत। नित्य मलाइयेमे भाङ छनितहुँ। ककरो सासुरमे जा कऽ मालपुआ खोँटि अबितहुँ। एहन तंत्रक आगाँ 'लोकतंत्र' केँ के पुछैत ?

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, ओझा बथैयावालीक हेतु एकटा यंत्र बना रहल छथिन्ह।

खट्टर कका भाङ घोरैत बजलाह–ओकरा यंत्र नहि, षड्यंत्र कहह। असल यंत्र थीक मशीन। यंत्र द्वारा आकाशमे उड़ि जाउ, पातालमे चलि जाउ, पहाड़ उड़ा दियऽ, समुद्र बाँधि दियऽ, पानि बरसा दियऽ, बिजली चमका दियऽ। और ई सभटा यंत्र यूरोप-अमेरिका बहार कैलक अछि। बूझह तऽ यंत्ररूपी वैताल ओकरे सिद्ध भेलैक अछि। यंत्र खेत जोतैत छैक, चाउर कुटैत छैक, भानस करैत छैक, कपड़ा बुनैत छैक, भार उठबैत छैक, पंखा होँकैत छैक, गीत सुनबैत छैक। हमरा लोकनिकेँ जाहि यंत्रक काज पड़ैत अछि से सभटा ओकरे सँ मङैत छिऐक। और बदलामे हमरा लोकनि कोन यंत्र दैत छिऐक ? एतुका पण्डित सँ और पारे की लगतैन्ह ? बहुत करताह तऽ एकटा केश उपाड़ि कऽ ताममे मढ़वाकऽ पठा देथिन्ह जे लैह सिद्धिदाता यंत्र।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, तखन भूतक मंत्रमे अहाँकेँ विश्वास नहि अछि ?

खट्टर कका बजलाह–असलमे पूछह त भूतक मंत्र एहि देशक लोक जनिते नहिअछि। भूतक मंत्र जनैत अछि पाश्चात्य देश। छिति, जल, पावक, गगन, समीरा–एहि पाँचो भूत केँ ओ तेना कऽ अपना वशमे कैने अछि जे सभ काज ओकरा सँ लय रहल अछि। और हमरा लोकनि नकली भूतक फेरमे पड़ि उनटा सरिसव जोड़ने भेल फिरै छी।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, अहाँ पाश्चात्य विज्ञानक समर्थक छी। परन्तु आधुनिक विज्ञान लोक केँ संहार दिस लऽ जा रहल अछि।

खट्टर कका विहुँसैत बजलाह–और रामायण महाभारत कि लोक केँ सृष्टि दिस लऽ गेल छल ? हौ, युद्ध सभ युग सँ होइत आएल छैक। परन्तु तकर दोष विज्ञान केँ नहि दहीक। यदि केओ तेज सरौता सँ सुपारी नहि कतरि अपन नाके कतरि लेबय त एहिमे सरौताक कोन दोष ?

हम–खट्टर कका, पाश्चात्य सभ्यता भौतिकवादक मृगमरीचिकामे पड़ल अछि। परन्तु हमरा लोकनिक पुरखा ज्ञानी छलाह। तेँ ओ लोकनि सांसारिक

ऐश्वर्य केँ तुच्छ बूझि भौतिक विज्ञान केँ महत्त्व नहि देलन्हि। एही आध्यात्मिक मनोवृत्तिक कारण औखन धरि ई देश धर्मप्राण देश जगद्गुरु कहैबाक योग्यता रखै अछि।

खट्टर कका बजलाह–एकरे कहैत छैक–'एकां लज्जां परित्यज्य सर्वत्र विजयी भवेत्।' हौ, जतय एक धूर जमीन खातिर भाइ-भाइमे घेंट-कटौअलि होय, जतय द्रव्यक लोभेँ बेटा-बेटी केँ बेचि देल जाय, जतय घृतक नाम पर चरबी बेचल जाय, ताहि देश केँ तौँ धर्मप्राण कहैत छह ? धर्म देखबाक हो त यूरोप-अमेरिका सँ घूमि आबह जहाँ रेलमे साबुन, तौलिया पर्यन्त सुरक्षित रहैत छैक। जातीय चरित्र सराही ओकर जकरा दोकान सँ एक सात वर्षक बच्चो शुद्ध घृत कीनि कऽ आनि सकैत अछि। ओकरा शौचालयोमे जतबा सफाइ रहैत छैक ततेक तोरा सभक भोजनालयमे नहि। जेना अङरेज अपना टेम्स नदी केँ रखैत अछि, तेना यदि हम अपन गंगाजी केँ राखि सकितिऐन्ह, त असली पूजा होइतैन्ह। परन्तु एहिठाम त लोक नदीमे फूल चढ़ा कऽ नदी रोही फीरि दैत छैन्ह। सार्वजनिक स्थानक पवित्रता कोना राखी, सेहोटा धर्म हम सभ नहि जनैत छी। तखन अनका कोन गुरु-मंत्र देबैक ? अपने मन मियाँ मिट्ठू बनैत रहू जे हम छी 'सभक गुरु गोवर्धन दास!'

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, अहाँक बातमे बूझब त कठिन। परन्तु काल्हि स्वामी अध्यात्मानन्दक व्याख्यान हैतैन्ह जे भौतिकवाद सभ अनर्थक जड़ि थीक।

खट्टर कका व्यंग्य करैत बजलाह–हँ। ओ भौतिकवादीक बनाओल रेलगाड़ी सँ उतरि, भौतिकवादीक बनाओल चश्मा लगौने, भौतिकवादीक बनाओल लाउडस्पीकर पर चिचिया कऽ बजताह जे भौतिकवादी सभ्यता बड़ अधलाह थीक। और हुनक अनुयायी भौतिक कागज पर भौतिक फाउंटेनपेन सँ हुनक वक्तव्य नोट कय, भौतिक टेलीग्रामसँ प्रेसमे छपबाक हेतु पठा देथिन्ह। ....हौ, असलमे पूछह त हमरा लोकनि निर्लज्ज छी, थेथर छी, बेहया छी।

खट्टर ककाक भाङ तैयार भऽ गेल छलैन्ह। ओ लोटा हाथमे लैत बजलाह–पाश्चात्य देश पंच-महाभूत केँ अपना वशमे कैने अछि। और हमरा लोकनिक माथ पर मूर्खताक भूत सवार अछि। जखन ई भूत भस्मीभूत हो तखन ने देशक भविष्य बनय! एही द्वारे त हम भूतनाथक आराधनामे लागल रहैत छी।

ई कहि खट्टर कका दू बुन्द शिवजीक नामपर उत्सर्ग कय घट्ट-घट्ट सभटा भाङ पीबि गेलाह।

चन्द्र-ग्रहण

ओहि राति चन्द्र-ग्रहण लागल रहैक। साँझे गामक लोक उमड़ि कऽ बड़का पोखरिमे स्नान करैत छल। ओम्हर खट्टर कका अपना दलानमे बैसल घूर तपैत रहथि। हम जा कऽ कहलिऐन्ह–खट्टर कका, ग्रहण स्नान नहि करबैक?

खट्टर कका बजलाह–हौ, ई पूस मास! पाला पड़ैत! ताहिमे आधा राति कऽ हम नहाउ गऽ? से कि हमरा कुकुर कटने अछि?

हम कहलिऐन्ह–देखिऔक त स्नानक हेतु केहन भेड़ियाधसान मचल छैक?

खट्टर कका सिहरैत बजलाह–हे नारायण! ई सनसन बसात! ई कनकन पानि! कनेक छूबी त आङुर बर्फ बनि जाय! ताहिमे ई सहस्रो नर-नारी भरि छाती पानिमे ठाढ़ छथि! कतेको बुद्धिमान एकटंगा देने छथि। बच्चा सभ ठिठुरि रहल अछि। मर्द सभ सर्द भऽ रहल छथि। कोमलांगी सभ कठुआ रहल छथि। पुरबैयाक लहरा सीतल नुआ कैं चीरि कय युवतीक छाती छेदि रहल छैन्ह। वृद्धागण थरथर काँपि रहल छथि। तथापि पुण्यक लोभें सभ केओ ठेलमठेला करैत आगाँ बढ़ल जा रहल छथि। हाय रे धर्मप्राण देश!

हम पुछलिऐन्ह–खट्टर कका, अहाँ नहिए नहैबैक?

खट्टर कका बजलाह–हौ, चन्द्रमा पर पृथ्वीक छाया पड़ल छैन्ह। किछु कालमे अपनहि हटि जैतैन्ह। ताहि खातिर हम किऐक पानिमे डूबू? साँझे गामक संग हमहूँ बताह भऽ जाउ?

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, ओम्हर बोच बाबू कैं देखिऔन्ह। कोना मुँह झँपने जप कऽ रहल छथि! हुनका एहि बेर ग्रहण देखबाक नहि लिखैत छैन्ह। तैं ऊपर नहि तकैत छथि।

खट्टर कका–तकताह त की हैतैन्ह?

हम–मृत्यु।

खट्टर कका–मृत्यु त एक दिन हैबे करतैन्ह। ओ कि मुँह झँपने मानतैन्ह?

हम–राशिक विचारें मृत्यु फल लिखैत छैन्ह।

खट्टर कका बजलाह–हौ, हम त नेने सँ सभटा ग्रहण देखैत ऐलहुँ अछि। ओहि मे कतेको मृत्युयोग पार कऽ चुकल हैब। कहियो ओं सों सोमाय नमः नहि जपलहुँ। परन्तु राशिक फल कहाँ घटित भेल? यदि सरिपहुँ एना होइतैक त अफगानिस्तान, बलूचिस्तान, तुर्किस्तान, इंगलिस्तान–सभ एखन धरि

कब्रिस्तान बनि गेल रहैत। केवल आर्यावर्तमे बोच बाबू सन सन बुद्धिनिधान पृथ्वीक शोभा बढ़बैत रहितथि। .....परन्तु एहि देशक दिग्गज लोकनि कैं के बुझाबौ?

हम–खट्टर कका, तखन एतेक रासे जे ग्रहणक फल लिखल छैक से कपोल-कल्पिते छैक?

खट्टर कका–तों अपने विचारि कऽ देखह। राशिक अनुसार तोरा काकी कैं एहि बेर की फल बतराइत छैन्ह? स्त्रीनाश! फल बनावऽ बला कैं एतबो ध्यान नहि रहलैन्ह जे ई फल स्त्री, बालक ओ ब्रह्मचारीमे कोना घटित हैतैन्ह? हौ, बारह टा राशिमे आठटाक फल जानि बूझि कऽ अनिष्टे राखल गेल छैक। कोनोमे व्यथा, कोनोमे चिन्ता, कोनोमे घात, कोनोमे माननाश! से जौं नहि रहितैक त लोक काबूमे कोना अबितैन्ह? बूझह त ई ग्रहण चन्द्रमा कैं नहि लगैत छैन्ह। हमरा सभ कैं लगैत अछि।

हम–से कोना?

खट्टर कका–प्रथम त ई जे ग्रहण होइतहि हमरा लोकनि कैं अशौच लागि जाइ अछि। जेना जन्माशौच, मरणाशौच, तहिना ग्रहणाशौच! एक पहर पहिनहि सँ भानस भात बंद! तदुपरान्त सभटा घैल-पातिल बाहर फेंकू। तीन तीन बेर स्नान करू। जनउ बदलू। और जौं अनिष्ट फल हो त शान्ति कराउ, जप करू, ब्राह्मण कैं दान-दक्षिणा दिऔन्ह। हौ, ई सभटा बूझह त लेवक हेतु बनलैक अछि। एहि देशमे 'ग्रहण'क अर्थ होइ छैक लेनाइ।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, ई त बेस कटगर कहल।

एतबहिमे डोम सभ हल्ला उठौलक–ग्रहणदान! ग्रहणदान!

खट्टर कका बजलाह–देखह, राहुक भाइ-बन्धु कोना अपन कर उगाहक हेतु दौड़ि रहल छथि। जखन रिशवत भेटि जैतैन्ह तखन सिफारिश कऽ कऽ चन्द्रमा कैं छोड़बा देथिन्ह। ता चन्द्रमा राहुक दाँत तर पड़ल किकियाइत रहथु। तैं देखैत छह ने? कतेक रुपैया अठन्नी बरसि रहल अछि? हाय रे हमरा सभक बुद्धि!

हम–खट्टर कका, तखन अहाँक की विचार जे ई सभटा व्यर्थ थीक?

खट्टर कका–व्यर्थ त थीके। आइ सम्पूर्ण देशमे धमगज्जर मचैत हैत। सिमरियामे, दशाश्वमेधमे, त्रिवेणी संगममे–लाखक लाख नरमुंडक समुद्र लहराइत हैत। ओहिमे कतेक बच्चा हेराएत, कतेक बूढ़ी पिचा कऽ मरतीह, कतेक युवती मर्दित होइतीह, तकर ठेकान नहि। और ई सभटा धर्मक नाम पर हैत। एहन धरमधक्केल और कोनो देशमे भेटतीह? जहाँ यूरोप-अमेरिका कैं एको पाइ खर्च नहि हैतैक, तहाँ हमरा देशमे आइ करोड़ो रुपया भुरकुस भऽ जाएत। हमरा लोकनि केवल छायाक पाछाँ दौड़य जनैत छी। यदि एतबा टका ठोस पृथ्वीमे लगबितहुँ त आन देश सँ अन्न नहि माङय पड़ैत। परन्तु की कहै छह?

एहि देशमे त सभ बात विचित्रे छैक। पेटमे अन्न नहि रहौक, डाँड़मे दम्म नहि रहौक, तथापि सभ केओ स्वर्ग जैबाक हेतु फाँड़ कसने।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, एही धर्मान्धताक कारण कुंभस्नानमे कतेक गोटाक प्राण गेलैन्ह।

खट्टर कका–हौ, मूर्खताक कुंभ भरि गेने एहिना होइत छैक।

हम–खट्टर कका, एहि देशमे एतेक मूर्खता कोना पसरलैक?

खट्टर कका–बेसी अगुताइ त ने छीह? तखन बैसि जाह। एहि देशक मूर्खताक प्रधान कारण थिकाह पंडित लोकनि।

हम–खट्टर कका, अहाँ त आश्चर्य बजैत छी। पंडित कतहु मूर्खताक कारण होथि?

खट्टर कका–हम सत्ये कहैत छिऔह। पंडित लोकनि कैं संयोगवश एकटा विद्या हाथ लागि गेलैन्ह–ग्रहणक ज्ञान। आइ-कालि त विज्ञानक साधारणो विद्यार्थी गणित द्वारा एतबा जानि जाइ अछि। परन्तु ताहि दिन ई वस्तु अलौकिक चमत्कार कऽ कऽ बुझना गेल। फलस्वरूप पंडित लोकनि ग्रहणक नाम पर ग्रहण करय लगलाह। सूर्य-चन्द्रमा सोना-चानी बनि गेलथिन्ह। ई विद्या बूझह त हुनका हेतु कामधेनु सिद्ध भऽ गेलैन्ह। दूनू हाथें दूहय लगलाह। लोक कैं हुनका पर अखंड विश्वास जमि गेलैक। "जखन आकाशक हाल ई पहिनहि बूझि जाइ छथि तखन पृथ्वीक हाल किऐक ने बुझताह?" पंडितो सभ तेहन सन क्रम बनौलन्हि जे "हम सभटा भविष्य जनै छी। तों खर्च करह। हम गणना कय सभ बात कहि देबौह।" बस, चन्द्रग्रहणक संग-संग पाणिग्रहणोक हाल कहय लागि गेलथिन्ह। साधारण जनता त मूर्ख छले। पंडित लोकनि और निपट्ट बना देलथिन्ह। सभ बातमे ग्रहक फेर लगा देलथिन्ह।

हम–से किऐक, खट्टर कका?

खट्टर कका–लेबाक हेतु। सेहो केहन चमत्कार-पूर्वक! चन्द्रमा ओ शुक्रक नाम पर उज्जर रंगक पदार्थ–जेना उज्जर चाउर, उज्जर वस्त्र, उज्जर बड़द, चानी, मोती, दही, कपूर। शनि केतुक नाम पर कारी रंगक पदार्थ– जेना कारी तिल, कारी उड़ीद, कारी कंबल, कारी छागर, कारी मणि। सूर्य ओ मंगलक नाम पर लाल वस्तु जेना–सोना, गहूम, मसुरी, गुड़, केसर, लाल वस्त्र, लाल गाय, लाल मणि। हौ, हमरा त ई सभ कविता जकाँ बूझि पड़ैत अछि।

हम–परन्तु यजमान लोकनि कैं त ई कविता बड्ड महग पड़ल हैतैन्ह।

खट्टर कका–ताहिमे कोन संदेह? ओना त केओ अपना मने एक सितुआ घी नहि दितैन्ह। चन्द्रमाक नाम पर घृतक घैले समर्पण करय लगलैन्ह। देखह, घृत लेबाक हेतु केहन सुन्दर श्लोक बनाओल छैक–

घृतकुंभोपरि निहितं शंखं नवनीतपूरितं दद्यात्।
नाड्यादिदोषशान्त्यै द्विजाय दोषाकरग्रहणे।

अर्थात "चन्द्रग्रहणमे घृतक घैल पर शंखमे माखन भरि कऽ ब्राह्मण कैं दान करय त नाड़ी-शान्ति होइक।" पंडित लोकनि तेना कऽ यजमानक नाड़ी अपना मुट्ठीमे कैलन्हि जे यजमान भरि जन्म अनाड़ी बनल रहि गेलाह। केवल नाड़ीए नहि, यजमानक नारी सेहो पंडितक मुट्ठीमे आबि गेलथिन्ह। तेहन पंचांगक जाल पसारल गेल जे यजमान-यजमानिनीक पाँचो अंग ओहिमे फँसि गेलैन्ह।

हम–खट्टर कका, अहाँ त अलंकारेमे गप्प करैत छी।

खट्टर कका–अलंकारे नहि, यथार्थ कहैत छिऔह। ई पंडित लोकनि यजमानिनीक केश पर्यन्त अपना हाथमे कऽ लेलथिन्ह।

हम–से कोना?

खट्टर कका–देखह, एखन धरि पंचांगमे स्त्रीगणक केश बन्हबाक मुहूर्त्त छपि रहल अछि।

हम–खट्टर कका, हमरा विश्वास नहि होइ अछि।

खट्टर कका सीरम तर सँ 'मिथिलादेशीय पंचांगम्' बहार कैलन्हि। बजलाह–तखन देखि लैह। प्रारंभहिमे स्त्रीणां केशबंधनमुहूर्त्तः। अश्विनी, आर्द्रा, पुष्य, पुनर्वसु नक्षत्रेषु। हम पुछैत छिऔह जे भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा नक्षत्रेषु किऐक नहि? यदि कोनो स्त्री रोहिणी नक्षत्रमे खोंपा बान्हि लेतीह त एहिमे पंडितक की बिगड़ि जैतन्हि? जखन ओ अपन टीक पतड़ा देखि कऽ नहि बन्है छथि त स्त्रीगण किऐक पतड़ा देखिकऽ अपन केश बन्हतीह?

हम–खट्टर कका, हमरा नहि जानल छल जे इहो सभ बात पतड़ामे लिखल रहैत छैक।

खट्टर कका बजलाह–पंडित लोकनि और लिखलाहे की? चूल्हि कहिया गाड़ल जाय, नववधू कोन दिन भानसमे जाथि, प्रसूती कोन तिथिमे नख कटाबथि, कोन लग्नमे स्नान करथि, कोन समय लहठी पहिरथि, कखन स्तनपान कराबथि! और कोन देशक कलेंडरमे एहन-एहन बात भेटतीह?

हम–खट्टर कका, ई सभ कि वास्तवमे लिखल छैक?

खट्टर कका पतड़ा हमरा हाथमे दैत बजलाह–तखन तों अपने आँखि सँ देखि लैह। केहन बड़का पुच्छरमे देल छैक! चुल्लिका-स्थापनम्। नववध्वाः पाकारंभः। प्रसूतीनां नखच्छेदनम्। सूती-स्नानम्। स्त्रीणां लाक्षाभरणधारणम्। शिशोः स्तनपानम्।.....सभक मुहूर्त्त देल छैक। और अपना देशक बड़का बड़का पंडित एकर अनुमोदन-कर्त्ता छथि। देखह, केहन केहन लब्धप्रतिष्ठ धीतपरीक्षोत्तीर्णक नाम एहि पर छपल छैन्ह!

हम–खट्टर कका, एहन एहन मीगियाही बातमे पंडित लोकनि कैं पड़बाक कोन प्रयोजन? हुनका लोकनि कैं अधिक महत्त्वपूर्ण विषयमे अपन बुद्धि लगाबक चाहिऐन्ह।

खट्टर कका–हौ, एहि देशक पंडित तेहन पुरुखाह रहितथि त कनितहुँ किऐक? परन्तु ई लोकनि त 'स्त्रीणाम् अङ्गस्फुरणफलम्'मे अपन पांडित्य खर्च करैत छथि! स्त्रीक जाँघ फरकैन्ह त स्वामीक दुलार भेटैन्ह, डाँड़क समीप फरकैन्ह त नीच सँ प्रेम होइन्ह, नाभि फरकैन्ह त पतिक नाश होइन्ह, स्तन फरकैन्ह त विजय होइन्ह। पंडित हिनका लोकनिक अंग-अंग जकड़ि नेने छथिन्ह तेहन पंचांग बना कय ऊपर सँ धऽ देने छथिन्ह जे समाज कैं अधाँग मारि देने अछि।

हम–परन्तु पंचांगमे महत्त्वोक बात त रहैत छैक। यथा वृष्टियोग, वर्षफल।

खट्टर कका मुसकुराइत बजलाह–तखन एही वर्षक फल देखह। एहिबेर 'पराभव' नामक संवत्सर लिखैत छथि, जकर फल–

पीडिताश्च प्रजाः सर्वे भयभीताः पराभवे।

अर्थात प्रजा पीड़ित रहथि; सभ केओ भयभीत रहथि।

हम–तखन त वर्षफल बड्ड अधलाह छैक।

खट्टर कका–थम्हह। वर्षेश बृहस्पति छथि, तिनकर फल–

विप्रा यज्ञरता भवन्ति तपसा शस्यैः क्षितिर्व्यापिता
राजा मन्त्रियुतो गजैश्च महिषैर्देशः समृद्धालयः
रोगं घ्नन्ति सुवृष्टयः प्रतिदिनं क्रूरा विनश्यन्ति वै
चौरव्याघ्रभुजंगमाश्च बहुधा नश्यन्ति जीवेऽब्दपे।

भावार्थ ई जे अन्न-पानि गाय-महिष सँ देश समृद्धिशाली रहय, खूब वृष्टि होय, रोग चोर ओ हिंसक जन्तुक नाश हो, राजा-ब्राह्मण अपना कर्ममे संलग्न रहथि।

हम–तखन त वर्षफल बड्ड बढ़िया भेल। प्रजा कैं कोनो बातक कष्ट नहि रहतैक।

खट्टर कका–थम्हह। एहिबेर 'संवाहक' नामक सूर्य छथि। तिनकर फल–

आदित्ये बहुवित्तनाशनपरा लोका ज्वरव्याकुलाः
मेघानां जलहानिरेव महती शस्यस्य नाशो ध्रुवम्।

अर्थात एहि वर्ष धनक नाश हैत, लोक ज्वर सँ पीड़ित रहत, मेघ नहि बरसत और अन्न नहि होएत।

हम–आहि रौ बाप! ई त सभटा अधलाहे भेल। रौदी ओ अकाल सँ लोक तबाह भऽ जाएत।

खट्टर कका–थम्हह। एहिबेर 'संवर्त्तक' नामक मेघ छथि, तिनकर फल–

संवर्त्तके महावृष्टिः शस्यवृद्धिकरी शुभा
जलापूर्णा मही नित्यं जलदैर्वेष्टितं नभः।

अर्थात एहि वर्ष अत्यन्त वृष्टि हैत, खूब अन्न उपजत, पृथ्वी जलमय भऽ जैतीह और आकाशमे सभ दिन मेघ लगले रहत।

हम–खट्टर कका, ई त तेहन रंगक बात लिखल छैक जे बुझिए नहि काज करैत अछि।

खट्टर कका–यैह त तारीफ छैक। ई जाल तेहन कौशल सँ बूनल छैक जे केओ पकड़िए नहि सकैत अछि। देशमे अतिवृष्टि भेल त 'संवर्त्तक' नामक मेघक फल थीक। अनावृष्टि भेल त 'संवाहक' नामक सूर्यक फल थीक। देशमे कतहु अतिवृष्टि कतहु अनावृष्टि भेल, त 'हम दूनू तरहक फल लिखने छलहुँ।' हौ, हिनका लोकनि सँ पार पाएब कठिन।

हम–परन्तु पंचांगमे कतेक बात एहनो त छैक जे देखि कय आन देशक विद्वान चकित रहि जाथि।

खट्टर कका व्यंग्यपूर्वक बजलाह–हँ, जेना पृथ्वी कोन समय शयन करैत छथि, कोन समय जागल रहैत छथि। अग्नि कोन दिन आकाशमे रहैत छथि, कोन दिन पातालमे। कोन साल दुर्गाजी हाथी पर चढ़ि कऽ अबैत छथि, कोन साल महफामे सवार भऽ कऽ। शिवजी कहिया बसहा पर रहैत छथि, कहिया गौरीक संग विहार करैत छथि।

हम–शिवजी कहिया विहार करैत छथि सेहो पतड़ाबला जानि जाइत छथिन्ह?

खट्टर कका–केवल जानिए नहि जाइत छथिन्ह, ओहि समय पूजो करबैत छथिन्ह। देखह, श्रावण कृष्ण चतुर्दशीमे पंचांगकार लिखैत छथि–कामविद्धो हरः पूज्यः।

हम–खट्टर कका, अहाँ त तेहन-तेहन बात देखा दैत छी जे हमरा किछु जवाबे नहि फुरैत अछि।

खट्टर कका–जवाब की फुरतौह? एहि देशक पंडित-ज्योतिषी प्रणम्य देवता थिकाह। एकटा दूरबीन आविष्कार करताह से त हैतैन्ह नहि, घरमे बैसल बैसल सम्मुखे चार्थलाभश्च वामे चन्द्रे धनक्षयः करैत रहताह। एही द्वारे जहाँ रूस-अमेरिका चन्द्रलोक पर पहुँचबाक तैयारी कऽ रहल अछि, तहाँ हमरा लोकनि एखन धरि हाथमे केरा लय चतुर्थी चन्द्राय नमः कय रहल छी!

हम–खट्टर कका, चन्द्रमाक नाम लेल त चन्द्रग्रहण मन पड़ि गेल। आइ चूड़ामणि योग थिकैक।

खट्टर कका विहुँसैत बजलाह–हँ। आइ कतेक गोटा यजमानक घर चूड़ा ढाहताह। गोटेक कैं मणिओ हाथ लागि जाइन्ह त आश्चर्य नहि। तखन चूड़ामणि योगमे कोन संदेह? हौ, एहन एहन योग बनाबयबला चतुर-चूड़ामणि छलाह।

हम—खट्टर कका, आइ कतेक गोटा मंत्रो लेताह।

खट्टर कका—हँ, गुरु कानमे एकवेर 'ह्रीं' कहि देथिन्ह और चेला सैं भरि जन्म हीड घुअबैत रहथिन्ह। 'ह्रीं'क अर्थ छैक लज्जा, परन्तु 'ह्रीं' कहबा काल हुनका कनेको लज्जा नहि होइ छैन्ह जे परतारि रहल छिऐक। हीं, चेला मुड़बाक एहन सुगम तरीका कोनो देशयला वहार कैने छथि?

हम—खट्टर कका, हम त एहीकाल गप्पेमे बाझल रहि गेलहुँ। आब जाय दियऽ। कम सैं कम उग्रासो त नहा ली।

खट्टर कका बजलाह—हँ, हँ, अवश्य, अवश्य। एक डूब हमरो साँती लगीने अबिहऽ।

हमरा उठैत देखि खट्टर कक्का पुनः मुसकुराइत बजलाह—चन्द्रमाक सर्वग्रास भेल छलैन्ह से त छुटलैन्ह। परन्तु एहि भारत-भूमिक जे सर्वग्रास भेल छैन्ह ताहि सैं उद्धार होइन्ह तखन ने! ई मूर्खतारूपी राहु कहिया हमरा लोकनिक पिंड छोड़ताह से के कहि सकैत अछि? हम त ओही उग्रासक बाट ताकि रहल छी।

ई कहि खट्टर कका श्लोक पढ़ृय लगलाह—

भारतं चन्द्रवत् ग्रस्तं मौर्ख्यरूपेण राहुणा।
न जाने केन यत्नेन कदा मोक्षः भविष्यति॥

पंडितक गप्प

ओहि दिन भुसकौलक बहिरू पंडित कैं खट्टर कका सैं भिड़न्त भऽ गेलैन्ह। बात ई भेलैक जे पंडितजी छीतनबाबूक ओहिठाम श्राद्धक नेओत पूरय आएल रहथि। भुटकुनबाबूक मृत्यु पर गप्प चलैत छल। पंडितजी ज्ञानक बात सभ कहऽ लगलथिन्ह—भावी पर ककरो वश नहि चलैत छैक। हुनका त एखन मरबाक वयस नहि छलैन्ह। परंतु नाऽकाले म्रियते कश्चित् प्राप्तकाले न जीवति। जखन काल पूर भऽ जाउक तखन केओ नहि बाँचि सकैत अछि। और, जा काल नहि पूर्ण होउक ता मरियो नहि सकैत अछि।

तावत ठाकुरबाड़ीक पुजेगरी चरणामृत बाँटय ऐलाह। पंडितजी माथ पर छिटैत श्लोक पढ़ृय लगलाह—

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम्
विष्णुपादोदकं पीत्वा शिरसा धारयाम्यहम्।

एतबहिमे कोम्हरोसे पहुँचि गेलाह खट्टर कका। ओ अबितहि टोकलथिन्ह—की औ पंडितजी! अहाँ अखने कहने छलिऐक जे विना काल पूर्ण भेने केओ मरिए नहि सकैत अछि। तखन फेर 'अकालमृत्युहरणम्' किऐक कहैत छिऐक?

पंडितजी एकाएक तेना उलंग पकड़ा गेलाह जे कोनो जवाबे नहि फुरलन्हि। गोङियाय लगलाह।

खट्टर कका हमरा कहलन्हि—देखै छह? जखन पंडित लोकनि खंडित भऽ जाइ छथि त एहिना गोङियाय लगैत छथि।

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, हिनका लोकनिक श्लोकमे परस्पर-विरोध किऐक रहैत छैन्ह?

खट्टर कका बजलाह—एकर कारण जे पंडित लोकनि परस्पर-विरोधक प्रेमी होइ छथि। जहिना लोकमे, तहिना श्लोकमे। तैं हिनका लोकनिक वचनमे परस्पर-विरोध रहैत छैन्ह। कहह त फेर देखा दिऔह। (पंडित जी सैं) की औ पंडितजी! भावी त सर्वोपरि थीक?

पंडित जी—अवश्य।

न भवति यन्न भाव्यं भवति च भाव्यं विनापि यत्नेन।
करतलगतमपि नश्यति यस्य हि भवितव्यता नास्ति।

खट्टर कका–बेस, मानि लियऽ जे हमरा भावी अछि जे काल्हि मृत्यु भऽ जाएत। आब कहू जे लाखो यत्न कैने हम बाँचि सकैत छी?

पंडित जी–कथमपि नहि।

यद्धात्रा लिखितं ललाटपटले-तन्मार्जितुं कः क्षमः।

खट्टर कका–और जौं बड़का सँ बड़का डाक्टर कैं मंगाबी?

पंडित जी–धन्वन्तरिक वापीक ऐसे कोनो फल नहि।

खट्टर कका–और यदि छुटवाक भावी हो, तखन?

पंडित जी–तखन अनाचारे थाकि जाएत।

खट्टर कका–तखन त उद्योग करबाक कोनो प्रयोजन नहि?

पंडित जी–(कनेक कुंठित होइत)–नहि, उद्योग सेहो करबाक चाही।

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी-
दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या
यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः।

खट्टर कका–(हमरा सँ)–देखैत छह? बान्हल लीक पर श्लोकक पहिया कोना गुड़कैत छैन्ह? परन्तु कनेक लीक सँ फराक कऽ दिऔन्ह कि गाड़िए उनटि जैतैन्ह। (पंडितजी सँ) की औ पंडितजी! एहि वचन सँ त दैव उड़ि जाइत छथि। तखन भवितव्यता दऽ जे कहने छलिऐक, से?

पंडित जी–भवितव्यता कैं के काटि सकैत अछि?

तादृशी जायते बुद्धिर्यादृशी भवितव्यता

खट्टर कका हमरा कहलन्हि–देखह, ई कोना दूनू पानि मारैत छथुन्ह? (पंडितजी सँ) पंडितजी! एहि श्लोक सँ त पुरुषार्थ कटि जाइत अछि।

पंडित जी–(सशंकित भय)–से कोना?

खट्टर कका–अहाँक जेहन भावी रहत तेहने ने बुद्धि भऽ जाएत?

पंडित जी–हँ।

खट्टर कका–एकर अर्थ जे अहाँक बुद्धि स्वतंत्र नहि अछि। और जखन बुद्धिए अपन सक्क नहि त अपना बुद्धिएँ काज की करब? तखन पुरुषार्थक की अर्थ?

पंडितजी माथ कुड़ियाबय लगलाह। खट्टर कका पुनः कहलथिन्ह–यदि भवितव्यते प्रबल तखन त ककरो उपदेश देब सेहो व्यर्थ थीक।

पंडित जी–से कोना?

खट्टर कका–देखू, पंडितजी। यदि कर्त्ता स्वतन्त्र हो तखन ने 'सत्यं वद' 'धर्मं चर' आदि उपदेशक सार्थकता। परन्तु अहाँ जे श्लोक पढ़लहुँ तकर आशय

बहराइत अछि जे हमरा लोकनि स्वतंत्र नहि, प्रयोज्य-कर्त्ता मात्र छी। तखन विधि-निषेधक की अर्थ! समुद्रक लहरि कैं केओ आदेश दैत छैक जे तों एहि बाटैं चलह? धनुष सँ छूटल बाण कैं केओ शिक्षा दैत छैक जे तों एहि गति सँ नहि चलह? यदि हमरा लोकनि नियतिक धारामे बहि रहल छी और अपना गति-विधि पर अधिकारे नहि अछि, तखन 'इदं कर्त्तव्यम्' 'इदं न कर्त्तव्यम्' एहि 'तव्य' प्रत्ययक की अर्थ? तखन त 'चाही' शब्दे कोष सँ उठि जैबाक चाही। एहना स्थितिमे पाप-पुण्यक भेद की? धर्मशास्त्र निरर्थक भऽ जाइछ। की पंडितजी! अहाँ कैं ई बात स्वीकार अछि?

पंडितजी पुनः गोङियाय लगलाह। खट्टर कका रेड़ब शुरू कैलथिन्ह–पंडितजी, हमरा लग लट्ट-पट्ट नहि चलत। या त भवितव्यता बला श्लोक काटू अथवा धर्मशास्त्र कैं गंगामे विसर्जन करू। दूनू घोड़ा पर एके संग फानि कऽ चढ़ैत छी, तैं खसि पड़ैत छी। कोनो एक पर सवार होउ।

परन्तु पंडितजी कैं दुहू घोड़ा समान रूप सँ प्रिय छलैन्ह। कोनो एक कैं छोड़य नहि चाहैत छलाह। तैं अक्क-धक्कमे पड़ि गेलाह।

हम देखल जे पंडितजी घामे-पसीने तर भऽ रहल छथि। ओ बकबका कऽ माटि धैने छथि और खट्टर ककाक एहन सन क्रम जे चित्त कइए कऽ छोड़थिन्ह। तैं कोनो दोसर गप्प उठयबाक चाही जाहि सँ पंडितजी कैं पलखति होइन्ह। अतएव प्रसंग बदलैत कहलिऐन्ह–पंडितजी, एखन त डेरा रहतैक?

पंडितजी कैं उसास भेटि गेलैन्ह। फक्क दऽ निसास छोड़ैत बजलाह–हँ। काल्हि धरि त भोज्येक समारोह छैक। परसू हमरा सभ कैं बिदाइ भेटत।

हम–पंडितजी, भोज्य त खूब समारोह सँ भऽ रहल छैक?

पंडितजी–भला ताहूमे कहबाक बात? तीन दिन सँ लोक कैं बालूसाहिएक ढेकार भऽ रहल छैक। एहि परोपट्टामे आइधरि एहन मधुरक भोज नहि भेल छल।

हम–पंडित लोकनिक बिदाइयो त नीक जकाँ करथीन्ह?

पंडितजी–चाहिऐन्ह त सैह। छीतनबाबू डियगर लोक छथि। अशर्फिए सँ पिंड कटने छथि। वृषोत्सर्ग सेहो जेहन होमक चाही। शय्यादानमे रेशमी तोशक देने छथिन्ह। चालिस हजारक चिट्ठा छैन्ह। तखन जौं पंडित सभ कैं दोशाला नहि देथिन्ह त लोक की कहतैन्ह?

हम–भुटकुनबाबू छलाहो तेहने एकबाली!

पंडितजी–अहा हा! दाता कर्ण बूझू। एहन लोक कि आब फेर हैत? ओ निश्चय कोनो राजा-महाराजक घरमे जन्म नेने हैताह। जेहन यशस्वी ओ छलाह तेहने श्राद्ध भऽ रहल छैन्ह। स्वर्गो सँ देखि पुलकित होइत हैताह। प्रेतक निमित्त

जे चौदहमासी थारी-बाटी लोटा-गिलास उत्सर्ग भेल छैन्ह से सभटा चानिएक। पुरोहित-महापात्र सभ नेहाल भऽ गेलाह। भगवान भुटकुनबाबूक आत्मा कैं शान्ति प्रदान करथुन्ह।

खट्टर कका एती काल धरि चुपचाप सुनैत छलाह। आब नहि रहल गेलैन्ह। बजलाह—अयँ औ पंडितजी! अहाँ तीन रंगक बात किऐक बजैत छी? एक रंगक बात बाजू।

पंडितजी—हम तीन रंगक बात कोना बजैत छी?

खट्टर कका—अहाँ कैं की विश्वास अछि? छीतनबाबूक पितर स्वर्गलोकमे छथिन्ह? अथवा प्रेतयोनिमे? अथवा पुनर्जन्म ग्रहण कैने? तीनू बात त एक संग नहि भऽ सकैत अछि।

आब पंडितजी फेर गोङियाय लगलाह। खट्टर कका कहलथिन्ह—अहाँ स्वयं ज्ञानक योग दऽ कऽ देखिऔक। जौं भुटकुन बाबू सरिपहुँ जन्म-ग्रहण कैने हैताह त छठियार वा बरही भेल हैतैन्ह। चेहों-चेहों करैत दूध पिबैत होएताह। छौ मासक बाद जा कऽ अन्नप्राशन हैतैन्ह गऽ! तखन भातक पिंड हुनका कोना पैठ हैतैन्ह? और यदि ओ सरिपहुँ स्वर्गलोकमे विहार करैत हैताह तखन ओहिठामक अमृतोदक छोड़ि एहिठामक हस्तोदक पीबय किऐक औताह? और यदि ओ प्रेतलोकमे भटकैत होथि त हुनका निमित्त छाता जूता किऐक उत्सर्ग करीलिऐन्हि अछि? की प्रेतगण पनही पहिरि कऽ चलैत छथि?

पंडितजी कैं निरुत्तर देखि खट्टर कका कहलथिन्ह—औ पंडितजी! अनका परतारिऔक परन्तु खट्टर झा नहि मानताह। ई सभटा प्रपंच अहीं लोकनिक पसारल अछि। केवल लेबक हेतु। लोभीक गाममे ठक्क उपास नहि पड़य। से जावत पर्यन्त एहि देशमे छीतनबाबू सन-सन स्वर्गकाम व्यक्ति जिबैत छथि तावत अहाँ सन-सन पंडित कैं बालूसाहीक ढेकार होइते रहतैन्ह। परन्तु आब अधिक दिन ई चालाकी नहि चलत से कहि दैत छी।

पंडितजी खिसिया कऽ बजलाह—अहाँ चार्वाक जकाँ बजैत छी। आत्मा कैं नहि मानैत छी। तैं एना कहै छी।

खट्टर कका पुछलथिन्ह—'आत्मा' अहाँ ककरा कहैत छिऐक?

पंडितजी शास्त्रार्थक मुद्रामे बाजय लगलाह—शरीर, इन्द्रिय, मन, बुद्धि—सभ सँ पर जे सत्-चित्-आनन्द स्वरूप छथि सैह आत्मा थिकथि।

खट्टर कका—आत्मा कहियो दुःखितो पड़ैत छथि? हुनका कोनो आधि-व्याधि, मामिला-मोकदमा, ऋण-पैंच—कथुक चिन्तो रहैत छैन्ह?

पंडितजी—कथमपि नहि। आत्मा नित्य शुद्ध-बुद्ध-मुक्त आनन्द स्वरूप थिकाह। हुनकामे शरीर वा मनक धर्म आरोप करब अनर्गल थीक।

आब खट्टर कका पुनः गसिया कऽ धैलथिन्ह—औ पण्डितजी! जखन आत्मा स्वतः आनन्द-स्वरूप थिकाह तखन अहाँ ई किऐक कहलिऐक जे भगवान भुटकुनबाबूक आत्मा कैं शान्ति प्रदान करथुन्ह? भुटकुनबाबूक आत्मा कैं कि खैंक गइल छैन्ह?

हम देखल जे पण्डितजी पुनः खट्टर ककाक चपेटमे आबि गेलाह। खट्टर कका तेना ने घेरि लैत छथिन्ह जे बेचारे सकपंज भऽ जाइ छथि।

पण्डितजी क्रोध सँ फों-फों करय लगलाह। पुनः वीरासन लगबैत बजलाह—अहाँ हमरा सँ कठ-विवाद करैत छी? बेस, तखन लियऽ। जखन अहाँ सपरि कऽ दूह लड़क हेतु आएल छी त हमहूँ फाँड़ भिड़ि कऽ तैयार छी। आइ भइए जाय।

खट्टर कका हमरा कहलन्हि—देखह, आब केहन धुरपटांग होइत अछि!

पण्डितजीक पूर्वपक्ष शुरू भेलैन्हि—औ खट्टर झा! पहिने ई कहू जे अहाँ सन्ध्या-गायत्री जपैत छी?

खट्टर कका उत्तर देलथिन्ह—सन्ध्या-गायत्री हुनका हेतु छैन्ह जे पापी ओ मंदबुद्धि होथि।

पंडितजी उत्तेजित होइत पुछलथिन्ह—से कोना?

खट्टर कका शान्त भाव सँ कहलथिन्ह—देखू। 'अघमर्षण' सूक्तक अर्थ छैक पाप छोड़ाबयबला मंत्र। और गायत्री मंत्रक अभिप्राय छैक बुद्धिक हेतु प्रार्थना—धियो यो नः प्रचोदयात्। अतएव जे पाप कैने होथि वा 'धी' (बुद्धि) कैं प्रचोदित (प्रेरित) करावय चाहथि से संध्या-गायत्री करथु।

पंडितजी तामसैं घैर भऽ गेलाह। थरथर कँपैत पुछलथिन्ह—अहाँ भोजन-काल भगवानक हेतु नैवेद्य दैत छी?

खट्टर कका शान्त भाव सँ उत्तर देलथिन्ह—हम अपने थारीमे खाएब और हुनका लेल नीचाँमे दू टा भात छीटि देबैन्ह, एहन अपमान नहि कऽ सकैत छिऐन्हि। भगवान कोनो कुकुर-बिलाड़ि नहि छथि जे ओहि तरहें कौरा देल जएतैन्ह।

पंडितजी क्रुद्ध होइत पुछलथिन्ह—अहाँ चंदन करैत छी?

खट्टर कका पुनः अविचलित भाव सँ उत्तर देलथिन्ह—प्राचीन कालमे भोगाभिलाषिणी युवती स्तनमे चंदन करैत छलीह और भोज्याभिलाषी ब्राह्मण ललाटमे। आब केओ भोज्ये नहि खोअबैत अछि त चंदन कथीपर करू? यदि हमरो बालूसाहीक नेओत पड़य त चंदन कऽ सकैत छी। परन्तु हमरा त केओ पंडितमे गोजरे नहि करैत अछि।

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, अहाँ त पंडित-पछाड़ छी। पंडित लोकनि अहाँक डरें छोड़ कटने भेल फिरैत छथि।

खट्टर कका बजलाह—हाँ, हमरा पंडितवला असलीए गुण नहि अछि। टीड टोप नहि करय अबैत अछि। अर्घा-सराइ ओ घंटीक टंट-घंट नहि रखैत छी। चारि घंटा बैसि कऽ नाक दाबल पार नहि लगैत अछि। आडम्बर पसारय नहि अबैत अछि। दरबार करबाक लूरि नहि अछि। एही द्वारे कतहु सँ पंडितारेक नेओत नहि अबैत अछि। नहि त हमरा कि लड्डू-जिलेबी सँ अरुचि रहैत अछि?

पंडितजी बजलाह—जे ब्राह्मणक कर्म नहि करत तकरा नेओत कोना भेटतैक?

न तिष्ठति तु यः पूर्वां नोपास्ते यश्च पश्चिमाम्।
स शूद्रवद्बहिष्कार्यः सर्वस्माद्द्विजकर्मणः॥

अहाँ सूर्योपस्थान करैत छी?

खट्टर कका कहलथिन्ह—बिना सूर्योपस्थान कैने कि जिलेबी कंठमे अटकि जाइ छैक?

पंडितजी तमसाइत बजलाह—ई शुष्क विवाद थीक। एतया काल श्राद्ध-स्थलामे शास्त्रार्थ करितहुँ त विदाइ भेटैत। अहाँ सँ की भेटत? केरा? एहीठाम एकटा छौतन बाबू छथि जे पण्डितक एतेक सत्कार करैत छथि। और एक अहाँ छी जे पण्डितक निन्दा करैत छी। की पण्डित अहाँक लेखे बड्ड अधलाह होइ छथि?

खट्टर कका विनयपूर्वक कहलथिन्ह—सभ पण्डितक विषयमे त नहि कहि सकैत छी। परन्तु किछु पण्डितमे ई सात टा लक्षण घटित होइ छैन्ह—

लोभी क्रोधी तथाऽधीरः स्त्रैणः कृपण एव च।
निन्दकश्चाटुकारश्च पण्डितः सप्तलक्षणः॥

से जे जेहन भारी पण्डित तेहने लोभी, तेहने खिसियाह, तेहने अगुताह, तेहने मौगियाह, तेहने कृपण, तेहने निन्दक, ओ तेहने खुशामदी।

पण्डितजी कचकचाइत बजलाह—अहाँ भारी निन्दक छी।

खट्टर कका शान्त भाव सँ बजलाह—एकर कारण जे हमहुँ संस्कृत पढ़ने छी।

पंडितजी—संस्कृत ओ परनिन्दामे कोन सम्बन्ध?

खट्टर कका—अव्यभिचरित सम्बन्ध। कोनो पण्डित एहन छथि जिनका अनकर निन्दा कैनेक पेटक अन्न पचैत होइन्ह?

हम पुछलिऐन्ह—खट्टर कका, ई बात यथार्थ। परन्तु एकर कारण की?

खट्टर कका बिहुँसि उठलाह। पुनः बजलाह—कारण ई जे जैखन केओ संस्कृत प्रारम्भ करैत छथि तैखन सीखि जाइत छथि जे 'हम' उत्तम पुरुष, 'तों' मध्यम पुरुष, और सभ केओ 'अन्य' अर्थात 'अधम पुरुष'। 'उत्तम ओ 'मध्यम'क अनतर त 'अधमे' कोटि होइ छैक। तेँ संसार भरि लोक हुनका दृष्टिमे 'अधम' बूझि पड़ैत छैन्ह।

हम—वाह! ई त एक लाखक गप्प कहल।

खट्टर कका—तखन खट्टर-पुराणक एकटा और श्लोक सुनि लैह—

मधुरेषु महाप्रीतिः शृंगाररसचिन्तनम्।
परोपदेशे पाण्डित्यं पण्डितस्य त्रयोगुणाः॥

हम—खट्टर कका, पण्डित लोकनि अनका एक प्रकारक उपदेश दैत छथिन्ह और स्वयं दोसरा प्रकारक आचरण करैत छथि। एकर की कारण?

खट्टर कका—एकरो कारण व्याकरणे। संस्कृत भाषामे पहिनहि क्रियाक भेद कऽ देल गेल छैक। 'परस्मैपद' एक रंग, ओ 'आत्मनेपद' दोसर रंग। एही अभ्यासक कारणे पण्डित लोकनि क्रिया मात्रमे 'परस्मै' (दोसराक हेतु) ओ 'आत्मने' (अपना हेतु)क भेद करैत छथि।

हम—खट्टर कका, इहो लाख टकाक गप्प भेल। राजा भोज रहितथि त एहन-एहन बात पर अशर्फी उझीलि दितथि।

खट्टर कका—हाँ, हमरा त बर्फीओ उझिलयवला गुणग्राहक नहि भेटैत छथि। छुच्छ प्रशंसा जतेक लियऽ।

हम—खट्टर कका, हमरा त ओतबा अछिये नहि जे अहाँक बातक मूल्य दऽ सकी। परन्तु एकटा ई त कहू जे पण्डित लोकनि लोभी किऐक होइ छथि?

खट्टर कका मुसकिआइत बजलाह—हाँ, जनिका बाल्यावस्थहि सँ एकटा, दूटा नहि, दस-दस टा 'लकार' कंठस्थ करा देल जाइन्ह, तनिका जौं 'ल' अक्षरक संस्कार नहि हैतैन्ह त कि 'द' अक्षरक हैतैन्ह? एही द्वारे पण्डित लोकनि लेबामे प्रवीण होइ छथि, देबामे कृपण।

हम—खट्टर कका, अहाँ त सभटा चमत्कारे बजैत छी। तखन ई कहू जे पण्डित लोकनि एतेक रसिक किऐक होइ छथि?

खट्टर कका विहुँसैत बजलाह—एकटा कारण त ईह जे ओ छात्रावस्थहि सँ 'मनोरमा-कुचमर्दन'क अभ्यास करैत छथि, गुरु ओहिमे परीक्षो लैत छथिन्ह। आन कोनो भाषामे एहन पाठ्यग्रन्थ भेटतीह?

हम—धन्य छी खट्टर कका। तेहन-तेहन मौलिक गप्प कहै छिऐक जे किनको ध्यानमे नहि आयल हैतैन्ह। तखन ई कहू जे पण्डित लोकनि अपना बुद्धि सँ किछु सोचि कऽ नव आविष्कार किऐक नहि करैत छथि?

खट्टर कका—एकर कारण हम एक बेर कहने छिऔह। प्रारम्भहि सँ लघु कौमुदीमे अहं वरदराज भट्टाचार्यः, अहं वरदराज भट्टाचार्यः.......

बहिरू पण्डित कैं सभ किछु त सुनाइ नहि पड़लैन्ह, परन्तु सारांश बुझा गेलैन्ह। बजलाह—अहाँ लोकनि एतीकाल सँ पण्डितक उपहास करैत छी? परन्तु पण्डित बिना कोनो काज नहि चलि सकैत अछि।

खट्टर कका बजलाह—जे असली पण्डित छथि, तिनका हम थोड़बे किछु कहैत छिऐन्ह ? जे नकली पण्डित छथि तिनके पोल खोलबाक हेतु खट्टर झाक जन्म भेल छैन्ह।

पंडितजी—असली ओ नकली पण्डितमे अहाँ कोना भेद करैत छी ?

खट्टर कका—असली पण्डित विद्याक अन्वेषणमे रहैत छथि, नकली पण्डित विदाइक अन्वेषणमे। असली पण्डित ज्ञानक विस्तार करैत छथि, नकली पण्डित धोधिक विस्तार। असली पण्डित मूर्खताक संहार करैत छथि, नकली पण्डित केवल मधुरक संहार।

एतबहिमे छीतनबाबूक ओहिठाम सँ एक चङेरा मधुर पण्डितजी कैं आबि गेलैन्ह। ओ फुरफुरा कऽ उठि गेलाह।

गीताक मर्म

खट्टर कका भाङ घोटैत रहथि। हमरा हाथमे गीताक पुस्तक देखि बजलाह—आब तों गीताक पाठ करैत छह ?

हम कहलिऐन्ह—हँ।

खट्टर कका बजलाह—हौ बाबू, तखन आब तोरा सँ फराके रहक चाही।

हम चकित होइत कहलिऐन्ह—से किऐक, खट्टर कका ?

खट्टर कका भाङ रगड़ैत बजलाह—हौ, पहिने अर्जुन कैं बड़-जेठक विचार रहैन्ह। बाप-पित्ती पर कोना हाथ छोड़ब ? परन्तु गीताक आसव पान कय तेहन बुत्त भऽ गेलाह जे वृद्ध पितामहक छाती कैं विदीर्ण कय देलन्हि। तैं हमरो डर होइत अछि। कदाचित कोनो आरि-धूर लऽ कऽ तोरा सँ तकरार भऽ जाय। और तोंहू अर्जुन जकाँ ज्ञानी भऽ विचारह जे—

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः

"ककाजीक आत्मा कैं त शस्त्र काटिए ने सकैत छैन्ह, एक गड़ाँस कसि कऽ लगा दिऐन्ह।" और ओम्हर तोहर काकी धेओना पसारथुन्ह त बुझाबय लगबहुन जे—

'वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही।

"ककाजीक चोला बदलि गेलैन्ह, नव देह भेटलैन्ह अछि, अहाँ खुशी मनाउ, सोहर गाउ, कनैत छी किऐक ?" .....हौ बाबू ! यदि गामक नवयुवक दल कैं देह देखाउस लागि जाइन्ह त कतेक पित्ती खून हैताह तकर ठेकान नहि। तैं हम नेहोरा करैत छिऔह। हमरा संग बरु भाङ पिउल करह, परन्तु गीताक सेवन नहि करह। यदि आन काज नहि फुरौह त पचीसी खेलाह, बाँसुरी बजाबह, नहि किछु त बंशी लऽ कऽ माछ मारह, परन्तु ई गीताक चसक्का नहि लगाबह।

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, गोनूझाक लेखे गाम बताह ! संसार कहैत अछि जे गीता सन ज्ञाने नहि। लोक ओहि सँ अहिंसा ओ वैराग्यक शिक्षा लैत अछि। और अहाँ कैं उनटे....

खट्टर कका गोला बनबैत बजलाह—हौ, बताह ! यदि अर्जुन गीताक उपदेश सुनला उत्तर गांडीव फेंकि गेरुआ धारण करितथि, कवच उतारि कमंडलु लितथि, और युद्धक्षेत्र छोड़ि वराहक्षेत्रक बाट धरितथि, तखन ने बुझितहुँ जे गीतामे

अहिंसा-वैराग्य भरल छैक। परन्तु ओ त तेहन निःस्पृह भऽ कऽ मस्तक-छेदन करय लगलाह जे की लोक ताइक तरकुन छोपत? हौ बाबू, एक त ओहिना गाममे भाला-बर्छी फनकैत रहै अछि। जौं गीताक सान ओहि पर चढ़ि गेलैक त प्रत्येक गाम कुरुक्षेत्र बनि जैत। तैं हम हाथ जोड़ैत छिऔह जे एखन गर्म शोणितमे गीता नहि पढ़ह। हँ, जखन हमरा वयसक हैबह तखन ततेक हर्ज नहि।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, भऽ सकैत अछि जे गीताकारक दोसरे अभिप्राय होइन्ह!

खट्टर कका ललकि कऽ बजलाह–हौ, दोसर अभिप्राय कोना बुझिऔन्ह? स्वयं गीताकारे त सारथी बनि आगांमे बैसल रहथिन्ह? तखन मना किऐक ने कैलथिन्ह? कहितथिन्ह–"हे औ अर्जुन! हम अहाँ कैं एतेक ज्ञान सिखाओल। ई देह नश्वर थीक। संसार क्षणभंगुर थीक। हस्तिनापुरक की हस्ती? एक दिन माटिमे मिलि जाएत। ताहि खातिर अहाँ रक्तक धार किऐक बहाएब? सांसारिक सुख तुच्छ थीक। अहाँ राज्यक मनोरथ छोड़ू। एहि खातिर वृद्ध पितामह ओ पूज्य आचार्य पर तीर चलाएब कि अहाँ कैं शोभा देत? छोड़ू ई झगड़ा और चलू हमरा संग हिमालय। बेह ने जे लोक हँसताह जे क्षत्रिय भऽ कऽ मैदान छोड़ि देलन्हि। परन्तु जे यथार्थ ज्ञानी छथि से निन्दा ओ प्रशंसा सँ विचलित नहि होइ छथि।" .....परन्तु ई सभ त कहलथिन्ह नहि; उनटे और उसका देलथिन्ह जे खूब मारि करू। हाय रे बुद्धि!

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, बड़का बड़का लोक गीताक प्रचार सँ विश्वशांति स्थापित करय चाहैत छथि और अहाँ कैं ओहिमे युद्धक संदेश भेटैत अछि?

खट्टर कका मुस्कुराइत बजलाह–तों अल्हा सुनने छह? कोना ढोल पर ललकारा दैत छैक? 'आखिर राम करै सो होय, एकदिन सबको मरना होगा।' और ओहि बोल पर कतेको कटि मरैत अछि। हमरा त गीतोमे वैह ललकारा भेटैत अछि–

अन्तवन्त इमे देहाः नित्यस्योक्ता शरीरिणः
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद् युद्धस्व भारत।

परन्तु हौ बाबू! 'कहियो त मरबाक अछि तैं एखने मरि जाइ'–ई तर्क हमरा नहि जँचैत अछि।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, भगवानक कथ्य छैन्ह जे जीवक कहियो नाश नहि होइत छैक।

खट्टर कका भाङ छनैत बजलाह–हौ, ई सभ परतारबाक बात छैक। जौं जीवक नाश नहि होइ छैक त खूनक सजाय फाँसी किऐक होइत छैक? श्रीकृष्ण अर्जुन कैं त उपदेश दैत छथिन्ह जे–

गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पंडिताः

परन्तु जखन अभिमन्युक वध भेलैन्ह तखन ओ ज्ञान कतय गेलैन्ह? यदि वास्तवमे वैह बात सत्य जे–

न जायते म्रियते वा कदाचित्
नायं भूत्वा भविता वा न भूयः
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणः
न हन्यते हन्यमाने शरीरे।

तखन फेर जयद्रथ सँ बदला लेबक हेतु एतेक प्रपंच किऐक रचल गेल? ओहि बेरमे ई वचन किऐक बिसरि गेलैन्ह जे–

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते।

हौ, तों एखन नेना छह। ई सभ बात नहि बुझबहीक।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, प्रसिद्ध छैक जे–

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनंदनः
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्।

समस्त उपनिषदक मंथन कऽ कृष्ण भगवान ई गीता रूपी अमृत बाहर कय अर्जुन रूपी बाछा कैं पान करौने छथि।

खट्टर कका बिहुँसैत बजलाह–हँ, अर्जुन बाछा त ठीके छलाह। तैं ने श्रीकृष्ण चुचकारि कऽ लड़ाइमे जोति देलथिन्ह! हौ, बूझह त परतारहिक हेतु सौंसे गीताक रचना भेल छैक। श्रीकृष्ण कैं लड़ैबाक मन रहैन्ह। अर्जुन कैं सनका देलथिन्ह और महाभारतक तमाशा देखलन्हि। अर्जुन पर तेहन ने श्याम रंग चढ़ि गेलैन्ह जे राज्यक लोभें सम्पूर्ण वंशक संहार कैलन्हि।

हम–खट्टर कका, अर्जुन अनासक्त भऽ युद्ध कैलन्हि, किछु राज्यक लोभें नहि।

खट्टर कका व्यंग्यपूर्वक बजलाह–हँ। हस्तिनापुरक गद्दी तोरे नाम सँ लिखि गेलथुन्ह। हौ, अनासक्त रहितथि त एक सँ पितिऔत भाइक शोणित सँ राज्याभिषेक करितथि! हाय रे इन्द्रप्रस्थक राज्य! तोरा हेतु ततेक ने रक्तपात भेल जे आइ पर्यन्त दिल्लीक किला लाल रंग भेल अछि!

हम कहलिऐन्ह–धन्य छी खट्टर कका! कहाँक बात कहाँ लऽ ऐलिऐक?

खट्टर ककाक भाङ तैयार भऽ गेल छलैन्ह। भरलो लोटा एक छाकमे पीबि गेलाह। तखन सुव्यस्त होइत बजलाह–असलमे श्रीकृष्ण कैं लड़ैबाक रहैन्ह और अर्जुन सोझे चपाटे छलाह। तैं कृष्ण कैं जे जे फुरैत गेलैन्ह से कहैत गेलथिन्ह–"देह नाशवान तैं युद्ध करह। आत्मा अमर तैं युद्ध करह। राज्य भेटतौह तैं युद्ध करह। क्षत्रिय थिकाह तैं युद्ध करह। नहि लड़ने निन्दा हैतौह तैं युद्ध करह।" और जखन सभ टा सुनियो कऽ अर्जुनक व्यामोह दूर नहि भेलैन्ह, तखन एक्के

थेरि अपन विकराल स्वरूप देखा कऽ अर्जुन कैं डरा देलथिन्ह जे ओना नहि बुझबह त एना बूझह।

खट्टर कका कैं एकाएक हँसी लागि गेलैन्ह। बजलाह—हम जखन गीताक पोथी देखैत छी त एकटा कथा मन पड़ि जाइत अछि। एक बेर तोहर काकी कमला-स्नान करय जाइत रहथुन्ह। हमर एकटा पाँच वर्षक भागिन रहय। ओहो संग जैबाक हेतु हठ करय लगलन्ह। हम बहुत तरहें बुझौलिऐक—नदीमे बुड़्या छैक, तौं नहि जा। ओहिठाम नेना डूबि जाइ छैक, तौं नहि जा। दूर चलय पड़तौह, तौं नहि जा। बाट पिच्छड़ छैक, तौं नहि जा।'' जखन कोनो तरहें नहि बुझलक तखन रामलीला वला राक्षसक चेहरा लगा कऽ ओकरा डरा देलिऐक। तखन सैं जे ओ सरि भेल से फेर किऐक जिद करत? .....हौ, हमरा त ओहि नेनामे और अर्जुनमे विशेष अन्तर नहि बूझि पड़ैत अछि।

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, गीतामे ओतेक रासे ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग भरल छैक से अहाँ कैं नहि सुझैत अछि?

खट्टर ककाक आँखि लाल भऽ गेलैन्ह। बजलाह—हौ, सभटा योगक एके तात्पर्य जे 'कौरव कैं मार।' परन्तु सोझे एना कहने त अर्जुन बुझितथिन्ह नहि, तैं हुनका बुझाबक हेतु ओतेक रासे ज्ञान-विज्ञान योग, कर्म-संन्यास योग आदिक महाजाल पसारल गेल। ओहिमे अर्जुनक बुद्धिए ओझरा गेलैन्ह और श्रीकृष्ण जेना नचौलथिन्ह तेना ओ नचलाह। परन्तु जकरा बुझयाक शक्ति छैक से त भगवानक चलाकी बुझबे करतैन्ह।

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, हमरा त नहि बूझि पड़ैत अछि जे भगवान अर्जुन कैं ठकलथिन्ह अछि।

खट्टर कका बजलाह—तोहर कोन कथा? बड़का बड़का पंडित कैं नहि बूझि पड़ैत छैन्ह। परन्तु हमरा त झकझक सुझैत अछि। एकठाम त कहैत छथिन्ह जे—

प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थिप्रज्ञस्तदोच्यते ॥

'अर्थात जे सभटा मनोरथक त्याग कऽ दैत छथि सैह यथार्थ ज्ञानी थिकाह। परन्तु दोसर ठाम राज्य ओ स्वर्गक प्रलोभन सैहो दैत छथिन्ह!

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय! युद्धाय कृतनिश्चयः ॥

'हौ अर्जुन! यदि मरबह त स्वर्ग भेटतौह। जितबह त राज्य भेटतौह। दूनू हाथ लड्डू छौह। तैं उठह और लड़ह।'

खट्टर कका नोसि लऽ कऽ मुस्कुराइत बजलाह—अर्जुन तर्कशास्त्र नहि पढ़ने छलाह तैं रज्जुपाशमे बन्हा गेलाह। हम लगमे रहितिऐन्ह त कहितिऐन्ह—'हे

कृपानिधान! हिनका (अर्जुन कैं) एक तेसरो कोटि त भऽ सकैत छैन्ह जे जिबिते पकड़ि कऽ बंदी बना लैन्ह। तखन ने राज्ये हाथ लगतैन्ह ने स्वर्गे।' परन्तु अर्जुन त सोझे धनुर्धर रहथि। कोनो पक्षधर (नैयायिक) सैं भगवान कैं भेंट होइतैन्ह तखन ने! हम त पुछितिऐन्ह—''औ महाराज! जखन समस्त मनोरथ व्यर्थ थीक, तखन फेर ई रथ किऐक चला रहल छी?''

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, अहाँ सभ ठाम अपन तर्कशास्त्र लगा दैत छिऐक?

खट्टर कका बजलाह—लगाउ ने कोना। यैह त अपना देशक मुख्य विद्या थीक। छिद्रान्वेषणमे एहन सूक्ष्म दृष्टि कोनो जाति कैं छैक?

खट्टर कका सरौता सैं कतरा करैत बजलाह—देखह, एकठाम त श्रीकृष्ण उपदेश दैत छथिन्ह जे—

समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकांचनः
तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः।

अर्थात निन्दा-प्रशंसा दुहू कैं समान कऽ कऽ बुझक चाही और दोसर ठाम इहो कहैत छथिन्ह जे—

अकीर्त्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्
संभावितस्य चाकीर्त्तिः मरणादतिरिच्यते।

अर्थात नहि युद्ध कैने अहाँक निन्दा हैत, ताहि सैं त मरि गेनाइ नीक। एकठाम त अनासक्त कर्म सिखबैत छथिन्ह जे—

सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ, जयाजयौ
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि।

अर्थात हारि-जीत दूनू कैं बराबरि बूझि कऽ लड़ाइ करू। और पुनः दोसर ठाम इहो कहैत छथिन्ह जे—

तस्मात् उत्तिष्ठ यशो लभस्व
जित्वा शत्रून् भुंक्ष्व राज्यं समृद्धम्।

'हे अर्जुन! अहाँ उठू, यश लियऽ और शत्रु कैं जीति राज्यक भोग करू।' आब तोंही कहह जे जखन सुख-दुःख, लाभ-हानि, जय-पराजय, यश-अपयश सभ बराबरि, तखन फेर भगवान विजय ओ यशक लोभ किऐक दैत छथिन्ह?

हमरा चुप देखि खट्टर कका कहय लगलाह—हौ, एकटा हम पुछैत छिऔह। भगवान कहैत छथिन्ह जे—

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति
भ्रामयन् सर्वभूतानि यंत्रारूढानि मायया।

अर्थात यैह सभ कैं अपना मायाक प्रभाव सैं कठपुतरी जकाँ नचा रहल छथिन्ह। यदि यैह बात सत्य, तखन फेर अर्जुन सैं एतेक उतराचौरी करयाक कोन

प्रयोजन ? सोझे अपन कल ऐंठि दितऽथिन्ह। हुनक इच्छाक आगाँ अर्जुनक इच्छा की ? तखन ई किऐक कहैत छथिन्ह जे–

यथेच्छसि तथा कुरु

'जे इच्छा हो से करु', और यदि रैह, त ओही पर रहितथि। तखन फेर ई किऐक जे–

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।

''अहाँ सभटा धर्म छोड़ि हमरा शरणमे आबि जाउ, हम अहाँ कें सभ पाप सँ मुक्त कय देब।'' हौ, एना त कोनो पंडा, पुरोहित वा पादड़ी बाजय। भगवान कतहु एना बाजथि ? और यदि अन्त मे यैह कहबाक छलैन्ह त अठारहो टा अध्याय पसारबाक कोन काज छलैन्ह ? एके श्लोकार्द्धमे कहि दितऽथिन्ह जे–

अहं निर्देशयामि त्वां तस्मात् युध्यस्व भारत।

''हे अर्जुन! हम अहाँ कें आज्ञा दैत छी, तेँ युद्ध करु।''

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, हम त बुझैत छी जे अट्ठारहो अध्याय गीताक निष्कर्ष थिकैक निष्काम कर्म।

खट्टर कका बजलाह–हौ, यैह त हमरा बुझबामे नहि अबैत अछि। कर्म कतहु निष्काम भेलैक अछि ? बिना इच्छाक प्रयत्न होइते नहि छैक। लोक जे काज करैत अछि से कोनो ने कोनो कामना सँ प्रेरित भऽ कऽ। 'समस्त कामनाक त्याग कऽ देब' इहो त एकटा कामने भेल।

हम–खट्टर कका, अहाँ त सभ ठाम अपन नागपाश लगा दैत छिऐक। परन्तु जीवन्मुक्त कें त कोनो कामना नहि रहैत छैन्ह।

खट्टर कका मुसकुराइत बजलाह–हौ, हमरा त आइ धरि एकोटा जीवन्मुक्त नहि भेटलाह अछि। और यदि केओ एहन जीव होथि त हम पुछैत छिऔह जे हम कसि कऽ एक चाट हुनका गाल पर लगबैत छिऐन्ह, हुनकर स्थितप्रज्ञता कायम रहतैन्ह ? दाँतक दर्द उठला पर हुनका ई इच्छा हैतैन्ह कि नहि जे दुःख छूटि जाय! नदी फिरबा काल केओ लोटा छीनि लैन्ह त क्रोध हैतैन्ह कि नहि ?

हम गद्गद्रित होइत कहलिऐन्ह–तखन अहाँ कें सरिपहुँ विश्वास अछि जे भगवान् अर्जुन कें परतारि नेने छथिन्ह ?

खट्टर कका ठठा कऽ हँसि पड़लाह। एक चुटकी कतरा मुँहमे दैत बजलाह–हौ, तोँहू बताहे छह ? ई सभटा कवि-कल्पना थिकैक। कवि कें त कोनो आधार चाही। केओ रामचन्द्रक प्रसंग लय योगवाशिष्ठक रचना कैने छथि। केओ कुरुक्षेत्रक पृष्ठिभूमिमे गीताक रचना कैने छथि। नहि त तोँही कहह जे घमासान युद्धक बीचमे अट्ठारह अध्याय गीता कहबाक ओ सुनबाक अवकाश छलैक ? जावत ई अट्ठारह अध्याय होइत छल तावत कि अठारहो अक्षौहिणी

सेना बैसल अढ़ौरी खोंटैत छल ? आ संजयक कानमे कि रेडियो लागल छलैन्ह ? हौ ई सभ किछु नहि। कवि कें कोनो लाथें सांख्ययोग ओ वेदान्तक पंडिताई छाँटबाक छलैन्ह से छाँटने छथि।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, तखन अहाँक दृष्टिमे गीता सँ कोनो लाभ नहि ?

खट्टर कका व्यंग्य करैत बजलाह–लाभ किऐक ने ? एकटा लाभ त यैह जे एहि सँ हड़ताल बन्द भऽ जाएत।

हम चकित होइत पुछलिऐन्ह–से कोना, खट्टर कका ?

खट्टर कका बजलाह–देखह, गीताक उपदेश छैक–

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूः मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि॥

अर्थात 'अनासक्त भऽ कऽ कर्म करी; फलक आशा नहि राखी।' कोल्हुआरक बड़द कें गुड़क भेली सँ कोन प्रयोजन ? हौ, यदि एतबा ज्ञान मजदूर कें भऽ जाइक त कोनो कारखानामे हड़ताल किऐ हैत ?

हम पुछलिऐन्ह–और कोनो लाभ नहि ?

खट्टर कका विहुँसैत बजलाह–और लाभ यैह जे देशक जनसंख्या जे सुरसाक मुँह जकाँ निरन्तर बढ़ल जा रहल अछि से कम भऽ जाएत।

हम–से कोना, खट्टर कका ?

खट्टर कका बजलाह–देखह,

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन

एहिमे संतति-निरोधक गुप्त मंत्र भरल छैक जे प्रत्येक नवविवाहित दम्पति कें स्मरण राखक चाही। 'केवल कर्म कैने जाइ, फलक आशा नहि राखी।' एहिठाम फलक अर्थ संतान। आब नीक जकाँ ध्यान दहौक त अर्थ लागि जैतौह।....परन्तु तोँ भातिज थिकाह। बेसी खोलि कऽ कोना कहिऔह ?

मोक्षक विचार

खट्टर कका कोल्हुआड़मे रस पेरबैत रहथि। हमरा देखि बजलाह—आबह, आबह। तोंहू एक गिलास पीबि लैह। शीतल भऽ जैबह।

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, शीतल त लोक अहाँक बाते सँ भऽ जाइ अछि। अहाँ आनन्द-मूर्त्ति छी।

खट्टर कका बजलाह—हौ, जीवनमे और छैहे की? आनन्द ली और दी। एक हमरे सन व्यक्ति बहुत पहिने कहि चुकल छथि—

यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्।

परन्तु आइ कालि त ऋण तथा शुद्ध घृत दूनू दुर्लभ। तेँ हमर सिद्धान्त जे—

यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् रसं पीत्वा रसं वदेत्।

रस पीबी ओ रस बाजी। जावत ई देह छथि तावत संसारक रस लऽ ली। फेर त—

बहुरि एहि जग जन्म नाही, नाहि ऐसो देह।

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, परन्तु अपना देशक बड़का-बड़का दर्शनकार त दोसरे रंग कहै छथि।

खट्टर कका कैं हँसी लागि गेलैन्ह। बजलाह—हौ, दर्शनकार सभक आँखि पर तेहन मोक्षक मकड़जाला लागल छैन्ह जे ओ संसार कैं देखिए नहि सकैत छथि।

हम—खट्टर कका, जीवनक चरम लक्ष्य थीक मोक्ष। तकरा विषयमे अहाँ एना बजैत छी?

खट्टर कका एक बाल्टी रस छनैत कहय लगलाह—यैह चरम लक्ष्य त हमरा लोकनि कैं लाहेब कऽ देलक। 'ई जीवन दुःखमय। संसार दुःखमय।' जे केओ ऐलाह से यैह विरहा गबैत। 'एहि संसार सँ कोना छुटकारा हैत?' जेना ई संसार जेल हो! आन आन देशक लोक एहि संसार कैं क्रीड़ागार कऽ कऽ बुझैत अछि। ई लोकनि कारागार कऽ कऽ बुझलन्हि। एही बुद्धि सँ हमरा लोकनिक चिंधे बताह भऽ गेल। मोक्षक तेहन चसका लागल जे की लोक कैं हफीमक चसका लगतैक! तैं ठाम-ठाम मोक्षक दोकान खुजि गेल। न्याय, सांख्य ओ वेदान्तक कोन कथा जे व्याकरण, छंद ओ आयुर्वेद—इहो सभ मोक्षक एजेंट बनि गेलाह। 'आउ, हमरो गोदाममे मोक्ष भेटैत अछि।' यदि ई नहि कहितथिन्ह त केओ लगमे जैबे नहि करितैन्ह। कपिल-कणाद सँ लऽ कऽ कबीर-कवीन्द्र धरि एक्के चरखा ओटैत ऐलाह! जहाँ और देशमे न्यूटन ओ गैलीलियो जन्म लेलन्हि तहाँ हमरा

लोकनिमे भेलाह के, त नानक ओ दादूदयाल! जहाँ और लोक पृथ्वी पर अपन-अपन झंडा फहरा रहल अछि, तहाँ हम सभ खजुरी पर गबैत छी—यह संसार बिराना है।

हम—खट्टर कका, यैह दृष्टिकोण त हमरा लोकनिक विशेषता थीक।

खट्टर कका रसमे दूध मिलबैत बजलाह—हँ से त थीके। कतहौ गायक भिन्ने बथान। हमरा लोकनि संसार भरि कैं बूड़ि कऽ कऽ बुझैत छिऐक। और अपना मनें बुधियार बनैत छी जे असली घी हमरे टाड़मे अछि। यूरोप-अमेरिकाक सभ्यता कैं हम 'दालदा' बुझि कऽ अवहेलना करैत छिऐक। परन्तु हमरे मोक्षमार्का कंटरमे घी भरल अछि, से के कहि सकैत अछि? ई कंटर त आइ धरि केओ खोलि कऽ देखलक नहि।

हम—परन्तु अपना ओहि ठाम मनीषी लोकनि मोक्ष-प्राप्तिक उपायो देखा गेल छथि।

खट्टर कका रसमे अपामार्गक बुकनी देत बजलाह—हौ, उपाय कि एकटा दूटा? डाकीक डाकी। 'एना कऽ नाक दबाउ त पुनर्जन्म न विद्यते। ई नाम जप करू त पुनर्जन्म न विद्यते। अमुक जलमे स्नान करू त पुनर्जन्म न विद्यते। ई मंत्र पढ़ि कऽ हवन करू त पुनर्जन्म न विद्यते।' ....एहन सन क्रम जे पुनर्जन्म गरक ढोल थीक। से जावत उतारिकऽ फेकब नहि तावत उद्धार नहि। तैं भरि जन्म ओम् वा होम करैत रहू।

हम—खट्टर कका, अहाँ के मोक्षमे विश्वास नहि अछि?

खट्टर कका—हौ, मूलं नास्ति कुतः शाखा! जखन पुनर्जन्मे नहि मानैत छी, तखन मोक्षक कोन गप्प? असलमे पूछऽ त ने सोनू साह, ने सहिजनक गाछ। लोक व्यर्थ चकोड़-प्रत्याशामे लागल रहैत अछि। तैं हम कहैत छियौह जे एहि जीवनमे जे आनन्द, सैह असली आनन्द। लैह, रस पीबह।

एतबहिमे पहुँचि गेलाह नैयायिकजी। ओ शास्त्रार्थक मुद्रामे बजलाह—जैं पुनर्जन्म सत्य, तैं ने अबोध शिशु कैं पूर्वसंस्कारवशें स्तन देखि पान करबाक प्रवृत्ति होइ छैक।

खट्टर ककाक ठोर पर मुसकी आबि गेलैन्ह। कहलथिन्ह—यदि यैह तर्क, तखन ओकरा पूर्व-संस्कारवशें मर्दन करबाक प्रवृत्ति किऐक नहि होइ छैक? पान त केवल एक-दू वर्ष कैने हैत, परन्तु मर्दन त जीवन भरि चलल हैतैक।

नैयायिक—अहाँ त परिहास करैत छी। परन्तु देखू, कोनो नेना जन्मे सँ तीव्र होइछ, कोनो मंद। ककरो सभ अंग पूर रहैत छैक, ककरो न्यूनाधिक। एना किऐक होइ छैक? पूर्वजन्मक कर्मफल सँ।

खट्टर कका लोटामे रस ढारैत बजलाह—औ नैयायिक! कुसियारक खेतमे कोनो कुसियार मोटगर बहराइत छैक, कोनो पातर। कोनो सोझ, कोनो टेढ़।

कोनो बेसी मीठ, कोनो कम मीठ। तकर की कारण ? बीज, क्षेत्र, खाद्य आदिक प्रभाव सँ एना होइत छैक। सैह बात नेनोमे बूझू।

नैयायिक–तखन अहाँ अदृष्ट नहि मानैत छी ?

खट्टर कका–देखू, किछु कारण प्रत्यक्ष होइ छैक। जेना कपार फुटला सँ टेटर भऽ जाइ छैक। परन्तु किछु कारण अज्ञात होइ छैक। जेना हमरा पीठ पर एकटा मस्सा अछि। कोनो बालिमे पीयर दानाक बीचमे गोटेक लाल भऽ जाइ छैक। कारण त किछु अवश्ये हैतैक। परन्तु से ज्ञात नहि। वैह अदृष्ट थीक।

नैयायिक–अहाँ त दोसरे अर्थ लगा दैत छिऐक। हम पुछै छी जे कर्म-फल अहाँ मानैत छी कि नहि ?

खट्टर कका–जहाँ कार्य-कारण सम्बन्ध छैक तहाँ अवश्य मानैत छी। जेना भाँटामे पानि पटाएब त बेसी फरत। परन्तु ई नहि जे एहि जन्ममे भाँटा दान करब त दोसर जन्ममे भँटबर खा लेब।

नैयायिक–एकर अर्थ जे अहाँ प्रत्यक्षवादी छी। परन्तु यदि प्रारब्ध कोनो वस्तु नहि, तखन एक गोटा राजा भऽ कऽ जन्म लैत अछि, दोसर भिक्षुक भऽ कऽ। से किऐक ?

खट्टर कका–औ नैयायिक ! जखन दृष्ट कारण मौजूद अछि तखन अदृष्ट कल्पना किऐक करब ? धनिक ओ गरीबक भेद सामाजिक ढाँचा पर निर्भर छैक। आन-आन देश ओहि ढाँचा कैँ बदलि रहल अछि। आइ रूसमे केओ राजा भऽ कऽ नहि जन्म लैत अछि, ने अमेरिकामे भिक्षुक भऽ कऽ। और अहाँ वैह प्रारब्धक गीत गाबि रहल छी ! लियऽ, रस पीबू।

नैयायिकजी रस पीबि बजलाह–संचित, प्रारब्ध ओ क्रियमाण, ई तीनू कर्म त मानहि पड़त।

खट्टर कका लोटा अलगा कऽ भरि छाक रस पिउलन्हि। तखन सुभ्यस्त भऽ कहऽ लगलथिन्ह–औ नैयायिक ! कनेक फरिछा कऽ कहू। जेना बैंकमे तीन प्रकारक हिसाब फिक्सड डिपौजिट, सेविंग बैंक आ करेन्ट एकाउन्ट रहैत छैक, तहिना अहूँ लोकनिक कर्मक तीन टा खाता रहैत अछि। अहाँ लोकनि जे किछु करै छी, से चित्रगुप्तक बहीमे दर्ज भेल जाइ अछि। ओ तेहन पक्का हिसाब रखैत छथि जे ककरो एको पाइक गड़बड़ी नहि होइ छैक और जकरा जतबा अंश जड़िया भेटबाक चाही से ठीक समय पर किश्त-ब-किश्त अदाय होइत रहै छैक। वैह बात छैक ने ? नैयायिकजी !

नैयायिकजी प्रसन्न भय बजलाह–हँ, हँ। अहाँ बेस फरिछा कय कहलहुँ।

खट्टर कका पुनः कहय लगलथिन्ह–आब विचारू। एहि जन्ममे पुण्य करबाक अर्थ की भेल ? अग्रिम जन्मक हेतु सुखक बीमा कराएब। और पाप करब की

थीक ? एक तरहक उधार खाएब, जकर मूल्य अग्रिम जन्ममे सधाबय पड़त। जायत धरि ई लेनदेनक सिलसिला जारी रहत तावत पर्यन्त जन्म लेबहि पड़त। जखन हिसाब-किताब साफ भऽ जाएत, तखन फारखती भेटि जाएत। अर्थात गरक उतरी छूटि जाएत। वैह भेल मोक्ष ! की औ, नैयायिकजी ?

नैयायिकजी उल्लसित होइत बजलाह–ठीक, ठीक, ठीक।

खट्टर कका कहलथिन्ह–बेस। त एकर अर्थ ई भेल जे ऋणे भरक हेतु हमरा सभक जन्म होइ अछि। एहि जीवनमे किछु त चुकता भऽ जाइ अछि और किछु नयो ऋण चढ़ि जाइत अछि। अतएव उचित ई थीक जे कर्जक बोझ नहि बढ़ाबी और जहाँ धरि भऽ सकय, जल्दी सँ जल्दी मिनहामंसूफ करा कऽ ऋणपत्र सँ उद्धार पाबि जाइ। की औ नैयायिकजी ?

नैयायिकजी गद्‌गद होइत बजलाह–बस, बस, बस। वैह बात छैक। जतेक जल्दी बंधन सँ मोक्ष भेटि जाय ततेक नीक।

खट्टर कका कहलथिन्ह–तखन त नव खाता नहि खोली ? अर्थात नवीन कर्म आरम्भ नहि करी ? आब अहीं कहू जे एहि प्रकारक सिद्धान्त अकर्मण्यता पर लऽ जाएत कि नहि ?

नैयायिकजी कैं बूझि नहि पड़लैन्ह जे खण्डन करी वा मंडन। किछु बाजि देबाक चाही, तैं बजलाह–

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्

जीव कैं कर्मानुसार मनुष्य, पक्षी, सरीसृप, कीट, पतंग या उद्‌भिज योनिमे जन्म लेबय पड़ैत छैक। सभ अपना प्रारब्धक भोग करैत अछि।

खट्टर कका कहलथिन्ह–बेस, सामने खेतमे धानक गाछ लहरा रहल अछि। तखन त अहाँक हिसाबें लाखो जीवात्मागण पाँती-जोड़ सँ ठाढ़ भेल अपना पूर्वकर्मक फल भोगि रहल छथि।

नैयायिक–(किछु कुण्ठित होइत)–हँ।

खट्टर कका–बेस, हम पुछैत छी। एकटा बाढ़ि आओत त ई सभ धान दहा जाएत। कि ईहो प्रारब्धक फल हैतैक ?

नैयायिकजी 'हँ' 'नहि' किछु नहि बजलाह।

खट्टर कका कहलथिन्ह–तखन त खेतमे बान्ह नहि बान्ही ? जीवात्मा लोकनि कैं प्रारब्धक भोग करय दिऐन्ह ?

नैयायिकजी चुप।

खट्टर कका कहलथिन्ह–औ, एकटा भूकम्पमे हजारो मनुष्य दबि जाइत अछि। एकटा फिलिट्टिक झोंकमे लाखो मच्छर नष्ट भऽ जाइ अछि। एहूमे कर्मफलदाताक पूर्वरचित योजना रहैत छैन्ह ?

नैयायिकजी गोङियाइत बजलाह--

कृतकर्मणां भोगादेव क्षयः

खट्टर कका कहलथिन्ह—तखन औ नैयायिकजी ! हम पुछैत छी जे देशमे लाखक लाख व्यक्ति अकाल सँ पीड़ित होइ छथि। हम किऐक झुनकर सहायता करिऔन्ह ? कोनो अबला पर बलात्कार होइ छैन्ह। हम किऐक दौड़िऔन्ह ? ओ अपन प्रारब्धक फल भोगैत छथि। फल भोगि नेने ओतबा बंधन कटि जैतैन्ह। तखन हम बीचमे पड़ि कऽ मोक्षमे बाधक किऐक बनिऔन्ह ?

नैयायिकजी कैं गोङियाइत देखि खट्टर कका पुछलथिन्ह—अच्छा, एकटा त कहू। एखन पृथ्वी पर धर्मक आधिक्य अछि कि पापक ?

नैयायिक—कलियुगमे पापक आधिक्य होइछ।

खट्टर कका—जे मनुष्य पाप करैत अछि तकरा त फेर मनुष्यक शरीर नहि भेटक चाही ?

नैयायिक—नहि।

खट्टर कका—तखन त मनुष्यक संख्या दिनानुदिन कम्म होमक चाही ?

नैयायिक—हँ, से त चाही।

खट्टर कका—तखन मनुष्यक संख्या दिनानुदिन बढ़ि किऐक रहल अछि ?

नैयायिकजी कैं सहसा उत्तर नहि फुरलैन्ह।

खट्टर कका पुछलथिन्ह—दुःख-सुखक भोग त पापे-पुण्य सँ होइत छैक ?

नैयायिक—अवश्य।

खट्टर कका—तखन त ई कोल्हुआइक बड़द पूर्व जन्ममे भारी पाप कैने छल ? और छीतन बाबूक कुकूर भारी पुण्य कैने छल ? हमरा पोखरिक माछ सभ ओहि जन्ममे ब्रह्महत्या कैने छल ? और मधुराक काछु सभ चान्द्रायण व्रत कैने छल ?

नैयायिकजी फेर गोङियाय लगलाह।

खट्टर कका पुनः छुटलथिन्ह—देखू, नैयायिकजी। अमेरिकाक लोक दिनमे तीन तीन बेर माखन उड़बैत अछि और हमरा सभ कैं मट्ठो नहि जुड़ैत अछि। ओ सभ 'मटन' खा कऽ बटन तोड़ैत अछि और हमरा लोकनि साग सुड़ैत ज्ञान गुड़ैत छी। तखन त अमेरिकन सभ पूर्वजन्मक धर्मात्मा थीक और हम-अहाँ पुरान पापी थिकहुँ। दोसर शब्दें एना कहू जे आइ-कालि बेसी धर्मात्मा अमेरिकामे जा कऽ जन्म लैत छथि, और अधिकांश पापी एही देशक खातिर बचाएल रहैत छथि !

नैयायिकजी कैं चुप देखि खट्टर कका बजलाह—देखू, अहाँक सिद्धान्त सँ धर्मात्मा लोकनि कैं गारि पड़ि जाइत छैन्ह।

नैयायिक—से कोना ?

खट्टर कका कहलथिन्ह—देखू, गर्भाधानक प्रक्रिया त जनले हैत ? शुक्राशयमे जीवित कीटाणु विद्यमान रहै छथि। जिनका सुयोग भेटैत छैन्ह से गर्भाशयमे जा शरीर धारण कय लैत छथि।

नैयायिक—हँ।

खट्टर कका—तखन त ओ वीर्यकीट सूक्ष्म-शरीरधारी जीवात्मा थिकाह, जे जन्म लेबाक पूर्व जननेन्द्रियमे निवास करैत छथि !

नैयायिकजी मुँह ताकय लगलथिन्ह।

खट्टर कका कहलथिन्ह—तखन त ई मानय पड़त जे आइकालि अधिकांश धर्मात्मा लोकनि मृत्युक उपरान्त अमेरिकन योनिमे जा कऽ वास करै छथि ?

नैयायिकजी छिलमिला उठलाह। बजलाह—अहाँ त शास्त्रक उपहास करैत छी। तखन जे ओतेक रासे पुनर्जन्म ओ मोक्षक विवेचन कैल गेल छैक से फूसि ?

खट्टर कका शान्त भाव सँ उत्तर देलथिन्ह—फूसि कि सत्य से तऽ हम नहि कहब। परन्तु अहाँक मोक्ष अनोन धरि अवश्ये अछि। जाहि मोक्षमे सुख-दुःखक कोनो अनुभवे नहि, से मोक्ष लऽ कऽ लोक की करत ? एक आलोचक त एतेक दूर धरि कहि गेल छथि जे ओहन मोक्ष सँ जंगलमे सियारक जीवन नीक--

वरं वृन्दावनेऽरण्ये शृगालत्वं भजाम्यहम्
नहि वैशेषिकीं मुक्तिं प्रार्थयामि कदाचन।

नैयायिकजी बजलाह—तखन गौतम ओ कणाद मूर्ख छलाह ?

खट्टर कका कहलथिन्ह—सेहो हम नहि कहब। परन्तु आलोचकक उक्ति छैन्ह जे—

मुक्तये सर्वजीवानां यः शिलात्वं प्रयच्छति।
स एकः गौतमः प्रोक्त उलूकश्च तथाऽपरः।

गौतम ओ कणाद, दुहूक अनुसार मोक्षक अर्थ पाथर जकाँ निश्चेष्ट भऽ गेनाइ। तैं एक गोटा 'गौतम' (बड़द) ओ दोसर गोटा 'उलूक' नाम सँ प्रसिद्ध छथि।

नैयायिकजी कैं आब बेसीकाल धरि ओहिठाम रहब समीचीन नहि बुझना गेलैन्ह। बजलाह—एखन त विद्यालयक समय भऽ गेल। कहियो दोसरा दिन आबि कऽ हम अहाँ सँ शास्त्रार्थ करब।

खट्टर कका मुसकुराइत उत्तर देलथिन्ह—अवश्य करब। अहाँ लोकनिक अनुमान लिंग-परामर्श पर आधारित होइ अछि। व्यभिचार-दोष नहि लागय। तैं खूब नीक जकाँ व्याप्तिक विचार कऽ कऽ आएब। लियऽ, नोसि लियऽ।

नैयायिकक गेला पर हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, आइ नैयायिकजी कुयात्रामे चलल छलाह। परन्तु ई त कहू जे अहाँ कैं सरिपहुँ आत्मामे विश्वास नहि अछि ?

खट्टर कका—आत्मा सँ तोमर की अभिप्राय ?

हम--हम अहाँमे की बूझब? परन्तु मृत्युक उपरान्त कोनो ने कोनो रूपमे चैतन्यक किछु आधार कायम रहैत छैक। सैह आत्मा थीक।

खड्डर कका सुपारीक कतरा करैत बजलाह--हौ, यैह त हमरा बुझबामे नहि अबैत अछि। जखन संपूर्ण शरीर जरि कऽ भस्मीभूत भऽ गेलैक तखन ओकर आश्रित चैतन्य रहतैक कथीमे?

हमरा मुँह तकैत देखि खड्डर कका बजलाह--देखह, यदि हम एक भड़चोटना कसि कऽ तोरा ब्रह्माण्ड पर लगबिऔह त चैतन्य कतय जैतौह? दू मिनट क्लोरोफार्म सुँघा दीह त सभटा बोलती बंद भऽ जैतौह। एक रत्ती विष शरीरमे प्रवेश कैने समस्त ज्ञान लुप्त भऽ जैतौह। एकटा बड़का कर्मकांडी कें कुकुर काटि लेलकैन्ह से भूकि कऽ मरि गेलाह। एहि सभ सँ की सिद्ध होइछ? यैह, जे चैतन्य शरीरक अवस्था पर आश्रित अछि। मस्तिष्क पर कनेक आघात पड़ने चैतन्यक विकार वा तिरोभाव भऽ जाइ छैक। और जखन संपूर्ण शरीरे जरि कऽ छार भऽ जैतैक तखन चैतन्य कि गाछ पर जा कऽ लटकि जैतैक? जखन घड़िए टूटि गेल त ओकर टिक-टिक कथी पर टिकतैक?

हम--परन्तु अपना देशक शास्त्रकार त कहै छथि जे आत्मा अवश्य छथि।

खड्डर कका--हँ। एही भीत पर त परलोकक महल ठाढ़ अछि। यदि ई मूलस्तंभ उखड़ि जाय त पुनर्जन्म ओ मोक्षक संपूर्ण अट्टालिका ढनमना कऽ खसि पड़य। जौं आत्मा नहि, त पुनर्जन्म ककर? और पुनर्जन्म नहि, त मोक्ष की? आत्माक दावा ढहि गेने आस्तिकवादक गढ़ मटियामेट भऽ जाइत अछि।

हम--परन्तु यदि एहि सभमे किछु तथ्य नहि छैक त एतबा दिन सँ चलि कोना रहलैक अछि?

खड्डर कका कहय लगलाह--हौ, अदृष्टक कल्पना सँ मन कें सान्त्वना भेटैत छैक। 'ओहि जन्ममे कोनो पाप कैने छलहुँ, तकर फल आइ भोगि रहल छी।' जखन दुःख दूर करबाक अन्य कोनो साधन नहि भेटैत छैक, तखन यैह भावना मलहमक काज करैत छैक। ई एक प्रकारक आत्मवंचना बूझह। हम अपना मन कें बुझबैत छी--"जे कैलहुँ तकर फल भेटल। एहिमे अपन कोन वश?" संगहि भविष्यक हेतु सैहो आश्वासन भेटैत छैक। 'एहि जन्ममे नीक करब त अग्रिम जन्ममे सुख पाएब।' तें कतेको व्यक्ति एहि जीवनमे नाना कष्ट सहि पुण्य बटोरबाक फेरमे लागल रहैत छथि। एहि आशा पर जे पाछाँ एक्के बेर बहुत रास सुख हाथ लागि जाएत। नाल्पे सुखमस्ति। भूमैव सुखम्। एहि द्वारे नाना प्रकारक यज्ञ-जाप, तीर्थ-व्रत, दान-पुण्य कैल जाइत अछि। चाहे मीमांसाक कर्मकांड हो वा योगक अष्टांगसाधन हो वा वेदान्तक ब्रह्मज्ञान हो, सभक मूलमे एक्के भावना काज करैत छैक--भविष्यमे महत्तम आनन्दक प्राप्ति। केओ स्वर्गक स्वप्न देखैत छथि, केओ अमरत्वक कल्पना करैत छथि, केओ नित्य निरतिशय

सुख चाहैत छथि। मोक्ष, कैवल्य, निर्वाण--सभक एकें तत्त्व छैक--आनन्दलिप्सा। साधक-गण चाहै छथि जे एहि जीवनमे अधिक सँ अधिक फीस दऽ कऽ स्वर्ग वा मोक्षक बीमा करा ली। और एहि वणिक बुद्धि कें 'धर्म' कहल जाइत अछि। परन्तु हौ बाबू, हमरा एहि बीमा कंपनीमे विश्वास नहि। हम आजीवन किस्त चुकबैत जाइ और अन्तमे ओ कंपनी नकली साबित भऽ जाय, तखन? एही द्वारे हमहूँ चार्वाक बला सिद्धान्त मानैत छी--"वरमद्य कपोतः श्वो मयूरात्।" 'काल्हि कदाचित मोर भेटि जाय' ताहि आशा पर हाथमे आएल कबूतर कें छोड़ि देब विशुद्ध मूर्खता थीक।

हम--खड्डर कका, तखन अहाँ कें मोक्षमे आस्था नहि अछि?

खड्डर कका--हौ, हम त सोझ-सोझ बुझैत छी--देहोच्छेदो मोक्षः। जाहि दिन ई चोला छूटि जाएत ताहि दिन स्वतः सभ दुःख सँ छुटकारा भऽ जाएत। ई मोक्ष एक दिन भेटनहि कुशल। तखन ओहि पाछाँ अपस्याँत किएक होउ?

हम--तखन मोक्षक हेतु यत्न करबाक प्रयोजन नहि?

खड्डर कका हँसैत बजलाह--हँ। एकटा मोक्षक हेतु यत्न करू। मोक्षक अर्थ अज्ञान सँ मुक्ति। से सभ सँ बड़का अज्ञान थीक ई मोक्षक आडम्बर। यदि एहि अन्धविश्वास सँ तोरा लोकनि मुक्त भऽ जाह त बड़का भारी मोक्ष भेटि जैतौह!

हम कहलिऐन्ह--खड्डर कका, तखन जीवन्मुक्त केओ नहि होइ छथि?

खड्डर कका मुसकुराइत बजलाह--कोना कहिऔह जे नहि होइ छथि? जे अभागल छथि, से मोक्षक पाछाँ डिरियाएल भेल फिरैत छथि। परन्तु जे भाग्यवान छथि, तिनका बैसले-बैसल मोक्ष भेटि जाइत छैन्ह।

हम--से कोना, खड्डर कका?

खड्डर कका विनोदपूर्वक बजलाह--हौ, संसारमे दू प्रकारक व्यक्ति होइ छथि। एक त अभागल, जे भरि जन्म हकन्न कनैत रहै छथि--

नारीपीनपयोधरोरुयुगलं स्वप्नेऽपि नालिंगितम्।

और दोसर सभागल, जे समस्त बंधन खोलि कऽ सद्यः मोक्ष प्राप्त कऽ लैत छथि। हुनका खातिर--

नीविमोक्षो हि मोक्षः।

भगवानक चर्चा

ओहि दिन खट्टर कका हमरा देखि पुछलन्हि—हौ, आइ बहुत दिन पर देखलिऔह। कहाँ छिटकल जाइ छह?

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, अहाँ लग अबैत डर होइ अछि।

खट्टर कका—से किएक?

हम—अहाँ भगवान कैं नहि मानैत छिऐन्ह।

खट्टर कका मुसकुराइत बजलाह—बुझह त भगवाने हमरा नहि मानैत छथि। हम त हुनका मौसा कऽ ऽ बुझैत छिऐन्ह।

हम—अहाँ कैं त सभ बातमे हँसिए रहैत अछि।

खट्टर कका—हँसी नहि, सरिपहुँ कहैत छिऔह। देखह, लक्ष्मी ओ दरिद्रा, दुहू सहोदरा बहिन। हम दरिद्राक पुत्र; ओ लक्ष्मीक स्वामी। तखन सम्बन्धमे भाइठ की?

हम—खट्टर कका, अहाँ भगवानो सँ परिहास करैत छिऐन्ह। परन्तु यदि भगवान नहि रहतथि त एतेक रासे सृष्टि कोना होइत?

खट्टर कका—जेना नित्य होइत अछि। एही गाममे सहस्रो सृष्टिकर्त्ता मौजूद छथि। आन काजमे लोक बुड़िबक रहौ, परन्तु एहि कार्यमे.....

हम—खट्टर कका, अहाँ दोसरे दिस लऽ गेलहुँ। हमर तात्पर्य जे आदि सृष्टिकर्त्ता त मानहि पड़त।

खट्टर कका भाङक पुड़िया खोलैत बजलाह—हौ, मानबामे हमरा एको रत्ती उजुर नहि। परन्तु कनेक बुझा कऽ कहह। ओ आदि-पुरुष कहाँ सँ ऐलाह? आकाश सँ टपकि पड़लाह? अथवा अनादि काल सँ सूतल छलाह, और निन्द टुटला पर एकाएक सृष्टि करबाक प्रवृत्ति भेलैन्ह? यदि सृष्टि कैलन्हि त कोन रूपें? यदि ई कही जे आदिमे कोनो स्त्री कैं उत्पन्न कय स्वयं पुरुषक कार्य सम्पादित कैलन्हि त हुनका गारिए पड़ि जएतैन्ह! यदि आदिमे एकटा नर ओ एकटा नारी उत्पन्न कैलन्हि त दुहूमे भाइ-बहिनक सम्बन्ध! जौं ओही सँ समस्त शाखा-सन्तति भेल, त सम्पूर्ण मनुष्य जातिए पतित थीक। तखन ककरा हाथक छुइल पानि पिउल जाय!

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, अहाँक तर्कमे के सकत? परन्तु आदि सृष्टिकर्त्ता केओ अवश्य छलाह।

खट्टर कका भाङ रगड़ैत बजलाह—बेस, मानि लेल जे ओ छलाह। परन्तु आब ओ की कऽ रहल छथि? सृष्टिक जे कार्य छैक से त उत्तरोत्तर वृद्धिए पर छैक। सालोसाल हौंजक हौंज बच्चा जनमैत छैक। ताहि बीचमे हुनका पड़बाक कोन प्रयोजन छैन्ह? ओ पेंसन लऽ कऽ बैसथु!

हम—खट्टर कका, ओ कि कात-करौट भऽ कऽ बैसयवला छथि? सर्वव्यापी घटघटवासी थिकाह। सर्वं ब्रह्ममयं जगत्।

खट्टर कका—आब तों वेदांत छाँटय लगलाह। परन्तु जे कहै छह ताहि पर अपना पूर्ण विश्वास छौह?

हम—अवश्य। हममे तुममे खंभ खड्गमे, जहाँ देखौं तहँ राम।

खट्टर कका—वाह रे ब्रह्मज्ञानी! तखन हम पुछैत छी जे अहाँ पैखानामे बैसि कऽ पूजा किऐक नहि करैत छी? चंदनक स्थानमे मल किऐक नहि लेपैत छी? दुर्गाक स्थानमे मुर्गाक पूजा किऐक नहि करैत छी? चंडीक स्थानमे रंडीक चरणामृत किऐक नहि पिबैत छी?

हम—खट्टर कका, पवित्र ओ अपवित्रक विचार.....

खट्टर कका डँटैत बजलाह—जखन सर्वं ब्रह्ममयं जगत् तखन पवित्र की और अपवित्र की? यदि भगवान सरिपहुँ घटघट-वासी थिकाह त मदिराक घटमे सेहो वास करैत छथि। तखन यज्ञशाला ओ मधुशालामे की अन्तर?

हम—कुलवधू ओ वेश्यामे त अवश्य भेद छैक?

खट्टर कका भङघोटना पटकैत बजलाह—की भेद छैक? जैह ब्रह्म कुलवधूक शरीरमे छथिन्ह, सैह ब्रह्म वेश्याक शरीरमे। और जैह ब्रह्म पतिमे छथिन्ह, सैह जारमे। तखन व्यर्थ एतेक रासे टिटिंभा किऐक?

हम—खट्टर कका, अहाँ सँ पार पाएब कठिन। परन्तु भगवानक महिमा अनन्त छैन्ह। ओ अन्तर्यामी सर्वशक्तिमान करुणानिधान.....

खट्टर कका—थम्हह, थम्हह। एके बेर एतेक रासे विशेषण नहि उझिलह। एक एकटा पचाबय देह। हुनका 'अन्तर्यामी' किऐक कहैत छहुन्ह?

हम—ओ सभक अभ्यन्तरमे वास करैत छथि। हम अहाँ जे किछु करैत छी से हुनके प्रेरणा सँ। केनापि देवेन हृदिस्थितेन यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि।

खट्टर कका—बेस, त आब एही पर रहिहऽ। जौं दोसर डारि धैलह त एक भङघोटना लगैबौह।

हम—हँ, लगा देब।

खट्टर कका—अच्छा, त ई कहह जखन भगवाने सभ किछु करबै छथि तखन त हमरा लोकनि हुनका हाथक कठपुतरी भेलहुँ। जेना नचौताह, तेना नाचब।

हम—ताहिमे कोन संदेह?

खट्टर कका–तखन हम पुछैत छिऔह जे साधु औ चोरमे की अंतर?

हम–साधु नीक कर्म करै छथि तैं उत्तम। चोर अधलाह कर्म करै अछि तैं अधम।

ई सुनैत देरी खट्टर कका भङघोटना उठबैत बजलाह–खबरदार! तों तुरंत बाजल छलाह जे यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि। सभटा भगवाने करबैत छथि। वैह साधुक हाथमे माला ओ व्याधक हाथमे भाला धरबैत छथिन्ह। तखन फेर साधु कथी सँ उत्तम और व्याध कथी सँ अधम? जे कहबाक हो से भगवान्‌ कें कहुन्ह।

हमरा गोङियाइत देखि खट्टर कका बजलाह–देखह, एक रंगक बात बाजह। वेश्या जे कर्म करैत अछि से अपना प्रेरणा सँ कि भगवानक प्रेरणा सँ? यदि भगवानक प्रेरणा सँ, त स्वयं भगवान दोषी छथि। यदि अपना प्रेरणा सँ करैत अछि त ओ श्लोक काटि कऽ फेकह जे यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि।

हम–खट्टर कका, हम की बाजू? दुनूमे एकोटा काटऽ योग्य नहि बुझि पड़ै अछि। बिना भगवानक इच्छा सँ एकटा तृण पर्यन्त नहि डोलि सकैत अछि। और व्यभिचारक दोष भगवान पर थोपब, सेहो उचित नहि।

खट्टर कका–देखह, आब फेर हमर भङघोटना सुगबुगाइत अछि। एक बात पर कायम रहह। की सभ बात भगवानेक इच्छा सँ होइ छैन्ह?

हम–अवश्य।

खट्टर कका–बेस, तखन हम एक भङघोटना कसि कऽ तोरा लगबैत छिऔह। इहो त भगवानेक इच्छा सँ हैतैन्ह?

हमरा फेर गोङियाइत देखि खट्टर कका बजलाह–बजै छह किऐक ने? यदि सभ घटना भगवानेक इच्छा सँ होइत छैन्ह तखन त जतेक हत्या ओ बलात्कार होइत छैक सभक छार-भार हुनके कप्पार पर छैन्ह?

हम–खट्टर कका, भगवान अनन्त करुणामय छथि। एकटा गज पर संकट पड़लैन्ह त सुदर्शन चक्र लय दौड़लाह। एकटा भार्द्दूलक बच्चा कें बचायक हेतु महाभारतमे गजघंट खसौलन्हि।

खट्टर कका उत्तेजित होइत बजलाह–और हजारक हजार प्राणी जे 'नारायणी' जहाज डूबय काल गोहारि कैलन्हि ताहि काल कि नारायणक सुदर्शन चक्र भोथ भऽ गेल छलैन्ह? ओतेक मनुष्यक बच्चा जे कुम्भक मेलामे पिचा कऽ आर्त्तनाद कैलक ताहि काल कि कानमे तूर-तेल देल छलैन्ह जे गजघंटक बदलामे धमघंट खसा देलन्हि? हौ, एहन भगवान कें त कानक इलाज करायक चाहिऐन्ह।

हम–खट्टर कका, एना नहि बाजी। ओ लोकनि पाप कैने हैताह, तैं क्लेश भोगय पड़लैन्ह।

खट्टर कका–तखन त जतेक लोक सालोसाल कोशीक बाढ़ि सँ तबाह होइत छथि ओ सभ पापिए थिकाह? जौं किनको बोच पकड़ि कऽ घिसियबैन्ह त बूझी जे ओ अपन पूर्वजन्मकृत पापक भोग कऽ रहल छथि? तखन गजो कें डूबय दितऽथिन्ह।

हम–गज पाप नहि कैने हैताह।

खट्टर कका–तखन ग्राहक मुँहमे पड़लाह किऐक? और जौं पुण्य कर्म कैने छलाह त स्वयं ताहि प्रताप सँ बाँचि जइतथि। भगवान कें दौड़बाक कोन काज छलैन्ह?

हम–जखन-जखन भक्त पर भीड़ पड़ैत छैन्ह तखन तखन भगवान स्वयं आबि कऽ रक्षा करैत छथिन्ह। ओ भक्तवत्सल थिकाह।

खट्टर कका–अर्थात पक्षपाती थिकाह। जौं समदर्शी रहितथि त शबरीक बैर किऐक बेसी मीठ लगितैन्ह? दुर्योधनक मेवा छोड़ि विदुरक साग किऐक खैतथि? सुदामा एक मुट्ठी चाउर देलथिन्ह तकरा बदलामे त हुनका कोठा-सोफा बनि गेलैन्ह और हम जे बीस वर्ष धरि नित्य अक्षत छीटि कऽ पूजा कैलिऐन्ह से एकटा टटघरो नहि बन्हवा भेलैन्ह।

हम–खट्टर कका, यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी। जे हुनका जतेक भक्ति करैत छैन्ह तकरा ततेक फल भेटैत छैक।

खट्टर कका–तखन ई कहह जे भगवान बनियाँ छथि। जतबा दाम देथैन्ह ताहि हिसाब सँ तराजू पर तौलि कऽ देताह। तखन हुनका ओ दमड़ी साहुमे अन्तर की?

हम–खट्टर कका, भगवान दयामय छथि। हुनकर करुणाक अन्त नहि छैन्ह।

खट्टर कका–तखन संसारमे जे एतेक दुःख-दारिद्र्य छैक से दूर किऐक ने करैत छथि? रोग, शोक, दुर्भिक्ष, महामारी–एहि सभ सँ लोक कें पेरैत किऐक रहैत छथि?

हम–लोक अपना कर्मक फल सँ क्लेश पबैत अछि।

खट्टर कका–तखन त कर्म प्रधान भेल। भगवानक इच्छा कहाँ रहलैन्ह? ओ दयो करक चाहताह त की कऽ सकैत छथि? हमरा कर्मे नहि कैल रहत त देताह कहाँ सँ? और जौं कर्मे कैल रहत तखन फेर हुनकर एहसाने कोन? जौं कबीर काशीमे मरिहें, रामक कोन नहोरा?

हम–भगवान सर्वशक्तिमान छथि।

खट्टर कका भाङक गोला बनबैत बजलाह–बेस। तखन ओ संसारक समस्त क्लेश किऐक ने दूर करैत छथि? दुइये टा कारण भऽ सकैत अछि। एक त ई जे ओ चाहिते नहि छथि। दोसर ई जे चाहैत छथि, परन्तु कऽ नहि सकैत

छथि। जौं नहि चाहैत छथि त निर्दय छथि। जौं नहि कऽ सकै छथि त निर्बल छथि। तखन हुनका दयालु आ सर्वशक्तिमान–दुनू एक संग किऐक कहैत छहुन्ह? एकर जवाब देह, नहि त फेर हमर भङघोटना उठत।

हम–खट्टर कका, अहाँक जवाब त बड़का बड़का नहि दऽ सकैत छथि। हम की दऽ सकैत छी? परन्तु एतवा त अवश्य जे भगवानक माया अपरम्पार छैन्ह। हुनका हेतु किछु असम्भव नहि। ओ जे चाहथि से कऽ सकै छथि।

खट्टर कका–वेस त हम एकटा पुछैत छिऔह। भगवान आत्महत्या कऽ सकैत छथि?

हम–खट्टर कका, अहाँ कैं त विनोदे रहैत अछि। परन्तु भगवान मरताह किऐक? जखन जखन पृथ्वी पर पापक वृद्धि होइत छैक तखन तखन ओ धर्मक रक्षार्थ अवतार लैत छथि।

खट्टर कका भभा कऽ हँसि पड़लाह। बजलाह–हौ, पाप की कहबै छैक?

हम किछु विषण्ण होइत कहलिऐन्ह–पाप थीक हिंसा ओ व्यभिचार। ई त सभ जनैत अछि।

खट्टर कका मुसकुरा उठलाह। बजलाह–से तोरा भगवान कैं पसिन्द नहि छैन्ह?

हम–कदापि नहि।

खट्टर कका भाङ घोरैत बजलाह–तखन हम पुछैत छिऔह जे आदिकर्ता बाघ किऐक बनौलन्हि? सिंह कैं ओहन नख किऐक देलथिन्ह? घरियाड़ कैं ओहन दाँत किऐक देलथिन्ह? साँपमे ओतेक जहर किऐक भरि देलथिन्ह? बिच्छूमे डंक किऐक देलथिन्ह? कुकुर, बिलाड़ि, गीदड़, हुराड़, गिद्ध, चिल्होड़ि–सभ कैं शिकारी किऐक बनौलथिन्ह? हौ, यदि हुनका अहिंसे पसिन्द छलैन्ह, त लड़बाक प्रवृत्तिए जीवमे किऐक देलथिन्ह? पहिने स्वयं आगि लगा कऽ पाछाँ घैल लऽ कऽ दौड़ी–ई कोन बुद्धिमानी भेल?.... और यदि हुनका सतीत्व बड्ड पसिंद छलैन्ह त हम पुछैत छिऔह जे चौरासी लाख योनिमे कै टा योनि सतीत्व बला छैन्ह? दुइयो टा नहि। जौं हुनका ब्रह्मचर्य पसिंद छलैन्ह त सृष्टिक प्रक्रिया ओहन अश्लील किऐक बनौलन्हि? ....तौं एखन नेना छह। सभ बात नहि बुझबहक।

हम–खट्टर कका, अहाँ त उनटे गंगा बहा देत छिऐक। तखन पाप-पुण्यक भेदे की रहतैक?

खट्टर कका विहुँसैत बजलाह–तौं वेदान्तियो बनबह और पाप-पुण्यक भेदो रखबह! ई दुनू बात कोना हैतौह? यदि सर्वं ब्रह्ममयं जगत्, तखन त ई मानय

पड़तौह जे वैह ब्रह्म माछ बनि जलमे विचरण करैत छथि और वैह मलाह बनि ओकरा जालमे बझबैत छथि। वैह गज बनि चिचियाइ छथि, वैह ग्राह बनि मुँह दबैत छथि। वैह चोर बनि चोरी करैत छथि, वैह कोतवाल बनि ओकरा पकड़ैत छथि। वैह ब्रह्मचारी बनि योगासन लगबैत छथि, वैह व्यभिचारी बनि भोगासन लगबैत छथि। तखन पाप की और पुण्य की?

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, अहाँ त तेहन मकड़जाला लगा दैत छिऐक जे लोक कैं ससरबाक बाटे नहि भेटैत छैक।

खट्टर कका बजलाह– तोरा लोकनि अपने जालमे फँसि जाइत छह। एक बेर कहैत छह–जे

कर्म प्रधान विश्व करि राखा,
जो जस करहि सो तस फल चाखा।

और दोसर बेर कहैत छह जे–

होइहि सोइ जो राम रचि राखा,
को करि तर्क बढ़ावहि साखा।

कौखन कहैत छह जे भगवान सर्वव्यापी छथि; कौखन कहैत छह जे ओ अवतार ग्रहण कय पृथ्वी पर अबैत छथि। खने कहैत छह जे भगवान समदर्शी छथि, खने कहै छह जे भक्तवत्सल छथि। एक दिस अद्वैतवादी सेहो बनैत छह और दोसर दिस पाप-पुण्यक भेद सेहो मानैत छह। एही द्वारे तेहन घुरची लागि जाइत छौह जे लटपटा कऽ फँसि जाइत छह। बड़का बड़का पंडित एहि ससरफानीमे ओझरा जाइत छथि।

हम–खट्टर कका, अहाँ त ततेक प्रकारक शंका उत्पन्न कऽ दैत छिऐक जे आस्तिकोक मन डवाँडोल भऽ जाइ छैक। आब अहीं कहू जे भगवान छथि वा नहि।

खट्टर कका मुसकुराइत बजलाह–छथि त अवश्ये। तखन प्रश्न ई जे ओ हमरा सभक सृष्टि कय अपन लीला कऽ रहल छथि अथवा हमरे लोकनि हुनक सृष्टि कय अपन मनोविनोद कय रहल छी?

हम–खट्टर कका, ई त और शंका धऽ देलिऐक। अहाँ कि भगवान कैं काल्पनिक कऽ कऽ बुझैत छिऐन्ह?

खट्टर कका विनोदपूर्वक बजलाह–नहि। वास्तविको भगवान होइ छथि। जैह भाग्यवान सैह भगवान। 'भग' शब्दाहेव 'भाग्यं' निष्पद्यते। से जिनका जतेक प्रचुर राशिमे उपलब्ध छैन्ह से तेहन बड़का 'भगवान' छथि। जिनका नहि छैन्ह से अभाग्यवान छथि। ओ सृष्टि की करताह?

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, अहाँ भाङक तरंगमे भगवानो कैं लेलिऐन्ह।

खट्टर कका भाङ छनैत बजलाह–हौ, हमर एक पूर्वज उदयनाचार्य एक बेर भगवान् कें डटने रहथिन्ह जे–

ऐश्वर्यमदमत्तोसि मामवज्ञाय तिष्ठसि
नास्तिकानां सभायां तु ममाधीना तव स्थितिः।

"हे भगवान्! अहाँ एहि घमंडमे नहि रहू जे अहींक अधीन हमर अस्तित्व अछि। नास्तिक सभक बीचमे अहूँक अस्तित्व हमरे अधीन रहैत अछि।"

तहिना हमहूँ सुना कय कहैत छिऐन्ह–

सदा तिष्ठसि नेपथ्ये, चोरवत् निभृतः कथम्
उत्थितेषु तरंगेषु ममाधीना तव स्थितिः

चोर जकाँ सदिखन नुकाएल की रहैत छी? सामने आबि कऽ लोक कें अपन मुँह देखबियौक।....हौ, जखन हमर तरंग उठैत अछि तखन भगवानो कें डर होइत हैतैन्ह जे ई कतय भसिया कऽ लऽ जाएत। जौं कतहु हैताह त सुनिते हैताह। नहि त अरण्यरोदने बुझह।

खट्टर ककाक भाङ तैयार भऽ गेल छलैन्ह। बजलाह–जे हो। आइ कोनो लाथे दू घड़ी भगवानक चर्चा त भेल।

एक घड़ी आधा घड़ी, आधोमे पुनि आध।
भगवानक चर्चा सरस, हरय कोटि अपराध।

ई कहि खट्टर कका दू बुन्द भगवानक नाम पर उत्सर्ग कय भरलो लोटा चढ़ा गेलाह।

धर्मक तत्त्व

खट्टर कका आङनमे भोजन करैत रहथि। हमरा देखि बजलाह–आबह, आबह। तोंहू बैसह।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, हम तुरंत भोजन कैने छी। एकटा समाचार कहय आएल छलहुँ।

खट्टर कका–से की?

हम–आइ सभा छैक। धर्म पर व्याख्यान हैतैक। अहूँ चलब?

खट्टर ककाक ठोर पर मुसकी आबि गेलैन्ह। बजलाह–बैसह, बैसह। तों धर्म ककरा कहैत छहीक?

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, जखन बड़का बड़का पंडित धर्मक व्याख्या नहि कय सकै छथि त हम की कहि सकैत छी?

धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायाम्।

खट्टर कका बजलाह–हौ, एहीठाम त धुड़किल्ली छैक। 'गुहायाम्' पदक अर्थ बड्ड गूढ़ छैक। ओतेक दूर धरि सभक प्रवेश हैब कठिन।

हम आसन पर बैसि गेलहुँ। कहलिऐन्ह–खट्टर कका, हम त मोट बात जनैत छी। हमरा लोकनिक पूर्वज जे सर्वदा सँ करैत ऐलाह अछि, से धर्म थीक। जे बात नहि करैत ऐलाह अछि, से अधर्म थीक।

खट्टर कका एकटा भँटबर खोंटैत बजलाह–तखन त हर जोतब धर्म थीक, और 'ट्रैक्टर' चलाएब अधर्म थीक? खरखरिया पर चलब धर्म थीक और 'हेलिकोप्टर' पर उड़ब अधर्म थीक?

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, अहाँ सँ के तर्क करौ? परन्तु हम सोझ सोझ बुझैत छी–महाजनो येन गतः स पन्थाः।

खट्टर कका कें हँसी लागि गेलैन्ह। बजलाह–जतेक सोझ तों बुझैत छहीक ततेक नहि छैक। महाजनक एक बाट रहैन्ह तखन ने! रामचन्द्रक मार्ग छैन्ह–मर्यादापालन। कृष्णचन्द्रक मार्ग छैन्ह–रासलीला। महावीर जैनक मार्ग छैन्ह–अहिंसा परमो धर्मः। महावीर हनुमानक मार्ग छैन्ह–शठे शाठ्यं समाचरेत्। सभ त पूज्ये छथि। आब किनकर मार्ग अनुसरण कैल जाय?

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, मनुजी दसटा धर्म गना गेल छथि–

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय-निग्रहः
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।

एहिमे त कोनो संदेह नहि होमक चाही।

खट्टर कका तिलकोरक तरुआ कुड़कुड़बैत बजलाह–हौ, ई सभ श्लोक अनका फुसियाबक हेतु होइ छैक। जौं पाण्डव धैर्य कऽ कऽ बैसि जैतथि, त महाभारत किऐक होइत ? यदि रामचन्द्रजी रावण कैं क्षमा कऽ दितऽथिन्ह, त लंकाकांड किऐक मचैत ? जे समर्थ अछि तकरा हेतु इ सभ धर्म नहि होइ छैक। जे अब्बल-दुब्बर अछि तकरे सन्तोषार्थ ई सभ मोसम्माती धर्म बनाओल गेल छैक। अबला धैर्य कऽ कऽ बैसि जाइत अछि। नपुंसक मारि खा कऽ रहि जाइत अछि। परन्तु जे सबल छथि, शासक छथि, तिनकर दोसरे धर्म होइ छैन्ह।

हम–हुनकर धर्म की होइ छैन्ह ?

खट्टर कका–जाहि सँ हुनक इच्छापूर्ति होइन्ह, सैह हुनक धर्म होइ छैन्ह। से जाहि प्रकारैं होइन्ह। शत्रुक छाती पर चढ़ि कऽ, अथवा युवतीक। बंदूकक जोर सँ, वा संदूकक जोर सँ। अबल घरमे एकटा खून करै अछि त फाँसी पड़ै अछि। सबल युद्धमे सै टा खून करै छथि त वीर कहबैत छथि। यैह पुरुषाह धर्म थिकैक।

हम–परन्तु व्यासजी त कहि गेलाह अछि जे–

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्

परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।

जाहि सँ दोसराक उपकार होइक से धर्म थीक, जाहि सँ दोसरा कैं दुःख पहुँचैक से पाप थीक।

खट्टर कका एकटा तरुआक स्वाद लैत बजलाह–हौ, यदि यैह बात, तखन प्राणायाम कैं धर्म, और पलांडु-भक्षण कैं अधर्म किऐक मानल जाय ? हम नाक मुनि लेब ताहि सँ अनकर की उपकार हैतैक ? हम पेयाजक तरुआ खाएब ताहि सँ अनकर की बिगड़तैक ? .....और यदि दोसरा कैं आनन्द देब सैह धर्म, तखन त व्यभिचारो कैं धर्मे कऽ कऽ बूझक चाही ?

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, अहाँ त तेहन तेहन युक्ति दैत छिऐक जे धर्मक अस्तित्वे लोप भऽ जाय। एही द्वारे पंडित लोकनि अहाँ कैं नास्तिक कहैत छथि।

खट्टर कका मिरचाइक अँचार खोंटैत बजलाह–हौ, ई कि हम अपना दिस सँ कहैत छिऔह ? स्वयं कुमारिल भट्ट कहि गेल छथि–

क्रोशता हृदयेनापि गुरुदाराभिगामिनाम्

भूयान् धर्मः प्रसज्येत भूयसी ह्युपकारिता।

अर्थात "यदि दोसरा कैं आनन्द प्रदान करबे धर्म थीक तखन त गुरुपत्नीगमन करयवाला सेहो धर्मात्मा थिक। श्लोक-वार्तिकमे देखह जे धर्म पर एहन एहन कतेक रासे शास्त्रार्थ छैक। परन्तु से सभ ग्रन्थ त तोरा लोकनि देखबह नहि, सोझे खट्टर झा कैं गारि पढ़बहुन।

हम–तखन धर्म परोपकारमूलक नहि थीक ?

खट्टर कका अरिकोंचक चक्का मुँहमे दैत बजलाह–सौ एखन नेना छह। जखन परिपक्व हैबह तखन बुझबहीक जे–

अष्टादश पुराणेषु खट्टरस्य वचोद्वयम्

निजोपकारः पुण्याय पापाय निजपीडनम्।

जाहिसँ अपन उपकार हो, सैह धर्म थीक। और जाहिसँ अपना दुःख पहुँचय, सैह पाप थीक।

हमरा मुँह तकैत देखि खट्टर कका बजलाह–हौ, परमार्थोक चक्का चलैत छैक से स्वार्थेक धुरी पर। दान-पुण्य कि ओहिना कैल जाइ छैक ? केओ नाम लेल करै अछि, केओ स्वर्ग लेल। सभमे अहंभाव रहै छैक। यदि स्वार्थक तेल निघँटि जाइक त धर्मक बाती तुरंत मिझा जाय। तैं अनुभवी आचार्य लोकनिक सिद्धान्त छैन्ह–आत्मा रक्षितो धर्मः।

हम–खट्टर कका, अहाँ त लोक कैं संशय-जालमे धऽ दैत छिऐक। परन्तु हम कहब जे सभ जीव पर दया राखी, यैह सभ सँ बड़का धर्म थिकैक।

खट्टर कका ओलक सानामे जमीरी नेबो गारैत बजलाह–कनेक बुझा कऽ कहह। हमरा खाटमे उड़ीस भरल अछि। तकरा भरि राति अपन शोणित पीबय दिऐक ? रातिमे बहुत रासे मच्छर कटैत अछि। तकरा धूआँ नहि लगबिऐक ? लतामक गाछमे बिढ़नी खोंता लगौने अछि। तकरा नहि उड़बिऐक। तोरा काकीक केशमे ढील फरल छैन्ह। से नहि मारथि ? पुरना घर सँ साँप बहराइत अछि। तकरा ओहिना सहसह करैत छोड़ि दिऐक ? यदि मनुष्य सभ जीव पर दया करऽ लागय, त जीवित रहि सकै अछि ?

हम–खट्टर कका, अहाँक जिरहमे ठठब त मुश्किल। परन्तु जहाँ धरि भऽ सकय, अहिंसा ओ प्रेम सँ काज लेबक चाही।

खट्टर कका ओलक चटनी चखैत बजलाह–हौ, यैह बात त हमरा बूझऽमे नहि अबैत अछि। सभ मनुष्य कि दयाक पात्र होइत अछि ? मानि लैह, एकटा आततायी तोरा घरमे पैसि जाओ और आङनमे बलात्कार करय लागि जाओ त एहना स्थितिमे तोहर की कर्त्तव्य हैतौह ? ओकरा पंखा हौंकय लगबहीक ? ठंढइ-शरबत आगाँमे बढ़ा देबहीक ? अन्तमे चलबा काल जनउ-सुपारी दऽ कऽ बिदा करबहीक ?

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, अहाँ त तेहन दृष्टान्त दऽ दैत छी जे हमर मुँहे बंद भऽ जाइ अछि। परन्तु एतबा त अहूँ मानब जे सभ धर्मक मूल थीक इन्द्रिय-दमन।

खट्टर कका तेतरिक खटमिट्ठी चभैत बजलाह–ई बात जे परचारि गेल से

भारी अभागल छल। हम त बुझैत छी जे चटकार भोजन करब धर्म थीक और जीभ कैं कष्ट देनाइ सैह अधर्म थीक।

हम–परन्तु इन्द्रिय-सुख त अत्यन्त तुच्छ वस्तु थीक। तैं इन्द्रिय-निग्रह.....

खट्टर कका कैं क्रोध उठि गेलन्हि। बजलाह–हौ, यदि इन्द्रिय एहन अधलाह वस्तु थीक, त बिल्वमंगल जकाँ आँखि फोड़ि लैह। जड़भरत जकाँ नाक-कान मुनि कऽ बैसि रहह।

हम–हमर अभिप्राय ई जे ब्रह्मचर्य-पूर्वक....

'ब्रह्मचर्य'क नाम सुनैत खट्टर कका उत्तेजित भऽ गेलाह। बजलाह–ब्रह्मचर्यक अर्थ ब्रह्म समान चर्या। ब्रह्म नपुंसक लिंग छथि अतएव ब्रह्मचर्यक अर्थ भेल नपुंसकवत आचरण। एकरे तों धर्म कऽ कऽ बुझैत छह ?

हम–खट्टर कका, लिखलकैक अछि–

मरणं विंदुपातेन जीवनं विंदुधारणात्।

खट्टर कका कड़कि कऽ बजलाह–अशुद्ध।

जीवनं विंदुपातेन मरणं विंदुधारणात्।

विंदुपाते सँ जीवनक सृष्टि होइ छैक। यदि सभ अपन अपन विंदु अपना कोषागारेमे रखने रहि जाय त ई सृष्टि कोना चलत ? हौ, धर्म ककरा कही ? जाहि सँ सृष्टिक धारण हो। आब तोंही कहह जे असली धर्म की थीक ? विंदुरक्षा अथवा विंदुपात ?

हम–तखन ब्रह्मचारी बनब मूर्खता थीक?

खट्टर कका दहबड़ चभैत बजलाह–एहि अर्थमे अवश्य मूर्खता थीक। परन्तु जिनका सामर्थ्य होइन्ह से दोसरा अर्थमे ब्रह्मचारी बनि सकैत छथि।'ब्रह्म स्वच्छंद होइ छथि। तैं ब्रह्मचारीक अर्थ स्वच्छंदाचारी। जेना संन्यासी। संन्यासीक अर्थ जे सम्यक प्रकारे न्यास अथवा त्याग करथि। तैं ओ लोकनि सामाजिक बन्धन कैं त्याग कऽ दैत छथि। अर्थात आरि-धूरक सीमा नहि रखैत छथि। ठेठ भाषामे साँढ़ बूझह। तैं बहुत गोटा अपना नाममे 'गोस्वामी' शब्द सेहो जोड़ि लैत छथि।

हम–'गोस्वामी'क ई अर्थ हमरा नहि बूझल छल।

खट्टर कका कुम्हरौड़ीक झोर चखैत बजलाह–तोरा बुझले की छौह ? ओ लोकनि जे दंड-कमंडलु रखैत छथि से कथीक प्रतीक थिकैन्ह ? कलेक आकार पर ध्यान दहीक। तखन बुझा जैतौह। भातिज थिकाह। बेसी खोलि कऽ कोना कहिऔह ?

तावत काकी एक छिपली तरल माछ आगाँमे धऽ गेलथिन्ह।

खट्टर कका बजलाह–बस, आब गप्प जमि गेल। पूछह, की पुछैत छह ?

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, अहाँक त सभटा गप्प अद्भुते होइ अछि। परन्तु साधु-संत त त्यागी होइ छथि। चारि आँगुर कौपीन पहिरि कऽ रहैत छथि।

खट्टर कका एकटा खूब झूर परलइक स्वाद लैत बजलाह–हौ, एकटा पिहानी छैक–

बुड़िबक एक चलल ससुरारि
बाटहि भगवा लेलक उतारि

से ई लोकनि स्वर्गक अप्सरा लेल तेहेक ललाएल रहै छथि जे एहीठाम धोती खोलि कऽ राखि दैत छथि। कतेक गोटा त ओहो चारि आँगुरक बिष्ठी फोलि, सोझे नागा बनि जाइत छथि। परन्तु हौजी ! यदि कदाचित ओहूठाम 'नागा' (शून्य) भऽ जाइन्ह तखन त ठिठियाएले रहि जैताह।

हम–खट्टर कका, एतेक रासे योगी जे योग साधन करै छथि से.....

खट्टर कका–सभटा भोगे निमित्त। भोगक साधन योग। विचारि कऽ देखह त बिना 'युज्' धातुक सहायता सँ 'भुज्' धातुक क्रिया भइए नहि सकैत छैक।

हम–परन्तु ओहिठाम 'युज्'क अर्थ छैक आत्मा ओ परमात्माक मिलन।

खट्टर कका–परमात्मा नहि, परात्मा। आत्माक अर्थ अपन शरीर। परात्माक अर्थ अनकर शरीर। ओही दुनूक मिलन योग थीक। वैह सम्यक प्रकार सँ हो त 'संयोग' कहबैत अछि।

हम–अहाँ त विलक्षणे अर्थ लगा दैत छिऐक। योगी कैं भोग सँ कोन मतलब ?

खट्टर कका तृप्तिपूर्वक तरल माछक आस्वादन लैत बजलाह–सोरह आना मतलब। ओ बुझैत छथि जे एहि नाक (नासिका)क रंध्र दबौने ओहि नाक (स्वर्ग)क द्वार फुजि जाएत। एतय कुंडलिनी (योग) जगौने ओतय कुंडलिनी (कुण्डलवाली सुन्दरी) भेटि जैतीह। एहि ठाम खेचरी (मुद्रा) सधने ओहिठाम खेचरी (आकाश-विहारिणी परी) प्राप्त भऽ जैतीह। जे एहिठाम नारी कैं नरकक खानि कहैत छथि सेहो नारिए खातिर स्वर्ग जाय चाहैत छथि।

हम–और एतेक रासे जे पूजापाठ होइत अछि.....

खट्टर कका–से सभटा स्वर्गक निमित्त। रंभाक लोभसँ लोक भगवान कैं रंभाफल चढ़बैत छैन्ह। तिलोत्तमाक लोभ सँ तिल छिटैत छैन्ह। यदि लोक कैं निश्चय भऽ जाइक जे स्वर्गक फाटक एक टाटक मात्र थीक त आइए सभटा नाटक ओ पूजाक नाटक समाप्त भऽ जाय। जखन चन्द्रमुखी भेटयवाली नहि, त लोक गोमुखीमे हाथ दय जप किऐक करत ? यदि मृगनयनी नहि, त मृगछाला किऐक पहिरत ? यदि षोडशी नहि, त एकादशी किऐक करत ?

हम–अहा ! खट्टर कका ! अलंकारक धारा बहि गेल। आब अहाँ तरंगमे आबि गेलहुँ।

तावत काकी एक बाटी झोराओल माछ नेने ऐलथिन्ह।

खट्टर कका बजलाह–एहन रंग पर जौं तरंग नहि चलय त चलय कथी पर ?

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, मानि लेल जे कामक वेग प्रबल थीक। परन्तु लोक मर्यादा त बान्हि सकैत अछि। जेना पतिव्रता स्त्री......

'पतिव्रता'क नामे सुनैत खट्टर ककाक आँखि चढ़ि गेलैन्ह। बजलाह–हौ, पतिव्रता स्त्री सन संकीर्ण ओ स्वार्थिनी संसारमे केओ नहि होइ अछि।

पुनः अपना स्त्री कैं देखि कहलन्हि–अहाँ जाउ ने। एहिठाम ठाढ़ भऽ कऽ गप्प की सुनै छी?

हुनका गेला पर हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, अहाँक सभ बात आश्चर्य होइ अछि। जखन पतिव्रता अधलाह, तखन अहाँ स्त्री-जातिमे श्रेष्ठ ककरा बुझैत छिऐक?

खट्टर कका माछक काँट छोड़बैत बजलाह–वेश्या कैं।

हम–खट्टर कका, अहाँ कैं भाङ लागल अछि।

खट्टर कका बजलाह–हौ, भाङ त हमरा लगले रहै अछि। भोरे हरियरका माजूमक बर्फी लऽ कऽ जलखइ भेलैक अछि। परन्तु हम तोरा पुछैत छिऔह जे यदि वेश्या सर्वश्रेष्ठ नहि रहैत त नित्य स्वर्गमे कोना निवास करैत। बड़का बड़का धर्मात्मा लोकनि पुण्यक्षय भऽ गेला उत्तर पुनः मर्त्यलोकमे आबि जाइत छथि। क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति। परन्तु रंभा, उर्वशी, तिलोत्तमा आदि ओतय अक्षय सुखक भोग करैत छथि। कोनो कुलवधू कैं ई सौभाग्य प्राप्त छैन्ह?

हम–खट्टर कका, कहाँ कुलवधू ओ कहाँ वेश्या! दूनूमे कतबा अन्तर छैन्ह?

खट्टर कका–जतबा अन्तर एक चुकड़ी पानि ओ महानदीक धारामे। एक क्षुद्रघंटी थीक, दोसर उदारताक प्रतीक। जे केवल एक गोटाक काज आएल, सेहो देह कोनो देह थीक? सराही ओहि शरीर कैं, जे अनेकक काज आबय।

हम–खट्टर कका, एहि सभ बात सँ सतीत्व धर्म पर आघात पहुँचत।

खट्टर कका–हौ, सतीत्व-धर्म सँ बेसी प्रबल थिकैक प्रकृति-धर्म, जे सृष्टिक आदि-काल सँ चलि रहल छैक। सतीत्व त हमर तोहर बनाओल अछि।

हम–तखन पातिव्रत्य कैं अहाँ ईश्वरीय आज्ञा कऽ कऽ नहि बुझैत छिऐक?

खट्टर कका विहुँसैत बजलाह–हौ, ईश्वर कैं सभ ठाम किऐक घसिटैत छहुन्ह? हुनका कि एतबे काज छैन्ह जे दूरबीन लगौने बैसल रहथि?

हम–तखन ई वस्तु चलल कोना?

खट्टर कका प्रेम सँ रोहुक सीरा सँ घी बाहर करैत बजलाह–हौ, हमरा लोकनिक पुरुखा चलाक छलाह। बुढ़ारियोमे कैं कैं टा विवाह कय कऽ अनैत छलाह। कहाँ धरि युवती सभक रखबारी करितथि! तैं किछु श्लोक बना कऽ पैर छानि देलथिन्ह। चार्वाक त साफ कहै छथि जे–

पातिव्रत्यादि संकेतः बुद्धिमद्दुर्बलैः कृतः
रूपवीर्यवता सार्द्धं स्त्रीकेलिमसहिष्णुभिः।

खट्टर कका एक लोटा पानि पिउलन्हि। पुनः बजलाह–असलमे बूझह त जकरा लोक पातिव्रत्य कहैत छैक, सैह व्यभिचार थीक।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका,

कबीरदास केर उनटे बानी, बरिसय कंबल भीजय पानी!

अहाँ कैं निश्चय नशा लागल अछि।

खट्टर कका गम्भीरतापूर्वक बजलाह–हौ, नशा त हमरा लगले रहैत अछि। परन्तु कनेक अपने विचारि कऽ देखह। व्यभिचारक अर्थ की। नियमक अपवाद। आब देखह जे स्वाभाविक नियम की थिकैक? नर ओ मादाक संयोग सँ स्वभावतः गर्भाधान भऽ जाइ छैक। ओहि खातिर ने शहनाइ बजैबाक काज छैक, ने शंख फुकबाक। सिंदूरदान ओ गठबंधन त केवल आडंबर थिकैक। स्त्री कैं महिष जकाँ नाथक हेतु। देखै छह नहि? एखन धरि पतिव्रता स्त्री अपना पति कैं 'नाथ' कहैत छथि। हौ, प्राणी मात्र कैं मैथुन कर्ममे स्वतंत्रता छैक। केवल मनुष्य एहि नियमक उल्लंघन कय स्त्रीक पैरमे छान लगा दैत अछि। एही द्वारे हम पातिव्रत्य-धर्म कैं व्यभिचार कहैत छिऐक।

हम–खट्टर कका, एना कहबैक त नारी सती-धर्मक पालन नहि करत।

खट्टर कका बजलाह–हौ, सतीक अर्थ की? उत्तम। उत्तम के थीक? जे अपना अधिकारक रक्षा करय। तुलसीदास कहै छथि–

जिमि स्वतंत्र होइ बिगड़हिं नारी

हम कहै छी–

जिमि स्वतंत्र होइ सुधरहिं नारी।

जे नारी पुरुषक दासत्व-शृंखला सँ मुक्त भऽ अपना कैं स्वतंत्र राखि स्वाभाविक नियमक पालन करैत अछि सैह उत्तम वा सती कहाबय योग्य अछि। एहि द्वारे हम वेश्या कैं सर्वश्रेष्ठ नारी कऽ कऽ बुझैत छी। पतिव्रता स्त्री भुसकौल होइ छथि।

हम–खट्टर कका, अहाँ हँसी करैत छी।

खट्टर कका–से आब तों जे बुझह।

तावत काकी दही लऽ कऽ पहुँचि गेलथिन्ह।

हम पुछलिऐन्ह–खट्टर कका, अहाँ कैं स्वर्गमे विश्वास नहि अछि?

खट्टर कका दही भात सनैत बजलाह–हौ, यदि एको गोटा ओतय सँ आबि कऽ कहैत तखन ने विश्वास होइत। परन्तु आइ धरि जे गेलाह से फिरि कऽ कहऽ नहि ऐलाह। और जे लोकनि कहै छथि से गेले नहि छथि। तखन हुनका बातक कोन प्रतीति?

हम—खट्टर कका, यदि एहिमे किछु तत्त्व नहि रहितैक त एतवा दिन सँ ई वात कोना चलि अवैत ?

तावत काकी दू टा कृष्णभोग आम नेने ऐलथिन्ह।

खट्टर कका दही भातमे आमक रस गारैत वजलाह—हौ, तत्त्व यैह छैक जे लोक कैं पृथ्वी पर भोग सँ तृप्ति नहि होइ छैक। तृष्णाक कोनो अन्त नहि छैक। परन्तु जीवन परिमित; देहक शक्ति अल्प; थोड़वे दिनमे बुढ़ापा पहुँचि जाइ छैक; और कामना वनले रहैत छैक, तावत खेल खतम भऽ जाइ छैक। एही द्वारे लोक कल्पना सँ पूर्ति करै अछि। जे सिहंता एहि जन्ममे नहि पूर्ण भेल से मुइलाक वाद पूर्ण भऽ जाएत। एहन ठाम जाएव जहाँ जरा-मरण नहि। अजर-अमर भऽ कऽ रहव। ओतय खैवाक हेतु मिष्टान्न, पीवाक हेतु अमृत, भोग करवाक हेतु सुन्दरी। और सभटा मुफ्ते। एको कैंचा खर्च नहि। ने खेती करवाक झंझट, ने आरि-धूरक तकरार, ने मामिला-मोकदमाक वखेड़ा। कल्पवृक्ष तर वैसि जाउ, जे इच्छा हो से माङि लियऽ। रावड़ी पीवाक मन हो, कामधेनु कैं कहि दिऔन्ह। विहार करवाक हो, अप्सराक झुंडमे सन्हिया जाउ। ई सुरालय की भेल, श्वशुरालय भेल। वल्कि ताहू सँ सहस्रगुना वढ़ि कऽ। सासुरमे त एकेटा षोडशी पर सोरह आना अधिकार भेटैत छैक। परन्तु स्वर्गमे त सोरह हजार षोडशी अपन सोरहन्नी अदाय करवाक हेतु ठाढ़ि रहैत छथि। ओहि ठाम कोनो सार-ससुर रोकयवला नहि। सभ सारिए सारि। और सभ अक्षय-यौवना ! आव एहि सँ वाढ़ि की चाही ? परन्तु हौ जी ! एक वात वड्ड गड़वड़।

हम—से की, खट्टर कका ?

खट्टर कका आमक चोभा लगवैत वजलाह—विचारि कऽ देखह त लोक स्वर्ग गेने अगती भऽ जाइ अछि।

हम—से कोना खट्टर कका !

खट्टर कका—मानि लैह जे तोहर सातो पुरुखा स्वर्ग गेलथुन्ह। आव ओही अप्सरा गण कैं सातो पितर भोग कैने होइथुन्ह। और तोंहू जैवह त सैह करवह। तैं हम कहै छिऔह जे स्वर्ग गेने धर्म नष्ट भऽ जाय।

हम—खट्टर कका, अहाँ त तेहन वात वाजि देलहुँ जे आव लोक कैं स्वर्गो जैवामे मन भटकि जैतैक।

खट्टर कका मुस्कुराइत वजलाह—हम कि अयुक्त कहै छिऔह ?

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, आव हँसी नहि करू। हमर वुद्धि काज नहि करैत अछि। अहीं कहू जे धर्म की वस्तु थीक।

खट्टर कका चूर लैत वजलाह—हौ, समस्त धर्मक रहस्य हम एक्के श्लोकमे कहि दैत छिऔह—

कृतः धर्मप्रपंचोऽयं परमुष्ट्यां पतेन्नहि
कदाचित् स्वकृशग्रीवा पत्नीपीनस्तनोऽथवा

'अपन कमजोर गरदनि ओ पत्नीक पुष्ट स्तन, ई दूनू वस्तु दोसराक मुट्ठीमे नहि जाय'—एही हेतु एतवा रास धर्माधर्मक प्रपंच रचल गेल अछि।

हम विस्मित होइत पुछलिऐन्ह—खट्टर कका, ई वचन अहाँक दृष्टिमे कृत्रिम थीक। तखन असली धर्म की थीक ?

खट्टर कका विहुँसैत वजलाह—असली धर्मक परिभाषा देखवाक हो त मीमांसा-सूत्र देखह। आदिएमे भेटि जैतौह।

हम—ओ कोन सूत्र थिकैक ?

खट्टर कका वजलाह—ओ धियापुताक समक्ष उच्चारण करवा योग्य नहि छैक। कोनो मीमंसक सँ पूछि लियऽहुन। टीकाकार लोकनि त वहुत रासे गोवर-माटि लगौने छथि। परन्तु हम सोझ-सोझ अर्थ वुझै छी। जाहि सँ सृष्टिक काज आगाँ वढ़य सैह धर्म थीक। से जिनकामे जतेक सामर्थ्य होइन्ह।

ई कहैत खट्टर कका अचायक हेतु उठि गेलाह।

पुरातन सभ्यता

ओहि दिन खट्टर कका सँ पुरातन सभ्यता पर गप्प छिड़ि गेल।

हम कहलिऐन्ह–देखू, खट्टर कका, ताहि दिनक ऋषि-मुनि केहन त्यागपूर्ण जीवन व्यतीत करथि! गुफा-कंदरामे रहि कंदमूल खा तपस्या करथि। ब्राह्म मुहूर्तमे उठि, नदीमे स्नान कय, वल्कल पहिरने, कमंडलुमे जल भरने, कुटीमे आबि, कुशासन पर बैसि देवताक ध्यान धरथि। केहन पवित्र सात्त्विक जीवन छलैन्ह? औखन धरि दाढ़ी ओ गेरुआ वस्त्र देखि कऽ लोक कैं श्रद्धा उत्पन्न भऽ जाइ छैक।

खट्टर कका भाङक पत्ती धोइत बजलाह–हौ, जंगलमे हजाम नहि भेटैन्ह, तैं दाढ़ी। धोबी नहि भेटैन्ह, तैं कषाय रंग। तेलक अभामे जटा। वस्त्रक अभावमे वल्कल। अन्नक अभावमे कंद-मूल। तकरो अभावमे एकभुक्त वा उपवास। लोटाक अभावमे कमंडलु सँ पानि पीबथि। थारीक अभावमे पात पर खाथि। अथवा हाथे पर भोजन कय करपात्री बन जाथि।

हम–परन्तु......

खट्टर कका–परन्तु की? यदि हुनका लोकनि कैं पकमान भेटितैन्ह त पकौड़ा किऐक जोहितथि? गुलाबजामुन भेटितैन्ह त गुल्लरि किऐक तोड़ितथि? बर्फी भेटितैन्ह त बिसाँढ़ किऐक कोड़ितथि? घरक खजूर-सिंघाड़ा भेटितैन्ह त वनक खजूर-सिंघाड़ा किऐक खोजितथि?

हम–ओ लोकनि वीतराग रहथि। इच्छा कैं जितने रहथि।

खट्टर कका–ई बात हम नहि मानबौह। हुनको लोकनि कैं सौख कम्म नहि छलैन्ह। फूले जोहने भेल फिरैत छलाह। 'स्नो'क अभावमे चंदन, और 'पाउडर'क अभावमे भस्म लगबैत छलाह। 'बेल्ट'क स्थानमे मूँजक डराडोरि पहिरैत छलाह। आभूषणक स्थानमे तुलसी वा रुद्राक्षक माला। मखमलक स्थानमे मृगचर्म। हौ, युग बदलै छैक, फैशन बदलै छैक, परन्तु मनुष्यक वासना नहि बदलै छैक।

हम–खट्टर कका, ओहि युगक संस्कृतिए दोसर छलैक।

खट्टर कका–हौ, ताहि दिन चारू कात अरण्ये अरण्य रहैक। तखन जंगली सभ्यतामे जे सभ वस्तु होइ छैक से सभ ताहि दिन छलैक। मृगछाला, व्याघ्रचर्म, कुशासन, धूप, चंदन, यव, तिल, मधु, चमर, भोजपत्र। औखन, द्वापरक दृश्य देखबाक हो त झारखंडमे जा कऽ देखि आबह। वैह धनुष-बाण, वैह मोरपंख, वैह एकवस्त्रा नारी। यदि आइ सभटा मिल, सैलून, लौंड्री ओ दर्जीक दोकान

बंद भऽ जाय त पुनः त्रेता सत्ययुगक दृश्य उपस्थित भऽ जाय। विलासिताक स्रोत सभ मूनि दहौक, सभतरि मुनिए मुनि देखाइ पड़थुन्ह।

हम–खट्टर कका, ओ लोकनि केहन तपस्या करथि?

खट्टर कका–हौ, तपस्या स्वाइत करथि। पेटक समस्या तपस्या करबै छैक। से हर जोतने हो, वा "हर" जपने। कोदारि धैने वा नाक धैने। हाथ-पैर डोलौने वा घंटी डोलौने।

हम–खट्टर कका, ओ लोकनि एकटा कौशेय वस्त्र पर जाड़ काटि लैत छलाह। ई कि साधारण बात छैक?

खट्टर कका–हौ, आधुनिक युवती ओहू सँ बेसी झिलमिल रेशम पर जाड़ कैं जीति लैत छथि। ओ कि कम तपस्विनी थिकीह? प्रदर्शनक हेतु जे कष्ट उठाओल जाइ छैक से कष्ट कष्ट नहि बूझि पड़ै छैक।

हम–खट्टर कका, ओ लोकनि अग्निहोत्री छलाह।

खट्टर कका बिहुँसैत बजलाह–हौ, जाड़क दुइए टा उपचार छैक, षोडशी वा बोड़सी। से प्रथम त उपलब्धे नहि छलैन्ह, तखन धूनी रमौने रहैत छलाह। स्वाइत पंचाग्निसाधन कैं एतेक महत्त्व दऽ गेल छथि।

हम–खट्टर कका, ओ लोकनि आध्यात्मिक दृष्टि सँ यज्ञ करैत छलाह।

खट्टर कका भभा कऽ हँसि पड़लाह। हम पुछलिऐन्ह–खट्टर कका, हँसलहुँ किऐक?

खट्टर कका भाङ पसबैत बजलाह–ई बुझबाक हेतु बहुत पाछाँ जाय पड़तौह। प्राग्वैदिक युगमे पहिने हमरा लोकनिक पुरुखा अग्निक रहस्य नहि जनैत छलाह। दावानल वा बिजुली देखि चकित भऽ जाथि। कालक्रमे अंगिरा आदि ऋषि कैं पता लगलैन्ह जे घर्षण सँ आगि उत्पन्न कैल जा सकैछ। ई विद्या हाथमे अबितहिं ओ लोकनि खुशी सँ नाचय लगलाह। पहिने काँचे मांस खाइ छलाह। आब पका कऽ खाय लगलाह। आगि जीवित मांस (आम) ओ मुइल मोरा (क्रव्य) दुहू कैं सोन्हगर सुपाच्य बना दैन्ह, तैं ओकरा 'आमाद' ओ 'क्रव्याद' कहि स्तुति करय लगलाह। पहिने काँचे यव-तिल भक्षण करैत छलाह। आब लावा-ओरहाक स्वाद भेटय लगलैन्ह। आँटा कैं भूजि कऽ पुरोडाश बनाबय लगलाह। पहिने जाड़मे ठिठुरैत रहथि। आब आगि तपबाक आनन्द भेटलैन्ह। पहिने रात्रिक अन्धकारमे भय सँ नुकाएल रहथि। आब प्रकाशमे सभ किछु सूझय लगलैन्ह। तमसो मा ज्योतिर्गमय–गाबय लगलाह। अग्निक ज्वाला सँ जंगली पशु हड़कि कऽ दूर पड़ा जाइन्ह। ई सभ निश्चिन्त भऽ सूतय लगलाह। जखन एतेक उपकार अग्निदेवता सँ होमय लगलैन्ह तखन कोना ने हुनकर गुण गाबथु? तैं अग्नि-देवताक गुणगान सँ वेद भरल अछि। अग्निमीले पुरोहितम्.....

हम कहलिऐन्ह–परन्तु अग्निहोत्र......

खट्टर कका बजलाह–एखन कोनो अगुताइ त ने छौह ? तखन सुनह। अग्निक आविष्कार सँ हमरा पुरुखा लोकनि कैं बड़का शक्ति हाथमे आबि गेलैन्ह। परन्तु आगि बनैवामे बड़ परिश्रम पड़ैन्ह। घंटाक घंटा पाथर वा काष्ठ रगड़य पड़ैन्ह। तखन जा कऽ कदाचित गोटेक स्फुलिंग बहराइन्ह। एहि द्वारे ई लोकनि परम यत्नपूर्वक अग्निक रक्षा करय लगलाह। आगि मिझा नहि जाय ताहि हेतु घृत-समिधा दय कऽ ओकरा प्रज्वलित राखय लगलाह। यैह अग्निहोत्रक रहस्य थीक।

खट्टर कका भाङक पानि पसा पत्ती कैं कुंडीमे रखलन्हि, तखन सोंटा सँ घोंटैत कहय लगलाह–हमरा लोकनिक पुरुषा पाथरक खंड सँ घेरि कऽ 'अश्मव्रज' बनाबथि। चारू कात सँ माटि काटि कऽ चत्वर (चबूतरा) बनाओल जाय। बीचमे बड़का समिध (सिल्ली) रखल जाय। वर्षा सँ अग्निक रक्षा हेतु ऊपर तृण छाड़ल जाय। ओहि मंडपमे बैसि ओ लोकनि अग्निक परिचर्या करथि। होता लोकनि आहुति दैत जाथि। उद्गाता गीत गाबि कऽ उत्साह बढ़बथि। ब्रह्मा बैसि कऽ निरीक्षण करथि। सभक कार्य बाँटल रहैन्ह। केओ जारनि काटथि। केओ खढ़-पात आनथि। केओ टाट बान्हथि। केओ चार छारथि। केओ कुश आनि कऽ आसन बनाबथि। केओ रस्सी बाँटथि। केओ माटिक बासन बना आगि पर पकाबथि। बेटी सभ गाय-भेंड़ी दूहथि, तैं 'दुहिता'। शमिता लोकनि मांस कैं धो पोछि कऽ साफ करथि। पाथर पर अन्न कूटल-पीसल जाय। केओ सोमलता उखाड़ि कऽ लाबथि। केओ पीसि कऽ रस तैयार करथि। महावेदी पर बैसि कऽ सोमपान होय। दूध, दही ओ घृतक पथार लागि जाय। पहिने अग्नि देवता कैं हवि देल जाइन्ह। तखन हुतशेष बाँटल जाय। रंग-बिरंगक गप्प जमय। बूझह त ओ मनुष्यक सर्वप्रथम क्लब छल जहाँ सभ लोक एक संग बैसि कऽ खाथि, पीबथि, आनन्द करथि और गाबथि–संगच्छध्वम्, संवदध्वम्, सं वो मनांसि जानताम्। ....सह नो अवतु, सह नो भुनक्तु, सहवीर्यं करवावहै।

हम–खट्टर कका, हुनका लोकनिक जीवनक ध्येय की रहैन्ह ?

खट्टर कका–से त वेदक मंत्रे सभ सँ पता लागि जैतौह–जीवेन शरदः शतम्, पश्येम शरदः शतम्, शृणुयाम शरदः शतम्। खूब बेसी दिन जीबी, देखी, सुनी, आनन्द करी। गोत्रं नो वर्द्धताम्, दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम्। वंश बढ़य, दाता लोकनि बढ़थि। धनधान्य ओ सन्तति बढ़य। गाय खूब दूध देबय। बड़द खूब जोतय। समय पर मेघ बरसय। खूब अन्न उपजय। एखनो धरि दूर्वाक्षतक मंत्रमे यैह सभ आशीर्वाद देल जाइ छैक। ....दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वान्....निकामे

निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु, फलवत्यो नः ओषधयः पच्यन्ताम्, योगक्षेमो नः कल्पताम्।

हम–खट्टर कका, दूर्वाक्षतक की अभिप्राय ?

खट्टर कका–हौ, अपना खैबाक हेतु चाउर और मालजालक हेतु दूभि–ई दुनू वस्तु पर्याप्त रहय। यैह दूर्वाक्षतक अभिप्राय। औखन जे चतुर्थीमे दसकट्टी होइ छैक से ओही परम्पराक पालन थिकैक। जेना ताहि दिन ऊखरिमे सोम कूटल जाइ छल, तहिना आइकाल्हि अठंगर कूटल जाइ अछि। पहिनहिं जकाँ आगिक चारूकात फेरा लगाओल जाइत अछि, लावा छिड़ियाएल जाइत अछि। ई सभ विधि ताहि दिनक स्मारक थीक।

हम–खट्टर कका, हुनका लोकनिक जीवन केहन सुखमय छलैन्ह ?

खट्टर कका–हौ, वैदिक युगक लोक मस्त रहथि। खाउ, पीबू, मौज करू। परन्तु पछाति कऽ उपनिषद्वला ऋषि मनहूस बहरैलाह। तेहन अभागल जे इन्द्रिये सँ युद्ध ठानि देलन्हि ! हौ, मानल जे इन्द्रियाणि हयानाहुः। इन्द्रिय घोड़ाक समान थीक। त कि घोड़ा कैं सड़ा कऽ सठा दी ? तखन रथ कोना चलत ? खाली लगामे हाथमे नेने कोन फल ? स्मृतिकारो ऐलाह त वैह लगाम हाथमे नेने। हिनका लोकनि कैं जे अपना नहि पचैन्ह से निषिद्ध। तैं मांस कैं दूसथि, लहसुन-पेयाजु कैं गारि पढ़थि, स्त्रीक निन्दा करथि, भोग कैं त्याज्य कहथि।

हम–एकर कारण की, खट्टर कका ?

खट्टर कका–एकर कारण जे हुनका लोकनि कैं अपना भोग नहि छलैन्ह। जे वस्तु अपना प्राप्त नहि; से दोसर किऐक उपभोग करत ? यैह ईर्ष्या निवृत्ति-मार्गक जड़ि थीक। देखै छह नहि, एखनो धरि जाहि पंडित कैं संग्रहणी रहैत छैन्ह से अपना विद्यार्थी कैं अँचार नहि खाय दैत छथि।

हम–खट्टर कका, ओ लोकनि बुझैत छलाह जे एहीमे लोकक कुशल छैक।

खट्टर कका मुसकैत बजलाह–'कुशल'क अर्थ तोरा बूझल छौह ? हमरा लोकनिक पुरुखा अधिकतर खालिए पैर चलैत छलाह। आइकाल्हि जकाँ पनही त रहैन्ह नहि। वन-बाध दऽ कऽ चलथि। कुश अंकुश जकाँ छेदि दैन्ह। तरबा छलनी भऽ जाइन्ह। स्मृतिकार लोकनि चतुर छलाह। सभ कैं कहय लगलथिन्ह–"कुश उखाड़ै जाह।" लोक ओना अंठा दितैन्ह, तैं एकटा उपाय रचलन्हि। कुश कैं ततेक महत्त्व दऽ देलथिन्ह जे–

कुशाग्रे वसते रुद्रः कुशमध्ये तु केशवः।
कुशमूले वसेद् ब्रह्मा कुशान् मे देहि मेदिनि ॥

बस, विवाह, उपनयन, श्राद्ध–समस्त यज्ञ ओ पूजामे कुशक व्यवहार चलि पड़ल। पवित्री, त्रिकुशा, मोढ़ा, कुशासन बनैबाक हेतु लोक कुश उखाड़ि कऽ

राखय लागल। भादव मासमे, जखन सभसँ बेसी जंगल रहै छैक, तखने कुशोत्पाटनक दिन कायम कैल गेल। बिना जन-बोनिक, केवल पुण्यक लोभ पर, सामूहिक रूपें कुश उखड़S लागल। वैह व्यक्ति 'कुशल' कहाबय जे कुश कटबामे निपुण हो। हौ, ताहि दिनक ऋषि चाणक्यक पितामह रहथि।

हम–खट्टर कका, ताहि दिन आतिथ्य-सत्कारक केहन महत्त्व रहैक?

खट्टर कका बजलाह–हौ, ब्राह्मण लोकनि अपने पहुनइ करय जाथि त अगियाएले पहुँचथि। वैश्वानरः प्रविशत्यतिथिर्ब्राह्मणोगृहम्।[1] अर्थात ब्राह्मण देवता साक्षात अग्निस्वरूप होइ छथि। तात्पर्य जे हुनका तुरन्त समिधा वा भोजन भेटक चाही। जे मूर्ख हुनका इच्छापूर्ण भोजन नहि करौतैन्ह तकर धीयापूता मालजाल ओ सभटा पुण्य नष्ट भS जैतैक। इष्टापूर्ते पुत्रपशूंश्च सर्वान्, एतद्वृंक्ते पुरुषस्याल्पमेधसो, यस्यानश्नन् वसति ब्राह्मणो गृहे। कहाँ त शरीर अधम थीक, और ओही तुच्छ उदरक पूर्त्ति हेतु एतेक प्रपंच! जखन शरीरक कोनो महत्त्वे नहि त फेर चरण-सेवा किऐक करबैत छलाह? हौ, ई लोकनि एक्को डारि पर नहि रहैत छलाह। अनका त उपदेश देथिन्ह जे "अतिथिदेवो भव" और अपना ओहिठाम अतिथि पहुँचि जाइन्ह त खिसिया कS ओकरा 'गोघ्न' कहथिन्ह। विकट पाहुन सँ ताहू दिन लोक डराइ छल।

हम–खट्टर कका, ओहि युगक मिलान एहि युग सँ किऐक करैत छिऐक? कहाँ सत्ययुग, कहाँ कलियुग!

खट्टर कका भाङमे मरीच मिलबैत बजलाह–हौ, सभ युगमे लोक वैह रहैत अछि। तखन परिस्थिति जेना नचबैत छैक तेना नचैत अछि। देखह, ऐतरेय ब्राह्मण[2] मे लिखैत छैक–

कलिः शयानो भवति संजिहानस्तु द्वापरः
उत्तिष्ठंस्त्रेता भवति कृतं संपद्यते चैरन्॥

पंडित लोकनि एकर अर्थ लगबै छथि जे सत्ययुग चलैत छल, कलियुग सूतल अछि। परन्तु असली अर्थ हम तोरा बुझा दैत छिऔह। सत्ययुगमे हमर पुरुखा सब स्वच्छन्द विचरैत छलाह। पैरमे सेहन घुरघुरा लागल छलैन्ह जे कतहु एकठाम स्थिर भS कS नहि रहय दैत छलैन्ह। औखन कंजर सभ कैं नहि देखैत छहीक? सिड़की-पटिया ओ मालजाल नेने बौआएल फिरै अछि। त्रेतामे किछु स्थैर्य आबय लगलैक। जनक प्रभृति हर जोतय लगलाह। एक ठाम पैर जमय लगलैक। द्वापरमे लोक और सुभ्यस्त भेल। सुखक साधन बढ़लैक। लोक आराममे आबि औंघाय लागल। और कलियुगमे त ऐश्वर्य ओ विलासिताक हद्दे हिसाब नहि।

१. कठोपनिषद्। २. ऐ० ७।१५।

लोक निश्चिन्त भS कS सूतल अछि। एहि तरहें मानव सभ्यताक क्रमिक विकास भेल छैक।

हम–खट्टर कका, अहाँ त विलक्षणे अर्थ लगा दैत छिऐक। परन्तु एतबा अवश्य मानय पड़त जे ताहि दिन धर्मक महत्त्व रहैक, आइकाल्हि धनक महत्त्व छैक।

खट्टर कका–हौ, धनक महत्त्व सभ दिन सँ छैक। आइयो काल्हि स्वर्णक आवरण सँ सत्यक मुँह पर पर्दा देल जाइत छैक। ताहू दिन सैह बात रहैक। हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्![1]

हम–खट्टर कका, ताहि दिन देवताक पूजा होइन्ह, एखन धनिकक पूजा होइछ।

खट्टर कका भाङक गोला बनबैत बजलाह–हौ, जैह धनिक, सैह देवता। देवताक अर्थ 'जे चमकैत रहय'। ताहि दिनक राजा सभ रंग-बिरंगक वस्त्रमे चमकैत रहथि। 'ईश्वर'क अर्थ जकरा ऐश्वर्य होइक। 'लक्ष्मीपति'क अर्थ जकरा घरमे संपत्ति होइक। 'नारायण'क अर्थ जे जल-महलमे शयन करय। 'गरुड़वाहन'क अर्थ जे शीघ्रगामी यान पर चलय। 'प्रजापति'क अर्थ जे प्रजाक स्वामी हो। 'हर'क अर्थ जे कर वा मालगुजारी हरण करय। 'चतुर्भुज'क अर्थ जकर बाहुबल चारू दिस पसरल होइक। 'पंचमुख'क अर्थ जे पाँच गोटाक अंश खाय। हौ, 'देवता'क अर्थ 'धनिक'।

हम–परन्तु सर्वप्रथम पूजा त गणेशक होइ छैन्ह?

खट्टर कका–हौ, 'गणेश'क अर्थ गण वा दलक सरदार। ताहू दिनक दलपति गजवदन होइत छलाह, और साधारण जनता मूस जकाँ हुनका तर पिचाइत छल। ई सभ रूपक थिकैक।

खट्टर कका भाङक गोला कैं हाथ सँ चिकनबैत बजलाह–पहिने छोट-छोट दल रहैक। तैं गणेश सँ श्रीगणेश भेल। पाछाँ जखन राजागण महलमे विहार करय लगलाह तखन अमरालय वा अप्सरालयमे विहार करय बला इन्द्र आदिक कल्पना कैल गेल। जखन एकछत्र सम्राट होमय लगलाह तखन एकमेवाद्वितीयं ब्रह्मक कल्पना भेल। हौ, देवता सभ सामन्तवादक प्रतीक थिकाह, ब्रह्म साम्राज्यवादक।

हम–खट्टर कका, ताहि दिन वर्णाश्रम धर्मक केहन सुन्दर व्यवस्था रहैक!

खट्टर कका लोटामे भाङ घोरैत बजलाह–ब्राह्मण कैं बुद्धि छलैन्ह, बल नहि। क्षत्रिय कैं बल छलैन्ह, बुद्धि नहि। एक बात बातमे शास्त्र बाहर करैत छलाह, दोसर बात बातमे शस्त्र बाहर करैत छलाह।

१. शुक्लयजुर्वेदसंहिता ४०।१७।

हम—ओ सभ सिद्धान्त पर चलैत छलाह।

खट्टर कका भाङमे चीनी मिलबैत बजलाह—सिद्धान्त नहि; सनक कहह। ब्राह्मण कैं सनक चढ़ैन्ह त यचन गढ़ि लेथि। क्षत्रिय कैं सनक चढ़ैन्ह त प्रण ठानि लेथि। दूनू तेहने एकवगाह। हौ, हम पुछैत छिऔह जे यदि कोनो राक्षसे धनुष तोड़ि दितैन्ह त जनक महाराज की करितथि ? यदि कोनो चांडाले लक्ष्यवेध कऽ दितैन्ह त शिशुपाल की करितथि ? ई सभ सनक्काह छलाह। सिद्धान्तक पाछाँ बताह। केओ वचन खातिर भिखारी भऽ जाथि। केओ आन पर आन दऽ देथि। एही झोंकक पाछाँ कतेको राजा कटि मरलाह, कतेको रानी जरि मुइलीह, कतेको महल खँडहर भऽ गेल। तैंसे इतिहास त एही सँ भरल अछि।

हम—खट्टर कका, ओ लोकनि वीर छलाह।

खट्टर कका—वीर नहि, बताह कहह। हौ, राजनीति, मर्यादा—सभटा मनुष्येक बनाओल छैक। जेहन समय होइक तेहन करक चाही। कोनो सिद्धान्त एहन नहि छैक जाहि पर आँखि मूनि कऽ लोक चलि सकय।

हम—परन्तु सत्ये नास्ति भयं क्वचित्।

खट्टर कका—ई फूसि बात थीक। सत्ये चाऽपि भयं क्वचित्। यदि सन्निपातक रोगी कैं सत्य बात कहि देल जाइक त आतंके सँ ओकर प्राण छूटि जैतैक। जाहि सँ प्राणे चलि जाय तेहन सिद्धान्त कोन काजक ?

हम—परन्तु नीतिकार कहै छथि जे अधिकस्याधिकं फलम्।

खट्टर कका—इहो अशुद्ध। यदि थेह सिद्धान्त मानि कऽ चलल जाय त भारि त्रिलो भऽ जाय।

हम—से कोना, खट्टर कका ?

खट्टर कका—'जतेक बेसी ततेक फल' तखन त चाउर कैं और एक घंटा खदकऽ लेल छोड़ि दिऐक ? दालिमे दोबर नोन धऽ दिऐक ? चारि सेर घृत उठा कऽ पीबि जाइ ? आठ टा बियाह कऽ ली ? सोरह टा सन्तान जनमा ली ? हौ, ई सभ वचन कहऽ सुनऽ लेल होइ छैक।

हम—नीतिक वचन छैक जे, 'काल्हि करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब।'

खट्टर कका—हौ, थेह सभ सनक कहबै छैक। हमरा काल्हि मरबाक अछि त आइए मरि जाइ ? कार्तिकमे पार्वण करबाक अछि त एही मास कऽ ली ? पाँच वर्षक बाद बच्चीक बियाह करबाक अछि से एही शुद्धमे कऽ दिऐक ? सायंकाल वाह्यभूमि दिस जाएब से एखने भऽ आबी ? सभ काजमे अपन बुद्धि लगाबक चाही। केवल सिद्धान्तक पाछाँ आँखि मूनि कऽ चलने सिद्धान्तो भेटब कठिन।

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, असली बात त बिसरिए गेल। भोलबाबाक ओहिठाम अष्टयाम कीर्त्तन भऽ रहल छैन्ह। चलबैक ?

खट्टर कका बजलाह—हौ, चोर-बाघमे चोर-बाघक भय सँ राति भरि जागि कीर्त्तन कैल जाय त एकटा बातो। परन्तु एखन दिनमे गामक बीच अष्टयाम सँ कोन लाभ ? हम 'राम नाम'मे लागि जाएब, ता एम्हर सभटा लताम तोड़ि कऽ लऽ जाएत।

हम—खट्टर कका, अखंड हवन सेहो भऽ रहल छैक। सत्रह कंटर घृत आएल छैक।

खट्टर कका अपन माथ ठोकैत बजलाह—हाय रे बुद्धिमान सभ ! हौ, जखन दियासलाइ नहि छलैक तखन हमर पुरखा सभ घृत दऽ दऽ कऽ अग्नि कैं जीवित रखै छलाह। आब जखन एक टा काठी रगड़ने आगि पजरि जाइत अछि तखन कंटरक कंटर घी खर्च करबाक कोन प्रयोजन ? साँप ससरि कऽ कतहु सँ कतहु चलि गेल और हम सभ लाठी लऽ कऽ लकीर पीटि रहल छी। युग बदलि गेल, परिस्थिति बदलि गेल, परन्तु हम प्राचीन संस्कृतिक नाम पर लड्डू भँजैत, बुझै छी जे धर्मक रक्षा कऽ रहल छी !

खट्टर कका भाङ छानि कऽ दू बुंद उत्सर्ग कैलन्हि और लोटा अलगा कऽ घट्ट घट्ट पीबि गेलाह।

मिथिलाक संस्कृति

ओहिदिन खट्टर कका मखानक लावा फँकैत रहथि। हमरा हाथमे लेख देखि पुछलन्हि–ई की थिकीह?

हम कहलिऐन्ह–मिथिलाक संस्कृति पर एकटा निबंध तैयार कैल अछि।

खट्टर कका बजलाह–किछु हमरो सुनाबह।

हम कहलिऐन्ह–पहिने राजर्षि जनक सँ प्रारंभ कैने छिऐन्हि। ओ तेहन जीवन्मुक्त छलाह जें–

मिथिलायां प्रदीप्तायां न मे दहति किंचन!

एहन ब्रह्मज्ञान मिथिलेमे हो।

खट्टर कका मुसकुराइत बजलाह–हौ, यैह ब्रह्मज्ञान त हमरा सभ कैं लाहेब कऽ देलक। सौंसे मिथिलामे आगि ने लागि जाउ, मैथिल भाइक लेखेँ धन्न सन!

हम–खट्टर कका, हुनका सँ ई शिक्षा भेटैत अछि जे पद्मपत्र जकाँ निर्लिप्त रहबाक चाही।

खट्टर कका बजलाह–उपमा त बड्ड सुन्दर। परन्तु एकटा दिन तेना रहि कऽ देखह त। यदि तों कमलक पात जकाँ रहि जाह त हम ऐखन जा कऽ तोरा बाड़ी सँ सभ टा भाँटा तोड़ि लाबी। हौ, पद्मपत्र बनि कऽ रहबह त लोक घराड़ी पर्यन्त दखल कऽ लेतौह।

हम–परंतु जनक त विदेह छलाह।

खट्टर कका–जौं सरिपहुँ विदेह रहितथि त जेहने राम, तेहने रावण। तखन एतेक रासे धनुष-यज्ञ ओ सीता-स्वयंवर ठनबाक कोन काज छलैन्ह?

हम–अहाँ कैं त खंडनेमे रस भेटैत अछि। देखू, याज्ञवल्क्य ऋषि केहन आत्मज्ञानी छलाह!

खट्टर कका व्यंग्यपूर्वक बजलाह–तेहन आत्मज्ञानी छलाह जे मैत्रेयी ओ कात्यायनी, दू दू टा स्त्री रखैत छलाह। एक आध्यात्मिक, दोसर सांसारिक। हमरा त जे किछु छथि से एका भार्या सुन्दरी वा दरी वा.....

हम–खट्टर कका, गार्गी ओ याज्ञवल्क्यक शास्त्रार्थ केहन उच्च स्तर पर छलैन्ह?

खट्टर कका मुसकुराइत बजलाह–से तों अपनहि पढ़ि कऽ देखि लैह। जखन गार्गी प्रश्न पुछैत पुछैत नाकोदम कऽ देलथिन्ह, तखन अन्तमे याज्ञवल्क्य खिसिया कऽ कहलथिन्ह–"आब बेसी पुछबैं त माथ कटि कऽ नीचा खसि

पड़तौक।" हौ, अपना देशक पंडित लोकनि स्त्री कैं एहिना झझकैत ऐलथिन्ह अछि।

हम–परंच प्रश्नोत्तरीक विषय केहन गूढ़ छलैन्ह?

खट्टर ककाक मखान निःशेष भऽ चुकल छलैन्ह। हाथ-मुँह पोछैत बजलाह–हौ, हमर छौ वर्षक नतिनी अछि। ओ तोरा काकी कैं पूछय लगलैन्ह–नानी, ई पृथ्वी कथीपर छैक? ई कहलथिन्ह–शेषनाग पर। ओ पुछलकैन्ह–शेषनाग कथी पर छथि? ई कहलथिन्ह– कच्छप पर। ओ पुछलकैन्ह–कच्छप कथी पर छथि? ई कहलथिन्ह–तोरा मूड़ी पर। हमरा एहि नतिनी-नानी और गार्गी-याज्ञवल्क्यक संवादमे कोनो विशेष अन्तर नहि बुझना जाइछ।

हम–खट्टर कका, कहाँक बात कहाँ मिला देलिऐक? गार्गी ओ मैत्रेयी केहन भारी विदुषी रहथि?

खट्टर कका सुपारीक कतरा करैत बजलाह–हौ, गार्गी मैत्रेयी की जनैत रहथि? आइकालुक कौलेजिया लड़की हुनका सिखा दितैन्ह।

हम–खट्टर कका, अहाँ हँसी करैत छी।

खट्टर कका–तखन तों परीक्षा लऽ कऽ देखि लैह। आधुनिक युवक कैं पुछहुन जे सीता सन चाही अथवा रीता सन? देखहौक, ककरा बेसी भोट अबै छैक। हँ, आगाँ की लिखने छह?

हम–खट्टर कका! अहाँ त हँसिएमे सभटा बात उड़ा दैत छी। देखू, मंडन मिश्रक स्त्री सरस्वती केहन विदुषी रहथि जे शंकराचार्य कैं परास्त कऽ देलथिन्ह।

खट्टर कका एक चुटकी कतरा मुँह मे दैत बजलाह–हौ, बालब्रह्मचारी सँ कतहु कामशास्त्रक विषय पुछल जाइक? ई त तहिना भेल जेना केओ वैष्णव सँ माछक स्वाद पुछैन्ह!

हम–ओ केहन आदर्श पत्नी रहथि?

खट्टर कका दुरुखा दिस तकैत बजलाह–देखह, एहन बात हमरा आङनमे जुनि बजिहऽ। हौ, वृद्ध स्वामीक मान-मर्दन कय युवा संन्यासीक गरमे विजयमाला दैब–ई कोनो नीक बात भेलैन्ह? स्वाइत मंडन मिश्र घर छोड़ि संन्यासी भऽ गेलाह। यदि तोहर काकी एना करथुन्ह त एको दिन एहि घरमे वास भऽ सकै छैन्ह? एही भंगघोटना लऽ कऽ कपार फोड़ि देबैन्ह और ओही साधुक संग गामक बाहर कऽ देबैन्ह। .....हँ, आगाँ बढ़ह।

हम–धन्य छी, खट्टर कका! आब हम की बाजू? हुनका लोकनिक उच्च आदर्श छलैन्ह? एही मिथिलामे अयाची मिश्र सन संतोषी पंडित भऽ गेल छथि जे सवा कट्ठा•बाड़ीक साग खा कऽ गुजर कैलन्हि, किन्तु ककरो सँ किछु माँगलथिन्ह नहि।

खट्टर कका–हौ, जकरा पुरुषार्थ रहै छैक से सवा कट्ठा सँ सवा सय बीघा बना लैत अछि। जे अकर्मण्य रहै अछि से ओतबे लय संतोष करै अछि। तों अपना बेटा कैं कोन मार्ग पर चलय कहबह? छुच्छ आदर्शक प्रशंसा कैने कोनो फल नहि।

हम–खट्टर कका, मिथिलाक सदाचार समस्त देश में प्रमाण मानल जाइत अछि। देखू,

धर्मस्य निर्णयः कार्यः मिथिला-व्यवहारतः।

एहिठाम एक सँ एक स्मृतिकार भऽ गेलाह अछि।

खट्टर कका–हौ, यैह त अनर्थ भेलैक। आइकालि एकटा कानून बनैत अछि त ओहि पर ओतेक रारि बहस होइ छैक। ताहि दिन स्मृतिकार लोकनिक अपने हाथमे कलम रहैन्ह। किछु खर्च त पड़बे नहि करैन्ह। जे-जे मनमे फुरलैन्ह, लिखि गेलाह।

हम–परन्तु सभ वचनक किछु ने किछु वैज्ञानिक आधार त अवश्ये हैतैन्ह।

खट्टर कका–वैज्ञानिक आधार होउन्ह वा नहि, मनोवैज्ञानिक आधार अवश्ये छैन्ह। खोजबह त सभक गुढ़ अर्थ भेटि जैतौह।

हम–जेना? कोनो उदाहरण दियऽ।

खट्टर कका–देखह, ओ लोकनि भोरे उठि स्नान करय जाथि, ता एम्हर फूल तोड़ि कय लऽ जाइन्ह। तैं नियम बना देलन्हि जे स्नान सँ पूर्वहि फूल तोड़ि कऽ राखि ली। बस, एकटा श्लोक तैयार भऽ गेल–

स्नानं कृत्वा तु ये केचित् पुष्पं चिन्वन्ति वै द्विजाः
देवतास्तन्न गृह्णन्ति पूजा भवति निष्फला।

तहिना, कोनो मुनि नदीमे स्नान करैत काल भसिया गेल हैताह। बस, एकटा वचन प्रस्तुत भऽ गेल जे ढोंढ़ी सँ ऊपर जलमे पैसि कय स्नान नहि करी।

नाभेरूर्ध्वं हरेदायुरधोनाभेस्तपः क्षयः
नाभेः समं जलं कृत्वा स्नानकृत्यं समाचरेत्।

हौ, पण्डित लोकनि संदर्भ ओ परिस्थिति त बुझै छथि नहि। तैं 'स्मृति'क तात्पर्य 'विस्मृति' भऽ गेल छैन्ह।

हम–खट्टर कका, मिथिलाक माटिमे सात्त्विकता भरल छैक।

खट्टर कका–हँ, ताही सँ एहिठाम केओ विक्रमादित्य, प्रताप वा शिवाजी नहि बहरैलाह। कहियो युद्ध नहि भेल, एक बेर कनरपीघाटमे भेबो कैल त बाँसक फट्ठा लऽ कऽ। परन्तु हौ जी, ई सात्त्विक रणभीत जाति अपनामे मारि करबा काल सहस्रबाहु बनि जाइत छथि। ओहि समय सत्त्वगुण ओ ब्रह्मज्ञान कहाँ चलि जाइत छैन्ह?

हम–खट्टर कका, एम्हर आबि कऽ एना भऽ गेलैक अछि। परन्तु ताहि दिनक मैथिल निर्द्वन्द्व रहैत छलाह। देखू, श्रीमद्भागवतमे लिखै छथि–

एते वै मैथिलाः प्रोक्ता आत्मविद्याविशारदाः
योगेश्वरप्रसादेन द्वन्द्वैर्मुक्ताः गृहेष्वपि।

खट्टर कका–हौ, एकर गूढ़ अर्थ हम तोरा बुझा दैत छिऔह। योगेश्वरक अर्थ महादेव। तिनकर प्रसाद भाङ। तकरा कृपा सँ ओ लोकनि घरक चिन्ताजाल सँ मुक्त भऽ जाइ छलाह। जेना हम।

हम–अहाँ कैं त सभ बातमे हँसिए रहै अछि। तैं लोक गोनू झाक अवतार कहै अछि।

खट्टर कका–जे हमरा गोनू बुझै छथि तिनका हम भोनू बुझै छिऐन्ह। गोनू झा केवल चोर, हजाम ओ स्त्री कैं छकैबाक हाल जनै छलाह। हमरा तऽ केवल पंडिते सँ प्रयोजन रहैत अछि।

हम–खट्टर कका, लाख कहिऔक, परन्तु मिथिलाक जे अपन संस्कृति छैक से अक्षुण्णे रहतैक।

खट्टर कका भभा कऽ हँसि पड़लाह। बजलाह–हौ, बताह! मधुबनी, दड़िभंगा किंवा मिथिलाक संस्कृति कैं तों अहिबातक पातिलक दीप जकाँ बसात सँ बचा कऽ राखय चाहै छह? परन्तु ई कि सम्भव छैक? आब त तेहन बिहाड़ि आबि रहल छैक जाहिमे सभटा छोटका छोटका दीप मिझा जैतैक। केवल एकटा बड़का 'मरकरी लाइट' जरैत रहि जैतैक।

हमरा मुँह तकैत देखि खट्टर कका बजलाह–आब ओ युग नहि छैक जे हमर-तोहर तिरहुत, तिलकोर ओ पड़ुआक झोरमे, करमीक साग ओ कोढ़िलाक पागमे, कोकटीक तौनी ओ सीकीक मौनीमे, डालाक भार ओ महफाक ओहारमे सीमित रहि जाय। देखै छहौक नहि, आब साड़ी-सलवार, दोसा-दलिपुड़ी, वैले-विद्यापति, मुर्गी-महादेव–सभ संगहि चलैत छैक। आब पंडौलमे पावरोटी, सौराठमे सैंडविच, टटुआरमे टोस्ट और कपिलेश्वरमे कटलेट भेटतौह। नेहरामे नायलोन, जनकपुरमे जार्जेट, लोहनामे लिपस्टिक और हावीभौआड़मे हाइहील देखबह। आइ फुलपरासक कन्या फ्राक पहिरि कऽ फूल तोड़ै छथि। कालि गंधवारिक पुतहु गाउन पहिरि कऽ गोसाउन पुजतीह। सेहो गोसाउन कतबा दिन रहै छथि से के जानय?

हम–खट्टर कका, मिथिला सँ भगवती किन्नहु नहि जा सकै छथि। जखन कुलदेवता, पाबनि, नवरात्र, दशहरा, श्यामापूजा, लक्ष्मीपूजा–यैह सभ उठि जाएत त फेर रहत की? एकादशी, सोमबारी, कार्तिक-स्नान, सामा-चकेबा, मधुश्रावणी, नागपंचमी, कोजागरा, भार-दोर–यैह सभ त अपना देशक शोभा

थीक। लाख पछबा बसात बही, परंच हमरा लोकनिक स्त्रीगण तुलसीचौराक दीप नहि मिझाय देतीह।

खट्टर कक्का बिहुँसैत बजलाह—हँ, आँचर तर नुकौने रहतीह। परन्तु आँचर रहैन्ह तखन ने! आब त संस्कृतोबला कैं सीख होइ छैन्ह जे बहु शलवारे पहिरथि। सासु मरौत काढ़ै छथिन्ह, पुतोहु माथ उघारि कऽ चलै छथिन्ह। हुनको पुतहु औथिन्ह त चट्टी पहिरि कऽ चिनबार पर अंडा फोड़थिन्ह। तखन कुलदेवताक रक्षा के करतैन्ह?

हम—तखन अहाँक की विचार जे पुरनका रीति-नीति उठि जाय?

खट्टर कक्का—हौ, जकरा उठबाक हैतैक से कि हमर विचार पूछि कऽ उठत। टीक ओ मोछ कहिया पूछय आएल जे धोध ओ आँचर पूछय आओत? जकरा जैबाक होइ छैक से स्वतः चलि जाइत अछि। जेना गोदना, मिस्सी, खुदिया, चमकी। जकरा ऐबाक होइ छैक से स्वतः आबि जाइत अछि। जेना स्नो, पाउडर, नेलपालिश, ब्रेसरी। जखन स्वयं पंडित लोकनि सालमसाही पनही छोड़ि कऽ अँगरेजी जूता पहिरय लगलाह अछि तखन पंडिताइन लहठी फोड़ि कऽ प्लैस्टिकक चूड़ी किऐक ने पहिरथिन्ह? हुनक बेटा टोप मेटा कऽ टोप किऐक ने लगौतैन्ह? आब बूढ़-बुढ़ानुस माथ पटकि कऽ मरि जैताह तथापि ने हुनक बेटा ठढ़ौका चानन करतैन्ह, ने पुतोहु पटमासी सिंदूर करथिन्ह। छोटका पोता कैं रिद्धा-रिद्धी पहिरा कऽ देखथु त जे पहिरै छैन्ह? पोती सँ तुसारी पुजबा कऽ देखथु त जे पुजै छैन्ह? हौ, ई पछबा बिरड़ी सभटा पुरना पोथी-पतड़ा कैं उधिया कऽ फेकि देतीह। वैह युगधर्म थिकैक।

हम—खट्टर कक्का, एहन भ्रष्ट युग हमरे सभक समयमे किएक आबि गेलैक?

खट्टर कक्का—हौ, सभ युगमे एहिना भठमेर होइत ऐलैक अछि। बुढ़वा बुढ़वा पंडित लोकनि जे मिर्जई पहिरैत छथि से मुसलमानी अमलदारीमे मिर्जा सभ पहिरैत छल। अचकन-चपकन कि वैदिक युगक वस्तु छैक? तहिना आब नवका लोक अङरेजी कोट पहिरैत अछि। ई घोरमट्ठा त होइतहि रहै छैक।

हम—परन्तु ई त वर्णसंकरी सभ्यता भेल।

खट्टर कक्का—वर्णसंकरी नहि, कलमी कहह। कलमी आम बेसी मीठ होइ छैक। तें कलमी वस्तुक बेसी आदर होइ छैक। कलमी फल, कलमी बहु, कलमी बेटा। हौ, बीजू सभ्यता छैक कतय?

हम—परञ्च हमरा सभक जे विशुद्ध संस्कृति.....

खट्टर कक्का भङघोटना पटकैत बजलाह—हौ, संस्कृत कैं अङरेजी खैलक, संवत् कैं ईसवी खैलक, आयुर्वेद कैं डाक्टरी खैलक, पंडित कैं साहेब खैलक, अछिंजल कैं कल खैलक, धर्मशाला कैं होटल खैलक, महफा कैं रिक्शा खैलक,

घोड़ा कैं साइकिल खैलक, हाथी कैं मोटर खैलक, भागवत कैं सिनेमा खैलक, मंदिर कैं क्लब खैलक, बटुआ कैं 'पर्स' खैलक, सेर कैं किलो खैलक, मन कैं क्विंटल खैलक, गज कैं मीटर खैलक, भोज कैं 'पार्टी' खैलक, भाङ कैं चाय खैलक, पतिव्रता कैं मेम खैलक, तथापि तों विशुद्ध संस्कृतिक नाम जपितहि छह? कौदन कहै छैक जे छीक गेल भरौड़ा और नाक जतनहि छी!

हम—तखन उपाय?

खट्टर कक्का—उपाय किछु नहि। चुपचाप देखैत चलह। जे जकरा सँ प्रबल होइ छैक से तकरा खा जाइ छैक। ई मत्स्यन्याय थिकैक। एखन पश्चिमक काँति चमकल छैक। कहियो हमरा लोकनिक पासा पलटत त भऽ सकै अछि जे एक दिन लंडनमे लहठी ओ पेरिसमे पढ़िया साड़ी पहुँचि जाय। इंगलैंड वाली अरिकोंच रान्हथि और अमेरिका वाली अदौरी भाँटा। आयरलैंडमे अरिपन और आस्ट्रेलियामे अहिवक फर चलि जाय। फ्रांस फकिक्का पढ़य और जर्मनी यजुर्वेद। चीन चानन करय और जापान जनउ पहिरय। न्यूयार्कमे नचारी ओ मास्कोमे महेशवानी सुनाइ पड़य। भऽ सकै अछि जे एक दिन सौंसे संसार समदाउनि गाबय लागय। परन्तु ई त सामर्थ्यक ऊपर छैक। जाहि वस्तुमे शक्ति हैतैक से अमरलत्ती जकाँ पसरि जाएत।

हम—खट्टर कक्का, लोक अपन प्राचीन आचार छोड़ि कऽ नवका चालि पर किएक ढुलैत अछि?

खट्टर कक्का—हौ, आचार होउक वा अँचार। बेसी पुरान भऽ गेला उत्तर दहिया फुफड़ी पड़िए जाइत छैक। तखन गुमसाइन भऽ जाइ छैक। नवकाक स्वादे दोसर होइ छैक। ताहूमे अनका टाराक तेल-मसाला और बेसी चटकार लगैत छैक।

हमरा मुँह तकैत देखि खट्टर कक्का बजलाह—हौ, हमरा लोकनिक संस्कृतिक वर्णमालामे 'अ'क अर्थ होइ छल—अरवा चाउर, अछिंजल। आब 'अ' सँ अंडा, अमलेट।

हम—तखन त किछु दिनमे पुरनका पर्वो त्योहार उठि जाएत?

खट्टर कक्का बिहुँसैत बजलाह—हमरो त यैह चिन्ता होइ अछि। कदाचित खीर-पूड़ी साँच-पिरुकिया ने उठि जाय! तें हम तोरा काकी कैं नित्य चौठचन्द्र करय कहैत छिऐन्ह। जावत्तैलं तावत् व्याख्यानम्!

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कक्का, हमरा लोकनि कैं चाही जे प्राणपण सँ अपना संस्कृति कैं बचैबाक चेष्टा करी।

खट्टर कक्का परिहासक स्वरमे बजलाह—हौ, हमर त विचार होइ अछि जे आब चन्द्रलोकेमे जा कऽ पुनः नव 'पाँजि' चलाओल जाय—''चन्द्रमा झा पाँजि''। तैखन अपन संस्कृति बाँचि सकैत अछि। ई पृथ्वी त छुतहरि भऽ गेलि।

तावत काकी भोजनक हेतु बजाबय आबि गेलथिन्ह। खट्टर कक्का हमरो अपना संग आङन नेने गेलाह। बाडीक गोबर सँ नीपल पवित्र ठाम पर आसन लगाओल छल। हमरा लोकनि हाथ-पैर धो बैसलहुँ। काकी माछ भात नेने ऐलीह। सरिसो-आमिल देल भरि बाटी झोराएल माङुर। छिपलीमे तरल कबइ। ऊपर सँ अणाची कर्पूर सँ सुवासित दही और कलमी आमक अमोट।

खट्टर कक्का माछक झोरमे जमीरी नेबोक रस गारि आचमन करैत बजलाह—होअइ, 'जय भगवती' करइ। हमरा लोकनिक असली संस्कृति थैह थीक। जौं ई संस्कृति कायम रहि जाय त हम लाख बेरि मिथिलाक कोखिमे जन्म ली। हमरा मोक्ष नहि चाही।

काव्यक रस

ओहिदिन खट्टर कक्का खाट बीरैत रहथि। हमरा संगमे एक व्यक्ति कैं देखि कऽ बजलाह—हौ, ई झुलफी वला के छथुन्ह?

हम कहलिऐन्ह—ई कवि छथि। हमर सार थिकाह। अपन कविता अहाँ कैं सुनाबय चाहैत छथि।

खट्टर कक्का बजलाह—आइ हमरा बैसि कऽ कविता सुनबाक फुरसति नहि अछि। हँ, जौं तों रसी धरैने जाइ और ई पौआ अलगौने जाथि त हम थोड़ेक सुनि लेबैन्ह।

हम कहलिऐन्ह—बेस त, सैह रहौ।

कविजी अपन 'प्रिया-मिलन' नामक प्रेमकाव्य प्रारम्भ कैलन्हि। किछु काल सुनलाक उपरान्त खट्टर कक्का कहलथिन्ह—औ, आब बंद करू।

कविजी अकचका कऽ पुछलथिन्ह—से किऐक?

खट्टर कक्का बजलाह—हमरा फूसि नहि सुहल जाइ अछि!

कविजी—हम फूसि की कहल अछि?

खट्टर कक्का—सभटा फुसिए कहल अछि। अहाँ कहैत छी जे चातक पक्षी स्वातीक बुन्द छोड़ि और कौनो पानि नहि पिबैत अछि। अहाँ चातक कैं कहियो पानि पिया कऽ देखने छिऐक?

कविजी—नहि।

खट्टर कक्का—परन्तु हम त चिड़ियाखानामे देखने छिऐक। ओ बारहो मास तीसो दिन पानि पिबैत अछि।

कविजी चुप्प भऽ गेलाह। खट्टर कक्का पुनः कहलथिन्ह—औ कविजी! अहाँ लिखै छी जे चकोर पक्षी अग्नि-भक्षण कय पचा लैत अछि। अहाँ कहियो चकोर कैं अग्नि खोआ कय देखने छिऐक?

कविजी—नहि।

खट्टर कक्का—तखन अहाँ कोना बुझैत छिऐक जे ओकर ठोर नहि पकैत छैक?

कविजी चुप्प।

खट्टर कक्का—अहाँ लिखैत छी जे चकवा पक्षीक जोड़ा रातिमे एक संग रहिए नहि सकैत अछि। परन्तु हम त एक्के पिंजड़ामे नर-मादा दूनू कैं रहैत देखने छिऐक।

' कविजी चुप्प।

खट्टर कका—अहाँ लिखने छी जे हंस नीर ओ क्षीर कें पृथक कय दैत अछि। ई बात अहाँक देखल अछि? यदि ई सत्य हो त हम आइए एकटा पोसि ली। जैखन गोआरिन दूध लऽ कऽ आओत तैखन हंसक लोल ओहिमे डुबा देबैक। परन्तु यदि दूध और पानि फराक नहि भेल, तखन?

कविजी चुप्प।

खट्टर कका पुनः कहय लगलथिन्ह—औ कविजी! अहाँ कहियो केरा सँ कर्पूर बनैत देखलिऐक अछि? हाथीक माथ सँ मुक्ता बहराइत देखलिऐक अछि? कतहु पारस पाथर देखबामे आएल अछि? यदि वास्तवमे ओ पाथर रहितैक त एहि देशक कवि हकन्न किऐक कनितथि? लोहामे छुआ दितऽथिन्ह, सोना बनि जइतैन्ह। कविपत्नी सोनेक कड़ाहीमे दूध औंटितथि।

कविजी—परन्तु प्राचीन कवि सभ त एहिना लिखि गेल छथि।

खट्टर कका—यदि ओ लोकनि लिखि देथि जे नयिका कैं कटि नहि होइ छैन्ह, तखन अहाँ स्त्रीक करधनी फेंकि देब?

हम पुछलिऐन्ह—खट्टर कका, एहि सभ बातक परीक्षा कैनहि बिना लोक एतबा दिन सँ किऐक मानैत आबि रहल अछि?

खट्टर कका बिहुँसैत बजलाह—हौ, हमरा लोकनि छी मिथ्यानन्द। मिथ्याक कल्पनामे हमरा सभ कैं वेसी आनन्द भेटैत अछि। 'सुन्दरीक लात सँ अशोक वृक्ष फुला जाइछ' एहन एहन कल्पना कोनो वैज्ञानिकक मस्तिष्कमे आबि सकैत छैन्ह? .....औ कविजी, ओहि कातक पीआ अलगाउ।

खट्टर कका खाट धौरैत कहय लगलाह—हौ, कवि लोकनि धन्य होइ छथि। हुनका सभ किछु माफ रहै छैन्ह। वैह बात जौं दोसर बाजय त मारि भऽ जाइक।

हम—से कोना, खट्टर कका?

खट्टर कका—देखह। यदि किनको कहल जाइन्ह जे 'कन्यामे अपूर्व लावण्य अछि' त पिताक मन प्रसन्न भऽ जैतैन्ह। परन्तु वैह बात यदि ठेठ शब्दें कहल जाइन्ह जे 'बेटी बड्ड नमकीन अछि', तखन लाठिए बजरि जाय। विचारि कऽ देखह, त बात एक्के! परन्तु कहबाक शैलीमे भेद छैक! यदि वैह बात गमार बाजय त लंठ भेल, कवि बजलाह त रसिक भेलाह।

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, ई त ठीक कहल।

खट्टर कका खाट धौरैत बजलाह—हम कोनो बात बेठीक कहैत छिऔह? यदि कोनो युवती कैं केओ सोझे जा कऽ कहैन्ह—'वाह! अहाँक स्तन बड्ड सुन्दर अछि' त ओकरा पर पादुका बरसतैक। और यदि वैह बात कवि छन्द बना कऽ बजताह त हुनका पर पदक बरसतैन्ह। की औ कविजी! अहाँ जे नायिकाक पयोधर कैं एना खोलि कऽ वर्णन कैने छिऐक सैह कोनो वास्तविक बहु-बेटी कैं कहबैक?

खट्टर ककाक ई रबैया देखि कविजी रसीक फंदा छोड़ाय, अपन प्रेम-काव्य समेटैत घसकन्तउवाथ भेलाह।

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, आइ अहाँ कैं तेहन सूर चढ़ि गेल जे बेचारे कविजी अपन सन मुँह लऽ कऽ विदा भऽ गेलाह।

खट्टर कका बजलाह—हौ, हमरा हाथमे रसीक घर्रा लगैत छल और ओ कुच-वर्णन सुनाबय लगलाह! एही द्वारे हमरा तामस उठि गेल। परन्तु बलहुँ बेचारा कैं एतेक बात कहलिऐक। एहि देशक त परम्परे वैह छैक। देखह—

बदरामलकाम्रदाड़िमानामपहृत्य श्रियमुन्नतौ क्रमेण
अधुना हरणे कुचौ यतेते बाले ते करिशावकुंभलक्ष्म्याः।

हम—एकर अर्थ की भेलैक?

खट्टर कका—कवि कहैत छथिन्ह—"हे बाले, अहाँक दूनू...पहिने बेर सन सन छल; तखन धात्रीफल सन सन भेल; तदुपरान्त अनार सन सन भऽ गेल, आब हाथीक माथ सँ टक्कर लय रहल अछि।"

हम—खट्टर कका, ई त अश्लील भेल!

खट्टर कका व्यंग्यपूर्वक बजलाह—हैं। हम गद्यमे अनुवाद कऽ कहलिऔह त अश्लील भऽ गेल। और वैह बात कवि-कोकिल पदमे बजलाह त कोमल-कान्त-पदावली भऽ गेलैन्ह!

प्रथम बदरि फल पुनि नवरंग
दिन दिन बाढ़य पिड़य अनंग
से पुनि भय गेल बीजक पोर
आब कुच बाढ़ल श्रीफल जोर।

वैह बैर सँ नारंगी, ओ नारंगी सँ बेल! परन्तु एहन एहन पद कैं केओ अश्लील नहि कहैत छैन्ह। स्वयं युवतीगण गबैत छथि। सेहो बेस टहंकार सँ। राग भास दऽ कऽ।

हम—खट्टर कका, विद्यापतिक कवितामे केहन अपूर्व रस छैन्ह?

खट्टर कका बानि दैत बजलाह—हौ, जहिना संस्कृतक कविलोकनि शृंगारक वर्णनमे अपन चमत्कार देखौने छथि तहिना त ओहो कैने छथि। वैह नखशिख, वैह सद्यःस्नाता, वैह अभिसार, वैह नखक्षत, वैह विपरीत रति! हमरा त कोनो नवीनता नहि बूझि पड़ैत अछि।

हम—तखन करोड़ो जनता हुनका कविता पर किऐक मुग्ध अछि?

खट्टर कका बजलाह—एकर कारण जे पहिने नायिकाक संभोग वर्णन केवल संस्कृते काव्यमे रहैत छलैक। साधारण लोक ओहि रस सँ वंचित रहैत छल। देवभाषाक ओहि रस कैं ई लोकभाषामे लऽ अनलन्हि। फलस्वरूप सभ केओ 'कचकुचकटाक्ष'क आस्वादन करय लागि गेल। एही माधुर्यक कारण विद्यापति ग्रामीण जनताक कंठहार बनि गेलाह। यदि हुनका पदावली सँ 'कुच' काटि देल जाइन्ह त की रहि जैतैन्ह? केवल नचारी।

हम—खट्टर कका, ई अहाँ अतिशयोक्ति कय रहल छी। प्रसंगवश दू-एक ठाम कुचक वर्णन आबि गेल हैतैक।

खट्टर कका बजलाह—तखन तों मानि दैत रहइ। हम कुचकीर्त्तन सुना दैत छिऔह।

देखह, कतहु सखी नायिका कैं शिक्षा दैत छथिन्ह—

झाँपय कुच दरसाएव आध

कतहु नायक कैं उपदेश दैत छथिन्ह—

गनइत मौतिम हारा
छले परसय कुच भारा

नायिका यौवनक भार सौं अवग्रहमे छथि। किऐक त—

उनत उरोज चिर झपबए, पुनि पुनि दरसाय
जइए जतने गोअए चाहए, हिम गिरि ने नुकाय

कतबो आँचर चीपेति कऽ रखै छथि, तथापि—

तेइ उदसल कुच जोरा
पलटि बैसाओल कनक कटोरा

तखन ओ हाथ लऽ कऽ झँपैत छथि। ई देखि नायकक चित्त चंचल भऽ जाइ छैन्ह—

करयुग पिहित पयोधर अंचल
चंचल चित देखि भेला

किऐक त—

आध उरज हेरि आध आँचर भरि तव धरि दगधे अनंग

संयोगवश नायिकाक अंचल ससरि जाइ छैन्ह। नायक कृतार्थ भऽ जाइ छथि—

ता पुनि अपुरब देखल रे कुचयुग अरविंद

देखि कऽ मनमे सिहंता होइ छैन्ह जे—

वाल पधोयर गिरिक सहोदर अनुपमिए अनुरागे
कओन पुरुष कर परसए पाओल जे तनु जितल परागे

सौभाग्यवश नायक कैं अनुकूल अवसर भेटि जाइ छैन्ह।

आँचर परसि पयोधर हेरु
जनम पंगु जनि भेटल सुमेरु

जेना दरिद्र कैं स्वर्णकलश भेटि जाइन्ह तहिना नायक करय लगैत छथि—

खनहिं चीर धर खनहिं चिकुर गह
करए चाह कुच भंगे

अन्तमे सफलता हाथ लगैत छैन्ह—कुचकोरक तव कर गहि लेल

तदुपरान्त—

पीन पयोधर नख रेख देल
कनक कुंभ जनि भगनहु भेल

नायिका की करथु ?

सुन्दर कुचयुग नख खत भरी
जनि गजकुंभ विदारल हरी

ओ आकुल भऽ गेलीह और नायक रसपान करय लगलाह।

कर धरु कुच आकुल भेल नारी
निरखि अधर मधु पियय मुरारी

और आगाँ सुनबह ?

हम—नहि खट्टर कका। हम मानि लेल। परन्तु विद्यापति त राधाकृष्णक भक्त छलाह तखन कुचकुंभ.....

खट्टर कका—एतबेमे तों उबिया गेलाह ? राधाक भक्त औरो दूर धरि पहुँचि जाइ छथिन्ह। देखह,

सुखद सेज पर नागरि नागर
बइसल नवरति साधे
प्रति अंग चुंबन रस अनुमोदन
थरथर काँपल राधे।

हौ, तों भातिज नहि रहितह त और बेसी सुनबितिऔह। किन्तु इहो संकोच त हमरा व्यर्थ भऽ रहल अछि। आब त एहन एहन पदावली विद्यार्थीक पाठ्यग्रन्थमे राखल गेल छैन्ह! ....कनेक रस्सी धराबह।

हम रस्सी धरबैत कहलिऐन्ह—खट्टर कका, विद्यापति महादेवक परम भक्त छलाह।

खट्टर कका व्यंग्य करैत बजलाह—हँ, तेहन परम भक्त छलाह जे कामिनीक स्तनोमे हुनका महादेवे सूझैत छथिन्ह। देखह,

सुरत समापि सुतल वर नागर
पानि पयोधर आपी
कनक शंभु जनि पूजि पुजारी
धएल सरोरुह झाँपी

परन्तु ओहन सुकुमार महादेव कैं भग्न होइत कतेक देरी लगितैन्ह ?

कोन कुमति कुच नखखत देल
हाय हाय शंभु भगन भय गेल !

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, अहाँ त रसपक्षक धार बहा देलहुँ। परन्तु विद्यापतिमे भक्तिपक्षो त छैन्ह। महेशवानी सभ देखिऔन्ह।

खट्टर कका रस्सीक घुरची छोड़बैत बजलाह—हौ, ई त एहि देशमे भेलैक अछि। कवि लोकनि कैं दुइएटा राग अबैत छैन्ह। जावत पर्यन्त भोग करबाक शक्ति रहैत त मृगनैनी सूझैत छथिन्ह, और जहाँ थकलाह कि मृगछाला सूझय लागि जाइत छैन्ह। तैं युवावस्था भरि त—

कुच विपरीत विलम्बित हार
कनक कलस वम दूधक धार !

और वृद्धावस्था पहुँचल त

–'कखन हरब दुख मोर हे भोलाबाबा !

आर वार्द्धक्य प्रयुक्त ओहि असमर्थता कैं नाम देल जाइ छैन्ह 'भक्ति' !

हमरा चुप्प देखि खट्टर कका बजलाह–ई कोनो विद्यापतिएमे नहि छैन्ह। देव विहारी मतिराम पद्माकर सभक येह हाल छैन्ह। बूझह त एहि देशक परम्परे येह छैक। संस्कृत काव्यमे दुइए टा धारा बहैत छैक। नवारीमे शृंगारक सरिता। बुढ़ारीमे वैराग्यक बाहा !

हम–खट्टर कका, एहि उपमा सँ त बूझि पड़ैत अछि जे शृंगारे बेसी प्रबल अछि।

खट्टर कका–ताहूमे संदेह ? संस्कृत काव्यक वाटिकामे विचरण करबह तऽ नारंगी-अनारक शोभा देखैत रहि जैबह। हँ, हत्ता पर वैराग्यक बबूर सेहो भेटतौह।

हम–अहा ! ई त बड्ड सुन्दर उपमा भेल !

खट्टर कका–हम यथार्थे कहैत छिऔह। बूझह त संस्कृत काव्य कुचकाव्य थीक। कवि लोकनि कैं संसारक समस्त गोल वस्तु ओहीमे भेटैत छैन्ह। विद्यापति कि कोनो उपमा अपना घर सँ लैलाह अछि ? तों ओहिना बानि देने जाह त हम संस्कृत-काव्यक चाशनी चखा दैत छिऔह। देखह, एक गोटा कहैत छथि-

जम्बीरश्रिय मतिलंघ्य लीलयैव
व्यानम्रीकृत कमनीय हेमकुंभौ
नीलांभोरुह नयनेऽधुना कुचौ ते
स्पर्धेते किल कनकाचलेन सार्द्धम् ।

अर्थात हे सुन्दरी ! अहाँक कुच पहिने जंबीरी नेबो कैं हरौलक, तखन स्वर्णकलश कैं जितलक, और आब कनकाचल पहाड़ सँ स्पर्द्धा कऽ रहल अछि।

हम–इह ! कवियोक उड़ान आश्चर्य होइ छैन्ह। कलश सँ कूदि कऽ एके बेर पर्वत पर पहुँचि गेलाह !

खट्टर कका–दोसर गोटा कैं ओहू सँ संतोष नहि भेलैन्ह त एकदम आकाशे टेका देलथिन्ह।

अल्पं निर्मितमाकाशमनालोच्यैव वेधसा ।
इदमेवंविधं भावि भवत्याः स्तनमंडलम् ।

अर्थात ब्रह्मा आकाश बनौलन्हि से छोट भऽ गेलैन्ह। तखन फेर कऽ गढ़बाक हेतु साँचा बनौलन्हि, सैह अहाँक स्तन-मंडल थीक। हौ, एहन एहन कवि कैं सम्पूर्ण ब्रह्मांडे स्तनमंडल बूझि पड़ैत छैन्ह !

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, अतिशयोक्तिक पराकाष्ठा भऽ गेल !

खट्टर कका बजलाह–अतिशयोक्तिक त ई देशे थीक। एक रसिक कैं स्तनक ऊपर नखक चिह्न देखि बूझि पड़ैत छन्हि जे महादेवक ललाट पर चन्द्रमा विराजमान छथि !

स्वयंभूः शंभुरंभोजलोचने त्वत्पयोधरः
नखेन कस्य धन्यस्य चन्द्रचूडो विराजते ।

हम–धन्य छलाह ई कवि-लोकनि !

खट्टर कका–तोरा एतबेमे आश्चर्य होइ छौह। एकटा भक्तराज कैं दशो अवतार ओहीमे भेटि जाइत छथिन्ह। कठोर, तँ कच्छप अवतार। कंदर्पक पताका फहरबैत, तँ मीनावतार। एवं प्रकार तुलना करैत करैत कहै छथिन्ह जे........

भाति श्रीरमणावतारदशकं बाले भवत्याः स्तने

हम–हद भऽ गेलऽ, खट्टर कका ! एहन एहन उक्ति और कोनो भाषामे भेटत ? ई लोकनि उमरखैयामो कैं जितलन्हि।

खट्टर कका बजलाह–हौ, खैयाम की खा कऽ ओहन कल्पना करताह ? देखह, एक गोटा कहै छथि–

द्रष्टव्येषु किमुत्तमं मृगदृशः प्रेमप्रसन्नं मुखम्
घ्रातव्येष्वपि किं तदास्यपवनः श्राव्येषु किं तद्वचः
किं स्वाद्येषु तदोष्ठपल्लवरसः ध्येयेषु किं तत्स्मित
किं पृज्येषु गृ[illegible]र्गर्भसदृशौ तस्याः पयोध्रौ स्तनौ ।

हौ, एतेक भोगासक्ति और कोनो देशमे भेटतौह ? एहि ठामक कवि तन सँ बेसी स्तन कैं बुझैत छथि।

हम कहलिऐन्ह–परन्तु भक्तिओ त एहि देशमे तेहने छैक।

खट्टर कका बजलाह–हौ, भक्तिओ अधिकतर ताही लऽ कऽ छैक। राधाक भक्त लोकनि केहन भक्ति करैत छथिन्ह से देखहुन। एक कवि कहैत छथिन्ह–

देहि मत्कंदुकं राधे परिधाननिगूहितम्
इति विस्रंसयन् नीवीं तस्याः कृष्णो मुदेस्तु नः ।

'कृष्ण भगवान राधा सँ छीनाछोरी करैत छथिन्ह जे हमर गेन दऽ दियऽ !' हौ, राधाक पयोधर की भेलैन्ह, कवि लोकनिक खेलौना भऽ गेलैन्ह ! केओ गेन बना कऽ खेलाइ छथि। केओ बटखराक काज ओहि सँ लैत छथि।

हम–बटखराक काज ? से कोना ?

खट्टर कका–देखह, एक कविक उक्ति छैन्ह–

नीतं नव नवनीतं कियदिति पृष्टो यशोदया कृष्णः
इयदिति गुरुजन-संसदि करधृतराधा-पयोधरः पातु ।

यशोदाजी कृष्ण सँ पुछैत छथिन्ह जे अहाँ कतेक माखन लऽ गेलहुँ अछि ? ओहिठाम कोनो पौआ वा अधसेरा त रहैन्ह नहि। कृष्ण भगवान चट्ट दऽ राधाक स्तन धऽ कऽ देखा देलथिन्ह जे 'एतबा।'

हमरा चकित देखि खट्टर कका बजलाह—देखह, एक भक्त राधा कें कहैत छथिन्ह—

राधे त्वमधिकधन्या हरिरपि धन्यो भवतारकोऽपि
मज्जति मदनसमुद्रे तव कुचकलशावलम्बनं कुरुते।

अर्थात् हे राधे! भगवान अनका भवसागर पार करबैत छथिन्ह, परन्तु जखन स्वयं मदन-सिंधुमे डूबय लगैत छथि, तखन अहाँक पयोधररूपी कलश पकड़ि कऽ पार उतरैत छथि।

हम क्षुब्ध होइत कहलिऐन्ह—बलिहारी एहन भक्त कें। ओ भक्तराज अपने कोना पार उतरल हैताह?

खट्टर कका—देखह, दोसर भक्त कल्पना करैत छथि जे राधाक पयोधर देखैत-देखैत कृष्ण भगवान गायक बदला बड़द दुहय लगलाह!

राधा पुनातु जगदच्युतदत्तचित्ता
मंथानमाकलयती दधिरिक्तपात्रे
यस्याः स्तनस्तबकचुंचुकलोलदृष्टि-
र्देवोऽपि दोहनधिया वृषभं दुदोह।

हम—खट्टर कका, अहाँ त तेहन-तेहन उदाहरण राखि दैत छी जे हमर मुँहे बंद भऽ जाइत अछि।

खट्टर कका—हौ, कवि लोकनिक मनमे जतबा गुबार छलैन्ह से सभटा राधाक नाम पर बाहर कैने छथि। सभ सँ सस्त भेटलथिन्ह राधा। जेना ओ सभक भौजाइ होथिन्ह। और केवल राधा किऐक? कवि लोकनि कें त लाइसेंस भेटल छैन्ह। हुनका लेल जेहने राधा, तेहने लक्ष्मी, तेहने पार्वती। ओ ककरो छोड़यवला नहि!

हम—अच्छा! लक्ष्मीओ नहि बाँचल छथि?

खट्टर कका—बँचतीह कोना? देखह, लक्ष्मी-नारायणक एक भक्त कोन प्रकारें प्रार्थना करैत छथिन्ह!

कचकुचचिबुकाग्रे पाणिषु व्यापितेषु
प्रथमजलधिपुत्री-संगमेऽनंगधाम्नि
ग्रथितनिविडनीवीग्रन्थिनिर्मोचनार्थं
चतुरधिककराशः पातु वश्चक्रपाणिः।

विष्णु भगवानक चारू हाथ फँसल छैन्ह। एक हाथ लक्ष्मीक केशमे, एक हाथ चिबुकमे, दू हाथ पयोधरमे। आब कोंचाक बंधन कोन हाथें फोलताह? पाँचम हाथ होइन्ह तखन ने? एहन जे खेखनाएल विष्णु भगवान से रक्षा करथु!

हम—खट्टर कका, एहन भक्त सँ भगवाने रक्षा करथि।

खट्टर कका—भगवान त भक्त सँ हारले रहैत छथि। देखह, लक्ष्मीक एक भक्त कोना ध्यान करैत छथिन्ह?

पद्मायाः स्तनहेमसद्मनि मणिश्रेणी समाकर्षके
किंचित् कंचुकसंधिसन्निधिगते शौरेः करे तस्करे
सद्यो जागृहि जागृहीति वलयध्वानैर्ध्रुवं गर्जता
कामेन प्रतिबोधिताः प्रहरिकाः रोमांकुराः पान्तु नः।

अर्थात् लक्ष्मीक कंचुकीमे स्तनक लोभें विष्णुक हाथ सन्हिया रहल छैन्ह। से देखि कामदेव अपना प्रहरी सभ कें जगा रहल छथि—'उठै जाह! उठै जाह! घरमे चोर पैसि रहल छौह!' ओ प्रहरी सभ तुरंत उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। वैह ठाढ़ रोमावली हमरा सभक रक्षा करथु!

हम क्षुब्ध भय कहलिऐन्ह—खट्टर कका, लक्ष्मीक भक्त लोकनि हद कऽ देने छथि। पार्वतीक भक्त एहि तरहें नहि कहि सकैत छथिन्ह।

खट्टर कका बजलाह—तखन सुनह। पार्वतीक भक्त लक्ष्मीक भक्त सँ एको डेग पाछाँ रहयवाला नहि छथिन्ह। लोक चरणमे प्रणाम करैत छैक, पार्वतीक एक भक्त स्तनेमे प्रणाम करैत छथिन्ह!

गिरिजायाः स्तनौ वंदे भवभतिसिताननौ
तपस्वी कां गतोऽवस्थामिति स्मेराननाविव।

दोसर भक्त दूनू उन्मुक्त स्तनक जयजयकार करैत छथिन्ह!

अंकनिलीनगजाननशंकाकुलबाहुलेयहृतवसनौ
सस्मितहरकरकलितौ हिमगिरितनयास्तनौ जयतः।

तेसर भक्तक दृष्टिमे पार्वतीक स्तन शीशा जकाँ झलकैत छैन्ह!

वक्त्राणि पंच कुचयोः प्रतिबिम्बितानि
दृष्ट्वा दशाननसमागमनभ्रमेण
भूयोऽपि शैलपरिवृत्तिभयेन गाढ़-
मालिंगितो गिरिजया गिरिशः पुनातु।

पार्वतीक दूनू स्तनमे महादेवक पाँचो मुँह अंकित भेने पार्वती कें दशमुख रावणक भ्रम भऽ जाइ छैन्ह जे ओ फेर कैलास पर्वत उठावय आएल अछि। एहि भय सँ ओ शिवजीमे लपटि जाइ छथि।

हम—इह! हिनका लोकनिक कल्पना कहाँ सँ कहाँ पहुँचि जाइ छैन्ह?

खट्टर कका—तों एतबेमे घबड़ा गेलाह? देखह, एक चारिम भक्त पार्वती कें की कहैत छथिन्ह?

हरक्रोधज्वालावलिभिरवलीढेन वपुषा
गभीरे ते नाभी सरसिकृतझम्पो मनसिजः
समुत्तस्थौ तस्मादचलतनये धूमलतिका
जनस्तां जानीते तव जननि रोमावलिरिति।

"हे जननी! महादेवक क्रोधज्वाला सँ जरैत कामदेव अहाँक नाभिरूपी सरोवरमे

आबि कुदलाह। ताहि सँ जे धुआँ उठि कऽ पसरल, सैह अहाँक रोमावली भऽ गेल।"

हम कान पर हाथ दैत कहलिऐन्ह–बाप रे बाप! 'जननी' सम्बोधन कय रोमावलीक वर्णन! हमरा त रोमांच भय रहल अछि।

खट्टर कका–तों एकेटा सुनि कऽ घबड़ा गेलाह? हौ, सामान्य भक्तक बात जाय दैह। शंकराचार्य सन संन्यासी 'भवानीभुजंगस्तोत्र' मे भवानीक रोमावलीक स्तुति कैने छथिन्ह!

> सुशोणाम्बराबद्धनीवीं विराजन् महारत्नकांचीकलापं नितम्बम्
> स्फुरद्दक्षिणावर्त्तनाभिं च तिस्रोवली रम्य ते रोमराजिं भजेऽहम्

हौ, एहने भक्ति यदि केओ तोरा काकी सँ करय लागि जाइन्ह, त हुनका केहन लगतैन्ह?

हम–खट्टर कका, अहाँ त तेहन दृष्टान्त दैत छी जे हमर मुँहे बंद भऽ जाइत अछि। भक्त लोकनि कोनो अंग त छोड़ि दितऽथिन्ह।

खट्टर कका–तखन फेर भक्ते की कहबितथि?

खट्टर ककाक खाट लगिचा गेल छलैन्ह। बजलाह–देखह, रोमावलीक वर्णनमे एहि ठामक कवि कतबा बुद्धिक चमत्कार देखौने छथि! एगोटा उत्प्रेक्षा करैत छथि–

> लिखतः कामदेवस्य शासनं यौवनश्रियः
> गलितेव मसीधारा रोमाली नाभिगोलकात्।

अर्थात ई रोमावली की थीक जे कामदेवक दोआति सँ रोशनाइ ढघरि कऽ पसरि गेल अछि!

दोसर गोटा कैं ओहिमे चुट्टीक पाँती सुझैत छैन्ह!

> पयोधरस्तावदयं समुन्नतो
> रसस्य वृष्टिः सविधे भविष्यति
> अतः समुद्गच्छति नाभिरंध्रतो
> विसारि रोमालि पिपीलिकावलिः।

अर्थात ई रोमावली नहि थीक। ऊपर पयोधर देखि रसवृष्टिक अनुमान कय नाभि रूपी विवर सँ चुट्टीक धारी चलल अछि!

तेसर गोटा कैं ओ लोहक सिक्कड़ बूझि पड़ैत छैन्ह!

> तन्वंग्याः गजकुंभपीनकठिनोत्तुङ्गौ वहन्त्याः स्तनौ
> मध्यः क्षामतरोऽपि यन्न झटिति प्राप्नोति भंगं द्विधा
> तन्मन्ये निपुणेन रोमलतिकोद्भेदापदेशादसौ
> निःस्पन्दास्फुटलोहशृंखलिकया संधानितो वेधसः।

नायिका कोमलांगी छथि। कटि प्रदेश अत्यन्त कृश छैन्ह। ऊपर पीन पयोधरक

भार सँ डाँड़ टूटि कऽ दू खंड नहि भऽ जाइन्ह, तैं बीचमे लोहक सिक्कड़ सँ बान्हि देल गेल छैन्ह!

चारिम गोटा कैं ओ तीर्थस्थान बुझना जाइ छैन्ह!

> उत्तुङ्गस्तन पर्वतादवतरद् गंगेव हारावली
> रोमाली नवनीलनीरजरुचिः सेयं कलिंदात्मजा
> जातं तीर्थमिदं सुपुण्यजनकं यत्रानयोः संगमः
> चन्द्रो मज्जति लांछनापहतये नूनं नखांकच्छलात्।

अर्थात स्तन सँ जे हार नीचा लटकल अछि से पर्वत सँ निकसलि गंगा थीक और नीचा रोमावलीक रेखा यमुनाक धार थीक। जहाँ दूनूक संगम से तीर्थराज प्रयाग थीक।

पाँचम गोटा कैं ओहिमे तर्पणक तिल भेटि जाइत छैन्ह!

> गौरमुग्धवनितावरांगके
> रेजुरुत्थिततनूरुहांकुराः
> तर्पणस्य मदनस्य वेधसा
> स्वर्णशुक्तिनिहितास्तिला इव।

अर्थात कामदेवक तर्पणक हेतु जे तिल छिटल गेलैन्ह सैह रोमावली रूपमे प्रकट अछि!

हौ, जतबा बुद्धिविलास ई लोकनि रोमावलीमे लगौने छथि ततबा दोसरा वस्तुमे लगौने रहितथि त देशक बहुत उपकार होइत।

हम–खट्टर कका, वास्तवमे एहि ठामक कवि प्रणम्य देवता होइ छथि।

खट्टर कका–जौं से नहि रहितथि त स्तोत्रोमे रसिकता देखबितथि? देखह, गौरीक ध्यान कोना होइ छैन्ह!

> मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जलकला
> विराजन्मंदार-द्रुम-कुसुमहारः स्तनतटे
> स्फुरत् कांचीशाटी पृथुकटितटे हाटकमयी
> भजामस्त्वां गौरीं नगपतिकिशोरीमविरतम्।

त्रिपुर-सुन्दरीक स्तुति देखहुन–

> स्मरेत् प्रथमपुष्पिणीम्
> रुधिर विंदु नीलाम्बराम्
> घनस्तन - भरोन्नताम्
> त्रिपुर - सुन्दरीमाश्रये।

आजन्म ब्रह्मचारिणी सरस्वती पर्यन्त कैं ई लोकनि नहि छोड़लथिन्ह।

> वामकुच - निहितवीणाम्
> वरदां संगीत-मातृकां वंदे।

+ +

शान्तां मृदुलस्वान्ताम्
कुचभरतान्तां नमामि शिवकान्ताम् ।

और कहाँ धरि जे भगवतीओक भजन करताह त—

जय जय हे महिषासुरमर्दिनि !
रम्यकपर्दिनि शैलसुते !
जितकनकाचल मौलिदोर्जित,
निर्झर निर्जर कुंभ-कुचे !

हौ, विना कुच कैं ई लोकनि ध्याने नहि कय सकैत छथि !

हम--खट्टर कक्का, देवी लोकनि एहन भक्ति देखि कय मनमे की कहैत होइथिन्ह ?

खट्टर कक्का—हौ, जाहिठाम सहोदराक स्तन पर उत्प्रेक्षा कैल जाय जे—

कुच-प्रत्ययासत्या हृदयमपि ते चंडि कठिनम्

ताहिठाम अन्यान्य देवीक कोन थाख ? हौ, बाबू ! तोरो सार कवि छथुन्ह । कनेक बाँचिए कऽ रहिहऽ ।

खट्टर ककाक खाट तैयार भऽ गेल छलैन्ह । ओरौंच कसैत बजलाह—असलमे बूझह त कविक मुँहमे लगाम नहि होइ छैन्ह । हमरा त आश्चर्य होइ अछि जे लगाम कैं 'कविका' किऐक कहैत छैक ।

पुनः बजलाह—लेकिन हमरा त अपने मुँहमे लगाम नहि अछि । दोसरा कैं की दुसिऔक ?

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कक्का, भक्तिकाव्यमे एेहो एतवा रसिकता छैक से हमरा नहि बूझल छल ।

खट्टर कक्का बजलाह—हौ, भक्तिमार्ग खूब होइ अछि । हलुआ पूड़ी खाउ और रसकीर्तन करू—गोपी-पीन-पयोधर-मर्दन चंचल-कर-युग-शाली ! आन मार्गमे लोक सुखा जाइ अछि; भक्तिमार्गमे फूलि कऽ चतरा जाइ अछि । तैं त पुष्टिमार्ग कहल जाइ छैक । शृंगार ओ भक्तिमे कि कोनो तात्त्विक अन्तर छैक ? जेना रस सँ छलकैत अंगूर सुखा कऽ मोनक्का भऽ जाइत अछि, तहिना शृंगारो कालक्रमे भक्ति बनि जाइत अछि । 'स्मरणं कीर्त्तनं केलिः प्रेक्षणं गुह्यभाषणम्'—सभ तरहक आनन्द एहूमे भेटि जाइत छैक । कतेको भक्त त चारि दिन मासिको धर्म राखि कऽ भगवानक प्रेयसीदलमे सम्मिलित भऽ जाइ छथि । ....परन्तु हमरा कोन काज जे सभ सँ लड़ाइ-झगड़ा बेसाहने भेल फिरू ? जे होइ छैक से होवय दहौक । ....खैर, आइ तेहन चर्चा चलल जे ई खाट तैयार भऽ गेल ।

ई कहि खट्टर कक्का खाट उठा कऽ भीतर नेने गेलाह ।

पुराणक चाशनी

खट्टर कक्का पुराण देखैत रहथि । हमरा देखि पुछलन्हि—हौ, कोम्हर जाइ छह ?

हम कहलिऐन्ह—ब्रह्मस्थान पर भागवत भऽ रहल छैक ।

खट्टर कक्का बजलाह—तखन महा अनर्थ भऽ रहल छैक ।

हम—से किऐक, खट्टर कक्का ?

खट्टर कक्का—हौ, भागवत सुनने गामक स्त्रीगण दूरि भऽ जाएत । चीर-हरण ओ रासलीलाक कथा सुनि छौंड़ा-छौंड़ी उमता जाएत । नवयुवक सभ रातिमे सीटी बजबैत चलताह । नवयुवती सभ घाटे बाटे बौआएल भेल फिरतीह । यमुना ओ वृन्दावन नहि छैक तैं की ? पोखरि ओ आमक गाछी त छैक । हौ बाबू, हम गाममे भागवत नहि होमय देबौह ।

हम—खट्टर कक्का, अहाँ त हँसी करैत छी ।

खट्टर कक्का—हँसी की करैत छिऔह ? देखह,

ता वार्यमाणाः पितृभिः पतिभिर्भ्रातृभिस्तथा
कृष्णं गोपांगनाः रात्रौ रमयन्ति रतिप्रियाः ।

बाप, भाइ स्वामी, मने करैत रहि जाथिन्ह ता गोपी लोकनि रास करक हेतु बहरा जाथि । कहह, ई कोनो नीक बात थीक ? जौं गामक बेटी-पुतोहु एहिना करय लागि जाय, तखन कोन उपाय हैत ?

हम—खट्टर कक्का, किछु विद्वानक कथ्य छैन्ह जे चीरहरण ओ रासलीलाक आध्यात्मिक तात्पर्य छैक ।

खट्टर कक्का भड़पोटना पटकैत बजलाह—हमरा परतारह जुनि । ई केश रौदमे नहि पाकल अछि । हम अठारहो पुराण धाङि गेल छी । एखनो ब्रह्मवैवर्तपुराण आगाँमे राखल अछि ।

हम—एहिमे त केवल ब्रह्मक चर्चा हैतैन्ह ?

खट्टर कक्का भभा कऽ हँसि पड़लाह । कृष्ण जन्म-खंड उनटबैत बजलाह—अगुताइ त ने छौह ? तखन बैसि जाह । चीरहरणक वर्णन देखह । गोपी सभ वस्त्र उतारि यमुना-जलमे स्नान कय रहलि छथि । भगवान सभक वस्त्र हरण कय कदम्ब वृक्ष पर सँ कहै छथिन्ह—

भो भो गोपालिकाः नग्नाः इदानीं किं करिष्यथ ?

ऐ गोपीगण ? आब अहाँ लोकनि की करैत जाएब ?

तखन राधा सखी सभ कैं आज्ञा दैत छथि जे 'चलू, एहि छैला कैं बान्हि कऽ लऽ अनै जाउ'।

बस,

सर्वा राधाज्ञया तूर्णं समुत्थाय जलात् क्रुधा।
प्रजग्मुर्गोपिका: नग्ना योनिमाच्छाद्य पाणिना॥

युवतीक दल हाथ सँ गुप्तांग कैं झँपने चलल हुनका पकड़य! परन्तु वृन्दावन-विहारी त एहि फौजक सामना करय लेल तैयारे छलाह। रभसैत कहलथिन्ह–

युष्माकमीश्वरी राधा किं करिष्यति मेऽधुना

अहाँ सभक 'लीडरानी' राधारानी हमर की कऽ लैत छथि से देखैत छिऐन्ह!'

ई सुनितहि राधाक क्रोध काममे परिणत भऽ गेलैन्ह।

श्रुत्वा जहास सा राधा बभूव कामपीडिता

और तकरा बाद त सभ गोपिका मिलि कय–

नग्ना: क्रीड़ाभिरासक्ता: श्रीकृष्णार्पितमानसा:।

भगवानक इच्छा पूर्ण भेलैन्ह। गोपी सभक इच्छा पूर्ण भेलैन्ह। और कथा सुननिहार युवती लोकनिक इच्छा सेहो पूर्ण होउन्ह, ताहि हेतु पुराणकर्त्ता आशीर्वाद दैत छथिन्ह–

भक्त्या कुमारी स्तोत्रं च शृणुयात् वत्सरं यदि
श्रीकृष्णसदृशं कान्तं गुणवन्तं लभेत् ध्रुवम्।

अर्थात यदि कुमारी लोकनि भक्तिपूर्वक सालो भरि ई स्तोत्र सुनथि त निश्चय श्रीकृष्ण सन रसिया केओ भेटिए जइथिन्ह!

हम–खट्टर कका, रासलीलाक किछु दोसरे अभिप्राय हैतैक।

खट्टर कका बजलाह–तखन कनेक ओकरो चाशनी चाखि लैह।

पुनः प्रजग्मुस्ता मत्ताः सुन्दरं रासमंडलम्
पूर्णेन्दुचन्द्रिकायुक्तं रतियोग्यं सुनिर्जनम्।
काश्चिदूचुरहो कृष्ण स्वक्रोडेऽस्मांश्च कुर्विति।
गृहीत्वा श्रीहरेः स्कंधमारुरोह च काचन।
काचिज्जग्राह मुरलीं बलादाकृष्य माधवम्।
जहार पीतवसनं कृत्वा नग्नं च कामिनी।
उवाच काचित् प्रेम्णा तं गंडयोः स्तनयोर्मम
नाना-चित्र-विचित्राभ्यां कुरु पत्रावलीमिति।

पूर्णिमाक राति। यमुनाक तीर। एकान्त स्थान। गोपीगण निःसंकोच भय केलि करैत छथि। केओ भगवानक मुरली छीनि लैत छथिन्ह। केओ पीताम्बर फोलि लैत छथिन्ह। केओ फानि कऽ कोरमे चढ़ि जाइत छथिन्ह। केओ छड़पि कऽ कन्हा पर सवार भऽ जाइ छथिन्ह। सभ मिलि कऽ चरोवरो कऽ लैत छथिन्ह।

केओ कहै छथिन्ह जे हमरा गालमे दाँत काटू। केओ कहै छथिन्ह जे छाती पर चेन्ह कऽ दिय। ....हौ, ई पुराणकार लोकनि रसिक-शिरोमणि छलाह।

खट्टर कका आगाँ बाँचय लगलाह–

काचित् कामातुरा कृष्णं बलादाकृष्य कौतुकात्।
हस्ताद्वंशीं निजग्राह वसनं च चकर्ष ह।
काचित् कामप्रमत्ता च नग्नं कृत्वा तु माधवम्।
निजग्राह पीतवस्त्रं परिहास्य पुनर्ददौ।
चुचुम्ब गंडे बिम्बोष्ठे समाश्लिष्य पुनः पुनः
सस्मितं सकटाक्षं च मुखचन्द्रं स्तनोन्नतम्
कांचित् कांचित् समाकृष्य नग्नां कृत्वा तु कामतः
काचिच्छ्रोणिं सुललितां दर्शयामास कामतः।

हम–खट्टर कका, कनेक अर्थ बुझा कऽ कहिऔक।

खट्टर कका–हौ, की कहिऔह? युवती-गण कामोन्मत्ता भय लज्जा छोड़ि दैत छथि! केओ भगवान कैं विवस्त्र कय अपना दिस खींचि लैत छथिन्ह। केओ गाल ओ ठोरमे चुम्मा लैत छथिन्ह। केओ अपना छातीमे सटा लैत छथिन्ह। केओ अपना सखी कैं नग्न कय भगवान पर ठेलि दैत छथिन्ह। ....हौ, गामक छौंड़ी सभ एहन कथा सुनति त मर्यादाक बंधन राखति?

हम–खट्टर कका, भगवान युवती सभ कैं डँटलथिन्ह किऐक नहि?

खट्टर कका बजलाह–हौ, डँटने होइतैन्ह की? मदमत्ता युवती ओ नदीक धार जखन एक बेर बाँध तोड़ि दैत अछि तखन ओकर प्रवाह के रोकि सकै अछि! भगवानो त अवग्रहमे पड़ि गेलाह। ई एकसर बालक, ओम्हर ओतेक रास तरुणी! सभक इच्छा एके बेर कोना पूर्ण होउन्ह! अगत्या भगवान कैं नाना रूप धारण कय सभ सँ मंडलाकार रमण करय पड़लैन्ह।

कामिनीनां मनोहारि नानामूर्त्तिं विधाय च
रेमे गोपांगनाभिश्च सुरम्ये रासमंडले
अंगैरंगानि प्रत्यंगैः प्रत्यंगानि स्मरातुरः
चक्राश्लेषणं तत्र कामुकीनां सुखावहम्।

हौ, हमरा त बूझि पड़ै अछि जे एही रास-चक्र सँ भैरवी चक्रक उत्पत्ति भेल अछि।

हम–खट्टर कका, कतेको संप्रदाय रासलीलाक दोसरे व्याख्या करैत छथि।

खट्टर कका व्यंग्यपूर्वक बजलाह–हँ। जेना वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति। तहिना पौराणिकी व्यभिचारो व्यभिचारो न भवति। हौ, तोरा बूझि पड़ैत छौह जे रासक्रीड़ामे योगाभ्यास होइत छलैक?

हम–परन्तु योगीश्वर कृष्ण स्वयं त अविचलित रहैत छलाह?

खट्टर कका बजलाह–तखन देखह जे योगीश्वर केहन भोगीश्वर छलाह!

कृष्णः कररुहाघातं ददौ तासां कुचोपरि।
श्रोणीदेशे सुकठिने नखचित्रं चकार ह॥
आलिंगनं नवविधं चुम्बनाष्टविधं मुदा
शृंगारं षोडशविधं चकार रसिकेश्वरः॥

आब एहि सँ बेसी की होइ छैक?

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, ओ प्रेम शारीरिक नहि छलैन्ह।

खट्टर कका बजलाह–तों ओना नहि बुझबह। तखन और खोलि कऽ सुनह

जगाम राधया सार्द्धं रसिको रतिमन्दिरम्
सुष्वाप राधया सार्द्धं रतितल्पे मनोहरे
कृष्णो राधां समाकृष्य वासयामास वक्षसि
श्रोणी-देशे च स्तनयोर्नखच्छिद्रं चकार ह।

आबो मनमे संदेह छौह?

हम–परन्तु.....

खट्टर कका बजलाह–तोरा एखन धरि मन नहि भरलौह अछि। तखन और सुनह। स्थलक्रीड़ाक बाद कोना जलक्रीड़ा होइ छैन्ह!

स्थले रतिरसं कृत्वा जगाम यमुनाजलम्
वस्त्रं जग्राह तस्याश्च सा च नग्ना बभूव ह
तां च नग्नां समाश्लिष्य निममज्ज जले हरिः
सा वेगेन समुत्थाय बलाज्जग्राह माधवम्
उत्थाय माधवः शीघ्रं तां गृहीत्वा प्रहस्य च
कृत्वा वक्षसि नग्नां च चुचुम्ब च पुनः पुनः

हौ, एहन उन्मत्त विहार होइ अछि। और तथापि तोरा होइ छौह जे ओ भोग नहि, योग छल। हाय रे बुद्धि!

हम–परन्तु....

खट्टर कका डँटैत बजलाह–राउत बुझाबय से मर्द। एतबा रासे कहि गेलिऔह तथापि तों 'परन्तु' लगबितहि छह? तखन और नीक जकाँ कान खोलि कऽ सुनि लैह–

माधवो राधया सार्द्धमन्तर्धानं चकार ह
अतीव निर्जने स्थाने भृशं रे तया सह
विलुप्तवेशां कामार्त्तां नग्नां शिथिल-कुन्तलाम्
गंडयोः स्तनयोश्चित्रं चकार मधुसूदनः
एवं रेमे कौतुकेन कामात् त्रिंशत् दिवानिशि
तथापि मानसं पूर्णं न किंचित् बभूव ह!

लगातार तीस दिन तीस राति धरि रमण होइत रहलैन्ह, तथापि दुनू गोटाक मन नहि भरलैन्ह। ओ दृश्य देखबाक हेतु आकाशमे देवी-देवताक मेला लागि गेलैन्ह। देवता लोकनि मुग्ध भऽ गेलाह। देवी लोकनि सौतिया डाह सँ जरि गेलीह। पुराणकर्त्ता ओहि पर टिप्पणी करैत छथि–

न कामिनीनां कामश्च शृंगारेण निवर्त्तते
अधिकं वर्द्धते शश्वत् यथाग्निर्घृत-धारया।

जेना घृतक धार सँ अग्निक ज्वाला शान्त नहि होइ छैन्ह, तहिना संभोग सँ कामिनीक तृप्ति नहि होइ छैन्ह। ....आबो तोहर संदेह दूर भेलौह कि नहि?

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, पुराण-कर्त्ता लोकनि राधाकृष्णक एहन नग्न चित्रण किऐक कैने छथिन्ह?

खट्टर कका बजलाह–हौ, एहन एहन वर्णन नहि दितऽथिन्ह त श्रोतागण कैं रस कोना भेटितैन्ह? तैं सभ देवी-देवताक संभोग-वर्णन छैन्ह। चाहे राधा-कृष्ण होथि वा शिव-पार्वती। एही द्वारे पुराणक एतेक प्रचार छैक।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, शिव-पार्वतीक एना वर्णन नहि हैतैन्ह।

खट्टर कका विहुँसैत बजलाह–तखन 'गणपति-खंड' देखह जे कोना वर्णन छैन्ह–

तां गृहीत्वा महादेवो जगाम निर्जनं वनम्
शय्यां रतिकरीं कृत्वा पुष्पचंदन-चर्चिताम्
स रेमे नर्मदा-तीरे पुष्पोद्याने तया सह
सहस्रवर्ष-पर्यन्तं देवमानेन नारद!
तयोर्बभूव शृंगारं विपरीतादिकं परम्
रतौ रतश्च निश्चेष्टो न योगी विरराम ह।

देवताक वर्ष सँ सहस्र वर्ष धरि लगातर शिव-पार्वतीक रमण होइत रहलैन्ह! तथापि शिवजी स्खलित नहि भेलाह। तखन विष्णु भगवान कैं चिन्ता भेलैन्ह। ओ ब्रह्मा कैं आज्ञा देलथिन्ह–

येनोपायेन तद्वीर्यं भूमौ पतति निश्चितम्
तत् कुरुष्व प्रयत्नेन सार्द्धं देवगणेन च।

"अहाँ देवता सभक संग जाउ और तेहन उपाय करू जाहि सँ शिवजीक धातु स्खलित भऽ जाइन्ह।" तखन इन्द्र, चन्द्र, सूर्य, पवन आदि देवता ओहिठाम जा शिवजीक स्तुति करय लगलथिन्ह। एहि सँ शिवजीक रति समाधि भंग भऽ गेलैन्ह।

विजही सुख-संभोगं कंठलग्नां च पार्वतीम्
उत्तिष्ठतो महेशस्य त्रस्तस्य लज्जितस्य च
भूमौ पपात तद्वीर्यं ततः स्कंदो बभूव ह।

''शिवजी लज्जित भय पार्वती कैं छोड़ि देलथिन्ह और ओहिना उठय लगलाह कि नीचा भूमि पर धातु खसि पड़लैन्ह। ताही सँ कार्तिकेय प्रकट भऽ गेलाह।''

देवता लोकनि पार्वतीक भय सँ पड़ैलाह तथापि पार्वती शाप दइए देलथीन्ह–

अद्य प्रभृति ते देवा व्यर्थवीर्या भवन्त्विति

''हे देवतागण! आइ सँ अहाँ लोकनिक वीर्य व्यर्थ भऽ जाएत।'' ....हौ, तैं ने आइ तक देवता लोकनि असुर सभ सँ हारैत छलाह!

हम पुछलिऐन्ह–पार्वती रुष्ट किऐक भेलथिन्ह?

खट्टर कका क्षुब्ध होइत बजलाह–तोरा सात वर्ष विवाह भेना भेलौह। तथापि एतबा अनुभव नहि भेल छौह? देखह, पार्वती स्वयं ई रहस्य महादेव कैं कहैत छथिन्ह–

रतिभंगो दुःखमेकं द्वितीयं वीर्यपातनम्
रतिभंगेन यद्दुःखं तत्समं नास्ति च स्त्रियाः।

अर्थात ''जौं रति कार्यक बीचेमे बाधा पड़ि जाइक किंवा पुरुष पहिनहि स्खलित भऽ जाइक, त एहि सँ बढ़ि दुःख स्त्रीक हेतु दोसर नहि भऽ सकैत छैक।''

तखन महादेवजी बहुत तरहें हुनका मनबैत छथिन्ह और पुनः मिलन होइछ।

रहसि स्वामिना सार्द्धं सुष्वाप मरमेश्वरी
कैलासस्यैकदेशे च रम्ये चंदनकानने।

परन्तु–

रेतः पतनकाले च स विष्णुर्विष्णुमायया
विधाय विप्ररूपं तु आजगाम रतेर्गृहम्।

जहाँ द्रवित हेबाक बेर अबै छैन्ह कि विष्णु भगवान् विप्रक रूप धारण कय ओहिठाम पहुँचि जाइ छथिन्ह और कहै छथिन्ह जे 'हम सात साँझक उपासल छी; पारण कराउ।' ई सुनि–

उत्तस्थौ पार्वती त्रस्ता सूक्ष्मवस्त्रं विधाय च

पार्वती झपट देह पर नूआ रखैत उठि जाइ छथि।

और–

पपात वीर्यं शय्यायां न योनौ प्रकृतेस्तदा

शिवजीक धातु ओछाओन पर चुबि जाइत छैन्ह। ओही सँ गणेशक जन्म छैन्ह।

हमरा मुँह तकैत देखि खट्टर कका बजलाह–एहि कथाक तात्पर्य बुझल-हौक? जौं संभोगो काल ब्राह्मण आबि जाथि त चटपट उठि कऽ पहिने हुनका भोजन करावक चाही। धन्य छथि ई पेटू देवता!

खट्टर कका मुसकुरा उठलाह। बजलाह–गणेश कैं लोक विघ्नेश कहैन्ह। परन्तु हुनक अपने जीवन विघ्न सँ भरल छैन्ह। एक त गर्भाधानेमे विघ्न भऽ गेलैन्ह। दोसर जनमितहिं शनिक दृष्टि पड़ि गेलैन्ह। मस्तक कटा गेलैन्ह त गजानन भऽ गेलाह। एकटा दाँत टूटि गेलैन्ह त एकदंत बनि गेलाह।

हम–एकटा दाँत कोना टूटि गेलैन्ह?

खट्टर कका कहय लगलाह–हौ, एक बेर शिवजी-पार्वती एकान्तमे रहथि। गणेश द्वारपाल भऽ कऽ ठाढ़ रहथिन्ह। ओही बीचमे परशुराम शिव-पार्वती कैं प्रणाम करक हेतु पहुँचि गेलथिन्ह। गणेश रोकि देलथिन्ह जे–

क्षणं तिष्ठाऽधुना भ्रातः ईश्वरः सुरतोन्मुखः।

''औ भाइ! एखन कनेक थम्हि जाउ; ओ लोकनि एकान्त शयनागारमे छथि।''

परन्तु परशुराम कैं एतबा धैर्य कहाँ! ओ फरुसा लऽ कऽ गणेश पर छुटलाह। आब दुनूमे मल्ल-युद्ध होमय लगलैन्ह। गणेशजी हुनका सूँड़मे लपेटि लेलथिन्ह और लगलथिन्ह घुमावय। तखन परशुराम खिसिया कऽ एक फरुसा मारलथिन्ह जाहि सँ गणेशक एकटा दाँत टूटि गेलैन्ह। ओ दाँत जे टूटि कऽ खसल तकरा शब्द सँ संपूर्ण कैलास डोलि उठल। ताहि सँ शिव-पार्वतीक रतिबंध टूटि गेलैन्ह। पार्वती रोसा कऽ बहरैलीह और परशुराम कैं मारय छुटलीह। ई देखि परशुराम सटक सीताराम भऽ गेलाह, और लगलथिन्ह स्तुति करय जे–

त्रिपुरस्य महायुद्धे सरथे पतिते शिवे
यां तुष्टवुः सुरा सर्वे तां दुर्गां प्रणमाम्यहम्।

अर्थात ''हे दुर्गे! जखन त्रिपुर सँ युद्ध करैत महादेव रथ सहित खसि पड़लाह, तखन देवता सभ अहींक आराधना कैलन्हि।'' ....हौ, बुझह त ई लोकनि भारी मौगा छलाह।

हम–खट्टर कका, पुराणमे एहन एहन बात हैतैक से हमरा नहि बुझल छल।

खट्टर कका–तोरे किऐक? बहुतो गोटा कैं नहि बुझल हैतैन्ह। ब्रह्मा किऐक अपूज्य भेलाह से जनैत छह?

हम–नहि।

खट्टर कका पुराण उनटबैत बजलाह–तखन सुनह। एक बेर मोहिनी यौवनक मद सँ मत्त भय ब्रह्मा सँ संभोग-याचना कैलथिन्ह। वृद्ध ब्रह्मा अपन असमर्थता प्रकट करैत कहलथिन्ह जे कोनो रसिक युवा कैं पकड़ू। बारंबार उसकौलो पर ब्रह्मा तैयार नहि भऽ सकलाह। तखन मोहिनी हुनका धिक्कारय लगलथिन्ह जे–

इंगितेनैव नारीणां सद्यो मत्तं भवेन्नरः
करोत्याकृष्य संभोगं यः स एवोत्तमो विभो।
ज्ञात्वा स्फुटमभिप्रायं नार्या संप्रेषितो हि यः
पश्चात् करोति संभोगं पुरुषः स च मध्यमः।
पुनः पुनः प्रेषितश्च स्त्रिया कामार्त्तया च यः
तथा न लिप्तो रहसि स क्लीवो न पुमानहो।

अर्थात उत्तम पुरुष ओ थीक जे बिनु कहने, नारीक मन पाबि, अपना लग खींचि,

रमण करय। मध्यम पुरुष ओ थीक जे नारीक कहला पर रमण करय। और जे बारंबार कामातुरा नारी द्वारा उसकौलो पर रमण नहि करय से पुरुष नहि, नपुंसक थीक।

परन्तु एतेक धुसैलो उत्तर ब्रह्मा कें उत्तेजना नहि भेलैन्ह। तखन मोहिनी क्रोध सँ उन्मत्त भय शाप देलथिन्ह–

अये ब्रह्मन् जगन्नाथ वेदकर्त्ता त्वमेव च
स्वकन्यायां यत् स्पृहा स कथं हससि नर्त्तकीम्
दासीतुल्यां विनीतां च दैवेन शरणागताम्
यतो हससि गर्वेण ततोऽपूज्यो भवाऽचिरम्!

अर्थात 'हे ब्रह्मा! अपना कन्याक संग त विचारे नहि रहल और अहाँ हमरा लग धर्मात्मा बनै छी! जाउ, अहाँ आइ दिन सँ अपूज्य भऽ गेलहुँ।'

आब ब्रह्माक चारू मुँह म्लान भऽ गेलैन्ह। दौड़ल दौड़ल विष्णुलोक गेलाह। ओतय विष्णुओ डाँटय लगलथिन्ह–

यदि कामवती दैवात् कामिनी समुपस्थिता
स्वयं रहसि कामार्त्ता न सा त्याज्या जितेन्द्रियैः
ध्रुवं भवेत् सोऽपराधी तस्या अवमानतः।

"यदि संयोगवश कामिनी एकान्तमे आबि स्वयं उपस्थित भऽ जाय त ओकरा कथमपि नहि त्याग करी। जे कामार्त्ता नारीक एहन अवज्ञा करैत अछि से निश्चय अपराधी थीक।" लक्ष्मी सेहो ब्रह्मा पर छुटलथिन्ह–

ब्रह्मा कथं न जग्राहं वेश्यां स्वयमुपस्थिताम्
उपस्थितायास्त्यागे च महान् दोषो हि योषितः।

"जखन वेश्या स्वयं मुँह खोलि कऽ संभोगक प्रार्थना कैलकैन्ह तखन ब्रह्मा किऐक ने इच्छा-पूर्ति कैलथिन्ह? ई नारीक भारी अपमान भेल।

बेचारे ब्रह्मा बहुत कानय-कलपय लगलाह। तखन जा कऽ कोनहुना उद्धार भेलैन्ह जे–

तव मंत्रं न गृह्णन्ति केऽपि वेश्याभिशापतः
त्वदन्य- देव- पूजायां तव पूजा भविष्यति।

"वेश्याक शाप सँ अहाँक मंत्र त केओ नहि लेत। तखन जाउ, आन आन देवताक पूजाक संग अहूँक पूजा भऽ जाएत।" .....तैं देखै छह नहि, डाली झाड़ि कऽ ब्रह्माक पूजा होइ छैन्ह!

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, पुराण-कर्त्ता लोकनि ब्रह्माक एहन दुर्दशा किऐक कैने छथिन्ह?

खट्टर कका–हौ, एहू सँ बेसी दुर्दशा कैने छथिन्ह। स्वयं अपना कन्या सँ अपवाद लगा देने छथिन्ह।

तां संभोक्तुं मनश्चक्रे सा दुद्राव भिया सती।

ब्रह्मा कन्याक पाछाँ दौड़लाह। ओ भयभीत भयऽ पड़ैलीह। तखन ऋषिगण ब्रह्मा कें गंजन करय लगलथिन्ह–

त्वं स्वयं वेदकर्त्ता च कन्यां संभोक्तुमिच्छसि
अस्माकं दूरतो दूरं गच्छ कामार्त्तमानस!

ब्रह्मा ग्लानि सँ आत्महत्या करऽ लेल उद्यत भऽ गेलाह।

ब्रह्मा शरीरं संत्यक्तुं व्रीडया च समुद्यतः।

आइकाल्हि ककरो विषयमे एना लिखितऽथिन्ह त तुरंत मानहानिक मोकदमा चला दितैन्ह। परन्तु देवतागण त मूक छलाह। ब्रह्मा कें चारिटा मुँह रहने की हैतैन्ह?

हम–खट्टर कका, ब्रह्मवैवर्त्तपुराणमे ब्रह्माक एहन दुर्दशा?

खट्टर कका बजलाह–हौ, तुलसीदल कोन छोट, कोन पैघ? सभ पुराणमे त देवताक तेहने दुर्दशा देखैत छिऐन्ह। ब्रह्मपुराणोमे ब्रह्मा कें कोन महत्त्व देल गेलैन्ह अछि? बेचारे कें गौरीक विवाहमे दुर्गति कऽ देल गेल छैन्ह।

हम–से की?

खट्टर कका–देखह, ब्रह्मा स्वयं अपना मुँह सँ की कहैत छथि!

तानदर्शमहं तत्र होमं कुर्वन् हरान्तिके
दृष्टेऽगुंष्ठे दुष्टबुद्ध्या वीर्यं सुस्राव मे तदा
लज्जया कलुषीभूतः स्कन्नं वीर्यमचूर्णयम्
महीर्यात् चूर्णितात् सूक्ष्मात् वाल्यखिल्यास्तु जज्ञिरे!

भावार्थ ई जे ब्रह्मा महादेवक समीप बैसि होम करैत रहथि। ताही काल गौरी पर दृष्टि पड़ि गेने स्खलन भऽ गेलैन्ह। तखन लाजे कठुआ गेलाह और चुपचाप चुटकी सँ ओकरा मलि देलथिन्ह। ताही वीर्यकण सँ वाल्यखिल्य मुनिक जन्म भेलैन्ह।

हम क्षुब्ध होइत कहलिऐन्ह–खट्टर कका, पुराणकर्त्ता कें एहन एहन बात कोना लिखल गेलैन्ह?

खट्टर कका बजलाह–हौ, ओ लोकनि निर्लज्ज छलाह। जहाँ देखू, 'स वीर्य प्रमुमोच ह।' 'तद्वीर्य निपपात ह।' देवताक वीर्य की भेलैन्ह? शीतल प्रसाद भेलैन्ह! एक चुरू चुआ देलन्हि। से अगस्ति पीलन्हि, तत्तहि। घृत आँच देखि कऽ पिघलैत अछि, ओ आँचर देखि कऽ पिघलि जाइ छलैन्ह। कतहु मोहिनी पर, कतहु वृन्दा पर, कतहु गौरी पर, कतहु हुनका सखी पर!

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, हमरा, नहि बूझल छल जे पुराणमे एतबा अश्लीलता भरल हैतैक।

खट्टर कका बजलाह—हौ, अश्लीलता त तेहन तेहन छैक जे कहबा सुनबा योग्य नहि। देखह, पद्मपुराणमे केहन वर्णन छैक! जालंधर शंकरक छद्मवेश बना गौरीक समीप जाइ अछि। गौरी अपना सखी कैं सिखा पढ़ा कऽ ओकरा लग पठबैत छथिन्ह। जालंधर हुनका पकड़ि लैत छैन्ह और लगै छैन्ह भोग करय।

ततो जालन्धरः सद्यो वीर्यं स प्रमुमोच ह
अल्पेन्द्रियश्च संयातो वेगतः कुरुनन्दन!
तदा हि प्रोहितो दैत्यः न त्वं रुद्रो भविष्यसि
अल्पवीर्योऽधमाचारो नाहं गौरी हि तत्सखी।

थोड़बे कालमे जालंधर स्खलित भऽ अल्पेन्द्रिय भऽ जाइ अछि। ई देखि सखी कहै छथिन्ह—'अहाँ महादेव नहि छी, से हम बूझि गेलहुँ। परन्तु हमहूँ अहाँ कैं छका देलहुँ। हम गौरी नहि, हुनकर सखी थिकहुँ।''

हम—खट्टर कका, पुराणमे एहन एहन व्यभिचारक उपाख्यान किऐक भरल छैक?

खट्टर कका—हौ, एहन एहन व्यभिचार-पुराण गढ़ि कय कवि लोकनि अपना मनक विकार बाहर कैने छथि। एही द्वारे एक आलोचक खिझिया कऽ गारि देने छैन्ह—

पौराणिकानां व्यभिचार-दोषो
नाशंकनीयः कृतिभिः कदाचित्
पुराणकर्त्ता व्यभिचारजातः
तस्यापि पुत्रः व्यभिचारजातः।

हम—खट्टर कका, ई सभ देखि कऽ त यैह बूझि पड़ैत अछि जे पुराणमे यौन वासनाक समुद्र लहरा रहल अछि।

खट्टर कका—ताहिमे कोन संदेह? तेहन तेहन विकृत वासनाक उदाहरण छैक जे देखि कऽ गुम्म रहि जैबह। एकटा ब्रह्मपुराणेक उपाख्यान लैह—

सहस्र वर्षक वृद्ध गौतम अपनो सँ अधिक वृद्धा तपस्विनीक संग भोग करैत छथि। से देखि गौतमी कहैत छथिन्ह—

अभिषिंचस्व भार्यां त्वं वृद्धां विगलितस्तनीम्
नवयौवनसम्पन्ना रम्यरूपा भविष्यति।

ओहि गौतमी-तीर्थमे स्नान करैत देरी गलितस्तनी वृद्धा पुनः नवयौवना सुन्दरी बनि जाइत छथि।

एक मही नामक तरुणी विधवा भेला पर वेश्या बनि जाइ छथि। ओ अपना युवा पुत्र सँ समागम करैत छथि।

मेने न पुत्रमात्मीयं स चापि न मातरम्
तयोः समागमश्चाऽसीद्विधिना मातृपुत्रयोः।

और ई दोष कटैत छैन्ह गौतमी-तीर्थमे स्नान कैला सँ।

सप्तर्षिक पत्नी गंगाजीमे जा कऽ गर्भपात कऽ अबैत छथि। ओ पाप-प्रक्षालन होइत छैन्ह गौतमी-तीर्थ मे स्नान कैला सँ।

इन्द्र गौतम पत्नी अहल्या मे गमन करैत छथि। गौतम शाप दैत छथिन्ह—

भगभक्त्या कृतं पापं सहस्रभगवान् भव।

ओहि शाप सँ हुनका देहमे सहस्र टा छिद्र भऽ जाइ छैन्ह। पाछाँ गौतमी-तीर्थमे स्नान कैने ओ सहस्र टा आँखि बनि जाइ छैन्ह।

चन्द्रमा गुरु-पत्नी तारा मे गमन करैत छथि। जखन ओ तारा अपन पति बृहस्पतिक संग गौतमी-तीर्थमे स्नान करै छथि तखन शुद्ध भऽ जाइ छथि।

तथाऽकरोच्चैव तारा भर्त्रा स्नानं यथाविधि
पुष्पवृष्टिरभूत्तत्र जयशब्दो व्यवर्त्तत।

केवल शुद्धे नहि होइ छथि, हुनकर जयजयकार होइ छैन्ह, देह पर पुष्पवर्षा होइ छैन्ह! हौ, हमरा त बूझि पड़ै अछि जे ई सभ पंडाक प्रॉपगंडा छैक। केहनो घोर पाप करू, अमुक तीर्थमे आबि कऽ स्नान क रू, शुद्ध भऽ जाएब। जौं एना माहात्म्य-वर्णन नहि होइतैक त पंडा-पुरोहित कैं आमदनी कोना होइतैन्ह?

हम कहलिऐन्ह—खट्टर कका, अहाँ त तेहन पुराण-चर्चा चल देलहुँ जे हमरा एहीठाम भागवतक रस भेटि गेल। आब आज्ञा दियऽ। घड़ी घंटा बाजि रहल छैक। कथा प्रारंभ हैतैक। कहलकैक अछि—

येषां श्रीकृष्ण-लीला-ललित-रसकथा-सादरौ नैव कर्णौ
धिक् तान् धिक् तान् धिगेतान् कथयति सततं कीर्त्तनस्थो मृदंगः।

खट्टर कका मुसकुराइत बजलाह—हौ, गुरुजनक रस-कथा सुनब कि कोनो नीक बात थिकैक? हम त ई बुझैत छी जे—

येषां श्रीकृष्ण-लीला-ललित-रसकथा- धृष्टकर्णौ
धिक् तान् धिक् तान् धिगेतान् कथयति सततं कीर्त्तनस्थो मृदंगः।

खैर, तों नव-नौतार छह। जाह। परन्तु तोरा काकी कैं हम ओहि मे नहि जाय दैबैन्ह, से कहि दैत छियौह। बूढ़-पुरान कैं भागवत-पुराण सँ कोन प्रयोजन?

दर्शन शास्त्रक रहस्य

खट्टर कका भाङ्गक नशामे चुस्त रहथि। हमरा हाथमे ग्रन्थ देखि पुछलन्हि–ई की थिकौह ?

हम कह[illegible]लिऐन्ह–दर्शनशास्त्र।

खट्टर कका मुसकुरा उठलाह। बजलाह–आब तोरा पर वतहपन सवार भेलौह अछि।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, दर्शनकार कैं अहाँ बताह कऽ कऽ बुझैत छिऐन्ह ?

खट्टर कका बजलाह–हमहीं किऐक ? संसारे बुझैत छैन्ह। हिनका लोकनिक बुद्धिए विलक्षण होइ छैन्ह। घृताधारं पात्रं वा पात्राधारं घृतम् ?

हम–खट्टर कका, कपिल कणाद गौतम आदि......

खट्टर कका बजलाह–हौ, ओहो लोकनि अधिकतर हमरे जकाँ फरठिया ब्राह्मण छ्लाह! फटकनाथ गिरधारी, जिनका लोटा ने थारी। अभावक जतेक अनुभव हुनका लोकनि कैं भेलैन्ह ततेक ककरो हैब कठिन छैक। तैं एतेक रासे दुःखक वर्णन कऽ गेल छथि।

हमरा चुप्प देखि खट्टर कका कहय लगलाह–हौ, असलमे बुझह त हुनका लोकनि कैं बड्ड कष्ट होइ छलैन्ह। जाड़मे मृगछाला पर कठुआ कऽ सूतथि। गर्मीमे घामे-पसीने तर भऽ जाथि। स्वाइत तितिक्षाक अभ्यास पर एतेक जोर दऽ गेल छथि! उपाये की रहैन्ह! वर्षामे कुटी चुबैन्ह। साँप-गोजर पैसि जाइन्ह। बहराथि त पैरमे कुश-पाथर गड़ैन्ह। गाछे गाछ फल ताकथि। वानर सैं बचैन्ह त फलाहार, नहि त निराहार! पेट गलि कऽ पीठमे सटि जाइन्ह। ताहि पर बाघ-सिंहक भय! निशाचरक उपद्रव! हुनका लोकनिक दुःखक ओर-छोर नहि रहैन्ह। तखन यदि सर्वं दुःखम् नहि कहितथि त की कहितथि ? ओहन पृष्ठभूमिमे दुःखवाद नहि बहराइत त की बहराइत ? ओ लोकनि तेहन उदासीक सुर उठौलन्हि जे एखन धरि एहि देशक लोक विरहा गबैत अछि। ई बुझह त हुनके लोकनिक कलपना पड़ल छैक।

हम–परन्तु ओ लोकनि जे एतेक रासे द्रव्यगुणक विवेचना कऽ गेल छथि ?

खट्टर कका बजलाह–हौ, ओहो लोकनि जनै छलाह जे सभ पदार्थक मूल थीक द्रव्य। गुणी लोकनि धनवानेक आश्रित रहैत ऐलाह अछि। तैं द्रव्याश्रितो गुणः। सभटा कार्य द्रव्येक बल पर होइ छैक। तैं द्रव्याश्रितं कर्म। ई लोकनि द्रव्यक हेतु खेखनिया करैत छलाह। परंतु अन्तमे अभाव पर आबि अटकि जाइ

छलाह। कामिनी-कांचन बिना जी खखुटल रहै छलैन्ह। तैं एही दुनू पर सभ सैं अधिक चोट कैने छथि। आन लोक केवल सूत्र पढ़ैत छैन्ह, हम भितरिया मनोविज्ञान पढ़ैत छिऐन्ह।

हम–परन्तु ओ लोकनि कर्मफल ओ पूर्वजन्मक जे एतेक विचार कैने छथि ?

खट्टर कका बजलाह–हौ, धनवान कैं भोग करैत देखि छाती नहि फाटि जाय, तैं पूर्वजन्मक कल्पना कैने छथि। "ओ नीक कर्म कैने छल तैं हलुआ खा रहल अछि, हम अधलाह कर्म कैने छलहुँ, तैं अल्हुआ खा रहल छी। आगाँ नीक कर्म करब त हमरो हलुआ भेटि जाएत।" ई सभ मनमोदक थिकैक। परन्तु जनता-जनार्दन कैं एहि सँ बहुत आश्वासन भेटय लगलैन्ह, तैं ई दर्शनजाल अमरलत्ती जकाँ पसरि गेल।

हम–परंच एतेक रासे ब्रह्मज्ञान ओ वैराग्य.......

खट्टर कका बजलाह–हौ, दरिद्र ब्राह्मण कैं जखन धनाढ्य कैं देखि संताप होइन्ह त ब्रह्म वा भूमा क कल्पना सँ संतोष कऽ लेथि जे ओकरो सँ बाढ़ि कैओ छैक। अपन हीनताक अनुभव होइन्ह त सोऽहम् (हमहूँ वैह थिकहुँ) जपय लागि जाथि। यदि कोनो दुःख होइन्ह त श्लोक बनाबथि जे दुःख-सुख दुहू मिथ्या थीक। कतहु स्वाभिमान पर ठेस लगैन्ह त वीतरागक लक्षण गढ़य लागथि।

हम–खट्टर कका, महर्षि लोकनि कैं दिव्य दृष्टि रहैन्ह तैं ने वेदान्तक उत्पत्ति भेल।

खट्टर कका बिहुँसैत बजलाह–हुनका लोकनि कैं मंद दृष्टि रहैन्ह, तैं वेदान्तक उत्पत्ति भेल।

हम–अहाँ कैं त सभ बातमे हँसिए रहैत अछि।

खट्टर कका–हौ, हँसी नहि करैत छिऔह। वृद्ध ऋषि लोकनि अन्हरोखे उठि जंगल-मैदान जाइ छलाह। बाटमे जौर वा जुन्ना देखि साँपक भ्रम भऽ जाइन्ह। ताही अनुभव सँ बुझलन्हि जे सम्पूर्ण संसारे भ्रम थीक। रज्जौ यथाहेर्भ्रमः। हुनका लोकनिक दृष्टिदोषेँ अथवा हमरा लोकनिक अदृष्ट दोषेँ वैह अदर्शन एतिठामक दर्शन बनि गेल। वैह भ्रम एखन धरि वेदान्तक नाम सँ सभ्रम पाबि रहल अछि।

हम–खट्टर कका, अहाँ जे ने सिद्ध कऽ दी! कहाँ रस्सी, कहाँ दर्शनशास्त्र!

खट्टर कका–हौ दुनूमे घनिष्ठ सम्बन्ध छैक। रस्सिए देखि कऽ सांख्यवला त्रिगुणक कल्पना कैने छथि, तार्किक लोकनि उभयतः पाशा रज्जु बनौने छथि, आस्तिक लोकनि कर्मबन्धनक जाल रचने छथि........

हम–त कि कर्महुक सिद्धान्त मनगढ़न्ते छैक ?

खट्टर कका–हौ, सामाजिक परिस्थितिएक अनुसार दर्शन बनैत छैक। एहि कृषिप्रधान देशमे रोपनी ओ कटनी देखि कर्मफलक सिद्धान्त निर्मित भेल। ई सभ कल्पना खेतीक अनुभव पर आधारित छैक। तहिना कुम्हार कैं देखि ब्रह्मांड कुलाल (सृष्टिकर्त्ता)क कल्पना कैल गेल। घूमैत चाक कैं देखि भवचक्रक कल्पना

कैल गेल। लोहारक निहाइ देखि कूटस्थ ब्रह्मक कल्पना भेल। कोनो ठगिन युवती कैं देखि मायाक कल्पना भेल।

हम—परन्तु उपनिषदमे जे एहन गूढ़ तत्त्व भरल छैक?

खट्टर कका—सभ तत्त्वक सार यैह जे संसारमे दुःखे दुःख छैक, तैं संसार छोड़ि दे। हौ, एकटा रहथि निरसन पाठक। हुनका दुध नहि पचैन्ह त वथनिया सभ कैं कहने भेल फिरथिन्ह जे 'मालजाल जयाल थीक, छान-पगहा फोलि कऽ भगा।' आमाशय उखड़ैन्ह त मिरचाइ कैं गारि पढ़य लागथि। एक बेर कौआ दुःख देलकैन्ह त कटहरक गाछे काटय लगलाह। हमरा त बूझि पड़ै अछि जे उपनिषद वला ऋषि लोकनि निरसन पाठकक प्रपितामह छलाह।

हम—खट्टर कका, ओ लोकनि संसार कैं असार बूझि निवृत्तिमार्गक उपदेश कैने छथि।

खट्टर कका—हौ, कोनो वस्तुक तत्त्व ओहिमे प्रवेश कैला सँ भेटैत छैक। यदि कोनो वर कोबरक रातिमे शीर्षासन लगा लेथि त की अनुभव हैतैन्ह जे सारक बहिनमे की सार होइ छैक! हौ, जहिना थिकौआ सभ पर्याप्त विदाइ नहि भेटने सासुर सँ रुसैत छलाह, तहिना ई लोकनि संसार सँ रुसैत छलाह।

हम—हुनका लोकनि कैं अनुभव भऽ गेलैन्ह जे संसारमे केवल क्षणिक आनन्द.....

खट्टर कका—हौ, क्षणिक आनन्द कैं तुच्छ किऐक बुझैत छहौक? रायड़ी, रसगुल्ला, सभमे त क्षणिके आनन्द छैक। तखन कि सभ मधुर कैं गंगामे विसर्जन कऽ देबक चाही? एखन तोरा लघी लागल छौह। लघी कैने क्षणिक आनन्द भेटतौह। तैं कि लघी कैनाइ छोड़ि देबह?

हम—खट्टर कका, हुनका लोकनि कैं बोध भऽ गेलैन्ह जे संसारमे स्थायी तत्त्व नहि, तैं हेय थीक।

खट्टर कका—फेर वैह बात? हौ, हम पुछैत छिऔह जे कोन वस्तुमे स्थायी तत्त्व छैक? लोक खाइ अछि, पिबै अछि, जे मलमूत्रमे परिणत भऽ जाइ छैक। माखन-मिश्री सँ पोसल शरीर चिता पर भस्म भऽ जाइ छैक। तखन त भोजन-छाजन, देह-हाथ, सभ हेय थीक? रोगग्रस्त भेला उत्तर दवाइ करबाक प्रयोजन नहि? केओ भूखे पियासे मरथि त मरय दिऐन्ह?

हम—हुनका लोकनिक कथ्य ई जे समस्त सांसारिक सुखमे दुःख मिश्रित रहै छैक, तैं ओ त्याज्य।

खट्टर कका डँटैत बजलाह—फेर वैह मूर्खता! हौ, तोरा नाक पर माछी बैसतौह त कि नाके काटि कऽ फेकि देबह? माछ खैया काल काँट छोड़ाबय पड़ैत अछि त की कंठी बान्हि ली? नित्य कोनो ने कोनो पाहुन पहुँचिए जाइ छथि त कि भानस छोड़ि दी? भाङ रगड़वामे परिश्रम पड़ैत अछि त कि ठंढइ

पिनाइ छोड़ि दी? लिखबोमे त हाथ दुखाइते छैक, तखन ऋषि लोकनि सूत्र किऐक रचैत छलाह?

हम—खट्टर कका, ओ लोकनि ब्रह्मोपासनामे लीन रहैत छलाह।

खट्टर कका भभा कऽ हँसि पड़लाह। बजलाह—हौ बताह! ब्रह्मोपासनाक अर्थ आत्मोपासना। 'अयमात्मा ब्रह्म'। एकर अर्थ जे यैह आत्मा ब्रह्म थिकाह! 'एकोऽहं द्वितीयो नास्ति'। एकर अभिप्राय जे अपना सँ अतिरिक्त केओ दोसर नहि, अर्थात अनका एको पाइ गोजर नहि करक चाही। 'सर्वं ब्रह्ममयं जगत्'। एकर तात्पर्य जे सर्वमात्ममयं जगत्—"अर्थात अपने आत्मा वा स्वार्थ लऽ कऽ ई संसार छैक।" याज्ञवल्क्य यैह रहस्य अपना स्त्री कैं बुझौने छथि जे स्त्री पुत्र धन धान्य देवता—सभ किछु अपने खातिर प्रिय होइ छैक।[1] हम यैह बात सोझ भाषामे तोरा काकी कैं कहै छिऐन्ह त नास्तिक कहबैत छी। ओ संस्कृतमे बाजि गेलाह त वेदवाक्य भऽ गेल।

हम—खट्टर कका, अहाँ वेदक निन्दा करै छिऐक?

खट्टर कका सरौता सँ सुपारीक कतरा करैत बजलाह—हम की करबैक? स्वयं वेदमे वेदक निन्दा छैक। ऋग्वेद वेदपाठ करयवला कैं दादुर सँ उपमा दैत छैन्ह।[2] उपनिषद कुकुरक झुंड सँ।[3]

हम—ऐं! तखन वेद-वेदान्त प्रति लोक कैं निष्ठा कोना हैतैक?

खट्टर कका—हौ जी, बुझह त वेद-वेदान्त, दुनू तेहने। सभमे स्वार्थक पूजा चलैत छैक। वेदवला सोझसोझ कहै छथि—यज्ञार्थं पशवः सृष्टाः। वेदान्तवला पालिश चढ़ा दैत छथिन्ह—अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणः न हन्यते हन्यमाने शरीरे। एकर तात्पर्य ई जे छागर कटवामे दोष नहि। देखै छह नहि, खस्सी-बकरी कैं खास कऽ 'अज' नाम देल गेल छैक। वेद वला अनेक देवताक पूजा करैत छलाह। वेदान्त वला सभ सँ बड़का देवता आत्मा (अपना) कैं बूझय लगलाह। वेदमे जे स्वार्थवाद छलैक तकरा ई लोकनि 'अन्त' पर अर्थात पराकाष्ठा पर पहुँचा देलन्हि। हम त 'वेदान्त'क यैह अर्थ बुझैत छी।

हम—परन्तु वेदान्तमे त सत् चित् आनन्द......

खट्टर कका—हौ, जखन 'स्व' और 'पर' मे कोनो भेदे नहि, तखन स्वपुरुष और परपुरुषमे अन्तर की? वेदान्तमे त परपुरुष और परब्रह्म एके थिकाह। यदि सब स्त्रीगण वेदान्तिनी बनि जाथि त केहन भारी अनर्थ हो!

हमरा मुँह तकैत देखि खट्टर कका बजलाह—हौ, बूझह त प्रत्येक दर्शनक मूलमे भोग-भावना छैक। न्याये लैह। गौतम कैं अहल्या सन नारी भेटलथिन्ह। बस, लिंग ओ व्यभिचारक वर्णन सँ अपना दर्शन कैं भरि देलन्हि। कपिल कैं तेहनो नारी नहि भेटलथिन्ह तखन प्रकृतिनटीक कल्पना कय द्वैतवादक सौः।

---

1. बृ० २।४।१-१४ 2. ऋ० ७।१०३ 3. छां० १।१२

पुरौलन्हि। संन्यासी शंकराचार्य कैं अद्वैतवादो मे माया विना काज नहि चललैन्ह। हँ, यदि हिनका लोकनि कैं नीक जकाँ विवाह-द्विरागमन होइतैन्ह त एना किऐक छिछिऐतथि? वियोग सँ योगक प्रादुर्भाव होइ छैक। कामक बाट बन्द भेने निष्कामक मार्ग सुझैत छैक। रतिक द्वार अवरुद्ध भऽ गेने आत्मरतिक द्वार फुजैत छैक। अभावे शालिचूर्णं वा–ई सनातन नियम थिकैक।

हम–परन्तु योगदर्शनमे जे एतेक यम-नियम-आसनक विधान छैक?

खट्टर कका–हँ, [illegible] 'यम' त यमक सहोदर थीक। असलमे बूझह त योगसूत्र ओ कामसूत्र, दुनू मसियौत। चौरासी भोगासनक नकल पर चौरासी योगासन बनल अछि। सुरतयोगक अनुकरण पर समाधियोगक कल्पना भेल अछि। परंतु जकरा असली घृत भेटतैक से डालडाक पाछाँ किऐक दौड़त? जकरा पद्मिनी छैक से पद्मासन किऐक लगाओत? जकरा कामिनीक अष्टांग प्राप्त छैक से योगक अष्टांगमार्ग कैं साष्टांग किऐक नहि करतैन्ह? पतंजलि कैं तिलांजलि किऐक नहि देतैन्ह? जकरा बिम्बस्तनी छैक से बेलपात कोन दुःखें खोंटत? यदि सा वनिता हृदये मिलिता क्व जपः क्व तपः क्व समाधिविधिः!

हम–खट्टर कका, सांख्य दर्शनमे देखियौक, केहन सूक्ष्म विवेचन भरल छैक!

खट्टर कका–देखावह।

हम–सत्कार्यवाद लियऽ। कतेक तथ्यपूर्ण छैक।

खट्टर कका–हँ जी, हम छी स्थूलबुद्धि लोक। कनेक फरिछा कऽ कहह।

हम–खट्टर कका, अहाँ त सभ टा जनितहि छी। सत्कार्यवादक अर्थ जे कोनो कार्यक उत्पत्ति नहि होइ छैक।

खट्टर कका–तखन तोहर उत्पत्ति कोना भेलौह?

हम–आशय ई जे प्रत्येक कार्य पूर्वहि सँ कारणमे विद्यमान रहैत अछि।

खट्टर कका–तखन त गर्भाधान सँ पहिनहि गर्भ रहैत छैक?

हम–खट्टर कका, अहाँ त तेहन ठोंइपटाका कहि दैत छिऐक जे लोकक मुँहे बंद कऽ दैत छिऐक।

खट्टर कका–हँ, एही खातिर त हम बदनाम छी। हमरा अनटोटल गप्प नहि सोहाइत अछि।

हम–खट्टर कका, सांख्यक पुरुष......

खट्टर कका–हँ, सांख्यक पुरुषक नाम नहि लैह। हमरा त तेहन तामस चढ़ैत अछि जे करि कऽ एक भंगघोटना लगाबी।

हम–से किऐक, खट्टर कका?

खट्टर कका उत्तेजित होइत बजलाह–हँ, प्रकृति नाच करौ, क्रीड़ा करौ, सभ किछु करौ, और पुरुष चुपचाप पड़ल टुकुर-टुकुर तकैत रहथु। एहनो पुरुष कतहु पुरुष कहाबय! माउगि ने मरद, बलिगोविना! सांख्यक पुरुष सन नपुंसक

संसारमे कतहु नहि भेटतीह। यदि समस्त भारतवासी ओहने पुरुष बनि जाथि त देशक की हाल हो!

हम–परंच एहन पुरुषक कल्पनामे किछु कारण त अवश्ये हैतैक?

खट्टर कका–कारण यैह जे सांख्यकार अपनहुँ द्रष्टे पुरुष टा छलाह। स्त्री त छलथिन्हे नहि। तखन प्रकृति कैं सुन्दरी मानि संतोष करैत छलाह–प्रकृतेः सुकुमारतरं न किंचिदस्तीति मे मतिर्भवति।

हम–परन्तु सांख्यमे प्रकृतिक अर्थ स्त्री त नहि छैक?

खट्टर कका–हँ, हमरा त सांख्यक प्रकृति और स्त्री, दुनू एक्के बूझि पड़ैत अछि। दुहू सृष्टिकर्त्री, दुहू पुरुष कैं रिझैबामे प्रवीण, दुहू अनादिकाल सँ पुरुष कैं आकर्षण-पाशमे बन्हने। पुरुषक संयोग भेने दुहूक साम्यावस्था भंग भऽ जाइ छैन्ह।

हम–परन्तु प्रकृति त त्रिगुणात्मिका होइ छथि। सत्त्व, रज, तम......

खट्टर कका–ई तीनू गुण स्त्रीओमे रहैत छैन्ह। प्रेममे सत्त्वगुण, कलहमे रजोगुण ओ रूसबामे तमोगुण प्रकट होइ छैन्ह। नारीक नेत्रोमे तीनू गुण छैन्ह–अमिय हलाहल मदभरे, श्वेत श्याम रतनार। श्वेत सत्त्वगुण, श्याम तमोगुण, लाल रजोगुण। नारीक ई तीनू गुण–अमृततत्त्व, विषतत्त्व ओ मदतत्त्व, समय-समय पर हर्ष, विषाद ओ मोह उत्पन्न करैत अछि। यैह त्रिगुणात्मिका प्रकृतिक रहस्य थिकैक। बुझलहौक?

हम–धन्य छी, खट्टर कका। अहाँ सांख्यक प्रकृति कैं साड़ी पहिरा कऽ स्त्री बना देलिऐन्ह।

खट्टर कका–हम किऐक बनैबैन्ह? सांख्यकारिका बला तिरंगी चुनरी पहिरा कऽ नट्टिन बना देलथिन्ह अछि। रंगस्य दर्शयित्वा निवर्त्तते नर्त्तकी यथा नृत्यात्!

हम–परन्तु प्रकृति पुरुषमे त अंध-पंगु बला सम्बन्ध कहल गेल छैन्ह?

खट्टर कका नहुँ नहुँ बजलाह–एकर गूढ़ार्थ यैह जे स्त्री कामान्ध होइ छथि और पुरुष पंगु अर्थात लाचार होइ छथि। देखियो कऽ किछु कऽ नहि सकै छथि। ई सभ रूपक थिकैक। द्रष्टा लोकनि कैं जीवनमे जेहन अनुभव होइ छलैन्ह तेहने तेहन दृष्टान्त दऽ गेल छथि।

हम–खट्टर कका, अहाँ हँसी करै छी।

खट्टर कका–हँसी नहि करै छिऔह। प्रकृति वेश्या जकाँ नव नव रूप धारण कय छमकैत छथि। पुरुष सफर्दा जकाँ निर्विकार तकैत रहै छथि। चित् स्वरूप। किन्तु जखन प्रकृति ऊपर चढ़ैत छथिन्ह त चित् चित्त भऽ जाइ छथि। हँ, असलमे बूझह त सांख्यमे विपरीत रतिक भावना छैक।

हम–ऐं! सांख्यमे विपरीत रति! खट्टर कका, अहाँक सभ टा बात विपरीते होइ अछि।

खट्टर कका–तोरा सभक मतिए विपरीत छौह जे सोझ-सोझ बात बुझबऽमे नहि अबैत छौह। हौ, एहि देशक कवि लोकनि बेसी रसिक होइत ऐलाह अछि। तेँ काव्यमे विपरीते रति अधिक भेटतौह। सांख्योमे सैह बात बूझह। तेँ प्रकृति कैं सक्रिय ओ पुरुष कैं निष्क्रिय कहल गेलैन्ह अछि।

हम–परन्तु प्रकृतिक समस्त क्रिया-कलाप त एही द्वारे होइ छैन्ह जे अन्तमे पुरुष कैं मोक्ष भऽ जाइन्ह। पुरुषविमोक्षनिमित्तं तथा प्रवृत्तिः प्रधानस्य।

खट्टर कका–से त अन्तमे हैबे करैत छैन्ह। मोक्ष 'मुच्' धातु सँ बनै छैक, जकर अर्थ 'छोड़ब'। जखन प्रकृति देवी सभ कर्म कऽ कऽ छोड़ि दैत छथिन्ह, तखन पुरुष कैं अपना स्खलन पर आत्मग्लानि होइत छैन्ह। एहना स्थितिमे कामराहित्य वा आत्मज्ञान हैब स्वाभाविके। पुरुष पुनः चिन्मात्र भऽ कैवल्यावस्थामे आबि जाइ छथि, अर्थात एसकरे रहि जाइ छथि।

हम–खट्टर कका, अहाँ त दोसरे अर्थ लगा दैत छिऐक। सांख्यक पुरुष त निर्विकार थिकाह।

खट्टर कका मुसकुरा उठलाह। बजलाह–तखन त सांख्यमतानुसार व्यभिचारमे कोनो टा दोष नहि?

हम–से कोना, खट्टर कका?

खट्टर कका–मैथुन शरीर-शरीरमे होइ छैक वा पुरुष-पुरुषमे?

हम–शरीर-शरीरमे। पुरुष त निर्लिप्त रहै छथि।

खट्टर कका–तखन प्रकृतिक एक परिणाम दोसरा पणिाम सँ मिलिकय तेसर परिणामक सृष्टि करै छथि। एहिमे पुरुषक बाप कैं–बाप त छथिन्हें नहि–पुरुष कैं की लगैत छैन्ह? गहकी कैं घेघ, सौदागर कैं बेथा?

हम–अहाँक बात सुनि त किछु फुरितहि ने अछि!

खट्टर कका–फुरतौह की? जेहने सांख्यक पुरुष मौगा, तेहने वेदान्तक ब्रह्म नपुंसक। एक कैं प्रकृति पटकैत छैन्ह, दोसरक माथ पर माया नचैत छैन्ह।

हम–खट्टर कका, ऋषि लोकनि इन्द्रियजन्य सुख कैं हेय कऽ कऽ बुझैत छलाह।

खट्टर कका–सैह त भ्रम छौह। ओ लोकनि मुँह सँ इन्द्रिय कैं गारि पढ़ैत छलाह। किन्तु मन सँ ओहि पाछाँ व्याकुल रहै छलाह। तखन, वैदिक ऋषि सोझिया छलाह, तेँ भोगवादक ढोल पिटैत छलाह। उपनिषदक ऋषि बेसी गँहीर छलाह, तेँ डुबि कऽ पानि पिबैत छलाह।

हम–उपनिषदक ऋषि त ब्रह्मवादी छलाह?

खट्टर कका व्यंग्य करैत बजलाह–हँ, तेँ ने उपनिषदमे संभोगक वर्णन भरि देने छथि!

हम–ऐं! उपनिषदमे संभोग! खट्टर कका, अहाँ ब्रह्मानन्द कैं विषानन्द सँ मिला रहल छिऐक?

खट्टर कका–हम किऐक मिलैबैक? वैह लोकनि मिलौने छथि। हुनका लोकनि कैं ब्रह्मानन्दोमे स्त्री-भोगक आनन्द भेटैत छैन्ह। बृहदारण्यक* देखह। ओही प्रकरणमे लिखै छथि जे–यथा प्रियया स्त्रिया संपरिष्वक्तो न बाह्यं किंचन वेद नान्तरमेव.....अर्थात जेना प्रेयसीक आलिंगन-पाशमे भीतर बाहर कथुक बोध नहि रहैत छैक......

हम–खट्टर कका, एखन अहाँ तरंगमे छी?

खट्टर कक्काक आँखि लाल भऽ गेलैन्ह। बजलाह–हौ, तरंगमे त ओ लोकनि रहथि जिनका यज्ञ ओ वेदपाठ–सभमे संभोगे सुझैत छलैन्ह। देखह, यज्ञक उपमा कथी सँ दैत छथि? योषा वा अग्निर्गौतमस्तस्य उपस्थ एव समिल्लोमानि धूमयोनिरर्चिर्यदन्तः करोति तेऽङ्गारा अभिनन्दा विस्फुल्लिगा तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवा रेतो जुह्वति तस्या आहुतेर्गर्भः संभवति.......[1]

हम–एकर अर्थ?

खट्टर कका–बेसी खोलि कऽ कोना कहिऔह? भातिज थिकाह। भावार्थ ई जे आगि स्त्री थीक। सिल्ला जननेन्द्रिय थीक। धूआँ रोइयाँ थीक। ज्वाला स्त्रीक गुप्तांक थीक। लुत्ती जे झड़ै अछि से आनन्दक कण थीक। आहुति वीर्य थीक। ताहि सँ गर्भ होइत छैक।

हम–हद्द भऽ गेल। ई कि सत्ये उपनिषदमे छैक?

खट्टर कका–तखन कि हम अपना दिस सँ गढ़ि कऽ कहि रहल छिऔह? उपनिषदमे सभ सँ पैघ छैक बृहदारण्यक और छांदोग्य। से दुनूमे ई वर्णन भेटि जैतौह।

हम–खट्टर कका, एकर कारण की?

खट्टर कका–हौ, ऋषि लोकनि पुरान रसिक छलाह। यज्ञक उपमा त देखबे कैलह। आब वेदपाठीक उपमा सुनि लैह। उपमंत्रयते स हिंकारः, ज्ञपयते स प्रस्तावः, स्त्रियः सह शेते स उद्गीथः।[2]

हम–कनेक बुझा कऽ कहिऔक।

खट्टर कका–हिंकार, प्रस्ताव, उद्गीथ–ई सभ सामगानक विधि थिकैक। ऋषि लोकनि कैं एहुमे संभोगे सुझैत छैन्ह। हिंकार भेल लगमे बजौनाइ, प्रस्ताव भेल खुलि कऽ कहनाइ, उद्गीथ भेल स्त्रीक संग सुतनाइ....

हम–खट्टर कका, अहाँ कैं नशा चढ़ल अछि!

खट्टर कक्काक आँखि और बेसी लाल भऽ गेलैन्ह। बजलाह–नशा त हुनका लोकनि कैं चढ़ल रहैन्ह जे कहि गेल छथि–प्रति स्त्री सह शेते स प्रतिहारः। अर्थात प्रत्येक स्त्रीक संग सूती, वैह प्रतिहार प्रस्त थीक। आब एहि सँ बेसी खुल्लमखुल्ला की हैतैक?

---

* बृ० (४।३।२१)

1. बृ० ६।२।१३, छां० ५।८।१-२ 2. छां० २।१३

हम–खट्टर कका, भऽ सकै अछि, एकर किछु दोसरो अर्थ होइक।

खट्टर कका जोर सँ हमसैत बजलाह–तखन स्वयं शंकराचार्यक मुँह सँ व्याख्या सुनि लैह। न कांचन स्त्रियं स्वात्मतल्पप्राप्तां परिहरेत् समागमार्थिनीम्[1] अर्थात समागम चाहयवाली जे स्त्री शय्या पर आबि जाथि तिनका नहि छोड़क चाही। .....आबो तोरा सन्देहे छौह?

हमरा स्तब्ध देखि खट्टर कका बजलाह–हौ, ई लोकनि व्यभिचार कैं खेल कऽ कऽ बुझैत छलाह। यस्य जाया वै जारः स्यात्तं वेद्भिष्यादाय पात्रेऽग्निमुपसमाधाय[2] ....ककरो स्त्री रहौक, ककरो संग व्यभिचार होउक, कनेक घृत आगिमे दऽ देल, खिस्सा खतम। हौ, ई लोकनि पहुँचल छलाह।

हम–तखन वाममार्ग सँ अन्तरे की रहलैक?

खट्टर कका–किच्छु नहि। वेदे वेदान्त सँ त वाममार्ग बहराएल अछि। बूझह त "अहं ब्रह्मास्मि" थिक वाक्य सभ अनर्थक जड़ि थीक। अद्वैतवादी सजातीय, विजातीय, स्वगत, सभ भेद उठा देलन्हि। एही अभेदक तरंगमे रंग-बिरंगक रंग-रभस चलय लागल। अहं भैरवस्त्वं भैरवी। कृष्णोऽहं भवती राधा चावयोरस्तु संगमः। एही प्रकारें स्वच्छन्द विहारक विहाड़ि आबि गेल। बूझह त कतेको भक्ति-सम्प्रदाय एही पर आधारित अछि। कलार्णवतन्त्रमे कहै छथि–

मद्यमांसविहीनेन न कुर्यात् पूजनं शिवे।
न तुष्यामि वरारोहे भगलिंगामृतं विना।

एही प्रकारें जकरा जे मनमे ऐलैक से एकटा मार्ग चला देलक। आनन्द-भोगक हेतु। कहाँ धरि कहिऔह? पाप-पुण्य बुझिवक लेल होइ छैक। जे पारंगत छथि तिनका हेतु धर्म की और अधर्म की? देखै छह नहि, गीता सेहो कहै छथि–

बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते।[3]

जखन ऊँचका शिखर पर लोक चढ़ि जाइत अछि तखन निचका बंधन स्वतः फुजि जाइ छैक।

निस्त्रैगुण्ये पथि विचरतां को विधिः को निषेधः!

जिनका ई बात खचित भऽ गेलन्हि, सैह द्रष्टा। जीवन्मुक्तक अर्थ निर्वन्ध वा स्वच्छन्द। बूझह त यैह असली रहस्य थिकैक। नहि त ब्रह्म वा मोक्ष कि कतहु आकाशमे लटकल छथि?

---

1. शांकर भाष्य, छां० २।१३
2. वृ० ६।४।१२
3. गीता २।५०

वेदक भेद

ओहि दिन फगुआ रहैक। खट्टर कका तीन बेर पीबि चुकल छलाह और चारिम बेर तैयारी कय रहल छलाह।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, ओहि फगुआमे अहाँ कहने रही जे वेदमे शृंगार-रस भरल छैक।[1]

खट्टर कका गुलाबी नशामे रहथि। ई सुनितहिं आँखि लाल भऽ गेलन्हि। बजलाह–बेजाय कोन कहलिऔह? शृंगार कि एहन ओहन? तेहन तेहन वर्णन छैक जे की कालिदासमे भेटतौह?

हम–खट्टर कका, कहाँ वैदिक ऋषि ओ कहाँ रसिक-शिरोमणि कालिदास!

खट्टर कका हाथमे सोंटा लैत बजलाह–हौ, वैदिक ऋषि कालिदासक नाना छलाह। तेहन तेहन अश्लील उपमा दऽ गेल छथि जे धिया-पुताक समक्ष बाजल नहि जा सकैत अछि। तैं हमर विचार जे विद्यार्थी ओ ब्रह्मचारी कैं वेद नहि पढ़य देवक चाही।

हम–खट्टर कका, अहाँक त सभटा गप्प अद्भुते होइ अछि। वेदमे कतहु अश्लीलता होइक?

खट्टर कका कुंडीमे भाङक पत्ती कुटैत बजलाह–तखन सुनि लैह। एहिना ऊखरिमे सोमक पत्ती कुटा रहल अछि। मुसरक चोट पड़ि रहल छैक। से देखि ऋचाकार उत्प्रेक्षा करैत छथि–

यत्र द्वाविव जघनाधिषवण्या
उलूखल सुतानामवेद्विन्दुजल्गुलः।

–ऋ० १।२८।२

हम–खट्टर कका, एकर अर्थ की भेलैक?

खट्टर कका बजलाह–"जेना कोनो विवृतजघना युवती अपना दुनू जाँघ फलकौने होथि और ओहिमे....." तों भातिज थिकाह। बेसी खोलि कऽ कोना कहिऔह? ई नहि बुझह जे ओ लोकनि शुद्ध वैदिके टा छलाह।

हम–खट्टर कका, अहाँ त एहन बात कहि दैत छी जे हमर मुँहे बंद भऽ जाइ अछि।

खट्टर कका लोटाक मुँहमे अङपोछा लगा भाङक गोला ओहि पर रखलन्हि और ऊपर सँ जल ढारैत आङुर सँ घोरय लगलाह। पुनः विहुँसैत बजलाह–देखह, एहिना आङुर चलैत देखि ऋषि कहै छथि–

---

1. देखू, ब्रह्मानंद शीर्षक तरंग।

अभित्वा योषणो दश, जारं न कन्या नूषत, मृज्यसे सोम सातये।

—ऋ० ९।५६।३

ई मंत्र गायत्री छंदमे छैक। एकर अर्थ बुझलहैक?

हम—नहि।

खट्टर कका—तखन सुनह। मंत्रकार उत्प्रेक्षा करैत छथि जे कामातुरा कन्या अपना जार (इयार) कैं बजायक हेतु एहिना दसो आङ्गुर सँ इशारा करैत अछि।

हम चकित भय पुछलिऐन्ह—एँ! वैदिको युगमे व्यभिचार होइत छलैक?

खट्टर कका मुसुकाइत बजलाह—केवल होइते नहि छलैक। वैदिक ऋषि कैं ओहिमे रसो भेटैत छलैन्ह।

खट्टर कका कलशीमे भाङ ढारय लगलाह। ढारैत ढारैत हँसी लागि गेलैन्ह।

हम पुछलिऐन्ह—खट्टर कका, हँसलहुँ किऐक?

खट्टर कका बजलाह—देखह, एहिना कलशीमे रस ढराइत देखि एकटा ऋषि लहरमे आबि कऽ की कहैत छथि?

मर्य इव युवतिभिः समर्षति सोमः कलशे शतयाम्ना पथा

—ऋ० ९।८६।१६

अर्थात कलशमे अनेक धार सँ रसक फोहारा छूटि रहल अछि जेना युवतीक....

हम—खट्टर कका, ओहन बड़िवल ऋषि कैं एहन एहन उपमा कोना देल गेलैन्ह?

खट्टर कका बजलाह—ऋषि लोकनि कैं ई उपमा तेहन रसगर लगैत छैन्ह जे बारंबार दोहरौने छथि। देखह दोसरो मंत्र कहै छिऔह—

सरज्जारो न योषणां, वरो न योनिमासदम्

—ऋ० ९।१०१।१४

अर्थात ई रस तहिना कलशमे जा रहल अछि जेना युवतीमे जारक....

हम—आश्चर्य! वेदमे कतहु जारक वर्णन हो!

खट्टर कका बजलाह—हौ, ताहि दिन जारक कतेक महत्त्व छलैक से एही गायत्री छंद सँ बूझि जाह—

अभिगावो अनूषत, योषा जारमिव प्रियम्, अगन्नाजिं यथाहितम्।

—ऋ० ९।३२।५

अर्थात "हे सोम! हम ताही प्रकारें अहाँ कैं नेहोरा करैत छी जेना स्त्री अपना जार कैं।" ई जारक चर्चा हजार ठाम भेटतौह। बूझह त वेदमे स्वामी सँ बेसी जारेक चलती छैक।

हम—खट्टर कका, एहि सभ मंत्र सँ त यैह सिद्ध होइत छैक जे वैदिक युगमे स्त्री कैं बेसी स्वतंत्रता छलैन्ह।

खट्टर कका—ताहिमे कोन संदेह? वैदिक स्त्री स्वच्छन्द होइत छलीह। कतहु कुमारि जार कैं बजबैत छलीह। कतहु विवाहिता जारक नेहोरा करैत छलीह। जार प्रेयसी सँ कोना रमण करैत छलाह[1] और युवती कैं युवा जार भेटला सँ केहन तृप्ति होइ छलैन्ह[2] तकरो वर्णन वेदमे भेटि जैतौह।

हम—तखन त वैदिक समाजमे जारजो संतान होइत छल?

खट्टर कका—ताहूमे संदेहे? व्यभिचार सँ अनेको स्त्री कैं गर्भ रहि जाइत छलैन्ह। उर्वशीक पेट सँ वशिष्ठक जन्म भेलैन्ह।[3] दीर्घतमाक गर्भिणी माता वृहस्पति सँ संभोग कय वर्णसंकर संतान उत्पन्न कैलन्हि।[4] पुरुकुत्साक स्त्री सप्तर्षिक कृपा सँ त्रसदस्यु नामक पुत्र प्राप्त कैलन्हि।[5] कतेको स्त्री गुप्तरूप सँ प्रसव करैत छलीह।[6] कहाँ धरि कहिऔह? जौं सभटा व्यभिचारक प्रसंग गनाबय लगिऔह त पाँचम वेद बनि जाय। एही डरें त हम वेदक भाषाटीका घरमे नहि रखैत छी। जौं राखी त स्त्रीगण दूरि भऽ जाथि। हम त बुझैत छी जे एही कारणें स्त्री कैं वेद पढ़बाक अधिकार नहि देल गेलैन्ह अछि।

हम—खट्टर कका, ई त मौलिक गप्प कहल। हम बुझैत छलहुँ जे वैदिक युगमे ब्रह्मचर्यक डंका बजैत छल......

खट्टर कका—आब त बुझलहक जे कोन डंका पर चोट पड़ैत छलैक!

हम—खट्टर कका, मानि लेल जाओ, यैह बात सत्य। तथापि ऋषि लोकनि कैं कि एना खुल्लमखुल्ला 'उघाड़िमहंकरिष्ये' उचित छलैन्ह?

खट्टर कका—हौ, जे राति दिन सोमक नशामे बुत्त भेल रहत से और बजबे की करत?

खट्टर कका—परन्तु यदि ओ लोकनि भंगक तरंगमे लिखि गेल छथि तखन ओहन ओहन गूढ़ बातक विवेचना कोना कैने छथि?

खट्टर कका एक लोटा भाङ चढ़बैत बजलाह—हौ, नशामे जेहन जेहन बात मुँह सँ बहरैबाक चाही तेहने तेहन त बहरायल छैन्ह। देखह, सोमक तरंगमे एक ऋषि कतेक दूर धरि बहकि जाइ छथि!

शेपो रोमण्वन्ती भेदौ वारिन्मंडूक इच्छतीन्द्रायेन्दो परिस्रव।

—ऋ० ९।११२।४

आब एहि सँ बेसी गूढ़ बात की हैतैक?

हम—खट्टर कका, एकर अर्थ बुझा दियऽ।

खट्टर कका—अर्थ यैह जे '....ई (कामदंड) रोमाच्छदित.... (विवर) मे प्रवेश करबाक हेतु इच्छुक छथि। हे सोम! अहाँ चुबि जाउ।' ....आब तोंही कहह, एहि सँ बेसी कोनो मदबकी की बाजि सकैत अछि!

1. ऋ० ९।१०१।१४। 2. ऋ० १०।३०।६। 3. ऋ० ७।३३।१२। 4. ऋ० १।१४७।३। 5. ऋ० ४।४२।८। 6. ऋ० २।२९।१।

हम क्षुब्ध होइत कहलिऐन्ह–खट्टर कका, हम त ऐह जनैत छलहुँ जे ऋचाकार लोकनि द्रष्टा ओ मनीषी छलाह। ऋषिका लोकनि सेहो आजन्म ब्रह्मचारिणी रहि वेदमंत्रक रचना करैत छलीह।

खट्टर कका भभा कऽ हँसि पड़लाह। बजलाह–ऋषिका लोकनि त और जुलुम करैत छलीह। ओ ब्रह्मचारिणी सभ तेहन तेहन मंत्रक रचना कऽ गेल छथि जे विवाहितोक कान कटने छथि।

हमरा मुँह तकैत देखि खट्टर कका बजलाह–देखह, एक घोषा नामक ब्रह्मचारिणी कहै छथि–

को वा शयुत्रा विधवेव देवरं मर्यं न योषा कृणुते।

–ऋ० ७।४०।२

अर्थात जेना विधवा स्त्री शयनकालमे अपना देवर कैं बजा लैत अछि तहिना हम यज्ञमे अहाँ कैं बजा रहल छी।

हम–बाप रे बाप! कुमारीक मुँह सँ एहन बात?

खट्टर कका भङ्घोटना साफ करैत बजलाह–तों एतबे मे बपहाड़ि तोड़य लगलाह? देखह, अंगिरा ऋषिक कन्या शश्वती देवी एक युवा पुरुष (आसंग)क नग्न अंग देखि कोना उन्मत्त भऽ जाइ छथि–

अन्वस्य स्थूरं ददृशे पुरस्तादनस्थ उरुरवरम्बमाणः
शश्वती नार्यभिचक्ष्याह सुभद्रमर्य भोजनं बिभर्षि।

–ऋ० ८।१।३४

हम–खट्टर कका, एकर अर्थ बुझा कऽ कहू।

खट्टर ककाक आँखि नशा सँ और बेसी लाल भऽ गेलैन्ह। बजलाह–''हुनू जंघाक मध्यमे लटकल, पुष्ट, लम्बायमान......देखि कऽ शश्वती कहलथिन्ह–'वाह! ई त खूब सुन्दर भोग करबा योग्य.....धारण कैने छी।' ''

हम कान मुनैत कहलिऐन्ह–खट्टर कका, हद्द भऽ गेल। एना त ओ युवती बाजय जे पीबि कऽ उन्मत्त हो।

खट्टर कका बजलाह–हाँ, ओ सभ मदोन्मत्ता छलीह। सूर्या नाम्नी एक ब्रह्मचारिणी कहैत छथि–

यस्यां बीजं मनुष्या वपन्ति, या न उरू उशती विश्रया,
ते यस्यामुशन्त प्रहराम शेपम्।

–ऋ० १०।८५।३७

हम–एकर अर्थ नहि बुझलिऐक।

खट्टर कका–उरूक अर्थ हुनू जंघा। विश्रयक अर्थ पसारब। शेपक अर्थ जननेन्द्रिय। प्रहरामक अर्थ चोट मारब। आब तों अपने अर्थ लगा लैह। यदि तैयो नहि बुझि पड़ैह त कोनो वैदिक सँ पूछि लहुन।

हम देखल जे खट्टर कका भंगक तरंगमे बहल जा रहल छथि। भसियाइत भसियाइत कहाँ सँ कहाँ पहुँचि जैताह तकर ठेकान नहि। कहलिऐन्ह–खट्टर कका, हमरा नहि बूझल छल जे वेदोमे एतेक अश्लीलता हैतैक।

खट्टर कका बजलाह–अश्लीलता देखबाक हो त ऋग्वेदक दशम मंडलमे देखह जे इन्द्र ओ इन्द्राणी कोना मत्त भऽ कऽ काम-क्रीड़ा करैत छथि।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका....

परन्तु खट्टर कका अपना सुरमे बढ़ल गेलाह–इन्द्राणी ताल ठोकि कऽ कहैत छथिन्ह–

वृषभो न तिग्मशृंगोऽन्तर्यूथेषु रोरुवत्।

–ऋ० १०।८६।८५

'अर्थात जेना टेढ़ सिंघ बला साँढ़ मस्त भऽ ढेकरैत, रमण करैत अछि तहिना अहूँ हमरा सँ करू।' तकरा बाद जे संभोगक नग्न चित्रण अछि से काश्मीरी कोकशास्त्रक कान कटैत अछि।

हम पुनः टोकलिऐन्ह–खट्टर कका......

परन्तु हुनक प्रवाह रोकब असंभव छल। ओ अपना धुनमे बढ़ल गेलाह–युवती लोमशाक संभोग-वर्णन पढ़बह त दंग रहि जैबह। लोमशा यौवनक मद सँ मत्त भय अपन सभ आवरण उतारि फेकैत छथि और राजा स्वनय कैं कहैत छथिन्ह जे–

उपोप मे परामृश मामेदभ्राणिमन्यथा
सर्वाहमस्मि रोमशा [illegible]रीणामचाविका।

–ऋ० १।१२६।७

अर्थात ''अहाँ हमरा लगमे आउ और निर्धोख भऽ कऽ खूब थरू। देखू जे हमरा [illegible] रोइआँ सन सन कतेक रासे........।'' आब एहि सँ बाढ़ि [illegible]ज्जिता [illegible]नो युवतीक हेतु की भऽ सकैत छैक? और तकरा बाद जे रति-संग्राम मचैत अछि से कहबा-सुनबा योग्य नहि। लोमशा तेना कऽ आवेष्टित करैत छथिन्ह जे राजा ओहीकाल गदगद भय हुनका रतिमल्लताक सर्टिफिकेट दय दैत छथिन्ह–

अगाधिता परिगाधिता या कशीकेव जंगहे
ददाति मह्यं यादुरी याशुनां भोज्या शता।

–ऋ० १।१२६।७

[illegible] सत्तनीर [illegible] देह लप[illegible] कऽ तेना रमण करैत छथि जे रस सँ सराबोर कय दैत छथि।

हम क्षुब्ध होइत कहलिऐन्ह–खट्टर कका, अहाँ भाङक नशामे त ने ई सभ बाजि रहल छी?

खट्टर कका बजलाह–तों एतबेमे घबड़ा गेलाह ? कनेक यम-यमीक संभाषण पढ़ह त बुझबहीक जे सहोदर भाइ-बहिनमे कोन तरहक संभोग वार्त्ता चलैत छैक ![1] तेहन-तेहन अश्लील गप्प छैक जे एखन भाडोक नशामे हमरा मुँह सँ नहि बहरा सकैत अछि। विश्वास नहि हो त ऋग्वेदक दशम मंडल उनटा जाह।

हम–खट्टर कका, अहाँ वेदक बात कहि रहल छी कि वाममार्गक ?

खट्टर ककाक आँखि ओड़हुलक फूल जकाँ लाल भऽ गेलन्हि। बजलाह–हमरा वेद ओ वाममार्गमे कोनो भेद नहि बूझि पड़ैत अछि। जखन पिता-पुत्रीक संभोग-वर्णन पढ़बह जे प्रजापति कोना युवती कन्यामे सिंचन करैत छथि त रोमांच भऽ जैतौह ![2]

हम कान पर हाथ रखैत बजलहुँ–शान्तं पापम्। ई त वाममार्गो सँ टपि गेल।

खट्टर कका बजलाह–हमरा जनैत त वेदे सँ वाममार्ग बहराएल अछि। मदिरा, मांस ओ मैथुन–एही सभक वर्णन सँ त वेद भरल अछि। वाममार्गी कि पंचमकार कतहु आन ठाम सँ लाएल छथि ?

हम–खट्टर कका, तखन तऽ ऋषि लोकनि चार्वाकोक कान कटलन्हि ?

खट्टर कका–हौ, वैदिक ऋषि चार्वाकक गुरु छलाह। देखह, अगस्त्य मुनि खुल्लमखुल्ला लोपामुद्रा कैं उपदेश दैत छथिन्ह जे मनुष्य कैं आजीवन खूब भोग करक चाही।[3] वैह बात चार्वाक बजलाह त नास्तिक भऽ गेलाह। और अगस्त्य मुनि बजलाह त आस्तिक बनल रहलाह। परन्तु हम त हौ बाबू ! स्पष्टवक्ता छी। वेदक कर्त्ता लोकनि घोर नास्तिक छलाह। लोक कहै अछि–नास्तिको वेदनिन्दकः। हम कहैत छी–नास्तिको वेदलेखकः।

हम–खट्टर कका, अहाँ त तेहन तेहन बात कहै छी जे हमरा किछु फुरितहि नहि अछि। मदिरा, मांस, मैथुन ! तखन वेदमे वैह टा छैक कि और किछु ?

खट्टर कका शान्त भाव सँ बजलाह–और बहुत किछु छैक। जूआ ! चोरी ! हत्या !

हम–ऍं ! जूआ, चोरी, हत्या ! खट्टर कका, अहाँ होशमे छी ने ?

खट्टर कका बजलाह–तोरा विश्वास नहि होइ छौह त स्वयं देखि लैह। ऋग्वेदक एक अध्याय[4] केवल जूआ ओ जुआड़ीक वर्णन सँ भरल छैक। ओहि समय तिरपन प्रकारक पासा छल।[5] एक ऋषि कहै छथि–'जहिना स्त्री अपना इयारक घर जाइत अछि तहिना हमहूँ जूआक अड्डा पर दौड़ल जाइ छी।[6] कतहु इन्द्र चोरी करैत छथि।[7] कतहु अग्नि चोरी करैत छथि।[8] कतहु पणि

---

१. ऋ० (१०।१०।१)। २. ऋ० (१०।६१।५-६)। ३. ऋ० (१।१७९।२)। ४. ऋ० (१०।३४)। ५. ऋ० (१०।३४।८)। ६. ऋ० (१०।३४।५)। ७. ऋ० (३।४८।४)। ८. ऋ० (१।७२।४)।

गाय चोरबैत छथि।[1] कतहु बड़द लूटल जा रहल अछि।[2] और हत्याक त कोनो हद्दे हिसाब नहि। कतहु वृत्रक वध[3], कतहु नमुचिक वध[4], कतहु शुष्णक वध[5], कतहु कुयवक वध[6]। बूझह त वेदक पात रक्तपात सँ भरल अछि। जखन नरमेधक ई हाल त पशुवधक कोन गणना ?

हम विषण्ण होइत पुछलिऐन्हि–खट्टर कका, वैदिक युगमे एहन एहन बात ! से किऐक ?

खट्टर कका नोसि लैत बजलाह–हौ, जे राति-दिन मदिरामे डूबल रहत से और करबे की करत ? सभ देवतामे श्रेष्ठ इन्द्रक चरित्र देखहुन। कोनो कर्म हुनका सँ छूटल अछि ? ओ गर्भवती स्त्रीक हत्या पर्यन्त कैने छथि।[7] साँढ़क मांस पर्यन्त भक्षण कैने छथि ?[8]

हम–खट्टर कका, वैदिक युगमे भक्ष्याभक्ष्यक विचार नहि रहैक ?

खट्टर कका–यदि सैह विचार रहितैक त घोड़ेक मांसक वर्णन अबितैक ?[9] और कहाँ धरि जे कुकुरक अँतड़ी पर्यन्त पका कऽ खेबाक वृत्तान्त छैक।[10]

हम–राम राम ! बीभत्सक पराकाष्ठा भऽ गेल।

खट्टर कका–त एहिमे हमर कोन दोष ? जे छैक से कहैत छिऔह। मद्य ओ मांसक वर्णन त सुनबे कैलह। ततःपर त मैथुने होइ छैक। से वेद मे देखह। कतहु शिश्नदेवक वर्णन[11], कतहु भगदेवताक पूजा[12]। पतहु व्यभिचारिणीक चर्चा[13]। कतहु कुमारिक संभोग[14]। कतहु गर्भिणी पर बलात्कार[15]। कतहु गुप्त प्रसवक गप्प[16]। कतहु भ्राता-भगिनीमे अनुचित प्रस्ताव[17]। कतहु पिता-पुत्रीमे[18]। कतहु जारज सन्तानक जन्म[19]। कतहु अप्राकृतिक व्यभिचार। एक ऋषि कैं नहि किछु भेटलैन्ह त घैलेमे रेतःपात कऽ देलन्हि[20]।

हमरा मुँह सँ बहराएल –हरे राम ! हरे राम ! हम त बुझैत छलहुँ जे वेदमे केवल धर्मक बात हैतैक।

खट्टर कका बजलाह–हँ, बहुत गोटे एहिना बुझैत छथि। परन्तु हम तऽ टीकाकारक अनुसार अर्थ कहलिऔह अछि। वेदमे नाना प्रकारक वस्तु छैक। एक सँ एक अलबेडल बात ! सौतिन के मारबाक उपाय पर्यन्त ![21] कतहु वृद्धक विवाह युवती सँ होइ छैन्ह।[22] कतहु वृद्धाक विवाह युवा सँ।[23] कतहु घोड़ी रथमे जोतल जाइ अछि।[24] कतहु स्त्रीक पलटन पुरुष सँ लड़ब जाइ अछि।[25]

---

१. ऋ० (१।६।५)। २. ऋ० (१।११।५)। ३. ऋ० (१।३३।४)। ४. ऋ० (१।५३।७)। ५. ऋ० (१।६३।३)। ६. ऋ० (१।१७४।७)। ७. ऋ० (१।१०१।१)। ८. ऋ० (१०।८६।४)। ९. (१।१६२)। १०. ऋ० (४।१८।३)। ११. ऋ० (७।२१।५)। १२. ऋ० (७।३२।४)। १३. ऋ० (१०।४०।६)। १४. ऋ० (१।६६।४)। १५. ऋ० (१।१४७।३)। १६. ऋ० (२।२९।१)। १७. ऋ० (१०।१०)। १८. ऋ० (१०।६१)। १९. ऋ० (४।४२।८)। २०. ऋ० (७।३३।१३)। २१. ऋ० (१०।१५९)। २२. ऋ० (१।५१।१३) २३. ऋ० (१।११७।७) २४. ऋ० (९।८६।३७)। २५. ऋ० (५।३०।९)।

कतहु नपुंसकक स्त्री कैं पुत्र होइ छैक।[1] कतहु गर्भे सँ शिशु झगड़ा करैत छैक जे हम पेट सँ नहि बहराएब।[2] कतहु घोड़ी सँ गायक जन्म होइ छैक।[3] कतहु पुत्र अपना माय कैं जन्म दैत अछि।[4] हौ, तेहन तेहन उटपटाँग बात भरल छैक जे बुद्धि काज नहि दैतौह।

हम क्षुब्ध होइत पुछलिऐन्ह–खट्टर कका, एहन एहन बात वेदमे कोना ऐलैक? ई सभ क्षेपक त ने थिकैक?

खट्टर कका आँखि मुनैत बजलाह–के जानय? सोम-रसक प्रवाहमे जिनका जे फुरलैन्ह से बाजि गेलाह। हम अपना तरंगमे कतेक बात बाजि जाइ छी से केओ मोजरे नहि दैत अछि। और ओ लोकनि जे बाजि गेलाह से वेदवाक्य भऽ गेल! ....हौ, किछु अनट-विनट त ने बजना गेल अछि?

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, फगुआक दिन सभ किछु माफ रहैत छैक। ताहूमे अहाँ कैं।

तावत काकी एक थार चाशनीदार छेनाक मालपुआ ओ मधुर नेने पहुँचि गेलीह। खट्टर कका उल्लसित भय बजलाह–देखह, असली यज्ञक सामग्री आबि गेल।

हमरा मुँह तकैत देखि कहलन्हि–हौ, वैदिकै यज्ञक रहस्य की थिकैक? हवनकुंड थीक उदरकुंडक प्रतीक। हुताशनक ज्वाला जठराग्निक सूचक थीक। समिधाक अर्थ भोज्य पदार्थ। तैं कस्मै देवाय हविषा विधेम[5]–एहि प्रश्नक असली उत्तर हम बुझैत छी 'उदरदेवाय'।

हम–परन्तु......

खट्टर कका–परन्तु की? वैदिक ऋचाक स्रोत थीक मधुर भोजन। मधुर पर छंद फुरैत छैक। एखनो और ताहू दिन। हमरा लोकनिक पूर्वज कैं कतहु मीठ गुल्लरो भेटि जाइन्ह त गीत उठा देथि–

चरन् वै मधु विन्दति, चरन् स्वादुमुदुम्बरम्।[6]

मधु वा घृत भेटि गेने आनन्द सँ नाचि उठथि–

मधुश्चुतं घृतमिवं सुपूतम्......।[7]

गाछ-वृक्ष, जल, स्थल, आकाश, सभमे मधुरे जोहने भेल फिरथि–

मधुमतीरोषधीर्द्याव आपो मधुमन्नो भवन्तु.........।[8]

संपूर्ण विश्वमे हुनका लोकनि कैं मधुरे-मधुर सुझैन्ह। आनन्द सँ मधु-पान कय मधु पाठ करथि–

---

1. ऋ० (१।११७।२४)। २. ऋ० (४।१८)। ३. ऋ० (१।१२१।२)। ४. ऋ० (१२।९।४)। ५. ऋग्वेद (१०।२१।५)। ६. ऐतरेय (३३।३।१५)। ७. ऋग्वेद (४।५७।२)। ८. ऋग्वेद (४।५७।३)

मधुवाता ऋतायते। मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्तु ओषधीः। मधु नक्तमुतोषसो।
मधुमत् पार्थिवं रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।
मधुमान् नो वनस्पतिः। मधुमान् अस्तु सूर्यः।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः।[1]

हौ एहि देशमे मुइलो उत्तर पितर कैं ओम् मधु मधु मधु कहि कऽ तृप्त कैल जाइ छैन्ह। एहन मधुर-प्रेमी जाति और के हैत? वेश, आब मधुरेण समापयेत् करह।

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, आइकाल्हि हमरा मिष्टान्न वर्जित अछि।

खट्टर कका बजलाह–मिष्टान्ने तऽ शिष्टान्न थीक। सैह वर्जित, तऽ खैबह की? धृष्टान्न? हौ मधुरेण समापयेत् एकर असली तात्पर्य बुझै छहीक? मधुरे खाइत-खाइत ई जीवनं समाप्त कऽ दी। यैह हमरा लोकनिक पूर्वजक मूलमंत्र थीक। बल्कि, हम त एक अक्षर परिष्कारो कऽ दैत छिऐक जे–मधुरे न समापयेत अर्थात मधुर भेटैत जाय त हाथ बारबे नहि करी।

ई कहि खट्टर कका सस्वर वेदपाठ करय लगलाह–

जिह्वया अग्रे मधु मे जिह्वामूले मधूलकम्
मधुवन्मे निक्रमणं, मधुमन्मे परायणम्।
वाचा वदामि मधुमद् भूयासं मधुसंदृशम्।*

पुनः बजलाह–एकर अर्थ बुझलहीक? यावज्जीवन मधुर खाइत रही और मधुर बजैत रही। यैह वेदक सभ सँ मधुर मंत्र थिकैक। ...लैह, फगुआक प्रसाद पाबह।

---

1. यजुर्वेद १३।२७-२९
* अथर्ववेद १।३४।२-३

खट्टर ककाक टटका गप्प

एम्हर एक दिन खट्टर कका सँ भेंट भेल छल। पुछलिऐन्ह—खट्टर कका, प्रसन्न छी ?

बजलाह—प्रसन्न की रहब ? सन्न छी। अपना देशक हालति देखिकऽ! सुजला, सुफला, शस्यश्यामला भूमि कैं हमरा लोकनि अजला, अफला, शून्यश्यामला बना देलिऐन्ह और भिक्षापात्र नेने संसारक आगाँ ठाढ़ छी—अन्नं देहि!

हम—खट्टर कका, एना किऐक भेलैक ?

खट्टर कका—हौ, कारण बड्ड प्राचीन छैक। वैदिके युग सँ हमरा लोकनिक जिह्वा पर द अक्षर बैसल अछि। देहि, देहि, देहि! पहिने इन्द्र वरुण कैं गोहरबैत छलिऐन्ह, आब अमेरिका-रूस कें। बिना उधारें हमरा लोकनिक उद्धार नहि।

हम—परन्तु उपनिषदक शिक्षा......

खट्टर कका—हौ, उपनिषदो आएल त वैह अक्षर नेने। द द द! असली अर्थ दया, दान, दमन तऽ कोठीक कान्ह पर गेल। केवल द अक्षर रहि गेल। देखै छह नहि, वेद, उपनिषद—दूहूक अन्तमे कोन अक्षर छैक ?

हम—परन्तु अपन देश त जगद्गुरु छल ?

खट्टर कका—तैं हम आइ सभ कैं अपन गुरुमंत्र सुना रहल छिऐक—श्रद्धया देयम्। अश्रद्धया देयम्। श्रिया देयम्। ह्रिया देयम्। भिया देयम्। संविदया देयम्।

हम—खट्टर कका, हमरा लोकनि एना याचना करी से त उचित नहि।

खट्टर कका—हौ, हमरा लोकनि कैं मँगवामे गौरव बूझि पड़ैत अछि। आदिए सँ भिक्षाक शिक्षा भेटल अछि। की वेदान्ती, की बौद्ध, जे ऐलाह से भिक्षु धर्म कैं कप्पार मे सटने। लोक कर्म कैं तुच्छ बूझि भिक्षा कें महत्त्व देमय लागल। संपूर्ण देशमे भिक्षुकवृत्ति पसरि गेल। वैह संस्कार एखन धरि बनल अछि।

हम—खट्टर कका, एहि कृषिप्रधान देशमे......

खट्टर कका—हौ, कृषिप्रधान नहि, ऋषिप्रधान कहह। हमरा लोकनि आकाशे दिस तकैत छी। आन आन देशक लोक पाताल सँ पानि खींचि कऽ पटबैत अछि, तैं बारहो मास आर्द्रा नक्षत्र बनल रहैत छैक। हमरा लोकनि कैं हथिया नहि बरसल त हस्तोदकेक आशा।

हम—खट्टर कका, आइकाल्हि किछु दुबराएल देखैत छी।

खट्टर कका—हौ, मोटाएब कथी पर ? घृत कोषे टा मे रहि गेल। नाना प्रकारक व्यंजन आब वर्णमाला टा मे भेटैत अछि। तखन ठेकारक स्वर कथी पर बहराएत ?

हम—आब त निमंत्रणो उठल जाइत अछि।

खट्टर कका—निमंत्रण देत के ? कोठी ओ कोठा चला आब स्वयं कोटाक पाछाँ दौड़ि रहल छथि। रासन सुख कैं रासन खा गेल। जे अनन्य मित्र छलाह से अनन्न मित्र भऽ गेलाह। अपने अन्न बिना हकन्न कानि रहल छथि।

हम—तैं आब भोजक स्थानमे 'पार्टी' चलि गेल अछि।

खट्टर कका—भोजक अर्थ होइ छल 'भरि पेट'। 'पार्टी'क अर्थ 'भरि प्लेट'। अर्थात एक फक्का दालमोट ओ एकटा सिंहारा। ई सिंहारा औंधि कऽ सोहारी-तरकारीक संहार कऽ देलक। पहिने अढ़ैयामे चरण अखारि कऽ एक अढ़ैया मधुर आगाँमे राखि दैत छल। आब अढ़ाइ चमच चीनी एक चुकरीमे दय ऊपर सँ गोमूत्र-रंगक काढ़ा चुआ दैत अछि।

हम—हँ, आब त सभ ठाम 'टी'....

खट्टर कका—हौ, वैह टी त सभक टीक काटि लेलक। पहिने सौजन्यक अर्थ छलैक अट्ठारह टा बाटी। आब केवल 'टी' टा रहि गेलैक। आधुनिक सभ्यतामे ठोर दागि दैत छैक, भफाइत इन्होर लऽ कऽ। आचमनीयमूक स्थानमे चायमानेयम्। पहिने विवाहमे टाका भेटैत छलै। आब भेटै छैक 'टा टा'। टी पिया कऽ टा टा कऽ दैतीह। अर्थात टिटकारी दऽ दैतीह। आइकाल्हुक सभ्यता बूझह तऽ ट अक्षर पर चलैत अछि—टोस्ट, टी, टेरेलिन, ट्रैंजिस्टर ओ टा टा। स्वाइत लोक टिटिया रहल अछि।

हम—वास्तवमे संस्कृति बदलि गेलैक।

खट्टर कका—हौ, 'संस्कृति'क अर्थ बदलि गेलैक। सांस्कृतिक कार्य माने नाच। एहि हिसाबें संस्कृतक पंडित महा असंस्कृत छथि। जे बेटी-पुतहु घुघरू पहिरि कऽ नचै छथि सैह सुसंस्कृता। 'बेबी' लोकनि माय कैं मम्मी (मामी) कहैत छथि और बाप कैं पापा (पाप ?)। ई सभ बात पहिने गारि कहबितैक। आब कलचर कहबै छैक। आब 'चाचा' कैं 'चा' पिया कऽ 'चा चा चा' डांस देखा दैतीन्ह।

हम—खट्टर कका, अहाँ त प्राचीन कैं धुसैत छलिऐक। आइ आधुनिक कैं किऐक दुसैत छिऐक ?

खट्टर कका—हौ, हम कि ककरो नामे 'बहिखत' लिखि देने छिऐक ? हमर पित्ती मटर झा कहथिन्ह—जय जगदम्बा, जय जगदीश! जे देत दही-चूड़ा तकरे दीस। 'जकर खैबैक, तकर गैबैक। जतेक खैबैक, ततेक गैबैक। जेहन खैबैक,

तेहन गैबेक।' से पुरना कें आब रहये नहि कैलइ। नवका सहजें एको नवका पाइ बहारे नहि करत। तखन बजियौ ककरा दिस?

हम–हँ, एखन त कठिन समस्या........

खट्टर कका–हौ, पहिने लोक फुरा-फुरा कऽ समस्या गढ़ैत छल और पूर्ति करैत छल। आब त घृत-तैल-तंडुल, जैह वस्तु खोजू, सैह समस्या बनि कऽ ठाढ़ भऽ जाइछ। हल भेटिते नहि अछि। समाधान की करब? सामा, धान सेहो नहि कऽ सकैत छी। कणाद बनि कऽ भाव-अभावक विवेचन करैत रहू। आब त ठंढइयो छानब से कठिन।

हम–से किऐक, खट्टर कका?

खट्टर कका–हौ, चीनी पाताल चलि गेल। मरीच आकाश ठेकि गेल। सेहो मारीच जकाँ छद्मवेष धारण कैने। अर्नेवाक बीया संग मिझराएल। बादामने बहेड़ाक आँठी मिला देत अछि। शोधित हरीतकी खैनाइ छोड़ि देलहुँ जे कतहु बकरीक भेराड़ी ने फेटने हो।

हम–खट्टर कका, लोक एना ठकपनी किऐक करैत छैक?

खट्टर कका–हौ, पहिने सार-सरहोजि एना ठकैत छलैक। आब त सभ सर्वेसर्वा। सर्वे भवन्तु सुखिनः मे सर्वेक स्थानमे सरवे बूझह। शंकराचार्य कें सारे नहि रहैन्ह। तें संसार कें असार कहि गेलाह। हमरा त चारूकात सारे सार सुझैत अछि।

हम–खट्टर कका, अहाँ कें त सभ बातमे परिहासे रहैत अछि। किन्तु ई नाना प्रकारक प्रपंच......

खट्टर कका–हौ, वेदान्ती लोकनि त बड्ड प्रयास कैलन्हि जे नाना प्रपंच कें समाप्त कऽ दी। परन्तु नाना कें मेटा देताह से किनकर नानाक सक्क छैन्ह? जावत पंचक अस्तित्व रहतैन्ह, तावत प्रपंच कोना उठि सकैत अछि? सर्व मिथ्याक आब यैह अर्थ रहि गेल अछि जे आइकाल्हि जे वस्तु भेटैत अछि से सभ नकली थीक। जे भाषण होइछ से सभ फूसि थीक।

हम–अहाँ कें लोकतंत्रमे विश्वास नहि अछि? बहुमत त मानहि पड़त।

खट्टर कका–हमरा ने लोकमे विश्वास अछि, ने तंत्रमे। पहिने स्वामीक मत चलै छलैक। आब बहुक मत चलै छैक। जेम्हर बेसी हाथ उठल। माथक कोनो मोल नहि। ९९ विद्वान सँ १०० मूर्खक मूल्य बेसी। एक टा सती सँ दू टा कुलटाक महत्त्व अधिक। खुदरा सँ थोकक भाव बेसी। ई लोकतंत्र भेल वा थोकतंत्र? बूझह त ई तंत्र दुइए टा मंत्र पर चलैत अछि। भोट और नोट।

हम–खट्टर कका, अहाँ हँसिओ-हँसीमे गंभीर बात कहि दैत छिऐक। एहि देशक लोक धर्म-नीति बिसरि गेल अछि।

खट्टर कका–हौ, एहि देशमे उपदेशक कमी नहि छैक। किन्तु अर्थ बदलि गेल छैक।

हम–से कोना?

खट्टर कका–देखह। चर्पटपंजरिका लैह।

अर्थमनर्थं भावय नित्यम्

एकर अर्थ ई भऽ गेलैक अछि जे 'अर्थ' (धन) ओ तकरा प्राप्त करबाक निमित्त जतबा 'अनर्थ' भऽ सकय तकर भावना नित्य करैत रहू।

यावत् वित्तोपार्जनशक्तः
तावत् निजपरिवारो रक्तः
पश्चात् जर्जरभूते देहे
वार्त्तां कोऽपि न पृच्छति गेहे।

एकर तातपर्य ई जे जावत उपार्जन कऽ सकै छी तावते धरि परिवारमे आदर हैत। पाछाँ जर्जर भेला पर घरमे केओ बातो नहि पूछत। तें जतबा टाका कमा सकै छी से एखने कमा लियऽ।

नारीस्तनभर नाभिनिवेशम्
दृष्ट्वा मायामोहावेशम्
एतन्मांसवसादि विकारम्
मनसि विचारय वारंवारम्।
भज गोविन्दं मूढ़मते!

एकर भावार्थ बुझलहीक? युवती नारीक स्तन देखि कऽ पुरुषक मनमे मोहक आवेश आबि जाइत छैक। ओ स्तन मांसक लोइया मात्र थीक। मायाक एहन लीला जे ओही मांस पर रोमांस चलैत छैक। तें बाल-ब्रह्मचारी शंकरक उपदेश छैन्ह जे ओहि गोलाकार मांसपिंडरूपी स्तनमंडलपर मनमे वारंवार विचार वा ध्यान करैत रहू (जाहि सँ तत्त्वज्ञानक आनन्द भेटैत रहय)। और जे लोकनि मूढ़मति वा मंदबुद्धि होथि से गोविन्द कें भजथु।

हम–धन्य छी, खट्टर कका। अहाँ कें त सभ बातमे विनोदे सुझैत अछि। उनटे गंगा बहा दैत छिऐक।

खट्टर कका–हम बहबैत छिऐक कि आधुनिक महर्षि फ्रायडक चेला लोकनि बहबैत छथुन्ह? हुनका लोकनिक सिद्धान्त छैन्ह जे चोला छूटय, लेकिन चोली नहि छूटय। कदम्ब सँ कदीमा धरि, सभ प्रतीके सुझैत छैन्ह। इन्द्रियनिरोधक स्थानमे गर्भनिरोध करै छथि। 'मेन लाइन' छोड़ि तेहन 'लूप लाइन' धैलन्हि अछि जे भावी पीढ़ी कूपमे जा रहल अछि।

हम–वास्तवमे आब सभ बात उनटि रहल छैक।

खट्टर कका–ताहिमे कोन संदेह। पहिने पुत्रजन्मक उत्सव होइत छलैक, आब जन्मनिरोधक उत्सव होइत अछि। आधुनिक नारी ''पुत्रवती भव''क स्थानमे ''रूपवती भव, लूपवती भव'' आशीर्वाद चाहैत छथि। पहिने स्वामी स्त्रीक माँग भरैत छलाह। आब स्त्री स्वामीक माँग पुरैत छथिन्ह। स्वयं कमा कऽ। कतिपय 'पति' मे 'त' अक्षरक योग सेहो भऽ जाइत छन्हि। पहिलुक चेला चैला चिरैत छल, आब छैला बनल फिरैत अछि। छौंड़ा सभ छीट पहिरय लागल अछि, छौंड़ी सभ सूट कसय लागलि अछि। पहिने ओनामासी सँ शुरू करै छल, आब सिनेमाजासी सँ। चित्त-पट पर चित्रपट अंकित रहैत छैक। रानी सभ लीडरानी बनि गेलीह। राजनेत्री लोकनि अभिनेत्रीक कान काटि रहल छथि। पहिने अप्सरा होइ छलीह, आब अफसरा होइ छथि। 'फैशन' ओ 'पैशन' दिनदिन बढ़ल जाइत अछि। पहिलुक नारी मंदिरमे माथ नवबैत छलीह, आवक नारी माथे पर मंदिर उठबैत छथि। हौ, आब एहि युगचक्र कैं के रोकि सकैत अछि?

हम–परन्तु बुद्ध, गाँधी ओ विनोवा......

खट्टर कका–हौ, बुद्ध, गाँधी वा विनोवाक साधना कैं लोक दूर सँ प्रणाम करैत छैन्ह। लग सँ आनन्द लैयक हेतु फिल्मक साधना होइ छथि। गीता गेलीह। गीतावाली ऐलीह। दुर्गा गेलीह। दुर्गा खोटे ऐलीह। लोक नूतन दिस दौड़ैत अछि। तुलसीमाला सँ बेसी वैजयन्तीमालाक जप होइ छैन्ह। संगममे त्रिवेणी-संगम सँ अधिक मेला देखल। केहनो अकाल रहौक, सिनेमामे त्रिकाल बसंत भेटतौह। से छोड़ि कऽ कोन अभागल त्रिकाल-संध्या करत गऽ? हौ, युगधर्म बदलि गेलैक। रीतिकालीन (वा ऋतुकालीन?) नायिका अमृतकलश छलकबैत छलीह। एहि अरीतिकालमे नायिकाक शान आलपीनक नोक पर चलैत छैन्ह। विद्यापतिक पद छैन्ह–पीन पयोधर दूबरि गाता। आधुनिक फैशन देखितथि त पीन काटि कऽ पिन बना दितऽथिन्ह।

हम–खट्टर कका, कतबो युग बदलौक, पैघक महत्त्व रहबे करतैक।

खट्टर कका–हौ, कतेक ठाम पैघ सँ छोटक मूल्य बेसी होइ छैक। जेना छोटकी अणाची बड़की सँ तेज होइ अछि। बड़की घड़ी दीवालमे टाङल रहै अछि, छोटकी घड़ी सतत पहुँचे पकड़ने रहै छैक। प्रेयसी प्रायशः श्रेयसीक छाती पर सवार रहै छैन्ह।

हम–खट्टर कका, एहि युगमे एतेक भ्रष्टाचार किऐक बढ़ि गेल छैक?

खट्टर कका–हौ, शरीरक जे अंग अस्थिरहित (विना हड्डीक) होइछ, से बड़ दुर्निवार। जेना चारि आँगुरक जिह्वा। तैं हमरा लोकनिक पूर्वज लिंग-वचनक अनुशासन सँ क्रिया कैं मर्यादित रखै छलाह। आब त से बात व्याकरणे टा मे रहि गेल अछि। एहि आणविक युगमे, गणतंत्रीय पद्धतिमे उभयलिंगी व्यक्ति

कैं समान अधिकार भेटि गेल छैन्ह। तखन स्वच्छंदता ओ भ्रष्टाचारक नग्न नृत्य नहि हो, त हो की?

हमरा मुँह तकैत देखि खट्टर कका बजलाह–हौ, महाजनो येन गतः स पंथाः। से हमरा लोकनिक 'महाजन' छथि यूरोप-अमेरिका। हुनका लीक पर चलिए रहल छी। और उपाये की?

हम–किछु गोटाक विचार छैन्ह जे भारत्य ओ पाश्चात्य–दुहूक समन्वय चाही। मध्यम मार्ग उत्तम होइछ।

खट्टर कका विहुँसैत बजलाह–हौ, मध्यम कतहु उत्तम हो! यदि मध्यमे ग्रहण कैल जाय, तखन त युवतीक पति त्रिशंकु जकाँ नाभिएमे अटकल रहि जाथि! बीचोबीच! ने एक बीत ऊपर, ने नीचा। तखन त माध्यमिक शून्यवादे हाथ लगतैन्ह! .....तों भातिज थिकाह। बेसी खोलि कऽ कोना कहिऔह?

हम–खट्टर कका, अहाँ कैं त सदिखन परिहासे रहैत अछि। ई कहू जे सदाचारक रक्षा कोना हैत?

खट्टर कका–हौ, एकर ठेका तोरे भेटलौह अछि? खूब झूर कऽ तरल मोदिनीक पलइ जकरा जीभ पर चढ़ि चुकल छैक से उसिनल परोर दिस किऐक तकतौह? हँ, जखन मरचाइ-मसाला खाइत-खाइत सुलयाडि उखड़ि जैतैक तखन अपने पुरान चाउरक मड़गिल जोहने भेल फिरतौह। सैह पथ्य थीक सदाचार। हौ, सदा चार पर त केओ नहिए रहि सकै अछि। जखन लाचार भऽ जाइ अछि, तखन सदाचार पर ऐनाहिं कुशल। तों व्यर्थ चिन्ता किऐक करै छह?

हम कहलिऐन्ह–खट्टर कका, ई महँगी देखि तऽ किछु फुरितहि ने अछि। प्रत्येक वस्तुक भाव......

खट्टर कका बजलाह–हौ, पहिने कवि लोकनि नव-नव भाव दैत छलाह। आब बनियाँ दऽ रहल अछि। नित्य नवीन! आइ रुपैयामे छौ कनमा चाउर त काल्हि पाँच कनमा।

हम–खट्टर कका, आब त चाउरक अभावमे अल्हुआक होटल खुलि रहल अछि।

खट्टर कका–हौ, आब पार्टिओमे कलाकंदक स्थानमे शकरकंद भेटतौह। तेहन समय आबि रहल अछि, जे वर कैं मडुआ लऽ कऽ मडुअक हैतैन्ह। चाउरक अभावमे जनेर लऽ कऽ दूर्वाक्षत हैतैन्ह। दहीक बदला पिठार लऽ कऽ चुमाओन हैतैन्ह।

हम–वास्तवमे जहाँ दूध-दहीक धार बहैत छल, तहाँ....

खट्टर कका–तहाँ आब नदिओ सुखाएल जा रहल अछि। मेघो कैं जेना मूत्रावरोध भऽ गेल होइक।

हम–खट्टर कका, किछु पंडितक कथ्य छैन्ह जे पहिने यज्ञक धुआँ उठैत छल, ताहि सँ वर्षा होइत छल।

खट्टर कका–हौ, आइकाल्हि लाखक लाख रेलक इंजिन ओ कारखानाक चिमनी सँ धुआँ उड़ैत रहै छैक। मशीनक कोन कथा जे लोकोक मुँह सँ धुआँ उड़ैत छैक। एतेक धुआँ त कोनो युगमे नहि उड़ैत छलैक। तखन त धुआँधार वर्षा होमक चाही?

हम–किछु गोटे कहै छथि जे लोकक पाप सँ मेघ नहि बरसैत अछि।

खट्टर कका–हौ, यदि मेघ कैं एतबा बोध रहितैक त चोरबजार पर वज्र खसबैत। से त होइ छै नहि, खट्टर ककाक इनार चटाएल जा रहल छैन्ह! खेत खाय गदहा, मारि खाय जोलहा!

हम–खट्टर कका, ई देश थीक जहाँ ताला लगाएब लोक व्यर्थ बुझैत छल।

खट्टर कका विहुँसैत बजलाह–हौ, ताला लगाएब त आइयो व्यर्थ बूझि पड़ैत अछि। जैखन मौका भेटतैक, तोड़िए देत। एखन त धातुपाठमे सभ सँ बेसी चुरादिगणक चलती छैक।

हम–एखन लोक पाइक हेतु कोन कर्म नहि करै अछि?

खट्टर कका–पाइ खातिर एहि 'डालडा-युग'मे घीक कोन कथा जे स्त्री पर्यन्त खाँटी नहि भेटतौह।

हम–आइकाल्हि लोकक मनमे शान्ति नहि छैक। बात-बातमे हड़ताल! खट्टर कका, ई हड़ताल पहिने छलैक?

खट्टर कका–हौ, पहिने बनिया अन्याय करैत छलैक त राजाक दिस सँ हड़ताल होइक अर्थात हाटमे ताला लागि जाइक। आब त हर (महादेव)क ताल जकाँ कखन कोन बात पर तांडव मचि जाएत तकर ठेकान नहि। ई हड़ताल बूझह त गीता पर हरताल फेरि देलक।

हम–से कोना, खट्टर कका?

खट्टर कका–देखह, गीताक मूलमंत्र छैक–

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

एहि युगक मंत्र भऽ गेलैक–

फलेष्वेवाधिकारस्तु मा कर्मणि कदाचन।

हम–आब त अफसर लोकनि कैं घेराव-पथराव होमय लगलैन्ह अछि। ई सभ पहिने छलैक?

खट्टर कका–हौ, एक बेर अक्रूरक घेराव भेल रहैन्ह। गोकुलक ब्रजवाला लोकनि रथ कैं घेरि नेने रहथिन्ह। आब त क्रूर सँ क्रूर हाकिम कैं घेरायक डर सँ पेटमे केराव फूटय लगतैन्ह अछि। एहि देशमे अन्नक भरि ठेहुन पथार लागल रहैत छलैक। तखन लोक लथार किऐक मारितैक? आब पथार उठि गेलैक, पथराव आबि गेलैक। एकरा बाद नहि जानि की सभ आओत–उठाव, पटकाव........

हम–खट्टर कका, लोकक पेट भरल रहतैक त एना नहि करत। आब खेती दिस.....

खट्टर कका–हौ, खेती के करतौह? जे हर जोतैत छल, से शहर दिस मुँह कैलक। बीया बाओग करैत छल से बी० ए० करय लागल। बूट उखाड़ैत छल से बूट लगाबय लागल। बुशशर्ट पहिरि कऽ कुर्सी पर बैसत कि हेंगा पर? ओकर स्त्री आब नायलान-साड़ीमे खेसारी कोना खोंटतैक? कृषक समुदाय कर्षण छोड़ि आकर्षण दिस दौड़ल जा रहल अछि। समाज सँ खेतिहर वर्ग लुप्त भऽ जाएत। रहि जाएत केवल ट्रैक्टर ओ कंट्रैक्टर।

हम–खट्टर कका, आब त अपनहि हाथ सँ खेती करय पड़त।

खट्टर कका–हौ, हम आब कलम छोड़ि कोदारि धरब, से पार लागत? एक गाय अछि,से बलाय भेल अछि। धारा विना लाचार छी। आइकाल्हि मरद होय से बड़द पोसय। तखन बटाइ नहि लगाबती त उपाये की?

हम–परन्तु आब त बटाइ-प्रथा समाप्त भऽ रहल अछि।

खट्टर कका–तकर अर्थ जे खट्टर झा स्वयं जा कऽ मड़ुर रोपथु गऽ। विद्वान लोकनि खेतमे जा कऽ ढेप फोड़थु, नहि त ढेप लऽ कऽ अपन कपार फोड़थु।

हम–सरकारक नीति छैक–जे जोतय, तकरे खेत।

खट्टर कका–तखन त जे चराबय, तकरे गाय! जे हाँकय तकरे गाड़ी! जे बहिँगा उठाबय, तकरे भार। जे महफा ढोबय, तकरे कनियाँ! वाह रे नीति! जकर ठेंगा, तकर महिष!

हम–खट्टर कका, एखन सहकारिताक युग छैक।

खट्टर कका व्यंग्यपूर्वक बजलाह–तेँ बटाइक प्रथा खटाइमे जा रहल अछि! हौ, एक गोटाक भूमि, दोसरक परिश्रम। दुहू पारस्परिक सहयोग सँ बाँटिकऽ खाइत अबैत अछि, एहिमे सरकारक की बिगड़ैत छैन्ह? बर-कनियाँ राजी। बीचमे ददाजी!

हम–खट्टर कका, अखबारमे एकटा समाचार पढ़लिऐक अछि? संपूर्ण दरभंगा जिला दान भऽ गेल।

खट्टर कका–हौ, कनेक बुझा कऽ कहऽ। के ककरा दान कऽ देलकैक? हम सभ कतय गेलहुँ?

हमरा मुँह तकैत देखि खट्टर कका बजलाह–हौ, पहिने ई कहह जे दरभंगा जिला छैन्ह किनकर? और ओ ककरा नामे दानपत्र लिखि देलथिन्ह? कि राजा हरिश्चन्द्र जकाँ हुनको केओ विश्वामित्र भेटि गेलथिन्ह अछि जिनका कुश-तिल-गंगाजल लऽ कऽ....

हम–से बात नहि छैक।

खट्टर कका–तखन दान भेलैक कोना ? यदि केवल शब्दे सँ होइक त वचने का दरिद्रता ? जाह, हम संपूर्ण देश दान कऽ देल।

हम–खट्टर कका, किछु गोटाक सिद्धान्त छैन्ह जे व्यक्तिगत संपत्ति उठा देल जाय।

खट्टर कका–तखन तऽ हमर लोटो छीनि लेत। पानि कथीमे पिउब ? जकरा मन हेतैक से उठा कऽ वाह्यभूमि दिस चलि जाएत।

हम–अहाँ त सभ बात हँसिएमे उड़ा दैत छिऐक। किछु गोटाक विचार छैन्ह जे सामूहिक रूप सँ खेती हो।

खट्टर कका–तखन त साझी पोखरि बला परि भऽ जैतीह। सभ पट्टीदार बुझै छथि जे भसतैन्ह त सभक जैतैन्ह। हमरे कोन गर्ज अछि जे माटि भरू गऽ। हौ, साझीक सुइ साँगि पर चलैत छैक। जावत धरि अप्पन-अप्पन फुट्ट आथंग रहतैक, तावत लोक श्रम करतीह। 'स्व इदम्' हटा दहीक, तखन स्वेद (घाम) किऐक बहैतीह ? एखन हम अपना बाड़ीमे खटैत छी जे भाँटा खाएब। यदि ओहि पर सौंसे गामक हक भऽ जाइक तखन हमरे कोन कुकुर कटने अछि जे माथ पर पथिया उठा कऽ छाउर पटाएब गऽ। आड़ि-धूर मेटा दहीक, लोक देह नरा देतीह।

हम–किछु गोटाक मंतव्य छैन्ह जे उत्पादनक समान रूप सँ वितरण कैल जाय।

खट्टर कका–कनेक फरिछा कऽ कहह। हमरा बाड़ीमे एकटा बेदाना बहराएल। गाममे दू सहस्र व्यक्ति छथि। तखन त एक्को टा दाना हमरा नहि भेटत। गाछमे एकेटा शरबती नेबो फरल अछि। तखन त एकोको बुंद रस किनको मुँहमे नहि जैतैन्ह।

हम–जकरा सभ सँ बेशी आवश्यकता हैतैक, तकरा भेटतैक।

खट्टर कका–हौ जी, एक अनार, सै बीमार। तखन त फुटय कपार ! गाछो झबैला पर कंकरो कर्पुरिया आम भेटतैक, ककरो नकभेमहा ! तखन मारि बजरि जैतीह। गाममे मछहर हैत। ककरा रोहु देबहीक, ककरा गरचुन्नी ? सीरा-पुच्छी कोना बटबह ? 'समान वितरण' सुनबामे बड़ सुन्दर शब्द लगैत अछि, परन्तु करय लगबह त रण मचि जैतीह।

हम–किछु गोटाक योजना छैन्ह जे गाम भरिक भोजन एकेठाम बनय।

खट्टर कका–तखन त और रंगताल लागत ! एखन अपना-अपना घरमे जकरा जे जुड़ै छैक से खाइ अछि। केओ खुद्दी, केओ खोआ। केओ नेढ़ा, केओ कोआ। जखन समदरका टोकना चढ़तैक, तखन तऽ सभ बरातीए बनि जैतीह। खुद्दी-नेढ़ा के खैतीह ? अल्हुओ कचरयवला हलुएक ओह करतीह। कनेको दू

रंग भेलैक कि हुड़दंग मचा देतीह। जहाँ ककरो आगाँ छाल्ही........

तावत दुरुखामे काकी आबि कऽ कहलथिन्ह–अहाँ बैसल-बैसल छाल्हीक गप्प उड़ा रहल छी, एम्हर घरमे एक दाना चाउर नहि अछि। भानस कथी सँ हैत ?

खट्टर कका हमरा दिस ताकि बजलाह–देखै छहुन ? ई उदयनाचार्यक स्त्री सँ कम्म नहि छथि। रंगमे भंग कऽ देलन्हि। हमर सभ टा तरंग सुखा गेल।

पुनः काकी दिस ताकि कऽ कहलथिन्ह–बेस, टाका बहार करू और थैल अजबारिकऽ राखू। भविष्यपुराणमे लिखने छैक जे कलियुगमे घटेश्वर राजा हैत। अर्थात जकरा घरमे एक थैल चाउर रहतैक सैह राजा कहाओताह से आइ हम अहाँ कें घटेश्वरी रानी बना देब। नहि तऽ बुझब जे आइ एकादशीए थीक।

हम–खट्टर कका, अहाँक गप्प सुनक हेतु बहुतो लोक उत्सुक छथि। यदि आज्ञा हो त किछु टटका गप्प छपा दी....

खट्टर कका–हौ, ककाक टटका गप्प सभ केओ सुनताह, टका केओ नहि देताह ! तखन छुच्छ बकवास कैने कोन फल ? एखन त अन्नं ब्रह्मक साक्षात्कार दुर्लभ। मधुरक भोज हो तखन ने मधुर गप्प जमय ! हम भोजक आसन पर बैसइ छी त लगै अछि जे सिंहासन वा इन्द्रासन पर बैसल होइ। जखन गप्पगप्प रसगुल्ला ओ सप्पसप्प रबड़ी हो, तखन ने गप्पसप्प सार्थक। कम सँ कम आठ टा रसगुल्ला पर गप्पाष्टक जमै छैक।

हम–परन्तु आइकालि त तेहन अकाल अछि........

खट्टर कका–जे सभक हाल बेहाल अछि। जखन माल नहि, त गाल कथी पर बाजत ? बैताल सभ तेहन जाल पसारने अछि जे लोक पिसीमाल भऽ रहल अछि। एहि जाल सँ छुटकारा होइक तखन ने तर मालक गप्प हो ! नबका नचारी सुनने छह ?

हम–नहि, खट्टर कका !

खट्टर कका–तखन सुनह।

> केहन भेल अन्हेर औ बाबा, केहन भेल अन्हेर !!
> भात भेल दुर्लभ भारतमे, सपना धानक ढेर।
> मकइ मखानक कान कटै अछि, अल्हुआ खाथि कुबेर।
> मड़ुआ मिसरिक भाव बिकाइछ, जीरक भाव जनेर।
> सभ सँ बुड़िबक अन्न खेसारी, सेहो रुपैये सेर।
> टाका भेल टकाही, बस्तुक हेतु मचल अछि रेड़।
> धर्मबला धक्का खाइत छथि, पापिक हाथ बटेर।
> सहसह अछि करैत साँप सन चोरबा सब केर भेर।

बाबा ! अहँक त्रिशूल हाथमे, काज देत कोन बेर ?
जनता दुखं सँ हहरि रहल अछि, ताकि दियौ कनडेर।
हे हर ! अहाँ बहीर भेल छी, आबो सुनियौ टेर।
औ बाबा..........

हम कहलिऐन्ह--खट्टर कका, ई महेशवानी हमरा नोट करा दिय5। एकदम सटीक अछि।

खट्टर कका बजलाह--हौ, तोरा सटीक लगै छौह और हमरा चीनीक अभावमे गौड़ीय संप्रदायक शरण लेबय पड़ैत अछि। सेहो गुड़ आब दुर्लभ। बलभाचार्य सन वेदान्ती 'मधुराष्टक' गबैत रहथि--

गीतं मधुरं, पीतं मधुरं, भक्तं मधुरं, सुप्तं मधुरम्
रूपं मधुरं, तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।

एखन एहि समयमे रहितथि त सभटा 'मधुरम्' बिसरि जइतैन्ह। एखन त चौराधिपतेरखिलं मधुरम्।

भाङ घोरक हेतु ने चीनी अछि, ने गुड़। छुच्छे गोला गिरै छी।

ई कहि खट्टर कका भाङक गोला उठा क5 मुँहमे रखलन्हि और ऊपर सँ एक लोटा पानि घट्ट-घट्ट पीबि गेलाह।

प्राक्कथन

आइ सँ तीन वर्ष पहिने 'मिथिला' नामक एक मासिक पत्रिका बहरायल छलि । ओकर प्रकाशक छलाह श्रीयुत बाबू रामलोचन शरण और सम्पादक मंडल मे छलाह श्रीयुत बाबू भोलालाल दास बी० ए० एल० बी० । एक दिन संध्या समय भोलाबाबू आबि ठाँठ पर सवार भऽ गेलाह जे 'मिथिला'क अन्तिम फर्मा अहाँक लेख बेत्रेक रुकल अछि, झट द' किछु लिखि दियौक जे काल्हि छपि जाय । हमरा राति मे जे किछु फुरल से लिखि-लाखि कय हुनका दय देलिऐन्हि । वैह भेल 'कन्यादान'क श्रीगणेश । तकरा बाद जहिया-जहिया भोलाबाबूक तगादा भेल गेल, थोड़ेक लिखि पिण्ड छोड़बैत गेलहुँ । चारि पाँच अंक धरि यैह सिलसिला चलल ।

'कन्यादान'क किछु अंश बहराइते समालोचनाक बिरड़ो उठि गेल । केओ एकर प्रशंसाक पुल बान्हय लगलाह त केओ कांदारिक छौ सँ ओकरा ढाहय लगलाह । किन्तु एक बात धरि अवश्य भेल । 'कन्यादान' जनमिते प्रसिद्ध भऽ उठल । जे लोकनि एकर विरोधी छलाह तनिको लोकनि कैं आगाँक अंश पढ़बाक हेतु जी कछमछ करय लगलैन्ह ।

एही समय 'मिथिला' शिथिला भय सूति रहलीह । कन्यादानोक हेतु अतीचार पड़ि गेल । किन्तु 'कन्यादान' एतेक लोकप्रिय भऽ उठल छल जे ओकरा सम्बन्ध मे प्रकाशकक नाम सँ चिट्ठी पर चिट्ठी आबय लागल । हुनका बाध्य भऽ एकरा पुस्तकाकार प्रकाशित करबाक विचार करय पड़लैन्ह। ओ हमरा सँ आगाँक अंश माँगलन्हि । जखन हमर एम० ए०क परीक्षा समाप्त भय गेल, तखन तीन वर्षक अटकल 'कन्यादान'क गाड़ी फेरि ससरल और अन्ततोगत्वा स्टेशन पर पहुँचि ठाढ़ भय गेल अछि । आब जे किछु अछि से समक्षे अछि । हम पुस्तकक विषय मे की कहू ? पुस्तक स्वयं अपना विषय मे कहत ।

यदि समाजक थोड़बो उपकार वा मनोरंजन एकरा सँ भऽ सकल त हम बूझब जे एकर जन्म निरर्थक नहि भेलैक ।

—लेखक

लहेरियासराय
२०-५-३३

समर्पण

जे समाज कन्या कैं जड़ पदार्थवत् दान कय देबा मे कुंठित
नहि होइत छथि,

जाहि समाजक सूत्रधार लोकनि बालक कैं पढ़ैबाक पाछाँ
हजारक हजार पानि मे बहबैत छथि और कन्याक
हेतु चारि कैञ्चाक सिलेटो कीनब आवश्यक
नहि बुझैत छथि,

जाहि समाज मे बी० ए० पास पतिक जीवन-संगिनी
ए बी पर्यन्त नहि जनैत छथिन्ह,

जाहि समाज कैं दाम्पत्य-जीवनक गाड़ी मे सरकसिया
घोड़ाक संग निरीह बाछी कैं जोतैत कनेको
ममता नहि लगैत छैन्ह,

ताही समाजक महारथी लोकनिक कर-कुलिश मे
ई पुस्तक सविनय, सानुरोध ओ सभय
समर्पित ।

–लेखक

[१]

कनेयाँमाइक ओरिआओन

–हँ ऐ वहिना ! येह त कठिन भऽ गेलैक अछि । जहाँ वर भारी 'गिलास' मे अंगरेजी पढ़ि जाइत छैक, तहाँ वरक बाप हजार सँ नीचा पर गप्पे नहि करैत छैक। गरिबहा लोक एतेक कतय सँ आनत !

–ततबे धरि नहि । विवाह होइत देरी 'मोटर दियऽ, बाइसिकिल दियऽ, आगाँ पढ़क लेल फीस दियऽ ।' अङरेजियाक फरमाइश मे जुमब कठिन छैक।

–ऐ वहिना ! सुनैत छिऐक जे अङरेजिया सभ कें जाति-पाँतिक किछु विचार नहि रहैत छैक ।

–जाति-पाँति आब ककरा मे छैक ? विशेषरानीक जमाय आयल छलथिन्ह से कोन अङरेजी पढ़ने छथिन्ह । पनहीए पहिरने पानि पिबैत छथिन्ह। लोक कहैन्हि जे 'ओझा, जल लऽ कऽ लघुशंका दिशि जाउ' त कहथिन जे से कि हमरा आगि बहराइत अछि !

–दुर जो ! ओहो कोनो लोक छथिन्ह ! ज्योतिषीजी एकटा मोंचण्ड कें उठा अनलन्हि । हम त ई दस लोकक बीच मे कहबैन्हि । पढ़ल 'सी' अक्षर नहि , किन्तु फीटफाट भेले चाहय । दिन-राति माउगिक झुण्ड मे बैसल, रङ- धुम्मस करैत, बनहुल्लुक जकाँ एकरा ताकब, ओकरा ताकब, एहन कतहु लोक भेलय !

एतबहि मे बिलटी कें अबैत देखि लालकाकी झट दऽ आवेशरानीक पैरक कनगुरिया आंगुर कें दाबि देलथिन्ह जाहि सँ ओ लगले चुप भय गेलीह। तखन लालकाकी चतुरता सँ बात कें बदलि कय बजलीह–त ! आब त चौदहेटा दिन बाँकी रहि गेलैक अछि ! कथाक एखन धरि किछु निश्चय नहि । कोना की हैतैक से बूझि नहि पड़ैत अछि ।

आवेशरानी–आबह ने बिलटि ! बैसह, ठाढ़ि किऐक भेल छह ? हँ, बुचिया त बिलटिएक दतरी होएतैक ?

लालकाकी–ई तेरहम चढ़लैक अछि । एहि बेरि कन्यादान करब परम आवश्यक छैक । बुचियाक बाप त येह सपरि कऽ गेल छथिन्ह जे ई सभ सँ कोड़पोच्छू नेना थिक । अपने भोंखांदुख गाँगि कए एकरा मुठाम्मेकऽ देबैक । ओना त भावी सर्वोपरि।

आवेशरानी–हँ, लिखलाहा तँ सभ सँ ऊपर । भगवती अहिबात बनौने रखथुन्ह। अपन लूरिमुँह नीक होएतैन्हि तँ सभक आँखि मे रहतीह ।

लालकाकी–हँ ऐ बहिना ! यैह आशीर्वाद देथुन्ह । विवाह-दान होइन्हि, अपन घर-द्वार सम्हारथि । सासुर सँ ई उपराग नहि देथावथि जे धौंछी कोना कऽ बेटी कैं पोसलक । यैह हम चाहैत छी ।

एतबहि मे दक्षिण भर सँ भारी घटा उठल । चारू काल सँ मेघ उमड़ि आएल। थोड़बहि काल मे गर्जन-तर्जनक सङ्ग मूसलधार वृष्टि होमय लागल । ओसाराक कोनिया चुबैत देखि लालकाकी बाजय लगलीह– की कहू बहिना ! अहिना सभ घर मे सहस्त्र धार चुबैत छैक । एको हाथ कतहु निचू नहि अछि । अपने घरहटक काज सम्पन्न कयं जैतथि से बिचहि मे भदवा पड़ि गेलैन्ह । आब कोबर कोन ठाम होएतैक ताही लेल झँखैत छी ।

एतबहि मे ढुनपुनकाकी लदफद करैत हँफैत-हँफैत ओहि ठाम पहुँचलीह। अबैत देरी चिचियाय लगलीह–हे ! अदौरी जे हम पटिया पर सुखाय देने छलिऐक से सभ भीजि गेलैन्ह । हम की करियौक ?

ई सुनितहि लालकाकी लाल-पीयर होमय लगलीह–बाड़नि मारी एहन बुद्धि कैं ! एहन भसन्नरि लोक ! जैखन घटा देखलिऐक तैखन ने समेटि कय उठा लितहुँ । हाथ मे कि मेंहदी लागल छल ? सभ अदौरी भिजा कऽ तखन समाद नेने आयलि छथि !

फेरि आवेशरानीक दिशि ताकि कए बाजय लगलीह–कहू त भला ! आब कोन उपाय होएतैक ? कतेक यत्न सँ अदौरी खोंटने छलहुँ से सभ ई दुरि कए देलन्हि। कहाँ सँ आइ हिनका सुखाबहु कहलिऐन्हि ! हिनका सन लदगोबरि एहि परोपट्टा मे नहि भेटतैन्ह । मरुआ भरि कथूक लूरि नहि छैन्हि । कालिह कनेक कहलिऐन्ह जे अँचारक बासन मे तेल दय दियौक । बस, जमाइक लेल चमेलीक तेल मङबौने रही, भरलो बोतल उझीलि देलथिन्ह ।

ढुनमुनकाकी कान सँ कम सुनैत छलीह । तँ ई सभ वार्तालाप हुनका सुनबा मे नहि ऐलैन्हि । किन्तु क्रम सँ बूझि गेलीह जे हमरे शिकायत चलि रहल अछि। ठोर पटपटबैत बिदा भेलीह –मर्र ! आङन मे एकटा हमही लोक छिऐन्हि जे एतेक ललकैत छथि !

एतबहि मे बिलटी बाजि उठलि– छीया ! ए छीया ! ढुनमुनकाकीक नुआ मे की भेलैन्हि ? सौंसे पीठ थाल लागल छैन्हि ।

ताबत मे बुचिया हँसैत-हँसैत आबि कए कहलकैन्हि– थाल लगलैन्ह स्वाइत!

गेल छलीह बाड़ी मे मुनिगा तोड़य । एके बेरि दुइटा मुनिगा कें दुनू हाथ सँ धऽ कऽ खूब जोर सँ झीकए लगलथिन्ह । मुनिगाक डंटो तँ टूटि गेलैक, लेकिन अपने भट्ट दऽ चितङे खसि पड़लीह ।

ई सुनि बिलटी हँसैत-हँसैत ओंघड़ाय लागलि । आवेशरानी आवेश देखबैत कहलथिन्ह–अहा हा ! बड़ चोट लागल हैतैन्ह । जाउ ऐ फुचुकरानी ! झट दऽ नुआ बदलि लियऽ । कोना दऽ लगैत अछि ।

ढुनमुनकाकीक गेला पर लालकाकी बाजय लगलीह–देखथु बहिना, काजक घर थिकैक । से ने एखन कोबर डेबराल गेलैक अछि ने अहिबातक पातलि लिखल गेलैक अछि, ने टकबक बनलैक अछि । हम एकसरि की-की करू ? उनउ-टकुरी काटू की निपिया-बढ़िया करू ? पुतहु छथि तनिका दिनराति किताबहि सँ ने छुट्टी। बुचिया सहजें एकटा खढ़ पर्यन्त नहि टकसाओत । मैंया पाकल आम छथि, कखन टगि जैतीह तकर ठेकान नहि । फुचुकरानीक हालति देखितहि छथिन्ह । हम करी तँ हो नहि करी, नहि हो । तिलौरी-दनौरी सभ पड़ले छैक । जौं कदाचित् झपसी लाधि देलक तँ औरो प्रलय । फेरि विधिकरी कैं होएतैक से फुरितहि ने अछि ।

आवेशरानी–से किएक ? बड़कागामवाली कनियाँ तँ छथिए ।

लालकाकी–ओ पढ़ुआरानी छथि । रंग-बिरंगक किताब सभ नेने रहैत छथि। एहि पाछाँ खेनाइयो-पिनाइ बिसरि जाइत छैन्हि । हम मुँहे पर कहैत छिऐन्हि । कतहु सुनितो होइतीह । एक दिन पुछलिऐन्हि तँ कहै छथि जे नाक-कान धय्ब मुरखाहा विधि छैक । हमरा बुतें ई सभ नहि होएतैन्ह ।

आवेशरानी–तखन फुचुकरानी होइथिन्हि ।

लालकाकी–इहो एकटा स्वाङ्ग करै छथि । ओ बिधि की करथिन्ह अङोर ? काजर करय जैथिन्ह त बरक आँखिये फोड़ि कय बैसि रहथिन्ह । धरक नाक धय लेथिन्ह कान ! कोबर मे जैतीह त घोटे सुरकैत जैतीह ।

एतबहि मे बुचिया बाजि उठलि–ढुनमुनकाकी कें तँ भरि देह जुड़पित्ती उठि गेलैन्ह अछि ।

ई सुनितहि बड़कागामवाली कनियाँ घर सँ गर औंति कय कहलथिनह–बेश, कोनो क्षति नहि । कनेयाँ विधिकरी दुनू अपनहि बनि जाएब।

बुचिया–भौजी कैं तँ अहिना रहै छैन्हि । सभ बात मे एक-एक टा अर्थ लगबैत रहैत छथि ।

लालकाकी–बेजाय कोन कहैत छथुन्ह ? तोरा बीच मे बजबाक कोन काज? जहाँ विवाहक कोनो चर्चा उठैत छौह कि कोनटा मे ठाढ़ भय कान पाथि कय सुनय लगै छह । जाह, अपन काज देखह गऽ ।

ई सुनि बुचिया लजा कय ओहिठाम सँ विदा भेलि । बिलटियो ओकरा पाछाँ लागलि ।

☆ ☆ ☆

क्रमशः वर्षा थम्हि गेल । किन्तु मेघक आटोप बनले रहल । रहि-रहि कय आकाश मे बिजली चमकय लागल । साँझ होएबा मे किछु देरी छलैक। किन्तु मेघाडम्बर सँ चारू दिशि अन्धकार भय गेल छल । आवेशरानी चनवाक उधांग मे छलीह । एतबहि मे स्थूल शरीर सँ केंवाड़ कें धकियबैत अपना वज्रविनिन्दक स्वर सँ आङन कें कम्पायमान करैत, दुलारमनि पिउसी पहुँचलीह—अँयँ ! ऐं ! मधुरानी ! अहाँ बेटी कें कतेक डाढ़ी खोआओल जे पहिनहि सँ एतेक वर्षा होमय लागल !

एहि प्रश्नक उत्तर मे लालकाकी कनेक बल सँ हँसि कय बुचिया कें सोर पाड़लन्हि—कहाँ गेलें गे बुचिया ! झट दऽ आसन दऽ जो । बड़कीदाइ ऐलथुन्ह अछि।

दुलारमनि पिउसीक स्वरे तेहन रहैन्ह जे बिनु कहनहु बुचिया बुझि जइतैन्ह। किन्तु ओ आङन सँ टरि गेल छलि । लालकाकी धड़फड़ा कय अपनहि उठय लगलीह, तावत पुलहु घर सँ चटकूनी दय गेलथिन्ह ।

दुलारमनि दाइ फेरि अपना उदात्त स्वरसँ घर-ओसारा कें दलमलित करैत बजलीह—अँयँ ऐं मधुरानी ! अहाँ कें टोल-पड़ोसक एकोरत्ती धाख नहि होइ अछि। राम! राम ! राम ! कन्या अजगर भय गेलि । एतेक बयस मे तँ चारि बेर सासुर सँ भय आइलि रहैत । नैहर मे युगपाकड़ि भय जाएत त सासुर बसत गऽ बुढ़ारी मे?

लालकाकी (माथ निहुरा कय)—हँ ऐ दाइ ! आब कन्या रखणी त नहि अछि। किन्तु अपन कोन साध्य ? नीक घर-वर कतहु भेटलो तँ चाहय ।

दुलारमनि दाइ एहि बेरि और जोर सँ चिकड़ि कय बाजय लगलीह—ई अहाँ की बजलहुँ ? नीक घर मे ने देबैक तँ की इनार मे फेंकि देबैक ? एहि सँ त भोथ हँसू लए कऽ गरदनि रेति देबैक से नीक,। हमर गमिथाँ ससुरक प्रपितामह महादेव झा पाँजि। उनतीसटा विवाह कैलन्हि । जखन एकटा विवाह और करय सभागाछी गेलाह तँ एगोटाक पुछला पर कहलथिन्ह जे मास मे उनतीस दिन त उनतीस ठाम जाएब, तीसम दिन कतय जाएब अहाँक कपार पर ? ताहि दिन एहन वंशक मर्यादा रहैक । आब तँ लोक छोटबभना कें उठा अनैये। ऐ ! कनेक जोड़न देब ?

लालकाकी—बड़कीदाइ ! जोड़न त आब नहि हैतैक । मटकूरी मे एक मिसिया दही छलैक से घोरि-घारि कए बुचियाक आगाँ दय देलिऐक । कनेक पहिने अबितथि तँ भय जएतैन्हि ।

ई सुनितहि दुलारमनि दाइ लगले हाथक बाटी कें पटकि ठाढ़ि भय गेलीह ।

फेरि गरजैत विदा भेलीह—कौन पाप लागल जे ऐबो कएलहुँ । जनितहुँ जे आइ रवि दिन जोड़न नहि देतीह त की करय छिछियायल अबितहुँ ? पहिने औंजन बनावऽ लेल घी मँगैक तँ घैलक घैल भुभका देक । आब त सितुआभरि घोर देबा मे लोक कें करेज फटैत छैक ।

जखन दुलारमनि पिउसीक शब्द कर्णपथ सँ बहिर्भूत भय गेल तखन लालकाकी बजलीह—'ह ! ह ! यावत धरि ई छलीह तावत धरि हम हड़कम्प कँपैत छलहुँ। आब जा कऽ कतहुँ सँ प्राण मे प्राण आएल अछि ।' आवेशरानी सहानुभूति देखबैत कहलथिन्ह—'त ! हम त चुप्पे साधि देलहुँ । कोन ठेकान, किछु अनट-बिलट कथा मुँह सँ बाहर भए जाइत तँ हमरे पर उनटि जैतथि।'

लालकाकी—हिनका मुँह मे जहाँ कनेक क्यो टोकि देलक कि बुझक चाही जे बिढ़नीक छत्ता कें खोंचरलक ।

आवेशरानी—हँ ऐ बहिना ! हिनका दऽ जे लोक कहै छैन्ह से हमरा सत्ये बुझि पड़ैत अछि । (नहुँ-नहुँ) देखैत ने छथिन्ह बजैत काल कोना दुनू आँखि उनटि जाइत छैन्हि । गुनझिक्क् डाइनक जतेक लक्षण होइत छैक...

लालकाकी—की करथिन्ह, जाय देथु । आइ-कालि भीतो कें कान होइत छैक। (धुनगुनकाकी दिशि) जाउ ऐ फुचुकरानी ! झटपट भानस चढ़ा लियऽ। वर्षा-बिकालक समय अछि । के जाने कखन की होय ?

आवेशरानी—बेश बहिना ! आब हमहुँ चलैत छी । साँझ देबक बेरि भए गेलैक। फुलमतिया एकसरिये होइति ।

लालकाकी—हिनके पर तँ आस अछि बहिना ! जँ ई नहि सम्हारतीह त सभ काज भण्डुले भए जाएत ।

आवेशरानी—आ हे कहू त भला ! हमरा लोकनि सँ जे सक लागत से किन्नहुँ उठाए राखब ?

ई कहि आवेशरानी ठाढ़ि भए गेलीह । लालकाकी हुनका अरियातने-अरियातने दरबाजे पर नेबोक गाछ लग धरि नेने गेलथिन्हि । ओहि ठाम दुनू गोटा ठाढ़ि भए फेरि गप्प करए लगलीह । पहिने नेबोक चर्चा उठल जे एहि बाटे जे चलैत अछि से एकटा कऽ तोड़नहि जाइत अछि । तखन निमकीक गप्प होमय लागल जे जतेक बनल छलैक सभ मे फुफरी पड़ि गेलैक। तदुपरान्त गप्प उठल जे परुकाँ लालकका पटना सँ बड़ दिब अँचार लाएल रहथि । पटनाक नाम सुनैत लालकाकी फुसिए आँचर सँ नोर पोछैत बाजय लगलीह—जनैत छी, बड़का बौआ पटना सँ कहिया अयैत छथि! भुरहू बाबू परसू कहि गेलाह जे जे बी० ए० मे पढ़ैत छैक तकरा पलटन मे लय जाइत छैक । कालेज

तँ बन्द भए गेलैन्हि, लेकिन छुट्टी मे औतहि रहि गेलाह । मास दिन बाँकी रहतैन्ह तँ औताह ।

पलटनक नाम सुनैत आवेशरानीक सौंसे देह सिहरि उठलैन्ह–'बाप रे बाप! सुनैत छियैक जे पलटन मे दिनराति गोरांक पहरा पड़ैत रहैत छैक। जहाँ क्यो बहराएल कि लगले किरिच भोंकि दैत छैक ।' पहरा दऽ सुनि लालकाकी कैं मन पड़लैन्ह जे आइ-काल्हि कोतवाल नीक जकाँ नहि ठहकैं अछि । एहि पर चोरक गप्प उठल। अशर्फीनाथक घर मे सेंध पड़ल छलैन्ह से एकटा फुटलो कैंसा नहि रहय देलकैन्ह। लालकाकी कहय लगलथिन्ह जे 'राति मे हम जहाँ कनेक पातो खड़खड़ाइत सुनैत छिऐक कि खूब जोर सँ रामायण पाठ करय लगैत छी । चोर कोढ़िए ई त बुझताह जे एखन सभ जगले अछि ।' ताहि पर आवेशरानी कहलथिन्ह–'हम त कुकुरक भुकब सुनि दम साधि कय पड़ि रहैत छी । उकलगीना मुर्दा बूझि कऽ तँ छोड़ि देत।'

तदनन्तर दू-एकटा चोरक खिस्सा-पिहानी चलल । आवेशरानी कनेक और लग मे घुसिकि कए कहय लगलथिन्ह–परसुक्की राति फुलमतिया फुजले केबाड़ छोड़ि देलकैक । आधाराति कऽ देखी तँ दुनू पल्ला दूहू दिशि ! आब एतेक साहस नहि पड़य जे खाट सँ उतरि कए केबाड़ लग आबी । कतहु चोकठिए लग गरदनि दबा दैत ! भरि राति भगवान-भगवान गोहरबैत प्रात कैलहुँ। छन-छन डर होय जे कतहु केओ आबि तँ ने रहल अछि ।

फुलमतियाक असावधानी सुनि लालकाकी कैं अपन फुचुकरानी मन पड़लथिन्हि। भरि डाकी अपन दुःख कहि सुनौलथिन्हि । तखन किछु बड़कागामवालीक समालोचना भेलैन्हि । अन्त मे घुरि फिरि कय फेरि कन्यादानक ओरियाओन पर गप्प पहुँचि गेल।

एवं प्रकारें पौन घन्टा धरि वार्तालापक क्रम बनल रहल । जखन टिप-टिप कऽ फेरि बुन्नी पड़य लगलैक, तखन जा कऽ आवेशरानी कैं मन पड़लैन्ह जे आब साँझ दैबाक बेरि भए गेल । लालकाकी चलयकाल पुराइ कैलथिन्ह–'धम्हू सूप नेने अबैत छी, ओना भीजि जायब ।' किन्तु आवेशरानी कहथिन्ह 'नहि-नहि । एतबहि दूर लेल कोन ! ओहिना झटकि कय चलि जैबैक ।' आवेशरानीक गेला उत्तर लालकाकी गाछ सँ दुइटा पैघ नेबो तोड़ि आङन ऐलीह ।

आङन मे पैर दैतहि लालकाकी बजलीह–है लोकनि ! आइ चोर-डाकूक गप्प-सप्प भेलैक अछि, खूब सतर्क भऽ कऽ रहैत जैहऽ ।

बुच्चिया बाजलि–ई सभ कहबहुन तँ ढुनमुनकाकी भरि राति सुतल मे चिचिऐथुन्हि। ढुनमुनकाकी धनसा असोरा पर पटुआक झोर करैत छलीह । बुच्चियाक मुहें अपन नाम सुनि भनभनाय लगलीह–ढुनमुनकाकी ककरा लोह दगलथिन्ह अछि ? की दऽ

कहैत छैक तकर परि । 'हट्ठि घड़ी सभ गोटे हमरे अदगोइ-बदगोइ करैत रहलीह !

एतबहि मे झुनियाँमाय हन-हन पट-पट करैत पानि देबय अइलि । पाँचे मिनट मे कतेक बात बाजि गेल तकर ठेकान नहि । 'घैलचो लग लोक पिच्छड़ बनौने रहैत अछि, कतेक गोटे पानि उठि जाइत छैक, डोल पुरान भय गेल, उबहनि सड़ल जा रहल छैक' इत्यादि । तखन कोनो अज्ञातनाम व्यक्ति सँ झगड़ा करय लागलि– 'सौंस गे सौंस मिरचाइयोक सौंस ! हम दिन भरि खटी -तरकारि तरुओ ने खाय –और ओम्हर पोंचन्त सुतथि पद्मावती बहुरिया। ताहिं पर कहाइ जे माथा मे दर्द होइए । अहा हा हा ! छथि ने छटा मसूरीक दालि बड़ खट्टा ! देहो जरैए ।'

ई कहि झुनियाँमाय चमकि कय घैल उठौलनि और चलल दरबाजा दिशि। दिन मे ककरो सँ झगड़ा भेल रहैक से मन पड़ि गेलैक । बस, लागल फेरि चरखा ओटए। हैं, आँखि देखौला सँ जेना झुनियाँमाय डेराइये त जाइति । हम थाना-दरोगा सँ डेरैबे ने करी से ....

ई बजैत-बजैत झुनियाँमायक नजरि सहसा कोनो वस्तु पर पड़ि गेलैक जाहि सँ डराय ओ जान लऽ कऽ पड़ाइलि। ओतय सँ पड़ाइलि-पड़ाइलि ओ सोझे लालकाकीक लग आबि भरि पाँज हुनका धऽ लेलकैन्ह और कसकस्सा कऽ गरदनि पकड़ि लेलकैन्ह। मुँह मे बकौर लागि गेलैक । लालकाकी बजलीह– देखै जाह लोक सभ । ई हमरा नीक कऽ चरोबरो कैने अछि । ऐं गे ! तोरा भूत लगलौक अछि जे एना करैत छैं?

एकें छन मे आङनक सभ लोक जमा भए गेल । ई देखि झुनियाँमाय कें कनेक साहसक संचार भेलैक । पहिने त ओकरा मुँह सँ बकारे नहि बहार होइक। तखन लागलि ओ लटाढ़ुम करय– आब नहि भरबैक पानि हम ककरो आङन। आरे बाप ! जीउब त करमोक साग तोड़ि गुजर करब । उँहुँ ! आब कहाँ !

क्यो बाजथि जे एकरा साँप काटलकैक अछि, क्यो बाजथि जे आइ दुलारमनि पिउसी कें जोड़न नहि देलिऐन्हि तकरे फल थिक । अन्त मे ओ बहुत पुछला पर बाजलि–'गे मैया गे मैया ! दरबाजा पर पाँच हाथक सिपाही बन्दूक नेने बैसल छैन्ह। बाँचे मुँह धरि लेलकैन्ह अछि । हम जौं कि धुरखुर पर लात दै छी कि झपटल हमरा दिशि । हम धैल पटकि कऽ पड़एलहुँ, नहि त आइ प्राण नहि बचैत हे महरमाइन।' ई कहि झुनियाँमाय हिचकि-हिचकि कानय लागलि ।

ई समाचार सुनितहि सभ गोटाक जी सन्न दऽ उड़ि गेल । लालकाकी थर-थर काँपैत बजलीह–कहाँ सँ छुच्छी सब आबि कऽ गोरा पलटनक हाल कहि जाइए । ई सभ तँ चर्चा करैत देरी लगले पहुँचि जाइत छैक ।

अन्त मे ई विचार होमय लागल जे प्राणरक्षाक कोन उपाय करबाक चाही।

लालकाकी साहस कय कहलथिन्ह–सभ गोटा मिलि कय सुन्दरकाण्ड रामायण पाठ करैत जाह। कनेवाँ कें कहून्ह हनुमान चालीसा पढ़थुन्ह। (ज़ोर सँ) 'महावीर विक्रम बजरंगी ! सुमति निवारि कुमति कें संगी।' दुरजो ! उनटे भय गेलैक। नहि जानि की लिखल अछि रे दैबा !

मैंयाक विचार भेलैन्ह जे सभ गोटा मिलि कय एके बेरि घोल करबह तँ ओ आबि कऽ सभक ठोंठ दबाय देतीह। से नहि, पठुआइक मुँह सँ एगोटा जा कऽ ज्योतिषीकका कें बजा लबहुन। ताहि पर झुनियाँमाय बजलि–'नहि रे बाप ! ओह मुँह पर कतो टाइ होएतैक। हमरा बुट्टी-बुट्टी काटि कऽ घर मे गाड़ि दियऽ, लेकिन हम आब बाहर नहि जाएब।' ई कहि ओ फेर घेंचना पसारलक।

मैंया कहलथिन्ह जे पहिने गनि लइ जाह जे आङन मे सभ गोटे छह की नहि? लालकाकी सभक देह धऽ धऽ कय गनय लगलीह। दू-तीन बेरि गड़बड़ा गेलैन्ह। चारिम बेरि गनैत बजलीह-जाह ! फुचुकरानी की भय गेलीह! दैबा रे दैबा। लऽ गेलैन्ह घिसिया कऽ।

ताहि पर झुनियाँमाय कहलकैन्ह जे ओ तँ पहिनहि सँ जारन घर मे जा कऽ किल्ली लगा बैसलि छथि। मैंया रुद्राक्षक माला लय भगवती कें गोहरबैत कबुला करय लगलीह जे एहि बेरि जँ प्राण बाँचि गेल तँ कुमारि भोजन कराएब।

ई हाल देखि बड़कागामवाली टनकि कय बजलीह–'ई लोकनि एतेक डेराइत छथि किऐक ? हमरा लोकनि कि चोरी-खून कैने छी जे फाँसी पड़त ? बुच्चीदाइ कें पुछय कहथुन्ह जे के अछि।' बुचिया सुरफुरा कऽ बिदा भेलि जे 'तोरा लोकनि कें डरें बच्चा लगैत छौह तँ लैह हमही जा कऽ देखि अबैत छिऐक। डर कथीक छैक ? किछु बाघ तँ नहिएँ छैक जे लोक कें टप दऽ गोंड़ि जैतैक।'

एतबहि मे बाहर चौकी पर लाठी पटकि क्यो कड़कि कय बाजल–कोई है?

मैंया झट दऽ लालकाकीक हाथ टीपि कहलथिन्ह–कहि दियौक जे केओ नहि अछि।

तावत सिपाही बाजल–पं० भोलानाथ झा के नाम से एक तार आया है। कोई अन्दर से आकर ले जाइए।

मैंया कहलथिन्ह–तार आया है त दरवज्जे पर रहऽ दीजिये। एकसरि आङन भेकऽ के उठा आनेगा ?

एतबहि मे बाहर ज्योतिषीककाक शब्द सुनि सभ लोक फेक दऽ निसास छोड़लक।



[२]

सभागाछीक दृश्य

जखन सभागाछी पहुँचबा मे आध कोस बाँकी रहि गेलैन्ह तखन घुटर झा कें बाह्यभूमि दिशि जैबाक शंका बूझि पड़लैन्ह। अपन नमिदारीक बटुआ भोलानाथ झाक हाथ मे दैत कहलथिन्ह–'हौ बाबू ! तोरा लोकनि आगाँ बड़क गाछ तर बैसैत चलऽ। हम एही पोखरि सँ भेने अबैत छी।' ई कहि घुटर झा कान पर जनउ चढ़ाय लोटा सन-सन डेग दैत बिदा भेलाह।

ठकवा कें पछुआयल देखि भोलानाथ झा गर्द देलथिन्ह–'चल रे ठकवा! पैर मे जाँत बान्हल छौक की ? एना चलबें तँ एही ठाम साँझ भय जैतौक।' ठकवा मुँह गोंहिया कय कुड़बुड़ाय लागल–'ईह ! दौड़बैत-दौड़बैत जान मारि कऽ छोड़ि देलन्हि। गाड़ीक टेंटे त जेना छूटल जाइ छैन्ह।' तदुपरान्त काँख तरक मोटरी कें माथ पर राखि कसि कऽ फाँड़ भिड़लक और लगौलक दुलकी चालि।

बड़क गाछ तर पहुँचला पर ठकवा पहिने मोटरी कें नीचाँ पटकलक। तखन दुइ हाथ भूमि कें झाड़ि-फूकि कय चिक्कन कैलक। ताहि पर अपन अंगपोछा ओछौलक। कनेक काल ठेहुन पर माथ राखि बैसल। फेरि मोटरी पर ओङठि गेल। तदुपरान्त एम्हर-ओम्हर ताकि शनैः शनैः दुनू पैर कें [illegible] केलक। थोड़बहि काल मे अरना महिष जकाँ फोंफ काटय लागल। भोलानाथ झा बेचारे बड़क सोर पर बैसल अपन फराठी लऽ एकटा पकोड़ा कें पिचैत रहलाह।

अढ़ाइ दण्डक उपरान्त घुटर झा लोटा डोलबैत पहुँचलाह। अबैत देरी एक चुरू पानि ठकवाक कान मे ढारि देलथिन्ह। ओ कुनमुना कऽ उठल। घुटर झा बजलाह–एँ रौ ! तोरा देह मे फुर्ती नहि छलौक तँ मधुबनी सँ दू कोसक कोनि किऐक ने लेलें? परदेश मे एतेक लड़फड़ भेल रहैत अछि और तों अलय जाइत छें तखन पेटकुनिया देमय लगैत छें।

फेरि भोलानाथ झाक दिशि ताकि कऽ बाजय लगलाह–'हौ बाउ ! ई मैथिल टिक्कड़ नहि सकतैह। पैर झाड़ि कऽ चलह नहि त भिजै जैबह।' ई कहि घुटर झा अपन [illegible] झोरा सँ एकटा छाता बाहर कैलन्हि। ई छाता हुनका पिता कें मातृ-मातृक मे भेटल छलैन्ह। ताहि छिद्र सभ देखला उत्तर बुझि पड़ैत जे सहस्राक्ष शब्दक व्यञ्जनाशक्ति एही मे अंकित भय रहल अछि। जमानी सभ देखैत छथि जे हम अष्टावक्र

मुनिक साक्षाते नसियैत थिकहुँ । छाताक घोड़ा टूटि गेल रहैन्ह तकरा स्थान मे घूटर झा एकटा काठी लगा देलथिन्ह। तदनन्तर नसिदानी सँ नासिकानन्द चूर्ण लय, नाकक उभय पुरा मे कोंचि, एकें बेरि पूरक श्वास चढ़ौलन्हि । ई क्रिया समाप्त भेलैन्ह तखन ठाढ़ भय विदा भेलाह। पाछाँ-पाछाँ भोलानाथ माथ निहुरौने चललाह । ठकवा तमाकू चुनौने छल, ठोर चिबका कऽ एक जुम्म रखलक, तखन पिच-पिच थूक फेंकैत सभ सँ पाछाँ चलय लागल।

थोड़ेक दूर गेला पर फूही पड़य लागल । भोलानाथ झा कें मन पड़लैन्ह जे पनही भिजैत होएत । हड़बड़ा कऽ ठकवा कें पुछलथिन्ह-'रौ ! पनही देखही त भिजै त नै छौक ?' ठकवा मोटरीक ऊपर सरसरफानी लगा कऽ पनही बन्हने रहय। एखन जे टोयलक त एकेटा बूझि पड़लैक । बाजल-'एक पवाइ त कतहु खसि पड़ल, एकटा बाँचि गेल अछि से लिअऽ ।' ई कहि पनही आगाँ मे फेंकि देलकैन्ह। भोलानाथ झा ओही पनही लऽ ठकवा कें मारक हेतु उद्यत भेलाह, किन्तु घूटर झा रोकि देलथिन्ह। भोलानाथ झा बजलाह-नवे पनही छल-सालमसाही ! एक रुपैया चौदह आना मे ! एतेक दामक आइधरि कहियो ने किनने छलहुँ । चलबाक काल एँड़ी मे कटैत छल-तैं सार कें कहलिऐक जे नेने चल- आब एक पवाइ लऽ कऽ की करू ? एकरो फेंकि दैत छिऐक ।

घूटर झा भरिगरहा चुटकी नसि लय आश्वासन देमय लगलथिन्ह-की करब? 'सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्द्धं त्यजति पण्डितः ।' एके पवाइ ने गेल ? गाम पर नेने चलू। यदि अहाँ जकाँ ककरो एक पवाइ हेरा गेल होएतैक त ओकरा सँ माँगि कऽ जोड़ लगा लेब । नहि त ओकरे इहो पवाइ दय देबैक। हम त थाल-कीचक समय मे पनही रखितहि ने छी । नाहक महाबव गाड़ब की ? जौं पनहिए नहि रहत त हेराएत कोना?

एतबहि मे मटर मन-मन बुँद पड़य लागल, जाहि सँ तीनू गोटा भागि कय एक दलान मे पहुँचलाह ।

  

सभागाछी आइ बेश जमकल बूझि पड़ैछ । पाकड़िक गाछ मौलल देखि बहुतो अनुभवी वृद्ध अनुमान करैत छथि जे एक लाख ब्राह्मण पुरि गेलाह । जतय धरि दृष्टि जाइछ पागहि पाग देखि पड़ैछ । एतबहि मे कनेक फूही आयल कि सभ पागक ऊपर मे एक-एक टा छाता तना गेल । श्वेत मरालपंक्ति जेना सहसा श्याम काकावली मे परिणत भय गेल हो ।

पाठकवृन्द ! एक मन सुझए-बन्दा बुझए । कतहु पर-कतेहु पर-घूटर झा तैं देखा दियऽ । वैह देखियौन्ह, हाथ मे नसिदानी नेने हँसि-हँसि कय घटकराज दुन्नी झा सँ गप्प कय रहल छथि । दुन्नी झाक चढ़ौका चानन, भागजागर ठोप तथा अर्धान्तरशत

रुद्राक्षमाला देखि बूझि पड़त जे ई कर्मकाण्ड मे धौतपरीक्षोत्तीर्ण हैताह, किन्तु असल बात पूछी त... किएक देखार करबैन्ह- जाय दियऽ -बेचारे दोसर दिशि ताकय लगलाह।

घूटर झा नसि लैत पुछलथिन्ह-बालकक मूल की कहल ?

दुन्नी झा आँखि-भौंह चमकबैत बजलाह-मूल त बश मूले छैन्ह । मानि लियऽ जे शोदरपुरिये शरिशव । थिकौआ वंश ! मानि लियऽ जे चारिटा वंश छैन्ह । एक तँ ब्राह्मण एहन पेच, दोसर शुद्धाम घरऽ । ई कथा करी त मानि लियऽ शान मे शुगन्ध भेटत ।

घू०-बालकक आस्था कोन तरहक छैन्ह ?

दु०-आस्था ! मानि लियऽ जे कम आस्था नहि छैन्ह । अपन शात बीघा ब्रह्मोत्तर छैन्ह आओर शवा बीघा कलम शुदिभरना नेने छथि । चालीश मन त महुए भेल छलैन्ह।

भोला०-पढ़ल-लिखल की छैन्ह ?

दु०-पढ़ल कोना ने छैन्ह ? मानि लियऽ शीघ्रबोध पढ़ैत छथि । मङ्गलाचरणक श्लोक सम्पूर्ण कण्ठस्थ छैन्ह । हमरा लोकनिक पुरुखा त मानि लियऽ जे चिड़िचिड़िये पाड़य नहि जनैत रहथि । ताहि सँ तँ शंश्कार उत्तम छैन्हि ।

घू०-बालकक पिता छथिन्ह*कि नहि ?

दु०-मानि लियऽ पिता नहिए छथिन्ह तैं हर्ज की ? हमरा लोकनि त छिऐन्ह! मानि लियऽ माय त एखन जीविते छथिन्ह । आओर भाय मे शेहो एकश्वरे छथि।

घू०-कोन तरह सँ कथा करय चाहैत छथि ?

दु०-मानि लिय शवा शय टाका तत्काल मे अपने कें देताह । भार-दोर मानि लियऽ नहिए जाएत त हर्ज की ? शोमक दिन शिद्धान्त लिखा कऽ अपना शङ्गहि नेने जैथैन्ह । ओतय मानि लियऽ एक खण्ड धोतिए पहिरा कऽ बिदा कय देबैन्ह।

ई सभ कथा-वार्ता भेलाक उपरान्त घूटर झा ओर भोलानाथ झा ओहि ठाम सँ हटि कय एकान्ती करय गेलाह । माम कें कनेक पसिन्द जकाँ पड़लैन्ह, किन्तु भागिन कलपि कय कहलथिन्ह-औ मामा ! बुचिया योग्य वर हमरा नहि बूझि पड़ैत अछि। आङन मे भरि जन्म खोभाटनि दैत रहतीह ।

अन्ततोगत्वा दुहू माम-भागिन आबि कय दुन्नी झा कें कहलथिन्ह जे कान्याक प्रति टाका गनाएब हमरा लोकनिक अभीष्ट नहि । कनेक नीक कथा चाहैत छी । बेशी त नहि, किन्तु दश-पाँच टाका यदि अपनो दिशि सँ खर्च पड़य त ताहि सँ पाछाँ नहि हटब ।

ई सुनि दुन्नी झा मटिग्गर खेतक दराड़ि जकाँ मुँह बाबि कहलथिन्ह-अहि रौ नैयायिक ! ई हमरा पहिनहिं किऐक ने कहल ? मानि लियऽ जे हमरा ओहिठाम त शभ तरहक कथा अबैये । एकटा खनखनौआ-जाहि मे कान्यागत खनखना कें टाका

हँसोथि लैत छथि। तेसर मानि लियऽ टनटनीआ जाति सँ वरपक्ष टनटना कें हजार-पाँच सौक तोड़ा गनबैत छथि। तेसर मानि लियऽ जे टनटनीआ जाति मे वर कन्यागत दुहू टनटन गोपाल भय काज करैत छथि। हमरा त पहिने बुझि पड़ल जे अहाँ खनखनीओ कथा करब, किएक तँ अहाँ शान मैल पाग वला कन्यागत मानि लियऽ जे बहुत खनखनाएल अबैत छथि-तेँ ई कथाक उत्थान कय देल। अहाँ कहाँ लियाब रखैत छी-टनटनीआ कथा करब-से मानि लियऽ हम की जानय गेलहुँ ? नहि त कथा तँ मानि लियऽ जे हमरा मुट्ठीए मे अछि। एखन चलू बालक दर्शन कए लियऽ। संयोग सँ एहन कथा मानि लियऽ जे सभागाछी मे आबि गेल अछि। मानि लियऽ ई कथा जौं पटि गेल त कन्याक भाग्य बुझक चाही।

ई सुनि मामा-भागिन टुन्नी झाक संग चलबाक हेतु प्रस्तुत भऽ गेलाह। टुन्नी झा भरि बाट हिनका लोकनि कें सामयिक शिक्षा प्रदान करैत गेलथिन्ह जकर मुख्य सारांश ई-हम पहिने बर्नी किछु कहि देने छलहुँ-ओ कथा अहाँक योग्य नहि छल-आब जे कथा कहैत छी से यथार्थ मे सोन अछि-एकरा बिगाड़क हेतु बहुतो लोक प्रयत्न करत-तेँ सतर्क रहब-अनका कथा पर ध्यान नहि देब-आब अहाँ अपन लोक भय गेलहुँ-हम जौं सर्पर कऽ एहि मे पड़ि जायब त कथा निश्चय भय जायत,..इत्यादि-इत्यादि।

टुन्नी झा कें देखितहि एगोटा पाछाँ सँ आबि कय नमस्कार कैलथिन्ह। टुन्नी झा बाजि उठलाह-नमस्कार ! नमस्कार वैदिक ! छी निकें ?

तदुपरान्त टुन्नी झा घूटर झाक दिशि संकेत कैलथिन्ह जे अहाँ लोकनि तावत एहीठाम रहू-हम पहिने जा कऽ कथाक रंग-ढंग देखने अबै छी। आध घन्टाक बाद टुन्नी झा ओही वैदिक कें संग नेने प्रत्यागत भेलाह। टुन्नी झा अबितहि बजलाह-औ बाबू ! अहाँक कार्य त शुतरि गेल। किन्तु पुछिऔन्ह वैदिक सँ हम अहाँक पक्ष सँ कतेक लड़लहुँ अछि ! मानि लियऽ जे गर बाझि गेल। अन्त मे मानि लियऽ स्वीकार करहि पड़लैन्ह। आब अपनहि गप्प-शप्प कय शुभ टा फरिछा लियऽ।

भोलानाथ झा पुछलथिन्ह-वरक की मूल छैन्ह ? कतय रहै छथि ?

टुन्नी झा कानक जड़ि कुड़ियबैत बजलाह-मूल सँ अहाँ कें कोन काज ? मानि लियऽ शुरुगणे छथि से की ? शुद्ध मैथिल ब्राह्मण तँ छथि। की औ वैदिक?

वैदिक माथ झुलाय कऽ अनुमोदन कैलथिन्ह। तखन घूटर झा प्रश्न कैलथिन्ह-वरक घर कतय छैन्ह ?

टुन्नी झा कनेक खखसि कऽ बजलाह-मानि लियऽ दक्षिणे भर छैन्ह त हर्ज की ? बेसी दूर नहि-दलसिंहसराय सँ चौदह कोस पर घर छैन्ह। हमर देखल अछि। घर-द्वार परम सुखितगर। की औ वैदिक ?

वैदिक पुनः माथ झुलाय एहि कथाक समर्थन कैलथिन्ह। तखन टुन्नी झा अपन

ब्रह्मास्त्र रूपी वचनक प्रयोग करय लगलाह-वर मानि लियऽ जे एफ०ए० मे पढ़ैत छथि। कन्यागतक द्वार मानि लियऽ जे दरबाजा पर एकटा बरजमोरिया चुल्हि बनले रहैत छैन्ह। पहिने मानि लियऽ चलै छल महादेव झा पाँजि, श्रीकान्त झा पाँजि, आब चलैत अछि मानि लियऽ डिप्टी पाँजि, वकील पाँजि, मास्टर पाँजि। वरक पिता मानि लियऽ जे नाक पर माछिए नहि बैसऽ दैत छलाह-जे यावत बेटा मानि लियऽ बी० ए० पास नहि करताह तावत मानि लियऽ जे माथ पर मौर नहि देबन्ह। तखन हम अपन मानि लियऽ जनऊ जोड़ि कऽ ठाढ़ भऽ गेलिऐन्ह। तखन कहलन्हि जे बेस शात शय टाका अहाँ कहिऔन्ह-हम बेटा दए देबैन्ह। शम्भव थिक जे अधिक दबौला सँ पचीस टाका आओर छूटि जायत। आब शुभस्य शीघ्रम् करबाक चाही। की औ वैदिक ?

वैदिकजी महादेवक बसहा जकाँ फेरि माथ झुलावय लगलाह। घूटर झा एवं भोलानाथ झा घटकक संग वरपक्ष सँ गप्प करय गेलाह। पूरे अढ़ाइ घन्टा महाजंग भेला पर ई निष्कर्ष बहराएल जे छौ से सँ एक कौड़ी कम पर कथा नहि भय सकैछ। भोलानाथ झा बेचारे बहुत साहस कय पौने दू से टाका फाँड़ मे नेने आएल छलाह, पट्शत मुद्राक नाम सुनि प्राण सुखा गेलैन्ह। अन्त मे हारि-दारि कऽ दुहू मामा-भागिन डेरा पर अबैत गेलाह।

  

डेरा पर पहुँचला उत्तर घूटर झा चपकनक भूँडी फोंइत बजलाह-हौ बाबू ! आइ भरि दिन दार्शनिक बरद जकाँ घुमितहि छी। पहिने पाक-शाकक उद्योग करै चाह, तखन बुझल जैतैक।

भोलानाथ झा टीक सोहरबैत बजलाह-मामा ! हम तँ भरि जन्म अपना हाथ सँ कहियो भुगिदाह नहि कैने छी। माथ पर दू-चारि पसेरीक बोझ बरु राखि दी, त से धऽ आएब, किन्तु भानस कैल हमरा बुतें पार नहि लागत।

घूटर झा कहलथिन्ह-हौ बाबू ! हम तँ आठमहि वर्ष सँ चुल्हिक मुँह मे आँच लगबए लगलहुँ। बिनु सिद्धान्ने कल्याण नहि। बेश, हम सीधा सामग्री लय अबैत छी। तावत तों ठकबा सँ चौका ठीक करबौने रहिहऽ।

ई कहि घूटर झा केओला लए हाटक दिशि बिदा भेलाह। ओतय आङुर सँ टनटना कय एकटा छोट-छीन पातिल किनलन्हि। जखन डेरा पर प्रत्यागत भेलाह, तखन ठकबा पर तमसाय लगलाह-'भारी धिम्मड़ अछि। हम कहैत छलहुँ जे चुल्हि बना कऽ आँच पजारने होयत से एखन धरि भुमिए खड़रैत अछि।' आध घन्टाक अविरल परिश्रमक अनन्तर घूटर झाक चुल्हि तहिना धधकि उठल जेना कन्यागत द्वारा विशेष बिदाइ नहि भेटला पर समधिक कोपाग्नि धधकि उठैत छैन्ह।

जखन घूटर झा अधनि मे दालि लगाबय लगलाह तखन पाछाँ सँ क्यो व्यक्ति

आबि कय प्रणाम कैलथिन्ह । घूटर झा पाछाँ ताकि कय बजलाह—के मुकुन्द ? नीकें रहऽ । हौ ! तों कतय सँ ? मकुन्द झा मुँह कोंचियबैत बजलाहक—की कहू मामा? भारी ठकान में पड़ि गेलहुँ ।

घूटर झा दालि लगायब छोड़ि कय पुछय लगलथिन्ह—से की ? से की?

मुकुन्द कहय लगलाह—हमरा पर जुड़ानपुरेक बर्नुहार आयल छल । कथाक निश्चय भऽ गलेक चालीस टा रुपैया पर । हम अपना दिशि सँ दू टका खर्च कय सिद्धान्तो लिखबौलहुँ । चलबाक काल मे हमरा कहलक जे रुपैया पहिनहि गना दियऽ। हम गनाबय लगलिऐक ताहि मे संयोग सँ एक टा रुपैया खराब बहरा गेलैक। दोसर रुपैया संग मे रहबे नहि करय । आब लाख-लाख कहलिऐक जे एक टा पाछाँ लऽ लेब से किन्नहु मानबे नहि कैलक। अन्त मे मझौलियाक एकटा द्वितीय वर चालीस रुपैया गनि देलकैक । तकरे लऽ गेल. हम मुँहे तकैत रहि गेलहुँ ।

भोलानाथ झा नेत्र विस्फारित कय बजलाह—कहू त केहन भारी धरकट बाभन छल । हमर पिसियौत भाइ कें एहिना भेल रहैन्ह । 'भलमानुस' कें लऽ जाइत रहैन्ह। एक्का ठीक भेल—सभ गोटे चढ़ैत गेलाह । जखन मधुबनी पहुँचैत गेलाह तखन एक्कावान अठारह आना भाड़ा माँगय लगलैन्ह । आब झगड़ा उठल जे किरायाक कैञ्चा के देतैक। एही पर त्वञ्चाहञ्च होइत-होइत मारि बजरल । छत्ता-छत्तौअलि, जुत्ता-जुत्तौअलि सभ किछु होमए पर तुरत भय गेल। तावत एकटा दोसर बालक सभागाछी सँ फिरल जाइत रहय । कन्यागत परिचय-पात बूझि कय पुछलकैक—'औ बाबू ! अहाँ भाड़ा देबैक?' बालक तुरन्त अठारह आना डेउआ फेंकि देलकैक । कन्यागत ओही बालक कें नेने-देने चल गेल । हमर पिसियौत भाय टुक्कुर-टुक्कुर तकैत रहि गेलाह ।

ई सभ कथा सुनि घूटर झा गाम्भीरतापूर्वक बजलाह—हौ बाबू ! तोरा लोकनि की देखलहीक अछि ? सभागाछीक ठकैती ओ भोजपुरक डकैती दुहू नामी छल। एक बेरिक हाल कहैत छियौह । एकटा साठि वर्षक बूढ़-बेश लक्ष्मीपात्र—तनिका जखन कोहा-कौड़ी जुगताबक समय ऐलैन्ह, तखन जा कऽ विवाह करबाक उक्खी-बिक्खी लेलकैन्ह । बस एकटा दीयरक छोटवभना परतारि कऽ अपना ओहि ठाम लऽ गेलैन्ह। पूरे नौ सै टका गनवा लेलकैन्ह। राति मे एकटा निमोछिया जवान सँ विवाह करा देलकैन्ह। कोबर करय गेलाह त विधिकरी कहलथिन्ह जे कनेयाँ कें कोदवा भय गेल छैक । चतुर्थीक प्राते वर राम कें बिदा कय देलकैन्ह । जकर हाथ धैलथिन्ह तकर मुहो नीक जकाँ नहि देखि सकलाह । जखन दुल्हा राम अपन गाम पर पहुँचलाह, तखन ससुर हजाम पठौलथिन्ह जे हमर बेटी कोदवा सँ शान्त भऽ गेलीह । कहू, एकरा ठकैती कहब की डकैती ?

भोलानाथ झा मुकुन्द कें आश्वासन दैत बजलाह—की करबहक, मुकुन्द! रुपैया

त बाँचि गेलौह ! कोन ठेकान तोरो कतहु पुरुष सँ विवाह करा दितौह, त कोन उपाय करितह ?

घूटर झा फेरि एकटा कथा पसारबाक सूर-सार कैलन्हि, तावत आँच मिझा गेलैन्ह। तें गप्प छोड़ि पाक-क्रिया मे तत्पर भए गेलाह । जखन चाउर पुर्वतत खदकय लगलैन्ह, तखन मुकुन्द दिशि ताकि कय कहलथिन्ह—की हौ मुकुन्द ! भोजन त नहि कैने होएबह?

मु०—नहि, की होएतैक ? दोकान पर आ कऽ किछु खा लेबैक ।

घू०— ओह ! दोकान पर अभिद्द की खेबह ? घी मे चार्बी फेंटने रहैत छैक। एहिठाम सिद्ध अन्न मे जे स्वाद भेटतौह, से बजाक पूड़ी मे कतय पैबह?

मु०—हँ से त हमरो आइ चारि साँझ सँ अपिद्ध खाइत-खाइत जी उमठि गेल अछि । किन्तु ....

घू०—किन्तु की ? त्रयाणां पाकसम्पन्ने, चतुर्णामपि भोजनम् । तों खैबे कतेक करबह ?

मु०—हँ से त हम बहुत कम खाइत छी । ताहि मे भूखो कम्मे अछि ।

घूटर झा खिचड़ीक पातिल उतारि चारिटा पात पर परसलन्हि । फेरि ओहि मे सँ आलू बीछि कय साना कैलन्हि । तखन बजलाह जे 'बेश, आब अबैत जाउ, नमोनारायण करू ।' दूहू गोटे पैर धो कऽ बैसैत गेलाह । मुकुन्दक पेट तेहने रहैन्ह जे चारू पात पाक खीचड़ि आगाँ मे देल जैतैन्हि, तैयो छुछुआयले उठितथि, किन्तु करताह की ? जेहने नैवेद्य भेटलैन्ह ताही पर सन्तोष कऽ उठि गेलाह ।

अचाबय काल मुकुन्द बजलाह—मामा ! आइ दालि बड़ दिव सिद्ध भेल, स्वादिष्टो तेहने भेल छलैक । बुझि पड़ैत छल जेना गंगाजल मे बनल हो ।

घूटर झा खरिका करैत ठकबा सँ पुछलथिन्ह—की रौ ! पानि कतय सँ अनने छलैं ?

ठकवा गोंहछि कऽ बाजल—एही उत्तरवारी पोखरि सँ अनलहुँ और कोन मे सँ आनब ?

घू०—रौ ! लखियाही पोखरि सँ त ने अनलैं ?

ठ०—तँ की हड़ाही पोखरि सँ नेने अबितहुँ !

घूटर झा बजलाह—हौ बाबू ! आब किछु बाजह जुनि । फिरती बेरि सिमरिया घाट मे एक डूब देबय पड़ैत गेलौह ।

तदनन्तर कम्बल बिछा कऽ गप्प-शप्प करैत तीनू गोटा स्वप्नराज्य मे प्रविष्ट भेलाह।

  

प्रात भेने मुकुन्द उठि कय दोसरा दिशि बिदा भेलाह । दूहू मामा-भागिन झटपट

स्नान-भोजन कय सभगाछी मे प्रवेश कैलन्हि । थोड़बहि दूर पर कौखि तर एक पुलिन्दा कागज नेने घटकराज टुन्नी झा भेटलथिन्ह । घूटर झा पुछलथिन्ह—औ घटक ! ई की थिक ?

टुन्नी झा आँखि मटकबैत कहलथिन्ह—एही मास सँ एकटा मासिक पत्र चललैक अछि मानि लियऽ जे 'मिथिला शुधारिणी ।' तकरे विज्ञापन थिकैक। हमरा पचासेक बाँटक हेतु देने छल । हम देखल जे मानि लियऽ एक पौठ खालिए छैक । ततेहि लिखबा योग्य त भऽ गेल । येह कहाँक थोड़ ? आगि लगने झोपड़ा, जे निकसै से लाभ। एकटा अहूँ लऽ लियऽ । मानि लेलियऽ जे पाग मे धरऽ योग्य त होएत ।

घूटर झा एक चुटकी नसि सुरकैत बजलाह—हँ हँ, हमरो मधुबनी स्टेशन पर एगोटा भेटल रहय । जेखन गाड़ी सँ उतरलहुँ कि दिक करय लागल जे अपनहुँ ग्राहक बनि जाउ । हम पुछलियैक जे औ बाबू ! मङनी देबैक कि किछु नगदो नारायण लेबैक, ताहि पर कहलक जे तीन टाका साल मे लागत। हम कहलियैक जे एहि पत्र सँ हमरा एको साँझक खर्चा चलत ? ओ कहलक—से तँ नहि होयत । हम कहलिऐक— बेश, चुपचाप अपन बाट धरू। सभ सँ बाढ़ि बुरिडहलेल अहाँ कैं हमहीं बूझि पड़लौंह ? तीन टाका मे हमरा दू सालक नोन चलत । एकबार लऽ कऽ कि चाटब ? फेरि एहन कथा बजबैक त लोक उकटि करय लागत ।

टुन्नी झा अपन चातुर्यक दाबी देखबैत बजलाह—हमर नाम त मानि लियऽ जे जबर्दस्ती ग्राहक मे लिखि लेलक । त की अहाँ कैं बूझि पड़ैत अछि जे हम एकोटा कौञ्चा देबैक ?

भोलानाथ माथ कुड़ियबैत बजलाह—'मिथिला-सुधारिणी' पुस्तक हम देखने छलिऐक । ज्योतिषीकका अनने रहथि । ओ बजैत रहथि जे ई पत्र व्यर्थ टाँहि-टाँहि कइ रहल अछि । मैथिल-जाति मे सुधार-तुधार किछु नहि भऽ सकैत छैक ।' टुन्नी झा अपन पाण्डित्यक प्रखर प्रकाश देखबैत बजलाह—'ई पत्र तँ मानि लियऽ जे अपनहिं आर्यशमाजी थिक । ई शुधार की करत ? मानि लियऽ अपनहि जातिक निन्दा करैत अछि । ई परम अनर्गल थिक । जौं अपनहि घरक दोख अपने देखार करय लागब, तखन तँ दोसर जाति मानि लियऽ जे थूसि कय छोड़ि देत । हमरा जौं शम्पादक सँ भेट होइत त कहितिऐन्ह जे अपने कनेक ज्ञान झाक योग दए कऽ देखियौक ।'

एहि प्रकारक समालोचना होइते छल कि फराक सँ टुन्नी झा कैं क्यो सोर पाड़लकैन्ह । टुन्नी झा खरज स्वर सँ गर्द कए कहलथिन्ह—येह ऐलहुँ। कनेक थम्हि गेल जाओ ।

❑

[३]
तार कोना पढ़ाओल गेल

फैसला सुनबाक समय यावत मुद्दालह लोकनि कठघरा मे ठाढ़ रहैत छथि, तावत पर्यन्त हुनका लोकनिक साँसे देह थुलकैत रहैत छैन्ह । किन्तु हाकिमक मुँह सँ रिहाइक आज्ञा सुनैत देरी हुनका लोकनि कैं कत गोट सांक्षात्तक प्राप्ति होइत छैन्ह, से केवल भुक्तभोगिए अनुभव कय सकै छथि । दरबाजा पर ज्योतिषी ककाक शब्द सुनि लालकाकी लोकनि कैं ओही प्रकारक आनन्द बुझि पड़लैन्ह।

ज्योतिषी कका पहिने त हरकारा सँ ओकर जाति पुछलथिन्ह, तदनन्तर ग्राम, परगन्ना, थाना, बापक नाम आदि पूछि कय निम्नलिखित प्रश्नावली करय लगलथिन्ह—'अहाँ कय भाइ छी ? कतेक घर जयवार अछि ? भोजन मे कय मन चाउर लगैत अछि? कतेक खेत जोतै छी ? धियापुता सभ बिवाहल अछि कि कुमारे ? राति मे भात खाएब कि अपना हाथ सँ पाक करब ?' इत्यादि, इत्यादि ।

हरकारा सभ प्रश्नक यथोचित उत्तर दय हाथ मे तार देलकैन्ह और प्रणाम कय विदा भय गेल । ज्योतिषी कका खड़ाम खटखटबैत दलानक मुँह पर पहुँचलाह और दू-तीन बेरि बल सँ खखास कैलन्हि । से सुनितहि लालकाकी, फुचुकरानी, बड़कागामवाली सभक सभ अपना-अपना घर दिशि पड़ैलीह । तखन ज्योतिषी कका आङन मे पदार्पण कैलन्हि । मैया खाट पर बैसबाक संकेत कैलथिन्ह । ज्योतिषी कका केथरी कैं हटा कए अओछा खाट पर बैसि गेलाह।

तदनन्तर ज्योतिषी ककाक उपन्यास प्रारम्भ भेल । कोना भोजन कैलन्हि, कोना आचमन कैलन्हि । कोन तरहें लोटा लऽ कऽ बहरैलाह, कोन तरहें दक्षिणबरिया खत्ता मे लघुशंका करए गेलाह, कोन रूपें झुनिर्यांमाइक स्वर कर्णगोचर भेलैन्ह । कोन रूपें जिज्ञासा करबाक हेतु चललाह, से सभ कथा एक घंटा मे सविस्तार कहि सुनौलथिन्ह।

तदुपरान्त लालकाकी घर सँ बुचिया द्वारा पुछबौलथिन्ह जे तार मे की लिखल छैक ? ज्योतिषी कका तार कैं उनटबैत-पुनटबैत बजलाह—'हमरा तर्क मे अबैत अछि जे भोलानाथ कैं कतहु सँ उपनयन अथवा विवाहक निमन्त्रण आएल छैन्हि । से किएक तँ लाल कागत मे लिखल छैक । जौं श्राद्धक नओत रहितैन्ह त कदाचितो लाल नहि

पठबितैन्ह । निश्चय शुभकार्य्यक पाता थिकैन्ह। जौं तिरहुता मे लिखल रहितैक, त हम स्वयं बाँचि लितहुँ ।' तदनन्तर ज्योतिषी कका कें जीवन भरि जतेक निमंत्रण पत्र लाल आखर अथवा लाल कागत मे आएल रहैन्हि, ताहि सभक विस्तार पूर्वक उपाख्यान सुनाबय लगलथिन्ह ।

अन्त मे प्रश्न उठल जे आब तार पढ़ाओल कोना जाएत ? ज्योतिषी कका किछु काल विचारि कय बजलाह–सकुड़ी मे एकटा बड़ पैघ डाक्टर अछि । यदि ओकरा सँ ई पत्र पढ़ाओल जाइत त यथार्थ समाचार बूझि पड़ैत। अपना गामक त जे केओ अङरेजिया अछि से सभ बाहरे अछि । कालि भिनसरे ककरो सकुड़ी पठैयाक चाही। कतहु तिथि टरि जैतैन्ह त मुफ्त मे बिदाइ मारल जैतैन्ह ।

मैंया चिन्तित भाव सँ कहलथिन्ह–रड़-रोहिया त आइकालि डुम्मरिक फूल भय गेल अछि । जहाँ घर मे चारि पसेरी मरुआ होइत छैक कि कनडेरियो नहि तकैत अछि । कालि ककरा पठैबैक से नहि सुझैए ।

ज्योतिषीकका अपना पैरक अंगूठा दिशि तकैत बजलाह–हम त अपनहि भऽ अबितहुँ, किन्तु परसू ठेस लगला सँ औंठा मुड़ुकि गेल । तैं चलय मे कष्ट होइत अछि। मुकुन्द एहि सभ मे बेश चड़फड़ अछि । किन्तु ओ त एतय अछिए नहि! झारखंडी कें पठबितिऐक से ओकरा किछु गमले-बुझल नहि छैक ।

झारखंडीक नाम सुनितहि लालकाकी बुचिया द्वारा कहबौलथिन्ह–ओकरा छोड़ि और ककरो जुनि पठबथुन्ह । ओ बड़ सगुनिया लोक अछि । जतहि जाइत अछि, ततहि काज बनौने अबैत अछि ।

अन्ततोगत्वा ई प्रस्ताव सर्वसम्मति सँ स्वीकृत भेल जे भिनसरे झारखंडी कें किछु पनपियाइ करा सकुड़ी पठाओल जाय । ज्योतिषी कका कनेक काल और बैसितथि, किन्तु उड़िस काटय लगलैन्ह । उठि बिदा भए गेलाह ।

      

झारखंडीनाथ सूति उठि कय दातमनि कैलन्हि और पोखरि मे एक डूब दऽ, भीजल अङपोछा डाँड़ मे लपेटनहि भोलानाथ झाक आङन मे पहुँचलाह। लालकाकी हपसि कय कहलथिन्ह–आउ ऐ बाबू ! अहींक बाट तकैत छलहुँ। बड्ड जरूरी काज भऽ पड़ल, तैं बजा पठौलहुँ अछि ।

झारखंडीनाथ बजलाह–सकुड़ी जैबा मे त हमरा दिशि सँ कोनो भाङठ नहि, किन्तु आइधरि हम कहियो ओतय नहि गेल छी, और दोसर जे ओहिठाम अपन चिन्हारो केओ नहि अछि । ताहि पर रामजीक प्रताप सँ धोतियो धोबिएक ओहिठाम अछि।

लालकाकी पोल्हा कए कहलथिन्ह–ऐ बाबू ! धोती हम दैत छी । जे किछु खेबा-खर्चा लागय से लय लियऽ । हम की कहू ! बूझबे जे अपने काज थिक । बेश, आब पैर धो लियऽ । पितियाइन ठाँव-बाट कैने छथि ।

एकरा उत्तर मे झारखंडीनाथ एक लोटा पानि पैर पर उझीलि पीढ़ी पर आबि कय बैसि गेलाह और चूड़ा भिजाबय लगलाह । लालकाकी लग मे बैसि आमक मलठी काटि-काटि देबय लगलथिन्ह । झारखंडी कें तृप्तिपूर्वक भोजन करैत देखि लालकाकी नहुँ-नहुँ बजलीह–के जाने कोन बात तार मे लिखल छैक । जे नीक-बेजाय होइक से अपनहि पेट मे राखब । एकर हाल ककरो अनका नहि कहबैक ।

झारखंडी पूर्ववत चोभा लगबैत बजलाह–भला कहू त ! ई बात दोसरक कान मे किन्हहुँ जा सकैत अछि ! हम त रामजीक प्रताप सँ तारक चर्चो ककरो आगाँ मे नहि करब ।

लालकाकी प्रसन्न भय सन्दूक सँ एक खंड धोती बाहर कैलन्हि । पुनः पन्तीनियेक चूड़ा, एक धरिका अमोट और चारि आना कैञ्चा आनि कय झारखंडीक आगाँ मे राखि देलथिन्ह । झारखंडी बटखर्चा लेबऽ मे कुण्ठित होमय लगलाह । किन्तु जखन लालकाकी अपन सपत देलथिन्ह तँ चुपचाप सभ वस्तु लय बिदा भेलाह ।

झारखंडीनाथ किछु दूर गेलाक उपरान्त कोनो फेंटैत अपना घर पहुँचलाह। ओतय चूड़ा, अमोट, कैञ्चा सभ राखि देलन्हि । तखन बथान दिशि चललाह। बाट मे जे क्यो भेटैन्हि तकरा सभ कें तारक वृत्तान्त कहि सुनबथिन्ह और अन्त मे कहि देथिन्ह जे देखब ई बात गुप्त थिक, ककरो आगाँ बाजी जुनि । एहि प्रकारें सभ सँ एकान्तो करैत झारखंडी बथान पहुँचलाह और ओतय जा कऽ चरवाह सभ कें तारक हाल सुना कहलथिन्ह जे तोरा लोकनि तावत माल-जाल कें नीक जकाँ देखैत-सुनैत रहिहें।

झारखंडीनाथ पूरे तीन बजे सकुड़ीक सड़क पर दृष्टिगोचर भेलाह । ओतय एकटा गाड़ीवान सँ पुछलथिन्ह–'गौ, सकुड़ीक डाकदर कौन ठाम रहता है ? ' एवं प्रकारें झारखंडीनाथ सभ सँ पुछारी करय लगलाह–'डाकदरक बासा कतेक दूर पड़ता है । हमरा केओ गोटे बाट देखा देते हैं ?' ताहि पर जौं क्यो पुछैन्ह जे 'कोन डाक्टर' त कहथिन्ह जे 'सकुड़ीक डाकदर ।' हिनका अपना भरि बौआइत देखि एगोटा अस्पतालक बाट देखा देलकैन्ह । ई जा कऽ रोगी सभक बीच मे ठाढ़ भऽ गेलाह। सिपाही पुछलकैन्ह–'तुमको कौन बीमारी है ?' हिनका बूझि पड़लैन्हि जे ई अपनेतो सँ जिज्ञासा कय रहल अछि । कहलथिन्ह जे 'हमरा आङन मे कनेक-कनेक कजियात बूझि पड़ता

है । रामजीक प्रताप सँ कहियो-कहियो पेटो फूलि जाता है । और अब लोकवेद निकं रहता है ।'

'हमरा आइन' कहला उत्तर स्वीक बोध होइछ. ई सूत्र प्राय: सिपाही कें नहि ज्ञात छलैक । ओ बाजल–अच्छा, थोड़ी देर मे डाक्टर साहब आ रहे हैं । तबतक यहीं ठहरो ।

डाक्टर अबितहि रजिस्टर फोललक और एकाएकी सभ रोगीक विवरण लय नुसखा लिखए लागल । जखन झारखंडीनाथक पार एलैन्ह, तखन हिनको सँ नाम और अवस्था पुछलकैन्ह । ई कहलथिन्ह–सरकार ! हमरा लोक सभ दुलार सँ 'खरटर' कहता है. लेकिन असल नाम झारखंडी माय बाप राखि दिया। और उमिर मे सरकार सभ भाइ सँ छोट है ।

डाक्टर चश्माक भीतरे सँ आँखि गुड़ेरि कय बाजल–'बीमारी क्या है ? जल्द कहो।' झारखंडीनाथ हड़बड़ा गेलाह । बजलाह–हम त लालकाकीक काज सँ एहिठाम–रामजीक प्रताप सँ–बीमारी तँ कुछ नहीं–सरकार एकटो तार–कनेक झट दऽ काज भऽ जाय।

डाक्टर अत्यन्त कुपित भय बाजल–'कहाँ गया दरबान! हटाओ इसको यहाँ से। काहे बदमाश को यहाँ घुसने देता है ?' सिपाही कें अपना दिशि चलैत देखि झारखंडी 'बाप-रे-बाप !' कहि पड़ैलाह ।

झारखंडीनाथ पड़ाएल-पड़ाएल एकटा 'पवित्र मैथिल भोजनालय' क निकट पहुँचलाह । ओहिठाम संयोग सँ अपना मसियौत भाय पर दृष्टि पड़ि गेलैन्ह । ओ देखितहि टोकलथिन्ह–'हौ झारखंडी छऽ हौ ! एम्हरे-एम्हरे । एखन गाड़ी कें बहुत बिलम्ब छौह ।' झारखंडी कें कतहु सँ प्राण एलैन्ह । हृदय मे भ्रातृस्नेहक समुद्र उमड़ि एलैन्ह। कलपि-कलपि कय सभटा हाल सुना गेलथिन्ह ।

मसियौत भाय आश्वासन दैत कहलथिन्ह–कोनो चिन्ता नहि । एहिठाम एकटा मोहर्रिर रहैत छथि । हमर बेश चिन्हार छथि ! चलह, हुनके सँ काज भए जैतौह।

झारखंडी अपना मसियौत भायक पाछाँ-पाछाँ मोहर्रिरक डेरा पर पहुँचलाह । ओहिठाम मचिया पर बैसल एक व्यक्ति हुक्का पिबैत रहय । हिनका लोकनि कें देखि कहलकैन्ह–'मोहर्रिर साहब पाखाना गये हैं । करीब एक घंटा में आवेंगे ।'

अगत्या ई दुहु गोटा एक टूटल चौकी पर बैसैत गेलाह । पूरे पैंतालिस मिनट पर मोहर्रिर साहेब उकासी करैत पैखाना सँ बहरेलाह । अबितहि नोकर कें डाँटय लगलाह जे 'साला पैखाना इतना गन्दा काहे कर दिया ! जाने को मिजाज नहीं करता है ।' पुन: हुक्का पिबनिहार व्यक्ति पर बिगड़य लगलाह जे 'हमारा हुक्का ताख पर से क्यों उठा लाते हैं ?' फेरि भीतर जा कऽ कोनो कारणवश धियापुता सभ कें ठोकए लगलाह। जखन ओ सभ चें-भों करए लगलैन्ह तखन मोहर्रिर साहब बाहर ऐलाह।

हिनका लोकनि कें बैसल देखि मोहर्रिर तमसा उठलैन्ह–'ए साहब क्या कर रहे हैं ? चौकिया टूट न जायगी ।'

ई लोकनि फुरफुरा कऽ उठि गेलाह और सभ वृत्तान्त कहि सुनौलथिन्ह। मोहर्रिर साहेब कहय लगलथिन्ह–'ए साहब ! हम तो लिखने-पढ़ने का काम बिल्कुल छोड़ दिए हुए हैं । खाँसी के मारे नाकोदम आ गया है । उसमें कब्जियत हो गई है सो पैखाना जल्दी उतरता ही नहीं । खैर, लाइये तो देखें, कैसा तार है ।'

मोहर्रिर साहेब तार कें तजबीज करैत बजलाह–'ए साहब ! हमको तो बिना चश्मा के कुछ सूझता ही नहीं है ।' नौकर पर खिसिया कऽ कहलथिन्ह–'रे उल्लुआ! ताकता क्या है ? चश्मा न ले आ ।'

चश्मा एला उत्तर मोहर्रिर साहेब नाक पर कमानी चढ़ौलन्हि, फेरि लत्ताक छोर सँ ओकरा कान में बन्हलन्हि । तखन तार पढ़य लगलाह–'ए साहब ! पहले 'बी' मालूम पड़ता है, तब शायद 'एन' है–नहीं 'डब्ल्यू' है, उसके बाद 'जेड' है, उसके बाद ......ए साहब ! यह तो बड़ा गड़बड़ है । हमसे नहीं होगा । नाहक इतना तंग किया। ले जाइये।'

झारखंडीनाथ अपना मसियौत भायक संग पुन: भोजनालय मे पहुँचलाह । दीप लेसबाक बेरि भय गेलैक । मसियौत भाय आग्रह कैलथिन्ह जे 'आब कतौ जैबह? राति होटल मे खा-पी कऽ भिनसरे चलि जैहऽ ।'

झारखंडीनाथ जन्म-भरि कहियो होटलक मुँह नहि देखने छलाह । आइ पहिले-पहिले होटलक सिहन्तगर नाम सुनि आह्लादित भय भोजनालयक भीतर मे जा कऽ देखलन्हि जे टोकनाक टोकना चढ़ल अछि । एकटा अढ़ैया मे अरुआ चाउर लगाय सौंड़ पसाओल जा रहल अछि । एकटा बड़का टोकना मे पीयर राहड़िक दालि लगाओल जा रहल अछि । अन्दाज पसेरिएक तरकारी काटल जा रहल अछि । एगोटा बड़का सिलौट पर आमक चटनी पिसैत अछि । ई सभ देखि झारखंडीक जीभ सँ पानि खसय लगलन्हि । मसियौत भायक लग जा कऽ पुछय लगलथिन्ह–भाइ साहेब एतय कोनो भोज-भातक तैयारी भऽ रहल छैक की?

मसियौत भाय कहलथिन्ह–एतय सभ दिन एहिना होइत छैक । दु आना पैसा देला सन्तौं जे क्यो आबथि तनिका भरिपेट भात, दालि, तरकारी और चटनी खोआए

देल जाइत छैन्ह !

झारखंडी कनेक विस्मित भय बजलाह--और जे क्यो असौंजनिया छथि तनिका लोकनि कैं की भोजन कराओल जाइत छैन्हि ?

मसिऔत भाय बिहुँसि कय कहलथिन्ह--जे क्यो असौंजनिया अबैत छथि तनिका लोकनि कैं नीक जकाँ खानन-काजर कए पान-सोपारी बिदाइ दए सौजन्य कराओल जाइत छैन्ह । किन्तु डाला पर पहिनहि सभ दाम जोड़ि कए चढ़ाबए पड़ैत छैन्ह ।

झारखंडीनाथ आश्चर्यित भय बजलाह--अरी तोरीक री तोरी ! एहन रंगलाल त कहियो ने सुनने छलिऐक ! बेश, ई त कहू जे घरबैयाक मूल की थिकैन्हि ?

मसियौत भाय आकुंचित नयन सँ कहलथिन्ह--घरबैयाक मूल थिकैन्ह अहिंजले भलवार । हिनका ओहिठाम आब बड़-बड़ पैघ लोक अबैत छैन्हि। बैह देखू एकटा पागधारी औंखन आबि रहल छथि । ई उपदेशकजी थिकाह। आन ठाम जेताह त भरि ठेहुन जमाबए लगताह जे हम असले चाउर भोजन करैत छी, किन्तु एहिठाम एला सन्ताँ अर्पित-सर्पित सभटा हाविष्य बनि जाइत छैन्ह।

एतबहि मे एकटा मैट्रिक फेल जे डाकपिउनगिरीक हेतु सिफारिशी चिट्ठी अनने छल और दू-तीन दिन सँ दौड़ि बरहा करैत छल, भोजनालय मे पहुँचल। झारखंडीक मुँह सँ लगातार तारक चर्चा सुनि ओ कहलकैन्ह-'महाराजजी ! कैसा तार है ? लाइये न, पढ़ दें ।' झारखंडीनाथ हड़बड़ी मे दुनू हाथें तार बढ़ा देलथिन्ह। ओ तार पढ़ए लागल--

'मैरेज सेट्ल्ड ब्रिंगिंग ब्राइडग्रूम आन ट्यूजडे इवनिंग ऐरेंज ।'

पाछाँ भाषा मे अर्थ बुझाबय लगलैन्ह--तार पटने से आया है । रेवतीरमण नाम के किसी आदमी ने पटना से तार भेजा है । शादी ठीक हो गई । वह मंगलवार की शाम को दूल्हा लिये आ रहे हैं । तबतक सब इन्तजाम कीजिये।



[४]

जहाज परक गप्पशप्प

संध्याक समय अछि । सूर्य भगवान रूसल जमाय जकाँ मुँह बिधुऔने प्रस्थान कय रहल छथि । गंगाजीक हिलकोर देखि भाने ... छल जेना जमायक रूसला सँ गोंढक छोड़गरि सासुक छाती दलमलित भय रहल हो ।

एतबहि मे एकटा स्टीमर शंखनाद करैत महेन्द्रू घाट दिशि अबैत दृष्टिगोचर भेल। जहाजक भोंपा सुनितहि समस्त यात्रीगण मे भारी होंस उठि गेल । जेना 'सिरकट्टा' दौड़ल अबैत हो ।

जहाज घाटो मे लागल छल कि असंख्य कुलीवृंद मुसाफिर लोकनि कें धकियबैत, केहुनियबैत, सुग्रीवक दल जकाँ फानि कए ओहि पर टूटि पड़ल। जहिना कुकूरक जमात एंठ पात देखि चारू कात सँ ओहि पर झपटैत अछि, तहिना कुलियो सब ट्रंक ओ मोटा देखि ओहि पर झपटैत गेल और छीनाछोरी करैत उठाबय लागल।

जहाजक मुसाफिर लोकनि उतरबाक नोसथिदे बनबैत छलाह कि घाट परक धरोहि एके बेरि रेलमपेल करैत जहाज दिशि फ० जोर कय देलक ।

  

एही धक्कमधुक्कीक समय मे एगोटा स्थूलकाय नेने घाटक सीढ़ी पर धड़फड़ाइल आबि रहल छथि । झटकला सँ सौंसे देह घाम सँ तर-बतर भय रहल छैन्ह । तथापि थुलथुल करैत, अपना भरि अपस्यौंत होइत नीचा उतरि रहल छथि । धौतवस्त्र अत्यन्त ढील भय डाँड़ सँ अहिंसात्मक असहयोग कय रहल छैन्ह । जहिना एक हाथ सँ फुजल साँचो सम्हारय लगलाह कि बामा हाथ सँ लोटा खसि पड़लैन्ह । गंगाजल सँ भरल चलगइयाँ लोटा ढनढना क० ओंकढ़ाइत--ओ उछाइत गंगाजीक धार मे जा क० विश्राम लेलक ।

एतबहि मे जहाजक भोंपा बाजि उठल । ई सुनैत आगन्तुक टाँहि देलन्हि--'औ लाल छी औ ? आहि रौ बाप ! औ की भेलहुँ औ...!' उत्तर नदारद।

एहि बेरि कुचकुन चौधरी कें जतेक दम छलैन्ह ततेक जोर सँ चिचियाय

लगलाह–'ओ ला-आ-आ-आ-ल ! कतहु लाल छी ओऽऽऽ!' एहि बेरि जहाज पर सँ तीव्र स्वरें उत्तर श्रुतिगोचर भेल–'एम्हरे, एम्हरे । चलू झट दऽ । जहाज छुटैत अछि ।'

आब बुचकुन चौधरी कें कतहुँ मे प्राण ऐलैन्ह । लोटाक मोह छोड़ि तलमलाइत-तलमलाइत जहाज पर चढ़ि गेलाह ।

बुचकुन चौधरी कें देखितहि लालकका पुछलथिन्ह– अहाँ लघुशंका करए गेलहुँ से एतेक विलम्ब कतय लागल ? हमरा त होइत छल जे आब अहाँ एतहि छुटलहुँ।

चौधरी जी अङपोछा कें बीयनि जकाँ घुमबैत बजलाह– आहि ! की कहू? भारी फेर मे पड़ि गेलहुँ । लग मे कतहु निकासे नहि भेटैत छल । एहि दिशि महादेवक घाट छैन्ह । ओहि कात गेलहुँ त टमटम सभ ठाढ़ । जेम्हरे जाइ तेम्हरे लोक सभ धड़मुड़िया देने। एक ठाम बैसय लगलहुँ त ओहिठाम 'हवागाड़ी' पहुँचि गेल । तखन की करू । जा कऽ सत्यदेवक डेरा सँ लघुशंका कय ऐलहुँ अछि । ओहिठाम जहिना पहुँचैत छी कि जहाज एम्हर भोंमियाय लागल । से तहिठाम सँ बुझू जे दे दड़बड़, दे दड़बड़ ....

ई कहि चौधरीजी पुन: हाँफय लगलाह और पंखा डोलाबय लगलाह। जखन हँफनी किछु कम भेलैन्ह, तखन एकाएक चाबि उठलाह–लाल ! लोटा त गंगाजी मे खसि पड़ल। धड़फड़ी मे हाथ सँ छूटि कऽ डनमनाइत-डनमनाइत नीचा गेल । जा निहुरी-निहुरी ता तँ पार ! लोटा तँ गेल से गेबे कैल, गंगाजलो सभ छुट्टी भऽ गेल ।

ई सुनितहि लालककाक रंग उड़ि गेलैन्ह । अत्यन्त खिन्न भय बजलाह–आह! लोटा खसि पड़ल ? बहुत दिन सँ हमरा सङ छल । प्रयागक कुम्भ मेला मे जा कऽ किनने छलहुँ । आब कि ओहन लोटा एहि देश मे भेटि सकैत अछि ? कतेक यत्न सँ अपन नामो ओहि पर खोदबौने छलहुँ।

लालक मुखाकृति स्याह होइत देखि चौधरीजी झट बाजि उठलाह–नहि, नहि। अहाँक लोटा दऽ नहि कहैत छी । ओ त मोटा मे बन्हले अछि । हमर अपने लोटा हेरा गेल ।

ई सुनितहि लालककाक पितपिताएल ठोर पर हँसीक रेखा आबि गेलैन्ह। बजलाह–अहाँक लोटा छल ! हेराइये गेल तँ कोन क्षति ? घृत कतय हेराएल तँ दालि मे । गंगेजीक उदर मे पैठ भेलैन्ह कि ने ? ई भाग्यहिक बात बुझक चाही । लोटा त कतेक भऽ जाएत, किन्तु गंगानाइक कृपा सदैव एहिना होइत रही यैह बड़का बात।

चौधरी मनहिमन कहलन्हि–'एहन कृपा अहीं कें सदैव होइत रही । कतेक अपना दऽ बुझि पड़ल तँ केहन छिलमिला उठलहुँ ! आब ज्ञान-गुदरी छाँटए लगलहुँ अछि ।' पुन: प्रकाश्य स्वर मे बजलाह–'लोटा हेरा गेल से एक तरहेँ नीके भेल। ओकर कनखा किछु ओदरि जकाँ गेल छलैक । से मँजबा काल कतेक दिन आँगुरे कें घार कऽ दैत छल । आब ओहि दर सँ तँ बचलहुँ।

एतबहि मे जहाजक तेसर घन्टी बाजल और जहाज विपुल-जलराशि कें चिरैत बिदा भेल । घाट सँ देखला उत्तर बुझि पड़य जे जहाज गंगाजी मे पानिक सड़क बनबैत जा रहल अछि । किन्तु ओ सड़क बाल-विधवाक मनोरथ जकाँ बिलाएल जा रहल अछि ।

  

देह मे बयार लगला पर बुचकुन चौधरि लालकका सँ गप्प करबाक हेतु कोनो बात फुराबय लगलाह । जखन और किछु नहि फुरलैन्ह तखन बजलाह–लाल ! बटुकजी त 'सभा' पहुँचि गेल होएत । कतहु एहन ने हो जे ओम्हर भोलानाथ गोटेक दोसर 'बिरछा' नेने आएल होथि ।

ई बात लालकका कें कठाइन जकाँ बुझि पड़लैन्ह । तथापि बल सँ हँसि कय बजलाह–नहि । एहन नहि भय सकैत अछि । हम गामक पता सँ तार दैए देने छिऐन्ह। तखन बटुकजी कें पठाइये देने छिऐक । कालिहये सौराठ पहुँचि गेल होएत। दोसर, जे भोलानाथ हमरा बिनु सूचित कैने 'बालक' नहि आनि सकैत छथि ।

चौधरि आब हँ मे हँ मिलबैत कहलथिन्ह–हँ, से तँ ओ साक्षात भोलेनाथ थिकाह। बिनु पुछने लघुशंको करय नहि जैताह । घर अनबाक कोन कथा? आब तँ बटुकजी द्वारा सभ ज्ञात भेल हैतैन्ह ।

लालकका एहि बेरि गम्भीर मुद्रा बना कय बजलाह–बटुकजी अछि कनेक बुड़ि जकाँ । तँ सन्देह होइत अछि जे संवाद पहुँचल होइन्ह वा नहि ।

–कहियो पूर्व मे 'सभा' गेल अछि कि नहि ?

–हँ, से त हमरा संग तीन बेरि भऽ आयल अछि, किन्तु बोध नहि भेलैक अछि । ओतय पहुँचले उत्तर दिसौंस लागि जाइत छैक । हम त अपना भरि खूब बुझा-सुझा कए पठौने छिऐक जे पहिने टुन्नी झा घटकक खोज करिहऽ, वैह सभ कए देथुन्ह । आब देखा चाही जे केहन यश लगबैत अछि ।

चौधरीजी सोचय लगलाह जे एहि पर की बाजू । तावत लालकका पूछि बैसलथिन्ह–जमाय खूब पसन्द पड़लाह किने ?

चौधरी जी 'रोटिया गवाह' छलाह । हुनका सिद्धान्त 'सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्' एहि वचनक केवल उत्तरार्द्ध टा माननीय छलैन्ह । पूर्वोक्त प्रश्न यदि कंओ आन व्यक्ति एकान्त में पुछने रहितैन्ह त कोराक समस्त निन्दापूर्वक राय कैं निचड़ा देने रहितथि। किन्तु लालककाक मुँह सँ ई प्रश्न सुनि केवल अलंकार में प्रशंसा करए लगलाह–जमाय त बस जमाइये छथि । जेहन होमय बुझए । आइकाल्हिक जे थिकैक छओ पाँच, से एकोरत्ती नहि छैन्ह। दोसर कंओ अङरेजियो रहैत त मारि टीमटाम कोटफाट–मचमच करैत चलैत। किन्तु ई त बुझू जे परमहंसे थिकाह । एहन त कतहु देखबे नहि कैल। तखन अवगुण में अवगुण यैह जे कनेक मोटिया पहिरैत छथि ।

ई कहि चौधरी मंद-मंद हँसय लगलाह ।

लालकका किछु अधिक घूमल–फिरल छलाह । बजलाह–खद्दर पहिरैत छथि से तँ कोनो तेहन अनर्गल नहि । आइकाल्हि बसातें सैह बहि गेल छैक। हमहीं देखू जे कइएक ठाम भारी धुसान में पड़ि गेल छी । किन्तु यैह कहि जान छोड़बैत छी जे 'बाबू ! ई धोती हमर अपन किनल नहि अछि । बिदाइ में भेटल तँ कोना फेंकि दिय। हँ, आब जौं किनबाक होएत त स्वदेशीए कीनि लेब ।'

जखन चौधरीजी देखलन्हि जे लाल अहू विषय में हाथ नहि लगलाह तखन बाजय लगलाह–आहि, आहि, आहि ! से त अवश्ये । आब त नीक नीक लोक बूझू जे खद्दरे पहिरय लागल अछि । और आब विलायती कपड़ा भेटबे कतए करैए? सभ दोकान पर दू-दू गोटा नकुल–सहदेव जकाँ ठाढ़ ! की त हम स्वयंसेवक थिकहुँ!

लालकका कहलथिन्ह–देखितहि छी कतेक कठिनता सँ चारि खण्ड विलायती साड़ी भेटल अछि । मिसरक खातिर त सभटा वस्त्र खादिएक लेबय पड़ल अछि। किन्तु आङनक हेतु बुझू सौंसे बाकरगञ्ज छानि कय तखन चारि टा पातर साड़ी भेटल अछि।

बुचकुन चौधरि एहि कथाक समर्थन करबा लय सुरफुरैलाह । किन्तु लालकका वार्त्तालापक रुख बदलल जकाँ देखि चट दऽ पूछि बैसलथिन्ह–की ? जमायक शील-स्वभाव केहन बूझि पड़ैत अछि ।

चौधरीजीक मुँहक बात मुँहे रहलैन्ह । बजलाह–'आहि आहि ! शील-स्वभावक कोन कथा ? परम सात्विक छथि । असले सत्ययुगी अवतार! आइ-काल्हिक नवतुरिया

छौंड़ा सभ जहाँ ए० बी० सी० डी० फो० टी० पढ़ि लेलक कि भदैया बेङ जकाँ कोंकियाए लगैत अछि । बूढ़ पुरनिया कैं के गुदानैत अछि ? सदिखन बबुआनी फैशन में चूर । किन्तु हिनका में त घमण्डक छुतियोटा नहि छैन्ह । एकरा सोन में सुगन्ध बुझबाक चाही। धाख–संकोच सेहो बेश छैन्ह। तखन माथ जे नहि झाँपै छथि से त कनेक नेनमति जकाँ छैन्ह । हमर ससुर त एना वृद्ध भऽ गेलाह, आँखि सँ नहि सुझैत छैन्ह, किन्तु औंठ्हन यदि कतहु भेंट भऽ जाइत अछि त झट दऽ धोतियाक मोंची खोलि कए माथ पर राखिये टा लैत छी ।

लालकका देखलन्हि जे ई कतबो प्रशंसा करथु प्रशंसाक बाप नै करताह, तथापि अन्त में एक शह धरि अवश्ये लगा देताह । अतएव हारिदारि कए आब अपनहि दिशि सँ कहय लगलथिन्ह–ई कुटुम्ब असल में पूछी त हमरा कृत्ये नहि भेल छथि। एकर सांरहो आना यश वा अपयश 'कनटीर' कैं छैन्हि । ओ त कहैत छथि जे ई एकटा रत्ने थिकाह । ई त दैव कैं अनुकूल बुझबाक चाही, नै त इ कतहु हमरा ओहितान आबथि। वर–वरगुण देखितहि छी–बी० ए० पास, घर सँ बेश सुखितगर, पाँच–छौ सैं टाकाक नगदी तहसील–सभ जैतथि त एक हजारसँ कम नहि भेटितैन्हि । किन्तु ई बड़ उच्च विचारक छथि । कहै छथि जे तिलक प्रथा अन्याय थिक । विवाह स्त्री-पुरुषक होइत छैक, किछु टाकाक नहि । तैं हमरा सँ एकोटा कैञ्चाक अपेक्षा नहि रखैत छथि। एहन कथा यदि आन ठाम करितहुँ त तनो–तरीज भऽ जैतहुँ–ओहि पाछाँ बिका जैतहुँ, किन्तु हिनका में त जगदम्बाक कृपा सँ कोनो टा खर्चे नहि । तखन ई त हमरा वास्ते बूझू जे देवते भऽ कऽ ठाढ़ भेल छथि ।

चौधरजीक अपन जमाय पढ़बा-लिखबा में सिलपट्ट छलथिन्ह । ताहू पर बरियात बिदा करय काल एक जोड़ बरदक खातिर ससुर जमाय में खूब धुक्कम-फज्जति भऽ गेल छलैन्ह, जे समस्त गाँव में प्रख्यात छल । अतएव लालककाक सौभाग्य-सूर्य कैं एकाएक एतेक चमकल देखि चौधरीक आँखि फूटय लगलैन्हि । तथापि आन्तरिक भाव कैं दबा कए कहलथिन्ह–ईह ! अहाँ त 'अल्दी' मारि देल । अपना टोलक कोन कथा–गाँव भरि में एहन कुटुम्ब कंओ नहि अनने छलाह–से बड़का-बड़का बबुआन सभ देखि कय दाँत आङुर काटय लगताह । यावत सभ कंओ सभा में टौंहि–टौंहि करैत छलाह, तावत एही ठाम में अहाँ खड़े पचीसे रंग.........

एतेक धरि बाजि ईर्ष्याक प्रबल वेग सँ रुद्धकण्ठ चौधरी आगाँ नहि बढ़ि सकलाह।

लालकका सौजन्य देखबैत कहलथिन्ह—ई कथा जे भऽ सकल से अहाँ लोकनिक कृपाक फल थिक । अहाँ त संयोग सँ हाइकोर्ट मे अपील करय आबि गेलहुँ तँ, नहि त एसकर हमरा बुते कोनो टा काज सम्हरैत ? कनटीर त सदिखन मिसरेक संग रहैत छथि । दुहु गोटा कें सुलग्नक भेट छैन्ह, तें एतेक मेल रहैत छैन्ह ।

ई कहि लालकका मन्द मन्द मुस्काय लगलाह । लालकका कें एहि तरहें प्रसन्न होइत देखि चौधरीजीक सौंसे देह मे आगि लागि गेलैन्ह । मन मे कहलन्हि—'कोन एहन सोति कें उठा अनलन्हि अछि जे एतेक गतियाइत छथि ? एक पहर सँ अपना भरि हकि रहल छथि जेना हमरा लोकनि कहियो कुटुम्बक मुँह नहि देखने रही। बेश, हिनक मोंछो त कनेक तोड़ि देबाक चाही । ई विचारि चौधरीजीक तीक्ष्ण दृष्टि छिद्रान्वेषण दिशि तत्पर भेल । बजलाह—'मिसरक पिता त नहि जीवित छथिन्ह। वैह कनेक अक्षी जकाँ...।'

लालकका बीचहि मे बात काटि कहलथिन्ह—पिता नहि छथिन्ह तँ हर्ज की? आब किछु नाबालिग त नहिए छथि । भगवानक कृपा सँ अपन कार्य्य देखबा योग्य...

चौधरी—घरे किछु अधिक दूर पड़ैत छैन्हि । भागलपुर जिला एहिठाम सँ...

ला०—आब त रेलक प्रसादात् दूर कतहु रहबे नहि कैल । और भागलपुर जिलाक त अपना गाम मे कइएकटा कुटुमैती अछि ।

चौ०—मिसरक बयस किछु अधिक जकाँ बूझि पड़ैत छैन्ह। हमरा लोकनि कें त नहि कोनो हर्ज, किन्तु स्त्रीगण कें............

ला०—नहि, बयस त बेशी नहि छैन्हि । ई बाईसम वर्ष थिकैन्ह ।

चौधरीजी देखलन्हि जे आब कोनो मे नहि लहल, तखन अगत्या गस्सा मे गस्सा मिला कए दसो आङुर कें फोड़य लगलाह ।

☼ ☼ ☼

एतबहि मे जहाज कर्णभेदी नाद करैत पहलेजा घाट पहुँचि गेल । सभ यात्री एक दोसरा सँ पहिनहि जैबाक हेतु फाँड़ भिड़ने 'पहलेजा' नाम कें सार्थक करय लगलाह।

लालकका ओ बुचकुन चौधरी ठाढ़ भय अपन वस्तुक रक्षा करय लगलाह। तावत रेवतीरमण पाहुन कें संग नेने ओहि ठाम पहुँचि गेलथिन्ह । जखन भीड़ छटि गेलैक त ई चारू गोटे जहाज सँ उतरैत गेलाह ।

बुचकुन चौधरि दिन मे सूतल नहि छलाह । अतएव ई अभीष्ट छलैन्ह जे गोटेक खाली कोठरी भेटय त ओहि मे खूब आराम सँ सूति रही । अतएव कुलीक माथ पर असबाब लदबौने गाड़ीक आदि सँ पछोहि धैलन्हि और अन्त धरि चलि गेलाह। कतहु पसंद नहि पड़लैन्हि । तावत गाड़ीक सभ डब्बा पुरोहितक पेट जकाँ भरि गेल! बुचकुन चौधरी कठिन समस्या मे पड़ि गेलाह। हिनका अकमकाइत देखि खौंझाएल कुली और जोर सँ चिचियाय लागल ।

चौधरीजी कें किंकर्त्तव्यविमूढ़ भेल देखि रेवतीरमण फानि कय एकटा कोठरीक दरबाजा खोलि ओहि मे असबाब रखबाबय लगलाह । कोठरीक यात्री लोकनि एक स्वर सँ एहि क्रियाक घोर विरोध करय लगलाह । तथापि चारू गोटे येनकेनोपायेन ओहि मे प्रविष्ट भेलाह ।

बुचकुन चौधरि नीक जकाँ गाड़ी मे चढ़बो नहि कैल छलाह कि लगलाह हड़बिड़रो उठाबय—हमर धोतीबला मोटरी कतय अछि ?

लालकका पुछलथिन्ह—की ! फेरि किछु छूटि त ने गेल ?

चौधरी बजलाह—हम ओहि पार मगह जानि गंगास्नान नहि कैल । जाइत छी तुरन्त एक डूब देने चल अबैत छी ।

लालकका कहलथिन्ह—आब समय नहि अछि । बरु, अहाँ झट दऽ डूब दए आउ,ता हम धोती बाहर कए रखैत छी ।

चौधरीजी ने आव देखलैन्हि ने ताव, सोझे गंगाक मुँहे बिदा भऽ गेलाह। जहिना चौधरी भरि ठाँढ़ गंगाजल मे धसलाह कि ओम्हर गाड़ी सीटी दय देलकैन्ह । चौधरजी ठामे एक डूब दय लदफद धोती नेने पानि चुअबैत दौड़लाह। गाड़ीओ क्रमशः मन्द गतिएँ बिदा भेलि । लालकका खिड़की सँ मुँह बाहर कए जोर सँ सोर पारय लगलथिन्ह। चौधरी दौड़ैत-दौड़ैत रेलवी लाइनक समीप पहुँचि गेलाह और जाहि डब्बा मे लालकका रहथि तकर समानान्तर दौड़य लगलाह । किन्तु सहसा गाड़ीक स्पीड तेज भय गेलैक और चौधरीजी केवल एक हाथक अन्तर सँ छूटि गेलाह ।

❑

[५]

गोसाँओनिक गीत

झारखंडीनाथ तारक अर्थ घोखैत-घोखैत गाम दिशि विदा भेलाह । एही धुन मे मस्त भेल बहुत चल अबैत छलाह कि पाछाँ कनपट्टी लग घंटी टनटना उठलैन्ह । जहिना पाछाँ फिरि कय ताकय लगलाह कि नीचा साइकिलक अगिला पहिया सरसराइत साँची धोतीक मध्यभाग मे समधिया गेलैन्ह । तदुपरान्त सड़कक दोष सँ वा साइकिलवलाक दोष सँ वा पृथ्वीक आकर्षणशक्तिक दोष सँ झारखंडीनाथक शरीर तुरन्त लम्ब सँ आधार रूप मे परिणत भय गेलैन्ह। लगभग एक पल धरि साइकिलक चेन मे ओझराएल रहलाह । पुनः देह झाड़ि कय उठलाह । देखैत छथि जे साइकिलवला और केओ नहि, वैह सकुड़ीक डाक्टर थिक ।

झारखंडीनाथ पढ़ैबाक उपक्रम करय लगलाह । तावत पीठ मे केओ पम्प लऽ कऽ एहि प्रकारें स्पर्श कैलकैन्ह जे ओकर दोसरो नकशा ओहिठाम उखड़ि गेलैन्ह।

झारखंडीनाथक आगाँ अन्हार भऽ गेलैन्ह । तारक जे जे अर्थ घोखैत अबैत छलाह से सभटा बिसरि गेलैन्ह। साइकिल हनहनाइत निकसि गेल ।

झारखंडीनाथ जखन घर लग पहुँचलाह तखन थोड़ेक काल ठाढ़ भऽ कऽ कानय-कानय सन मुँह बना लेलन्हि । पुनः ठेहुन कैं धैने नङराइत-नङराइत लालकाकीक आँगन मे प्रवेश कैलन्हि ।

लालकाकी पिडरि कटैत छलीह । झारखंडी कैं देखतहि बाड़ टकुरी कैं छोड़ि ठाढ़ि भऽ गेलीह । कहलथिन्ह—ऐ बाबू ! अहीं पर मन टाँगल छल। राति भरि ततेक अन्देसा भेल जे नींद नहि पड़ल । आइ भिनसरे अजगैबीनाथ सँ सगुन कराओल त कहलन्हि जे सीताक घर मे सगुन उचरल अछि से अवश्ये किछु ने किछु भाङठ भेल हैतैन्ह । आब अहाँक मुँह देखि जी मे जी आएल! ऐ बाबू! एतेक बिलम्ब कोना भेल ?

एकरा उत्तर मे झारखंडीनाथ ठोहि छोड़ि कानय लगलाह । हिचकी उठि गेलैन्ह। नाक सँ पानि खसय लगलैन्ह । ई देखितहि लालकाकी पुक्की देलन्हि—'अरे रे.........ऐ.........बा ! मुँहँसा सभक छाती जुड़लैक रे दैबा !' बस, देखादेखी सौंसे आङन मे कन्नारोहटि पसरि गेल ।

कन्नारोहटिक शब्द सुनितहि आवेशरानी फुलमतियाक संग हकासलि-पियासलि लालकाकीक आङन पहुँचलीह । बजलीह—हमरा त भेल जे थौआदाइ आइलि अछि। भोलाबाबू ओहि दिशि गेले छथिन्ह । भरिसक लेआओन करैने आएल होइथिन्ह । से जहिना निपै छलहुँ तहिना नुइहे हाथें दौड़लहुँ ।

फुलमतिआ अपन फुली देखबैत बाजलि—आ हम त कनटीरवा कैं छोंचबै छलिऐक। जहिना कननाइ सुनलिऐक कि लोटा फेंकि कऽ दौड़लहुँ ।

झारखंडीनाथ देखलन्हि जे हमर कननाइ तँ दोसरे रङताल पसारि देलक। तँ आब अपन अर्जीदावी पेश करय लगलाह—अरी बाप रौ बाप ! ज्योतिषी ककाक हम की बिगाड़ने छलिऐन्ह जे हमरा बध कराबय पर लागि गेलाह। सकुड़ीक डाकदर सनकाह लोक, तकरा लग खून होमय लेल पठा देलैन्हि! ओहि ठाम त जे मारलक से रामजीक प्रताप सँ मारबे कैलक, गामक सिमान धरि नेङरौने आएल छल । कोनो तरहें प्राण बाँचि गेल । ठेहुन-केहुनी सभ फूटि गेल । देखि लियऽ । अहाँ जे नबका धोती देने छलहुँ से रामजीक प्रताप सँ चिरीं-चिरीं भऽ गेल । जौं फूसि कहैत होइ त बंश तर होइ ।

लालकाकी आतुर भय पुछलथिन्ह—ऐ बाबू ! आब त जे भेलैक से भऽ गेलैक। तारक हाल कहू । अपने जिबैत छथि कि नहि ?

झारखंडीनाथ अपन केहुनाठी कैं तजबीज करैत बजलाह—तारक बात सभ त हम मन पाड़ने अबैत छलहुँ । से रामजीक प्रताप सँ एहन सटका मारि देलक जे सभ टा बिसरि गेल ।

एतबहि मे सड़क पर एक्काक खड़खड़ाहट सुनि पड़ल । झारखंडीनाथ पुनः अनिष्टक भय सँ झट कान पर जनउ चढ़बैत अपना बथान दिशि विदा भेलाह । एक्का लालकाकीक दरबाजा पर पहुँचल । ओहि पर सँ भोलानाथ और बटुकजी उतरलाह। भोलानाथ झा धुरिआएले पैरें आङन मे जाय बजलाह—भौजी, खुशखबरी नेने ऐलहुँ अछि। इनाम दियऽ ।

लालकाकी भोलानाथ कैं देखतहि आनन्द सँ अपना कैं बिसरि गेलीह। पुनः बजलीह—ऐ छोटका बाबू ऐ छोटका बाबू ! बड़ संकट मे आबि कऽ उबारि लेलहुँ। आइ दू दिन सँ पेटक अन्न लावा-फरही होइत अछि ।

छुनमुनकाकी माँड़ पसबैत छलीह । अपना स्वामीक स्वर सुनितहि पसौनाइ छोड़ि घर मे जा नुकैलीह । बुचिया एक लोटा पानि ढारि कय भोलानाथक आगाँ मे राखि देलकैन्ह । भोलानाथ पैरक औंठा कैं मैंजैत बजलाह—'भौजी ! इनामक बात अन्ठा देलहुँ। से अन्ठौने काज नहि चलत ।' लालकाकी बिहुँसि कय कहलथिन्ह —इनाम मे चारि

मास और बाँकी रहि गेल अछि । जौं ठाकुरजीक कृपा होएत त...'

भोलानाथ लजा कय बात करैत बजलाह—हम त दोसरे कथा ठीक कैने छलहुँ । घुटर मामा कें सोरहो आना पसन्द छलैन्ह । तावत बटुक जी दोसरे संवाद लऽ कऽ पहुँचि गेल जे लालकका अपना संग वर नेने चल अबैत छथि ।

लालकाकी कें विधाता पर अत्यना पित्त उठलैन्ह जे दुइएटा टा कान किऐक देलन्हि, जौं चारि टा कान देने रहितथि त चारू कान सँ ई बात सुनितहुँ । आवेशरानी कें हर्षक द्वारे सौंसे देह मे गुदगुद्दी लागय लगलैन्ह ।

लालकाकी एके साँस मे एतेक प्रश्नक वर्षा करय लगलीह—कहू कहू ऐ बाबू! कखन वर औतैक ? केहन छैक ? कतेक टा ? गोर छैक कि कारी? नाम की छैक? घर कोन गाम छैक ?

भोलानाथ कहलथिन्ह—'बटुकजी सँ सभटा हाल पूछि लियऽ । हमरा आब स्नान मे अतिकाल भेल ।' ई कहि भोलानाथ मोटरी सँ धोती और अङपोछा बाहर कय एक चुडू कडू तेल माथ मे पचबैत पोखरि दिशि विदा भेलाह।

आब स्त्रीगणक गरोहि बटुकजी पर टुटि पड़ल । बटुकजी चारूकात सँ घेरा गेलाह। लालकाकी पुछलथिन्ह—ऐ बाबू ! कहू, वर देखय-सुनय मे केहन छैक ?

बटुकजी अपन स्वाभाविक भाषा मे बाजल—वर देखे सूने मे केहन रहतन? जेहन आदमी होइअऽ । एगो नाक हइन, दूगो कान हइन, हाथ गोर हइन; और केहन रहतन ?

आवेशरानी पुछलथिन्ह—वरक अङौट केहन छैक ?

बटुकजी—न कौआ जैसन करिया छथ न बगुला जैसन उज्जर ।

लालकाकी पुछलथिन्ह—वर कतेक टा छैक ? कैयम वर्ष हैतैक ?

बटुकजी—न बूढ़ लेखा दाँत टुटल हैन न लड़िका लेखा दूध पिबै छथ । और धुआ मे हमरा न देखली वरे के देख लेली ।

आवेशरानी —ऐ बाबू ! पम्ह चललैन्ह अछि कि नहि ?

बटुकजी—पम्ह के के कहे गलमोछा तक हो गेलैन । लड़कारी एखनी तक थैले रहतैन ?

ई बात सुनि लालकाकीक मुखमण्डल मुरझा गेलैन्ह । पुछलथिन्ह—हौ बाबू! जमाय पढ़ल-लिखल छैक कि नहि ?

बटुकजी—हमरा लेखे त कुछ न छथ । 'शंशकीरित' मे हमरा साथ न बोल सकै छथ । एगो कनीगो 'जोतिश' के बात पूछ देलिएन, ताही मे ठेकार हो गेलैन । 'शीशुबोध' के एगो इश्लोक पुछलिऐन त चूड़ा अमौट दुन्नू खसे लगलैन।

आवेशरानी—वर खूब सुखितगर होएतैक ?

बटुकजी—कुछ न छथ । मङनी मे मँहग छथ ।

लालकाकी—तखन कोन गुन पर ठठा कऽ नेने अबैत छथिन्ह ?

बटुकजी—जाने गेलिऐन ? कैसे पसिन्द पड़ गेलैन ! वर के त बोलहू के लूर न हइन । सभ के 'आप' 'आप' कहै छथ ।

ई सुनितहि स्त्रीगणक मंडली मे भारी हँसी उठि गेल । आवेशरानी हँसैत-हँसैत बजलीह—ऐं बहिना ! ई ने कहियो सुनने छलिऐक । 'आप' की कहबैत छैक ?

सूर्यमुखी हँसैत-हँसैत ओङड़ाय लागलि । बाजलि—'अहि गे माय ! 'आप' की कहैत छथिन्ह ? ताहि सँ सोझे 'बाप' किऐक ने कहैत छथिन्ह ?' एहि पर पुनः ठहाका पड़ल ।

ई देखि लालकाकीक जी पित्ते अँह भऽ गेलैन्ह । लोहछि कए बजलीह—हऽ! अनकर चौल करैत अनका किछु लगैत छैक ? अही गाम मे केहन-केहन जरलाहा जमाय सभ ऐलैक अछि । हम कहाँ ककरो मुहँ मे खोरनाठ लगाबय गेलिऐक अछि? हमरा आङन मे एखन वर ऐबो नहि कैल अछि । तखन नहि जानि छुच्छी सभ पहिनहि सँ एतेक किऐक जड़ि लागल रहैत अछि ?

एतेक बाजि लालकाकी नहूँ-नहूँ कानय लगलीह । सूर्यमुखी रंग-कुरंग देखि चुप्पे घसकि देलक ।

आवेशरानी आब बात कें चिकनावए लगलथिन्ह—ऐ बहिना ! ई नाहक किऐक सोच करैत छथि ? लालकका किछु आन्हर त छथि नहि जे पंगु कें ठठा अनताह! हुनका सँ बाढ़ि कय सफली के होएत ?

लालकाकी हुनके पर काट करैत उत्तर देलथिन्ह—हित मुदैया सभ कें हँसबाक मन लागल छैक से सभ कें सिहन्नो लागल रहि जैतैन्ह ।

एतबहि मे भोलानाथ झा गंगास्तव पाठ करैत आङन मे पहुँचलाह । लालकाकी देखितहि टोकलथिन्ह—ऐ बाबू ! अहाँक भाय केहन कान्ह-कोढ़ि कें उठौने अबैत छथि से हमरा सरिपों-सरिपों कहि दियऽ, नहि त हम कपार फोड़ि कऽ मरि जाएब। हमर संग उड़िआएल अछि ।

भोलानाथ हाथक लोटा तुलसी चौरा पर धरैत बजलाह—राम-राम ! एहन बात केओ बजैए ! शुभ अवसर पर लोक गीत-नाद गबैत अछि कि ई सभ भखैत अछि! वर त भाइसाहेब एहन नेने अबैत छथि जेहन गाम मे केओ नहि अनने छल । बटुकजी परम बुड़ि अछि । की कहत ?

ई सुनितहि आङन मे जनीजातक मण्डली मे बड़ टहङ्कार सँ गोसाँओनिक गीत उठि गेल ।



[६]

मिस्टर सी० सी० मिश्रा

गाड़ी छुटि गेला उत्तर बुचकुन चौधरि जाड़ तथा क्रोधक वेग सँ थरथर काँपय लगलाह । गंगाजीक प्रति जे भक्ति छलैन्ह से विरक्तिक रूप मे परिणत भय गेलैन्ह। डाँड़ मे अङपोछा लपेटि भीजल धोती गाड़ैत-गाड़ैत बाजय लगलाह—आब कलियुग क गंगा मे कोनो टा महत्त्व नहि रहल । हिनकं चलितें एहन पराभव मे पड़लहुँ । ओहि पार लोटा नेने सन्तोष नहि भेलैन्ह त एहि पार अबैत-अबैत 'खोप सहित कबूतराय नमः' —सभ किछु पार कय देलन्हि । नहि जानि केहन कुयात्रा मे चलल छलहुँ। महेन्द्रू मे कोनो तरहें जहाज भेटबो काएल तँ पहलेजा मे आबि कय गाड़िए छुटि गेल । आब की करू ?

एतबहि मे एक एहन सर्द बसातक झोंक आएल जे चौधरीक सौंसे देह सिहरि उठलैन्ह । आब सब पित्त लालकका पर झाड़य लगलाह—कहाँ सँ ई प्रत्यवाय संग लागल। पापीक संग भेने यैह सभ दुर्दशा होइत छैक । धियापुता ककरो घीढारी करय मङरो। भला हमरे एहि बीच मे सन्हिएबाक कोन प्रयोजन छल ? आब आइ दिन सँ दूनू कान ऐंठैत छी जे फेरि एहन फन्द मे नहि पड़ब ।

एहि प्रकारें चौधरीजी रहि-रहि कए बुमकार छोड़ए लगलाह । जखन धोती कनेक सिमसिम जकाँ रहलैन्ह त वैह पहिरि मोदियाइनक दोकान मे जा एकटा चौकी पर बैसि दोसर ट्रेनक प्रतीक्षा करए लगलाह । बैसले-बैसल झक लागि गेलैन्ह।

जखन चौधरीजीक झक टूटि गेलैन्ह त देखैत छथि जे लालकका सीरम मे ठाढ़ भेल उठाय रहल छथि । चौधरीजी अवाक् भए हुनक मुँह ताकय लगलथिन्ह। लालकका बाजय लगलाह—आब औंघी छोड़ू । अहाँक खातिर हम कंटीर और पाहुन कैं सोनपुर छोड़ि, लगले ट्रेन सँ वापस आएल छी । लिय२, पहिने धोती पहिरि लिय२। कपड़ा सभ नेने ऐलहुँ अछि ।

चौधरीजी चुपचाप धोती, गंजी, बालाबर्ज पहिरि ऊपर सँ दोहड़ि ओढ़ि लेलन्हि और लालककाक संग जा गाड़ीक खाली बेंच पर लम्बायमान भेलाह । दुहू गोटे सुतबाक उपक्रम करय लगलाह । परन्तु चिन्ताक द्वारें दुहू गोटा मे किनको आँखि मे नींद नहि

एलैन्ह । लालककाक मस्तिष्क मे पाग-धुनेस, परक इन्तिजाम, खर्चबर्च और स्त्रीगणक सहमति आदि नाना प्रकारक भावना उठय लगलैन्ह । बुचकुन चौधरीक मस्तिष्क मे एके प्रबल भावना ताण्डव नृत्य करय लगलैन्ह जे कोनो प्रकारें कन्यादानक कथा भड़ठि जाइत त जी कैं सन्तोष होइत । परन्तु दुहू गोटे व्याजनिद्रा मे पड़ल रहलाह ।

✿ ✿ ✿

सोनपुरक रिस्टौरेंट (उपाहार-गृह) मे दूटा अङरेजिया नवयुवक आमने-सामने कुर्सी पर बैसल छथि । बीच मे सफेद संगमर्मरक टेबुल धैल अछि । ओहि पर चारू कात चारि टा शीशाक फूलदानी मे रंग-बिरंगक बिलायती फूल सभ सजाएल राखल अछि । बीच मे तीन टा बेशकीमती शीशी मे क्रमशः टर्मेरिक पाउडर (हरदिक चूर्ण), मस्टर्ड क्विक (सरिसवक चटनी) और फाइन साल्ट (खूब मेंही बुकल नोन) राखल अछि ।

थोड़बे काल मे होटलक खानसामा आबि कए हिनका दुहू गोटा कैं सलाम कए ठाढ़ भ२ गेल । ओहि मे एक गोटा आर्डर देलथिन्ह—पहले दो कप चाय और फिर दो प्लेट पराठा, दो प्लेट वेजिटेबल करी (रसदार तरकारी), दो ठो चॉप, और चार ठो स्पंज रसगुल्ला । पाँच मिनटक भीतर आधा सँ अधिक टेबुल चिनिया प्याला और तश्तरी सँ भरि गेल । खानसामा दूटा शीशाक ग्लास मे जल नेने आएल और टेबुल पर राखि देलक । दुहू गोटे निम्नलिखित गप्पशप्प करैत छुरी-काँटा और चम्मच लय भोजनरूपी महायुद्धक हेतु प्रस्तुत भ२ गेलाह ।

सी० सी० मिश्रा चायक प्याला कैं हाथ मे लय फूँकैत-फूँकैत बजलाह—आइ ऐम अफ्रेड यू आर प्रोसीडिंग ए बिट टू फास्ट । हैव यू पुट ऑल माइ कंडिशन्स बिफोर योर फादर ?

[अर्थात्—आप जरा जल्दीबाजी कर रहे हैं । क्या आपने अपने पिताजी को मेरी कुल शर्तें बतला दी हैं ?]

रेवतीरमण ठोर सँ प्याला फराक कए बजलाह—नॉट येट । बट यू नीड नॉट बॉदर योरसेल्फ अबाउट दैट । आइ शैल ट्राइ टु फुलफिल ऑल योर कंडिशन्स ।

[अर्थात्—एखन धरि त सूचित नहि कैलिऐन्ह अछि । किन्तु अहाँ एकर चिन्ता नहि राखू । अहाँक सभ शर्त पूरा करबाक चेष्टा कैल जाऐत ।]

सी० सी० मिश्रा—नो, नो, आइ डू नॉट वॉन्ट टु रिमेन इन ए स्टेट ऑफ सस्पेन्स एनी लॉंगर । आइ मस्ट हैव ए डेफिनिट येस ऑर नो फ्रॉम योर फादर हियर बिफोर

बी प्रोसीड फर्दर ।

[अर्थात–नहीं, नहीं, मैं अब दुविधा में पड़ा रहना नहीं चाहता । आपके पिता से हाँ या ना यहीं निश्चित हो जाय, तब आगे बढ़ा जाय ।]

रे० र०–यू मस्ट रिलाइ अपॉन माइ वर्ड्स । आइ अंडरटेक टु सी दैट यू आर सैटिसफाइड इन ऑल रिस्पेक्ट्स ।

[अर्थात–अहाँ कें हमरा बात पर विश्वास रखबाक चाही । हम एकर जिम्मा लैत छी जे अहाँ सभ तरहें सन्तुष्ट भऽ जाएब ।]

मि० मिश्रा–आई बिलीव इन यू ऐंएड दिस इज दि रीजन व्हाइ आइ हैव ऐकम्पनीड यू सो फार । यू नो माइ प्रिंसिपुल्स क्वाइट वेल । आइ उड रादर रिमेन ए बैचलर दैन बी टक्ड ऑन विथ ऐन इलमैच्ड कम्पैनियन इन लाइफ ।

[अर्थात–आप पर मुझे विश्वास है और इसीलिये इतनी दूर तक आपके साथ आया हूँ । आप मेरे सिद्धान्त अच्छी तरह जानते हैं । अनमेल विवाह करने की अपेक्षा मैं कुँआरा रह जाना कहीं अधिक पसन्द करता हूँ ।]

रे० र०–आइ नो दैट क्वाइट वेल । बट आइ कैन गिव यू दि अश्योरेन्स दैट यू वोन्ट फाइन्ड एनी रीजन फॉर कम्प्लेन्ट ।

[अर्थात–हम ई पूर्ण रूपें जनैत छी । किन्तु हम अहाँ कें विश्वास दैत छी जे अहाँ कें कोनो बातक शिकायति नहि होमय पाओत ।]

मि० मिश्रा चौप मे काँटा गड़बैत दृढ़ता पूर्वक बाजय लगलाह–यू सी, आइ डोन्ट वॉन्ट मनी । बट आइ वॉन्ट ए लाइफलॉंग कम्पैनियन हू मस्ट बी एबल टु असिस्ट मी इन ऑल दि डिफरेन्ट वॉक्स ऑफ लाइफ, हू मस्ट बी एबुल टु अन्डरस्टैण्ड ऐण्ड रेसिप्रोकेट माइ आइडियाज ऐन्ड सेन्टिमेन्ट्स , हू मस्ट शेयर माइ इन्टरेस्ट्स, एम्बिशन्स, ऐण्ड ऐक्टिविटीज इन ऑल डिफरेन्ट स्फियर्स । आई कैन नेवर टॉलरेट ऐन इगनोरेन्ट, सुपरस्टीशस बेबीब्राइड शट अप इन दि जनाना ऐण्ड अनफिट फॉर ऑल प्रैक्टिकल परपसेज। आइ मस्ट हैव ए फॉरवर्ड, अप-टु-डेट, वेल ऐकम्प्लिश्ड लेडी हू कैन नॉट ओनली सैटिसफाइ माइ फिजिकल क्रेविंग्ज, बट मीट मी ऑन ईक्वल टर्म्स ऑन दी इन्टलेक्चुअल, ऐसथेटिक ऐण्ड प्रैक्टिकल प्लेन्स ऑफ लाइफ ।

[अर्थात्–मैं रुपये का भूखा नहीं हूँ । मैं ऐसी जीवन-संगिनी चाहता हूँ जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे मेरी सहचरी हो सके, जो मेरे भावों और विचारों को समझ सके और उनका बदला दे सके, जो मेरी हर एक इच्छा, महत्वाकांक्षा और कार्य में बराबर हाथ बटाती रहे । मैं मूर्खता और अन्ध-विश्वास मे जकड़ी हुई ऐसी लड़की कभी नहीं बरदाश्त कर सकता जो पर्दे मे बन्द रहे और जीवन मे कोई भी महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित नहीं कर सके । मुझे ऐसी उन्नत विचार वाली सुशिक्षिता और सर्वगुण-सम्पन्ना गृहिणी चाहिये जो केवल मुझे शारीरिक सुख ही प्रदान कर न रह जाय, वरन जो विद्या-बुद्धि की बातों में, भले बुरे की पहचान में और व्यावहारिक विषयों में भी हर तरह से मेरे बराबर होकर मेरा साथ देती रहे ।]

रेवतीरमण चम्मच द्वारा तरकारीक झोर मुँह मे दैत बजलाह–योर फर्स्ट कंडिशन इज अबाउट अपीयरेन्स । फॉर दिस आइ कैन वाउचसेफ दैट यू विल फाइन्ड स्पॉटलेस ब्यूटी इन दी गर्ल ।

[अर्थात्–अहाँक प्रथम शर्त अछि शारीरिक रूप । एहि सम्बन्ध मे हम कहि सकैत छी जे बालिका मे दिव्य रूप भेटत ।]

मि० मिश्रा–वेल, आइ डोन्ट ले मच एम्फेसिस ऑन दिस पॉइन्ट । हाउएवर, दिस इज नॉट टोटली नेगलीजिबुल एंज वेल, बट हाउ कैन आइ फॉर्म एनी आइडिया ऑफ हर व्हेन आइ हैव नॉट ईवन ए सिंगल फोटो ऑफ हर्स ?

[अर्थात्–शारीरिक सौन्दर्य पर मैं उतना जोर नहीं देता पर साथ ही उसकी बिल्कुल उपेक्षा भी नहीं कर सकता । परन्तु मैं ने तो लड़की का एक फोटो तक भी नहीं देखा है । उसके विषय में कोई राय कैसे कायम कर सकता हूँ ?]

रे० र०–आइ हैव ऑलरेडी टोल्ड यू दैट शी पजेसेज दि फेयरेस्ट काम्प्लेक्शन इन माइ विलेज ।

[अर्थात्–हम त पूर्वहिं अहाँ सँ कहि चुकल छी जे गाँव भरि मे ओ सभ सँ अधिक गौराङ्गी अछि ।]

मि० मिश्रा–येस । बट आइ अटैच मोर इंपॉर्टेन्स टु दि हारमनी ऑफ फीचर्स।

[अर्थात्–हाँ, लेकिन खाली रंग से क्या होता जाता है ! शरीर का काट–अंग-प्रत्यंग सुडौल रहना चाहिये ।]

रे० र०– नाउ यू आर गोइंग टु सी हर विथ योर ओन आईज ।

[अर्थात्–आब त अहाँ स्वयं अपना आँखि सँ देखबाक हेतु चलिये रहल छी।]

मि० मिश्रा–बट ह्वाट आइ वैल्यू मच मोर दैन ब्यूटी इज पर्सनल ग्रेस ऐन्ड चार्म। दी सीक्रेट ऑफ अट्रैक्शन लाइज इन दी आर्ट ऑफ पोजिंग । यू हैव सीन दि बिविचिंग पोजेज ऑफ दि फेमस सिनेमा स्टार लाइक देविका रानी ।

[अर्थात्–रूप से भी कहीं अधिक मैं लावण्य और लोच को समझता हूँ। आकर्षण की शक्ति तो भावभङ्गी में भरी रहती है। सिनेमा की प्रसिद्ध अभिनेत्री देविका रानी ऐसे नाज-नखरे दिखलाती है कि दिल पर जादू चल जाता है ।]

रे० र०– मिस्टर मिश्रा, यू विल एक्सक्यूज मी । दि ब्यूटी ऑफ दोर सिनेमा स्टार्स ग्लैमरोज़ इन ब्रॉड डे लाइट व्हेन देयर पाउडर्ड चीक्स एण्ड पेंटेड लिप्स बिकम टू पलपेब्ली एपरेन्ट । यू वोन्ट फाइन्ड सच थिंग्स इन सिंपल, अनसोफिस्टिकेटेड विलेज-गर्ल्स, हू शाइन इन दि नेवरफेलिंग लस्टर ऑफ प्योर ऐण्ड एलिजेन्ट रूरल ब्यूटी ।

[अर्थात्–क्षमा करब । अहाँक सिनेमाक अभिनेत्रीगण गाल मे पाउडर और ठोर मे गुलाबी रंग लगा कऽ चकमक-चकमक करैत छथि । जखन दिनक प्रकाश मे असली स्वरूप प्रकट होइत छैन्ह तखन ओ आकर्षण कहाँ ? सरल निश्छल प्रकृतिक ग्राम्य-बाला मे ई सभ बनावटी तड़क-भड़क नहि भेटत । ओकर विमल कान्ति त सदैव अपनहि चमकैत रहै छैक ।]

मि० मिश्रा–आइ ऐम सॉरी । यू हैव टेकन ए वेरी अनकाइन्ड व्यू ऑफ स्क्रीन स्टार्स ! यू मस्ट ऐडमिट दैट दे पजेस समथिंग मैग्नेटिक ह्विच अट्रैक्ट्स ऑल आईज टु देम । देयर फैसिनेटिंग लुक्स, टेंडर स्माइल्स, ग्रेसफुल मूवमेन्ट्स, ऐण्ड आर्टिस्टिक डान्सेज कमाण्ड ए मैजिकल इन्फ्लुएन्स ओवर दि स्पेक्टेटर्स ।

[अर्थात्–अफसोस ! अभिनेत्रियों के सम्बन्ध में आपकी बहुत बुरी धारणा है । आपको यह मानना पड़ेगा कि उनमें चुम्बक की तरह कोई ऐसी आकर्षण शक्ति है जो बरबस सभी की आँखों को अपनी ओर खींच लेती है । उनकी तिरछी चितवन, मीठी मुस्कुराहट, लोचभरी चाल और कलापूर्ण नृत्य–ये सब मिलकर दर्शकों को मन्त्रमुग्ध कर डालते हैं ।]

रे० र०– दीज थिंग्स आर फॉर दी मोस्ट पार्ट आर्टिफिशियल ऐण्ड कैन बी अचीव्ड बाइ ट्रेनिंग ।

[अर्थात्– ई सभ बात त अधिकतर कृत्रिम रहै छैक । सिखौला उत्तर सभ कें अभ्यास बनि सकैत छैक ।]

मिस्टर मिश्रा एक चम्मच मस्टर्ड (सरिसव) क चटनी तरकारीक प्लेट मे मिलबैत बजलाह–ऑलराइट । लेट अस नाउ कम टु दि नेक्स्ट पॉइन्ट । ह्वाट अबाउट हर एजुकेशन ?

[अर्थात्–अच्छा । अब दूसरे विषय पर आइये । लड़की की शिक्षा के बारे में आपका क्या कहना है ?]

रेवतीरमण फूलदानी दिशि तकैत बजलाह– आई हैव अश्योर्ड यू दैट यू विल फाइण्ड हर एजुकेटेड इन दि रियल सेन्स ऑफ दि टर्म, ऑलदो शी इज विदाउट एनी युनिवर्सिटी डिग्री ।

[अर्थात्–हम त कहनहि छी जे बालिका मे बी० ए०, एम० ए० क उपाधि त नहि कोनो भेटत, किन्तु यथार्थ शिक्षा जकरा कहक चाही से भेटि जायत ।]

मि० मिश्रा–वेल, आइ डू नॉट इनसिस्ट ऑन ए डिप्लोमा, बट दि गर्ल शुड बी वेल वर्सड इन लिटरेचर ऐण्ड पॉलिटिक्स एण्ड मस्ट बी इन टच विथ दि करेन्ट अफेयर्स ऑफ वर्ल्ड ।

[अर्थात्–नहीं, यह कोई जरूरी नहीं है कि लड़की बी० ए०, एम० ए० पास ही हो । लेकिन मैं चाहता हूँ कि वह साहित्य और राजनीति में खूब निपुण हो और संसार की वर्त्तमान प्रगतियों की पूरी-पूरी जानकारी रखती हो ।]

रे० र०–शी इज श्योर टु कैच योर स्पिरिट, इफ यू कैन इनफ्लुएन्स हर एनफ।

[अर्थात्–अहाँक प्रभाव पड़ने ओ सभटा बात बुझि जाएत ।]

मि० मिश्रा–हैज दि गर्ल एवर कन्ट्रीब्यूटेड टु एनी मैगजीन ? प्रॉबेबली नॉट एट दिस स्टेज । बट शी मस्ट बी सबस्क्राइबिंग टु सम वीकली पेपर्स ऐण्ड दि स्टैण्डर्ड मैगेजीन्स ऑफ हिन्दी ऐट लीस्ट ।

[अर्थात्–क्या उसने किसी पत्र में कभी कोई लेख भी दिया है ? शायद अभीतक नहीं दिया होगा । मगर कम-से-कम हिन्दी के मुख्य-मुख्य साप्ताहिक और मासिक पत्र तो वह जरूर मँगाती होगी ?]

रे० र०–(किछु सोचि कय) वेल, शी रेगुलरली रीड्स दि 'मिथिला मिहिर' –दि प्रीमियर वीकली ऑफ अवर प्रॉविन्स ।

[अर्थात्–हँ, हमरा घर मे मिथिला प्रान्तक सर्वश्रेष्ठ साप्ताहिक पत्र 'मिथिलामिहिर' नियमित रूप सँ अबैछ ।]

मि० मिश्रा–मिस्टर झा, यू आर अवेयर ऑफ माइ पोइटिकल टेंडेन्सीज । आइ सीक ए सोल ह्विच कैन अवेकन ऐण्ड इन्टेन्सिफाइ दि पोएटिक एलीमेन्ट इन मी, ह्विच कैन ट्रान्सपोर्ट मी टु दि रीजन ऑफ दि म्यूजेज, फार अवे फ्रॉम दि बिजी क्राउडेड वर्ल्ड, ऐण्ड फिल माइ हार्ट विथ रैपचरस डिलाइट । ह्वाट एन इनएस्टीमेबल मिजरी इट उड मीन फॉर मी, इफ माइ हार्ट वेयर टु बी टाइड डाउन टु वन हू इज ऑफ

ए ड्राइ, प्रोसेइक टाइप ।

[अर्थात्–झाजी, आपको ज्ञात ही है कि कविता की ओर मेरा कैसा झुकाव है। मैं एक ऐसी आत्मा की खोज में हूँ जो मेरी कवित्व शक्ति को और भी जागृत और विकसित कर सके, जो दुनिया के झमेलों से बहुत दूर, स्वर्ग के नन्दन कानन में मुझे ले जाकर वहाँ मेरी हृत्तन्त्री के तारों को झंकृत कर सके । उफ् ! ईश्वर न करे यदि मैं किसी शुष्क नीरस आत्मा के साथ बाँध दिया जाऊँ, तो उस कष्ट की कल्पना भी नहीं कर सकता !]

र० र०–(मनहि मन) दि जेन्टिलमैन इज फ्लोटिंग इन ए ड्रीमलैन्ड ऑफ इमैजिनेशन । इट विल टेक टाइम टु ब्रिंग हिम डाउन टु दि अर्थ ।

[अर्थात्–ई महानुभाव एखन उपरहि ऊपर उड़ि रहल छथि । भूमि पर पैर टेकबा मे एखन बहुत विलम्ब छैन्ह ।]

मि० मिश्रा–यू आर ऑलसो फैमीलियर विथ माइ इन्टेन्स लव फॉर म्यूजिक। आइ कान्ट लिव विदाउट इट । आइ वान्ट ए लाइफ-फ्रेंड हू शुड पजेस दि कैपेसिटी टु लल मी टु ए जेन्टिल स्लीप बाइ दि स्वीट वाइब्रेशन्स ऑफ हर मेलोडियस सॉंग्स, व्हेन आइ एम टू मच लेडन विथ दि केयर्स ऐण्ड एँग्जाइटीज ऑफ डेली लाइफ । इट उड बी ए मोस्ट लेमेन्टेबल ट्रैजेडी इन्डीड इफ आइ वेयर टु बी फासण्ड फॉर एवर टु ऐन अनम्यूजिकल सोल ।

[अर्थात्–मेरा संगीत-प्रेम भी आपको विदित ही है । इसके बिना मैं रह ही नहीं सकता । मैं भार्या रूप में एक ऐसी मित्र चाहता हूँ जिसकी मधुर संगीत लहरी के हिलकोरों में मैं उतराता रहूँ । जब दैनिक जीवन की चिन्ताओं के भार से बिल्कुल थका-माँदा होकर घर लौटूँ, तब वह मेरे श्रान्त मस्तिष्क को प्यार से अपने अञ्चल मे लेकर संगीत की थपकियाँ दे-दे कर अनन्त शान्ति और विश्राम की गोद मे पहुँचा दे । उफ ! यदि ऐसी सहचरी मुझे नहीं मिली तो मेरा जीवन कितना दुःखमय बन जाएगा । इसकी मैं कल्पना तक नहीं कर सकता ।]

र० र०–(स्वगत) दि पुअर फेलो इज ऑनली बिल्डिंग यूटोपियाज । लेट हिम वन्स फेस दि स्टर्न रियलिटीज एण्ड ही विल बी सेट अराइट । (प्रकट) मिस्टर मिश्रा, यू हैव नॉट येट हर्ड दि फेमस सॉंग्स, ऑफ विद्यापति इन तिरहुत । इफ यू वन्स हियर दि अपीलिंग ट्यून्स फ्रॉम दि लिप्स ऑफ विमेन, यू विल बी इमेन्सली अफेक्टेड ।

[अर्थात्–(स्वगत) ई बेचारे एखन ख्यालीए पोलाव पका रहल छथि । एक

बेरि ठेस लगतैन्ह तखन अपनहिं ठेकान पर पहुँचि जैताह । (प्रकट) मिश्रजी, अहाँ अद्यावधि तिरहुत मे विद्यापतिक प्रसिद्ध गीत सभ नहि सुनल अछि । यदि एक बेरि जनीजातिक मुँह सँ समदाउनिक कारुणिक राग सुनि ली त अहाँक आँखि मे नोर ढबढबा जाएत ।]

मि० मिश्रा–कैन दि गर्ल प्ले ऑन हारमोनियम इन ट्यून विथ गजल्स ऑफ ऑल सॉर्ट्स ?

[अर्थात–क्या लड़की हर एक तर्ज की गजल पर हारमोनियम बजा लेती है ?]

र० र०–(बात अंठा कय) प्रॉबेबली यू आर रिमेम्बरिंग मिस बिजली बोस ऑफ हिन्दू यूनिवर्सिटी ।

[अर्थात–प्रायः हिन्दू यूनिवर्सिटीक कुमारी बिजली बोस अहाँ कें मन पड़ि गेल अछि ।]

मि० मिश्रा–मिस्टर झा,यू नो माइ नेचर फुली वेल । आइ लाइक ह्यूमरस डिसपोजिशन एण्ड नॉट ए मेलंकली मूड । इट उड बी मोस्ट डिफिकल्ट, ने इम्पॉसिबुल फॉर मी टु पुल ऑन विथ ए लाइफ-मेट हू इज नॉट इन्सपायर्ड विथ ए कीन सेन्स ऑफ ह्यूमर ।

[अर्थात्–झाजी, आप मेरी प्रकृति अच्छी तरह जानते हैं । मैं हँसमुख स्वभाव चाहता हूँ । मनहूस मिजाज को मैं जरा भी पसन्द नहीं करता । जो बात-बात में व्यंग्य और चुलबुलाहट का पुट नहीं भर सकती है, उसके साथ मेरा निर्वाह होना अत्यन्त कठिन, बल्कि असम्भव ही है ।]

र० र०– दि विमेन ऑफ अवर साइड आर नेचुरली गिफ्टेड विथ विट ऐण्ड ह्यूमर । दे विल सरप्राइज यू बाइ देयर प्रेजेन्स ऑफ माइण्ड । यू विल बी सिम्प्ली नॉन-प्लस्ड इफ दे वन्स मेक यू दि बट ऑफ देयर जोक्स ।

[अर्थात्–तिरहुतक स्त्रीगण स्वभावहि सँ हास्य-विनोदक प्रिय होइत छथि। हुनका लोकनिक चातुर्य देखबैन्ह त चकित भऽ जाएब । जखन एक बेरि हुनका सभक धुसान मे पड़ब त अक्क-बक्क किछु नहि फुरत ।]

मि० मिश्रा–यू ऑलसो नो माइ ओरेटोरिकल कैपेसिटी । इट इज ऑफ कोर्स हार्ड टु एक्सपेक्ट ऐन इलोक्वेन्ट गर्ल स्पीकर हू कैन डिलिवर लेक्चर्स लाइक माइसेल्फ, नेवरदिलेस इट उड बी मिजरेबल फॉर मी, इफ आइ एम फोर्स्ड टु रिमेन इन पैरेनियल

कंपनी ऑफ वन हू इज टेसीटर्न इन स्पीच ।

[अर्थात्–आप मेरी वक्तृत्व शक्ति से भी परिचित हैं । ऐसी लड़की मिलना तो मुश्किल है जो मेरी ही तरह धाराप्रवाह भाषण दे सके । लेकिन यह भी न होना चाहिये कि जो लड़की व्याख्यान कला से बिल्कुल कोरी हो उसी के साथ मेरा गठजोड़ा कर दिया जाय ।]

रे० र०–यू नीड नॉट बी अफ्रेड ऑफ दैट । दि विमेन ऑफ अवर साइड आर वेल-नोन फॉर देयर टॉकेटिव हैबिट्स । गिव देम दि लीस्ट अपॉरचुनिटी ऐण्ड सी देयर अलोक्वेंन्स ।

[अर्थात्–एकरा हेतु अहाँ चिन्ता जुनि करी । हमरा दिसक स्त्रीगण गप्प मे नामी छथि । एक रती अवसर दिऔन्ह तखन देखू जे वाचाशक्ति मे केहन फड़हड़ि होइ छथि।]

मि० मिश्रा–आइ उड लाइक टु असर्टेन दि पोलिटिकल क्रीड ऑफ योर सिस्टर।

[अर्थात्–आपकी बहन का राजनीतिक सिद्धान्त क्या है, वह जरा मैं जान लेना चाहता हूँ ।]

रे० र०–शी विल पर्सनली स्पीक हर व्यूज टु यू ह्वेन दि टाइम कम्स ।

[अर्थात्–समय ऐला पर ओ स्वयं अपन विचार अहाँक समक्ष प्रकट करतीह ।]

मि० मिश्रा–मोर ओवर, यू नो आइ हैव गॉट माइ ओन हॉबीज, फॉर इन्सटेन्स, यू नो आइ ऐम दि मोस्ट रिनाउण्ड टेनिस प्लेयर इन माइ टीम, ह्वाट ए प्लेजर इट उड बी फॉर मी, इफ आइ कुड गेट ऐन इक्वली एक्सपर्ट गर्ल ऐज माइ लाइफ-कंपैनियन।

[अर्थात्–मुझे किन बातों में आमोद-प्रमोद मिलता है यह भी आप जानते हैं । आपको मालूम है कि मैं अपने टीम भर में टेनिस का सबसे अच्छा खिलाड़ी हूँ। यदि मेरी ही तरह टेनिस में कमाल कर दिखलानेवाली संगिनी मुझे मिल जाती तो मेरा जीवन कितना आनन्दमय बन जाता !]

रे० र०–(स्वगत) दि पुअर मैन कैनॉट डिसर्न दि डिफरेन्स बिट्वीन दि ऐटमॉसफियर ऑफ गर्ल्स हॉस्टल ऑफ हिन्दू यूनिवर्सिटी ऐण्ड दि एनविरॅनमेन्ट ऑफ इल्लिटरेट हाउस-होल्ड्स इन विलेज-एरियाज ।

[अर्थात्–हिन्दू विश्वविद्यालयक बालिका-छात्रावासक वातावरण मे और निठट्ठ देहाती घर-आङनक वातावरण मे कत गोट भेद होइ छैक, तकर किछुटा अनुभव बेचारे कें नहि छैन्ह ।]

मि० मिश्रा–मिस्टर झा, आइ डु नॉट नो हाउ फार यू विल ऐग्री विथ मी; बट आइ ऐम ए वोटरी ऑफ सेल्फ-डिपेन्डेन्स । आइ उड हेट ए वुमन हू डिपेन्ड्स स्लेविशली अपॉन हर हसबैण्ड ऐण्ड लैक्स दि करेज ऐण्ड सेल्फ-कॉनफिडेन्स टु अर्न हर ब्रेड बाइ दि स्वेट ऑफ हर ओन ब्रो ।

[अर्थात्–झाजी मैं नहीं जानता कि इस विषय में आप मुझसे कहाँ तक सहमत होंगे । किन्तु मैं तो स्वतन्त्रता का पुजारी हूँ, स्वावलम्बन का उपासक हूँ । जिस स्त्री में साहस नहीं, आत्मविश्वास नहीं, अपने बाहुबल से अपना उदर-पोषण कर सकने की सामर्थ्य नहीं, जो पशु की तरह अपने स्वामी की दी हुई टुकड़ी पर बसर करना चाहती है और गुलाम की तरह उसके अधीन रहना चाहती है, उससे मैं नितान्त घृणा करता हूँ ।]

रे०र०–इफ यू स्टडी दि रूरल लाइफ ऑफ अवर प्राविंस, यू विल बी कनविन्स्ड दैट अवर वुमन-फोक पजेस सच हैण्डी क्रैफ्ट्स ऐण्ड कैन प्रोड्यूस सच वर्क्स ऑफ आर्ट ऐज कैन इजिली प्रोक्योर देम रिच मीन्स ऑफ सबसिस्टेन्स ।

[अर्थात्–यदि अहाँ हमरा प्रान्तक ग्राम्य जीवन पर दृष्टिपात करब त अहाँ कें देखना जायत जे मिथिलाक स्त्रीगण तरह-तरहक कारीगरी जनैत छथि और एहन-एहन वस्तु तैयार कय सकैत छथि जाहि सँ ओ बढ़िया जकाँ स्वतन्त्र रहि अपन निर्वाह कय सकैत छथि ।]

एतबहि मे होटलक खानसामा एक तश्तरी मे थोड़ेक इलायचीक दाना और एकटा कागजक टुकड़ा नेने पहुँचि गेलैन्ह और टेबुल पर राखि देलकैन्ह । मिश्रा ओहि मे सँ इलायचीक दाना उठौलन्हि और रेवतीरमण कागजक टुकड़ा उठा कय देखय लगलाह।

आर्टिकल्स				रु० आ० पा०
१.	पराठा	–	२	०–८–०
२.	वेजीटेबल करी	–	२	०–८–०
३.	चॉप्स	–	२	०–८–०
४.	स्पंज रसगुल्ला	–	४	०–८–०
५.	टी	–	२	०–८–०
				टोटल २–४–०

रेवतीरमण उपर्युक्त 'बिल'क अनुसार सवा दू टाका तश्तरी मे राखि देलथिन्ह। खानासामा सलाम कय ओ उठौने चल गेल ।

❑

[७]

जटिल समस्या

भोलानाथ झा भोजन-छाजनक उपरान्त भाउजि कें कहलन्हि–हमरा फेरि स्टेशन जाय पड़त । एहि ठामक सभटा भार अहीं लोकनिक ऊपर रहल । ठकबा अछिए। जे किछु मँगाबाक हो से मँगा लेब । झुनियाँमाय कें बराबरि एतहि रहय कहबैक। देखब कोनो बातक बिथुति नहि हो । बहुत पैघ लोक आबि रहल अछि।

पुन: बटुकजी कें बजा कय कहलथिन्ह–देखू, हम स्टेशन जा रहल छी । पहर राति बितैत-बितैत फिरी से सम्भव । एहि ठामक कुल इन्तिजाम अहींक हाथ । दलान पर जे चटान अछि, ताहि पर बड़का शतरंजी ओछबा देबैक । और भोला बाबूक ओतय सँ जाजिम और मसनद मँगबा लेब । भाइ साहेबक नेबाड़ बला पलंग जे छैन्ह से बाहर धरबा क३ ओहि पर पाहुनक हेतु बिछाओन करबा देबैन्ह । और छोटकी चौकी पर एक गगरा जल, लोटा और नवका खड़ाँव रखबा देबैक । की, सभटा बुझि गेलहुँ ने ? बेश, त हम जाउ ने ?

बटुकजी अपनो फुर्ती देखबैत बजलाह–ई सभ त दु मिनट के काम है । अपने निफिकिर जाउ न ।

भोलानाथ झा भनसा घर मे जा भागवती कें प्रणाम कय विदा भेलाह ।

जखन भोलानाथ झा स्टेशनक दोकानक समीप पहुँचलाह त देखै छथि जे लालकक्का गम्भीर चिन्ता मे निमग्न छथि । और बुचकुन चोधरि मनहि मन खूब प्रसन्न भए रहल छथि । भोलानाथ दुहू गोटाक पैर छूबि कय प्रणाम कैलथिन्ह और किछु दबि क३ बैसि गेलाह । लालकक्का विषण्ण स्वर सँ कहलथिन्ह–भोला ! चलह पहिने घर कें देखि लैह, तखन कोनो गप्प होएत ।

वस्तु जालक चार्ज बुचकुन चोधरि कें दय लालकक्का भोलानाथक संग स्टेशन दिशि बिदा भेलाह । बाट मे कहलथिन्ह–तोरा सँ किछु गप्प करबाक छल तैं टरि कय चलि एलहुँ अछि । बूझि पड़ैछ जे एतेक कैला उत्तर आब सब गुड़ गोबर भ३ जाएत ।

भोलानाथ झा सशंकित भय बजलाह–से कियैक भाइजी ? हमरा सभक दिस सँ तँ कोनो भाकट ने ?

लाल०–वरहिक दिशि सँ भाकट । हमरा पहिने नहि बूझि पड़ल जे ई एहन भारी बिसखोपड़ा छथि । यदि कनेको एहि बातक आभास बुझना जाइत त हिनका फराकहि सँ नमस्कार करितिएन्ह । कंटीरक नेनमति मे पड़ि हमहूँ अगुता गेलहुँ । बेश, जा पहिने कंटीर कें बजौने आबह, तखन एकर विचार कैल जाय ।

एतबहि मे कंटीर कें अबैत देखि लालकक्का पुछलथिन्ह–की हौ ! की हाल? कनेको टगलथुन्ह कि नहि ?

रेवतीरमण माथ झुलाय संकेत करैत कहलथिन्ह–आह, 'डिगहि न शम्भु शरासन जैसे ।' ओ त कहैत छथि जे यदि हमरा बात मे अहाँ लोकनि कें आपत्ति बुझना जाय, त हम दोसरा ट्रेन सँ वापस चल जाइ ।

लालकक्का कहलथिन्ह–आब की कैल जाए ? एहन कठिन समस्या आबि गेल अछि जे किछु फुरितहि ने अछि ।

भोलानाथ नम्रतापूर्वक पुछलथिन्ह–भाइजी, बात की थिकैक ? कनेक हमहुँ बुझितिऐक तँ........

रेवतीरमण कहय लगलथिन्ह–बात ई छैक जे हिनका मैथिल रीति नीति और सामाजिक व्यवहारक ककहरो टा नहि बुझल छैन्ह । जन्महि सँ बाहर रहलाह । नेने मे माय मरि गेलथिन्ह । बाप डिपुटी-मैजिस्ट्रेट छलथिन्ह । पेंशन लए काशी वास करय लगलथिन्ह । प्रारम्भहि मे हिनक नाम हिन्दू यूनिवर्सिटी मे लिखाय देलथिन्ह। हिनक सभटा आचार-विचार, संस्कार ओही ठामक भ३ गेलैन्ह । पिताक देहान्त भेला उत्तर ई पुन: घरक मुँहो नहि देखलन्हि । घर-घर छैन्हे के ? जेठ बहिन छथिन्ह से सासुरे बसैत छथिन्ह । पट्टीदार लोकनि चाहैत छथिन्ह जे भने एक समाङ बाहरे रहय जाहि सँ सोरहो 'निश्चिन्तं परमं सुखम्' करी । ई रहि गेलाह बनारस मे, देहाती हवा लगबाक कहियो मौके नहि भेटलैन्ह । गाँव-घर मे जनौजात कोन रूपें रहैत छैक से बुझथुन्ह कोना ? संसर्ग त भेलैन्ह मिस चटर्जी सँ, मिस बनर्जी सँ । ओ सभ रंग-बिरंगक फैशन मे रहैत अछि, धुड़झाड़ अँग्रेजी मे लेक्चर दैत अछि, हारमोनियम पर गाना गबैत अछि, पत्र मे लेख लिखैत अछि, मैदान मे टेनिस खेलाइत अछि, साइकिल पर चढ़ि घूमय जाइत अछि । आइ-कालिह अधिकांश नवयुवक एहने तरहक 'अपटूडेट लेडी' चाहैत छथि । हिनके होस्टलक एकटा बी० मित्रा बंगाली एम० ए० मे पढ़ैत अछि । ओहि क्लास मे एक टा थोरे वयक सुन्दरी बंगालिन युवतीओ पढ़ैत छलि । दुहू मे प्रेम भय गेलैक । आब दुनू स्वेच्छापूर्वक विवाह कय एक खास कमरा लए क३ मित्र जकाँ संगहि पढ़ैत अछि । भोरे नोकर चा-पानी तैयार कैने रहैत छैक । दुहू गोटे स्नानागार सँ निपटि मेस मे भोजन कय दस बजे कॉलेज जाइत अछि। पुन: क्लास खतम भेला

पर दुइ बोर्डिंग मे अबैत अछि। मेसक बाबाजी जलपान बनौनहि रहैत छैक। दुइ नाश्ता-पानी कय अपन-अपन साइकिल पर घूमक हेतु निकलि जाइत अछि। यद्यपि दुइ गोटा मे अत्यन्त घनिष्ठता छैक तथापि एक दोसरा सँ बढ़ि जैबाक हेतु कम्पिटिशन (प्रतियोगिता) कय रहल अछि। आब देखा चाही परीक्षा मे के फर्स्ट होइत अछि। अस्तु। ई दृश्य देखि सभ छात्र कें सिहन्ता होइत छैन्ह जे हमरो जीवन एही प्रकारें बितैत। इहो एही श्रेणी मे छथि। चाहैत छथि जे अहिने कन्या भेटए।

लालकका किछु विरक्त स्वरें बजलाह—त ई सभ पहिनहि बजैत की भेल छलौह? भरि टेहुन हिनक प्रशंसा करैत छलाह जे अलान छथि त फलान छथि। हम ई सभ बखेड़ा की जानय गेलहुँ? बाहर सँ देखला उत्तर त परम सात्त्विक जकाँ बुझना गेलाह। हम कोना कऽ बूझू जे ई भीतर सँ एहन भारी कटाह छथि। परन्तु तोरा त बुझल छलौह। तखन पटने मे कहैत की भेलौह? आब त तोरा बात मे पड़ि हमहूँ बूड़ि बनलहुँ।

भोलानाथ शान्त करैत कहलथिन्ह—आब 'गतस्य शोचना नास्ति'। जे भऽ गेलैक से त भइये गेलैक। हँ, तत्काल मे बरक की अभिप्राय छैन्ह?

रेवतीरमण किछु अप्रतिभ जकाँ भय कहलथिन्ह—सभ सँ पहिने कहैत छथि जे विवाह सँ पूर्व कन्या कें देखि लेब तखन..........

ई सुनितहि लालककाक क्रोधाग्नि पुनः भभकि उठल। बजलाह—हँ, बड़ काबिलक नाति ने छथि जे पहिनहि कन्या कें देखि लेताह। ई होएब त त्रिकालहुँ मे असम्भव छैन्ह। पहिने अपन मुँह ने जा कऽ ऐना मे देखथु गऽ जे हमर कन्याक तरबोक बरोबरि कय सकैत छैन्ह!

रेवतीरमण कहलथिन्ह—पहिने त फोटोक हेतु बहुत जिद कैने छलाह। परन्तु पाछाँ किछु सोचि कय कहलन्हि जे 'नहीं आजकल लड़की के गार्जियन फोटो खिंचाने मे बड़ी धूर्तता से काम लेते हैं। अगर लड़की साँवली रही तो फोटो मे सफेद रंग करवा देते हैं, चेचक का दाग रहा तो ब्रश से साफ करवा देते हैं, बाल छोटा रहा तो डेढ़ गज का नकली बाल लटका देते हैं। इसलिये मैं बिना अपनी नजर से भली-भाँति देखे हुए किसी लड़की के साथ शादी नहीं कर सकता।' तखन हम कहलिऐन्ह जे बेश, चलू, अहीं अपन सन्देह निवारण कए लेब। यदि एतेक आग्रह छैन्ह त....फराक सँ कनेक देखिये लेथिन्ह त हर्ज की? की औ ककाजी?

भोलानाथ—नहि हर्ज की? हमर कन्या किछु लुल्हि-नाँगड़ि त अछिए नहि जे नापसन्द पड़तैन्ह।

लालकका किछु खिसिया कय बजलाह—हँ, हमरा लोकनिक जतेक पुरखा छलाह से सभ प्रचण्ड बूड़ि छलाह और केवल आइकाल्हिक अँगरेजिया बुधियार। कहू त भला?

हमरा लोकनिक विवाह-द्विरागमन भेल, धियापुता भेल, सभटा परियोग भऽ गेल, किन्तु एहन लछ्मन-खछ्मन कहियो पसारलहुँ? भला हमरा लोकनिक कुल-मर्यादा रहैह थिक जे अपन कन्या कें सभक आगाँ नचा दी? की हौ भोला?

भोला०—नहि, कथमपि नहि। हमरा लोकनिक देशाचार, कुल-व्यवहार जे थिक तकर कहियो उल्लंघन कए सकैत छी?

रेवतीरमण किछु संकुचित भए बजलाह—ओ कहैत छलाह जे 'हम केवल दस-पाँच मिनट का 'इंटरभ्यू' चाहते हैं, जिससे उसके रहन-सहन और विचार का स्टैंडर्ड मालूम हो जाय।'

भोलानाथ पुछलथिन्ह—'इंटरभ्यू' कथी?

रे० र०—हुनक अभीष्ट छैन्ह जे सामाजिक-राजनीतिक विषय पर किछु बातचीत करी। किछु प्रश्न पूछि तकर उत्तर सुनए चाहैत छथि।

लालकका—कहू त ई बतहपन! हिनका बताह बूझी की घताह? पढ़ल-लिखल बूड़ि एकरे कहैत छैक। अपनो माय-बहिन सँ जा कऽ एहिना राजनीतिक बहस करैत छथि कि एही ठाम आबि कए ई सभ शौख पूरा करताह? ई सभ किछु ने भय सकैत छैन्ह। जा, स्पष्ट कहि दहुन गऽ। की हौ भोला?

भोला०—हँ त और की? आदि विरोध नीक, अन्त विरोध नहि नीक। पाछाँ जा कऽ जे टंट-घंट ठाढ़ करताह ताहि सँ त.......

रे० र०—कनेक हमरो विचार सुनि लेल जाइत। एखन ई गरमा-गरम मिजाज लय चलि रहल छथि। जखन देहातक हवा-पानि लगतैन्ह त अपने ठंढा जैताह। ई सभ गरम ख्याल दू-एक दिन धरि रहतैन्ह तकरा बाद अपनहि सेरा जैतैन्ह। तेँ हमर विचार होइछ जे हिनका हड़काएब उचित नहि। आंतय पहुँचि जाथि त बुझल जैतैक। भेल विवाह मोर करबह की? की औ ककाजी?

भोला०—हँ बेश त कहैत छी। जखन सामाजिक बन्धन मे पड़ि जैताह त अपने लीक धऽ कऽ चलय लगताह। एखन गदहपचीसी छैन्ह। द्विरागमन होइत-होइत ठेकान पर आबि जैताह।

लालकका—एहन लोक सँ भय मानक चाही। पाछाँ कऽ कतहु पड़ा-हड़ा जाथि, कन्या कें छोड़ि देथि, त कोन उपाय? भरि जन्म कन्या कें हकन्न कानय पड़त। की हौ भोला?

भोला०—ताहि मे कोन सन्देह? कन्याक जीवन-मरण, सुख-दुख बरक अधीन रहैत छैक। तेँ पूर्वहि पूर्ण रूपें विचार कए कथाक निश्चय करबाक चाही।

रे० र०—परन्तु हिनक स्वभाव त हमरा बुझल अछि। ई व्यक्ति बहुत सज्जन

छथि । केवल चाहैत छथि जे स्त्रियो कें अपनहि समान शिक्षित बनाबी । त ताहि मे हर्ज की ? जखन अपना ओहिठाम लय जैथिन्ह त अपन सुधारैत रहिहथिन्ह । की औ ककाजी ?

भोला०–हँ-हँ । पाछाँ कऽ अपन जेना इच्छा हैतैन्ह तेना सिखबैत-पढ़बैत रहिहथिन्ह। संग रखला उत्तर त जाहि घाट पर चढ़ौथिन्ह ताही पर चढ़ि जैतैन्ह।

लाल०–परन्तु पहिने जे टंट-घंट करक चाहैत छथि से कोना भऽ सकैत छैन्ह?

भोला०–नहि, से कोना होएतैन्ह ?

रे० र०– और यदि हम फराके सँ चुपचाप कन्याक मुँह देखा दिऐन्ह त कोन क्षति ?

भोला०–नहि, क्षति कोन ? जखन पाछाँ कऽ वैह स्वामी होइथिन्ह तखन मुँह देखि नेने हर्ज की ?

लाल०–परन्तु यदि पाछाँ कऽ पसन्द नहि होइन्ह और फिरि कय चल जाथि तखन त हम लोक सँ गेलहुँ ?

भोला०–हँ, ई बात विचारणीय अछि ।

रे० र०–किन्तु ओकरा मे की कोनो पय छैक ? एक बेरि देखि लेथिन तखन किन्हुँ फिरि नहि सकैत छथि ।

भोला०–हँ, से त ओ अपूर्व सुन्दरी अछि । हिनका कुखखुँट मे एहन केओ होएबो नहि करतैन्ह ।

लाल०–परन्तु ई कथा केओ बूझए नहि पाबए । यदि एक कान सँ दोसर कान मे ई बात गेल, त गाँव भरिक लोक कुचेष्टा करय लागत ।

भोला०–हँ, तखन त बाट चलब कठिन भऽ जाएत । पीठक पाछाँ सभ आंगुर देखाबए लागत ।

रे०र०–ई बात केओ बुझबे कोना करत ? हमरा तीन गोटाक अतिरिक्त और त केओ...। और हमरा लोकनि कतहु बजबे नहि करब । की औ ककाजी ?

भोला०–हँ, हमरा लोकनि बजबे नहि करब त दोसर बुझत कोना ?

लाल०–बेश । त तोरा लोकनिक जे सम्मति होओ ताहि मे हम राजी छी । परन्तु पाछाँ कऽ हमरा अपयश जुनि देयबैत जैहऽ ।

तदुपरान्त भोलानाथ झा भातिजक संग आबि जामाता कें देखय गेलाह । लालकका दोकान पर आबि बुचकुन चौधरि लग बैसि गेलाह ।



[८]
गुप्त परामर्श

–काग की दोस ?

–काग ।

–फक्का मुट्ठी बारह । आब लाबह बारहटा अंठी ।

– से त नहि होएतौह, हे सरौता ! एतेक कन्ना नहि करह ।

एतबहि मे हुनमुनकाकी ओहि ठाम पहुँचि गेलीह और बुच्चो दाइ कें फुलमतियाक संग काग-दोस खेलाइत देखि कहय लगलथिन्ह–देखू त भला ई अकड़हइ ! आइ हिनकर वर चल अबैत छैन्ह और ई बैसि कय काग-दोस खेलाइत छथिन्ह ।

ई शब्द लालकाकी कें सुनना गेलैन्ह । बस तुरन्त युद्ध मचि गेल ।

–अयँ ऐ फुँचुकरानी ! ओ अहाँ कें फुटलो आँखिए नहि सोहाइत अछि जे सदिखन एना जड़ि लागल रहैत छिऐक ? ओकरा एखन खेबा-खेलैबाक बयस नहि छैक त कि चिल्हकाउरि भऽ कऽ बैसबाक वयस छैक ? अहाँक छाती किऐक फटैए?

ई सुनैत देरी हुनमुनकाकी एक टूटल छित्तनीक पेंनी हाथ मे लय पड़ापड़ अपन कपार पीटय लगलीह ।

ई लंकाकांड मचैत देखि बुचिया ओ फुलमतिया अंठी फेंकि पड़ाइलि । फुलमतिया अपना आङन पहुँचि बाजलि–सरौता, आइ भरि हमरा आङन बैसि लैह। काल्हि सँ की फेरि हमरा देहरि पैर देबह ?

बुचिया–से की ? काल्हि सँ की भेलैए ?

एकरा उत्तर मे फुलमतिया बुच्चोदाइक कान मे किछु एहन बात बाजलि जे बुच्चोदाइ तमकि उठलीह और एक चाट अपना सरौताक गाल पर लगाय बाजि उठलीह–भग् ! हमरा ने ई सभ नीक लगैत अछि ! तोरा त एहिना रहैत छौह ।

थोड़बहि काल मे दुहू सरौता गोटी-गोटी खेलाय लगलीह । जखन बुच्चोदाइ अन्यमनस्कताक कारणें बहुत हुकय लगलीह तखन बजलीह–हे सरौता ! आइ हिंडुला पर नहि चढ़बह ?

फुलमती देवी एहि प्रस्तावक हृदय सँ समर्थन करैत बजलीह–हँ हँ, बेश त

मन पाइलह । चलह, झुलुआ झुलुगै ।

पछबरिया घर मे धरनि सँ पटुआक रस्सी लटकाओल छलैक । ओहि पर एक चाकर पीढ़ी राखि दुइ सखी ठाढ़ि भऽ गेलीह और मचकी मारैत बारहमासा उठौलन्हि–

'आएल हे सखि सावन मास, मोहि तजि कन्त गेला परदेश, कि मैं ना जैहों। झुलनी तुम ले जा रे सनेस कि मैं ना जैहों ।

एतबहि मे पुरान रस्सी कड़कड़ा कऽ टुटल और दुइ मरौता कें नेने-देने पीढ़ी भूमि पर जा खसल । बुच्चीदाइ कें ठेहुन मे किछु विशेष चोट लगलैन्ह । फुलमतिया नव चूड़ी पहिरने छलि, से सभटा फूटि गेलैक । ताहि डरें ओ कानय लागलि । बुच्चीदाइ चुप्पहि उठि अपना बाड़ी मे ऐलीह और भालसरीक फूल लोढ़य लगलीह। जखन एक मुट्ठी फूल बीछल भऽ गेलैन्ह तखन अपना आँचरक खूँट मे बान्हि आङन ऐलीह।

बुच्चीदाइ कें देखितहि लालकाकी टोकलथिन्ह–एँ गै ! तों दिन-दिन बहत्रा भेल जाइत छैं ? एतीकाल धरि कतऽ बौआइत छलैं ? तोरा कनेको लाज-धाक नहि छौक ? 'जब छौंड़ी सुनलक सासुरक नाँव, बुलि आइलि छौंड़ी सौंसे गाँव ।' हमरा लोकनिक विवाहक चर्चा होय त लाज सँ ठामहि गड़ि जाइ । और आइकाल्हिक कनेयाँ कें त देखू ? मकुना-माधव जकाँ भेल जिला-जवार सँ धाङि आओत । हऽ हऽ ।

ई सुनि बुच्चीदाइ चुपचाप भाउजिक लग जाए बैसलीह और खोंइछा गहँक फूल लय माला गाँथए लगलीह ।

✡ ✡ ✡

–लालकाकी ! कहाँ गेलन लालकाकी ? तनी बाहर निकलके देखू त एगो एक्का खड़खड़ाइत चल अबइयऽ । आब त मकुनाही पुल के अइ पार पहुँच गेल।

दरवाजा पर बटुकजीक ई ध्वनि सुनितहिं लालकाकी, ढुनमुनकाकी, बड़कागामवाली सभ धुखखुर पर आबि ठाढ़ि भऽ गेलीह ।

एक्का शनैः शनैः दरवाजा पर आबि कय लागल । ओहि पर सँ लालकका और भोलानाथ उतरलाह । बटुकजी कपड़ाक मोटरी उतारय लगलैन्ह ।

लालकका आङन आबि पहिने भगवती कें प्रणाम कैलन्हि । तदनन्तर मैंयाक घैर छूबि आङन मे खाट पर बैसि रहलाह । पुनः बटुकजी दिस ताकि कय बजलाह–तों मुँह की तकै छह ? जा, पुरोहित-नौआ कें बजा आनह । और भोलानाथ कें कहून जे जा कऽ अपनहि सँ सभ कें हँकार दऽ औथिन्ह । कंटीर और पाहुन कें हम तिनगछिया पोखरि पर बैसा आएल छिऐन्ह । ओ लोकनि आध पहर राति बितैत पहुँचै जैताह। ता सभ इन्तिजाम भऽ जैबाक चाही ।

ई कहि लालकका मोटरी मे सँ लोटा बहार कैलन्हि और कान पर जनउ चढ़बैत पोखरि दिशि विदा भेलाह ।

लालकाकी हपसि कए मोटरी खोलय लगलीह । ढुनमुनकाकी तुर लऽ कऽ मड़वा नीपक हेतु चललीह । फुलमतिया स्त्रीगणक दिशि हँकार देबक हेतु विदा भेलि। बड़कागामवाली पान लगाबय लगलीह । बुचिया लाजक मारें कोनियाँ घर मे जा कऽ मुँह झाँपि कय पड़ि रहलि ।

थोड़बहि काल मे ओसारा पर लाल, पीयर और हरियर रंगक साड़ी चकमक करयं लागल । और ई गीत कर्णभेदी नाद सँ प्रारम्भ भऽ गेल–

'आगे माइ हम नहि आजु रहब एहि आङन, जौं बुढ़ होएत जमाय ।'

लालकका आङन ऐलाह त देखैत छथि जे पुरोहित महाराज पद्धति नेने मण्डप पर आबि उपस्थित भेल छथि और किछु भाव व्यक्त करक चाहैत छथि, किन्तु गीतक आटोप मे हुनका दिशि केओ कर्णपात नहि करैत अछि ।

जखन गीत समाप्त भऽ गेलैक त पं० नर्मनाथ झा सप्तम स्वर मे चिचिया कय बाजय लगलाह–एहिठाम क क क क कलश चाही, प प प प पल्लव चाही। ग ग ग ग गीतागाइन सभ कें क क क क कहियौन्ह जे एखन ग ग ग ग गीत बन्द करतीह।

एतबहि मे दोसर गीत बेश टहंकार सँ उठि गेल और पुरोहित जीक उक्ति अरण्यरोदन भय गेलैन्ह ।

ई दशा देखि लालकका लग मे जा कहलथिन्ह–आब हम आबि गेलहुँ । अहाँ कें जे किछु कहबाक हो से हमरा कहू । बटुक जी हजाम कें ‚आबक हेतु गेल अछि। आब अबितहि होएत ।

पुरो०–म म म म मातृका पूजा अ अ अ अ आभ्......

लाल०–हम कहि दैत छी, आभ्युदयिक ....

पुरो०–हँ, ताहि मे क क की वि वि विलम्ब अछि ?

लाल०–किछु नहि । दरवाजा पर पाहुन कें आबय दिऔन्ह । ओम्हर आज्ञाक पान-धूप जैतैन्ह । एम्हर मातृका पूजा प्रारम्भ भऽ जाएत ।

ता नौआ ठाकुर कें नेने बटुकजी पहुँचि गेलाह और पुरोहितजीक फरमाइशक अनुसार सामग्री सभ जुमाबय लगलाह । गाँव मे दुगोला छलैक । अतएव भोलानाथ अपना गच्छ मे हँकार दय फिरि ऐलाह और आङन मे ठकबाक पीठ पर ठाढ़ भय ओकरा सँ काज लेबय लगलाह ।

थोड़ेक कालक उपरान्त धिया-पुता गरोहि बान्हि दरबाजा दिशि छुटल । बटुकजी

बाहर झाँकि बाजल–'मेहमान त दुरा पर पहुँच गेलन ।' ई सुनि लालकका भोलानाथ कें एकान्त मे लऽ जा कहलथिन्ह–'देखह, पाहुन किछु दोसर प्रकृतिक छथुन्ह । एखन थाकल–टेहियाएल मे केओ दिक नहि करय पबैन्ह । हुनका चुपचाप आराम करय लेल छोड़ि दहुन्ह ।' भोलानाथ झा ठकवा कें संग लय पाहुनक आगत–स्वागत मे बिदा भेलाह।

एम्हर लालकाकी पुतहुक लग जाय कहलथिन्ह–'ऐ कनेयाँ ! विधिकरी अहीं होएबैक । अपन सभ किछु सँभारि लियऽ । हम भनसाघर जाइत छी ।' बड़कागामवाली किछु बाजहि लेल छलीह कि एतबहि मे रेवतीरमणक आहटि बूझि पड़लैन्ह ।

पतिक जूताक शब्द सुनि बड़कागामवाली जानि बूझि कय अपन केशक फूलदार चोटी कनेक उघारि लेलन्हि और पतिक नजरि पड़ला उत्तर पुनः लज्जाक भाव देखबैत माथ झाँपि लेलन्हि । तदुपरान्त एक कटाक्ष बाण चलाय मुसकुराइत अपना घर मे आबि कुर्सी पर बैसि गेलीह । रेवतीरमण माय–पितिआइन और पितामही कें प्रणाम कय अपना घर मे ऐलाह । कोट उतारि खूँटी पर टँगैत बजलाह– ऐ हुजूर ! आपसे एक जरूरी काम है ।

बड़कागामवाली भृकुटी चढ़ा कय कहलथिन्ह– मैं बिना पेशगी फीस लिये किसीका काम नहीं करती ।

रेवतीरमण–'अच्छा पहले नजराना तो ले लीजिये ।' ई कहैत पत्नीक कोमल अधरदलक मध्य मुँह मे एक खिल्ली पान राखि देलथिन्ह । ई देखि रसिका पत्नी कृत्रिम क्रोध प्रदर्शन करैत बजलीह–'ऐसा नजराना मैं नहीं चाहती । अभी अपना वापस ले लीजिये ।' ई कहैत अपना मुँहक पान उगीलि स्वामीक मुँह मे राखि बाहर होमय लगलीह।

रेवतीरमण पत्नी कें बहरैबाक उपक्रम करैत देखि हाथ पकड़ि लेलथिन्ह और जबर्दस्ती कुर्सी पर बैसा देलथिन्ह । पत्नी हाथ छोड़ैबाक अभिनय करैत कहलथिन्ह– आब जाय दियऽ । काजक आङन छैक । लोक सभ की कहत ?

रेवतीरमण अपनहुँ ओही कुर्सी पर बैसि बजलाह–देखू, हम एकटा जंगली पक्षी कें बझा कए अनने छी । ओकरा सिखा–पढ़ा कय गमैया बनाउ, नहि त ओ फुड़ दऽ उड़ि जायत । ई अहीं बुते पार लागि सकैत अछि ।

एकरा बाद थोड़ेक काल धरि पति–पत्नी मे गुप्त परामर्श भेल । दुहूक राय मिलि गेला पर बड़कागामवाली हँसैत बाहर ऐलीह और रेवतीरमण पानक डब्बा लय प्रसन्न होइत दालान पर गेलाह ।



[९]

कौतुक

मिस्टर सी० सी० मिश्रा पड़ल–पड़ल भावी पत्नीक रंग–बिरंगी काल्पनिक चित्र खिचबा मे तन्मय भेल छलाह । एहि बीच मे रेवतीरमण पहुँचि कहलथिन्ह–आपको खातिर अन्दर से पान आया है, इसे ग्रहण कीजिये और जो सरवेन्ट (नौकर) इसे लाया है, उसके लिए इसमें जो रिवार्ड (बखशीश) देना हो, डाल दीजिये ।

मि० मिश्रा कें असमञ्जस मे पड़ल देखि रेवतीरमण कहलथिन्ह–देखिये, बिलो स्टैण्डर्ड (निम्न पद) का कोई काम मत कर बैठियेगा नहीं तो यू विल कट ए सारी फिगर अमॉङ दि लेडीज (भद्र महिला–समाज में उपहासास्पद बनियेगा)। पाँच रुपये से कम रखना एटीकेट (कायदा) के खिलाफ है ।

मि० मिश्रा एक नोट बाहर कय ओहि डब्बा मे राखि देलथिन्ह । एतबहि मे सहसा आङन सँ परिछनिक गीत उठल और मन्द गति सँ दालान दिस बढ़य लागल–

'आजु शोभा जनक–मन्दिर चलहुँ देखन जाइ रे ।'

मि० मिश्रा अकचका कय पुछलथिन्ह–वेल ह्वाट इज दि मैटर ? आइ हियर ए कोरस नियरबाइ । (मामला क्या है ? कोरस सुनने मे आ रहा है ।)

रेवतीरमण कहलथिन्ह–हाँ, आपही को वेलकम (स्वागत) करने के लिये महिलाओं का प्रोसेशन (जुलूस) निकला है । वे लोग रिसेप्शन–सॉङ्ग (स्वागत–गान) गाती हुई आपको लेने के लिये आ रही हैं । यू मस्ट प्रूव योरसेल्फ वर्दी ऑफ दि ऑकेजन ऐण्ड ऑब्जर्व ऑल दि रिचुअल्स ऐण्ड सेरिमनीज विथ राइट कर्टसी (आपको चाहिये कि अवसरानुकूल विधियों का पालन शिष्टतापूर्वक करते जायँ)। दिस इज माइ फ्रेन्डली ऐडवाइस (मैं मित्र की हैसियत से आपको यह सलाह दे रहा हूँ) ।

मि० मिश्रा–बट आइ ऐम सॉरी, आइ डू नॉट नो दि फॉरमैलिटीज (लेकिन अफसोस है कि मुझे विधियों का कुछ हाल मालूम नहीं ।)

रे० र०–नेवर माइण्ड, योर फ्यूचर ब्राइड विल गाइड यू ऑल अलॉङ्ग (कुछ

चिन्ता नहीं, आपकी भावी पत्नी आपको बराबर सब कुछ बतलाती रहेंगी) ।

ई अप्रत्याशित शब्द सुनि मिश्रजीक आश्चर्यक ठेकान नहि रहलैन्ह । विस्फारित नेत्र सँ उत्सुकतापूर्वक पुछलथिन्ह–कैन योर सिस्टर फ्रीली टॉक विथ मी बिफोर मैरेज? (क्या आपकी बहन विवाह से पूर्व मेरे साथ निःसंकोच होकर बातचीत कर सकती है ?)

रेवतीरमण ईषत् हास्ययुक्त स्वर सँ कहलथिन्ह–वेल, शी इज मोर फास्टीडियस इन हर च्वॉएस दैन योरसेल्फ (वह तो आपसे भी कई गुनी बढ़ी-चढ़ी है) । आप तो फ्यूचर वाइफ (भावी पत्नी) से सिर्फ इन्टरव्यू (भेंट) भर चाहते हैं और वह अपने फ्यूचर हसबैण्ड (भावी पति)को पहले ही हर एक पहलू से अच्छी तरह एक्जामिन (परीक्षा) कर लेना चाहती है। तब जाकर अपना कन्सेन्ट (स्वीकृति) दे सकेगी। अच्छा, तो अब आप तैयार हो जाइये ।

रेवतीरमण पाग और डोपटा लय मि० मिश्राक आगाँ बढ़ाय देलथिन्ह और कहलथिन्ह–आपको इस वक्त यह नेशनल हैट (स्वदेशी टोप) पहन लेना चाहिए और यह चादर गले में डाल लेनी चाहिए। वाइफ (वधू) आपको रिसीव (स्वागत) करने के लिये आ रही है ।

ई कहि रेवतीरमण एक परम सुन्दरी युवतीक दिशि संकेत कैलथिन्ह । मिश्रजी देखलन्हि जे अठारह-उन्नैस वर्षक एक लावण्यमयी युवती हाथ मे पुष्पमाला नेने जुलूसक आगाँ विद्यमान छथि और मन्द-मन्द मुस्कुराइत क्रमशः बढ़ि रहल छथि । हुनक रूप-यौवनक आभा छनि-छनि कय गुलाबी साड़ीक तर सँ बहरा रहल अछि। हुनक समुन्नत अञ्चल रेखावली देखि मिश्रजीक छाती पर साँप लोटय लगलैन्ह । ओ निर्निमेष दृष्टि सँ ओहि दिशि ताकय लगलाह, किन्तु ओहि युवतीक चंचल कटाक्ष अपना ऊपर पड़ैत देखि आँखि झँपि गेलैन्हि ।

एतबहि मे ललनागणक समुदाय समीपतर पहुँचि गेल । मि० मिश्रा धड़कैत हृदय सँ ओहि दिशि चललाह । मन मे सोचैत छलाह जे भावी पति कैं अपना सम्मुख देखि ओ युवती अवश्य किछु संकुचित भऽ जैतीह । किन्तु हुनक ई अनुमान सर्वथा भ्रमपूर्ण सिद्ध भेलैन्ह । जैखन मिश्रजी ओहि चंचल युवतीक समीप पहुँचलाह कि ओ बिजली जकाँ चमकि फूलक माला हिनका गर मे पहिरा देलथिन्ह । मिश्रजीक सर्वाङ्ग शरीर रोमांचित भऽ उठलैन्ह । ओ चित्रवत् स्तब्ध रहि गेलाह ।

पुनः ओ नवयुवती अपन मृदुल स्पर्श सँ हिनका पुलकित करैत हाथ पकड़ि लेलथिन्ह और कहलथिन्ह–आपकी आँ[illegible]प क्यों रही हैं ? कहीं आ[illegible] तो नहीं गई हैं ? अच्छा, ठहरिये मैं इनमें काजल लगा [illegible] हूँ । और मालूम होता है कि आपका दिमाग भी इस वक्त ठंढा नहीं है । अगर मैं च[illegible]न का लेप लगा दूँ तो कुछ हर्ज तो नहीं है ?

ई कहि बिना उत्तरक प्रतीक्षा कैनहि युवती चानन-काजर कय देलथिन्ह । मिश्रजी एहि क्रियाक विरोध नहि कय सकलाह ।

एतबहि मे दुलारमनि पितसी आँगा बढ़ि उदात्त स्वरेँ पुछलथिन्ह–

'कतै अवस्थित की मूलग्राम ?

के छथि बाप-माय की थिक नाम ?'

एकर भाव बूझि मिश्रजी बजलाह–हमर नाम छय सी० सी० मिश्रा ।

एहि पर सौंसे आङन अट्टहास सँ गूँजि उठल । दुलारमनि पितसी बजलीह–'मर, ई कोन देशक भाखा बजै छथि ? मोगलक बेटा त ने छथि ?' एकटा प्रौढ़ा चिबुकाग्र पर अनामिका राखि आश्चर्यक भाव प्रदर्शित करैत बजलीह–'गे दाइ गे दाइ ! कोन माय-बाप एहन नाम धिछलकैन्हि ?' दोसर तरुणी छवि कय बजलीह–'सीसी मिसर? तखन त बोतल मिसर हिनक बापे होइथिन्ह !' एहि पर पुनः ठहाका पड़ल । मिस्टर सी० सी० मिश्र अप्रतिभ भऽ अपना नामक व्याख्या करय लगलाह–'हमर पूरा नाम छय चण्डी चरण मिश्रा.........'

एहि पर पुनः हास्य-ध्वनि गुंजायमान भेल । ई देखि ओ युवती हिनका चलबाक हेतु संकेत कैलथिन्ह । मिस्टर सी० सी० मिश्रा कैं धड़फड़ाइत चलबाक हेतु अग्रसर होइत देखि युवती कोकिल-विनिन्दक मधुर स्वर सँ बजलीह–क्षमा कीजिये, आपको साधारण शिष्टाचार का भी ज्ञान नहीं है । इतनी बड़ी-बूढ़ी स्त्रियों के बीच में धड़ल्ले बढ़े जा रहे हैं । मालूम होता है, मुझे आपके गले में फन्दा डालकर ले चलना पड़ेगा ।

ई कहि हिनका गर मे डोपटा लपेटि हाथ सँ धैने बिदा भेलीह । मिश्रजीक सभटा सिट्टी-पिट्टी गुम भऽ गेलैन्ह । ओ चुपचाप पाछाँ-पाछाँ चलय लगलाह। गीतगाइन लोकनि [illegible]हासिक गीत गबैत मिश्रजी कैं चारू कात सँ घेरने शनैः शनैः आङन दिशि अग्रसर भेलीह ।

गीतक सुमधुर निनाद सँ मिश्रजीक कर्ण-कुहर कैं अपना मधुर स्वर सँ आप्लावित

करैत ओ युवती नहुँ-नहुँ कहय लगलथिन्ह—माफ कीजियेगा। कई शताब्दियों से स्वार्थी पुरुष लोग बेचारी अबलाओं को नाक पकड़कर नचाते आ रहे हैं। इसका बदला मैं आपसे लूँगी। मेरा संकल्प है कि जो पुरुष विवाह करने आवेगा उसको पहले नाक पकड़कर चलाऊँगी, तब पीछे कोई बात करूँगी। आशा है, आपको इसमें कोई आपत्ति न होगी।

ई कहि युवती प्रौढ़तापूर्वक एक चाकर पान हाथ मे लय मि० सी० सी० मिश्राक नाक पकड़ि हुनका घुमाबय लगलथिन्ह।

मिश्रजी अवाक् भेऽ सोचय लगलाह—वाह! यह [illegible] रहा! मैं बीसवीं सदी का हसबैन्ड (पति) होकर आया तो यहाँ बाईसवीं सदी की वाइफ (पत्नी) सिर पर सवार है। मैं समझता था कि दो शताब्दी मुझसे पीछे पड़ी होगी, सो दो शताब्दी और आगे ही निकली। अब लेने के देने पड़ गये। मैं आया इस लड़की का इम्तहान लेने और यह शोख उल्टे मुझी को नाक पकड़कर नचाने लगी। अच्छा तमाशा है। मैं यहाँ आकर बुरा फँसा!

एतबहि मे ओ मुखरा युवती बाजि उठलीह—दु:ख की बात है कि आप में कंजूसी भी है। मेरी दाई कबसे खड़ी आपकी यात्रा का शकुन बना रही है और आप उसकी ओर ध्यान तक भी नहीं देते? क्या मेरा नाम हँसाते हैं? अगर आपके पास कुछ नहीं हो तो मुझसे रुपया ले लीजिये।

मिश्रजी लज्जित भय मनीबैग सँ एकटा रुपया बाहर कैलन्हि और झुनियाँमायक भरल कलश मे राखि देलथिन्ह। झुनियामाय नचैत-कूदैत चलि गेलि।

ई अवसर देखि दुनमुनकाकी दूहू हाथे ठक बक, जान डाला, भालरि और हाथी नेने दनमनाइत वरक दिशि बढ़य लगलीह। मि० मिश्राक समीप अबैत-अबैत सभ किछु नेने-देने सूर्यमुखीक देह पर खसि पड़लीह।

सूर्यमुखीक किकिआएब सुनि दुलारमनि पितसीक कान ठाढ़ भय गेलैन्ह। ओ सूर्यमुखीक माय कें हुथुक्का दऽ लोहछि कय कहलथिन्ह—ऐ! नेना मुइलि और अहाँ गीत गबैत छी? की द' काटै तैं मलार गाबी!

ई सुनि ओकर माय गीत छोड़ि सूर्यमुखीक हाथ पकड़ि ओकरा पीठ पर एक धमक्का लगबैत बजलीह—गै छुच्छी, हम पहिनहि ने मना कैलियौक जे अधिक छम-छम नहि कर। गेल छलीह वर सँ सटि कऽ ठाढ़ होमय। आब भेलौह ने! हाथ पैर टुटलौह ने!

ई कहि सूर्यमुखीक माय अपन बेटीक हाथ धय अपन आङन चलबाक हेतु उद्यत भेलीह। एहि अकाण्डताण्डव सँ समस्त महिला-मंडल मे हलि-मालि मचि गेल। सभ कोओ दुनमुनीकाकी कें 'दुरछी' करय लगलैन्ह।

लालकाकी क्रोध-कम्पित स्वर सँ बजलीह—हम जनितहि छलहुँ जे ई धिनौतीह। भला हिनका के कहलकैन्ह जे अपनहि फुरने भरी जानडाला उठा कऽ वर कें देखाबय गेलीह? ह:, आइ मास दिन सँ ई सब बनैबा मे लागलि छलहुँ। से सब असले बेर पर फोड़ि देलन्हि।

ई कहि लालकाकी सूर्यमुखी लग जाय ओकर पीठ हँसोथय लगलथिन्ह और ओकर माय कें खौंसैत कहलथिन्ह—हिनका हमरे सम्पस छैन्ह बहिनदाइ, जे ई कोनो बातक आमर्ष राखथि। बुचियो त हिनके बेटी थिकैन्ह। हमर हँसी भेने हिनको हँसी छैन्ह। अब ई लोकनि सम्हारथि त सम्हारथि।

एम्हर दुनमुनकाकी कनैत दुनू हाथ उठाय बाजय लगलीह—हे दिनकर! हम जौं जानि बूझि कय जानडाला फोड़ने होइऐक त हमर कोखि जरि जाय!

ई कहि दुनमुनकाकी आँचर सँ नोर-पोटा पोछैत हिचकि-हिचकि कानय लगलीह। आवेशरानी ई देखि दुनमुनकाकीक लग आबि कहलथिन्ह—'अहाहा! हिनका नहि किछु कहै जैयौन्ह। ई कि जानि-बूझि कऽ थोड़बे खसलीहे। बेचारी अकसक लोक—ई पँचिम मास छैन्ह। की ऐ फुचुकरानी! बेसी चोट त ने लागल?' ई कहि आवेशरानी आवेश सँ दुनमुन काकीक पीठ झाड़य लगलथिन्ह।

ई रंग मे भंग देखि उपर्युक्त युवती मि० मिश्राक हाथ दबा कय कहलथिन्ह—आप घबड़ाइये नहीं। आपही की खातिर यह टंटा खड़ा हुआ है। न आपकी पुरुष-जाति स्वार्थी होती और न हक-बक की मूर्ति बनाकर उसका खाका खींचा जाता। खैर, आप अन्दर चलकर पहले कपड़े तो बदल लीजिये।

मि० मिश्र ओहि युवतीक हाथ मे कठपुतरी जकाँ भेल इशारा पर काज करय लगलाह। पुन: गीतक सिलसिला जारी भऽ गेल।

ओ सुन्दरी बिहुँसैत मि० मिश्रक कान मे कहय लगलथिन्ह—आपके आज्ञा-पालन से मैं संतुष्ट हूँ। पति को ऐसा ही आज्ञाकारी होना चाहिये। परन्तु आपको एक कष्ट और देना चाहती हूँ। मेरा प्रण है कि जो पति होना चाहेगा, उसे मैं सात पुरुषों के साथ खड़ा कर धान कुटवाऊँगी। यह भी स्त्री-जाति के प्रति किये गये अपमानों का बदला है। आशा है, आप बुरा न मानेंगे।

ई कहि ओ मिस्टर सी० सी० मिश्रक हाथ मे मुसर धराय देलथिन्ह और ऊखरि मे चोट देबाक अनुरोध करय लगलथिन्ह । मि० मिश्र किंकर्त्तव्यविमूढ़ भय गेलाह। एतबहि मे गोड़ दसेक बालक हिनक संग देबक हेतु अपना मे उपरौंझ करय लागल।

ओ सुन्दरी पुन: मिश्रजीक कान मे कहलथिन्ह–बाबू चण्डीचरणजी, पहले कच्चे सूत से बाँधकर मैं आपकी परीक्षा करती हूँ । यदि इसमें बँधे रह जायेंगे तो मैं समझूँगी कि आप बराबर मेरे स्नेह-सूत्र में बँधे रहेंगे और यदि आपने इसे तोड़ दिया तो स्नेह-सूत्र भी टूटा ही समझिये ।

सुन्दरीक मुँह सँ एहि प्रकारें अपन नाम (चण्डी चरण)क उच्चारण सुनि मिश्रजी क्षुब्ध भय गेलाह । मन मे कहय लगलाह–'ओफ ! कितनी ऐडब्बान्सड (बढ़ी) लड़की है ! मुझको निर्विकार होकर इस प्रकार सम्बोधित कर रही है जैसे यह किसी कालेज की लेडी प्रिन्सिपल (अध्यक्षा) हो और मैं इसका स्टुडेन्ट (विद्यार्थी) होऊँ।'

एतबहि मे सारक वर्ग 'सहस्रशीर्षा' मन्त्र पढ़ैत मूसर उठौलकैन्ह । मि० मिश्रा निरुपाय भय चोट देमय लगलाह । नौआ ठाकुर आबि टकुरीक सूत सँ आठो गोटा कैं परिवेष्टित करय लागल ।

  

अठोंगरिक विधि समाप्त भेला उत्तर युवती मिश्रजी सँ मृदुल परिहास करैत कहलथिन्ह–'अहा ! आपकी कोमल कलाई तो टेनिस खेलने के लिये है । आज पहले-पहल मूसल पकड़ने में तो बड़ा क्लेश हुआ होगा । खैर ! इसके बदले आपका मुँह मीठा कर देना चाहिये ।' ई कहि युवती एक सिलवरक तश्तरी मे राखल दही-चीनी दिशि संकेत करैत हिनका आसन पर बैसा देलथिन्ह ।

मिश्रजी मन्त्रमुग्ध जकाँ ओहि पर बैसि गेलाह । दस-पन्द्रह मिनट धरि कोन प्रकारें मधुपर्कक विधि सम्पन्न भेलैक से हिनका किछु नहि बूझि पड़लैन्ह । पं० नमोनाथ झा तोतराइत-तोतराइत कंठ-रूपी बोरा मे सँ उभर-खाभड़ मन्त्रक रोड़ा सभ गड़गड़ा कय उझिलय लगलाह । गाइनिक दल अपना आलापक स्वर खरज सँ निषाद पर्यन्त पहुँचाबय लगलीह । किन्तु मि० मिश्राक ध्यान ओहि सभ दिस नहि छलैन्ह। हुनका नेत्रक आगाँ ओहि चपला सुन्दरीक चित्र नृत्य करैत छलैन्ह । ओकरा अपन भावी चिरसंगिनीक रूप मे देखि ओ आनन्द और विस्मयक कल्लोल तरंग मे पड़ि ऊबडूब होमय लगलाह और कल्पनाक प्रवाह मे दहाइत-दहाइत वास्तविक परिस्थित सँ बहुत

दूर जा भसिऐलाह । ओ मनोराज्य मे विचरण करैत ओहि हास्यमुखी युवती कैं शीघ्र अपन अङ्कशायिनी बनैबाक मधुर कल्पनाक रसास्वादन करय लगलाह । हुनक सुख-निद्रा तखन भङ्ग भेलैन्ह जखन ओ सुन्दरी पुन: आबि हुनक करस्पर्श करैत कौतुकागार दिशि लय चललथिन्ह।

मि० मिश्रा कैं भेलैन्ह जे आब ई हमरा अपन प्राइवेट चेम्बर (खास कोठरी) मे लय जा रहल छथि । ई विचारि हुनक हृदय खरहा जकाँ उछिलय लगलैन्ह । किन्तु जखन कौतुकागारक द्वार पर पहुँचलाह त देखैत छथि जे सौंसे घर ओही प्रकारें खचाखच भरल अछि जेना कार्तिक पूर्णिमा सँ एक दिन पूर्व सोनपुर जायवाली मालगाड़ीक डब्बा लोक सँ भरल रहैत अछि । जखन सुन्दरीक अनवरत सहायता सँ मिश्रजी ओहि घर मे प्रविष्ट भय आसन पर बैसलाह त देखैत छथि जे एहि समुदाय मे चारि मासक नेना सँ लय अस्सी वर्षक वृद्धा पर्यन्त मौजूद छथि । ई देखि मिश्रजी कैं विश्रामक आशा ओही तरहें परित्याग करय पड़लैन्ह जेना कवि-सम्मेलनक दूरागत सभापति महोदय कैं रेल किरायो मे सन्देह देखि बिदाइक आशा परित्याग करय पड़ैत छैन्ह।

मि० मिश्रा थोड़ेक काल धरि कोबरक दृश्य देखय लगलाह । देबाल चुनौटल भीत पर पुरैनिक पात, कमलक फूल, कदम्बक गाछ आदिक रंग-बिरंगी चित्र उखड़ल छलैक । अपना आगाँ भीत मे (गौरी-गणेशक पूजार्थ) गोबरक चोत और घोंघा साटल देखि मि० मिश्रा विस्मय मे पड़ि गेलाह ।

दुलारपनि पिउसी गरजैत बजलीह– है लोकनि ! आब नैना-जोगिन मे की भाङठ छैक ! कन्या निरीक्षण करय ने कहुन्ह ।

एहि पर आवेशरानी मिश्रजीक समीप आबि कहलथिन्ह–'आब अपन कनेयाँ कैं चीन्हू ।' मिश्रजी पाछाँ फिरि कय देखलन्हि जे एक पाँती मे चारि टा कन्या खूब घोघ तानि कय माथ गोंतने बैसल छथि । मि० मिश्रा कैं ओहि मे अपन सहायिका युवती कैं चिन्हैत कनेको देरी नहि लगलैन्ह । ओ मन मे शेक्सपीयरक ई पाँक्ति दोहराबय लगलाह–

'हूएवर लव्ड दैट लव्ड नॉट ऐट फर्स्ट साइट ?'

पुन: कम्पित स्वर मे बजलाह–मुझे अबतक यही गाइड (पथ-प्रदर्शन) करती आ रही हैं । और इन्हीं को पहचानने में भला मैं भूल कर सकता हूँ ? इनके समान निर्मल सङ्गिनी पाकर मैं अपनेको बहुत फॉरचुनेट (भाग्यवान्) समझता हूँ । ये अबतक मेरा हाथ पकड़े हुए थीं । अब मुझे इनका हाथ पकड़ने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। आशा है, इनको कोई आपत्ति नहीं होगी।

ई लेक्चर झाड़ि मि० मिश्रा अपन सुपरिचित गुलाबी साड़ी वाली सुन्दरीक हाथ धय लेलन्हि और अपना आङुरक अंगूठी बाहर कय हुनका आंङुर मे पैसावक यत्न करय लगलाह ।

ई अभूतपूर्व दृश्य देखि उपस्थित महिला-मण्डली मे एहन भारी हँसीक बिहाड़ि उठल जे कोबरा घरक चार उधियाय लागल । फुलमनिया हँसैत-हँसैत बाजलि-'दैवा रे दैवा ! ह : ह : ह : ह : ! विधिकरीये के ....हा हा हा हा हा ! बहु बना लेलथन्हि! ही ही ही ही ही !' आवेशरानी बजलीह-'अहा हा ! बेश सुलग्न मे सरहोजि सँ भेंट भेल छैन्ह । अहिना मीठे-मीठे रहि जाइन्ह दुहू गोटा मे त......ही ही ही ही !' एकटा तरुणी बजलीह-'कनेयाँ ! अहाँ हिनका कोन मन्त्र पढ़ि कय नोन चटा देलिऐन्ह जे अबितहिं अहाँकि हाथे बिका गेलाह ? हा हा हा हा हा हा !' एकटा प्रौढ़ा जमींदारनी बजलीह-'हिनका अपने सभ की बुझैत हतिऐन्ह । ई खूब खेलायल छथ । जौन चीज पर अपन हक होतैन गऽ ओह पर पहले ही से कब्जा दखल कर लेबे के चाहै छथ। कैसे कऽ अपन चीज देय लेलन ? ही ही ही ही !'

एहि हा हा ही ही क बिहरो मे मिश्रजी कें किछु नहि बूझि पड़लैन्ह । ओ हतबुद्धि भऽ टुकुर-टुकुर सभक मुँह ताकय लगलाह ।

ई देखि विधिकरी दाइ हिनका कान मे अपन मुँह सटा कय कहलथिन्ह-देखिये, आपको सबके सामने इस तरह अपने भाव का आवेश नहीं प्रकट करना चाहिये । आपकी कितनी मखौल उड़ रही है ! मैं तो लज्जा के मारे गड़ी जा रही हूँ । देखिये, अब मण्डप पर ऐसी भूल मत कीजियेगा । वहाँ मेरे पिता, चाचा और गाँव भर के लोग रहेंगे । आप उस वक्त मेरी ओर नजर तक मत उठाइयेगा । मैं भी चुपचाप वहाँ घूँघट काढ़कर बैठी रहूँगी । अगर विधि-पालन में कुछ भी गड़बड़ी आपने की तो समझ जाइये कि फिर मैं आपको मिल नहीं सकती ।

ई कहि चतुरशिरोमणि बड़कागामवाली छम्म दऽ कोबरघर सँ बाहर भय दोसरा घर मे चलि गेलीह ।

एतबहि मे पं० नमोनाथ झाक स्वर सुनबा मे आएल-

'ज ज ज ज जनानी विधि सभ त भऽ गेल । आब ज ज ज ज जमाय कें आ आ आबय ने कहियौन्ह ।'



[१०]

कन्यादान

मण्डप पर बैसितहिं मिस्टर सी० सी० मिश्रक नेत्र सभ सँ पहिने ओहि सुपरिचित गुलाबी साड़ीक अन्वेषण मे इतस्ततः घूमय लागल । ई देखि पं० नमोनाथ झा बजलाह-ट ट ट ट टी टी टी टी टीक टीक बान्हि लेल जाओ ।

एतबहि मे मिश्रजी देखैत छथि जे स्त्रीगणक झुण्ड ओहि गुलाबी साड़ी कें चारू कात सँ घेरने शनैः शनैः मण्डप दिशि अग्रसर भय रहल अछि । ई देखि मिश्रजीक मनमयूर नाचय लागल । थोड़बहि काल मे गुलाबी साड़ी मण्डप पर आनल गेलि और लालककाक दक्षिण पार्श्व मे बैसा देल गेलि । ओ लजौनी खढ़ जकाँ सकुचि भूमि मे सटय लागलि । मिश्रजी मन मे कहय लगलाह-यह लड़की गजब की नखरेबाज मालूम होती है । अभी कैसी भीगी बिल्ली की तरह बैठी हुई है ! इसका यह पोज (भाव) देखकर कौन कहेगा कि अभी कुछ मिनट पहले यह मुझे नाक पकड़कर नचाती फिरती थी ?

एतबहि मे पंडित नमोनाथ झा गोत्राध्यायक काण्ड प्रारम्भ कैलन्हि । लालकका, जाहि कागज पर वरक परिचय लिखल छलैन्ह, से बटुआ सँ बाहर कय मिस्टर सी० सी० मिश्रक बाप, पितामह, प्रपितामह आदिक नामोच्चारण करय लगलाह ।

गोत्राध्यायक उपरान्त लालकका जमायक हाथ अपना हाथ पर धय मैंया दिशि तकलथिन्ह । मैंया ओहि गुलाबी साड़ीक आवरणक भीतर सँ एक लजाएल हाथ निकासि मिश्रजीक कम्पित हाथ पर राखि देलथिन्ह । पं० नमोनाथ झा ओहि पर अक्षत, चन्दन, पुष्प और शंख राखि कन्यादानक मन्त्र पढ़ाबय लगलथिन्ह-'इमां क क क क कन्यां स स स स सालंकारां' आदि पढ़ा कय कहलथिन्ह- क क क क कन्या क न न न न नाम लियऽ ।

ई सुनैत मिस्टर सी० सी० मिश्र कें धक् सँ बिजली दौड़ि गेलैन्ह । हिनका मस्तिष्क मे तरह-तरहक अपटुडेट नाम सभ चक्कर लगाबय लगलैन्ह । ई उत्सुक भय सोचय लगलाह-देखा चाही, की सुनैत छी ! कुमारी बिजली बाइ ? अथवा नलिनीबाला?

अथवा विमलप्रतिभा देवी ? अथवा मिस अनारकली ?'

एतबहि मे लालककाक मुँह सँ बुचिया 'नामोम्' सुनि मि० मो० मो० मिश्रक कल्पना-लतिका पर तुषारपात भऽ गेलैन्ह ।

मिस्टर मो० मो० मिश्र अपन भावी ससुरक एहि प्रोजेक नेचर (अरसिकता) पर क्षुब्ध भऽ उठलाह । मन मे सोचय लगलाह–'संसार मे कहन-कहन सुन्दर नाम अछि–उषा ! प्रभा ! लीला ! ललिता ! मनोरमा ! शैलबाला ! चन्द्रकला ! हिरण्मयी! स्वर्णलता ! हेमाङ्गिनी ! सरोजिनी ! पीयूषमयी ! तुषारबाला ! विश्वमोहिनी ! शिशिरसुन्दरी! एहि मे सँ एको टा नाम यदि ई बुढ़उ अपना कन्याक हेतु बिछने रहितथि त कि घरक आँटा गील भऽ जैतैन्ह ? अहा ! एहि चंचला सुन्दरीक नाम यदि कुमारी विद्युत्प्रभा अथवा मञ्जुहासिनी देवी रहैत त हमर जीवन आइ कहन सुखमय बनि जाइत! परन्तु एहि बुढ़उ कैं फुड़लैन्ह मे फुड़लैन्ह की त 'बुचिया' ! छिः छिः ! आब हमर जीवन नष्ट भऽ गेल ।' पुनः अपना मन कें सन्तोष देमय लगलाह–'अच्छा, आब त ई मिसेज मिश्रा कहौतीह । लेख, कविता आदि मे देबाक हेतु हम एक सुन्दर उपनाम अपना पसन्द सँ चुनि कय राखि देबैन्ह ।'

एम्हर पं० नमोनाथ झा धुड़झाड़ अपन ठेला गाड़ी छोड़य लगलाह ।

वैवाहिक मन्त्र मे वर और कन्याक हेतु कहन पवित्र आदर्श भरल छैक ! अग्नि कें साक्षी राखि दुहू कें प्रतिज्ञा करय पड़ैत छैन्ह जे आब सँ हम दुहू गोटा मिलि कय एक भय गेलहुँ और आजीवन मनसा-वाचा-कर्मणा एक भेल रहब । सुख-दुःख मे, पाप-पुण्य मे, जीवन-मरण मे, हम एक दोसराक भागी रहब । संसार मे कोनो शक्ति हमरा दुहू गोटा कें पृथक नहि कय सकत । प्राचीन युग मे वर ओ कन्या दुहू सम्यक रूपें अपन गम्भीर दायित्व ओ पुनीत कर्तव्य बुझि वैवाहिक प्रतिज्ञा सँ आबद्ध होथि। एकरे नाम थिक वैदिक विवाह ।

किन्तु सम्प्रति की स्थिति भय रहल अछि ? ओहि पावन प्रतिज्ञाक अर्थ सँ वर-कन्या कें ततबहि सम्पर्क रहैत छैन्ह जतेक आधुनिक ग्रेजुएट लोकनि कें मिथिलाक्षर सँ । पुरोहित महाराजक आँखि रहैत छैन्ह पद्धति पर, मन रहैत छैन्ह 'रजतं चन्द्रदैवतम्' पर । यजमान चाहैत छथि जे कोनहुना झट दऽ छुलका छोड़ा कय पाक भय जाइ। रहि गेलाह वर-कन्या । से वरक मन मे रहै छैन्ह जे कखन विधि-बाधक बखेड़ा सँ पिण्ड छुटय और फाल्तू लोक सभ ससरकय जे कोबरक आनन्द लूटी । और बेचारी कन्या

बलिदानक छाग जकाँ बेसलि भीतरहि भीतर औनाइत रहैत अछि । जाहि पुरुष कें ओ कहियो देखने सुनने नहि, जनने बुझने नहि, ओकरा एकाएक ऊक जकाँ आबि अपन भाग्य-विधाता बनैत देखि कन्याक मन मे विद्रोह उत्पन्न होयब सर्वथा स्वाभाविक छैक। ओहि अपरिचित 'मालिक' क प्रति ओकरा प्रेम नहि भऽ प्रत्युत ईर्ष्या और घृणाक भाव जागृत भऽ जाइत छैक। ओकरा हृदय मे एक गहन अज्ञात भय जाहि रहैत छैक जे ओकरा आत्माक स्वतन्त्रता कें नष्ट कय ओकरा पराधीना दासी बना दैत छैक। ओ कुमारि अवस्था में अपना कें एक 'व्यक्ति' बुझैत छलि, विवाहक राति सँ ओ अपना कें 'सम्पत्ति' बुझय लागि जाइत अछि । कोनो कन्याक विवाह बेला पर ओकरा चेष्टाक अध्ययन करू, ई परिवर्तन स्पष्ट देखय मे आओत । कन्या मे आब ओ स्फूर्ति कहाँ, ओ उल्लास कहाँ, ओ तेज कहाँ ? पहिने ओ मुक्त चिड़इ जकाँ चहकैत फिरैत छलि। आब ओ पिंजड़ाक पक्षहीन पक्षी जकाँ बँधुआ बनि जाइत अछि। ओ पहिने जीवित छलि, आब ओकर जीवनी शक्ति जाइत रहलैक ।

हमरा लोकनि मूलवस्तु कें छोड़ि छायाक अनुसरण कय रहल छी । वर-कन्याक स्वभाव, शिक्षा ओ विचार मिलय वा नहि, किन्तु उलेढ़ि मिलि जैबाक चाही । वर-कन्या एको अक्षर प्रतिज्ञाक अर्थ बुझथु वा नहि, किन्तु मन्त्र पढ़ल जैबाक चाही । वर-कन्या मे यथार्थ स्नेह-बन्धन हो वा नहि, किन्तु गठबन्धन भऽ जैबाक चाही । ई विवाह नहि, विवाहक स्वाँग थिक । और एही कनेयाँ-पुतराक खेलक पाछाँ लाखो बिकाएल जा रहल छथि और एहि सारहीन स्वाँग सँ, एहि क्षणिक प्रहसन सँ, जे दाम्पत्य-सम्बन्ध प्रारम्भ होइत अछि ओ प्रायः आजन्म रोदनक कारण बनि जाइत अछि ।

एहि अनर्थमूलक नकली विवाहक अन्त कोना हो ? समाज कें सरोकार छैन्ह दहलहीक अँकुरी सँ, भारक बायन सँ, चतुर्थीक भोज सँ और घसकरहीक सुपारी सँ। वर-वधूक दाम्पत्य-जीवन कोना सफल और सुखमय बनतैक, ताहि दिशि समाज कनडेरियो आँखिये तकबाक प्रयोजन नहि बुझैत अछि । एहन स्वार्थी ओ अन्ध समाज सँ कोनो लाभ नहि । जा धरि समाजक दृष्टिकोण उदार नहि होएतैक, जा धरि कन्या-घातक कुप्रथा सभक मौलिक सुधार नहि होएत ता धरि देशोन्नतिक आशा करब मृगमरीचिकावत् अछि । जखन मूर्खता ओ अन्धविश्वासक स्थानापन्न ज्ञान ओ तर्कक आधार पर विवाह-सम्बन्ध स्थापित होमय लागत, जखन कन्यागण अपना कें खूटाक पाठी जकाँ निरुपाय ओ पराधीन नहि बुझि अपना कें मनुष्यताक अधिकार सँ युक्त

एक स्वतंत्र और मुक्त आत्मा बुझय लगतीह, जखन वर ओ कन्या मे जबर्दस्ती गँठजोड़ा नहि भय प्रेम ओ सहानुभूतिक सूत्र जोड़ाय लागत, तखन दाम्पत्य कर्त्तव्य चिरैताक काढ़ा जकाँ तीत नहि लागि कुसियारक रस जकाँ मीठ लागत, और जे गृहस्थी एखन जंजालक घर बूझि पड़ैत अछि, से स्वर्गीय सुखक केन्द्र बनि जाएत। परन्तु ई होएत्र तखने सम्भव जखन मैथिल कन्यागण जगज्जननी जानकी, मंडन मिश्रक विदुषी भार्या सरस्वती ओ राजा शिवसिंहक पंडिता पत्नी लखिमा ठकुराइन कें अपन आदर्श मानि अपना मे आत्मबल ओ साहसक संचार करथि और अखिनुत्रा पर्दा कें गर्दा मे मिलाय, अबला सँ सबला और मूर्खा सँ शिक्षिता भय, मिथ्या लज्जा ओ भय कें दूर भगबैत, सामाजिक अत्याचारक तीव्र प्रतीकार करबाक हेतु तत्पर भऽ जाथि। आब हुनका चाहिऐन्ह जे अनमेल विवाह-वेदी पर स्वयं बलिदान नहि भय, सामाजिक कुरीतिक बलिदान करथि। यावत धरि ओ शक्ति, साहस, शिक्षा और स्वावलम्बन सँ वञ्चित रहतीह, तावत धरि ओ पशुक दशा मे प्राप्त रहतीह। मैथिल कन्या सभ पतितपावनी गंगा भय बहुत दुर्दशा सहैत गेलीह। आब हुनका असिधारिणी दुर्गा बनबाक प्रयोजन छैन्ह।

पाठक-पाठिकागण ! हमरा लोकनि प्रस्तुत घटना सँ बहुत दूर बहकि ऐलहुँ। आब देखू, लाबा छिड़िऐबाक बेरि पहुँचि गेल। गाइनि लोकनि परिहासक स्वर मे गाबय लगलीह—

'लाबा छिड़ियाउ दाइ लाबा छिड़ियाउ, बाबू बिछि-बिछि खाउ।'

चारिटा कमैनिहार जे ऐंठकटार लग ओसारा पर ठाढ़ि छलि, से ओतहि सँ डहकनि गाबय लागलि।

अश्लील गारि सुनि रेवतीरमण ओकरा सभ कें मना करय लगलथिन्ह, किन्तु ओ सभ हिनका बात कें मोजर नहि कय पूर्ववत उमंग सँ गबैत रहलि।

शनैः शनैः हवन, सप्तपदी आदि सभ वैवाहिकी प्रक्रिया सम्पन्न भय गेल।

मिश्रजीक हाथ मे सन, साख-सिहुली और मटिया सिन्दूर देल गेलैन्हि। स्त्रीगण 'शुभे हो शुभे' कहैत कन्याक झाँपल-तोपल सिउँथ कें कनेक उघारि मिश्रजीक औंठा सँ सिन्दूर देया देलथिन्ह।

सिन्दूरदान ओ चुमाओन विधिक उपरान्त मिश्रजी कोबरघर मे पहुँचाओल गेलाह। ओतय नाना प्रकारक हावभाववाली अज्ञातयौवना, ज्ञातयौवना, मुग्धा, प्रौढ़ा आदि नायिका सभ तरह-तरहक हास-परिहास ओ वचन-विलास सँ मिस्टर सी० सी० मिश्र कें चकित

करय लगलीह। एहना स्थिति मे हमरा लोकनि आब एहि ठामक दृश्य देखी से उचित नहि। त चलू, देखू जे बड़कागामवाली की कय रहल छथि। प्रायः ओ दोसरा घर मे ककरो संग किछु एकान्तो कय रहल छथि। यदि कोनटा लगबा मे कोनो विशेष अधर्म नहि होइत होइ, त सुनू जे की सभ गप्प-सप्प भय रहल अछि।

रे० र०–अहाँ त इनाम पैबाक योग्य काज कैलहुँ अछि। वाह ! हमरा एतेक आशा नहि छल। किन्तु मंडप परक हेतु अहाँ कोन युक्ति रचलहुँ ?

ब० वाली–हम साहेब बहादुर कें पहिनहि चेता देलिऐन्ह जे 'खबरदार आप मंडप पर भूलकर भी मेरी ओर घूमकर मत देखियेगा।' और एम्हर दोसरा घर मे जा कऽ गुलाबी रंगक साड़ी छोटकी दाइ कें पहिरा देलिऐन्ह। बस, माड़ब पर हिनका ओ साड़ी देखि अस-तस कऽ विश्वास भऽ गेलैन्ह जे हमहीं बैसल छी।

रे० र०–किन्तु सिन्दूरो देबक काल हिनका ई नहि बूझि पड़लैन्ह जे कनेयाँ एतेक छोट कोना भऽ गेलि ?

ब० वाली–से त हम पहिनहिं कहि देलिऐन्ह जे हम लोकलज्जाक रक्षार्थ खूब निहुड़ि कय बैसब। तखन सन्देह कोना होउन्ह ?

रे० र०– त ई एखन धरि यैह बुझैत छथि जे अहीं हिनक कनेयाँ छिऐन्ह?

ब०–हँ, एखन धरि त सैह बुझैत छथि।

रे० र०–त देखब, यैह बुझैत-बुझैत गोटेक बेरि हाथो ने साफ कय बैसथि।

ब०–ईह ! से कि अखतियार छैन्ह ? हम चेता देने छिऐन्ह जे चतुर्थी भरि वर कन्या कें स्पर्श नहि करैत छैक। तें चारि दिन धरि हाथ-पैर नहि पसाक। बेचारे धैर्यपूर्वक दिन गनि रहल छथि।

रे० र०–हँ, तखन त ओहि राति अहाँ कें नहिए छोड़ताह ?

ब०–ओहि राति त अहींक बहिन हुनका नहि छोड़थन्हि। हुनका की होश रहतैन्ह जे हमर खोज करताह ?

ई सरस प्रश्नोत्तर शनैः शनैः मृदुल हास्य ओ नूपुरक झंकार मे परिणत होमय लागल। एहि रसिक दम्पतिक एकान्त विहार मे आब हमरा लोकनि कें बाधा देब उचित नहि। अतएव आब एहू ठाम सँ हटबाक चाही।



[११]

चतुर्थीक राति

घोर अन्धकार व्याप्त भय रहल अछि । आकाश मे समुद्रक लहरि जकाँ चारू कात सँ कारी-कारी मेघ उमड़ि रहल अछि । बीच-बीच मे बिजली चमकि उठैत अछि । थोड़बड़ि काल मे टिप-टिप कय पानि पड़य लागल । ई घटाटोप देखि जे गाइन लोकनि सौजन्यक सँचार देखय और उचितो गायक हेतु आइलि छलीह से सभ झटकि कय अपना-अपना आङन दिशि पड़ैलीह ।

मिस्टर सी० सी० मिश्रक समस्त अभिलाषाक गजट आइये राति बहरैबा लेल छैन्ह । कोबर घर मे पलंग पर ओंठगल ओ मनहिं मन हनीमून (सोहाग रात्रि) क रिहर्सल (पूर्वाभ्यास) करय लगलाह । तरह-तरहक काल्पनिक दृश्य सिनेमाक फिल्म जकाँ हिनका हृत्पटल पर उदित और विलीन होमय लागल । मिश्रजी कल्पना-जगत मे विचरण करैत निम्नलिखित प्रोग्राम बनाबय लगलाह–

जैखनं श्रीमतीजीक एकटा रञ्जित कोमल पद-कमल चौकठिक भीतर पहुँचि जैतैन्ह, तैखन हुनक स्वागतार्थ झट दऽ उठि कय ठाढ़ भऽ जैबाक चाही । ता दोसरो पद-कमल भीतर पहुँचि जैतैन्ह । तदुपरान्त एवं प्रकारें कार्यवाही होमक चाही–

मि० मिश्र (पत्नी क समक्ष ठेहुनिया दऽ कऽ)–

ओ फेयर एन्जिल ! दाउ आर्ट माइ ऑल,
माइ हार्ट, माइ सोल, माइ लव, माइ लाइफ !
हाउ ऐयर ए ब्लिस इट इज टु कॉल,
दिस इंजलिंग फॉर्म ऑफ दाइन माइ वाइफ !

[अरे यह भक से सौ पावर की बिजली आ गई कैसे?
कनेक्शन के बिना लाइट एलेक्ट्रिक छा गई कैसे ?
जरा-सा स्विच दबाने से लगेगा शॉक फौरन ही
समझ में है न आता इसको पकड़ूँ हाथ से कैसे ?]

मिसेज मिश्रा (मुस्कुराइत)–कुछ खौफ नहीं है साहब ! आप बेखटके इस बिजली को छू सकते हैं । अगर आपको डर मालूम होता है तो लीजिए, मैं ही आपका हाथ पकड़ लेती हूँ ।

मिस्टर मिश्र (हाथक चुम्बन करैत)–क्या मैं जीता-जागता हूँ या स्वप्न देख रहा हूँ अथवा स्वर्गलोक में पहुँच गया हूँ ?

मिसेज मिश्रा (हिनका उठा कय छाती सँ लगबैत)–मेरे काँपते हुए हृदय के मालिक ! तुम्हें अब इसी तरह चिपटाकर रखूँगी । (भुजा-पाश मे जोर सँ कसि कय) क्या मजाल जो तुम इस बन्धन से अपने को तिल भर भी छुड़ा सको !

मिस्टर मिश्रा (आनन्दोन्मत्त भय)–गॉड ! इफ यू एक्जिस्ट एनीह्वेयर, आइ चैलेंज यू टू कम फॉरवर्ड ऐण्ड क्रियेट ए स्वीटर प्लेजर दैन दिस टाइट एम्ब्रेस !

[ईश्वर ! तुम कहीं भी मौजूद हो तो मैं तुम्हें सामने आने के लिए चुनौती देता हूँ । इस गाढ़ आलिङ्गन में जो मधुर आनन्द है सो देखो, और इससे बढ़कर कोई भी आनन्द उत्पन्न कर सको तो मैं समझूँ ।]

मिसेज मिश्रा (मिश्राजीक केश फेरैत)–प्यारे ! क्या तुम सच्चे दिल से मुझे 'लव' (प्यार) करते हो ?

मिस्टर मिश्र (उत्तेजित स्वर सँ)–यदि मजनू सचमुच लैला से प्रेम रखता था, फरहाद शीरीं के लिये जान देता था, यूसुफ जुलेखा पर मरता था, रोमियो जूलियट को प्यार करता था,अंटोनी क्लियोपेट्रा पर फिदा था, बसैनियो पोर्शिया पर मोहित था, और उन लोगों को तराजू के एक पलड़े पर बैठा दिया जाय और दूसरे पलड़े पर मुझे बिठा दिया जाय तो सब-के-सब एकबारगी ऊपर उठ जायँगे और आसमान में लटकते ही रह जायँगे ।

मिसेज मिश्रा–अहा ! अब मुझे और क्या चाहिये ? (मुखचुम्बन करैत) मैं ने प्रेम की यह मुहर-छाप जो लगा दी है वह टूटने न पावे ।

मिस्टर मिश्र (अधरक रसपान करैत)–मालूम होता है अंगूरी शरबत का प्याला चूस रहा हूँ।

मिसेज मिश्रा (गाल पर गाल रखैत)–

मेरे प्यारे, मेरे मालिक, मेरे दिल में रहा करना ।
कलेजा काटकर तेरे लिये मैं घर बनाऊँगी ॥

मेरे हीरा, मेरे मोती, गले का हार बन जाओ ।
रहूँगी रात-दिन पहने, न पल-भर भी हटाऊँगी ॥
मेरे सुग्गा, मेरे तोता, मेरे पिंजड़े में आ जाओ ।
मैं चुनकर खेत से दाना तेरे मुँह में खिलाऊँगी ॥
मेरे साथी, मेरे शौहर, मेरी गोदी में आ बैठो ।
करूँगी प्यार मैं तुमको कलेजे से सटाऊँगी ॥

मिस्टर मिश्र–अहा ! मालूम होता है, इस मुखरूपी चन्द्रमा से सभी अमृत छन-छनकर मेरे ही कानों में आ रहा है । अहा ! इनकोर ! वन्स मोर (एक बेरि और सुनाउ) !

तखन मिसेज मिश्रा कलापूर्वक पैर सँ ताल देमय लगलीह । डान्स (नाच) करबा मे हुनका पैरक नूपुर छम-छम बाजय लगलैन्ह ।

मिस्टर मिश्र ई कल्पना करितहिं छलाह कि यथार्थहि मे छम-छमक शब्द सुनि पड़लैन्ह् । जेना केओ ताल दैत नृत्य करैत चलि अबैत हो ।

मिश्रजीक हृत्तन्त्री एके बेरि झन् दऽ बाजि उठलैन्ह । जाहि समयक प्रतीक्षा ओ चौरासी घंटा सँ कय रहल छलाह से समय आब नाकक सोझा आबि रहल छैन्ह। मिश्रजीक हृदय धक्-धक् करय लगलैन्ह । जेना वोटक गिनती होमय काल भावी मेम्बर लोकनिक हृदय धक् -धक् करय लगैत छैन्ह । ओ पूर्णतः नर्वस (किंकर्तव्यविमूढ़) भऽ गेलाह । पहिलुका सोचल सभटा प्रोग्राम गड़बड़ा गेलैन्ह ।

एतबहि मे गुलाबी साड़ी वाली सुन्दरी आबि कहलथिन्ह–मिश्रजी ! हमरा सँ जे किछु कसूर भेल हो से क्षमा करब । और हमर ननदि एखन बड़ सुकुमारि छथि। देखब, काँच कली तोड़ब उचित नहि । बेश, त आब अपन वस्तु सुमझा लियऽ।

ई कहि जड़कागामवाली बुच्चीदाइ कैं घर मे धकेलि बाहर सँ जिंजीर लगाय देलथिन्ह और बिहुँसैत अपना घर दिशि चलि गेलीह ।

मिश्रजीक पैर तर सँ पृथ्वी ससरि गेलैन्ह । ओ झमा कऽ आकाश पर सँ खसलाह। आँखिक आगाँ अन्धकार भऽ गेलैन्ह । जतेक हवाइ महल बनौने छलाह से सभ एके बेरि बालुक घसना जकाँ खसि पड़लैन्ह । मुँह सँ केवल दू टा शब्द बाहर भय रहि गेलैन्ह–'माइ गॉड !' (हे भगवान !)। एहि सँ आगाँ ओ और किछु नाहि बाजि सकलाह।

  

देखैत-देखैत पश्चिम दिशा मे भारी बिहाड़ि उठल । संगहि-संग मूसलधार वृष्टियो होमय लागल । चारक खपरा पर अदौरी सन-सन बड़ौरी पड़य लागल । बुच्चीदाइ भिड़ियाएल पटिया जकाँ ठाढ़ि रहि गेलीह और लस्सा जकाँ केंवाड़क दोग सँ सटि गेलीह ।

मिस्टर मिश्र मन मे सोचय लगलाह–'हाय-हाय ! क्या यही क्रीचर (जन्तु) मेरी वाइफ (पत्नी) है ? इसमें तो कुछ भी पर्सनैलिटी (व्यक्तित्व) नहीं है । मामुली एटिकेट मैनर्स (शिष्टाचार) तक नहीं जानती । न यह क्लब में जा सकती है, न पार्क में घूम सकती है, न मीटिंग में बैठ सकती है । मेरी लेडीफ्रेण्ड्स (मित्राणियाँ) कैसी शोख और चुलबुली हैं ? कोई परी की तरह नाचती है, कोई चिड़िया की तरह चहकती है, कोई बिजली की तरह चमकती है, कोई तितली की तरह उड़ती फिरती है । मगर यह कम्बख्त तो हिलने तक का नाम नहीं लेती । जबसे आई है, अशोक पिलर (स्तम्भ) की तरह वहीं गड़ी हुई है । इसमें जरा सा भी लाइफ (जीवन) का साइन (चिह्न) नहीं जान पड़ता । मालूम होता है जैसे स्टेज (गट्ठर) खड़ा कर दिया गया हो । क्या कोई भी जेन्टिलमैन (भद्र व्यक्ति) इसके साथ एक मिनट रहना पसन्द कर सकता है? हाय-हाय ! मैं फाँसी पड़ गया । मेरी सभी आकांक्षाओं का खून हो गया ।

बुच्चीदाइ मन मे सोचैत छलीह–'इह ! बाहर मे कोहन-कोहन बड़ौरी खसैत छैक । ओसारा पर रहितहुँ त एखन खूब बिछि-बिछि कय खैतहुँ !'

मिस्टर मिश्रक नैराश्यरूपी अन्धकार मे सहसा एक आशाक क्षीण प्रकाश उदित भेलैन्ह । सोचय लगलाह–'अच्छा, ऐसा भी तो हो सकता है कि इस ओढ़नी के अन्दर एक नाजनीन परी छिपी हो, घूँघट हटाते ही एक चाँद-सा मुखड़ा निकल आवे !'

मिस्टर मिश्र भावना करय लगलाह–'इस पर्दे के अन्दर से मलाई-सी गोरी और मुलायम एक सुन्दर कलाई निकलेगी जिसमें सुनहली रिस्टवॉच (घड़ी) चमकती रहेगी । पलाश के फूलों के समान कानों में छोटे-छोटे ईयररिंग चकमक करते रहेंगे और उनकी आभा गुलाबी गालों पर पड़ती रहेगी । फीरोजी रंग का ब्लाउज इतना नीचे से कटा रहेगा कि खुली हुई सफेद छाती दूध से धोये हुए संगमर्मर की तरह जान पड़ेगी और उस पर गिनी गोल्ड का नेकलेस (सोने का हार) या मोती की माला छक-छककर अपनी ज्योत्स्ना छिटकाती रहेगी और कंघी-चोटी किये हुए काले-काले बालों की टेढ़ी-मेढ़ी माँग और लहरदार जुल्फें ऐसी बहार दिखलाती रहेंगी कि चेहरे की रौनक सौ गुनी बढ़ जायगी और मालूम होगा कि काले-काले बादलों के बीच

में चाँद निकल आया है । उस चाँद को हाथ में पाकर किसको 'किस' (चुम्बन) करने की इच्छा नहीं हो जायगी!'

ई भावना करैत-करैत मिस्टर मिश्र एतेक विह्वल भय उठलाह जे दन सँ नेवाड़क पलंग पर सँ कूदि पड़लाह और लपकि कय बुच्चीदाइक घोघ हटाय, माथक नुआ पर्यन्त खींचि लेलन्हि । बुच्चीदाइ लाजहि चुक्कोमाली कैमि गेलीह और ठेहुनक बीच मे मुँह नुका लेलन्हि । परन्तु मिस्टर मिश्र कें देखबाक जे सिहन्ता छलैन्ह से पूर्ण भय गेलैन्हि । बुच्चीदाइक पहुँची मे रिस्टवाच त नहि छलैन्ह किन्तु छौ टा मोट-मोट लहठी और कँगना सुशोभित छलैन्ह । कान मे ईयररिंगक स्थानापन्न बीरझुम्मक लटकल छलैन्ह। बुच्चीदाइक छातीक जे अंश मिश्रजी कें देखना गेलैन्ह से संगमर्मर जकाँ झलकैत त नहि बूझि पड़लैन्ह, किन्तु गोदनाक रंग सँ रंजित भेलाक कारणें संगमूसाक समान भासित भेलैन्ह । ओहि पर नेकलेस त नहि छलैन्ह, किन्तु कारी डोरा मे गाँथल चानीक पैंच-पैंच चकती विराजमान छलैन्ह । फैशनदार माँगपट्टी और चोटीक बदला मे पाछाँ मे खोंपा बान्हल छलैन्ह और ललाट पर एक सिन्दुर-बिन्दुक स्थान मे सौंसे कपार पर पटमासी सिन्दुर कैल छलैन्ह ।

मिस्टर मिश्रक हृदय मे ज्वालामुखी भभकि उठलैन्ह । ओ छिलमिला कऽ केवाड़ फोलय लगलाह । किन्तु बाहर सँ जिंजीर बन्द छलैन्ह । अन्त मे हारि-दारि कय खाट पर आबि कय बैसि गेलाह । तदुपरान्त नवदम्पति मे निम्नलिखित प्रश्नोत्तरी होमय लागल–

मि० मिश्र–क्या तुम्हारा ही नाम बुचिया है ?

बुचिया (मनहिं मन)–इह देखू ने, उर्दुए छँटै छथि ।

मि० मिश्र–तुम बोलती क्यों नहीं ? मैं जानना चाहता हूँ कि क्या सचमुच तुम्हारे ही साथ मेरा विवाह हुआ है ?

बुचिया (मनहिं मन)–मनुसा केहन भारी मुँहफट्ट अछि ! एतेक जोर सँ बजैत लाजो ने होइत छैक ।

मि० मिश्र–देखो, इस तरह का पर्दा मैं पसन्द नहीं करता, अगर तुम सचमुच ही मेरी स्त्री हो तो मेरे नजदीक आकर क्यों नहीं बैठती ?

बुच्चीदाइ मनहिं मन डरैलीह जे ई कतहु फेरि आबि कय बेपर्द नहि करथि। ई सोचि ओ अपन कोंचा और आँचर कें सक्कत कय लेलन्हि ।

मि० मिश्र–क्या तुम हारमोनियम बजाना जानती हो ?

बुच्चीदाइ चुप्प ।

मि० मिश्र–क्या तुम चाय बना सकती हो ?

बुच्चीदाइ चुप्प ।

मि० मिश्र–क्या तुम नर्सिंग (परिचर्या) जानती हो ?

बुच्चीदाइ मन मे सोचय लगलीह–नरसिंह त गामक कोतवालक नाम छैक। देखू त भला, कोतवाल'लगा कऽ हमरा गारि पढ़ैत अछि !

मि० मिश्र–क्या कुछ निटिङ (जाली बुनना) वगैरह भी सीखा है ?

बुच्चीदाइ चुप्प ।

मि० मिश्र–तो क्या तुम मेरी किसी बात का जवाब देना नहीं चाहती ?

बुच्चीदाइ चुप्प ।

मि० मिश्र–अच्छा, तो मैं यहाँ से जाऊँ ?

बुच्चीदाइ चुप्प ।

मि० मिश्र मन मे सोचय लगलाह–क्या यह बहरी या गूंगी तो नहीं है ? अथवा जान-बूझकर 'इनसल्ट' (अपमान) कर रही है ? खैर, जो हो, इसे अब आखिरी दफे पूछ लेना चाहिये कि यह क्या चाहती है ।

मिस्टर मिश्रक धारणा छलैन्ह जे एकान्त शयनागार मे पतिक प्रथम स्पर्श सँ पुलकित भय नववधू प्रेममग्न भय पतिक छाती सँ लपटि जाइत अछि । एहि भावना सँ प्रेरित भय मिश्रजी अपन नवोढ़ा पत्नीक समीप पहुँचलाह । किन्तु जैखन ओ निहुरि कय बुच्चीदाइक बाँहि दिशि हाथ बढ़ौलथिन्ह कि दुलार सँ बहसल बुच्चीदाइ छिड़ियाएल नेना जकाँ हिनक हाथ जोर सँ झटकि देलथिन्ह । मिस्टर मिश्रक नाक मे हीराकाटक चोख कँगना एतेक झोंक सँ लगलैन्ह जे ओहि सँ टप-टप शोणित खसय लगलैन्ह।

मिश्रजी रुमाल सँ आँखि-नाक पोछैत पुनः पलंग पर जा बैसलाह और अपना कर्त्तव्य पर गम्भीर रूपें विचार करय लगलाह । मन मे नाना प्रकारक तर्क-वितर्क उठय लगलैन्ह । सोचय लगलाह–इस लड़की का स्टैण्डर्ड (दर्जा) तो मालूम हो गया । यह देहाती, मूर्ख, असभ्य और उजड्ड है । इसमें कुछ भी शऊर नहीं है। यह इतनी खराब सोसाइटी में पली है, इसमें इतना जंगलीपन भरा है कि इसको मनुष्य बनाते-बनाते मेरी सारी उम्र खतम हो जायगी । फिर इससे मैं सुख कब उठाऊँगा? ऐसी परिस्थिति में क्या करना चाहिये ।

एहि प्रकारें तारतम्य करैत मिस्टर मिश्र कोटक पाकेट सँ फाउन्टेन पेन बाहर कैलन्हि और श्वशुरमशयक नाम सँ चिट्ठी लिखय लगलाह । पत्रक भावार्थ नीचा देल जाइछ–

'प्रिय रेवती बाबू !

मुझे इस तरह धोखा देकर आपलोगों ने अच्छा नहीं किया। मैं प्रत्येक दृष्टिकोण से विचार कर इसी निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि आपकी बहन मेरी पत्नी होने के योग्य नहीं है। मैं रेल का इञ्जिन चाहता हूँ और वह बैलगाड़ी का पहिया है। उसके सहारे मेरा जीवन-रूपी हवाई जहाज ऊपर नहीं उड़ सकता, उल्टे जमीन पर गिरकर चूर-चूर हो जायगा।

मैं ने हर एक पहलू से आपकी बहन को जाँच लिया है। वह मेरे लिये सर्वथा अनुपयुक्त है। मुझे अभी तक समझ में नहीं आता है कि वह जिन्दा है या मुर्दा, बेवकूफ है या पागल, बहरी है या गूँगी, आदमी है या कोई दूसरी चीज। उसके साथ मेरा रह सकना बिल्कुल असम्भव है।

आपकी बहन न लिटरेचर (साहित्य) समझ सकती है, न पॉलिटिक्स (राजनीति) डिस्कस (बहस) कर सकती है, न पियानो बजाकर मेरा दिल बहला सकती है। जिस समय मैं कालिदास और शेक्सपीयर की कविताओं का रसास्वादन करता रहूँगा, उस समय जी तड़प उठेगा-होती कोई ऐसी आत्मा जो मेरे साथ बैठ छक-छककर यह अमृत पीती और मुझे भी पिलाती ! तब कितना विमल और स्वर्गीय आनन्द मिलता! लेकिन आपकी बहन के आगे शेक्सपीयर का नाटक रखना वैसा ही होगा जैसा भैंस के आगे रविवर्मा के चित्रों का अलबम रख देना। जिस समय मैं मिल और कांट के दार्शनिक विचारों की तुलनात्मक विवेचना करता रहूँगा, उस समय मन में एक कसक उठेगी-होती कोई ऐसी आत्मा जो मेरे साथ इन सूक्ष्म भावों की बारीकियाँ समझकर जटिल गुत्थियों को सुलझाने में मेरी सहायता करती, विचार-वारिधि में मेरे साथ गोते लगाकर नये-नये रत्न ढूँढ़ निकालती ! लेकिन उस समय आपकी बहन उलझे हुए बालों के गन्दे जंगल में गोते लगाकर रत्नों के स्थान में जूँ ढूँढ़कर निकालती रहेगी। फिर आपकी बहन के साथ मेरा कैसे निभ सकता है ? न वह मेरे फाइन सेन्टिमेन्ट्स (सूक्ष्म भावों) को समझ सकती है, न मेरे लॉफ्टी एम्बिशन्स (महत्त्वाकांक्षाओं) को अप्रीशियेट (अनुमोदन) कर सकती है। जीवन के जो सबसे बड़े-बड़े आनन्द हैं, उनमें वह मेरा साथ नहीं दे सकती, जीवन के किसी भी महत्त्वपूर्ण कार्य में मेरा हाथ नहीं बँटा सकती। फिर आपकी बहन मेरी जीवन-सङ्गिनी क्यों कर हो सकती है ?

मैंने माना कि आपकी बहन दोनों शाम रसोई बनाकर मुझे खिला सकती है,

किन्तु यह काम तो पाँच रुपए के रसोइये से भी हो सकता है। मैंने माना कि वह चौका-चूल्हे का मोटा काम कर ले सकती है, किन्तु यह काम तो दो रुपए की दाई से भी चल सकता है। मैं ने माना कि वह मेरी शारीरिक वासनाओं की पूर्ति कर सकती है, किन्तु मेरी स्थायी वृत्तियों में सहयोग तो नहीं दे सकती। आपकी बहन से मुझे मिला क्या ? एक रसोई बनानेवाली और बच्चा पैदा करने वाली मशीन, किन्तु जीवन-यात्रा में साथ देनेवाली सहचरी नहीं। वह मेरे शरीर की भूख-प्यास बुझा सकती है, मेरे आत्मा की नहीं। वह मजदूरिन बनकर भले ही रह सके, हृदय-साम्राज्य में शासन करने वाली रानी बनकर नहीं रह सकती। थोड़े में यों समझिये कि वह मेरी पालिता हो सकती है, पत्नी नहीं।

मैं जानता हूँ कि लड़की का कोई दोष नहीं है। वह अबोध है, अशिक्षिता है। लेकिन आपलोगों के पाप का प्रायश्चित उसे अवश्य ही करना पड़ेगा। आपलोगों ने उसके प्रति घोर अन्याय किया है। उसके प्रति अपने कर्त्तव्य की निष्ठुर अवहेलना की है। उसको आपने मनुष्योचित सभी अधिकारों से वञ्चित रखा है। सन्तान को केवल जन्म देने से ही माता-पिता के दायित्व की इतिश्री नहीं हो जाती। सन्तान को सुशिक्षित और जीवन-युद्ध के योग्य बना देना माता-पिता का अनिवार्य कर्त्तव्य है। आपके पिता ने कन्या को 'सालङ्कारम्' और 'प्रजापतिदैवतम्' तो बना दिया, किन्तु उसे 'सुशिक्षिताम्' और 'सुयोग्याम्' नहीं बनाया। कर्त्तव्य की इस अक्षम्य अवहेलना का प्रतिफल तो उन्हें भोगना ही पड़ेगा।

मैं इतना स्वार्थी और हृदयहीन नहीं हूँ कि कहीं जाकर पुनर्विवाह कर लूँगा। मैं आपसे प्रतिज्ञा करता हूँ कि आजन्म ब्रह्मचारी रहूँगा। मैं ने अपने जीवन का संकल्प निश्चय कर लिया है। जबतक जीता रहूँगा, घूम-घूमकर कन्याओं के जीवन को सुधारने की चेष्टा करता रहूँगा और स्वार्थ की वेदी पर कन्याओं की जो हत्या हो रही है, उसके विरुद्ध आन्दोलन करते-करते अपना प्राण त्याग करूँगा। अपने देश की यदि एक भी कन्या को मूर्खता और अन्ध विश्वास के चंगुल से छुड़ा सका, तो अपने जीवन को सफल समझूँगा।

जिस अभागिनी लड़की के साथ मेरा वैवाहिक नाटक किया गया है, उसको कह दीजियेगा कि वह अपने को कुमारी ही समझे और अब से भी शिक्षित बनने की चेष्टा करे। जिस दिन वह अपने को मेरे योग्य बना सकेगी, उसी दिन उसके साथ मेरा सच्चा विवाह होगा। यदि वह ऐसा करने में असमर्थ हो, तो उसे उसी के अनुरूप

किसी वर के हाथ सौंप दीजिएगा ।

अच्छा, अब मैं चला । मेरा पता लगाने की चेष्टा मत कीजियेगा । और अपने पिता को कह दीजियेगा कि भविष्य में इस तरह का कन्यादान कर वर-कन्या के जीवन का बलिदान नहीं करेंगे ।

—चण्डीचरण,

मिस्टर सी० सी० मिश्र चिट्ठी कें मोड़ि सीरम मे राखि देलथिन्ह और विक्षिप्त जकाँ घर मे इतस्ततः टहलय लगलाह । हुनका हृदय मे घोर अन्तर्द्वन्द्व मचय लगलैन्ह। अन्त मे ओ मोह पर विजय प्राप्त कैलन्हि । पछुअरिया भीत मे एकटा जंगला छलैक। बुढ़ियाक दाँत जकाँ ओकर सभ छड़ टूटल छलैक । मिश्रजी बाकस पर पैर दय जंगला पर चढ़ि गेलाह । हुनका हृदय मे जे ज्वालामुखी भभकल छलैन्ह तकरा आगाँ पनिया-बिहाड़िक झटक किछु नहि बूझि पड़लैन्ह । मिश्र जी फाँड़ बान्हि साहसपूर्वक कूदय लेल तैयार भऽ गेलाह ।

अभागलि बुचिया ! तौं चतुर्थीक कोन सुख बुझलह ? हः ! तोहर सर्वनाश भय रहल छौह और तों औखन धरि अपन मुँह घोंघ सँ बाहर नहि करैत छह । कनेक आँखि खोलि कय ताकह जे कहन भारी वस्तु हेराय रहल छौह !

बुच्चीदाइ ! आबहुँ चेतू । अन्तिम अवसर हाथ सँ जा रहल अछि । औखन यदि अहाँ लपकि कय पतिक पैर पकड़ि ली त की मजाल जे ओ छोड़ा कय चलि जाथि । किन्तु अहाँ त संकोचे आँखिक पट्टी बन्द कैने छी ।

निविड़ अन्धकार मे, घनघोर वर्षा मे, मिस्टर सी० सी० मिश्र एक बेरि पाछाँ तकलन्हि और धम्म दऽ पछुआड़ मे कूदि पड़लाह । बिहाड़िक प्रचण्ड झोंक मे किछु शब्द नहि सुनाइ पड़ल । एतबहि मे कड़कड़ा कय मेघ गरजल और लगहि मे कतहु ठनका खसि पड़ल ।



[१२]

?

क्रमशः वर्षा थम्हि गेल । बिहाड़ियो बन्द भऽ गेल । आकाश निर्मल भऽ गेल। जखन भुरुकबा उगि गेलैक तखन बड़कागामवाली चुप्पहि उठि बुच्चीदाइक कोनट लागय ऐलथिन्ह । केवाड़ मे कान सटौलो उत्तर जखन किछु सुनाइ नहि पड़लैन्ह, तखन नहुँ-नहुँ केवाड़ ठोकैत कहलथिन्ह—की ऐ ! अहाँ दुनू गोटा कैं एखन धरि मन नहि भरल अछि की ?

ई कहि बड़कागामवाली जिंजीर फोलि घर मे पैर देलन्हि । कोबरक दृश्य देखितहिं हुनक जी सन्न द' उड़ि गेलैन्ह । कोबर घर मे वरक कतहु पता नहि । बुच्चीदाइ कोन मे दबकलि अनवरत अश्रुधारा बहा रहल छथि । हुनक आँखिक काजर नोर-घोर भय गाल पर टघरि रहल छैन्ह ।

बड़कागामवालीक तीक्ष्ण दृष्टि सहसा सीरम महक पत्र पर गेलैन्ह । ओ चट दऽ ओकरा उठा एके साँस मे पढ़ि गेलीह । पत्र पढ़ैत देरी हुनका सभटा घटनावली परिच्छ भऽ कऽ बुझा गेलैन्ह । ओ एक बेरि टूटल जँगला दिशि दृष्टिपात कैलन्हि और दौड़लि पति कैं जगाबय गेलीह ।

  

भोर होइतहिं सौंसे गाम मे घोल भऽ गेल जे बुचियाक वर रातिए मे पड़ा गेलैक। ठाम-ठाम तरह-तरहक टीका-टिप्पणी ओ शंका-समाधान होमय लागल । सभ केओ अपना बुद्धिक अनुसार अपन-अपन अनुमान लगाबय लागल । जे लोकनि प्रमादवश कहियो लालकाकाक आङन नहि अबै छलथिन्ह सेहो लोकनि आइ स्नेहाभिभूत भय जिज्ञासार्थ पहुँचैत गेलथिन्ह । एतेक गोटे कन्यादानक राति हँकारो पुरय नहि आएल रहथिन्ह ।

लालकका दरवाजा पर बैसल विषण्ण चित्त सँ दातमनि करैत छलाह । बुचकुन चौधरि हुनका देखि दूरहिं सँ टोकलथिन्ह—की औ लाल ? सुनबा मे आएल अछि जे मिस्टर पड़ा गेलाह । हमरा त पहिलहि हुनक लक्षण देखि माथ ठनकल जे ई किछु ने

किन्तु थकेंड़ा चरबं करताह। कन्या रत्न होइत अछि। ओकरा बहुत विचारि कय सुपात्रक हाथें दान करबाक चाही। तँ लिखलकैक अछि जे एँ एँ एँ अर्थी... सेहो, एखन स्मरण नहि होइत अछि। हमरा जमाय कैं लाख लोक कहलन्हि, किन्तु ओ एहि तरहें नहि पड़ाएल छलाह। अहाँक जमाय त अगड़ुलित भऽ गेलाह।

ई कहैत पुनकुन चौधरी अपन आनन्द कैं छपा नहि सकलाह और भाभा कऽ हँसि पड़लाह।

लालकका जिभिया फेकैत कहलथिन्ह—नहि। हुनका कालेज सँ एक बहुत जरूरी चिट्ठी आबि गेलैन्ह जे पत्र देखैत प्रिन्सिपल सँ जा कऽ भेंट करू। तँ हड़बड़ाएल घातिए विदा भऽ कऽ चल गेलाह। अपना लोकनि आवश्यक कार्य देखि बाधा देब उचित नहि बुझलिऐन्ह। और कोनो बात नहि छैक।

ता आङन मे दुलारमनि सिसकिक शब्द सुनि पड़ल—की एँ मधुरानी! अहाँक जमाय पड़ा कऽ चल गेल?

ई सुनितहिं लालकाकी तमकि कय बजलीह—हमरा जमाय सन ककर जमाय छैक? हुनका त चारिए दिनक छुट्टी छलैन्ह। तैं बेचारे दौड़ले बनारस गेलाह अछि। वस्तु-जात पर्यन्त एतहि छोड़ने गेल छथि। मुइत सभ बलहुँ फाल रचने अछि।

✧ ✧ ✧

जखन आङन खाली भेलैन्ह त लालकाकी बेटी लग ऐलीह और घराजोड़ी कय कानय लगलीह। बुच्चीदाइक आँखि सावनक मेघ बनि गेलैन्ह। हुनक कमल सन कोमल नेत्र सँ धधा-धधा कय नोर बहय लागल। एकर उत्तरदायी के?

❑

निवेदन

'कन्यादान'क अनन्तर हमरा ई अनुमान नहि छल जे पुनः 'द्विरागमन'क संघटन करय पड़त। किन्तु 'कन्यादान' एतेक व्यापक भऽ उठल जे विश्वविद्यालयक परीक्षार्थीक अध्ययनागार सँ लय, द्विरागमनीय कन्याक पौती पर्यन्त मे सँठाय लागि गेल। 'कन्यादान'क जे विरोधी लोकनि 'कन्यादान' लिखबाक हेतु हमर कपार फोड़बा पर उद्यत छलाह, से लोकनि आब 'कन्यादान'क द्वितीय भाग नहि लिखबाक कारण हमर कपार फोड़य पर वृत भऽ गेलाह। एक महानुभाव त एतेक अधीर भऽ उठलाह जे हमरा स्थानापन्न स्वयं उत्तरार्द्ध लिखि कऽ छपाबय लगलाह। किछु अंश 'मिथिला-मिहिर' में प्रकाशितो भऽ गेलैक। सम्पादकजी कहलन्हि जे ''आब अपनहि लिखु, नहि त 'कपालकुण्डला'क 'मृन्मयी' बला परि भऽ जायत।''

मित्रमण्डली मे सर्वत्र यैह प्रश्न जे ''बुच्चीदाइक पुनर्मिलन कहिया करबैन्ह?'' वनैलीक राजकुमार लोकनिक त एतेक आवेश देखना गेल जे एक अध्याय समाप्त होइतहि घेरि कऽ बैसि जाथि और यावत सभटा सुनल नहि होइन्ह तावत छोड़थि नहि। श्री रघुनाथ बाबू वकीलो ओहि विनोद-गोष्ठी मे सम्मिलित भऽ अपन तुमुल हास्यध्वनि तथा मनोरंजक टीका-टिप्पणी सँ रसोद्रेक मे सहयोग प्रदान कैल करथि।

आचार्य श्रीरामलोचनशरणजी (मास्टर साहब) कैं हम शब्द द्वारा धन्यवाद नहि दऽ सकै छिऐन्ह। ई हुनके अपूर्व मैथिली-प्रेमक फल थिक जे कागजक एहन महार्घताक समय मे ई उपन्यास प्रकाशित भऽ सकल।

'कन्यादान' तथा 'द्विरागमन'क सम्बन्ध मे किछु बात स्पष्ट कऽ देब उचित बुझना जाइछ। एकर सभ पात्र तथा वर्णित घटना काल्पनिक अछि। पृष्ठिभूमि मिथिलाक ग्राम्य-जीवन सँ लेल गेल अछि, किन्तु एकर कथानक प्रायः कोनो प्रान्त पर घटित भऽ सकैछ। प्राचीन परम्परागत रूढ़ि तथा नवीन अंग्रेजी विचार, एहि दूनूक संघर्ष सँ उत्पन्न प्रतिक्रिया कैं विनोदात्मक रूप में उपस्थित करब लेखकक प्रधान उद्देश्य बुझक

चाही। अपन अन्धपरम्परा हो वा अङरेजी सभ्यताक कुरीति हो, दुहू सँ रङ्ग-मसाला लय व्यंग्यात्मक चित्र खींचल गेल अछि । भिन्न-भिन्न पात्रक मुँह सँ जे विचार प्रकट भेल अछि, ताहि हेतु लेखक उत्तरदायी नहि । व्यंग्य-विनोदक पुट दैत एहन एहन दृश्यक फोटो उतारल गेल अछि, जाहि सँ यथेष्ट हँसि चुकलाक अनन्तर मननशील पाठकक ध्यान गंभीर सँ गंभीर सामाजिक प्रश्नक दिश आकर्षित होइत जैतैन्ह । सुधारक वा उपदेशक होएबाक दावा करब बड्ड कठिन कार्य । तेँ हम अपन कोनो आदर्श वा उपदेश पाठकक समक्ष रखबाक चेष्टा नहि कैल अछि । यदि एहि कृति सँ निर्दोष मनोरञ्जनक संग-संग समाजक किछु टा उपकार सिद्ध हो, त हम अपना परिश्रम कैं सफल बुझब ।

–लेखक

[१]

मिस बिजलीक भाषण

विश्वविद्यालयक सभा-भवन आइ बिजलीक प्रकाश सँ जगमग रहल अछि। कारण जे भिन्न-भिन्न विद्यालयक छात्र छात्रागण विवाद-प्रतियोगिता में भाग लेबक हेतु उपस्थित भेल छथि । एक प्रतिष्ठित विद्वान सभापतिक उच्च स्थान पर आसीन छथि। विवादक विषय थिक–

'नारीक कार्यक्षेत्र पुरुष सँ भिन्न होयबक चाही अथवा एक समान ?'

सभा-भवनक एक प्रमुख अंश महिलावृन्दक हेतु सुरक्षित अछि । ओहि में रंग-बिरंगक फैशन सँ सुसज्जित युवतीगण वातावरण में रंगीन मादकता भरि रहल छथि। तितलीक पाँखि में जतेक प्रकारक रंग होइ छैक से सभ एहि ठाम सुकुमार नवयौवनाक परिधान बनि अपन-अपन शोभा कैं धन्य कय रहल अछि । अज्ञातयौवना, ज्ञातयौवना, मुग्धा, मध्या, प्रौढ़ा प्रभृति नायिकाभेदक लक्षण रटनिहार विद्यार्थी कैं एतय एक्कहि ठाम प्राय: समस्त उदाहरण साकार रूप में भेटि जइतैन्ह ।

निर्दिष्ट समय पर विवाद प्रारम्भ भेल । सर्वप्रथम एक क्षीणकाय चश्माधारी नवयुवक मंच पर आबि भाषण करय लगलाह । हुनका वक्तव्यक आशय नीचा देल जाइछ–

''पुरुष और नारीक कार्यक्षेत्र एक नहि भ' सकैछ । दुहू में प्रकृतिगत विभिन्नता अछि । पुरुषक रचना कठोर तत्त्व सँ भेल छैन्ह ; नारीक रचना कोमल उपादान सँ। पुरुष में बल और साहसक अधिकता होइ छैन्ह, त नारी में प्रेम तथा त्यागक अधिकता होइ छैन्ह । पुरुष में मस्तिष्क प्रधान होइ छैन्ह ; नारी में हृदय । एक उद्यमक अवतार होइ छथि त दोसर सहनशीलताक मूर्त्ति । एक जीवन-युद्धक सैनिक छथि, दोसर शान्तिक अधिष्ठात्री देवी ।

''पुरुष तथा नारीक एहि नैसर्गिक विभिन्नताक कारण अनादि काल सँ ई व्यवस्था आबि रहल अछि जे पुरुष पराक्रम द्वारा बाहर सँ प्राप्त करय आनथि ; नारी घर में यत्नपूर्वक ओकर संरक्षण करथि । पुरुषक शोभा छैन्ह बलिष्ठ भुजा, नारीक शोभा छैन्ह स्नेहपूर्ण हृदय । पुरुष सबल वृक्ष जँका स्वतन्त्र रूपें अपना पैर पर ठाढ़ रहै छथि; नारी लताक समान अबला तथा आश्रयापेक्षिणी होइ छथि ।

''नारी गृहक लक्ष्मी थिकीह । हुनक कार्यक्षेत्र छैन्ह अपन घर । अपना घरक

भीतर ओ संतक गृहस्थी बसबै छथि । सरसता और माधुर्यक वर्षण कय ओ गृहक अभ्यंतर आनन्द-मन्दाकिनी प्रवाहित करैत रहैत छथि । जीवन-संग्रामक विकट संघर्ष सँ श्रान्त पुरुष ओहि मे अवगाहन कय शीतल तथा सन्तापरहित भय जाइत छथि ।

"नारी समग्र जीवन परिवार कैं स्नेहसूत्र मे आबद्ध कैने रहै छथि । एही मे हुनक चित्त केन्द्रीभूत भेल रहै छैन्ह । यदि नारी घर सँ बाहर भय पुरुष जकाँ सार्वजनिक कार्यक्षेत्र मे अवतीर्ण होइतीह त आश्रमक शृंखला नष्ट भऽ जाएत । पारिवारिक जीवन छिन्न-भिन्न भऽ जाएत । सम्प्रति नारी भार्या तथा माता रूप मे घरक भीतर रहि गृह-प्रबन्ध ओ शिशु-पालन मे निरत रहै छथि । यदि ओ लोकनि घर छोड़ि जीविकोपार्जनक हेतु बहराथि वा अपन बच्चा कैं छोड़ि सार्वजनिक कार्य मे संलग्न रहथि त परिवार नष्ट भऽ जाएत । तखन स्त्री-पुरुष कैं भोजनक हेतु होटलक शरण लेबय पड़तैन्ह और राष्ट्रक सुकुमार सन्तान कैं बोतलक दूध पर सन्तोष करय पड़तैन्ह । ई व्यवस्था समाजक हेतु कल्याणकर नहि ।

"एहि विषय मे पाश्चात्य आदर्श हमरा लोकनिक हेतु अनुकरणीय नहि । यूरोप-अमेरिका मे जहिया सँ स्त्रीगण पुरुष जकाँ प्रत्येक क्षेत्र मे भाग लेबय लगलीह अछि तहिया सँ पारिवारिक जीवन उच्छृङ्खल होबय लागि गेल छैन्ह । साहेब लंकाक कारखाना मे मैनेजर छथि ; मेम साहिबा बनारसक आफिस मे टाइपिस्टक काज करै छथि । दूहूक ड्यूटी त बाहरे रहै छैन्ह । घरक कार्यभार के उठाबौ ? परिणामतः आश्रमक भार खानसामा ओ बावर्ची पर पड़ै छैन्ह । साहेब जखन ड्यूटी पर सँ अबैत छथि त घर मे मुस्कुराइत गृहिणीक स्थानापन्न एक डेराएल खानसामा भेटै छैन्ह । गृहस्थाश्रमक स्वच्छ शीतल वारिक अभाव मे ओ क्लबक मदिरा सँ अपन तृषा शान्त करै छथि। ओम्हर मेम साहिबा जखन अपना आफिस सँ अबैत छथि त बच्चाक स्थान मे कुकुर कैं कोड़ लय ओहि भाग्यवान चतुष्पद कैं अपन सरस स्नेहप्रसाद सँ अभिषिक्त करैत नाश्तापानी करबैत छथिन्ह । 'घरक रानी' क स्थान मे ओ 'क्लबक परी' बनै छथि।

"जाहि समय लंकामे साहेबक माथ दुखाइत रहतैन्ह ताहि समय बनारस मे मेम पियानो पर बॉल डान्स करैत रहतीह । एहन दाम्पत्य सम्बन्ध सँ कोन फल ? परिणामतः स्नेहसूत्र दिनानुदिन शिथिल पड़ैत-पड़ैत अन्त मे प्रायः सम्बन्ध विच्छेदो भऽ जाइत छैन्ह। पाश्चात्यो देशक अनुभवी विद्वान लोकनिक ध्यान आब एहि दिश आकृष्ट भऽ रहल छैन्ह ।

"एहि विषय मे हमरा लोकनिक भारतीय आदर्श सर्वश्रेष्ठ थिक । एतय गृहिणी पद कैं जे मर्यादा देल गेल छैक से प्रायः कोनो देश मे नहि । भारतीय नारी यथार्थतः 'गृहिणी' नाम कैं सार्थक करै छथि । हुनका आफिस, क्लब, सभटा अपना घरक अन्तर्गत

अवस्थित रहै छैन्ह । गृहक सम्पूर्ण दायित्व अपना ऊपर लय ओ पुरुष कैं गैहिक चिन्ता सँ उन्मुक्त कय जीवन संग्रामक हेतु स्वतन्त्र छोड़ि दैत छथिन्ह ।

"ई कहब भ्रम थिक जे भारतीय नारी परतन्त्र दासी जकाँ जीवन व्यतीत करै छथि । जे अपना स्वामी कैं 'पर' कऽ कऽ बुझत से ने अपना कैं पराधीन कहत । भारतीय नारी त अपना पति कैं प्राणो सँ बढ़ि बुझैत छथि । तखन ओ अपना कैं पराधीन किएक कहतीह ? यूरोपक नारी अधिकारक हेतु लड़ै छथि। किन्तु भारतीय नारी कैं केवल अपना धर्म-पालन टा सँ प्रयोजन रहै छैन्ह । आधुनिक शिक्षा सँ प्रभावित महिला 'सेवाक' हेतु लालायित रहै छथि; प्राचीन आदर्शक अनुयायिनी गृहिणी केवल 'देवाक' हाल जनै छथि । एक स्वार्थ ओ तृष्णाक मूर्ति थिकीह; दोसर त्याग ओ बलिदानक। सीता सावित्री सदृश पत्नी सेवा तथा प्रेमक बलें ओ उच्चतम अधिकार प्राप्त कऽ चुकल छथि जे कोनो स्त्री कैं लड़ला सँ नहि भेटि सकै छैन्ह।

"भारतीय नारी कैं दासी बुझब मूर्खता थिक । ओ दासी, मन्त्री, रानी सभ एकंसंग होइ छथि ।

'कार्येषु दासी, करणेषु मन्त्री, भोज्येषु माता, शयनेषु रम्भा ।'

"ओ यथार्थतः गृह-स्वामिनी होइ छथि । अपन त्याग और प्रेमक बलें स्वामीक हृदय पर हुनक एकछत्र साम्राज्य रहैत छैन्ह । व्यक्तिगत स्वार्थक भावना हुनका मन मे एको क्षण उदित नहि होइ छैन्ह । बिनु मङने हुनका जे महत्त्वपूर्ण गृहिणीपद प्राप्त भऽ जाइ छैन्ह से समानाधिकारक आन्दोलन ठानयवाली महिला कैं अलभ्य छैन्ह ।

"नारीक मर्यादा गृहाभ्यन्तरे छैन्ह । पुरुषक प्रतियोगिता मे पड़ने हुनक अपने प्रतिष्ठा-हानि हेतैन्ह । कारण जे स्त्री स्वभावतः अबला होइ छथि । जतय शारीरिक बलक कार्य छैक ततय कोनो क्षेत्र मे ओ पुरुषक समकक्ष ठाढ़ि नहि भऽ सकै छथि। बल्कि पुरुषक सहायता बिना ओ अपनो आत्मरक्षा करबा मे प्रायः असमर्थ रहतीह । ओ सर्वदा सँ पुरुष पर आश्रित रहैत आइलि छथि और प्रायः सदैव रहतीह । एही मे हुनक कल्याणो छैन्ह । यदि कोमल मृणाल-नलिका लोहक देखाउस कय हथौड़ाक चोट पर जाय त की परिणाम हेतैक ? ओकर प्रहार त नहि बनतैक प्रत्युत सभटा लुगदी बाहर भऽ जैतैक । लाखो फूलक माला मिलि कय एक मजबूत सिक्कड़क काज नहि कऽ सकै अछि । धेनु सँ बड़दक काज नहि लेल जा सकै छैक । दूहूक कार्य भिन्न-भिन्न छैक । अपना-अपना स्थान मे दूहू उपयुक्त अछि । स्थानभ्रष्ट भेने दूहूक उपयोगिता नष्ट ।

"यदि नारी कैं पुरुषोचित अधिकार प्रदानो कैल जाइन्ह त प्राकृतिक नियम नहि बदलि सकैत छैन्ह । नारी-शरीरक रचना गर्भाधान, सन्तानोत्पादन तथा स्तन्यपानक

अभिप्राय सँ कैल गेल छैन्ह । लाखो प्रयत्न कैने स्त्री एहि भार सँ निस्तार नहि पाबि सकैत छथि । ई सृष्टिकर्त्ताक विधान बुझू–अथवा प्रकृतिक पक्षपात, नारी घरेक हेतु निर्मित भेल छथि । कार्यक्षेत्रक ई सनातन विभाग जे अटल प्रकृति द्वारा निर्धारित भेल अछि से मनुष्यक हस्तक्षेप सँ परिवर्तित नहि भऽ सकैत अछि । प्रकृतिक अनुकूले चलबा मे बुद्धिमत्ता छैक । प्रतिकूल चलनै लोक नष्ट भऽ जाइत अछि ।

''अतएव शिक्षित भारतीय महिला समाज कें पाश्चात्य देशक अन्धानुकरण नहि कय अपन वास्तविक कार्यक्षेत्र कें अपनाबक चाहिऐन्ह । पफ पाउडर, लिपिस्टिक और ऊँच एँड़ीक शू, स्वच्छन्द-विहारिणी अप्सराक हेतु अमोघ शस्त्र भऽ सकैत छैन्ह, किन्तु आश्रम सञ्चालिका गृहिणीक हेतु ओ आवश्यक उपकरण नहि ।

''हमरा लोकनिक स्त्रीगण रंभा-उर्वशी बनय चाहैत छथि वा सीता-सावित्री? 'भोग्या' नारीक मार्ग भिन्न छैक ; 'पूज्या' नारीक मार्ग भिन्न । शारीरिक सुख मे बाधा होयबाक कारणें तन्मात्र देमयवाली संग ओहि स्वर्गीय देवीक आत्मा कें नहि पाबि सकै छथि जे अपना जीवनसङ्गीक चिता पर चढ़ि सती भऽ जाइ छथि ।

'सा भार्या या गृहे दक्षा सा भार्या या प्रजावती ।
सा भार्या या पतिप्राणा, सा भार्या या पतिव्रता ॥'

''जाहि दिन भारतीय गृहिणीक ई उज्ज्वल आदर्श सम्पूर्ण संसार मे प्रचलित भऽ जाएत ताहि दिन पृथ्वी स्वर्ग बनि जाएत ।''

एहि प्रकारें पूर्वपक्ष समाप्त भेल । तदनन्तर एम० ए० क्लासक एक तेजस्विनी छात्रा मिस बिजली बोस उत्तरपक्ष करक हेतु ठाढ़ि भेलीह। हुनका उठितहिं सम्पूर्ण सभा-भवन करतल-ध्वनि सँ गूँजि उठल । मिस बिजली प्रतिपक्षीक एक-एक तर्क कें युक्ति द्वारा खण्डन करैत अपना पक्षक मण्डन करय लगलीह । हुनक ओजस्वी भाषण, धाराप्रवाह वाक्यावली तथा निर्भीक विचार शैली सँ समस्त सभा चकित रहि गेलैं।

मिस बिजलीक भाषणक सारांश नीचा देल जाइछ–

''पूर्ववक्ता महोदय नारीत्वक संकुचित व्याख्या द्वारा समस्त नारी जातिक जे अपमान कैलन्हि अछि ताहि सँ प्रत्येक शिक्षित महिलाक मर्मस्थल पर चोट पहुँच स्वाभाविक थिक । हुनक विचार-सरणी परम्परागत मानसिक संकीर्णता सँ ओतप्रोत छैन्ह। हुनका बुझक चाहिऐन्ह जे नवीन युगक नारी 'दासी' शब्द कें घोर कलंक कऽ कऽ बुझैत छथि । हुनक एहि सँ अधिक अपमान दोसर कोनो शब्द सँ नहि भऽ सकै छैन्ह। जाहि युग मे स्त्री पुरुष कें 'नाथ' और अपना कें 'दासी' कहबा मे गौरव बोध करै छलीह से अन्धकार-युग मानव सभ्यताक विकास होइतहिं विलीन भऽ गेल । बीसम

शताब्दीक सभ्य महिलाक सामने ओहि बर्बर युगक गुलामी-स्तव पाठ कैनाइ असभ्य धृष्टता थिक ।

''आधुनिक जाग्रत नारी अपन जन्मसिद्ध स्वतन्त्रताक अधिकार प्राप्त करक हेतु कटिबद्ध छथि । पुरुष-निर्मित शृंखला कें कड़ाकड़ तोड़ि कय दूर फेंकक हेतु ओ हुंकार कऽ रहल छथि । एहि निमित्त ओ भीषण सँ भीषण क्रान्ति करक हेतु तैयार छथि।

''अनेकानेक शताब्दी सँ स्वार्थी पुरुष-समाज स्त्री-समाजक शारीरिक निर्बलता तथा मानसिक अन्धकार सँ अनुचित लाभ उठबैत अपना आरामक हेतु हुनका दासी बना कऽ रखने अछि । हजारो वर्ष सँ मूर्ख स्त्रीजाति पुरुषक चेरी बनि गुलामक जीवन व्यतीत करैत रहलीह ।

''स्वार्थी पुरुष-समाज नाना प्रकारक छल-बल सँ स्त्री कें नथने रहल । सभ कानून, वेद, पुराण,स्मृति, धर्मशास्त्र–पुरुषेक हाथ मे । जेहन-जेहन नियम मन भेलैक बनबैत गेल । मूर्खा स्त्री भेंड़ी-बकरी जकाँ ओहि कानून कें अपन धर्म मानय लगलीह।

''स्मृतिकार कहलथिन्ह–'न स्त्रीशूद्रौ वेदमधीयाताम् ।' अर्थात स्त्री और शूद्र विद्या नहि पढ़य । कोना कहितथिन्ह जे पढ़ी ? तखन शूद्र खबासी कोना करितैन्ह? स्त्री भरि जन्म चूल्हि कोना फुकितैन्ह ? मूर्खा स्त्री बुझलन्हि जे हम त शूद्रक समान छी, विद्या पढ़बाक हमरा कोन अधिकार ? बस, समस्त स्त्री-जातिक माथ पर सर्वदाक हेतु मूर्खताक ठप्पा ठोका गेलैन्ह । ओ भरिजन्म अज्ञानक अन्धकार मे टोइया मारैत रहि गेलीह । पुरुषक जिबैत धरि ओकर दासी और ओकरा मुइ... पर ओकरे संग चिता मे भस्म । जन्म सँ मृत्यु पर्यन्त कहियो हुनका गुलामीक ...दा सँ छुटकारा नहि । हाय रे स्वार्थी और निष्ठुर पुरुष-समाज !

''यदि स्त्री मरि जाथि त पुरुष पुनर्विवाह कय पुनः ओहिना रंग-रभस करथु। किन्तु यदि पुरुष मरि जाय त स्त्री आमरण वैधव्यक दण्ड भोगी । जीवनक समस्त आमोद-प्रमोदक द्वार ओकरा हेतु बन्द । ओ पान नहि खाय, रंगीन साड़ी नहि पहिरय। ओकरा माछ खैबाक अधिकार नहि । तेल-फुलेल लगैबाक आज्ञा नहि । पुरुषक जीवितो मे दुःख, पुरुषक मुइलो मे दुःख । स्त्री कें कहियो उद्धार नहि !

''स्त्री कें जन्महिं सँ सिखाओल गेलैन्ह जे अहाँ लोकनि आँखि मूनि कय पुरुषक सेवा करू। येह टा एक मात्र धर्म थिक । एही मे जीवनक चरम सार्थकता बूझू।

एकै धर्म एक व्रत नेमा ।
काय वचन मन पतिपद प्रेमा ।

''कर्त्ता, हर्त्ता, विधाता सभ टा पुरुषे कें बूझू । किएक जे 'पतिरेको गुरुः स्त्रीणाम्।'

यदि पुरुष कैं सन्तुष्ट राखि सकलहुँ तखन त अहाँ सन उत्तम केओ नहि और यदि से नहि त अहाँ सन अधम केओ नहि ।

न सा भार्येति वक्तव्या यस्या भर्त्ता न तुष्यति ।
तुष्टे भर्त्तरि नारीणां सन्तुष्टाः सर्वदेवताः ।

''पुरुष पाप करौ वा पुण्य–घर रहौ वा बाहर–अहाँ आँखि मुनि कय ओकर पूजा करू, ताही सँ प्रभ जग जीति लेब ।

नगरस्थो वनस्थो वा पापो वा यदि वा शुचिः ।
यासां स्त्रीणां प्रियो भर्त्ता तासां लोका महोदयाः ।

''से यदि करब त लाठीक हाथ सँ स्वर्ग पहुँचि जाएब । बल्कि अहाँक धर्म स्वामीओ पार उतरि जैताह ।

व्यालग्राही यथा व्यालं बलादुद्धरते बिलात् ।
तद्वद्भर्त्तारमादाय स्वर्गलोके महीयते ।

''स्वर्गक फाटक टा नहि जुटत, बल्कि देह मे जतेक करोड़ रोआँ अछि ततेक करोड़ वर्ष धरि स्वर्गक सुखो लुटैत रहब ।

तिस्रः कोट्योऽर्धकोटी च यानि लोमानि मानवे ।
तावत्कालं वसेत् स्वर्गे भर्त्तारं यानुगच्छति ॥

''अतएव पुरुषक जीवने जीबू, पुरुषक मुइने मरू । पुरुषक संग जरि कय सती होएब त सैकड़ों पाप कैने रहलो पर सद्यः सुरलोकक पासपोर्ट भेटि जाएत ।

चितौ परिष्वज्य विचेतनं पतिं
प्रिया हि या मुञ्चति देहमात्मन: ।
कृत्वापि पापं शतसंख्यमप्यसौ
पतिं गृहीत्वा सुरलोकमाप्नुयात् ।

और कोनो तरहें अहाँक गति नहि ।

'सहज अपावन नारि, पति सेवत सुभ गति लहई ।'

'' तैं जागल मे अपना पुरुषक सेवा करू, सुतलो मे अपने पुरुषक स्वप्न देखू।

यदि से नहि करब त–

''रौरव नरक कल्प शत पड़ई ।'

तुलसीदासक कथनानुसार करोड़ों वर्ष धरि रौरव नरक मे पड़ल कष्ट भोगैत रहब ।

''पुरुष केहनो आन्हर, बहीर, बूढ़, बकलेल हो, कतबो दुःख अहाँ कैं देबय तथापि अहाँ एक शब्द नहि बाजू, नहि त मुइलो पर यमदूत चिसिंग कऽ मारत !

वृद्ध रोगबस जड़ धनहीना ।
अन्ध बधिर क्रोधी अति दीना ॥
ऐसेहु पतिकर किय अपमाना ।
नारि पाव यमपुर दुख नाना ॥

''पुरुष कतबो दुश्चरित्र, मूर्ख, [illegible] आदि औगुन करय, तथापि अहाँ कान नहि, बल्कि पुरुषक प्रसन्नतार्थ हँसैत रहू–यैह अहाँक धर्म थिक । लिखल गेल अछि–

''परुषाण्यपि या प्रोक्ता दृष्टा या क्रोधचक्षुषा
सुप्रसन्नमुखी भर्तुः सा नारी धर्मभागिनी ।''

''एतबे नहि । पुरुष इनका एना कऽ पराधीन बनौलन्हि जे 'तों स्वाधीन रहऽ योग्य नहि छह । तोहर जन्मे एही हेतु भेल छौह जे बाल्यावस्था सँ लऽ कऽ वृद्धावस्था पर्यन्त पराधीन भेल रहह । तों कहियो वालिग नहि भय सकै छह ।

'पिता रक्षति कौमारे, भर्त्ता रक्षति यौवने ।
रक्षति स्थविरे पुत्रः, न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति ।'

''धर्मक नाम पर जेहन–तेहन अत्याचार स्त्री पर कैल गेल छैन्ह तकर वर्णन कैने पोथा तैयार भऽ जाएत । स्त्री कैं 'सोमवारी व्रत' कहि कऽ गाछक चारू कात एक सै आठ बेरि कोल्हुआपेरान कराओल गेलैन्ह । 'मधुश्रावणी' कहि कऽ दीपक टेमी सँ हाथ–पैर दागल गेलैन्ह । 'निर्जला एकादशी' कहि कऽ प्रचण्ड गर्मी सँ कण्ठ सुखाओल गेलैन्ह । 'हरितालिका व्रत' कहि कऽ भूख, पियास, निन्द, सभ सँ हड़ताल कराओल गेलैन्ह । ताहि पर पोंगापन्थी पुराणक फतवाबाद त देखू !

अन्नाहारात् शूकरी स्यात् फलभक्षेण मर्कटी ।
जलौका जलपानेन क्षीराहारेण सर्पिणी ।
मांसाहाराद्भवेत् व्याघ्री, मार्जारी दधिभक्षणात् ।
पिपीलिका तु मिष्टान्नात्, मक्षिका सर्वभक्षणात् ।
निद्रावशेनाजगरी कुक्कुटी पतिवञ्चनात् ।

'अर्थात् जौं स्त्री (तीज मे) अन्न खा[illegible] त सुगरिनी भऽ कऽ जन्म लेतीह और फल खो लेतीह त बनरिनी भऽ कऽ । पानि पबतीह त जोंक होतीह और दूध पीबतीह त साँपिन। मिठाइ खेतीह त चुट्टी–पिपरी होतीह और किछु मुँह मे देतीह त माछी होतीह। जौं सुति रहतीह त जन्मान्तर मे अजगर होइतीह और अपना स्वामी सँ फूसि बजतीह त जन्मान्तर मे मुर्गी होइतीह ।'

''एहि तरहें स्वर्गक लोभ तथा नरकक भय देखा कय पुरुष स्त्री कैं कोन–कोन नाच नहि नचौलक ! बुद्धिहीना नारी पुरुषक प्रतारणा–वाक्य मे आबि कठपुतरी जकाँ

लागय लगलीह । ओ अपना कें पुरुषक हाथें बेचि देलन्हि । पुरुष हुनका माँड़ मे गुलामीक चेन्हा लगा देलकैन्ह और कहलकैन्ह जे ई तोहर सौभाग्यसिंदूर थिक । अज्ञानी नारी ई नहि बुझलन्हि जे ई लाल सिंदूर नहि, प्रत्युत स्वाधीनताक हत्याजनित लाल रक्त थिक । ओ अफ्रिकाक हबशी गुलाम जकाँ गुलामीक चिह्न कें गर्व सँ मस्तक पर धारण करय लगलीह ।

"स्त्रीक हेतु त एहन फाँस तैयार भेल, आ पुरुषक हेतु कोन नीति गढ़ल गेल से देखू । 'देखब यदि कदाचित काल-क्रमे स्त्री विद्या-बुद्धि मे बढ़ि जाएत त अपना हाथ सँ निकसि जाएत । तेँ एहन उपाय करू जे स्त्री विद्या पढ़य नहि पावय । 'न रहय बाँस न बाजय बाँसुरी ।' बस, फतवा दए देल गेल । 'न स्त्रीशूद्रौ वेदमधीयाताम्।' एहि तरहक अन्यायपूर्ण नियम बना पुरुष-समाज स्त्री-जातिक मानसिक नेत्र पर सर्वदाक हेतु टप्पर बान्हि देलकैन्ह ।

"पुरुष कें प्रारम्भहि सँ शिक्षा देल गेलैक- 'छल-बल सँ जेना हो, तेना स्त्री कें अपना अधीन राखने रहय । विद्या पढ़ने ई होशियार भए जायत, तेँ एकरा पढ़ए नहि देब । संसार देखने एकरा अनुभव भए जेतैक, तेँ एकरा पर्दाक चहारदीवारी मे बंद कैने रहब। देखब, एकरा बाहरी हवा नहि लागय पबैक, स्वतन्त्र भए कए ई कहियो घूमय नहि पाबय । और एहन करू जे अपना पैर पर ई ठाढ़ नहि भए सकय । उपार्जन करबाक शक्ति एकरा मे आबि जेतैक त अपना मुट्ठी मे नहि रहत । तेँ एहन करू जे घरक काज सँ एकरा कहियो छुट्टीए नहि होइक । हम जे आनि कए दिऐक सैह खाय, हम जे कीनि कए आनि दिऐक सैह पहिरय; हम जखन लए जैऐक तखनहि जाय । बस, किछु दिन मे ई स्वयं पंगु बनि जाएत । और एहि तरहें अकर्मण्य भय ई सर्वदा पुरुषक मुखापेक्षिणी बनल रहत । फेर ई जा कतय सकति ?

"पुरुष-रचित एहि षड्यन्त्र मे फाँसि बेचारी स्त्री शारीरिक, मानसिक और आर्थिक दासताक जिंजीर मे बान्हा गेलीह । हुनक स्वतन्त्र व्यक्तित्व तथा आत्मगौरव नष्ट भए गेलैन्ह ।

"स्त्री-जाति पर एतेक अत्याचार कैलो पर जखन धूर्त पुरुष-समाज कें सन्तोष नहि भेलैक तखन ओ लागल नारी-निन्दापुराण गढ़य । स्त्री-जाति कें नीच, कलंकित और निन्दनीय सिद्ध करबाक हेतु एहन-एहन वाक्य गढ़ल गेल जे घृणित प्रचारक निकृष्टतम उदाहरण कहल जा सकैत अछि । किछु बानगी लिअ-

असत्यं साहसं माया, मात्सर्यं चातिलुब्धता ।
निर्गुणत्वमशौचत्वं स्त्रीणां दोषाः स्वभावजाः ।

☆ ☆ ☆

नारि स्वभाव सत्य कवि कहहीं ।
अवगुण आठ सदा उर रहहीं ।

अर्थात स्त्री सकल अवगुणक खानि थिक ।

"एहन-एहन नीतिकार सँ केओ पुछितैन्ह जे अहाँ अपने कोन खानि सँ बहराएल छी ?

"जे स्त्री उत्साह सँ सन्तोष, सहनशीलता, श्रद्धा एवं आत्मसमर्पणक पाठ पढ़ैथि, तनिका चरित्रक सम्बन्ध मे पुरुषक धारणा देखू । एहि सँ पुरुष कें सावधान करबाक हेतु एहन-एहन श्लोक रचाओल जाइ छैक-

स्त्रियश्चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं देवो न जानाति कुतो मनुष्यः ।

अर्थात स्त्री-चरित्रक अन्त केओ नहि पाबि सकैत अछि । तेँ नारीक विश्वास कथमपि नहि करी ।

नदीनां शस्त्रपाणीनां नखिनां शृङ्गिणां तथा ।
विश्वासो नैव कर्तव्यः स्त्रीषु राजकुलेषु च ।

जहिना नदी-शस्त्र सँ सशंकित रही तहिना स्त्रीओ सँ ।

न दानेन न मानेन नार्जवेन न सेवया ।
न शस्त्रेण न शास्त्रेण सर्वथा विषमाः स्त्रियः ।

कतबो मानने, दानने, सेवने, परितोषने वा कोनो तरहें देखने स्त्री कें वश नहि कैल जा सकैत अछि ।

"ई अपना दिस त निश्छल व्यवहार राखे जाउ, किन्तु स्त्रीगण सँ बराबरि ठकि-फुसिये कए काज लियउ ।

दाक्षिण्यं स्वजने दया परजने नारीजने धूर्तता ।

"जे स्त्री आजीवन पुरुषक स्वार्थवेदी पर अपना कें आहुति करैत-करैत मरि जाथि, तनिका प्रति एहन उदार व्यवहार नीतिकार लोकनि सिखबै छथिन्ह ! यदि ई नीतिशास्त्र, त अनीति ककरा कहबैक ?

"जे स्त्री कोमलता और स्नेहक मूर्ति भय पुरुषक छायानुवर्तिनी बनल रहैथि तनिका प्रति एहन घोर विश्वासघात ! हाय रे प्रपंची पुरुष-समाज !

"गोस्वामी तुलसीदास कें अहू सँ सन्तोष नहि भेलैन्ह त आखिरी दर्जा पर स्त्रीक इज्जत कें पहुँचा देने छथिन्ह ।

'ढोल गँवार शूद्र पशु नारी ।
ये सब ताड़न के अधिकारी ।'

'गोस्वामी' रहथि तेँ एहन चौपाइ बनैबाक साहस भेलैन्ह । जों आधुनिक सिंहनी

तेँ पाल पढ़ितैन्ह त तुरन्त काटि कय ई पाठान्तर करय पढ़ितैन्ह जे–

नारीनिन्दक निपट अनाड़ी ।
ते जन ताड़न के अधिकारी ।

''नारी-चरित्र पर तेहन-तेहन घृणित आक्षेप पुरुष द्वारा भेल अछि जे सुनि प्रत्येक स्वाभिमानिनी युवतीक शोणित खौलि उठतैन्ह ।

आहारो द्विगुणः स्त्रीणां, भयं चापि चतुर्गुणम्, ।
साहसं षड्गुणं चैव, कामश्चाष्टगुणः स्मृतः ।

✡ ✡ ✡

नाग्निस्तृप्यति काष्ठानां न पुंसां वामलोचना।

✡ ✡ ✡

स्थानं नास्ति क्षणं नास्ति नास्ति प्रार्थयिता नरः ।
तेन नारद नारीणां सतीत्वमुपजायते ।

✡ ✡ ✡

न लज्जा न विनीतत्वं न दाक्षिण्यं न भीरता ।
प्रार्थनाभाव एवैके सतीत्वे कारणं स्त्रियाः ।

✡ ✡ ✡

न स्त्रीणामप्रियः कश्चित् प्रियो वापि न विद्यते ।
गावस्तृणमिवारण्ये प्रार्थयन्ति नवं नवम् ।

✡ ✡ ✡

न तादृशीं प्रीतिमुपैति नारी,
विचित्रशय्यां शयितापि कामम्
यथा हि दूर्वादिविकीर्णभूमौ,
प्रयाति सौख्यं परकान्तसङ्गात् ।

''एहन-एहन लज्जाजनक अपशब्दक व्याख्या या आलोचना सँ हम अपना वाणी कैं अपवित्र नहि करय चाहै छी ।

अफसोस ! जे हमरा हाथ में कलम नहि रहल । नहि त हमहूँ पुरुषक विषय में एहन-एहन श्लोकक रचना करितहुँ जे–

कामो दशगुणः पुंसां, क्रोधः शतगुणस्तथा ।
स्वार्थः सहस्रधा प्रोक्तो नीचता लक्षधा स्मृता ।

✡ ✡ ✡

नाग्निस्तृप्यति काष्ठानां न स्त्रीणां पुरुषस्तथा ।

✡ ✡ ✡

स्थानं नास्ति क्षणं नास्ति, सुलभा नास्ति कामिनी ।
तेन सच्चरित्रता पुंसां सदा प्रजायते ।

✡ ✡ ✡

न लज्जा न विनीतत्वं न दाक्षिण्यं न भीरुता ।
अस्वीकृतिः स्त्रियः पुंसां ब्रह्मचर्यस्य कारणम् ।

✡ ✡ ✡

न पुंसामप्रिया काचित् प्रिया वापि न विद्यते ।
अलयः कलिकामध्ये प्रार्थयन्ति नवां नवाम् ।

✡ ✡ ✡

न तादृशीं प्रीतिमुपैति कामी,
पत्न्यां निजायां पद्मेक्षिकायाम् ।
यथाहि पद्भ्यामवताडितोऽपि,
प्रयाति सौख्यं परदारसङ्गात् ।

''यदि धर्मशास्त्रक निर्माण स्त्रीक हाथ मे देल जइतैन्ह त ओहो एहन कानून बनबितथि जे पुरुष आजन्म स्त्रीक तरवा रगड़ैत रहय और जौं स्त्री मरि जाथि त पुरुष ओही चिता पर जरि कय भस्म भऽ जाय । से नहि कैने जतेक रोम नारीक शरीर मे होइ छैक ततेक करोड़ वर्ष धरि पुरुष कुम्भीपाक नरक मे छटपटाइत रहि जाय । जखन स्त्री-विरचित पत्नीव्रत-पुराणक पालन पुरुष-समाज कैं करय पड़ितैन्ह तखन बूझि पड़ितैन्ह जे जबर्दस्तक ठेंगा केहन होइ छैक । किन्तु पुरुष जबर्दस्त छल, स्त्री कमजोर छलीह । तेँ अभाग्यवश ई ठेंगा हुनके माथ बजरलैन्ह ।

''परन्तु आब पुरुषक अत्याचार बहुत दिन धरि नहि चलि सकै छैन्ह । आधुनिक महिला इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान तथा राजनीति-विज्ञानक अध्ययन कय अपन न्यायोचित अधिकार बूझय लागि गेल छथि । हुनका आब अपन यथार्थ आत्म-परिचय भेल जाइ छैन्ह । जीवन मे स्वतन्त्रता सब सँ अधिक मूल्यवान वस्तु होइ छैक । प्रत्येक स्त्री-पुरुषक ई जन्मसिद्ध अधिकार छैक । ताहि स्वतन्त्रता सँ आबक शिक्षित नारी-समुदाय वञ्चित नहि राखल जा सकै छथि ।

''आँखि पर सँ अज्ञानक पर्दा हटने टर्कीक महिला युगयुगान्तरीय पर्दा कैं फाड़ि कय गर्दा मे मिला देलन्हि । आब स्त्री घर मे कैद नहि रहि सकै छथि । ओ पिपरमिन्टक सन नहि छथि जे बाहरी हवा लगने गलि जैतीह । संसारक सभ वस्तु घुमि फिरि कय

[illegible] अधिकार पुरुष कें हाथ सभटा स्त्रीओ कें । पुरुष जकाँ स्त्रीओ कें अपन [illegible] विद्या, बुद्धि और शोषणक पर्याप्त अधिकार छैन्ह । आत्मनिर्भरता और स्वावलम्बनक महत्त्व आब ओहो बूझय लागलि अछि । अन्न-वस्त्रक हेतु आब ओ पुरुष पर निर्भर रहय अपन अपमान बुझैत छथि । आधुनिक स्त्री पुरुषक 'अर्द्धाङ्गिनी' बनि कय रहि सकै छथि, 'दासी' बनि कऽ नहि ।

''सतयुगक जे [illegible] स्त्री पुरुषक समान हाथ रहल । यदि पुरुषक क्षेत्र सम्पूर्ण संसार छैन्ह त नारी केवल घरक भीतर किऐक सीमित रहतीह ? जे स्त्री कें अबला और आत्मरक्षा में असमर्थ कहै छथि तनिका लक्ष्मीबाई तथा अहल्याबाई सन वीराङ्गनाक नाम नहि बिसरक चाहिऐन्ह । आत्मरक्षा शक्ति और साहस सँ होइ छैक और से जीवन-संघर्ष में पड़ने बढ़ै छैक । परिस्थिति मनुष्य कें बनबैत वा बिगाड़ैत अछि । यदि मर्द कें आजीवन एक घरक भीतर बंद कऽ देल जाइन्हि और चूल्हि फूँकय पड़ैन्हि त ओहो निस्तेज और शक्तिहीन भय आन कार्यक हेतु अयोग्य भऽ जैताह । आइयो हिन्दुस्तान में कतेको मर्द एहन भेटताह जे स्वतन्त्र विचरण करयवाली ललना-लोकक हाथ मैं अपन गट्टा नहि छोड़ा सकताह !

''रहल सन्तानोत्पादनक विषय । एहुमे मातृजातिक श्रेष्ठता सिद्ध होइ अछि । स्त्री में असीम धैर्य ओ सहन-शक्ति होएबाक कारण सन्तति-प्रजनन तथा संवर्द्धनक भार प्रकृति हुनकें पर छोड़ने छैन्ह । किन्तु एकर अर्थ ई नहि जे ओ सन्तान वृद्धि कय भस्मासुर जकाँ स्त्रीएक माथ पर हाथ देबय और जाहि खानि सँ बहराय तकरे सकल अवगुणक खानि कहय !

''ई बात सत्य जे बिना स्त्री और पुरुषक संयोग सँ सृष्टि नहि चलि सकैत अछि । पारिवारिक जीवनक हेतु दुहूक प्रयोजन समान रूप में पड़ैत छैक । गृहस्थीक गाड़ी चलैबाक हेतु दुहू पहिया आवश्यक होइत छैक । किन्तु तकर अर्थ ई नहि जे एक पहिया दोसरा कें दबौने रहय ।

''यदि पुरुष नारीक हार्दिक सहयोग चाहै छथि त हुनका अपना स्वामित्व छोड़य पड़तैन्ह और नारीक सखा बनय पड़तैन्ह । आधुनिक स्त्री 'सहचरी' भय रहि सकै छथि, 'अनुचरी' बनि कय नहि । सीता-सावित्रीक आदर्श आब पुरान पड़ि गेलैक । आधुनिक नारी कें केहनो प्रतापी रावण हरण नहि कऽ सकै छैन्ह । जे हुनका पर आक्रमण करतैन्ह से एक सेकेण्ड मे रिवाल्वर द्वारा जवाब पाबि जाएत । आबक द्रौपदी चीर-हरण काल कृष्णक गोहारि नहि करय लगतीह; दन दऽ पिस्तौल फायर कऽ देतीह । एहि वैज्ञानिक युग मे लखन यन्त्र-बलक आगाँ शारीरिक बलक किछु नहि चलि सकै छैक, तखन पुरुष कें पशुबलक घमंड करब तथा नारी कें आत्मरक्षा में असमर्थ बुझब मूर्खता थिकैन्ह ।

''हमर ई कथ्य नहि जे हम पुरुष सँ युद्ध करी वा अकारण विरोध ठानी । किन्तु हमर मन्तव्य जे पुरुष हमरा उन्नतिक मार्ग मे - हमरा व्यक्तित्वक विकास मे - बाधक नहि होथि। यदि स्वतन्त्र घुमने ओ अपना चरित्र कें शुद्ध राखि सकै छथि त हमहूँ अपना कें निष्कलंक राखि सकैत छी । सन्दूक मे ताला बंद कय जकर रखबारी कैल जाय तकरा पातिव्रत्यक एको कौड़ी मोल नहि । जीवन-संघर्षक बीच जे चरित्र-बल असली आन जकाँ चमकैत रहय सैह अमूल्य वस्तु थिक ।

''पुरुष स्वभावतः स्वार्थी, सन्देही तथा ईर्ष्यालु प्रकृतिक होइ छथि; तें ओ स्त्री कें अपन व्यक्तिगत सम्पत्ति जकाँ ताला-कुंजी मे जकड़ि कऽ बंद रखैत एलाह अछि। साहवकार चार्वाक त साफ शब्दें कहने छथिन्ह—

पातिव्रत्यादि संकेतो बुद्धिमद्दुर्बलैः कृत : ।
रूपवीर्यवता सार्द्धं स्त्रीकेलिमसहिष्णुभि : ।

''चारित्रिक गुणक मूल्य हम बुझैत छी, किन्तु जे चरित्र भयक भित्ति पर निर्मित हो तकर किछु महत्त्व नहि । चतुर्दिश प्रलोभन रहलो उत्तर जे अविचलित रहय तकरे असली चरित्र-बल बुझक चाही ।

विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः ।

'गृहक देवी' कहि पुरुष स्त्री कें बहुत दिन धरि परतारलथिन्ह ।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः

''एहन-एहन वाक्य सुनि स्त्री फुच्च भऽ गेलीह । किन्तु आबक नारी 'देवी' नहि, 'मानवी' बनि कय रहऽ चाहै छथि । ओ आब मानवोचित अधिकार ग्रहण करतीह। साहसपूर्वक जीवन-युद्धक प्रत्येक क्षेत्र मे आगाँ बढ़तीह और सामाजिक तथा राजनीतिक कार्य मे समान भाग लेतीह । ओ 'अर्द्धाङ्गिनी' क बदला मे 'पूर्णाङ्गिनी' बनतीह । तखन समाजक जे अर्द्धाङ्ग पक्षाघात-पीड़ित अछि ताहि मे नवशोणितक सञ्चार होएत और मानव समाज पूर्ण रूप सँ विकसित भऽ जाएत । जाहि दिन नारी नरक भय सँ मुक्त भऽ जैतीह ताहि दिन सँ मानव सभ्यता द्विगुण वेग सँ बढ़य लागत ।

''पुरुष-समाज एतेक दिन धरि जे पाप कैने छथि तकर प्रायश्चित्त करबाक समय आब आबि गेल छैन्ह । यदि ओ सोझ तरहें नारी कें स्वाधीन नहि करथिन्ह त समुन्नत महिला-समाज पुरुषक विरुद्ध विद्रोहक झंडा उठा लड़ि कय अपन अधिकार हासिल करतीह । नारी आब गृहलक्ष्मी सँ रणचण्डीक स्वरूप धारण करतीह । ओ आब पुरुषक हाथ मे कठपुतरी भेल अपन आत्माक हनन नहि होमय दऽ सकै छथि । आदिम

समय सँ पुरुषक अत्याचार सँ पीड़ित, प्रवंचित तथा शोषित स्त्री-जाति मे आब भीषण प्रतिक्रियाक भाव उत्पन्न भेल छैक । शक्तिस्वरूपा नारी ज्वालामुखी जकाँ धधकि रहल छथि । जे एहि ज्वालामुखीक मार्ग मे पड़त से भस्मीभूत भऽ जाएत ।''

अन्तिम वाक्य बजैत-बजैत भावावेश मे मिस बिजली बाँसक दुनू गाल लाल भऽ उठलैन्ह । बिजली देवीक भाषण समाप्त होइतहिं सम्पूर्ण सभा-भवन करतलध्वनिक तुमुल नाद सँ गूँजि उठल । तन्वांगिनी बिजली बिजलीक प्रकाश मे बिजली जकाँ चमकैत छलीह । प्रखरप्रतिभाशालिनी श्वेतवस्त्रावृता बिजली साक्षात सरस्वतीक मूर्तिवत प्रतिभासित होइ छलीह । हुनक दिव्य कान्ति ओ अपूर्व संस्कार देखि समस्त सभासद मन्त्रमुग्ध रहि गेलाह ।

सभ सँ अधिक प्रभावित भेलाह एक नवयुवक जे एकाग्र चित्त सँ तन्मय भेल बिजलीक एक-एक छटा कैं नेत्र-पथ सँ अपना हृदय मे उतारने जाइत छलाह । ई छलाह पाठक लोकनिक सुपरिचित सी० सी० मिश्र ।

बिजली देवीक बाद पक्ष-विपक्ष मे कतिपय भाषण भेल । किन्तु जे रंग बिजलीक जमलैन्ह से किनको नहि । अन्त मे विचारकगणक सर्वसम्मति सँ बिजली प्रथम घोषित भेलीह । जखन सभापति महोदय मिस बिजलीक पशमदार कोट मे सोनक मेडल खोंसय लगलथिन्ह तखन सभा हर्षध्वनि सँ गूँजय लागल ।

बिजली देवी नम्रतापूर्वक सभा कैं अभिवादन कय मुसकुराइत मंच सँ नीचा उतरलीह । विजय-गर्वक उल्लास सँ हुनका विकसित वदन पर जे गुलाबी आभा प्रकट भेलैन्ह से भय दऽ सी० मिश्रक हृत्पिण्ड मे प्रवेश कऽ गेलैन्ह । बिजलीक वक्षःस्थल पर ईषत् कम्पायमान स्वर्णपदकक स्पन्दन सँ हुनको हृदय मे स्पन्दन होमय लगलैन्ह। ओ किछु क्षण धरि आत्मविस्मृत भेल रहलाह । हुनक मोहतन्द्रा तखन भंग भेलैन्ह जखन एक मित्र हुनका पकड़ि कय डोलाबय लगलथिन्ह । तावत सभा-भवन रिक्तप्राय भऽ चुकल छल ।

सी० सी० मिश्र विषण्ण चित्त सँ अपना होस्टल मे ऐलाह । मेसक भनसिया आबि कय कहलकैन्ह, ''बाबू ! खाना बड़ी देर सँ राखल अछि ।'' मिश्रजी कहलथिन्ह—''छोड़ दो, अभी तबीयत ठीक नहीं है ।''

तदनन्तर ओ केवाड़ बंद कय बड़ी राति धरि एक टा चिट्ठी लिखैत रहलाह।

❑

[२]

अकाण्डताण्डव

लालकाकी अर्गारक हेतु आमक गाछा बनबैत छलीह कि आवेशरानी पहुँचि गेलथिन्ह । लालकाकी उल्लसित स्वर सँ बजलीह—''आबथु ऐ बहिना ! आइ त बिद्दनीक द्वारे जानि बाँचब कठिन अछि । फुचुकरानी कैं बिच्चे लुलहुआ पर काटि लेलकैन्ह अछि। ओल लगौने बैसल छथि । आब हमरो पर बघुआइत अछि ।'' आवेशरानी आवेश बनबैत बजलीह—''अहा हा ! कर्नलक कुल किएक ने रगड़ि देलिऐन्ह !''

तदनंतर बिद्दनीक समालोचना सँ प्रारम्भ भय जे गप्प ढहल से नहि जानि कोना कऽ घुमैत-फिरैत अन्त मे आधुनिक फैशन पर आबि खसल !

आवेशरानी बजलीह—''ह : ह: । आइकाल्हिक छौंड़ी सभ जे ने करय । हमरो लोकनि एक दिन नव रही । बूढ़ पुरनियाक एतेक धाख रहय जे आँचर कैं तोबर कऽ कऽ ओढ़ी । मुदा आबक छौंड़ी सभ त मकुना माथत जकाँ सोझहिं ठाढ़ि । की त लोक शोभा देखौ !''

लालकाकी समर्थन करैत कहलथिन्ह—''हँ, ऐ बहिना ! आब त एहन फैशन चललैक अछि जे आँचर कैं घुमा कऽ पीठ पर फोंकि दैत छैक । देखलथिन्ह ने बैद्यनाथधाम मे ? ''

आवेशरानी—गै दाइ गै दाइ ! ओ छौंड़ी सभ त और अकरहर कैने रहय । सभक सभ केश उघाड़ने । एहन सन क्रम जे कैओ आबि कऽ सिन्दूर धऽ देओ ।''

लालकाकी—'ऐ बहिना ! आब सिउँथ मे सिन्दूरो कहाँ दैत छैक ? हमरा लोकनिक अमल मे पटमासी सिन्दूर चलै छलैक । आबक छौंड़ी त सुइक नोक सँ माङक बीच मे लकीर करैत अछि । ताहू मे जकरा कनेक अङरेजी पढ़ल वर भेलैक से त कनपट्टीए लग सँ टेढ़ी माङ फारय लागल ।

आवेशरानी—''ऐ बहिना ! टेढ़ी माङ देखि कऽ त हमर सौंसे देह जरि जाइत अछि ।''

ला० का०—''हँ ऐ बहिना ! से त सगरो कहै छथि । हमरो बड़ तामस होइ अछि । मुदा जे कहथुन्ह, लगौ छैक धरि बेश शनगर।''

आ० रा०—''दुर जो ! हिनका बुढ़ारी मे सोख सुझै छैन्ह । उघार केश देखि

कऽ हमरा त एहन लित उठै अछि जे पाछाँ सँ चोटी पकड़ि खींचि ली ।''

ला० का०—''एँ बहिना ! आइकालिह पढ़लि-लिखलि लड़की सभ केहानो माथहि जकाँ माथ नहि झाँपै छैक । किएक त माथ मे ठंडा हवा लगला सँ ओकरा सभक दिमाग तेज रहै छैक । आब त देह मे हवा लगयबाक खातिर एहन-एहन गंजी चलल छैक अछि जे साँसे बाँहिक संग-संग काँखो उघार रहै छैक ।''

आ० रा०—''हँ, ठहिल्ल एहन ब्लाउज पहिरि बाहिर कोना देखलैन्ह ? निकलत काँख कोना देखतैन्ह ? काँखक रोम सँ झलकैत देह कोना देखतैन्ह ? एहन-एहन छौंड़ी कैं त लोक धिया कऽ थामी ।''

ला० का०—ऐं बहिना ! त दिनका डाह किएक होइ छैन्ह ? नवलोक जे करय से सब फबै छैक । हमरा लोकनि नथ मे चानी पहिरिऐक त सासु कैं अहिना लगैन्ह।

आ० रा०—कहू त भला ! हमरा लोकनिक आँखि मे लाज रहय । निहुड़ि कय चली । कनेक आँचर उघार भऽ जाय त देहा कऽ ताकी जे कीओ देखलक त नहि। आवक छौंड़ी सभ त उतान भऽ कऽ चलत । बरौनी जंकशन मे देखलथिन्ह नहि ? चोटी उघारने, हाथ मे घड़ी, आँखि मे चश्मा, चट्टी पहिरने, छम छम करैत पुरुष जकाँ हाथ मे बेग नेने गाड़ी मे चढ़ि गेल । हमरा लोकनि सँ एहि धुआ मे ई होइत?

लालकाकी आवेशरानी कैं कुढ़बाक अभिप्राय सँ बजलीह—ओ कोन बेजाय कैलक ? ओहन धिपल पलस्टर पर हमरा सभ कैं पैर नहि रोपल जाय । बुझाय जे आब औंठा मे फोंका पड़त । तेहना हालति मे जौं हमरो सभक पैर मे चट्टी रहैत त कोन पाप होइत ?

आवेशरानी उत्तेजित भऽ कऽ बजलीह—मारो बाढ़नि धऽ कऽ ! जुत्ता-चट्टी त ओ पहिरय जकरा पुरुषक माथ पर नाचक होइ । देखै छथिन्ह नै तारा कैं ?

एतबहि मे चट्टीक चटर-चटर शब्द सुनि दुनू बहिना साकांक्ष भऽ गेलीह। देखै छथि त सद्यः तारा देवी आबि रहल छथि ।

एहि ठाम तारा देवीक किछु परिचय देब आवश्यक । ताराक वयस अट्ठारह। क्रीमक सुगन्ध सँ गमगम करैत गोल मुँह । केश टेढ़ कऽ फारल । ताहि सँ पोमेडक खुशबू बहराइत । बङला स्टाइल सँ पहिरल नारंगी रंगक जार्जेट साड़ी । झिलमिल जार्जेटक पारदर्शी जाल सँ रेशमी ब्लाउजक गुलाबी रंग झलकैत तथा पृष्ठ-प्रदेश पर नागिन सन लहराइत चोटी झकझक सुईत । अर्द्धचन्द्राकार केश विन्यास सँ आच्छादित इंवरगिक कंठन्न गोल मटरदाना दो बिजलीक बल्ब जकाँ चमकैत । दुनू बाँहि निरावरण तथा निराभरण । हाथ मे केवल एक-एकटा फीरोजा रंगक चूड़ी । चेहरा पर कखनो मुसकुराहट कखनो शान । जेना नयँ करैत कय तुरन्त तीक्ष्ण रौद प्रकट भऽ जाय ।

फैशनेबुल पुतलीक ई रूप देखितहि दुनू बहिनाक आँखि चौन्हिया गेलैन्ह । तथापि लालकाकी मनहारि कय बजलीह—''गे बुचिया ! कहाँ गेलें ? झट दऽ नवका शतरंजी नेने आ । देख, तारादाइ ऐलथुन्ह अछि ।'' पुनः सादरपूर्वक स्वागत करैत कहलथिन्ह—आबह तारा दाइ ! बहुत दिन पर सासुर सँ ऐलीह । आब कि ई लोक सभ मन रहलीह ?

तारा दाइ हँसैत-हँसैत आगाँ बढ़ि अत्यन्त आदरपूर्वक दुहू प्रौढ़ाक कनगुरिया छुबैत अपन आलता-रंजित चरण सँ शतरंजी कैं सुशोभित कैलन्हि ।

लालकाकी पुछलथिन्ह—तों त, सुनै छी, पटना गेल छलीहय ? कतेक दिन ओतय छलीह ?

तारा दाइ गंभीरतापूर्वक आँखि नीचा कय बजलीह—ओतय तीन मास छलिऐक।

ला० का०—कथिक इलाज होइ छलीह ?

तारा०—कहियोकाल करेज मे कनेक दर्द भऽ जाइ छल ।

एहि पर दुनू बहिना मे व्यंग्यपूर्ण कटाक्षक विनिमय भेलैन्हि।

एतबहि मे अत्यन्त चिक्कणताक कारण तारा दाइक माथ सँ साड़ी ससरि गेलैन्ह जाहि सँ दुनू कनपट्टी मे खोंसल फुलदार काँटा उघार भऽ गेलैन्ह । ई काँटा दुनू प्रौढ़ाक आँखि मे गड़य लगलैन्ह ।

आब आवेशरानी कैं नहि रहि भेलैन्ह । बजलीह—ईह ! कोन-कोन फैशन आब चलल छैक अछि से नहि जानि !

लालकाकी कैं बूझि पड़लैन्ह जे आब ई कोनो व्यंग्य करथिन्ह, तैं झट दऽ बात लोकि बजलीह—ऐं बहिना ! ताहि दिन ककरो सासुर सँ एकरंगा अबैक त सौंसे गामक लोक तमाशा देखऽ लेल जमा भऽ जाइ । आब त कोन-कोन कपड़ा बहराइल अछि तकर नामो नहि जनै छिऐक । एँ हे तारा ! ई कोन साड़ी कहबै छैक ?

तारा देवी गर्वमिश्रित मुसकान सँ बजलीह—आइकालिह एकरे फैशन छैक । विलायत सँ अबै छैक । मुदा बड़ रुपया लगै छैक ।

लालकाकी पुरइ करैत कहलथिन्ह—हे दाइ ! एहि मे खोंइछो कोना कऽ देबीह? एहन सुन्दर साड़ी मे धान कोना कऽ सन्हबह ?

तारा देवी एहि प्रश्न पर बिहुँसैत बजलीह—काकी, आशीर्वाद दियऽ । धान लऽ कऽ की हैतैक ?

ला०—आशीर्वाद त भगवतीए देने छथुन्ह । तोरा सन भाग्य ककरा हैतैक ?

ई कहैत लालकाकी कैं अपन बुचिया मन पड़ि गेलैन्ह । आँखि सँ टप-टप नोर चुबय लगलैन्ह ।

ई अपमय-रोदन देखि बड़कागामवाली झट भीतर सँ आबि तारादेवी कैं अपना

कोठरी मे लऽ गेलथिन्ह ।

लालकाकी आँखि पोछैत बजलीह–दूर जो ! आँखियो अपन सक नै अछि। ओकरा खोंमा लागल हेतैक । अभागली बुचियाक ऊपर कोहन भेलैक से नहि जानि।

आवेशरानी कहलथिन्ह–भगवान पर भरोस राखथु बहिना ! आइ नहि त काल्हि ओहो रानी बनबे करति । और तारा ओकरा परतर की करतैक ? बुच्ची दाइ जे पैर धो कऽ फेकि देत से त ओकरा हेबे ने करतैक । फैशन करै की हैतैक ?

एतबहि मे दुलारमनि पिउसिक स्वर कर्णगोचर भेल–की गे मधुरानी ! जमायक कतहु पता लागल ?

लालकाकी पिन घोंटि कय बजलीह– आबथु बड़की दाइ ! बहुत दिन पर ऐलीह। मिसरक कहाँ कोनो चिट्ठी-पत्री आएल छैन्ह । बुच्ची दाइक भाग्ये जरल छैन्ह त हमरा सभ की कऽ सकै छिऐक ?

दुलारमनि पिउसी गर्जि कय बजलीह–हम त पहिनहिं कहै छलहुँ जे कुलमर्यादा देखि कय घर करब । छांटबभना दोहनाहा कें उठा अनने त येह सभ हैत कि ने !

बुच्ची दाइ हुनमुन काकीक नेना कें कोड़ मे नेने खेलबै छलथिन्ह । अपना भाग्यक एहि तरहें अलोचना होइत देखि नेना कें पलंग आङन सँ बाहर निकसि गेलीह। नेनाक क्रन्दनध्वनि सुनि हुनमुन काकी ओल कटनाइ छोड़ि दौड़लि ऐलीह । नेना कें हैंसोथि कय आँखि पोछैत बजलीह–"हः, आङनक सभ काज हम करी । कंओ नेनो कें राखत से नहि !" किन्तु ओलक कबकबी आँखि मे लागने नेना और जोर सँ चिचियाय लगलैन्ह । तखन लालकाकीक ध्यान आकृष्ट भेलैन्ह । कहलथिन्ह–ऐ फुचुकरानी! जाउ ! कनेक पिया दिऔ गऽ ।

दुलारमनि पिउसी अपना बात कें पाछाँ पड़ैत देखि और जोर सँ बाजय लगलीह–"हुनका गामो पर कंओ लोकवेद छैन्ह की नहि ? की देखि कऽ एहन जमाय कैलहुँ ? एहि सँ त हे..........।"

एतबहि मे भोलानाथ झा खुशी होइत आङन ऐलाह । बजलाह–भौजी ! रेवती क चिट्ठी आएल अछि । ओ आइ जे घड़ी गाम नहि पहुँचलाह अछि । मिसर हुनका पटनाक पता सँ चिट्ठी लिखने छथिन्ह से नेने अबै छथि ।

ई समाचार सुनितहि लालकाकी आनन्द सँ गदगद भय दुलारमनि पिउसिक दुहू पैर पकड़ि कहय लगलथिन्ह–"बड़की दाइ ऐ बड़की दाइ ! हिनकर पैर लछमिनिया भेल ऐ दाइ ! कहाँ गेलीं ऐ कनियाँ ? पुजाक सामग्री ओरियाउ । सत्यनारायण महाराजक कबुला मानल अछि ।" देओर दिस ताकि कय बजलीह–"ऐ बाबू ! हमरा मधुर मँगा दियऽ । भरोस नहि छल जे भगवान एहन समाचार सुनौताह ।"

भोलानाथक गेला पर बड़कागामवाली तारा दाइक संग बहरैलीह । तारा बिहुँसैत

कहलथिन्ह–काकी, हमरो तिरुत भेटक चाही । लकड़ीक लड्डू सँ काज नहि चलत। पटनाक ठिठ्ठक रसगुल्ला खाआबऽ पड़त ।

दुलारमनि पिउसी जाहि उद्देश्य सँ आएलि छलीह से त पूरा नहि भेलैन्ह, प्रत्युत उनटे भऽ गेलैन्ह । मन मे सोचय लगलीह–दुरजो ! कोहन कुयात्रा मे चलल छलहुँ!

तावत तारा दाइ टोकलथिन्ह–पिउसी ! गुमसुम्म किऐक छिऐ ? मिठाइ खैबैक ने पहिने गीत गबियउ ।

ई कहब की छल–जिरनीक छत्ता खोंचारब । दुलारमनि पिउसी अपन सभटा खौंझ आब तारा पर उतारय लगलीह– "ऐ गे तारा ! तोरा एक्को रत्ती धाख नहि छौक? तोहर बाप हमरा सोझाँ एना बजितो नहि छथुन्ह । तों हमरा सँ चौल करै छैं ! बड़ चकमक्की छौ त अपना घर कें देखौ गऽ । कट्टी पहिरि कऽ चलइ छैं, कनेक घोघ उघारि लइ छैं, त बुझइ छैं जे और कंओ लोके नहि । गोरि माउगि गर्वहि आन्हरि ! हमरो लोकनि एक दिन नव रही । एना अलनहर नहि करी । आबक छौंड़ी त किये मानत रहै ओकरा बड़ खौंत फुर्कैक से जाहि मे ....।"

लालकाकी देखलन्हि जे आब अनर्थ भेल जा रहल अछि । झट्ट दऽ बीच मे पड़ि बजलीह–बड़की दाइ ! एहन शुभ अवसर पर ई किदइ छथि ! तारा दाइ कहाँ किछु अनर्गल कहलथिन्ह अछि ?

ताराक गंजन देखि आवेशरानीक रोओं-रोओं जुड़ाइत छलैन्ह । तथापि ऊपर सँ बजलीह–एतेक दिन पर भगवान सहाय भेलथिन्ह अछि । आइ कतहु करं-करं होए?

'करं-करं' शब्द बहराएब छल कि दुलारमनि पिउसी हुनको पर उनटि गेलथिन्ह–अयँ ऐ ! हम काग-कौआ छी जे करं-करं करब ? कोन छुच्छी एहन कहयवाली अछि ? जे कहत तकर जीभ सरट दऽ खींचि लेबैक । मधुरानी हमरा जे नहि कराबथि। आइ दिन सँ फेरि एहि आङन मे पैर दी त ब्राह्मणक बेटी नहि ।"

ई कहैत दुलारमनि पिउसी जहिना तमकि कय ठाढ़ि भेलीह तहिना पैर तर एकटा ललका बिछनी पड़ि गेलैन्ह । ओ और जोर-जोर सँ चिचिया कय लालक सातो पुरखाक उद्धार करैत अपना घर दिस बिदा भेलीह ।

हुनका गेला पर तारा दाइ अपन ओठो दिलबहारक खुशबू सँ तर रुमाल सँ आँखि पोछैत बजलीह–काकी, हमरो हुकुम दियऽ । खोंइछ मे आशीर्वाद भेटिये गेल से नेने जाइ छी ।

लालकाकी हपसि कय कहलथिन्ह–दाइ ! अहाँ कें हमरे शपथ अछि । एकोरत्ती क्षोभ नहि राखब । ओ त जेहन छथि से सभ गाम कें जनले अछि ।

आवेशरानी कहलथिन्ह–देखलिऐन्ह ने ? तुरन्त हमरो पर कोना उनटि गेलीह।

एतबहि मे टमटमक टनझुन शब्द श्रुतिगोचर भेल । बड़का गमावाली चेहा कय

दुरुखा सँ हुनका सान्त्वलनि और वीडुले अपना घर मे जा कऽ साड़ी बदलय लगलीह।

✡ ✡ ✡

रेवतीरमण माय तथा पितिआइन कें प्रणाम कय आङन मे बैसलाह । पुनः एकान्त देखि नहुँ-नहुँ कहय लगलथिन्ह—मिसर त बड़का टा दुइहर लिखि पठौने छथि। तकर सारांश ई जे हुनका कालेज मे बिजली नामक एक लड़की छैन्ह । से व्याख्यान मे सभसँ फर्स्ट भेल छैन्ह । ओकरा देखि हुनका ई सिहन्ता होइ छैन्ह जे ओहने स्त्री सँ विवाह होइत ।

लालकाकी बीचहि मे बजलीह—हम त पहिनहिं सँ जनै छलहुँ जे कोनो निरासी हमरा बेटीक सौतिन बनल अछि । आब बुझा ने गेल । हे भगवान, ओ छौंड़ी केहन निर्लज्ज अछि जे छौंड़ा सभक बीच मे जा कऽ छमकैत अछि । नाम की छैक त बिजली! जरलाही बिजली पर बज्र खसौ ।

ई कहि लालकाकी आँचर सँ आँखि पोछय लगलीह । रेवतीरमण बजलाह—मिसर लिखैत छथि जे 'अपना गाम मे महिला क्लब कायम करू । स्त्रीगण कें शिक्षित तथा जागरित करू । हमरा सासुरक लोक योग्य बनि जायत तखन हम अवश्य ओतय आबि सकै छी ।'

लालकाकी माथ पर हाथ दय बजलीह—आब ई लोक एहि जन्म मे 'योग्य' कोना कऽ बनि जायत ? ओ 'योग्य सौंति' ने कतहु छलैन्ह त व्याहक काहि ठाम एलाह किऐक ? और हुनकर अपने बाप कोन 'योग्य सौंति' छथिन्ह जे सासुर मे 'योग्य' खोजै छथि ?

रेवतीरमण कहलथिन्ह—''नहि-नहि । से 'योग्य' नहि । हुनक आशय छैन्ह जे बुच्ची दाइ कें शिक्षा देल जाइक.....।''

लालकाकी तान मारि कहलथिन्ह— बड्ड लायक बेटा बनलाह अछि जे एखने सँ हमरा बेटी कें 'शिक्षा' देमय लगलाह अछि । कोन अनुचित हमर बेटी केलक अछि जे ओ 'शिक्षा' देथिन्ह ? एक टूक कपड़ा, एकटा गहना कहियो पठौलथिन्ह से त भेंट ने केलेन अछि और चललथिन्ह ओकरहि सँ शिक्षा देमय !

रेवतीरमण बुझावय लगलथिन्ह—''से नहि । हुनक मतलब छैन्ह जे बुच्ची दाइ लिखि-पढ़ि कऽ ज्ञान प्राप्त कऽ सकय ....।''

ला० का०—पहिने हुनका अपना ज्ञान भेलेन्ह अछि ? ओ एतेक दिन लिखि-पढ़ि कऽ बेहाल केलन्हि जे आब बुच्ची दाइ सनाथ करतीह। और बिनु पढ़ने बुचिया कें जतेक ज्ञान छैक ततेक हुनका भरि जन्म पहुँचा उत्तर नहि हैतैन्ह ।

रे० र०—से हुनक तात्पर्य नहि छैन्ह । ओ चाहै छथि जे ई ताहि योग्य भऽ जाय जे हुनका बालक उत्तर दऽ सकैन्ह ।

ला०का०—एहन सनकाही नहि देखल । सभ लोक त एहने स्त्री चाहैत अछि जे कहियो एकोटा बातक उत्तर नहि दैक । 'गरकट लड़िका धनकट जोय' – ई भला के चाहत ! और हुनका एहो बातक सिहन्ता होइ छैन्ह ? सेह छलैन्ह त कोनो ककंशा सँ विवाह करितथि । हमरा बेटी सँ त ई नहि हैतैन्ह जे ओ कोनो बातक उत्तर देतैन्ह। और हँ ! जखन उत्तर देमय लगतैन्ह तखन अपने पड़ा जेताह ।

आब रेवतीरमण मुश्किल मे पड़ि गेलाह । समझावय लगलथिन्ह—''तों हुनक अभिप्राय नहि बुझलहुन । ओ ई चाहै छथि जे स्त्रीगणक मन सँ जे कुसंस्कार जमल छैक से हटाओल जाय । जेना....जेना....तोरा लोकनि देवता-पितरक कबुला माने जाइ छी....।''

लालकाकी तमकि कय बजलीह—त की लोक देवता पितर नहि मानै ? हुनक सँ कहाँ सभ क्रिस्तान भऽ जाओ ? हम त कबुला केने छी जे जाहि दिन हुनकर मति फिरतैन्ह ताही दिन हुनमानजी कें भेट चढ़ा देबैन्ह । हमर बेटी सुमती पुर्जेत अछि तें हुनका मने छोड़ि देबो ? बैह बड़ काबिलक नाती बनलाह अछि ।

आब रेवतीरमण हिम्मत हारय लगलाह । तथापि साहस कय पुनर्वार चेष्टा कयलन्हि—''तोरा सभ बुझितहि ने छहो त हम कोना कऽ कहिऔक ! मिसर चाहै छथुन जे तोरा सभक अन्ध-विश्वास दूर कैल जाइक..........।''

ला० का०—हँ ! अन्ध-विश्वास ककरा कहै छैक ? बूढ़ भऽ गेलहुँ, आइ धरि नहि सुनने छलिऐक !

आब रेवतीरमण गंहियाय लगलाह—''अन्ध-विश्वास ई जेना ....जेना...जेना... तोरा लोकनि डाइन-योगिन मानइ जाइ छै.........।''

ला० का०—''त कि हुनका देश मे डाइन-योगिन नहि होइ छैन्ह ? डाइन-योगिन कतय नहि रहै छै ?''

ई कहि लालकाकी अपना बालक पुष्टिक हेतु रेवतीरमणो दिस ताकय लगलीह। हुनमुनकाकी कें बुझि पड़लैन्ह जे ई हमरे पर आक्षेप करै छथि । बाजय लगलीह—हँ, हम त नैहरे मे डाइनपन सिखने छी ! हमहीं समाद कें चान चरा देने छिऐन्ह कि ने! हमरा सन हाँकल डाइन के हैत ?

ई कहैत हुनमुनकाकी कें थर-थर नोर खसय लगलैन्ह । लालकाकी छितनी लऽ कऽ फटाफट अपन कपार पीटय लगलीह ।

ई अकाण्डताण्डव देखि रेवतीरमण माथ हँसोथैत आङन सँ उठि दालान दिस विदा भेलाह ।

□

[३]

'रोमांस'क उदय

सी० सी० मिश्र कें ओहि राति बड़ी काल धरि नीन्द नहि पड़लैन्ह । मिस बिजलीक दमक सँ निद्राक आँखि मे चकाचौन्ह लागि गेलैन्ह । हुनक मस्तिष्क तेना विक्षोभित भऽ उठलैन्ह जे भरि राति विचार-तरंग मे ऊब-डूब होइत भसियाइत रहलाह ।

सी० सी० मिश्र मनहिमन बिजली और बुचियाक मिलान करय लगलाह। एक उन्मुक्त स्वच्छन्द विहारिणी परी, त दोसर छान्ह-पगहा मे बान्हल पड़रू । एक स्वच्छन्द मानसरोवर मे विचरण करयवाली राजहंसी, त दोसर भरि जन्म बाँध-सेमारक बीच अन्हार मे रहयवाली कूपमण्डूकी । एक नारी जागरणक संदेशवाहिनी आधुनिक युगक अग्रदूतिका; त दोसर अज्ञान और कुसंस्कार सँ आच्छन्न परम्परागत रूढ़ि शृंखलाक बन्दिनी । एक आकाश मे उड़निहार एरोप्लेन, त दोसर लीकें-लीकें ससरयवाली बैलगाड़ी!

ई बिजली जकरा प्राप्त भऽ जैथिन्ह, तकरा फेरि बाँकी की रहतैक ? ओहि कल्पित भाग्यवान पुरुष सँ सी० सी० मिश्र कें ईर्ष्या होवय लगलैन्ह, और अपना भाग्य पर क्रोध । एक आधुनिक शिक्षित युवक कें बिजली सन प्रगतिशील पत्नी भेटक चाही, से भेटल की त बुचिया ! छिः !

शनैः शनैः सी. सी. मिश्र स्वप्नलोक मे विहार करय लगलाह । एक अत्यन्त रमणीय पार्वत्य प्रदेश मे गिरि निर्झरिणीक समीप श्वेत शिला-खण्ड पर आसीन भय ओ प्राकृतिक शोभा निरीक्षण कऽ रहल छथि । नीचा लाल-लाल कमल-पुंज सँ सुशोभित पुष्करिणी मे एक नौकारोहिणी युवती जल-विहार कय रहल छथि । ओ सुन्दरी अपना करकमल सँ कमल तोड़य लगलीह। कोमल आँगुर कठिन मृणालसँ खड़राय लगलैन्ह। युवती उत्तेजित भय मृणालदण्ड कें मूलसहित उखाड़ि लेलन्हि । बल प्रयोग सँ कमलनाल त टूटि गेल, किन्तु संगहिसंग नाव उलंग भऽ गेलैन्ह और तरणि समेत तरुणी जलमग्न होमय लगलीह ।

ई दृश्य देखि मिश्र जी सरोवर मे कूदि पड़लाह । पँरैत-पँरैत यावत ओहि स्थान पर पहुँचथि-पहुँचथि तावत नाव मँझधार मे डूबि गेलैक । डुब्बी लगौला पर तरेतर रहइत कामिनीक कोनो गुलगुल अंग हुनका हाथ मे ठेकि गेलैन्ह । ओ कोनो तरहँ लटपटाइत-सटपटाइत शिथिलवसना सुन्दरी कें दृढ़तापूर्वक अपना भुजपाश मे आवेष्टित कैने बहरायलाह । मूर्च्छिता तरुणी कें चैतन्य लाभ करैबाक हेतु प्राथमिक उपचार करब आवश्यक छलैन्ह । अतएव मिश्रजी परोपकार भावना सँ युवतीक आर्द्रवस्त्र हटा कय शरीर कें नीक जकाँ पोंछय लगलथिन्ह । युवतीक हृदय-परीक्षा कैला पर ज्ञात भेलैन्ह जे अत्यन्त सूक्ष्म स्पन्दन भऽ रहल छैन्ह । चिकित्साक दृष्टि सँ हिमवत शीतल शरीर मे कृत्रिम उष्णताक संचार करब आवश्यक बुझि पड़लैन्ह । अग्निक अभाव मे एकमात्र उपाय छलैन्ह निरन्तर करमुख-व्यापार । अन्ततोगत्वा प्रयत्न सफल भेलैन्ह ।

मूर्च्छिता तरुणी कनेक आँखि खोलि कय पुछलथिन्ह—अहाँ के थिकहुँ ? ई कोन स्थान छैक ? एतय कोन घटना घटल छैक ?

ई सुपरिचित कण्ठस्वर सुनितहिं सी० सी० मिश्र मिस बिजली कें चीन्हि गेलथिन्ह। कहलथिन्ह—''हमर परिचय ईंह जे हम एक देवीक अनन्य उपासक थिकहुँ । एहि स्थान कें अहाँ हमर आराध्य देवीक क्रीड़ास्थल बूझि सकै छी और एतय घटना ई घटित भेल छैक जे एक नाव मँझधार मे डूबि गेने दोसर नाव मँझधार मे डुबैत-डुबैत बाँचि गेल अछि ।''

एतबहि मे दृश्य पलटि गेल । बिजली देवी खिलखिला कय हँसि उठलीह। बिहुँसि कय बजलीह—अहाँ काव्य करय लागि गेलहुँ, किन्तु हमरा चिन्हलौं त नहिए। हम अहाँक विधिकरी थिकहुँ । आबो सरिया कऽ चीन्हि लियऽ ।

सी० सी० मिश्र विस्फारित नेत्र सँ देखय लगलाह । आब हुनका मायामयी नारीक अंग-प्रत्यंग मे विधिकरीक भान होवय लगलैन्ह । ओ आश्चर्य-चकित भय हुनका दिस हाथ बढ़ौलन्हि ।

किन्तु पुनः दृश्य-परिवर्तन भेल । ओ नारी-शरीर अकस्मात अश्रुपूर्ण बुच्चीदाइक स्वरूप ग्रहण करैत कातर स्वर मे बाजल—''अहाँ हमरा परित्याग कऽ देलहुँ । देखु, अहाँ कें सन्तुष्ट करबाक हेतु हमरा कोन-कोन नाच नाचय पड़ल अछि !'',ई कहि ओ मिश्रजीक पैर धऽ लेलकैन्ह ।

आब मिश्रजी अपना हृदयक आवेग कें नहि रोकि सकलाह । चट दऽ लपकि कय हाथ पकड़ि लेलथिन्ह । तेतेक जोर सँ बकबका कऽ धैलथिन्ह जे ओ मायाकल्पित मूर्ति चीत्कार करय लागल ।

ओहि चीत्कार-ध्वनि सँ सी० सी० मिश्रक सुखस्वप्न भंग भऽ गेलैन्ह । देखै छथि त होस्टलक नौकर कोठरी बाढ़क हेतु आएल अछि, तकर हाथ ओ जोर सँ कसि

कय पकड़ने छथिन्ह, और ओ जोर सँ चिचिया कय कहि रहल छैन्ह—बाबू, छोड़ि दियऽ । हम झाड़ू देबऽ आयल छी । अहाँक चादर नीचा खसि पड़ल छल से पैर पर ओढ़बैत छलहुँ । अहाँ बड़ी काल सँ कोदन सभ बिसुनाइत छी ।

मिश्रजी लज्जित भय ओकर हाथ छोड़ि देलथिन्ह ।

✲ ✲ ✲

थोड़ेक कालक उपरान्त सी० सी० मिश्र कैं होस्टल सुपरिंटेंडेंटक चपरासी बजाबय ऐलैन्ह । ओ संशंकित चित्त सँ हुनका आफिस रूम मे गेलाह । ओहि ठाम एक और सम्भ्रान्त सज्जन बैसल छलाह । हुनका दिस संकेत कय सुपरिंटेंडेंट कहलथिन्ह—बैरिस्टर योगेशचन्द्र बोसक नाम त अहाँ सुननहि हैबैन्ह ।

मि० मिश्र नम्रतापूर्वक अभिवादन कैलथिन्ह ।

सुप०—अपना कालेजक छात्रा मिस बिजली हिनके सुयोग्य पुत्री थिकथिन्ह।

मि० मिश्रक छाती और जोर सँ धक्-धक् करय लगलैन्ह ।

सुप०—हम जनै छी जे अहाँ विश्वविद्यालय मे महत्त्वपूर्ण गवेषणा-कार्य कय रहल छी, ताहि सँ अवकाश कम रहैत होएत । तथापि किछु दिनक हेतु थोड़ेक समय अहाँ कैं देबय पड़त । हिनक छोटि कन्या वीणा एहि बेर बी० ए० क परीक्षा मे बैसथिन्ह। तनिका कनेक सहायता कऽ दिऔन्ह ।

मि० बोस बजलाह—'इंगलिश' त ओकर बहुत बढ़िया छैक । सिर्फ साइकोलोजी (मनोविज्ञान) और पौलिटिक्स (राजनीतिशास्त्र) मे मदद दरकार छैक । यदि अहाँ कैं कष्ट नहि होइत त एखने हमरा संग चलितहुँ । परीक्षा लगियाचल छैक तैं ओ बहुत व्यग्र भऽ रहल अछि ।

मिश्र जी मन्त्रमुग्ध जकाँ हुनका पाछाँ-पाछाँ चललाह । मि० बोस हुनका कार मे बैसा स्वयं ड्राइव करैत कहय लगलथिन्ह—''हम अपने हाथ सँ गाड़ी चलाएब पसन्द करै छी । हमर दुनू बेटी त ड्राइविंग (मोटर हाँकय) मे हमरो सँ बेसी 'एक्सपर्ट' (निपुण) अछि । बिजली त बारहे बर्षक अवस्था सँ हमरा सभक संग यूरोप घूमय लागल । विलायत मे जैह देखय सैह सीखऽ लागय । जर्मनी मे मोटर चलाएब सिखलक । फ्रान्स मे पियानो बजौनाइ सिखलक । स्विट्जरलैंड मे 'स्केटिंग' (बर्फ पर ससरनाइ) करय लागलि । ब्रिटिश चैनेल मे हेलय लागलि । हमर त इच्छा छल जे ओत्तहि लंडन युनिवर्सिटी सँ बैरिस्टरी पास करा दिऐक । किन्तु जहिया सँ ओकर माय मरि गेलथिन्ह तहिया सँ हम दुनू बहिन कैं अपना आँखिक ओझर नहि करैत छिऐक । बेटाक सिहन्ता बैह

दुनू पूर्ति करै अछि । सत्त वर्ष सँ माय-बाप जे बूझी हमहीं बनल छिऐक ।''

ई कहैत-कहैत सहृदय बारिस्टरक आँखि मे नोर डबडबा ऐलैन्ह । करीब दस मिनट मे मोटर एक सुसज्जित बङलाक बरामदाक सामने आबि कऽ लागल । मि० बोस सी० सी० मिश्र कैं ड्राइंग रूम मे लऽ जा कऽ बैसौलथिन्ह । भीत परक हस्त निर्मित पर्वत-झरना आदिक रंगीन चित्र, खिड़की परक बारीक जाली काढ़ल झिलमिल पर्दा तथा टेबुल परक सुन्दर फूल काढ़ल झालरदार रेशम देखि, हुनका ई बुझबा मे भाङठ नहि रहलैन्ह जे ई सभ वसुकन्याक सुकुमार हस्तकौशल थिकैन्ह ।

मि० मिश्र कलाकौशलक चमत्कार सँ मुग्ध होइत छलाह, कि कापी, पुस्तक तथा यौवनक भार सँ सहमलि मिस वीणा मधुर मुसकान सँ हुनक अभिवादन कैलथिन्ह। कोसाक दल सन हल्लुक चप्पल पर उड़ैत ओ मिश्रजी कैं अपना स्टडी-रूम (अध्ययनागार) मे लऽ गेलथिन्ह । मिश्रजी देखलन्हि जे कमराक प्रत्येक वस्तु सुरुचिपूर्ण ढंग सँ सजाओल छैक । संगमर्मरक फर्श निर्मल दूध जकाँ झलकैत । श्वेत-स्फटिक-निर्मित टेबुल पर लिखा-पढ़ीक सुन्दर सामान । चारू कात मखमली गद्दीदार मुलायम सोफा । सीसाक आलमारीक प्रत्येक खल मे सोनहुला जिल्द मे मढ़ल साहित्य, दर्शन, तथा इतिहासक मोट-मोट अंगरेजी ग्रन्थ यथास्थान राखल । एक कोन मे पियानोक टेबुल। दोसरा कोन मे रैकेट टाङल । कमरा मे एकोटा वस्तु फालतू नहि।

'भी' कट ब्लाउजक मध्यभाग मे खोंसल फाउन्टेनपेन बाहर कय, आगाँ मे कापी खोलि, मिस वीणा तैयार भऽ गेलीह । मि० मिश्र अपना कैं कठिन परिस्थिति मे बोध करय लगलाह । हुनका संकट मे पड़ल देखि वीणा देवी वीणा-विनिन्दक स्वर मे बजलीह—हम एक टा 'एसे' (लेख) लिखने छी; तावत सैह देखि दियऽ ।

मि० मिश्र कापी लऽ कऽ मोती सन-सन गोल अक्षर सँ सुशोभित पृष्ठ पर पृष्ठ उनटाबय लगलाह । सुन्दर अंग्रेजी मे गंभीर विचारपूर्ण निबन्ध ! निबन्धक विषय —क्रिटिसिज्म ऑफ मैरेज (वैवाहिक प्रथाक समालोचना) । वीणा देवी वेद-पुराण तथा स्मृति सँ लय कऽ फ्रायड, बर्नार्ड शा, बर्टेंड रशेल प्रभृति आधुनिक समाजशास्त्रीक समीक्षा करैत, प्राच्य तथा पाश्चात्य विचार-धाराक तुलनात्मक विवेचना कैने छलीह।

रेशमी वीणाक भीतर एहन ठोस फौलादी शक्ति देखि सी० सी० मिश्र मनहि मन विधाताक पक्षपात पर कुढ़ी होबय लगलाह । 'वीणाक रचना मे त सृष्टिकर्ता सौंटि-सौंटि कय अपन कलाक सभटा चमत्कार भरि देलथिन्ह और बुच्चीदाइ कैं गढ़बाक काल मे जेना कुच्ची हेरा गेल रहैन्ह तेना थोपी लऽ कऽ थोपि देलथिन्ह ।'

एहि तरहें मिश्रजी वीणाक लेखक स्थानमे अपने कर्मलेखक विवेचना करय लगलाह ।

एतबहि मे प्रफुल्ल कमल समान विकसित वदनक छटा सँ हास्य-विकिरण करैत बिजली देवी कोइली जकाँ कुहुकैत एलीह–'वीणा !' तावत सी० सी० मिश्र पर दृष्टि पड़ने चकित हरिणी जकाँ सहमि गेलीह । ''माफ करब, हमरा नहि जानल छल।'' ई कहैत बिजली जहिना बिजली जकाँ आइलि छलीह तहिना जाय लगलीह।

किन्तु वीणा देवीक सोर पाड़ने ओ पुन: थमि गेलीह । सी० सी० मिश्रक दोसरा दिस एक सोफा पर ओठङि कऽ बैसि गेलीह । दुहू कात सँ तीव्र विद्युद्धाराक सम्पात मे पड़ि मिश्रजी हठयोग साधि देलन्हि । धीरतापूर्वक त्राटक मुद्रा लगा थमि कऽ बैसि गेलाह और कुम्भक द्वारा प्राणवायु कें रोकने ध्यान, धारणा, ओ समाधिक अभ्यास करय लगलाह ।

किन्तु योग-मार्ग मे विघ्नस्वरूप नवयुवती हिनक समाधि भंग करऽ पर जेना तुलल होथिन्ह ।

वीणा परिचय दैत कहलथिन्ह–''ई थिकाह हमर नव शिक्षक मि० मिश्रा।'' बिजली दुहू हाथ जोड़ि हिनका दिस ताकि देलथिन्ह ।

एतबहि सँ मिश्रजीक समस्त प्रत्याहार ओ प्राणायाम-पूर्वक जमाओल आसन उखड़ि गेलैन्ह ।

ओ लड़खड़ाइत स्वर मे बाजि उठलाह–ओहि दिन अहाँक भाषण बहुत सुन्दर भेल रहय ।

बिजली कनेक अँठा कऽ पुछलथिन्ह–से कथी मे ?

मिश्रजी अपना स्वर कें स्वाभाविक बनेबाक असफल चेष्टा करैत बजलाह–सभ अंशे सुन्दर । जेहने भाषा, तेहने भाव, तेहने बजबाक चमत्कार ।

अन्तिम शब्द मुँह सँ बहराइत मिश्रजी लाजे कठुआ गेलाह । पुनः सम्हरि कय बजलाह–ओहि भाषण कें त छपा कय अशिक्षित स्त्री-समाज मे वितरण करक चाही। अहाँ देश-विदेश घुमने छी, तैं एहन व्यापक दृष्टिकोण अछि । किन्तु 'बाबा वाक्यं प्रमाणम्' माननवाली देहातक स्त्री-वर्ग कें त ई सभ आइडिया (विचार) नबे बुझि पड़तैन्ह।

बिजली अपना मुस्कुराहट सँ बिजली चमकबैत बजलीह–ओहि मे कतेक त हमरा गरियेबो करतीह । सोंक बात जाय दियऽ, देहाती पंडितो 'अनिश्च वायुश्च' भऽ जैताह । जवाब नहि फुरतैन्ह त लगताह हमरा गारि पढ़य । किएक ज प्राचीन विचारक

पंडित जी नवीन विचारक पुरुष वा स्त्री सँ परास्त भऽ जाथु त खिसिया कऽ ओहि पुरुष कें 'नास्तिक' और स्त्री कें 'कुलटा' कहय लगै छथिन्ह ।

तदनन्तर एहि प्रसंग मे बड़ी काल धरि मनोरंजक गप्पशप्प होइत रहल ।

जखन सी० सी० मिश्र चलक हेतु उद्यत भेलाह तें वीणा कहलथिन्ह–'पापा' (बाबूजी) चाय पीबक हेतु बजबै छथि ।

मिश्रजी सिटपिटाइत बजलाह–हम त एहि बेरि कऽ चाय नहि पिबैत छी ।

वीणा–तखन बैसि कऽ गप्पे करब । हुनका त केओ बतियाय लेल भेटि जैबाक चाहिऐन्ह ।

सभ गोटे बोस साहेबक कमरा मे अबैत गेलाह, जहाँ ओ चायक टेबुल पर कन्या सभक प्रतीक्षा मे बैसल छलाह ।

वीणा कप मे चाय परसय लगलीह और बिजली 'प्लेट' मे 'टोस्ट' सजाबय लगलीह । मि० बोस सी० सी० मिश्रक सामने छुरी, काँटा ओ चम्मच बढ़ा देलथिन्ह। किन्तु मिश्रजी कें छुरी-काँटा सँ खेबाक पूरा अभ्यास नहि छलैन्ह तें धन्यवाद-पूर्वक हाथ बारने बैसल रहलाह । दुनू बहिन बापक संग पुरैत गिलहरी जकाँ कुतरय लगलीह। मिश्रजी कें टुक्कुर-टुक्कुर तकैत देखि बोस साहेब कहलथिन्ह–''कम सँ कम फलो त खाउ ।'' गिस बिजली अपना हाथ सँ फलक प्लेट मिश्रजीक आगाँ बढ़ा देलथिन्ह। ओ ओहि मे सँ एक टा नारंगी उठा कऽ छोड़य लगलाह । हुनका बुझि पड़लैन्ह जेना सम्पूर्ण ब्रह्माण्डक रस आबि कय ओही नारंगी मे केन्द्रीभूत भऽ गेल होइक ।

नाश्ता-पानीक बाद बिजली एकाएक अपना रिस्टवाच दिस ताकि बजलीह–पापा! दु-एक मिनट मे लण्डनक प्रोग्राम शुरू हैतैक । सुनब ?

बिजली उठि कय रेडियोक सेट ठीक करय लगलीह । बोस साहेब चुरुटक धुआँ छोड़ैत तन्मय भऽ अंगरेजी गाना सुनय लगलाह । सी० सी० मिश्र कें अगुताइत देखि कहलथिन्ह–बेस, ई गाना खतम होमय दिऔक, तखन जाएब ।

आध घंटाक बाद जखन मिश्रजी अपना होस्टल मे पहुँचलाह त बुझि पड़लैन्ह जेना ओ कोनो वस्तु बोस साहेबक कोठी मे छोड़ने आएल होथि ।

☼ ☼ ☼

ताहि दिन सँ सी० सी० मिश्र नित्य-प्रति बोस महोदयक ओहि ठाम जाय लगलाह। क्रमश: धाख छुटैत छुटैत ओ बोस परिवार मे नीक जकाँ घुलि-मिलि गेलाह । रेडियो, सिनेमा, चाय, पिकनिक पार्टी, आदि मे आब ओहो सहयोग देबय लगलथिन्ह ।

बसु परिवार सँ घनिष्ठ सम्पर्क भेने सी० सी० मिश्र मे एक विलक्षण परिवर्तन
भेलैन्ह जे हुनक कवित्व शक्ति जागि उठलैन्ह । ओ छायावादी कविता बनावय लगलाह।
हुन भावुकतापूर्ण उद्गार सँ एक कापी भरि गेलैन्ह ।

एक कविताक शीर्षक रहैन्ह–'वीणा वादिनी' । तकर भाव ई जे–''अहाँ जखन
वीणा बजाबय लगै छी, तखन अहाँक अधरपान सँ मत्त भऽ ओ मूक काष्ठ मुखर भय
अपन अपूर्व स्वर-लहरी सँ चारू दिशा कें गुंजायमान करऽ लगै अछि । जखन जड़
पदार्थ मे अहाँ एहन प्राण फूँकि दैत छी, तखन चेतनक कोन कथा ?''

एक कविता छलैन्ह 'कन्दुक-क्रीड़ा' पर । भाव ई जे–''जखन अहाँ अपन
रैकेट लऽ कऽ टेनिसक मैदान मे उतरै छी त विश्वविजयिनी शक्तिक साकार मूर्त्ति
बनि जाइ छी । अहाँक रैकेट-प्रहार सँ अनेक 'बौल' उछिलि जाइत अछि और तकर
उछिलनाइ देखि हमारो हृदय उछिलय लगैत अछि, विश्व थिरकय लगैत अछि और
प्रकृति नाचय लगैत अछि ।''

एक कविता छलैन्ह–'रसवर्षिणी' । भाव ई जे–''अहाँ जेम्हरे ताकि दैत छी
तेम्हरे रसक वर्षा भऽ जाइत अछि । सम्पूर्ण चराचर कें अहाँ माधुर्य-रस सँ ओतप्रोत
कऽ दैत छी । अहाँक कोमल आङुर मे केहन चमत्कार भरल अछि जे ओ सितारक
तार संग-संग हृत्तन्त्रीओक तार झंकृत कऽ दैत अछि । ओहि आङुरक मधुर स्पर्श सँ
ऊनक लच्छा मनोहर फूल बनि जाइत अछि और दूधक फटौन अमृतमय रसमाधुरी।''

एक कविता छलैन्ह–''जल-विहारिणी।'' भाव जे–''अहाँ जखन आकण्ठ जल
मे मग्न रहै छी त जलक ऊपर एक श्वेत कमल फुला जाइत अछि । जखन अहाँ
जल सँ बहराय लगै छी तखन शुंडक झुंड लहराइत कृष्ण सर्पिणी बहराय लगै अछि।
जहाँ कनेक और ऊपर होइ छी कि एक जोड़ मनोहर चक्रवाक पानिक ऊपर प्रकट
भऽ जाइत अछि ।'' इत्यादि इत्यादि ।

कापीक आदि मे एक पृष्ठ पर लिखल रहैन्ह–''जाहि देवीक मूर्त्ति कें अपना
हृदय-मन्दिर मे अहर्निश पूजन करैत रहलौं उतर, प्रत्यक्षत: फूल-अक्षत नहि चढ़ा सकै
छिऐन्ह, तनिका सुकुमार हाथ मे ई कवितावली हम अपना समेत समर्पित करैत छिऐन्ह।''

एक दिन संयोगवश ई गुप्त कापी बिजली देवी कें कोनो तरहें परि लागि गेलैन्ह।
चतुर रमणी कें ई बुझबा मे भाङठ नहि रहलैन्ह जे सी० सी० मिश्रक अज्ञातनाम्नी
प्रेयसी के थिकथिन्ह ।

❑

[४]

गामक महिला-क्लब

सी० सी० मिश्रक आदेशानुसार महिला-क्लब स्थापित करबाक उद्देश्य सँ
रेवतीरमण अपना गामक स्त्रीगण कें सूचना देबक हेतु विदा भेलाह ।

पहिने ज्योतिषिआइनक घर सँ श्रीगणेश कैलन्हि । कहलथिन्ह–बाबी, आइ हम
अपना आङिनाम सभा करक चाहै छी ।

ज्योतिषिआइन विस्मित मुद्रा सँ मुँह बाबि बजलीह–''एँ ! सभा ? एतेक दिन
सँ सौराठ मे सभा लगै छलैक । आब सँ तोहरा आङन मे 'सभा' लगतौह ?''

रेवतीरमण कहलथिन्ह–नहि, नहि ! से सभा नहि । हम चाहै छी जे स्त्रीगण
लोकनि एकत्र भय विचार करथि जे देश की थिक..........!

ज्योतिषिआइन बीचहि मे लोकैत बजलीह–देश थिक राँटी, मङरौनी, पिलखवाड़,
जतय हमर नैहर अछि । तोहर मातृक भदेश मे छौह । तों देशक हाल की
बुझबहक ?

रेवतीरमण कठिनता मे पड़ि गेलाह । बाजय लगलाह–देशक अर्थ सम्पूर्ण
भारत....।

बूढ़ी टोकलथिन्ह–''सम्पूर्ण महाभारत त हमरा अपने आङन मे अछि । अर्थो
कइएक बेरि सुनने छिऐक । ''भारत मे भरद्वलक अंडा लै गजघंट छिपायो ।''

एकरा आगाँक पद बूढ़ी मन पाड़य लगलीह ।

ई देखि रेवतीरमण आगाँ बढ़लाह । बुचकुन चौधरिक ओतय पहुँचलाह । हुनका
घरक स्त्रीगण आङन मे बैसि अदौरी खोंटैत छलथिन्ह । रेवतीरमण कें देखितहिं सभक
सभ लत्ते-पत्ते चटियाहे हाथे पड़ा कोनियाँ घर मे नुकैलीह ।

रेवतीरमण किंकर्त्तव्यविमूढ़ भऽ किछु काल ठाढ़ रहलाह। कनेक कालक उपरान्त
एक अस्सी वर्षक बूढ़ी जनिक गर्दनि लचि कऽ ठेहुनक समीप पहुँचि गेल रहैन्ह कोनहुना
लाठी टेकैत बहरैलीह । पुछलथिन्ह–हौ बाबू, हमरा सुझै अछि नहि । तों के थिकाह?

रेवती पैर छूबि कऽ प्रणाम कैलथिन्ह और अपन परिचय देलथिन्ह । बूढ़ी आशीर्वाद
दैत कहलथिन्ह– ''तों ? मैंयाक पोता ! तोरा छठिहारे मे जे हम देखने रहियौ से

फेर अड़ये रुन्हैं छिऔह । आब त बड़का टा भऽ गेलाह अछि । ऐं ! तोरा देखि कऽ पितिआइन सभ किऐक पड़ैलथुन्ह ? कहाँ गेलौं ऐ बुच्चुन माय ? आउ, आउत कैं बैसक दियऽ।''

किन्तु वृद्धीक बारंबार उकसैलो पर कोनो बहुआसिन घर सँ टकसबाक नाम नहि लेलथिन्ह । अन्त मे हारि-दारि कय बुड़ी अपने कहलथिन्ह—कतेक काल ठाढ़ रहबह ? खाट पर बैसि जाह ।

किन्तु खाट पर अदौरी पाड़ल रहैक । तेँ रेवती ठाढ़े-ठाढ़े कहलथिन्ह—हम एकटा विशेष प्रयोजन सँ आएल छी ।

बुड़ी कहलथिन्ह—हौ बाबू, त बुचकुन कैं आबय दहुन । बाध गेल छथि ।

रेवती कहलथिन्ह—नहि, नहि । हमरा अहीं लोकनि सँ काज अछि ।

बुड़ी आश्चर्यित भऽ बजलीह—हमरा लोकनि सँ ? एहन कोन बात छैक ?

रेवती कहलथिन्ह—हम गामक स्त्रीगण कैं आइ सायंकाल अपना ओहिठाम एकट्ठा करक चाहै छिऐन्ह ।

किछु काल धरि बुड़ी बकर-बकर मुँह तकैत रहि गेलीह । पुनः रोष कय बजलीह—अयँ हौ ! बाप बड़ोरा पूत चौतार ! बड़ सौख तोहर भेलौह अछि जे गामक सभ स्त्री तोरा ओहिठाम जा कऽ एकट्ठा हेतौह ! से की छैक ? कोनो नाच छै कि तमाशा छै, जे तोरा आङन मे लोक जा कऽ जमा हेतौह ? 'भोज ने भात ने हरहर गीत !' देखू लऽ भला ! लालक बेटाक ई सधोरि ! आह, आह । हमरा ओहिठाम ई सभ नहि चलतौह । नब-नौलार कैं फुसियबहौ गऽ ।

रेवतीरमण मुद्दाह भऽ गेलाह । किछु बजबाक साहस नहि पड़लैन्ह । चुपचाप ओहिठाम सँ घसकहि मे अपन कल्याण बुझलन्हि । अतएव बिनु सुपारियें नेने बिदा भऽ गेलाह । आब ओहन जोश नहि रहलैन्ह ।

बाट मे भखराइनवालीक आङन पड़लैन्ह । ओ सूड़ लऽ कऽ चिनवार निपैत छलीह । आउत कैं देखि बजलीह—आउ ऐ बाबू ! आइ कोना मन पड़ि गेल ? कतहु बाट त ने बिसरि गेल ?

रेवतीरमण कहलथिन्ह—घर सँ त ऐह सपरि कय बिदा भेल छी जे आइ अहाँ लोकनि कैं बजा कऽ अपना ओहिठाम लऽ चली ।

भखराइनवाली परिहासपूर्वक बजलीह—आहि ! तखन त बलहुँ चिनवार निपै छलहुँ । गै सूर्यमुखी ! आइ भानस बन्द । कटैर बाबू नेओत देमय ऐलथुन्ह अछि ।

रेवतीरमण कहलथिन्ह—बेस, ताहू हेतु कोनो क्षति नहि । किन्तु एखन त दोसर काजक हेतु आएल छी । हमर विचार अछि जे गामक स्त्री-वर्गक एक समिति कायम करी ।

भखराइनवाली—ताहि मे की सभ हेतैक ?

रे०—ऐह जे स्त्रीगण सम्मिलित भय इतिहास-भूगोलक ज्ञान प्राप्त करथि, अखबार ओ देशक हाल बुझथि, कला-कौशल सीखथि, स्वास्थ्य-सुधारक हेतु खेलकूद ओ कसरत करै जाथि ।

कसरतक नाम सुनितहिँ सूर्यमुखी खी-खी-खी-खी कय हँसय लागलि । भखराइनवाली बिहुँसैत बजलीह—ऐ बाबू ! त पहिने अपने घर सँ किऐक ने शुरू करै छिऐक ? हमरा लोकनि देखबैक तखन ने सिखबैक ।

रे०—ई सभ एक गोटाक कैने नहि होइ छैक । जौं सभ कंओ मिलि कय चाहै जाएब तखने भऽ सकै अछि । तेँ अहूँक ओहिठाम आएल छी ।

भ०—अहूँ तमाशा करै छी । चारि सेनाक माय भऽ कऽ आब हम दण्ड करब गऽ ? नब-नब कनेयाँ सभ कैं कहिऔन्ह जे घोघ हटा कऽ अखाड़ा पर ताल ठोकतीह गऽ । अहाँ कैं हम की जबाब दियऽ ? एखन नेना छी ।

रे०—अहाँ लोकनि कैं त सभ बात मे हँसिए रहै अछि । व्यायाम प्रत्येक अवस्था मे हितकर होइ छैक । और स्त्रीगण कतेको तरहक खेल खेलि सकै छथि ।

भ०—कोन-कोन खेल अहाँ स्त्रीगण कैं खेलाबक चाहै छिऐन्ह ? कनेक हमहूँ त सुनियैक ।

रे०—खेल त बहुत प्रकारक छैक—जेना टेनिस, बैडमिंटन, पिंगपौंग ।

भ०—ऐ बाबू । ई सब त किछु नै बुझलिऐक । 'टेनिस' की कहबै छैक ?

आब रेवतीरमण मुश्किल मे पड़ि गेलाह । बजलाह—कोना कऽ बुझाउ ? रैकेट लऽ कऽ गेन कैं मारल जाइ छैक ।

भ०—ओ कोन अपराध कैने रहै छैक जे ओकरा मारल जाइ छैक ?

रे०—अहाँ त सभ बात हँसिए मे उड़ा दैत छी । लकड़ीक बेंट मे ताँतिक मजबूत तार कसल रहै छैक । ताही पर गेन रोकि कऽ मारय पड़ैत छैक ।

भ०—ताँतिक तार पर गेन रोकि कऽ मारने कोन परगन्ना भेटि जाइ छैक ?

रे०—एहि सँ बाँहि और कलाइ मजबूत होइ छै ।

भ०—औंत मूसरवाली सँ कि टेनिसवालीक पहुँचा बेशी सक्कत होइ छैक ?

रे०—गेन मारबा मे बहुत चुमकीक काज पड़ै छैक । ताहि सँ शरीर मे फुर्ती

बढ़ै छैक । सन्ध्या-समय मैदानक खुलता हवा देह मे लगै छैक ।

भ०-ऐ बाबू ! 'मन उद्‌गार त गाबी गीत !' निश्चिन्त रहने सब किछु नीक लगै छैक । हमरा सभ कें त एक पहर दिने सँ रातुका चिन्ता व्याप्त भऽ जाइ अछि। जारन-काठी सुखाएल अछि कि नहि ? अन्न-तीमनक ओरिआओन अछि कि नहि? पेटक धन्धा मे जे लगै छी से आधा राति तक जोताएल रहै छी । साँझ कऽ चाउर छाँटय सँ, दालि दरड़य सँ, चिनवार नीपय सँ, चूल्हि फूँकय सँ, जौं छुट्टी होय तखन ने हमहूँ मैदानक हवा खाइ गऽ । हमर सभक जन्म त एही आइ माइ मे बीति जाइत अछि । जे भागवन्त अछि-टहलुआ-भनसीया रखने अछि, तकरा हेतु ई सभ खेल छैक। हमरा सभ कें ओहन तपस्या कहाँ ?

रेवतीरमण मन मे कहय लगलाह-'ई त नीक जकाँ वना कऽ धुसलक । वास्तव मे एतय टेनिसक प्रस्ताव करब भारी बुड़िल्य भेल । आब जतेक ई सभ बाजब ततेक अधिक हुथाइ मे पड़ब ।'

ई विचारि रेवतीरमण ओहिठाम सँ सोझे अपना घर ऐलाह । बड़कागामवाली कें सभ समाचार कहि सुनौलथिन्ह । ओ कहलथिन्ह-अहाँ विद्या मे त हमरा सँ बेशी छी, किन्तु बुद्धि हमरा सँ सीखल करू । लीगणक सभा देखबाक हो त एक दिन और थम्हि जाउ । कालि अपना आङन मे पूजा हैत, सभ कें हँकार पड़तैक । तखन देखबैक जे 'झोंटहा पञ्च' क 'मीटिङ' मे की सभ होइ छैक !

  

आइ लालकाकीक आङन मे बेश छहर-महर भऽ रहल छैन्ह । झुनिया माय गोबर लऽ कऽ आङन-ओसारा निपने अछि । लालकाकी पूजाक चौकी धो कऽ ओहि पर पिठार सँ ऐपन दऽ रहल छथि । झुनमुनकाकी बाती बाँटि रहल छथि । बड़का गामवाली पान लगा रहल छथि । बुच्चीदाइ हुच्ची मे छथि ।

लालकका सहल छथि । क्षुधाविस्मरणार्थ कदलीमण्डप कें कमलक फूल सँ सजैबा मे चित्त बहटौने छथि । पुरोहित नमोनाथ झा जनउ गेठिया रहल छथि । कंदीर लाइट लेसबा मे लागल छथि । भोलानाथ शीतलप्रसादक हेतु गुड़ घोरि रहल छथि। बटुकजी केरा सोहै छथि ।

ढोल-पिपहीक ध्वनि कर्णगोचर होइत झुंडक झुंड गीतगाइन हँकार पुरक हेतु लालकाकीक आङन मे जुटय लगलीह । देखैत-देखैत कच्चे बच्चे ओ जनीजातक जमात सँ सौंसे ओसारा भरि गेल । एहि दल मे युवती, प्रौढ़ा, वृद्धा, बालिका, सभ सम्मिलित

छलीह । युवती-यूथ मे मुख्यतः गामक ससुरवास बेटी यथा सरयूदाइ, कामेश्वरी दाइ, तारा दाइ आदि । प्रौढ़ा वर्ग मे अवधेशरानी, पुहुपरानी, परिहारपुरवाली, भखराइनवाली प्रभृति । वृद्धाक कोटि मे ज्योतिषिआइन, दुलारमनि पिउसी, रामवतीदाइ आदि । बालिकावृन्द मे सूर्यमुखी, फुलमतिया, पलटी इत्यादि । लालकाकी यथायोग्य आगत-स्वागत करबा मे लगलीह ।

सम्पूर्ण समाज जुटि गेला पर लालकाकी बजलीह-ए दाइ सभ ! हिनके लोकनिक पुण्य-प्रताप सँ आइ एहन दिन भेल अछि । कबुला छल जे जमायक समाचार पौला पर भगवानक पूजा करबैन्ह । से मनोरथ त पूर भेल । आब आशीर्वाद देथुन्ह जे बच्चीदाइ कें सोहाग-भाग होइन्ह ।

रामवतीदाइ पुछलथिन्ह-जमाय कतय छथिन्ह ?

लालकाकी-एखन काशी मे छथि ।

पुहुपरानी-की सभ लिखलथिन्ह अछि ?

लाल०-सार कें लिखलन्हि अछि जे अपना बहिन कें खूब लिखाउ-पढ़ाउ तखन हम आयब ।

परिहारपुरवाली-धन्य भाग ! एतबा दिन पर जा कऽ भला सासुरक छोह त भेलैन्ह। आखिर अपना लोकक ममता कतहु नहि होइक !

एक जमीदारनी ठिहुकि कय बजलीह-हून जैतन कहाँ ?'रूसल जमैया करतन की ? धीया छोड़ कऽ लेतन की ?'

लालकाकी बजलीह-ऐ दाइ ! आब हुनका मन योग्य लिखनाइ-पढ़नाइ छौंड़ी कें आबि जाइक तखन ने देवता सन्तुष्ट होथि। हमरो लोकनि त लिखलि-पढ़लि नहिए छी । फेर एतेक दिन वास भेल कि नहि ?

रामवती-हँ ए ! बेशी लिखि-पढ़ि कऽ कि बुचिया कें कतहु नौकरी करबाक छैक ?

पुहुपरानी-से ई की कहै छथिन्ह ? हमरा नैहर मे त आब सभ छौंड़ी स्कूल जाय लगलैक अछि । जे पढ़ैत अछि से कि नौकरीएक द्वारे ?

रामवती०-ऐ पुहुपरानी ! अपना नैहरक बेशी जमौड़ा नहि करू । 'देखल हे गौरा नैहर तोर !' अहाँक गामक छौंड़ी सभ कें देखने छी सिमरियाघाट मे । सोलह-सोलह वर्षक पकठोसल कुमारि सभ जुआएल पोठा माछ जकाँ बेश चाकर-चौरस, भरल-पूरल। गट्टा सन माउँग और कान्हे पर सँ आँचर देने ! ओ छौंड़ी सभ जे नै करय से आश्चर्य!

पुहुपरानी–से कि हिनका गाम मे तेहन कुमारि नहि छथिन्ह ? कतेक त तेहन छथिन्ह जनिका गुड़ खेबाक वयस बीति कऽ आर–गुड़ खेबाक वयस भेल जाइ छैन्ह।

कामेश्वरी दाइक छोट बहिन राजेश्वरी चौदह वर्षक कुमारि छलथिन्ह। हृष्टपुष्ट शरीर मे भादवक नदी जकाँ यौवन उमड़ल छलैन्ह। कामेश्वरी दाइ टिहसि कय बजलीह–हँ, राजेश्वरी त एखन नेना खेलबैत रहैत ! और ओकरा सँ छौ–छौ मास जेठ ज खियाएल छौंड़ी सभ छैक तकरा सभ कैं एखन बँधगिए पहिरबाक वयस छैक !

परिहारपुरवालीक जेधी बिलटी सनटिटही सन सुखाएल छलैन्ह। वयस मे राजेश्वरी सँ जेठ भेलो पर देखबा मे दसे वर्षक लगै छलि। ओ व्यंग्यक आशय बूझि बजलीह–ऐ दाइ ! नीक घर–वर नहि भेटैत छैक त कतय कऽ फोंकि दिऔक ? देखऽ मे खियौंटी लागी, किन्तु वयस त अवश्यें भेलैक अछि। नहि त एकरा सँ तीन वर्ष छोटि जगदम्बा कैं द्विरागमनक दिन कोना मनाओल गेलैक ?

रामवती दाइ कैं जगदम्बाक माथ सँ काट छलैन्ह। एम्हर–ओम्हर ताकि कय बजलीह–ओहि छौंड़ीक नाम नहि लियऽ। अरे बाप रे बाप ! एहन कलियुगाहि छौंड़ी! सासुर सँ दही–माछक भार लऽ कऽ जे भरिया आएल रहैक तकरा लेल अपने हाथ सँ तरकारी तरैत देखलिऐक ! आइकाल्हुक दुरगमनियाँ छौंड़ी सभ त ससुरवासो बेटीक कान कटै अछि। 'ऊपरक मने दाइ गे दाइ। तरक मन जे सासुर जाइ !'

सरयु दाइ कोनो अज्ञात कारणें अपना सासुर सँ बिरुझल छलीह। बजलीह–हम त दू वर्ष ओतय (सासुर) बसि आएल छी। तैयो कि एना करबैक ? कोनो कोढ़िया ने आबो ! हम कि अपना हाथ सँ भानस कऽ कऽ खोएबैक गऽ ? जरलाहा कैं खोरनाठ ने लगा देबैक !

विवाहिता स्त्रीकें मुँह सँ सासुरक विषय मे एहन शब्द सुनि प्रेमगर्विता तारा दाइ कनेक छवि कऽ कऽ सिहरि उठलीह। ताहि सँ हुनक ईयर–रिंग चमकि गेलैन्ह।

तारा दाइक ईयररिंग देखि भखराइनवाली बजलीह–बड़ बढ़िया गढ़नि छैक। कतेक बनल थिक ऐ दाइ !

तारा दाइ कनेक अगराइत उत्तर देलथिन्ह–ई त ओतुक्के (सासुरक) गढ़ल छैक। मुदा बड़ भारी छैक। आब तोड़ा कऽ दोसर बनबैबैक। आब कि भारी पहिरक फैशन छैक ?

परिहारपुरवालीक गर मे बेश मोट सूति रहैन्ह, प्रायः बीस भरि सँ कम नहि। हुनका अपने पर आक्षेप बूझि पड़लैन्ह। ओहो कटाक्ष करैत बजलीह–हँ, आब त सभ वस्तु हल्लुके नीक लगै छैक। भारी कि केओ चाहैत अछि ?

भखराइनवाली मखौलिया छलीह। बजलीह–ऐ दाइ ! तखन त कोनो–कोनो लोक कैं भारी कठिन।

पुहुपरानीक स्वामी बेश मोट–डाँट भारी–भरकम छलथिन्ह। तिनुकि कय बजलीह–''जकरा देह मे मांस नहि, सेहो कोनो लोक थिक ? (तारा दिस तकैत) खाली हड्डीए–हड्डी–हाथ पैरक सोर बहार–आँखि धँसल, गाल पचकल–कराँकुल सन गरदनि–एक बेरि फूँकि देब त खसि पड़य–एहन पुरुष कोन काजक ?''

भखराइनवाली बिहुँसि कय बजलीह–ऐ बहुरिया ! अहाँ कनेक्के मे देखार भऽ गेलहुँ। बात चललैक गहना पर, अहाँ लऽ ऐलहुँ पुरुष पर !

तारा दाइक स्वामी कालेज मे पढ़ै छलथिन्ह। अत्यन्त दुब्बर–पातर। पुहुपरानीक सभटा विशेषण हिनका पर चरितार्थ होइत छलैन्ह। अतएव तारादाइ मनहिंमन कटि कऽ रहि गेलीह। हुनक मनोभाव बूझि आवेशरानी पक्ष लैत बजलथिन्ह–से जे किछु कहथु, लेकिन मोट लोक कोनो लोक होइ अछि ? लदगोबर जकाँ थुलथुल करैत–पातिल सन धोधि बाहर कैने–फों फों करैत–मोटाइ सँ फटैत–चारि धुर मे पसरि कऽ बैसल–एहन भुसकाड़ सन देह भेनाइ भारी पापक फल !

अन्तिम वाक्य दुलारमनि पिउसिक कान मे पड़लैन्ह। स्थूल काय भेलाक कारणें सभ सँ पसरि कऽ बैह बैसलि छलीह। उपर्युक्त शब्द सुनैत देरी ओ फुफकार छोड़ैत आवेशरानी पर छुटलीह–''अयँ ऐ ! हमरा धोधि अछि तँ अहाँक आँखि मे किएक गड़ैए ? गलकी कैं धेघ सौदागर कैं बेथा ? हम मोटाइ सँ फाटल जाइ छी त अहाँक की फटै अछि ? की दऽ कहै छैक जे तेल जरै तेली कें...........!''

दुलारमनि पिउसिक गर्जन–तर्जन सुनि लालकाकी दौड़ल ऐलीह–''ऐ ! की भेलैन्ह अछि थइकी दाइ ?

दुलारमनि पिउसी ठोहरा कऽ बजलीह–''हैत की ? अहाँ बजा कऽ हमरा गंजन करबैत छी। हम पसरि कऽ चारि गोटाक जगह छेंकि कऽ बैसै छी, त हमरा हँकार किऐक देल ? एक त हमरा आबक मन नहि छल, जबर्दस्ती पलटोक माय धैने ऐलीह। और एतय अबितहि ब्रैसनाइक धुक्कम–फज्जति होमय लागल। की दऽ कहै छैक जे 'घरकी मे ठेलमठेला !'

एतबहि मे बड़ टहंकार सँ पूजाक गीत शुरू भऽ गेल–

नाचौंगी, मैं नाचौंगी।
रघुनन्दन के आगे नाचौंगी॥

  

पूजा आरती समाप्त भेला पर जखन स्त्रीगण गिलास मे प्रसाद लऽ कऽ जाय पर उद्यत भेलीह, तखन रेवतीरमण आबि कऽ कहलथिन्ह—"यदि दस मिनट समय भेटय त हम किछु निवेदन करी।" तदुपरान्त ओ स्त्री-शिक्षा पर एक छोट-मोट लेक्चर देमय लगलाह। इतिहास भूगोलक उपयोगिता बुझाबय लगलथिन्ह—"कतेको एहन छथि जनिका दिशाक ठेकान नहि, नदीक ज्ञान नहि, जंगल पहाड़क बोध नहि। जिनका शौक होइन्ह, से हमरा पास अबिहथि— हम नक्शा देखा देबैन्ह।" इत्यादि इत्यादि।

यावत धरि रेवतीरमण बजैत रहलाह तावत धरि स्त्रीगण अनासक्त योगीक समान सुनैत रहलीह। हुनका चुप्प होइतहि सभ केओ अपन-अपन गिलास लय उठि बिदा भेलीह। रेवतीरमण उत्तरक प्रत्याशा मे ठाढ़े रहलाह, तावत सभा उठि गेल।

देहरि लग पहुँचैत-पहुँचैत एक बूढ़ी बजलीह—सत्यनारायणक पूजा मे त ई विधि ककरो आङन होइत नहि देखने छलिऐक। तेल-सुपारीक बदला मे आब यैह सभ चललैक अछि। जीबी त की की ने देखी!

दोसर बूढ़ी बजलीह—हः हः! हमरा त अकच्छा कऽ छोड़ि देलक। होइ छल जे कखन चुप्प होएत। मारि अल्लबल्ल हँकने जाइ छल। हम त किच्छु नहि बुझलिऐक।

एक प्रौढ़ा बजलीह—ई नहि बुझलथिन्ह। हम त बुझलिऐक। हमरा लोकनि कैं दिसा-नदीक ठेकान नहि अछि से ओ सिखा देताह! एहि सँ भारी बात आब कोहन हैतैक? हम त काल्हि आबि कऽ माथ कैं उपराग देबैन्ह।

दोसर युवती बजलीह—ताहि पर सधोरि कहन जे जकरा सीखक शौक होइक से हुनके पास जाओ। माये-बहिन सँ मसखरी!

एहि तरहैं भरि बाट रेवतीरमणक समालोचना होइत गेलैन्ह।

घर मे बड़कागामवाली कहलथिन्ह—"की? गमैया गोष्ठी कोहन होइ छैक से आब बुझलिऐक? अहाँ चलल छलहुँ हिनका सभक क्लब खोलय! दुनू सार-बहनोइक बुद्धि एके रंग भेल? यदि बुच्ची दाइ कैं नचैबाक इच्छा हो, त बनारसे लऽ जैथीन्ह। एहिठाम ई सभ नहि चलत।"

महिला सभाक प्रथम अधिवेशनक रंग देखि रेवतीरमण कैं पुनः द्वितीय अधिवेशन करबाक साहस नहि पड़लैन्ह।

अन्ततः सर्वसम्मति सँ ई प्रस्ताव पास भेल जे रेवतीरमण बहिनोइक मन टोबऽक हेतु काशी जाथि।



[५]
'रोमांस'क अन्त

बिजली देखलन्हि जे 'एक अनाड़ी फतिङ्गा मँडरा कऽ जान देबा पर तुल अछि। दया कऽ कऽ एकरा निर्दयतापूर्वक झाड़ि देबक चाही, नहि त ई झरकि कय जरि जाएत।'

एक दिन बिजली सी० सी० मिश्र कैं अपना गाड़ी मे हवा खोआबक हेतु बहुत दूर लऽ गेलथिन्ह। मिश्र जी हवागाड़ी मे बैसल मनोरथक हवाइ जहाज पर उड़य लगलाह।

एकाएक बिजली कहलथिन्ह—अहाँक कविताक कापी हमरा हाथ लागि गेल अछि। यदि ओकर यथार्थ अधिकारिणी केओ दोसरि हो, त हम तकरे सौंपि दिऐक।

सी० सी० मिश्र एके संग भय, लज्जा, विस्मय, ओ आनन्द सँ अवाक रहि गेलाह। मन मे एलैन्ह जे—'ओहन-ओहन असंख्य कापी अहाँक चरणरेणु पर निछाउर अछि। अहाँक समक्ष हमर प्रेम-कविताक नायिका दोसर के भऽ सकै अछि?'

किन्तु एतेक कहबाक साहस नहि भेलैन। किछु लजायल सन भऽ कऽ बजलाह—"ओ अहीं कैं सादर समर्पित अछि।"

बिजली बजलीह—हम बुझै छी जे ओ कविता सभ अहाँ ?नरे लक्ष्य कऽ कऽ लिखने छी।

सी० सी० मिश्र कैं अपना सफाइक अपेक्षा अभियोगे मे अधिक रस भेटय लगलैन्ह। ओ 'मौनं स्वीकार लक्षणम्' सँ अपन दोष कबूल करय लगलाह।

बिजली हुनका मुँह दिस तकैत पुछलथिन्ह—हम ई जानक चाहै छी जे अहाँक प्रेमोद्गार केवल सोडावाटरक फेन थिक अथवा ओहि मे किछु ठोस सत्यो अछि?

सी० सी० मिश्र घिघिआइत बाजय लगलाह—एकर साक्षी त अन्तर्यामी परमेश्वरे छथि। यदि हृदय चीरि कऽ देखाओल जा सकितैक त सत्यासत्यक प्रमाण भेटि जाइत।

बिजली पूछि बैसलथिन्ह—अहाँ कैं हमरा प्रति प्रेम अछि कि वासना?

युवतीक एहन अद्भुत स्पष्टवादिता देखि सी० सी० मिश्र स्तम्भित रहि गेलाह। सिद्धान्तवादीक सुर मे बजलाह—हम त अहाँक प्रति ओहने शुद्ध आध्यात्मिक प्रेम रखै छी जेहन आराध्य देवताक पवित्र मूर्त्ति पर पूजक कैं श्रद्धा रहैत छैक। यदि हमर भावना

मे भौतिक विषय-वासनाक लेशोमात्र रहैत त अहाँक समीप अपन कलुषित छाया नहि पड़य दितैहि ।

युवती नारी हिनका गर्वोक्ति पर मुस्कुराइत एक तीक्ष्ण कटाक्ष फेंकि कऽ पुछलथिन्ह— अहाँ सरिपों-सरिपों फरिछा कऽ कहू त जे अहाँ केवल हमरा गुणे पर मुग्ध छी कि हमरा रूपो यौवन पर लुब्ध छी ?

सी० सी० मिश्र कें एहन कठिन रमणी सँ भेंट नहि छलैन्ह । ओ अपन आदर्शवादक रक्षा करैत कहलाह—आध्यात्मिक प्रेम मे त शारीरिक रूप-तृष्णा नहि रहैत छैक । यथार्थ सौन्दर्योपासक गुणक सौन्दर्य देखैत अछि, शरीरक नहि ।

बिजली चमकि कए पुछलथिन्ह—हमरा मे एहन कोण गुण भरल अछि जे उपासना करऽ योग्य हो ?

सी० सी० मिश्र—सभटा त तेहने गुण भरल अछि—विद्या, बुद्धि, संस्कार, उच्च विचार, सभ्यता, कला-कौशल, सरसता, मधुरता, कोमलता, शालीनता........।

बिजली देवी हठात मोटर रोकि कय कहलथिन्ह—चलू, सामने गंगातट पर बैसि कय बतियाइ जाएय ।

घाट पर बैसि कय बिजली कहय लगलथिन्ह—हँ, त आब एक-एक गुणक परीक्षा होबक चाही ।

''हम एम० ए० मे पढ़ैत छी; धाराप्रवाह अंगरेजी बाजि लैत छी । किन्तु ई त कोनो अलौकिक गुण नहि । हजारो पुरुष धुरझाड़ अँग्रेजी मे लेक्चर दैत अछि । एहि बेरि कालेजक डिबेट मे हम फर्स्ट भेलहुँ अछि । यदि एही कारणें अहाँ हमरा फोटो मे फ्रेम लगा कऽ राखै चाहै छी, त संगहि संग ओकर सभक फोटो किऐक नहि संग्रह करैत छी, जे सभ आन-आन साल डिबेट मे फर्स्ट भेल छल ?

''यदि अहाँ संस्कृति तथा समुन्नत विचारक पूजा करैत होइ, त एक सँ एक महानुभाव दार्शनिक विद्वान अपने विश्वविद्यालय मे भेटि जैताह जनिका चरण पर अहाँ अपना भक्तिक अर्घ्य समर्पित कऽ सकैत छिऐन्ह ।

''हमर शिल्पकला देखि कय अहाँ हमर प्रशंसक भेल छी । किन्तु यदि अहाँ कला-पारखी छी त ओहि बूढ़ कारीगरक लग किऐक नहि जाइ छी जे दीप लेसि कय आधा राति धरि सलमा-सितारा और कसीदाक काज मे अपन आँखि फोड़ैत रहै अछि ? एही शहर मे सैकड़ो एहन दर्जी भेटत जे कटाइ-सिलाइ मे हमरा सँ कतहु बेशी सिद्धहस्त हैत । किन्तु अहाँ ओकरा तारीफ मे एकोटा गजल कहियो बनौलिऐक अछि ?

''हमर बनाओल रसगुल्ला पर अहाँ कविता रचने छी । ''जनिका मृदुल करस्पर्श सँ छेना मे एतेक रस-माधुर्य आबि जाइत अछि—त स्वयं कहन मधुर ओ रसमयी होइतीह !'' किन्तु एही नुक्कड़ पर दमड़ी साहु हलुआइ स... दिन कऽ भरि-भरि कड़ौत रसगुल्ला तैयार करै अछि । अहाँ ओकरो हाथक प्रशंसा मे तेहने कविता किऐक नहि बनौने छिऐक?

''हमर विनोद-प्रियता तथा क्रीड़ा-कौतुक देखि त अहाँ कें 'निर्झरिणी, सरिता, बुलबुल, 'स्काइ लार्क' (एक पक्षी) प्रभृति ...न पड़य लगैत अछि । किन्तु सामने जे मलाहक धिया-पुता सभ ओतीकाल सँ पानि मे छपछप करैत चुभुकि रहल अछि तकरा दिस अहाँ कनडेरियो नहि तकैत छिऐक, से किऐक ?

''हमरा साइकिल पर अहाँ कविता बनौने छी जे 'ओहि पहिया सँ पिचाइयो गेने लोक कें सायुज्य मुक्ति प्राप्त भऽ जैतैक ।' किन्तु जे साइकिल-रिक्शावाला दू-दू गोटा कें खिंचैत दिन-राति साइकिल चलबैत अछि, तकरा सँ कनेक धक्का लगैत देरी अहाँक भौंह तनि जाइत अछि । तकर की कारण ?

''हमरा मोटर चलबैत देखि अहाँ 'विद्युद्गामिनी' कविता बनौने छी । किन्तु ओम्हर देखू । एक बड़का दाढ़ीवाला ड्राइवर ओहन ऊभड़-खाभड़ सड़क पर भूत जकाँ बेगहाश हकने जा रहल अछि । ओकरा पर अहाँ 'झंझावातगामी' कविता किऐक नहि बनबैत छिऐक ?

''हम टेनिस खेलैबा-काल अहाँक दृष्टि मे 'विश्वविजयिनी' प्रतीत होइ छी। किन्तु अहाँक अपने क्लब मे एक सँ एक धुरन्धर खेलाड़ी अछि, जकरा आगाँ हम नवसिखुआ जकाँ लागब । ओकरा सभक बोहि अहाँ किऐक ने पुजैत छिऐक ?

''हमर 'हारमोनियम' अहाँक मन हरि लैत अछि, 'जलतरंग' हृदय मे तरंग उठा दैत अछि, और 'बेहाला' बेहाल कऽ दैत अछि । किन्तु एही महल्ला मे उस्ताद बशीर खाँ हरएक बाजा बजैबा मे प्रवीण अछि । ओ हमरा भरि जन्म सिखा सकत । किन्तु ओकर वाद्यकला अहाँक हृत्तन्त्रीक तार कें कहियो तेना भऽ कऽ झंकृत नहि कऽ सकल जे अहाँ ओकरा पर 'वीणावादक' कविता बनबितिऐक ! से किऐक ?

''हमर नृत्यकला देखि अहाँक मन-मयूर नाचय लगैत अछि । किन्तु चौक पर एक अस्सी वर्षक कत्थक अछि जे एही कलाक उपासना मे अपन जन्म व्यतीत कैने अछि । ओकर दाढ़ी-मोंछ पाकि कय सउन सन उज्जर भऽ गेलैक अछि । तथापि नाचय काल ओ जे ठुमकी देखबैत अछि से नवयुवकक कान कटैत अछि । ओहि बूढ़ाक अङ्ग सञ्चालन देखिकऽ अहाँक तेहने भावोद्दीपन किऐक नहि होइत अछि ?

''क्षमा करब ! असल बात ई छैक जे अहाँ लोकनि केवल गुण पर नहि लोभाइत छी, लोभाइत छी नारीक सेक्स अपील (यौन आकर्षण) पर ! युवती अभिनेत्री कें थिरकैत देखि अहाँ कें होइ अछि जे तकिते रही। किन्तु एक वृद्ध नर्तक जँ ओहिना थिरकऽ लागय त अहाँ कें हैत जे ई कखन सामने सँ हटत ! हमरा हाथ मे रैकेट देखि अहाँ लट्टू भऽ जाइ छी, किन्तु वैह रैकेट कोनो पुरुषक हाथ मे देखि धन सन ! असल मे टेनिसक बॉल अहाँक मन कें नहि नचबैत अछि, नचबैत अछि कोनो दोसरे वस्तु !

''जाहि-जाहि गुणक अहाँ ओतेक बखानि कैने छी, से सभ गुण अछैत यदि हम दाढ़ी-मोछवाला पुरुष बनि जाइ त अहाँक सभटा रोमांस (रसिकता) तहिना विलीन भऽ जाएत जेना मोहिनीक लीला पर मोहित महादेव कें विष्णुक असली परिचय भेटि गेने सकल शृङ्गार-भावना तिरोहित भऽ गेलैन्ह।

''अहाँक ई 'रोमांस' तावते धरि अछि यावत धरि हमर रूप-यौवन देखि-देखि अहाँ लिहाइत छी। हमर जे-जे गुण अहाँ कें रिझा रहल अछि सैह सभ गुण वृद्धावस्था 'हरि गेने अहाँ कें खिझाबय लागत। तखन ने हमर नाच अहाँ कें सोहाएत, ने टेनिस। यदि काल्हिए कोनो दैवी दुर्घटना वा भयङ्कर रोग सँ हमर शरीर विकृत और अपरूप भऽ जाय, त फेरि हमर कतबो कोन बजौने अहाँ कें हमरा मे 'वीणा-पाणि सरस्वती' क भान नहि हैत और हमर कतबो नचने-कछने अहाँ कें 'शेली' तथा 'कीट्स' क पंक्ति नहि मन पड़त।

''अहाँ लोकनिक आकर्षणक केन्द्र-बिन्दु रहै अछि नारीक यौवन। ओ चुम्बक जकाँ अहाँ लोकनिक हृदय कें खींचि लैत अछि। युवतीक समक्ष होइतहि अहाँ लोकनिक आँखि पर रंगीन चश्मा लागि जाइत अछि, जाहि मे हरियरे हरियर सुझैत अछि। षोडशीक प्रत्येक कार्य अहाँ लोकनि कें 'मधुमय' बूझि पड़ैत अछि। ओ जेहे करै अछि से अहाँ लोकनिक दृष्टि मे कला बनि जाइत अछि !

''तरुणी जँ झटकि कय चलति त अहाँ लोकनि कहबैक— 'अहा ! केहन चंचला !' जँ नहूँ-नहूँ चलति त 'अहा ! की राजहंसीक समान मन्थर गति !' जँ मुसुकाइति त 'बिजली चमकि गेल'; जँ खिलखिला उठति त 'अमृत झहरि गेल!' जँ कानति त 'मोती झड़य लागल!' जँ बाजति त 'मिश्री घोराय लागल!' ओ जँ गौंओ-गौंओ सँ बाजति त अहाँ ओकर 'कोमलता' पर मुग्ध होएब। ओ जोर-जोर सँ बाजति त अहाँ ओकर 'शोखी' पर फिदा भऽ जाएब। यदि ओ बनलि-ठनलि रहति त अहाँ ओकर 'फैशन' पर लट्टू होएब; यदि मामूली तरहें रहति त अहाँ ओकर 'सरलता'

पर बिका जाएब ! यदि ओ सोझ भऽ कऽ गैंठी करति त अहाँ ओकर 'अल्हड़ता' पर मरब; यदि कनेक टेढ़ भऽ कऽ अँगैठी करति त अहाँ ओकर 'पोज' पर जान देब! यदि लाज कैलक त 'लाजवाली' कहाओति; लाज नहि कैलक त 'स्मार्ट' कहाओति! सहमलि रहलि त 'सुशीला' भेलि; निडर रहलि त 'वीराङ्गना' भेलि।

''नवयौवना कड़ा नजरि सँ तकै अछि त 'शान' कहबैत छैक; विमुक्त कय बजैत अछि त 'स्पिरिट' कहबैत छैक ! जौं फ. क सीढ़ी पर खटाखट उतरि गेल त 'तेजी' भेलैक, जँ बिलमि-बिलमि उतरलि त 'नजाकत' भेलैक ! जँ निहुरि कऽ चलति त 'अदा' कहौतैक; जँ सोझ भऽ कऽ चलति त 'बोल्डनेस' कहौतैक !

'गर्ल' क पाछाँ हजारो युवक 'गरल' पीबाक हेतु तैयार रहै छथि। हिनके लोकनि पर बङला मे एक पैरोडी बनल छैन्ह—

''आमार मृत्यु हय यदि गर्ल स्कूलेर गेटर तलाय !''

''षोडशी पानियों भरैत रहति त कवि कें कविताक मसाला भेटि जैतैन्ह। ओ स्नान कऽ कऽ बहराइति त चित्रकार कें तूलिकाक सामग्री भेटि जैतैन्ह। ओ रेल मे सफर करति त पुरुष यात्री कें नेत्र-रंजनक साधन भेटि जाइ छैन्ह। ओ जँ कनितो रहै अछि त रसिक पुरुष कें ओहि मे करुण रागिणीक रस भेटि जाइ छैन्ह। ओकर पसेना मे हुनका कस्तूरीक गन्ध भेटै छैन्ह। यदि ओ माथक दर्द सँ बेचैनो रहति तैयो विज्ञापनदाता कें चित्रक 'मॉडेल' भेटि जैतैन्ह। युवती की भेलि, पुरुषक खेलौना भेलि!

''युवती जे किछु करै अछि से ओकरा छजै छैक। यौवन काल मे सभ चाल कटगर लगै छैक। किन्तु वयस ढरने सैह सभ अनकच्छल बूझि पड़ै छैक। यौवनवती कें सौ खून-माफ; वृद्धा कें एकोटा नहि। रसलोलुप पुरुष कें गतयौवना पत्नीक 'शरबत' सँ बेसी नवयौवना प्रेमिकाक 'शरबत् वचन' मे रस भेटैत छैन्ह।

''सुन्दरी युवतीक पैर सँ पैर पिचा गेने कतेको पुरुष ओहि अल्हड़ता कें अपन भाग्य कऽ कऽ बुझताह, किन्तु वैह अल्हड़पना वृद्धा स्त्री सँ भेने तुरंत उपदेश देबय लगथिन्ह—''बूढ़ी ! केहन अवढङाहि छह ! सुझै छौह नहि ?'' युवती उघार-पुघार भऽ कऽ सूतल रहतीह त 'निर्विकार' कहौतीह और वृद्धा ओना रहतीह त 'अपचेष्ट' कहौतीह। यदि वृद्धा खिसिया कऽ बजतीह त 'खर्चांसनी' कहौतीह लोकनि तरुणी तमसा कऽ बजतीह त 'तेजस्विनी' कहौतीह; जे युवावस्थाक 'मस्ती', से वृद्धावस्थाक 'पागलपन' ! जे तरुणीक 'भोलापन' से वृद्धाक 'बुड़िबकड़' ! जे युवतीक 'विलाप' से बुढ़ियाक 'भभटपन' !

''साधारण सँ साधारण लूरि युवती मे देखि कऽ पुरुष-वर्ग कैं अमूल्य 'कला' बूझि पड़ैत छैन्ह । राड़-रोहिया सभ दिन राति भादवक भरल गंगा हेलि कऽ पार करैत रहै अछि तकर त मोजर नहि, किन्तु जौं एकटा तरुणी हेलि कऽ कनेक दूर गेलीह त हुनकर फोटो अखबार मे छपि जाइ छैन्ह । मलाह सभ बड़का-बड़का टा महाजाल बुनैत अछि तकर त कोनो चर्चा नहि, किन्तु युवती एक बीत डोराक जाली बुनलन्हि त प्रदर्शनी मे राखल जाइत छैन्ह !

''पुरुष बुझै छथि जे ओ कोनो तरुणी पर एहि द्वारे मुग्ध छथि जे ओकरा मे गुण छैक । किन्तु हम बुझैत छी जे पुरुष ओहि गुण पर एहि द्वारे मुग्ध छथि जे ओ गुण तरुणीक देह मे छैक ।

''हमर ई कथ्य नहि जे पुरुष खाली गुणक आदर नहि करै छथि । किन्तु हमर कथ्य ई जे छुच्छ गुण पर ओ नहि मरै छथि । पुरुषक गुण कैं ओ दाम दऽ कऽ किनै छथि, किन्तु तरुणीक गुण पर ओ बिनु दामे बिका जाइत छथि । पुरुषक कलाक मूल्य होइ छैन्ह 'प्रशंसा', नारीक कलाक मूल्य 'आत्म-समर्पण !' पुरुष कलाकार कैं जाहि कलाक पुरस्कार मे सर्टिफिकेट मात्र भेटतैन्ह, नारी कैं ताहि कलाक पुरस्कार मे 'नवधा भक्ति' भेटि जैतैन्ह !

'नारी-यौवनक सहयोग पाबि तुच्छो गुणक मूल्य तहिना बढ़ि जाइ छैक जेना अंकक सहयोग सँ शून्यक मूल्य बढ़ि जाइत छैक । और जहिना ओ तुच्छ शून्य ओहि अंकक मूल्य दस गुना बढ़ा दैत छैक, तहिना ओ तुच्छ गुण युवतीक आकर्षण कइक बर चमका दैत छैक । जेना शून्यक समूह 'वामाङ्क' पर पड़ने लाख बनि जाइत अछि, तहिना साधारणो गुणक समुदाय 'वामाङ्क' मे गेने लाख भऽ जाइत अछि ।

''ई सभ सेक्स इन्स्टिंक्ट (काम-प्रवृत्ति) क लीला थिक । पुरुष यथार्थ मे मोहित त होइ छथि स्वयं युवती पर, किन्तु से स्पष्ट कहबाक साहस नहि होइ छैन्ह। तखन प्रशंसा करऽ लगै छथिन्ह ओकर और-और गुणक । 'वाह ! सिलाइ केहन सुन्दर! रुमालक फूल केहन चिक्कन ! सूत केहन मेंही ! बुनिया केहन विलक्षण ! बाजा की मधुर ! चाय की अपूर्व !

''ई सभ प्रवंचना थिक । जखने पुरुष युवती मे गुण देखि कऽ प्रशंसा करऽ लागय तखने बूझक चाही जे ओ 'आधेय गुण' सँ अधिक 'आधार द्रव्य' पर लट्टू अछि। यदि केओ पुरुष शपथ खा कऽ हमरा कहय जे ओ केवल हमरा गुणे टा पर मोहित अछि, त हम बूझब जे या त ओ सरासर झूसि बजै अछि अथवा नपुंसक थिक।

'महात्मा' क नाम हम एहि द्वारे छोड़ि देने अछि जे आइ धरि केओ एहन महात्मा हमरा नहि भेटल छथि ।

''माफ करब । हम अहाँ पर व्यक्तिगत आक्षेप नहि करैत छी । पुरुष मात्रक ई स्वभाव होइत छैन्हि ।''

  

मिस बिजलीक प्रगल्भतापूर्ण यथार्थवाद सँ सी० सी० मिश्रक गर्भाड़ 'आदर्शवाद' क धज्जी उड़ि गेलैन्ह । हुनक 'आध्यात्मिक प्रेम' क पताका नीचा खसि पड़लैन्ह। ओ आब अपन हरैत-डगमगाइत सिद्धान्तवादक भीत मे ठोंगर लगाएब व्यर्थ बुझलन्हि।

किन्तु सायंकालीन सरिता-तट पर एकान्त स्थान मे युवतीक संग विश्रम्भालाप सँ हुनका भावुकता उद्दीप्त भऽ उठलैन्ह । मुक्तहृदया युवती सँ घनिष्ठता-पूर्ण गप्प कैं एक अलभ्य लाभ बूझि, ओ एहि नारी मित्रक आगाँ अपन हृदय खोलि कऽ 'आत्मनिवेदन' करय लगलाह । आद्योपान्त अपना विवाहक उपाख्यान कहि सुनौलथिन्ह ।

सम्पूर्ण वृत्तान्त कहि गेला पर सी० सी० मिश्र बिजलीक सहानुभूति प्राप्त करबाक उद्देश्य सँ पुछलथिन्ह-कहू ! केहन दुःखान्त नाटक ! एहि मे ककर दोष अहाँ दैत छिऐक ?

बिजली कहलथिन्ह-ओहि गमार लड़कीक ।

मिश्रजी जवा दऽ निसास छोड़ैत बजलाह-अहाँ जौं ओहि लड़कीक स्थान मे रहितहुँ त एहना परिस्थिति मे की करितहुँ ?

बिजली तड़ दऽ जवाब देलथिन्ह-हम ओहन स्वार्थी पुरुष कैं 'शूट' कय दितिऐक।

सी० सी० मिश्र जे पासा फेंकने छलाह से उनटे पड़ि गेलैन्ह ! ओ झमा कऽ आकाश पर सँ खसि पड़लाह । बूझि पड़लैन्ह जेना कौशलमयी रमणीक पेंच मे पड़ि कऽ ओ अचानक पटका गेल होथि !

बिजली तमकि कऽ बजलीह-विवाहक बाद लड़की कैं नापसंद करबाक अहाँ कैं कोनो हक नहि । ई हक पाणि-ग्रहण सँ पहिने छल । बिनु जँचने-बुझने हाथ धऽ लेलिऐक से अहाँक अपन बेवकूफी भेल । एहि मे लड़कीक कोन कसूर ? अपना गलतीक खातिर अहाँ ओहि लड़की कैं दण्ड नहि दऽ सकै छिऐक । यदि हम ओहि लड़कीक स्थान मे रहितहुँ त अहाँ कैं नाके सूत पानि पिया कऽ छोड़ि दितहुँ । तखन अहाँ कैं स्त्रीक प्रति अभद्रतापूर्ण व्यवहार करबाक साहस नहि होइत ।

सी० सी० मिश्र सिटपिटाइत बाजय लगलाह–"हम आजीवन स्त्री-समाज मे शिक्षाक ज्योति जगेबाक हेतु संन्यास ग्रहण करबाक संकल्प कैने छी और ....।"

बिजली बात कटैत कहलथिन्ह– अहाँ अपने घर मे शिक्षाक ज्योति नहि जगा सकब त अनका घर मे की जगैबक ? और हमरा सामने संन्यासीक ढोङ नहि रचू। अहाँ सन-सन सैकड़ो युवक संन्यासी कैं हम अपना कनगुरिया आङुरक इशारा पर नचा सकैत छी । मानि लिअऽ एखने जौं हम अहाँक संकल्प तोड़बाक संकल्प करी, त के जीतत ? अहाँ कि हम ? अहाँ हमरा लऽ कऽ रहब कि अपन ब्रह्मचर्य लऽ कऽ?

सी० सी० मिश्र एहन मधुर प्रश्नक हेतु तैयार नहि छलाह । प्रश्नक सरसता सँ हुनका सौंसे देह मे गुदगुदी लागऽ लगलैन्ह । मन मे बजलाह–"अहाँक आगाँ त स्वर्ग, मोक्ष और त्रैलोक्यक सम्पदा तुच्छ थिक । एहि क्षुद्र संन्यासक कोन कथा !" किन्तु युवती सरिपहुँ पूछै छथि वा हँसी करै छथि से निश्चय नहि कऽ सकलाक कारण ओ चुप्पे रहलाह ।

बिजली एकाएक गम्भीर बनि कहय लगलथिन्ह–हमर त ई सिद्धान्त अछि, जे कोनो पुरुष कैं अपन 'स्वामी' नहि बनायी । हँ, योग्य पुरुष कैं देखि 'जीवन-सङ्गी' बना सकैत छी । किन्तु ओ कोनो बात मे हमरा ऊपर हुकुम नहि चला सकत और ने हमरा व्यक्तिगत विषय मे बिनु पुछने दखल दऽ सकत ।

सी० सी० मिश्रक मन मे त ऐलैन्ह जे–'अहाँक तरबो रगड़बाक सौभाग्य प्राप्त भेने लोक स्वर्ग तरि जायत !' प्रकाश्यत: बजलाह–अशिक्षिता स्त्रीक 'स्वामी' भेलाक अपेक्षे त अहाँ सन सुशिक्षिता महिलाक 'सेवक' बननाइ लाख कच्छे नीक ।

बिजली देवीक ठोर पर कनेक कठोर मुस्कुराहट दौड़ि गेलैन्ह । बजलीह–धन्य, हमर औरो सब शर्त त पहिने सुनि लिअऽ ।

सी० सी० मिश्र मन मे कहलन्हि–अहाँक सभटा शर्त बिनु सुनिनहि हमरा मंजूर अछि । दुधार गायक लथारो नीक लगै छैक ।

बिजली बजलीह–पहिने हम जे-जे गुण पुरुष मे जोहैत छी से सभटा अहाँ मे अछि कि नहि ? ई त बूझी ! अच्छा, अहाँ बौक्सिंग (मुष्टिप्रहार कला) मे त निपुण होएब ?

सी० सी० मिश्र अफसोस करैत बजलाह–नहि, घुस्साक प्रैक्टिस त हम नहि कैने छी ।

बिजली कठोर स्वर मे बजलीह–हम त एहन पुरुष कैं चाहैत छी जे स्त्री पर जोर-जुलुम करयवाला गुंडा कैं एके वज्रमुष्टिक प्रहार सँ धराशायी कऽ सकय । अच्छा, अहाँ राइडिङ (अश्वारोहण) मे त प्रवीण होएब ?

सी० सी० मिश्र विषण्ण स्वरसँ बजलाह–नहि घोड़ा पर चढ़बाक मौका त हमरा नहि भेटल अछि ।

बिजली तिरस्कारपूर्वक बजलीह–हम त एहन पुरुष कैं पसंद करै छी जे बदमाश सँ बदमाश अरबी घोड़ा कैं सरि कऽ कऽ घंटा मे दस माइलक चालि सँ सरपट दौड़ा सकय । अच्छा, शूटिंग (बन्दूक चलायब) मे त अहाँ सिद्धहस्त हैब ?

सी० सी० मिश्र अप्रतिभ होइत बजलाह–नहि, बन्दूक चलैबाक अभ्यास त हमरा नहि अछि ।

ई सुनि बिजली देवी अत्यन्त भर्त्सनापूर्ण स्वर मे बजलीह–छि: छि: ! एहन मर्द की जे बन्दूक नहि चला सकय ! हम त ओहने मर्द कैं मर्द बुझैत छी जे बाघक मुँह मे फायर करयवाला हो । जे एकटा गोली नहि चला सकय, तेहन नामर्द कैं त गोली मारि देबक चाही !

ई कहि बिजली सी०सी० मिश्रक कविरावली कैं हुनका आगाँ फेंकैत चमकि कऽ विदा भेलीह और फुर्र दऽ अपन मोटर उड़बैत चलि जाइत रहलीह । एको बेर पाछाँ घुरि कय तकबो नहि कैलथिन्ह !

बेचारे सी० सी० मिश्र पराजित सैनिक जकाँ अपन उपेक्षित 'प्रेमकाव्य' उठौलन्हि और अछितबैत-पछितबैत, अप्पन सन मुँह कैने चारि कोस दूर डेराक बाट धैलन्हि।

चंचला युवतीक संग हवाखोरीक मजा आब बहराय लगलैन्ह । जहिना आनन्द सँ आएल छलाह तहिना खिसिऔर करैत फिरय लगलाह । हुनक सरस छायावाद रौद देखैत बिला गेलैन्ह और रसिकता सिकता मे मिलि गेलैन्ह ।

बिजलीक निष्ठुर वज्राघात सँ सी० सी० मिश्रक कल्पना-महल चूर-चूर भऽ गेलैन्ह ।



[६]
शिक्षाक 'प्रोग्राम'

मिस बिजली कें छकैबाक हेतु सी० सी० मिश्रक पेट मे हर बहय लगलैन्ह। कखनो होइन्ह जे व्यायामशाला मे जा कऽ बौक्सिंग प्रैक्टिस करी। कखनो होइन्ह जे एक बढ़ियाँ घोड़ा लऽ कऽ मैदान मे सवारीक अभ्यास करी। कखनो होइन्ह जे गंगाक ओहि पार जा बन्दूक चलैबाक रेयाज करी। ई सभ त नहि भेलैन्ह, लेकिन घुड़सवारी, फुलबाजी और शिकार पर जतेक किताब युनिवर्सिटी लाइब्रेरी मे भेटलैन्ह से सभटा एक दिस सँ पढ़ि गेलाह। एहि विषयक सूचीपत्र पर्यन्त नहि छोड़लन्हि।

बिजलीक एक-एक मर्मभेदी वाक्य हुनका सालय लगलैन्ह। सभ सँ बेशी ई बात लगलैन्ह जे "अहाँ पहिने अपना घर मे त शिक्षाक ज्योति जगाउ!" मिश्रजी अपना मन मे कहलन्हि-बिजली आखिर अपना कैं बूझै छथि की? ई बड़ लौं छथि त हमहूँ देखा दैत छिऐन्ह!

मिश्रजी एही संकल्प-विकल्प मे पड़ल छलाह कि हठात रेवतीरमण आबि पहुँचलथिन्ह। रेवतीरमण किछु सिहरल सन भऽ कऽ कहय लगलथिन्ह-गाम मे महिला-क्लब वा बुच्चीदाइक समुचित शिक्षाक आयोजन हैब त असंभवे जकाँ बुझना जाइछ। तेँ हम एतय आयल छी। आब जे अहाँक आदेश हो से हमरा लोकनि करक हेतु तैयार छी।

सी०सी० मिश्रक जतेक खीस बिजली पर छलैन्ह से सभटा रेवती पर उतारय लगलथिन्ह। रेवती त विपक्ष पार्टि पोषक हेतु जी-जान अर्पित कऽ आयल छलाह। अपन सभटा दोष सकारैत, दण्डक हेतु माथ ओंरि देलथिन्ह। एहि सँ मिश्रजीक अत्यन्त तप्त पारा सेराइत-सेराइत किछु ठंढा भेलैन्ह।

तदनतर गम्भीर भाव सँ विचार-विमर्श होमय लागल। मुख्यतः तीन टा प्रश्न उठल-(१) बुच्ची दाइ कैं कतेक दूर धरि शिक्षा देल जाइन्ह? (२) कतय राखि कऽ शिक्षा देल जाइन्ह? (३) कोन रूपें शिक्षा देल जाइन्ह?

प्रथम प्रश्नक सम्बन्ध मे एक वृहत् योजना तैयार भेल।

बुच्ची दाइ कैं योग्य बनैबाक हेतु निम्नलिखित विषय निर्वाचित भेल :-

(१) हिन्दी (२) अँगरेजी, (३) संस्कृत, (४) गणित, (५) इतिहास (६) भूगोल, (७) हाइजिन (स्वास्थ्य-विज्ञान), (८) पाक-शास्त्र, (९) शिल्पकला, (१०) संगीत, (११) फिजिकल कल्चर (खेलकूद ओ व्यायाम), (१२) एटिकेट (शिष्टाचार)।

हिन्दीक हेतु निम्नोक्त 'सिलबस' (पाठ्यक्रम) निर्धारित भेल-

[१] व्याकरण और रचना-(क) शब्द विवरण, (ख) लिंग, वचन और कारक, (ग) वाक्य-रचना, (घ) क्रियापद (विशेषतः 'ने' चिह्नक प्रयोग), (ङ) अनुवाद (मैथिली सँ हिन्दी), (च) पत्र-लेखन, (छ) निबन्ध-रचना, (ज) अन्वय-व्याख्या-भावार्थ-लेखन, (झ) शब्द-संग्रह, (ञ) मुहाविरा और लोकोक्ति, (ट) संस्कृत गर्भित वाक्यांश, (ठ) उर्दू अल्फाज।

[२] गद्य साहित्य-(क) उपन्यास, (ख) कहानी, (ग) नाटक, (घ) प्रहसन, (ङ) गद्य काव्य, (च) जीवन-चरित, (छ) समालोचना, (ज) विविध विषयक लेख (भ्रमण-वृत्तान्त आदि)।

[३] पद्य-साहित्य-

(१) प्राचीन कविता

[तुलसी, सूर, कबीर, विद्यापति, मीराबाई, वृन्द, रहीम, रसखान, देव, केशव, मतिराम, पद्माकर, बिहारी, भूषण, गिरिधरराय, भारतेन्दु इत्यादि।]

(२) अर्वाचीन कविता

['हरिऔध', मैथिलीशरण, 'सनेही', 'त्रिशूल', रामचरित उपाध्याय, माखन लाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, पन्त, 'निराला', 'बच्चन', 'वियोगी', 'द्विज', 'दिनकर', 'आरसी', इत्यादि।]

(३) उर्दू कविता

[मीर, दाग, आतिश, गालिब, नासिख, अकबर, बिस्मिल इत्यादि।]

[४] विविध साहित्याङ्ग-(क) रस, (ख) पिंगल, (ग) अलंकार, (घ) साहित्य-विवेचन, (ङ) हिंदी साहित्यक इतिहास।

एकरा अतिरिक्त सामयिक साहित्यक प्रगति सँ परिचित होएबाक हेतु 'सरस्वती', 'माधुरी', 'सुधा', 'चाँद', विशालभारत', 'विश्वमित्र', 'हंस' प्रभृति मासिक पत्रक सम्पूर्ण फाइल।

केवल एके सबजेक्ट (विषय) क तालिका देखि रेवतीरमणक पिलही चौंकय लगलैन्ह। मिश्रजी एतबा दया कैलथिन्ह जे 'पृथ्वीराजरासो', 'सूरसागर', 'कबीरक साखी', 'जयशंकर प्रसादक नाटक', तथा 'पन्त', 'निराला' और महादेवीक छायावाद रूपी आदक रसास्वाद बुच्ची दाइ कें करबाक हेतु बेशी वाद-विवाद नहि कैलथिन्ह।

हिन्दीक अध्याय समाप्त भेला पर अँगरेजीक काण्ड शुरू भेल। एतेकाल धरि रेवतीरमण साहस कैने छलाह, किन्तु जखन सी० सी० मिश्र धड़ाधड़ शेक्सपियर, मिल्टन, वर्ड्सवर्थ, शेली, कीट्स, ब्राउनिंग, टेनीसन, हार्डी, डिकेन्स, थैकेरे, बर्नर्डशा, इबसेनक नाम लेबय लगलथिन्ह, तखन धैर्यक बान्ह टूटि गेलैन्ह। ओ मन मे विचारने छलाह जे बुच्चीदाइ कें अँगरेजी मे मामूली बातचीत तथा चिट्ठी-पत्री करबाक हेतु थोड़ेक 'ग्रामर', 'कम्पोजिशन' और 'ट्रान्सलेशन' सिखा देने काज चलि जैतैक। किन्तु सी० सी० मिश्र कहलथिन्ह जे अँगरेजीक 'जर्नल-मैगजीन' पढ़ि कऽ बुझबाक योग्यता होयब जरूरी छैन्ह। रेवतीक बहुत जोर लगौला पर सी०सी० मिश्र एतेक रेयायत कैलथिन्ह जे चौसर (प्राचीन अंग्रेजी कवि) क कविता ओमिट कऽ (हटा) देलथिन्ह और इंगलिश प्रोसोडी (अंग्रेजी पिंगल) बुच्ची दाइक हेतु ऑप्शनल कऽ (अपना इच्छा पर छोड़ि) देलथिन्ह।

आब संस्कृतक पारो आयल। रेवतीरमण कें पहिनहि सँ छाती धड़कय लगलैन्ह जे कतहु बुच्चीदाइ कें पाणिनीय व्याकरणक सूत्र नहि रटय पड़ैन्ह। किन्तु सी० सी० मिश्र कें अपनहि 'सिद्धान्त कौमुदी' नहि पढ़ल छलैन्ह। अतएव ईश्वरचन्द्र विद्यासागरकृत 'सरल व्याकरण' पर्याप्त बुझल गेल। ताहू मे उणादि धातु, अणादि प्रत्यय, जुहोत्यादि गण, यङ्लुङन्त क्रिया, लिट् लकार, और निपातन समासक फाँस सँ बुच्चीदाइक गरदनि छोड़ा देल गेलैन्ह। मिश्रजी एतेक उदारता देखौलथिन्ह जे रघुवंश, कुमारसंभव, किरातार्जुनीय, शिशुपालवध, नैषधचरित, शकुन्तला, उत्तर-रामचरित, स्वप्नवासवदत्ता, मृच्छकटिक, कादम्बरी ओ दशकुमारचरितक स्थान मे केवल 'हितोपदेश', पञ्चतन्त्र', 'चाणक्यनीति', 'अमरकोश' और 'दुर्गासप्तशती' पर 'स्वच्छन्द' दऽ देलथिन्ह। कालिदास, भारवि, भवभूति, माघ, दण्डी, श्रीहर्ष, भास तथा बाणभट्ट सँ बुच्चीदाइक पिंड छूटि गेलैन्ह।

आब गणितक झमेला उठल। रेवतीक मन रहैन्ह जे चारू सरल नियम, ऐकिक नियम, त्रैराशिक और व्यवहारगणित सिखा कऽ बुच्ची दाइक जान बकसि देल जाइन्ह। किन्तु सी० सी० मिश्र 'अर्थमेटिकक' संग-संग 'ज्यामेट्री' और 'अलजेब्रा' पर अड़ि

गेलाह। रेवतीक बहुत घिघिऐला पर अंकगणित मे आवर्त दशमलव तथा चक्रवृद्धि ब्याजक हिसाब छोड़ि देलथिन्ह; रेखागणित मे २९ म साध्य सँ आगाँ, और बीजगणित मे सर्ड ओ ग्राफ माफ कऽ देलथिन्ह।

भारतवर्षक इतिहास वैदिक युग सँ लऽ कऽ ब्रिटिश शासन पर्यन्त सम्पूर्ण। इंगलैण्डक इतिहास मे प्रथम जार्ज सँ पूर्वक अंश 'छूट' देल गेलैन्ह। किन्तु तकरा बदला मे बुच्ची दाइ कें फ्रान्स, जर्मनी, रूस ओ अमेरिकाक क्रान्ति पढ़य पड़तैन्ह। संगहि-संग आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति फाव मे!

भूगोल मे एशिया-यूरोप सांगोपांग। अफ्रिका, अमेरिका और आस्ट्रेलियाक नकशा मोटा-मोटी। भिन्न-भिन्न देशक रहन-सहन, रीति-रिवाजक ज्ञान प्राप्त करबाक हेतु मिश्रजी कें 'लैंड्स एण्ड पिपुल्स सीरीज' बहुत उपयुक्त बुझि पड़लैन्ह।

'हाइजिन' (स्वास्थ्य-विज्ञान) मे बेशी तूल फजूल नहि भेलैन्ह। केवल निम्नलिखित विषयक तालिका बनल—

स्वास्थ्य-रक्षा—दिनचर्या, रात्रिचर्या, ऋतुचर्या, दाँत और कानक सफाइ, वासस्थानक विचार—दूषित जलवायुक परिष्कार—कीटाणु सँ रक्षा—संक्रामक रोगक प्रतीकार।

आहार-विज्ञान—भोजन-तत्त्व-मीमांसा, पौष्टिक खाद्य ओ विटेमिनक वर्णन—दूध और फलक महत्त्व—खोइया ओ भुस्सा-चोकरक गुण।

शरीर-विज्ञान—अस्थिपिंजर, मस्तिष्क ओ स्नायुजाल, हृदय ओ श्वासयन्त्र, नाड़ी ओ रक्त-संचालन क्रिया, अँतड़ीक कार्य तथा मल-निःसरण।

प्रारम्भिक उपचार तथा शुश्रूषा—मलहमपट्टी, सेंक, पुलटिस, मालिश, फुचकारी, रोगी कें ठीक ढंग सँ लघी-नदी ओ स्नान कराएब, सुताएब तथा खोआएब—टेम्परेचरक चार्ट बनाएब, भिन्न-भिन्न प्रकारक पथ्य तैयार करब—अकस्मात चोट लगला, छिलैला, कटैला वा पकला पर तात्कालिक चिकित्सा।

धात्री-विद्या—गर्भविज्ञान, प्रसवक वैज्ञानिक तरीका, प्रसूतिकाक रक्षा, स्त्री-रोगक लक्षण तथा चिकित्सा, सन्तानक रक्षा, शिशु-पालन, बाल रोगक निदान तथा उपचार।

पाक-कलाक हेतु सी० सी० मिश्र अँगरेजी खानाक 'कैटलग' (सूची) जोड़य लगलाह। किन्तु रेवतीरमण कें आब नहि रहल गेलैन्ह। कहलथिन्ह—''अंगरेजी खाना खैबाक हो त कोनो बावर्ची राखि लेब। आब ई त नहि होयत जे हमर बहिन 'अंडाक

पुडिंग' तैयार करैत।'' शनै शनै कऽ हिन्दुस्तानीए खाना पर बुच्ची दाइ कें 'फारखती' भेटि गेलैन्ह। किन्तु सी० सी० मिश्र 'बङ्गला स्टाइल'क खाना पसन्द करैत छलाह। तैं 'डालना', 'चच्चरी भाजा', 'इलिश माछेर टक', 'चिङरी माछेर कटलेट', 'हाँसेर डिमेर चप' तथा 'रसोगोल्ला' बुच्ची दाइक कोर्स मे सम्मिलित भऽ गेलैन्ह।

शिल्प-कला मे 'रुमाल', पर्दा, 'टेबुल क्लाथ', 'ब्लाउज', 'शेमीज', 'फ्रौक', 'अंडरवियर', 'मोजा', 'पुलओवर', 'स्वटर'—एतेक त अनिवार्य बूझल गेल। 'पशु-पक्षी' तथा 'फूल-पत्ती' काढ़ब बुच्ची दाइ कें अपना शौक पर छोड़ि देल गेलैन्ह।

आब 'संगीत'क चलल। सी० सी० मिश्र बुच्ची दाइ कें सिखैबाक हेतु निम्नलिखित रागिणीक नाम संकलित कैने छलाह—

भैरव, मालकोश, असावरी, टोरी, कालिंगड़ा, जोगिआ, खम्माच, पुरिया, बिलावल, पीलू, ईमन कल्याण, भीमपलासी, तिलक कामोद, दरबारी कान्हड़ा, इत्यादि।

एहि मे प्रत्येकक सरगम, आरोह-अवरोह, वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी मात्रा, लय, ताल अलाप, तान, पकड़, ध्रुपद, ख्याल, टप्पा ओ ठुमरी समेत।

एतेक सुनि रेवतीक तेहन अवस्था भऽ गेलैन्ह जाहि मे 'मलार' गायब कठिन बूझि पड़ैत छैक।

अन्ततोगत्वा बहुत महोजरो कैला पर केवल 'भैरवी', 'विहाग', ' बागेश्वरी', 'देश' ओ 'काफी' पर मामिला फरिछा गेल। बाजा मे केवल 'हारमोनियम' और 'बेहला'। तबलाक 'ताधिन् धिन्न' ओ सितारक 'तुम तन नन' सँ बुच्चीदाइक पिंड छूटि गेलैन्ह।

'एडिशनल सबजेक्ट' (अतिरिक्त विषय) मे निम्नलिखित वस्तु बुच्ची दाइक हेतु आवश्यक बूझल गेलैन्ह—

स्वास्थ्य-सौन्दर्यक हेतु कइएक तरहक 'एक्सरसाइज' (व्यायाम) तथा 'स्विमिंग' (हेलनाइ); फुर्ती ओ तेजीक हेतु 'टेनिस' तथा 'रोपडान्स' (पैर तर रस्सी नचौनाइ); 'स्मार्ट' बनक हेतु 'साइकिल' और 'मोटर' हकनाइ; 'अप-टु-डेट' बनबाक खातिर 'स्टाइल' सँ साड़ी पहिरनाइ और 'भद्रमहिला' बनक हेतु सभ्य-समाजक 'एटिकेट' (शिष्टाचार)।

एवं प्रकार बुच्ची दाइ कें 'योग्य' बनैबाक हेतु विस्तृत योजनाक निर्माण भेल।

आब दोसर-तेसर प्रश्न पर विचार होमय लागल। बहुत तर्क-वितर्कक अनन्तर निश्चय भेल जे काशिए मे मकान भाड़ा लऽ कऽ बुच्ची दाइ कें पढ़ाओल जाइन्ह। किन्तु स्कूलक निम्न कक्षा मे नाम लिखौने छोट-छोट बच्चीक संग बैसि कऽ पढ़य

पड़तैन्ह, जाहि सँ लज्जा बोध करतीह। तैं डेरे पर पढ़ैबाक प्रबन्ध होइन्ह।

तखन पर प्रश्न उठल जे पढ़ौतीन्ह के? सी० सी० मिश्र कहलथिन्ह जे ''और सब विषय त हम अपने पढ़ा देबैन्ह। किन्तु संगीत, शिल्पकला, पाकशास्त्र तथा धात्री-विद्याक हेतु शिक्षिका राखय पड़त।''

आब ई 'बजट' बनय लागल जे बुच्ची दाइ कें एतय रखबा मे खर्च कतेक पड़त। बुच्ची दाइ एकसरि त रहतीह नहि। संग मे एक और स्त्री रहब आवश्यक छैन्ह। एक टहलनी वा नोकर रहबे करतैन्ह। भानस-भात मे लगतीह त पढ़बाक बहुमूल्य समय ओही मे नष्ट भऽ जैतैन्ह। अतएव भनसीओ जरूरिए छैन्ह। परिवारक रहबा योग्य मकानक भाड़ा तीस-चालिस टका सँ कम नहि। मोटा-मोटी हिसाब कैला पर देखलन्हि जे डेढ़ सै टका मास सँ कम मे गुजारा नहि। तत्काल मे प्रयोजनीय पाठ्य-पुस्तक तथा बाजा आदि किनबा मे चारि पाँच सै टकाक खर्च अलावे!

ई आर्थिक समस्या हल कोना होए? एहि विषय मे सी० सी० मिश्र उदारता क परिचय देलन्हि। सार कें कहलन्हि—''अहाँक भार एतबे जे ओतय सँ पठा दिऔन्ह। एतऽ ऐला पर जे खर्च पड़त से हमर। हँ, डेरा-डंडाक सलतनत अहाँ कें लगा देबऽ पड़त।'' मिश्रजी मनहि मन हिसाब कऽ देखलन्हि जे 'टाइम्स' मे लेख देने और 'ट्युशन' द्वारा एतबा रुपयाक ब्यौंत होएब कठिन नहि।

आब ई प्रश्न उठल जे बुच्ची दाइ औतीह कोना? और हुनका संग रहतैन्ह के? बहुत तारतम्यक उपरान्त ई निश्चय भेल जे भाद्र पूर्णिमा के चन्द्रग्रहण लगैत छैक; ताही साथें लालकाकी बेटी कें नेने काशी आबथि। तावत एहि ठाम डेरा ठीक भेल रहय। और लोक सभ ग्रहण-स्नानक बाद घर जाथि; किन्तु लालकाकी बेटीक संग मास करक ब्याज सँ एतहि रहि जाथि। तदनन्तर पाछाँ बूझल जैतैक।

रेवतीरमण अपना माय कें पत्र पठौलन्हि, जाहि मे सी० सी० मिश्रक आशय जनबैत लिखलथिन्ह जे चिट्ठी देखैत ग्रहण-स्नानक हेतु काशी अबैत जाउ।

आब विचार कें कार्यान्वित करबाक यत्न होमय लागल। दुनू सार बहिनोय मकानक तलाश मे विदा भेलाह। सी० सी० मिश्रक आन्तरिक अभिप्राय रहैन्ह जे गंगाकात मे डेरा लेल जाय, जाहि सँ बुच्चीदाइ कें हेलनाइ सीखऽ मे सुभीता होइन्ह। अतएव असी घाटक समीप एकटा छोटछीन मकान चुनलन्हि। ओहि मे और बात सभ त मन मोताबिक भेटलैन्ह, किन्तु आङन बैडमिंटन खेलयबा योग्य नहि। तथापि दस टका अगार दऽ कऽ डेरा लेल गेल।

सी० सी० मिश्र कें आब भनसीयाक फिकिर भेलैन्ह । यदि बङला खाना बनाबऽवला रसोइया भेंटि जाय त 'एक पंथ दुइ काज' । संयोगवश मालदह जिलाक एक 'ठाकुर' भेंटि गेलैन्ह जे बीस वर्ष धरि ढाका, मुर्शिदाबाद ओ मैमनसिंह जिला मे पाककलाक 'ट्रेनिंग' पौने छल । मिश्रजी बीस टकाक मास पर तकरा नियुक्त कैलन्हि।

एक दिन दशाश्वमेध घाट पर सी० सी० मिश्र कें एक मधुर स्वर-लहरी सुनाइ पड़लैन्ह । पुछारी केला पर ज्ञात भेलैन्ह जे एक भगतिनी दाइजी नित्य एहिठाम आबि कऽ गंगा-पूजन ओ भजन करै छथि । भगतिनीजीक अपूर्व शोभा ओ ठाट-बाट देखि मिश्रजी चकित रहि गेलाह । भगतिनीजीक स्वरूप अत्यन्त भव्य; मुखमण्डलक दिव्य कान्ति । गोर दगदग शरीर पर लाल रेशमी साड़ी खिलैत । भरल-पूरल अंग देखि ई अन्दाज करब कठिन जे ओ बाइस वर्षक थिकीह वा बत्तीस वर्षक वा बेयालिस वर्षक। भगतिनीजी मस्त भऽ कऽ बैसलि तानपुरा पर एक भजन गबैत छलीहि–

'जखन चरण गंगाजीक धैलहुँ आनक की दरबार !'

दर्शकवृन्द मन्त्रमुग्ध जकाँ ठाढ़ भय भगतिनीजीक संगीत-सौन्दर्य-रस पान करैत छलाह । ओहि मे कतेक एहनो श्रद्धालु भक्त छलाह जे भगतिनीजी कें साक्षात भगवतीक अवतार बुझैत छलथिन्ह ।

भगतिनीजीक चन्दन-चर्चित चन्द्रमा सन चमकैत ललाट, पृष्ठदेश मे भूमि पर छितराएल एक पाँज कारी केश, मांसल वक्षःस्थल पर सोनक तार मे गाँथल रुद्राक्ष-माला; सभ मिलि एक तेहन अद्भुत रसक सृष्टि करैत छल जाहि मे शान्त और शृंगार गंगा-यमुना जकाँ मिलि एकाकार भऽ जाइत छल ।

भजन समाप्त भेला पर भगतिनीजी लट छिटकौने अपन चाँदीक गंगाजली ओ फुलडाली उठौलन्हि और खसक खुशबू सँ घाट-बाट कें मँह-मँह करैत विश्वनाथजी पर बेलाक गजरा चढ़ायक हेतु चललीह ।

सी० सी० मिश्रक हृदय भक्ति और श्रद्धा सँ परिपूर्ण भऽ उठलैन्हि । ओहो विश्वनाथजीक मन्दिर धरि गेलाह । ओतय भगतिनीजीक पूजनक ठाट-बाट देखि मिश्रजी और चकित रहि गेलाह । विचारलन्हि जे जौं ई भगतिनीजी कतहु बुच्चीदाइ कें गायन-वादन सिखाएब गछि लेथि त घीओ सँ बेशी चिक्कन !

एक घंटाक बाद भगतिनीजी मन्दिर सँ बाहर भेलीह और डेरा दिस चललीह। मिश्रजी हुनक पछोहि धैने कचौड़ी गली मे एक मकानक सामने ऐलाह । भगतिनीजी भीतर पैसि गेलीह; मिश्रजी बाहर थकमकाय लगलाह ।

दस मिनटक भीतर एक खवास आबि कहलथीन्ह जे माइजी अन्दर बजा रहल छथि । मिश्रजी पनही उतारि किछु धखाइत भीतर गेलाह ।

आब देखै छथि त दोसरे ठाठ-बाट । बेशकीमती ईरानी कालीन पर कामदार मखमली मसनद सँ ओङठलि भगतिनीजी गोमुखी मे हाथ देने जप कऽ रहल छथि!

पेयाजी सिल्कक खुलला जम्पर सँ रुद्राक्षक दाना झलकैत छलैन्ह । तरकुन जकाँ डगडग करैत गुदगर देहक चमकैत अङोट पर गेंजिक छाप बिहारीलालक शब्द मे 'दृगपग पायन्दाज' बनल छलैन्ह । सिंदूर-आभूषण बेत्रेक ओ सोलहो शृंगारवाली सोहागिन कें मातु करै छलीह ।

भगतिनीजी मिश्रजी कें किछु संकुचित जकाँ देखि सहज वात्सल्य स्नेह सँ अपना लग बैसा, परिचय पूछय लगलथिन्ह । मिश्रजीक अभिप्राय सुनि ओ बजलीह–"बच्चा, हम त केवल गंगाजी और विश्वनाथजी कें छोड़ि ककरो ओहिठाम जाइ छी नहि । हरिविष्णु हरिविष्णु; । यदि अहाँक स्त्री कें हमरा सँ किछु सिखबाक होइन्ह त एतहि कहियो काल कऽ आबि जैहथि । हरिविष्णु हरिविष्णु : ।"

भगतिनीजीक सामने योगवासिष्ठ और पानदान दुनू राखल छलैन्ह । भगवद्गीताक पुस्तक पर बनारसी जर्दाक डिबिया तथा कान मे तुलसीदलक संग-संग मोतियाक फाहा देखि ई अनुमान करब कठिन नहि जे भगतिनीजी योग तथा भोग मार्गक गठ-बन्ध मे कय विलक्षण संयोग कैने छथि ।

भगतिनीजी प्रसाद-स्वरूप चाँदीक वर्क मे लपेटल गंगाजल सँ सिक्त पानक खिल्ली सी० सी० मिश्रक आगाँ बढ़ा देलथिन्ह । मिश्रजी भक्तिपूर्वक माइजीक प्रसाद ग्रहण करैत उठि बिदा भेलाह । नीचा ऐला पर देखैत छथि जे जूता गायब । किन्तु पुछारि करबाक साहस नहि भेलैन्ह । खालीए पैताबा पहिरने गलीक मोड़ पर ऐलाह और ताङा कऽ कऽ डेरा पहुँचलाह ।

संगीत-शिक्षिकाक जोह करबाक खुशी मे मिश्रजी कें नव 'फ्लेक्स शू' हेरबाक मोह नहि रहलैन्ह । आब ओ एक होशियार 'मिडवाइफ' (धात्री) क टोह मे बौआय लगलाह । एक ठाम पता लगलैन्ह जे कबीरचौरा गलीक मोड़ पर एक मेम रहै अछि जे लंडन सँ 'मिडवाइफरी' (धात्री-विद्या) पास कैने अछि ।

मेम एक अंग्रेजी होटलक ऊपर मे रहैत छलि । सी०सी० मिश्र एक बेहराक हाथें अपन 'कार्ड' पठा देलथिन्ह । कनेक काल मे बजाहटि भेलैन्ह । सी०सी० मिश्र

ऊपर गेलाह । 'परमिशन' (अनुमति) लऽ, चिक हटा कऽ भीतर गेलाह । मेम सोफा पर बैसलि मोजा बुनैत छलि । हिनका देखि कुर्सी पर बैसबाक इशारा करैत पुछलकैन्ह–''गुडमॉर्निङ, क्या कहना माङटा है, बाबू ?''

सी०सी० मिश्र तेहन लटपटाइत जकाँ अपन उद्देश्य कहलथिन्ह जे ओकरा दोसरे अर्थ लगलैक । कहलकैन्ह–''तुम्हारा 'वाइफ' का पास जाना होगा । हमारा फीस एक टाइम का बीस रूपी ।''

सी०सी० मिश्र सलाम कऽ कऽ जहिना नीचा उतरक हेतु बिदा भेलाह कि मेम बाट छेकि कऽ ठाढ़ भऽ गेलैन्हि–''सुनो बाबू ! हमारा कन्सल्टेशन फी पाँच रूपी है सो डेटा जाव ।''

आब मिश्रजी कें ऊपर टाङल साइनबोर्ड पर नजर पड़लैन्ह– कन्सल्टेशन फी रुपीज फाइव।'

मेमक 'बुलडॉग' कें अपना दिस तकैत देखि सी०सी० मिश्र मनीबेग सँ एकटा पँचटकही नोट बाहर कैलन्हि और जान छोड़ा कऽ नीचा सड़क पर ऐलाह ।

डेरा पर पहुँचि रेवतीरमण कें कहलथिन्ह–''आब अहाँक बहिन एतय पहुँचतीह, तखने सभटा प्रबन्ध लगतैन्ह । एखन 'गाछे कटहर ओठे तेल' कैने कोन फल ?''



[७]
तीर्थयात्रा

भादवक पूर्णिमा कें चन्द्रग्रहण छिऐक । लालकाकी एहि बेरि सदलबल काशी जैबाक न्यार कैने छथि । दल में रहथिन्ह डुनमुन काकी, बुच्चीदाइ, अवधेशरानी, भखराइनवाली तथा ज्योतिषिआइन । बल में रहथिन्ह– भोलानाथ झा, बटुकजी तथा पं० नमोनाथ झा ।

दशमीक रात्रिशेष में भुरुकबा उगला पर लालकाकी प्रभृति गोसाउनिक सीर में गोर लागि, पूर्णकलश तथा दही देखि, 'जय गणेश' - जय गणेश' करैत, घर सँ बहराइत गेलीह । जहिना देहरि नँघै छथि कि डुनमुनकाकीक नेना छीकि देलकैन्ह । लगले सभ गोटा पाछाँ फिरैत गेलीह और भोलानाथ शान्तिपाठ करय लगलाह ।

पं० नमोनाथ झा पत्रा में सिद्धियोग ताकि, एक दिन पहिनहि यात्रा कऽ एक जोड़ ननउ ज्योतिषिआइनक चार में खोंसि आएल रहथि । किन्तु एखन चलय काल कतबो टोइया मारला पर नहि भेटलैन्ह । अन्त में हारि-दारि कय ''गणानां त्वा गणपतिवं हवामहे'' करैत बिदा भेलाह ।

गामक लोक कें ओ टोकय नहि, ताहि डरें सड़क छोड़ि एकपेरियाक बाट धैल गेल । झोलफोल्ह में नीक जकाँ नहि सुझबाक कारण ज्योतिषिआइनक पैर एक बेर थाल में पड़ि गेलैन्ह । ओ ठेहुन धरि पाँक में धँसि गेलीह । डुनमुनकाकी नव रेशमी साड़ी पहिरि कऽ चलल रहथि । ओ थाल-कीचक डरें खेतक आड़ि पर दऽ कऽ चलय लगलीह । किन्तु एक ठाम तेहन पिच्छर रहैक जे हुनक पैर छोहिलि कऽ आगाँ चलि गेलैन्ह और ओ चितङ्ग खसि पड़लीह । आड़िक कोँगनी पर सँ ओ नीचा खेत में ओंघड़ा गेलीह । चोट त बेशी नहि लगलैन्ह, किन्तु साड़ी कादो में लेढ़ा गेलैन्ह।

एकठाम माछ बझैबाक हेतु अरसी-टपका लागल रहैक । बटुकजी कें फुरलैन्ह जे यात्रा पहर माछ देखि लेबाक चाही । ओ ओहिठाम जा जहिना पानि में पैसय लगलाह कि एकटा ढोंड़ साँप कें बहराइत देखि 'बाप-बाप' करय पड़ैलाह । रास्ता मे एक नढ़िआ बाट काटि देलकैन्ह ताहि सँ ओ और भयभीत भऽ उठलाह ।

एवं प्रकारे भिनसर होइत-होइत यात्रीक दल सकुशल सकरी स्टेशन पर पहुँचि गेल । भोलानाथ झा कहलथिन्ह–''एखन गाड़ी आबऽ में बहुत देरी छैक । तावत सभ

गोटे पोखरि सँ भऽ अबै जाउ । एतहि मुँह-हाथ धो नहा-सोना कऽ बखेड़ा छोड़ीने रहब से नीक हैत । तावत हम और पं० जी एहिठाम बैसि कय अगोरैत छी ।''

बटुकजी सभ स्त्रीगण कें लऽ कऽ पोखरि दिस बिदा भेलाह । ओतय सभ गोटा कें बेरबेरी कुड़ुर-आचमन करैत, नहाइत धोइत सूर्योदय भऽ गेलैन्ह । लालकाकीक विचार भेलैन्ह जे नुआ सुखौनाहि चली । तुनमुन काकी अपन रेशमी साड़ी पखारय गेलीह, लेकिन कदवाह पानि मे भखोरने और भदरङ्ग भऽ गेलैन्ह । तखन खिसिया कऽ भीड़ पर पसारि देलथिन्ह । जा नुआ सभ सुखाइ छलैन्ह, ता लालकाकी, आवेशरानी ओ भखराइनवाली आनन्दक उमङ्ग मे गीत उठा देलथिन्ह–

बाबा विश्वनाथ दर्शन पर नैना लागि रही हमरी ।

एम्हर गीत प्रारम्भे भेल छल कि तावत ओम्हर स्टेशन पर घंटी टनटनाएल । भोलानाथ झा हड़बड़ा कऽ बजलाह–''जाह ! गाड़ी चलि अबै अछि । पं० जी, अहाँ दौड़ू ! झटकि कऽ सभ कें नेने अबियौक । तावत हम टिकट कटबै छी ।''

पं० नमोनाथ झाक पैर मे बेमाय फाटल रहैन्ह । तैं ईंकड़ी बचबैत-बचबैत बड़ी कालें पोखरिक घाट पर पहुँचलाह । ओतय देखै छथि त बड़े टहंकार सँ गीत चलि रहल अछि । पं० जी चिचिया कऽ बजलाह–''ब ब ब बटुकजी !''

किन्तु बटुकजी भरि डाँड़ पानि मे ''अघमर्षण सूक्तस्याघमर्षण ऋषि'' क टाङ तोड़ैत छलाह ।

पं० जी पुनः जोर सँ चिचिया कऽ बजलाह–''च च च चलै चलू । घ घ घ घंटी पड़ि गेलैक ।''

किन्तु गीतगाइन सभ अपना-अपना सुर मे मस्त छलीह । केओ हिनका दिस ध्यान नहि देलेकैन्ह ।

भखराइनवाली पं० जीक स्त्री रहथिन्ह और फुचुकरानी भाभहु । अतएव पं० जी ओहिठाम जैतथि कोना ? फेर फराके सँ बाजय लगलाह–''अहाँ लोकनि एतय क क कजरी गबै छी, ओम्हर ग ग गाड़ी छोड़ने अछि ।''

लालकाकी गबैत-गबैत, हाथक इशारा सँ हुनका रोकि, गीतक अन्तिम पद पुरौलन्हि, तखन पुछथिन–''आब की कहै छी से कहू ।''

पं० जी बजलाह–''ग ग ग ग गाड़ी च च च च चल..''

तावत तुमुल ध्वनि सँ सभ कें हड़हड़बैत मद्यः रेलगाड़ी अपना आगमनक सूचना दऽ देलकैन्ह !

आब त हाँलमालि उठि गेल । लालकाकी माथ पिटैत बजलीह–''दैव रे दैव!

आब कोन उपाय हैतैक ? बाट-बाट मे गाड़ी छूटि गेल । आब फुचुकरानी नीक जकाँ अपन पटोर सुखबैत रहथु ।''

अपने पटोर पर सभटा दोष थोपाइत देखि तुनमुनकाकी एक आँजुर धाल लऽ कऽ ओहि मे झपटय गेलीह । किन्तु आवेशरानी बिच्चहिं मे थाम्ह-थेघा कऽ लेलथिन्ह।

बटुकजी अड़पोछा गरैत बजलाह–''मड़नी मे देखैत-देखैत ट्रेन छूट गेल । आब दिन भर हिंए बैठ कऽ तानारीरी करैत रहू !''

ई लोकनि जा स्टेशन पहुँचथि-पहुँचथि ता गाड़ी फूजि गेल'।

भोलानाथ झा बटुकजी दिस तकैत बजलाह–''तों एहन भारी पिंडरलोको छह से हमरा नहि जानल छल ! खाली सानिमाठ मे गाड़ी छूटि गेलीह । बाट मे कतहु एतेक टोंडठोप भेलय !''

बटुकजी अपन सफाइ दैत बजलाह–''हम त पहिले ही कहलिऐन जे गाड़ी के टैम लगिचाएल है; फुर्ती करै जाउ । लेकिन हिनका सबकें त भासे चढ़ावे से न फुरसत रहैन । हमर बात के सुनैअऽ ?

पं० नमोनाथ झा कहलथिन्ह–''हम त जखने स स सिकन्दर खसल देखलिऐक तखने बुझलौं जे आइ स स सोड़हो दण्ड एकादशी स स सकुड़ीए मे करय पड़त।''

भोलानाथ झा अफसोस करैत बजलाह–''हमरो सँ एकटा बुड़ित्व भऽ गेल जे हड़बड़ी मे दस टा टिकट कटा लेलिऐक । आब जोड़ि कऽ देखैत छी त नौए टा लोक अछि ।''

लालकाकी बजलीह–''हमरा लोकनिक संग-संग कर्मो ने लागल छथि । तिनको एकटा टिकट कटा गेलैन्ह । नहि त एहन कतहु भेलय जे पाछाँ सँ आबयवला लोक सब चढ़ि कऽ चलि जाय और हमरा लोकनि जे अन्हरोखे सँ अगोरने छी से मुँह तकैत रहि जाइ !''

'सभ धर्मात्मा पार उतरि गेल, पापी रहल किनारे ।'

पं० नमोनाथ झा बजलाह–''फ फ फेर गीतक पद होमय लागल । कतहु द द दोसरो गाड़ी ने छूटि जाय !''

भोलानाथ सब कें लऽ जा कऽ एक मोदियाइनक दोकान मे बैसौलन्हि । पं०जी और ज्योतिषिआइन कें त एकादशीए रहैन्ह । औरो लोक सभ अफसोसक मारे नहि खेलक । गामक नमहा चूड़ा, टटका दही और भेली गुड़ केवल बटुकेजी कें पेट भेलैन्ह।

६ घंटा पहिनहिं सँ सभ गोटे प्लेटफार्म पर बैसि दुबज्जी गाड़ीक प्रतीक्षा करय लगलाह । भोलानाथ झा बारम्बार बटुक जी कें बुझाबय लगलथिन्ह–''जहिना गाड़ी लगैक तहिना तों छड़पि कऽ जनानी डब्बा फोलिहऽ और हिनका लोकनि कें ओहि

मे बैसा दिअहुन । तावत हम और पं० जी दोसरा कोठरी मे सभटा वस्तु चढ़ौने रहब। पाछाँ तोहूँ आबि कऽ ओहि मे चढ़ि लिहऽ ।''

बटुकजी कहलथिन्ह–''अहाँ मइआ भर फिकिर न करू । हम एसगरे कुल असबाबो चढ़ा लेब और तिनका सबके बैठाइयो देबैन । अहाँ दुनू गोटे तीन जगह खुशफैल बुझाय तीन जगह बैठ जायब ।''

निर्दिष्ट समय सँ पाँच घंटा लेट कऽ कऽ गाड़ी अबैत दृष्टिगोचर भेल । यात्री दल सुगबुगाय लगलाह । किन्तु अभाग्यवश ई लोकनि जाहि सामने बैसल रहथि ताहि सँ चारि लग्गा आगाँ बढ़ि कय गाड़ी लागल । आब त हड़बिड़री उठि गेल । पहिलुक सभटा प्रोग्राम गड़बड़ा गेलैन्ह ।

बटुकजी भरकछ धोड़ि कय पेटी उठौलन्हि और दुलकी लगबैत बजलाह–''सभ कोनें एक-एक टा चीज लेके हमरा पीछे दौड़ल आउ ।''

आब जकरा आगाँ मे जे पड़लैक से उठा कऽ दौड़ऽ लागल ।

बटुकजी ओ भोलानाथ सभ सँ आगाँ बढ़ि गेलाह । लालकाकी और बुच्चीदाइ हुनका पैरें लागल गेलथिन्ह ।

हुनमुनकाकी दहीक कोहा लऽ कऽ दौड़य लगलीह ! किन्तु गांझनौट मे दूहू पैर फँसि गेने कोहा नेने देने मुँहे भरें खसि पड़लीह । अढ़ाँचीक बुकनी छीटल छल्हिगर दही प्लेटफार्म पर किचकाहिन भऽ गेलैन्ह । हुनका उठाबक हेतु आवेशरानी ठाढ़ि भऽ गेलीह ।

ज्योतिपिआइन तथा भखराइनवाली आगाँ बढ़ि गेलीह कि पाछाँ रहलीह से पता नहि । पं० नमोनाथ झा फिफहिया भऽ हुनका खोजय लगलथिन्ह ।

तावत एँजिन सीटि दऽ देलकैक । आब के कत्तह चढ़ल तकर कोनो ठेकान नहि रहल ! गाड़ी चलय लागि गेल ।

बटुकजी अपना डब्बा मे तजबीज करैत बजलाह–''लें बलैया ! देखू धन्धा ! चार गो मेहरारू एह मे चढ़बे न कैलन ! पंडितोजी बुझाइअऽ छूट गेलन ।''

ई सुनितहिं छिछरी-पटिया उठि गेल । ''दैबा रे दैबा ! केहन कुयात्रा मे चलल छलहुँ से नहि जानि ! आब कोन उपाय हैतैक ?'' ई कहि लालकाकी घेओना पसारबा क सुर-सार करय लगलीह ।

भोलानाथ धड़फड़ा कऽ जंजीर खिचबाक हेतु सुरफुरैलाह । किन्तु बटुकजी कहलथिन्ह–''अहाँ सब नाहक घबराएल छी । हम सौंसे मूड़ी बाहर कऽ कऽ देखलीहऽ। लाटफारम पर कोनो न छूटल है । ऊ सब पं० जी के जौरे दोसरा कोठरी मे चढ़ गेल होएतन ।''

ई सुनि सभ गोटा कें किछु धैर्य भेलैन्ह । लालकाकी मनहिंमन कुलदेवता कें गोहरबैत कबुला करय लगलीह जे ''एहि संकट सँ उबरला पर कुमारि कें 'मधुगाएन' भोजन कराएब ।''

भोलानाथ बजलाह–''चलैत काल एकटा टिटही बाजि देने रहय । हम त तखने कहलहुँ 'बिनु कारण टिटही नहि बाज !' आब देखा चाह की-की होइ अछि !''

लालकाकी सभ सँ बेशी अपना देयादिनीक हेतु अपस्यांत होइत अहुरिया काटय लगलीह । बजलीह–''सभ गोटाक आँखि पर पाथर पड़ि गेल । गे बुचिया ! तोंहू त देखिलहुन ?''

बुच्ची दाइ कहलथिन्ह–''हमरा त हुनके नेना कें कोरवाही करैत-करैत विपत्ति! ताहि पर तोहरबला साजी और गंगाजली हमरे हाथ मे । लदफद होइत कोनो तरहें तोरा सभक पाछू धैने ऐलियैँ । बटुक भैयाक पैर मे जुमनाइ मुश्किल ! पाछाँ फिरि कऽ देखक की होश रहय ?''

यावत धरि गाड़ी चलैत रहल तावत धरि लालकाकीक प्राण अवग्रह मे पड़ल रहलैन्ह । 'दड़िभङ्गा' पहुँचैत देरी बटुकजी और भोलानाथ कूदि कऽ बहरैलाह ।

बगलवला कोठरी मे फुचुकरानी और आवेशरानी पुक्की फाड़ि कऽ कनैत छलीह। अपना पुरुष-पात कें देखि कनहु मे प्राण ऐलैन्ह । दूनू लालकाकीक लग आबि नोर पोंछा चुअबऽ लगलीह । लालकाकी भरि पाँज धऽ कऽ कहलथिन्ह–''हे दाइ सभ हे दाइ सभ ! तोरा बिनु आँखि हेराएल छल हे दाइ सभ ! ओइल-पाइल मे मन छल जे की करू । भरि बाट लाया-फरभी होइत ऐलहुँ अछि ।'' ई कहि लालकाकी आँचर सँ आँखि पोछय लगलीह ।

भोलानाथ झा बजलाह–''आब एहि कन्ना-रोहट सँ कोन फल ? और-और लोकक पता लगाबक चाही ।''

तावत पं० नमोनाथ झाक स्वर कर्णगोचर भेल–''औ कत्तहु भ भ भोला बाबू......''

भोलानाथ बजलाह–हँ, हँ, यैह, यैह ।

पं० जी भखराइनवाली तथा ज्योतिपिआइन कें नेने पहुँचि गेलाह । हतासें सभक प्राण सुखाएल छलैन्ह ।

अपना संग-समाज कें पुन: जुटल देखि लालकाकी बजलीह–''धन्य भगवान! बड़ रक्ष राखलन्हि । नहि त आइ कोन दशा मे रहितहुँ ?''

जखन सभ बैसैत गेलीह, तखन मोटरी-चोटरीक हिसाब होबय लागल ।

हुनमुनकाकी डेराइत-डेराइत कहलथिन्ह-''दहीक बासन त हमरा बुतें फूटि गेलैन्ह ।''

बटुकजी कें सकरी मे दुइयें टा दही भेटल छलैन्ह, ताहि सँ कनेक छुछुआएले जकाँ उठल रहथि । बजलाह-''ओह ! जनितौं त हुँअइ खूब ठेल कऽ खा लीतौं । छुच्छे चिउड़ा सं गड़ा लगैत रहे सं और लेत्रे न कैलौं, और मङनी मे सब दही टीसने पर जियान हो गेल ।''

ओ दही लालकाकी बड़ यत्न सं धैरने रहथि । कनेक अभिरोष करैत बजलीह-''हम अपने हाथ मे नहि लेलहुँ तकर फल थिक ।''

हुनमुनकाकी ठोर बिजुका कऽ बाजऽ लगलीह-''हे दिनकर ! जौं हम जानि-बुझि कऽ फोड़ने होइऐन्ह त हमरा काया मे घुन लागय, हमर समाङ नहि काज आबय...।''

आवेशरानी हुनका मुँह पर हाथ धैरैत कहलथिन्ह-''हाँ ! हाँ ! शपथ कंओ खाय ? दही कोन वस्तु छैक ? लोक रहल चाहय ।''

लालकाकी ठकुआ कऽ बजलीह-''सैह कहथु बहिना ! हम की कहने छलिऐन्ह जे एतेक लगलैन्ह ? हम त यैह बजलहुँ जे अपने हाथ कऽ किऐक ने लेलहुँ । ई कि कोनो गारि भेलैक ?''

एकाएक भोलानाथ कें अपन छाता मन पड़लैन्ह । बजलाह-''आह ! हमर छत्ता की भेल ? हौ बटुकजी ! हम तोरे हाथ मे देखने रहियौह ।''

बटुकजी कहलथिन्ह-''हम त पेटी उकायेबके बखत छत्ता हुँअइ रख देने रही। आब हुँआँ से कोन सार उठैलक से न मालूम ।''

पं० नमोनाथ झा बाजय लगलाह-''हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ ! ग ग ग ग गारि नहि दिऔक । ह ह हमहीं उठा कऽ रखने छी ।''

एवं प्रकारें खोज-पुछारी होइत-होइत अन्ततोगत्वा पता लगलैन्ह जे और सभ वस्तु त सकरी मे चढ़ि गेल, लेकिन एकटा मोटरी ओतहि छूटि गेल जाहि मे सभ गोटाक भीजल नूआ लपेटि-सपेटि कऽ बान्हल रहैन्ह; फुचकरानीक पटोरो ओहि मे रहैन्ह । ओ ठोर पटपटबैत बजलीह-''ततेक ने 'पटोर', 'पटोर' भेल जे पटोर जाइते रहल ! नीक भेलैक ।''

भखराइनवाली रसगुल्ला कोरक तिनपड़िया साड़ी कें लाल रंग मे कुंडाबोर कऽ रङने रहथि । से दुइयो दिन नहि पहिरि सकलीह । शाप दैत बजलीह-''ओ मोटरी जे नेने होए तकरा भगवान भोग नहि दिहऽथिन्ह ।''

ज्योतिषिआइनक फेरल साड़ी फाटल-पुरान जकाँ रहैन्ह । कहलथिन्ह-''जाय दियऽ । तीर्थ-यात्रा मे जे वस्तु हेरा जाय, तकर बेशी सोच नहि करक चाही ।''

पं० नमोनाथ झा बजलाह-''प प प प प्रथमग्रासे मक्षिका पातः' भऽ गेल । आगाँ त च च च चेति कऽ चलक चाही ।''

समस्तीपुर पहुँचला पर सभ गोटे उतरैत गेलाह । मालूम भेलैन्ह जे दस बजे राति कऽ गाड़ी भेटत । बटुकजी कहलथिन्ह-''अभी त पाँचे बाजल है । इतना देर प्लाटफारम पर बैठ कऽ की करब ? मुसाफिरखाना मे चलें चलू ।''

किन्तु भोलानाथ झा कहलथिन्ह-''एतेक वस्तु-जात लऽ कऽ मुसाफिरखाना जाएब और फेरि लौ कऽ आनब ताहि मे त बड़ भीड़ पड़ै जाएत । जखन गाड़ी लगतैक तखनहि चलि कऽ सभ गोटे बैसऽ जाइ । ओहि बेरक हड़बड़-दड़बड़ नहि ठीक।''

पुल पार कय निर्दिष्ट स्थान पर बटुकजी बड़का सतरंजी खोलि बिछौलन्हि। लालकाकी प्रभृति बैसैत गेलीह । तीनू पुरुष किछु फराक हटि कम्बल पर बैसलाह।

भोलानाथ बटुकजी कें कहलथिन्ह-''हौ ! आइ तोरा छोड़ि कऽ सभ निराहारे छथुन्ह ! आबहु त उपवास-भंग करबहुन ।''

ज्योतिषिआइन बजलीह-''हम आइ एकादशी कैं कऽलक पानि की पिउब? अहाँ लोकनि खाउ-पिबै जाउ ।''

पं० नमोनाथ झा बजलाह-'' हँ, से त हमरो एहिठाम फ...फ... फलाहार करबाक प्रपन्नता नहि होइत अछि, तथापि क.....क.....कनेक किछु लऽ कऽ 'उपवास-खण्डन' कऽ लेब ।''

लालकाकी चङेरी खोलि कऽ साँच, पिड़ुकिया, टिकरी और भुसबा बाहर करय लगलीह । बटुकजी एक तमघैल पानि कल सँ लय ऐलाह । स्त्रीगण कें त सहल पेट सं अधिक नहि खा भेलैन्हि । किन्तु बटुकजी बड़ी काल सँ सोन्हाएल छलाह । चङेरा मे जतेक साँच और भुसबा बाँकी बचलैक से चूरमूर समेत अपना आगाँ मे उझीलि, डाला झाड़ि कय ब्रह्मक पूजा करय लगलाह ।

भोजन सँ करीब डेढ़ घंटा बाद बटुकजीक पेट मे दर्द उठलैन्ह । टटाएल ठकुआ और सुखाएल आमक फाँड़ा अँतड़ी कें ऐंड़य लगलैन्ह । ओ कच्छ-मच्छ करय लगलाह।

भोलानाथ कहलथिन्ह-''जा, एक बेर नदी दिस सँ भऽ आबह । पेट खुलासा भेने मन हल्लुक हैतौह ।''

बटुकजी एक लोटा पानि लऽ अन्हार माथे बिदा भेलाह ।

थोड़ेक काल मे बटुकजी आबि कोइलाक छाउर सँ हाथ मटियबैत

बजलाह–''हमरा त कुथ्था शुरू भ' गेल है। निठल्के पानी झरल है। हे लिउ, फेर खींच मारे लागल।''

ई कहैत बटुकजी पुनः कान पर जनउ चढ़बैत जेम्हरे सँ आएल रहथि ताही दिस फेरि झटकैत विदा भेलाह।

दुइये मिनट बाद एक रेलवे कर्मचारीक शब्द सुनाइ पड़ल–''कौन है?'' तदनन्तर किछु हल्ला गुल्ला ओ धड़पकड़ जकाँ बुझि पड़ल। बटुकजी खाली हाथ डोलबैत पहुँचलाह। अपन बुधियारी देखबैत बजलाह–''लोटा त सार छीन लेलक, लेकिन हम अपने केहुना कऽ निकस ऐलौं।''

भोलानाथ खिन्न भऽ बजलाह–''विघ्न पर विघ्न उपस्थित भेल जा रहल अछि। भगवतीक की इच्छा छैन्ह से नहि जानि!''

पं० नमोनाथ झा हुनक समर्थन करैत श्लोक पढ़य लगलाह–

''एकस्य दुःखस्य न या या या या......''

हुनक कष्ट देखि भोलानाथ झा पूर्ति कऽ देलथिन्ह–

''.......... यावदन्तम्,

गच्छाम्यहं पारनिर्वाणकस्य!

तावद्द्वितीयं समुपस्थितं मे,

छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति॥

तावत टप-टप बुंद पड़य लागल। गाड़ी ऐबाक घंटी पड़ि गेल रहैक तँ ओहिठाम सँ हटबाक उपाय नहि! अगत्या आँगण भीजय लगलीह। तीन पुरुष मे एकेटा छाता रहैन्ह; अतएव ओ लोकनि और बेशी भिजैत गेलाह। दस मिनटक भीतर सभक कपड़ा भीजि कऽ शरीर मे सटि गेलैन्ह। ज्योतिषिआइनक साँसे देह जाड़ सँ भुलकय लगलैन्ह।

तावत कटिहारक एक्सप्रेस ट्रेन प्लेटफार्म कें दलमलित करैत धड़धड़ाइत आबि पहुँचल। ग्रहणक कारण ओहि मे ठसाठस भीड़। भीतर तिल रखबाक जगह नहि, और बाहर दुइ कात लोक बादुर जकाँ लटकल!

गाड़ीक त ई हाल और प्रत्येक डब्बाक सामने हाँजक हाँज मुसाफिर चढ़क लेल सतुआ-सम्मर बन्हने, फाँड़ कसने तैयार! ई 'रेड़ं बहेड़' देखि भोलानाथक होश गुम भऽ गेलैन्ह। हताश भऽ बजलाह–''बटुकजी! आब की होबक चाही?''

बटुकजी कहलथिन्ह–''हमरा पेट मे त बिपता सन्हियाएल छथ। एखनीओ हूर मारिअऽ। न त कोनो अक्किल हम जरूर लगेती।''

पं० नमोनाथ कहलथिन्ह–''नइँ होए त ई ट्रेन छोड़ि कऽ दोसरा ट ट ट ट्रेन सँ चलै चलौ।''

भोलानाथ म्लान भऽ बजलाह–''दोसरा ट्रेन मे त अइ सँ बेशी रेड़ा पड़ैत रहत। जौं एहि गाड़ी सँ नहि जा सकलहुँ त बूझू जे काशी नहिए पहुँचि सकब।''

ई सुनितहिं स्त्री-वर्ग मे घोर निराशा व्याप्त भऽ गेल। ज्योतिषिआइन जोर सँ निसास छोड़ैत टेर लगौलन्हि–''हे बाबा, कोनो तरहें डोरी खींचह; पार घाट लगाबह।''

लालकाकी बजलीह–''अही द्वारे हम भुकैं छलहुँ जे दू दिन और पहिनहिं विदा होइ जाउ। आब केहन थुडि पड़ै छैन्ह?''

पुरुष-वर्ग कोनो तरहें नेहोरा कय एक चर्कठ सन कुली कें राजी कैलन्हि। ओ एक आना फी आदमी पर सभ गोटा कें चढ़ाएब गछि लेलकैन्ह। भोलानाथ एकटा दुअन्नी अगाउ दैत कहलथिन्ह–''ले, एखन तोरे कौशि चमकल छौ। आब लऽ चल, जहाँ लऽ चलबें।''

कुली दुअन्नी कें तजवीज कय गेंठी मे खोंसैत बाजल–''रौआ सभ नाहक घबराइत बानी। एकठो माल के डब्बा एह मे जोड़ाइ। ओही मे सब जना के चढ़ा देहब नू?''

मालक डब्बा जोड़ाइत देरी दू-अढ़ाइ सै यात्रीक झुण्ड एक्के बेरि रेड़ि कऽ देलक। एक्के टा मुँह, ताहि मे सभ समाएल चाहय! केओ मुड़िया मारैत सन्हियाएल, केओ घुसकुनिया कटैत पैसल। केओ ककरो देह पिचैत चढ़ल; केओ ककरो माँटा पर लात दऽ छड़पल। तेहन अन्धा-धुन्ध भेड़िया-धसान मचल जे ककरो धड़-मूड़ीक ठेकान नहि रहल! धक्कमधुक्की मे ककरो पैर पिचाएल, ककरो हाथ थुराएल। ककरो आँखि मे एक केहुनाठी लागल; ककरो नाक पर एक हुथुक्का लागल। तथापि खसैत-पड़ैत सभ उपरा-उपरी करैत कोनहुना मालक पेट मे सन्हियाय लागल।

धक्का मे पं० नमोनाथ झाक पाग कतय जा कऽ खसलैन्ह तकर पता नहि। भोलानाथक छाता तिरा गेलैन्ह; केवल डंटी मात्र हाथ मे रहि गेलैन्ह! बटुकजी एगोटाक माथ पर दऽ छड़पऽ लगलथिन्ह। किन्तु तावत ओ उचकि गेल, जाहि सँ बटुकजी भरद दऽ औन्हें मुँह खसि पड़लाह। ओहि वेग मे पड़ि दोसरो गोटा पेटी नेने देने हुनकहि पीठ पर खसल। बटुकजी तर सँ किकिया उठलाह।

देखैत-देखैत पाँच मिनट मे सम्पूर्ण डब्बा खचाखच भरि गेल। लालकाकीक कुली पहिने मोटरी-चोटरी सब भीतर कऽ फेंकि देलकैन्ह। तदनन्तर जनी-जात कें धऽ धऽ कऽ भेड़ी-बकरी जकाँ रुण्ड-मुण्डक झुण्ड मे कोंचय लगलैन्ह। अन्हार कूप मे जनसंकुलक बीच, के कतऽ हुसाएल तकर ठेकान नहि।

लालकाकी युच्चीदाइ कें छापि कऽ बैसलीह। हुनमुनकाकी नेना कें गड़ियौने पिचैबाक डरें एक कोन मे ठाढ़ि रहलीह। किन्तु बेचारीक आँखि मे कोइलाक बुकनी

रहि गेलन्हि जाहि सँ आँखि मिड़ैत-मिड़ैत प्रलय भऽ गेलन्हि । ज्योतिषिआइन कें घुरमी लागऽ लगलन्हि । ओ दम्म साधि कय, मोटाक ढेरी पर मुड़कि, अपनो मोटरी बनि गेलीह । भखराइनवालीक नुआ मे अलकतरा पोता गेलन्हि । आवेशरानी कें पियासे कण्ठ सुखाय लगलन्हि ।

एवं प्रकारें 'त्राहि कृष्ण ! त्राहि कृष्ण !' करैत ई लोकनि भोर होइत-होइत छपरा पहुँचैत गेलीह । आब उतरबाक रेड़ि मचल ! ठेलम ठेला मे स्त्री बच्चाक प्राणरक्षा हेतु भोलानाथ दुर्गाक 'कीलमन्त्र' पाठ करय लगलाह ।

थोड़ेक काल मे डब्बा खाली भेला पर बटुकजी अपन बहादुरी देखबैत बजलाह–''आब सब कोनो उतरबो करब कि एही मे बैठल रहब ? हियाँ गाड़ी बदली होएत ।''

आब गेठरी-मोटरीक ओह होमय लागल । भीजल मोटा सभ असंख्य लतखुर्दनक प्रसादात् मोक्षावस्था प्राप्त कऽ गेल छल । लालकाकीक साजी थकुचा कऽ सरि बराबर भऽ गेल छलन्हि । हुनमुनकाकीक पेटी पचकि कऽ निमकीक आकार ग्रहण कैने छलन्हि। वस्तुजातक ई अत्याचार देखि लालकाकी हकन्न कानय लगलीह ।

ता ज्योतिषिआइन कें चाउन्हि आबि गेलन्हि । हुनका सभ केओ हाथे-पाथे उठा कऽ बाहर लऽ एलन्हि । आवेशरानी आँचर सँ बसात करय लगलथिन्ह । पं० नमोनाथ झा एक चूरू पानि लऽ कऽ मुँह मे देबय लगलथिन्ह । किन्तु बूढ़ी हाथक इशारा सँ मना कऽ देलथिन्ह । कुहरैत-कुहरैत कहलथिन्ह–''पहिने कुम्हड़क खण्ड सँ हमरा पारण कराबह, तखन कोनो वस्तु मुँह मे देबीह ।''

भोलानाथ बटुकजी कें पोल्हबैत बजलाह–''हौ बटुकजी ! एहि ठाम तोंही सभ मँ बेशी चड़-फड़ छह । कतहु सँ कुम्हड़ ऊपर करह ।''

बटुकजी अपना चातुर्यक दावी करैत बजलाह–''ई कोन भारी बात है ? सजकोंहड़ा के कोनो अकाल है ? और सजकोंहड़ा त आइ हमरो फैदा करत ।''

ई कहि बटुकजी बिदा भेलाह । तावत सभ केओ कल पर मुँह हाथ धोइत गेल । दातमनिक अभाव मे छाउर सँ दाँत रगड़ि टुटलाही साजीक कमची लऽ कऽ जिभिया भेल । स्त्रीगण अपन-अपन समसल नुआ फेरय लगलीह ।

बटुकजी हलुआइक दोकान सँ एक दोना कुम्हड़क मोरब्बा नेने पहुँचलाह । से देखि बूढ़ी फुड़फुड़ा कऽ उठलीह । और-और लोक केरा तथा रामदानाक लड्डू खा कऽ पानि पिबैत गेल ।

तावत गर्द उठल जे काशीक गाड़ी आबि रहल अछि । ई सुनितहिं यात्री-दल

मे नव जोश भरि गेलैक । हाथें-पाथें गठरी-मोटरी नेने सभ लपकि कऽ बिदा भेल।

भाग्यवश जनानी गाड़ी मे किछु जगह खाली रहैक । लालकाकी अपना सम्पूर्ण दलक सहित ओहि मे प्रवेश कैलन्हि । कोनो-कोनो तरहें समावेश भेलन्हि । किन्तु हाथाबाँहि मे एकटा माउगिक हुक्का मे धक्का लगलैक । तकर पानिक छिटका ज्योतिषिआइनक मुँह पर पड़ि गेलैन्ह । हुक्काक अशुद्ध पानि पड़ने ज्योतिषिआइन माहुरक घोंट पीबि कऽ रहि गेलीह । किछु बजने मुँहक भीतर पानि पहुँचि जइतन्हि, ताहि डरें ओ अपन घोंकचल मुँह कें और घोंकचा कऽ ठोर मुनने रहलीह ।

हुनमुनकाकीक नेना ठाढ़े-ठाढ़े एगोटाक सातुक मोटा पर लघी कऽ देलकैन्ह। ओ माउगि जबर्दस्त रहय । हुनमुनकाकीक पहुँचा पकड़ि सातुक दाम वसूल करय लगलैन्ह। आवेशरानी हुनकर हाथ छोड़ाबक हेतु उठलीह । तावत गाड़ी मे एँजिनक धक्का लगलैक । ओ तलमलाइत-तलमलाइत बेसम्हारि भऽ एक लहठीक चङेरा पर जा खसलीह । कइएक जोड़ लाल पीयर लहठी धुरकुस भऽ गेलैक । आब लहेरनि हुनकर कोंचा धैलक । एहि तरहें जनानी-गाड़ी मे महाभारत मचि गेल ।

ओम्हर मर्दानी गाड़ी मे कतहु जगह नहि । भोलानाथ प्रभृति सूपक भाँटा जकाँ एम्हर सँ ओम्हर डोङराय लगलाह । तावत एँजिन सीटी दऽ देलकैक । बटुकजी छड़पि कऽ हैंडिल पकड़लन्हि और पावदान पर चढ़ि गेलाह । भोलोनाथ तहिना कैलन्हि।

पं० नमोनाथ झा तहिना फानऽ लगलाह, किन्तु हैंडिल नहि धराइ देलकैन्ह। दोबारा चेष्टा करय चाहलन्हि, तावत गार्ड पकड़ि कऽ हटा देलकैन्ह । पं० जी चिचिया कऽ भोलानाथ कें कहय लगलथिन्ह–''अहाँ अपने त...ल...ल....ल....ल....लटकल चलि जाइ छी, और हम एत्तहि छूटि गेलहुँ । आब हम क....क....की करू ?''

ता गाड़ी धड़धड़ाइत बहुत आगाँ बढ़ि गेल जाहि सँ पं० जीक अरण्य-रोदन भोलानाथक कान मे नहि पड़लैन्ह ।

क्रमश: बलिया, गाजीपुर होइत गाड़ी दू बजेक करीब सारनाथ पहुँचि गेल । आब अगिला स्टेशन काशीए भेटत, ई बुझितहि यात्री-दल बाबा विश्वनाथक जयघोष करय लागल । लालकाकीक दल आनन्दक उमङ्ग मे टङ्कार सँ गीत उठा देलक–

बाबा विश्वनाथ मन्दिर मे सोनमा चमचम चमकै ना ।

❑

[८]

ग्रहण-स्नान

काशी स्टेशन पर उतरितहिं यात्री-दल कें चारू कात सँ पंडाक झुण्ड घेरि कऽ चरो-चरो कऽ लेलकैन्ह । बाप-पितामहक नाम बूझि एक पंडा भोलानाथक आगाँ लगलैन्ह, दोसर पाछाँ । फाटक सँ बहराइतहिं भीम पंडा कुली कें ललकारि एक ताङा पर पेटी लदवाबय लागल । ई देखि हनुमान पंडा लपकि कऽ अपने हाथ सँ मोटरी सभ उचाङि कऽ दोसर ताङा पर राखय लागल । छीनाछोरी मे आधा-छीधा सामान कत्तहु गेल; आधा-छीधा कतहु । भोलानाथ कें कोनो अक्क-बक्क नहि फुरलैन्ह । भीम पंडा हुनकर गट्टा पकड़ि कऽ एक दिस लऽ चललैन्ह । ई देखैत हनुमान पंडा बटुक जी कें कोर मे उठा कऽ चाँपि लेलकैन्ह । बटुकजी ओकरा काँख तर सँ गारि पढ़य लगलथिन्ह । किन्तु ओ एकोरत्ती सुनबाहि नहि कैलकैन्ह । तखन बटुकजी किटकिटा कऽ दाँत सँ भम्होरय लगलथिन्ह । तावत दूनू ताङावाला अपन-अपन घोड़ा कें टिटकारी दैत ओहिठाम पहुँचि गेल। आब ओहू दुनू कें आपस मे बाझि गेलैक । स्त्री लोकनि 'शैलाधिराजतनया न ययौ न तस्थौ'' जकाँ धकमकाइत रहि गेलीह ।

एतबहि मे रेवतीरमण पालकी गाड़ी नेने पहुँचि गेलाह । पित्तीक पैर छुबैत बजलाह–''हमरा त आनल छल जे आइ भोरक ट्रेन सँ उतरै जाएब तैं भिंसरे पहुँचल छलहुँ ।''

भोलानाथ कहलथिन्ह–''हँ, सकुड़ी मे ओ गाड़ी छूटि गेल, ताहि सँ आबऽ मे देरी भऽ गेल ।''

रेवती एम्हर-ओम्हर ताकि बजलाह–''पं० जी कें नहि देखैत छिऐन्ह ?''

भोलानाथ बजलाह–''हँ, ओ छपरा मे छूटि गेलाह । अगिला ट्रेन कय बजे अबै छैक ?''

रेवती कहलथिन्ह–''एक गाड़ी दस बजे राति कऽ औतैक । ताहि सँ ओ पहुँचताह। आब हमरा फेरि स्टेशन पर आबय पड़त !''

ई रंग-ढंग देखि दुनू पंडा धसकि गेल । दुनू ताङा सँ पालकी गाड़ी पर सामान लदाय लागल । तखन पता लगलैन्ह जे बटुक-तसला वला बोरा गायब अछि ।

बटुकजी कहलथिन्ह–''ई जरूर ओही पंडा के काम है । हम त निम्मन जगती ओकरा बदमाशी के मजा चखा देती, लेकिन ऊ हमर हाथ सकपंज कैने रहं त हम करें छी की ?''

भोलानाथ अफसोस करैत बजलाह–''देखू, एतेक गोटा छलहुँ । ककरो दृष्टि नहि पड़ल । और देखैत-देखैत दुष्टनाथ लऽ कऽ पार भऽ गेल । भारी चाइला छल! तावत हमरा लोकनि गप्प मे बाझल छलहुँ तावत 'ठैह ले बैह ले' पार भऽ गेल !''

रेवती कहलथिन्ह–''तखन ओ दुनू काशीक गुंडा छल । ई सभ 'गाँगा स्वाइत' जकाँ पहिनहि सँ सीखा-बुझा कैने रहै अछि । आब कि ओकर पता भेटत?''

'बोरा लऽ गेल' ई सुनैत लालकाकी माथ पीटय लगलीह । थारी-बाटी, लोटा-गिलास, तमघैल, बहुगुना–सभक गुन मन पड़य लगलैन्ह । बजलीह–''गेंटक गेंट बासन सैंति कऽ लाएल छलहुँ ! से सभटा उचाड़ि लेलक ! कोढ़िया लाइब कैलक।''

लालकाकी ओकर 'सराध-बिरदारि' करय लगलीह और भोलानाथ बर्तन-बासनक दाम जोड़य लगलाह । रेवती कहलथिन्ह–''आब एहि सभ सँ कोन फल ? जकरा अंश मे छलैक से लऽ गेल । आब डेरा पर चलै चलू ।''

पालकी गाड़ी ढकर-ढकर करैत असीघाट दिस चलल । बाट मे एक 'स्कुलिया लड़की' कें साइकिल पर चढ़लि देखि बुच्चीदाइ कहलथिन्ह–''देखही गे माय ! कोना हँकने जाइ छैक ?''

लालकाकी कें बासनक सोच रहि-रहि कऽ हूर मारै छलैन्ह । बजलीह–''गे छौंड़ी ! बेसी लुचलुच नहि कर । तोंहू ओहिना चढ़ि कऽ चलिहें । हम सोचें मरल जाइ छी, एकरा धन सन !''

आवेशरानी कहलथिन्ह–''त ! कतेक रास 'पात्र' छलैक । हमरो जो कचटैत अछि !''

तावत हुनमुनकाकीक नेना भूपाली राग पसारि देलकैन्ह । लालकाकी लोहछि कऽ बजलीह–''ई छौंड़ा त और उकछा कऽ छोड़ि देलक । कौखन संचमंच नहि रहत। एहन कनना नेना ने देखलहुँ । एकोबेर मुँह मे सपटीओ त ने लगैत छैक ।''

किन्तु नेना और जोर सँ चिचियाय और खुरछाड़ी काटय लगलैन्ह । तखन लालकाकी ओकरा झमोरि कऽ हुनमुनकाकीक कोर मे पटकि देलथिन्ह–''राखू अपन बेटा कें । लंगो चंगो कऽकऽ छोड़ि देलक ! तखन सँ उछन्नर कैने अछि !''

डुनमुनकाकी खिचलं चाट ओकरा गाल पर लगबैत बजलीह–"धमधुसरा मरबो त ने करै छै ! कहाँ सँ ऐबो कैल !"

डेरा पर पहुँचि रेवती कहलथिन्ह–"यैह मकान भाड़ा लेल गेल अछि । अहाँ लोकनि सुचित्त होइ जाउ । तावत हमरा सब बाजार जाइत छी । बटुकजी ! जौं तेल भरबाक हो त लालटेन लऽ लेब ।"

भोलानाथ बजलाह–"जाह ! लालटेन त गामे पर बिसरि गेल । चलय काल ककरो सोह नहि रहलैक ।"

बटुकजी कहलथिन्ह–"हमरा याद त पड़ल रहे, लेकिन जतरा के बखत लालटेन के नाम केञ्ञत कऽ लीती ? सब हमरे पर मार-मार कऽ छुटैत !"

लालकाकी 'लाल'क नाम द्वारें लालटेन कें 'रामटेन' कहैत रहथिन्ह । बजलीह–"यात्रा पहर 'तेल' क नाम नहि लऽकऽ 'चिकनइ' बाजक चाही । किन्तु 'रामटेन' कहने कोन दोष ?"

पुरुषवर्ग डेराक सलतनत कय आवश्यक वस्तु किनय-बेसाहय बाजार चललाह। स्त्रीगण ओसारा पर शतरंजी बिछा सुस्ताय लगलीह । ज्योतिषिआइन पेटकुनियाँ दऽ कऽ कुहरय लगलीह–"आहि, आहि, आहि ! गत्तर-गत्तर टूटल जा रहल अछि।"

भखराइनवाली हुनक तात्पर्य बूझि पैर जाँतय लगलथिन्ह । ज्योतिषिआइन कहलथिन्ह–'हँ ओहिना कऽ घुट्टी दबा दियऽ । भगवान बेटा देथु ।....कनेक और जोर सँ ।......हाँ, हाँ.....ओतेक जोर सँ नहि । जाउ, लोहछा देलहुँ ।"

ज्योतिषिआइन कें जँतबैत देखि लालकाकी अपना दियादनी पर अनुरोध करैत बजलीह–"गै बुचिया ! मितियाइनक पैर टटाइत हेतैक । कनेक ससारि दहुन ।"

डुनमुनकाकी कें एहि कथाक गूढ़ मर्म नहि बूझि पड़लैन्ह । ओ पैर पसारि कऽ बुच्चीदाइ सँ मुक्की लगबाबऽ लगलीह ।

ई देखि लालकाकी कें विवेक छुटलैन्ह । अभिरोष करैत बाजऽ लगलीह–"संसार मे ककरो केओ नहि ! जखन अपना कोखिक धी-बेटी अपन नहि होइत छैक, तखन अनकर बाढ़लि दियादनी-गोतनी की काज औतैक ? हम त अन्तकाल धरि मैयाक अप्पन धरि सेवा करैत गेलिऐन्हि । मुइतो काल आशीर्वाद देलन्हि–"ऐ मधुरानी ! अहाँ बड़ सेवा कैल । भगवान हमरा सन सौंगति सभ कें देथुन्ह ।" मुदा आबक बहुरिया ककरो गोदानैत छैक ? जेठ जेठानुस कें देखि कऽ चौतक डरें छोह कटैत अछि । कनिया-बहुआसिन अपने फुरने तेल-कूर लगाओति से त आब सिहन्तो रहत । कनेक

आड़ुर फोड़य कहबैक त आड़ुरे तोड़ि कऽ धऽ देत । आब अपने समाङ पर भरोस राखक चाही ।"

किन्तु लालकाकीक तीर खाली गेलैन्ह । किऐक त डुनमुनकाकी एतेक ठेहियाइलि छलीह जे थकनी उतरबैत-उतरबैत हुनका झक लागि गेलैन्ह ।

अपना बानक मुनबाहि नहि होइत देखि लालकाकी कें और बेशी पित्त उठलैन्ह। डुनमुनकाकी कें देखि कऽ हुनका डोठ, बंधर, अलच्छ ओ कर्कशा लोक सभदा उपलक्षण मन पड़य लगलैन्ह । ओ दयादिनी कें बेधक हेतु चुनि-चुनिक अन्योक्ति, वक्रोक्ति, ओ व्यंग्योक्तिक विषाह बाण छोड़य लगलीह । आवेशरानी कें संबोधन कय कहऽ लगलथिन्ह–"मैया कतेक 'फकरा' जनैत रहथि तकर ठेकान नहि ! एकटा 'ढोठ माउगि' पर कहथिन्ह–

'आहि ! आहि ! आहि ! बड़ नथबाहि !
धान कुट रे मनुसा ! हम दुख मरै छी !
आहि ! आहि ! आहि ! बड़ सुलबाहि !
घूरि बैस रे मनुसा ! हम सुरपैट छी ।'

"एकटा 'अलच्छ' पर कहथिन्ह–

'लछमिनि दैया !'
'तौं कोना बुझलें रे भैया !'
'ओलतीक खड़ चढ़ल गऽ टोइया ।
तैं हम बुझलौं लछमिनि दैया !'

"एकटा 'छुद्रधंटी' पर कहथिन्ह–

'डोली ' सँ बहु लऽबऽली
ऐपन देखि बिधुअइली ।
कोन धी-डाही ऐपन देल ?
सेर भर चाउर मोर ऐपनहिं गेल !
तेहन बनाएब घर तेहन बनाएब ।
ऐपन पोछि कऽ लिट्टी लगाएब ।'

"एकटा 'भरछुलाति' पर कहथिन्ह–

'ओ धीजरुआ तीन तिमन संग,
नोन तेल मिरचाई !
हम कुलवन्ती छुच्छे खाइ छी,
दही दुध मिठाई !'

''एकदा 'कर्कशा' पर कहलथिन्ह

''सुतल-पड़ल हम सब देखै छी,
कनखी ककरा दै छी ?
मारि लाठिए हम घूठ तोड़ै छी,
तरकी बेचि कऽ बरद किनै छी।''
''ईह ! सुतल पड़ल जे येह अरजै छथि !
आनक तरकी बलहुँ बेचै छथि !
'कहथि 'घुटर कवि' सुनऽ हो कका !
आबक बहुआसिनक की करै छऽ लेखा !''

किन्तु एतेक कहलो पर ढुनमुनकाकीक ध्यान आकृष्ट नहि भेलैन्ह। ओ पूर्ववत औंघी मे भेर भेलि शान्तिपूर्वक अपन पैर जँतबैत रहलीह। ई देखि लालकाकीक ज्वालामुखी भभकि उठलैन्ह। ओ एकेबेरि बुमकार छौंड़ैत देयादिनी पर छुटलीह–''अयँ ए ! यइ सधोरि अहाँक जे पुरुषाइन बनि कऽ हमरा सोझा टाङ पसारने छी !''

आब जा कऽ ढुनमुनकाकी कें होश भेलैन्ह जे एतीकाल सँ हुनके पर फुलझड़ी छुटैत छलैन्ह। ओ बुच्चीदाइ कें झटकारि कऽ कहलथिन्ह–''कोन पाप लागल जे हम हिनका बेटी कें अपन पैरो छुवय देलिऐन्ह ! बुच्चीदाइ हमरा दुरि करबैत छथि। जौं हमरा लग नहि अबितथि त एतेक फज्झति-गंजन किऐक होइत ? हम त सोझिया लोक! एतेक राग-स्याख की जानऽ गेलिऐ ?''

ई कहैत-कहैत ढुनमुनकाकी कें घघा कऽ नोर बहय लगलैन्ह।

बुच्चीदाइ पितियाइनक पक्ष लैत बजलीह–''एँ गै ! तों अपने जताबहू कहलहुन और आब उनटे बिगड़बो करै छहुन !''

लालकाकी लोहछि कऽ बजलीह–''गै धोछी ! तों बीच मे लुब लुब नहि कर। तोरो बुझलिऔक। एतेक त नहि भेलौक जे माय थाकलि अछि।''

बुच्चीदाइ अपना माइक पैर जाँतऽ गेलीह, किन्तु ओ ओर सँ हाथ झटकि कऽ

कहलथिन्ह–''आब जे हमर पैर छुवय से हमरे माथ लात देवय। जौं भक्ति रहितौक त पहिनहि ने अबितें ! हम एहन खड़ाष्टल नहि छी जे रूकटल अकौं अपन मने पैर पसारि देबौक।''

तावत आवेशरानी अबि कऽ गोचर-मारि लगाबय लगलीह–''जाय दियऽ। जे भेलैक से भऽ गेलैक। तीर्थ स्थान मे आबि कऽ कोओ झगड़ा ठान करय ?''

ज्योतिषिआइन कहलथिन्ह–''जाउ ऐ भखरान्तवाली ! अहाँ फुचुकरानी कें चुप कऽ दिऔन गऽ। रूसल कें बौंसी नहि, फाटल कें सीबी नहि, त चढ़ले ने जाय !''

लालकाकी सरदारक टोन मे बजलीह–''एं फुचुकरानी ! अबो अपन भाभट समटू। नहि त हमहीं कतहु पड़ा कऽ चलि जाइ छी।''

ढुनमुनकाकी गर खिचैत अपना कर्मदोषक समर्थन करय लगलीह।

तावत ओम्हर सँ रेवतीरमण, भोलानाथ और बटुकजी बासन, घैल, बाढ़नि, डिबिया,जारन ओ सीधा-सामग्री नेने पहुँचि गेलाह। रेवतीरमण कनेक क्षुब्ध होइत कहलथिन्ह–''एहिठाम कथीक घाँउ-माँउ होइत छल ? अबतहिं एना घोंघाउज होमय लागल ! 'मिसर' औताह त ई सभ देखि कऽ की कहताह ?''

आब शान्त भेला पर स्त्रीगणक विचार भेलैन्ह जे सभ सँ पहिने गंगास्नान होएबाक चाही। बटुकजी और भोलानाथ कें डेरा अगोरऽ लेल छोड़ि रेवतीरमण सभ स्त्री कें लऽ कऽ घाटक बाट धेलन्हि। असीघाट पर पहुँचि लालकाकी बजलीह–''धन्य भाग जे आइ एहन दिन भेल ! काशीक गंगा भेटलीह। देखिहो सभ पाप कटित भऽ गेल।''

ई कहि ओ ठमकि कऽ गीत उठा देलन्हि–
''गंगा माइक लहरी।
देखैत सकल पाप गेल बहरी।''

स्त्रीगण पहिने एक चुड़ु गंगाजल माथ पर सिचत कय गंगाजी मे पैसलीह। लालकाकी घुमि-घुमि कय अपना घर भरिक सौंती डूब देमय लगलीह।

ऊपर भेला पर सभक विचार भेलैन्ह जे आइ गंगाजले मे भानस होएऽ। आवेशरानी घैल मे गंगाजल भरि लेलन्हि। थोड़ेक दुर एला पर सब्जी-मण्डी भेटलैन्हि। रेवती कहलथिन्ह–''जौं कोनो तरकारी पसन्द पड़य त किनने चलू।''

बुच्चीदाइ बजलीह–''गे दाइ ! ई कोन कदीमा छैक ? एहि रंगक कदीमा नै कहियो देखने छलिऐक !''

लालकाकी कहलथिन्ह–''तों देखलें कहिया ? सावन जनमला गीदड़; भादव आएल बाढ़ि । कहलन्हि जे एहन बाढ़ि कहियो ने देखल !''

रेवतीरमण कहलथिन्ह–''नहि नहि । तोरा सभ नहि चिन्हलही । ई बनारसी भाँटा थिकैक ।''

लालकाकी बजलीह–''ऐं ! भाँटा छैक ? तखन त रैह नेने चली । आइ राति एकरे साना हाएत ।''

ज्योतिषिआइन कहलथिन्ह–''हम त द्वादशो कें भाँटा खाएब नहि । भेटैत त किछु फल-फलहरी एम्हरे सँ किनने चलितहुँ ।

तावत आवेशरानी चमकि कऽ बाजि उठलीह–'देखथुन्ह ए बहिना ! बनारसी बैर जे सुनै छलिऐक से देखथुन्ह त कतेक-कतेक टा होइ छैक ! और केहन उज्जर!''

भखराइनवाली आश्चर्यित भय बजलीह–''ऐं ! आइकाल्हि भादव मास बैर कतय सँ ऐलैक ?'' ई कहि ओ एकटा उठा कऽ ज्योतिषिआइनक हाथ मे देबय लगलथिन्ह।

तावत रेवतीरमण लग मे पहुँचि कहलथिन्ह–''हौं, हौं ! छोड़ू, छोड़ू ! ई अंडा छैक ।''

ई सुनैत देरी ज्योतिषिआइन कें काठ मारि देलकैन्ह । अंडा हाथ सँ छूटि कऽ नीचा खसि पड़लैन्ह और फच दऽ फूटि गेलैन्ह । अंडावाली दाम वसूल कऽ लेलकैन्ह। ज्योतिषिआइन ओ भखराइनवाली पुनः स्नान करय गेलीह ।

तावत लालकाकीक नजरि एक चुड़िहारिन पर पड़लैन्ह । ओ बुच्चीदाइक फानय चूड़ी मोलाबय लगलीह । जखन ओ लबादुआ नहि गछलकैन्ह, तखन बेटी कें कहलथिन्ह–''चल, ई भारी मङघोरनी अछि; एकरा सँ नहि पटतैक । एखन गंगास्नान कैने छी । की एकरा सँ छूति करबें ?''

डेरा पहुँचला पर लालकाकी बजलीह–''एक मनोरथ त पूर भेल । आब बाबाक दर्शन भऽ जाइत त जन्म सफल होइत ।''

भोलानाथ कहलथिन्ह–''बेश, हर्ज की ? अहाँ लोकनि 'कंटीर'क संग दर्शन कऽ आबै जाउ । तावत हमरा लोकनि भानस-भातक उद्योग मे लगै छी । जखन अहाँ लोकनि आएब त हम और बटुकजी दर्शन कऽ अबै जाएब । की हौ बटुकजी ?''

बटुकजी चूल्हि पजारैत बजलाह–''और न की ? बाबा की कहीं भागल जाइ छथ ! जब ऐलीहऽ तब देखबे करबैन कि बाँकी रहतन ?''

लालकाकी आदि समस्त स्त्रीगण हुलसि कऽ बाबाक दर्शन करक हेतु बिदा

भेलीह । कइएक गली पार कय मन्दिरक द्वार पर पहुँचलीह । मंदिर मे बाबाक शृंगारक उपरान्त आरती भऽ रहल छलैन्ह । घंटाध्वनिक संग संग 'बम बाबा विश्वनाथ'क पवित्र नाद सुनि तथा दिव्य धूप-कर्पूर ओ बेलपत्रक सुगन्ध सँ गमगम करैत प्रांगण मे आबि, लालकाकी कें बुझि पड़लैन्ह जे सद्यः बैकुण्ठ धाम मे पहुँचि गेलहुँ । ओ आनन्द मे विभोर भऽ बारंबार 'साष्टाङ्ग' करय लगलीह ।

हिनका लोकनिक भक्तिभाव सँ ऊ प्ट भय एक ब्राह्मण देवता आबि कऽ संग लागि गेलथिन्ह । कहलथिन्ह जे ''केवल पाँचे मुद्रा मे विधिवत दर्शन-पूजा करा देब ।'' रेवती किछु बाजक चाहलन्हि, किन्तु माइक मुख-मुद्रा देखि साहस नहि पड़लैन्ह। ब्राह्मण झट दऽ धतूर-बेलपात आनि कऽ लालकाकीक हाथ मे देलथिन्ह और संकल्पक मन्त्र पढ़ाबय लगलथिन्ह ।

मन्दिर मे रेड़ि पड़ैत छल । ई लोकनि कोनहुना भीतर प्रविष्ट भेलीह, किन्तु ओहि अगणित नरसमुदाय मे पड़ि कऽ पिसीमाल होमय लगलीह । ब्राह्मण देवता धकियबैत-फकियबैत कोनो-कोनो तरहें हिनका लोकनि कें अलडरी लग लऽ ऐलथिन्ह और बाबाक दर्शन करा देलथिन्ह । सभ आनन्द सँ गद-गद भय निर्माल्य लैत गेलीह। केवल एकटा दुर्घटना ई भेल जे ज्योतिषिआइन निहुरि कय जल ढारैत रहथि, तावत पाछाँ सँ तेहन धक्का लगलैन्ह जे लोटा नेने देने महादेव पर खसि पड़लीह । कपार फूटि गेलैन्ह । सभ लोक हुनका झटपट उठा कऽ बाहर लऽ अनलकैन्ह । स्वस्थ भेला पर गीत उठि गेल–

हरह सकल दुख मोर, हो भोला बाबा !
हरह सकल दुख मोर !

  

पं० गणेनाथ झा कें जखन दस बजे राति कऽ काशी स्टेशन पर पकड़लकैन्ह तखन टिकटक हेतु ''भ भ भ भोलानाथ''क गोहरि करय लगलाह । किन्तु भोलानाथ ओहि ठाम रहथि तखन ने ! टी० टी० सा० हुनका धऽ कऽ स्टेशन मे लऽ गेलैन्ह। तोतराइत-तोतराइत कहलथिन्ह–''छ छ छ छ छपड़ा मे छ छ छ छ छ बजी गाड़ी छ छ छ छ छ छइपऽ मे छ छ छ छ छूटि गेल ।''

किन्तु एतेक छ छ छ छ क छेकानुप्रासक छटा सँ छानि कऽ छिरट पुरट शब्दक अभिप्राय बुझबा मे स्टेशन मास्टरक छक्का छूटय लागल ।

तावत रेवतीरमण पं० जीक टिकट नेने पहुँचि गेलथिन्ह । पं० जी बिगड़ि कऽ

कहलथिन्ह—"तँ कतेक और पहिनें अबितह त हमरा ट ट ट ट टी टी टी टी टी० टी०सी० किऐक धरैत ?"

डेरा पहुँचला पर पं० जी कें देखितहि सभ लोक हाल-चाल पूछऽ लगलैन्ह। पं० जी खिसिया कऽ भोलानाथ कें बहुत बात कहलथिन्ह। तकर सारांश ई जे "हम ओतेक चिचिएलहुँ और अहाँ एको बेर टेरबो नहि कैलहुँ। हमरा बाद मे जे जे पराभव भेल अछि से हमहीं जनै छी।"

पं० जी कें सभ सँ बेशी खीस भेलैन्ह भखराइनवाली पर जे "ओ जौं यथार्थ अर्द्धांगिनी रहितथि त स्वामी कें छपरा मे छुटैत देखि आगाँ नहि बढ़ितथि।" एहि पित्तें ओ अपना स्त्री सँ मुँहाबज्जी बन्द कऽ लेलन्हि।

देखैत-सुनैत दू दिन बीति गेल। एहि बीच मे लालकाकी साँग-सायुध-सवाहन काशी विश्वनाथक परिक्रमा करैत ज्ञानवापी, ढुंढिराज, साक्षीविनायक,अन्नपूर्णा, दशाश्वमेध, मणिकर्णिका, सभ सँ परिचित भऽ गेलीह। एक दिन 'माधोरावक धरहरा' पर चढ़ैत गेलीह। दोसरा दिन 'भारतमन्दिर' देखि ऐलीह। बीच-बीच मे कतेक छोट-मोट मनोरंजक अनुभव प्राप्त भेलैन्ह से विस्तार-भय सँ नहि देल जाइत अछि।

✡ ✡ ✡

आइ पूर्णिमा थिकैक। राति मे ग्रहण लगतैक। नौ बाजि कऽ चालिस मिनट पर स्पर्श और बारह बाजि कऽ दस मिनट पर मोक्ष। ई अढ़ाइयो घंटा लालकाकी लोकनि गंगाजले मे ठाढ़ि रहतीह।

साँझे सँ हड़बिड़री उठय लागल जे "सबेरे-सकाल भोजन-छाजनक काण्ड समाप्त भऽ जाय। नहि त कनेको ग्रहणक स्पर्श भऽ गेने सभटा भानस-भात दूरि जाएत।"

✡ ✡ ✡

आइ काशीक प्रत्येक घाट पर जनताक बाढ़ि उमड़ल अछि। असंख्य नरमुण्डक तरंग लहरा रहल अछि। नीचा गंगाजीक हिलकोर, ऊपर जनसमुद्रक लहरि। दूनू एक दोसर सँ मिलक हेतु व्यग्र भऽ रहल छथि।

एतबहि मे गर्द उठल—"ग्रहण लागि गेल। ग्रहण लागि गेल !"

आब त धमगज्जर मचय लागल। हँजक हँज लोक अबल-दुबल कें पिचैत धड़ैत, आगाँ बला कें ठेलैत, आड़िक रस्सा फनैत और स्वयंसेवक दल कें रेड़ैत, गंगाजी मे भेड़ियाधसान करय लागल।

भीड़-भड़क्का मे कतहु नेना भुटका पिचाएल, कतहु वृद्ध पछड़िक खसलाह;

कतहु वृद्धा पिछड़ि कऽ खसलीह। कतहु मारि बजरि गेल। तथापि पुण्य लूटक लोभ सँ केओ पाछाँ पैर नहि कैलक।

देखैत-देखैत सम्पूर्ण स्थल-सेना जल-सेना मे परिणत भऽ गेल। सहस्रो नर-नारी आकण्ठ जल मे ठाढ़ भय ऊपर टकटकी लगौलन्हि। कतेको पंडित राहुरूपी दैत्य सँ चन्द्र देवताक उद्धारक हेतु नाना प्रकारक श्लोक-मन्त्र पाठ करय लगलाह। घाट पर चाण्डालक झुण्ड 'ग्रहणदान ! ग्रहणदान !' करैत घुमय लागल। ओकर छायाक छूति सँ नैष्ठिक कर्मकाण्डी पड़ाय लगलाह। किन्तु द्विज देवता कें डोमरूपी राहुक ग्रास सँ बाँचब कठिन भऽ गेलैन्ह।

लालकाकीक दल दशाश्वमेध घाट पर एक बड़का धक्काक लहरि मे पड़ि अनायासें भरि ठेहुन पानि धरि पहुँचि गेल। ककरो चलबाक कष्ट नहि उठाबय पड़लैक। किन्तु एहि लहरि मे पड़ने दुनमुनकाकीक नेना पिचा कऽ अधमरू भऽ गेलैन्ह। ओ चिचिऐलीह—"दैव रे दैव ! देखथुन्ह, कोदन भऽ गेलैक।" लालकाकी कहलथिन्ह—"दाँती लागि गेलैक अछि, ओना कऽ बेदम भेल अछि। बसात दिऔक।" भोलानाथ बालग्रहक मन्त्र पढ़ि-पढ़ि आँखि पर पानि छिटय लगलथिन्ह।

ज्योतिषिआइनक मुँह मे केवल एकटा दाँत छलैन्ह जे भात खैबा काल मिझरा जाइत छलैन्ह। बहुत दिन सँ उखड़बाबक हेतु सपरै छलीह। आइ ई काज अनायासें सम्पन्न भऽ गेलैन्ह। भीड़ मे ककर हुथुक्का कल्ला मे लगलैन्ह से त नहि बूझि पड़लैन्ह, किन्तु मसकुर छनछनैला पर जखन जीभ सँ टोएलन्हि तखन पता लगलैन्ह जे दाँत नहि अछि। ओ ई बूझि सन्तोष करय लगलीह जे दुर्गतियो सहने दाँत कें त सद्गति भेल। किन्तु एक बातक असौकर्य ई भेलैन्ह जे अढ़ाइ घंटा धरि कुड़ुर करबाक उपाय नहि। कारण जे ग्रहणक मध्य मुँह मे जल देने कण्ठ मे घोंटबाक भय छलैन्ह।

भखराइनवाली गंगाजल सिक्त करक हेतु आँखि-कान पर हाथ देलन्हि त विदित भेलैन्हि जे एकटा बीरझुम्मक वीरगति कें प्राप्त कैलक। किन्तु ओ कानक जड़ि कें चँछैत अपन स्मारक चिह्न छोड़ने गेल छलैन्ह। हुनका ज्योतिषक हिसाबें एहि ग्रहणक फल 'मृत्यु' होइत छलैन्ह, ताहि डरें ओ एको बेरि ऊपर आँखि उठा कऽ तकबो नहि कैलन्हि।

एवं प्रकारें सभ कें किछु ने किछु ग्रहणक फल भेटि गेलैन्ह। चन्द्र देवता कें राहुक ग्रास मे पड़ल देखि जनता त्रास सँ हाहाकार करय लागल। लगातार दू घंटा धरि भरि छाती जल मे रहने चन्द्राभिमुखी कोमलांगीगण हिमवत शीतल भऽ गेलीह।

ठाढ़ेठाढ़ किनको पैर मे बथा लागि गेलैन्ह । किनको झुनझुनी भरि गेलैन्ह । किन्तु बिनु उग्रास भेने एहि सँ उद्धार कोना होय ?

राहुक पंजा सँ चन्द्रदेवक छुटैत देरी जयजयकार होमय लागल । दैत्यदलनकारी भगवानक स्तुति चतुर्दिश प्रतिध्वनित भऽ उठल । आनन्द-बधाबा बाजय लागल ।

अर्द्धरात्रिक उपरान्त लालकाकी लोकनि इष्टदेवताक मन्त्र जपैत डेरा पर अबैत गेलीह । पं० नमोनाथ झा प्रभृति यज्ञोपवीत बदलऽ लगलाह । थैल मे कुश गंगाजल देल गेल । माटिक बासन-पातिल फेंका गेल ।

ग्रहणक दोसरे दिन मोटरी-चोटरी बन्हाय लागल । यात्रीदल कैं घरक उचाट लेलकैन्ह। किन्तु लालकाकी बेटीक संग मास करक लाथे रहि गेलीह । और सभ केओ तैयार भऽ कऽ बिदा भेल ।

चलैत काल सभक आँखि मे पानि भरि ऐलैन्ह । आवेशरानी नोर पोछैत बजलीह–''बहिना, 'संगक सुख बनारस जाइत' त भऽ गेल । किन्तु फिरती बेरि संग फुटुकि गेल ।''

लालकाकी कहलथिन्ह–''की कहिऔन्ह बहिना ! हमरो प्राण त घरे पर टाङल अछि । कार्त्तिक-स्नानक बाद लगले बिदा भऽ जाएब ।''

डुनमुनकाकी देयादिनी कैं प्रणाम करैत कनैत-कनैत कहलथिन्ह–''हमरा सँ बहुत अपराध भेलैन्ह, कहल-सुनल माफ करिहथि ।''

लालकाकी हुनका भरिपाँज धऽ कऽ उठबैत कहलथिन्ह–''आब घरक सभटा भार अहीं पर । जाइते चिट्ठी देब । जनै छी भगवान कहिया घरक मुँह देखौताह !''

तावत घोड़ागाड़ी आबि गेलैन्ह । पं० नमोनाथ झा चिचिया कऽ भोलानाथ कैं कहलथिन्ह–''आब सभ कैं च च च च चढ़ऽ कहिऔन्ह; नहि त च च च चरिबज्जी ट्रेन छूटि जाएत ।''



[९]

बुच्चीदाइक 'एडुकेशन'

प्रोग्रामक अनुसार सी० सी० मिश्र सासुरक डेरा मे आबि गेलाह और रेवतीरमण हुनक निर्देशानुसार बुच्चीदाइ कैं पढ़ाबय लगलथिन्ह । चिट्ठी-पत्री त बुच्चीदाइ पहिनहि सँ जनैत छलीह । आब व्याकरण, साहित्य, गणित, इतिहास और भूगोलक श्रीगणेश भेलैन्ह ।

प्रथम दिन 'कर्त्ता' 'कर्म' 'क्रिया' सँ प्रारम्भ भेल । लालकाकी कुतूहलवश कोनटा लागि, कान पथने सुनैत रहलीह जे ओ की सभ पढ़ैत अछि । किन्तु बेशीकाल धरि नहि सुनि भेलैन्ह । हतोत्साह भऽ बजलीह–''ऐं हौ । और कोनो नीक बात सभ नहि भेटैत छौह जे अलच्छे बात सभ बुझबैत छहीक । क्रिया कर्म मुइला पर होइत छैक, कर्त्ता मुँह मे ऊक दैत छैक । ई सभ त कंटाह पुरोहितक धिया-पुता सिखय जकरा यजमानिका पुजाबक होइ । हमर बेटी ई सभ जानि कऽ की करति ? अशुभ बात केओ भाखय ! हमरा मुइला पर एकर सभक विचार करिहऽ ।

राति मे 'ठाकुर'क चीनी देल दालि तथा छेनाक 'डालना' मुँह मे दैत लालकाकीक जी ओकाय लगलैन्ह । ओ प्राते भेने अपन भानस फुटका लेलन्हि ।

दोसर दिन रेवतीरमण बुच्चीदाइ कैं 'एकवचन' 'बहुवचन' बुझाबय लगलथिन्ह। लालकाकी आँच पजारैत छलीह । काँच जारनक धुआँ सँ आँखि-नाक भरल छलैन्ह। बारंबार 'बहुवचन' 'बहुवचन' सुनैत-सुनैत लालकाकी कैं काष्ठाग्निक स्थान मे क्रोधाग्नि प्रज्वलित भऽ उठलैन्ह । बजलीह–''ऐं हौ ! एक पहर सँ हाय 'बहुवचन' कि हाय 'बहुवचन' ! दोसर कोनो बचने नहि सुनैत छिऔह । माय भकसी झोंकाइत छी और तोरा बहुवचन मोन पड़ैत छौह ! एकोबेरि मायबचन मुँह सँ बाहर होइतौह तखन ने बुझितिऔह जे सपूत भेलाह !''

राति मे जखन लालकाकी ''कार्त्तिक चौरान् नाशय' जपैत सुतय गेलीह त बुच्चीदाइ कैं चिन्तित देखि पुछलथिन्ह–''तोरा की होइ छौक जे कछमच्छ करै छे ? निन्द किऐक नहि पड़ैत छौक ?''

बुच्चीदाइ उदास भऽ कहलथिन्ह–''भैया कहने छथिन्ह जे छौ टा कोन-कोन

भूत होइ छैक तकर सभक नाम और कोन-कोन भूत मे 'न' लगै छैक से सभ ठेकान राखक लेल । सैह सभ मन पाड़ै छिऐक ।''

ई सुनितहि लालकाकी क्रोध और भय सँ थरथर काँपय लगलीह । बेटा कें सोर पारि कय बजलीह–''महाबीर जी तोरा कहिया सुमति देथुन्ह ? कालि्ह राति क्रियाकर्म, त आइ राति भूत ! ईह सभ बात तोरा पढ़ाइ मे लिखल छौह ? हम कहैत छलौंह जे रामायण-महाभारतक नीक-नीक बात सिखौथिन्ह त हमहूँ सुनब । से सिखबैत छथिन्ह की त भूत-प्रेत-बैताल ! कोन-कोन भूतक की नाम होइ छैक ? कोन-कोन भूत नकियाइत अछि ? बाप रे बाप ! आइ भरि राति हम धिधियाइत रहब । खबरदार जे आइ दिन सँ फेरि कहियो राति कऽ भूतक नाम लैत गेलाह !''

ई कहि लालकाकी भयक मारे 'हनुमान चालीसा' पाठ करय लागि गेलीह ।

तेसरै दिन बुच्चीदाइ हिसाब शुरू कैलन्हि । साधारण जोड़-घटाव त जनिते छलीह। आब 'मिश्र' सँ प्रारम्भ कैलन्हि । रेवतीरमण 'हर' 'अंश' बुझबितहि छलथिन्ह कि लालकाकी आबि पहुँचलथिन्ह । एहि बेर सन्तुष्ट होइत कहलथिन्ह–''हँ, ई सभ बात पहिने जानि लैत से नीक । 'भिन्न' त सासुर मे कहियो ने कहियो होनहि पड़तैक। तखन कतेक 'अंश' भेटतैक, कै टा 'हर' अपन हैतैक, से सभ नीक जकाँ बुझा दहौक। मिसरक देयाद-गोतिया त पहिनहि सँ सभ हड़पने छैन्ह । इहो जौं होशियार भऽ क जाइति तखन ने बाँट बखरा करा कऽ अपन हिस्सा लेति ।''

एक दिन रेवतीरमण छन्दक पुस्तक खोलि बुच्चीदाइ कें 'सवैया' क मात्रा बुझबैत रहथिन्ह । लालकाकी बजलीह–'ई त हमहूँ बुझा देबैक । एक सवें सवाइ, दू सवें अढ़ाइ, तीन सवें....जरलाहा मने नहि पड़ैत अछि ।''

रेवतीरमण कहलथिन्ह–''पहाड़ा वाला सवैया नहि । ई पिंगल पढ़ैत अछि ।''

लालकाकी उत्तेजित भऽ कऽ बजलीह–''बापक गर मुङरी पूतक गर रुद्राक्ष! तोहर बाप हमरा सामने कहियो 'पिंगल' छँटबे नहि कैलथुन्ह और तोरा सभ एखने सँ 'कठपिंगल' बनै जाइ छह । ई बैसलि-बैसलि पिंगल छाँटति त आश्रमक काज कोना चलतैक ?''

बुच्चीदाइ 'पिंगल' छोड़ि 'गजः गजौ गजाः' घोखय लगलीह ।

लालकाकी आँटा सनैत बजलीह–''हम मरै छी, तो गजै छैं । ई कोन पढ़नाइ कहबैत छैक ? हम चीकस गींजी और तों हमरा कचकचाबैं–गजं गजौ गजान् । आबि कऽ सोहारी बेल, नहि त सभ पंडिताइ बहार कऽ देबौक ।''

एक दिन रेवतीरमण पठान और मुगल बादशाहक वंशावली बुच्चीदाइ कें बुझबैत रहथिन्ह । ई देखि लालकाकी पुछलथिन्ह–''मियाँक वंशावली सँ एहि लोक कें कोन प्रयोजन ?''

रेवती–''मिसर कहने छथिन्ह जे......''

लालकाकी–''हुनका वंश मे मोगल-पठान सँ विवाह-दान चलैत हैतैन्ह, तैं चौदहो पीढ़ीक नाम अभ्यास छैन्ह । हमरा सभ कें ओकर उतेढ़ि जनने कोन फल ? एहि गोत्राध्याय सँ त विष्णुसहस्रनाम पाठ करति त धर्मो होएतैक ।''

एक राति बुच्चीदाइ कें ध्यानमग्न देखि लालकाकी पुछलथिन्ह–''की सोचैत छैं ?''

बुच्चीदाइ कहलथिन्ह–''विलायतक पहिल 'जार्ज' बादशाह कहिया मुइलैक से मन पाड़ै छिऐक ।''

लालकाकी मुँह गोंहछा कऽ बजलीह–''अनकच्छल बात सुनि कऽ देहो जरैये! विलायतक बादशाह सँ तोरा कोन काज ? ओ तोरा तीन मे कि तेरह मे ? कहियो मरौ ? तोरा की एकोद्दिष्ट करबाक छौक जे ओहि पाछाँ बेहाल छैं ? धोबी खातिर कुम्हैन सती ! आ, पैर दबो हन ।''

दोसर दिन प्रातः काल लालकाकी सराइ मे नैवेद्य काढ़ने पूजा करैत छलीह तावत बुच्चीदाइ अपन अँगरेजीक 'रीडर' रटब शुरू कैलन्हि–

'' दि एग इज इन दैट डिस – उस तश्तरी में अंडा है ।''

बारंबार तश्तरी-अण्डाक नाम सुनि लालकाकी खौंझा उठलीह । जप समाप्त होइतहिं बेटी पर फुफुआ कऽ छुटलीह–'' ऐ गे ! दुइए अक्षर अँगरेजी पढ़ि कऽ नैवेद्य कें अण्डा बना देलैं । कनेक और पढ़ि जैबें तखन हमरो मुर्गी बनबिहें ।''

ई कहैत लालकाकी तमसा कऽ सराइ माँजय चललीह । ओही दिन बुच्चीदाइक हेतु हारमोनियम किना कऽ ऐलैन्ह । किन्तु सिखाबौ के ? तखन ई विचार भेल जे रेवतीरमण पहिने अपने माइजी सँ सीखि आबथि और तखन बहिन कें सिखाबथि । तदनुसार रेवतीरमण माइजीक ओतय जा 'सरगम' सीखि ऐलाह और बुच्चीदाइ कें सातो पटरी चिन्हा देलथिन्ह ।

सन्ध्याकाल बुच्चीदाइ रेयाज करय बैसलीह । लालकाकीक कान टनकैत रहैन्ह। जेना-जेना 'आरोह'क स्वर तीव्र भेल जाइक तेना-तेना हुनक टनक बढ़ल जाइन्ह । आखिर हुनका नहि रहि भेलैन्ह । बुच्चीदाइ 'सा नि ध प' क आलापे लैत छलीह

कि धप्प दऽ एक धमाका पीठ मे लगलैन्ह । लालकाकी लोरछैत बजलीह–''बड़ शौख ! हमर पुटपुरी फाटल जाइ अछि और ई फटियाय बैसली हय ! तखन सँ पधनी-पधनी सुनैत-सुनैत कान बहीर भऽ गेल । बड़ पदनिनी बनलीह अछि ! चल, पहिने तुलसीक रस बरका कऽ हमरा कान मे ढार, तखन अपन गिरगिरी भरैत रहिहैं।''

एक दिन बुच्चीदाइ 'लैंड्स ऐण्ड पिपुल्स' पुस्तक लऽ कऽ चित्र सभ देखैत रहथि । एक जावा द्वीपक युवती कैं देखि बजलीह–''देखही गे माय ! कहन छैक !''

लालकाकी सिहरि कऽ बजलीह–''गे दाइ गे दाइ ! गट्टा सन माउगि और आँचर नदारद! देखियौ त कोना उत्तान भेलि ठाढ़ि अछि ? एकोरत्ती धाखो संकोच नहि। हमरा लोकनि कें एना उघार भऽ कऽ आँखि ताकि होइत ! और एकरा लेखे धन सन। हमरा सभक बेटी-पुतोहु एना करैत त.....।''

तावत रेवतीरमण एकटा रबड़क स्विमिङ्ग सूट नेने पहुँचि गेलाह । किछु संकुचित भऽ बजलाह–मिसरक इच्छा होइ छैन्ह जे ई (बुच्चीदाइ) हेलनाइ सीखि जाय । तैं ई हल्लुक पोशाक किनलथिन्ह अछि ।''

लालकाकी जमाय कें नाना उपाधि सँ विभूषित करैत बजलीह–''बड़ सधांरि! हमर बेटी मेम ने अछि जे जँघिया पहिरति ? हम अपना सोझाँ मे एहन निर्लज्ज नहि बनऽ देबैक ।''

ई कहि लालकाकी रबड़क पोशाक कें नूड़ी गूड़ी कय मोड़ी मे फेकलन्हि। आब हुनक जी उचटि गेलैन्ह ।

जाहि दिन बुच्चीदाइक हेतु बैडमिंटनक सेट किना कऽ ऐलैन्ह, ताही दिन लालकाकी गामक हेतु अपन मोटा-चोटा सरियाबय लागि गेलीह । बेटा कें कहलन्हि–''बाजि ऐलहुँ एहन बेटी जमाय सँ ! आब हमरा नहि देखल जाइत अछि। देशी कुत्ती विलायती चालि ! खंजन चललीह बगराक चालि त अपनो चालि बिसरि गेलीह ! देखैत-देखैत आँखि पाथर भऽ गेल । हमरा आब गाम लऽ चलह । तखन जे-जे मन अबैक से-से करै जाओ ।''

बेटीक कतबो कनने-खिजने तथा जमायक बुझौने लालकाकी नहि रुकलीह। ओ बेटाक संग गामक हेतु बिदा भऽ गेलीह ।

  

लालकाकीक जैतहिं एक नवीन समस्या उपस्थित भय गेल । बुच्चीदाइ एखन

धरि स्वामी सँ बाजलि नहि छलीह । ओ स्वामी कें देखि लाज करैत छलीह । आब बाजाभुक्को शुरू हो त कोना ?

संयोगवश ई समस्या स्वयं हल भऽ गेल । एक दिन मिश्रजी कें दुलकी लागि एलैन्ह । ओ पियासे बारंबार 'ठाकुर' कें सोर पारय लगलथिन्ह । किन्तु दुर्भाग्यवश वा सौभाग्यवश 'ठाकुर' डेरा मे नहि रहय । दू-एक बेरि धरि त संकोचें बुच्चीदाइक कंठ नहि फुजलैन्ह । अन्ततः हृदय मे निहित गृहिणीक संस्कार लज्जा पर विजय प्राप्त कैलकैन्ह । ओ मुँह झपने एक गिलास पानि लऽ कऽ देबय गेलथिन्ह ।

ई अभूतपूर्व घटना देखि मिश्रजी कें एक विलक्षण रसक अनुभूति भेलैन्ह । मुग्धा स्त्रीक हाथ सँ पानि पिउबा मे जे माधुर्य छैक तकर प्रथम अनुभव हुनका जीवन मे आइ भेलैन्ह । बालिका पत्नीक कंठस्वर सुनबाक अभिप्राय सँ ओ पुछलथिन्ह–''ठाकुर कतय गेल ?''

बुच्चीदाइ आँखि निहुरौने नहूँ-नहूँ उत्तर देलथिन्ह–''गंगास्नान करय गेल छैक।''

मिश्रजी पत्नीक हाथ धऽ पुछलैन्ह–''अहाँ हमरा दिश तकैत छी कियैक नहि ?''

बुच्चीदाइ लजा कऽ ओहिठाम सँ जाय लगलीह । मिश्रजी कहलथिन्ह–''सुनू! हमरा माथ मे बड्ड जोर धाह फुकने अछि । टो कऽ देखू त !''

आब बुच्चीदाइ नहि जा सकलीह । लजाइत-लजाइत कपार पर आङुर दऽ कऽ देखलथिन्ह त काठ फुटैत ।

मिश्रजी कहलथिन्ह–''ठंढा पानिक पट्टी दऽ सकैत छी ?''

बुच्चीदाइ अत्यंन्त फुर्ती सँ जा अपना पेटी सँ एक साफ लत्ता बाहर कैलन्हि और भानस घर सँ एक बाटी पानि नेने पहुँचि गेलीह । सीरम मे ठाढ़ि भय लत्ता भिजा-भिजा पट्टी देबय लगलथिन्ह । मिश्रजी अपूर्व शीतलताक अनुभव करय लगलाह ।

ठंढैला उत्तर मिश्रजी कहलथिन्ह–''आब अहाँ जा सकै छी ।''

किन्तु बुच्चीदाइ नहि गेलीह । मिश्रजी कें ओढ़ना तर सँ ज्ञात भेलैन्ह जे केओ पैथान मे बैसलि पैर दबा रहल अछि । ओ मन मे विचारय लगलाह–''हम त एहि बालिकाक प्रति घोर निष्ठुर व्यवहार कैने छिऐक । एकरा हृदय मे स्नेहक अंकुर कोना उत्पन्न भय गेलैक ?''

ओहिदिन 'ठाकुर' कैं ऐबा मे बेशी विलम्ब भऽ गेलैक । किन्तु ई अपराध तेहन मधुरफलयुक्त भेलैक जे मिश्रजी कें दण्डक बदला पुरस्कार देबाक इच्छा भेलैन्ह।

शनैः शनैः संकोचक व्यवधान अन्तर्धान भेल । किन्तु जेना-जेना पति-पत्नीक भाव जाग्रत भेल गेलैन्ह तेना-तेना गुरु-शिष्यक सम्बन्ध क्षीण होमय लगलैन्ह ।

एकान्त मे युवती पत्नी कें निर्लिप्त भाव सँ पढ़ा सकनिहार स्वामी संसार मे बहुत कम भेटताह । शिष्या पत्नीक शासनातीत यौवन मे जनिक गाम्भीर्ययुक्त गुरुत्वक गद्दी नहि डगमगाइन्ह से निश्चय महात्मा थिकाह । किन्तु एहन असिधारा व्रतक पालन करक हेतु जीवनमुक्त विदेह सन ब्रह्मज्ञान ओ योगबल चाही ।

सामान्य पति मे त पुरुषक पशुत्व 'गुरु' पदक मर्यादा कें अत्यन्त लघु कऽ दैत छैन्ह । प्रमदा पत्नीक एक भ्रू-विलास सँ 'भूगोल'क पढ़ाइ मे भूडोल आबि जाइछ और इतिहास परिहास मे परिणत भऽ जाइछ । हुनक एक लहराइत अलकक झलक सँ पलक मात्र मे अध्यापकक चित्त विषय-विचार सँ विषय-विलास पर जा खसैत छैन्ह। भालक एक गोलबिन्दी क्षण भरिक हेतु समस्त अंकगणित कें शून्य मे तथा रेखागणित कें बिन्दु मे परिणत कय दऽ सकैछ । एहन परिस्थिति मे कतेक स्वामी पत्नीक भाषा सँवारैत-सँवारैत भूषा सँवारय लागि जाइ छथि और साहित्यरचनाक संग संग केश-रचना मे प्रवृत्त भऽ जाइ छथि । शब्दालंकारक अध्ययन स्वर्णालंकारक झनझनाहट मे विलीन भऽ जाइछ । वर्णसन्धिक विचार ओष्ठसन्धि पर जा कऽ समाप्त होइछ और समासक वर्णन एकशेष पर । अद्वैतवादक मीमांसा होइत-होइत दू हृदयक द्वैतभाव तिरोहित भऽ जाइछ ।

मिश्रजी देखलन्हि जे अपना बुते पत्नीक हेतु शिक्षा-सरणि प्रस्तुत करब तहिना कठिन जेना कौशिकीक धार मे बालुक पुल बनाएब । अगत्या ओ एक 'मास्टरनी'क खोज मे बहरेलाह । संयोगवश एक क्रिश्चन लेडी भेटि गेलथिन्ह जे जन्मना भारतीय महिला भेनहु कर्मणा विलायती मेमक कान कटैत छलीह । हुनक 'बूट', 'गाउन' तथा 'हैट' देखि केओ हुनका 'हिन्दुस्तानी स्त्री' कहबाक साहस नहि कय सकै छलैन्ह । ओ अपनहुँ 'मिस साहिबा' वा 'मेम साहिबा' कहाएब पसंद करैत छलीह ।

मिस साहिबाक वास्तविक क्वेलिफिकेशन (योग्यता) की छलैन्ह से त ज्ञात नहि । किन्तु ओ पहिने एक मिशनरी गर्लस्कूल मे 'मिस्ट्रेस' छलीह । कोनो अज्ञात कारण सँ 'रिटायर' कय, आब 'ट्यूशन' आदि द्वारा स्वच्छन्द जीवन व्यतीत करैत छलीह। मिस साहिबा अनुभवी और अनेक कला मे प्रवीण छलीह । पाउडर, क्रेसरी तथा खिजाबक कौशलपूर्ण प्रयोग सँ ओ अपन असली वयसक अँटकर ककरो नहि लागय दैत छलथिन्ह। अस्तु । ओ एक सै टका मासिक पर बुच्चीदाइ कें पढ़ाएब गछि लेलथिन्ह।

जखन मिस साहिबा काँख तर 'फेंसी अम्ब्रेला' (जनानी छतरी) और हाथ मे 'लेडीज बैग' नेने बुच्चीदाइ कें दीक्षित करबाक हेतु पहुँचि गेलथिन्ह त मिश्रजीक एक भारी चिन्ता दूर भेलैन्ह ।

मिस साहिबा अबितहिं बुच्चीदाइक 'पिछुआ' हटा 'पारसी स्टाइल' कऽ देलथिन्ह और हुनक नाम 'मिसेज बूची डाइ' राखि देलथिन्ह । दुइए एक दिन मे बुच्चीदाइक काया कल्प भऽ गेलैन्हि । लिपस्टिकक प्रयोग सँ पानक रंग छोड़ि गेलैन्ह । कँगनाक स्थान मे 'रिस्टवाच' सुशोभित भऽ गेलैन्ह ।

दुइए मासक अभ्यन्तर बुच्चीदाइ आश्चर्यजनक उन्नति कऽ गेलीह । जहाँ केवल सकड़ी ओ हड़ाहीक हाल जनैत छलीह तहाँ आब लंदन और पेरिसक हाल बूझय लागि गेलीह । जहाँ हिन्दुस्तानोक शहर सभक नाम नहि जनैत छलीह, तहाँ आब इङ्गलैंडक नकशा बनाबय लगलीह । जहाँ पहाड़ा पहाड़ बूझि पड़ैत छलैन्ह, तहाँ आब पाउण्ड शिलिंग पेंसक हिसाब जोड़य लगलीह ।

किन्तु एहुसँ बेसी आश्चर्यजनक परिवर्तन भेलैन्ह बुच्चीदाइक आचार-व्यवहार मे । ओ आब माटिक स्थान मे साबुन तथा दातमनिक स्थान मे टूथब्रशक व्यवहार सीखि गेलीह । जहाँ सराइ-अरघी माँजि कऽ पूजा-घर मे रखैत छलीह तहाँ आब चिनिया प्लेट और सीसाक ग्लास धो कऽ टेबुल पर सजाबय लगलीह । बुच्चीदाइ जहाँ चूल्हि पर पढ़ुआक झोर बरकबैत छलीह तहाँ डेकची पर चाय खदकाबय लगलीह ।

बुच्चीदाइ आब काशी कें 'बेनारेस' और गंगाजी कें 'गैं॰ ज' कहब सीखि गेलीह। ओ पान कें असभ्यतासूचक बूझि 'लिपस्टिक' कें महत्त्व देबय लगलीह । अमौटक स्थान मे आमक 'जेली' व्यवहार करय लगलीह । जहाँ गाम पर माटिक महादेव बनबैत छलीह तहाँ आब महादेव कें माटि बनाबय लगलीह ।

सी० सी० मिश्र उत्साहित भय पत्नी कें और द्विगुण वेग सँ प्रगतिशीलताक पथ पर अग्रसर कैलन्हि । हुनक इच्छानुसार मिस साहिबा बुच्चीदाइ कें 'लेडीज क्लब' मे लऽ जाय लगलथिन्ह । ओतय ओ नित्य दू एक गेम टेनिस, दू-एक कप चाय, दू-एक गत पियानो वा 'डांस'क आनन्द लेबय लगलीह । प्रारम्भ मे त किछु दिन धखाइत रहलीह, किन्तु पाछाँ कऽ 'सोसाइटी' मे एतेक मन लागि गेलैन्ह जे घर सँ बेसी ओतहि नीक लगैन्ह । चारि बजे जे जाथि से आठ बजे सँ पहिने डेरा पर नहि आबथि ।

'ठाकुर' कें ताकीद रहैक जे क्लब सँ अबैत देरी 'मिसेज बी० डाइ' क हेतु

टेबुल पर खाना सजाओल जाइन्ह । जहिया ओ दुःखित पड़ि जाय तहिया ई सौभाग्य मिश्रजी स्वतः लूटथि ।

एक दिन बुच्चीदाइ एकान्त मे 'डांस' क प्रैक्टिस करैत छलीह । कोनो कार्यवश मिश्रजी छत पर गेलाह । किन्तु ओ अपन नृत्य-कलाक अभ्यास मे तन्मय छलीह । ई तन्मयता देखि मिश्रजी तन्मय भऽ गेलाह । ओही ताल पर हुनक मनमयूर नृत्य करय लगलैन्ह ।

दू एक सप्ताहक प्रयत्न सँ बुच्चीदाइ कें हेलनाइयो आबि गेलैन्ह । जाहि दिन सी० सी० मिश्र हुनक हेलैत कालक 'स्पैनशौट' लऽ कऽ 'प्रिंट' कैलन्हि, ताहि दिन आनन्द-समुद्र मे डूबि गेलाह ।

आब एकटा कसरि 'मिसेज डाइ' मे रहि गेलैन्ह जे धुड़झाड़ अंग्रेजी बाजऽ आबि जाइन्ह । तदर्थ सी० सी० मिश्र हिन्दी संस्कृत आदिक बखेड़ा छोड़ा, हुनका एक मात्र अँग्रेजी पर भर देबय कहलथिन्ह । 'बी० डाइ' रात्रिदिया अँग्रेजीक अभ्यास करय लगलीह । मिससाहिबाक संसर्ग सँ ओ किछुए मासक भीतर गिटपिट करय लागि गेलीह।

जखन गुरुआइन अंग्रेजी सभ्यताक एकरंगा रंग मे कुंडाबोर रँगलि छलथिन्ह तखन शिष्या पर कमलपत्रीओ रंग कोना ने चढ़ैन्ह ! बुच्चीदाइ आब बूचीडाइ बनि गेलीह।

जहाँ ओ पहिने महेशवाणी गबैत छलीह तहाँ आब अँग्रेजी ताल पर गुनगुनाय लगलीह–

ओ गॉड ! दाउ आर्ट ग्रे........ट !

आब एकेटा बातक कमी छलैन्ह सेहो मेम साहिबाक प्रसादात् पूर्ति भऽ गेलैन्ह। एकमासक अनवरत अभ्यास सँ क्लबक मैदान मे खसैत-पड़ैत बुच्चीदाइ साइकिल सीखि गेलीह । पहिने सार्वजनिक स्थान मे साइकिल चलबैत लाज होइन्ह । परन्तु स्वामीक बहुत हठ कैला पर जखन मेम साहिबाक संग पहिले-पहिल साइकिल पर चढ़ि कऽ क्लब सँ भऽ एलीह तखन धाख छूटि गेलैन्ह; प्रत्युत एक गर्वक अनुभव मन मे करय लगलीह । ओहि दिन सी० सी० मिश्रक एक बड़का मनोरथ पूर्ण भऽ गलैन्ह ।

आब नित्यप्रति सी० सी० मिश्र अपने हाथ सँ साइकिल मे पम्प कय पहिनहि सँ तैयार राखथिन्ह । जखन 'मिसेज डाइ' चुमकी सँ साइकिल पर चढ़ि 'टेनिस शू' सँ 'पैडल' चलबैत, रैकेट युक्त हाथ सँ हैंडल घुमा, क्लब दिस बिदा होथि त मिश्रजीकें तहिना गर्व होन्हि जेना वीरांगना कें अपना स्वामीक विजययात्रा सँ होइ छैक ।

एक दिन बुच्चीदाइ कें क्लब जैबा मे देरी होइत देखि सी० सी० मिश्र पुछलथिन्ह–'' आर यू नॉट गोइंग टु योर क्लब टुडे ?'' (कि आइ अहाँ अपना क्लब मे नहि जायब ?)

बुच्चीदाइ तड़ दऽ जवाब देलथिन्ह–''श्योरली आइ विल बी गोइंग । बट आर माइ केड्स रेडी ?'' (जाएब त निश्चय । लेकिन हमर टेनिस खेलैबाक जुत्ती तैयार अछि ? अर्थात् अहाँ पालिश कऽ रखने छी ?)

ई सुनि सी० सी० मिश्र कें बूझि पड़लैन्ह जे जीवनक सभ सँ पैघ महत्त्वाकांक्षा आइ पूर्ण भऽ गेल । पत्नी मे एहन प्रबल व्यक्तित्वक विकास देखि ओ भगवान कें अनेकानेक धन्यवाद देलन्हि और ओही खुशी मे मिस साहिबा कें एक डिनर (भोज) दऽ देलथिन्ह ।

  

एही बीच मे सी० सी० मिश्र कें एक सर्विस भेटि गेलैन्हि । ओ 'आर्यन कल्चर' ('आर्य सभ्यता') नामक अंग्रेजी मासिक पत्रक एडिटर (सम्पादक) नियुक्त भेलाह।

किन्तु आब एक कठिनाइ ई उत्पन्न भेल जे बुच्चीदाइ बिनु द्विरागमने हाउस वाइफ (गृहिणी) बनि कऽ रहब अस्वीकार कऽ देलथिन्ह ।

सी० सी० मिश्रक संकेतानुसार मिस साहिबा बहुत बुझौलथिन्ह जे–''ह्वाइ शुड यू फॉलो दि रस्टिक कस्टम्स ऑफ योर सोसाइटी ? डोन्ट ओब्जर्व दि सिली सेरेमनी'' (अर्थात् समाजक देहाती प्रथा अहाँ किऐक मानब ? एहि गमारु विधि-बाध कें छोड़ू)।

किन्तु लालकाकीक बेटी कें मातृ-संस्कार जोर कैलकैन्ह । ओ अपना बात पर अड़ि गेलीह । हारि दारि कऽ मिश्र जी पुछलथिन्ह–''अच्छा, कोन कोन विधि होइ छैक से अहाँ हमरा नोट करा दियऽ । आब बेशी टाइम नहि अछि । एक हफ्ताक अन्दर द्विरागमन भऽ जैबाक चाही ।''

बुच्चीदाइ कहलथिन–''दिन मनाबक हेतु पहिने दही माछक भार जाइ छैक। तखन वर जा कऽ कनेयाँ कें बापक घर सँ लऽ अबै छैक ।''

सी० सी० मिश्र बजलाह–''माइ गॉड ! तखन त हमर और अहाँ दूनू गोटाक गेनाइ कम्पलसरी भऽ गेल ! कि खाली फिश (माछ) और कर्ड (दही) पठा देने काज नहि चलि सकै छैक ?''

बुच्चीदाइ कहलथिन्ह–''वाह ! जौं हमहीं नहि रहबैक त द्विरागमन हैतैक ककर? और जौं अहीं नहि जैबैक त द्विरागमन हैतैक कोना ?''

मिश्रजी बजलाह–'फिश' 'कर्ड' पहुँचलाक बाद हम सभ जायब ततेक टाइम आब कहाँ अछि ? हँ, ई भऽ सकै अछि जे 'फिश' 'कर्ड' अपना संगहि नेने चली। लेकिन ओतय पहुँचैत-पहुँचैत 'फिश' सड़ि जाएत और 'कर्ड' खराब भ' जाएत।

बारंबार 'फिश' और 'कर्ड' क नाम सुनि मिस साहियाक मुँह मे पानि भरि एलैन्ह। सभ बात बूझि ओ अपन विचार ई देलथिन्ह जे टिनक डब्बा मे बन्द कैल जे फिश अबैत छैक से खराब नहि होएत और दहीक बदला 'चीज' (पनीर) लऽ चलू।

चुन्चीदाइ कहलथिन्ह–''हमर गाम पैध अछि। सौंसे गाम बँटक लेल कम सँ कम एक बक्स चाही। हँ, तखन एकटा विधि और होइत छैक। वरक संग बरियातो जाइ छैक।''

सी० सी०मिश्र चिन्तित भऽ बजलाह–''आब त एतेक टाइम नहि अछि जे इनभिटेशन कार्ड (निमन्त्रण पत्र) छपाबी। अच्छा, त बरियात मे मिस साहिबा चलतीह।

मिस साहिबा थोड़ेक नाकर-नुकर करैत अन्त मे राजी भऽ गेलीह।

सभ ठीक-ठाक कय सी० सी०मिश्र सासुरक पता सँ तार देलन्हि जे–''हफ्ताक भीतर द्विरागमनक प्रबन्ध करू। हमरा लोकनि बरियातक संग आबि रहल छी।''



[१०]

वर-बरियातक विधि

तार पहुँचैत देरी खड़भड़ मचि गेल। लालकाकी बजलीह–''कहू त भला! एना कतहु द्विरागमन भेलैक अछि!''

भोलानाथ अनुमोदन करैत कहलथिन्ह–त! द्विरागमन मे कतेक ओरिआओन करय पड़ै छैक। कन्याक हेतु कपड़ा-लत्ता गहना-गुरिया....''

ला०– ''बाजु-बिजौठ, बड़हरी, नकमुन्नी, मङटीका, हँसल, पहुँची, पाजेब....।''

भोला०–''तखन बर्त्तन-बासन चाही।''

ला०–''थारी, बाटी, लोटा, गिलास, बटुक, तसला, कड़ाही, करछु, तमघैल अढ़िया...''

भोला०–''तखन मेवा-मसाला साँठल जाइ छैक।''

ला०–''सुपाड़ी, लौंग, अड़ाँची, दालचीनी, शीतलचीनी; जाफर, जावित्री...''

भोला०–''पौती-पेटारक काज होइ छैक।''

ला०– ''पहिनहि सँ सीकीक डाली-मौनी बने छैक। सरकंडाक पौती बनै छैक। जनउ तैयार होइ छैक। डाला बनैत छैक। पीढ़ी लिखल जाइ छैक।''

भोला०–''कहार-महफा कें साइ देल जाइ छैक।''

ला०–''सोआसिनक संग खबासिन जाइ छैक।''

भोला०–''तखन वरक विधि सेहो होबक चाही।''

ला०–''चुमाओनक ओरिआओन होबक चाही। डाला परक मधुर होबक चाही। दही, अक्षत, पान, मधुर, धोती, तौनी, पाग, डोपटा, चानन, काजर.....''

भोला०–''तखन बरियात कें सौजन्य कराबऽ पड़ै छैक!''

ला०–'' त! सँचारक हेतु पुरा बनाबऽ पड़ैत छैक। बड़, बड़ी, अदौरी, दनौरी, तिलौरी, पापड़....बाप रे बाप! एतबे दिन मे ई सभ कोना कऽ पार लगतैक? कनेयाँ नैहरे छथि। फुचुकरानी चिल्काउरे छथि। के की करतैक?''

भोला०–''ताही हेतु त दू मास पहिनहि दिन मनाओल जाइ छैक।''

ला०– ''त! दही माछक भार अबै छैक। कन्याक हेतु कहौतिया नूआ अबै

छैक। से पहिरि कऽ बेटी कनै छैक । देह मे तेल-उबटन लगै छैक । आङने आङन सँ खायक अबै छैक । द्विरागमन कि कनेंया-पुतराक खेल छैक जे चट मड़बा पट विवाह !''

भोला०–''मानि लियऽ और सभ वस्तु समतुलो भ जाय; किन्तु मुहूर्त त अपना हाथक बात नहि । द्विरागमन मे वार, नक्षत्र, तिथि, योग, चन्द्रमा आदि बहुतो विषयक विचार कैल जाइ छैक । लग्न कि ककरो असामी छैक जे तार पाबि कऽ हाजिर भऽ जैतैक ? तखन ई अलग्न कथा कोन फुरलैन्ह ?''

ला०–''हुनकर मुलग्ने कथा आइ धरि कोन भेलैन्ह अछि ? ऊँटक कोन अंग सोझ जे गरदनिए टा टेढ़ कहबैक ! गौंआँ सभ हँसितहिं अछि, आब और थपड़ी पारत।''

भोला०–''हँ, से त जहाँ दस लोक जमा होइ अछि तहाँ अपने घरक खिधाँस करऽ लगै अछि जे द्विरागमन सँ पहिनहि बेटी कें...''

ला०– ''बेशी झरकी नहि उठाउ । ई सभ अगत्ती बुचकुन चौधरीक लेसल छैन्ह। और दुलारमनिए दाइ कि कम लुतरी लगाबऽ वाली छथि ? हमरा बेटी-जमाय दऽ सभ कें कहने भेल फिरै छथिन्ह जे क्रिस्तान भऽ गेलैन्ह ।''

भोला०–''सत्यदेव चौधरी काशी सँ ऐलाह त गाम मे एकटा नवे फाल उड़ौलन्हि जे मिसर मेम रखने छथि ।''

ला०–''एहन एहन बात सुनि कऽ देहो जरै अछि । कनेक हमरा सोझाँ बजितथि त मखानक पात सँ मुँह पोछि दितिऐन्ह ।''

भोला०–''एतबे नहि । इहो बजै छथि जे बुच्चीदाइ बाइसिकिल पर चढ़ि कऽ घुमैत अछि ।''

ला०–''येह सभ सुनि कऽ त बाप-भाइ पुछारियो करय नहि जाइत छथिन्ह। जहिया सँ हम ऐलिऐक तहिया सँ केओ खोज खबरि लेलकैक ?''

भोला०–''कंटीर कें त कानूनक पढ़ाइए सँ ने फुरसत छैन्ह । और भाइ साहेब बोधगया मे एक सेठक कन्याक वर्षफल गुनबा मे लागल छथि ।''

ला०– ''हँ, अनकर कन्याक त जन्मकुण्डली गुनैत छथि । और अपन कन्याक टीपनि हेराएल छैन्ह ।''

भोला०–''परन्तु आब त बिनु गाम ऐने उपाये नहि छैन्ह । आब चिट्ठियो देबाक समय नहि रहल । कहो त तार दऽ दिऐन्ह ।''

ला०– ''हँ, हँ, भला आंइ मे पुछबाक काज ! दूनू बापपूत कें आबक हेतु तार दऽ दिऔन्ह ।''

  

भोलानाथ तार दऽ कऽ ऐलाह त बजलाह–''आब बरियातक इन्तिजाम होबक चाही । के जाने कहिया कतेक गोटा सँ पहुँचि जाथि ! तैं पहिनहिं सँ सभ समतुल कऽ कऽ राखक चाही ।''

लालकाकी कहलथिन्ह–''तरकारी मे कदीमा और सजमनि त चारे पर अछि। भाँटा सेहो बाड़ी सँ बहराएत । तखन आलू परोर हाट सँ आनि दियऽ । धाठि घरे मे छैक । तरुआ-फरुआ लगा कऽ अठारह टा पुरा देबैक ।''

भोलानाथ कहलथिन्ह–''दलान मे ठकबा कुट्टी कटैत अछि से भरि ठेहुन जंगल लगौने अछि । कालि भोरे बहरबा-सोहरबा कऽ साफ करा देबैक । एक टा सोफ त दलान मे छैहे । दू-एक टा बड़का शतरंजी, जाजिम और मसनद मङनी करऽ पड़त।''

लालकाकी कहलथिन्ह–''सुतरी वला बड़का खाट झोलंगा भऽ गेलैक अछि! ओंड़ौन कसाबक हैतैक ।'

भोलानाथ ठकबा कें लऽ बजार दिस बिदा भेलाह । लालकाकी आङन मे आबि देवदनी कें कहलन्हि–''ऐ फुचुकरानी ! जमायक ऐला पर परिछन हेतैन्ह, चुमाओन हेतैन्ह । विधिकरी त छथिन्ह नहि । चानन-काजर अहीं कें करय पड़त ।''

तावत आवेशरानी कें अबैत देखि कहलथिन्ह–''आबथु ए बहिना ! ई नहि लागि-भीड़ि देथिन्ह त कोना कऽ सम्हरतैक ?''

आवेशरानी पुछलथिन्ह–''कहिया अबै जैथिन्ह ?''

लाल०–''दिन त नहि लिखलथिन्ह अछि । तखन एक सप्ताहक भीतरे मे सभ टा ओरिआओन भऽ जैबाक चाहिऐक ।''

आवेश०–''ता त ओहो (लाल) आबि जैथिन्ह ।''

लाल०–''जनै छी ? तार त गेलैन्ह अछि । नहि औथिन्ह त बनतैन्ह कोना ? (चिन्तित भऽ कऽ) हमरा त डर होइत अछि जे हुनका आबऽ सँ पहिनहि ने कतहु बरियात पहुँचि जाइक ।''

आवेश०–''एहन कतहु भेलैक अछि ? मिसर पहिने हिनका बेटी कें एतय भऽ जैथिन्ह। तखन पाछाँ सँ बरियातक संग औताह ।''

लाल०–''नहि ए बहिना । आइकालि अङरेजियाक कोन ठेकान ! वरे कन्याक संग-संग बरिआतो चलि अबैक सेहो आश्चर्य नहि ।''

आ०–''तखन त लगले बिदा कऽ देब पड़तैन्ह ?''

ला०–''से नहि हैतैन्ह । बरियातक बापो उठिक औथिन्ह तैयो बुचियाक बापक बिनु एने द्विरागमन नहि हैतैन्ह । हमर बेटी कि फकिरनी जकाँ बिदा हैत ?''

आ०–''नहि । से कोन दुखें हैतैक ? गहना कपड़ा सभ त एक दिन मे दड़िभंगा सँ आबि जैतैक ।

ला०–''लेकिन एतुक्का ओरिआओन-परिआओन सभ कोना हैतैक ? हम त आब अथबल भऽ गेलहुँ । सँचारक भार हिनके पर रहलैन्ह ।''

आ०–''बेश, जखन ओ समय औतैक त बुझल जैतैक ।''

ला०–''तिलकोरक पात ओ भँटवर जेहन ई तरैत छथि तेहन ककरो नहि होइ छैक । और बड़, बड़ी, दनौरी, तिलौरी...

ई वाक्यो ने समाप्त भेल छलैन्ह कि एक मोटर हड़हड़ाइत टठी दलानक सोझा आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेलैन्ह। दुनमुनकाकी साँझ-देखाबक हेतु दुरुखा मे गेल छलीह। मोटर देखितहि पड़ैलीह और आङन आबि बजलीह–''वर बरियात आबि गेलैन्ह ।''

लालकाकी माथ पिटैत बजलीह–''दैव रे दैव ! आब कोन उपाय हैतैक ? केओ पुरुषो-पात दरवाजा पर नहि छैक ।''

तावत पारसी स्टाइलक साड़ी सँ परिवेष्टित ऊँच एँड़ीक नोकदार शू पर अपन शोभाक भार धरैत बुच्चीदाइ आङन मे आबि सभ कें प्रणाम कैलथिन्ह ।

बुच्चीदाइक ठाट-बाट देखि सभ केओ गुम्म रहि गेलीह । किन्तु एहन बेटी कें पुष्पाञ्जलि देबक चाही अथवा तिलाञ्जलि ? एकर मीमांसा करबाक समय नहि रहैन्ह ।

झारखंडीनाथ कें अबैत देखि लालकाकी कहलथिन्ह–''आउ ऐ बाउ ! बड़ बेरि पर ऐलहुँ । वर-बरियात दरवाजा लागल अछि । जा कऽ सम्भाषण करिऔक गऽ! ऐ फुचुकरानी, बड़का सतरंजी, छोटकी चौकी, कलशी, खड़ाम ई सभ झट दऽ दिऔन्ह तऽ।''

झारखंडीनाथ सभ किछु लऽ कऽ बहरैलाह । किन्तु दालान पर आबि देखै छथि जे बगल मे छतरी और हाथ मे चमड़ाक बेग नेने एक मेम ठाढ़ि अछि और एक टोपबला साहेब मोटर सँ सामान उतरवा रहल अछि । टोप देखि हुनका रुकुरीक डाक्टर स्मरण भऽ ऐलैन्ह जाहि सँ ओ सशंकित भऽ उठलाह ।

दू एक मिनट झारखंडीनाथ किंकर्त्तव्यविमूढ़ जकाँ ठाढ़ रहलाह । ता मोटर बिदा भऽ गेलैक । तखन हुनका चेत भेलैन्ह । झट दऽ सतरञ्जी ओछा, छोटकी चौकी पर एक गगरा पानि राखि, हाथ मे खड़ाम नेने उचितोक ढंग सँ कहलथिन्ह–''आएल होऔ। बैसल होऔ । पैर धोएल होऔ ।''

मेम साहिबा हुनक आशय बूझि पुछलथिन्ह–''बाथ (स्नानागार) किधर है ?''

झारखंडीनाथ माथ कुड़ियबैत बजलाह–''बाथ' त एहिठाम सों बहुत दूर है । कोस छबेक-सातेक सों कम नहीं पड़ेगा । 'बाथ' (गाँव) मे आपका के रहता है?''

मेम साहिबा कनेक मुस्कुराइत बङलामिश्रित उर्दू मे बजलीह–''बाड़ी (घर) मे गोसुलखाना है ?''

झारखंडी कहलथिन्ह–''बाड़ी मे त भाँटाक गाछ रोपा हुआ है और गोस-ऊस का खाना हमरा सभक घर मे नहीं होता है ।''

बाहर त ई सभ होइ छल, और भीतर ऐपन पड़य लागल । लालकाकी बजलीह–'ऐ बहिना, परिछन हैतैन्ह तखन ने जमाय आँगन औताह । आब सभ सँ पहिने हँकार पड़क चाही । ककरा पठबियौक ?''

आवेश०–''फुलमतिया और सूर्यमुखी जा कऽ हँकार दऽ औतैक । दुनू जतय जाइत अछि ततय जोरटे भऽ कऽ । यैह, नाम लैत दुनू पहुँचि गेल । बहुत दिन जिबै जैबें।''

फुल०–''हम दुनू त पोखरि सँ दौड़ले चलि अबै छी । जखने डाबागाड़ी रुकलैक तखने बुझलिऐक जे 'सरौता' आबि गेल ।''

लाल०–''गे बौआ, 'सरौता' सँ पाछाँ कऽ भेंट करिहें । पहिने जा कऽ सभतरि हँकार दऽ अबहीक । भऽ सकौक त गीतगाइन सभ कें अपना संगहिं बजौने अबहुन।''

दुनमुनकाकी कें बैसलि देखि लालकाकी कहलथिन्ह–''ऐ फुचुकरानी ! ऐपन दऽ कऽ निश्चिन्त भय गेलिऐक ? चानन चन्द्रौटा लबियौक । कजरौटा बाहर करिऔक। बाती बटियौक । काछुक लखरांइया तकियौक ।''

ता झारखंडी कें अबैत देखि पुछलथिन्ह–''की औ बाबू ? कतेक गोटे सँ छथि? ताहि मे सौजन्य कै गोटाक हैतैन्ह ?''

झारखंडी कहलथिन्ह–''असौजनिया केओ नहि छथि ।''

लालकाकी भयभीत भऽ बजलीह–''बाप रे बाप ! ई म केओ सीजनिये छैक? तखन कतेक रास सँचार लगावक पड़तैक ! एखन धरि धोतियो नहि किनैलैक अछि।''

झा०–''धोतीक काज नहि पड़त । घर सँ बरियात धरि धोती चला केओ नहि अछि । जमाय पतलून कसने छथि और बरियात मे जे आयल छथि से पैंघरा फलकौने छथि ।''

ला०–''दुरजो ! अहाँ त हँसी करै छी ।''

झा०–''नहि, नहि, सरिपों कहै छी । बरियात मे खाली एकटा मेम आएल छथि।''

ई सुनितहिं आवेशरानी और दुनमुन काकी भभा कऽ हँसि उठलीह और लालकाकी अवाक रहि गेलीह ।

देखैत-देखैत समस्त टोल मे टोल भऽ गेल । 'एतेक दिन पर बुचियाक वर आयल छैक' येह कम कुतुहलक बात नहि । ताहि पर मेमक नाम सुनि विनोदक बाढ़ि आबि गेल । मेमक सम्बन्ध मे नाना प्रकारक कल्पना होमय लागल । उत्सुकतावश झुंडक झुंड आइ-माइ पहुँचय लागि गेलीह । मेमक झाँकी-दर्शन करक हेतु दुरखाक मुँह पर मेला लागि गेल ।

आब टीका-टिप्पणी चलय लागल ।

आवेशरानी बजलीह–''त ! सरिपों छीए छैक । हमरा होइ छल जे कोनो बहुरुपिया बरियात मे आयल हैतैक ।''

परिहारपुरवाली–''स एं ! हमहूँ नहि पतियाइ छलिऐक । से आब आँखि सँ देखलिऐक ।''

पुहुपरानी–''देखियौ ने, केहन शान सँ बैसलि सिगरेट पिबै अछि !''

पलटीमाय–''पुरुषे जकाँ झुलफीओ रखने अछि । हाथ मे अखबारो छैक ।''

भखराइनवाली–''पुरुष सँ कम्मे कोन बात मे अछि ? एक हमरा लोकनि छी!''

सरयू०–''लेकिन कोनो तेहन सुन्दरि कहब से नहि अछि । फैशन जे कैने रहौ!''

पलटी–''बिल्ली सन-सन आँखि छैक । नाक केहन ठाढ़ !''

परिहारपुरवाली–''ठोर कथू लऽ कऽ रङने अछि ।''

पुहुपरानी–''हाथ -पैर सुकटी छैक ।''

भखराइनवाली–''लेकिन मुँह पर पानि छैक ।''

आवेश०–''किछु किछु मुहटान तारा सन लगै छैक ।''

पलटीमाय–''नहि । ताराक मुँह गोल छैक । एकर मुँह नमीन पर छैक ।''

कामेश्वरी–''देखऽ मे त बीसे वर्षक सन लगै अछि, लेकिन वयस तीस सँ कम नहि हैतैक ।''

सरयू०–''कोन आँखि सँ सुझै छैंह ? चालिस सँ कम नहि हैतैक । देखै छही ने जे.....''

एहि प्रकारें मेमक सम्बन्ध मे तर्क-वितर्क होइत छल कि लालकाकी आबि कऽ कहलथिन्ह–''आब जमाय कें परिछि कऽ आङन मे लऽ अबै जाथुन्ह ।''

लगले गीत उठि गेल और गाइन लोकनि गबैत-गबैत बाहर ऐलीह । सी० सी० मिश्रकें ओहि सेनाक बीच मे आत्मसमर्पण करय पड़लैन्ह । परिछन तथा चुमाओनक 'पैरेड' करैत-करैत-कोबर पहुँचऽ मे एक घंटा सँ ऊपर लागि गेलैन्ह ।

आब तरह-तरहक व्यंग्यवाण छुटय लागल । एक पछमीनी शह चलौलथिन्ह–''हीन चोर जगती भागल रहथ । एतना रोज पर धराइ देलन है । हिनकर निम्मन तरह से सजाय होवे के चाही ।''

पुहुपरानी पुछलथिन्ह–''की सजाय करबैन्ह ?''

सरयू०–''सजाय येह जे आब फेरि एहितान सँ जा नहि सकताह । एतहि घरजमैया बनि कऽ रहय पड़तैन्ह ।''

भखराइनवाली–''तखन त जङला मे लोहक छड़ लगाबऽ पड़त ।''

सरयू०–''और लंगाझोरी कऽ देखि लेबैन्ह जे रेलो मे चोरा कऽ रखने होथि।''

कामेश्वरी–''ककरो एना भऽ कऽ उछन्नर करी से उचित नहि । दोसर-दोसर बात पुछिऔन्ह ।''

आब आवेशरानी चिकना-चिकना कऽ कहय लगलथिन्ह–''अयँ ए मिसर ! हिनका की भऽ गेलैन्ह ? चतुर्थीएक राति मे चुपचाप चलि गेलाह । विवाहक यात्रा मे जे गेलाह से फेरि कहियो घुरि कऽ खोजो ने कैलन्हि । मधुश्रावणी, नागपंचमी, जितिया, सभ पावनि मे लोक बाट तकैत रहि गेल । हिनको जे पुछारी-कोजागरा जइतैन्ह से कतऽ जइतैन्ह ? गाम पर अपन लोकवेद केओ छैन्हे नहि । सभ मनोरथ लोक कैं लगले रहि गेलैक ।''

तावत सूर्यमुखी पूछि देलकैन्ह–''बाहर मे जे बैसलि छथि से अहाँ कें के होइतीह ?''

फूलमती–''पिउसि होइथिन्ह नहि त पितियाइन ।''

कामेश्वरी–''हिनक सासुर कतय छैन्ह ?''

आब मिश्रजी कें उत्तर देब उचित बूझि पड़लैन्ह । गंभीरतापूर्वक बजलाह–''हिनी कुमारिए छथि ।''

ई सुनितहि ठहाका पड़ि गेल ।

पलटी माय बजलीह–''गे दाइ गे दाइ ! सभ परियोग भऽ गेल, बहुरिया पद धैने अछि ! एहन बुढ़कनियाँ सँ के विवाह करतैन्ह ?''

भखराइनवाली–''झारखंडीक भाग जगलैन्ह । बेचारे दू बेर सभा सँ फिरि आएल छथि ।''

कोबर मे एहि तरहें हास-परिहांस चलैत छल त भोलानाथ ठकबाक माथ पर एकटा मोटा लदने आङन पहुँचलाह । लालकाकी कें डाला दैत कहलथिन्ह–''एकरे अन्वेषण मे बहुत राति बीति गेल । के जाने कखन काज भऽ पड़य ! दस जोड़ धोतियो नेने एलहुँ अछि । एँ ! ओम्हर घर मे एतेक लोक किऐक जमा अछि ? जमाय आबि गेलाह की ?''

लालकाकीक मुँह सँ सभटा समाचार सुनि कऽ भोलानाथ बजलाह–''नहि नहि। एहि खातिर अहाँ खिन्न किऐक होइ छी ? साहेब-मेम त बड़का-बड़का व्यक्तिक ओहिठाम नेओत पूरऽ जाइ छैक और जेहन ओकर सत्कार होइ छैक तेहन नरक बापो कें नहि होइ छैन्ह ! हमरा सभक अहोभाग्य जे बङला मे रहयवाली मेम एहि मड़ैया मे ऐलीह । हिनका रहबा मे, भोजन-छाजन मे कनेको कोनो बातक विश्रुति नहि होमय पबैन्ह ।''

आब मेम साहिबाक भोजनक प्रबन्ध होमय लगलैन्ह । दुरुखा मे ठाँव-बाट भेलैन्ह। हरद्वारी कंबल चौपेति कऽ ओछाओल गेलैन्ह । बड़का थार मे एक अढ़ैया मेंही भात जाँति कऽ परसल गेलैन्ह । अठारह टा बाटी मे सँचार लगलैन्ह । लोटा-गिलास माँजि कऽ पानि धैल गेलैन्ह । पैर धोबक हेतु चिलमची-पीढ़ी राखल गेलैन्ह ।

लालकाकी एक बेरि आपत्ति कैलथिन्ह, किन्तु भोलानाथ बजलाह–''नहि । ओ राड़-रोहियाक श्रेणी मे नहि छथि जे अछोप जकाँ बाहर पात पर खोआ देबैन्ह। पाछाँ आगि मे झरका कऽ अपन सभ द्रव्य शुद्ध कऽ लेब । और जखन धोती आबिए गेल अछि तखन सौजन्यक व्यवहार किऐक ने करबैन्ह ? ओ पहिरथु वा नहि पहिरथु। हम अपना घरक मर्यादा किऐक छोड़ब ?''

सभ किछु ठीक भऽ गेला पर भोलानाथ मिस साहिबा कें बजाबय गेलथिन्ह। ओ एलीकाल एकसरि बैसलि-बैसलि औंघा गेल छलीह । थोड़ेक काल मे मिस साहिबा

चेहा कऽ उठलीह और भोलानाथ कें ठाढ़ देखि 'सौरी' (अर्थात् खेद प्रकाश) कहि हुनक पाछाँ चललीह ।

'सौरी' शब्द सुनि भोलानाथ भ्रम मे पड़ि गेलाह । मिस साहिबा कें 'सौरी माछ' क अपेक्षा छैन्ह वा 'सौरी घर' क ? एहि संशयक निर्णय ओ नहि कऽ सकलाह।

किन्तु हुनका ई भासित भऽ गेलैन्ह जे मिस साहिबा कें खोऐबा-पिऐबा आदिक भार आब स्त्रीगण पर छोड़ि देबक चाही । तें ओ मिस साहिबा कें आङन मे आनि जोर सँ बजलाह–''आब अहाँ लोकनि हिनकर यथोचित आगत-स्वागत करै जैयौन्ह। हम मिस्टर सँ भेट करय जाइ छिऐन्ह ।

'मेम भोजन करय आयल अछि' ई बुझितहिं सभ स्त्रीगण तमाशा देखक हेतु उमड़ि पड़लीह । टुनमुनकाकी पैर धोआबक हेतु एक लोटा पानि लऽ कऽ ठाढ़ि भेलीह। किन्तु मेम साहिबा जूता-पैतावा पहिरनहि आसन पर चलि गेलीह । एहि पर पहिल ठहाका पड़ल ।

फ्रौक मे रहबाक कारण मेम देहुन मोड़ि कऽ नहि बैसि सकलीह । दूनू पैर पसारि कऽ आसन पर बैसय पड़लैन्ह । एहि पर दोसर ठहाका पड़ल ।

छुरी-काँटाक अभ्यास-वश मेम कें भात सानि कऽ कौर नहि बनाबय एलैन्ह। आङुर सँ खैबा मे नहि ओरिआइन्ह, खसि-खसि पड़ैन्ह । अगत्या ओ एक एक टा भात मुँह मे देबय लगलीह । एहि पर तेसर ठहाका पड़ल ।

मेम अप्रतिभ भऽ उड़ीदक बड़ी कें ओमलेट जकाँ खोंटि-खोंटि खाय लगलीह।

ता टुनमुनकाकी डाला-धूप लऽ कऽ पहुँचि गेलथिन्ह । मेम कें आग्रह करैत कहलथिन्ह–''बहिनदाइ ! और किछु चाहिऐन्ह ?''

मेमक तृष्णा डिब्बाक पनीर पर लागल रहैन्ह । कहलथिन्ह–''कुछ 'चीज' मँगाइये ।''

टुनमुन०–''कोन चीज लेतीह ?''

मेम मुश्किल मे पड़ि गेलीह । कहलथिन्ह–'चीज', चीज, वही, सी०एच०ई० ई० एस० ई०–चीज ।''

सभ स्त्रीगण कें बुझि पड़लैन्ह जे मेम अङ्गरेजी मे गारि पढ़ि रहल छथि । एहि पर पाँचम ठहाका पड़ल ।

मेम साहिबा टुनमुन काकी सँ नाम-ग्राम पुछलथिन्ह ।

पलटीक माय बब्बर सँ कहलथिन्ह–सौक नाम क्या पूछते हैं ? और सासुरक

नाम की कैसा लेता है जे जिनका पूछते हैं ?''

एहि पर छठम ठहाका पड़ल ।

एम्हर ठहाका पर ठहाका पड़ै छल और ओम्हर लालकाकी बीतलि जाइ छलीह। तावत डहकन उठि गेल ।

गीत होइते छल कि एकाएक बिहारि उड़बैत दुलारमनि पिउसी आबि कऽ पलटीक माय कें जोर सँ पहुँचा पकड़ि लेलथिन्ह और गरजैत बजलीह–''सभ सखी झुम्मर पाड़य लुल्ही कहै हमहूँ ! सभ क्रिस्तान भऽ जाएत त अहूँ भठि जाएब ? राम राम ! एहन अनर्थ ! जे सभ कहियो ने भेल छल से सभ आब गाम मे होमय लागल । धर्म-कर्म कोठिक कान्ह पर गेल । मुदा जौं हम नैयाँ चौधरीक बेटी त कहि दै छी जे एहि पापें सभ सत्यानाश मे मिलि जाएत । तर्क छी की ? चलू !''

ई कहैत दुलारमनि पिउसी पलटी माय कें खिंचने तिरने लऽ गेलथिन्ह । हुनका जैतहिं सभ आइ-माइ उठि विदा भऽ गेलीह ।

लालकाकी तेल-सुपारीक खातिर ओरे परैत रहि गेलथिन्ह । किन्तु कैओ फिरि कऽ तकबो नहि कैलकैन्ह ।

❑

[११]

सामाजिक आन्दोलन और भोजभात

गामक पंडित-प्रधान कें एकत्र कऽ बुच्चकुन चौधरि कहलथिन्ह–''आब 'टप' मेटा कऽ 'टोप' पहिरै जाउ और टीक कटा कऽ विलायतक टिकट कटबै जाउ । 'ईश' क स्थान मे 'ईशा' और 'गिरिजा' क स्थान मे 'गिरजा'क पूजा होय । 'ब्रह्माण्ड' सँ 'कुक्कुटाण्ड' और 'ओम' सँ 'ओमलेट' पर अबै जाउ ।''

पं० होड़ाइ झा कहलथिन्ह–''किन्तु एगोटाक अजाति भेने कि सौंसे गाम अजाति भऽ जाएत ? हमरा लोकनि पतितक संसर्गी नहि भऽ सकै छी ।''

पं० नमोनाथ झा बजलाह–किन्तु ओ प प प पतित कोना भेलाह ?''

ज्योतिषीजी कहलथिन्ह–''तखन शास्त्रार्थ होय ।''

ई कहि ज्योतिषीजी वीरासन लगा संस्कृत मे बाजऽ लगलाह–

''कथं न पातित्यम् ? म्लेच्छाणां स्पर्शादेव पातित्यं संघट्यते । यथोक्तं धर्मशास्त्रे–

म्लेच्छच्छायाभिषङ्गेण चाण्डालत्वं प्रजायते ।

छायास्पर्शेनैव यदा चाण्डालत्वं सञ्जायते तर्हि काञ्चिदज्ञातकुलां विधर्मिणीं गोघ्नीं गोघ्नरूपे समादर्य, स्ववेश्मनि प्रवेश्य, स्वासने संस्थाप्य, स्वपात्रे परिवेष्य, यः सिद्धान्नं संभोजयति तस्य कथं न संसर्गदोषः? अनार्यपुष्टे सति तन्महानसे कथमस्माकं तेन सह सहभोजित्वम् ? यः लोकविरुद्धमाचर्य, सनातनधर्ममर्यादामुल्लङ्घितवान् तस्य कथं नाम ब्राह्मणत्वम् ? वेदोक्तविधिवाक्याद्विभिचर्य, स्मृत्युक्तसदाचारसरणेः संस्खल्य, परम्परागतपरिपाटीं प्रत्रोट्य स व्रात्यत्वमुपगतोऽतएव सर्वस्मात् सामाजिककर्मणो बहिष्कार्य इति मे सिद्धान्तः वर्त्तते॥त्र कोऽपि सन्देहः? तस्य प्रायश्चित्तार्हत्वे कोऽप्याक्षेपश्चेत् कस्मिंश्चिच्छङ्काच्छन्नचेतसि तर्हि उदगीर्यताम्; प्रमाणवचनञ्चोद्घाट्यताम् ।''

एहि प्रकारें सिंहगर्जन करैत ज्योतिषीजी पूर्वपक्ष स्थापित कैलन्हि । चारू कात सँ 'साधु साधु' उच्चरित होमय लागल । कोनो प्रतिपक्षी कें उत्तरपक्ष करबाक साहस नहि पड़लैन्ह । पं० नमोनाथ झा किछु गोंङियाय चाहलन्हि, किन्तु खट्टर चौधरि डाँटि कऽ कहलथिन्ह–''दुर जी ! आब की बाजब ? अहाँ कें मन होय त सागभात करू गऽ । हमरा लोकनि भठभेर नहि कऽ सकै छी ।''

अन्ततोगत्वा सर्वसम्मति सँ निर्णय भेल जे 'लाल' कें 'बारि' देल जाइन्ह । जा घर-घराएन 'पतिया' नहि करथि ता समाज नहि उठतैन्ह ।

अतएव जखन लालकाकीक बैन बँटाय गेलैन्ह त कंओ नहि रखलकैन्ह । दहीक स्थान मे उज्जर 'चीज' देखि घोल उड़ि गेल जे अंडाक गुद्दी सँ लालकाकी सभ कें भटाबक चाहै छथि । बैन देखि प्रत्येक आङन मे किछु ने किछु व्यंग्यपूर्ण आक्षेप भेल।

ज्योतिषिआइन बजलीह–''हम सत्तरि वर्षक भेलहुँ । दही-माछ देखैत-देखैत केश पाकि गेल । सों आजुक नेना भऽ कऽ हमरा परतारय आएल छह ! जौं काशी मे फच्च दऽ फुटैत नहि देखने रहतिऐक त नहियो चिन्हितिऐक । जाह, जाह । जखन एतेक दिन निमहि गेल त आब मरक बेरि ई की छूबूगऽ ?''

पलटीक माय बजलीह–''मेम सँ छुआएल एहन महाप्रसाद फेर कतय पबै जैतीह ? अपनहि लोकनि भरि पेट खाइ जैहथि ।

भखराइनवाली कहलथिन्ह–''बिलायती बैन खैबाक हेतु मुँहो बिलायती चाही। हमरा लोकनि कें ओहन मुँह कहाँ ?''

परिहारपुरवाली कहलथिन्ह–''जौं सभ दिन भेटैत त खैबो करितहुँ । एक दिन खातिर की जाति दियऽ ?''

पुहुपरानी बजलीह–''कनेयाँ अपने जा कऽ वर कें द्विरागमन करा अनलथिन्ह तखन दही-माछ बँटाइ अछि ! हुनका त ऐहयक फर बाँटक चाहिऐन्ह ।''

आवेशरानी नहुँ-नहुँ बजलीह–''हम त राखि लितहुँ, लेकिन दस लोक सँ फराक भऽ कऽ कोना रहब ?''

एवं प्रकारें टीका-टिप्पणीक संग सभ आङन सँ बैन फिरता आएल ।

मेम साहिबा त अपन 'डेरा' कूच कैलन्हि, लेकिन 'डंडा' भोलानाथक माथ पर बजरलैन्ह । भाइबन्धुक संग-संग पौनिओ पसारी छोड़ि देलकैन्ह । लालकाकीक रंग उतरि गेलैन्ह । मिसेज 'बी. दाइ' अपन बिदाइ बिसरि गेलीह, और 'सी० सी०क 'स्पिरिट' उड़ि गेलैन्ह ।

जखन लाल ऐलाह त हालचाल बूझि सभ ताल बिसरि गेलाह । ओ आब लाल पानक बादशाह सँ स्याह पानक गुलाम भेल छलाह । 'बट्को' अपैत भऽ गेलथिन्ह। 'कंटोर' 'कनकोट' भऽ गेलाह ।

लालक प्रार्थना पर गामक ठाकुरबाड़ी मे सभा बैसल । पंच परमेश्वरक फैसला भेलैन्ह जे भोलानाथ तुलसी-ताम लऽ कऽ शपथ खाथु जे मेमक संपर्क सँ सर्वदा बाँचल

छथि । तखन लोकापवादक प्रक्षालनार्थ सभ गोटा कें बालु-गोबर गोड़ि, पंचगव्य पीबय पड़तैन्ह । मेमक संस्पृष्ट सभ बर्तन-बासन कें फोंकि, सम्पूर्ण घर-आङन कें गोबर-माटि सँ नीपि, तिल-कुश-गंगाजल सँ सिक्त करय पड़तैन्ह ।

लाल हाथ जोड़ि कहलथिन्ह–''हमरा सभटा शिरोधार्य अछि । 'जाति गंगा गरौंयिगो'क आज्ञाक विरुद्ध के जा सकै अछि ? अब जाति सँ हम उत्तीर्ण होइ से अहीं लोकनिक हाथ मे अछि ।''

घर आबि, स्नानादि कऽ, जनऊ बदलि, एक सहस्र गायत्री जपि, पञ्चगव्यादि पान कय लाल शुद्ध भेलाह । औरो और लोक शुद्ध भेलाह । केवल सी० सी० मिश्र गोमूत्र पीब अस्वीकार कऽ देलथिन्ह । तैं हुनका चाय मे मिला कऽ देल गेलैन्ह । और गोबर मे पुदीना-बेसन फेंटि कऽ 'चौप' बना देल गेलैन्ह ।

आब लाल 'मांजनि' (मान्य जन) लोकनि सँ आज्ञा लऽ भोज-भातक तैयारी मे लगलाह । किऐक त सिद्धान्तक परिपाकक हेतु समाज मे सिद्धान्नक परिपाक होयब आवश्यक ।

  

आइ लालक आङन मे छौ सात टा 'तिउर' खनल गेल छैन्ह । ताहि पर बड़का-बड़का खँखिर सभ चढ़ल अछि । कोनो मे चाउर, कोनो मे दालि खदकि रहल अछि । पाकमल्ल लोकनि काछ भिड़ने अपन अपन 'मोर्चा' पर डटल छथि । केओ टोकना मे बाँसक कौड़ी लगा कऽ माँड़ पसा रहल छथि । केओ खखनहर मे झँझि सँ भात छौंकि रहल छथि । केओ बड़का दलिरन्हा चढ़ौने छथि । सभक देह घामे-पसीने तर-बतर भेल छैन्ह किन्तु हाथ अपैत रहने पोछथु कोना ? एक पाककर्त्ताक ललाटक स्वेदबिन्दु नासाग्र पर आबि मोतीक स्वरूप धारण कैलकैन्ह । किन्तु जहिना एक आँजुर आमिल उझीलक हेतु निहुड़लाह कि ओ मोती टप दऽ खदकैत दालि मे जा विलीन भऽ गेलैन्ह।

ओसारा पर करछुक टनटन संग चूड़ीक झनझन स्वर ध्वनित करैछ जे व्यञ्जन वर्ग महिलाश्रित अछि ।

भंडार घर मे धूर केराक पात पर भालसरी फूल सन भातक ढेरी लागल अछि। भोज्यान्नक सौरभ सँ सम्पूर्ण भवन गमगम कऽ रहल अछि ।

  

पहर राति बितैत-बितैत लालक दलान पर समवेता-बुभुक्षवः भरि गेलथिन्ह।

एहि दल मे दन्तहीन नेना सँ लय दन्तहीन वृद्ध पर्यन्त सम्मिलित छलाह । भिन्न-भिन्न आकार प्रकारक लोटा सँ दलानक कोनी भरि गेल।

लाल अबि पुछारी कैलथिन्ह-''की ? आब त सभ केओ आबि गेलाह ?''

कंटीर कहलथिन्ह-''तीन गोटे नहि आएल छथि-बुचकुन चौधरी, खट्टर चौधरी और डोंड़ाइ झा ।''

डोंड़ाइ झाक महिष एक बेरि भोलानाथक खढ़ीर मे पड़ि गेल रहैन्ह जकरा भोलानाथ फाटक मे देबा देने रहथिन्ह । फलस्वरूप डोंड़ाइ झा कैं अढ़ाइ टका दण्ड लागल रहैन्ह। एहि खीस सँ ओ खाय नहि ऐलाह ।

खट्टर चौधरि कैं मुकुन्द सँ मुकदमा चलैत छलैन्ह । ताहि मे भोलानाथ मुकुन्दक दिस सँ गवाही देने रहथिन्ह । खट्टर चौधरि हारि गेलाह । आब ओकर कुन्नह भोजक बेरि सधावय लगलथिन्ह ।

बुचकुन चौधरि कैं कोनो टा देखार कारण नहि रहैन्ह । अतएव ओ खट्टर चौधरिक डेंड़ भऽ कऽ रहि गेलाह ।

लालकका भोलानाथ कैं कहलथिन्ह-''तों अपने जा कऽ मना लबहुन । की औ ज्योतिषीजी कका ?''

ज्योतिषीजी कहलथिन्ह-''हँ, हँ, अवश्य ।''

भोलानाथ झा झारखंडी कैं संग लऽ कऽ मनौअल मे गेलाह । एहि स्वर्ण सुयोग सँ लाभ उठबैत कतिपय बुभुक्षु कान पर जनउ चढ़ा, हाथ मे लोटा लेलन्हि और अपना पाकस्थली कैं ताही प्रकारें शुद्ध कऽ ऐलाह जेना मुमुक्षु अपना अन्त:करण कैं शुद्ध करैत छथि ।

एक घंटाक बाद भोलानाथ प्रत्यागत भेलाह । डोंड़ाइ झा त आबि गेलथिन्ह, किन्तु खट्टर चौधरि और बुचकुन चौधरि कोनो तरहें नहि मानलथिन्ह ।

लालकका ज्योतिषीजी दिस ताकि पुछलथिन्ह-''आब की होयबाक चाही ?''

ज्योतिषीजी कहलथिन्ह-''एक बेरि अपने जा कऽ देखि अबियौन्ह ।''

लालकका अपने लालटेन लय बिदा भेलाह । निमन्त्रित ब्राह्मण लोकनि कैं भोजनशक्तिक उपयोग करबा मे पुन: व्यवधान भऽ गेलैन्ह ! कतेको गोटा मनहि मन बुचकुन चौधरि कैं ब्रह्मशाप देमय लगलथिन्ह । छोट-छोट नेना सभ औंघाय लागि गेल।

डेढ़ घंटाक बाद लालकका खट्टर चौधरि कैं नेने पहुँचलाह । किन्तु बुचकुन चौधरि असक्क होयबाक लाथ कय नहि ऐलथिन्ह ।

एक बजे रातिक अन्दाज परबैया कहलथिन्ह-''तखन आब बिझो होऔक !''

'बिझो' शब्द सुनितहि बिजलीक लहरि दौड़ि गेल । सभ केओ साकांक्ष भऽ अपन-अपन लोटा हाथ मे उठौलन्हि । जनिक नेना सुति रहल रहैन्ह से जोर सँ नेनाक नाक मोलि निंद तोड़ि देलथिन्ह । भजनदेवक विशेष भक्त लोकनि पहिनहि पैर धो मँड़लाम बीड़ी पर जा बैसलाह । वयोवृद्ध लोकनि झटकलो उत्तर पछुआ गेलाह, तैं कतेक गोटा कैं ऐंठकटार लग बैसय पड़लैन्ह । ज्योतिषीजी कैं भट्ठा मे बैसब स्वीकार नहि भेलैन्ह, तैं दुरुखाक मुँह पर आसन ओछा देल गेलैन्ह ।

आब बारीकगण अपन-अपन चुमकी देखाबय लगलाह । भोजनार्थी लोकनि अपन-अपन सुचिक्कण कदली थंभक पात कैं सिक्त कय भात सरियाबऽ लगलाह। ताहि पर आमिल देल राहड़िक दालि परसल गेल । तदनन्तर सजमनि, कदीमा, अदौरी-भाँटा, आलू-परोर, साग, तिलौरी, पापड़, तिलक चटनी और तेतरिक खटमिट्ठी परसाय लागल । तत्पश्चात आम्रपल्लव लऽ कऽ घृत परसैला उत्तर ज्योतिषीजी कहलथिन्ह-''आब होउ । 'पवित्री' पड़ि गेल । नैवेद्य दैत जाउ ।''

आब भोजनक सपासप ध्वनि एक ताल सँ बहराय लागि गेल ।

थोड़ेक कालक उपरान्त बड़ी उठल ।

पं० रमोनाथ झा दु-चारि टा चाखि कऽ बजलाह-''बाह ब ब ब बड़ी ब ब ब बड्ड ब ब ब विलक्षण ब ब ब बनलैक अछि ।

ज्योतिषीकका समर्थन करैत कहलथिन्ह- ''हँ बेश मुलायम छैक । घाटि खूब कऽ फेनल गेलैक अछि । झोरो बेश खटतुरुस भेलैक अछि । किन्तु हमरा केराव बाँतर पत्त तैं खाइत डर होइ अछि ।''

पलटू झा जीभ चटपटबैत बजलाह-''तेतरिक खटमिट्ठी बड़ दिब भेलैक अछि। खूब चटकार । एहि मे जीरक स्वाद अपूर्व लगैत छैक ।''

लाल बजलाह-हाँ, खटमिट्ठी एक बेरि और उठाबह ।''

किछु कालक उपरान्त दही-चीनी उठाओल गेल ।

डोंड़ाइ झा कहलथिन्ह-''दही किछु अम्मत भऽ गेलैक अछि । कनेक नोन मँगाउ ।''

बटुकजी बजलाह-''आइ चार रोज के पौरल है--खट्टा केकरा कऽ न होएत? ओह पर बथनिया सभ भैंसी के........''

लाल हुनका चुप करैत बजलाह-''हौ कंटीर, रतुका पौरल मटकूर उठाबह ।''

ज्योतिषीजी कहलथिन्ह–''हाँ हाँ ! चीनी फराके कऽ परसह । जाह ! दही क ऊपरे मे धऽ देलह । बारीक पक्का नहि भेलाहे ।''

अन्त मे सकरौड़ी उठल । भोलानाथ बाटी लऽ कऽ पातेपात परसय लगलाह। किछु अधिक चतुर व्यक्ति गिलास वा लोटा मे सकरौड़ी पीबय लगलाह ।

बौकू झा मौन-भोजन करैत छलाह । हुनका बगल मे एक सात वर्षक नेना बैसल छलैन्ह । सकरौड़ी परसाय काल ओकरा पियास लागि गेलैक । जहिना लोटा उठा कऽ मुँह मे लगौलकैन्ह तहिना बौकू झा ओकरा गाल मे बामा हाथे एक लबड़ाक लगाओल। नेनाक मुँह सँ लोटा छूटि गेलैक । बौकू झा पानि फेंकि जा लोटा अजबारथि-अजबारथि ता बारीक पाते पर सकरौड़ी परसि आगाँ बढ़ि गेलैन्ह । बौकू झा पित्ते औंट भऽ गेलाह। किन्तु बाजथु कोना,? ओ अपन मूक क्रोध नेना पर उतारय लगलाह । मुँह दूसि इशारा सँ कहय लगलथिन्ह–''आब पीबि ले सकरौड़ी ! अभागल ! भोजो मे ऐलाह त घट-घट पानिए पीबय लगलाह । पानि त अपनो इनार मे भेटितैक । कर्मनेढ़ा ! मुँह ने देखिऔन्ह केहन सुथनी सन बनौने छथि !''

तावत मुकुन्द और झारखंडी मे सकरौड़ी पिउबाक बाजी लागि गेलैन्ह । घरबैयाक छाती धड़कय लगलैन्ह । भोलानाथ ऊपर सँ सकरौड़ी ढारने जाथिन्ह और झारखंडी चुर ओरने घट-घट करैत पिउने जाथि । एक्केबेरि झारखंडीक कंठ मे एतेक रासे सकरौड़ी चलि गेलैन्ह जे ओ उजबुजा गेलाह । कंठनलिका बन्द भेने दूनू आँखि उनटि गेलैन्ह और नाक दऽ सकरौड़ी बहय लगलैन्ह । आब गर्द पड़ल–पानि लाउ, पानि लाउ ! झारखंडीक आँखि पर छिटिऔन्ह ।

भोलानाथ एकाएक पानि लाबक हेतु जे घुमलाह से तलमलाक पातिल नेनहि मुकुन्दक पात पर खसलाह । आब सकरौड़ीक नदी मुकुन्दक पलथी तर दऽ बहय लगलैन्ह ।

लालकक्का अपने दौड़ि कय ऐलाह और पानिक छिटका देबय लगलथिन्ह । किछु कालक उपरान्त झारखंडीक जी ओकैलैन्ह और गरी-किशमिश सहित खैलहा सकरौड़ी पाते पर बोकरि देलन्हि ।

होश भेला पर झारखंडी आँखि तकलन्हि और हाथक इशारा सँ कहलथिन्ह–''केवल सरकि गेल छल । कोनो चिन्ता नहि ।''

झारखंडीक इच्छा रहैन्ह जे एक लोटा सकरौड़ी पान कैल जाय । किन्तु तावत सभ लोक हूर भऽ गेल ।

❑

[१२]

समदाउनि

भोजक प्रातः भेने द्विरागमनक विचार होमय लागल । भोलानाथ और कंटीर वस्तुजात कीनक हेतु दरिभंगा विदा भेलाह ।

चिट्ठा देखि बुच्चिदाइ माय कैं कहलथिन्ह–''देहाती गहना त हम एको टा पहिरबौक नहि । पौती-पेटारक हमरा कोन काज पड़त ? और तेल-फुलेल, मसाला गिलौरी कि 'बनारस' मे बढ़ियाँ एहिताम भेटतौक जे हमरा संग कऽ देबैं ? एहि सँ दामे जोड़ि कऽ दऽ दे । हम ओतय अपना पसन्द सँ बनारसी साड़ी और बर्तन सभ कीनि लेब ।''

लालकाकी बेटीक बात सुनि गुम्म रहि गेलीह । बजलीह–''एँ गे ! दुइए आखर अँगरेजी पढ़िकऽ तोरा एतेक बुद्धि भऽ गेलौक ! भरि जन्म एही ठाम रहलें से सभटा बिसरि गेलाक ? लेकिन कतबो अँगरेजी पढ़ि जैबें तैयो बेटी त हमरे कहेबें । जे सदाय सँ भऽ एलैक अछि से तोरा मे कोना नहि होएतैक ?''

बु०–''तों त देहाती जकाँ बजै छैं । अँगरेजी मे एहन बात कैं (नॉनसेन्स) (वाहियात) कहै छैक ।''

ला०–''गे बौआ ! त आब हमरो अङरेजी सिखा दे । और अपना बापो कैं एक घंटा कऽ पढ़ा देल करहुन !''

एतबहि मे एक झुण्ड आइ माइ कैं अबैत देखि लालकाकी कहलथिन्ह–''देख, सभक गर धऽ कऽ कानय पड़तौक । तैयार भऽ जाही ।''

बुच्चिदाइ कहलथिन्ह–''ई असभ्यता त हमरा बुतें नहि हैतौक जे 'कोरस' मे चिचिया कऽ कनबौक । हँ, देखैबाक होउ त अर्द्धाँचीक तेल आँखि मे लगा दे जे नोर चुबैत रहत ।''

लालकाकी बेटीक मुँह झपैत, आइमाइक स्वागत करय गेलीह । ता बटुकजी आबि कहलथिन्ह–''हम आठ गो कहरिया ठीक कऽ ऐली हऽ । आठ गो रुपैया लेत। और सभ कोनो के सीधा देबे के पड़त । आब ओहार के बन्दोबस्त मे जाइ छी ।''

ई सुनि सी० सी० मिश्र हुनका बजा कऽ बुझाबय लगलथिन्ह–''छौ माइल

सकैरी साइकिल सँ आधा घंटाक रास्ता ! ओहि खातिर एतेक तूल-फजूल किऐक कऽ रहल छी ? बीसम शताब्दी मे समय और मनुष्यक मूल्य एतेक कम नहि छैक जे पगोटा आठ मनुष्यक माथ पर लदा कऽ चलय । और वायु-प्रकाश तथा प्राकृतिक दृश्य सँ अहाँ कें कोन शत्रुता अछि जे 'ओहार'क खोज मे बिदा भेलहुँ अछि ?''

बटुकजी कें सभटा बात त बुझय मे नहि एलैन्हि । लाल कें कहय गेलथिन्ह-''गुरुजी ! ओहार त दमाद रोकै छथ । कहै छथ जे साइकिल पर बिदागरी होएत।

लालक क्रोधाग्नि मे जेना किरासन तेल पड़ि गेलैन्ह । बजलाह-''अंग्रेजी पढ़ि कऽ हुनक बुद्धि भ्रष्ट भऽ गेलैन्ह अछि । तोहूँ एहन बूड़ि छह जे ई सभ समाद हमरा कहऽ अबै छह । जाह । कहून गऽ जे ई सभ बात एहिठाम नहि चलतैन्ह । एकबेर त पाग खसा देलन्हि, आब कि नाको कटबौताह ?''

बटुकजी सी० सी० मिश्र कें जा कऽ कहलथिन्ह-''गुरुजी खिसियाइ छथ जे साइकिल पर चढ़ला से नाक-कान कटा जतैन ।''

सी० सी० मिश्र कनेक सोचि कऽ कहलथिन्ह-''नवसिखुआ कें नाक-कानक डर रहै छैक । अहाँक बहिन त आब खूब नीक जकाँ सीखि गेली अछि । हँ, दू टा बाईक इन्तिजाम होबक चाही ।''

बटुकजी अपना गुरुजीक समक्ष जा कऽ निवेदन कैलथिन्ह-''लिअ । आब दोसरे ताल लागल । ऊ कहै छथ जे आब दुगो 'बाई' के इन्तिजाम होवे के चाही । लेकिन ई कि बनारस है कि दू गो भाइ चार गो बाईजी बोलैला से पहुँच जैतन !''

लालक धधकैत क्रोधाग्नि मे जेना भरलो बोतल स्पिरिट उझिला गेलैन्ह । बटुकजी कें जोर सँ खिसियाय लगलथिन्ह-''तों गदहा आदमी छह । जाह । भागह एहिठाम सँ ।''

बटुकजी भनभनाइत ओहिठाम सँ बिदा भेलाह-''ले बलैया ! देखू धन्धा ! उलटे हमरे डाँटे लगलन ! दामाद के कोह हमरे पर सधवै छथ । एह घर के आब अजबे हाल सभ देखे मे अबैयऽ । इहाँ हमर पढ़नाइ न उजिया सकैयऽ ।''

ई कहैत बटुकजी अपन 'शीघ्रबोध'क गत्ता सरियाबऽ लगलाह । 'द्विरागमन' प्रकरणक श्लोक कें रटब आब व्यर्थ बूझि ओ यत्नपूर्वक पुस्तक कें बस्ता मे बान्हि चक्का पर राखि देलन्हि ।

बटुकजी कें बिरङ्गल जकाँ देखि लाल कहलथिन्ह-''तोरा दूनू सार-बहनोइ

मे जे हँसी-ठट्टा होइ छौह से हमरा की कहऽ अबै छह ? बहुत पाठ क्षति भऽ गेल छौह । आवृत्ति त सुनाबह ।''

आब बटुकजी गोङियाय लगलाह-

''डेवत्युत्तड् डोहिणी मिङ्गि माघा...मिङ्गि माघा...ऊँ ऊँ ऊँ मिङ्गि माघा...''

एवं प्रकार 'मघा' 'मघा' करैत करैत बटुकजीक स्मरणशक्ति कें बधा लागि गेलैन्ह । कतबो मस्तिष्क-मंथन कैने अग्रिम चरणरूपी रत्न नहि बहरा सकलैन्ह । एहने संकटावस्थाक समय बटुकजीक भाग्य सँ लालक वयोवृद्ध ससुर पं० धर्मानन्द शास्त्री पहुँचि गेलथिन्ह । अत्यन्त धर्मनिष्ठ, आचारी ओ तपस्वी होएबाक कारण ओ 'महात्माजी' कहबैत छलाह । हुनका देखितहि लाल अभ्यर्थना करक हेतु उठि कऽ ठाढ़ भेलथिन्ह। बटुकजी कें उसास भेटि गेलैन्ह । ओ 'मूलानुराधा'क पोथी छोड़बैत फुर्ती सँ समाद देबक हेतु आङन दौड़लाह ।

लालकाकी एतेक दिन पर हरद्वार सँ आएल अपन पिता कें देखबाक हेतु दौड़लीह। महात्माजी आशीर्वाद दैत कहलथिन्ह-''हमरा बड़ जोर भूख लागल अछि । पहिने भोजन कराबह । कोनो अड़्बाल करबाक काज नहि । हमरा आइ अनोना अछि । अछिंजल मे सिंहाड़ाक आँटा सानि कय दस टा सोहारी छानि लय । थोड़ेक हलुआ बना लय। मखानक खीर संग खा लेब । पानि पीबक हेतु केरा-परोरक अनोर तरकारी दऽ दिहऽ। बेशी मन होअौ त कोनो मधुरो बना लिहऽ । विन्यास करबाक कोन काज ? जा, झट द ठाँव-बाट कराबह ।''

लालकाकी हड़बड़ा कऽ बिदा भेलीह । तखन महात्मा जी हँसि कऽ कहलथिन्ह-''गै बताहि ! हँसी कैलिऔक अछि । एखन हमर सन्ध्या-तर्पण, पूजा-पाठ मे तीन-चारि घंटा लागत । तखन किछु फलाहार करबौक ।''

महात्माजी स्पष्टवक्ता तथा विनोदी प्रकृतिक छलाह ।

सी० सी० मिश्रक परिचय पाबि ओ पुछलथिन्ह-''अहाँ अपन वेश-भूषा छोड़ि विलायतक पोशाक किऐक पहिरने छी ? विलायतक साहेब त अपना देश सँ हजारो कोस दूर रहि कऽ अपन पतलून छोड़ि अहाँक धोती नहि पहिरैत अछि, और अहाँ भारतीय सन्तान भऽ अपन देश मे अपन धोती छोड़ि ओकर पतलून पहिरैत छी ! अहाँ पाग कें लज्जा तथा टोप कें गौरवक विषय बुझै छी । ई लज्जाक विषय थिक वा गौरवक?''

सी० सी० मिश्र चुप्प !

महात्माजी पुन: कहय लगलथिन्ह–''अहाँ 'आर्यसभ्यता'क सम्पादक छी अथवा व्यापादक ? अहाँ सन-सन व्यक्ति आर्यावर्तक 'आचार' कें बिलायती सिरका मे फुला अँचार बना दैत छथि। अपन भाषा-भूषा भोजन-भाव कें छोड़ि साहेबक नकल पर दौड़ै छथि और ताहीं में महत्त्व बुझै छथि। कतेक व्यक्ति स्वयं सिंहचर्मावृत रासभ बनि स्त्रीओ कें नीलवर्ण शृगाली बनायक चाहै छथि और स्त्रीओक मुँह सँ मातृभाषाक स्थान मे पशुभाषा सुनक चाहै छथि। ई रासभ बुद्धिक पराकाष्ठा थिक।''

सी० सी० मिश्र चुप्प।

शास्त्रीजी फेरि बजलाह–''अहाँ शिक्षिता स्त्री ककरा कहै छिऐक ? यदि भारतीय स्त्रीक हेतु अँगरेजी मे गप्प कैनाइ वा अँगरेजी फैशन मे रहनाइ शिक्षिता होएबाक प्रमाण मानल जाय त मेमोक हेतु मिथिला-भाषा मे गप्प कैनाइ वा मैथिल-नारी जकाँ रहनाइ शिक्षाक मापदण्ड किऐक नहि मानल जाय ? और राजभाषा सीखक हेतु जखन एतेक प्रजा मौजूदे छथि त प्रजावतीक नहियें सिखने कोन हानि ?''

सी० सी० मिश्र चुप्प।

महात्माजी पुन: बजलाह–''हमरा लोकनि गृहिणीक हेतु शिक्षाक अर्थ बुझै छी कर्त्तव्य-शिक्षा। जे स्त्री अनुशासनक महत्त्व बुझय, मर्यादा-पालन मे गौरव मानय, कर्त्तव्यक वेदी पर भोगलिप्साक बलिदान करय, वैह यथार्थत: शिक्षिता थिक। सीताजी अपना आदर्श पर सती भेलीह, तें हम हुनकर पूजा करैत छिऐन्ह। यदि ओ लंकाक बाजब नाचब सीखि कऽ अशोकवाटिका मे टहलितथि त शूर्पणखा सँ बेशी महत्त्व नहि पबितथि। यथार्थ शिक्षा ओ थिक जे आत्मा मे धर्म-ज्ञानक प्रकाश जगा जीवन कें पवित्र और उच्च बनाबय। भारत-भूमि मे भारतीय ललनाक सर्वोच्च आदर्श थिकीह मैथिली, जनिका समक्ष समस्त संसारक स्त्रीवर्ग नतमस्तक भऽ जाइ छथि। ओहन श्रेष्ठ आदर्श कें बिसरि अहाँ भारतीय कन्या कें मेम जकाँ नचाबक चाहै छी ? पाश्चात्य भोगवादक मृगमरीचिका पाछाँ दौड़ैत-दौड़ैत स्त्रीओ कें दौड़ाबय चाहै छी ? यूरोपक बुद्धिवाद और उपयोगितावाद अन्तोगत्वा भारतक अध्यात्मवाद मे आबि कऽ शान्ति ढूँढ़त से अहाँ देखि लेब। बिलायती काचक चमक-दमक पर लट्टू भऽ अहाँ अपना घरक सोन कें टलहा बूझि फेंकि रहल छी ! ई केहन भारी व्यामोह थिक ?''

सी० सी० मिश्र चुप्प !

महात्माजी–''केवल अहींटाक दोष नहि थिक। एखन प्रकृति-नटी मादक अँगरेजी वेष धारण कय अहाँ सन-सन अनेको पुरुष कें लट्टू जकाँ नचा रहल छथि।

सम्प्रति आदिशक्ति पुरुषक गोष्ठी मे रंगबिरंगी वेष-भूषाक छटा देखा, हँसि-हँसि अँगरेजी मे बाजि, टेबुल पर छुरी-काँटा सँ पावरोटी कटैत कतेको हृदय कतरि दैत छथि। महामायाक एहि छाया पर अहाँ सन-सन व्यक्ति मोहित भऽ काया पर्यन्त अर्पित करय लागि जाइ छथि। किन्तु ज्ञानी पुरुष शान्त भाव सँ सभ लीला देखि एक बेरि मुसकुरा दैत छथि ; अहाँ जकाँ नचै छथि नहि। ओ तरह-तरहक नाच कें निस्सार बूझि सृष्टिक मूलतत्त्व पर ध्यान दऽ प्रजापतिक आदेश पालन करै छथि। हमरा लोकनि त स्त्रीक योग्यताक अर्थ बुझै छी सत्सन्तानोत्पादनक योग्यता। पुत्रार्थं क्रियते भार्या। एहि सिद्धान्त पर अहाँ सन-सन अङरेजिया हँसथु, किन्तु घुरि फिरि कऽ अंतमे फेरि ओही पर आबऽ पड़तैन्ह। नारीक मुख्यकार्य पुत्र-प्रसविनी होएबाक छैन्ह, पुस्तक-प्रसविनी होएबाक नहि। पुरुषक देखाउस कय ओ कोनो कोनो युग मे लिखनाइ-पढ़नाइ सीखि ज्ञान-विज्ञान उपार्जन कऽ लेथु, किन्तु ओ योग्यता विकास-क्रम मे क्षणिक फेन मात्र थिक, असली प्रवाहक स्रोत नहि। कठोर विज्ञानक दुरुह भार वहन करबाक हेतु स्त्रीक कोमल मस्तिष्क नहि बनल छैन्ह। जंगल, पहाड़ और बादशाहक नाम रटा, रेखागणित तथा बीजगणितक सूत्र कण्ठस्थ करा, और विदेशी भाषाक शब्द-कोष मुखस्थ करा, हम नारीक ओ बहुमूल्य समय नष्ट नहि करक चाहैत छिऐन्ह जाहि मे ओ सुकन्या, सुपत्नी वा सुमाता होएबाक संस्कार कें पुष्ट कऽ अपन नारी जीवन कें सार्थक कऽ सकै छथि। सीताजी गणित वा पदार्थ-विज्ञान नहि पढ़ने छलीह। परन्तु के हुनका अशिक्षिता कहबाक धृष्टता कऽ सकै अछि ? भिन्न-भिन्न विज्ञानक संकलन तथा उपयोग सांसारिक जीवन युद्धक हेतु जीवनक अन्तिम ध्येय नहि, किन्तु उपकरण मात्र थिक, और तदर्थ पुरुष लोकनि छथिए। कोमलांगी कें और और कोमल गुणक विकास करऽ दिऔन्ह जाहि सँ माधुर्य प्रदान करतीह। यदि हुनको अपने सन कठोर बना देबैन्ह त जीवनक रस सुखा जाएत। अहाँ अपने खेत जोतू, हुनका फलक आनन्द दिऔन्ह। अपने साइकिल दौड़ाउ, हुनका महफाक आदर दिऔन्ह। ओ सभ सँ पुनीत और महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पादन करै छथि–मानव-सृष्टि। हुनकर समुचित आदर करब सीखू तखन पुरुषार्थ। स्त्री सँ पुरुषवत् कार्य कराएब स्त्रैणताक लक्षण थिक।''

सी० सी० मिश्र सोचय लगलाह।

महात्माजी–''महिलाक यथार्थ सम्मान नकली शिष्टाचार सँ नहि होइत छैक। परपुरुष सँ करमर्दन कें हम सभ्यताक चिह्न नहि, बल्कि असभ्यताक चिह्न बुझै छी। स्त्रीक सहशिक्षा तथा स्वतन्त्रताक आंदोलन कें हम अधिकांशत: पुरुषक उद्दाम लालसाक

उद्‌मवेश मात्र बुझै छी। स्त्रीक वास्तविक शिक्षा घर मे होइ छैक। बाहरी चमक दमक क शान सिखा, तथा स्वच्छन्दताक मादक नशा पिया हम ओकरा बनबैत नहि, बिगाड़ैत छिऐक। यथार्थ शिक्षा ओ थिक जे भोगवृत्ति कें उद्दीप्त नहि कय त्यागवृत्ति कें प्रोत्साहित करय। अहाँ पहिने स्वतः शिक्षित होउ तखन स्त्री-शिक्षाक असली अर्थ बुझबैक।''

महात्माजी उठि कऽ पूजाक आसन पर गेलाह। सी० सी० मिश्र मनहिंमन विवेचना करय लगलाह–आधुनिक प्रगतिशील युगक क्रान्तिकारी विचार और एहि वृद्धक प्राचीन सात्विक आदर्श मे कतेक अन्तर अछि ? एक मदिराक समान मनोहर, दोसर जलक समान शीतल। एहि दुनू मे सत्य कोन ?

सी० सी० मिश्र मनहि मन मिस बिजली तथा महात्माजीक व्यक्तित्वक तुलना करय लगलाह। एक चञ्चल निर्झरिणी, दोसर शान्त महासागर। एक रजोगुणक मूर्ति, दोसर सत्वगुणक अवतार। एक देहाभिमानी सुखाराधिका, दोसर देह और सुख कें तुच्छ बूझि तपस्यामे निरत। मिश्रजी जतेक अधिक चिन्तन करय लगलाह, ततेक अधिक महात्माजीक प्रति हुनक श्रद्धा बढ़य लगलैन्ह।

  

बुच्चीदाइ तुलसी चौरा लग माय कें कहैत रहथि–''आङन मे ई तुलसी की रोपने छी ? दू-चारिटा 'क्रोटन'क गमला मङा ले।''

ता सी० सी० मिश्र आङन मे पहुँचलाह। उपर्युक्त वाक्य सुनि एक चिन्ता मन मे उत्पन्न भऽ गेलैन्ह। बड़ी काल धरि सोचैत रहलाह। अन्त मे किछु निश्चय कैलन्हि।

बटुकजी कें बजा कय कहलथिन्ह–''अहाँ जा कऽ महफा ओ कहार लऽ आउ।''

बटुकजी आश्चर्य चकित भऽ बजलाह–''ले बलैया ! देखू धंधा ! अपनही रोकिस्रो देलन और आब फेन लाबहू कहै छथ ! अहाँ त बोलैत रही जे साइकिले पर जाइ जाएब !''

सी० सी० मिश्र कहलथिन्ह–''हम त साइकिल पर जाएब, लेकिन अहाँक बहिन बिना पर्दाक कोना कऽ जैतीह ?''

बटुकजी कें ई नहि बूझि पड़लैन्ह जे बहिनोइ यथार्थ कहै छथि वा हँसी करै छथि। ओ मन मे सोचय लगलाह–''ई त अजगूते बात आइ हिनका मुँह से सुनाइ पड़ल। जाने कैसे पच्छिम मे सूरज उग गेलन !''

  

द्विरागमनक वस्तुजात आबि गेल। लालकाकी दुइए टा काज आब करय लगलीह। पीती साँटय और कानय।

नियत दिन मे दरबाजा पर महफा आबि गेलैन्ह। बुच्चीदाइक नैहर आब छुटय लगलैन्ह। करुण क्रन्दन सँ आङन घर प्रतिध्वनित होबय लागल। आब बुच्ची दाइ कें एक-एक कऽ बाप, माय, भाइ, बहिन सभक गुण मन पड़य लगलैन्ह।

महात्माजी आङन मे आबि लालकाकी कें चुप करैत बजलाह–''सनातन काल सँ एहिना होइत ऐलैक अछि। तोँ त एहिना हमरा घर सँ विदा भेल रहइ। केओ सर्वदा एकठाम नहि रहि सकै अछि। सभ सँ सभक बिछोह भेनाइ अवश्यंभावी छैक। यैह संसारक नियम थिकैक। यावत धरि लोक एक ठाम रहै अछि, तावत धरि एक दोसराक मोह रहै छैक। किन्तु कालचक्र ककरो बराबरि एक ठाम नहि रहय दऽ सकै छैक। कतेक कनै जैबह ?''

बुच्चीदाइ कें आशीर्वाद दैत कहलथिन्ह–''सीता समान होइहऽ। एहि सँ उत्तम आशीर्वाद विवाहिता स्त्रीक हेतु नहि भऽ सकै छैक।''

बुच्चीदाइ आँचर सँ हुनका पैरक धूलि हँसोधि माथ मे लगा लेलन्हि। आब हुनका माय-पितिआइन गर लगौने महफा मे चढ़ा देलथिन्ह।

सी० सी० मिश्र चलय काल महात्माजीक चरण छूबि प्रणाम कैलथिन्ह। महात्माजी आशीर्वाद देलथिन्ह–''माता चंडी अहाँ कें सी० सी० सँ चंगीचरण बनाबथु।''

तावत लाल कहरिया सभक दिशि ताकि कहलथिन्ह–''आब मुहूर्त्त बीतल जाइ छैक। महफा उठो।''

कहार सभ कान्ह लगौलक। बुच्ची दाइ और जोर सँ 'बाबू, बाबू' कहि आक्रोश करय लागि गेलीह। यावत लाल कनैत-कनैत बजलाह–''चुप रहइ ! मँगा लेबौह।''

गाइन दल कनैत-कनैत समदाउनिक करुण स्वर उठा देलन्हि–

''बड़ रे जतन सँ सियाजी कें पोसलहुँ सेहो रघुबर नेने जाय !''



एहिने संग्रहीत कविता सभक अतिरिक्त **हरिमोहन झाक** किछु ओहनो कविता छनि जे विभिन्न रचनामे अन्तर्भुक्त भ' क' आयल छनि । ओहि कविता सभकेँ एहि संग्रहमे सम्मिलित नहि कयल गेल अछि । कारण जे ओ सभ अन्यान्य खण्डमे यथास्थान प्रकाशित होयबे करत । पाठक एवं अध्येताक सुविधाक लेल ओहन कविता सभक सूची परिशिष्टमे द' देल गेल अछि ।

हरिमोहन झाक कोनो कविता-संग्रह उपलब्ध नहि रहबाक कारणेँ पाठक लोकनिकेँ रचनावलीक ई कविता-खण्ड विशेष आनन्द ओ संतोष प्रदान करतनि । कहबाक प्रयोजन नहि जे कालक्रमे *'जनसीदन प्रकाशन'* रचनावलीक अन्यान्यो खण्ड प्रकाशित क' पाठक लोकनिकेँ *हरिमोहन झाक* समस्त रचनाकेँ उपलब्ध ओ सुलभ करयबाक अनुष्ठान पूरा करत । पाठक लोकनिक सहयोग मात्र एहि अनुष्ठानमे अपेक्षित अछि ।

क्रम

सनातनी बाबा ओ कलियुगी सुधारक

सनातनी बाबा

[१]

दै पिठार सरबा सँ मूनल, जहिना भारक कूर ।
तहिना पुतहु रहथि सासुर मे, झाँपनि हो नहि दूर ॥
जे अलच्छ बाल विधवा अछि, करौ जनम भरि पाठ ।
वर कोबर दोबर करबा लै, जाथि सभा सौराठ ॥

[२]

बान्हथि केश, ढील हेरथि, ई धर्म नारि कौं थीक ।
दुइ अक्षर पढ़ि जाथि कदाचित, धरती पुरुषक टीक ॥
कलियुग मे जौं सकल पाप सौं, क्यो चाहथि उद्धार ।
ब्राह्मण भोजन नित्य करावथि, चूड़ा दही अँचार ॥

कलियुगी सुधारक

[१]

बाहर बाजथि, 'तिलक प्रथा कैं विष सम जानू ।'
घर मे बाजथि, 'दुइ हजार सौं कम नहि आनू ।'
बाहर बाजथि, 'छुआछूत कैँ शीघ्र हटाऊ ।'
घर मे बाजथि, 'ई चर्मनि थिक, दूर भगाऊ ॥'
बाजथि, वस्त्र विलायती छुइबो टा क्यो जुनि करी ।
घर आनथि फरमाइशी, चटक मटक साड़ी बड़ी ॥

[२]

यैह सुधारक चिह्न थिक, कहथि बात उकटाह ।
विधवाश्रम-मेम्बर बनथि, रोकथि बाल विवाह ॥
रोकथि बाल विवाह, सभा मंचक हाता धरि ।
घर मे कन्यादान करथि, सातमहि वर्ष धरि ॥
घर मे किछु नहि चल करथि, विधवा-निस्तारक ।
सुधरल छथि नहि स्वयं, बनै छथि वैह सुधारक ॥

['मिथिला', अप्रैल १९२१]

कन्याक नीलामी डाक

वरक घटक– सिंह लग्नमे जन्म भेल छन्हि, वयस न तिनियो बीस।
टोपनि अपने मिला लियऽ, संवत उन्नैस सै तीस ॥
कलम चारि बीघा अपना छन्हि, हर बड़द दुइ जोड़ ।
डेढ़ पाइ मासो किनलन्हि अछि,टका छैन्ह नहि थोड़॥
वंस किमतगर छथि, पनिगर छिनका सन भेटत ने आन।
(कानमे) तीस टका अपनहुँ कैं भेटत, खैब सुपारी पान ॥

कन्याक घटक कन्या त देखबा सुनबा मे, अछि हजार मे एक ।
एकरा प्रति भरि पोख गनाएब, ई बापक छन्हि टेक ॥
किन्तु अहाँ त अपन लोक छी, जतेक देब से लेब ।
(कानमे) बिनु पचास टाका नेने हम कथा न होमय देब ॥

कन्याक पिता– करब कथा, पहिने जौं हमरा सभटा कर्ज सधाबी ।
चारि सौ सँ गनि दियऽ व्यवस्था, इट सिद्धान्त लिखाबी ॥

वर– तावत टका तीन सै आनल, बाँकी देब सधाय ।

कन्याक पिता– हैंडनोट लिखि देल जाय, अपने कैं कैल जमाय ॥

['मिथिला'–मइ १९३१]

मिथिलाक मिहिर सँ

हे मिहिर ! फोड़ आग्नेय नेत्र बरसाउ तेज वैभव विशाल ।
मृताल सितहलि सिहरलि मिथिला पर तानू स्वर्णिम रश्मि-जाल ॥
संसार कतय सँ कतय गेल, नव-नव परिवर्तन बहुत भेल ।
हे मिहिर ! अहाँ युग मँ किऐक उदयाचल मे छी अटकि गेल ?

सप्ताश्व एहन अड़ियल किऐक, टकसै अछि रथ नहि एक बीत ।
छी वर्तमान बनबैत अहाँ जकरा, से ससरल चिर अतीत ॥
क्षितिजक महफा मे बन्द अहाँ नीहारक अछि लागल ओहार ।
नव-वधू जकाँ होइछ अहूँक कोखन बरु झाँपल कर उघार ॥

सन्हियाएल छी आँचर उपाक धैने हुनकर गोटा किनार ।
ता कोषमध्य 'तिरहुत'क अर्थ अछि भेल निविड़तम अन्धकार ॥
अहिबातक पातिल मध्य बन्द, सरवा सँ झाँपल दीप जकाँ ।
भितरे चमकै छी मुनल अहाँ हो जेना टेम पर टीप जकाँ ॥

छारल कुहेस ओ अन्धकार, लधने चहुँदिसि झपसी विकाल ।
बादुर, उलूक, फड़फड़ करैत, झोलफल मे जानक अछि जवाल ॥
जागू दिनेश ! फाड़ू कुहेस सभ दूर करू बदरी विकाल ।
असि तीक्ष्ण रश्मि सँ छिन्न भिन्न कय काटि हटाउ तिमिर जाल ॥

द्वादशो कला प्रकटाउ आब, आलोकित हो सभ लोकवेद ।
भै मुदित बढ़थि वंशावतंश, हो ज्ञान-कमल विकसित अखेद ॥
लागय किरणक ओ तीव्र शूक, भागय पड़ाय दूषक उलूक ।
बहुव्याप्त अन्धविश्वास तिमिर कैं करै रश्मि-शर टूक-टूक ॥

मिथिलाक सरोवर मध्य आइ, दारिद्र्य, अविद्या, अनाचार ।
कौचर्य, कलह, ऋण, रोग, बन्ध आदिक पसरल सभतरि सेमार ॥
चाही न आब शिशिरक प्रभात आनू ग्रीष्मक मध्याह्न काल ।
सभटा सेमार जरि होय छार धधकाउ तादृश तीव्र ज्वाल ॥

['मिथिला मिहिर'–मिथिलाङ्क १९३५]

ढाला झा

मैल किट्ट फाटल पुरान पाग माथ पर,
कान्ह पर देने गोबनौर सन अङपोछा
कैने खल्वाट मे त्रिपुंड पर ठोप तीन
दाना रुद्राक्षक एक बान्हल पैघ टीक मे
दैह थिका ढाला झा, लुट्टी झाक प्रपौत्र,
नरहा पाँजि, वासी ककरौड़क, बेलौंचे वंश।
कुम्हड़क बीया सन-सन तीन दाँत मुँहमे छैन्ह,
बगय खटाँस सन, पित्तें लोडछल सन मूँह,
सटर-सटर बात केवल विष सन बजैत छथि ई
चारिम विवाहमे बिकाएल छथि लावापूर।
हाथमे फराठी नेने पहुँचल छथि सासुर ई,
कइएक वर्ष बाद बकाया ओसूलक हेतु।

आएल खड़ाम और पानि और शतरंजी
एकटा खबास पैर धोबक हेतु आगाँ ठाढ़,
कारी खोरनाठ सन पैर धुरिआएल अपन
प्रक्षालनक हेतु आगाँ देल बड़ा ढाला झा।
औंठा महँक ठेला मोड़ि धोबय लगलैन्ह हुनका
तरबा महँक मैल छोड़ा फाटल बेमाय धऽ।

स्वस्थ भेला ढाला झा, चौकी पर आबि बैसला,
एक चुम तमाकू ठोर मध्य राखि प्रेम सौं।
पच्च दऽ फेकैत थूक ओही ठाम, पुछलथिन्ह–
'कहू, छै कुशल-क्षेम ? धिया-पुता, नेना-भुटका?
कहाँ गेला फल्लाँ झा कन्यादानी श्वशुर हमर
हुनका सँ जरूरी खानगी मे गप्प करबाक छि।
पुनः तकैत एक सारक दिस बजला ओ–
'घर मे अछि भाङ वा हम बटुआ सँ बहार करू ?'

डाँड़ सँ बहार कैलन्हि बटुआ अपन ढाला झा,
भाङक थोड़ेक बुकनी लऽकऽ देलन्हि निज सारक हाथ
'जाउ, पिसबा कऽ आनू सौंफ ओ मरीच दऽकऽ
भाङ हम पीबि लेब, तखन बाह्यभूमि जैब।'
गोला नर्मदेश्वर सन भाङक पिसा आबि गेल,
एक गलास पानि अङरेजिया सार आनि देल।
डोका जकाँ मुँह बाबि बजला तखन ढाला झा
'राम राम ! ई की थिक ? सीसाक गलास ! छी! छी!
अहाँ त अङरेजिया थिकहुँ, बूझी नहि जाति-पाँति
घर भेल दच्छिन भर, वंश भुसवाड़ै थीक,
हाथमे बन्है छी चाम, आधा मोंछ छटने छी,
सीसा सन अशुद्ध वस्तु मुँह मे लगबैत छी।
हम छी बेलौंचे काको, बाप हमर नरहा पाँजि,
जन्म सँ जमल अछि संस्कार लघुकौमुदीक
सीसाक पात्र लऽकऽ लघिओ नहि सकैत छी कय,
धातुक गलास घर मे हो त मङबा दियऽ।'

लोटा ओ गिलास जखन आएल पितरिया तखन
लोटा मे अङौछी लगा छनलन्हि गिलास मे
गोला गिरि लेलन्हि टप्प दऽ ओ मुँह बाबि तखन
एक हाथ ऊपर सँ पिबय लगला घटर घटर।

राति मे सँचार लागल ढाला झाक आगाँमे
बाटी अठारह आ सौंठि कऽ लगाओल गेल
बऽड़-बड़ी भटबड़ कदीमा तिलकोर और
पापड़ तिलौड़ी ओ दनौड़ी, अदौड़ी-भाँटा
एक बट्टा छल्हिगर दही, एक बट्टा खोआ गाढ़
चीनी पर्याप्त, मालभोग केरा पाकल खूब,
डेढ़ सेर मैंही भात, जाँति कऽ छलैन्ह परसल,

घृत सँ कैल चिक्कन तथा बाटी मे राहड़ि दालि
आमिल देल, ऊपर खूब घृत छह छह करैत !

दैतहि नैवेद्य अग्निशर्मा भेला ढाला झा
दालिक सौंसे चट्टा लऽ कऽ ठामहि उनटि देल,
थारी कैं तेना कऽ ओ फेकलन्हि जे सौंसे घर,
भालसरी फूल जकाँ भात सब बिखरि गेल ।
हाँ-हाँ करैत लोक जावत उपस्थित होय,
तावत उठि गेला आसन सँ वृद्ध ढाला झा ।
पित्तें कँपैत थर-थर दुरुखा दिस बिदा भेला,
घर भरिक लोक भय सँ त्रस्त ओ अवाक भेल ।
हाथ पैर धऽ कऽ मनाबय लगलैन्ह सभ,
क्रोध सँ कँपैत बजलाह तखन ढाला झा
"हम छी बेलौंचे, ककरौड़वासी, नरहा पाँजि,
हम्मर कतहु सासुर मे एना कऽ अपमान होय ?
बाटीमे फराक घृत कहाँ अछि सँचार मध्य,
दालिए मे घृत पड़ल, से की हम राड़ छी ?
कोन पाप लागल जे एलहुँ हम एहिठाम,
दक्षिण भर विवाह कैल, तकरे ई फल थीक !

दु घंटा मनौअल तथा उचिती और मिनती भेल,
तखन जा कऽ बैसला पुन: ढाला झा आसन पर
सप् सप् सपर सपर छाल्ही सकरौड़ी खोआ,
सभटा चाटि पोछि निघटौलन्हि भोग्य वस्तु सभ,
भेला प्रसन्न; पान डब्बा मे ऐलैन्ह भरि कऽ
बजला-"ओना टूटत नहि, थुरबा कऽ मड़ा दियऽ ।"
थूरि कऽ ऐलैन्ह, लगलाह ओकर चाभय रस,
'वाह वाह ! मगही पान बढ़ियाँ विलक्षण अछि ।
खोआ बेस गाढ़ छल, दहिओ खूब छल्हिगर छल,
छोट जयवार मे बिकाएब आइ सार्थक भेल ।'

भोरे उठि ढाला झा ससुर कैं बजाओल निज,
'औ फल्लाँ झा ! अहींक ओतय आएल छी काजसँ
चारि कट्ठा ब्रम्होत्तर भरना अछि पड़ल हमर
एहि बेर छूटि जाएब परम जरूरी अछि ।
एही हेतु आएल छी, ततबा विदाइ करु,
दऽ कऽ रुपैया महाजन कैं अदाय करी'

ससुर महोदय तखन दीनता देखाओल अपन,
'सरिपों कहै छी एखन हाथ पर टका नहि अछि'
सुनितहि ई ढाला झा तमकि कऽ उठला तुरंत,
गारि दैत लक्ष लक्ष ससुरक सब पुरखा कैं-
'राख अपन बेटी भरि जन्म तों कपार पर
ऐबौ कहियो नहि तोहर द्वार पर लघिओ करय,
नड्डा कहाँ कैं छोट बाभन तों दछिनाहा
जाति देल तोरा, तोहर वंशक उद्धार कैल
नहि त तोहर पानि सँ हम करितहुँ लघुशंको भला ?
बाप हमर नरहा और नाना हमर कछुआ पाँजि
ससुरक अछि कोन कमी, जाइत छी दोसर ठाम
जे नहि रुपैया देत, भोगत भरि जन्म फल
बेटी हकन्न रहतइ कनैत ओकर जीवन भरि
हमरा की ? जेम्हर जैब, सार कोनो भेटिए जैत'

ई कहि फराठी लैत, लगा सन डेग दैत,
मैल किट्ट फाटल पुरान पाग माथ पर
लैत अड़पोछा कान्ह, क्रुद्ध कठकोंकाड़ि जकाँ
बिदा भेलाह, ढाला झा पित्तें थरथर कँपैत !

['स्वदेश'-मार्च १९४८]

टी-पार्टी

बहुतो समय सँ अभिलाषा बड्ड लागल छल
नाम छलिऐक सुनने बहुतोक मुँह सँ
अप-टु-डेट शिक्षित समाज मध्य होइ छैक
एक वस्तु जकरा कहै छै लोक 'टी-पार्टी' ।

एक दिन एहन संयोग जे हमरो नाम
आएल लिफाफ लालरंग फुलदार एक
जाहि मे विलक्षण सन मनोहर एक कार्ड छल
देखि चित्त गद्गद् भेल, वाह रे हमर भाग्य !
आइ वैसि पार्टी मे हमहुँ भऽ जाएब धन्य,
भद्र जन-पंक्ति मध्य हमहुँ आसीन हैब,
जेहन कोनो भोज मे ने देखने ने सुनने हैब,
तेहन अपूर्व भोग्य वस्तुक आस्वाद हैत !
तत्क्षण बजाय हुनका सूचना प्रदान कैल
देखू ऐ ! बंद करू भानस-भात आइ राति,
बड़का एक पार्टी छैक, हमरो नेओत आएल अछि
कालियो ने घरमे खैब, अजुका त कथे कोन ?
अहुँक हेतु भरिसक किछु हैत त नेनहि आएब,
बेस आब जाइत छी, टाइम लगिचा गेलैक ।

दूरे सँ देखै छी जे अपूर्व अछि समारोह
कुर्सी ओ टेबुल कतार सँ सजाओल अछि,
उज्जर दपादप श्वेत चादरि ओछाओल और
नाना प्रकारक फूलदान अछि शोभमान !
हैट - बूट - पैंट - कोट - टाइ सँ सुसज्जित व्यक्ति
आबि-आबि कुर्सीक शोभा छथि बढ़ा रहल,
दुइ-चारि हमरो सन धोती और कुर्तावला
एक कात दबकैल जकाँ बैसल छथि 'बकोध्यान'!
नील शेरवानी पर लाल कमरबंद देने,

उज्जर मुरेठा साँटि बन्हने भड़कदार,
हाँजक हाँज खानसामा गौरव सँ चूर भेल,
एक एक प्लेट सभक आगाँ परसैत अछि ।
वातावरण शान्त अछि मर्यादित सुगभीर,
कोनो जेना महायज्ञ हैवाक अछि आरंभ,
चुपचाप धोतीकेँ ससारल कनेक और नीचा,
डराडोरि ढील कैल सुमिरि महावीर जी !
उज्जर मुरेठा और नील शेरवानी बला
आएल हमरो समीप, प्लेट एक राखि गेल !
एकटा सिंहारा और एक फक्का दालमोट
एक रसगुल्ला और बुनिया एक चौठी मात्र
तोला भरि सेवइ और समतोला दुइ फाँक
एक चुटकी किशमिश तथा छोहल एक केरा टा !
तत्क्षण अनुमान कैल, ई सभ नैवेद्य थोक
काढ़ि कऽ फराक भगवानक हेतु कैल गेल,
ई कय विचार ओकरा टारि देल दहिन भाग,
सामने बनाओल स्थान मुख्य भोजनीयक हेतु !
तावत देखै छी जे सभागत निमंत्रित देव,
अपने नैवेद्य महँक भोग छथि लगा रहल !
हम सपरैत छलहुँ, जल आनत हाथ धोएब
किन्तु जलक दर्श नहि, स्पर्शक त कोन कथा !
पानिक बारीक कतहु देखबा मे आएल नहि,
अस्तु, हमहुँ श्रीगणेश कैल नैवेद्य लय !
दुइए एक फक्का मध्य, साफ भेल दालमोट,
सेवइ तथा बुनिया और किशमिश बिलीन भेल
एक रसगुल्ला मे विलम्ब की लगैत कहू ?
समतोलाक बाद शेष रहल एक केरा टा !
एक मिनट लागल हैत, ताहीमे साफ भेल,
चिनियाक प्लेट, हमर निराकार भय गेल !
किन्तु अपर योद्धागण युद्ध चलबैत रहलाह:-

घन्टा भरि लागल, किन्तु प्लेट नहि खाली भेल ।
किशमिश कैं खोंटि कनेक मुँहमे रखै छथि केओ,
एक दालमोट तोड़ि दाँत तर धरैत छथि ।
आधा रसगुल्ला खा कऽ आधा छोड़ै छथि केओ
रम्भा फलक स्पर्शो धरि केओ नहि करैत छथि ।

हाय हाय! मूर्ख बनि गेलहुँ हम सभा बीच,
सभ केओ कंछिया कऽ प्रायः हमरे तकैत अछि !
बैसल छी चुपचाप, शान्तरूप निर्विकार,
और की लेब से टा क्यो नहि पुछनिहार !
तावत देखै छी जे महान विन्यास पूर्वक,
बड़का असार ओ पसार कैने खानसामा !
चाकर कठौत मे अनेक रंग वस्तु नेने
अपस्याँत होइत पछड़ैत आबि रहल अछि !
आशा समस्त भेल केन्द्रीभूत ओही मे,
असली बारीक आब भोजक पहुँचि गेल !
नाना विध स्वादु चर्व्य चोष्य लेह्य पेय भोज्य,
नेने अबैछ दुनू हाथैं महायत्न सँ ।
जावत हम आँखि कने मीड़य लगलहुँ तावत,
आगाँ मे टेबुल पर अमार एम्हर लागि गेल ।
प्याला और प्याली और चम्मच और तश्तरी ओ
चिनिया और सीसा केर पात्र चमचम करैत ।
मायाक आवरण सँ चकाचौन्ह दृष्टि भेल,
थोड़े काल बाद जखन तत्त्व दिस ध्यान गेल
एकमात्र ब्रह्म जकाँ चाह धरि सत्य छल,
और-और वस्तु छल केवल उपाधि मात्र !
शिशुकैं बकरीक दूधक घोंटी जेना होइक तेना,
कनमा भरि दूध एक सीसी सन पात्र मे !
एक कौर दही संग सानल जतेक जाय तते,
चीनी आध मुट्ठी एक क्षुद्र' नसिदानी मे !

छुच्छ तुच्छ चाह देखि, आशा विलीन भेल
पानि फिरि गेल ठोस वस्तुक प्रतीक्षा पर,
माथ दय हाथ, झाँखऽ लगलहुँ झमा कऽ जेना,
ब्राह्मण बुभुक्ष कनेक विखजी कैं पाबि कय ।
हारि दारि अन्त मे उठौलहुँ चाहदानी हम,
गोमूत्र रंग वला काढ़ा थोड़ ढारि लेल,
"फैंकि फूँकि पीबय लागि गेलहुँ, निरासक्त भऽ कऽ
बुझलहुँ जे एही पर यवनिकापात हैत गऽ ।
थोड़ेक रास चाहोदक भीतर मे गेल जे से,
देलक बनाय जठरानल कैं उद्दीप्त ।
आहुति पड़ि गेल जेना आगि मे स्पिरिट केर,
पूर्ण समिधाक हेतु व्याकुल भेला अग्निदेव ।
उज्जर मुरेठा और नील शेरवानी वला,
नाउरि सुटकन्त जत खरहा घसकि गेल ।
कथी लय पूछय वा परसय ओ आओत चूड़ि,
कैलक धुर्त्तइ, यद्यपि धूर्त्तताक सम्बन्ध नहि
के दैछ खरिका ? और केहन हैछ मुखशुद्धि ?
लऽ कऽ सिगार ओ सलाइ, ठाढ़ आगाँ मे ।
एहन सन क्रम जेना पेट त भरिए गेल,
धूम्रपान कैने घर गेल जाओ प्रेम सँ ।

ऐला पर पुछै छथि ओ, 'कहू, केहन पार्टी रहल ?
राति बहुत बीति गेल, बाट हम तकैत छलहुँ ।
अपने त कचर-कूट कइए कऽ आएल हैब,
हमरा हेतु अनने छी की सभ, से कहि दियऽ ।'
उत्तर देलिऐन्ह-"बस, पार्टीक ने नाम लियऽ,
सोझे जाउ भानस मे, पजारू गऽ आँच शीघ्र ।
खीचड़ि और साना बनाउ जतेक जल्दी होय,
और ई कार्ड लऽकऽ चूल्हि मे झोंकि दियऽ।"

['स्वदेश'–अप्रैल १९४८]

बुचकुन बाबा

जाइ छलहुँ गाम हम फगुआ केर छुट्टी मे,
बाटे मे बुचकुन बाबा भेटला दलान पर
कतरा करैत छला मेंही सरौता लऽ कऽ
हमरा देखैत चालि उठलाह–''हौ कहह, कहह,
पटनाक किछु हालचाल, नव कोनो गप्प कहह,
कंटिर कहैत छलाह एक दिन विचित्र गप्प
सरिपों ओतय स्त्रीगण ओकील भय गेल अछि ?''

टमटम सँ उतरि हम प्रणाम कैल पैर छूबि
''कहू बाबा ! निकें छी ने ? छैक आनन्द सभ ?''

एक चुटकी कतरा थोंथ मुँह मे रखैत बाबा
दोसर चुटकी कतरा हमरा आगा मे बढ़ा देलन्हि,
''नीके रहह, एहो भला तोरे सँ होय जे तों
पढ़ि कऽ अंगरेजी गोर लागय जनैत छह !''
चेलक नसिदानी मे सँ थोड़ेक नसि बाहर कैल
नाकक दुनू पूर मे ओ कोंचय लगलाह और
एतबहि मे एकाएक तेना ओ सिहरि उठला
गहुमन साँप देखि जेना लोक सिहरैत अछि ।
बजला–''हौ, हाथ मे ई कागत कोन छौह तोरा,
लाज धाख सभटा तों छोड़ि ऐला पटने मे ?''

हम कहलैन्ह–''ई त उच्च कोटिक पत्र छैक
नाम एकर छैक बाबा ! इलस्ट्रेटेड वीकली ।
एतबा सुनैत देरी छोड़लन्हि बुमकार बाबा
बजला–''एहन कागत लऽकऽ चुल्हीमे झोंकि दी
बिच्चे मे ठाढ़ि मौगी जंघिया पहिरने एना
तनि कऽ उतान जेना ताल ई ठोकैत हो !
यैह थिकें ललना धर्म ? यैह कुलक मर्यादा ?

आइ काल्हि तोरा सभकें यैह सभ पसिन्न छौह ?
के अछि बनौने तस्वीर निर्लज्ज एहन ?
केना कऽ उघार अंग एना भऽ देखाओल गेलै ?
देखय जौं कदाचित घरक बेटी पुतोहु ई त
ओहो सभ बिगड़ि जाय, केहन अनर्थ होएे !''

हम कहलैन्ह–''बाबा ! स्वास्थ्यक प्रतियोगिता मे
फर्स्ट प्राइज एही लड़की कैं भेटलैक अछि।''
बाबा आँखि फाड़ि बजलाह किछु विस्मित होइत
''हाय रे कपार ! तोरा लोकनिक बुद्धि की भेलौह ?
आँखि पर पर्दा तोरा सभकें पड़ि गेल छौह,
गट्टा सन माउगि कैं तों लड़की कहैत छह ।
'लड़की'क अर्थ जकरा अंकुर नहि उदित होइक
और ई त हथिनी जकाँ दलदल करैत अछि !
पर्दाकें चीरि कऽ मिला देलक गर्दा मे,
पोता छह, थेसी बात खोलि कऽ कोना कहिऔ ?''

हम कहलैन्ह–बाबा ! हेलि कऽ समुद्र मे ई,
सभकें अछि जितने, तैं गर्व सँ तकैत अछि !

ठोकलनि कपार अपन क्षुब्ध होइत-बुचकुन बाबा,
बजला–''घोर कलियुग आब निश्चय पहुँचि गेल
स्त्रीगण आब काछ भीड़ि हेलत तखन मर्द सभ
चूड़ूभरि पानि मे मरैत जाओ डूबि कऽ
और एकरा हेतु ई छै हेलब कोन भारी बात ?
एकटा समुद्र कोन, सातो टा हेलि जैत !''

हम कहलैन्ह–''बाबा ! एना नहि बजिऔ आब
स्त्रीकें समान अधिकार भेटि गेलै अछि ।
कुर्सी पर बैसि कऽ ओ टिकट आब काटत और
स्त्रीगण आब डिप्टी मजिस्टर ओ दरोगा हैत ।''

पिते फराठी कें पटकि देलन्हि बुचकुन बाबा–
"एको तों बजलाह – आब स्त्रीगण दरोगा हैत ?
झोंटा धऽ कऽ खींचि लेबै, मारि करची कें घूठ
तोड़ि देबइ, मारैत मारैत अदम्म कय देबइ।"

हम कहलैन्ह "बाबा ! एना बजबैक जौं त,
सुनि कय सरकार निश्चय अहींकेँ पकड़ि लेत।"

पस्त किछु होइत तखन कहै लगलाह बुचकुन बाबा–
"बाजू की ? इनारे मे भाँग घोरा गेल छैक,
बुद्धि विपरीत सभ लोककेँ भय गेलै अछि,
स्त्रीगणकेँ माथ पर चढ़ाकऽ नचबैत अछि।
बाबी तोहर आइधरि मुँह नहि उघारलथुन्ह।
कहियो नहि आइधरि पीढ़ी पर बैसलीह।
हम पर्यन्त हुनक नाक नहि देखलिऐन्ह।
चौकठ सँ बाहर ओ कहियो पैर देलन्हि नहि।
हम पजुआरे भड़गाम, भलमानुस लोक
कोइलखक वासी, हमर नाना महादेव झा !
कालि जौं पुतोहु हमर कुर्सी पर बैसि जाथि
टीकट ओ काटथि तखन टीक हमर कतय जाएत ?
तोंही कहह पाग हमर रहत की खसि पड़त ?
ताहिसँ त नीक जे हफीम घोरि पीबि जाइ।"

हम कहलैन्ह–"बाबा, युग आब बदलि गेलै,
स्त्रीकेँ दबाकऽ आब राखि सकबैक नहि'।
शास्त्र ओ पुराणक आब अंकुश भऽ गेल भोथ,
कतबो डँटबैक त मरैत आब काढ़त नहि
बेटी ओ पुतोहु आब कुर्सी पर बैसबे करति,
टीकट ओ कटबे करति, टीक आब कटबे करत
पाग और पाँजि आब बचावक उपाय नहि,
हम्मर विचार जे हफीम घोरि पिबिये जाइ।

[वैदेही–विशेषांक १९५१]

पंडित लोकनि सँ

हे पंडित ! आबहु दया करू
जितिया पाबनि लए नहि झगड़ू।
की करबइ पबनैतिन पाबनि
करती शनिकेँ अथवा रविकेँ।
ओहि लय अपना मे अहाँ किए
शास्त्रार्थ करइ छी तुमुल घोर ?
जमि कय वीरासन लगा लगा
छी सभा मध्य गर्जन करैत।
शास्त्रक प्रमाणकेँ दुहि–दुहि
ज्योतिषक वचनकेँ मथि अनेक
प्रतिपक्षी पर वाग्बाण छोड़ि
ई सिद्ध करक भीषण प्रयास
मे छी लागल जे पबनैतिन
रविकेँ कथमपि नहि खाथि अन्न
यदि खाथि अन्न त होथि बाँझ
तें सन्तानक यदि होइन्ह काज
तऽ पारण करथु सोमे दिन।

हे महाप्रभो ! पंडित महान
आचार्य अहाँ ज्योतिष शास्त्रक,
सभ कर्मकांड ओ धर्मशास्त्र
केँ घोंटि चुकल छी आजीवन।
की एतबे लय विद्या पढ़लहुँ
जे पबनैतिन कहिया खैती
मड़ुआ रोटी ओ गरइ माछ
ओ कोन समय ओठगन करती
कहिया करती खरना परना ?

देखू, वैज्ञानिक कतय गेल
ओ चन्द्रलोक पर पहुँचि गेल
ओ वंदनीय विद्वान थीक
ओ पूज्य श्रेष्ठ मानव उदार

ओ धन्य परम आविष्कारक
आश्चर्य ओकर थिक चमत्कार
ओकरे विद्याकेँ सफल कही
जे देल जगतकेँ रेल तार
मोटर जहाज ओ वायुयान
रेडियो रेडियम बिजलीक ज्ञान

औ अहाँ करै छी बैसि-बैसि
भदबा ओ दिक्शूलक विचार
की दस सहस्त्र पंडित मिलि कय
केलहुँ अछि एक साइकिल बहार ?
रौकेट उड़बै अछि आन देश
जे पृथ्वी केर करइछ परिक्रमा
ओ चन्द्रमा पर पहुँचि आब
मंगल ग्रह दिस अछि बढ़ैत
औ अहाँ करै छी स्तोत्र पाठ
नवग्रहक करै छी जप पूजा
औ चौठिचन्द्र केँ मंत्र पढ़ि
देखबैत छिऐन्ह दही केरा !

हे पंडित आबहु दया करू
खरना परना लय नहि झगड़ू
भदवाकेँ दूर बहार करू
नहि अतीचार पर आब लड़ू
संकीर्ण दृष्टिकेँ त्याग करू
चिरयुगक अन्ध विश्वास हरू
नव सत्यक आविष्कार करू
विज्ञानक किछु भंडार भरू
विद्याक ज्योति विस्तार करू
अपना देशक उद्धार करू ।
जौं से नहि लागय पार तखन
नीचा उतारि निज पाग धरू ।
हे पंडित आबहु दया करू ।

['वैदेही'–फरवरी १९५३]

निरसन मामा

डेढ़क करीब हैतैक, झक्क जकाँ लागल छऽल,
तावत किछु आहट भेल, निंदो उचटि गेल
के आबि एहन बेर काँच नींद तोड़ि देलक ?
आँखि मीड़ि देखइ छी त ठाढ़ छथि निरसन मामा !
उठिकय हुनक पैर छूबक हेतु निहुड़ि गेलहुँ
ता ओ अपन दोसरो पैर आगाँ बढ़बैत बजलाह –
भऽ गेलैक, भऽ गेलैक । ई सभ कोनो बात छैक !
आइ ककर मुँह देखि उठलहुँ से जानि नहि,
एक भिनसर सँ तोहर डेरा जोहैत छी ।
मोटाकेँ कुर्सी पर राखि स्वयं टेबुल पर
पलथा लगाय बैसि गेला तखन निरसन मामा
गमछा डोलबैत बजलाह–हम साबिक लोक
'मिंटो' और 'पिंटो' कहाँ छै से की जनियइ !

हम पुछलैन्ह हुनका-पटना कोना ऐलहुँ मामा !
बजला ओ एक जुम्म तमाकू राखि ठोर मे
पटना फटना सँ हमरा सभकेँ प्रयोजन कोन ?
ई की कोनो तीर्थ छै जे ऐला सँ तरि जायब ?
राजगीर आएल छलहुँ मलमास करक हेतु
कहलहुँ जे फिरती तोरा सँ भेट कइए ली ।
हम कहलैन्ह–मामा ! अपने कनेक बैसल जाओ,
हम जलपानक हेतु कहने अबैत छिऐ !
मामा बजलाह–जलखइ हम करै छी नहि,
एके बेर भरि पेट भोजन करैत छी,
आइ भरि दुपहर बौआइत रहि गेलहुँ हम
सोझे तोँ जा कऽ पहिने भानस चढ़बाबह गऽ ।

बाबाजी कैं बजबय हेतु जहिना हम विदा भेलहुँ
रोकि लेलन्हि निरसन मामा–फीरह, हौ, सुनह, सुनह ।

के थिकाह भनसीया ? कतऽ केर वासी छथि ?
की थिकैन्ह मूल हुनक ? ककर दौहित्र थिकाह ?
हम कहलैन्ह—मामा ! एहि ठाम मेस सभ मे
खाँटी दड़िभंगा केर मैथिल भनसीया छथि ।
बजला तखन निरसन मामा—'मेस' हम बुझै छी नहि,
की ओ बरहबर्ना थीक ? तखन हम कोना खैब ?
एहि सँ त नीक जे बरु सातु घोरि पीबि जाइ
मग्गह मे भात खाय जाति आब की दियऽ ?
पच्च दऽ फेकैत थूक ओही ठाम निरसन मामा
बजला—आब जाति पाँति बाँचब महा दुर्लभ अछि ।
तैं तऽ हम सिद्ध भोजन बाहर मे करै छी नहि
चूड़ा ओ अमौट सदा संग मे रखैत छी ।

हम कहलैन्ह—मामा ! बैसल जाओ नीक जकाँ,
हाथ मुँह धोय किछु तावत ठंढाएल जाओ ।
बजला तखन निरसन मामा कनेक लजाइत जकाँ
मामी तोहर सेहो छथुन्ह बाहर मे फाटक लऽग ।
कह कहलैन्ह—मामा ! ई त अन्याय भेल ।
एतेक काल सँ ओ ओतय रौद मे पकैत छथि !
पनही सलमसाही पहिरैत तखन निरसन मामा
बजला—चलह, तोरे सँ भेंट करय आएल छथुन्ह ।

फाटक लग जा कऽ देखल, आँखि नाक झँपने मामी
सड़कक कात धीपल कंकरीट पर ठाढ़ि छथि !
खाली पैर तप्पत अलकतरा पर पकैत छैन्ह,
संकोचक द्वारे एक शब्द नहि बजैत छथि ।
हम कहलैन्ह—मामा ! एना किएक मामी छथि ?
देखिऔन्ह तऽ तरबा मे फोंका पड़ैत छैन्ह ।
धीपल सड़क पर चट्टी पैर मे रहक चाही
एहि सभ विषय मे किछु उदार आब भेल जाओ ।
मामा कनेक विचलित भेला, बजला किछु क्षुब्ध होइत,

''दु आखर अंगरेजी पढ़ि कय तों बुझैत छह
बाप ओ पितामह सभ सँ तोंही बुधियार छह !
हम यजुआई, तोहर मामी बेलौंचेक कन्या
तनिका तों कहैत छहुन जुत्ता पहिरि कऽ चलय !
आगाँ केश रखने छह आधा मोंछ छटने छह,
मेस मे पेयाउज लहसुन सेहो सभ खइते हैबह,
'विखय' केँ 'ब्रिशय' कहिकऽ उच्चारण करैत छह,
बाप छथुन्ह सामवेदी, जा कऽ उपराग देबैन्ह।''

हम कहलैन्ह—मामा ! क्षमा आब कैल जाय,
चलल जाय डेरा पर गोबर सँ नीपि कय
ठाम करबाकऽ नऽव चूल्हि रखबा देबैक
पाक कय लेती स्वयं मामी अपन हाथ सँ ।

तहिना प्रबन्ध भेल, मामी पाक करऽ लगली
हम ता गेलहुँ कनेक एन. सी. सी. क पार्टी मे ।
पार्टी जमल छल, ओम्हर बड़का टेबुल पर
एन. सी. सी. क लड़की बहुतो समवेत छल,
चौप तथा कटलेट पर छुरी काँटा छल चलैत,
हास्य और विनोद सेहो बीचमे चलैत छल ।
तावत दुर्भाग्य जे पहुँचि गेला निरसन मामा
हमरा खोजैत ओहिठाम आबि मुँह बाबि
बजला—हौ, मामी परसने ओतय भात छथुन्ह
और एतय भैरवीक चक्र तों लगौने छह !
चुप्पे हम उठि गेलहुँ, बिदा भेलहुँ हुनका संग
पुछलन्हि—ओ छौंड़ी सभ के छलि पैजामावाली
जुत्ता पहिरनहि जे तोरा संग बैसि खाइत छलि ?
हम कहलैन्ह—ओ छलि एन.सी.सी.क लड़की सभ,
राइफल बंदूक ओ चलाएब सिखैत अछि
जा कऽ मैदान मे कवायद करैत अछि ओ सभ
एहने वीरांगना सँ देशक उद्धार हैत ।

''चुप रहह,'' डँटलन्हि मामा क्रोध सँ बताह होइत,
तोंहू ओकरा संग बैसि जुत्ता पहिरि खाइत छलाह,
काँचे पेयाजक संग कोदन गिड़ैत छलाह,
जाति धर्म सभकेँ तों भसौलह ओहि सी.सी. मे
रक्ष रहल, देखि लेल स्वयं आइ अपने आँखि,
नहि तऽ आइ हमरो की भटवा मे भाड़ठ छल ?
जनितहुँ यदि बुद्धि भ्रष्ट भेल छौह तोहर,
सोझे बख्तियारपुर सँ चलि जैतहुँ मोकामा घाट।
मामा आबि डेरा पर मामीकेँ कहलथीन्ह
फेकू सभ भात दालि, ऐखन बिदा होउ,
भागिन कृस्तान भेल, छुआछूति उठा देलक,
चलू आब गंगाजी बालु माटि गीड़य पड़त।

ई कहैत निरसन मामा लेलन्हि अपन मोटा चोटा
पहिरि लेलन्हि पनही सलमसाही टुटलाही,
मामीक हाथ धऽ कऽ हुनका खिंचैत तिरैत,
ओही क्षण बिदा भेलाह सोझे महेन्द्रूघाट !

[वैदेही–जून–१९५३]

आगि

राति मे हम स्वप्न देखल, आगि लागल, घर जरैये,
चार सभ पुरना धधकि कय, जोर सँ धू धू करैये,

जारि रहल अछि सनसना कय, पाँजि केर पोथाक ढेरी,
राख भय सिद्धान्त सभ, पछवाक लहरा मे उड़ैये,

जरि रहल श्रीकान्त झा छथि, ओ महादेव झा जरै छथि,
पाँजि कछुआ और नरहा, फड़फड़ा कय सभ जरैये,

जरि रहल पतड़ाक पुच्छड़, और पद्धति कर्मकाण्डक,
सकल आचारक पेटारी बीच धधरा मे पड़ैये,

खसि रहल अछि मूल खंभा, गोत्र केर रस्सी टुटैये,
वंश केर फट्ठा लहकि कय, कोइला भय भय झड़ैये,

जाति पाँतिक ससरफानी, आगिमे पड़ि भस्म होइये,
और मर्यादाक बन्धन पटपटापट कय टुटैये,

पाग चपकन मिर्जई सभ, छार जरि कय भय रहल अछि
युग युगान्तर केर पर्दा आइ गर्दा मे मिलैये,

छोट पैघक भेद सूचक शृंखला-सीढ़ी टुटैये,
भीत केर जे नीव छल हरिसिंहदेवक से ढहैये,

होलिका केर एहि दहन मे, भस्म सभ किछु भय रहल अछि,
किन्तु ओहि चिताक ऊपर, एक नवका घर उठैये।

[वैदेही'' अक्टूबर १९५३]

अङरेजिया लड़कीक समदाउनि

बड़ रे जतन सौं धीयाकैं पढ़ाओल,
से धीया सासुर जाय ।
एतबा दिन होस्टल मे रखलिऐन्ह,
से जैती तारसराय ।।
केश उघारि ओतय नहि चलबैक
लोक देखत मुँह बाय ।
आँचर कैं ठनठा नहि फेंकबैक,
गारि सुनतीह अहँक माय ।।
जुत्ता पहिरि ने भानस घर जएबैक,
जएतैक भात छुआय ।
कुर्सी टेबुल पर बैसि नहि खएबैक,
पीढ़ी लेब ओछाय ।।
सासुक लग शलवार ने पहिरबैन्ह,
उठतीह ओ खिसियाय ।
गौतनी सौं अङरेजी जुनि बजबैन्ह,
मुँह जएतैन्ह विधुआय ।।
आङनक बाहर घुमय नहि जएबैक,
भैंसुर जैताह पड़ाय ।
देव-पितरकैं कनेको नहि हँसबैन्ह,
सभ जाएत तमसाय ।।
ओहिठाम आ अंडा नहि मङबैक,
तकर ने छैक उपाय ।
जौं मन हो, कहबैन्ह चुपचापहि,
आनि देता हमर जमाय ।।

['वैदेही'–नवम्बर १९५३]

गरीबनीक बारहमासा

जेठ हे सखि ! आगि बरसय, तबि रहल सभठाम यो ।
चूल्हि लग उसिना रहल छी, बहि रहल अछि घाम यो ।
आषाढ़ हे सखि ! पानि बरसल, जारन भीजल काँच यो ।
धुआँक द्वारे आँखि फुटै अछि, कोना पजरतइ आँच यो ।
सावन हे सखि ! बुंद बरिसय, चुबि रहल शतधार यो ।
एकोटा घर नहि छैक निच्चू, सुतब कोन प्रकार यो ।
भादव हे सखि ! बाढ़ि आएल, डुबल खेत पथार यो ।
साँप सहसह करय रहल अछि, कोना कऽ हैब बहार यो ।
आसिन हे सखि ! ऐल मलेरिया, काँट भेल शरीर यो ।
लागि तेसरा दिन अबै अछि, कोना कऽ धरियौ धीर यो ।
कातिक हे सखि ! बड़ भयावन, सासु धैलन्हि खाट यो ।
प्रीतम कैं भय गेलैन्ह पिलही, आब न जीवक बाट यो ।
अगहन हे सखि ! धान कुटइत, भेल झाँझर हाथ यो ।
फोंका पर फोंका पड़ै अछि, तदपि मूसर साथ यो ।
पूस हे सखि ! खसय पाला, दाँत कट-कट बाज यो ।
पानि छुबितहि हाथ गलइछ, कोना कऽ करबइ काज यो ।
माघ हे सखि ! बाघ सरिपों, राति भेल पहाड़ यो ।
ओऽढ़ना मे एकेटा सलगा, कोना कऽ कटबइ जाड़ यो ।
फागुन हे सखि ! पवन सनसन, उठय पुरबा जोर यो ।
जोड़ सभ धय लेलक गठिया, फाटि गेल अछि ठोर यो ।
चैत हे सखि ! उठल झक्कड़, उड़य गर्द बसात यो ।
माछी भिन-भिन करय सभतरि,कोना कऽ परसब भात यो ।
बैसाख हे सखि ! चाउर निघटल, आब हैत उपास यो ।
और हमरा समय पूरल, आब न जीवक आस यो ।

['वैदेही'–दिसम्बर '५३]

श्री यात्रीजीक प्रति : मैथिलीक उक्ति

हे हमर सन्तान !

बीच तिरहुत मध्य तोहर छौह जन्मस्थान ।
जतय पूजित होइ छथि जे क्यो अबै छथि आन ।
जतै बाड़िक तीत पटुआ घरक प्रतिभावान ।
जतै जीवित कलाकारक हैछ नहि सम्मान ।
ताहि ठाम करैत ककरा पर छहक तों मान ।
रहि गेला तों नेना केवल, भेल छौ नहि ज्ञान ।।
हे हमर सन्तान !

जौं चटर्जी वा बनर्जी बोस वा सरकार ।
जन्म रहितहुँ भेल कोनो बंग केर परिवार ।
होइतहु सर्वत्र तोहर एखन जयजयकार ।
भेल रहितह मातृभूमिक तों एखन शृंगार ।
किन्तु कतबो शारदा तोरा देथुन्ह वरदान ।
लेखनी सँ झड़ौ निर्झरिणी सुधाक समान ।
आन प्रान्तक लोक सभ कतबो करौ स्तुतिगान ।
स्वजन परिजन किन्तु अपन, मूनि लेतौ कान ।
हे हमर सन्तान !

लाख देश-विदेश घूमह, पाबि नित सत्कार ।
लाख क्रान्तिक गीत गावह, दूत बनि साकार ।
लाख जागृति केर फूकह शंख बारंबार ।
लाख कविता मध्य तों वर्षा करह अंगार ।
किन्तु अपना घरक लेखें तों प्रचण्ड बताह ।
पंडितक लेखें तोहर रचना परम मरखाह ।
मातृभूमिक छौह हो तैं नित्य गंजन खाह ।
जौं जिबै चाहैत छह तैं सोझ दिल्ली जाह ।
हौ, हड़ाही मे कड़ाही चढ़क नहि अनुमान ।

एतय सभ बाइस पसेरी छैक नवका धान ।
हे हमर सन्तान !

छै टका लाखो जहाँ मैथिलीक कोषागार ।
जाहि सँ साहित्य केर होइतै कते विस्तार ।
ततै खेदित होइछ मन ई देखिकैं व्यवहार ।
जाय 'बलचनमा' एतै सँ पाबि कैं दुत्कार ।
आर स्वागत होइ ओकर जा कँ प्रयागक द्वार ।
आर रतिनाथक ओइन काकी यशक आगार ।
खसि कय भागथि इलाहबाद केर बाजार ।
देखि ई न विदीर्ण होइ छनि, जनिक हृदय पाषाण ।
ताहिठाम करैत छह तों व्यर्थ की ई मान ।
जखन मरि जैबह तखन तोरो हेतह सम्मान ।
ठाम-ठाम सभाक द्वारा हेतह शोकक गान ।
ओ तरौनी मध्य तोरो मूर्त्ति हेतौ ठाढ़ ।
और वंशजमे उमड़तह स्नेह अतिशय गाढ़ ।
ओ जयन्ती मध्य तोहर हेतह यश केर गान ।
किन्तु एखन करह तावत मूक तों विषपान ।।
हे हमर सन्तान !

['वैदेही'-फरवरी-१९५४]

सौराठ

हे सभा सौराठ !
छी अहाँ की काठ !

एक दिन शास्त्रीय चर्चा होइ छल जहिठाम ।
पंडितक पगधूलि सँ जे तीर्थवत छल गाम ।
न्याय मीमांसा स्मृतिक जे केन्द्र छल, अभिराम ।
ताहि मे अछि ध्वनित केवल आइ वर केर दाम !
सुनि पड़ै अछि सभक मुँह सँ बस, हजारक नाम !
ओ घोंघाउज होइछ ग्राहक वृन्द सँ अविराम !
हो जेना बरदक हाट !
हे सभा सौराठ !

जाहि जननिक श्रीअयाची सन भेला सन्तान !
तनिक आइ सहस्त्रयाची लय रहल छथि प्राण !
छल जतय शास्त्रार्थ होइत की विहित धिक कृत्य ?
ततय केवल अर्थशास्त्रक नग्न होइछ नृत्य ।
घटक ओ पजियाड़ केर दोसरे बनल अछि ठाठ ।
सभक मुँह सँ सुनि पड़ै अछि शत सहस्रक पाठ !
हे सभा सौराठ !

कतहु मातृ कुलशिनक लागल अधम बाजार !
कतहु छथि नीलाम पर बैसल कलाक कुमार !
कतहु एम. ए. दाम छथि रखने एकैस हजार !
कतहु खर्च विलायतक करबैत पूर्व करार !
एहन अर्थ-पिशाच छथि नररूप मे जे ऋक्ष ।
देखि तिनका मौलि जाइछ पाकड़िक ओ वृक्ष ।
सूखि जाइछ पोखरिक ओ घाट ।
ओ कनै अछि ब्राह्मणक ओ बाट !
ओहन लोभी केर मुँहमे, दऽ दियौन्ह लोआठ !
हे सभा सौराठ ।

[मिथिला दर्शन'–मइ १९५४]

अलगी

हे गय अलगी छौंड़ी उतान
चुइबइ छैं तों किये एतेक शान ?
पृथ्वी पर पैर धरइ छैं नहि
कऽथी पर छउ एतवा गुमान ?

गय ! वर्षे भरि सासुर रहलैं
ऐलौं एतबा चत्कार कोना ?
एतबे दिनमे सिखि लेलें तों
एतबा फैशन शृंगार कोना ?

बजबाक छटा, चलबाक छटा,
हँसबाक छटा, तकबाक छटा !
छवि कय 'गे दाइ' कहबाक कला
बिनु हेतुक चमकि उठबाक कला !

निहुड़ा कय आँखि, लजाय कनेक
कोम्हरो कटाक्ष फेंकबाक कला !
छन-छन ससारि माथक साड़ी
पुनि कनेक केश झँपबाक कला ।

मुसुकीक व्याज सौं मोती सन
दन्तावलि झलकैबाक कला !
बल सौं खसका आँचर कनेक
नवयौवन चमकैबाक कला !

तरबा सौं अलता चुबैत
रङने छैं सुन्दर ठोर गाल
प्रति अंग गुलाबी छउ लगैत
नख सौं शिखधरि तों छैह लाल ।

गय ! गोरि माङग गर्वाहि आन्हरि
ओहिना चकमक तों छँ करैत
तहिपर छउ सोनक रिस्टवाच
छँ स्वाइत न ककरो सँ बजैत !

आगाँमे फेरल टेढ़ माँग
पाछाँ मे नागिन लहरबैत
छँ कनपट्टी मे क्लिप लगाय
अलकावलिकेँ ससरय न दैत ।

छँ अधकट्टी कञ्चुकि कसने
आँचर सँ छौ झलझल करैत
मद सँ मातलि हथिनी समान
तों छँ चलैत छलछल करैत ।

बगुलाक पाँखि सन साड़ी मे
कर मे रूमाल लय फूलदार
बूलय चललोहँ चट्टी पर
खिरबैत अपन सेंटक बहार ।

ई लहरदार सुग्गा कोरक
बुझलियउ सासुरक साड़ी छउ
बुझलियउ ओतुक्के चट्टी छउ
घड़ियो रूमाल ससुरारी छउ ।

जमबइ छँ भरि ठेहुन बड़ाइ
सासुरक गप्प, धनिकत्व -अपन
दिन-राति जमौड़ा छँ करैत
जा जा कय तों आङन आङन ।

मडुआ मकइक नामो नहि छउ
तोरा सासुर मे क्यो जनैत

उपजइ छउ केवल कनक-जोर
सोनक चाउर तों छँ खोंटैत ।

बुझलियौ तोहर सासुर धनीक
छौ सासु-ससुर अत्यंत नीक
वऽरो छौ मुट्ठी मे तोऽरा
धैने छँ अपना हाथ टीक ।

चर मुट्ठी मे रहतउ ने किए
एखन तों छँह अठारह पर
तैं जे करबँ से सभ छजतउ
छउ भेल पसेना एखन अतर ।

नितराइति चलइ छँ तों अलगलि
छमछम करैत हे गय छौंड़ी
एतेक अतत्तह थिक न नीक
अकरहर करइ छँ गय छौंड़ी !

बुझलियौ सौंय बड़ मानइ छउ
'प्यारी' कहि छउ चिट्ठी लिखैत,
तोहरा नामे तेसरा दिन कऽ
रंगीन लिफाफा छउ अबैत ।

बुझलियौं सौंय अँगरेजिया छउ
शहरक फैशन सभ सिखौनहार
तैं मेम जकाँ कंधा, गरदनि
पाँखुड़ तों रखने छँ उघाड़ ।

कोमल रेशम केर फीता मे
गिनियो सँ नान्हि घड़ी बान्हल
सुकुमार एहन पहुँचा तोऽहर
गय ! हैतउ भात कोना रान्हल ?

छँ बारंबार देखैत घड़ी,
कॉलेऽज जेना जयबाक होठक
गय ! टाइम बूझि कऽ की करबैं
तों फैशन कर, कतबो बजौक ।

अँगरेजी पढ़ने रहितय तैं
छजबो करितउ ई साजबाज
ओना अनकच्छल छउ लगैत
अपना मन मे होइ छउ न लाज ।

हमरो सभ एक दिन नऽब रही
कैलहुँ नहि कहियो एतेक शान
तों की सभ दिन एहिना रहबैं
सर्वदा भेल डंभक लताम ?

छउ अंचल में मद भरल एखन
ताही सौं मातलि छैं उतान
मद फाटि, दूध बनतौक जखन
सभ झरि जएतउ तोरो गुमान

[१९५४]

अशोक-वाटिका मे

अशोक वन कहू अहाँ
सिया छली एतय कहाँ
कतय ओ पुण्य भूमि छल
हुनक चरण कमल जहाँ

कहू, छलीह वंदिनी
कहाँ विदेह नन्दिनी
बैसैत कोन गाछ तर
छली असुर निकन्दिनी

भेटय जौं माटि एक कण
जतए पड़ल हुनक चरण
माथा चढ़ाए एहि छन
कए लौं सफल मनुष्य तन ।

जल प्रपात ! औं अहाँ
ओहू समय छलौं अहाँ
औ बाजू, धोइत छली हमर
सियाजी आँखि-मुँह कहाँ

देखाउ ओ पवित्र थल
जतए खसल ओ नोर छल,
श्रीमैथिलीक आँखि सौं
गंगाक जल जकाँ विमल ।

मिथिलाक ओहि नोर मे
की शक्ति छल इ[illegible] मे
लंकेश कैं बुझा गेलैन्ह
मन्दोदरीक कोर मे

मिथिलाक कोखि सँ हुऐ
बेटी सिया अहींक सम
बहिन ! अहींक नाम पर
चढ़ा रहल छी फूल हम ।

[दिसम्बर, १९५४]

पटना-स्तोत्र

हे धन्य नगर पटना महान !
अछि और अहाँ सन कोन स्थान ?
सूर्यास्त होइत लगले असंख्य
बड़का छोटका मझिला अनेक
दल बान्हि बान्हि अगणित अगणित
भरि राति जागि प्रहरीक सदृश
उदात्त और अनुदात्त स्वरित
स्वर सँ मात्रा लय ताल युक्त
घन घन घन घन घन घन घन घन
मच्छर करैत छथि सामगान ।
लय कदमकुँआ सँ अगमकुँआ
सब्जी सँ लय गर्दनीबाग
मीठापुर हो वा दरियापुर
लंगरटोली मछुआटोली
चितकोहड़ा सँ डंका इमली
चौहट्टा सँ चिड़ियाक टाँड़
सड़कक रोड़ा ऊभड़ खाभड़
अलगल ओलक टोंटी समान
तोड़ैत कतहु टमटमक डाँड़
छथि लैत कतहु रिक्शाक प्राण
छथि रक्तवाहिनी शिरा जकाँ
नाली नाला पसरल अनेक
जिनका मे निसिदिन अछि बहैत
नगरक संचित क्रियमाण कर्म
भभकैत अनुक्षण अति उत्कट
दुर्गन्ध तीव्र विकिरण करैत
कुंभीपाकक हरइत गुमान

कतेँ छथि वैतरणीक कात
गंगाक कात बहु भक्त वृन्द
ब्राह्मी मुहूर्त मे ऊठि ऊठि,
अति मनोयोगसँ ध्यानमग्न
भय पंक्तिबद्ध बालुकाराशि
पर छोड़ै छथि निज-निज प्रसाद
नैवेद्य जेना काढ़ल जाइछ
वा खोंटल जाइछ कुम्हरौड़ी
किछु आर्द्र द्रव्य किछु शुष्क द्रव्य
से पटने छथि सभ घाट बाट,
सार्थक करैत पटनाक नाम ।
कूड़ा कचरा ढेरिक ढेरी
मस्तक उन्नत कैने विशाल
कहि रहल गर्व सँ ताकि ताकि
'मानुष पलटी तँ की करबह ?
हम छी सुरसा, बढ़ले जाएब
तों कतबो मीटिंग कैल करह ।'
ओ सभ केर ऊपर ऊँच एक,
कारी झरकल औन्हल खापड़ि,
दूरहि सँ अभ्यागत गणकेँ
स्वागत हेतु छथि ठाढ़ भेल,
अपने मोटाइ सँ फाटि रहल
गोलघर कोनो धोधिगर समान
जिनकर नक्शा नहि आनठाम,
जिनकर जोड़ा नहि भेटत आन ।
अछि जहाँ पानि उज्जर बिकाइत,
दूधक नामें कुल डेढ़ सेर,
डालडा राक्षसी सौतिन बनि,
घृतकेँ कय देने अछि मलान,

जलवायुक अछि एहने महत्त्व,
जे कब्ज हैत वा हैत आँव ।
'अमदी' कैं 'अरमुद' खैला सँ
पकड़ै छैन्हि लगले फीलपाँव ।
मोक्षो सँ बड़ि दुष्प्राप्य जहाँ
भय रहल एक खाली मकान ।
ताहू पर पाहुन आबि-आबि
कय देथि जहाँ हलुआ हरान ।
तालाक मोल नहि रहल जहाँ,
टूटै अछि नित खाली दोकान ।
से रूप देखि हम छी मोहित,
जे देखि ने सकला फाहियान ।
हे धन्य नगर पटना महान !

['चौपाड़ि'-जनवरी १९५५]

श्रद्धेय अमरनाथ झाक प्रति श्रद्धाञ्जलि

हे वंदनीय अतिशय महान
उत्तुंग हिमाचल गिरि समान ।
औदार्यपूर्ण व्यक्तित्ववान
अतिमहामना विद्यानिधान ।

हे तप: पूत ब्रह्मर्षि कल्प
निर्मल चरित्र कंचन समान
शिक्षा पुष्करिणी मध्य स्फुटित
हे पद्मविभूषण कान्तिमान ।

साकार दिव्य गौरव स्वरूप
सांस्कृतिक गगनमे शोभमान
अति धवल शुभ्र निर्मल प्रकाश
नक्षत्र एक देदीप्यमान ।

सरिसब-पाही केर रजकणसौं
पुनि विप्र अयाची सन महान
निर्भीक उच्च आदर्श भेलहुँ
अपने केवल अपने समान ।

शिक्षक साहित्यक छात्र मध्य
गुरुवर वाचस्पति केर समान
शतशत सहस्र कंठावलि सौं
होइछ अपने केर यशोगान ।

यद्यपि ओ पार्थिव तन न रहल
अति सुन्दर तेजस्वी ललाम
इतिहास करत स्वर्णाक्षरमे
अंकित अपने केर अमर नाम ।

हे अमरनाथ ! हे पुण्यनाम !
श्रद्धाञ्जलिमे कोटिक प्रणाम ।।

[८ सितम्बर १९५५]

हिन्दी ओ मैथिली

[१]

हिन्दी जहाँ हिन्दमहासागर विशाल थिकी,
मैथिलीकेँ मन्दाकिनी तुल्य मानैत जाउ ।
हिन्दी हिमालय केर उच्च कैलास शृंग,
मैथिलीकेँ मानस सरोवर जनैत जाउ ।
हिन्दी जौं हृदय हार राष्ट्रक शृंगार थिकी,
मैथिलीकेँ माला बूझि उरमे अनैत जाउ ।
हिन्दी जहाँ हस्तिनी समान हृष्ट-पुष्ट थिकी,
मैथिलीकेँ कोमल मृगनैनीमे गनैत जाउ ।

[२]

हिन्दी जहाँ ह्वेल जकाँ पीवर विशाल थिकी,
मैथिलीकेँ माङुर माछ कोमल जनैत जाउ ।
हिन्दी जहाँ हिना जकाँ उत्कट सुगंधवाली,
मैथिलीकेँ मोतियाकेँ कोटिमे गनैत जाउ ।
हिन्दी जहाँ हींगक कचौरी छथि पुष्ट दल,
मैदा मध्य मैथिलीक मोएन सनैत जाउ
हिन्दी जौं हलुआ थिकी, भरि पेट खेबा हेतु,
मैथिलीकेँ मोहनभोग बूझि कऽ चखैत जाउ ।

[३]

हिन्दी हँसैत छथि शृंगारहार फूल जकाँ,
मैथिली मौलश्री जकाँ मुसुकी छोड़ैत छथि ।
हिन्दी हिड़ोला पर बैसि छथि झुलैत जहाँ
मैथिली मधुर-मधुर मचकी तहाँ दैत छथि ।
हिन्दी हिंडोल राग सुनबै छथि तार स्वर,
मंद्र मालकोश तहाँ मैथिली गबैत छथि ।

हिन्दी हरमुनिया अलापि रहल ताहि मध्य,
मैथिली सुमंजु मंजीर बजबैत छथि ।

[४]

हिन्दी हँकै छथि जहाँ हवागाड़ी बेतहास
मैथिली महारानी महफामे चलैत छथि ।
हिन्दीक हाथें होइछ हलुआ-पूरीक भोज,
मैथिली मधुर मखान खिरी बँटैत छथि ।
हिन्दी जहाँ हंस जकाँ चलथि गंभीर चालि,
मैथिलीओ मैना जकाँ चहचह करैत छथि ।
हीराक हार जकाँ हिन्दी छथि चमकैत,
मोतीक माला जकाँ मैथिली लगैत छथि ।

[५]

हिन्दी केर बिन्दी यदि पूर्णचन्द्र मानल जाय,
मैथिलीक भालो चौठिचन्द्र शोभमान छथि ।
हिन्दी यदि हथिया नक्षत्र जकाँ बरसै छथि,
स्वाती जकाँ मैथिली करैत बिंदुदान छथि ।
हिन्दी यदि भादवक भरपूर भागीरथी,
मैथिली हेमन्त केर कमला बलान छथि ।
हिन्दी यदि हस्तिनापुरवाली राजकन्या थिकी,
मैथिलीओ मिथिला-मुनिकन्या समान छथि ॥

['पल्लव'-मइ १९५६]

बुचकुन बाबाक चिट्ठी

से लिखलनि अछि बुचकुन बाबा
एहि बसहा रंगक कागत पर
सोस्ती श्री ओझा शुभाशीष
कुशलंच शतं तत्रास्तु आगाँ
ई समाचार जे अपने कौं
किछु लिखब जरूरी भऽ गेलऽछि ।
अपनेक पठाओल आएल छल
फुलदार लाल रंगक लिफाफ
जकरा उपर छल लिखल पता
श्री सोनदाइ, भीतर महाल ।
ओ चिट्ठी हमरे हाथ पड़ल
कारण जे माइक संग कालिह
मातृक गेलऽछि दूनू बहिन ।
हम छी साबिक केर लोक शुद्ध
लष्टम खष्टम नहि छी जनैत
सुझितो नहि अछि ततेक आब
चश्मा लगाय कोनो तरहें
टो टा कय ओ चिट्ठी बाँचल
पढ़ितहि हम भऽ गेलहुँ अवाक ।
जौं ओ चिट्ठी नड़ुआर वला
केर हाथ कदाचित पढ़ि जयतन्हि
ओ रूसि पड़ैतथि कलकत्ता ।
बेसी हम खोलि कोना लीखु
आइनक पता सँ जुनि पठवी
एहि ठाम गाम केर छौंड़ा सभ
छै उड़ा लैत एहन लिफाफ
तें ओझा ! जे लिखबाक होय,
से हमरहि नामे लिखल करब ।

छी अहाँ पटनियाँ एहन ओझा !
से हमरा नहि आभास छऽल
लिखने छिऐक अहाँ ओकरा
नेने ऐबैक ओकरा खातिर
रेशम केर चोली एहि बेर
ओकरे देहक नापे सिआय ।
से हम पुछै छी औ ओझा !
ई विषय थिकै किछु संकोचक
बुझलिऐ कोना ई गुप्त भेद
भेटल कोना ओकर भयार ?
ई परम अनर्गल बात थीक
अँगिया आहाँ अनबैक किऐ ?
नड़ुआरवला अनथिन अप्पन
ओ हुनकर खास महाल छैन्ह
आहाँ छी सन्हिआइत कियैक
दुनूक बीच बनि मुसलचन्द ?
किछु अनबाक हो ओकरा खातिर
त सती कथा नेने ऐबैक
ओ कोकशास्त्र पढ़ि की करति,
नड़ुआरवला कैं हैतन्हि लूरि
त अपनहि सभ किछु सिखा देथिन्ह
धीया-पूता ककरो हैतैक,
घो ढारी आहाँ किऐ करब ?
कहबाक होय जे जे सभटा
ताहि खातिर सोनक छथि बहीन ।
नहि दखल करी दोसरक वस्तु
कर्मक फल छै लगले भेटैत ।
से लिखलनि अछि बुचकुन बाबा
करची केर भोथ कलम लऽकऽ

एहि बसहा रंगक कागत पर ।

औ ओझा बूढ़क बात सुनू
छी अहाँ स्वयं सज्ञान लोक
देखू विचारि अपने मन मे
सोलह वर्षक अछि सोनदाइ
किछु बाँकी नहि रहलैक आब
भऽ गेल छैक ओकरा विवाह
किछु दिन मे सासुर सेहो जाओति ।
आ ईहो ओझा ! जानि लियऽ
भगवती-कृपा सँ सोनदाइ
कैं छैन्ह योग्यता कल्याणक
ई मास छैन्ह चारिम चलैत ।
आषाढ़ बदि पंचमी आइ ।
फगुआ मे अहूँ आयल रही ।
एहिठाम गाम केर लोक केहन
अछि दुष्ट अहूँकैं जानल अछि
क्यो लगा बझा कऽ चढ़ा देन्ह
जौं अपनेक छोटका साढ़ू कैं
त कहू केहन भारी अनर्थ
की करति बेचारी सोनदाइ ?
सभ लोक अहीं कैं दोष देत
सभ छार भार अहाँक कपार ।
ई गदह पचीसी थीक एखन
तैं नेनमति कौखन छी करैत
सोनो एखन अज्ञाने अछि
अहीं कैं अछि की सभ लिखैत ।
हम ओक्कर पौती फोलि आइ
चिट्ठीक कागत सभ हरियरका
लय भाडक पुड़िया बना लेब

बाँसे कैं जड़ि सँ काटि देब ।
वैशाख शुदि सप्तमी दिन
सोनक द्विरागमन भय जैतैन्ह
बाँकी छनि केवल दऽस मास
ओहिमे अपने आएब अवश्य
ई नम्र निवेदन मानि लेब
त बहुत कृपा अपनेक हैत ।
इति शुभम् किमधिकं विज्ञेषु
से लिखलनि अछि बुचकुन बाबा
झिंगुरक टाङ सन आखर मे
एहि बसहा रंगक कागत पर ।

[१९५६]

जगमग जगमग दीप जराऊ

[१]

सुख सुखराती
दीयाबाती
जगमग-जगमग दीप जराऊ ।

केहन दीप ?
वैह दीप विद्याक सुनिर्मल
जे छलाह लेसने मिथिला मे
गौतम कपिल जनक ओ मंडन
याज्ञवल्क्य वाचस्पति उदयन
गुरु गंगेश पक्षधर शंकर
विद्यापति ठाकुर सन कविवर।
से सुभ दीप मिझाय न पावय
दय नव स्नेह प्रकाश बचाऊ
जगमग जगमग दीप जराऊ ।

[२]

पुनः जनकपुर ओ कपिलेश्वर
गौतम कुण्ड तथा सिंहेश्वर
महिषी ठाढ़ी करियन सरिसव
मँगरौनी बिसफी बाजितपुर
होमय ज्योतिक केन्द्र मनोहर
पुनः पुनः बाती उसकाऊ
जगमग-जगमग दीप जराऊ ।

[३]

घर घर लेसल जाय दिवारी
भाँजू सभ मिलि कय उकियारी

केहन उकियारी ?
ईर्ष्या फूट वैमनस्यक ख'ढ़
औ' क्षुद्र अभिमानक संठी
घोर मूर्खता केर सब बन्धन
पारस्परिक विरोध गोलैसी
मिथ्या दम्भ मामिलाबाजी
सकल अन्धविश्वास अशिक्षा
पर्दा प्रथा कुरीति दहेजक
सब केर मुँह मे आगि लगाऊ ।
जौं जल्दी पजरय नहि उक्का
पुनि-पुनि धधरा कय धधकाऊ ।
डारि जारि सब भस्म बनाऊ
जगमग जगमग दीप जराऊ

[४]

झोल झाड़ि सभतरि कालुष्यक
नव घर कैं चुनेटि कय चकचक
विद्या प्रेम शान्ति सौं झकझक
धूप दैत सुरभित सहयोगक
नव-नव स्नेहक दीप जराऊ ।
अनधन लक्ष्मी घर मे आनू
सभ दरिद्रता दूर भगाऊ ।

सुख सुखराती
दीयाबाती
जगमग जगमग दीप जराऊ ।

['मिथिला दर्शन'–विद्यापति विशेषांक १९६७]

कलकत्ता गेला उत्तर

[१]

मिथिलाक भूमि सँ समुत्पन्न
मिथिलाक पानि सँ परिपन्न
ॠषि याज्ञवल्क्य ओ जनक केर
उज्ज्वल संस्कृति सँ अविच्छिन्न
हे प्रखर बुद्धि प्रतिभाक पुञ्ज
कण-कण ज्योतिक उड़इत स्फुलिंग
हे तपोभूमि मिथिलाक पुत्र
सादर सभक्ति शतशत प्रणाम
हे लक्ष-लक्ष मैथिल प्रणाम

[२]

जनकक ओ ब्रह्म-ज्ञान धन्य
मंडन केर कर्म-ज्ञान धन्य
वाचस्पतिक तत्त्व-ज्ञान धन्य
उदयन केर आस्तिकवाद धन्य
गंगेशक नव्य न्याय धन्य
ओ पक्षधरक शास्त्रार्थ धन्य
संतोष अयाची केर धन्य
विद्यापति कवि केर गान धन्य
राजा शिवसिंहक दान धन्य
गंगानाथक सत्कीर्त्ति धन्य
ओ अमरनाथ केर नाम धन्य

[३]

सीता सन मैथिल नारि धन्य
मैत्रेयी सन विदुषी अनन्य
विदुषी सरस्वती धन्य अमर
लखिमा ठकुराइन सेहो हमर

[४]

सभटा वैभव ई अहिंक थीक
अछि उत्तराधिकार सभटा अहींक
एक स्वर सँ बाजय तुरही
ई थीक परम अभिलाष हमर
बनि जाय एक ई लाख हमर
संग चलय पैर दू लाख हमर
संग उठय भुजा ई लाख हमर

[५]

गौतम केर गौतमस्थान धन्य
कपिलक कपिलेश्वर स्थान धन्य
उदयन केर करियन ग्राम धन्य
विद्यापतिक बिसफी गाम धन्य
सभकेर बटोरि कय माटि पुण्य
करइत जाऊ चन्दन ललाम
हे तपोभूमि मिथिलाक पुत्र
सादर सभक्ति शतशत प्रणाम

[६]

तिरहुतक पुरातन पाग धन्य
सरिसव केर पटुआ साग धन्य
अपना देशक ओ छाँछ धन्य
ओ नैनी माङुर माछ धन्य
मिथिला केर मधुर मखान धन्य

ओ तुलसीफूलक धान धन्य
ओ समदाउनि केर गान धन्य
ओ तरुणी केर मुसकान धन्य
ओ महादेव केर ध्यान धन्य

[७]

ई समय भयंकर महाकाल
अति भीषण संकटक कराल
गिड़बा लय मानव-संस्कृति कैं
मुँह बौने जेना महाकाल
अणुबम केर एहि राक्षस युगमे
हर हर बम केर करु महोच्चार
पुनि दियौ जगतकैं महामंत्र
पुनि करू शान्ति-पाठक प्रचार
मिथिलाक सत्व गुण घोरि घोरि
उन्मत्त विश्व मे दियऽ छिरा
भौतिकवादक भस्मासुर कैं
निज माथ हाथ दय दियौ फिरा
हे बन्धु हमर ई अहिंक काज
दुदुन्भि बजाउ मैथिल समाज
पद्माक पानि मे चमकि उठय
कमलाक धार केर शान हमर
आइन रवीन्द्र केर आबि गुँजय
विद्यापति केर चिर कलगान हमर
एहि नवद्वीप मे पुनः उठय
ओ पक्षधरक सम्मान हमर
हे बन्धु भार ई अछि अहींक
दायित्व सकल अपनेक थीक
ई बुझू रहू बनि सदा एक
मिथिला मैथिलि केर राखि टेक

हे बंगभूमि मे रहनिहार
कलकत्ता नगरी स्थित प्रबुद्ध
छितरल फुटकल मिथिलाक पुत्र
समवेत होउ बनि कय उदार
मन्दिर बनाउ निज एहन दिव्य
फहराउ ध्वजा अतिशय विशाल
आदर्श उच्च विचारक, करू
सम्मिलित कण्ठ सौं शंखनाद
हे तपोभूमि मिथिलाक पुत्र
सादर सभक्ति शत शत प्रणाम
हे लक्ष लक्ष मैथिल प्रणाम

[२१-१२-१९५७]

अकाल

हथिया बरिसल एको बुन्द नहि,
विमुखल गाय जकाँ ।
मेघ पड़ायल मुँह बिधुऔने,
रूसल जमाय जकाँ ।
खेत पानिसँ रहित भेल,
समधी केर आँखि जकाँ ।
धूरि उड़ै अछि चौरोमे,
बगुला केर पाँखि जकाँ ।
अछि दराड़ि मुँह बौने सबतरि,
बउरक बाप जकाँ ।
महगी चढ़ल माथ पर अछि
सीता केर श्राप जकाँ ।
धानक मुँह सुखाइत अछि,
कन्यागत-प्राण जकाँ ।
पेट किसानक पचकि गेल अछि,
खखरी धान जकाँ ।
बड़दक दाम बढ़ल जाइत अछि,
बउग्क मोल जकाँ ।
जन मजदूरक बात बिकाइछ,
कनेयाँक बोल जकाँ ।
रब्बिक आशा टूटि रहल
मुनिगा केर ठारि जकाँ ।
जनता मनमे उमसि रहल अछि,
मैथिल नारि जकाँ ।

['वैदेही'-जून-१९५८]

कलकत्ता हमरा बड़ पसंद

[१]

कलकत्ता हमरा बड़ पसंद
सदिखन चलैछ ट्रामक कतार
जेन्ना ससरै अछि गनगोआर
चढ़ि रहल लोक अछि लगातार
क्यो चउरंगी, क्यो बडबजार
क्यो हावड़ा पुल केर ओहि पार
क्यो चितपुर वा नूतन बजार
सरसर सरसर सरसर सरसर
डलहौजी सौं डायमंड हार्बर
दुइये आना मे चारि कोस
तें छइ सभकें चढ़बाक जोर
हड़हड़ हड़हड़ हड़हड़ हड़हड़ ,
चलि रहल ट्राम अपना पथ पर
कतहु तेजी सौं, कतहु मंद ।

[२]

डाभक ढेरी हरियर हरियर
जल छलकि रहल जकरा भीतर
नारंगी केर शरबत निरमल
कुसियारक रस सुरभित शीतल
फेनिल दूधक गमकैत झाग
जे चाही पीबू सानुराग
चीनी दय पौरल दधि छल्गिगर

ताजा खजूर केर गुड़ शनगर
रसगुल्ला अति उज्जर उज्जर
अन्यान्य मधुर अतिशय सुन्दर
कतहु खिरमोहन कलाकंद

[३]

कलकत्ता नगरी बड़ विशाल
माया केर पसरल महाजाल
पंचमहला सतमहला मकान
अनगनित ठाढ़ भूधर समान
एक एक मे नर नारी हजार
दिन राति जेना लागल बजार।
मधुमाछी केर छत्ता मानू
वा कबूतरक खोपे जानू।
मिझरैल रहैं छथि नारी नर
जेना कि हौजमे माछक घर।
समवेत सकल जन एक ठाम
सामूहिक जीवन एकर नाम।
जेना हो मट्ठा घोर तक्र
अथवा जानू भैरवी चक्र।
ककरो खातिर कोठा न बंद।

[४]

कलकत्ता आकर्षक नगरी
रससँ छलकैत जेना गगरी।
नित-नित नव-नव अछि आकर्षण

नूतन शोभा प्रतिदिन प्रतिक्षण।
रमणीय पार्क उद्यान कतहु,
नाना रंगक व्याख्यान कतहु,
क्रीड़ा कौतुक केर स्थान कतहु,
कलकंठी केर मृदु गान कतहु
कालेज वा आफिस गेनिहार
कतहु बंगालिन सुकुमारी
तितलीक पाँखि सन रंग विरंग
चमकैत छैन्ह जिनकर साड़ी।
कतहु पंजाबिन हृष्ट-पुष्ट
शलवार और कुर्त्तावाली,
गहुमक पूड़ीकेँ लजा रहल
जिनकर मांसल देहक लाली।
कतहु चलैछ गौरांगी दल
नव यौवन केर शाने फटैत,
अपने अपने मद सौं मातलि
दर्शक गणकेँ दलमल करैत।
अछि सदा सोहागिन कलकत्ता
फैशन एहिठामक अलबत्ता
नित नव बहार नित नवानंद।

[१९५८]

सलगमक खण्ड

बहुत दिनक गप्त अछि, उपनयनक भोज छल,
माघक छल राति और बारह बजैत छल
आङनमे पात पर धमगज्जर छल मचैत
बुनिया अमिरती बर्फी लड्डू जिलेबी पूरी
दही चीनी संग रसगुल्ला परसाइ छल ।
एकाएक ताहि बीच गर्द भेल–''उठै जाउ,
भ्रष्ट भेल, जाति गेल, भोज भंडूल भेल !''
जावत खटमिट्ठी कनेक देबय लगलौं मुँहमे
तावत केओ हाथ पकड़ि हमरो उठा देलक ।
नेना छलहुँ ओहि समय, किछु नहिं बुझलिऐक
पाछाँ जा कऽ बुझल, किन्तु पाछाँ कऽ बुझनहि की ?
आलू ओ परोड़ ओ कदीमाक चर्चरी छल
बनल स्वादिष्ट चटकार गम-गम करैत
ताहिमे अभागल एक छेदी झाक पात पर
उज्जर एक खण्ड तरकारी केर भेटलैन्ह ।
हाथ बारि लगले चिचिऐला ओ –''सलगम थिक
जाति सभक गेल, एहिमे कोनो संदेह नहि ।''
माइनजन पुछलथिन्ह–''तरकारी के अनने छलाह ?''
''परसू छकौड़ी बछवाड़ा सँ अनने छल
बोरामे और तरकारी सभक संग-संग
सलगम कतहुँ सँ एकटा ई आबि गेल हैत !''
पंडित जी कहलथिन्ह–''ई एकठाम रान्हल गेल
सबकेँ सलगमक रस झोरमे भेटल छैन्ह
छेदीकेँ त प्रायश्चित्त लगबै करतैन्ह मुदा
आरो सभकेँ सेहो, उद्धारक उपाय नहि ।''
एक नवतुरिया किछु साहस कय पुछलथिन्ह त
महामहोपाध्याय अग्निश्च वायुश्च–

''सलगम की वस्तु थिकै से अहाँ जनैत छी ?
जानी घोड़िक घास नहि, चललहुँ शास्त्रार्थ करय !
सलगम थिक पापी, म्लेच्छ, पूर्व जन्मक चाण्डाल
जहिना अंगरेज बनि जाइछ अंगरेजी भाँटा
तहिना यवन मुइला पर सलगम भय जन्म लैछ ।
मनु याज्ञवल्क्य अत्रि पराशर हारीत
आपस्तम्ब लिखने छथि वचन से देखि लियऽ
पीपरक खोदीमे, गोइठाक अग्नि मध्य
जरि-जरिकऽ भस्म होथि सलगमक संसर्गी !''
थर-थर कँपैत भेला भोक्ता लोकनि जाइक राति
पंडितजीक त्रासे दौड़ा-दौड़ि गेला गंगा कात
बालूसाही गुलाबजामुन घरक नहि भोग भेलैन्ह
बालू गोबर घाट पर सभ क्यो गिरैत गेला ।

(१९५८)

बूढ़ानाथ

बहुतो दिन सँ नाम सुनल छल
आइ अहाँकेँ देखल बूढ़ानाथ !
बूढ़ो भेला सतौं रंगरसिया छिऐ अहाँ
छी करैत नवका छैला केर कान नित्य ।

मुग्धा बाला तरुणी प्रौढ़ा
हरियर पीयर साड़ी वाली
नित झुंड झुंड घेरने रहैछ ।
चट्टीवाली, चोटीवाली
चमकीवाली चोलीवाली
सभ आबि आबि बेराबेरी
पचकल लोढ़ाकेँ कनेक छूबि
मानै छथि अप्पन बड़ सोहाग !

अगिआएल जेना रही अहाँ
ढारै अछि सभ क्यो जलक धार
चढ़बै अछि ठंढा बेलपात
दै अछि चहुँदिस चंदन चोभार ।

अहूँ पसीजि कय पानि-पानि
भेले रहैत छी अहोरात्र
भीजल रहैछ रसमे डूबल
पचकल लोढ़ा अंगुष्ठ मात्र ।

लै फूलपात माला लोटा
सहसह करैत छथि भक्त वृन्द

केओ टीकवला केओ ढोपवला
केओ भस्मवला, रुद्राक्षवला

मुंडक ऊपर त्रिपुंड वला
तौनी रमनामा छाप वला
'बमबम' करैत 'बूं बूं' करैत
तिनपढ़िया वाली दिस तकैत
नहि किछु त घंटे डोलबैत
दरबार लगौने अछि अहाँक
जे चाहै छथि सायुज्य मोक्ष ।

चौकठ सँ भीतर कमल फूल
औ बेलपात अतिशय पवित्र
गमकैत धूप धूमन गुग्गुल
घी मे जरैत अछि दिव्य दीप !

चौकठ सँ बाहर किंतु आबि
बहरा कय केवल चारि डेग
अगणित कबूतरक बीट युक्त
भेटल गंगाकातक दलान
जाहि मे पेंसिल सँ खोधि खोधि
लिखने छथि अपन नाम-गाम
बड़का बड़का जे बुद्धिमान
आएल छलाह जे एहिठाम
औ भोजन कय उच्छिष्ट छोड़ि
पत्तलकेँ ओहीठाम फेंकि
सभ नित्यकर्म कय विदा भेल
छथि छोड़ि मक्षिका केर बथान !

फाटक पर हलुआइक दोकान
जाहि मे होइछ बिढ़नीक भांज
चुट्टी पिपरी माछी लाखो
पेड़ा लड्डू केर स्वाद पाबि
मनबै छथि बूढ़ानाथक जय
हे युग युग जीबू महादेव ।

घाटक तँ कोनो वर्णन नहि
जहिठाम रहै अछि नित बहार
टिकुली वाली, हँसुली वाली
चुलकी वाली नथुनी वाली
निर्धोख अपन आँगिया उतारि
सीढ़ी पर बैसल पीठ खोलि
पाँखुर मे साबुन लगा लगा
छाती भरि जल मे बैसि बैसि
मलि मलि करैत उन्मुक्त स्नान
पुरुषक छातीकेँ दलकबैत
जे तर्पण मे संलग्न चित्त
तिनको किछु-किछु विचलित करैत

ऊपर बहरा तीतल युवती
कीनै छथि गद्दी ओ ऐंठा
पेड़ा लड्डू तोता मैना
मेला घुमनी बारहमासा
ओ आँचर मे दोना भरि कऽ
बूढ़ानाथक लै छथि प्रसाद !

घाटक बाटक फाटक पर सँ
ऐलहुँ जोँ सड़कक आर पार
बूढ़ानाथक मंदिर समीप

देखल मदनक पसरल बजार ।
सहसह करैत छथि कामदेव
लागल अछि रति रानिक कतार ।

अछि नगरपालिका धन्य एहन
जे करइछ धर्मक ई प्रचार
तीर्थस्थानक ई महोद्धार
बूढ़ानाथक ई जयोद्गार

हे जीर्णशीर्ण पचकल पाथर
सरिपहुँ छी पाथर अहाँ भेल
पथराएल तीनू आँखि आब
तेँ झाम गुड़ै छी चुप बैसल
किछु सक्क लगै अछि जोँ नहि तऽ
व्यर्थ गाड़ल छी एहिठाम
बहरा कऽ काज लोढ़ाक दियऽ
खट्टर काका पिसताह भाङ

['मिथिला दर्शन'–फरवरी १९६०]

नवकी पीढ़ी सँ

नवकी पीढ़ी शतशत प्रणाम ।।

ऐ ! ननिया सासु अहाँक छलीहय नकझपनो लाजें कठौत ।
आँचरक छोरकेँ दोबर कए रखने ठोरक ऊपर भरौत ।
ओ अहाँ आइ ओहि आँचरकेँ मस्तक सँ नीचा फेंकि देल ।
ओ ससरि खसल पीठक पाछाँ, लहराइत नागिन मुक्त भेल ।
ई वेष वेश नयनाभिराम ।
नवकी पीढ़ी शतशत प्रणाम ।।

ऐ ! अजिया सासु अहाँक छलीहय पटमासी सिंदुरवाली ।
काड़ा बाला बिरहड़ी सूति मिस्सी खुदिया गोदनावाली ।
ओ अहाँ मेटाओल दास-चिह्न माँगक रेखाकेँ कैल दूर ।
तोड़ल बेड़ी हथकड़ी सदृश गहना चानिक कय चूर चूर ।
अछि 'रिस्टवाच' लहठीक ठाम
नवकी पीढ़ी शतेशत प्रणाम ।।

ऐ ! मसिया सासु अहाँक छली जाइत महफा मे माइ गाम ।
चरबाह संग छलथिन्ह चलैत यदि जाथि बेचारो कोनो ठाम ।
ओ अहाँ चली निर्भय एकसरि साइकिल रिक्सा वा मोटर पर
रेलो जहाज मे सफर करी साहसपूर्वक सभतरि एसकर
घूमी चौरंगी बैसि ट्राम ।
नवकी पीढ़ी शत शत प्रणाम ।।

ऐ ! पिसिया सासु अहाँक छली एकरंगा तिनपढ़ियावाली ।
कपिलेश्वर और सिमरिया मे कबुला पाती मानय वाली ।
ओ अहाँ 'जारजेट' ओ 'शिफून' 'नायलन' मे छी चमकयवाली
मंसूरी शिमला दार्जिलिंग मे घोड़ा चढ़ि घूमय वाली
शलवार लगै अछि अति ललाम ।
नवकी पीढ़ी शत शत प्रणाम ।।

ऐ ! ददिया सासु अहाँक छली घोघक तर मुँह लाड़यवाली ।
पुरुषक ऐने भीतर पड़ाथि वा बैसि जाथि चुक्की माली ।

ओ अहाँ करै छी 'कटलेट' केँ पार्टी मे बैसलि निर्विकार ।
क्लब मे खेली, नाची-गाबी, अँगरेजी बाजी धुँआधार ।
असलीए मेमक जकाँ शान
नवकी पीढ़ी शतशत प्रणाम ।।

ऐ ! माय अहाँक लिखैत छली 'सोस्ती सिरी' कय क ऽ चिट्ठी ।
हनुमान चलीसा पढ़ै छली बच्चा गर दय रिट्ठा-रिट्ठी ।
ओ अहाँ पढ़ै छी 'फिल्म न्यूज' 'डीयर' कहि छी चिट्ठी लिखैत
बच्चाक भार सँ मुक्त भेलि तितलीक सदृश फड़फड़ उड़ैत ।
छी अहाँ वस्तुतः बुद्धिधाम
नवकी पीढ़ी शतशत प्रणाम ।।

ऐ ! सासु अहाँक छली घर मे चिनवार गोसाउनि केर निपैत ।
बनबथि ओ माटिक महादेव तुलसीचौरा पर दीप दैत ।
ओ अहाँ करै छी 'ड्रिल परेड', खाकी रंगक पोशाक पहिरि ।
बन्दूक देखि अहाँक हाथ पंडित लोकनि छथि रहल सिहरि ।
भय सँ हुनका छुटि रहल घाम ।
नवकी पीढ़ी शत शत प्रणाम ।।

पंडित सभ ढाबुस जकाँ रहथु कोंका-कोंका-कोंका करैत ।
खिसिया खिसिया कय गारि दैत 'कुलटा' ओ 'निर्लज्जा' कहैत ।
कनियो नहि विचलित होउ अहाँ चुपचाप चलू आगाँ बढ़ैत ।
हाकी डंडा नेने कुदैत, टेनिस रैकेट नेने फनैत ।
पंडित जैता बाबाक धाम ।
नवकी पीढ़ी शत शत प्रणाम ।।

निधोख अहाँ सर्विस पकड़ 'लेडी डाक्टर' वा बनू 'नर्स' ।
'मिस्ट्रेस' वा 'टेलीफोन गर्ल' बनि चलू अपन लय हाथ पर्स ।
ऐ ! अहाँ उड़ाऊ 'एरोप्लेन' कतबो खौंझाबथि बूढ़ लोक ।
पंडित सभकेँ नेने जाऊ ओ छोड़ने आऊ चन्द्रलोक ।
तैखन सार्थक अहाँक नाम ।
नवकी पीढ़ी शत शत प्रणाम ।।

['इजोत'-होलिकाक १९६०]

पंडित ओ मेम

पंडित छथि काढ़ा, मेम छथि 'कौफी
पंडित छथि भुसबा, मेम छथि 'टौफी'
पंडित छथि कटहर, मेम छथि 'कीमा'
मेम छथि टुगाटो, पंडित कदीमा ।
पंडित छथि माड़ा, मेम छथि खोबी
पंडित छथि बंधा, मेम फुलकोबी
पंडित रोट, मेम छथि पू
पंडित अदौड़ी-भाँटा, मेम छथि 'स्टू' ।
मेम छथि किशमिश, पंडित छथि नीम
पंडित छथि चूड़ादही, मेम आइसक्रीम ।
मेम छथि पियानो, पंडित छथि ढोल
मेम छथि क्रीमचॉप, पंडित छथि ओल ।
पंडित छथि डंका, मेम छथि बीना
पंडित छथि तुलसी, मेम छथि पुदीना ।
पंडित छथि दाढ़ी, मेम छथि 'ब्लेड'
पंडित छथि पंचगव्य, मेम 'लेमनेड' ।
पंडित धथूर छथि, मेम छथि गुलाब
पंडित गंगाजल, मेम छथि तेजाब ।
पंडित तीर्थ छथि, मेम छथि 'टूर'
पंडित छथि हर्रे, मेम अंगूर ।
पंडित छथि भुर्रा, मेम छथि चिन्नी
पंडित छथि ढेउआ, मेम छथि गिन्नी ।
पंडित करैल छथि, मेम छथि चटैल
मेम छथि प्याली, पंडित तमघैल ।
मेम छथि 'इंजिन', पंडित छथि 'ब्रेक'
पंडित छथि अहिबक फर, मेम छथि 'केक' ।

पंडित छथि वेदपाठ, मेम 'फिल्म शो'
पंडित छथि नेढ़ा, मेम छथि को
मेम छथि 'मीटकरी', पंडित छथि साग
मेम छथि 'ब्रेसरी', पंडित छथि पाग
पंडित छथि चपकनि, मेम छथि 'गौन'
पंडित छथि मोटिया, मेम 'नाइलौन'
पंडित छथि खद्दर, मेम 'औरगैंडी'
पंडित भाँग छथि, मेम छथि 'ब्रैंडी'
पंडित माटि छथि, मेम छथि सिमिंट
पंडित सुपारी, मेम पिपरमिंट ।
पंडित सराइ छथि, मेम छथि 'प्लेट'
पंडित ओम् छथि, मेम 'ओमलेट' ।
पंडित जनउ छथि, मेम छथि 'चेन'
पंडित चरणामृत, मेम 'शैम्पेन' ।
पंडित छथि शास्त्रार्थ, मेम 'डांस'
पंडित प्रायश्चित्त, मेम 'रोमांस' ।
मेम छथि 'प्लैस्टिक', पंडित छथि काठ
मेम छथि 'पेरिस', पंडित सौराठ ।
पंडित छथि मंदिर, मेम छथि 'क्लब'
पंडित छथि पोखरि, मेम छथि 'टब' ।
मेम छथि चम्मच, पंडित कड़ाह
मेम छथि उत्थर, पंडित अथाह ।
मेम छथि पौती, पंडित बखाड़ी
पंडित भुसखाड़ छथि, मेम आलमारी ।
पंडित छथि बोरा, मेम छथि 'कंटर'
पंडित फराठी, मेम छथि हंटर
पंडित कठौत छथि, मेम छथि टीन
पंडित छथि खुट्टा, मेम आलपीन ।
पंडित छथि पतड़ा, मेम छथि 'कलेंडर'

पंडित छथि चोआ, मेम छथि 'लवेंडर' ।
पंडित छथि चानन, मेम छथि 'स्नो'
पंडित लवंगवटी, मेम 'एस्प्रो' ।
पंडित अरिकोंच छथि, मेम छथि करेजी
पंडित छथि संस्कृत, मेम अंगरेजी ।
मेम छथि 'बोब्ड हेयर', पंडित छथि टीक
पंडित बैलगाड़ी, मेम 'स्पुटनीक' ।
पंडित रौद छथि, मेम छथि साया
पंडित ब्रह्म छथि, मेम छथि माया ॥
मेम छथि सिहकी, पंडित छथि बिहाड़ि ।
पंडित छथि पित्ती, मेम छथि सारि ।
पंडित छथि हाथी, मेम छथि जीप ।
पंडित छथि कछुआ, मेम छथि सीप ॥
पंडित छथि अजगर, मेम छथि करैत
मेम छथि स्टेनलेस, पंडित अपैत ॥

['वैदेही'-मार्च-१९

पंडित विलाप

जमाना की बदलि गेलै, उनटलै बात सभ पुरना
उठै अछि पित्त त बहुतो, करू की, वृद्ध अथबल छी ।
जहाँ बट्टाक बट्टा घृत पड़ै छल भोजमे आगाँ
तहाँ आब दालदा सँ दालि छौंकल देखि दबकल छी ।
उठल कछुआ ओ नरहा पाँजि केर प्राचीन मर्यादा
भठल सब खाय पार्टी मे, हमहिं टा आब बाँचल छी ।
जपल हम ओम आजीवन, नेना 'ओमलेट' खोटै छथि ।
कथी सँ पिंड ओ देताह, हम ई सोचि सहमल छी ।
कएल हम भक्तिपूर्वक पाठ गीता केर नित घर मे
तहाँ गीता निजामी केर फोटो देखि ठमकल छी ।
न लज्जा छैक नवतुरिआकेँ, पर्दा अछि उठा देने
कहै अछि बुड़-बुड़ानुसकेँ अहाँ सभ आन पाकल छी ।
जे पुरुषक सामने कहियो ने बहराइत छली धाखेँ
से नवकनियाँ करथि बाजार, ई हम देखि सुटकल छी ।
जनिक आँचर रहै छल नाककेँ पर्यन्त झँपने ओ
पहिरि शलवार छमकै छथि ओ हम लज्जा सँ सकुचल छी ।
सुदमिया माय जे आएल छली नैहर सँ महफा मे
से हुनका देखि साइकिल पर सड़क केर कात अटकल छी
नचै छथि आब कुलकन्या, करै छथि नौकरी स्त्रीगण
फुरै अछि किछु ने ई सभ देखि कऽ हम आब थाकल छी ।
नया पैसा जकाँ चमकैत अछि बुधियार बनि छौंड़ा
दुअन्नी सन पियरका हम अकार्यक भेल राखल छी ।
मोकामा पूल बनि गेने तबै अछि क्यो न जकरा दिस
सिमरिया घाटकेर स्टीमर जकाँ बेकार बैसल छी ॥

['मिथिला दर्शन'-मार्च १९६०]

गंगाक घाट पर

नहूँ नहूँ बाबी जकाँ गंगाजी छथि चलैत
बड्ड दुबराएल छथि, सीर-सीर उगल छन्हि
मलेरियाक मारलि कोसीक वृद्धा जकाँ
आँचर जेना फाटल होइन्ह ठाम-ठाम प्योन लागल
तहिना बालुक दीयर सभ लगैत छन्हि ।
फागुनक सिहकी चलै अछि कनफुसकी जकाँ
स्कुलिया छौंड़ी जकाँ फुदकि रहल चिड़इ सभ ।
सूर्यक चक्का अछि डूबि रहल पश्चिम भर
आगि मे तपाओल लाल लोहक गोला,
जेना लोहार पानि मे डुबा रहल सेरबय लेल ।
एक मुट्ठी अबीर गंगाजल मे घोरा गेलैक,
लाल एकरंगा पहिरि लहरि सभ नचैत अछि ।
तावत एम्हर चन्द्रमाक टिकुली लगौने गोल,
ऐली इजोरिया फिल्मस्टार जकाँ चमकैत ।
दूधक फोहार मे नहाय लगली गंगाजी
सौंसे पटनाक ऊपर चानिक तबक पड़ि गेल ।
सीढ़ी पर बैसलि दीप दै छथि एक प्रौढ़ महिला
सुच्चा गहूम वा गहुमन वला रंग छैन्हि ।
बेस छथि जुआएल जेना खैरी पड़ल पाकल बैर
(अथवा बेसी झूर कऽ कऽ छानल पिड़ुकिआ)
संग मे किशोरी एक चन्द्रकलाक कोंढ़ी जकाँ
सोहल जेना लीची होथि रस सँ डबडब करैत,
परड़ुक सिंघ जकाँ दुनू कात चोटी ठाढ़
ठोर जेना टटका शोणित एखने पीबि आएल होथि !
झुनकुट सन दाढ़ीवला एम्हर एक बाबा छथि
कामिनी ओ कांचन बिना ज्वाला सँ लाबा भेल
दगधल मनोरथ कें मिझाबक हेतु छाती भरि

धारा मे पैसि डूब दै रहल बारंबार ।
जाड़ गेल जार जकाँ लाजे कठुऐल कतहु
महफा सँ हुलकी दैत शिशिर जा रहल छथि ।
बऽस जकाँ धड़धड़ाएल आबि गेल अछि बसंत
काल गनगोआरि जकाँ आगाँ ससरैत अछि ।

['अभिव्यंजना-१ १९६०]

समयक चक्र

[१]

पीसल बदाम[1] घोरि नित्य जे पिबैत छला,

पीसल बदाम[2] घोरि नित्य से पिबैत छथि ।

चानी[3] पर हाथ राखि राति मे सुतैत छला,

चानी[4] पर हाथ राखि राति मे सुतैत छथि ।

आगत कैं आसन[5] ओ वासन[6] जे दैत छला,

आगत कैं आस न[7] ओ वास न[8] ओ दैत छथि।

नाना गाम[9] जा जे बहुक[10] पोषण करैत छला,

नाना गाम[11] जा कऽ बहुक पोषण करैत छथि।

[२]

जैह मृगनैनी[13] मध्य घूमल फिरैत, छला,

सैह मृग-नैनी[14] मध्य घूमल फिरैत छथि ।

जूआ[15] पर बैसि कऽ जे दाव लगबैत[16] छला,

जूआ[17] पर बैसि कऽ ओ दाबल गबैत[18] छथि।

नित्य दू खबास[19] जहाँ पात ओछबैत[20] छला,

नित्य दुखवास[21] तहाँ पान ओ छबैत[22] छथि ।

चाकर[23] अनेक जतऽ सहसह करैत छला,

चाकर[24] अनेक ततऽ सहसह करैत[25] छथि ।

१. कागजी बादाम २. बूढ़क सातु ३. चानीक द्रव्य ४. माथ ५. बैसक ६. बर्तन ७. आशा नहि ८. वास नहि ९. अनेक गाम १०. अनेकक ११. नानाक गाम (मातृक) १२. खकि १३. मृगनयनी (सुन्दरी) १४. हरिण ओ नैनी माछ (अर्थात वन-बाध मे) १५. जुआक खेल १६. बाजी लगबैत १७. बड़दगाड़ीक जूआ १८. दाबल स्वरें गबैत छथि १९. दू टा खबास २०. पात बिछबैत छला (भोजनक हेतु) २१. दुःखक वास २२. खड़-पात लऽ कऽ चार छारैत छथि २३. नोकर २४. चाँड़ा २५. करैत साँप ।

['मिथिला मिहिर' २-७-१९६१]

महगी-माहात्म्य

छौ अने सेर छल पूड़ी जिलेबी और
भाव वैह अंगूर-मखान ओ मिसरीक ।
रुपैया मे सोरह सेर चाउर और दूध छल,
सवा सेर घृतो भेटैत छल येस नीक ।
आइ मडुओ अछि ताहि दिनक मेवा सँ महग
बनिया आइ धैने अछि बड़का-बड़काक टीक ।
एक एक सजमनि केर दाम भेल एक टाका,
एक लाख रुपैया आइ एक लाख कद्दू थिक

[२]

बेसी जमीन आब गऽरक घेघ भेल
तीसो बीघा राखयवला छागर बनैत छथि
कम्मो वला जैता जे अपने नहि जोततहि
हऽर वला खेत छीनक हेतु फनकैत छथि
वैह बुधियार जे शहर मे मकान बना
अपनो रहै छथि किरायो लगबैत छथि
पाँचो कट्ठा पटना मे जमीन नहि जिनका छनि
लाख टका रखने से अभागल कनैत छथि

[३]

बिसरि जाउ पाहुन ओ घृतक कचौरी आब
पिस्ता ओ बदाम देल हलुआ बिसरि जाउ
बिसरू अणाची युक्त दूध ओ दहीक छाल्ही
रावड़ीक नाम नहि ठोर पर आब लाउ
बिसरू ओ बासमती चाउरक सुगंधित भात
श्यामजीरा केर आब स्वाद कैं बिसरि जाउ
ऐवाक हो त अपन राशन कार्ड नेने आउ
नहि त आब चुप्पहि अपन बाट धय ससरि जाउ

[१९६८]

रस-निमंत्रण

दुइ घड़ीक पर्व थीक, हरियरी छनैत जाउ
रस-कलश छलकि रहल, प्रेम सौं पबैत जाउ
संग मिलि पिबैत जाउ।

इजोरियाक चान मे, उषाक सिनुरदान मे
कलीक मुस्कान मे, पक्षीक हर्षगान मे
गहूम और धान मे, मकइ मे ओ मखान मे
फागु ओ नवान्न मे, जितिया मे, चौठचान मे
पूआ मे ओ पकवानमे, मिष्टान्न क्षीरपान मे
मन्दिर मे तीर्थस्थान मे, दया मे और दान मे
वेद मे पुरान मे, बाइबिल मे ओ कुरान मे
गीताक दिव्य ज्ञान मे, देवीक रूप ध्यानमे
कामिनीक मान मे, नारीक स्नेह दान मे
नील नभ वितान मे, तारागणक मचान मे
अदृश्य भगवान मे, पृथ्वीक स्थान स्थान मे
असंख्य रस छलकि रहल, छाक भरि पिबैत जाउ
दुइ घड़ीक पर्व थीक...

जंगल मे ओ पहाड़ मे, गंगाक स्वच्छ धार मे
समुद्र केर कछार मे, बालुक पथार मे
वर्षा ऋतुक बहार मे, मेघ मे, मलार मे
कारी घटाक उभार मे, विद्युल्लताक हार मे
रेशमी फुहार मे, घनघोर मुसलधार मे
माछ केर कतार मे, स्वच्छन्द जलविहार मे
हँसैत सिंगरहार मे, झुमैत मधु बयार मे
वीणा मे ओ सितार मे, वागेश्वरी बहार मे
पाबनि मे ओ तिहार मे, न्योत मे हकार मे
भोजनक सँचार मे ओ खटमधुर अँचारमे
सौजन्य मे सत्कार मे, शतरंज ओ चौपार मे

सुन्दरिक शृंगारमे, प्रेयसिक दुलार मे
अंगूर मे अनार मे, रसगुल्लाक धार मे
रस अपूर्व अछि भरल, चाशनी चखैत जाउ
दुइ घड़ीक पर्व थीक...

फागुनक बसात मे, मीठ-मीठ बात मे
पुरैन केर पात मे, बासमती भात मे
माडुरक झोर मे, मानिनीक नोर मे
चन्द्रमुखीक ठोर मे, अंचलक हिलोर मे
गाँधीमे, टैगोर मे, अरिकोंचमे तिलकोर मे
कमल मे ओ गुलाब मे, मुग्धाक हावभाव मे
नरगिसी पोलाव मे, सरिसोक सोन्ह सागमे
राबड़ी मलाइ मे, अनोह मरचाइ मे
राधामे और श्याममे, कृष्णभोग आम मे
केसर मे औ बदाम मे, कौनी मे और साम मे
सेव लाल-लाल मे, धँवर पड़ैत गाल मे
नृत्य छन्द ताल मे, सुकेशिनीक जाल मे
मयूर केर पाँखि मे, हरिण केर आँखि मे
भालसरीक वास मे, मज्जरक मिठास मे
सुकंठिनीक हास मे, कटाक्ष केर विलास मे
रस भरल गिलास मे, चिर मधुर पियास मे
शास्त्र केर प्रसंग मे, काव्य केर उमंग मे
सोचकेँ भसा दियऽ बाँसुरी टेरैत जाउ।
विश्वकेँ अबीर केर रंग मे रँगैत जाउ।
दुइ घड़ीक पर्व थीक...

[१९६८]

अकविता प्रति : कविताक उक्ति

हम बहुत दिन रस पिआओल, आबऽहाँ नीरा पियाउ
रसमलाइ हम खोआओल, आबऽहाँ सोडा पियाउ ।
छन्द केर लय ताल पर हम नृत्य नित देखबैत ऐलौं,
आबऽहाँ स्वच्छन्द भय बेताल निज तांडव देखाउ ।
स्वर्ण हीरक मणि अलंकारक छटा हम दैत ऐलौं,
अहाँ चकमक काच लय कऽ हार निज चमका देखाउ ।
रेशमी साड़ी हमर परिधान मर्यादित रहल अछि,
अहाँ प्लैस्टिक केर जँघियामे अपन जौहर देखाउ ।
हमर चोटी आलुलायित कटिक नीचा मे खसै अछि,
अहाँ नकली केश सँ गर्वोच्च तिनमहला उठाउ ।
रस कलश सन हमर यौवन क्षीर सँ छलछल करै अछि,
रबर केर खप्पा लगा नकली अहाँ प्याला बनाउ ।
जाहि सँ किछु अमृत दूहब बड़द कैँ दूहब जकाँ अछि ।
टॉप कैँ उनटा अहाँ टॉपलेस फैशन चलाउ !
हमर श्रीफल और दाड़िम केर प्रतीक पुरान यदि तँ
अहाँ बड़हर और कटहर केर नव उपमा चलाउ ।
चन्द्रमा ओ कमल कोकिल हंस सौँ हम नेह राखल,
अहाँ आब धथूर और अकौन सौँ उपवन सजाउ ।
लक्षणा ओ व्यञ्जना सौँ हम रसिककैँ मुग्ध कैलौं,
अहाँ अविधो लुप्त कय, धारा अनर्थमयो बहाउ ।
हमर चौरासी कला छल, पाँच वर बेसी अहाँ छी
जाइ छी हम, आबऽहाँ निज चारि सै बीसी चलाउ ।

[मैथिली कविता - अप्रैल १९६८]

हम पाहुन छी

हम पाहुन छी, पहुनाइ करब ।
हम स्नान करब, हम ध्यान धरब
रचि रचि चन्दनक विधान करब
हम आँखि मुनब, हम नाक मुनब
हम कान मुनब, किछुओ नै सुनब
पाचक खा पेट सोन्हाइ करब
हम पाहुन छी, पहुनाइ करब ।

तावत गृहिणी ओरिऔन करथु
चिनवार निपथु ओ ठाँय करथु
सुभ्यस्तैं भानस-भात करथु
कंचुक-तिलकोरक पात तरथु
धँटबड़, सजबड़, दहिबड़ छानथु
बाटी सभ माँजि सँचार करथु
बारह, तेरह, चौदह बाजौ
हम कनिञो नहि अगुताइ करब
हम पाहुन छी पहुनाइ करब ।

हम स्तोत्र जपब, किछु श्लोक पढ़ब
कोनो नेनाक दुलार करब
वा पुनः कान पर जनउ चढ़ा
लोटा हम अपन बहार करब
ता खूब प्रेम सँ गृहिणीयो
बड़-बड़ी खूब बनबैत रहथु
ललमुँह रोहु केर पलइ छूर कय
चित लगाय तरैत रहथु
खोआकैं गाढ़ करैत रहथु
मोटगर छाल्ही पड़बैत रहथु
ओ सेवइ केर विन्यास करथु

ता हम ठोपक विन्यास करब
हम पाहुन छी पहुनाइ करब

भीतर सँ जखन पुछारि हैत
विजयक हेतु आह्वान हैत
पीढ़ा पर जोरासन लागत
घरबैयो कैँ किछु भान हैत
भातक गोलाकेँ ढाहि-ढाहि
छहछह करैत घृत ढारि लेब
माछक बट्टाकेँ उनटि देब
जंबीरी केर रस गाड़ि लेब
छाल्ही मे रसगुल्ला लपेटि
एक-एकटा मुँह मे दैत जैब
ओ जलेक बेर जतबा औंतइ
सकरौड़ी कैँ सुरकैत जैब
हम पीठ देखाएब नहि रण मे
केवल धोधिर देखबैत रहब
जे जे समिधा आगाँ आओत
एहि हवन कुंड मे दैत रहब
एक्को रत्ती नहि छूति करब
कनिको नहि दूरि सँचार करब
जे हैतइ काल्हि से होइत रहओ
हम मधुरक आइ ढेकार करब ।
हम पाहुन छी पहुनाइ करब ।

हम खर्च न एक्को पाइ करब
गृहिणी कैं खूब बड़ाइ करब
पुछबैन्ह जे आब बिदाइ करब
वा पुनि आग्रह ऐ दाइ करब
हम स्थगित तखन जैनाइ करब
हम पाहुन छी पहुनाइ करब ।

[३१-८-१९६८]

अनागत प्रेयसी सँ

हे हमर चिर प्रेयसी अज्ञात
छी अहाँ चिरयौवना उद्दाम
रहइ छी पर्दाक भीतर किन्तु
हरइ छी सभ केर मन ओ प्राण
छथि असंख्यो प्रेमपात्र अहाँक
सभक लग जाइ छी अहाँ एक बेर
अछि परम निष्ठुर अहाँ केर स्पर्श
छुइल जकरा से मुइल तत्काल
क्रूर विषकन्या जकाँ चुपचाप
तेहन आलिंगन छिएक करैत
होइछ टामहिं लोक संज्ञा शून्य
सकल सुधिबुधि जाइ छैक बिलाय
औ धरै छी अहाँ अप्पन बाट
पुनः घुरियो कऽ छिऐ न तकैत
जाइ छी दोसर शिकारक जोह
छी अहाँ निर्बाध ओ स्वच्छन्द
द्वार क्यो नहि कय सकै अछि बंद
नऽव हो वा बूढ़
चतुर अथवा मूढ़
गति अहाँ केर गूढ़
सभक गर लगबैत छी निज फंद
लखि अहाँकेँ बुद्धि होइछ मंद
आइधरि ऐलहुँ न हमरा लऽग
आइधरि देखल अहाँक न रूप
आइधरि नहि भेल स्पर्श अहाँक
आइधरि भेटल अहाँक न स्वाद
किंतु एतबा छी अवश्य जनैत

एक दिन ऐबे करब हे देवि !
शिशिर अथवा ग्रीष्म वा बरिसात
भादवक घनघोर झंझावात
वा बसंतक मदोन्मत्त बसात
वा शरद केर शांत निर्मल प्रात
ऐब कहियो अहाँ कोनो बेर
छी ने बुझइत अहाँ देर-सबेर
जाहि दिन ऐबाक छौ से आउ
हम कहाँ धरि आब और डराउ ?
जखन बचबा केर अछि न उपाय
कहाँ जाऊ, कोन ठाम पड़ाउ ?
हे अनागत प्रेयसी अज्ञात !
हम कहै छी हृदयसँ ई बात
करब हम निर्भय अहाँक सत्कार
छी वरण करबाक हित तैयार
आबि जाउ होय जहिया मऽन
अछि समर्पण हमर तन मन धऽन
हे हमर चिर प्रेयसी अज्ञात !

[अभिव्यंजना – सितम्बर १९६२]

मत्स्य-तीर्थ

रोहुमे रामेश्वर ओ बोआरी मे बद्रीनाथ
दरही मे द्वारकाक धाम हम देखैत छी
कबइ कैँ काशी और पोठी कैँ प्रयागतीर्थ
कतला कैँ कन्या कुमारी कहैत छी ।
गरइ कैँ गरीबनाथ, सिंही सिंहेश्वरनाथ,
बचवा बैद्यनाथ, गया गैंची कैँ बुझैत छी ।
माङुर कैँ मथुरा और हिलसा कैँ हरद्वार
गोरींक झोर कैँ गंगाजल कऽ जनैत छी ।

[१९६८]

मिष्टान्न

पूड़ी कैँ पुरी ओ जिलेबी कैँ
जगन्नाथ, हलुआ कैँ
हरद्वार कय कऽ जनैत छी ।
दही मे द्वारका ओ चीनी मे
चिदम्बरम, बुनिया मे वृंदावन
तीर्थ हम देखैत छी ।
कलाकन्द काशी और पन्तुआ
प्रयागतुल्य, मगदल कैँ मथुरा
गजा गया कैँ बुझैत छी ।
बर्फी कैँ बद्रीनाथ, पेड़ा कैँ
पशुपतिनाथ, रामेश्वरम
पैघ रसगुल्ला कैँ कहैत छी ।

[१९६८]

हे राजकमल !

हे राजकमल !
सुन्दर शतदल !
शुचि मानसरोवर मध्य खिलल ।
विकसित उज्ज्वल
अतिशय निर्मल
मधुयुत कोमल
सुरभित परिमल
सौरभ मलयानिल केर शीतल
लोकक करैत सुरसित हीतल
चहुँदिशि सुगंध खिरबैत चलल ।
ओ रूप मनोहर, शील विमल
सौजन्य, विनय, मुसकान धवल !
अंकित ओहिना स्मृति केर पटल
मन पारि होइत अछि चित्त विकल
गज-काल आबि कय कैल कवल ।
ओ दिव्य कमल सुकुमार नवल !
सभकेँ करैत शोकित विह्वल ।
तजि देल अहाँ नश्वर भूतल
मुसुकैत रही जहिना सुतल ।
साहित्य जगत मे कीर्त्ति अचल
अक्षुण्ण रहत युग-युग प्रतिपल ।
मर्म स्पर्शी ओ विधा सकल
सर्वदा अमर भय रहत बनल ।
सुकुमार कथा केर राजमहल ।
सुकुमार काव्य केर राजमहल ।
प्रतिभाक पुंज हे राजकमल !
वाणीक दिवंगत पुत्र सबल !
अगणित मानस मे रहब बनल ।
हे अमर ! हमर [illegible] राजकमल ।

['आखर' अगस्त–१९६८]

घटक सौँ

कन्या ओ बालक परस्पर मिलि जैता स्वयं
औ जी पिता ! आब अहाँ छोड़ू वरक दाम ।
कन्या ओ बालक अपन सभटा विधि कऽ लेताह,
पुरहितजी ! आब नहि दक्षिणाक लियऽ नाम ।
कन्या ओ बालक सम्बन्ध अपन कऽ लेताह,
पजियाड़ ! आब रहू बैसल गुड़ैत झाम ।
कन्या ओ बालक खोजि लेता एक दोसराकेँ,
घटकराज ! आब अहाँ होउ सटक सीताराम ।

[१९६९]

पंडितजी सौँ

बेबी आब एक्कोटा तुसारी नहि पुजतीह ।
किचेन मे जा कऽ चिकेन ओ तरतीह ।
मम्मी आब क्लब मे जा,कऽ रम्मी खेलइ छथि
कोना ओ आब सोमवारी व्रत करतीह ?
आंटी उड़ि गेली एरोप्लेन मे पाइलट भऽ
कोना ओ चतुर्थी मे वरक नाक धरतीह ?
पंडित जी ! आब अपन पतड़ा अहाँ बंद करू,
नहि त महिला पुलिस आबि अहाँकेँ पकड़तीह ।

[१९६९]

कनियाँक समस्या

कनियाँक आँचर मे खोंइछ कोना देल जैतैन्ह,
ओ त पहिरने सिर्फ फ्राक सलवार छथि ।
कोना एखन मेंहदी लगतैन्ह कनियाँक हाथ,
टेनिस मे जैबा हेतु बिल्कुल तैयार छथि,
कनियाँ मधुश्रावणीक कथा कोना सुनतीह
हाथ मे ओ, नेने अंग्रेजी अखबार छथि
सासु केर पैर ओ दबौती कोना अहीं कहू,
एखन ओ बजा रहल एलेक्ट्रिक गिटार छथि ।

[१९६९]

मुक्तक

[१]

पीसी ए पीसी, अहाँ घोरू तीसी
हम ता कने काल, जाइ छी एन. सी. सी.

[२]

मामा औ मामा, अहाँ फाँकू सामा
बच्चाकेँ रखियौ, हम जाइ छी ड्रामा

[३]

काकी ए काकी, पैन्ट दियऽ खाकी
हम जायब मैच खेलऽ, आइ छै हाकी

[४]

बाबा औ बाबा, अहाँ फाँकू लावा
हम कने प्लेन सँ जाइ छी ओटावा

[१९७०]

गजल

ने लड़लहुँ फौजदारी जौं
त रुपया केर धाहे की ?
खसौलक नोर नहि बापक
त ओ कन्याक बिवाहे की ?
ने आधा ऐंठ फेकल गेल
त फेर ओ भोज-भाते की ?
ने बहराएल एको बन्दूक
त ओ थिक बराते की ?
ने लगला जोंक बनि कय जे
तेहन दुलहाक बापे की ?
जौं लस्सा बनि कुटुम सटला
त ओहिसँ बाढ़ि पापे की ?
पड़ल नहि खेत सुदभरना
त ओ बापक सराधे की ?
ने फनकल जौं देयादे सन
त ओ गहुमन दराधे की ?

[१९७१]

मातृभूमि

[एक पक्ष]

हे हमर अभिराम, मातृभूमि ललाम !
कोन ठाँ होइछ एहन सुन्नर सिनुरिया आम
कोन ठाँ होइछ एहन रसगर फलेना जाम
कोन ठाँ होइछ एहन पौरल दही केर छाँछ
कोन ठाँ होइछ एहन सुकुमार माछुर माछ
कोन ठाँ होइछ एहन अरिकोंच ओ तिलकोर
कोन ठाँ होइछ एहन पटुआक खटरस झोर
कोन ठाँ होइछ एहन चूड़ा दही केर भार
कोन ठाँ होइछ एहन विन्यासपूर्ण सँचार
कोन ठाँ होइछ एहन मुखशुद्धि केर सत्कार
कोन ठाँ होइछ एहन शतरंज केर चौपार
कोन ठाँ होइछ एहन नोसिक सतत व्यवहार
कोन ठाँ होइछ एहन शास्त्रार्थ केर बौछार
कोन ठाँ होइछ एहन बाबाक गर रुद्राक्ष
कोन ठाँ होइछ एहन तरुणीक तीव्र कटाक्ष
कोन ठाँ होइछ एहन अति सोन्ह सरिसव साग
कोन ठाँ होइछ एहन कोकटीक सनगर पाग
कोन ठाँ होइछ एहन हरियर पुरैनिक पात
कोन ठाँ होइछ एहन कमलक सुगन्ध बसात
कोन ठाँ होइछ एहन मेंही जनउ टकुरीक
कोन ठाँ होइछ एहन डाली मृदुल सीकीक
कोन ठाँ होइछ एहन रसिका-प्रगल्भा सारि
कोन ठाँ होइछ एहन सरहोजि केर प्रिय गारि
कोन ठाँ होइछ एहन पोखरिक फोंक मखान
कोन ठाँ होइछ एहन विद्यापतिक मधु गान

कोन ठाँ होइछ एहन पीयर सिनुरिया आम
कोन ठाँ होइछ एहन कारी फलेना जाम
हे हमर अभिराम, मातृभूमि ललाम !

[दोसर पक्ष]

कोन ठाँ होइछ एहन ईर्ष्याक अन्तर्दाह ।
कोन ठाँ होइछ एहन द्वेषक भयंकर दाह ।
कोन ठाँ होइछ एहन आलोचनाक प्रवाह ।
कोन ठाँ होइछ एहन अपना दैयादक डाह ।
कोन ठाँ होइछ एहन गौंआक बात बिषाह ।
कोन ठाँ होइछ एहन आत्मा कुटुम्ब कटाह ।
कोन ठाँ होइछ एहन कन्याक कठिन विवाह ।
कोन ठाँ होइछ एहन नारद सनक चुगलाह ।
कोन ठाँ होइछ एहन लड़यबला सनकाह ।
कोन ठाँ होइछ एहन चूड़ा दहीक गवाह ।
कोन ठाँ होइछ एहन निंदाक तीव्र बिहाड़ि ।
कोन ठाँ होइछ एहन खरहाक खातिर मारि
कोन ठाँ होइछ एहन सौराठ सन केर हाट
कोन ठाँ होइछ एहन स्वजातिक काट
कोन ठाँ होइछ एहन गामक गोलैसी जोर ।
कोन ठाँ होइछ एहन बान्धवक निन्दा घोर ।
कोन ठाँ होइछ एहन कटु बैर अथवा फूट ।
कोन ठाँ होइछ एहन अतिशय परस्पर कूट ।
कोन ठाँ होइछ एहन पटिदार प्रति आमर्ष ।
कोन ठाँ होइछ एहन भाइक पतन लखि हर्ष ।
कोन ठाँ होइछ एहन बंधुक उदयसँ शूल ।
कोन ठाँ होइछ एहन कौचर्य कलहक मूल ।
कोन ठाँ होइछ एहन खटराग तेरह पाक ।
कोन ठाँ होइछ एहन गोतनीक चूल्हि फराक ।
कोन ठाँ होइछ एहन कलहाग्नि गामक गाम
कोन ठाँ होइछ एहन घातक तकर परिणाम ।

[१९७१]

नारी-वन्दना

युग- युगान्तर केर अहाँ चिर सुन्दरी सुकुमारिणी छी ।
छवि अपन देखबैत अनुपम नित्य नव मनहारिणी छी ।
मधु भरल अमृत कलश सौं रस निरंतर दान करइत
चिर तृषित जग हेतु अक्षय यौवना पनिहारिनी छी ।
कतहु गृहिणी रूप मे पति केर आज्ञाकारिणी छी ।
कतहु नूपुर ताल पर स्वच्छन्द नर्त्तनकारिणी छी ।
कतहु सीता बनि कोनो रामक अहाँ अनुसारिणी छी ।
कतहुँ राधा रूप कोनो कृष्ण केर अभिसारिणी छी ।
अप्सरा सम मोहिनी बनि कतहु व्योम विहारिणी छी ।
अफसरा बनि शानवाली कतहु शासनकारिणी छी ।
कतहु भड़कछ भिड़ि अहाँ श्रमजीविनी बनिहारिनी छी ।
कतहु योगिया वेश मे संन्यासिनी व्रतचारिणी छी ।
सेविका बनिकय समाजक कतहु पतितोद्धारिणी छी ।
चित्रपट केर तारिका बनि कतहु रससंचारिणी छी ।
उच्चमस्ता रंजितोष्ठी सूक्ष्म कंचुकिधारिणी छी ।
सुस्मिता मधुवर्षिणी बनि कतहु स्वागतकारिणी छी ।
कतहु आँचर कसि अहाँ वीरांगना असिधारिणी छी ।
रूप रणचण्डीक धैने शत्रु सैन्य विदारिणी छी ।
सत्वगुण केर दिव्यतामे वीणा पुस्तक धारिणी छी ।
तम प्रभावें कतहु कौखन अहाँ प्रलयंकारिणी छी ।
रजगुणक शक्तिक प्रसादें सृष्टि संततिकारिणी छी ।
प्रकृति त्रिगुणात्मक स्वरूपा पुरुष बंधनकारिणी छी ।
हे रहस्ये ! हे नमस्ये ! धन्य हे भवतारिणी छी ।

[३१-१०-१९७१]

हे दुलहि केर माय

हे दुलहि केर माय !
धन्य भाग अहाँक पति, विद्यापतिक वर नाम ।
यशक सौरभ खिरि रहल अछि, हुनक गामक गाम ।
अमर कोकिल गान सौं, गुंजायमान आकाश ।
दिग दिगन्त पसरि रहल अछि, कीर्त्ति केर प्रकाश ।
किछु की हुनका बनैबा मे अहाँक नहि हाथ ?
श्रेय अछि निश्चय अहूँ कें, तैं नवै छी माथ ।
हे दुलहि केर माय !

भोर उठि पूजाक हुनकर के करै छल ठाम ?
नित्य हुनक सराई अर्घी के, मजै छल नाम ?
स्नेह सौं ओरिऔन कय, के दै छलैन्हि जलपान ?
दही चूड़ा आम अथवा मधुर और मखान ?
श्रान्त ओहि कवि कोकिलक, दबबैत छल के देह ?
हुनक कविता दीपमे, ढारैत छल के स्नेह ?
पुरुष वर्ग अहाँक प्रति कैलक केहन अन्याय ?
नाम धरि अहाँक देलक, लोक सभ बिसराय ।
हम रहल छी चरण पर, श्रद्धाक फूल चढ़ाय ।
हे दुलहि केर माय !

[१९७१]

मातृभूमि वंदना

जग मे ई देश महान हमर
ई धरणी स्वर्ग समान हमर ।

उन्नत मस्तक गौरव प्रतीक
सर्वोच्च हिमालय केर शिखर
कैलास सँ लय कन्या कुमारि
छथि पावन तीर्थस्थान हमर ।
गंगा यमुना नर्मदा सिंधु
गोदावरीक धारा सुंदर
कृष्णा कावेरी ब्रह्मपुत्र
सिंचन करैत छथि प्राण हमर ।

दक्षिण पश्चिम ओ पूर्वांचल
लहराइत छथि उच्छल सागर
बंगोत्कल सौं लय केरल धरि
कदलीक पत्र सन छथि हरियर
अगणित सरवर मनहर पुष्कर
निर्झर प्रकृतिक वरदान हमर ।

एहिठाम जनक ओ याज्ञवल्क्य
गौतम कणाद जैमिनि शंकर
एत्तहि प्रकटित भेल सांख्य और
गीता दर्शन सन ज्ञान हमर ।

एत्तहि भेला श्री राम कृष्ण
अवतारी पुरुष महान हमर
ओ जनक नन्दिनी सीता सन
कन्या थिकीह अवदान हमर ।

कोमल पदावली सरस मधुर
विद्यापति कवि केर गान हमर
मैत्री करुणा संदेश देलन्हि
सिद्धार्थ बुद्ध मुनि तीर्थंकर
तुलसी कबीर नानक मीरा
गाँधीजी जिनकर नाम अमर
ओ राष्ट्रपिता, ओ विश्वबंधु
मानवता केर अभिमान हमर ।

[१९७३]

चन्द्रमाक मृत्यु

चन्द्रमुखी राकेट सँ उतरि
एक लात चन्द्रमा कें मारलथिन्ह ।
धुर जो ! एहने उभड़-खाभड़ टेढ़-मेढ़ टिल्हा-डाबर,
पैह हमरा मुँहक परतर करत ?

हजारो वर्ष सँ कोढ़िया उपमान बनल छल ।
वाल्मीकिसँ विद्यापति पर्यन्त
केहन भ्रम मे रहलाह !
एही चुहार सँ हमर उपमा दैत छलाह ।

बुड़िबक चकोर
कुमुदनी बताहि
सभ एकरे पाछाँ बेहाल छल ।
हजारो वर्ष सँ ई लोककेँ ठकैत छल ।
लाखो कोस सँ चमकैत छल
चोरक मुँह चान सन.!

आइ तोहर कलइ खुजल पाथर मुँहखोद्धा ।
मारि चप्पल मारि चप्पल
सोझ करबौ सरधुए !

व्यास कालिदास सूरदास तुलसीदास
सभ छलाह सोझिया
तोरा सँ ठकल गेलाह
मुखचन्द्र चन्द्रवदन जन्म भरि रटैत गेलाह
घसल रेकर्ड जकाँ उपमा दोहरबैत गेलाह ।
परन्तु आबक नऽव कवि
सजग सतर्क छथि ।
राकेट उड़बैत छथि ।

नव-नव प्रतीक भेल
आब हमर उपमा
बल्ब सँ देल जायत
टुमाटो सँ देल जायत
रेडियो सँ देल जायत
ट्रान्जिस्टर सँ देल जायत ।

और तोरा पर चलौतह
फावड़ा ओ ट्रैक्टर ।
पेट तोहर फाड़ि देतौह
चानि तोहर चूड़ि देतौह
ऊपर सँ बाओग करतौह
सामा ओ कोदो
ऊपर सँ रोपि देतौह
अल्हुआ ओ सुथनी
सुथनी सन मुँह नेने रहह विधुआएल ।

आब कोढ़िये मुइलह
गेलौह तोहर युग
लय लिहऽ चौठिचन्द्रक भुसबा आ केरा !

[१९७३]

मिथिला-वन्दना

ई कपिल गौतमक पुण्यभूमि
अति पावन तीर्थस्थान हमर
मंडन उदयन वाचस्पति ओ
गंगेश सदृश विद्वान हमर
पूजा निष्ठा ओ कर्मकांड
मीमांसा न्यायक ज्ञान हमर
सात्विक विचार कोमल भाषा
आचार सौम्य थिक मान हमर
राधा-कृष्णक शिव-पार्वतीक
भक्तिक अपूर्व आख्यान हमर
मुग्धा कन्या केर दिव्य रूप
दुर्गा केर मूर्त्ति समान हमर
ओ जनक नन्दिनी सीता सन
बेटी अनुपम वरदान हमर
औ अभ्यागत ! आऊ देखू
सत्कार स्नेह सम्मान हमर
हरियर पुरैनि पर अति पवित्र
चूड़ा-दहीक जलपान हमर
ओ मधुर अमौट मखान हमर
ओ सीकी केर सुकुमार कला
टकुरी केर शिल्प-वितान हमर
अरिपन पीढ़ी ओ भित्ति-चित्रमे
यंत्रक गूढ़ विधान हमर
रस अलंकार ; वाणी-विनोद

ओ सूक्ष्म व्यंग्य परिहास हमर
शास्त्रार्थक अद्‌भुत चमत्कार
प्रतिभा केर ओ अवदान हमर
कोमल पदावली सरस मधुर
कवि कोकिल केर कलगान हमर
शतशत सहस्त्र कण्ठें निःसृत
जय जय भैरवि केर तान हमर

[१-११-१९७३]

कवि हे ! आब कोदारि धरू

कवि हे ! आब कोदारि धरू ।
कनक-कलशकेँ बिसरि जाउ आब,
हरक मूठ पकड़ू ।
नायिकाक नख-शिख वर्णन तजि
बोरिंग कैल करू ।
अलंकार ओ चमत्कार तजि
गोबर-खाद भरू ।
शकरकन्द उपजाउ प्रेम सौँ
छन्द आब बिसरू ।
अधरामृत केँ बिसरि आब
नल-कूपक आस धरू।
सद्य:स्नाता त्यागि माटि मे
कदबा कैल करू ।
फूल उखाड़ि साग-सलगम
भाँटा सँ प्रेम करू ।
बिसरि गुलाब, कमल ओ चम्पा
मड़ुआ खाओंग करू ।
शंकर केर पूजा समान बुझि
शंकर मकइ करू ।
मृगनयनी-गान त्यागि
मुर्गा सौँ प्रेम करू ।
गर्भाधान निरोध करू ओ
गरमाधान करू ।

[नवम्बर १९७३]

महगी

ई महगी मुँह बाने अछि भीषण घरियार जकाँ
वस्तुक दाम बढ़ल जाइछ सुरसा केर धाड़ जकाँ
आर्तनाद जनता करैत अछि गजक गोहार जकाँ
चक्र सुदर्शन भगवानक छनि पड़ल बेकार जकाँ
चोर-चुहार चलै अछि निर्भय ढीठ हुराड़ जकाँ
भ्रष्टाचारी कचरि रहल अछि छुट्टा साँढ़ जकाँ
लीडर बहुते घूमि रहल छथि रङल सियार जकाँ
डीलरकेँ छनि धोधि भेल पोखरिक मोहार जकाँ
अमला प्यादा चपरासी छथि कठकोंकाड़ि जकाँ
बिन दक्षिणा बान्ह रहथि खिसिऐल बिलाड़ जकाँ
हाड़ कँपा दै अछि ई, महगी पूसक जाड़ जकाँ
जीवन-रस अछि सुखा रहल सूखल कुसियार जकाँ
अछि जनता कुहरैत सितारक टूटल तार जकाँ
अफसर गाबथि गीत प्रचारक राग मलार जकाँ
अछि परिवारक भार उठायब पैघ पहाड़ जकाँ
ताहू पर टैक्सक चाबुक सौँ टुटैछ डाँड़ जकाँ
जीवन ढोइत अछि जनता हकमैत कहार जकाँ
हाकिम केँ सभ किछु भेटैत छन्हि सासुरक भार जकाँ
मध्यवर्ग अछि उड़ल जाइत उधिआइत चार जकाँ
सुखक कल्पना बिखरि रहल छिड़िआयल हार जकाँ
चिन्ता लोकक उमड़ि रहल कोशी केर धार जकाँ
जनता बिलझल कुहरि रहल अछि भुखल बिमार जकाँ
अछि ढहैत प्राचीन व्यवस्था भथल इनार जकाँ
आदर्शक धसना खसैछ बालुक कगार जकाँ
जनता केर रस पीबि-पीबि अंडी भेल ताड़ जकाँ
गरचुन्नी सभ मोटा गेल अछि रोहु-बोआर जकाँ
देशक नाव भसल जाइत अछि बिनु पतवार जकाँ
पार लगाऊ हे देवी दुर्गा अवतार जकाँ

['मिथिला मिहिर'–१०-१-१९७४]

नव पराती

मानिनि ! आब उचित नहि मान ।
एखनुक रंग कहल नहि जाइछ
भेल कंठगत प्रान ।
अन्नक दाम अकाश ठेकल अछि,
रुपये सेर न धान ।
चाउर-गहुम भेल हीरा-मोती
मकई मणिक समान ।
मिसरिक मोल बिकाइछ मड़ुआ,
भेल जनेर महान ।
अपनाकेँ मेवामे गनि कऽ
अल्हुओ करय गुमान ।
माड़ुर माछक स्वाद बिसरि गेल
बिसरल मधुर मखान ।
बूट-बदामक दाम ने पूछू
सातु भेल पकवान ।
राधा सभ आधा रहि गेली
भेला कृष्ण झमान ।
बाँसे नहि तँ उठत कथीपर
आब बाँसुरिक तान ?
की खाकऽ आबक कवि करता
कनक कलश केर गान ?
कतबो कामिनि स्नान करथु
नहि हनइत छनि पंचबान ।
एहि महगीमे चलत आइ नहि
ओ कटाक्ष केर बान ।
आबहु ज्ञान करू हे मानिनि !
छाड़ि दियऽ अभिमान ।

['मिथिला मिहिर' ३-३-१९७४]

चालिस आ चौहत्तरि

चालिस इसवी धरि देखल सतयुगक समय औ भैया
आब स्वप्नवत अछि लगैत ओ गेलै कतऽ समैया ?
आँखिक देखल अछि जे तहिया की छल एक रुपैया
पूड़ी आर जिलेबी दै छल पूरे एक अढ़ैया
पूरे एक अढ़ैया भैया ! लेने छी अंगूरो
मेवा, मिश्री, गरी, छोहारा, आर खजूरो
मुदा आइ ई देखि रहल छी, की भऽ गेल समैया
मेवा मिश्रीसँ दुर्लभ अछि मड़ुआ आर मकैया
एक रुपैयामे भेटैत छल चाउर तीन पसेरी
राहड़ि मूङ गहुम बूटकेर लागि जाइ छल ढेरी
तहाँ आब ठोङामे दै अछि डेढ़ो पाव न भैया
पावो भरि सतुआ नहि भेटय, अढ़ी भेल रुपैया
सोरह सेर दूध किनने छी, आठ सेर कऽ दऽही
टके सेर सुच्चा घृत दै छल, ककरा ई सभ कऽही ?
कड़ू तेल अछि आइ भेल रुपयामे कनमा डेढ़
काल्हुक बेदानासँ बढ़िकऽ आजक अल्हुआ टेढ़
जाहि भाव खोआ भेटैत छल, से नहि भेटय चोकर
आइ जनेरो केर शान तहियाक जीरसँ दोबर
जे दू रुपये जोड़ भेटै छल बढ़ियाँ सूतक धोती
से पचास रुपये नहि भेटय, मोटिया भऽ गेल मोती
की खायत की पहिरत जनता ? जानथि गंगा मैया
चारा बिनु लाचार भेल छथि कोना कऽ बचती गैया ?
कोना कऽ लगतै पार-घाट ई बिनु पतवारक नैया
चौहत्तरिमे एक मात्र रक्षक छथि कृष्ण कन्हैया

[मिथिला मिहिर' २-६-१९७४]

प्रयोगवादी कविता

हे गय तरकारीवाली !
जुलुम करइ छँ किए एतेक तों
लगवइ छँ तों आगि पानि मे
भाँटा कोबी मूर टमाटर
सभक भाव तों दोबर कैलें
तौलइ छँ तों तेना तराजू धऽ कऽ जेना
नुकती पर हीरा रखैत हो ।
ताहू पर तों टाल मारइ छँ
जुलुम करइ छँ गय तरकारीवाली !
बुझलियो बैङनी रंगक छौ तिनपढ़िया
तें की दस आने सेर बेचबैं भाँटा ?
बुझलियो कान मे सोन पहिरने छँ तों
तें की बारह आने सों बेचबैं कोबी ?
बुझलियो दाँत मे छँ लगौने मिरसी
तें की आना मे एक मूर तों देबैं ?
चकमक्की बड़ छउ तें की गरदनि कटबैं
जो गय तरकारी वाली
अकरहर करइ छँ भारी
देखही कागत मे छापल
सभ चीजक दर सरकारी
सरकारो कैं तों जितलैं
जो गय तरकारी वाली !

[१९७४]

स्व० ललितनारायण मिश्रक स्मृति मे

हे अमरकीर्ति ! हे पुण्यधाम
हे वंदनीय ! शत शत प्रणाम
अंकित देशक इतिहास करत
स्वर्णाक्षर मे ई 'ललित' नाम

युग-पुरुष दिव्य अतिशय महान
मिथिलाक पुत्र सिंहक समान
देशक गौरव केर सुप्रतीक
सूर्यक समान देदीप्यमान

गंगा सम स्वच्छ उदार प्रकृति
निर्मल स्वभाव स्नेहक निधान
लोकोपकार रत कएल सदा
जनता जनार्दनक सुकल्याण

हे भारतीक वर पुत्र अमर
मर्मज्ञ गुण ग्राही महान
सहृदयता पूर्वक कएल सदा
लेखक विद्वानक सुसम्मान

मिथिलाक विश्वविद्यालय औ
आयोग मध्य मैथिलीक स्थान
मधुबनी शिल्प सुकुमार कला
भाषा संस्कृति केर नवोत्थान

शैक्षिक सामाजिक प्रतिष्ठान
विस्तीर्ण रेलपथ केर वितान
स्मारक अनेक अछि कीर्तिमान
अपनेक करय रहल यशोगान

हे महाव्रती ! हे महाप्राण !
नित कैल दीन दुखियाक त्राण
देशक खातिर देलहुँ अपने
तन मन धन जीवन केर दान

अपनेक जयन्ती मे होइछ
ई शुभ अकादमी मैथिलीक
अछि बाजि रहल आकाश मध्य
वाणी दरभंगाक मैथिलीक

लो मंगलमय देशक मध्य
ई बाजि रहल शहनाइ आइ
सभ शेष कार्य करताह पूर्ण
लक्ष्मण सन अपनेक छोट भाइ

[२-२-१९७६]

उद्‌गार

आइ माँ मैथिलीक महान पर्व आबि गेल
आइ इतिहास एक नवीन सर्ग पाबि गेल
सांस्कृतिक विकास केर नवीन ज्योति जागि गेल
विद्यापतिक मन्दिर मे स्वर्ण-कलश लागि गेल

चेतनाक मंच पर नवीन शंख ध्वनित भेल
प्रेरणाक बहुमुखी स्रोत सभ उमड़ि गेल
साहित्य नाचि उठल, ललित कला मुदित भेल
प्रतिभा केर आङन मे, कल्पवृक्ष लागि गेल

वृक्ष ई सिंचित रहय, विकसित रहय, हरियर रहय
पल्लवित, पुष्पित, फलित, सुफल रहय, सुन्दर रहय
देश मे विदेश मे सरस्वती हमर रहय
मैथिली अकादमीक कीर्त्ति ई अमर रहय

[१७-५-१९७६]

अन्तिम सत्य

किच्छु नहि बुझैत छिऐ कोन ई तमाशा छइ
सभ किछु तेना लगै छै जेना पानि केर बताशा छइ
पता न नाव कहाँ ई बहैत जाइत छइ
सुझै न ठेक ओहि पार मे कुहासा छइ
मृत्यु की थिकैक ? एकर बाद की होइत छइ
ई रहस्य के जनैछ ? एकर न परिभाषा छइ
स्वर्ग परलोक कहाँ ? ककरो न जानल छइ
पुनर्जन्म हैत इहो मन केर दिलासा छइ
सुख-कण जे भेंटैछ एतऽ सैह सत्य थिकऽ
शाश्वत ब्रह्म मोक्ष आदि, मात्र मृग पिपासा छइ
कहियो भगवान कैं कतहु न केओ छनि देखने
केवल मनुष्यक एक सहारा छइ, आशा छइ
सुख-दुखक भोग नहि जानि किऐक होइत छइ
अपन-अपन कर्म छइ कि अपन-अपन पासा छइ
रंग आइ खेलि लियऽ, रस कने पीबि लियऽ
काल्हि एतय रहबे करब, तकर कोन आशा छइ
हँसि लियऽ, बाजि लियऽ, प्रेम-गीत गाबि लियऽ
जाहि ठाम जैबाक अछि, तहाँ कोनो ने भाषा छइ
काशी प्रयाग जाउ, गंगा-स्नान करय आउ
आखिर त एक दिन बैह कर्मनाशा छइ
पूजा करइ छी, माला गर मे पहिरि लइ छी
तावत पिजाइत ओम्हर काल केर गड़ासा छइ
मिलन छनेक छइ, अनेक छइ बिछोह एतय
किछुए दिन आशा, तकर बाद त निराशा छइ
जिनगी ई चिनगी जकाँ एक दिन मिझा जाएत
मरी त सिनेह बीच, बैह अभिलाषा छइ

[१७-३-१९७७]

मधुर भाषा मैथिली छी

धन्य हे नवनीत कोमल,
मधुर भाषा मैथिली छी ।
जनक गौतम याज्ञवल्क्यक
पुण्य पुष्करिणीक सुन्दर
प्रस्फुटित परिमल प्रपूरित
कमल-कोमल शतदली छी ।
वाग्मती-कमला-बलानक
गंडकी कोशी बया ओ,
सुरसरिक धारक जल सौं
भरलऽहीं गंगाजली छी ।
अमर विद्यापतिक जनमन
रंजिनी पीयूष वाणी
अहाँ कविकोकिलक कूजित
कान्त कोमल काकली छी ।
ऋषि मुनिक वाणी अहाँ छी,
दर्शनक स्रोतस्विनी छी,
भक्ति ओ शृंगार पूरित
मधुच्छन्द पदावली छी ।
भारती सुकुमार अहाँ छी,
सूक्ति केर भंडारऽहीं छी ।
राष्ट्रभाष केर बहिनपा,
देववाणिक लाड़िली छी ।
भारतक शृंगारऽहीं छी,
ओ बिहारक हारऽहीं छी
अहाँ मिथिला केर मधुमय
अमृतमय रसकंदली छी ।
संविधानक सूत्र मे गाँथि रहल
जे भाषाक माला
तकर सौरभ वृद्धि हित
नंदनवनक चम्पाकली छी ।
मधुर भाषा मैथिली छी ॥

[१९७०]

छगुन्ता

कहू बात की ? देखि किछु ने फुरैये
अजगुत देखै छी, छगुन्ता लगैये

जे ढोंग पसारय जनैये से जग मे पुजबैये
बड़का-बड़का पाखंडी सभ भगवान कहबैये
जे सत्य बजै अछि से सभतरि गर्दनिया पबैये
जे नीक लोक से आजुक युग मे बुड़िबक कहबैये

जे माखन लगबय जनैये, से घृत पिबैये
दुनम्बरी सभ हलुआ केर ढेकार करैये
सिद्धान्त पर रहैये जे से निर्गुण गबैये
जे धर्म पर चलैये से उपास पड़ैये

चोरी-डकैत सभ मठोमाठ भऽ मुखिया बनैये
कालाबाजारक मालिक सभ सँ उज्जर पहिरैये
जे जेहन चारि सँ बीस, तेहन चौमहला उठबैये
इमानदार सभ बैसल-बैसल झाम गुड़ैये

जे शकुनि थीक से छल-बल सँ सभ ठाम जीतैये
युधिष्ठिर सन सुध लोक सभ सभतरि हारैये
चोरक मुँह छइ चान जकाँ ओ चानी लुटैये
जे पथचारी अछि से अप्पन कपार पिटैये

पंजा-छक्का जे जनैये से सत्ता पबैये
चिचिआइत अछि जे जोर सँ से भत्ता पबैये
जे चालू अछि से मालमत्ता अलबत्ता पबैये
जे सोझिया से कलकत्तो जा नहि लत्ता पबैये

साँढ़ खेत मे पैसल सभटा बीया चरैये
जोतयवला अन्न विना हकन्न कनैये

[२४-९-१९७७]

विद्यापति पर्व महान हमर

विद्यापति पर्व महान हमर
ई पावनि यज्ञ समान हमर
ई थिक पावनि पितरक तर्पण
पुष्पाञ्जलि अर्घ्य प्रदान हमर

ई संस्कृति केर अवदान हमर
ई चेतनाक अभियान हमर
जागरण करा देइ छथि सभकेँ
ई बड़का देवोत्थान हमर

ई पावनि छथि मन पारि दैत
कवि कोकिल केर गान हमर
अनुपम महेशवाणी वन्दन
जय जय भैरवि केर तान हमर

ई पावनि छथि मन पारि दैत
मैथिली मधुर भाषा मनहर
जन मन केँ मुग्ध करथि जिनकर
कोमल रसमय माधुर्यक स्वर

ई पावनि छथि मन पारि दैत
बड़का-बड़का विद्वान हमर
मंडन वाचस्पति उदयन सन
जे छथि देशक अभिमान हमर

ई पावनि छथि मन पारि दैत
नवका चूड़ा हरियर -हरियर
श्यामा पूजाक दही-चूड़ा
मिथिला केर मधुन मखान हमर

ई पावनि छथि संदेश दैत
सौहार्द स्नेह-भावक घर घर
ई विश्व-शांति केर सामगान
ई पुण्य चेतना रहथि अमर
विद्यापति पर्व महान हमर

['स्मारिका'-चेतना समिति-१९७७]

आठ संकल्प

संकल्प लोकमे आएल छी,
हम आइ आठ संकल्प करब,
एहि मे कोनो ने विकल्प करब
हम क्रियो तकर अनुकल्प करब,

[१]

हम पूर्वज केर सम्मान करब
विद्वानक हम यशगान करब,
देशक हम पुनरुत्थान करब
हम ई प्रथम संकल्प करब ।

[२]

हम आपस मे नहि फुटल रहब
हम एक संग मिलि जुटल रहब
साहित्यक मंदिर मे सभ मिलि
हम अक्षत फूल चढ़ैल करब
हम ई दोसर संकल्प करब ।

[३]

हम अपना मे सर्वत्र सदा
अपने भाषा मे गप्प करब
हम कतहु मैथिली बजबा मे
कहियो नहि लज्जा बोध करब
हम ई तेसर संकल्प करब ।

[४]

नेना कें आब सिखाएब नहि
मम्मी डैडी मामा पापा
अपने भाषा मे नेना कें

प्रारंभिक शिक्षा देल करब
हम ई चारिम संकल्प करब ।

[५]

हम मैथिलीक पुस्तक कीनब
लेखकक हाथ सौं नहि छीनब,
अपनो भाषा केर पत्र पढ़ब
ओकरो हम ग्राहक बनल करब,
हम ई पाँचम संकल्प करब ।

[६]

नव नव साहित्यक सर्जन कय
हम प्रतिभा केर उपयोग करब
दोसरा कैं ध्वंस करक बदला
हम रचनात्मक निर्माण करब
हम ई छठम संकल्प करब

[७]

हम लड़ब अपन अधिकार हेतु
नहि कोनो अत्याचार सहब
हम संविधान मे मैथिलीक
न्यायोचित स्थान देयाय रहब
हम ई सातम संकल्प करब

[८]

हमसभ बालक कैं नहि बेचब
बिनु दान लेने वरदान करब,
भ्रष्टाचारक उन्मूलन कय
हम सामाजिक कल्याण करब
हम ई आठम संकल्प करब ।

[२३-११-१९७७]

घूटर काका

घूटर काका निश्चय खैता आइ धतूरक फऽड़ ।
तार छैन्ह आएल जे हुनक सुपुत्र
कय लेलथिन्ह चुपचापें कतहु विवाह
छोट मूल मे छोट वंश मे जाय
साधारण कुल मे छोटवभनाक गाम
ताहू पर देलकैन्ह नहि कैंचा एक
अधनेठबा सरिपहुँ लेलकैन्ह परतारि
घूटर काका निश्चय खैता आइ धतूरक फऽड़
अंगरेजिया छौंड़ी केर चुनकी देखि
दुलि गेलथिन्ह लगले हुनकर कंटीर
मूल गोत्र कुल केर विचार सभ त्यागि
वंशक मर्यादा कैं ताखा राखि
दय देलथिन्ह ओहि छौंड़ी कैं सिंदूर
जे कैने अछि पहिने सँ बी. एल.
घूटर काका बजला आँखि चियारि–
की विवाह सँ पहिने अछि बी. एल. ?
तवखन ओकरा जातिक कोन ठेकान ?
वैतरणी मे भसिऐला कंटीर ।
एतबा दिन सँ छल जे कछुआ पाँजि
सोझे ओ धँसि कय चलि गेल पताल ।
फुच्चुन बाबू बुझबय लगलथीन्ह–
कनियाँ कय गेली अछि बी. एल. पास
तकर अर्थ जे होइती आब ओकील
चऽहस करती कचहऽरी मे जाय
हाकिम सभकेर आगाँ भऽकऽ ठाढ़ि
और मोवक्किल सभ सँ लेती फीस ।
घूटर काका बजला माथ ठोकैत–
आब येह टा बाँकी छल देखबाक

चऽहस करती हमर योग्य पुतोहु
छमकि छमकि कऽ सभक बीचमे जाय
खन चूड़ी खन झुनक उठतैन्ह बाजि
हाकिम सभकेँ पड़तैन्ह खूब पसिन्द
जज साहेब केर संगे पिउती चाह
दोसरा तरकक जे रहताह ओकील
ठोकय लगता अप्पन अपन कपार ।
हाँजक हाँज पहुँचथिन्ह हुनका लोक
बड़का बड़का बाबू ओ बबुआन
बथयाक छीतन बाबू , औथीन्ह
नेहरा सौं मूसन चौधरिक समाङ
कंसी सिमरी सँ गुल्टेनी राय
और पचाढ़ी केर कमंडलु दास
दड़िभंगा सौं श्री दनडनिया सेठ
और मुजफ्फरपुर सँ बुनकी साहु
गजिया थैली लय लय कऽ औताह
डेग ओही ठाम देताह खसाय
ओ करती हँसि हँसि कय सभ सौं गप्प
दिन दिन अपन बढ़ौने जैती फीस ।
जौं कहियो रोकऽ चाहथिन्ह कंटीर
कसि कऽ अँगरेजी मे देतैन्ह डाँट ।
कंटीरो छथि तेहने बूड़ि अथाह
जबर्दस्त कैं लेलन्हि माथ चढ़ाय
एक दिन ओ माँगी धऽ लेतैन्ह टीक
नाच नचा देतैन्ह पकड़ि कऽ कान ।
कुलबोरन कय देलन्हि कुल केर नाश
एहि घऽरक जेहने मर्यादा छऽल
तेहने लागल मुँह मे कारिख चून
पुरुखा लोकनिक जे बाँचल छल पाग
से सभटा भऽ गेल गोबनौरक नूड़

दय गोनौर पर कोटिर करता घूड़ ।
धाड़ खसैने बैसल कछुआ पाँजि
नढ़ैया सन सुटकल अछि नरहा पाँजि
बी. एल. कनियाँ तेहन मारलन्हि डाँग
टूटि गेल बजुआड़े वंशक टाँग
जखन धर्म केर डाँड़े गेलैन्ह टूटि
घूटर काका जिबिए कऽ की करताह ?
घूटर काका निश्चय खेता आइ धतूरक फऽड़

[१९७८]

वनगाम-महिषी स्मृति

गेल छलहुँ एहि बेर सहरसा सँ वनगाम
लक्ष्मीनाथ गोसाइक देखल पवित्र स्थान
पुष्करिणी मन्दिर और आश्रम तपोवन तुल्य
वट केर विशाल वृक्ष बोधि वृक्षक समान
तंत्रक प्रभाव सँ अलौकिक सिद्धि जे छलैन्ह
सुनलहुँ औत्सुक्य भक्त लोकक समुदाय सँ

महिषी मध्य जा कऽ महिष्मतीक दर्शन कैल
उग्रतारा मन्दिर मे जा कऽ प्रणाम कैल
भक्ति सँ विभोर भेल तहाँ एक मैथिलानी
भगवतीक गीत कोमल कण्ठ सँ गबैत छली
'हे हे जग जननी जगदम्बा दुःख दूर करू'
लागल जेना कान मे अमृत घोरि देने होथि
बैसि गेलहुँ मंत्र-मुग्ध सामने बरामदा पर
ओतए सँ उठवा केर मन नहि करैत छल

देखल ओ स्थान जहाँ मंडनक डीह छलैन्ह
देखल ओ इनार जहाँ कहियो पनिभरनी
शंकर कैं कहने छलीन्हि—चलि जाउ सोझे ओतय
जहाँ दरवाजा पर सुग्गा बजैत छैक—
'स्वतः प्रमाणं' आ 'परतः प्रमाणं' शब्द
येह बूझू जे मंडन मिश्रक दरवाजा छैन्ह !

धन्य ओ गाम छल ! धन्य ओ घर छल !
धन्य ओ इनार छल, धन्य ओ पनिभरनी
धन्य छला मंडन मिश्र, धन्य हुनक भारती
धन्य ओ मिथिला छली
धन्य ओ जीवन छल ।
सात्विक पवित्र जीवन ।

वैभवक मोह नहि।
धर्म केर चिन्तन सदा।
देह दिस ध्यान नहि।
ऋषि तुल्य ब्राह्मण छला।
नदी मे प्रातः स्नान।
संध्या-वन्दन ओ तर्पण।
पूजा-पाठ वेद-ध्वनि।
आह्निक सदाचार।
स्वाध्याय ओ अध्यापन।
अतिथिक योग्य सत्कार।
अरिकोंच तिलकोर
साग पटुआक झोर
दूध औंटल तेहोंट
मधुर आमक अमोट
चूड़ा-दही जलपान
मधुर मखान पान
कोशी कमला बलान
अंचल मे घर-दलान
बना कऽ रहैत छलाह।
अगणित पंडित प्रधान
करैं छलाह ज्ञान-दान।
धन्य ओ गृहस्थ छलाह
कर्मनिष्ठ धर्मप्राण।

आब ओहि माटि पर
बनतै कोनो कारखाना
घर्र घर्र बाजत मशीन
भट्ठी जरैत रहत
लोहा गलैत रहत
चिमनी सँ धुआँ उठतै
वैह होयतैक अग्निहोत्र

फैक्ट्रीक भोंपू बजतइ
वैह शंख-नाद हैत
और ओ इनार आब
भसि जाएत भथि जाएत
ठाम-ठाम बड़का नल-कूप गाड़ल जाएत
उबहनि ओ घैलवाली पनिभरनी नहि भेटती।

मंडनक सन्तान
करै जैता मुर्गी-पालन
अंडा टोस्ट ओमलेट नित्य
करताह ब्रेकफास्ट
सुग्गा आब बाजत नहि, कुक्कुटक ध्वनि हैत
'स्वतः प्रमाणं' केर स्थान मे कुकड़ू कू
शंखक स्थान बाजत आब भोंपू कारखाना केर
पागवला कनै छथि–ई संस्कृतिक विनाश होइऐ
टोपवला कहै छथि–ई समाजक विकास थीक।

अबकी बेर ओहो देखैत ऐलहुँ घर-द्वार
जाहिमे रहैत छलाह शारदाक वरद-पुत्र
भावना-प्रवीण सुकुमार-हृदय राजकमल
देखल ओहो जाफरीक टाट जहाँ बैसि कऽ ओ
सर्जन करैं छलाह काव्य ओ उपन्यास
मन मे भेल, रहितैन्ह एहिठाम स्मारक हुनक
नान्हियो टा प्रस्तर-मूर्ति
फूल हम चढ़ा दितिऐन्ह
किन्तु ओहिठाम कादो मात्र भरि ठेहुन छल
कमल लुप्त भेलाह, कीचड़ टा शेष छल
हृदयक कोनो कोन मे, कनेक ठेस लागि गेल
लागल जेना कोनो वस्तु ओतय हेरा आयल होइ।

['मिथिला मिहिर'–१-७-१९७८]

मैथिली-वन्दना

जय जय मैथिली जय मिथिला केर
अनुपम मधुमय भाषा ।
सुन्दर सरस सुस्कृत सद्हृदय
सभक पुरथि अभिलाषा ॥
कोटि-कोटि कमनीय कंठ सौं
निःसृत कोमल वाणी ।
मधुर अमृत सम काव्यकला सौं
जन रंजनि कल्याणी ॥
कवि कोकिल केर कलित काकली
रस पदावलि धारा ।
करथि अलंकृत झंकृत संतत
भारतीक उरहारा ॥
अनुसूचित भाषाक पंक्तिमे
शीघ्र होथि आसीना ।
शोभित होथु जेना माला मे
नव बहुमूल्य नगीना ॥

[१७-८-१९९८]

हे मातृभूमि केर माटी

हे मातृभूमि केर माटी
अञ्चल पातेपुर खाँटी
पश्चिम मे हाजीपुर अछि
महुआ मोतीपुर काँटी
पूभर मंसत्ता दरभंगा
सौराठ मधुबनी राँटी
मिथिला-वैशालीक संस्कृति
संगम मे अवगाहन कय
मैथिली बज्जिका भाषा
दुनूक मधुर रस बाँटी
मतभेद कतहु यदि होबय
सप्रेम करी समझौता
नहि व्यर्थ करी दुगोला
राखी हम एक्के पाटी
वज्जिका मैथिली दुनू
हिन्दीक सँनार भरै छथि
एक छथि पुआ केर थारी
दोसर सकरगंडीक बाटी
एक दिस सीता महरानी
एक दिस सुन्दर अंबपाली
दुनूक अपन गरिमा छनि
नहि बीच लगाबी टाटी
मैथिली वज्जिका हम्मर
एक माय एक मौसी छथि
दूनू बहिनक आङन मे
हम बन्द करी नहि टाटी

[१७-८-१९९८]

कहू की औ बाबू

[१]

बगातै तेहन छै जे गोष्ठी मे कवियो
गजल दादरा आ कव्वाली गबैये
किछु दिन मे एहो देखब औ बाबू !
जे कविताक संग संग तबला बजैये

[२]

श्रोता पुछलथिन्ह अकविताक कवि सँ
कविताक अर्थ हमरा किछु नहि लगैये
बजला अकवि—अर्थ लागौ न लागौ
हमरा त यश अर्थ दुनू भेटैये

[३]

बजलाह बाबा—कहू की औ बाबू !
जमाना देखै छी त किछु नहि फुरैये
जहाँ दूध दू धैल दै छल टका मे
तहाँ आब नहि एक गिलासो भरैये

[४]

पंडितजी बजला—कहू की कुशल हम
साबिक वला बात सभ उठि गेलैये
तेहन कागजी प्लेट चललैक अछि जे
भोजो मे भरि पेट क्यो नहि खोबैये

[५]

पुजेरीजी बजला—ई युग वर्णसंकर
कोओ देवता मे ने निष्ठा रखैये
शंकर महादेव कें छोड़ि देलकैन्ह
शंकर मकैयाक पूजा करैये

[६]

पोसा दोकाने सँ चिकरैत ऐलाह—
ई अंधेर नगरीक देखू तमाशा
चिनियो सँ बेसी महग छै सतुआ
ई मोदिआइन मोटकी अतत्तह करैये

[७]

मामा कहलथिन्ह भागिनकें— बच्चा !
कतहु लोक मायो कें मामी कहैये ?
अहाँक माय हम्मर बहिन छथि औ बाउ
जे मम्मी सिखौलक से धुर्त्तइ करैये

[८]

बजला प्रोफेसर— कोनो एकलव्यक
औंठा कटलथिन्ह गुरु द्रोण कहियो
ओकर आब प्रतिशोध लेबाक खातिर
कतेक शिष्य गुरुजन कें तकने फिरैये

[९]

ऑफिस मे गेली जखन अफसरानी
स्वामी कें डँटलन्हि जे छलथिन्ह किरानी—

शटप ! एहि ठाँ छी अहाँ हमरे अंडर
डिसीप्लीन एतबो न बूझय अबैये

[१०]

पुछलिऐन्ह–बहिन जी ! कहाँ सँ छी आएल ?
उत्तर देलन्हि–होश मे आबि बाजू
हमर छींट ब्लाउज टा अहाँ देखै छी
आ लड़का जे छी हम से बुझि नहि पड़ैये

[११]

सड़क पर पड़ल छैक कूड़ाक ढेरी
कतेक ठाम नाको दबाबए पड़ैये
सुनै छी मुदा जे करोड़ो टकासँ
पटना मे फाइव स्टार होटल बनैये

[१२]

पुछलथिन्ह क्यो ऊँट सँ–औऽ अहाँ केर
एना टेढ़ गर्दनि किऐ ई लगैये ?
बिगड़ि ऊँट बाजल–अहूँ छी अथाहे
हमर कोन अंग सोझ अहाँ कैं सुझैये ?

[११-११-१९७८]

कश्मीर हमर थीक

कश्मीर हमर दिव्य भाल, माथ परक टीक ।
गुलमर्ग श्रीनगर ओ अमरनाथ हमर थीक ।
हम सत्य प्रेम और अहिंसाक भक्त छी ।
लेकिन प्रताप और शिवाजीक रक्त छी ।
रणकाल महावीरी गदा हाथ रहैये
अरिमर्दिनीक खड्ग सदा संग चलैये
गीताक कुरुक्षेत्र आइ फेर जगैये
पृथ्वीक स्वर्ग ई हमर के छीनि सकैये ?
अमूल्य हिम किरीट ई के कीनि सकैये ?
कश्मीर ओहि मुकुट मध्यक हीर हमर थीक ।
औ बाउ, आउ नहि अहाँ भस्मासुर जकाँ
रावण मरीच खर जकाँ, सुर ओ त्रिपुर जकाँ
हेऔ सुकर्ण कुंभकर्णक परि जुनि करू
महिषासुरक ओ रक्तबीजक बाट जुनि धरू ।
देवासुर संग्राम केर इतिहास कहैये
ई पुण्यभूमि आन केओ लय न सकैये
राक्षस पिशाच खातिर ई तूणीर हमर थीक ।
हम एक भारतीय छी, हिंदू वा मुसलमान
ईसाई सिक्ख पारसी अरु बौद्ध सभ समान
हम संग मिलि बढ़ैत छी, कहबैत 'जय-जवान'
हम संग मिलि बढ़ैत छी, कहबैत 'जय किसान'
हमर देश हिंदुस्तान सुविशाल ओ महान
ओहि गौरवक प्रतीक, नगराज मूर्तिमान
सर्वोच्च ओ हिमालय से प्राचीर हमर थीक ।
कश्मीर केर साल और चीर हमर थीक ।
ओ सिन्धु और पंचनदीक नीर हमर थीक ।
कल कल जल प्रपात केर क्षीर हमर थीक ।

खेलमर्ग सँ उठैत ओ समीर हमर थीक ।
पहलवान पहलगाम केर रणधीर हमर थीक ।
बन्दबाक हेतु चोर कैं जंजीर हमर थीक ।
सावर विमान बेधयबला तीर हमर थीक ।
पेटन केर पेट काड़य तेहन वीर हमर थीक ।
कश्मीर हमर माटि, हमर पानि, हमर अंग ।
रहल, रहैछ ओ रहत, सदिकाल हमर संग ।
बढ़ता जे करैक हेतु, देश अंग-भंग ।
बुझलाह केहन होइछै, केसर केर लाल रंग ।
ओ लाल रंग फाग केर अबीर हमर थीक ।
रणचंडिका झंकार ओ मंजीर हमर थीक ।
ओ छंब पुंज गिलगिट हाजीपीर हमर थीक ।
ओ रक्त भेल बर्फ गोसाँउनिक सीर हमर थीक।
चीनीक पाक कैल नवेदक खीर हमर थीक ।

[१९७८]

मंगल प्रभात

उठि रहल देश मे नवका बसात
अछि आबि रहल नूतन प्रभात
नहि रहतइ केओ गरीब आब
भरि पेट खैतइ सभ दालि-भात

बेकार आब बैसतइ ने केओ
सभ किछु अवश्य करतैक काज
स्त्रीगण पुरुषक समकक्ष बनत
समतामूलक होएत समाज

नहि रहत वर्ण ओ वर्ग भेद
ककरो मन मे रहतइ न खेद
लखपतियो बुझता श्रमक स्वेद
धोधिगरो कैं घटतैन्ह मेद

केओ रहत आब नहि भूमिहीन
रहतैक ने परती खेत आब
खाद्यान्नक नहि रहतै अभाव
बनिहरो आब खैतइ पोलाव

हैतैक सुलभ सभ अन्न-वस्त्र
चढ़तैक ने कथू केर आब दाम
घृत दूध दही भेटतैक शुद्ध
नहि मिश्रण केर रहतैक नाम

अनुशासन मर्यादा बढ़तइ
केओ करतइ नहि चोरिक बजार
मँगतइ नहि केओ दहेज आब
दस बीस तीस चालिस हजार

भ्रष्टाचारक नहि नाम रहत
नहि चलत घूस केर कारबार
तस्कर-व्यापारक लोप हैत
सभ बन्द हैत काला बजार

केओ करत आब नहि मद्यपान
भट्ठीक न हैत भेड़ियाधसान
नहि केओ नशा मे बुत्त हैत
सभकेँ रहतैक विवेक ज्ञान

बुध जन करता संतति निरोध
करता एहि मे नहि केओ विरोध
संक्षिप्त आब परिवार हैत
सम्पन्न सुखी घरबार हैत

सभ रूढ़ि अन्धविश्वास ढहत
विज्ञान केर होएत प्रचार
उद्योग कृषी वाणिज्य कला
सभ क्षेत्र मध्य होएत सुधार

वसुधा हैती सिंचित सभतरि
बनि जैत सड़क सभ नव ठाम
बिजलीक हैत सभतरि प्रसार
जगमग करतइ प्रत्येक गाम

जनताक दुःख सभ दूर हैत
धनधान्य सकल भरपूर हैत
फल फूल अन्न लागत पथार
आओत वसन्त ऋतु केर बहार

पंडित कुम्हार कवि कर्मकार
शिक्षक कहार ब्राह्मण चमार

सभ भाइ खुशी सौं एक संग
गौता फगुआ डारी धमार

पुनि सत्य अहिंसा अनुशासन
सौं बढ़त भारतक कीर्त्तिमान
पुनि हैत देश केर यशोगान
जय जय जवान, जय जय किसान

अछि आबि रहल ई हरित क्रान्ति
अछि आबि रहल ई क्रान्ति श्वेत
बहतैक दूध केर धार आब
हरियर हरियर हैतैक खेत

उठि रहल उषा केर नव बसात
हँसतैक शहर हँसतइ देहात
सभ लोकक कल्याण हैत
अछि आबि रहल मंगल प्रभात

[१९७८]

बुचकुन बाबाक स्वप्न

ओहि दिन गामक बहुत लोक जमा भेल छलाह,
चौखरी जमल छल लालबाबू केर दलान पर ।
पूछि बैसला बुचकुन बाबा नोसि लैत हमरा सौं
औ बाबू ! बीससूत्री कार्यक्रम थिकैक की ?
एहि सँ हमरा सभक की की उपकार हैत,
हम देहाती लोक फरिछा कऽ बुझा दियऽ ।

हम कहलैन्ह–बाबा ! जनताक कल्याण हेतु
नाना प्रकारक योजना सभ बनलैक अछि
जाहि सँ गरीबी हटत, देश सम्पन्न हैत
आर्थिक विकास हैत, सभतरि सभ क्षेत्र
रौदी और दाही कैं रोकबाक प्रयत्न हैत
नलकूप द्वारा सभ खेत मे सिंचाई हैत।
अन्न फल फूल सँ समस्त भूमि हरियर हैत
सभ लोकक मुँह पर आब हरियरी आबि जाएत।
केओ नहि रहत भूमिहीन, गृहहीन केओ नहि रहत,
बैसल बेकार आब केओ नहि कतहु रहत ।
गाम-गाम बिजली जाएत, नव-नव कारखाना खुजत
उद्यम पसरि जाएत, सभतरि देहात मे
घर-घर मशीन करत नाना प्रकार केर
आब बाबा ! गाम-घरक नक्शे बदलि जाएत।
महगी आब दूर हैत, सुलभ अन्न-वस्त्र हैत
चाउर गहूम चीनी भेटत उचित दाम पर।
करता जे मिलावट से जैता आब जेल मध्य
लेता जे घूस आब, हथकड़ी पहिरताह ।
अनुशासन भंग जे करता से दण्डित हेता
मङता जे दहेज आब कारागार जैताह।
पुरुष और स्त्रीगण कें समान अधिकार रहत
आब केओ ककरो दबा कऽ रखथीन्ह नहि

शोषण केर अन्त हैत, सभ केर पोषण हैत
जनता केर गरीबी आब बाबा ! शीघ्र दूर हैत ।

बाबा बजलाह–वाह ! मन गद्गद् भेल
नीक नीक सुन्दर बात कहने छी प्रेम सौं
किन्तु एक बात ईहो हमरा बुझा कऽ कहू
परिवारक नियोजन केर बाबू ! की प्रयोजन छैक?

हम कहलैन्ह–बाबा देखि लियऽ अपने घर
लल्लू छथि, मुन्ना छथि, पप्पू छथि, टुनटुन छथि
बच्ची छथि, बुच्ची छथि, मुन्नी छथि, टुन्नी छथि
एहि तरहें साल साल संख्या वृद्धि भेल जाय
हैत नियोजन नहि त भोजन कहाँ सँ देबइ ?

बाबा बजलाह–बात ई त कहै छी ठीक
बच्चा नहि बेसी होय, यैह बुधियारी थीक ।

हम कहलैन्ह–बाबा ! एखन यैह धर्म थिकै
सभ मिलि कऽ जोती खेत उत्पादन बढ़ावी खूब
मंत्रीगण अपने हाथें हर जोति रहल छथि
अफसर और नेता सभ जनता केर सेवक छथि
मडुआक रोटो नहि जिनका जुड़ैत छलैन्ह
झोटन खवास सेहो पुरी आब खयताह ।
देखू बाबा ! नवयुगक शंख आब बाजि रहल
स्वर्णिम उषाक लाली देखबा मे अबैत अछि ।

बाबा बजलाह–बौआ ! युग-युग तों जिबैत रहह
केहन शक्कर सन मीठ मीठ बात बजलाह अछि।
आब मन होइछ जे किछु दिन हम और जीबी
गाँधीजीक सपना कें पूर्ण होइत देखि ली ।
दूध दही घृतक धार देश मे बहैत देखी
रामराज्यक एक झलक लइए कऽ बिदा होइ ।

[१९७८]

जय विद्यापति

जग मे जिनकर अमर कृति साहित्यक शृंगार
यश निर्मल पसरल जनिक, विदित सकल संसार
विदित सकल संसार, काव्य माधुर्य मनोहर
द्यावा पृथ्वी मे बहैत अछि रस केर निर्झर
परम भक्ति केर सुधा-स्रोत छथि जनिका लग मे
तिनकर कीर्त्ति रहैन्ह सर्वदा जगमग जग मे

['स्मारिका'-चेतना समिति १९७१]

शुभाशंसा

जे 'कीचकवध' - करा
भीम केर ओज देखओलन्हि ।
जे एकांकीमे 'उपनयनक
भोज' चखओलन्हि ॥

जे कएलन्हि साहित्य-साधना
घोर तपस्या ।
कृष्णचरित' केर गाथा
जनिकर छैन्हि 'नमस्या' ॥

चिर जीवथु से मित्रवर
तन्त्रनाथ झा जी हमर ।
मैथिलीक इतिहास मे
ओ निश्चय रहता अमर ॥

[तंत्रनाथ झा अभिनन्दन ग्रन्थ-१९८०]

परिचारिका स्तोत्र

प्रथम दर्शन भेला पर

हे महाश्वेता परम सुकुमारि
शुभ्रवसना मुकुट मस्तक धारि
के अहाँ छी नारि ?

तुहिन गिरिकन्या सदृश गौरांगि हे सुकुमारि !
के देलक आकाश सौं एहि लोक मध्य उतारि ?
देवकन्या सदृश पृथ्वीपर चरण नहि दैत
चारि आङुर उठल एँड़ी पर सदैव चलैत
दिव्य सौरभ पारिजातक वायुमे छिरबैत
चलल छी दल बान्हिकऽ पक्षी जकाँ चहकैत
हंसिनी केर पंक्ति आएल हो जेना कि उड़ैत
मान-सर सौं स्नान कय हीरा जकाँ चमकैत
चालि मर्यादित अहाँ केर थीक
दृष्टि थिक शालीनताक प्रतीक
साधना संयम एना अवधारि
कतय सीखल हे तपस्वि कुमारि ?

भर्ती भेला पर

वामा कलाइ मे सुशोभित अछि रिस्टवाच
तापमान देखि अहाँ चार्ट बनबैत छी
स्पंज-बाथ द्वारा तनमन कैँ सुशीतल करी
नित्य अहाँ स्वच्छ परिधान बदलैत छी ।
चादरकैँ सीटि, चारू दिस सँ, पलंग पर
चिक्कन सुकोमल अहाँ सेज बनबैत छी

हाथ मे गिलास लय ठाढ़ि देवकन्या जकाँ
रोगीक मुँहाने अहाँ अमृत चुअबैत छी ।

रोग छुटला पर

कमल कोमल अंगुली सौं स्पर्श कय रोगीक नाड़ी
हरण करइत छी निमिष मे तन-मनक संताप भारी
आबि शय्या लग व्यथित कैं एक छन मुसकाय दै छी
वेदना समवेदना सौं मधुक मध्य डुबाय दै छी ।

[१९६१]

मनचन बाबा

मनचन बाबा आब बूढ़ भेला
कौड़ी-कौड़ी कैं जोड़ि-जोड़ि
पड़ती पाँतर कैं तोड़ि तोड़ि
ढेपा चेपा कैं फोड़ि फोड़ि
कंकरी पाथर कैं तोड़ि तोड़ि

बैशाख मास मे जल पटाय
जेठक लू मे घामे नहाय
नित जोति तामि तरबा खियाय
ओ एक लगौलन्हि कलम बाग

बंबई मालदह कृष्णभोग
सिपिया सुकुल ओ मिरजापुर
केरबा राढ़ी बथुआ केतकी
केरा कटहर जामुन बड़हर

के रक्षा करत एहि सभ कें
के खाएत ई आम जाम
संतान कदाचित जौं न भेल
पड़ती पड़ि जाएत कलम बाग
मनचन बाबा कामरु ढोएलन्हि
रिझि गेलथिन्ह बाबा वैद्यनाथ
वरदान रूप देलथिन्ह प्रसाद

बाबा कैं भेलथिन्ह सात पुत्र
सातो तेजगर लुत्ती समान
कलमी अमौट पर जनिक देह
पोसल झलकै छल कान्तिमान

मनचन बाबा आब बूढ़ भेला
बेटा सभ भेलथिन्ह नौजवान

कारी कारी उगलैन्ह मोछ
बाबा केर उज्जर सन समान

केओ कहथि बापकेँ 'धौंसि गेला'
केओ पुत्र 'जरद्‌गव' देथि नाम
केओ बाजथि की रोपलन्हि बूढ़ा
केरा कटहर बड़हर लताम

हम सभ हत्ता केँ ढाहि ढाहि
सभ गाछ पुरनका काटि खूटि
नव वस्तु लगाएब मन माफिक
अंगूर सेब काजू बदाम

बेटा सभकेर ई बात सूनि
गद् गद् होइ छथि मनचन बाबा
भगवान देथि एहने सपूत
जे बापो केँ देवय पछाड़ि
आशीष दैत हुनका छथीन्ह
तोरा हो एहने वीर पुत्र
जे तोरा एहिना देओ पछाड़ि
ई परम्परा अक्षय रहौ ।

बाबाक मनक अभिलाषा छैन्ह
मऽरी त हमरो एक कात
एही गाछी मे गाड़ि दैत
मुइलो पर हृदय जुड़ाएल रहैत

हमरा हड्डी केर खाद पाबि
हमरा शोणित सँ जऽल पाबि
उपजय नव नव फल फूल पात
फुलवाड़ी हरियर बनल रहय
हर फेंकि चलाबह जे ट्रैक्टर
ई कलम बाग हमरे कहाओत

मनचन बाबा आब बूढ़ भेला

[१९८१]

एहि बेरक फगुआ

कहू आब की जे केहन मन लगैये
गुम भेल ठाढ़ छी किछु ने फुरैये
जहाँ रंग केसर आ कुंकुम उड़ै छल
तहाँ आब पछवाक गर्दा उड़ैये
बादाम पिस्ता गुलाबक छनै छल
तहाँ आब छुच्छे पत्ती घोंरैये
मधुमास केर ओ रस-रंग बिसरल
वसन्तक बहारो मे विरहा गबैये
कोयल बबूरक जंगल मे चुप अछि
आमक टिकोरा पर कौआ बजैये
भरि मास फागुन मे फगुआ गबै छल
डफ आ झालि मजीरा बजै छल
मस्ती मे धम्मार केर ध्वनि उठै छल
तहाँ आब ओ स्वर सुनि नहि पड़ैये
लगैये जेना कान मे क्यो कहैये
ओ आनन्द केर आब कोटा खतम अछि
ई छोड़ू हँसी आ विनोदक फुचुक्का
'भजस्व महाकाल पादारविंदम् ।'

[८-३-१९८२]

परतारू जुनि

[१]

स्वर्ग परलोक केर गप्प कहैत आएल छी
आत्मा अमरत्वक संदेश दैत आएल छी
पुनर्जन्म मोक्ष केर बात बजैत आएल छी
देवी और देवताक नाम जपैत आएल छी
हम छी पुछैत एना किएे करैत आएल छी
हमरा परतारू जुनि हम अशान्त घायल छी

[२]

गीताक उपदेश यदि शोक कें उड़ा दितइ
वेदान्त मलहम जकाँ घावकेँ पुरा दितइ
मंत्र यदि काल सर्प केर फन थुरा दितइ
तंत्र यदि कहियो मुइल लोक कें घुरा दितइ
हमहु तखन कहितहुँ जे शास्त्र केर कायल छी
हमरा परतारू जुनि हम अशान्त घायल छी

[३]

तीर्थव्रत यज्ञ यदि प्राणकेँ पलटि दितइ
कीर्तन भजन जाप मृत्युकेँ उनटि दितइ
दान पुण्य द्वारा यदि मोह केर व्यथा हटितइ
ध्यान योग कैने यदि करेज ई नहि फटितइ
सभटा करितिऐक किन्तु मर्माहत शोकायल छी
हमरा परतारू जुनि हम अशान्त घायल छी

[४]

काल केर निष्ठुर प्रहारें तिलमिलाएल छी ।
विधि केर विधान देखि क्षुब्ध विधुआएल छी ।

लोकक प्रपंच जाल मध्य ओझरायल छी ।
बाण विद्ध पक्षी जकाँ विवश छटपटायल छी ।
शान्ति नहि भेटैछ कतहु घोर भकुआएल छी ।
हमरा परतारू जुनि हम अशान्त घायल छी ।

[५]

कर्म फलक बात सुनि देह जरि जाइत अछि
इश्वरी न्याय देखि शूल गड़ि जाइत अछि
कथा पुराण सुनि और नोर भरि जाइत अछि
मंदिर मे मूर्ति देखि मन पड़ि जाइत अछि
सोन सन बच्चा चलि गेल हम चोटायल छी
हमरा परतारू जुनि हम अशान्त घायल छी

[१९८३]

परिशिष्ट

(अन्यान्य रचनामे आयल कविता)

विषय-सूची

परिशिष्ट :

१

बाबूजी

(स्व० पं० जनार्दन झा 'जनसीदन')

हमर पिता पं० जनार्दन झा 'जनसीदन' [illegible] प्रसिद्ध साहित्यकार छलाह। ओ संस्कृतक पंडित, ब्रजभाषाक कवि, हिंदीक लेखक, बंगलाक अनुवादक एवं मैथिलीक उपन्यासकार छलाह।

हुनक जन्म १८७२ (कार्तिक कृष्ण तृतीया) मे दरभं[illegible] जिलाक बीरसायर गामक प्रतिष्ठित पंडित परिवारमे भेल छलैन। वंशमे [illegible]क-बड़का महामहोपाध्याय (यथा कोइलखवासी पंडित दु[illegible] झा [illegible]) [illegible] छलथिन।

बाबूजीक मातामह पं० चन्द्रमणि कु[illegible] [illegible]ना शिव सिरूप वंशज छलथिन। कुमरजी नामी जमींदार छलाह [illegible] [illegible]भा महारा[illegible] [illegible]गुरु छलथिन और किंवदन्तीक अनुसार ओतय 'चन्द्रावर्त[illegible] हुनके [illegible] छलैन।) ताहि दिनक मर्यादाक अनुसार ओ अपन [illegible] विवा[illegible] [illegible]ीवद्ध कलमानुवर्ती कैलनि।

ज[illegible] [illegible]बूजी अढ़ाय बर्खक रहथि, तैखन हुनक पिता ([illegible] झा) परिवारकें असाध[illegible] [illegible]विदा भ' गेलथिन। तदनन्तर बाबूजी अपन मातृक (कुमर बाजितपुर) मे बसि गेलाह।

[एहि गाममे पहिले-पहिल मैथिल ब्राह्मण कोना अयला[illegible] [illegible]हि सम्बन्धमे एक किंवदन्ती छैक। मूलतः एहि गाममे सहदौलिया [illegible] [illegible]मिहार ब्राह्मण (जमींदार) [illegible] छलाह (जिनकर आदि-पुरुष बाबू बहो[illegible] [illegible]क डीह कर्त्तार टोलमे छलैन। [illegible] बेर कोनो जमींदारक ओतय श्रा[illegible]ीक श्राद्ध भ' रहल छलैन। संयोग[illegible] [illegible]ही समय एक मैथिल पंडित [illegible] [illegible]ग्राम कुमर) ओहि बाटे काशी सँ अपन गाम जा रहल छलाह। [illegible]नवारी [illegible] [illegible]शुद्ध पद्धैत देखि टोकि देलथिन और यजमानक अनुरो[illegible] [illegible]रथी हैं। [illegible] [illegible]क कर्म करा

देलथिन। ओ जमींदार हुनका एही गाममे रहि जेबाक प्रार्थना कैलथिन। ओ सपरिवार आबिकय एतहि बसि गेलाह और कालक्रमे हुनक संतान एहि गाममे पसरि गेलथिन। ओइसवार राजवंशक कुमर लोकनिक नामपर ई गाम मिथिलामे कुमर बाजितपुरक नाम सँ प्रसिद्ध भ' गेल।]‡

बाबूजीकेँ सात टा भाम छलथिन जे ओहि इलाका (सरैसा परगन्ना)मे 'सतभैया' नामसँ प्रसिद्ध छलथिन। बड़का भाम, सिद्धेश्वर दत्त कुमर ('बौआ') क बड्ड रोब छलैन। एक भाम पं० गोपीनाथ कुमर संस्कृत विद्यालय (मुजफ्फरपुर) मे प्रधान अध्यापक छलथिन।*

अन्यान्य भाम (पं० हीरालाल कुमर, पं० रघुवंश नारायण कुमर प्रभृति) सेहो शिक्षाक क्षेत्रमे सुयश प्राप्त कयने छलथिन। भामलोकनि बाबूजीक अद्भुत संस्कार देखि हुनका बहुत मानैत छलथिन। परन्तु कालक्रमे जमींदारीक तेहन स्थिति नहि रहि गेलैन जे शिक्षाक समुचित प्रबन्ध क' सकितथिन।

परन्तु बाबूजीक प्रतिभे तेहन विलक्षण छलैन जे विद्याप्राप्तिमे अधिक समय नहि लगलैन। ओ बाल्यावस्थेसँ मिथिलाक्षरमे संस्कृत लिखय लगलाह। गामक पं० इन्द्रेश्वर झा हाजीपुरमे कन्हौली स्टेटक ठाकुरलाकनक मंदिरमे रहि अध्यापन करैत छलाह। बाबूजी हुनकेसँ ज्योतिष पढ़लनि। ओतय धर्म-प्रचारिणी सभाक दिससँ विद्यालय चलैत छलैक, जाहिमे कन्हौलीक पं० कीर्तिनाथ झा (पौराणिक) तथा पं० रामलोचन मिश्र (वैयाकरण) आदि पंडित भिन्न-भिन्न विषयक शिक्षा दैत छलथिन। ओतय रहि बाबूजी व्याकरण साहित्य अध्ययन कैलनि। (प्रैक्टिकल इंगलिश तथा डिक्शनरीक सहायतासँ अङरेजियो सीखि गेलाह।) ओ स्वाध्यायक बले हिंदीक विशिष्ट योग्यता

---

‡ एकर विशेष ऐतिहासिक विवरण हमरा गामक पं० कुञ्जेश्वर कुमर विरचित 'कुमर वंशावली' (१९३१मे प्रकाशित)मे भेटत। ओहिमे बाजितपुरक कुमर तथा भगिनमान लोकनिक सविस्तर परिचय (संस्कृत श्लोकमे) देल गेल छैन। ओहिमे बाबूजीक विषयमे ई श्लोक छैन—

चन्द्रमणेः कन्यायां सोपाख्यः श्रीजनार्दनो जातः।
यजु[illegible]रे भरगामः सामः शाण्डिल्य[illegible]।
सोऽ[illegible]तवशाः जनार्दन कविः शास्त्रेषु लब्धोदयः
स[illegible]तप नमोहित मनाश्चचन्द्रगु[illegible]
भ[illegible]कपुस्तकानि सुमनोहारीणि। सद्[illegible]
[illegible]था अनुष निरतो साहित्यसेवी [illegible]।

* हुनक[illegible] 'रामचरितेन्दु प्रकाश' (शुद्ध हिंदी गद्यमे) १९०० ई०क[illegible] प्रकाशित भेल रहैन।

प्राप्त कैलनि और काव्यशास्त्रमे प्रवीण भ' गेलाह। हुनकामे तेहन कवित्व शक्ति प्रस्फुटित भ' उठलैन जे ब्रजभाषामे सुन्दर कविता बनाबय लागि गेलाह।

बाबूजी अठारहमे वर्षक अवस्थामे शिक्षण-कार्य करय लगलाह। किछु दिन सीतामढ़ी लग सुरसंड स्कूलमे, किछु दिन (मधेपुराक समीप) घबौली स्कूलमे। बाइसम वर्षमे हुनक विवाह बहेड़ी-वासी (बादमे नदौर-निवासी) पं० नचारी झाक कन्या (जननी देवी)सँ भेलैन।

१८९६मे बाबूजी जैतपुर (मुजफ्फरपुर जिला) गेलाह और विद्यालयमे तीन चारि वर्ष अध्यापन-कार्य कैलनि। ओहिठामक महंथ (चौधरी रघुनाथ दास) काव्य-रसिक व्यक्ति छलाह। ओ कानपुरसँ 'रसिक मित्र' नामक मासिक पत्र मंगबैत छलाह, जाहिमे समस्यापूर्त्ति छपैत छलैक। बाबूजी सेहो अपन पूर्त्ति पठाबय लगलथिन।‡

ओहि समय (१९०० ई०मे) श्रीनगर (पूर्णिया)क राजा कमलानन्द सिंह तेहन साहित्यानुरागी आ गुणग्राही छलाह जे 'साहित्य सरोज' 'अभिनव भोज' कहबैत छलाह। जखन हुनक दृष्टि 'रसिक मित्र'मे छपल बाबूजीक रचना पर पड़लैन तँ मनमे कुतूहल भेलैन जे ई के मैथिल कवि थिकाह जे ब्रजभाषामे एहन रससिद्ध कवित्त बनबैत छथि। ओ बाबूजीकेँ श्रीनगर बजा पठौलथिन।

ओहि समय अनेक पंडित कवि श्रीनगरक श्रीवृद्धि क' रहल छलाह। यथा पं० अम्बिकादत्त व्यास (काशी), लछिराम कवि (अयोध्या), ब्रजराज कवि (सुलतानपुर), पं० छुद्दी झा (कोइलख), पं० श्रीकान्त मिश्र (सलेमपुर)। नित्य दरबारमे सायंकालीन गोष्ठी होइत छलैक। जाहिमे रंग-बिरंगक समस्या देल जाइत छलैक (जेना, 'मोर पच्छधर है सो मोर पच्छधर है')।

---

‡ हुनकर रचित कवित्तक एक टा उदाहरण देल जाइत छैन।

ध्रुव प्रह्लाद की कहानी को न जाने जग
दीन्हीं गति गीधको, जटायु को उबार्‌यो है।
द्रुपद सुता की लाज राखी जनसीदन त्यों
पापी अति पतित अजामिल को तार्‌यो है।
देखि ब्रजबासिन को बिकल प्रलै घन सों
ब्रजको बचावे हेतु हाथ गिरि धार्‌यो है।
गज की पुकार सुनि दौड़ि सुधि लेनवारो
मेरी बेर काहे निज नियम बिसार्‌यो है।

ओहि काव्यमय वातावरणमे बाबूजीकेँ अपन रचना-चातुरीक चमत्कार देखैबाक स्वर्णावसर भेटि गेलैन ।

राजा साहेबकेँ समस्यापूर्त्तिक तेहन प्रेम छलैन जे अपन द्रव्यसाहाय्यसँ 'समस्यापूरणम्' नामक संस्कृत मासिक पत्र (भागलपुर, एंजेल प्रेस, १९००) बहार करैत छलाह । ओहिमे एहन-एहन समस्या देल जाइत छलैक—

''भजामस्त्वां गौरीं नगपति-किशोरीमविरतम्''

''नवीना मीनाक्षी व्यथयति मुनीनामपि मनः''

ओकर सम्पादक-मंडलमे पं० खुद्दी झा तथा पं० श्रीकान्त मिश्र छलाह । तत्कालीन अनेक लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् कवि अपन-अपन समस्यापूर्ति पठबैत छलथिन—यथा व्यासजी (जे ओहि समय भागलपुर जिला स्कूलमे अध्यापक छलाह), पं० गंगाधर शास्त्री (जे वाराणसीक प्रख्यात विद्वान छलाह), म० म० मुरलीधर झा (जे काशीमे 'मिथिला-मोद'क सम्पादक छलाह), चन्द्र कवि (सुप्रसिद्ध मैथिली रामायणक रचयिता पं० चन्दा झा), पं० जीवन झा (सुन्दर संयोग' नाटकक रचयिता), म०म० चित्रधर मिश्र, म० म० राजनाथ मिश्र, म० म० पं० परमेश्वर झा, म० म० पं० शशिनाथ झा प्रभृति ।

बाबूजी अपन चमत्कृत श्लोक-रचनासँ विद्वन्मंडलीमे ख्यात भ' गेलाह । राजा साहेब हुनक बहुमुखी प्रतिभासँ प्रभावित भ' हुनका अपन साहित्यिक सहकारीक रूपमे राखि लेलथिन ।

ओहि समय (१९०३मे) हिन्दीक सुप्रसिद्ध मासिक पत्रिका 'सरस्वती' इंडियन प्रेस, प्रयागसँ बहराइत छलैक, जकर सम्पादक छलाह पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी । राजा साहेबक दिससँ साहित्यकार सभसँ पत्र-व्यवहार करबाक भार बाबूजी पर छलैन । एहि रूपेँ हुनका द्विवेदीजीसँ पत्राचार होमय लगलैन ।

ओहि समय 'सरस्वती' मे रचना छपब गौरवक बात बूझल जाइ छलैक । परन्तु बाबूजीक लेखन-शैली देखि द्विवेदीजी स्वयं आग्रहपूर्वक हुनक रचना मङाय छापय लगलथिन । १९०३मे हुनक 'शिक्षाशतक' (खड़ी बोलीक पद्य) छपलैन । तदुपरांत आनो रचना सभ ।

आचार्य द्विवेदीजी बाबूजीकेँ केहन आदरक दृष्टिएँ देखैत छलथिन तकर किछु झलक हुनक लिखल पत्र सभसँ भेटि जायत । नीचा हुनक किछु पत्रक अंश देल जा रहल अछि ।‡

बाबूजी और द्विवेदीजीमे तीस वर्ष (१९०३ सँ ३३) धरि पत्र-व्यवहार होइत रहलैन, जकर आब ऐतिहासिक महत्त्व छैक ।*

१९०३ सँ १९०८ धरि बाबूजी श्रीनगरमे रहलाह । राजा साहेब हुनका अपन परिवारक अंग जकाँ मानैत छलथिन । ओ अपन पुत्र कुमार गंगानन्द सिंहक विद्यारम्भ हुनकेसँ करौलथिन । राजासाहेब बाबूजीसँ कतेक प्रभावित छलथिन्ह से हुनक लिखल प्रशंसा-पत्र सँ सूचित होइ छैन ।×

---

‡ (१) कानपुर, १२।२।१९०३.
'शिक्षाशतक' की तो समाप्ति हो गई । अब 'प्रायश्चित्त' की बेला है । उसे भी शीघ्र ही समाप्त करके भेज दीजिए जो छपना शुरु हो जाय ।''

(२) झाँसी, २४।२।१९०३.
''सरस्वती' की जो भूलें आपने दिखाई उनके लिए हम कृतज्ञतापूर्वक धन्यवाद देते हैं ।''''''सम्भव है, आपही का मत ठीक हो । जैसी कृपा है, वैसी ही बनाये रखियेगा ।''

(३) झाँसी, ८।७।१९०६
''आपकी कृति को देखना ही क्या है ! आपके पत्र की रचना देखकर ही हमको आनन्द आता है । ग्रंथ को देखकर और भी प्रमोद होगा ।''

* आचार्य द्विवेदीक चौसठि टा पत्र पुस्तक भंडार, लहेरियासरायसँ १९४२मे प्रकाशित, जयंती स्मारक ग्रंथ (पृ० २१३ सँ ३७२)मे 'द्विवेदीजी के पत्र' शीर्षकसँ छपल छैन ।

आचार्य द्विवेदीजीक नामसँ बाबूजीक लिखल अनेक पत्र जे ओ १९०६ सँ १९०८क बीच श्रीनगर, मुंगेर (गोलकोठी) और गाम (बाजितपुर)सँ लिखने छलथिन, काशी नागरी प्रचारिणी सभाक मुखपत्रिकामे 'पौराणिकी स्तम्भ'क अन्तर्गत (संवत् २०२३, वर्ष ७०, अंक १४) प्रकाशित भेल छैन ।

× ''पं० जनार्दन झा (जनसीदन) मेरे यहाँ १९०० से हैं । इनके रहने से एक संग कवि, वैयाकरण, लेखक और मोसाहब का काम चलता है । ज्योतिष का काम भी ये अच्छी तरह कर सकते हैं । ये भाषा और संस्कृत के अच्छे कवि हैं आशु कविता भी किया करते हैं । मुझे इनसे राजकीय कार्यों की सलाह भी मिला करती है । ये मेरे परम विश्वासी हैं ।''''''यदि मुझे एक को भी रखने की शक्ति रहेगी तो मैं सदा इनको अपने पास रखूँगा ।—श्री कमलानन्द सिंह । (१२।११।१९०४)

श्रीनगर दरबारमे अनेक पंडित गुणी अबैत छलाह यथा शतावधानी व्यासजी, प० जगन्नाथ दास रत्नाकर, पं० रामचन्द्र बोआ (कीर्तनाचार्य)। बाबूजीक समय काव्य-शास्त्रक विनोदमे वितैत छलैन।‡

परन्तु शनैः शनैः राजक स्थिति क्षीण होमय लगलैक और ओ साहित्यिक वातावरण नहि रहलैक। अवांछनीय तत्त्वक प्रवेशसँ राजक दुर्दशा देखि बाबूजीक मनमे कतेक दुःख भेलैन से एहि मार्मिक कुण्डलियासँ सूचित होइछ—

"सरवर जल सूखन लग्यो, पहुँचे सूकर वृन्द
लगे चबावन चावसों, खोदि कमल के कन्द
खोदि कमल के कंद मूल जँह लगि जो पाये
खाये भरि-भरि पेट पंकमे लोटि अघाये
जीवन जो कछु रह्यो बाँचि सो भयो मलिनतर
'जलजीवन' अब हंस जोग यह रह्यो न सरवर।"*

एहि तरहेँ बाबूजीकेँ और जे-जे अनुभव भेलैन से ओ खड़ी बोलीक पद्यमे व्यक्त कैलनि। जेना—

"सच्चे की कुछ कदर नहीं है, झूठे को सर चढ़ते देखा
पंडित को पीछे ढकेलकर, पाखंडी को बढ़ते देखा
होटल बोतल बारवधू बिन जिनका काम न चलते देखा
उन्हें जाति औ देश सुधारक बनकर सबको छलते देखा"*

× ×

बाबूजीक छत्तीसम वर्ष बीतिरहल छलैन, परन्तु पुत्र नहि भेल छलैन। बाद हरणी घाट (मुंगेर)क एक महात्माक उपदेशानुसार ओ कोनो धार्मिक अनुष्ठान कैलनि। १९०८मे आश्विन कृष्ण अष्टमी जीमूत वाहन (जितिया) व्रतक दिन (१८ सितम्बर, १९०८, शुक्र दिन) हुनक जन्म भेल। आर्द्रा नक्षत्रक प्रथम चरणमे जन्म भेलाक कारण राशिक नाम 'कुलानन्द' राखल गेल। बाबूजीकेँ विश्वास छलैन जे ओही महात्माक आशीर्वाद फलित भेलैन।

तदुपरान्त बाबूजीक जीवनमे एक नव मोड़ आबि गेलैन। प० महावीर प्रसाद द्विवेदी पत्र लिखलथिन जे अहाँ इंडियन प्रेस प्रयागमे आबि सरस्वतीक

‡ बाबूजीक लिखल राजा कमलानन्द सिंहक रोचक संस्मरण 'सरोज-सौरभ' शीर्षकसँ पुस्तक भंडारक जयन्ती स्मारक ग्रंथ (१९४२)मे प्रकाशित छैन। (पृष्ठ ४७० सँ ४९७।)

* बाबूजीक एहन-एहन अद्भुतरसमे कुंडलिया तथा 'वेदान्त' पद्य क्रमशः 'अन्योक्तिमणिमाला' तथा 'कविकाल-कुतूहल' नामसँ प्रकाशित छैन।

सम्पादन तथा अन्यान्य साहित्यिक कार्यमे योगदान दिय'। (ओहि पत्रक किछु अंश नीचा देल जा रहल अछि।‡)

बाबूजी प्रयाग गेलाह और इंडियन प्रेसमे रहि सरस्वतीक सम्पादन आदि कार्यमे सहयोग देलथिन।* प्रेसक अध्यक्ष चिन्तामणि घोष (१९१०मे) बाबूजीसँ रवीन्द्रनाथ ठाकुरक 'राजर्षि' (उपन्यास) क हिंदीमे अनुवाद कराक' प्रकाशित कैलनि। ओ हिंदी जगतमे पूर्ण समादृत भेलैन। तखन घोष साहेब अन्यान्यो उत्कृष्ट बंगला ग्रन्थ सभक हिंदी रूपान्तर करबाक हेतु बाबूजीसँ अनुरोध कैलथिन।

परन्तु बाबूजीक पारिवारिक स्थिति तेहन नहि छलैन जे बेसी दिन घरसँ बाहर रहि सकितथि। अतएव हुनक सुविधार्थ एहन व्यवस्था कैल गेलैन जे ओ गामे पर रहि अनुवाद-कार्य करय लगलाह। प्रयागसँ पार्सल द्वारा पुस्तक अबैत छलैन, ओ अनुवाद क'क' डाकसँ प्रेसमे पठा दैत छलथिन, ओतयसँ मनिआर्डर द्वारा पुरस्कार आबि जाइत छलैन। पाँच वर्ष धरि ई क्रम चलैत रहलैन। एहि अवधिमे ओ पचीसटा ग्रन्थ अनुवाद कय पठा देलथिन जे इंडियन प्रेससँ प्रकाशित भेलैन। (मुकुट, चरित्रगठन, बुद्धि, स्वर्णलता, सुशीला चरित, पतिव्रता, आदर्श महिला, रॉबिन्सन क्रूसो, गौरमोहन, नेपोलियनबोनापार्ट, नवीन संन्यासी, आश्चर्य घटना, राजपूत, जीवन-संध्या, पारस्योपन्यास, माधवीकंकण आदि)।×

‡ इंडियन प्रेस, प्रयाग (१८।१२।१९०९)
प्रणाम।
"……हमारी राय है कि यदि आप कुछ काम करना चाहें तो इंडियन प्रेस में करें। काम भी ऐसा जो आप पसन्द करें। अर्थात् सरस्वती-सम्बन्धी कुछ काम तथा हिंदी और संस्कृत में प्रेस का और भी कुछ काम जो मिले। इसके लिए यदि आप घर पर भी कुछ काम करना पसंद करें तो यथासम्भव उसका भी प्रबन्ध हो जायगा। उसका पुरस्कार आप को अलग मिलेगा। प्रेस के मालिक बड़े ही उदाराशय, सहृदय, दयालु और उत्साही हैं। आपको किसी तरह का कष्ट नहीं होगा। हमारी सलाह है कि आप यहाँ जरूर आयें। आप यहाँ रहकर खुश होंगे।" (देखू, पुस्तक भंडार जयन्ती स्मारक ग्रंथ पृ०२६५)

* मिश्रबन्धु विनोद (चतुर्थ-भाग)मे एहि बातक उल्लेख छैक। (देखू बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्सँ प्रकाशित हिंदी साहित्य और बिहार (पृ० १७० पाद-टिप्पणी)।

× बाबूजीक समस्त कृतिक सूची एहि अध्यायक अंत (परिशिष्ट)मे देल छैन।

एवं प्रकारे १९१५ धरि बाबूजी घर पर रहि लेखनी द्वारा स्वतंत्रतापूर्वक जीविकोपार्जन करैत रहलाह। १९१६मे ओ पचगछिया प्रिंसेज हाइ स्कूलमे हिंदी-संस्कृतक अध्यापक नियुक्त भेलाह और १९१८ धरि ओतय अध्यापन-कार्य कैलनि। पचगछियाक रायबहादुर लक्ष्मी नारायण सिंह हुनका बहुत मानैत छलथिन।

१९१९मे बाबूजी मिथिला-मिहिरक सम्पादक भ' दरभंगा गेलाह। मैथिली जगत्‌मे ओ अपन कविता एवं कथा-साहित्यसँ पहिनहि ख्याति प्राप्त क' चुकल छलाह। हुनकर मैथिली पद्य मांजल खीटल भाषामे होइत छलैन।‡

ओ 'शशिकला' आ 'निर्दयी सासु' नामक उपन्यास मैथिलीमे लिखने छलाह जे मिथिला-मिहिरमे धारावाहिक रूपसँ प्रकाशित भ' चुकल छलैन। (ओहिसँ पूर्व मैथिलीमे आख्यायिका वा उपाख्यान लिखल जाइत छलैक। आधुनिक ढंगक मौलिक सामाजिक उपन्यासक श्रीगणेश बाबूजीसँ भेलैन।)

बाबूजी अपन सम्पादन-कालमे विविध मनोरंजक गद्य-पद्य-रचनासँ 'मिथिला मिहिर'कें विभूषित क' देलथिन्ह। १९२०मे 'कलियुगी संन्यासी' (बाबा ढकोसलानन्द) नामक व्यंग्यपूर्ण प्रहसन लिखलन्हि जे धारावाहिक रूपसँ प्रकाशित भेलैन। 'पुनर्विवाह' (उपन्यास) जे पहिनहि लिखने छलाह, बादमे मधुबनी प्रिंटिंग प्रेससँ प्रकाशित भेलैन।

ओ विद्यापतिक पुरुष-परीक्षा (संस्कृत)क हिन्दी अनुवाद सेहो कैलनि (जे विद्यापति प्रेससँ प्रकाशित भेलैन्ह।)

१९२२ धरि बाबूजी दरभंगा रहलाह। तदनन्तर ओ कलकत्ता चलि गेलाह। ओतय श्रीनगरक मकान (७ दीदार बक्स लेन)मे रहि पुनः लेखन-कार्यमे प्रवृत्त भेलाह। (ओहि डेरामे कलकत्ता विश्वविद्यालयक मैथिली-प्राध्यापक कोइलखक पं० बबुआजी मिश्र तथा पं० खुद्दी झा सेहो रहैत छलाह। सभ गोटेमे अत्यन्त घनिष्ठता छलैन।) बाबूजी कलकत्तामे चारि वर्ष रहलाह। एहि अभ्यन्तर ओ बंकिमबाबूक उपन्यास 'इंदिरा', 'देवी चौधरानी' और

‡ हुनकर किछु पद्यक संग्रह 'नीतिपद्यावली' नामसँ छपलैन जे अद्यावधि विद्यालयमे पाठ्यग्रन्थ छैन। किछु पंक्तिक उदाहरण नीचा देल जाइछ—

> सज्जन दैह् किकदि जे आनक करथि सदा उपकार
> नीच जनक संसर्गहुमे पड़ि तजथि न उच्च विचार
> परजन सौ अपकृत भेलोपर बिसरिजाथि अपकार
> क्रिया करथि नित उत्तम, पालथि धर्म देश-आचार"

'विष-वृक्ष' हिन्दीमे अनूदित कलनि जे वाणिक् प्रेस (मिर्जापुर स्ट्रीट)सँ प्रकाशित भेलैन। मनुस्मृतिक टीका सेहो। कविराज नगेन्द्रनाथ सेनक नगेन्द्र प्रेससँ हुनकर 'द्रव्यगुण-शिक्षा' तथा 'पाचन-मुष्टियोग' प्रकाशित भेलैन।

१९२७मे बाबूजी कलकत्तासँ गाम आबि गेलाह और शेष जीवन (लगभग पचीस वर्ष) घरे पर व्यतीत कैलनि। जीवनक पूर्वार्द्ध गाम सभक संग बीतल छलैन, अपराह्न समियौल सभक संग बितलैन।‡

घरोपर रहि बाबूजीक लेखनी पूर्ववत् चलैत रहलैन। गिद्धौरक महाराज चन्द्रमौलीश्वर सिंहक अनुरोधपर बाबूजी हुनक राजवंशावलीपर १९ सर्गक संस्कृत महाकाव्य हिन्दी पद्यानुवाद सहित प्रस्तुत क' देलथिन और महाराजकें समर्पित क' देलथिन। परन्तु किछु वर्षबाद महाराजक निधन भ' गेलैन और तकरा बाद ओ महाकाव्य की भेलैक (छपलैन वा नहि) से पता नहि।*

१९३३सँ (जखन हम प्राध्यापक नियुक्त भेलहुँ) बाबूजी आर्थिक चिन्तासँ मुक्त भ' गेलाह। आब हुनक अवस्था साठि वर्ष सँ ऊपर छलैन और बाहर जैबाक कोनो प्रयोजनो नहि छलैन। ओ अपन कोठरीमे स्वान्तः सुखाय छंद रचना करैत रहैत छलाह। कवित्त, सवैया, छप्पय, कुंडलिया हरिगीतिका आदि छंदसँ गेंटक गेंट कापी भरि जाइत छलैन्ह। चिट्ठियो-पत्री अधिकतर पद्यमे लिखैत छलाह। पं० त्रिलोकनाथ मिश्र

‡ गाम पर बाबूजीक निकटतम समियौल छलथिन—(स्व० हीरालाल कुमरक पुत्र) राजीव नयन कुमर, (स्व० सिद्धेश्वरदत्त कुमरक पुत्र) महेन्द्र नारायण कुमर, (स्व० रघुवंश नारायण कुमरक पुत्र) उपेन्द्र नारायण कुमर, (स्व० हरिवंश नारायण कुमरक पुत्र) अवधभूषण कुमर प्रभृति। पं० गोपीनाथ कुमर अपन सासुर (दरभंगा जिलाक पुलइ गाम)मे बसि गेलाह। हुनकर तीन टा यशस्वी पुत्र भेलथिन—पं० योगानन्द कुमर (मिथिला मिहिर सम्पादक) रायबहादुर जयानन्द कुमर (डी० पी० एस० जी०) एवं शारदानन्द कुमर (भाइस चेयरमैन, दरभंगा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड)।

* हास्यरसावतार पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदीक स्मृति-ग्रन्थ (१९७८मे मलयपुर, जमुईसँ) प्रकाशित भेल छैन, ओहिमे बाबूजीक एकटा संस्मरण छैन। ओहिमे गिद्धौर यात्राक वर्णन छैन (ओहिमे हमहूँ संग रहिअनि)।

(गोसपुर), ज्योतिषी पञ्चानन झा (सिद्धौर) प्रभृतिकेँ श्लोकबद्ध पत्र लिखैत छलथिन, जाहिमे श्लेष-यमक आदिक चमत्कार रहैत छलैन। कहियोकाल मनमे आबि जाइत छलैन त' अंग्रेजियोमे चिट्ठी लिखैत छलाह।[1] अपन प्रिय ममियौत रायबहादुर जयानन्द कुमर (पटना) तथा नरहन स्टेटक स्नेही मित्र बाबू कामेश्वर नारायण सिंहसँ अधिककाल पत्राचार होइत छलैन।

बाबूजी भरल पूरल परिवारमे रहैत छलाह। हमर माय त' निरन्तर हुनक सेवामे रहितहि छलथिन्ह; बेटा, बेटी, पुतहु, नाति, पोता, सभ हुनक सेवामे लागल रहैत छलथिन। हुनका कासश्वासक प्रकोप रहैत छलैन। अतएव हुनका खातिर सितोपलादिचूर्ण, मुरीचक काढ़ा, आ' धात्रीक अवलेह आदि बनैत रहैत छलैन। हम पटनासँ च्यवनप्राश, द्राक्षारिष्ट, कनकासव, भार्गीगुड़ आदि नेने अबैत छलिऐन।

परन्तु शनैः शनैः बाबूजीक शरीरमे वार्धक्य-प्रयुक्त क्लेशक आगमन होमय लगलैन। कहियो अजीर्ण, कहियो दम्माक प्रकोप। १९३९मे तेहन दुःखित पड़ि गेलाह जे मुमूर्षु अवस्थामे पालकीपर चढ़ाक' पटना ल' गेलिऐन। ओतय लगातार कइएक मासक उपचार, पथ्यपानि ओ सेवा-शुश्रूषाक फलस्वरूप आरोग्य-लाभ कय पुनः गाम अयलाह।

तदुपरान्त बाबूजी एगारह वर्ष और जीवित रहलाह। परन्तु अधिकतर रसायनेपर छैत गेलाह। नाना प्रकारक क्वाथ, अवलेह, पाक आदि सेवन करैत रहलाह।

हुनकर (१९४१ई०) एक कॉपीमे सप्तश्लोकी रामायण तथा अपन जीवनक संक्षिप्त परिचय लिखल छलैन जे नीचा देल जाइत अछि।[1]

(सारांश ई जे काव्यशास्त्रक प्रसादात् श्रीनगरक राजा कमलानन्द सिंहक दरबारमे रहलहुँ। सरस्वती-संपादक द्विवेदीजीक कृपासँ प्रयागमे और घरपर रहि साहित्य-सेवा करबाक अवसर भेटल। पचगछिया प्रियव्रत स्कूलमे अध्यापन-कार्य कय सभक प्रिय बनल रहलहुँ। दरभंगाक महाराज रमेश्वर सिंहक समयमे रहि द्वैभाषिक साप्ताहिक पत्र मिथिला-मिहिरक संपादन कैलहुँ। तदुत्तर कलकत्ता जाक' पुनः अनुवाद-कार्य कैलहुँ जे वणिक् प्रेस और नगेन्द्र प्रेसमे

---

[1] एकबेर प० महावीर प्रसाद द्विवेदीकेँ अंग्रेजीमे पत्र लिखने रहथिन जकर उत्तर एना आयल रहनि—

Daulatpur, Rai Bareli, 1.1.33

My dear Panditji,

Thanks for your P. C. half in Sanskrit and half in English. Whenever I hear from you. I feel greatly delighted. Like yourself I am somehow dragging on my old infirm body. I wish your son Hari Mohan a happy and prosperous life.

With best wishes for the new year.

Yours sincerely
M. P. Dwivedi

द्विवेदीजीक अन्तिम पत्र, १।८।३३क' लिखल छलैन—
"आपके चिरंजीवी पुत्र प्रोफेसर नियुक्त हो गये, यह सुनकर अत्यानन्द हुआ। ईश्वर करें, उनकी दिन पर दिन उन्नति होती रहे। आपकी कविता-पुस्तक देखकर पुरानी बातें नई हो गईं। अन्योक्तियाँ बड़ी सुन्दर हैं। 'कुतूहल'मे आलोचनाएँ भी खूब चुभती हुई हैं।"
आपका म० प्र० द्विवेदी

(पूज्य द्विवेदीजीक आशीर्वचन हमरा जीवनमे प्राप्त भेल, ई हम अपन परम सौभाग्य बुझै छी।)

1. सोऽहं श्री जनसीदनो बहुविधं शास्त्रं समालोकयन्
काव्यं च प्रचुरं विरच्य सुकवेर्लब्ध्वा पदं ख्यातिमान्
हिन्दी-संस्कृत-मैथिलीषु रचना-कार्याणि कुर्वन् मुदा
राज्ञः श्रीनगराधिपस्य कमलानन्दस्य सेवाश्रितः।
सरस्वतीसेवक बन्धुवर्यं द्विवेदिनो सत्सुहृदो कृपाभिः
साहित्यसेवावसरोपलब्धो मया प्रयागे च तथा स्वगेहे
पचगछियायां स्थित्वा विद्याभवने प्रियव्रताख्येऽहम्
व्याकरणस्याध्यापनकार्ये सर्वप्रियो जातः।
दर्भं गाधिपतेः रमेश्वर हरेः राजत्वकाले चिरम्
स्थित्वा लेखनतत्परः प्रतिदिनं गत्वा च मुद्रालये
प्रोक्ता मैथिलभाषया सरलया राष्ट्रीय भाषाविभिः
संयुक्तं समपादयं हि मिहिरं पत्रं तु साप्ताहिकम्।
गत्वा च कलिकातायामनुवादाः मया कृताः
वणिक्प्रेसे नगेन्द्रे च मम ग्रंथाः प्रकाशिताः
पञ्चाधिकपञ्चाशत्वर्षोर्ध्वं प्रवासभूत् कार्यम्
हित्वा स्वगृहे स्थित्वाऽस्मयम् सिद्धौर नृपग्रामम्।
कासश्वासप्रपीडितोऽहमृगसप्ततिमे वर्षे
कृष्णपदाम्बुजभक्त्या कालं नेतुं प्रवृत्तोऽस्मि।

प्रकाशित भेल। पचपन वर्षक अवस्थामे परदेश छोड़ि गाम आबि गेलहुँ। गिद्धौर महाराजक वंशावली-काव्य रचलहुँ। आब ६९ वर्षक अवस्थामे कासश्वाससँ पीड़ित रहितहु कृष्ण भगवानक आराधनामे समय बिता रहल छी।)

एकरा बाद बाबूजी गामसँ कमे बहरयलाह। वैशालीक प्रथम समारोहमे (प्राय: १९४५मे) जिलाक सर्वश्रेष्ठ वयोवृद्ध साहित्यकार हैबाक नाते हुनका हाजीपुरक तत्कालीन एस०डी०ओ० (जगदीश चन्द्र माथुर) विशिष्ट अतिथिक रूपमे ल' गेल रहथिन। बाबूजी अन्तिमो समयधरि साहित्य-सेवामे संलग्न रहलाह। हुनकअन्तिम मैथिली उपन्यास 'डिरागमन-रहस्य' मिथिला मिहिर (१९४६-४७मे) धारावाहिक रूपसँ छपलैन।

अवस्थाक संग-संग उत्तरोत्तर हुनकर आध्यात्मिक प्रवृत्ति बढ़ैत गेलैन। 'कल्याण' (गोरखपुर) आदिमे धार्मिक लेख देमय लगलथिन। हिंदू धर्म विवेक' नामक पुस्तक प्रस्तुत कैलनि। भक्तिपक्षक भजन बना-बनाक' वृंदावनक बिंदु महाराजकेँ पठाबय लगलथिन। शरणागतिपरक श्लोकसँ भगवानक स्तुति करय लगलाह—

एकाश्रयस्त्वं शरणागतानाम्
संतापहारीति भुविप्रसिद्धम्
कष्टं कदा नश्यति दीनबन्धो
त्वामाश्रितस्यास्य जनार्दनस्य। ×

बाबूजीकेँ अन्तिम समयमे दुःसह पारिवारिक शोक देखय पड़लैन। ७५ वर्षक अवस्थामे छः वर्षक प्रिय पौत्र 'ललनजी' (इन्द्र बाबूक संस्कारी बालक)क वियोगमे हुनक करुण शोकोद्‌गार 'मिथिला मिहिर'मे छपलैन। 'आदर्शबालक' नामक संस्मरण सेहो लिखलनि। तदुत्तर १९४९मे इन्द्रबाबूक असामयिक निधनसँ ओ और अधिक मर्माहत भ' गेलाह। दुइए वर्षक अभ्यंतर (२०।६।१९५१केँ) ७९ वर्षक अवस्थामे ओ भवबंधनसँ मुक्त भ' गेलाह।

बाबूजीक स्वर्गवास भेलापर अनेक ठामसँ श्रद्धांजलि-पत्र आयल—'ओ महान् स्तम्भ छलाह', हुनक नाम अमर रहतैन', 'वे प्राचीन और अर्वाचीन साहित्य की अन्तिम कड़ी थे', 'हमलोग उनको वयोवृद्ध साहित्यकार पुरस्कार द्वारा सम्मानित करना चाह रहे थे'……इत्यादि।

ओहि समय बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्‌क निदेशक छलाह आचार्य शिवपूजन सहाय। ओ हिन्दी साहित्य सम्मेलन भवन (कदमकुआँ; पटना)मे रहैत छलाह।

✛ एहन-एहन अनेको श्लोक ओ 'श्रीकृष्णविनयाष्टकम्' नामसँ छपाक' सौराठ सभामे निःशुल्क वितरण करबौने रहथि।

ओ बाबूजीक समस्त अप्रकाशित पांडुलिपि और हस्तलिखित कापी (हुनक खड़ाम आदि स्मारक समेत) हमरासँ ल'क' अपना संरक्षणमे राखि लेलनि और कहलनि जे "पं० जी की सभी वस्तुओं का यथासमय उपयोग किया जायगा।" (किछु वर्षक उपरान्त शिवजी स्वयं विदा भ' गेलाह और हुनका बाद आब कोन रूपेँ ओहि सामग्री सभक उपयोग होएतैन से ज्ञात नहि।)

❖ ✛ ✛

आब एतेक दिनक अन्तरालपर बाबूजीक जीवन पर एक विहंगम दृष्टि देने आश्चर्य लगैत अछि। शैशवावस्थामे पितृहीन, मामसभक आश्रित भ' रहनिहार, स्कूलमे नाम लिखैबाक साधनसँ वंचित एक ग्रामीण बालककेँ कोना सरस्वतीक एहन वरदान भेटि गेलैन जे साहित्यक आकाशमे एक नक्षत्र जकाँ चमकि उठलाह। ओहि समय हिंदी गद्यक प्रारम्भिक युगमे जखन मिथिलाक बड़का-बड़का महामहोपाध्याय लिखैत छलाह—'कहता भया', जखन बिहारी हिंदीक उपहास कैल जाइत छलैक, बाबूजी शुद्ध हिंदीक तेहन कीर्तिमान स्थापित कैलनि जे आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी पर्यन्त प्रभावित भ' अपन समकक्षक मान्यता देलथिन। बङला कहियो ककरोसँ पढ़लनि नहि, किंतु बङलाक उत्कृष्टतम साहित्य (बंकिम, टैगोर आदिक उपन्यास)क अनुवादक ढेरी लगा हिंदीक भंडारकेँ तेना भरि देलथिन जेना ओहि समय धरि केओ नहि कैने छलाह। ब्रजभाषा ककरोसँ सिखलनि नहि, परन्तु रीतिकालीन कवि जकाँ रससिद्ध काव्यक रचना कय 'जनसीदन' उपनामसँ प्रख्यात भ' गेलाह।

संस्कृतक विधिवत् कोनो उपाधि नहि लेलनि। परन्तु उन्नैस सर्गक महाकाव्य (गिद्धौरराज-वंशावली)क रचनाक' गेलाह। अपना गाम (बाजितपुर)क प्रकृत भाषा सैह छलैन जे आइकाल्हि वाज्जिका कहल जाइत छैक, परन्तु मैथिलीक प्रथम आधुनिक उपन्यासकार हैबाक श्रेय हुनके भेटलैन। एहि सभकेँ की कहल जाय? आनुवंशिक संस्कार अथवा दैवी चमत्कार?

बाबूजीक जीवन अन्तधरि साहित्य-सेवामे समर्पित रहलैन। ओ अन्त समय धरि किछु-ने-किछु लिखितहि रहलाह।

ओ अपन जीवन संस्मरण लिखय लागल रहथि, परन्तु ओ १९०० ई० सँ आगा नहि बढ़ि सकलैन। ‡

‡ बाबूजीक तहियाधरिक जीवन-वृतांत ओही आधार पर देल गेल छैन।

बाबूजीक कृतिक संख्या पचास सँ अधिक छैन, जे हुनक अनवरत साहित्य-साधनाक परिचायक छैन।[१]

हमरा हुनकर जे' जे' प्रकाशित-अप्रकाशित कृतिक नाम बुझल अछि, तकर सूची परिशिष्ट (क)मे द' रहल छी।



[१] बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटनासँ १९७६मे प्रकाशित 'हिंदी साहित्य और बिहार', (तृतीय खंड, उन्नीसवीं शती, उत्तरार्द्ध पूर्वांश)मे बाबूजीक विषयमे ई तथ्य देल गेल छैन जे 'मिश्रबन्धु विनोद' (चतुर्थ भाग)क अनुसार हुनकर समस्त अनूदित कृतिक संख्या ६०।६५ छलैन।

परिशिष्ट (क)

(पं० जनार्दन झा 'जनसीदन'क प्रकाशित तथा अप्रकाशित कृतिक सूची)

(१) 'सरस्वती' (१९०३सँ ल' क' एक दशक धरिक बीच)मे प्रकाशित रचना—

शिक्षाशतक (पद्य), प्रार्थनाशतक (पद्य), मैथिल समाज की वैवाहिक परिपाटी (गद्यलेख)।

(२) इंडियन प्रेस, प्रयागसँ प्रकाशित बङ्ला ग्रन्थक हिंदी अनुवाद (१९१०सँ १९१५क बीच)—

राजर्षि, मुकुट, चरित्र-गठन, च्रह्मि, आदर्श महिला, पतिव्रता, सुशीला-चरित, राबिन्सन क्रूसो, नेपोलियन बोनापार्ट, षोडशी, गौरमोहन(गोरा), नवीन संन्यासी, विचित्र-वधू-रहस्य, आश्चर्य घटना (नौकाडूबी), राजपूत जीवन संध्या, पारस्योपन्यास, माधवी-कंकण, रत्नदीप, समाज, शुश्रूषा, सम्राट् अकबर, सिख जाति का इतिहास, ग्रह-नक्षत्र, अद्भुत कथा।

(३) कलकत्ता वणिक् प्रेस तथा नगेन्द्र प्रेससँ प्रकाशित (बङ्लासँ हिंदी अनुवाद), १९२३सँ १९२७क बीच)—

इंदिरा, देवी चौधरानी, विषवृक्ष, प्राणियों के अन्तःकरण की बात, द्रव्य-गुण-शिक्षा, पाचन मुष्टियोग, मनुस्मृति (टीका)।

(४) मैथिलीक मौलिक सामाजिक उपन्यास—(प्राय: १९२५मे मधुबनी प्रिंटिंग प्रेससँ प्रकाशित) पुनर्विवाह, (मिथिलामिहिरमे धारावाहिक रूपसँ प्रकाशित)—निर्दयी सासु (१९१४), शशिकला (१९१५), कलियुगी संन्यासी (बाबा ढकोसलानंद) प्रहसन (१९२०), द्विरागमन-रहस्य (१९४६-४७)।

(५) विद्यापति प्रेस (पुस्तक भंडार), लहेरियासरायसँ (१९२०सँ १९३३क बीच) प्रकाशित पुस्तक—

पुरुष परीक्षा (विद्यापतिक संस्कृत ग्रंथक हिंदी अनुवाद), काव्य निर्णय (टीका), अन्योक्तिमणिमाला (ब्रजभाषापद्य) कलिकाल कुतूहल (खड़ी बोलीक पद्य), मैथिलीनीति पद्यावली (मैथिली पद्य)।

(६) मासिक मिथिला मिहिर (दरभंगा) भाद्र संवत् १९६६ (मंडल १, प्रकाश ८)मे प्रकाशित, शतरंज शिक्षा (ब्रजभाषाक चालिस टा दोहामे)।

(७) पुस्तक भंडार (लहेरियासराय)क जयंती स्मारक ग्रंथ (१९४२)मे प्रकाशित निबंध—

मिथिला के पंडित, द्विवेदीजी के पत्र, सरोज-सौरभ (राजा कमलानंद सिंहक संस्मरण)।

(८) सुदर्शन प्रेस, दरभंगासँ प्रकाशित पुस्तक—
मुष्टियोग संग्रह (प्राय: १९३०क आसपास)।

(९) खड्गविलास प्रेस बांकीपुरसँ (१९३३क आसपास) प्रकाशित ग्रंथ
चिकित्सा-सागर, वाटिकाविनोद।

(१०) अप्रकाशित—

गिद्धौर-राजवंशावली (संस्कृतमहा काव्य; अप्राप्य)

हिंदू धर्म विवेक, मिथिला-महात्म्य, रससार, आदर्श बालक, जीवन-संस्मरण (१९००धरिक आत्मकथा)।

———

२
ओ दिन
(बाल्यावस्थाक स्मृति)

बाल्यावस्थाक-स्मृति पटल पर एक त्रिमूर्ति अंकित छथि—
दैया, बहिनदाइ, माय।

दैया हमर अस्सी वर्षक पितामही छलीह। ओ रामायण महाभारतक बहुत रास कथा जनैत छलीह। ओ ताहु दिनक बात कहैत छलीह जहिया अमर सिंह, कुमर सिंह अंग्रेजसँ लड़ल रहथि, जहिया पहिले पहिल रेलगाड़ी चलल रहैक(और दस-बीस कोससँ लोक ओ तमाशा देखय गेल रहय), जहिया पहिले पहिल मटिया तेल गाममे आयल रहैक (और जगुआ खवास ओकरा जराबय गेल त एक हाथ ऊपर धधरा उठि गेलैक और ओ जान लऽकऽ पड़ायल।) दैयाक पिता (चंद्रमणि कुमर) केहन प्रतापी रहथिन, हुनक केहन विशाल हवेली रहैन, सतभैया (सातोभाइ) पर दैयाक केहन रोब चलैत छलैन, ई सभ कहैत दैयाक आँखिमे राजकन्याक गर्व दीप्त भऽ उठैत छलैन।

दैया गाममे लालोदाइ (लालवती देवी) नामसँ प्रसिद्ध छलीह। परोपट्टाक लोक हुनकासँ दवाइ-बिरो, पथ-पानि, धात्री, नेबो, बेल आदि लऽ जाइत छलैन। दान-पुण्यमे हुनका बड्ड उत्साह रहैत छलैन।

दैया बात-बातमे लोकसूक्ति बजैत छलीह। जेना—

> ''आदि मे घृत नहिं, अन्त नहि दही
> ताहि भोजन के की भोजन कही!''
> ''एहन भनसीया के, के करत मना
> बैसाख मास चलहु भाँटाक खाना!''
> ''कहथि घुरर कवि, सुनऽ हौ कका
> आजुक चौआसीनक कोन लेखा-जोखा''!

* दैयाक मुँहसँ सुनल एहन-एहन कतेको अज्ञात कविक लोक-सूक्ति हम द्विरागमन (उपन्यास)मे मैयाक मुँहसँ कहबौने छिऐन।

मधुश्रावणी, नागपंचमी और सपता-विपता आदिक कथा कहबाक भार दैये पर छलैन। टोलक आइमाइ तथा कन्यासभ आबि क' डोरा बन्हैत छलीह। दैया अंतमे कहैत छलथिन—'जेना हुनकर दिन फिरलैन तहिना सभक दिन फिरौन।'

कतहुसँ भार अबैत छलैक तँ दैया परिछि क' सभ वस्तु पहिने भगवतीक आगाँ आनि क' अर्पित क' दैत छलथिन। तदुपरांत कनेक कौटिक' अपना मुँहमे लैत छलीह, तखन धियापुता सभकेँ दैत छलथिन और आडने-आडन बएन पठबैत छलथिन।

दैया कोनियाँ घरमे सुतैत छलीह और हमरो लगमे सुता क' कथा कहय लगैत छलीह। एक राति कहय लगलीह—"जखन लाक्षागृहमे आगि लगलैक और पाण्डव सभ जरय लगलाह त' युधिष्ठिर पुछलथिन—की औ सहदेव! बहरैबाक कोनो उपाय छैक? सहदेव कहलथिन—"हँ, एकटा उपाय छैक। एहि मकानक माणिक थम्भ भीम उखाड़ि लेथि त हम सभ सुरंगसँ निकलि जा सकैत छी।" द्रौपदी कहलथिन्ह—तखन एतेक कालसँ अहाँ चुप किएक छलहुँ? सहदेव कहलथिन—"हमरासँ कि केओ पुछने छल?………"

हमर हुंकारी भरब बंद होइत देखि दैया स्नेह पूर्वक हमर देह हँसोथि पुछलनि—की हौ, बौआ। सुति रहलाह?

तावत् बिहाड़ि उठि गेलैक। बुझि पड़ैक जे आब चार उधिया देतैक। दैया दुनू हाथ जोड़ि वायु-देवताक गोहारि करय लगलीह—

"अरड़ोक खाम्हखुम्ह, कोढ़िलाक बरी
राखि लिअ वायुराज गरीबक अड़ी
दोहाइ वायुराजकेँ………

दैया भोरे उठि प्राती गबैत छलीह—

"रामसँ कर नेह रे मन, रामसँ कर नेह।
बहुरि एहि जग जन्म नाहीं, नाहि ऐसो देह।"

बहिनदाइ (दैयाक विधवा बेटी) हमर पीसी छलीह। ओ अपन सासुर (राँटी)सँ आबि क' दैयाक सेवामे रहैत छलीह। ओहो दैये जकाँ राति-दिन पूजा-पाठ, व्रत, उपवास, देवाब-धर्मायमे लागलि रहैत छलीह। ओ नित्य प्रातः स्नान कय तुलसी चौरा पर लोटासँ जल ढारि पाठ करैत छलीह जकर दूटा पंक्ति हमरा एखनो मन अछि—

"आठम बेर हम अपने आएब।
तेहन बनल पुनि तेहन बनाएब।"*

बहिनदाइ चौबीसो एकादशी करैत छलीह और पुरोहित सोमनाथ झाकेँ सीधा उत्सर्ग करैत छलथिन। कार्तिक अक्षय नवमीमे धात्री वृक्ष तर गोबर सँ नीपि निष्ठापूर्वक ब्राह्मण-भोजन करबैत छलीह।

बहिनदाइ भानस-भात कय सभकेँ खोआ-पिआ, अन्तमे स्वयं खाय बैसैत छलीह। जखन सभलोक विश्राम करै छल तखन ओ चुपचाप बैसि चरखा-टकुरी करैत छलीह। ओ घर लग एक इनार खुनाक' यश कैने रहथि (जकर स्मारक चिह्न औखन विद्यमान छैन)। दैया-बहिनदाइक ओ त्यागमय वैधव्य जीवन स्मरण कय असीम श्रद्धा उमड़ि अबैत अछि।

हमर माय पंडित-कन्या छलीह। ओ खाँटी (मिथिलाक) आचार-विचार, विधि-व्यवहार, ऐपन, पुरहर, मेही-जनउ, सुपारीक कतरा आदिमे निपुण छलीह। गामक कन्यागण हुनकासँ सीकीक वुनिया और गीत-नाद (तिरहुत, नचारी, महेशवाणी, समदाउनि आदि) सिखबाक हेतु अबैत छलथिन। माय खूब कोमल स्वरसँ एकटा विहाग गबैत छलीह—'अब हरि काहुको गोकुल ऐहैं!' टोलक आइमाइ सभ हुनकासँ चिट्ठी-पत्री लिखबैत छलथिन।‡ ओ पतरा देखि क' एकादशीओ कहि दैत छलथिन। एहि सभसँ ओ स्त्री-समाजमे पंडिताइन कहबैत छलीह। दैया हुनका 'सोहागरानी' कहैत छलथिन।

माय पछबरिया ओसारा पर बैसि लाल, पीयर, हरियर सीकी लऽक' रंग-बिरंगक डाली-पौती बुनैत छलीह। कोजागराक भार साँठबाकहेतु नाना प्रकारक (सुपारी, लवंग, अणाची, मखान, छोहारा, किशमिश आदिक) कला-पूर्ण 'गाछ' बनबैत छलीह। ओ सरकंडा अबरख और पन्नीसँ सुन्दर पौती तैयार करैत छलीह।

---

* एहिसँ सूचित होइत अछि जे ताहि समय स्त्री-समाजमे मनबोधक 'कृष्ण-जन्म' कतेक प्रचलित छलैन।

‡ कहियोकाल माय बाबूजीक सिखाओल एक सांकेतिक लिपि मे चिट्ठी लिखैत छलीह जकरा ओ 'बनौआ अक्षर' कहैत छलथिन।

एक बेर हुनक एक कलाकृति बाबूजी बहुआरा कोठीक डैनबी साहेबकें देलथिन। ओ गुणज्ञ अङरेज ततेक प्रभावित भेल जे पुरस्कार-स्वरूप घर लग कदमबागक जमीन लिखि देलकैन।*

बाबूजीक प्रथम स्मृति-चित्र मनमे एना अंकित अछि। भव्य गौर वर्ण, चंदन-चर्चित ललाट, भगवानवला घरमे पूजा पर बैसल छथि। पात पर बहुत रास गेंदा कनैल आ बेलीक फूल छैन। सामने कुर्सी पर राधा-कृष्णक मूर्ति। सराइमे नैवेद्य राखल, तुलसीदल देल खाल्ही, मिश्री आ किशमिश। हमरा माथमे ठोप कय हाथमे प्रसाद द' दैत छथि।

बाबूजीकें अधिक काल लिखिते देखैत छलिऐन। रतिगरे तेपाइ पर लालटेन बेसि चौकी पर गेरुआक भरें ओठङि, बदामी रंगक कागज पर पृष्ठक-पृष्ठ भरने जाइत छलाह। (जखन रोशनाइ खतम भ' जाइत छलैन तखन दैथा लोहियामे हर्रे-कसीसक बुकनी आदि खदकाक' मोसि बना दैत छलथिन।)‡

एकटा स्मृति-चित्र और ध' रहल छी। पूर्णिमाक रातिमे टहाटही इजोरियामे बाबूजी सत्यनारायणक पूजा क' रहल छथि। आङनमे चारिटा छोट-छोट केराक पोँछ गाड़ल छैक। बीचमे छोटकी चौकी पर शालिग्राम राखल छथि। बाबूजी पीताम्बर ओढ़िक' आसन पर बैसैत छथि। लगमे हरियर पुरैनिक पात पर लाल-लाल कमलक ढेरी लागल छैन। 'एतानि पुष्पाणि भगवते श्री सत्यनाराणायनमः' कय रहल छथि।

पंडितजी (श्यामनारायण कका) अर्थसहित कथा बँचैत छथि (जे सुनबामे खूब रोचक लगैत अछि)।

आङनमे प्रेमनाथ कका बड़का-बड़का पातिलमे केरा गुड़ आँटा दूधमे घोरि शीतल प्रसाद बनबैत छथि। आरतीक गीत होइत अछि—

> "आरती कीजे राजा रामचन्द्रजी की
> हरि हरि भक्ति करी संतन सुखदायी हो।"

---

* आइ आखन मिथिलाक शिल्पकला देश-विदेशमे सम्मानित भ' रहल अछि, मायक ओ अपूर्व हस्त-कौशल विशेष रूपसँ स्मरण भ' अबैत अछि।

‡ ओ स्याही तेहन पक्का होइत छलैक जे तहियाक लिखल कागहुक जर्मा बुझाइत छैक।

ओम्हर पछबरिया ओसारापर लाल एकरंगा टाङल छैक। ओहि पर्दाक भीतर गीत होइत छैक—

> 'सिया रामजी लला !
> मोहि सुनि बिसरु एकहु पला।'

तखन प्रसाद वितरण होइत अछि। योगी कका सभक गिलास वा लोटा भरने जाइ छथिन। अन्तमे ब्राह्मण सभकें भोजन कराओल जाइत छैन। (जकर दृश्य मनमे अंकित अछि)—दही-चूड़ा-चीनी, कदीमाक तरकारी, सीम, भाँटा, ओलक अँचार, मुँह काटल आम ...... ।

बाबूजी स्वयं उत्साहपूर्वक दही परसैत छथि। "बाबू आर्त्तनाथ ! कनेक एहू मटकूरक चखियौक", कहैत अणाची कपूरसँ गमगम करैत सेर डेढ़ेक छल्हिगर दही हुनका आगाँ उझीलि दैत छथिन। (ई प्राय: श्रीनगर राज-दरबारक प्रभाव छलैन्ह जहाँ तिला संक्रान्तिक भोजमे खिच्चड़ि पर डब्बू ल'क' घृत परसल जाइत छलैक।)

बाबूजीकें नवरस आ षड्रस दुहूसँ समान प्रीति छलैन। सीरमे 'काव्यप्रकाश'क संग-संग 'पाकप्रकाश' सेहो रहैत छलैन। एक सँ एक चटकार व्यंजन बनबबैत रहै छलाह—मोनवकाक चटनी, छोहाराक अँचार, अनार-दानाक खटमिट्ठी। चाखि चाखिक' प्रशंसा करैत छलथिन—"एहिमे हींङक स्वाद अपूर्व लगैत अछि। एहिमे श्यामजीर भूजिक' देने बेस सोन्हगर भ' गेल अछि"। बाबूजीकें गोरस परम प्रिय छलैन। 'बिना गोरसं कोरसो भोजनानाम् !' बहुधा दूधमे आम वा कटहरक रस मिलाक' आस्वादन करैत छलाह। हुनका खँबोसँ बेसी खोऐबाक सौख छलैन। लोककें निमन्त्रण द'क' खूब प्रेमसँ भोजन करबैत रहै छलथिन।

विश्रामक काल बाबूजी हमरासभकें लगमे बैसाकय रंगबिरंगक मनोरंजक बुझौअलि बुझबैत छलाह।

"कहह त। "एक हाथक ताखमे आठ हाथक दुर्गा अँटि सकैत छथि ?"

"हँ, अष्टभुजा मूर्त्ति।"

"एहि करोनाक गाछपर अंगपोछा ओछाक' सूति सकैत छह ?"

"हँ। गाछ पर अँगपोछा ओछा देबैक और खाटपर सूति रहब।"

"हाथीकें गीत गबैत देखने छहक ?"

"हँ। हम गीत गबैत रही। हाथी चल आइत रहय।"

बहिन (ननूदाइ)कें सेहो एहिसभमे खूब मन लगैत छलैन।

"कहह त बौआ ! माइ-धी जाइ छलीह, ससुर-जमाय अबै छलाह । दुनू अपन-अपन बापकेँ गोर लगलन्हि । ई कोना भेलैक ?"

"जेना तों (ननूदाइ) और माय जाइत छलीह, और ओम्हरसँ बाबूजी आ मामा अबैत छलाह ।"

"माय बेटी, सासु पुतहु, ननदि भौजी—सभ एके बेर फराक-फराक थारीमे खा रहलि छथि । तीने टा थारी छैन, कोना खैतीह ?

"जेना दैया बहिनदाइ माय खाइ छथि ।"

कौखन काल हम सभ 'ककबहोवसात' खेलाइत छलहुँ । (जेना, कक कतय गेलाह ? कमलपुर । धार कोन भेटलैन ? कमला । माछ कोन ? कवइ । गाछ कोन ? कदम्ब ! फल कोन ? कटहर । फूल ? कमल । मधुर कोन ? कलाकन्द । ब्राह्मण के ? कमलाकान्त । कहबी कोन ? 'करछिक थम्हपर सितुआ चोख ।' एही तरहेँ भिन्न भिन्न अक्षर पर प्रश्नोत्तरी होइत छलैक ।)

एवंप्रकार खूब आनन्द-विनोद होइत रहै छल ।

× × ×

ओहि समयमे बारहो मास कोनो ने कोनो पर्व-तिहार लगले रहैत छलैक । जहाँ कोनो पावनि अबैत छलैक कि दैया चारि दिन पहिलहिसँ हरविरड़ो उठाबय लागि जाइत छलथिन—"हे लोकनि ! ओरिआओन भेलैक ? आब दिन कहाँ छंक ? हे बबुअनि ! चौठचन्द्रक दही पौरल गेलैक ? केरा धूकल गेलैक ?......ऐ सोहागरानी ! भगवतीक पातरि पड़तैन । अँचरा औतैनि । ....हे लोकनि ! जितिया लगिचा गेलैक । मड़आक चीकस पीसल जैतैक । ओठगनक चूड़ा कूटल जैतैक ।..." और एकटा फकड़ा पढ़ि दैत छलथिन—

"जितिया पावनि बड़ भारी
धिया पुताकेँ ठोकि सुतौलनि, अपने लेलनि भरि थारी ।"

सुखरातीमे हमसभ खूब उकियारी भँजैत छलहुँ । दैया आधा रातिक' संठी ल'क' सूप डेङबैत छलीह—

"अनधन लक्ष्मी घर करू, दरिद्राकेँ बहार करू ।"

छठि पावनिमे आर बेसी छहर-महर होइ छलैक । सूप, चङेरा, चालनि, जाँत पर्यन्त धो क' निष्णात कैल जाइत छलैक । जाँत पीसबकाल राना माइक गीत होइत छलैन—'ऊ जे सुग्गा मड़राय ।'

तेहन छनन मनन होमय लगैत छलैक जे सौंसे घर-आङन गमगम क' उठैत छल । चङेराक चङेरा पकवान पोखरिक घाटपर जाइत छल । पवनैतिनसभ भरि छाती पानिमे ठाढ़ि भ' सूर्य देवताकेँ अर्घ दैत छलथिन । भरि भरि कलसूप ठकुआ, केरा, भुसबा, नारियर और कुसियार । पोखरिक भीड़पर ढोल-पिपही बजैत छलैक । घर अयलापर हमरासभकेँ प्रसाद भेटैत छल । नारिकेर भाङल जाइ छल और हम सभ ओकर जल लैत छलहुँ, चरणामृत जकाँ । दैया हमरासभक गरमे लाल बद्धी पहिरा दैत छलीह ।

कोनो-कोनो बात आँखिमे नाचि उठैत अछि । एकदिन सुतले रही कि दैया एक चुरू पानि माथपर छीटि देलनि । हम छिलमिलाक' पड़ैलहुँ । दैया 'शीतल-शीतल' करैत बजलीह—"बौआ ! जुड़शीतलक बासि बड़ी-भात राखल छौह । जल्दी मुँह धो लैह ।"

दैया ननूदाइ आ सावित्रीसँ साँझ-सुसारी पुजबै छलथिन । भ्रातृद्वितीयामे पिठारक ऐपनपर पीढ़ी राखि बहिनसभ हमरा हाथमे पान सुपारी आ कुम्हड़क फूल दय पुजैत छलीह—"यमुना नोतल यमकेँ, हम नोतइछी भाइकेँ ।"

ननूदाइ, सावित्री, विद्यावती, कुसुम, कुमुद आ मालती आदि सभ सखी-बहिनपा मिलिक' रातिमे सामा-चकेबा खेलाइत छलीह और खूब टहकारसँ गीत होइत छल—"जीबू भैया लाख बरीस ।"

मलहुटोलीक मलाहिनसभ तरह तरहक फकड़ा पढ़ि चुगिलाक मुँह झरकबैत छलि । जेना—"भरकटिया गरद, चुगिलाकेँ बियापुता खदबद करह ।"

कहियो काल इजोरिया रातिमे खूब उमंगसँ जट्टा-जट्टिनक खेल होइत छलैक ।

गाममे चारूकात उल्लास छलैक । अन्हरोखेसँ रंग-बिरंगक प्राती उठि जाइत छलैक । "प्रात दरसन देहु गंगा मैया......" "जागहु हे ब्रजराज......" "उठो लालजी भोर भयो है ...." "शिव शिव जपत मन आनन्द ।" बाबूजी प्रातःश्लोक गबैत छलाह—

"जय जय राम सुरासुरसूदन जय माधव जय विष्णो !"

यदि कोनो दिन हुनक स्वर नहि सुनाइ पड़ैत छलैन त लोक पुछारि करय अबैत छलैन—पंडितजी कतहु बाहर त ने गेल छथि ?

× × ×

हमरा घरसँ आधकोस दक्षिण बरैला चौर छल। ओहिमे विशाल कमलदह छलैक। कहियो काल लोक नावपर झिझरी खेलाय जाइत छल। एक बेर हमरो छोटा बाबू और कारी कका अपना संग ल' गेल रहथि। नावमे सतरंजी बिछाओल रहैक। ताश (कोटपीस) होइत रहैक। कुसुम सहनी लग्गासँ नाव खेबैत ल' जा रहल छल। धानक लहराइत समुद्रकेँ चिरैत नाव कमलदहमे प्रवेश कैलक। जहाँ धरि दृष्टि जाइ छल लाल-लाल कमल और हरियर-हरियर पुरैनक पात देखाइ पड़ैत छल। बीच-बीचमे बरेँक छत्ता अलगल छलैक। ललनाक कर्ण-भूषण (झुम्मक) जकाँ। कतहुं-कतहुँ श्वेत कुमुद (भेँट) फुलाएल छलैक। कमलदहक शोभा देखि मुग्ध भ' गेलहुँ।

गाममे पूजा वा भोजभात होइ छलैक त बोझक-बोझ पुरैनिक पात आ कमलक फूल चौरसँ अबैत छलैक। डाकीक-डाकी बरेँ विसाँढ़ सेहो। बरेँक छत्ता खूब सिहतगर लगैत छल। बरेँ-विसाँढ़क तरकारी बनैत छल।

चौरमे अफरात माछ छलैक। ठाम-ठाम बाझामे अरसी-टभका लागल रहैत छलैक और लोक थाहिक' लबैत छल।

बाढ़ि अबलापर उजाहि उठैत छलैक त एक-एक बीहक कबइ हुत्तेँ-बत्तेँ दहाइत खेतमे चलि अबैत छलैक और लोक अदपेँ छापेँ छानिक' ल' अबैत छल। मलहटोलीक मलाहिनसभ भरि-भरि कोहा मोट-मोट अंडाएल माङुर ल' क' अबैत छलि।

तहिना चौरमे रंग-बिरंगक चिड़इ छलैक। मैंठा, अधिङ्गी, बिछौच, सराट, डुम्मर। हाँजक-हाज चिड़इ बड्डीहा पेटियामे विश्राम अबैत छलैक।*

* सैह बरैला चौर छैक, परन्तु ओसभ बात आब स्वप्नक भ' गेलैक। समस्त पुरैनि कमल और जल-फल (बरेँ, विसाँढ़, सारुक, केसौर इत्यादि) सुखाक' पातालक कोरमे विलीन भ' गेलैक। ओ मोट-मोट कबइ माङुर कालक गाङुरमे चलि गेलैक। ओ लाल ठोर बला डुम्मर आब डुम्मरिक फूल भ' गेलैक।

चौरमे केसरिया धान जंगल जकाँ उपजैत छलैक। उपरवारमे सिठरा, बकोल, जागर। कातिकेसँ लोक नवका चूड़ा खाइत छल। अगहनसँ ल' पूस धरि कटनी चलैत छलैक। गामक लोक उमड़ि क' खेतमे चलि अबैत छल। दिन भरि मेला लागल रहैत छलैक।

एक बेर हमहुँ प्रेमनाथ ककाक संग धनकटनी देखय गेल रही। चारूकात धानक समुद्र लहराइत छलैक, कतहुँ दौनी होइत छलैक, कतहुँ गार पुआरक टाल लागल छलैक। पौनी-पसारी सेहो खेत-खरिहानमे घुमैत छल। सभकेँ अँटिया-मुठिया भेटैत छलैक। तमोली पान ल' क', माली माला ल' क' अबैत छल, नट डोल पर अल्हा गबैत छल—'आखिर राम करे सो होग, एक दिन सबको मरना होगा।'

हम अपना खरिहानपर गेलहु तँ बटाइदार पोआरपर बैसोलनि। कोल्हुआरमे कुसियार पेराइत छलैक। एक लोटा रस पिउलहुँ। प्रेमनाथ कका प्रेमसँ गोइठापर लिट्टी और साना बनौलनि। बुझौना एकटा मोट सौरा पकड़ि क' ल' आएल। हम खेतसँ हरियर मिरचाई तोड़ि लैलहुँ। माछक साना बनल। ओ लिट्टी आ साना एखनो धरि मन अछि।

घर लग पोखरिमे मछहर होइत छलैक तँ बड़का-बड़का रोहु बोआरीसँ ल' पोठिया इचना पर्यन्त पथार लागि जाइत छलैक। सभकेँ कूड़ी लगाक' बाँटल जाइत छलैक। ओहि दिन सौंसे टोल माछ-भात खा क' अघा जाइत छल।

बटबरवा आ' चरबाडीहमे गोकुल जकाँ दूध-दहीक धार बहैत छलैक। सैकड़ो थैल दूध दूहल जाइ छलैक। पातिलक पातिल माखन मथल जाइ छलैक। गरीबो लोक भरिछाक मट्ठा पीबिक' मस्त रहैत छल। ओहि ताव पर गामक छौँड़ा सभ दंड-बैसकी करैत छल।

चौठचन्द्रक प्रात (चकचानन)मे खीरपूड़ीक जोश पर दंगल होइत छलैक। ओहिमे सभ अपन-अपन जोड़ा लगाक' कुश्ती लड़ैत छल—शिबुआ, मंगला, दनिया, गुरुआ......।

कहियो काल पोखरिपर लखौरी महादेवक पूजा होइत छल, कहियो अष्टयाम कीर्तन, कहियो भागवत। कहियो रामलीला होइत छलैक त मास भरि चलैत छलैक। हम सभ भरि-भरि राति जागिक' लीला देखैत छलहुँ। धनुर्भंग, सीता-स्वयंवर, लंका-दहन आदि देखबामे खूब मन लगैत छल।

गाममे भरि वैशाख ठाम-ठाम पनिशाला चलैत छलैक। एकटा हमरो इनार पर छल। जे राही-बटोही अबैत छलाह, तिनका एक-एक आँजुर अंकुरी आद-नोनक संग पानि पियाओल जाइत छलैन। हमर इनारक सामने पक्की सड़क पर एक झमटगर पीपरक गाछ छलैक। रवि और बृहस्पति दिन बड़ौहा पेठिया जायवला बहुत लोक ओतय छाहरिमे बैसि क' सुस्ताइत छलाह और शीतल जल पीबि क' जाइत छलाह।

जेठ-अषाढ़मे तरेक आम फरैत छलैक जे गाछीवलासभ बाट चलैत लोक कें बजा क' आम खोअबैत छलथिन और किछु संगो क' दैत छलथिन।

गामसँ कोस भरि पच्छिम उभैठ गाममे शिवरात्रिक मेला लगैत छलैक। आबाल-वृद्ध-वनिता लोटा नेने महादेवपर जल ढारय जाइत छल। सड़क पर लोकक धरोहि लागि जाइत छलैक। हमहू अपना टोलक जमातक संग जाइत छलहुँ। मेलामे एक दोसरक आङुर ध' क' घुमैत छलहुँ।

मेलामे रंग-बिरंगक वस्तु बिकाइत छलैक। झिल्ली, बड़ी, कचरी, जिलेबी""। मनूदाइ, सावित्री आदि हनुमानचलीसा, दानलीला, नागलीला लैत छलीह। मौनकिया, छहोरिया आदि खुदिया चमकी टिकुली बिंदी लैत छलि। बहिनदाइ प्रसाद और सनेस बाँटक हेतु वैरचून पेड़ा, मुरही, लाइ, बताशा लैत छलीह। सभ वस्तु मोटा बान्हि क' गरभी (पनिभरनी)क माथ पर राखि देल जाइ छलैक। हम तीन भाइमे नकली बन्दूक लैत छलहुँ। शिबुआक कान्ह पर चढ़ल मोजसँ सीटी बजबैत, फटाका छोड़ैत गाम अबैत छलहुँ। आइमाइ सभ महादेवक गीत गबैत अबैत छलीह—

"बमबम भोला हे कृपाल!"

× × ×

बाल्यावस्थाक असंख्यो स्मृति सावनक घटा जकाँ उमड़ि अबैत अछि।

फगुआसँ एक मास पहिलहिसँ (बसंत पंचमीएसँ) धनुषधारी मिश्रक डंफ बाजि उठैत छल और फाग शुरू भ' जाइत छल—

'रामजी के हाथ कनक पिचकारी,
सियाजी के हाथ अबीर।'

गाछी-टोलमे सभ राति होरी गाओल जाइ छल।

फगुआ दिनसँ कोनो कथे नहि। पोखरिक मोहार पर तेहन ऊँच संवत् फुकाइत छलैक जाहिमे साल भरिक जगड़ा-झाँटी जरिक' भस्म भ' जाइत छलैक। सभ लोक धुरखेल करैत, रंग उड़बैत, एक दोसराकेँ अबीर लगबैत, पिचकारी छोड़ैत, हास्यविनोद करैत छल। सम्पूर्ण मंडली एक संग मिलि डंफ, झालि, मजीरा बजबैत, धमार गबैत, होलैया पढ़ैत, दरबजे-दरबजे घुमैत छल। रंग-अबीर, मेवा-मसाला, पुआ-बड़ी पबैत छल और घरबैयाकेँ आशीर्वाद दैत आगा बढ़ैत छल—

"सदा आनन्द रहे एहिद्वारे,
मोहन खेले फाग हो।"

अन्तमे कर्त्तारक मठमे सौंसे गामक चौपटिया मिलान होइत छल, जाहिमे हमर टोल, पुबारिटोल, गाछी और कुसाही, चारूटोल सम्मिलित भ' फगुआक उत्सव मनबैत छल।

इनारपर बाल्टीक बाल्टी ठंढइ-शर्बत घोरल जाइत छल, बादाम और गुलाबजल द' क'। लोक लोटे-लोटे पीबि क' मस्त भ' जाइत छल। भरि राति बसंत बहार चलैत छलैक और प्रात होइतहि चैतावर शुरू भ' जाइत छलैक—

"चैत मासे कुहकइ कोइलिया हो रामा!"

× × ×

आबहु फगुआ अबैत छैक, आबहु कोइली बजैत छैक, आबहु उभैठक मेला लगैत छैक, परन्तु आब ओ उल्लास कहाँ! ताहि दिन दोसरे उमंग रहैक। सभ दिन होली, सभ राति दिवाली! समय जेना मयूरक पाँखि लगा क' नचैत चलैत छलैक। लोक मस्त छल। सस्तीपर मस्ती छलैक।

ओ अन्नपूर्णा-युग छल जाहिमे एक टकामे सोलह सेर चाउर भेटैत छलैक।

एहि प्रसंगमे एकटा बात मन पड़ैत अछि। एक बेर बाबूजीक कंतोरमे एकटा साबिक पैसाही पोस्टकार्ड देखने रहिऐन जे गोपीनाथ बाबा १९०१मे हुनका मुजफ्फरपुरसँ लिखने रहथिन""'एखन कोनो अन्न टकामे पाँच पसेरीसँ अधिक नहि भेटैत छैक। एहन दुर्भिक्ष (?) मे गरीबक गुजर कोना हेतैक?"

(यदि आइ ओ बाबा जीवित रहितथि त पता नहि, एहि युगकेँ देखि क' की कहितथिन, जखन सभ अन्न पसेरी सँ कनमा पर आबि गेल छैक।)

ओ क्षीर-युग छल जाहिमे एक टकाक दू पसेरी (सोलह सेर) दूध भेटैत छलैक, जाहिमे टकाक सेर भरि शुद्ध घृत भेटैत छलैक।

ओ मेवायुग छल जाहिमे टकाक एक अढ़ैया गरी-छोहारा-किशमिश भेटैत छलैक। ओ स्वर्णयुग छल जाहिमे बाइस रुपये भरी शुद्ध सोन भेटैत छलैक।

आब कि एहि जीवनमे फेर कहियो ओ स्वर्णयुग, ओ क्षीरयुग, ओ अन्नपूर्णायुग घुरिक' औतैक ! आब ओ दिन कोनो कल्पना-लोकक कथा जकाँ, कोनो सुखद स्वप्न जकाँ बूझि पड़ैत अछि।

यदि कालचक्रक सिनेमा पाछा दिस घूमि सकितैक त हम भगवानसँ प्रार्थना करितिऐन जे एक बेर फेर ओहि इन्द्रधनुषी फिल्मक रील चलाक' देखा दिय।' परन्तु बीतल दिन कि फेर अबैत छैक ? प्रत्यायान्ति पुनर्गताः न दिवसाः !

ओ युग जे देखलनि से देखलनि। जे नहि देखलनि से आब कहियो नहि देखि सकताह।

ते हि नो दिवसा गताः !!

३

ओ लोक

(गामक समाज)

गाममे एकस-एक जीवंत महाप्राण लोक छलाह।

दछिनबरिया ओहपर छलाह प्रेमनाथ कका।* ओ जखन माछ-भात खाय बैसैत छलाह त हमरा सोर क' लैत छलाह।

हम अपन लोटिया-छिपली नेने दौड़ि जाइत छलहुँ। ओ खदकैत कड़ाहीसँ बाबा हाथे करछु ल' क' एक-एक खंड माछ हमरो आगाँ देने जाइत छलाह। ओ लाल माछ एखन धरि मन अछि। झोर खाइ, नोर बहय। घोंटे-घोंटे पानि पीबय पड़य। तथापि छोड़ैत नहि बनय।

प्रेमनाथ कका सापक मंत्र जनैत छलाह। दूर-दूरसँ कारणी अबैत छलैन। ओ भूमिपर तीन टा रेखा खीचि दैत छलथिन, और पाटी चलबैत मंत्र पढ़ैत छलथिन—

"आरे-आरे तोप चले, हारे-हारे ताँ चल
बाम चल कि दहिन चल........."

हुनकर हाथ ससरय लगैत छलैन। यदि बाम वा दहिन दिस नहि वा सोझे चलि आइत छलैन तँ मंत्र पढ़ि आइब लगैत छलथिन—

"तोखर काटय गिर पड़े, गहुमन काल बेकाल
बिसहरा रक्षा करय, दोहाइ गौरा पार्वती"..........

---

* ओ बाबूजीक ममियौत छलथिन, अथाची मिश्रक संतान, मात्र छौ कट्ठा ब्रह्मोत्तर भूमिसँ अपन निर्वाह करैत छलाह। ओ विवाह नहि कैलनि आजीवन अन्धान्ध माताक सेवा करैत रहलाह। हुनका मायकेँ हम 'मौसी' कहैत छलिऐन।

राति-बिराति कतहु ककरो कोनो विपत्ति पड़ौक त ओ तुरंत पहुँचि जाइत छलथिन । ओ 'हातिमताइ' पढ़ैत छलाह और ओकरे जकाँ बेसी अनके खातिर जिबैत छलाह ।

मौसी हमरासभकेँ 'डेढ़बितना' आ भूत-प्रेतक बहुत रासे खिस्सा कहैत छलीह । हम हुनका माछक चमकल अंशी बीछिक' आनि दैत छलिऐन, ओ बहुत आशीर्वाद दैत छलीह ।

ओही डीहपर छलाह महेन्द्र कका । ओ मनमौजी बादशाह छलाह । हुनका कलमबागक मालदह आम आ फलेना जामुन नामी छलैन (जे बेसी परोपकारेमे जाइत छलैन ।) ओ 'ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्' करैत छलाह । जखन हाथ पर रुपैया रहैत छलैन तँ लोककेँ केसर-कस्तूरी बँटैत छलाह । जखन हाथ खाली भ' जाईत छलैन तँ अपना लोटाकेँ उनटाक' पेंदीपर तबला बजबैत गजल गाबय लागि जाइत छलाह—

"सिकंदर जबकि जाता था तो दोनो हाथ खाली थे ।"

एकदिन हमरा आङनमे भोजन करैत रहथि । हमर माय पुछि देलथिन—"देवा बाबू ! सभटा जमीन किएक बेचने जा रहल छी ?" ओ खाइत-खाइत भभाक' हँसि पड़लाह—"भौजी ! भूमि ककर होइत छैक ? ई जमीन हमर बाप-दादाकेँ खा गेल । आब हम एकरा खाक' जैबैक,"'लाउ, दही दिय ।"

एहन मस्त आ निर्विकार छलाह महेन्द्र कका । ओ तेहन मनोरंजक विनोदी लोक छलाह जे सभ हुनकासँ चौलि करैत छलैन । परन्तु हुनका लेखेँ धन सन ! ओ अपना धुनमे मस्त रहैत छलाह—

"जिनके महलों में हजारों झाड़ औ फानूस थे
आज उनकी कब्र पै बाकी निशा कुछ भी नहीं ।"*

हमरा घरसँ पूब छलाह राजीवनयन कका (जिनका हम 'बड़का कका' कहैत छलिऐन) । ओ धनबादक कोलियरीमे इन्सपेक्टर छलाह । खूब चलती छलैन । गामक लोककेँ नोकरी लगा दैत छलथिन । गाम अबैत छलाह त लोकक मेला लागि जाइत छलैन । जे धनबाद जाइत छलाह से मासक-मास हुनका डेरापर जिलेबी कचरैत छलाह ।

हुनकर ओ ऐश्वर्य मनमे अंकित अछि । दरबाजा पर बड़का टा उज्जर रंगक घोड़ा । नोकर-चाकर खबास-खबासिन, (लोभी साहु, मुखिया माय आदि)

---

* हुनकर ई उक्ति अक्षरशः चरितार्थ भेलैन । आइ ओहि डीहपर हुनकर आ प्रेमनाथ ककाक नामोनिशान-नहि छैन ।

सभक पाँचो आङुर घीमे रहैत छलैन । परन्तु ओ स्वयं कमल-पत्र जकाँ निर्लिप्त रहैत छलाह । तेहन-तेहन ज्ञानक बात कहै छलथिन जे लोककेँ गप्प छोड़िक' उठबाक मन नहि होइत छलैक । हुनकर वचन अमृत सन होइत छलैन । (हुनका सन कोमल मधुरभाषी हमरा जीवनमे दोसर नहि भेटलाह । ओ हमरा मनकेँ बहुत प्रभावित कैलनि ।)

हुनकर छोट भाइ छलथिन शशिभूषण कका (जिनका लोक 'छोटाबाबू' कहैत छलैन) । ओ नवयुवक दलक नेता छलाह । राजकुमार जकाँ रहैत छलाह । ओ हमरासभ (बालमंडली)केँ मैदानमे फुटबौल खेलक हेतु ल' जाइत छलाह । ओतय दुनू कात (गोलपोस्टक खंभाक स्थानमे) दू-दू टा लड़काकेँ ठाढ़ क' दैत छलथिन । परन्तु जहाँ गेंद लगमे अबैत छलैक कि फुटबॉल कबड्डी बनि जाइत छल । हुनका दरबाजा पर बहुत राति धरि ग्रामोफोन बजैत रहैत छलैन—'मेरा नाम जानकी बाई, इलाहाबाद ।' हमरा ओतय बैसबामे खूब मन लगैत छल ।

बड़का ककासँ दक्षिण छलाह—उपेन्द्र कका (मास्टर साहेब), ओ मुजफ्फरपुर कॉलेजिएट स्कूलमे मास्टर छलाह) । जखन छुट्टीमे गाम अबैत छलाह, तखन बाबूजीक संग चौपर खेलाइत छलाह । कहियो-कहियो 'पौ-बारह' करैत करैत रातिमे बारह बाजि जाइत छलैन ।

दक्षिण भर अवधभूषण कका (डाक बाबू) छलाह जिनकर दरबाजापर डाकखाना छलैन । ओ डाक्टरी (होमियोपैथी) सेहो करैत छलाह । ओ यथार्थवक्ता आलोचक छलाह । हुनकर टिप्पणी गूढ़ आ' मार्मिक होइत छलैन । हुनकर सूक्ष्म व्यंग्य तेहन कटगर होइ छलैन जे बेस तीख-चोख आ चटकार लगैत छल । हुनकर गप्प सुनबाक हेतु लोकक भीड़ लागल रहैत छलैन । बाबूजी हुनका ततेक मानैत छलथिन जे सभ काजमे हुनकर विचार पूछि लैत छलथिन ।

हुनकर अनुज (व्रजभूषण कका) मुजफ्फरपुर धर्म-समाज विद्यालयमे छलथिन । ओ तेहन संयमी छलाह जे बकरीक दूधक दही पौरि क' खाइत छलाह । (ओ अल्पे वयसमे दिवंगत भ' गेलाह) ।

हमर घरसँ पश्चिम छलाह पं० विश्वनाथ झा कविराज (जे पं० द्रव्येश्वर झाक पुत्र छलथिन) । ओ आयुर्वेदाचार्य छलाह और पटनामे कुशल वैद्यक रूपमे ख्यात छलाह । ओ गाम अबैत छलाह त चङेराक-चङेरा धात्री हुनका ओहिठामसँ जाइत छलैन और ओ च्यवनप्राश बनाक' बाबूजीकेँ द जाइत छलथिन।

'ककाजी ! धारोष्ण गो-दुग्ध संग सेवन कैल जाओ ।'' ओ बहुत दिन धरि सोतिपुरामे रहल छलाह, जकर विशेष प्रभाव हुनक आचार-विचारपर छलैन । हुनकामे केहन सौजन्य एवं शिष्टता छलैन तकर एक दृष्टान्त लिय ।

एक बेर ककरौतें एकटा माछक खातिर झगड़ा भेलैन । ओ कहलकैन— 'हम सिर देब आ' सिर लेब ।'

कविराजजी पूजापर बैसल रहथि । जल्दी-जल्दी गायत्री-जप समाप्त क' आचमन करैत कहलथिन—''औ बाबू ! एखन हमरा चारू धाम तीर्थाटन करब बाँकी अछि । हम सिर नहि देब । जाउ, माछे काटिक' ल' जाउ ।''

कविराजजीक छोटभाइ छलथिन पं० आर्त्तनाथ झा । ओ लौकिक व्यवहार (दर पंचैती, मामिला-मोकदमा आदि) और वार्तालापमे तेहन चड़फड़ छलाह जे 'चतुरो निशान्तः' कहबैत छलाह । (कुमर-वंशावलीमे देल ई विशेषण गाममे प्रसिद्ध भ' गेल छलैन ।)

ओ सभा-रोशन लोक छलाह, तें सामाजिक कार्य (भोज-भात, बरियात आदि)मे सभसँ पहिने हुनके खोज होइत छलैन ।

जकरा कचहरीक काज पड़ैत छलैक तकरा ओ हाजीपुर वा मुजफ्फरपुर ल' जा' क' वकीलसँ काज करा दैत छलथिन । एहि सभसँ ओ खूब लोकप्रिय छलाह ।

ओ दही आ मधुरक अधिक प्रेमी छलाह । तें भोजमे सभसँ बेसी आग्रह हुनके होइत छलैन । ओ उचितवक्ता स्पष्टवादी छलाह । हँसी-हँसीमे कहैत छलथिन—'जकर खेबैक, तकर गेबैक, जतेक खेबैक, ततेक गेबैक, जेहन खेबैक, तेहन गेबैक, यावत् खेबैक, तावत् गेबैक ।' हुनकर उदात्त हकारसँ लोक बुझि जाइत छलैन जे आइ कतहु नीक भोज छलैन । जहिया ओ पूर्ण तृप्त रहैत छलाह, तहिया चारिए बजे रातिमे उठि रेघाक' प्रेमपूर्वक स्तोत्र गाबय लागि जाइत छलाह—'भजत रे मनुजाः गिरिजापतिम्' !

पोखरिक पुबारिकातमे छलाह पं० श्यामनारायण कका । ओ काशीमे म० म० मुरलीधर झासँ ज्योतिष पढ़ने छलाह । ओ वाजी स्कूलमे संस्कृतक शिक्षक छलाह । कथा-पुराण कहबाक शैली तेहन सरस आ रोचक छलैन जे एक बेर माघक एकादशीक उद्यापनमे हमरा सभकें भरि राति जगौने रहि गेलाह । ओ बाबूजीकें विनयपूर्वक कहैत छलथिन—''भाइसाहेब !, हमरो किछु सेवा करबाक आज्ञा देल जाय ।'' ओ तेहन कर्मनिष्ठ छलाहजे अनुक्षण कोनो ने

कोनो कार्यमे लागल रहैत छलाह, ककरो निन्दा करबाक प्रवृत्ति वा फुरसति हुनका नहि छलैन ।

कारी कका (पं० जीक छोट वैमात्रेय, रामरत्न कुमर) आनन्दमूर्ति छलाह । तेहन हँसमुँह आ प्रसन्नचित्त जे सभकें आनन्दित क' दैत छलथिन । तेहन सहमिलू जे आबाल-वृद्धवनिता सभक प्रिय छलाह । ओ पटनामे आयुर्वेद पढ़ैत छलाह । गाम अबैत छलाह तँ हमरा सभकें खूब स्वादिष्ट पाचक खोअबैत छलाह ।*

पं० जीक समीप नंदकिशोर कका छलाह । ओ लाखमोहन स्टेटमे मोसम्मात (दुलहिन)क मैनेजर छलाह । ठोलमे सरदार मानल जाइत छलाह । गाम अबैत छलाह त हुनका लोक पंच बना क' ल' जाइत छलैन । आरि-धूरक तकरारसँ लय खाँप-चहुक झगड़ा पर्यन्तमे । ओ तेहन इंसाफ करैत छलाह जे दूधक-दूध पानिक-पानि क' दैत छलथिन । एकबेर चम्पा पोसीक मचान परसँ केओ कदीमा तोड़िक' ल' गेलैन; ओकरा बदलामे ओकर गोड़ुल्ला परक कुम्हड़ हुनका देबा देलथिन ।

हुनक पुत्र उमाकृष्ण बाबू पातेपुरमे पोस्टमास्टरी करैत घरपर खेती देखैत छलथिन । हुनका दलानपर पचीसीक चौपड़ी जमैत छलैन । टोलक युवकवृंद (कृष्णकान्त, हरिकान्त, लक्ष्मीकान्त, बैजू, हेमकर, गयानाथ, शिवजी, मदनजी प्रभृति) ओकर प्रमुख सदस्य छलाह । ओ सभ तेना जोशमे आबि जोर-जोरसँ सिंहगर्जन करय लगै छलाह जेना जुड़शीतलमे खरहाक शिकार क' रहल होथि ।

हुनका घर लग सुखदेवजी छलाह, जिनका ओतय शतरंजीपर बराबरि शतरंज पसरल रहैत छलैन । ओहासँ अभ्यागतक स्वागत होइत छलैन ।

अवध किशोर कका माछक तेहन भक्त छलाह, जे हमसभ 'माछकका' कहैत छलिऐन । ओ लोककें कहैत छलथिन—''ओहिकाल (अन्तिम समयमे) गंगाजलक संग कनेक ओहो चरणामृत (माछक झोर) मुँहमे ध' देब जाहिसँ यात्रा बनि जाय ।''

योगी कका कर्मयोगी छलाह । दिन भरि खेतमे खटैत छलाह और सायंकाल इनार पर स्नान कय शिवजीक बूटी छनैत छलाह । हुनका अखाड़ापर

---

* बादमे ओ अपन सासुर (बहेड़ी)क समीप रोसड़ामे औषधालय खोलि चिकित्सा करय लगलाह । खेद जे युवावस्थेमे हुनक जीवनलीला समाप्त भ' गेलैन ।

गामक दैनिक समाचार प्रसारित होइत छल। "आइ दमिया मलाह एकटा भारी नट पहलवानकेँ पछाड़लक अछि। महंथजीक हाथी चौरक दलदलमे फँसल छैन। मन्नूलाल बाबाक ओतय एक बनारसी हलुआइ आयल छैन, ओ अंचार बनेबाक हेतु अकौनक पात ओढ़ने भेल फिरैत अछि।" एहन एहन गप्प श्रोता सभकेँ खूब चहटगर लगैत छलैन।

राधाकान्तजी पटनामे रहि पूजापाठ करैत छलाह। जखन अबैत छलाह त किछु प्रसाद (पेड़ा, बताशीदाना) नेने अबैत छलाह। ओ बराबरि ई श्लोक पढ़ैत रहैत छलाह जे 'स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः।' आङन अबितहि मायकेँ पुछैत छलथिन—"की काकी, की बनि रहल छैक?" भँटबर वा दहिबरक नाम सुनितहि हुनक जीभ पनिया जाइत छलैन। तखन मायेँ पुर्वेहि कहि उठैत छलथिन—"वाह! काकी हुइ क' देलथि!" बाबूजी हुनका 'भोजनानन्द' कहैत छलथिन। ओ जखन अबैत छलाह, मायकेँ पुछैत छलथिन—"कहू काकी, गंगास्नान कहिया चलब?" एहि सभ काजमे हुनका अत्यन्त उत्साह रहै छलैन। ओ अबितहि सभकेँ आनन्दित क' दैत छलाह।

बाबूजीसँ भेँट करक हेतु आनोआन टोलक व्यक्ति अबैत रहैत छलथिन। पुबारिटोलक पं० कुशेश्वर कुमरकेँ हुनकासँ विशेष अपेक्षा-भाव रहैत छलैन। ओ बहुधा आनिक' अपन मैथिली पद्य ('स्त्री-कर्त्तव्य-शिक्षा' आदि) बाबूजीकेँ सुनबैत छलथिन।*

पुबारिटोलक जमींदार बच्चूबाबू, भुट्टूबाबू, प्रभृति बहुधा आबि क' बाबूजीक खोज-पुछारी क' जाइत छलथिन।**

कहियो काल सतलाल बाबा और महाकान्त कका शतरंज खेलाय अबैत छलथिन। कहियो संतीलाल बाबा कोनो घटकैतीक प्रसंग ल'क' अबैत छलथिन।

---

* ओ 'कृत्यमंजरी', 'व्यवहार-मंजूषा' आदि अनेक पुस्तकक रचयिता छलाह। हुनक ऐतिहासिक कृति 'कुमर वंशावली' आब दुष्प्राप्य भ' गेल छैन। हुनक सुपुत्र नगेन्द्र कुमरजी (जे मैथिलीक लोकप्रिय कथाकार छथि) ओकर पुनः प्रकाशनक हेतु प्रयत्नशील छथिन।

** बच्चू बाबूक सुपुत्र प्रो॰ नित्यानन्द कुमर ('राजा') १८।१२।१९६६केँ राम दयालु सिंह कालेज मुजफ्फरपुरमे शहीद भ' गेलथिन। ओहि स्थान पर हुनक स्मारक बनल छैन।

कुमाहीटोलक जमींदार बाबू शिवनाथ मिश्र बाबूजीक दोस्त छलथिन। ओ आबिक' बाबूजीसँ धार्मिक ग्रन्थ (विशेषतः वैष्णव संप्रदायक) ल' जाइत छलथिन। ओ हमरा सभकेँ श्राद्धक खीर-आम और नवान्नक भोज (दही-चूड़ा-चीनी) खोअबैत छलाह।

गाछीटोलक उदीयमान कवि जटाधर मिश्र 'विकल' अबैत छलाह तँ कोमल कंठसँ सुकुमार छायावादी कविता गाबिक' सुना जाइत छलाह।*

× × ×

गामक पंडित लोकनि (बाबूजी, श्यामनारायण कका, कुशेश्वर कका, पं० परशुराम झा प्रभृति) कत्तीर मठमे 'धर्मसभा' स्थापित कैने छलाह। ओहिमे समय-समयपर पर्वक निर्णय आ धार्मिक कृत्यक विचार होइत छलैक। एक बेर रविषष्ठी व्रत (छठि) ल'क' घनघोर विवाद भेलैक जे पूर्व दिन अर्घ्य हो वा पर दिन। एकमत नहि भ' सकलैक। परिणामस्वरूप 'दु-दिना' भ' गेलैक। देसुआक एहि पार रवि दिन, ओहिपार सोम दिन। ओही आधार पर गाममे दुगोला भ' गेलैक। दुनू टोलमे हुक्का-तिहार बंद भ' गेलैक। बहुत दिन धरि छुट्टा-छुट्टी रहलैक।

जाहि दिन जे एकादशाह (श्राद्ध)क भोज करैत छलाह तिनकर एको वस्तु बाँकी नहि रहैत छलैन। भोजीसँ जिनका कोनो बातक अखज रहैत छलैन से सबटा कान्हि ओही अवसर पर सधबैत छलथिन। पुरान-पुरान बखिया उघाड़ल जाइत छल। किओ करावय आइत छलैन त' किछ गोटे अड़ि जाइत छलाह जे 'यावत् धरि कर्त्ता स्वयं आबिक' पैरपर नहि खसताह तावत् खाय नहि दैबैन।' मान-मनौअलि होइत रातिमे एक दू बाजि जाइत छलैन। जखन सभ केओ आबि जाइत छलाह और केओ बाँकी नहि रहैत छलाह, तखन सभ लोक पैर धोएबाक हेतु उठैत छलाह। फलस्वरूप हाथ धोइत-धोइत चौआ बाजि जाइत छलैक।

एक बेर एकटा ब्राह्मणकेँ समाज बारि देलकैन। हुनकापर आरोप रहैन जे ओ रातिमे चुपचाप अपने हाथेँ हर जोति लैने छथि। हुनकर धोती

---

* 'विकलजी' चौबीसे वर्षक अवस्थामे सभकेँ विकल करैत विदा भ' गेलाह। हुनकर भातिज रामसेवक मिश्रजी (जे पातेपुर हाइ स्कूलमे प्रधानाध्यापक छथि) हुनका नामपर गाममे 'विकल पुस्तकालय' स्थापित कैने छथिन।

हुजाम बन्द भ' गेलैन। परन्तु केओ प्रत्यक्षदर्शी साक्षी नहि छलथिन। अभियोग सिद्ध नहि भ' सकलैन। तथापि ओ बारले रहलाह। गाममे उत्तेजना भेलैक। तखन चिकनीटोलक पं० किशोरी झा बजाओल गेलाह। हुनकासंग एक भार धर्मशास्त्रक पोथा ऐलैन।

पंडितजी दुनू पक्षक बयान सुनि निर्णय देलथिन जे 'लोकापवादजन्य पापक प्रायश्चित्त कराओल जाइन।' ओहि ब्राह्मणकें विधिवत् टीक कटाय प्रायश्चित्त करय पड़लैन। बाइस पसेरी भातक भोज देबय पड़लैन। तखन जाक' शुद्ध भेलाह। ताहि दिन समाजक एहन कठोर अनुशासन छलैक।

ताहि दिन धर्मक एतेक विचार छलैक जे ककरोसँ कोनो गुप्त पाप भ' जाइत छलैक त' ओ स्वयं पंडितक ओतय जा धर्मशास्त्रक अनुसार प्रायश्चित्तक व्यवस्था ल' अबैत छल।

गाममे कोनो झगड़ा होइत छलैक तँ बहुधा अपना टोलक बौएलाल कका, पुबारिटोलक श्यामजी कका, कुसाहीक रामजीबाबू, गाछीटोलक रामनन्दन मिश्र आ कर्त्तारिक हीरास मिश्र प्रभृति मध्यस्थ भ' पंचैती क' दैत छलथिन। ककरो ओतय कोनो काज-प्रयोजन, भोज-भात होइत छलैक त' सभ अपन-अपन टोकना, शतरंजी, जाजिम, आदि पठा दैत छलथिन।

एक गोटाक कुटुम्ब गामभरिक कुटुम्ब बूझल जाइत छलाह। यदि किनको ओतय बेर-कुबेर कोनो पाहुन आबि जाइत छलथिन त' पड़ोसिनक घरसँ चुपचाप पठुआर बाटें दही, अमौट, अँचार, पापड़ आदि पहुँचि जाइत छलैन।

स्त्रीगणमे ततेक मर्यादाक विचार छलैन जे विधि-व्यवहारमे कोनो त्रुटि नहि होमय दैत छलथिन। द्विरागमनक पीसी आँठल जाइत छलैक त' समाजो पीसी, छरेहमनि पीसी प्रभृति आबिक' समालोचना करैत छलथिन—"मसालामे शीतलचीनी, कबाबचीनी नहि अछि। टेढ़-टेढ़ अहिबकक फर बहारक' दिऔक" इत्यादि।

ताहि दिन स्त्रीगण अपन स्वामी, सासुर वा सासुरक नाम नहि ल' सकैत छलीह। विद्यावती पीसीक पतिक नाम 'राम' पर छलैन (रामगुलाम) तेँ ओ रामदानाकें 'श्यामदाना' कहैत छलथिन। मालती पीसीक सासुर छलैन भरिया विष्णुपुर, तेँ ओ 'भरिया' शब्द नहि बजैत छलीह। ननूदाइक ससुरक नाम छलैन नन्दलाल झा आ सावित्रीक ससुरक नाम छलैन दशरथ मिश्र।

तँ हम जानि बूझिक' हुनका दुनू गोटाकें ई प्राती गाबय कहैत छलिऐन—

'जागहु राम कृष्ण दोउ मूरत,
दशरथ नन्द दुलारे।'

ओसभ मायकें कहैत छलथिन—"देखैत छहुन ? बौआ कचकचबैत छथि।"

ओहि समय एकटा तेहन पंचैतीक दृश्य देखबामे आएल रहय जे आजुक लोककें विश्वास करब कठिन हेतैन। बड़का दलानमे पंच लोकनि बैसल रहथि, गम्भीर मुद्रामे, जेना समाजपर कोनो घोर संकट आबि गेल हो। बीचमे एक लाम्हिटा कागज राखल रहैन। एक पंच बजलाह—"ई तँ रक्ष रहल जे ई चिट्ठी एही ठाम रहि गेल, नहि तँ केहन भारी अनर्थ होइत !" दोसर-दोसर गोटा जे ऊँच मुरेठा बन्हने रहथि अनुमोदन कैलथिन—"एहमे कोन सबक ? सौंसे गामकें नाक कट जाइत। आब ऐसन बंदोबस्त होबे के चाही जे फेर आइंदा कोनो लड़की ऐसन काम न' कर सके।"

बात ई रहैक जे एकटा नवविवाहिता कन्या अपना सासुरमे स्वामीक नामसँ 'प्रिय प्राणनाथ' क'क' पत्र लिखने रहय। ओ आँचरमे लिफाफ नुकाक' चुपचाप लेटर-बक्समे खसाबय जाइत छलि। ओहीकाल कोनो पंचक नजरि पड़ि गेलैन। ओ चिट्ठी ल'क' पंचायतमे पेश क' देलथिन। ओ कन्या त पतनुकान ल' लेलक। पिताकें बजाक' पाँच पसेरी सुपारी जुर्माना कैल गेलैन। ओही दिनसँ ओहि कन्याक पढ़ाइ बंद भ' गेलैक।

गाममे कतहुसँ बरियात अबैत छलैक तँ ओकरा शास्त्रार्थमे हरैबाक हेतु समस्त गौआँ एकजुट भ' जाइत छलाह। सरियाती लोकनि येनकेनप्रकारेण (छल-बल-वितंडा पर्यन्तसँ) बरियातीकें परास्त क'क' छोड़ैत छलाह। एक बेर गाछीटोलमे कोनो गामसँ बरियात आएल रहैक। बरियातीक दिससँ रामायण पर प्रश्न भेलैक—

'मशक समान रूप कपि धरी।'

'अब ई बोलू जे जब महावीरजी मच्छरके रूप धारण क' लेलन तब सीताजीवला मुद्रिका (औंठी) कऽ कहाँ रखलन ?'

सरियाती दिससँ किनको जवाब नहि फुरलैन। जेठरैयत तुरंत हुकुम देलथिन—'जल्दी से दौड़क' पं० आरतीनाथ ओझाकें बोला लबहुन।' परन्तु ओ गामपर नहि छलाह। तखन कौतुकजीक खोज भेल। भैयाक बाद

हुनके मन्वर रहैन। तुरन्त सिपाही छूटल। दौड़ादौड़ी जाकें कहलकैन—"आदस दहाँ कमेली कतर रहल हती, उनने गाँव हारे पर है। जल्दी झटकके चलियौ।"

कौतुकजी एक फक्का कतरा मुँहमे दैत कहलथिन—'जखन हम गाममे छीहे, तखन बरियात औतिक' कोना जा सकैत अछि ?'

आ महफिलमे पहुँचि सुव्यस्त भ' पुछलथिन—"की औ बाबू ? की प्रश्न छिकैक ?"

प्रश्न सुनैत देरी ओ एक भरिगर चुटकी नोसि नाकक डुबू पूरामे लेलनि, तावत् जवाब फुरि गेलैन। प्रश्नकर्ताकें रङैत कहलथिन—'दुरजी ! अहाँकें एतबो नहि बूझल अछि ? एहिठाम 'मशक'क अर्थ छैक पानि भरयवला 'मशक' ओहिमे एकटा के कहय हजारो मुद्रिका समा जाएत। आनशाक बोध दितौक। एही बुद्धिपर शास्त्रार्थ करय ऐलहुँ अछि ? धा दुरजो !"

बरियाती निरुत्तर भ' सकदम्म रहि गेलाह। सरियाती दिससँ तेहन पिहकारी पड़ल जे सौंसे महफिल गूँजि उठल। गामक जयजयकार भ' गेल। कौतुक जीकें ततेक मधुर खोआओल गेलैन जे दू दिनधरि बालुसाहिएक ढेकार होइत रहलैन।

ताहि दिन खूब जयवारी भोज होइक। जयवारी भोजमे केहुनिया खाजा और ढेड़-सेरा लड्डू बनैक। मालपुर, कोठिया, मड़ड़, मौदह आदि गामसँ चारि-चारि कोस पैदल चलिक' लोक भोज खा करैत छलाह। खाजाक अर्थ होइत छलैक 'खा जा' ओर दहीक अर्थ 'दही'। एकबेर हमहुँ अपना टोलक संग जयवारी भोज खाय लेल मौदह गेल रही। बारह बजे रातिमे ओतयसँ लोक घुरल। मधुरक तावपर वाड़क असर नहि पड़लैन। भरि बाट व्यंग्य-विनोद होइत ऐलैक। अजब ककापर एकटा फकड़ो ब न गेलैन—

> अजब कका गजब कैलनि, हुनक बात की कही !
> सपटा रसगुल्ला सड़ खैलनि, एक पसेरो दही !!

ताहि दिन लोक तेहन निड्डाह होइत छल जे एक दिनमे दस-बारह कोस पैदल धाकि दैत छल।

हमरा गामसँ रेलवे स्टेशन दूर छलैक। पूसारोड पाँच कोस, समस्तीपुर सात कोस, भगवानपुर वा पटोरी आठ कोस, हाजीपुर बारह कोस। सवारीमे

केवल बैलगाड़ी (अथवा स्टेशनसँ फिरतो काल टमटम)। अधिकतर लोक पैदल गंगा-स्नान करय आइत छल। पूसारोड चढ़िक' सिमरिया घाट अथवा भगवानपुर वा हाजीपुर चढ़िक' पहलेजा घाट।*

जखन गामक स्त्रीगणकें गंगास्नानक विचार होइत छलैन त मासदिन पूर्वहिसँ मैथार-भास करय लगैत छलीह। संग-समाज जुटावय लगैत छलीह। घर-घरमे चूड़ा-ठकुआ अँचारक मोटरी बन्हाय लगैत छल।

एकबेर अपना टोलक स्त्रीगण ग्रहण-स्नान करबाक हेतु पहलेजाघाट विदा भेलीह। ओहि जमातमे बूढ़ा, प्रौढ़ा, नवयुवती, सब रहथि। दलक नेता छलाह राधाकान्त जी।

वैशाखक टहाटही इजोरिया। हमसभ रातिभर पैदल चलि भोरमे भगवानपुर पहुँचलहुँ। स्टेशन पहुँचैत देरी गाड़ी हड़हड़ाइत आबि गेलैक। मेलाक कारण सभ डब्बा खचाखच भरल रहैक। तथापि राधाकान्तजी कोनहुना सभकें भीतर चढ़ौलनि। तावत् गाड़ी चलय लागि गेलैक और ओ अपने छूटि गेलाह।

ई देखि आइ-माइमे हुलि-मलि उठि गेलैन—"दैव-रे-दैव ! आब कोन उपाय हैतैक।"

राधाकान्तजी प्लाटफार्मपरसँ हाथक इशारा करैत आश्वासन देलथिन जे 'कोनो चिन्ता नहि, हम दोसर ट्रेनसँ आबि जाएब।'

चारि घंटाक बाद हुनका पहलेजाघाट आबि गेलापर स्त्रीगणकें प्राणमे प्राण ऐलैन। तत्पर टहंकारसँ गीत उठि गेल—

> 'गंगा माइक लहरी
> देखैत सकल पाप गेल बहरी।"

आधाराति धरि सभकेओ भरि छाती गंगामे ठाढ़ भ' ग्रहण-स्नान करैत रहलीह। एकटा टटघरामे पोआर ओछाओल रहैक। ओहीमे सभक डेरा पड़ल। चूड़ा, ठकुआ, दही, अँचारक बासन खुजय लागल। सभ प्रेमपूर्वक भोजन कैलनि। हमसभ अघोबकित रही, अन्हमुन्ह पड़ि रहलहुँ। प्रात भेने

---

* विगत तीन वर्षसँ हाजीपुर-समस्तीपुर बस चलय लगलैक अछि जे हमरा दरवाजाक सामने द'क' जाइत छैक। एहिसँ यातायातक किछु सुविधा भ' गेलैक अछि।

गंगास्नान भेल। ई'टक चुल्हिपर खिच्चड़ि बनल। खाक' लोक मेला घुमैत गेल। कतेक जनीकें नैहर-सासुरक लोकसँ भेट भेलैन, सनेसक आदान-प्रदान भेलैन। एक दिन सम्मिलत परिवारजकाँ रहि सभ लोक दोसर दिन घरक बाट धैलनि।

गाम ऐलापर स्त्रीगण बहुत दिन धरि ओहि सहयात्राक आनन्द बखान करैत रहलीह।

× × × ×

ओ सभ बात आब सिनेमा जकाँ लगैत अछि। ओहि आवेशी स्त्री-पुरुषमे आब केओ नहि छथि। एहि अध्यायमे जिनका लोकनिक चर्चा आयल छैन से सभ स्मृति-शेष रहि गेल छथि। कालक प्रवाह ओहू स्मृतिकें धो-पोछिक' निःशेषक' देतैन।

हम सादर दू बुंद श्रद्धांजलि अर्पित क' दैत छिऐन—

ये मे ग्रामे पुरा जाताः मृताः कालेषु विस्मृताः
तेषां संस्मरणैः किंचित् क्रियते स्मृति-तर्पणम्।

४

बाल्य संस्कार

(पचगछिया, दरभंगा, मुजफ्फरपुर)

हमर समस्त शिक्षा-संस्कारक मूलस्रोत, प्रेरणाक गंगोत्री, छलाह बाबूजी ! 'अपूर्णे पंचमे वर्षे'सँ लय ओ हमरा अमरकोष, हितोपदेश आ चाणक्य नीतिक श्लोक कण्ठस्थ करा दैत छलाह। जखन जे मनमे अबैत छलैन, सिखा दैत छलाह। कौखन संधि, कौखन समास, कौखन शब्दरूप। लोक पिंगल अन्तमे पढ़ैत अछि, परन्तु हमर शिक्षाक आरम्भ ओहीसँ भेल। बाबूजी चलैत-फिरैत बुझबैत जाइ छलाह—

"कहह त गणकिरखु, गण कोन-कोन होइ छैक ?"

"मनभयरसतज (अर्थात् मगण, नगण आदि)।

"मगण ककरा कहै छैक ?"

"जाहिमे तीनू मात्रा गुरु (ऽऽऽ) होइक, जेना —'बाबूजी'।

"और नगण ?"

"जाहिमे तीनू मात्रा लघु (।।।) होइक, जेना—'सरस'।"

बाबूजी प्रत्येक छंदक उदाहरण तेना बना दैत छलाह जे तुरत मनमे खचित भ' जाइत छल, जेना—

"द्रुतविलम्बित छन्द थिकैक ई।"

"उपेन्द्रवज्रा एकरा कहै छं।"

बाबूजी हमरा बाल्यावस्थेसँ पद्य बनैबाक अभ्यास लगा देलनि। एक बेर पूछि देलनि—

"हरिमोहन खेलत फिरत, क्यों न लगावत तेल ?"

हम खेलाइत-खेलाइत उत्तर देलिऐन—

"अभी खेल से मेल है, नहीं तेल से मेल।"

बाबूजी मायकेँ कहलथिन—"देखिऔक, छौए वर्षक अछि, और एखनेसँ दोहा बनबैत अछि। आत्मा वै जायते पुत्रः।"

हमरा बाल्यावस्थेसँ अनुप्रास मिलेबामे मन लगैत छल। जेना—

"सियरामक नाम श्रीराम नामसँ आम, जाम, ललाम नेने आयल छथि।"

"परसौनीक पीसी पावनिक प्रसाद, पेड़ा, पूआ, पिड़किया, पकवान पं० पशुपति आक पात पर परसैत छथिन।"

एहन-एहन अक्षर-विनोदमे खूब मन लगैत छल। खेल-खेलमे एहन-एहन वाक्य गढ़िक' संगी-साथीकेँ दैत छलिऐन जे जल्दी-जल्दी बजबामे वर्ण-विपर्यय भ' जाइ छलैन। जेना—'तट पर सात-आठ हाथ पीत पट पड़ाउ' झटझट बजैत काल 'पीट पट' भ' जाइत छलैन, तखन विनोद होइत छल।

प्रयागसँ 'सरस्वती', 'विद्यार्थी', 'बालसखा' अबैत छल। चित्र देखबामे, 'पहेली' (बुझौअलि) बुझबामे मन लगैत छल। हमहू ओहि तरहक मनोरंजक प्रश्न बना-बनाक' संगी-साथी के पुछैत छलिऐन। जेना—"सात अक्षरक एहन नाम कहू जाहिमे केवल 'ल' अक्षर रहैक।" ('लाला लल्लू लाल'।) "एहन वाक्य बनाउ जकरा आदिएसँ लगातार चौदह टा 'क' रहैक।" ('ककाक काकीकेँ काकीक कका की की कहलथिन?')

कौखन कौतुकवश एहन एहन शब्द-विन्यास करैत छलहुँ जे सुनटा-उनटा एक समान पढ़ल जाय, जेना—'धमचम चमध', 'नूआ नवीन आनू', 'वजान मेलामे न जाव'।'

बाबूजी आदिएसँ 'वत्स्य', 'कात्स्न्‍र्य' सन सन क्लिष्ट शब्दक उच्चारण करावय लगलाह। शुद्ध उच्चारण पर तेहेक ध्यान रहैत छल जे 'विशेष' बजैत काल कनेको ठोरसँ ठोर वा दाँतसँ जीभक स्पर्श नहि होमय पबैत छल।

ओहि समय हमर बहुत जिज्ञासु प्रवृत्ति छल। पंडित लोकनिकेँ पुछैत छलिऐन—"ऌ केँ स्वर किऐक मानल गेल छैक?" अंगरेजीवलाकेँ पुछैत छलिऐन—"अंगरेजीमे 'त' अक्षर किऐक नहि होइत छैक?"

कहियो भाँटा-अदौरी, आलू-कोबी, चटनी-अँचार, मिरचाइक संस्कृत पूछि दैत छलिऐन। कहियो अलेवाइन, कठाइन, खसखराइन, घुमराइन, फोकिराइनक अंगरेजी।

हमरा प्रश्नसँ पाहुन सभ अकच्छ रहैत छलाह। सहपाठी सभ 'कविकाठी' कहैत छलाह।

एकटा विद्यार्थी (सत्यदेव) बाबूजीसँ 'शीघ्रबोध' (ज्योतिष) पढ़क हेतु अबैत छलथिन। परन्तु शीघ्रक कोन कथा, विलम्बोसँ हुनका बोध नहि होइत छलैन। कतबो 'होराचक्र' रटने ओ 'चु चे चो' लगमे अटकल रहि जाइत छलाह। जखन हम आगाँ सुना दैत छलिऐन त बाबूजी हुनका 'बोपदेव' कहि और बेसी घूमय लगैत छलथिन। तखन ओ हमरा नेहोरा करय लगैत छलाह—'तोँ गुरुजीकेँ नहि सुनबहुन त अपना बाड़ीसँ शरीफा तोड़िक' आनि देबौक।' एहि तरहेँ ओ बहुत दिन धरि शरीफा खोअबैत रहलाह।

किछु दिन गामक मास्टर (बाबू रामखेलावन मिश्र)क संग कसारि स्कूलमे गेलहुँ। ओतय सभ चटियाकेँ ठाढ़ कय प्रार्थना कराओल जाइत छलैक—

"परमेश दयामय कीरति की
रखवारि करैं मम भूपति की।"

एक दिन एकटा गुरुजी पुछलनि—'भूपति माने?' हम कहलिऐन—'राजा।' एहि पर ओ एक सटका हमरा तरहथी पर लगौलनि—'भूपति माने सम्राट् पंचम जार्ज।'

तहियासँ हम फेर ओहि स्कूलमे नहि गेलहुँ।

किछु दिनक बाद (१९१६मे) बाबूजी पचगछिया गेलाह और हमरो अपना संग नेने गेलाह। ओ हमरा अपना संग सभ कक्षामे नेने जाइत छलाह। ओ एकबेर कक्षामे कोनो विद्यार्थीक परीक्षा लेबाक हेतु 'दही अमौट'क संधि पूछि देलथिन। ओ कहलकैन 'दह्यमौट'। तखन बाबूजी हमरा दिस ताकलनि। हम ठाढ़ भ' कहलिऐन—"दही, अमौटमे संधि नहि हेतैक। संधि संस्कृत शब्दमे होइत छैक।" तहिना एकटा विद्यार्थीकेँ 'हरिगीतिका' छंदक उदाहरण नहि देल भेलैन त हम कहलिऐन—"चारि बेर 'हरिगीतिका' शब्द बाजि दिऔक 'हरिगीतिका' बनि जायत।" किछु विद्यार्थी अपनामे कनफुसकी करय लगलाह—'पंडितजी बेटा' के व्याकरण घोरिक' पिया देने छथिन।"

[एहि प्रसंगमे एकटा बात मन पड़ैत अछि। एकबेर बाबूजी कोनो विद्यार्थीकें 'ने' चिह्नक प्रयोग बुझबैत छलथिन। सहसा हमरा एकटा बात सूझि गेल। जहाँ-जहाँ अपन भाषामे 'ने' लगैत छैक (पूर्णभूतक क्रियापदमे) तहाँ-तहाँ हिन्दीओमे (कत्तमि) 'ने' लगैत छैक। जेना—हम कैने छलहुँ, हम खैने छलहुँ, हम कहने छलहुँ (मैंने किया था, मैंने खाया था, मैंने कहा था)। जहाँ अपन भाषामे नहि लगैत छैक त' हिन्दीओमे नहि। जेना—हम आएल छलहुँ, हम गेल छलहुँ, हम बाजल छलहुँ (मैं आया था, मैं गया था, मैं बोला था)। बाबूजी ई बात सुनि बहुत प्रसन्न भेलाह—"तों त एक नव बात बहार कैलें, ई किनको ध्यान पर नहि चढ़ल हेतैन।" कर्णपुरक पंडितजी बाजि उठलाह—"ई त लाख टकाक आविष्कार भेल। एहिठाम की कार्यकारण सम्बन्ध छैक तकर भाषावैज्ञानिक अनुसंधान होमक चाही।"]

ओहि समय राजा बाबू (बादमे प्रसिद्ध नेता राजेन्द्र मिश्र) पचगछिया स्कूलसँ मैट्रिक परीक्षा देने छलाह। ओ एक बेर हमरा सभकें अपन गाम (बसानपट्टी) ल' गेल रहथि। ओतय हुनकर ज्येष्ठ भ्राता पं० रविनन्दन मिश्र (जे बाबूजीक प्रिय कुटुम्ब छलथिन) हमरा सभकें देखि परम उल्लसित भेलाह। यमुना पीसी स्नेहपूर्वक कएक दिन राखि लेलनि। ओहि समय हमरा अपना मनसँ कथा गढ़ि-गढ़ि कहबाक अभ्यास छल। ताहिसँ हुनका लोकनिक बहुत मनोरंजन भेलैन।

तहिना बाबूजीक संग एक बेर धमौली गेल रही। ओतय हुनकर भक्त शिष्य हरिवल्लभ नारायण सिंह बहुत स्वागत-सत्कार कैने रहथि।

एक बेर बाबूजी अपना संग श्रीनगर नेने गेलाह। ओतय कोनो उपनयन रहैक। ओतय पहिले-पहिल बंगालक यात्रापार्टी देखलहुँ, बड़का हाथीपर चढ़लहुँ और खूब भोज खयलहुँ।

कुमार कालिकानन्द सिंह हमरा बजा क' पुछलनि—'की औ बटुक! सुनबामे आयल अछि जे अहाँ खूब अनुप्रास मिलबैत छी। किछु सुनाउ त'। मुदा एखने बना क'। एहि ठाम जे बात भेलैक अछि, ताही पर।"

ओ ड्राइवर (देवनन्दन राय) कें मोटरक किछु कल-पुर्जा लयबाक हेतु कहने छलथिन। हम लगले सुना देलिऐन—

"सरकार को दरकार है परकार मोटरकार का"

ओ एहन अनुप्रासक छटा देखि चकित भ' उठलाह। बाबूजी के कहलथिन—"औ कविजी! हमरा त होइ छल जे अहीं बटुकके सिखा दैत हेबैन, मुदा आब लोहा मानि लेलिऐन।"

रायजी कें आदेश देलथिन—"हिनका मोटरसँ पुर्णिया घुमा लबिऔन। जे कहथि से कीनि देबैन।"

हम पुर्णियासँ एक पाइक पेन्सिल नेने ऐलहुँ। बाबूजी अपन मित्र सभकें कहय लगलथिन—"ननकिरबूकें विद्याक संस्कार त छैन, परन्तु व्यवहारमे अपटु छथि।"

पचगछियाक अनेक मधुर संस्मरण अछि।

जन्माष्टमीमे खूब उत्सव होइत छलैक। बड़का-बड़का गवैया तानपूरा ल' क' बैसैत छलाह और राग-तानक चमत्कार देखबैत छलाह। (माड़न खवास ओहि समय पट्ठा तैयार भ' रहल छलाह। ओ तीन-तीन मिनट धरि तेहन गिरगिरी लगबैत छलाह जे बुझनिहार 'तानसेन' कहिक' प्रशंसा करैत छलथिन और अनाड़ी लोक 'बकरिया तान' कहैत छलैन।)

रायबहादुर लक्ष्मी नारायण सिंह साहित्य, संगीत, दुहुक मर्मज्ञ छलाह। एक दिन डेउढ़ीमे भोज रहैन। बाबूजी हमरो अपना संग नेने गेलाह। रायबहादुर हमर प्रशंसा सुनि परीक्षा लेबक हेतु एकटा समस्या पूर्ति करक हेतु देलनि—"परम मधुर रसगान।"

परन्तु शर्त्त ई लगा देलनि जे सरगमक सातो अक्षरक अतिरिक्त आन कोनो अक्षर नहि रहय पाबय।

बाबूजीकें चिन्ता भेलैन जे एहन कठिन परीक्षामे हम कोना उत्तीर्ण भ' सकब। परन्तु सरस्वतीक कृपासँ तत्क्षःस्फूर्ति भ' गेल। हम ओहीठाम कागजपर तेहने-तेहने किछु शब्द जोड़ि, दोहा बना क' सुना देलिऐन—

"राग रागिनी सुर सरस, सुरसरि धार समान।
धुनि सुनि पुनि पुनि मन मगन, परम मधुर रसगान॥"

रायबहादुर अत्यंत प्रसन्न भ' पुछलनि—"बटुक! कोन मधुर खैंता दिअ ?"

हम कहलिऐन—'जे हमरा नामसँ मेल खाइत हो।'

तुरन्त हमरा आगाँ एक थार खीरमोहन आबि गेल।

किछु दिनक बाद कोशी महारानीक कृपासँ हम मलेरियाक चपेटमे पड़ि गेलहुँ। तेहैया ज्वर होमय लागल। पिलही भ' गेल। पथ्य-पानि करबाक लेल गामसँ माय आबि गेलीह। तुलू मांस कुर्थीक झोर, बथुआक साग, 'परोरा' (पेरा)क उसिनल तरकारी खाय लगलहुँ। एहि बीमारीसँ एकटा लाभ ई भेल जे पड़ल-पड़ल 'चन्द्रकान्ता' उपन्यास (चौबीसो भाग संतति समेत) चाटि गेलहुँ।

एहि बीच एक दिन अकस्मात् पहुँचि गेलाह हमर बाबा (पं० नचारी झा), रामनामा तौनी ओढ़ने, लोटामे 'मंडा' प्रसाद नेने। मायकेँ कहलथिन—"जननी! नेनाकेँ मातृक नेने चलहुन। आतय भगवानक चरणामृतेसँ सब दुःख छूटि जेतैन।"

माय पुछलथिन—"बाबूजी! एखन की खयबैक?"

बाबा कहलथिन—"हम 'वेदान्ती' (बिना दाँतक) छी। एकसेर भाँटा आलूक माना बनाबह आ सबकनिक हलुआ।"

माय यावत् बनाबय गेलीह तावत् बाबा हजारी-माला फेरय लगलाह। जखन माय खेबाक हेतु बजाबय ऐलथिन त' बाबाक कतहु पता नहि। लोक लालटेन ल' क' चारू कात छूटल। एक बजे राति धरि तकैत-तकैत लोक हरान भ' गेल। डेढ़ बजे रातिमे पचगछियाक स्टेशन-मास्टरक संग बाबा ऐलाह। गाड़ीसँ उतरला पर बाबाकेँ स्टेशन पर सुनना गेल छलैन जे रातिमे किछु बदमाश लोक स्टेशन-मास्टरकेँ सुतलमे मारबाक हेतु लपरल छैन। सैह कहबाक हेतु ओ चुपचाप स्टेशन चलि गेल रहथि। स्टेशन-मास्टर बिछाओन पर मसनदकेँ तुराइ ओढ़ा नुका गेल छलाह। परिणाम-स्वरूप मसनदे पर लाठी बजरलैक और ओ बाँचि गेलाह। बाबाक प्रति कृतज्ञता प्रकट करैत ओ हुनका लालटेन ल' क' डेरा पहुँचा गेलथिन।

बाबा हुनकाबसकेँ नदौर नेने गेलाह। ओ लहेरियासराय उतरि मायक हेतु कहार-महफा ठीक क' देलथिन और हमरा अपना संग एक्का पर बैसा भरि बाट भजन गबैत ऐलाह—

"श्री राम राघव राम राघव राम राघव पाहि माम्।
श्री सियावर मधुर मूरति राम राघव पाहि माम्॥"

सायंकाल बाबाक मंदिरपर पहुँचलहुँ त आरतीक घड़ी-घंटा आ गीत भ' रहल छलैन—

'श्रीमन्नारायण नारायण नारायण!
शबरी के बैर सुदामा के तंदुल
रुचि-रुचि भोग लगावाएन"

हम त सभकेँ पंजरी-प्रसाद भेटल। नानी हमरा भीतर ल' गेलीह। अछिञ्जलमे राम्हल अरवा चाउरक भात और घृतसँ छौंकल केराक तरकारी खोऔलनि (आहिमे अपूर्व स्वाद लागल)।

बाबा रामजीक तेहन भक्त छलाह जे हुनके नाम पर राम-मंदिर, राम-वाटिका, राम-कूप और राम-तड़ाग बनौने छलाह।

बाबा नित्य मंदिरमे बैसि वाल्मीकीय रामायण पाठ करैत छलाह। हुनक आदेशानुसार हमहूँ 'आदित्य-हृदय' पाठ करय लगलहुँ। बाबाकेँ सहस्रो श्लोक कंठस्थ छलैन। ओ हमरा अनेक सुभाषित सिखा देलनि। मंदिरपर बहुत लोक अबैत छलाह—मुकुन्द बाबा, निरंजन मामा, कुलानन्द मामा, खट्टर मामा। नित्य सायंकाल गीत होइत छलै—'भये प्रकट कृपाला दीन दयाला कौशल्या हितकारी।'

बाबा रातिमे उठि प्राती गाबय लागि जाइत छलाह—'सुदामा तोहरे मित्र मुरारि।' गबैत-गबैत सौंसे गाममे घूमि लोककेँ जगाबय लागि जाइत छलथिन—"उठै जाउ, भगवानक भजन करै जाउ।"

एक दिन हमरा कहलनि—'नाति! सुनै छी जे अहाँ गीत बनबैत छी। भगवानक एकटा प्राती बना दिअ।"

हम बना देलिऐन—

"वन वन फिरथि अयोध्यानाथ।
आगाँ रघुवर, पाछाँ लछुमन, बीचमे सीता साथ।
क्रीट-मुकुट-कुण्डल तजि देलनि, जटा-जूट छनि माथ।
'हरिमोहन' आश्चर्य करै छथि, एना किऐ रघुनाथ!"

बाबा गद्गद भ' उठलाह। आत्मविभोर भ' गाबय लगलाह। मंदिरमे जे केओ अबैत छलथिन तनिका कहथिन—"देखू, हमर नौ वर्षक नाति ई प्राती बनौलथि अछि। आशीर्वाद दिऔन जे चिरंजीवी होथि।"

बाबाकें कखन की फुरि जैतैन, तकर कोनो ठेकान नहि।

एकदिन अन्हरोखे उठि सोंसे 'सखास' गामकें नोति ऐलथिन। घरपर ककरो किछु जानल नहि। अखन मुण्डक-मुण्ड ब्राह्मण लोटा नेने मंदिरपर पहुँचय लगलथिन त मन पड़लैन जे सहस्र ब्राह्मण-भोजन हेतु नोति आयल छथिन। दौड़ा-दौड़ी लोक सिहुवाड़ आ' कंसी-सिमरी गेल। कइएक भार पर चूड़ा-दही-चीनी आयल। तखन ब्राह्मण-भोजन सम्पन्न भेल। जे चीनी उबरलैन सेहो घोरिक' ब्राह्मण सभकें पिया देलथिन। तन्निमित्तक वस्तु अपने कोना खैतथि ?

बाबाक भक्ति ताहि सीमा पर पहुँचल छलैन जे अपना गर्म लगैत छलैन त भगवानकें पंखा होकय लगैत छलथिन। जाड़ होइ छलैन त' मूर्ति पर रजाइ ओढ़ा अबैत छलथिन। लोक कहैत छलैन जे हुनका धर्मोन्माद छलैन जे प्रायः पुत्र-शोकक कारण छलैन।*

× × ×

१९१९मे बाबूजी 'मिथिला-मिहिर'क सम्पादक भ' दरभंगा आबि गेलाह। हमहूँ सभ ओत्तहि रहय लगलहुँ। हमर सभक डेरा नया बजारमे छल।‡ रामबागक फाटकसँ लय माधवेश्वरक समीप धरि सड़कक दुनू कात लाल रंगक सैंकड़ो नमडोरिया ब्लाक छलैक जाहिमे राजक विशिष्ट व्यक्ति (अफसर, पंडित प्रभृति) रहैत छलाह। सभ ब्लाक एक्के नक्शाक, एक दोसरासँ सटल छलैक, केवल नम्बरसँ पता लगैत छलैक। (हमर डेराक नम्बर प्रायः १२५ छल।) देहातसँ जे अनभुआर पाहुन अबैत छलाह से बहुधा भुतिया क' दोसर डेरा मे (जेना पं० उपेन्द्र मोहन मिश्र वैद्य, पं० कपिलेश्वर झा शास्त्री आदिक डेरा पर) चलि जाइत छलाह, तखन हमरा ताकि क' आनय पड़ैत छल।

नया बजार खूब चहटगर छलैक। सिंघाड़ा, मखान, बर्रक छत्ता भार पर बिकाय अबैत छलैक। गुल्लोबाड़ाक कबाड़िन डाँहि लगबैत छलि—

---

* अन्तमे भगवान् कृपा कैलथिन और हुनका एक पुत्र देलथिन (गणेशजी)। ओहो बहुत किछु हुनके जकाँ भजनानन्द छथिन।

‡ १९३४क भूकम्पमे ओ तेना नष्ट भ' गेलैक जे आब ओहि नया बजारक नामोनिशान नहि छैक।

'ले पनियाला ले।' लगेमे बर्फक कारखाना छलैक। खूब मलाइ-बर्फ खाइत छलहुँ। माधवेश्वर पोखरिमे चुभकैत छलहुँ। अखाड़ापर राजक पहलवान (जनक झा आदि)कें देखैत छलिऐन। धर्मलाल सिंहक गोशालासँ दूध ल' अबैत छलहुँ। साँझमे राज मैदानमे फुटबौल मैच देखैत छलहुँ, रातिमे माय आ सुभद्रा (छोट बहिन)कें भगवतीक मन्दिरमे दर्शन करा लबैत छलिऐन। दुर्गापूजा आ इन्द्रपूजामे खूब उत्सव होइत छलैक। कहियो उमाकान्तक नाटक (सत्य हरिश्चन्द्र, सावित्री सत्यवान आदि), कहियो बघातक प० रामझाक कीर्त्तन, कहियो सुखदेव झा पहलवानक कुश्ती, कहियो बटुकजीक शतरंज, कहियो बाइस्कोप।

हम बाबूजीक संग 'मिथिला-मिहिर'क कार्यालयमे जाइत छलहुँ। ओतय एक कोनमे पत्र-पत्रिकाक ढेरी मध्य बैसि 'सुधा', 'माधुरी', 'इंदु', 'मनोरंजनक'क फाइलमे डूबि जाइत छलहुँ। जी० पी० श्रीवास्तवक हास्य-कथा ('लम्बी दाढ़ी' आदि) पढ़बामे खूब मन लगैत छल। हमहूँ चुपचाप एकटा ओही ढंगक कथा लिखलहुँ—'अजीब बंदर'। हमर ओ बाल रचना देखि बाबूजीक सहकारी पं० जगदीश्वरी प्रसाद ओझाजीकें एतेक मनोविनोद भेलैन जे ओ ओकरा सुदर्शन प्रेसमे छपवा देलथिन।

लालबाग लाइब्रेरीसँ ढेरीकढेरी पुस्तक ल' अबैत छलहुँ। शरद बाबूक सभटा उपन्यास पढ़ि गेलहुँ।

अंग्रेजीमे नेसफिल्ड ग्रामर, राखाल दासक' कंपोजिशन, गंगाधर ट्रांसलेशन। जहाँधरि स्मरण अबैत अछि अंग्रेजी रचनाक एकटा आरबड़ियाँ पुस्तक पढ़ैत छलहुँ, जकर रचयिता छलाह राजेन्द्र बाबू (जे बादमे राष्ट्रपति भेलाह)।

ओहीसमय देशमे महात्मा गाँधीक असहयोग आन्दोलन शुरू भ गेलैन। सरकारी स्कूल, कालेज, कचहरीक बहिस्कार होमय लगलैक। बड़का बड़का वकील गाँधीजीक अनुयायी बनि वकालत पेशा छोड़य लगलाह। (ब्रजकिशोर बाबू, धरणीधर बाबू प्रभृतिक नाम बेसी सुनबामे अबैत छल।) सभामे तिरंगा झंडा फहराइत छलैक, 'वंदेमातरम्' होइत छलैक, जोरदार भाषण होइत छलैक। हमहूँ सभ सुनय जाइ छलहुँ और 'गाँधीजीक जय' करैत अबै छलहुँ।

ओहि समय 'मिथिला-मिहिर'क प्रबंध-सम्पादक छलाह पं० योगानन्द कुमर (जे बाबूजीक छोट ममियौत छलथिन)। ओ मिथिला-मैथिल-मैथिलीक उन्नायक छलाह।* ओ जखन डेरा पर अबैत छलाह त हमरा किछु ने किछु लिखैत-पढ़ैत देखि स्नेहवश 'विद्यानन्द' कहैत छलाह। हुनक प्रशस्त ललाट, उन्नत नासिका, महर्षि दयानन्द स्वामी सदृश आकृति मनमे अंकित अछि। ओ हमरा व्यायाम-प्राणायामक प्रेरणा दैत छलाह।

'मिथिला-मिहिर'मे बाबूजीक व्यंग्य-विनोदमय रचना ('ढकोसलानंद' आदि)मे रस भेटैत छल। हुनकर 'पुनर्विवाह' (उपन्यास)मे हास्य-प्रसंग तेहन रुचिगर लगैत छल जे ओहिना लिखबाक प्रेरणा मनमे होइत छल।

ओहि समय 'मिथिला-मिहिर' आ 'मिथिला-मोद' (काशीक मैथिली मासिक)मे लेखन शैली ल' क' मनोरंजक विवाद चलैत छलैक। 'कैल' लिखल जाय वा 'कएल'? 'मोद'क कथ्य छलैक जे 'कैल' लिखब त 'कइल' पढ़ल जायत जेना 'कैल बइद'। 'मिहिर'क तर्क छलैक जे तखन त 'पैर'केँ 'पएर', 'बैल'केँ 'बएल' लिखय पड़त। एहि नोक-झोंकमे हमरो रस भेटैत छल। बाबूजी 'पैर' 'और' लिखैत छलाह और वैह लेखन शैली मिथिला-मिहिरमे प्रचलित रहलैन। (हमरो ओहिना लिखबामे सुविधा बुझि पड़ैत अछि।)‡

ओहि समय बहुधा राजक दिससँ कंकाली मंदिरमे पंडित लोकनिकेँ भोज होइत छलैन। यावत् कचौड़ी-अमिरती छनाइत छलैक तावत् कोनो-कोनो विषय पर शास्त्रार्थ चलैत छलैन।

---

* १९१५मे ओ मैथिल ब्राह्मण डाइरेक्टरी' प्रकाशित कैने छलाह जाहिमे मिथिलाक विशिष्ट व्यक्ति सभक नाम-ग्राम-गोत्र-मूल-योग्यता-पद आदि सविस्तार परिचय देल गेल छलैक। जहाँ धरि हमरा स्मरण अछि ओहिमे एम० ए०क अन्तर्गत मात्र (डा०) गंगानाथ झाक नाम छलैन। ओहि ग्रंथक ऐतिहासिक महत्त्व छलैक। परन्तु आब ओ प्राय: अप्राप्य भ' गेल छैक।

‡ मित्रवर रमानाथ बाबू, सुभद्र बाबू प्रभृति 'कओलेज' लिखैत छलाह। परन्तु हम, 'कौलेज' लिखैत आएल छी। एक बेर (प्राय: १९५८मे) मिथिला कालेज (दरभंगा)क मैथिली परिषद्‌मे अध्यक्ष पद सँ भाषण करैत अपन लेखन-शैलीक पक्षमे ई युक्ति देने रहिऐक—

''लेखमुद्रण सौविध्यात्, स्वमात्रासु लाघवात्।
सरलत्वात् सुबोध्यत्वात्'दोन्है' शैली प्रशस्यते।'

एकबेर स्त्री-शिक्षापर विवाद बजरि गेलक। 'नारीणां शिक्षा विधेया न वा'? बहुत तर्कवितर्क भेल। दुनू पक्षसँ नाना प्रकारक युक्ति देल गेल। अन्ततोगत्वा ई निर्णय भेल जे—''दश वर्षा पठेत् कन्या नाधीयेत तत: परम्।'' (अर्थात् दश वर्षक अवस्था धरि कन्या पढ़थि, तकरा बाद नहि। तात्पर्य ई जे वय:संधिक पूर्वहि पढ़ाइ बन्द भ' जैबाक चाही।) एहि सिद्धांत-पत्र पर एक अतिवृद्ध महामहोपाध्यायक हस्ताक्षर भेलैन।

तहिना एक बेर 'शारदा बिल'क विरोधमे सभा भेलैक। एक वक्ता बजलाह जे 'जखन चौदह वर्ष धरि कन्या कुमारिए रहतीह त हुनका बांकिए की रहतैन? यदि शास्त्र सत्य त हुनकर पिताकेँ पापक भागी होमय पड़तैन। ओ शारदा स्वयं कुलटा होइति जे सभकेँ भ्रष्ट करय चाहैत अछि।'

एहि पर केओ उठिक' कहलकैन जे शारदा (हरविलास) स्त्री नहि पुरुष थिक।

ताहिपर पूर्ववक्ता और अधिक उत्तेजित भ' उठलाह—''तखन शास्त्रार्थ कऽ लिय। जखन नाममे 'टाप्' प्रत्यय लागल छैक त ओ पुल्लिंग कोना भ' सकैत अछि?'' शास्त्रार्थ धर्मशास्त्रसँ व्याकरणपर आबि गेल।

ओहि समय पंडित लोकनि साधारणो वार्तालापमे 'अस्मदादि' सन सन क्लिष्ट शब्दक प्रयोग करैत छलाह (जे पांडित्यक परिचायक बुझल जाइत छल)। उपनयन-विवाह आदिमे जे दिनबंध बनैत छलैक से दृष्टिकूटक जकाँ दुरूह बनाओल जाइ छलैक (जेना १२९४केँ 'वेदरत्न-दृष्टिकूटक' ...)। एकबेर हम 'यमुनातीरे'क स्थानमे 'पितृपति-गुणभानु' लिखल जाइ छलैक)। एकबेर हम 'यमुनातीरे'क स्थानमे 'पितृपति-रवसुस्तीरे' लिखने रही से देखि पं० खुद्दी झा बाबूजीकेँ कहलथिन—''ई तेना अह्लांक नाम रखताह।''

ओहि समय पंडित लोकनि तेहन आचारनिष्ठ होइत छलाह जे एकबेर रमेश्वरलता महाविद्यालयमे एकटा अङरेज आ मेम आबिक' पंडित लोकनिसँ हाथ मिलौलथिन्ह त ओ सभ स्पर्शदोषक प्रक्षालनार्थ सचैल स्नान करैत गेलाह। किछु व्यक्ति एहनो छलाह जे मैट्रिकुलेशनकेँ 'मातृकुलाशन' और बाइस्कोपकेँ 'वायसकोप' कहिक उपहास करैत छलथिन।

एकबेर हड़ाही पर एकटा 'पवित्र हिंदू होटल' खुजलैक (जाहिमे भात, दालि, तरकारी, चटनी, पापड़ भोजन करबैत छलैक) परन्तु, ताहि दिन कुलीन ब्राह्मणकेँ मर्यादाक एहेन विचार छलैन जे बिना सौजन्य (अर्थात् बिना धोती भेटने) ककरो ओतय 'सिद्ध' भोजन करब (अर्थात् भात खायब) निषिद्ध बुझैत छलाह। किछुगोटा ओहि साइनबोर्डकेँ देखि 'सो' लगाकऽ व्याख्या करैत छलाह "पवित्र हिंदू हो तो टल।" (यदि ओहिमे केओ जाइतो छलाह त रातिमे चोराकऽ जे केओ भोजन करैत देखि नहि लैन !)

दरभंगासँ बहुधा चनौर जैबाक अवसर भेटैत छल। बहिन (ननुवाइ) तेहन आवेगी छलीह जे जल्दी आबय नहि दैत छलीह। "बौआ कालिह अपना 'पोखरिमे मछहरि हेतैक, माछ खाकऽ जैह।" और जखन दोसर दिन जाय लगैत छलहुँ त'—"बौआ! आइ शुक्र दिन पश्चिम कोना जैबह ?" हुनक ननदि सब अनुमोदन करैत छलथिन—"अवश्ये फिने! दिक्शूलमे दड़िभंगा कोना जैताह ? कालिह अष्टमी क पातरि पड़तैक तकर बादे जाय देबैन।"

ओ सभ बच्चा सारकेँ खेलौनिया पाहुन बुझि सरस परिहास करैत छलीह। हुनका सभक बजबाक अपूर्व छवि-छटा छलैन्ह। तेना अन्योक्ति वक्रोक्तिमे बजैत छलीह जे अलंकारशास्त्रक पंडिता बुझि पड़ैत छलीह। लगैत छल जेना इनारक पानिएमे चमत्कार घोरल होइक। कन्या सभक कोन कथा पनिभरनी पर्यन्त लक्षणा-व्यञ्जनामे बजैत छलीह। ओ सभ तेहन वाक्चतुरा आ परिहास-रसिका छलीह जे आङनमे आनन्द-विनोदक वर्षा करैत रहैत छलीह। (एकबेर 'बाबूबरहीक पाहुनकेँ व्यंग्य कैलथिन—'पिती लोहार'केँ कतय छोड़ने आएल छिऐन ?)।" हुनका सभक चमत्कार आ भावभंगिमा हमरा बाल-मनकेँ बहुत प्रभावित कैलक।*

चनौर गेने एकटा महान् लाभ ई होइत छल जे महामहोपाध्याय पं० शशिनाथ झाक दर्शन होइत छल। ओ ऋषिवत् लगैत छलाह। निरन्तर पूजा-पाठ आ शास्त्र-चर्चामे संलग्न। लगमे स्मृति-ग्रन्थक पथार लागल

* हमर कथा-साहित्यमे (विशेषतः नारी पात्रक चित्रणमे) चनौरक पर्याप्त छाप पड़ल अछि। 'अलंकार शिक्षा' (चर्चरी)क रुक्मीगण, 'भदेशक नमूना' (प्रणम्य देवता)क सरस्वती, 'कन्याक जीवन' (रंगशाला)क तितिर दाइ, बहुत किछु ओही माटि-पानिक चिकीह।

रहैत छलैन। मनु, याज्ञवल्क्य, अत्रि, पराशर, हारीत, आपस्तम्ब। दूर-दूरक दाक्षिणात्य विद्वान् हुनकासँ व्याकरण आ धर्म-शास्त्रक शंका-समाधानक हेतु अबैत छलथिन। एकबेर हम अनेंबा (पपीता)क संस्कृत नाम पुछलिऐन त ओ शब्दकल्पद्रुममे एकटा शब्द देखा देलनि 'एरंडपर्पट'। ओ हमर जिज्ञासु-वृत्ति देखि बहुत प्रसन्न होइत छलाह। ओझाजीकेँ कहैत छलथिन "जगदीश बाबू! ई तेना संस्कारी छथि। जखन-जखन आबथि, हमरासँ अवश्य भेट करा देबैन।" हुनकर अनेको स्मृति मनमे अंकित अछि।*

ताहि समय सौतिपुराक तेहन आचार-विचार छलैक जे एक बेर कोनो भोजमे घोघासँ एकटा सलगम (डालनामे) पड़ि गेलाक कारण समस्त भोज भंडुल भ' गेलैक। भोक्ता सभकेँ (जाहिमे हमहु रही) बालूशाहीक बदला बालुगोबर भिड़य पड़लैन।‡

दरभंगा डेरामे बाबूजीसँ भेट करबाक हेतु नाना प्रकारक कवि कलाकार अबैत रहैत छलथिन। जखन बाबूजी हुनका लोकनिक संग साहित्यालाप करय लगैत छलाह त श्लेष-यमक आदि अलंकारक वर्षा होमय लागि जाइत छल। श्लोक त हुनका लोकनिक जिह्वे पर रहैत छलैन। चुटकी बजबैत देरी अनुष्टुप् तैयार;

* एक बेर कोनो मोट-सोँट जमींदार अपन पहलवान सन बेटाकेँ ल' क' एलथिन और पुछलथिन—"पंडितजी! 'ई ('सतलराएन') कितना रोज अपने के साथ रहला पर अपने नकती संसकीरित के विदोआन बन सकैत छय ?" पं० जी आपादमस्तक हुनका देखि उत्तर देलथिन—"ई कतेक दिन हमरा संग रहने हमरा सन भ' सकैत छथि, से कहब त' बड़ कठिन; परन्तु यदि छौ मास हमरा संग रहि गेलाह, त हम धरि अवश्ये हिनका सन भ' जायब।"

(हुनका लोकनिक एक-सँ-एक सूक्ष्म व्यंग्य आ गूढ़ोक्ति होइत छलैन। एक नैयायिककेँ केओ पुछलकैन—"अपने बाछी बेचब ?" ओ उत्तर देलथिन—"हमरा गाछी नहि।" तात्पर्य ई जे बाछीक गोबरेसँ जारन होइत अछि, तखन ई कोना बेचि सकैत छी ?)

‡ ओहि मनोरंजक घटनाक संस्मरण आकाशवाणी (पटना-दरभंगा)सँ प्रसारित भ' चुकल अछि।

एक बेर पं० त्रिलोकनाथ मिश्र बबितहि कहलथिन—

"जनसीदन-सान्निध्यात् जनः कोऽपि न सीदति ।"

बाबूजी लगले उत्तर देलथिन —
"तुष्टे त्रिलोकनाथे तु लोकः को न प्रसीदति ?"

एहन-एहन प्रत्युत्पन्नमतिपूर्ण वाग्विलास होइत रहैत छलैंग जे सुनबामे आनन्द आबि जाइत छल। ओहन काव्यशास्त्र विनोदक वातावरणमे हमर जे संस्कार बनल से आगाँ जाक' साहित्य-सर्जनमे प्रस्फुटित भेल ।*

× × + +

१९२२क बाद हम सभ दरभंगासँ गाम ऐलहुँ । बाबूजीकेँ कलकत्ता जैबाक रहैन। एक दिन उपेन्द्र ककाक संग शतरंज खेलाइत रहथि। हम लगमे बैसल टीप दैत रहिऐन। ककाजी हमरा देखिक' बजलाह—"पढ़ो पूत चण्डी, जा सो चढ़े हण्डी।" बाबूजीकेँ कहलथिन—"पं० जी, हरिमोहन चौदह बर्षक भ' गेलाह और एखनधरि छुट्टे छथि ! स्कूलमे कहिया देबैन ?" बाबूजी कहलथिन—'तखन अहीं अपने स्कूलमे नाम लिखा दिऔन।"

बाबूजी हमरा खर्च द' क' कलकत्ता गेलाह। हम मास्टर साहेबक संग मुजफ्फरपुर गेलहुँ।

बी० बी० कालेजिएट स्कूलक हेडमास्टर छलाह बी० बी० (भवानी भूषण) भट्टाचार्य। ओ हमर अङरेजीक परीक्षा लेलनि। पंडितजी (पं० टी० एन० चौधरी) संस्कृतक और पं० सरस्वती शर्मा हिन्दीक। हमर उत्तरसँ ओ लोकनि पूर्ण संतुष्ट भेलाह। हम मैट्रिक कक्षामे भर्ती भ' गेलहुँ।

हेड मास्टर साहेब ककाजीकेँ कहलथिन—"कुमरजी, आपका भतीजा टॉप कर सकता है। लेकिन, हिसाब का जिम्मा आपको लेना होगा।"

ककाजी गणितक अध्यापक छलाह। हिसाब-किताबमे तेहन पक्का जे सभ लोहा मानैत छलैन। ओ बन्दगला कोट पर गोल कारी टोपी पहिरैत

---

* हमर ओ संस्कार बादमे 'खट्टर ककाक तरंग' आदिमे विशेष रूपसँ अभिव्यक्त भेल हो से संभव।

छलाह, जाहिसँ रोबदार चेहरा और बेसी प्रभावशाली लगैत छलैन। ओ सभसँ पहिल काज ई कैलनि जे हमरा अपना कक्षमे ल' गेलाह आ हमर कविताक कापी ल' क' अपना दराजमे बन्द क' देलनि और बजलाह—"देखो बच्चू ! आज से कविता-फविता छोड़ो और हिसाब से नाता जोड़ो। नहीं तो देखते हो यह डंडा ?"

हमर सभटा छंद बंद भ' गेल। पद्यसँ गद्य पर आबि गेलहुँ। चक्रवर्ती अंकगणित और के० पी० बसुक अलजेबराक पहिया पर गाड़ी चलय लागल। पोएट्रीक स्थान ज्योमेट्री लेलक।

हमरा सभक डेरा स्कूलेक हातामे छल। ओहिमे मास्टर साहेब और पं० जीक अलावा तीन-चारिटा विद्यार्थीओ रहैत छलाह। ओ सभ पार लगाक' भानस करैत छलाह। दिनमे भात-दालि एकटा तरकारी, रातिमे रोटी। लपसी (चपरासी) चौका-बर्त्तन करैत छल। खर्चक हिसाब पं० जी रखैत छलाह। (कलकत्तासँ बाबूजी प्रतिमास मनिआर्डर पठा दैत छलाह।)

पंडितजीक कथन छलैन—"सुखार्थिनः कुतो विद्या !" विद्यार्थीकेँ सुखसँ कोन प्रयोजन ? छुच्छ-रुक्ख खा क' विद्या प्राप्त करक चाही।" कोनो छात्र अँचार-खटमिट्ठी वा कोनो चटकार वस्तु खाय से हुनका सह्य नहि होइत छलैन। (हमर दरभंगाक बहसल जीभ केँ मुजफ्फरपुर सैंति देलक।)

पं० जी अजबलालकेँ आदर्श छात्र (एकलव्य) बुझैत छलथिन। कारण जे ओ जलखइ नहि करैत छलाह, चारि आने गज बला मोटियाक कुर्त्ता पहिरैत छलाह, खाली पैर रहैत छलाह और प्रत्येक मंगलकेँ महावीरजीक पूजाक हेतु पं० जी केँ केराक पात काटि क' आनि दैत छलथिन।

डेरामे भरि राति मच्छरक अखंड कीर्त्तन होइत छलैक। एक बेर आनन्द गामसँ मशहरी नेने ऐलाह और लगाक' भरि राति आनन्दसँ सुतलाह। हुनका एहि तरहेँ निश्चिन्त भ' फोँक कटैत देखि पंडितजी कुकरैत रहलाह आ भोरे उठि आनन्दकेँ तेहन-तेहन यङ्लुगन्त धातु-रूप पूछय लगलथिन जे आनन्दक सिट्टी-पिट्टी गुम ! पं० जी हुचम्पन्त करैत कहलथिन—"मशहरिओ लगाक' सुतबह आ व्याकरणो आबि जैतौह, ई दुनू बात कोना भ' सकैत छौह ? एहि बेर संस्कृतमे लड्डू भेटतौह।" तहियासँ फेर आनन्दक मशहरी नहि लगलैन।

पं० जी आदित्य ब्रह्मचारीकेँ बहुत मानैत छलथिन। हुनका सत्यवादी युधिष्ठिर कहैत छलथिन। परन्तु, एक दिन ओहो धुथाइमे पड़ि गेलाह। बात ई भेलैक जे आनन्दक गाममे पोखरिक बड़का माछ आयल रहैन। आ खूब विन्याससँ तरल-झोराओल गेल। पंडितजी प्रेमपूर्वक तरल पलदकेँ मुँहमे दैत छलाह कि 'प्रथमे ग्रासे मक्षिकापातः' भ' गेलैन। ब्रह्मचारी हाथमे एकटा तार नेने दौड़ल ऐलथिन—"पंडितजी! अपनेक पित्ती मरि गेलाह।" पंडितजीक हाथसँ माछ छूटि गेलैन। ब्रह्मचारीकेँ रेड़य लगलथिन—"ही युधिष्ठिरक अवतार! ई बात कनेक थम्हिक' कहितह त' कि ब्रह्मवध लागि जइतौह?" ब्रह्मचारी निरुत्तर छलाह। पैर पर खसैत कहलथिन—"गुरुजी, आब' दोसर तार आयोत त' नहि कहब।"

मास्टर साहेब पक्का सिद्धांत, सादा जीवन एवं ठोस विचारक लोक छलाह। कोनो लंफ-लंफा वेवय नहि चाहैत छलाह। एक बेर कमलाकान्तकेँ अलबर्ट फैसनसँ बाबरी छटौने देखि हजामकेँ बजाय कैंचीसँ बरिबराबर करबा देलथिन।

कन्हौली स्टेटक एकटा छात्र (पंडित बाबू) मास्टर साहबक शिष्य छलथिन। हुनका पान खैबाक अभ्यास छलैन, मुदा मास्टर साहेब लग जैबा काल नीक जकाँ मुँह धो क' कुरड़ क' लैत छलाह। एक दिन कोनो विद्यार्थी मुँहमे सिगरेट लगौने रहय। ओ मास्टर साहेबकेँ देखि जरिते सिगरेट मुट्ठीमे बन्द क' लेलक। ताहि दिन शिक्षकक तेहन धाख छलैन।

हमरा सभकेँ केवल छात्रोपयोगी पुस्तक पढ़बाक अनुमति छल। (यथा 'ब्रह्मचर्य ही जीवन है,') एक दिन मास्टर साहब हमरा हाथमे शरद बाबूक उपन्यास (प्रायः देवदास) देखि छीनि लेलनि आ आदेश देलनि—"अभी युक्लिड का उनतीसवाँ थियोरम बनाकर दिखलाओ।"

तहिना एक बेर केओ भीत पर पेन्सिलसँ लिखि देने रहैक—

"एक तरफ है इश्किहाँ औ' एक तरफ है माहरू!
इस दुतरफी आग में कैसे बचेगी आबरू?"

मास्टर साहेबकेँ सन्देह भेलैन जे ओ हमरे लिखल हैत। ओ हमरा बजाक' डाँटय लगलाह—"उर्दू की शायरी छाँटता है! अभी से आशिक-माशूक की बात करता है।" पं० जी रंग पर फिटकिरी पड़ा देलथिन—

"कुमरजी! हम त' आइ धरि बुझबे नहि कैलिऐक जे 'इश्क' ककरा कहैत छैक, आ आइ-काल्हुक छौंड़ा सभ शुरुएसँ ओकर पाठ पढ़य लागि जाइत अछि!" मास्टर साहबक हुक्म भेल—"अभी उस लाइन को रबड़ से मिटाओ।" (पाछाँ पता लगलैन जे ओ दोसर विद्यार्थीक लिखल छलैक।)

ओहि समयक किछु सङ्गी छथि, रामजी (जे बादमे इन्जीनियर भेलाह) आ नित्यगोपाल भट्टाचार्य (जे बादमे सन्यासी भ' गेलाह)। हृदयनारायण आ शिवदेव फुटबॉलक 'चम्पियन' छलाह। ओहि समयमे कोनो 'स्टुडेन्ट युनियन' (छात्रसंघ) नामक संस्था नहि छलैक, परन्तु विद्यार्थी लोकनिमे जे पारस्परिक सौहार्द भाव छलैन से आब दुर्लभ अछि।

हेडमास्टर साहब सहृदय वैष्णव छलाह। प्रत्येक शनिक अन्तिम घंटीमे हमरा सभकेँ कामन- रूममे बैसा कय प्रार्थना करबैत छलाह—,

"अच्युतं केशवं रामनारायणम्
कृष्ण दामोदरं वासुदेवं भजे…"

हुनक कोमल स्वर हमरा सभकेँ वशीभूत क' दैत छल।

हमर स्कूल राष्ट्रीय भावनासँ ओतप्रोत छल। अधिकांश शिक्षक आ छात्र खद्दरक धोती-कुर्त्ता पहिरैत छलाह। कोनो पर्व होइत छलैक त' हिन्दू मुसलमान, सभ एक संग मिलि "सुजलाम् सुफलाम्" करैत छलाह।

ताहि दिनक गुरु नारिकेरवत् होइत छलाह—ऊपरसँ शुष्क-कठोर, भीतर सँ आर्द्र कोमल। ओ लोकनि हमरा सभकेँ पुत्रवत् मनैत छलाह आ हमहूँ सभ पिता-तुल्य मानैत छलिऐन। आब बुझना जाइछ जे ओहि कठोर अनुशासनक मूलमे कतेक वात्सल्य भरल रहैत छलैक।

तहिया विद्यार्थीकेँ अपन परीक्षाफल अखबारेसँ ज्ञात होइत छलैन। बीचमे की सभ प्रक्रिया होइत छलैक, से हमरा सभकेँ ज्ञात नहि छल। जेना मशीनमे खिचड़ा खसौला पर वजनक टिकट बहराइत छैक, तहिना हम सभ रिजल्ट बुझैत छलहुँ।

१९२५ (मार्च)मे मैट्रिकक परीक्षा द' क' हम गाम आयल रही। एक दिन हमरा ओहि ठाम पूजा होइत रहय, ओही बीच मास्टर साहेब अखबार नेने ऐलाह। बाबूजीकेँ कहलथिन—"पं० जी, मधुर खोआउ, हरिमोहन फर्स्ट भेल छथि।"

एकर श्रेय कालेजिएट स्कूलक ओहि अनुशासनकेँ छलैक जे हमर यायावर मनकेँ मौलिक' पाठ्य-विषय पर केन्द्रित क' देलक। यदि से नहि होइत त प्रयः काव्याकाशेमे उड़ैत रहि जैतहुँ। स्कूली जीवन यथार्थक धरातल पर आनि देलक।

हमरा मैट्रिकमे डिस्ट्रिक्ट स्कालरशिप भेटल। प्रवेशिका परीक्षाक ओ सफलता हमरा कालेजक जीवनमे प्रवेश करबाक मार्ग खोलि देलक। जीवनपथक दिशा निर्धारित भ' गेल और निश्चित लक्ष्य दिस अग्रसर हैबाक प्रेरणा भेटल।

५

श्वशुर-मंदिर

(जोम, कालीबाड़ी आ बालिका वधू)

१९२४क ग्रीष्मावकाशमे हम घर पर रही। बाबूजी सेहो किछु दिनक हेतु कलकत्तासँ गाम आयल रहथि। ओहि बीच एक दिन एक वयोवृद्ध पंडित जे चपकन पाग पहिरने रहथि हमरा दरबाजा पर घोड़ासँ उतरलाह। ओ छलाह जोमाक पं० सोनेलाल झा जे अपन कन्याक हेतु वर-याचनामे आयल छलाह।

बाबूजी हुनकर नामसँ परिचित छलथिन। (प्रतिष्ठित पंडितक रूपमे जनैत छलथिन।) दुहु गोटामे शिष्टाचारक आदान-प्रदान होमय लगलैन। एक दिस पजुआरे भरगाम, शाण्डिल्य गोत्र; दोसर दिस परिवार सकुरी, वत्स गोत्र। दुनू वंशमे बड़का-बड़का पाँजि। गामक घटकराज सन्तीलाल झा परिचय-पात्र मिलान कय कहलथिन—"ई मणिकाञ्चन योग होयत।" बाबूजीक दुनू मन्त्री, डाकबाबू आ पं० आर्त्तनाथ झा, अनुमोदन कैलथिन। पञ्चाङ्ग देखिक' विवाहक तिथिओ निश्चित भ' गेल। पं० जी आशीर्वादस्वरूप पाँच गोट जनउ-सुपारी अपन बटुआसँ बहार कय हमरा हाथमे राखि देलनि।

ताहि दिन बालक (वर)सँ किछु पुछबाक प्रयोजने नहि रहैक। लेन-देनक कोनो प्रश्ने नहि। जोमामे बहिनदाइक एक ननिनी सम्भवनि दाइ रहैत छलीह, जे यदाकदा सनेस पठबैत रहै छलीह। सभकेँ खुशी भेलैन जे ओतयसँ खूब भार-दोर आओत।

नियत समय पर ('आषाढ़स्य प्रथम दिवसे') पं० जीक छोट भाय (पं० सुन्दर लाल झा) ऐलाह और हमरा ल' गेलाह। तहिया मैथिल समाजमे वरियातिक

कोनो आडम्बरे नहि रहैक। केवल डाक बाबू सङ्ग गेल रहथि। लोमा हमरा गामसँ तीन कोस दक्षिण, बरैला चौरक ओहि पार। हम सभ दीया-बातीक समय पं० जीक दलान पर पहुँचि गेलहुँ।

आङनमे गीत-नाद शुरू भ' गेलैक। एक झुण्ड स्त्रीगण परिछन करैत ऐलीह और हमरा भीतर ल' गेलीह। अपने गाम जकाँ एहू ठाम गंगा-यमुनी सङ्गम देखबामे आयल। शुद्ध एकवसनाक सङ्ग-सङ्ग कञ्चुकी-बुलकी वाली सेहो छलीह।

सभसँ आगाँ एक चञ्चला किशोरी छलीह, जे मैना जकाँ चहकैत छलीह ओ हमर हाथ ध'क' विधि करौने जाइ छलीह। बहुत रातें विधि-बाध भेलैक।

छन्दोग पद्धतिसँ विवाह होइत-होइत बहुत राति बीति गेलैक। हम औंघाय लागि गेलहुँ। कखन की भेलैक से सभ मन नहि अछि। जखन रात्रिशेषमे एक बेर निन्द टूटल त' अहिवातक पातिलक मद्धिम प्रकाशमे देखबामे आयल जे हम भूमि-शय्या पर छी और दोसर शीतलपाटी पर वैह किशोरी एक बालिकाक संग निद्रामग्न छथि।

ताहि समय ई प्रथा छलैक जे चतुर्थी पर्यन्त वर-कन्याक पृथक्-पृथक् शय्या विधान होइत छलैक और बीचमे विधिकरी अगोरिक' रहैत छलथिन। (ब्रह्म-चर्यक रक्षिका बनिक'।)

यद्यपि ओहन अजोह वर-कन्याकेँ देखैत एकर प्रयोजन नहि छलैक, तथापि विधिक पालन त' आवश्यके छलैक। तीन राति धरि हमरो ओहिना प्रहरीक अनुशासनमे रहय पड़ल। ओ अनुशासिका स्वयं षोडशी (हमरा सँ किछुए दिन जेठ) छलीह। तथापि ओ अपन जेठी बनबैत हमरा 'बौआ' कहैत छलीह (और हमहुँ 'बहिन' कहिक' सम्बोधन करैत छलिऐन)। हमर समस्त परिचर्या (चानन, काजर, बिखनी, मेवा मिश्री दूध आदि)क भार हुनके ऊपर छलैन। ओ फुद्दीरानी जकाँ उड़ि-उड़िक' काज करैत छलीह।

हमर सासु (पिलखबाड़ वाली) बड्ड भावुकी छलीह। मद्दुअकमे अठारह टा बाटीमे मधुरक संचार सगर्वत छलीह। खीरक थारी पर भरि बड़ा थाल्ही उझीलि दैत छलीह। रंग-बिरंगक गोपी सिनुरिया मालदह कृष्ण-भोगक अमार लागि जाइ छल।

भोजन-काल गीत होइत छल—

"बाजितपुरसँ सुग्गा आएल, नेह लगाओल रे।
लोमा बैस बसेर, अमृतफल पाओल रे।"

हमर सासु आइमाइकेँ कहैन छलथिन—"की कहिओन बहिना! ई किछु खैबे नहि करैत छथिन, कतेक खोंटिक' छोड़ि दैत छथिन। गाम जैताह त' अपना मायसँ उपराग देऔताह।" ई कहैत-कहैत हुनका आँखिमे नोर भरि अबैत छलैन।

आइ-माइ कहैत छलथिन—"बहिना! गङ्गा नहाक' एहन जमाय पौलनि अछि। तेहन नीक छथिन जे ककरो दिस आँखिओ उठाक' नहि तकैत छथिन।"

बहुत किछु अपने गाम जकाँ लगैत छल। जेना हमरा मायक 'बहिना' छलथिन बीरपुरवाली, तहिना एतय सासुक बहिना छलथिन रामवती दाइ (जे ओहने छोहगरि छलथिन)। जेना गामपर बहिनक सखी-बहिनपा अबैत छलथिन, तहिना एहुठाम अबैत छलीह। केओ (हमरा सासुकेँ) 'काकी' कहैत छलथिन, केओ 'चाची'। सभ ग्रामीण सरलताक प्रतीक छलीह।

हमर विधिकरी व्यवहारक शिक्षा दैत रहैत छलीह—"आइ-माइक ऐला पर उठिक' ठाढ़ भ' जाइ, माथ झाँपि ली" इत्यादि। ताहि दिनक 'वर' तेहन लजकोटर होइत छलाह जे संकोचवश मिश्रीकेँ फुड़फुड़ाक' नहि खाइत छलाह। (जखन मुँहमे नीक जकाँ घुलि जाइत छलैन त' सेप घोँटि जाइत छलाह)। हमरो बहुत किछु तहिना रहय पड़ैत छल।

तहियाक कोनो-कोनो बात मन पड़ैत अछि त' हँसी लागि जाइत अछि। एक-दू टा चुट्टुकका कहि दैत छी।

ताहि दिन ई व्यवहार छलैक जे वरकेँ बाह्यभूमि ल' जैबाक हेतु सार लोटा ल'क' जाइत छलथिन। हमरा अपन सार त' छलाह नहि, पं० जीक सरबेटा (वासुदेवपुरक चतुर झा) लोटा नेने संग गेलाह। किछु दूर मैदानमे गेलाक बाद ओ बजलाह—"ओझा! हमरा रतौन्ही भ' गेल अछि। आब अन्हारमे किछु नहि सुझैत अछि। लोटा ल' लेल जाओ।" ई कहैत जहिना हमरा हाथमे जलपात्र देबय लगलाह कि ओ

नीचाँ खसि पड़लैन । ओ बजलाह—"जाह, जल त' खसि पड़ल । आब बाबाजी (चूड़ामणि दास)क इनार पर चलल जाओ ।"

ओतय गेला पर बजलाह—"हमरा त' इनार, डेकुल, डोल, उबहनि, किछु नहि सुझैत अछि । अपनहि पानि भरि लेल जाओ । एतय के देखत ?" फिरती बेर कहलनि—"हमरो हाथ धरोने चलू ।" घर ऐला पर नेहोरा करय लगलाह—"ई सभ बात पीसीकेँ नहि कहबैन । सुनतीह त' हमरा कज्जतिक त'र क' देतीह ।"

तथापि भेद खुजिए गेलैन । बाबाजी पं० जंक पनिभरिनीकेँ कहि देलथिन और ओ हमरा विधिकरीकेँ । ओ चतुर झा पर बरसि पड़लथिन—"एँ हो चतुर ! तोँ एहन अलूरि, अपरोजक छह ? नहि सुझैत छोह, त' संग किऐक गेलहुन ? भरि बाट खबासी करबैत ऐलहुन अछि । गामक जे लोक देखने हेतैन से की कहने हेतैन ? तोहर चतुर नाम के रखलकोह ?"

तहिआसँ ओ पहर दिन अछैत लोटा ल' क' हमरा पर सवार भ' जाइत छलाह—"ओझा ! चलल जाओ, दिनगरे भ' आबी ।"

ओहि समय इहो व्यवहार रहैक जे चतुर्थीक चारू दिन वरकेँ तेल-उबटन (पीसल हरदि सरिसव आदि) लगाक' स्नान कराओल जाइत छलैन । एहि कायक हेतु एक विशाल, थुलथुल, प्रौढ़ा, हथिनी जकाँ थल-थल करैत ऐलीह । वर दुब्बर आ परिचारिका दू वर ! ओ वरक छाती पर एक लोड़ा मसाला थोपि, तेना दलकैत, दलमलित करैत, मर्दन कलाक तेहन सशक्त परिचय देबय लगलीह जे ओ हेवा सुकुमार वरकेँ महग पड़लैन । कहबी छैक जे 'विवाहसँ विधि भारी' से ओ वीरांगना नीक जकाँ अनुभव करा देलनि । एतबे नहि ! ओ तेना कूद करय लगलीह जेना कोबरक वर गोबर-गणेश, माटिक महादेव वा स्तनंधय शिशु होथि ! ओहन-ओहन पकठोसल बात सुनि मनमे पित्त त बहुत उठल, परन्तु, ओहन मतंग सँ के मुँह लगबैत ?

जखन हम अपन विधिशिक्षिकासँ ओहि निरंकुशाक नालिश कैलिऐन त' ओ विहुँसि उठलीह—"की करबैक ओझा ! सासुरक खबासिन एहिना कहैत छैक । रामोजीकेँ जनकपुरमे गारि भेल रहैन । जँ ई सभ हास-परिहास एहिठाम लोकामे नहि हैत, त' कि बाजितपुरमे हैत ?"

बात त' यथार्थ । नव सासुरमे रंग-रभस होइतहि छैक । तेँ कोबरकेँ 'कौतुकागार' कहल जाइत छैक । परन्तु वरे बुरिबक त' दहेज के लेत ! खंजनि दाइ सुनलथिन त ओहि हास्य-रसिकाक गंजन क' देलथिन—"अएँ ! आइकि एहन सपरतीभ जे हमरा मातृकक उपहास करय ! हिनकासँ चौलि करबैन ! ई सुधबोक बच्चा छथि तेँ नहि बजैत छथि । दोसर रहैत त' बुझा दैत ………"

खंजनि दाइ तमकिक' गेलीह और एक सत्तरि वर्षक वृद्धाकेँ नेने ऐलीह, जिनका वातरस छलैन (बालक रस नहि) । आब नोंक-झोंक वा खटमधुर परिहास कोनो प्रश्ने नहि रहल । तहियासँ फेर कहियो कोनो बातक हेतु खंजनि दाइकेँ नहि कहलिऐन ।

चतुर्थी दिन पर्यन्त मधुराएने चलैत रहलैक । जखन मीठ खाइत-खाइत जी उमठि गेल और नमकीनक हेतु खुसफुस करय लागल त' एक दिन विधिकरी केँ कहलिऐन । ओ भानस घरमे गेलीह और आँचर तर कोनो वस्तु नुकौने ऐलीह । एकान्तमे चुपचाप एकटा 'चाँप' (बड़) बहार कय हमरा हाथमे ध' देलनि । परन्तु मुँहमे दैत देरी ओ गुड़क गुलगुला जकाँ लागल । विनोदिनी विधिकरी खिलखिला उठलीह—"केहन छका देलहुँ, ओझा !" पुनः एक कटाक्षपूर्ण मुसकी छोड़ैत बजलीह—"वर्जित वस्तु पर लोभ नहि करक चाही ।"

ओ हमरा संगभैया जकाँ बुझि एहन-एहन व्यंग-विनोद करैत छलीह जे अंतस्तलकेँ गुद-गुदा दैत छल । (हुनकर ओ कैशोर्य-सुलभ सहज निर्मल सख्य-भाव एखन धरि स्मृतिमे अङ्कित अछि और मनकेँ माधुर्यसँ भरि दैत अछि ।)

जखन चतुर्थीक समस्त विधि-व्यवहार सम्पन्न भ' गेलैक तखन निशीथ कालमे विधिकरी एकान्त शयनागारमे बालिका वधूकेँ छोड़ि गेलथिन । ओ लाजवन्ती लता जकाँ संकुचित छलीह । अथक प्रयास कैला उतर मौन भङ्ग भेलैन । ज्ञात भेल जे हुनकर नाम 'सुभद्रा' छैन, ओ गामक कन्या पाठशालासँ पास क' चुकल छथि आगाँ पढ़बाक हेतु वजीफा भेटल छैन; विद्यालय-निरीक्षक दीप बाबू (मैला)क हाथसँ एक पुस्तक पुरस्कार भेटल छैन —'कन्या सुबोधिनी' ।

ओहन मिरीह एकादशवर्षीया बालिकासँ और गप्पे की होइत ! हमहूँ निर्विकार फोंफ काटय लगलहुँ । ओ अन्हरोखे कखन खिड़की खोलिक' बहरा गेलीह से बुझबा योग्य नहि भेल ।

प्रातःकाल कोठरी नव कुसुमित कदम्बक सौरभसँ गमकि उठल। सद्यःस्नाता विधिकरी हाथमे एक गुच्छा फूल नेने मन्द-मन्द मुसुकाइत सोरममे ठाढ़ि छलीह। ओ हमर मनोभाव बुझि, मुनिकन्या जकाँ उपदेश देबय लगलीह—"एखन ओ बच्ची अछि। परन्तु कलासँ फूल होइत की देरी लगैत छैक? तेसर वर्ष द्विरागमन हेतैक। तावत् खिलि जाएत। एखन अहूँ त विद्यार्थीए छी। खूब मन लगा क' पढ़ू। तपस्या करू। एक दिन फल भेटबे करत। 'समय' पाबि तरुवर फरय'………"

हम कनेक अबाइत पुछलिऐन—"तावत् 'हुनको'त आगाँ पढ़ाओल जा सकैत छैन?"

विधिकरी दाँत तर जीभ कूचि लेलनि—"ई की कहलहुँ, बौआ! आब विवाह भेला पर ओ डेढ़ कोस दूर जंदाहा जाक' लड़काक स्कूलमे पढ़य जेतैक? गामक लोक की कहतैक! मिसर जी (पं० दूबा मिश्र) कतेक हँसथिन? बाबू ककरा भला किन्नहुँ जाय देथिन?'

तावत् हमरो नामसँ चिट्ठी आबि गेलैक—

"श्रीमत्समधिमहोदयेषु सादर नमस्काराः सन्तु। अत्र कुशलं तत्रास्तु। ……आगाँ विशेष निवेदन ई जे श्रीमती सौभाग्यवती कनियाँ आब विवाह भ' गेला उत्तर स्कूलमे पढ़य जाथि से समीचीन नहि……"

समीचीन होइत कोना? ओहि समय कन्या-शिक्षाक सूत्र छलैक—"पाठो विवाहावधिः।" ई ब्रह्मवाक्य के काटि सकैत छल? ओहि मर्यादाक सीमाकेँ कोन मैथिल कन्या उल्लंघन क' सकैत छलीह? फलस्वरूप बालिका वधू (जे वयःसन्धिक द्वारोपर नहि पहुँचल छलीह) लक्ष्मण-रेखाक एही पार रहि गेलीह।*

\+ \+ \+

पं० जीक घर एक मठ जकाँ छलैन। दुनू भायमे किनको पुत्र नहि छलैन। तीन टा कन्या मात्र छलथिन। हमर अपन सासु (वासुदेवपुर वाली) दस वर्ष पूर्वहिं दिवंगता भ' चुकल छलीह। तीनू कन्याक पालन-पोषण

* तकरा किछु वर्षक बाद ओ लक्ष्मण रेखा स्वतः मेटा गेलैक। लोमाक अनेक कन्या (सिया देवी आदि) जंदाहा स्कूलमे जाक' पढ़य लगलीह और कन्या-विद्यालय मे शिक्षिको बनि गेलीह।

पितिआइन (पिलखवाड़ वाली) कैलथिन। ओ निःसन्तान छलीह। अपन समस्त वात्सल्य स्नेह एही तीनू कन्यापर केन्द्रित क' देने छलीह। तीनू कन्याे हुनका माये क' क' बुझैत छलथिन। तीनू कन्याक विवाह क्रमशः तरौनी आ ननुआड़ भेल छलैन। प्रतिष्ठित पंडित परिवारमे।

पं० जी दुनू भाय वैमात्रेय छलाह, परन्तु सहोदरे जकाँ प्रेम रहैत छलैन। बड़का पं० जी मुजफ्फरपुर कालीबाड़ीमे रहैत छलाह। छोट भाय (पं० सुन्दर लाल झा) गामपर रहि खेती-बाड़ी देखैत छलाह। गाममे बड्ड प्रतिष्ठा छलनि। हमर सासु मर्यादाक प्रतीक छलीह। राति दिन व्यवहारक पालनमे लागलि रहैत छलीह। हमरे माय जकाँ हुनको भार-दोर सैंतबाक बड्ड आवेश छलैन। परिवारमे निरन्तर शान्त रसक मंदाकिनी बहैत रहै छलैन। ओ आश्रम एक पवित्र मन्दिर जकाँ लगैत छल।[1]

१९२५मे हम मुजफ्फरपुर जी० बी० बी० कालेजमे आइ० ए०मे नाम लिखओलहुँ और ससुरक डेरा (कालीबाड़ी)मे रहि पढ़य लगलहुँ।

कालीबाड़ी रमनाक सुप्रसिद्ध रईस उमाशंकर बाबूक प्राचीन मन्दिर छलैन। ओकर एक विशिष्ट मर्यादा छलैक। कालीजीक समस्त प्रबन्ध (पूजा पाठ, भोग राग आदि) पंडितजीक हाथमे छलैन। हुनकर भागिन (रहिकाक शीतलजी) पर भानसभातक भार छलैन। शीतलजी तेहन षट्कर्मी छलाह जे जारनकेँ अछिंजलसँ सिक्त कय आँच पजारैत छलाह। भानसक ओसारा पर चाकहातसँ लकीर खींचि देल छलथिन। ओकरा भीतर केओ पैर नहि द' सकैत छल। अन्यथा चाउरकेँ चुनि-चुनि क' अगनियाँ फेंक जाइत छल। भानस भेलापर ओ थारी परसि एक-एक टुटी भ' क' कालीजीक आगाँ नेने जाइत छलाह और घंटी टुनटुना क' हुनका भोग लगबैत छलथिन। तत्पश्चात् हमरा सभक हेतु लाइन क्लीयर होइ छल। पं० जी कहैत छलाह—"ओझा, गंजी उतारल जाओ, हाथ पैर धोएल जाओ।"

हमहूँ पं० जीक देखा देखी नैवेद्य खोंटि 'ओम अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा' मंत्र पढ़ि आचमन करैत छलहुँ। यद्यपि हमरा ई सभ टिटिम्भा व्यर्थ बुझि पड़ैत

(१) अन्ततः) लगभग २० वर्षक बाद) ओ घर मन्दिरमे परिणित भ' गेलैन। पं० जी अपना दरवाजापर भगवानक मन्दिर (बनाय) अपन समस्त सम्पत्ति हुनके नामपर अर्पित क' देलथिन और अपन मझिली कन्या (कामेश्वरी देवी) पर सेवाक भार सौंपि देलथिन। (एहन संयोग जे हमर सासुके जकाँ सासुरोमे पं० जीक मन्दिर नामसँ प्रसिद्ध अछि।)

छल, तथापि पं० जीक मनस्तोषार्थ टीम-टाप करय पड़ैत छल । हमरा विधि-वत पूजा करय तँ नहि अबैत छल, केवल कनेक नाक दबाय; आँखि मुनि किछु श्लोक बुदबुदाय पूजाक स्वांग क' लैत छलहुँ ।

पं० जी हमरा पुत्रवत् मानैत छलाह । हमरा उचित समय पर भोजन, जलपान भेटय, कालेज जयबामे विलम्ब नहि हो, ताहि पर हुनक पूर्ण ध्यान रहैत छलैन । ओ आध पहर राति अछैते हमरा उठा दैत छलाह— 'ओझा, उठू, पढ़ू ।' हम सरिपहुँ पढ़ैत छी वा नहि, से बुझबाक हेतु ओ सीरक तरसँ तकैत रहैत छलाह ।

जखन हम दीपक बाती उसकबैत छलहुँ कि पं० जी टोकि दैत छलाह— 'ओझा, अंडीक तेल अशुद्ध होइत अछि । हाथ मटिया लेल जाओ ।' पढ़बासँ बेसी हाथे धोबय पड़ैत छल ।

कालीबाड़ीमे एकसँ एक कर्मकाण्ड छलाह । जखन-जखन बाहर भूमि जाइ छलाह तखन-तखन हुनाबय आबि स्नान करैत छलाह । बारहो मास कोनो ने कोनो धार्मिक कृत्य लागले रहैत छलै । आषाढ़ मास रेलवे लाइनक कात-कात जंगलसँ कुसरगत खोजि क' ल' अबैत छलाह और शुक्ल पक्षमे रविदिन मन्त्र पढ़ि क' पहुँचामे बन्हैत छलाह । श्रावणी पूर्णिमामे रक्षाबन्धन और भाद्र चतुर्दशीकेँ अनन्तक पर्व मनाओल जाइ छल । आश्विनमे पितृ-पक्ष आ देवीपक्षक धूम-धाम रहैत छल । पंडित लोकनि मंदिरक जगमोहन-पर पाँति-जोड़ि बैसि दुर्गा सप्तशती सम्पुट पाठ करैत छलाह — "नम-स्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः ।"

पावनि तिहारमे रमना डेवढ़ीसँ पाककुशल सुवासिनीक हाथक बनाओल नाना प्रकारक मिष्टान्न पकवान (बड़का-बड़का त्रिकोणाकार बेसनक लड्डू, मठरी मठरी आदि) चङेराक चङेरा अबैत रहै छल । कृष्णाष्टमी आदिमे फलाहारी मधुर, मखानक खीर, सिंहाराक हलुआ, खोआक कलाकंद, केनाक पायस, रावड़ी । (ताहि समय रावड़ी छौ आने सेर छलैक, भरि-भरि बट्टा परसल जाइत छल ।)

कालीबाड़ीक अपन विशिष्ट व्यक्तित्व छलैक । उत्तरमे रेलवी लाइन, दक्षिणमे खुलता मैदान । पूब दिस पोखरि आ लीचीक गाछी । (ताहि समय लाल बेदाना लीची दू आने सैकड़ा छलैक ।) पश्चिम दिस बड़का इनार और दूर धरि पसरल रसभरी (मकोय)क खेत । खूब रसमय परिवेश छलैक ।

कालीबाड़ीक प्रांगणमे एक विशाल कटहरक गाछ छलैक, ताहिमे जड़िसँ फुनगी धरि फल लबधल रहैत छलैक । लोक दू तीन मास धरि खजवा कोआ, आँठी देल दालि तरकारी खाइत रहै छल । पं० जीक गामसँ अपना कलमबागक बड़का-बड़का मालदह सिपिया आम अबैत छलैन त' कोठरीमे पथार लागि जाइ छलैन । ओहि समय दू आने सेर दही चूड़ा छलैक । पंडित विद्यार्थी लोकनि तीन पाइमे भरि छाक जलखइ क' लैत छलाह ।

शीतलजीमे मामक विपरीत गुण छलैन । सदिखन नाकपर पित्त चढ़ल रहैत छलैन । दुर्वासा ऋषि जकाँ तुरन्त अग्निशर्च वायुश्च भ' जाइ छलाह । एक दिन हमर एक प्रिय सहपाठी (जगदीश) हमरासँ भेंट करय आयल रहय । हम ओकरा संग जलपान करौलिऐक । ई देखितहि हुनका तोंस देल-कैनि । प० जी कोनो कार्यसँ गाम गेल रहथि । हुनके पर सबटा भार सौंप गेल रहथिन । शीतलजी तुरन्त एक चिट्ठी लिखि आदमीकेँ दौड़ा-दौड़ी लोमा पठा देलथिन ।

"पूज्यपाद मामाजीक चरणकमलमे कोटिशः दैनिक प्रणाम । आगाँ सूरति जे एतय ओझाजी भठि गेलाह । ई एकटा पैजामावाला छौंड़ाक संग एकके दोनासँ जिलेबी खैलनि अछि । अतः पत्र पबैत देरी आबि गेल जाय, हिनका यथोचित प्रतिया कराओल जाइन । इति शीतलस्य ।"

पं० जी गामसँ अयलाह और हमरा पंचगव्य द' यज्ञोपवीत बदलवाय एक सहस्त्र आठ गायत्री मन्त्र जपवाय शुद्ध कयलनि । परन्तु शीतलजीकेँ एतबेसँ सन्तोष नहि भेलैन । ओ हिनसि क' किछु दिनक हेतु गाम चल गेलाह ।

किछु दिनक उपरान्त लोमासँ बालिका-वधूक लिखल एक नान्हिटा लिफाफ आयल जाहिमे अनुरागसँ बेसी उपरागे भरल छल ।

"प्रिय ...., एतय लोक कहैत अछि जे अहाँ सन्ध्या-वन्दन नहि करैत छी, बाजारसँ पैशाचु देल वस्तु खा अबैत छी । और नहि जानि की की करैत छी .... । ई सभ कि नीक बात छैक ? ...."

ई हुनीक प्रथम पत्र छल । हम माथ पर हाथ राखि लेलहुँ—'हे भगवान एहन पंडित-पुत्रीक संग निबाह हैत ? ई त' भरि जन्म पाछे पड़बैत रहतीह ।'

कालीबाड़ीमे मानेचौकक एकटा ज्योतिषी रहैत छलाह । ओ फलित ज्योतिषक व्यवसाय करैत छलाह । जन्मकुण्डली, हस्तरेखा आदि देखि फल

कहैत छलथिन, सगुनो उचारैत छलाह। कोनो यजमानक घरमे चोरि होइत छलैक तँ मीन-मेषक विचार करैत कहैत छलथिन जे चोरि गेल वस्तु कोन दिशामे अछि और कोना भेटत।

डेरामे कतिपय विद्यार्थी रहैत छलाह। लोमाक दामोदर झा, तिलिओनाक राजेश्वरी प्रसाद सिंह और जलालपुरक श्रीकान्त। ज्योतिषीजी नवयुवक सबकें 'चांडाल चौकड़ी' कहै छलथिन। कारण ई जे ओ सभ हुनकर यजमानकें किछु किछु कहि हदका दैत छलथिन। श्रीकान्त अलबेला पुरुष छलाह। जे कहियो काल आबि जाइत छलाह ओ ज्योतिषीकें कहैत छलथिन— 'जब आप खुद अपना भविष्य नहीं जानते, तब दूसरों को क्यों ठगते हैं ?''

ज्योतिषीजी हुनका पर हुहुआ उठैत छलथिन— 'शां' पण्डितक बेटा भ' क' एहन नास्तिक बहरैलह। मियाँ जकाँ लुंगी पहिरैत छह। साहेब जकाँ साबुन लगबैत छह। अपन हाथमे दाढ़ी बनबैत छह, आधा मोछ कटैत छह, पनही पहिरने पानि पिबैत छह, ब्रह्मवर्ण होटलमे जाक' चिनियाँ माटिक चुकड़ीमे चाह पीबि अबैत छह, सामवेदी कुलमे जन्म लय (षष्ठी के) छष्ठी नहि बाजि 'षष्ठी' बजैत छह, तथापि ग्लानि नहि होइ छौह ?''

श्रीकान्त हँसि क' कहैत छलथिन— ''इसके लिए आप खफा क्यों होते हैं ? लीजिए मैं 'खषठी' बोलता हूँ।''

ज्योतिषीजी और बेसी कचकचा उठैत छलाह।

ज्योतिषी जी सभ राति सुतबा काल तीन बेर चुटकी बजा मंत्र पढ़ैत छलाह— ''कार्तिक चौरान् नाशय, नाशय, नाशय।'' परन्तु एक राति चोर कार्तिकसँ अधिक प्रबल सिद्ध भेलैन। ज्योतिषीजीक कोठरीमे सेन्ह काटि कोजागराक हेतु साँठल सभटा वस्तु ल' गेलैन।[1] ज्योतिषीजी ठाहि मारय लगलाह। श्रीकान्त कूद करय लगलथिन—'अब आपका ज्योतिष कहाँ गया ? मनी मेष की गणना क्यों नहीं करते हैं ?'

ओहि समय धर्म-समाज और आर्य-समाजमे खूब शास्त्रार्थ होइत छलैक। कहियो मूर्ति-पूजा पर, कहियो विधवा-विवाह पर। आर्यसमाजक धुरंधर वक्ता पं० धरेन्द्र शास्त्री और हास्यमूर्ति सत्यव्रतजी सामाजिक कुरीति

---

1. हमर रंगशालाक कथा 'काजीबाड़ीक चोर' मुख्यत: ओही घटना पर आधारित अछि।

और अन्ध विश्वासपर चुटकी लैत लोककें खूब हँसबैत छलाह। हमहूँ कहियो काल ओहिमे जाइत छलहुँ; परन्तु पंडितजीकें ई पसन्द नहि जे हम ओहन सभामे जाइ। ज्योतिषी जी हुनका और बेसी चढ़ा दैत छलथिन। 'अहाँक जमाय श्रीकान्तक संगतिमे घुमताह त' निश्चय फैल भ' जयताह।' पं० जी सोझिया लोक छलाह, तुरत विश्वास भ' जाइत छलैन। हमरा कहैत छलाह— 'ओझा, खूब मन लगा क' पढ़ल जाओ, जाहिसँ हमरा अयश नहि हो।'

एक बेर आर्य समाजक दिससँ विधवा विवाहक पक्षमे एक पर्चा छपाक' बाँटल गेल रहैक ताहिमे प्रमाण स्वरूप मनुस्मृतिक एक श्लोक देल गेल रहैक—

> नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीबेच पतिते पतौ।
> पंचस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते॥

सनातन धर्मक दिग्गज पक्षधर म०म० पं० शशिनाथ झा प्रभृतिक मतानुसार ओकर उत्तर पक्ष छपा क' बाँटल गेल रहैक, ओहिमे ई तर्क रहैक जे उपर्युक्त श्लोकमे 'पतौ' नहि, 'अपतौ शब्द छैक जकर अर्थ छैक ईषत् पतौ' (अर्थात् वाग्दत्ताक वर)। यदि एना सन्धि समास नहि कैल जाइक त 'पतौ' पद निष्पन्नो नहि हेतैक (पत्याम् भ' जयतैक)। अत: एहि श्लोकसँ विधवा विवाह सिद्ध नहि होइत अछि।

हम ओ 'पर्चा' ल' क' पं० जी कें देखिऐन त बहुत प्रसन्न भेलाह। डेराक आनो आन पंडित (उमेश झा, राघवजी प्रभृति) कहय लगलाह जे आब ओझा सुधियाएल जा रहल छथि।''

ओही बीचमे धर्मसमाज संस्कृत महाविद्यालयमे वाद-विवाद प्रतियोगितामे हम 'प्राच्य' संस्कृतिक मर्यादा पर संस्कृतमे भाषण कैने रही जाहिमे तीनटा पुरस्कार भेटल रहय। (ओहिमे व्रजनन्दन सहायक 'सौन्दर्योपासक' हमरा सभसँ बेसी प्रभावित कैलक। किछु दिन ओही शैलीमे लिखैत रहलहुँ।) ओही आसपास एक बेर स्वामी हंस स्वरूप आएल रहथि। जिनक धन्यवाद प्रदान करैत काल पं ईश्वरीदत्त दीगविस्त हुनका नामक सातटा चमत्कृत अर्थ लगौने रहथिन। नव-नव चमत्कृत अर्थ उद्भावित कैने रहथिन, से देखि हमहूँ कतेको नामक ओहिना रंगबिरंगी व्याख्या करय लगलहुँ।[1]

---

१. एक बेर पटना कालिजमे पृथ्वीराज कपूर, बी० एन० कालेज मे त्रिपाठी सूर्यकान्त निराला और अजन्ता प्रेसमे बनारसी दासचतुर्वेदीक नामक तहिना व्याख्या कैलिऐन जाहिसँ सभामे आनन्द आबि गेलैक।

ई सभ देखि पं० जी आ हुनक इष्ट मित्र सभ हमर प्रशंसा करय लगलाह— 'ओझाजी, पंडितक बेटा, पंडितक जमाय तखन कोना ने पंडितक संस्कार जगतैन ?'

रचना डेवढ़ीमे उमाशंकर बाबू प्रत्येक रविवारकें सायंकाल साहित्य गोष्ठी करैत छलाह, जाहिमे हुनकर अनेको नवयुवक मित्र (राधारमण टंडन, जगदीश नारायण मेहरोत्रा प्रभृति) उल्लासपूर्वक सम्मिलित होइ छलाह। ओहिमे समस्याक पूर्ति सेहो होइ छलैक। एक बेर समस्या रहैक भदरा' हम ओकर पूर्ति प्रायः एहि तरहेँ कैने रहिऐक—

"छप्पर चूवत है शतधार मे फाटि गई टिन की चदरा,
ऐसेहि काल मे सांग सवाहन सायुध आवि घिरी बदरा
ऐसे सुलच्छन हैं हम जो जब पौंस गुई तो पड़ी भदरा
जतरा न बनी ससुरार की बोबहि बैरिन आवि गई भदरा।"

एहन-एहन हास्य विनोदसँ सभक मनोरंजन होइत छलैन। परन्तु पं० जीक चिन्ता बढ़ि जाइ छलैन। पुनः अपन उपदेशक स्मरण कराबय लागि जाइ छलाह— 'ओझा, छात्राणामध्ययनं तपः।'

कालेजमे एकसँ एक विशिष्ट प्रोफेसर छलाह। प्रो० श्रीरेश्वर चटर्जी (इंगलिश), प्रो० जीवन कृष्ण सरकार (फिलोसोफी), प्रो० रामप्रसाद खोसला (हिस्ट्री), प्रो० उमानाथ झा (संस्कृत), जे सभ अपना-अपना विषयमे निष्णात छलाह।

जखन टेस्टक बाद क्लास बन्द भ' गेलैक त हम एक नव प्रयोग कैलहुँ। सभटा पाठ्य पुस्तककेँ आलमीरामे बन्द क' देलिऐक। ओहि सभक आधार पर कापी सभमे जे विषय वस्तु प्रस्तुत कैने छलहुँ सैह अध्ययन मनन करय लगलहुँ। जखन से भ' गेल तखन युनिवर्सिटी परीक्षा क' रिहर्सल करय लागि गेलहुँ। रातिमे सात सँ दस बजे धरि कोठरी बन्द कय कुर्सी-टेबुल लगा क' (और सामने घड़ी राखि) बैसि जाइ और लगातार एक सुरमे कोनो छौ टा प्रश्नक उत्तर तीन घंटामे लिखि जाइ। तकरा बाद स्वयं परीक्षक बनि अपन कापी देखी और कड़ाइसँ नंबर दी। एही तरहेँ प्रत्येक पेपरक परीक्षाक प्रक्रिया पहिनहि समाप्त क' लेलहुँ।

संगी साथी सभ हँसैत छलाह जे ओझाजी खेल क' रहल छथि। ज्योतिषीजी कनफुसकी करथि जे पं० जीक जमाय कोनो तंत्र मंत्रक प्रयोग क' रहल छथिन। पं० जी, भगवती के गोहरावय लगलाह— 'निरालम्बो लम्बोदर

जननि कं यामि शरणम्।' हम परीक्षा देबय जाइ छलहुँ त ओ हमरा भगवतीक चरणामृत दय ठोप क' दैत छलाह।

जखन परीक्षा भवनमे गेलहुँ और प्रश्नपत्र भेटल तँ देखलहुँ जे सभटा हम पढ़िनहि क' चुकल छी। और एक दिवसे ओहिना लिखि गेलहुँ। प्रत्येक दिन तहिना भेल।

जखन परीक्षाफल बहरैलैक त हमर नाम बिहार-उड़ीसा भरिमे फर्स्ट छल। (ताहि दिन दुनू प्रान्तक सम्मिलित परीक्षा होइत छलैक।) सभकें आश्चर्य लगलैक जे हम कोना हैमैत बेराइत सर्वोच्च स्थान प्राप्त कय लेलहुँ।

पं० जी गद्गद् होइत बजलाह— "धन्य भगवती! जे हमरा एहन यश देओलनि। ई सभटा हुनके कृपा थिकैन।

कालीबाड़ीक ओ दू वर्ष खूब आनन्द विनोदसँ बीतल और पूर्णतः सफल रहल।

\+ + + +

१९२७ फागुनमे द्विरागमन भ' गेल। सोनाक कन्या बाजितपुरमे कनियाँ बनि क' आबि गेलीह। परन्तु महफासँ उतरैत देरी हुनका पर शास्त्रीय प्रतिबन्ध लागि गेलैन। तीन दिन धरि गृह प्रवेशक बढ़ियाँ मुहूर्त्त नहि बनैत छलैक।

अतएव कनियाकेँ बहरघरामे, एक निमुन्न कोठरीमे, राखल गेलैन। लोकासँ एक खवासिन आयल छलथिन जे हुनक अंगरक्षिका बनि क' ठोकल रहैत छलथिन। नववधूकेँ सर्वप्रथम पैघ शिक्षा देल गेलैन जे पाँच तानि माथ निहुरौने चुपचाप बैसल रहथि। हुनकर बाजब केओ नहि सुनैत, कोनो प्रयोजन होइन त' खवासिनक कानमे फुसफुसा क' कहथिन अथवा चुटकी बजा क' तीन वाइ (छोट ननदि) वा दाइ (पाँच वर्षक देवर)केँ संकेत क' देथिन।

नववधू तीन दिन तीन राति बन्दिनी जकाँ रहि चारिम राति विधि-पूर्वक कोबर घरमे आनल गेलीह। आब ओ मुकुलित कली नहि, विकसित फूल छलीह। अल्हड़ बालिकासँ मर्यादित गृहवधू बनि गेलि छलीह।

कनियाँ देखक हेतु मुण्डक मुण्ड आइ माइ अबैत रहैत छलथिन। माय कनियाँक मुह कनेक उघारि क' देखा दैत छलथिन। आइ माइ सभ प्रशंसा करैत छलथिन— वाह! बड़ सुन्दर। साक्षात् देवकन्या। (दैवा, अहिबदाइ

ऐक वर्ष पूर्वहि दिवंगता भ' चुकल छलीह । साय के कचोट भेलैन जे ओ सभ कनियाँ नहि देखि सकलीह ।) आइ-माइ सभक ऐला पर माय कहैत छल-थिन —'कनियाँ, हिनका सभक पैर पखारिऔन ।'

आज्ञाकारिणी पुत्रवधू हुनका सभक धुरिआएल पैर पोछि तरबा रगड़ि ठेहुनसँ ऐंड़ी धरि चरण-सेवामे लागि जाइ छलथिन । आइ माइ सभ प्रसन्न भ' आशीर्वाद दैत छलथिन— 'दूधे नहाउ, पूते फरू । आब भ' गेलैक । कतेक जतिब ? भगवान नीके राखथु ।' और ई कहैत अपन दोसरो पैर कनियाँक आगाँ बढ़ा दैत छलथिन ।

पंडिता सासु पंडित-कन्या पुत्रवधूकेँ नीक जकाँ दीक्षित क' लेलथिन । ऐपन, पुरहर, सराइ, घंटी, गोसाउन घर, पिनबार, भानसभातक पोर्टफोलियो हुनका भेटि गेलैन ।

नैहरक जे कन्या एहन दुलार छलीह जे पितियाइन कोरमे बैसा कय खुअबैत छलथिन से आब दस बजे राति धरि दस गोटाके ठाँव बाट कय, ऐँठ फेरि एगारह बजे रातिमे फुरसति पबैत छलीह । हमरा आश्चर्य भेल जे एतबे दिनमे एहन परिवर्तन कोना भ' गेलैन ।

हम नववधूकेँ पढ़बाक हेतु कोनो-कोनो पुस्तक आनि क' दैत छलिऐन । परन्तु ओ तेहन गृहजालमे फँसि गे जाइत छलीह जे पुस्तक कोठीक कान्हपर पड़ल रहि जाइत छलैन । जखन ओ दिन भरिक काजसँ झमारलि रातिमे थाकल भेल अबैत छलीह त' हम पुछैत छलिऐन— "पुस्तक समाप्त भेल ?"

ओ अपराधिनी जकाँ मौन रहि जाइत छलीह । हमरा तामस चढ़ि जाइत छल । ओ सिसकय लगैत छलीह । हमरा सूर चढ़ि जाइत छल त' भरि-भरि राति जगाक' पढ़ाबय लगैत छलिऐन । कखनो काल लिखैत-लिखैत कापी, पेन्सिल हाथमे नेनहि हुनक आँखि मुना जाइत छलैन परन्तु जहाँ कनेक झक लगैत छलनि कि बाहर जिंजिर खटखटा उठैत छलनि — "कनियाँ, उठू आब फड़िच्छ भ' गेलैक ।"

तदुपरान्त नववधू गृहकार्यक तेहन चक्रव्यूहमे फँसि जाइ छलीह, जकरा भेदन करबाक सामर्थ्य अभिमन्युक कोन कथा द्रोणाचार्योमे नहि छलैन । हुनका हाथमे पुस्तक देखि घरक लोककेँ तहिना लगैत छलैन, जेना सत्ययुगक कोनो शम्बूक तपस्या क' रहल हो । ओही समय सासु ननदिकेँ घरक सभटा काज फुरय लगैत छलैन— "कनियाँ ! पाठि फेनल जयतैक । अदौरी खोटल

जयतैक । पापर बेलल जयतैक, अँचारक मसाला कूटल जयतैक ।" कनियाँ पुस्तक छोड़ि धनियाँ कूटय लागि जाइ छलीह ।

मायक कोनो दोष नहि छलैन । ओ अपना सासुसँ जे शिक्षा प्राप्त कैने छलीह से अपना पुतहुकेँ द' रहल छलीह । बाबूजी मायकेँ कहैत छलथिन—'कनियाँ चिट्ठी पत्री लिखतहि छथि । कागज पत्तरक हिसाब बाड़ी जनितहि छथि । तखन और बेसी पढ़िक' की करतीह । हुनका कि कतहु नोकरी करबाक छैन जे अंगरेजी पढ़तीह ।"

बाबूओ जोकर दोष नहि छलैन । ओ मनुक वचनकेँ प्रमाण मानैत छलाह— "सदा प्रसन्नया भाव्या, गृहकार्येषु दक्षया...... । (आदर्श गृहिणी ओ थिकीह जे घरक काजमे निपुण होथि, प्रेमपूर्वक भानसभात कय सभकेँ भोजन करावथि और की चाही ।)

नववधूकेँ शिक्षा देल जाइत छलैन जे हुनक हँसब बाजब घरसँ बाहर नहि सुनाइ पड़ैन । कुलवधूक हेतु गायब-बजायब निषिद्ध बूझल जाइत छलैक । पंडित लोकनिक उक्ति छलैन —'क्वचिद् गायवती सती ।'

एहि प्रसंगमे एकटा बात मन पड़ैत अछि । हम किछु दिन लहेरिया-सराय पुस्तक भंडारक समीप प० जानकी रायक संगीत शालामे हार्मोनियम सिखैत रही । गाम ऐलहुँ त' एकटा बाजा कीनि क' नेने आयल रही । रातिमे ईमन कल्याणक एक पद रेयाज करैत रही— 'आजु आनन्द उछाह भयो है ।' मनमे आएल जे किछु कनियाँकेँ सिखा दिऐन । ओ लजाइत-लजाइत नहूँ-नहूँ पटरी पर आँगुर फेरय लगलीह ।

भोरे माय गहुरित होइत बाबूजीकेँ कहलथिन— "पोखरि पर ज्योतिषि-आइन कूट करैत छलीह जे राति अहाँक आँगनसँ जनानी हरमुनियाक आवाज अबैत छल । की ? कोनो माय गान होइक ? "

बाबूजी गंभीर होइत बजलाह— "ननकिरबू नहि बुझैत छथि । एखन नेननति छैन । एना करताह तँ सौंसे गामक लोक कीतर्व करतैन । यद्यपि शुद्ध लोक विरुद्धं नाचरणीयम् ।' तहिया सँओ बाजा फेर नहि बाजल ।

हमर इच्छा छल जे नव वधूकेँ सहधर्मिणी बनबिऐन । घरक इच्छा छलैक जे ओ गृहकर्मिणी बनि क' रहथि । घर जीति गेल । हम गृहिणीकेँ गृहविभागमे समर्पित कय बी० ए० मे नाम लिखाबक हेतु पटना गेलहुँ ।

□

अध्याय ६

मिंटो होस्टल

ओहि समय (१९२७)मे सम्पूर्ण बिहार उड़ीसामे प्राय: पाँचे टाम कॉलेज रहैक—पटना, मुजफ्फरपुर, भागलपुर, हजारीबाग आ कटक। (जाहिमे पटना कॉलेज सर्व प्रथम रहैक।) हम आई॰ ए॰ मे सर्व प्रथम भेल रही तँ पटना कॉलेज और ओकर प्रमुख होस्टल (मिंटो होस्टल)मे भर्ती हैबामे कठिनता नहि भेल। परन्तु ओहि ठामक स्टैंडर्ड देखि अपन देहातीपनक बोध भेल। हम माटि ल' क' हाथ मटियबैत छलहुँ, दतमनि क' ओकरे चीरि क' जिभिया करैत छलहुँ, गामसँ लाल धोती पहिरि क' आयल छलहुँ, धोती गमछा ल' क' गंगास्नान क' अबैत छलहुँ। बाबू लोकनि साबुन आ टूथब्रशक प्रयोग करैत छलाह। कुर्सी पर बैसि केश छटबैत छलाह। और अपना के भावी हाकिम क' क' बुझैत छलाह। ओहि समय मिंटो नियन सभक परम लक्ष्य छलैन 'डेपुटी मजिस्ट्रेट' बनब।

एतदर्थ ओ सभ स ाधन चतुष्टयमे लागल रहैत छलाह—अर्थात (सूट बूटमे रहैत छलाह। छुरी काँटाक अभ्यास करैत छलाह, इंगलिश टोनमे बजैत छलाह। (जेना मथुराकेँ मुद्रा) और गौरांग महाप्रभुक पद पूजा के स्वधर्म क' क' मानैत छलाह। अंग्रेज प्रिंसिपल और प्रोफेसर सभक रोब लाट साहबसँ कम नहि छलनि और उच्च पद प्राप्त करबाक हेतु हुनक कृपा आवश्यक छलैन। पटना कॉलेजक प्रोफेसर पं॰ अक्षयवट मिश्र विनोदपूर्वक कहैत छलथिन—

१ २ ३ ४
पक्ष हूरिन लंपट अरिमार[?]
अर्थ काम फलदायक चार
इन्हें प्रसन्न करै जो कोई
सोई भारी हाकिम होई॥

परन्तु हमरा ओ सभ लूरि नहि छल। धोती कुर्ता पहिरैत रहलहुँ, हाथे सँ खाइत रहलहुँ। एक बेर अंग्रेजी जूता (फुल शू) लेबो कैलहुँ तँ ओकर

१· जैक्सन, २. हार्न, ३. लैम्बर्ट, ४. आर्मर।

फीता बन्हबा-छनबाक प्रक्रिया तेहन अबुह बूझि पड़ल जे ओहि झंझटसँ मुक्त भ' हाफ शू पहिरैत रहलहुँ।

यावत् मुजफ्फरपुरमे छलहुँ तावत धरि मैचक अर्थ बुझैत छलिऐक एक मात्र फुटबाल मैच। एतए आबि हाकी, क्रिकेट आदिक नाम सुनलिऐक, परन्तु हमरा ओहि सभ मे रस नहि भेटल। रस भेटैत रहल छन्द, अलंकार, अनुप्रास, श्लेष, यमक, वक्रोक्ति आदिक चमत्कारमे। होस्टलसँ यदा कदा हस्तलिखित बुलेटिन बहराइत छलैक ताहिमे Wit Humour (व्यंग विनोद' रहैत छलैक और ओहिमे हम अपन योगदान देबय लगलिऐक। हमर' अनेको सूक्ति प्रचलित भ' गेल। जेना Duty must be accompanied with Due tea.

एक बेर हमर होस्टल मिंटो मोहमडन होस्टल (जे आब जैक्सन होस्टल कहबैत छैक) सँ जीति गेल रहय। हम ओहि अवसर पर कहि उठलिऐक:—

'मिनटों मे गोल कर दिया, मिंटो की टीम ने।
इस जीत की खुशी मे चल, पिंटू मे जीमने॥

एहन एहन चुटुक्का हमरा बेसी लोकप्रिय बना देलक।

आब कालेजक किछु संस्मरण कहैत छी।

एक दिन संस्कृतक अध्यापक पं॰ देवदत्त त्रिपाठी अपन क्लासमे बजलाह 'इस बार आई॰ ए॰ की परीक्षामे एक ऐसी कापी मिली थी जिसमे आद्योपान्त सभी प्रश्नों के उत्तर श्लोकबद्ध बनाकर दिये गये थे—पता नहीं, वह लड़का कौन था।

हमरा मुसुकाइत देखि बजलाह—'अच्छा, तो तुम्हीं हो। तब अभी यहीं एक श्लोक बनाकर सुनाओ।'

हम तत्काल बनाक' सुना देलिऐन :—
'मनोविनोदाय सुकौतुकाय,
गुरुप्रसादाय फलप्रदाय,
येनोत्तरं श्लोकमयं प्रदत्तम्,
स एव शिष्यो हरिमोहनोऽहम्।

पं॰ जी गद्‌गद् होइत आशीर्वाद देलनि—'यशस्वी भव'। हुनक आशीर्वाद सद्य: फलित भेल। हमर नाम कालेजमे बिरि गेल।

हिन्दी विभागक अध्यक्ष पं० अक्षयवट मिश्र (विप्रचंद) हमर आशु कवितासँ ततेक प्रसन्न भेलाह जे हमर सचित्र परिचय औरंगाबादक हिन्दी मासिक पत्र (श्री कृष्ण) मे बाल कवि शीर्षकसँ छपौलनि।

एक बेर पटना कालेजक अंग्रेजी भाषण प्रतियोगितामे हमरा प्रथम पुरस्कार भेटल। बी० एन० कालेजक तत्कालीन प्रिंसिपल डी० एन० सेन हमरा पुरस्कारमे आशमय स्तोभ प्रदान करैत कहने रहथि :—'Keep the fire of learning burning' (विद्याक ज्योतिकेँ प्रज्वलित राखू)।

दर्शन विभागक अध्यक्ष छलाह चारुचन्द्र सिंह जे हमर दार्शनिक संस्कार देखि स्नेहवश हमरा 'फिलोसोफर' कहैत छलाह। हुनके प्रेरणासँ हम एम० ए०मे फिलोसफी लेलहुँ।

एक बेर (प्रायः १९२८ मे) इलाहाबादमे इन्टर युनिवर्सिटी चैलेंज प्रतियोगिता भेलैक जाहिमे हम (और एम० ए०क छात्र श्री नारायन सिन्हा) विश्वविद्यालयक प्रतिनिधिक रूपमे पठाओल गेल छलहुँ। विषय रहैक 'प्राच्य और पाश्चात्य संस्कृति'। आगरा, लखनऊ, दिल्ली आदि अनेको युनिवर्सिटीसँ प्रतिनिधि वक्ता आएल रहैक। हम भारतीय संस्कृतिक पक्षमे बजलहुँ। निर्णायक लोकनि हमरा टीमकेँ सर्वप्रथम घोषित कैलनि। ओहि समयमे प्रयाग विश्व-विद्यालयक कुलपति छलाह म० म० डा० गंगानाथ झा। हुनकेँ हाथेँ पुरस्कार भेटल। ओत्तहि हमरा हुनक प्रथम दर्शन आ आशीर्वादक सौभाग्य प्राप्त भेल।

अंग्रेजीक प्रख्यात प्रोफेसर (हिल साहब) एक बेर अपन ट्यूटोरियल क्लासमे एक टास्क देलथिन जे एक एहन दुःखान्त लघु कथा लिखू जाहिमे हीरो (कथानायक) केवल एक बेर अन्तमे प्रकट होथि। ………ओही पीरियडमे (५० मिनटक भीतर) सभकेँ ओ कथा लिखिक' देबाक छलै। हमर सद्यः लिखित कथा (The Good Samaritan) देखि हुनका ततेक नीक लगलैन जे ओ १० मे ९ नम्बर हमरा देलनि। सहपाठी सभकेँ आश्चर्य भेलैन जे (हिल साहब ५० प्रतिशतसँ बेसी ककरो नहि देने छलथिन) से हमरा नब्बे प्रतिशत अंक कोना द' देलनि।

कालेजमे एक प्रहसन भेल रहैक जी. पी. श्रीवास्तवक 'नाकमे दम'। जाहिमे हम 'मौलाना'क पार्ट कैने रही। हमर शेर शेरवानी आ साम साफ वाला उर्दू अल्फाजसँ कतेकोकेँ धोखा भऽ गेलैन जे कोनो असलीए मौलवी छथि। ओहि सफल अभिनयक फलस्वरूप कतेको उर्दू वला सेहो हमर दोस्त बनि गेलाह। और बज्मे सखुनक मुशायरामे हमरा ल जाय लगलाह।'

हम सभ (मैथिली भाषी छात्र) यथा—जयनारायण मल्लिक, हृदयनारायण चौधरी, भोलानाथ झा, रामलखन बाबू प्रभृति) आपसमे मैथिलीमे बजैत छलहुँ। से सुनि कतेको अन्य भाषा-भाषी छी' छौं' कहिक' हँसैत छलाह। एक बेर (प्रायः १९२८मे) हम पटना कालेजक कोनो गोष्ठीमे एक मैथिली कविता सुनैबाक साहस कैने रही (मधुर भाषा मैथिली थिक)। ओहि पर मिश्रित प्रतिक्रिया भेल रहय। कतिपय व्यक्ति मजाक उड़ाबय लगलाह—'छथी-छर्यो।' (ओहि समयमे ककरो मनमे ई कल्पना नहि छल हेतैन जे एक दिन एहो कालेजमे एहि भाषामे एम० ए० आ डाक्टरेटक डिग्री सब लोक गौरवान्वित हैताह।)

एकटा बात मन पड़ैत अछि। ओहि समय पटना कालेजमे केवल एकटा छात्रा (प्रायः डरकाप कन्या) पढ़ैत छलीह। ओ प्रोफेसरक संग-संग अबैत छलीह, एक फराक राखल बेंचपर बैसि जाइत छलीह आ क्लास खत्म भेलापर पुनः चुपचाप प्रोफेसरक पाछाँ-पाछाँ चलि जाइत छलीह। हुनका देखि छात्र सभकेँ कुतूहल होइ छलैन, जेना ओ कोनो चिड़ियाघरसँ बजाक' आनल गेल होथि। हुनकर अवाजो सुनबाक हेतु सभकेँ लिहुलो लागल रहैत छलैन। किछु गोटे हुनक मौन भंग करबाक प्रयासोमे रहैत छलाह, परन्तु हुनक शालीनताक आगाँ किछु नहि चलैत छलैन। हुनका देखि हमरा सभक मनमे लिहुलो होइत छल जे एहिना अपनो गाम घरक कन्या कालेजमे आबिक' पढ़ितथि। परन्तु ओहि समय ई बात आकाश कुसुमवत् छल।

आब मिंटो होस्टलक किछु संस्मरण कहैत छी। सुपरिंटेंडेंट छलाह संस्कृतक प्रो० डा० ए० पी० बनर्जी शास्त्री, जे इंगलैंडसँ दीक्षित भ' क' आयल छलाह। ओ पं० ईश्वर चन्द्र विद्यासागरक नाति छलाह, परन्तु आपादमस्तक विलायती वेशभूषामे रहैत छलाह।

मिंटो होस्टलमे कठोर अनुशासन छलैक। सब काज घड़ीक सुईपर चलैत छलैक। ठीक सात बजे भोर आ साँझमे स्टडी पिरियडक घंटी पड़ि जाइत छलैक। तखन सँ नौ बजे धरि हमरा सभकेँ अपन-अपन कोठरीमे बैसिक' पढ़य पड़ैत छल। ओहि बीचमे केओ जोरसँ खोंखियो नहि क' सकैत छल। हमरा सूतिक' पढ़बाक अभ्यास छल तेँ दू घंटा धरि कुर्सी टेबुल पर बैसिक' पढ़बा-लिखबामे असौकर्य बूझि पड़ैत छल। हम शुरुएसँ आलसी प्रकृतिक छलहुँ। किताब कापी छिरल रहैत छल। परन्तु आब सब वस्तु यथास्थान सजाक' राखय पड़ैत छल।

सुपरिटेंडेंट आ वार्डेन (आर्मर साहेब) राउंड देबय अबैत छलाह त' सभसँ पहिने हमरे कोठरी (रुम न—१) मे आबि जाइत छलाह। तेँ विशेष रूपसँ सतर्क रहय पड़ैत छल। आर्मर साहेब बड़का टा डाइप (चुरुट) मुँहमे लगौने तेना घूमि जाइत छलाह जेना कोनो जेलक अफसर मुआयना क' रहल हो। रातिमे दस बजे होस्टलक गेट बन्द भ' जाइत छलैक, तकरा बाद केओ भीतर बाहर नहि जा सकैत छल। सुतबा काल प्रिफेक्ट सभ छात्रक हाजरी लैत छलथिन।

मिन्टोमे प्रान्त भरिक चुनल-चुनल विद्यार्थी रहैत छलाह। थर्ड इयरमे किछु त' हमर पुरान सहयोगी छलाह (जेना – जगदीश, विश्वम्भर चौधरी आदि) और अनेक नवो संगी बनि गेलाह—जयनारायण मल्लिक, महेन्द्र प्रसाद वर्मा, रतनचन्द्र छत्रपति, जगदीश भिक्षु काश्यप, काली किंकर सरकार, देवी दास चटर्जी, बनवारी बाबू प्रभृति। सीनियर बैच (फोर्थ इयर) मे सर्वश्री सतीश चन्द्र मिश्र, सदाशिव प्रसाद, प्रभृति। छात्रावासमे मिश्र जी आदर्श क' क' बुझल जाइत छलाह और अत्यन्त सम्मानक दृष्टिसँ देखल जाइत छलाह।[1]

मिंटोक एक आकर्षक स्मृति अछि मेसक सहभोजन। एक कतारमे पाँच-छौ टा मेस छलैक। हम जाहि मेसमे खाइत छलहुँ तकर नाम छलैक—'मया मेस', ओकर बाबाजी छलाह बाबूलाल झा। मनतियाकेँ 'बाबाजी' कहल जाइ छलैक से पहिले पहिल ओहीठाम बुझलिऐक। किछु आनो नव शब्द सुनबामे आयल। जेना तरुआ केँ 'बबका', झोरकेँ 'रस्सा, अदौरीकेँ बड़ी' मांसकेँ 'सालन' बेसनकेँ रामसालन 'धोखा' कहैत छलैक। हम सभ गोट बीसेक छात्र ओहि मेसमे भोजन करैत छलहुँ। नौ बजेक बाद आसन लागि जाइत छलैक। हम सभ पाँती जोड़ि बैसैत छलहुँ। आगामे मुरादाबादी थारी, बाटी, गिलास राखल रहैत छल। तखन एक दिससँ परसब शुरू

1. जीवन यात्राक क्रममे सभ भिन्न-भिन्न पथक पथिक भेलाह। सतीश बाबू किछु दिन प्रो० रहलाक बाद पटनाक मुख्य न्यायाधीश भेलाह। चौधरी जी गयाक कलक्टर भेलाह। शर्मा जी हाइकोर्टक जज भेलाह। मल्लिक जी मधेपुर आ रतनचन्द्र जी मधेपुरामे प्राचार्य भेलाह। चटर्जी पटना साइन्स कालेजमे और सरकार मुंगेर कॉलेजमे प्राध्यापक भेलाह। भिक्षु काश्यपजी नालंदा शोध संस्थानक निदेशक भेलाह। बनवारी बाबू बीमा कम्पनीक एजेन्ट भेलाह। और संगी सभ के कतय गेलाह से पता नहि।

होइत छल। मेंही चाउरक भात, सोना राहड़िक दालि, रसदार तरकारी, आलुक मेंही भुजरी, चोखा, चटनी, पापड़। रातिमे गरम फुलका। घृत अचार मेस फर्बैन्ड पहिनहि हमरा सभक कोठरीसँ ल' अबैत छल। और एहन भोजनक चार्ज एक थारीक दू आना मात्र। माछ-मांस दहीक फराक चार्ज छलैक। दू पाइए प्लेट।

चारि बजे नाश्ता भेटैत छल। छौ टा कचौड़ी, चारि टा समोसा, अथवा एक प्लेट हलुआ। तीन पाइए प्लेट।

मासमे एक दू बेर (कोनो पर्वक दिन) मेसक दिससँ 'फीस्ट' (भोज) होइत छल। पोलाव, गाढ़िल बूटक दालि, हींग कचौड़ी, फिस करी, मीट करी, चॉप, कटलेट, किशमिश, आलू बोखाराक चटनी, मालपूआ, सेवई आ पिंटू होटलक स्पंज रसगुल्ला। ओहि समय पिंटूक रसगुल्ला नामी छलैक। ओरंज सेंटेड (नारंगीक खुशबूसँ महमह करैत) 'पिंपोंग' आकारक रसगुल्ल', दू-दू पाइए दैत छलैक। ओहन राजसी भोजक एक्स्ट्रा चार्ज केवल आठ आना मात्र। ताहि दिन 'मिन्टो' आ पिंटो' पटनाक शान छलैक।

ओहि समय दस टाका मासमे जेहन भोजन भेटैत छल, सेहन आइ दस टाका रोजमे भेटब संभव नहि। हमरा युनिवर्सिटीसँ पचीस टाका मासिक स्कालरशिप भेटैत छल तेँ सभटा खर्च नीक जकाँ चलि जाइत छल।

रवि दिन छुट्टी रहैत छल। इच्छानुसार घूमय जाइत छलहुँ। कहियो काल दिस जाइत छलहुँ त' एक सुरमे गोलघर पर चढ़ि जाइत छलहुँ। ऊपरसँ गाछे-गाछ देखाइ पड़ैत छल। तहिया पटनामे मकान से बेसी सेते छलैक। एक बेर गोलघरक भीतर जाक' देखबाक मौका भेटि गेल। लागल जेना कोनो अन्हार गुफाक पेटमे पैसि गेल होइ। एक बेर जोरसँ बाजि उठलहुँ – ओम्। चारूकात सँ प्रतिध्वनित होमय लागल—'ओम्, ओम्'।

कोनो कोनो रविकेँ नामक कविराज पं० विश्वनाथ झाक औषध (कदमकुआँ) जाइ छलहुं। हुनकर खवास माखन राउत इमामदस्तामे दवाइ कुटैत रहै छलैन। विद्यार्थी सभ शुद्ध शास्त्रीय विधिसँ औषध निर्माण करैत छलथिन। नाना प्रकारक आसव अरिष्टक बोतल आलमारीमे भरल रहैत छलैन। खूब स्वादिष्ट अनारदानाक पाचक चखबैत छलाह। तेहने चहटकार गप्पो होइ छलैन। ओ आयुर्वेदक बड़का संपोषक छलाह। पटनामे चौक जीक बाद हुनके नाम छलैन।

दरभंगामे जे पंडित अबैत छलाह (विशेषतः राज पंडित बलदेव मिश्र आ पं० त्रिलोकनाथ मिश्र प्रभृति) से हुनके ओतय ठहरैत छलाह। रंग-बिरंगक शास्त्र-चर्चा चलैत छलैन। घृत आ मधुकें समान मात्रामे सेवन कैने किऐक विष भ' जाइ छैक? दूध-दहीमे कोन अधिक शीतवीर्य होइत अछि? रात्रिमे दही किऐक वर्जित अछि? उच्छिष्टमे घृत किऐक नहि परसल जाय? भातके किऐक भूमि पर परसल जाय? मृतकके उत्तर मुँहे सुतैबाक की तात्पर्य? एहन एहन रोचक गप्प होइत छलैन जे छोड़िक' उठबाक मन नहि होइ छल। कविराज जी रामा सभकें कहैत छलथिन जे आयुर्वेदक चिकित्सासँ प्राण चलि जाय त' से बड़ नीक, परन्तु डाक्टरी इलाजसँ शरीरमे जहर नहि भरक चाही। स्वधर्मो निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः। एहन एहन गप्प सुनबाक लोभें हम ओतय जाइ छलहुँ। ओ माछकें संकेतमे 'तुरीया' कहैत छलथिन। ओहिमे वैष्णव स्थानमे 'पटेना' पड़ैत छलैन। हुनका ओतय कोनो नव वस्तु (जेना छोटका माछक अँचार बनैत छलैन त आग्रहपूर्वक खियबैत छलाह।) (ओ १९४४मे दरभंगा रमेश्वर लता विद्यालयमे चलि गेलाह और ओ अपूर्व रमल चलन समाप्त भ' गेल।

हमर दोसर आकर्षण केन्द्र छल पटना सीटी (पटन देवी गली) जहाँ राधाकान्त जी रहैत छलाह। (बच्चन बाबू रईसक डेवढ़ीमे)। कोनो छुट्टीक दिनमे टमटमसँ हुनका ओतय जाइ छलहुँ। ओ हमरा देखितहि उल्लसित भ' उठैत छलाह। ओ आनन्दी लोक छलाह। एक बेर गेलहुँ त बाड़ीक हरियर मकइक बालि आगिमे ढेरी लागल रहैन। हमरा देखतहि बजलाह—'आउ, आउ, ओरहा खाउ।' ओ दू बालि बालि तुनिक' ओराहय लगलाह, और नोन मरीच, नेबो लगाक' प्रेमपूर्वक आस्वादन करौलनि। तदुपरान्त पटन देवी, हरमंदिर, किला घाट देखा लैलाह। ओ तेहन आवेशी छलाह और अपना गामक माटि सँ तेहन प्रेम रहैत छलनि जे गंगा स्नानक' पर्वमे ओहिपार पहुँचि जाइ छलाह और गामक लोकके खोजय लगैत छलाह। कोनो पनभरनियो सँ भेंट भ' जाइ छलैन त आनन्दसँ गद्गद् भ' जाइ छलाह।

हुनका डेवढ़ीमे अन्नकूटक उत्सव होइ छलैन त छप्पन प्रकारक भोग लगैत छलैन। एक बेर आबिक' हमरा ल' गेलाह और नाना प्रकारक वैष्णवी प्रसाद (राधावल्लभी पूरी, गोविन्द बड़ी, सीताभोग आदि) खोआइए क' आबय देलनि।

एक बेर हमहूँ अपना होस्टलक भोजमे हुनका बजाक' ल' अनलिऐन। ओ एक एक वस्तु पर तहिना 'वाह-वाह' करय लगलाह (जेना मुशायरामे एक

एक पंक्ति पर दाद दैत छैक।) भोजनोपरान्त ओ हमरा रूममे आबि पसरि गेलाह। मेघक गर्जन सुनितहि मस्तीमे मलार उठा देलनि—"बरखन चाहै बदरिया हे ऊधो, भिजत कुसुम रंग चोलिया" चुनरी हे।' तावत् दस बजेक घंटी बाजि उठलैक। ओ हड़बड़ाक' पुछलनि—"की आब फाटक बन्द क' देत, हो जी?" "हँ" सुनैत देरी पड़ैलाह। (गाम पर जाय' लोकके कहलथिन—'हरिमोहन बाबूके तेहन रस सासुरे जकाँ लगबैत छैन मुदा राति मे जेल जकाँ बन्द क' दैत छैन।) परन्तु हुनक मलार हमरा महँग पड़ल। ओ सुपरिन्टेंडेंटक कानमे पड़ि गेल रहैन। हमरा किछु दिनक हेतु दोसर कोठरीमे ट्रांसफर क' देलनि।

ओही आसपास (प्रायः 1929 मे) एक ऐतिहासिक घटना भेलैक। विलायतसँ साइमन कमीशन आबि गेल रहैक। ओकरा विरोधमे नेता लोकनिक सभा भेलैन। गुलाब बागमे सर्वदलीय सम्मेलन भेलैन। हमरा जहाँ धरि स्मरण अछि ओहिमे देशरत्न राजेन्द्र बाबू, बिहार केसरी श्री कृष्ण सिंह, डा० सच्चिदानन्द सिन्हा, सर अली इमाम, कुमार गंगानन्द सिंह प्रभृतिक भाषण भेल रहैन।

हम सभ मीटींग समाप्त भेला पर होस्टल अयलहुँ त' देखैत छी जे गेट बन्द छैक आ आमेर साहेब लाल-लाल आँखि कयने ठाढ़ छथि। ओ कड़कि क' बजलाह—'Wher: had you been so long'?' सहसा एक कृशकाय तेजस्वी बालक आगाँ बढ़िक' उत्तर देलकनि—'We had gone to hear our national leaders. We want to free our count y f om fo eign domination'. (हम सभ अपन नेता लोकनिक भाषण सुनय गेल रही। हम सभ अपना देशकें विदेशी शासनसँ मुक्त करय चाहैत छी।) ओ छात्र छल हमर प्रिय संगी जगदीश।

आमेर साहेब स्तब्ध रहि गेलाह। एक दुब्बर-पातर नेटिभ स्टुडेंट' एहन दर्प! तावत अन्यान्यो विद्यार्थी (सत्यमूर्ति, नरसिंह मेहता प्रभृति) जोर सँ नारा लगौलनि—'वन्दे मातरम्', 'महात्मा गाँधी की जय'।

(जगदीश चन्द्र सिन्हा) छात्रावस्थामे (एम० ए०) मे दिवंगत भ' गेलाह। पटना कालेजक 'जगदीश मेमोरियल कप, हुनके नाम पर छैन।

आमेर साहेब तमतमायल अपन कोठलीमे गेलाह। हमरा सभकें भेल जे

आब ओ फोन कएथिन और मिलिटरी पुलिस आबि क' होस्टलकेँ चारूकात सँ घेरि लेतैक आ हमरा सभकेँ पकड़ि क' ल' जायत।

परन्तु से सभ नहि भेलैक। दोसर दिन आर्मर साहेब डा० बनर्जी शास्त्री, केँ संग नेने छात्रावासमे आबि मिटिंग कैलनि और अनुशासनपर जोर दैत छात्रवृन्दक संयम पालनपर भाषण कैलनि तथा अपन कोनो अनुचित शब्दक हेतु क्षमाप्रार्थी भेलाह।

परीक्षासँ किछुए दिन पूर्व हमरा 'टाईफायड' फीवर (सन्निपात ज्वर) भ' गेल। ओ ताहि दिन असाध्य रोग बूझल जाइत छलैक। हमरा अस्पतालमे भर्ती कैल गेल। गामसँ बाबूजी आ लोमासँ पं० जी (ससुर) आबि गेलाह।

ओहि समय अस्पतालक सभटा काज घड़ीक सुईंपर चलैत छलैक। डाक्टर ठीक समयपर पहुँचि जाइत छलाह। नर्स लोकनि राति भरि जागिक' अपन ड्यूटी करैत छलीह। भोरे अपना आँगुरसँ ग्लिसरिन लगाक' मुँह धोआ दैत छलीह। नित्य समयपर 'स्पंज बाथ' करा दैत छलीह। सुगंधित साबुनक फेनमे तौलिया भिजाय अंग-प्रत्यंगमे यूडी-कोलोनसँ सुवासित पाउडर लगा दैत छलीह। बूढ़ा नर्स मिलिक' तेहन कौशलसँ करौट फेरि दुधिया रंगक चादर ओढ़ा दैत छलीह जे कनेको अरथाल नहि? परन्तु जखन एक श्वेत मुकुट धारिणी गौरांगी (एलेन, हमरा 'चिकेन सूप' पिआबए ऐलीह त' बाबू जी और पं० जी धर्मसंकटमे पड़ि गेलाह। परन्तु डाक्टर (मेजर घोष) क कठोर रुख देखि शास्त्रीय समाधान करए पड़लैन। बाबूजी कहलथिन—

'यदार्त्ते नियमो नास्ति।'

पं० जी अनुमोदित कैलथिन—''औषधार्थं सुरां पिबेत्।''
विचार भेल जे प्राण बचला उत्तर हमरा प्रायश्चित करा देल जाएत।

तावत् परीक्षा माथपर आबि गेल। हमरा तेहेन आलस्य भ' गेल छल जे पाँच मिनट लिखैत छलहुँ त' दस मिनट सुस्ताइत छलहुँ। जतबा जनैत छलहुँ तकर तृतीयांशो नहि लिख सकलहुँ। एकै प्रश्नक उत्तर लिखबामे दू घंटा लागि गेल। शेष एक घंटामे चारि प्रश्नक उत्तर कतेक लिखि सकितहुँ। छओ-ओ आनर्स पेपरमे हमर तेहन तैयारी छल जे Shakespeare, Milton, Wordsworth आदिक सैकड़ो कोटेशन जिह्वाग्रपर छल। दू घंटाक समय परन्तु केवल दुइएटा उत्तरमे घंटी बाजि जाइ छल। प्रत्येक दिन एहिना होइत गेल।

हमरा भय भेल जे उत्तीर्ण नहि भ' सकब। तथापि इंगलिशमे आनर्स (प्रतिष्ठा) सहित बी० ए० क' गेलहुँ। (ओहि परीक्षामे कोनो छात्रकेँ फस्ट क्लास नहि भेटि सकलैन)।

ओहि कमीकेँ हम एम० ए०मे फस्ट क्लास फस्ट भ' पूरा कैलहुँ, जकर वृत्तान्त आगाँ भेटत। अस्तु, मनमे विश्वास जागल जे आब जीवन-पथमे आत्म-निर्भर भ' सकब। मिंटो होस्टलक ओ दू वर्ष बहुत शिक्षाप्रद आ प्रेरणादायक रहल।

१९२९मे हम अपना गामक प्रथम ग्रेजुएट भ' क' बाजितपुर अयलहुँ। गामक स्कूलमे हमर स्वागत कैल गेल।

एहि अन्तरालमे स्कूलक कायाकल्प भ' गेल छलैक। जहाँ पहिने सम्राट (पंचम जार्ज)क स्तुतिगान होइत छलैन तहाँ आब राष्ट्रीय गीत गाओल जाइत छल—

'भारत जननि! तेरी जय, तेरी जय हो।''

ग्रामीण जनतामे नव चेतना आबि रहल छलैक। अनेको जमींदार घरक युवक (राजेश्वर बाबू, विपिन बाबू, लाल बाबू, कपिलदेव जी आदि) कांग्रेसी बनि गेल छलाह। सभामे तिरंगा फहरबैत छलाह। आ स्वराज, सत्याग्रह आदिपर भाषण दैत छलाह। विदेशी वस्त्रक बहिष्कार आ स्वदेशीक प्रचार करैत छलाह। किछु स्वयंसेवक घर-घर जा क' मुठिया उगाहैत छलाह। हमहुँ नव जोशमे एकटा चरखा पाँच टाकामे कीनि क' ल' अयलहुँ। परन्तु सूत कटबाक लूरि नहि भेल।

पटनामे हमरा जे स्टाइपेंड इनाममे भेटल रहय से गाम नेने आयल रही जे गृहणीकेँ चुल्हि फुकबामे जतबा समय लगैत छैन ताहिमे किछु उसास हेतैन। परन्तु से नहि भ' सकल। ओकरा छुतहर जकाँ बहरिया बना क' राखल गेल, आनस घरमे प्रवेश नहि भेलैक।

बाबूजी आब अधिकतर गामेपर रहैत छलाह। ओ गिद्धौर राज्यक वंशावलीकाव्य प्रस्तुत करैत छलाह। बीच-बीचमे जा क' महाराजसँ भेंटो क' अबैत छथि। (एक दू बेर हमरो अपना संग ल' गेल रहथि)। एकटा आओर बृहत् ग्रंथ लिखैत छलाह—'चिकित्सा सागर' (जे खड्गविलास

प्रेससँ छपलैन) । कहियो काल साप्ताहिक 'शिक्षा' और मासिक 'कल्याण' आदिमे लेख दैत छलथिन, जाहिसँ यदा-कदा किछु आयि आइत छलैन। परन्तु कोनो नियमित आय नहि छलैन। किछु पैंच उधार सेहो भ' गेल छलैन। सोन दाइ (हमर कनिष्ठा बहिन) क कन्यादानो करबाक छलैन। अतः चिन्तित छलाह। घरक आर्थिक स्थिति एहन नहि छल जे निश्चिन्त भ' क' एम० ए० करबाक हेतु पटना जा सकितहुँ। अतएव एक वर्ष पढ़ाइ स्थगित करय पड़ल। एहि बीच हम पुस्तक भन्डार (लहेरियासराय)मे रहि पुस्तक लिखलहुँ और ताहिसँ द्रव्योपार्जन कय एम० ए० क' सकलहुँ।

●

अध्याय ७

पुस्तक भंडार

(लहेरियासराय, पटना)

१९२९मे बी० ए० आनर्स कयलाक बाद हम पुस्तक भंडार (लहेरियासराय) गेलहुँ। ओहि समय ओ बिहारक प्रमुख साहित्यिक केन्द्र छलैक। ओकर अध्यक्ष आचार्य रामलोचन शरण (जे पहिने शिक्षक रहि चुकल छलाह) 'मास्टर साहेब' नामसँ प्रख्यात छलाह। ओ स्वयं लेखक छलाह और लेखकक आदर करैत छलाह। ओ लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकारसँ ग्रंथ लिखबा क' प्रकाशित करैत छलाह और उदीयमान प्रतिभाशाली लेखककेँ पुस्तक लिखबाक हेतु प्रोत्साहित करैत छलाह।

१९१९मे जखन बाबूजी दरभंगामे मिथिला मिहिरक सम्पादक रहथि तखन मास्टर साहेबकेँ पहिले पहिल देखने रहिअनि। ओ बाबू जोर्स 'पुरुष परीक्षा'क हिन्दी अनुवाद लेबय आयल छलाह। ओ बाबूजीकेँ अपन बड़का भाय जेकाँ बूझि आदर करैत छलथिन। हमरा हिन्दी व्याकरणक कोनोकोनो प्रश्न पुछैत छलाह और हमर उत्तर सुनि बहुत प्रसन्न होइत छलाह।

एक बेर १९२७मे (आइ० ए० परीक्षाक बाद) भंडार गेल रही। ओहि समय बेनीपुरीजी ('बालक'क सम्पादक) क उन्मुक्त ठहाका गुंजायमान होइत छलैन। १९२८ (जून) मे अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनक अधिवेशन मुजफ्फरपुरमे भेल रहैक। ओहिमे मास्टर साहेब लहेरियासरायसँ एक साहित्यिक बरियाती जेकाँ साजि क' गेल रहथि। ओहिमे बाबूजी, प्रो० जगन्नाथ प्रसाद मिश्र, बाबू भोला लाल दास, विपत्र जी प्रभृति गोट दोसेक व्यक्ति सम्मिलित रहथि। ओतय कवि सम्मेलनक अवसरपर हमरा आशु कवितापर बहुत यश भेटल रहय। (जकर वृत्तान्त आगाँ काव्य विनोद प्रसंगमे भेटत।)

जखन १९२९ मे हम पुनः पुस्तक भंडार गेलहुँ त' मास्टर साहेब हमरा देखि बहुत प्रसन्न भेलाह। मैनेजर (मधुनी बाबू) केँ कहलथिन— "पहले लड़के को जलपान कराइए।" मैनेजर साहेब पुर्जी कटलनि और बगलमे

सोनू साहु हलुआइक दोकानसँ हरियर पुरैनिक पातपर दू गोट गरमा-गरम कचौड़ी-जिलेबी और टटका दही आबि गेल। मनमे कहलहुँ—'अथ-मारम्भः शुभाय भवतु ।"

ओहि समय मास्टर साहेबपर ई धुन सवार छलैन जे संस्कृतकेँ कोना सुगम बनाओल जाय। तहिया विद्यार्थी सभकेँ प्रारम्भमे लेना शब्द रूप, धातु रूपक पहाड़ा रटाओल जाइ छलैन जे संस्कृत पहाड़ जकाँ लगैत छलैन। ओ हमरा कोनो तेहन नव प्रणालीसँ संस्कृत रचनापर पुस्तक लिखय कह-लनि जाहिसँ विद्यार्थी कम्मे दिनमे संस्कृत बाजय सीखि जाथि। हम एक एहन अभिनव ढंगसँ 'तीस दिनमे संस्कृत' प्रस्तुत क' देलिअनि जाहिसँ शिक्षार्थी एके मासमे संस्कृतमे वार्तालाप और पत्राचार करय लागि जाथि। ओ पुस्तक ततेक लोकप्रिय भेलैक जे तीसे दिनमे प्रथम संस्करण खपि गेलैक। एहन आशातीत सफलतासँ प्रोत्साहित भ' मास्टर साहेब हमरा एक दोसरो पुस्तक लिखय कहलनि संस्कृत अनुवाद पर। तहिया एहने एहन अनुवाद सिखाओल जाइत छलैक— यथा—'देवदत्तः ग्रामं गच्छति' (देवदत्त गाम जाइ छथि), परन्तु यदि एहन वाक्य देल जइतैन जेना— 'देवदत्त जिलेबी खाइ छथि त' ओ जिलेबी विद्यार्थीकेँ के कहय, शिक्षकोकेँ गरमे अटकि जइतैन। हम एहन-एहन शब्दक संस्कृत (जेना जिलेबी - 'कुंडलिका') शब्द कल्पद्रुम आदि कोश तथा निघटु आदिसँ तानि-ताकि क' अपन अनुवादमे भरि देलिऐक। फलस्वरूप ओहो पुस्तक गरमा गरम जिलेबी जकाँ हाथो-हाथ पसरि गेल।

तदुपरान्त मास्टर साहेब हमरासँ अनेकानेक पुस्तक सरल संस्कृतमे लिख-वौलनि। (जेना— राम कथा, कृष्ण कथा आदि) जे खूब लोकप्रिय भेल और दूर-दूर धरि प्रचलित भ' गेल। (हमर 'तीस दिनमे अंग्रेजी' सेहो चलि पड़ल)।

ओहि बीच (प्रायः अप्रील, १९२९सँ) पुस्तक भंडारसँ मास्टर साहेब एक मैथिलीक मासिक पत्रिका बहार कैलनि —'मिथिला'। ओकर सम्पादक भेलाह पं० कुशेश्वर कुमर और बाबू भोला लाल दास। आदिएमे सम्पादकीय वक्तव्य बहरायल—

> "कुमर पुरातन नीति निरत छथि, दास नवीन समाजी,
> अछि आशा तथापि जे रखता दुनू दुनूकेँ राजी ।।"

हमरा दुनू गोटे मानैत छलाह। हास्य व्यंग्यक रचनासँ पत्रिकाकेँ आकर्षक बनैबाक भार हमरा पर देल गेल। हम एक चहटगर लेख देलिऐक— 'स्वराज्य के लेत ?', जे हमर मैथिलीक प्रथम व्यंग्य रचना छल। मिथिलाक आवरण पत्रक चित्र (भारत माताक हृदय प्रदेशमे मिथिला)क प्रारूप हमहीं उद्भावित कैने रही जकरा चित्रकार (जगज्योति बनर्जी) आकर्षक रूप प्रदान कैलनि। हुनकेसँ किछु आकर्षक व्यंग्यचित्र सेहो बनवा क' देलिऐक। जेना—सभा गाछीमे घटकक उक्ति—'बिनु पचास टाका सेने हम कथा न होमय देब'। एहि सभसँ पत्रिकाक आकर्षण बढ़ि गेलैक। जखन आषाढ़ मासमे सौराठ सभामे ओ पत्रिका गेल त' हाथो हाथ पसरि गेल।

भोला बाबूक विचार भेलनि जे मिथिला'केँ और बेसी आकर्षक और लोकप्रिय बनैबाक हेतु एकटा धारावाहिक उपन्यास देल जाय। ओहो भार हमरे ऊपर देल गेल। ओहीसँ 'कन्यादान'क जन्म भेलैक। (जकर चर्चा 'मैथिली सेवा'क प्रकरण भेटत)।

ओहि समयमे पुस्तक भंडारमे हिन्दी-मैथिलीक गंगा-यमुनी छलैक। मास्टर साहेबकेँ मैथिली प्रकाशन दिस नव उत्साह छलैन। हुनक विद्या-पति प्रेससँ 'विद्यापति पदावली' बहरायल छलैन और विद्यापति पंचांग' बहराइत छलैन। विद्यापति वाचनालय छलैन।

भंडार साहित्य-साधनाक एक तेहन आश्रम छल जहाँ लेखक, सम्पादक, कवि, कलाकार एक सम्मिलित परिवार जकाँ रहैत छलाह। तहियाक (१९-३०-४०क बीचमे' अनेको स्मृति-चित्र आँखिमे नाचि उठैत अछि।

एक दिन आचार्य शिवपूजन सहाय चश्मा लगौने, पान गलोठने, मन्द-मन्द मुस्काइत 'बालक'क हेतु मैटर संकलन क' रहल छथि। दोसर दिन अच्युतानन्द दत्त जी दत्तचित्त भेल फर्माक फर्मा प्रूफ संशोधन गाय ढेरी लगौने जा रहल छथि। एक दिन पं० फणिश्वर मिश्र 'सीता दाइ' लिखि रहल छथि, दोसर दिन कमल नारायण झा 'कमलेश' 'मंडन मिश्र'। एक दिन उपेन्द्र महारथी अपन एकान्त कक्षमे तन्मय भ' सुजाताक चित्र बना रहल छथि। मास्टर साहेब स्वयं एक सीतलपाटी पर मसनदपर ओङ्ठल बाल साहित्यक निर्माणमे संलग्न छथि।

मास्टर साहेब हमरा अपना घरक समाङ जकाँ मानैत छलाह। अपना संग बैसा क' भोजन करबैत छलाह। भंडारमे शुद्ध शाकाहारी भोजन बनैत

छलैक। अतएव माछ खयबाक मोन होइ छल त' बाहर प्रबन्ध भ' जाइ छल। सामने कोठा पर पं० जीक डेरा छलैन। हुनक भातीज (जयनाथ जी और गौरीनाथ जी) सेहो संग रहैत छलथिन। ओ सभ हमरा बहुत मानैत छलाह। जहिया हुनका ओतय मत्स्योत्सव होइत छलैन, तहिया हमरो निमंत्रण पड़ि जाइ छल और जंबीर नीर परिपूरित मत्स्यखंड' क आनन्द भेटैत छल। कहियो काल पं० हरिश्चन्द्र झा काविराजक ओतय सेहो। बादमे रामेश्वर बाबू ऐलाह जे अपन चौकाक नामे राखि लेलनि 'माछ घर'।

हम अपन विनोदी स्वभावक कारणें भंडार परिवारमे सभक प्रियपात्र छलहुँ। आचार्य शिवजी हमरा 'विनोदमूर्ति' कहैत छलाह। हुनक पत्नी (वचन देवी) केसरिया खीर बनबैत छलथिन त' ओ हमरा आ दत्त जीकें अपना संग बैसा क' खोअबैत छलाह। दत्त जी मस्तमौला लोक छलाह। बात-बात मे खिलखिला उठैत छलाह। तैं हम सभ हुनका खिलखिलानन्द कहि छलिएन। ओ शुद्ध साहित्यिक लोक छलाह। रघुवंशक पद्यानुवाद करैत छलाह। हुनक छोट भाय परमानन्द दत्त मेघदूतक।

भंडारक बीच एक छोट-छीन हरियर मैदान छलैक। ओहि 'पान' पर सांयकालीन साहित्य-गोष्ठी जमैत छल। विद्यापति, सूर, तुलसी, ओ रसखानक संग रस पान चलैत छल। प्रेसमे मैनेजर सोमण जी आ हनुमान प्रसाद बनारसी ठेठ बनैबामे माहिर छलाह। आचार्य शिवजी कलकत्ताक 'मतवाला मंडल' क मनोरंजक संस्मरण सुनबैत छलाह, पं० जी शान्ति निकेतनकें। कहियोकाल बाबू गंगापति सिंह अबैत छलाह त' तेहन-तेहन कथ-कतिया चुटुकका छोड़ैत छलाह जे लोक हँसैत--हँसैत लोट--पोट भ' जाइत छल। हमर और दत्तजीक गद्य--पद्य मय चुटकुला सेहो बेस जमैत छल। कहियो मैनेजर साहेबक चौकापर (जतय मनसोखा नियमित रूपसँ भोजता सभकें स्वादपर विजय प्राप्त करबाक अभ्यास करबैत छलथिन), कहियो महारथी जीक सरलतापर (जनिकर दूधवाली दूधमे तेना कागज पीटि क' मिला दैत छलैन जे ओंठलापर चारि आंगुर मोट छाल्ही जमि जाइत छलै)। कहियो दिनकर जी, मनोरंजन जी प्रभृति आबि जाइत छलाह त' रसक धारा बहि जाइ छल।

ओहि 'पान' पर रसपानक संग--संग पान--जलपान सेहो चलैत रहै छल। (यदि ओहि ठामक दैनिक साहित्य चर्चाक संकलन कैल गेल रहैत त' ओ विविध विषयक रोचक ग्रंथ तैयार भ' जाइत)।

रातिमे ओहि पान पर भजन--कीर्तन होइ छल। ढोल, मजीरा, हारमो-नियम पर। शिवकुमार, उमराव, राजनारायण, अशर्फी, बोए जी, त्रिवेदीजी आदि ओहि मंडलीक प्रमुख सदस्य छलाह। कहियो कहियो जगन्नाथ प्रसाद वैष्णव करताल बजबैत आबि जाइ छलाह और कीर्तन करय लगैत छलाह। कदाकदा अयोध्या, चित्रकूट क संत महात्माक प्रवचन होइ छलैन। जनक-पुरक रामलीला मंडली आबि जाइ छल त' कोबर लीलाक झांकी होइत छल जाहिमे मोदलता जी आदिक पद (विशेषतः भगवानक उहकनि) गाओल जाइत छलैन-('गारि हम नहि दै छी, हम कथा कहै छी')।

आतिथ्य सत्कारक भार मुख्यतः मास्टर साहेबक बहिनोय रामलखन बाबू पर रहैत छलैन। (जे भंडारमे 'फूफा--साहेब' कहबैत छलाह।) राम-नवमी आदि पर्वमे खूब धूमधामसँ रामार्चा यज्ञ होइत छल। बड़का बड़का कड़ाहमे पूआ--पूड़ी, कचौड़ी, हलुआ छनाइत छल। हमरो सभकें यथेष्ट प्रसाद भेटैत छल। 'माता' (मास्टर साहेबक धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रमणि देवी) कें धार्मिक कृत्यमे बहुत निष्ठा रहैत छलैन। और खूब उत्साहपूर्वक दान--पुण्य करैत छलीह।

सायंकाल हम आ दत्त जी संग--संग घूमय जाइ छलहुँ। गुदरी बाजार-मे एकसँ एक चिंहुँकगर वस्तु देखबामे अबैत छल। भारक भार दही (चारि चारि आने मटकोर)', चारि आने सेर रोहु माछ। चारिये आनामे रंगविरंगक लालपीयर मीठ आमसँ जलखरी भरि जाइत छल। मधु, मखान, अखोट सभ चारिये आने सेर। (आब ओ सभ स्वप्नवत् लगैत अछि।)

भंडारक वातावरण केहन आनन्द--विनोदमय छलैक, तकर किछु झलक दैत छी। एक बेर (प्रायः फगुआक अवसर पर) 'लाटरी भोज' भेलैक। जनिका जाहि वस्तुक टिकट उचारि गेलैन, तिनका सैह वस्तु देल गेलैन। किनको पूआ, किनको आलूदम, किनको दही--बाड़ा। दत्तजीकें पापड़ भेट-लैन। ओहि अवसर पर दत्तजीक एक सवैया मन पड़ैत अछि (जे प्रायः एना रहैन)---

> ''जेह कपारमे लीखल छैक, भेटइ छइ सैह ओही लिखलापर
> कर्मक लेख न मेटि सकैछ, करी कतबो केओ ऊपर चापर,
> बुद्धि न काज करैत छै लोककें, छैक लगैत जी भाग्यक थापड़,
> लाख पूआ--पकमान रहौक, तथापि भेटइ छइ केवल पापड़।'
> (पाछां सभकें समरूप देल गेलैन।)

खूब हास्य—विनोद भेल ।

ताहि समय साहित्यकार केहन सरस सहृदय होइ छलाह, तकर एक दृष्टान्त दैत छी । एक बेर हम, शिवजी, दत्तजी, पं० जी, महारथीजी, कुमार गंगानन्द सिंहक ओतय (दरभंगा) गेल रही । कमलेशजी पहिनहि सँ छलाह । गप्प-सप्प होइत-होइत सांझ भ' गेलैक । तखन हम सभ 'सुमन' जीक ओतय जा पहुँचलहुँ । ओतय कविवर पं० सीताराम झा पहिनहिसँ बैसल छलाह । और 'अतिचार' कें अत्याचार सिद्ध करैत छलाह । हमरा सभकें देखि सभ गोटे उल्लसित भ' उठलाह । ओहिठाम पहिनहिसँ पंचमेर भूजा (मुरही, चूड़, मकई, चूड़ा आ मखान) चलि रहल छलैक । हमहूँ सभ ओहिमे सम्मिलित भ' गेलहुँ । तदन्तर नाना प्रकारक तरुआ छनुआ सेहो आएल, तथापि छवो गोटाकें छुछुआएले जकाँ देखि घरवैया आग्रह कैलनि जे आब भोजने क' क' जाइ ।

दत्त जी निर्विकार लोक छलाह । 'आहारे व्यवहारे च त्यक्त लज्ज: सुखी भवेत् ।' कहलथिन--'बेस, तखन जमि क' गप्प चलय' और तेहन रंग--विरंग क छुरक्का छूटय लागल जे हमरा 'भोलाबाबाक गप्प और खट्टरकाकाक तरंग (चाणक्यक जन्मभूमि) लिखबाक मसाला भेटि गेल । एहि प्रकारें जे उदर-यज्ञ भूजासँ प्रारंभ भेल छल से अन्तत: भात, दालि, तरकारी, दही, आमक पूर्णाहुति पाबि समाप्त भेल । सुमनजीक ओतय ओ सरस स्नेह सुरभित सौमनस्यपूर्ण सहभोज अद्य यावत् स्मरण अछि ।

पुस्तक-भंडार एक तेहन सदाबहार सत्कारशाला छल जे साहित्यकारक हेतु अबारित द्वार रहैत छल । अपना प्रान्तक जे कवि कथाकार अबैत छलाह से त' भंडारकें अपन घर क' क' बुझितहि छलाह, बाहरोसँ जे प्रतिष्ठित साहित्यिक व्यक्ति (यथा--हरिऔध जी, सनीर जी प्रभृति) अबैत छलाह सेहो तेहने भाव रखैत छलाह । मास्टर साहेबक व्यवहारमे तेहन आत्मीयताक मिठास रहैत छलैन जे समागत व्यक्ति बिनु मोले बिका जाइ छलाह ।

भंडारसँ उतबा पारिश्रमिक भेटि गेल जे गामपर बाबूजीक चिन्ता दूर भ' गेलैन, सोमदाइक विवाह भ' गेलैन । पदमौलक पं० केशव झाक बालक शिव प्रसन्न झासँ । बाबूजीकें प्रसन्नता भेलैन जे ओ सुखी जमींदार परिवार

मे गेलीह ।[१] इन्द्रबाबूक उपनयन सेहो भ' गेलैन । और हमर आगाँ पढ़बाक जोगार सेहो भ' गेल ।

१९३० मे (जुलाई) पटनामे एम०ए० (दर्शन) मे नाम लिखौलहुँ । तावत् पुस्तक भंडारक शाखा पटनामे खुजि गेल छलैक । गोविन्द मित्र रोडमे, एक पीयर तिमंजिला मकानमे । ओहिमे एक कोठरी ऊपरमे हमरा भेटि गेल । भंडारसँ पाठ्य-पुस्तकक संशोधन कार्यक हेतु हमरा ६० रु० प्रतिमास पारिश्रमिक भेटैत छल । ताहिसँ खर्च चलि जाइत छल और जे बचैत छल से गाम पर पठा दैत छलिऐन ।

पटना शाखाक मैनेजर छलाह रामगुलाम गुप्त । ओ उत्साही कार्यचतुर व्यक्ति छलाह । दीपावलीमे बड़का-बड़का गोलाकार लड्डू बनवाय लक्ष्मी-पूजाक प्रसाद वितरण करैत छलाह (जाहिसँ ग्राहक-अनुग्राहकक संख्यामे उत्तरोत्तर वृद्धि भेल जाइ छलैन) । किन्तु ओ तेहन खोमाह छलाह जे एक दिन छतक मुड़ेरापर एक गिद्धकें बैसल देखलथिन त' लगले बोरिया बिस्तर समेटि अपन घर (सीतामढ़ी) विदा भ' गेलाह ।

तदुपरान्त दोसर मैनेजर ऐलाह मुन्शी कुलदीप लाल । ओहो नीक लोक छलाह । परन्तु तेहन मितभाषी जे गनि क' तीन टा शब्द बजैत छलाह । 'हँ, नहि, बेस' । अतएव हुनक सहायतार्थ एक और व्यक्ति लहेरियासराय सँ ऐलाह—उमराव जी, जे बेस बजन्ता, चड़फड़, चटपटिया छलाह आ लोक कें खूब रावय जनैत छलाह । बीच-बीचमे मास्टर साहेब स्वयं आबि क' निरीक्षण क' जाइत छलाह । थोड़बे दिनमे पुस्तक भंडार पटनोमे तहिना चमकि पड़ल जेना लहेरियासरायमे ।

ओहि समय दु टा बिहारी प्रोफेसर विलायतसँ भ' क' आयल छलाह । प्रो० कृपानाथ मिश्र और प्रो० गोरखनाथ सिंह । भंडारसँ हुनका सभकें आत्मीयता स्थापित भ' गेलैन । मिश्र जी भंडारक हेतु अंग्रेजी रीडर लिखि क' देबय लगलथिन । गोरख बाबूकें ततेक घनिष्ठता भ' गेलनि जे कइएक मास धरि भंडारेमे रहि गेलाह । ओ साहेबाना पोशाकमे छलाह परन्तु तेहन

(१) परन्तु दुर्भाग्यवश ओ सासुरक सुख बेसी दिन नहि भोगि सकलीह । द्विरागमनक किछुए वर्षक बाद ओ यक्ष्मासँ आक्रान्त भ' दिवंगता भ' गेलीह ।

सरल निराडम्बर व्यक्ति छलाह जे पैंटक जेबीसँ चुनौटी बहार क' तमाकू चूना क' खाइत छलाह। ओ हमरा फिलोसोफी पढ़ैत देखि विनोदपूर्वक कहैत छलाह :--'फिलोसोफीमे का बा? पत्तापर पीउ की पीउपर पत्ता? इहे नु बा?' एक दिन हमरा डेकार्टेक दर्शन पढ़ैत देखि अपन भातिजकेँ (बुन्दाबाबू) मोर कैलथिन--देखह, विन्दा, फिलासफर के अकिल'। ई बाड़न कि ना बाड़न!' साबित करे खातिर एतना मोट किताब लिखले बाड़न। तू मत फिलोसोफी पढ़िह। ना त तू हूँ सनक जइब। कौंके जाय के पड़ी।"

तकरा बाद ओ फिलोसोफर सभक मनोरंजक खिस्सा सुनाबय लगैत छलाह। परन्तु ओ हमरा मानितो बहुत छलाह। जखन मुँहमे आबि जाइ छलाह तखन तारीफो करय लगैत छलाह--"कौआ जिनियस बा?"

अहियोकाल गयासँ कावबर वियोगी जी अबैत छलाह त' अपन 'आर्यावर्त' महाकाव्यक कतिपय ओजपूर्ण अंश सुनबैत छलाह।

यदाकदा गयासँ एक और कवि अबैत छलाह--शंगर जी। ओ तेहन संसार भाषामे वर्जैत छलाह जे भाता ओहीमे ओलरा क' रहि जाइ छलाह। "क्या मैं धृष्टता कर सकता हूँ यह पूछने को कि क्या आप एक क्षण दे सकते हैं अपने अमूल्य क्षणों से यह बतलाने के लिए कि क्या इस बीच में मास्टर साहेब के आने की संभावना...... ..."कुलदीप बाबू एके शब्दमे जवाब द' देत छलथिन --'नहीं'।

मंडारमे सभसँ अद्भुत जे व्यक्ति अबैत छलाह से छलाह टेकनारायण प्रसाद तर्कवागीश। ओ तेहन बड़का टा मोछ रखने छलाह जे दूनू कानपर दू टा भला बय उपर चढ़ौने रहैत छलाह। हुनक टेक छलैन जे अहिया ककरो सँ बहसमे हारि जायब तहिये ई मोछ कटायब। ने हारलाह, ने कटौलनि। ओ घूमि घूमि क' लोकसँ बहस करैत छलाह। हुनकर एकसँ एक बीहड़ प्रश्न होइत छलैन। एक बेर इतिहासक विशेषज्ञ डा० यदुनाथ सरकारकेँ पुछलथिन पटनामे जहाँ चाणक्यक पैरमे कुश गड़लैन से स्थान कहाँ छैक! अढ़ाइ हजार वर्ष पूर्व पटनासँ हाजीपुर धरि तरेतर सुरंग बनाओल गेल छलैक से कतय छैक? ओ पटनाक चौबीस टा प्राचीन नाम गनबैत छलाह। महेन्द्रू मुहल्लाकेँ राजा महेन्द्रसँ और दीवान महल्ला केँ 'देवानांप्रियः' सँ बहार करैत छलाह। हुनक कथ्य छलनि जे पटना पृथ्वीक सभसँ प्राचीन नगर अछि और अंग्रेजीक 'टाउन' शब्द ओहीसँ बनल अछि (पटना--टना--टान--टाउन)।

हम अपनो दिससँ फुरा--फुरा क' बहुत रास उदाहरण जोड़ि दैत छलिऐन।[1] एहि सभसँ ओ हमरा बहुत मानैत छलाह। हम त' परिहासमे कहैत छलि-अनि परन्तु ओ ओकरा अनुसंधान क' क' बुझैत छलाह। एकदा भाषा शास्त्री केँ पुछलथिन--'पटनाक कुकुर आ लंडनक कुकुर एके भाषामे भुकैत अछि कि भिन्न-भिन्न भाषामे?' हुनकर कथन छलैन जे(कुकुरकेँ अतु कहि केँ मोर कयल जाइत छैक से 'आयातु'क अपभ्रंश छैक। हाथीकेँ महावत 'गच्छ' कहैत छैक। एहिसँ सूचित होइछ जे तात्कालिक कुकुरसँ हाथी पर्यन्त संस्कृत बुझैत छल।) हुनकर बात तेहन मनोरंजक होइ छलैन जे सुनबाक हेतु लोक घेरने रहैत छलैन। एक बेर हम ओ बन्धु सतीश बाबू हुनका घर--पटना सीटी (पानदरीबा गलीमे) गेल रही और हुनक एकान्त वासी योगीक जीवन देखि बहुत प्रभावित भेल रही।

ओहि समय हमर पित्ती (बाबूजीक परम प्रिय मित्र) राय बहादुर जयानन्द कुमर पटनामे ए०पी०एम० जी भ' क' आयल छलाह और जी० पी० ओ० क निकट सरकारी क्वार्टरमे रहैत छलाह। ओ परम दिव्य, यशस्वी लोक छलाह। हुनका ओतय (सायंकालमे) गोष्ठी जमैत छल जाहिमे सभ वर्गक लोक (बिहारी, बंगाली, मुसलमान) अबैत छलाह और ओ सभक बात सुनि सहानुभूतिपूर्वक मार्गदर्शन क' दैत छलथिन। ओ तेहन उपकारी छलाह जे दूर-दूर धरि हुनक ख्याति छलैन। मैथिल समाजमे हुनक तेहने प्रतिष्ठा छलैन जेहन कायस्थ समाजमे डा० सच्चिदानन्द सिन्हा वा भूमिहार समाज मे सर गणेश दत्त सिंहक छलैन।

ओ बाबूजीक बहुत सम्मान करैत छलथिन और दुनू गोटामे निरन्तर पत्र-व्यवहार होइत छलैन। बाबूजी (आ माय) क पटना ऐलापर ओ आदर-पूर्वक अपना ओहिठाम ल' जाइत छलथिन।

ओ हाकी विनोदप्रिय छलाह। 'मिथिला'मे छपल तार कोना पढ़ाओल गेल' (कन्यादानक एक अध्याय) पढ़ि हुनका बहुत मनोरंजन होइत छलैन। हमरा हँसैत-हँसैत कहैत छलाह--"तों बरोबरि एहए आयल करह एकसँ एक दिग्गज 'झारखंडी' भेटि जैतुन।

हम प्रायः प्रत्येक रविकेँ (वा अन्य कोनो छुट्टीक दिन) हुनका ओतय आइत छलहुँ और रंग-विरंगक लोक सभसँ भेंट होइत छल। तेहन-तेहन

---

1. हमर "लोक रिसर्च" क बहुत रास मनोरंजक उदाहरण 'धर्मयुग'मे 'ले गये अंग्रेज' शीर्षकसँ छपल रहय।

रोचक गप्प होइत छलैक जे छोड़ि क' उठबाक मन नहि होइ छल। कतेको बेर ओतय रहि जाइत छलहुँ। काकी (नवादावाली) अपन तीनू बालक (यशा-नन्द, नित्यानन्द आ कीर्त्यानन्द)क संग खुआ क' भोजन करबैत छलीह। काकाजीक हेतु ओ नाना प्रकारक पथ्याहार बनबैत छलथिन, गुलरि, पिड़ाड़ बरी आ मखानक तरकारी बनबैत छलथिन। चौठचन्द्र आदि पावनिमे ओ विन्यासपूर्वक नाना प्रकारक स्वादिष्ट व्यंजन बनबैत छलीह। आ सभकें आवेशसँ खोअबैत छलीह। पार्वण आदिक अवसरपर ओतय बृहत् भोज होइ छल ताहिमे सकरौड़ी, रसगुल्लासँ लोककें अछो कराओल जाइ छल। पटनाक गण्यमान्य व्यक्ति (यथा लक्ष्मीकान्त बाबू, रामकृष्ण बाबू प्रभृति) ओहिमे अबैत छलाह। कविराज पं० विश्वनाथ झा, वैद्य जी (पं० हर्षानन्द मिश्र और पं० विष्णुलाल शास्त्री आदिक हास-परिहास होमय लगैत छलैक त' रसगुल्लाक सचोक संग-संग हास्य विनोदक वर्षा सेहो होमय लगैत छल।

यावत् काकाजी जीवित रहलाह हम निरन्तर हुनक सेवामे जाइत रहलहुँ और हुनक स्नेह-भाजन बनल रहलहुँ। (१९४० जनवरीमे ओ स्वर्गीय भ' गेलाह और ओ अनुपम आनन्द-विनोदक केन्द्र शून्य भ' गेल।)

ओहि समय (१९२० मे) पटना कालेजक दर्शन विभागमे पाँच टा प्राध्या-पक छलाह—चारुचन्द्र सिंह (अध्यक्ष), निर्मलमय घोष, गंगानाथ भट्टाचार्य, यमुना प्रसाद और डा० धीरेन्द्र मोहन दत्त। चारु निर्मल गंगा यमुनाक धीर संगमसँ ओ विभाग तीर्थराज प्रयाग बनल छल।

ताहि दिनक गुरु छात्रक केहन उच्च आदर्श रहैत छलैन तकर एक दृष्टांत दैत छी। जखन यमुना बाबू विलायतसँ आबि प्रथम श्रेणीमे पदोन्नति भेलाह त' चारु बाबू कहलथिन—'यमुना, आब अहाँ हमरा कुर्सीपर बैसू।' यमुना बाबू हुनकर चरणस्पर्श करैत कहलथिन—'अहाँ हमर गुरु छी। अहाँक अछैत हम एहि कुर्सी पर नहि बैस सकैत छी, और सैह भेलैक। चारु बाबू यावत् रह-लाह दर्शन विभागक अध्यक्ष बनल रहलाह।

हम पटना कॉलेजमे फिलोसोफिकल सोसाइटीक सेक्रेटरी छलहुँ। ताहि रूपमे एक बेर कलकत्ता ट्रिप ल' गेल रही। कलकत्ताक ओ प्रथम यात्रा एखन धरि मनमे अंकित अछि। सीसा जकाँ चमकैत सड़क, गनगोआरि जकाँ ससरैत ट्रामगाड़ी, हरिसन रोडपर दूनू कात गगनचुम्बी अट्टालिका, चौरंगीपर ह्वाइटवे लाडला'क विशाल दोकान (जाहिमे सूई सँ ल' क' मोटरकार धरि बिकाइत छलैक), रंग-बिरंगी इन्द्रधनुषी परिधानमे आँग्ल रमणीक झुंड

देखि बुझि पड़ल जेना कोनो मायापुरीमे आबि गेल होइ। तीन पाइमे ट्रामसँ की माइल घूमि अबैत छलहुँ। छौ आनाक 'पास' ल' क' दिन भरि गोटे कलकत्ता क सैर क' अबैत छलहुँ। श्याम बाजार, बाग बाजारसँ बालीगंज, टालीगंज, कालीघाट, विक्टोरिया मेमोरियल म्यूजियम, जू आदि देखि ऐलहुँ। दू पाईमे हरियर डाभ काटि क' दैत छल जकर शीतल जल पीबि क' तृप्त भ' जाइ छलहुँ। तकरा बाद अनेको बेर कलकत्ता गेलहुँ, परन्तु ओ आनन्द फेर नहि भेटल।

१९२२ मे हम एम० ए०क परीक्षाक बाद मायकें वैद्यनाथ धाम ल' गेलिऐन। संगमे पुतहुओ रहथिन। धर्मशालामे डेरा दय शिवगंगा मे स्नान कय बाबाक दर्शन पूजन क' तपोवन, त्रिकूट आदि घुमा-घुमा क' देखा देलिऐन। फिरती बेर गिद्धौर उतरि बाबूजीसँ भेंट करैत ऐलहुँ। ओतय महाराजक महल और विनोद-वाटिका देखलहुँ। ओहि समय विजया दशमीक समारोह रहैक। पं० षड़ानन झा (राज ज्योतिषी)क संग घूमि क' देखलहुँ। आराक पहलवान तेजनारायण सिंह, मुकरातीमे एक बड़का पंजाबी पहलवानकें पछाड़ने रहथि, से देखल। हीराजी अपना संग जंगलमे शिकार देखाबय ल' गेलाह। ओतय पहिले पहिल हरिणक मांसक स्वाद भेटल। बाबूजीक संग खैरा स्टेट गेलहुँ हास्यरसावतार पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी छलाह। ओ बाबूजीकें देखि अत्यन्त उल्लसित भ' उठलाह। खूब आमोद प्रमोद भेल। हमर एक हास्य रचना सुनि आशीर्वाद देलैन—"जीवन भरि एहिना हँसैत हँसबैत रहू।"

यथासमय एम०ए०क परीक्षाफल बहरायल। हम प्रथम श्रेणीमे प्रथम भ' स्वर्णपदक प्राप्त कैलहुँ। अतः पर हम सर्वप्रथम ई कार्य कैलहुँ जे मायकें काशी-प्रयाग ल' जाय त्रिवेणी संगमपर (सपत्नीक) मंत्र लेलहुँ। बाबूजीकें बहुत प्रसन्नता भेलैन जे फिलोसोफी पढ़ियो क' हमरामे एतबा आस्तिकता अछि।

१९३३ मे हम बी० एन० कॉलेजमे दर्शनक व्याख्याता नियुक्त भेलहुँ। तखन अपना कॉलेजक समीप आवासक व्यवस्था कैलहुँ।

परन्तु तथापि भंडारसँ सम्पर्क बनले रहल। हम अनेको वर्ष धरि ग्रीष्मा-वकाश आदिमे लहेरियासराय जाइत रहलहुँ और भंडारक सरस वातावरण

मे रहि पुस्तक लिखैत रहलहुँ । हुमर अधिकांश कृति 'कन्यादान', 'द्विरागमन', 'प्रणम्य देवता' 'रंगशाला' ' न्याय दर्शन' 'वैशेषिक दर्शन' आदि) ओतहि रहि कय लिखल गेल ।

१९४२ मे पुस्तक भंडारक रजत जयन्ती और मास्टर साहेबक स्वर्ण जयन्ती मनाओल गेलैन । ओहि अवसरपर बृहत् अभिनन्दन ग्रंथ (जयन्ती स्मारक ग्रंथ) प्रस्तुत कैल गेल, जकर सम्पादन आचार्य शिवपूजन जी, हम आ दत्त जी मिलि कय कैलहुँ । ओ ग्रंथ बिहारक साहित्यिक, सामाजिक, ऐतिहासिक विश्वकोश कहल जा सकैत अछि ।[1] (ओहिमे बाबूजीक तीन टा महत्त्वपूर्ण निबन्ध छलैन—मिथिला के पंडित, द्विवेदीजी के पत्र, सरोजसौरभ (राजा कमलानन्द सिंहक) ।

यावत् धरि मास्टर साहेब लहेरियासरायमे रहलाह हम बराबरि ओतय जाइत रहलहुँ । जखन १९४७मे ओ पटना आबि कऽ अपन नव-निर्मित भवनमे रहय लगलाह, त पुनः अपन साहित्य साधनामे लागि गेलाह । हुनक अन्तिम महत्त्वपूर्ण कृति छलैन—'मैथिली रामायण' (अर्थात् तुलसीकृत रामायणक मैथिलीकरण) । 'मैथिली रामायण' हुनकर मैथिली भक्तिक परिचायक छैन । ओ अन्त धरि हुमरा अपन वात्सल्यस्नेह प्रदान करैत रहलाह और हमहूँ ओहुने भाव रखैत रहलिऐन । १९७१ (मइ)मे ओ साकेतवासी भ' गेलाह और ओहि औदार्यपूर्ण साहित्यिक परम्पराक एक गौरवपूर्ण अध्याय समाप्त भ' गेल ।

---

१. मास्टर साहेब और पुस्तक भंडारक अनेको संस्मरण हम जयन्ती ग्रंथ (१९४२) 'नई धारा'क शिवपूजन स्मृति अंक (१९६३) और 'स्मृति अंक' (१९६९)मे देने छिऐन ।

अध्याय ८

बी० एन० कॉलेज

(घर परिवारक सुख-दुख)

१९३३ जुलाईमे हम बिहार नेशनल कॉलेजमे दर्शन शास्त्रक अध्यापक नियुक्त भेलहुँ। जीवनमे एक नवीन अध्यायक श्रीगणेश भेल।

कॉलेजक सामने मेन रोड पर एक छोट-छीन दु-तल्ला मकान पन्द्रह टाका मासिक भाड़ा पर भेटि गेल। घरसँ माय आ बाबूजी आबिक' कनियाँ (पत्नी), फूलदाई (३ वर्षक बच्ची) और ११ वर्षक इन्द्र बाबू (छोट भाय)कें एतय राखि गेलाह। सोमवारी मेलासँ फर्निचर कीनि क' एलहुँ। दू-दू रुपये कुर्सी, चारि टाकामे आराम कुर्सी, पाँचमे दराज लागल टेबुल। अठारहमे बड़का दुइ तड़ी पलंग जे एखन धरि काज द' रहल अछि। इन्द्रकें टी० के० घोष एकेडमीमे नाम लिखा देलिऐन। जनक शिक्षक पं० सीखीलाल झा हमरा सभक अपेक्षित छलाह।

ओहि समय कॉलेजक अध्यापकक प्रारम्भिक वेतन एक सय टाका मात्र छलैक। परन्तु ओहीमे मकानक भाड़ा, स्कूल फीस, भोजन-छाजन, पाहुन-परक आ गाम पर मनिआर्डर (घर सँ पटना धरिक सभटा खर्च) चलि जाइत छल। आइसँ बढ़ियाँ भोजन करैत छलहुँ—भात-दालि, घृत, दू टा तरकारी, दू-खंड माछ, दू छी दही। भोरे सौंफ बदामक जलपान बनैत छल। अनको निमंत्रित छलिऐन। जिनको ऐलापर चाह नहि, सोहारी खुआओल जाइत छलैन। तहिया एक टकामे जे बरक्कति छलैक से एखन दू हजारमे नहि।[1]

हमर माय जब डेरा चलैवाक भार कुलवधूपर सौंपि बाबूजीक संग गाम गेलीह।

---

1. ताहि दिन अढ़ाइ रुपये मन चाउर छलैक। पाँच टाकाक चाउर बोरामे ठेलापर लदाक' अबैत छल। आब त ओतबा टाकाक चाउर कागजक ठोंगामे अबैत अछि।

नौ वर्षक विवाहित जीवनमे ई प्रथम अवसर छल जे पति-पत्नीकेँ एक संग रहबाक सौभाग्य प्राप्त भेल।

खुशी भेल जे आब हिनका अपना मनक अनुसार बना सकबैन। चुनि-चुनिकेँ पुस्तक आनि देलिऐन—आदर्श गृहिणी, दाम्पत्यजीवन, स्वास्थ्य और सौन्दर्य, आसन-व्यायाम, पाकशास्त्र, कशीदा शिल्प, आभूषण विन्यास........।

पत्नी पुस्तक देखि तदनुसार नव-नव वस्तु बनाबय लगलीह।

हम भोजनक चार्ट बनौलहुँ। कौन दिन कौन विशिष्ट वस्तु बनय। एकटा मसाला बोयम बनबौलहुँ जाहिमे हिंगसँ हरदि धरि (जाफर-जावित्री केसर पर्यन्त) सजाकेँ राखल गेल। स्नानक हेतु टिनक टब बनबौलहुँ। पत्नीक हेतु रुटीन बना देलिऐन। पाँच बजे भोरसँ दस बजे राति धरि। अन्हरोखे प्रात भ्रमण करबाक हेतु गांधी मैदान लऽ जाय लगलियैन। ऊपरक एकान्त कोठरीमे व्यायाम कराबय लगलियैन। पत्नी ओड़-छेप करैत छलीह—"अहाँ किछु बुझि-तहि नहि छिऐक। यदि कोनो खिड़कीसँ केओ हमरा एना जंघिया-गंजीमे शीर्षासन करैत देखि लेत तँ की कहत?"

हम जोश उठैत छलहुँ—"कोनो मूर्ख हँसि देत ताहि डरेँ अहाँ अपन व्यायाम छोड़ि देब? ई भय तँ अहाँ सबकेँ खा गेल। आगाँ नहि बढ़य देलक।"

हम एक संस्कृत वाक्य हुनका कापीमे लिखा देलिऐन—'निन्दन्तु, कुप्यन्तु, हसन्तु मूर्खाः श्रेयस्करं सत्पदं करिष्ये।" एतबे नहि खूब मोट-मोट अक्षरमे ई 'मोटो' टाङि देलिऐन—

"They say, let them say, what they say."

(ई नव आदर्शवादिताक जोश छल वा फिलौसफीक तरंग छल या गदह पचीसीक सनक छल अथवा सभक सम्मिलित प्रभाव छल से पता नहि।)

आबो कतेक बात मन पड़ैत अछि तँ एखनो हँसी लागि जाइत अछि। हम स्वयं तँ सादा रहैत छलहुँ, किन्तु पढ़ित कन्याकेँ आधुनिक साज-सज्जामे देखय चाहैत छलिऐन। परन्तु हुनका बेसी चाक-चिक्य पसंद नहि छलैन। एक दिन न्यू मार्केटसँ एक लेडी कोट किनौने ऐलिऐन डेरा आबि हुनका वैदिक सत्कार जोर कऽ देलकैन—"नहि, नहि, हम ई पहिरिकेँ बाहर नहि जैब, ई सब अंग्रेजीवालीकेँ छजैत छैक। हमरा अनकच्छल लागत।"

हम अकच्छ होइत कहलियैन—"किएक अनकच्छल लागत। अहूँ त किछु किछु अंग्रेजी सिखिए रहल छी।"

अन्ततः ओ एहि बात पर राजी भेलीह जे बाहर जाइत काल हाथमे कोट लऽ लेतीह और जरूरत प्रयोजन बुझि पड़तैन पहिरि लेतीह। पढ़ित कन्या एक मुस्की छोड़ैत बजलीह—"ऐकटा बात कहू? जहिना 'अहाँ तीस दिनमे अंग्रेजी' सिखबै छी तहिना 'तीस दिनमे अपटुडेट' एकटा और पुस्तक!"

ओ कोखन काल एहन सूक्ष्म व्यंग्यक तीर चला दैत छलीह जे कुशक नोक जकाँ चुभि जाइत छल। हम पुछलिऐन—"अहाँ एना व्यंग्य बाजब कतय सिखलहुँ।"

ओ बजलीह—"हम सात वर्षसँ अहाँक घरमे रहैत छी, जहाँ राति-दिन व्यंग्येक बेती होइत रहैत अछि। तखन हम एतबो नहि सीखब?"

आब बुझना गेल जे ग्रामीण वधू ततेक अबोध नहि छथि, जतेक हम बुझैत छलिऐन। ओहो लक्षणा व्यंजनामे बाजि सकैत छथि—नहला पर दहला दऽ सकैत छथि। हम चाहैत छलहुँ जे पत्नीकेँ गृहिणी, सचिव, सखा, शिष्या कार्येषु दासी शयनेषु रंभा, सभ एक संग बनाकेँ रखिऐन, परन्तु स्वयं तेहन छलहुँ जे कालेजसँ ऐलापर एक पैरक पैताबा एहि कोनमे दोसर पैरक ओहि कोनमे फेकि दैत छलिऐक जे गृहिणी सरिया लेतीह। सदिखन किछु ने किछु अढ़बिते रहैत छलिऐन। ऐ! कतय गेलहुँ? सुनै छी? चश्मा साफ कऽ दिअ। कनेक आबो तेल पता दिअ। ओ स्थिर गम्भीर शांत प्रकृतिक छलीह, परन्तु हम तेज तर्रार चुस्त चालाक चाहैत छलहुँ। ओ तेहन मित-भाषिणी छलीह जे कोखन काल हम सहृदय मुनि कहैत छलिऐन। और लोक हुनक एहि गुणक प्रशंसा करैत छलथिन, परन्तु हमरा ओहन सत्ययुगी स्वभाव पसन्द नहि छल। 'लज्जारूपेण संस्थिता देवी'सँ 'शक्तिरूपेण संस्थिता' बेसी आकर्षक लगैत छलीह।

ओ हमरा संतुष्ट करबाक हेतु अपना भरि प्रयास करैत छलीह और बहुधा कोनो साहसिको कार्य कऽ देखबैत छलीह। परन्तु जहाँ कोनो कामे कनेको त्रिक्ति होइ छलैन तँ हम तेहन धूमय लगैत छलिऐन जे ओ दबि रहैत छलीह और तखन सामञ्जस्य करब कठिन भऽ जाइ छल।[1]

---

1. आब बुझि पड़ैत अछि जे ओ एक अत्यन्त सूक्ष्म तारक वीणा छलीह जे हमरा बजाबय नहि आयल और ढोल जकाँ पिटैत रहलहुँ। बहुधा तारकेँ ततेक कसिकेँ ऐंठि दैत छलिऐन जे ओ टूटि जाइ छलैन। और ताहूसँ कालक्रमसँ मरम्मति कैने ओ पूर्ण स्वर सहज रूपेँ मुखरित नहि भऽ पबैत छलीन।

लगेमे एलफिन्स्टन सिनेमा छलैक। ओहि समय ओहि टाकीजमे 'अछूत कन्या'क धूम मचल छलैक। देविकारानी आ अशोक कुमारक युगल गान पटनामे गुंजायमान भ' रहल छलैक।

"मैं बनकी चिड़िया बनकर बन बन बोलूँ रे।"
"मैं बन का पंछी बनकर संग-संग डोलूँ रे।"

हम पत्नीकेँ कहलियैन—"अहूँ जा क' देखि आउ।" ओ कहलीह—"हम एकसरि नहि जैब। अहूँ चलू।" हम उत्तेजित होइत कहलिऐन—"की? अहाँ बिना चरवाहे नहि जा सकैत छी? देखियौक कतेक गोटा मैटिनी शो मे जा रहल अछि। यदि अहूँ सेहो ओहि भलामे जा क' देखि आएब त' कि सुभद्रा-हरण भ' जाएत?"

ई बात सुभद्राजीकेँ लागि गेलैन। पछिला कन्या साहस बटोरि 'अछूत कन्या' देखि ऐलीह तेहन विजयगर्वसँ मुसुकुराइत जेना कोनो युद्ध जीति क' आएल होथि। ओ फिल्मक कथानकक वर्णन करैत बहुत प्रशंसा कैलनि। (वास्तवमे ओहन मर्मस्पर्शी चित्र फेर देखबामे नहि आएल।)

एहि प्रकार हम हुनक साहस आ मनोबल बढ़बैत गेलिऐन। क्रमशः हुनकामे आत्मविश्वास आबय लगलैन। ओ शनैः शनैः कच्छप गतिसँ आगाँ बढ़ैत छलीह। परन्तु हम चाहैत छलहुँ जे ओ एके बेर उड़ि जाथि — बनकी चिड़िया जकाँ।

हमर यायावर मन पर्यटनक दिस दौड़ल। बड़ा दिनक छुट्टीमे सभ गोटे राजगीर जाइत गेलहुँ बी० बी० लाइट रेलवेक टुन-मुनियाँ गाड़ीसँ, जे खेलौना जकाँ लगैत छलैक। ओ तेहन मन्थर गतिसँ चलैत छल जे केओ दौड़िक' पकड़ि लै सकैत छलैक। कोनहु काल तेना घर आँगनक बीचसँ द' क' जाइत छल जे गोटुलक चारपर लतरल सीम माथमे ठेकि जाइ छल। पहिले पहिल ओहन गाड़ीमे चढ़ि हमरा सभकेँ विशेषक' इन्दु आ फूलदाइकेँ बहुत कुतूहल होइत गेलैन।

हम सभ राजगीर पहुँचि धर्मशालामे डेरा देलहुँ। कोठरीमे समान राखि कुंडपर जाइत गेलहुँ। ओतय सप्तर्षि धाराक सातो झरनाक धारोष्ण जलमे और कुंडक भरि छाती गर्म पानिमे प्रवेश कय स्नानक आनन्द लैत गेलहुँ। ओ अभूतपूर्व अनुभव छल। चारू कात पहाड़ और जंगलक दृश्य। सभ किछु नबे लागल। दोकानपर दही चूड़ा चीनी जलपान करैत गेलहुँ। धर्मशालामे आबि आन-आन यात्रीक देखा देखी हमहूँ सभ बजारसँ भोजन

बनैबाक आवश्यक सामान ल' ऐलहुँ। ईंट जोड़ि जारन पर माटिक कोहामे खूब सोन्हगर खिच्चड़ि आ खाना बनल।

तेसरामे हम सभ घूमय चललहुँ। पहाड़पर झुंडक झुंड पर्यटक कान्हपर बैग लटकौने पहाड़पर चढ़ि रहल छल। ध्रुवोहि लागल छलैक। हमहूँ सभ ओकर पछोर धैने ऊपर चढ़य लगलहुँ। (आगाँ रघुवर पाछाँ लछुमन बीचमे सीता माय) सो सिमा जकाँ गोविन्द कहने पर्वतारोहणी पत्नीओक रूप मनमे अंकित अछि। हम सभ एक घुरसँ चलैत शिखरपर पहुँचि गेलहुँ। ऊपरसँ नीचाक दृश्य देखलहुँ—छोट-छोट छत्ता जकाँ लगैत छलैक। एक शिलाखंड पर बैसि सुस्ताइत गेलहुँ। बैगमे नमकीन आ थर्मसमे पानि छल। जलपान करैत गेलहुँ। सोन भंडार आ जंगलमे जरासंधक अखाड़ा देखैत साँझ धरि पुनः कुंडपर आबि पाँच मिनट जलमे बैसि गेलहुँ। सभटा थकानी दूर भ' गेल। रातिमे एक पवित्र मारवाड़ी बासामे भोजन कए आनन्दसँ सुतलहुँ।

एहि प्रकार चारि पाँच दिन धरि हम सभ टूरिस्ट लोकनिसँ उन्मुक्त पक्षी जकाँ स्वेच्छा-भ्रमण करैत रहलहुँ। बैभार, विपुलाचल, उदयगिरि, स्वर्णगिरि, रत्नगिरि पाँचो पर्वत पर भ्रमण करैत गेलहुँ। दुनू साँझ कुंडमे स्नान करैत छलहुँ जहाँ जे वस्तु भेटि जाइ छल से खा लैत छलहुँ। रातिमे थोड़ा बैसिक' सुतैत छलहुँ।

नालंदा विश्वविद्यालयक खण्डहर आ पावापुरीक पुष्करिणी आ जैन मंदिर देखैत, सिलावक प्रसिद्ध खाजा लैत हम सभ एक सप्ताहमे पटना वापस एलहुँ। सभक चेहरा पर दोबरे चुहचुही आबि गेल छलैन। पत्नीओक जेना कायाकल्प भ' गेलैन। बच्चा सभक संग चिड़ई जकाँ चहु-कय लागि गेलीह। हमरा खुशी भेल जे एहि ट्रिपसँ सभकेँ खूब आनन्द भेटलैन।

पत्नीमे तेहन स्पिरिट आबि गेलैन जे अपने मनसँ शौपिंग करय लागि गेलीह। रंगविरंगक डिजाइन देखि निटिंग करय लगलीह। हमरा सभकेँ स्वेटर बुनि क' देलनि। फूलदाइकेँ किंडरगार्टेन क्लास आनिक' अंग्रेजी वर्णमाला सिखाबय लगलथिन। हमरा संतोष भेल जे आब गृहिणी स्मार्ट भेल जा रहल छथि, आधुनिक लाइन पर आबि रहल छथि और क्रमशः एहिना पार लगैत-बढ़ैत लागि जेतीह।

एहि तरहेँ छोट-छीन गृहस्थीक गाड़ी मरीचा भोजसँ चलय लागल। गृहिणी तिला संक्रान्तिमे उल्लासपूर्वक चूड़लाइ तिलवा बनौलनि। सभकेँ

प्रेमपूर्वक खोऔलनि। सनेस बदलनि। रातिमे बिड़ला मंदिर जाय बच्चा सभकें उत्सव देखा लेलथिन। हमरा कहलनि—"काल्हि दू बजे एक बड़का महात्माक प्रवचन हेतैन, चलब ?"

हम कहलिऐन—"बेस, हम काल्हि डेढ़ बजे कालेजसँ आबि जाएब। अहाँ सभ पहिनेसँ तैयार रहब।"

दोसर दिन (१५ जनवरी, १९३४कें) हम नियत समयपर डेरा आबि गेलहुँ। सभ गोटे पहिनहिसँ तैयार रहथि। इन्द्र पुछलनि—"की भैया! फिटन ल' आउ ?" भाउजि कहलथिन—"चलू बौआ, नीचे सड़क पर ल' लेब।"

हम सभ सीढ़ीसँ नीचा उतरय लगलहुँ, तावत् ओ डोलय लागि गेलैक। जेना केओ जोर जोरसँ झुलुआ झुला रहल होइक। छतक कड़ी सभ एक एक बीत छुटिक' फेर जुटि जाइक। आब जे घड़ी माथ पर खसय। पत्नी चिचिया उठलीह—भूकम्प !

हम सभ जल्दी-जल्दी ससरैत नीचा उतरि जहिना चौकठिक बाहर भवैत छी कि ओ मकान काटल गाछ जकाँ अरड़ा क' खसि पड़लैक।

(यदि एको क्षण विलम्ब होइत त' खोप सहित कबूतरायनमः भ' जाइत। और ई जीवन कथा नहि लिखल जा सकैत।)

तावत् चारूकात धराम-धराम होमय लगलैक। सामनेवाला बड़का मकान सेहो धम्म द' खसलैक। हमरा सभक आगाँ मलबाक पहाड़ लागि गेल। खसल ईंट, सुर्खी, कड़ी, शहतीर सभकें नघैत फनैत हम सभ कोनहुना सड़कपर आबि गेलहुँ। किंकर्त्तव्यविमूढ़ भेल ठाढ़।

तावत् हमर दू टा प्रिय विद्यार्थी कालेजसँ दौड़ल ऐलाह। कालीकान्त और रामकृष्ण।[1] तत्पश्चात् कालेज आ होस्टलक छात्र-दल पहुँचि गेलाह। भगीरथ प्रयाससँ मलवा तरसँ सामान सभ बाहर करय लागि गेलाह। गामक कविराजजी सूचना पबैत देरी पहुँचि गेलाह और हमरा सभकें अपना ओतय कदमकुआँ डेरापर ल' गेलाह। ओहि रातिक भयंकरता नहि बिसरैत अछि। रहि-रहि क' हल्ला होइक—भूकम्प ! और सौसे महल्ला दौड़ि क' सड़क पर आबि जाइ। बैद्यजीक एक विद्यार्थी

(१) बादमे कालीबाबू आर्यावर्त इण्डियन नेशनक मैनेजर भेला। और रामकृष्ण बाबू लहेरियासराय सरस्वती एकेडमीक प्राचार्य।

एकटा युक्ति लगौलनि। छतक कड़ीमे एकटा घंटी लटका देलथिन जे जखन भूकम्प हेतैक घंटी बाजि उठतैक और सुनैत देरी लोक पड़ा जाएत।

करीब दू बजे रातिमे घंटी टनटना उठलैक। सुनैत देरी सभ लोक लत्तो-पत्तो पड़ाएल। माघ मास, सर्द पुरवैयाक लहरि, टिपटिप बुंद पड़ैत, लोक जाड़े थर-थर कपैत सड़कपर ठाढ़ रहल। (और उपाये की छलैक) पाछाँ पता लागल जे एकटा मूस ओहि घंटी पर छड़पि गेल छलैक तँ घंटी बाजि उठल छलैक।

तरह तरहक समाचार उड़य लगलैक। अमुक ठाम पृथ्वी फाटि गेलैक अछि। सड़कक तरसँ पानिक स्रोत फुटि पड़लैक अछि। रेल तार डाक सभ बंद भ' गेलैक अछि। स्कूल कौलेज कचहरी सभ बन्द क' देल गेलैक। आब कहिया खुजतैक तकर ठेकान नहि। दोसर दिन रातिमे लोमाक छोटका पं० जी हकासल पियासल हमरा सभक टोह लगबैत आबि पहुँचलाह। जहिना गामसँ ऐल छलाह तहिना (नाव आ बैलगाड़ीसँ) हमरा सभकें नेने गेलाह। हमसब लोमा होइत बाजितपुर गेलहुँ। माँटिक घर टूटिक' खसि पड़ल छलैक। माय बाबूजी टटघरमे आबि गेल छलाह। हमरा सभकें देखि चिन्ता दूर भेलैन। हमर विचार भेल जे आब एकेबेर पक्के मकान बना ली। कमसँ कम लोमामे पं० जीक सेहन्त पक्का छैन, सेहनो। टोलमे एकोटा पक्का मकान नहि छलैक। ककरासँ पुछितैक ? पनीरवाला ओझाजीकें एहि सभक पूर्ण जानकारी छलैन। ओ भवननिर्माणक कार्यमे आद्योपान्त हमर सहायक रहलाह। तहिया सस्तीक समय छलैक। छौ आने हजार ईंट पाथल गेल। पुसारोडसँ आठ आने मन कोइला आएल, बैलगाड़ी पर रुपये सेर। ओझाजी अपना गामसँ होशियार कारीगरकें आनिक' भट्ठा फुकबौलनि। खूब लाल ईंट बहरैलैक। छौ आने राज मिस्त्री रोज लैत छल रैजा चारि आने। दू पाइक मट्ठा पिआ दैत छलियैक, खूब मस्त भ' क' दिन भरि खटैत छल। ओझाजीक संग जयनगर जा क' नेपाल साल बुक करैने ऐलहुँ। समस्तीपुरसँ बरही कारीगर कड़ी, शहतीर, केवाड़, खिड़की बनौलक। तहिया अठारह आने मन लोहाक छड़, चौदह आने बोरा सिमेंट आएल रहय।

ओझाजीक विचारानुसार छत पिटेबाकाल बोराक बोरा मेथी और कंटरक कंटर छोआ देल गेल रहै। (जाहिसँ खूब चिक्कन रहैक।) मकान

तैयार हैबामे तीन चारि वर्ष लागि गेलैक। कारण जे हम छुट्टिये छुट्टी पटनासँ रुपया ल' क' अबैत छलहुँ। तखन काज आगाँ बढ़ैत छलैक। १९३७ धरि ओ मकान ताहि योग भ' गेल जे बाबूजी आराममे रहि सकथि। ओ अपन मनोनुकूल पुबरिया कोठरीमे अपन सभटा सरंजाम (पूजा-पाठ, भोजन-छाजन, लिखनाइ, पढ़नाइ आदि) सजा लेलनि। मकानक चारूकात बाबूजीक रोपल आम, कटहर, बेल, धात्री, कागजी, आदि रहनि। हम नर्सरीसँ सतालू, लीची, गुलाब जामुन, कागजी नेबो आ मिठ्ठा अनारक गाछ आनि बाड़ीमे रोपलहुँ। ओकर नाम पड़लैक शान्ति कुंज। बाबूजी नीक दिन ताकि ओहिमे भगवानक पूजा और बरभोज कय गृह-प्रवेश कैलनि।

एहि बीचमे गोपालजी आ लखनजीक जन्म भेलैन और हुनकर माय घरे पर रहि सभक सेवामे लागल रहथिन। ओ फेर गिनगाइन भ' गेलीह। जलबनिहारक बोनि जोखैत रहलीह। धान उसनैत रहलीह। चूल्हि फुकैत रहलीह। ओ पटनामे जे सदीन चार्ट आ प्रोग्राम बनल छल से सभटा ओहि गृहस्थक हवनकुंडमे पड़ि स्वाहा भ' गेल।

एहि पाँच वर्षक अभ्यन्तर पटनामे किछु दिन बाकरगंज गोला रोडमे एक छोट-छीन किरायाक मकानमे रहि, तदुपरान्त बी० एन० कौलेजक होस्टलमे कारहीन ब्लौकक सुपरिटेंडेंट बनिक रहलहुँ। इन्द्रबाबूकेँ अपना संग होस्टलमे राखि मैट्रिक, आइ० ए० करौलियैन। होस्टल-जीवन बेस सुखद रहल। शालिग्राम ब्लौकमे हमर परम आत्मीय बन्धु, सतीश बाबू छलाह, अर्ल ब्लाकमे प्रो० रवीन्द्र हवलदार। डॉ० जनार्दन मिश्र वार्डेन छलाह। एक ब्लाकमे डा० भूतनाथ सिंह छलाह। और आत्मीय बन्धु सेहो होस्टलमे छलाह। नव गामक अनिरुद्ध मिश्र (लाइब्रेरियन), जनदाहाक हरिकृष्ण सिंह (डिमोन्स्ट्रेटर)।

हम सभ संग-संग घूमय जाइत छलहुँ। बहुधा सोखी बाबू सेहो सम्मिलित भ' जाइत छलाह। कहियो-कहियो गाँधी मैदानमे बैसिक' गप्प करैत छलहुँ। कहियो कोनो नेताक भाषण सुनैत छलहुँ। देश स्वाधीन भ' गेला पर दूध-दहीक नदी बहय लागि जायत। ई सुनि हृदय गद्गद् भ' जाइत छल।[1]

---

१. ओहि समय एक रुपयाक दूध सोलह सेर २ पीलमे अबैत छल। आब एक रुपयाक दूध लोटोमे नहि गिलासमे अबैत अछि।

हम सब सब्जीबागसँ फल मेवा कीनिक' ल' अबैत छलहुँ। ताहि दिन छौ आने सेर अंगूर भेटैत छलैक। दू-दू पाइये नारंगी, नाशपाती और सेब।[1]

कौलेजक आचार्य डी० एन० सेन अलौकिक दार्शनिक छलाह। आकृति प्रकृतिमे बहुत किछु महर्षि टैगोर जकाँ लगैत छलाह। आध्यात्मिक प्रवचन करैत किछु क्षण आँखि मुना जाइत छलैन (जेना समाधि अवस्थामे होथि)। हुनक नेत्रमे आत्मीय ममता आ करुणा छलकैत छलैन। नारीक प्रति हुनकर केहन उदार कोमल भावना छलैन से हुनक एहि 'मोटो' सँ सूचित होइत छलैन।

"Love her not *in spite of* but *because of* her faults."

हुनका मरणोत्तर जीवनमे अगाध विश्वास छलैन। एक दिन हमरा अपना ओतय ल' गेलाह। ओतय जीवन-मरणक रहस्य बुझाबय लागि गेलाह। इडा, पिंगला, सुषुम्ना, कुंडलिनी आदिक सम्बन्धमे तेहन-तेहन गूढ़ तत्वार्थ कहय लगलाह जे हमरा स्पष्टतया बूझबा योग्य नहि भेल। हुनका विषयमे किंवदन्ती छलैन जे ओ रातिमे प्लेनचेट पर मृत आत्माकेँ आवाहन कय वार्तालाप करैत छथि।

ओ हमरा भीतरी कक्षमे ल' गेलाह, जतय हुनक स्वर्गीया पत्नीक सुन्दर प्रतिमा स्थापित छलैन। ओहिपर फूल माला चढ़ाओल छलैन और धूप चंदन अगरबत्तीक सुगंधसँ गमगम भ' रहल छलैन।

हुनकर विश्वास छलैन जे ओ स्नेहमयी देवी नित्य रातिमे हुनक सुषुप्तावस्थामे आबिक' हुनका देखि जाइ छथिन। जे एहि धारणाक पुष्टि करैत छलैन तकरा मधुरो छोड़बैत छलथिन। हुनकर एहन सरल निश्छल व्यवहारसँ नतेको नौकर लाभो उठबैत छलैन। (माली! रातमे क्या देखा?' 'हजूर मेम साहब दो बजे रात के करीब आई थी।' लाल साड़ी में थी।' 'क्या बोल रही थी?' 'यही बोल रही थी कि साहब का देखते रहना, कोई कष्ट

---

१. तहिया मेवा मिश्रीक भाव एना छलैक—किशमिश छौ आने सेर, मनक्का आठ आने, अबजोश दस आने, अखरोट बारह आने, बदाम एक रुपये, काजू अठारह आने सेर। गरी, छुहारा, खजूर, मिश्री चारि आनेसँ छौ आने सेर। छुट्टीमे गाम जाइत छलहुँ त' बाबूजी लेल पाँच टाकामे दू-पसेरीसँ अधिक मेवा-मिश्री नेने जाइत छलिऐन।

नहीं होने पावे । खूब सेवा करना, इनाम मिलेगा ।' सेन साहेबक कथनाइँ मेलसँ अरजार नोर झरय लगैत छलैन । ओकरा हाथमे रुपया दैत कहै छलथिन – 'लो, मिठाई खाना' ।) श्रीमती सेनकेँ संवेश बहुत प्रिय छलैन । तँ मित्र सदेशक थार हुनका बागाँ राखल रहैत छलैन और जे अबैत छलथिन तिनका प्रसाद देल जाइ छलैन । हमरो भेटल जे हम भक्तिपूर्वक ग्रहण कैलहुँ । ओहि महात्माक प्रति श्रद्धा उमड़ि आएल ।

दर्शन विभागक अध्यक्ष प्रो० शंभुनाथ राय गंभीर व्यक्ति छलाह और गाम्भीर्यके विद्वत्ताक परिचायक बुझैत छलाह । ओ दर्शनशास्त्र और हास्यरसमे परस्पर विरोधक सम्बन्ध मानैत छलाह । अतएव हुनका लग बैसि हमरा गंभीरता पोज करय पड़ैत छल । ओ चुपचाप बैसल स्टीन बनबैत रहै छलाह । हाथमे पेंसिल आ रबर नेने लिखैत आ मेटबैत जाइ छलाह । ''मिस्टर झा आपको अठारह पीरियड है । लेकिन चार पीरियड और लेना होगा । But you are a young man, you will not mind a few more classes.'' और १८ कातिक, २२ बना देल गेल । ताहि दिन प्रोफेसर लोकनिकेँ कहियो काल चुरीक काज करय पड़ैत छलैन । कोनो कोनो केस मासक मास चलैत छलैक । एहन एहन अवसर पर राय साहब हमरा बजाक' पोल्हबैत कहै छलाह –''झाजी, हमको जुरीमे जाना होगा । इस बीच में आप हमारा फोर्थ ईयर का कोर्स भी पूरा कर दीजियेगा । 'सांख्यो' 'न्यायो' में बहुत बाँकी है । Exam. नजदीक आ गया है । इसलिए आपको ऐडिशनल लोड दिया जा रहा है । But you are a young man, you won't mind it.'' ओहन-ओहन अवसर पर हमर आदर बढ़ि जाइ छल । राय साहेब आध इंच मुसकान सहित कहैत छलाह—Many Thanks.

दर्शन विभागक दोसर वरिष्ट प्राध्यापक छलाह प्रो० रंगीन हलदार । ओ अपन नामक अनुरूप सदा रंगीन मूडमे रहैत छलाह । ओ साइकोलोजी पढ़बैत छलाह, विशेषतः feeling आ emotion । ओ बंगला साहित्यमे 'फ्रायड'क विशेष रूपमे प्रख्यात छलाह । ओ शिवलिंग पूजाकेँ phallus worship कहैत छलाह । एही तरहेँ धर्म आ कलाक क्षेत्रमे यौन प्रतीकात्मक व्याख्या करैत छलाह । ओ चिरकुमार, सदा बहार, विनोदक भंडार छलाह । अपने रंगमे मस्त रहै छलाह । अलं क्लौकक बरामदामे आरामकुर्सीपर बैसल टेबुल पर पैर पसारने, सिगार मुँहमे लगौने बंगला--इंगलिश पत्र पत्रिका पढ़ि इतमीनानसँ धुआँ उड़बैत छलाह । केओ राजनीतिक गप्प करय आबि

जाइ छलैन त' हाथ जोड़ि कहैत छलथिन—''माशाय, आदार व्यापारी जहाजेर की खबर राखे ।''

ओ तेहन काव्यरसिक छलाह जे अनेको कवि-कलाकार हुनका ओतय अबैत रहै छलथिन । एक दिन एक उदीयमान कविशिरोमणिसँ हमर परिचय करबैत बजलाह—'होरी मोहन, इनि कोबि, इनका पोती का पोताहै, ... । हम विस्मित भ' उठलहुँ, एहि बीस बाइस वर्षक तरुणीकेँ एखने पोतीक पोता (पाँच पीढ़ीक हिसाब) कोना भ' गेलैन ? ओ हमर मुह तकैत देखि बजलाह ''—झाजी, ई ठोगही समझा, हम इनके हस्बैन्ड का ऐड्रेस (पति का पता) बोल रहा हूँ ।''

एक दिन हालचाल पुछलिऐन त' बजलाह—''मिस्टर, का हालचाल रहेगा । आज लोबस्टर (बड़का गोरी माछ) नहीं मिला । क्या खायगा ? हलदार साहेब तेहन जोर (लाउड स्पीकर जकाँ) क्लासरूममे लेक्चर दैत छलाह जे सम्पूर्ण कंपाउंडमे गूँजि उठैत छल । "Philosophy is the mother of all Sciences'' दरवान चपरासी सभ अपनामे बजैत छल—'अलबत्ता प्रोफेसर है हलदार साहब; और और लोग तो बकरी की तरह मेमियाते हैं ।''

कांजी साहब मनोवैज्ञानिक प्रयोगशालामे डिमोंस्ट्रेटर छलाह और Havelock Ellis क''''''Studies in sex'' पर रिसर्च करैत छलाह । हुनकासँ गप्प करबामे खूब मन लगैत छल । नाना प्रकारक प्रश्न उठैत छल और ओहिपर मनोरंजक बहस छिड़ि जाइत छल । राधाकृष्ण और लैला-मजनूक प्रेममे की अन्तर ? Sexless love (यौनवासना रहित प्रेम) होइ छैक वा नहि ? प्रेम आ रोमांसमे की अन्तर ? कांजी साहबक कथ्य छलैन जे ई सभ टा मूलतः एके चीज । ''सब Nibido का खेल है । वही सबको नचाकर (मजा) लेता है ।'' किऐक एक के देखि आसक्ति होइ छैक और दोसरा के नहि ? एकर की फॉर्मूला छैक ? Love क conditioning आ unconditioning (वशीकरण आ उच्चाटन) भ' सकैत छैक ? एक love केँ दोसरापर कोना transfer कैल जा सकैत छैक ? एही सभ

विषयक अनुसंधान पंडितजी प्रारम्भ करैत छलाह। अधन कतबो वादविवादसँ कोनो निष्पत्ति नहि बहराइत छलैन त' कहैत छलाह,—'ई तो mystery है, puzzle है; यह problem solve नहीं होने सकता है।' अपन नोसिदानी बहार करैत छलाह और एक भरि भर चुटकी नोस नाकक पूरा मे दैत हमरो दिस बढ़ा दैत छलाह। 'लो, ये भाई तुम भी सूँघो।'

बी०एन० कालेजमे पारिवारिक स्नेह भेटैत छल। विद्यार्थीसभ हमरा लोकनिकेँ पितृवत् मानैत छलाह। सरस्वती पूजा धुमधामसँ होइत छल पूजाक आहन पर हमरे बैसा देल जाइ छल। संस्कृतक पंडितजी पद्धतिक अनुसार विधिवत् पूजा करबैत छलाह। खूब सुन्दर ढ़ंगसँ प्रसाद वितरण होइ छल। रातिमे संगीतोत्सव होइ छल जाहिमे इन्द्रबाबू सेहो मधुर स्वरसँ बंदना भजन गबैत छलाह। दोसर दिन घंटाघाटसँ नावपर ओहिपार जा प्रतिमा विसर्जन होइ छल। एहन एहन अवसर पर कृष्णकान्तजी (जे बाद मे मंत्री भेलाह) प्रभृति उत्साही छात्र विशेष रूपसँ सक्रिय रहैत छलाह।

कॉलेजक सेक्रेट्री बाबू शालिग्राम प्रसाद सिंह (जे संस्थापक बाबू शालिग्राम सिंहक सुपुत्र छलाथिन और हाइकोर्टक सीनियर ऐडवोकेट छलाह)। बड़ प्रभावशाली व्यक्ति छलाह। हुनकर पर्वताकार विशाल व्यक्तित्व लोककेँ दूरे सँ प्रभावित क' लैत छलैन। जेहने विशाल देह तेहने विशाल हृदय। एक दिन गजराज जकाँ झुमैत झुमैत हाथमे एक छोटमोट पोटरी लेने होस्टलमे ऐलाह और बजलाह—'शास्त्री, हरिकृष्ण बाबू से मालूम हुआ कि आपका छोटा भाई इन्द्रमोहन बीमार है और उसको पथ्य देने के लिए पुराने चावल की जरूरत है। इसलिए घर(कुम्हरिया) से सात साल पुराना चावल लेता आया हूँ।'' एहन एहन अनेक सहृदयताक उदाहरण होस्टलमे भेटल।

होस्टलमे रहने एक बड़का लाभ ई भेल जे स्वाध्यायक हेतु पर्याप्त समय भेटल। लाइब्रेरीमे एकसँ एक दुर्लभ महत्त्वपूर्ण ग्रंथ छलैक (वेद, पुराण, स्मृति, तंत्र योग सँ लए आधुनिक परामनोविद्या पर्यन्त)। हम ओतय सँ पुस्तक चुनि चुनि क' ल' अबैत छलहुँ और रातिमे ओहि सभक अध्ययन मनन चिन्तन करैत छलहुँ।

ओहि समय दर्शन शास्त्र शुष्क नीरस विषय बुझल जाइ छलैक। ताहि पर ततेको अध्यापक ओकरा क्लिष्ट दुरूह भाषामे और अधिक अरुचिगर बना दैत छलथिन। 'घट-पटकेँ' लेना 'घोंट घोंट' क' दैत छलथिन जे विद्यार्थी भ्रम घोटालामे पड़ि जाइ छलाह।

हम लोक सुगम भाषामे सरल शब्दें मनोरंजक उदाहरण दैत विषयकेँ तेहन रोचक बनेबाक प्रयास करय लगलहुँ जे दर्शन शास्त्र हरीतकी चूर्ण सन असह्य स्वादहीन नहि रहि अनारदानाक चूर्ण जकाँ चटकार बनि जाय।

बनैली स्टेटक कुमार श्यामानन्द सिंह (भगवानजी), कुमार दुर्गानन्द सिंह (माधवजी), कुमार जयानन्द सिंह (यादवजी) प्रभृति जे पटना कालेजक छात्र छलाह हमरासँ लौजिक फिलौसफी पढ़य लगलाह। यदाकदा बनैली कोठीमे साहित्य संगीत एवं प्रीतिभोजक गोष्ठी सेहो होइत छल (जाहिमे कुमार साहेबक विनियोत रघुनाथ बाबू वकील, जे आनन्दमूर्ति छलाह, खूब हास्य-विनोदक गप्प करैत छलाह) ओ सभ हमरा 'द्विरागमन' लिखबाक बहुत आग्रह करैत छलाह।

स्टाफ रूममे खूब आमोद-प्रमोद होइत रहै छल। वरिष्ठ वर्ग मे प्रो० चिरंजीव मिश्र, डा०बी० मजूमदार, विश्वमोहन कुमार सिंह, मौलाना सईद प्रभृति और नवका पुस्तमे सीताराम प्रसाद, लाला मुकुंद मुरारि, श्रीकृष्णप्रसाद कपिल, केशरी प्रभृति कक्षमे गुलजार कैने रहैत छलाह। हमरा ऐलापर मनोरंजनक मात्रा एवं आयाममे किछु वृद्धि भ' गेलैक। सूक्तिक फुलझरी शेरो-सखुन चुटुक्का आदिसँ सबके खूब आनन्द होमय लगलैक। ओहि समय हम एकटा कौतुक सेहो देखबैत छलहुँ। कोनो व्यक्ति अपन गुप्त प्रश्न लिखि जेबा दैत छलाह और हम ओकर प्रश्न देखि शुद्ध कहि दैत छलिऐन। ओहिसँ लोक चकित भ' जाइ छलाह। किछु व्यक्ति हमरा सिद्ध क' क' बुझय लागि गेलाह। परन्तु हम स्पष्ट कहि दैत छलिऐन जे एहिमे कोनो अलौकिक शक्ति नहि छैक, केवल एक ट्रिक (चातुर्य) छैक।

१९२६ मे प्रिंसिपल भेलाह् ओडनुल हक साहब। ओ स्पोर्टमे प्रसिद्ध छलाह्। ओ घूमबोमे छौंड़ांकें कान कटैत छलाह्। जहाँ ककरो सडिमे बैसल देखैत छलथिन कि टोकि दैत छलथिन—"भाई मेरे ? यह भी कोई बैठने का वक्त है ? चलिए घूमिये" और आंगुरसँ चाभीक गुच्छा नचबैत तेहन तेजीसँ आगा बढ़ि जाइ छलाह् कि हुनका पैरमे जुमब कठिन।

हम डिबेटिंग सोसाइटीक सेक्रेटरी छलहुँ। हरिश्चन्द्र सभामे सेहो योग दान दैत छलिऐक। समय-समय पर बृहत् कवि सम्मेलन होइ छलैक। एक बेर महाकवि निरालाजी सेहो आएल रहथि। ओ पं० जानकीवल्लभ शास्त्रीक एक काव्य गीतपर ततेक मुग्ध भ' गेलाह् जे अपन कुर्ताक जेबमे जे किछु रहनि से हुनका हाथमे द' देलथिन। ओहि समय एहन-एहन विशिष्ट अतिथिकें धन्यवाद देबाक भार अधिकतर हमरे ऊपर रहैत छल।

ओही आसपास पटना कॉलेजमे मैथिली साहित्य परिषदक स्थापना भेलैक। प्रयाग विश्वविद्यालयसँ डा० अमरनाथ झा आबि क' ओकर उद्घाटन कैने रहथि। ओकर प्रथम सेक्रेटरी भेलाह् उमाकान्त मिश्र और हुनका बाद दिवाकर झा (दुनू एम० ए०क उत्साही छात्र)। ओ सभ सांस्कृतिक कार्यक्रममे मैथिलीक एक मनोरंजक ड्रामा करय चाहैत छलाह्। हमरासँ आग्रह कैलनि जे हम कोनो तेहन रोचक एकांकी लिखि दिअनि जे विनोदपूर्ण होइक। हम तेहने वस्तु लिखि देलिएन—'ठोप सँ टोप'।

ओकर कथानक ई छलैक जे एक बड़का टीकवला देहातसँ अबै छथि जे सिन्दूरक ठोप कय कालेजमे जाइ छथि। परन्तु पटनाक शहरी बसात लगला उत्तर ओ तेना बदलि जाइ छथि जे ठोपकें मिटा क' टोप पहिरय लागि जाइ छथि। और अन्तमे त्रिशंकुक स्थितिमे आबि जाइ छथि। बेस चटपटगर कथा छलैक।

हीरोक पार्ट कैलनि सत्यानन्द बाबू (राय बहादुर कुमरजीक ज्येष्ठ बालक) जे ओहि समय हमरे कालेजक होस्टलमे रहि बी०ए० मे पढ़ैत छलाह्। ओ मैथिलीक प्रथम "नाटक" छलैक पटनामे। (हमरा कालेजक विशाल

हालमे) मंचित कैल गेल। पटनाक समस्त गण्यमान्य मैथिली भाषी (तथा अन्यान्य भाषाभाषी मैथिली प्रेमी) ओहिमे बहुत अधिक संख्यामे आएल रहथि। नाटक खूब जमलैक। समिति द्वारा ओकर मंचन हेबाक विचार भेलैक। परन्तु ओकर पांडुलिपि के ल' गेलाह् और ओ की भेलैक से पता नहि।

तकरा बाद मैथिल महासभा, मैथिली साहित्य परिषद् एवं अन्यान्य गोष्ठीक दिससँ हमरा विशेष रूपसँ निमंत्रण भेटय लागल। संयोजकगण स्वयं आबि आदरपूर्वक सभामे ल' जाय लगलाह्। एहि तरहें मुजफ्फरपुर, दरभंगा, मधुबनी, झंझारपुर, बरहगोरिया, लोहना रोड, सहरसा आदि अनेक स्थानक अधिवेशनमे सम्मिलित भेलहुँ और समाजसुधार (विशेषतः स्त्री शिक्षा, पर्दा निवारण आ तिलक प्रथाक बहिष्कार) पर भाषण कैलहुँ।

ताबत बाबूजी कासश्वासक प्रकोपसँ पीड़ित रहै छलाह्। छुट्टीमे घर आइ छलहुँ त' हुनका हेतु फरमाइसी वस्तु सभ नेने जाइ छलिऐन। च्यवनप्राश, द्राक्षारिष्ट, कनकासव, मार्गीगुड़, सितोपलादि चूर्ण बनैबाक सामग्री तथा मेवा, मिश्री, मसाला आदि बहुत रासे सामान। केसर, कस्तूरी, शिलाजीत, आदिक पारखी छलाह्। एक एकटा वस्तु ल' क' परीक्षा कय टिप्पणी करैत जाइ छलाह् — 'एहि बेर और सभ वस्तु त' ठीक छौह्, मुदा, वंशलोचनमे किछु फेटफांट बूझि पड़ै अछि।" मायके बजाकय कहैत छलथिन। आब ननकिरबा किछु किछु होशियार भेल जाइ छथि। परन्तु एखन धरि खूब पक्का नहि भेलाह् अछि। मानिकचंदी सुपारीक बदला बंबैया सुपारी ल' ऐलाह् अछि। भवति विज्ञतमः क्रमशो जनः।

मायकें कहैत छलथिन—"दुनू भाइकें खूब दूध दही खोआबियौन। एहन निटठ्ठर दूध पटनामे कहाँ भेटतैन ?" अनराज बरबाडीहसँ एक हकाल दूध (सोरह सेर) दू घैल मे भारपर अबैत छल। नित्य दिन एक-एक टोकना खीर और भरि भरि मटकूरी दही पौरल जाइ छल।

अपना दरबाजाक सामने एक प्रमदगर पीपरक गाछ छलैक। पेड़िया जाय बला बुरहा-बुरहीसी सभ ओकर छाहरिमे बैसि कनेक काल सुस्ताय, इनारक शीतल जल पीबि क' जाइ छल। कातिकाक बुरहा तीन पाथे दर्जन मोट मोट मुड़िया केरा दैत छलैक। मालपुरक कबारिन आँगनमे आबि दू पाइए सेर साग-भांटा द' जाइत छलि।

मां कहैत छलथिन—"हे गय, तोहरिया? काल्हि फेर (जंभाइ) नेने अबिहें।" ओतय पटनामे नहि भेटैत छैक। केराक हाट जा क' मात्र (वा बिकाइ) ल' अबैत छल। दु चारि दिन अपने घरमे पाहुन जकाँ रहैत छलहुँ।

बाबूजीकें भरल-पूरल परिवारमे नाती पोताक बीच रहबामे मन लगैत छलैन। तीनू कन्या (नन्दू दाइ, सावित्री, सुभद्रा) अपना अपना सासुर (चनौर, सिमरा, मलनगा) सँ आबि क' सेवामे रहैत छलथिन। हुनका सभक बालक (चन्द्र, सूर्य, अंशु) कें अपना संग राखि पढ़बैत छलथिन। (हुनका सभक लालन-पालन तथा प्रारंभिक शिक्षा हमरे ओतय भेलैन) ओ सभ गोपालजी, ललनजीक संग रिलिआएल रहैत छलाह। और सभ मिलि बाबाक सेवा टहलमे लागल रहैत छलथिन।

बाबूजीक कहब छलैन जे नाती आ पोतामे, बेटी आ पुतहुमे कनेको दुभेदक व्यवहार नहि हो। तें हम पटनासँ अबैत छलहुँ त' सभक हेतु एकेरंगक कपड़ा नेने अबैत छलिऐन। पहिने बहिन सभ अपना अपना पसन्दसँ साड़ी चुनि लैत छलीह, तखन हुनक भाउजकें भेटैन छलैन। ननदि सभ कहैत छलथिन—हमर भौजी बड़ नीक छथि। माय बाबूजी हुनक (गनियाँक) सात्विक वैष्णवी संस्कार देखि हुनका 'मुनि कन्या' कहैत छलथिन। हुनकर हाथक रान्हल तरकारिक प्रशंसा करैत छलथिन। "वाह! केहन पवित्र बनौलनि अछि!" ओ एतबेमे तृप्त रहैत छलीह।

अवस्थानुसार बाबूजीक पाचन शक्ति क्रमशः क्षीण होमय लगलैन। गरिष्ठ भोजनसँ अजीर्ण भ' जाइत छलैन। मायकें कहैत छलथिन।—आइ राति हम भोजन नहि करब। केवल उपवास खंडन मात्र करब। परन्तु जखन आगाँमे कोनो चटकार वस्तु आबि जाइ छलैन (जेना घरैलक भरुआ वा कटहरक चक्का) त' ओ संकल्प बिसरि जाइ छलैन और पाछाँ जखन धुआइन ढेकार होमय लगैत छलैन त' माय पर त' मराय लगैत छलथिन—"अहाँ ओतेक रासे किऐक खोआ देलहुँ। मना किऐक नहि कैलहुँ।" जखन माय

कें रुसल देखैत छलथिन त' बुझाबय लगैत छलथिन—"हम अहाँकें ओतेक रासे बात कहलहुँ। दोष अहाँक नहि, हमर जिह्वाक अछि। हमरा बात पर रोष नहि करू। हमर क्रोध पोआरक धधरा अछि, जे धधकैत देरी ने मिझाइत।"

हुनक ई बात अक्षरशः यथार्थ छलैन। हुनका कखन कोन बात पर तामस चढ़ि जैतैन से केओ नहि जनैत छल। परन्तु, जखन केओ हुनकर सभटा बात चुपचाप सुनि क' रहि जैत छलैन त' लगले हरियो जाइ छलथिन।

मालपुरक पं० नवति झा (जे किछु किछु वैद्यो छलाह) बहुधा हुनक पुछारी करय अबैत छलथिन। हुनकर एकटा अभ्यास छलैन जे वार्तालाप मे कहैत छलथिन—ठीक, ठीक ठीक। एक दिन बाबूजीक जिज्ञासा करय ऐलथिन। बाबूजी दमासँ बेदम रहथि। ई अपन हाल कहय लगलथिन। और ओ सभ बातमे कहने जाथिन—ठीक, ठीक, ठीक। बाबूजी कहलथिन — आब त' हमरा सभक हेतु औषधं जाह्नवी तोयं वैद्यो नारायणो हरिः। ओ कहलथिन—ठीक, ठीक, ठीक। ई सुनैत देरी बाबूजीक क्रोधाग्नि भभकि उठलैन—"अयँ औ! हम मरि रहल छी और अहाँ कहै छी, ठीक, ठीक, ठीक।" ओ बाबूजीक भक्त रहथिन। तुरत चरण स्पर्श करैत कहय लगलथिन—"गुरुजी! हमरासँ अपराध भ' गेल। क्षमा कैल जाओ।"

बाबूजी तत्क्षण संतुष्ट भ' गेलथिन। और अपना संग बैसा कए बादामक हलुआ खोऔलथिन; प्रशंसामे एकटा कवित्तो बना देलथिन। चलबा काल अपन एकटा पुस्तकें प्रदान कैलथिन। नीति पद्यावली''' '''

एहन आशुतोष आशुतोष महादेव जकाँ छलाह बाबूजी जिनका ने धधकैत देरी ने शान्त होइत और ढरि गेला पर लगले 'वरं ब्रूहि'।

ई सभ किछु किछु गुण हमरो पैतृक प्रसाद रूपमे भेटल अछि। परन्तु आब ओहन नवति झा और बादामक हलुआ दुनू दुर्लभ।

ग्रीष्मावकाश आ पूजावकाशमे हम गाम जाइ छलहुँ त' किछु दिन घरपर रहि लहेरियासराय (पुस्तक भंडार) जाइ छलहुँ। ओतय कोनो शान्त एकान्त कक्षमे बैसि पुस्तक लिखैत छलहुँ। हमर अधिकांश कृति (कन्या-दान, द्विरागमन, प्रणम्य देवता, न्याय दर्शन, वैशेषिक दर्शन रंगशाला प्रभृति) ओतहि रहि लिखल गेल। किछु एहनो पुस्तक लिखलहुँ जे दोसर नामसँ छपल।

जखन छुट्टी लगिचा जाइ छल त किछु दिन पुनः गामपर रहि पटना अबैत छलहुँ। एवं प्रकार जीवनक तीन टा केन्द्र बिन्दु बनि गेल—पटना, बाजितपुर, लहेरियासराय। बहुत दिन धरि ई क्रम चलैत रहल।

जीवनमे सुख दुःखक धूपछाँही चलिते रहै छैक। १९३८क ग्रीष्मावकाश-मे गाम रही। गोपालजीक कान बहैत रहैन। ओ चारि वर्षक रहथि और लखनजी दू वर्षक। इलाजक हेतु लहेरियासराय ल' गेलियैन। हुनकर माय और इन्द्रबाबू संग रहथि। ओतय जिला स्कूलक प्राचार्य सिद्ध नाथ मिश्र हमरा सभकेँ आवासक प्रबन्ध क' देलनि। किछु दिनमे गोपालजीक कान ठीक भ' गेलैन। मनमे आएल जे घर घुरबासँ पूर्व हिनका सभकेँ जनकपुर देखौने अबिऐन। हम सभ ट्रेनसँ विदा भेलहुँ। मधुबनी अबैत-अबैत गोपालजीकेँ हुनक माय देह टो क' बजलीह देह गर्म लगैत छैक। थर्मामीटर लगा क' देखलथिन त १०२ डिग्री रहैन। हम सभ ओही ठाम (मधुबनी स्टेशन पर) उतरि गेलहुँ और लगले दोसर ट्रेनमे सवार भ' मनीगाछी ऐलहुँ। ओतय राय बहादुरक डाक बंगलामे डेरा देलहुँ। ओहि ठाम त्रिगुणानन्द झा (योगानन्द काकाक ज्येष्ठ पुत्र) पोस्ट-मास्टर छलाह। ओ लगले एक आदमी चनौर पठौलथिन और संवाद पबैत देरी ओझाजी नुनूदाई केँ संग नेने पहुँचि गेलाह। तावत गोपालजीकेँ १०५ डिग्री भ' गेल रहैन। बेहोशीमे बड़बड़ाय लगलाह। 'देन चूड़ा मधु' हम सभ भयभीत भ' गेलहुँ। तखन घनघोर वर्षा होमय लगलैक। ओझाजी भिजैत तितैत एक वैद्य के नेने ऐलाह। तावत् गोपालजीक नाड़ी, श्वांस, हृदयक गति तीनू बंद भ' चुकल छलैन। वैद्यजी निराश भए बजलाह—मृतकक कतहु चिकित्सा होइक। ई सुनैत देरी कन्ना-रोहट शुरू भ' गेल। हुनकर माय चित्कार क' उठलीह। नुनूदाई कानय लगलीह। ओझाजी गोहारि करय लगलाह। ही बाबा ई की कैलहु। बाहर घनघोर वर्षा झहरि रहल छल। सभ गोपालजीक हाथ पैरक मालिश करय लगलाह। परन्तु गोपालजीक पैर सर्द भ' गेल रहैन, रहि रहि क' ऐंठि जाइन। तावत् हमरा लगमे राखल मकरध्वजक पुड़िया देखि मनमे आएल जे ई आब रहिए क' की हेतैक? गोपालजीकेँ खाट पर धोती बैसल रहैन। कोनहुना मुह खोलि क' द' देलिऐन। जेना कोनो दैवी चमत्कार भ' गेलैक। गोपालजीक मुहसँ कफक एकटा बड़का थक्का बहरैलैन और एकाएक आँखि खुजि गेलैन। क्षीण स्वरमे बाजि उठलाह—माय! सभ धन्न भगवान करय लागल।

ओझाजी दौड़ल पाही टोलक प्रसिद्ध वैद्य पं० राम झाकेँ बजा अनलाह। ओ आबि क' परीक्षा कैलथिन, रसायन देलथिन और बजलाह जे हिनकर प्राण बाँचि गेलैन। परन्तु एखन एक मास धरि पूर्ण हिफाजतसँ राखय पड़त। इन्द्र बाबू दौड़ा--दौड़ी गाम गेलाह। और माय बाबूजीकेँ नेने एलथिन। वैद्यजीक चिकित्सासँ शनैः शनैः गोपालजीक चेष्टामे सुधार होमय लगलैन। जखन वैद्यजी कहलथिन ने आब हिनका गाम पर ल' जा सकैत छिऐन तखन हम सभ खूब हिफाजतिसँ गाम नेने एलिऐन। परन्तु एखन धरि विपत्तिक अन्त नहि भेल छल। वैद्यजी कहने रहथिन एखन मास दिन धरि केवल धानक लावाक मंड देल जयतनि तकरा बाद भातक पथ्य पड़तनि। एक दिन हुनकर माय मंड बनाबय गेल रहथिन। हमर माय बैसल ओगरैत रहथिन। ओ गोपालजीकेँ फोंफ कटैत देखि भगवतीक पूजा करय गेलीह। गोपालजी तेहन क्षीण भ' गेल छलाह जे स्वयं करौटो नहि फेरि सकैत छलाह। जखन आध घंटामे हुनक माय मंड बनाक' नेने एलथिन त गोपाल-जीक खाट तर बादामक खोइचाक ढेरी लागल देखि चीत्कार क' उठलीह—हे भगवान, आब कोन उपाय हेतैक? घरक सभ लोक दौड़ल एलाह। गोपालजी ओहिना ओढ़नातर मुह झपने व्याज निद्रामे पड़ल रहलाह। (पाछाँ ज्ञात भेल जे गोपालजी चुपचाप खाटसँ उतरि आलमारीमे राखल एक डिब्बा कागजी बादामकेँ फोड़ि क' खा गेलाह और पुनः चादरिसँ मुह झाँपि पड़ि रहलाह।)

घर भरिक लोक भगवानक गोहारि करय लागल। बाबूजी रामरक्षा स्तोत्र एवं हनुमानबाहुक पाठ करय लगलाह। माय भगवतीकेँ गोहराबय लगलीह। सभ लोक डरे सन्न रहय जे आब की हेतैक। परन्तु भगवान पुनः कृपा कैलथिन। लगभग चारि घंटाक बाद गोपालजीकेँ खूब दान्हल थुम सन खुलासा पैखाना भेलैन। तखन हमरा सभकेँ चिन्ता दूर भेल। बाबूजीक निर्देशानुसार भातक पथ्य देल गेलैन और सेहो पचि गेलैन। गोपालजीक लीला देखि बाबूजी हुनका नटवरलाल बालगोपाल कहय लगलथिन।

माय आ बाबूजीक विचार भेलनि जे गोपालजीक मुंडन गंगातटपर (कोनो तीर्थस्थानमे) ल' जा क' कराओल जाय। हुनक आदेशानुसार हम, माय सुभद्रा दूनू (ननदि, भाउज) आ तीनू बच्चाकेँ (गोपालजी, लखन जी आ विद्द बाबू)केँ ल' विदा भेलहुँ। पहिने सभकेँ मुंगेरक कष्टहरणी घाट पर ल' जाय स्नान करौलिऐन। तखन सुलतानगंज ल' नेलिएन।

ओतय गंगाजीक धारा मध्य पहाड़ पर अवस्थित बाबा अजगैबी नाथक मंदिर देखि सभक मन मुग्ध भ' गेल। घाटपर तीनू बालकक मुंडन स्नान दान ब्राह्मणभोजन कराय सायंकाल नावसँ पर्वत-मंदिर पर आइल गेलहुँ। पूर्णिमाक टहाटही इजोरिया, गंगाजीक दुधिया धार, चानी जकाँ चमकैत श्वेत मंदिर देखि माय आनन्द विभोर भ' गेलीह आ महादेवक गीत उठा देलनि। माय पुछलनि—बौआ। राति हम सभ एही ठाम मंदिरमे रात्रिवास करी से नहि भ' सकैत छैक ?

पुजारी नीक लोक रहथि। हमरा सभक रहबाक प्रबन्ध क' देलनि। प्रेमपूर्वक खिचड़ि बनल। माय भरि राति नचारी, महेशवाणी और गंगामाइक गीत गबैत रहलीह। माय कहलीह—बौआ, एहन आनन्द कतहु नहि भेटल छल; बूझि पड़ल जे स्वर्गमे छी।

मायक इच्छा भेलनि जे बूढ़ानाथ महादेवक दर्शन सेहो करैत गाम चली। हम सभ भागलपुर आबि धर्मशालामे डेरा कैलहुँ। घोड़ागाड़ीसँ गंगातट पर आबि सभकेँ स्नानपूजा करा देलिऐन। एहि ठाम मंदिरमे ओ स्वच्छता नहि देखबामे आएल। चारकात कबूतरक बीट भरल रहैक। माछी भिन-कैत रहैक। मनमे खूब प्रसन्नता नहि भेल।[1]

माय हमरासँ दस टाका लय महादेवजीपर चढ़ौना चढ़बैत पुजेरीकेँ कहलथिन—ई रुपया अहाँ बाबाक मंदिरक सफाई (झाड़ू बहाड़क मदमे) लगा देबैक।

हम सभ भागलपुरक प्रसिद्ध सुगंधित चूड़ा आ पेड़ा सनेस लेलहुँ। बरारी घाट होइत गाम अबैत गेलहुँ।

हमरा सभकेँ जहिया गाम पहुँचबाक छल, ताहिसँ दू तीन दिन बेसी लागि गेल। ताहिसँ बाबूजी बहुत चिन्तामे छलाह। ननकिरबू सात गोटे गेल छथि। रवि दिन आबक बाट छलैन से आइ बुध बीति रहल अछि। की भेलैन ? ओतय पहिले पहिल गेल छथि। दुःखित पड़ि गेलाह वा रुपैया चोरा लेलकनि वा कोनो बच्चा हेरा गेलैन, कियो ठकि लेलकनि वा तरह तरहक आशंका मनमे उठैत छलैन। रामशलाका प्रश्नसँ सगुन उचारल जाइत छल। तावत् हम सभ पहुँचि गेलहुँ। हमरा सभकेँ सहीसलामत अबैत देखि बाबूजी बहुत प्रसन्न भेलाह। मायसँ तीर्थ यात्राक वृत्तान्त सुनि और बेसी आनन्द भेलैन। जे भेंट करय अबथिन तिनका हमर बहुत प्रशंसा करय

१. एहि ठामक दृश्य देखि मनमे जे भाव उठल से हमर बूढ़ानाथ कविता मे चित्रित अछि।

लगलाह। आब ननकिरबू किछु किछु चड़फड़ भेल जाइ छथि। माय, बहिन कनियाँकेँ खूब नीक जकाँ आरामसँ तीर्थ यात्रा करा आएल छथि। किलो-नको बला छथि तेँ हमरा डर होइ छल।[1]

आब पटनाक वृत्तान्त कहै छी

१९२९ मे हमरा होस्टलक समीपेमे एक दुतल्ला मकान (जाहिमे बिजली आ पानिक सुविधा छलैक) २० रु० भाड़ा पर भेटि गेल। दू टका मास पर नोकर (घरघुसवा) और तीन टका मास पर भनसिया (नंद झा) राखि लेलहुँ। इन्द्र बाबू बी०ए० मे पढ़ैत छलाह। राजीवनयन काका क ज्येष्ठ बालक सुबोध चन्द्र (जे इन्द्रक दोस्त छलथिन) सेहो आबि क' हमरे कालेज मे आइ० ए० मे नाम लिखौलनि और हमरे सभक संग रहि पढ़ए लग-लाह। एही बीच जीवनमे एक नवीन अध्याय जुड़ि गेल। एक दिन सबौरक प्रतिष्ठित वकील पं० दुर्गादत्त झा (जे बरारी स्टेटक मैनेजर छलाह) हमरासँ भेंट करय ऐलाह। इन्द्रबाबूक प्रति वैवाहिक प्रस्ताव ल' क'। हमर विचार छल जे इन्द्र बाबूकेँ एम० ए० करा क' विवाह करबिऐन परन्तु वकील साहेब व्यवहारकुशल छलाह। पहिनहि बाजितपुर जा बाबूजीसँ स्वहित ल' आएल छलाह। "हमर विचार अछि जे शुभस्य शीघ्रम् भ' जाय।" ओ पतरा देखि शुभ मुहूर्त सेहो निर्धारित क' देने छलथिन आब तारतम्य करबाक कोनो प्रश्न नहि छलैक। हम यथासमय गाम जा क' आवश्यक प्रबन्ध कैलहुँ। नियत समय पर हम आ बाबूजी पाँच सात टा बरियातीकेँ लय इन्द्र बाबूकेँ सबौर ल' गेलिऐन। ओतय वकील साहेबक कन्या (लक्ष्मी देवी) सँ इन्द्र बाबूक विवाह (४ मई क') भ' गेलनि।

इन्द्रबाबू एखन बी०ए० मे पढ़िये रहल छलाह तेँ सभक विचार भेलैन जे द्विरागमन तीन वर्ष होइन। सैह भेलैन।

सबौर भागलपुरक एक उपनगर जकाँ छलैक। तेँ शहरी वस्तु सुलभ छलैक। बरियातक जनवासामे रेडियो फिट कैल गेल छलैक। बरियाती लोकनिकेँ बर्फ देल शरबत देल गेलैन। (जे देहातक बरियातमे कतहु नहि भेटल छलैन।) अतएव बरियाती सभ स्वागत सत्कारक बहुत प्रशंसा करैत खूब यश दैत गाम अबैत गेलाह।

जीवनमे बहुधा ई अनुभव भेल अछि जे बेसी सुखक बाद कोनो भयंकर दुख सेहो पहुँचि जाइत छैक। चक्रनेमिक्रमेण। बाबूजी दमाक दमक कर-

१. बाबूजी आजीवन हमरा बच्चे बुझैत रहलाह। से ठीके। हम एहन अव्यावहारिक छलहुँ और जीवनमे कतेक बेर ठकल गेलहुँ से सभ लिखय लागी त एक स्वतन्त्र पुस्तक बनि जाय।

बाक हेतु एक दबाइ हिमरोड पिबैत छलाह। (जाहिमे किछु धतूरक अंश रहैत छलैक। एक दिन हठात् मूत्रावरोध भ' गेलैन। कतबो उपचार कैने सफलता नहि भेलैन। पातेपुरक डाक्टर आबि क' देखलथीन। कहलक जे "इनको अभी फौरन पटना ले जाइए, नहीं तो बचेंगे नहीं।"

बाबूजी कष्टसँ छटपटा रहल छलाह। ओहन मुमूर्षु अवस्थामे पटना पहुँचि सकताह से ककरो आशा नहि छलैक। परन्तु पता नहि कहाँसँ ओतेक साहस आबि गेल। चनौरबला ओझाजी सर्वदा जकाँ एहू विपत्तिमे आद्यो-पान्त संग देलनि। रातोराति कहार, महफा ठीक कैल गेल। और समक हेतु बैलगाड़ी। विपत्ति एकसरि नहि अबैत छैक। ओही समय टिपटिप वर्षा होमय लागि गेलैक। गाड़ीमे ऊपरसँ छपर लगा देल गेलैक। परन्तु, तेहन पानिबिहाड़ि उठि गेलैक जे सभ गोटे भीजि क' लथपथ भ' गेलहुँ। जाड़क अन्हरिया राति। सहस्त्रधार झहरैत। लालटेन मिझा गेलैक। सीक नहि सुझैक। कोठिया लग अबैत अबैत गाड़ीक पहिया नीचा झुलामे चलि गेलैक। बड़द जुआ छोड़ा क' पड़ा गेलैक। कोनो कोनो तरहेँ ताजपुर पहुँचलहुँ। ओतय महफामे बाबूजी अचेत पड़ल रहथि। हम आ ओझाजी अस्पतालक डाक्टरकेँ अनुनयपूर्वक सुतलसँ उठाक' नेने ऐलिऐनि। ओ कोनो दवाई देलथिन जाहिसँ बाबूजीकेँ किछु होश भेलैन। बजलाह—हम कहाँ छी? कोनो कोनो तरहेँ हम सभ पूसा रोड स्टेशन पहुँचलहुँ। कोन तरहेँ बाबूजीकेँ ट्रेनमे चढ़ाओल गेलैन। कोना स्ट्रेचरसँ जहाजपर आनल गेलैन, कोना महेन्द्रू घाटसँ ऐंबुलेंस कार पर आनि एमरजेंसीमे (होस्पीटल) भर्ती कराओल गेलैन: कोना संचित मूत्र केँ कैथेटर द्वारा बहार कैल गेलैन, ई सभ मन पड़ै अछि त एखनो देह सिहरि उठै अछि। डाक्टर सभक विचार भेलैक जे आपरेशन कैल जाइन। परन्तु बाबूजी एहि हेतु राजी नहि भेलाह तखन हुनका पुनः एम्बुलेंस पर डेरा नेने ऐलिऐन। घंटे-घंटे दवाइ और बेदानाक रस देल जाय लगलैन। सेवामे एकटा कंपाउंडर सेहो राखि देलिऐन। जे समय पर कैथेटर लगा देल करैन। कविराजजीक आयुर्वेदिक चिकित्सा सेहो चलय लगलैन। अश्मह्र चूर्ण, चन्द्र प्रभा वटी आदि नाना प्रकारक रसायन सेहो। एकटा, लाल एकरंगा बस्त्र त्रिशूलधारी महात्मा सेहो अपन उपचार करय लगलथिन। (ओ दरभंगा मिश्रटोलाक छलाह और बाबूजी केँ हुनकासँ खूब मैत्री भ' गेलैन।) सिटीसँ राधाकान्तजी आबि महा-मृत्युंजय जप करय लगलथिन। परिवारक सभ लोक अहर्निशि परिचर्या मे

लागल रहलथिन। लगातार कइएक मासक चिकित्सा, सेवा शुश्रूषा एवं पथ्याहारक फलस्वरूप बाबूजी आरोग्य लाभ कैलनि। जखन १९४०मे हुनका घर लेने ऐलिऐन त गामक लोक कहय लगलथिन—"पं० जीक पुनर्जन्म भेलैन अछि। आब ई दस वर्ष निट्ठाह रहताह।" और ओ सरिपहुँ दस एगारह वर्ष धरि अपन पुबरिया कोठरीमे पूर्ववत् लिखैत पढ़ैत आ भगवद्भजन करैत रहलाह। अधिकतर रसायनेक बलपर रहलाह। (अपन चिकित्साशास्त्रक अनुसार नाना प्रकारक क्वाथ (पाकल, गुरीच, कटरैंगनी आदिक काढ़ा) बनवाय सेवन करैत रहलाह। १९४१मे ताहि योग भ' गेलाह जे हुनका हिफाजतिसँ सबौर ल' जाय इन्द्रबाबूक कनियाँक द्विरागमन करौने ऐलिऐन। घरमे दोसरा गृहलक्ष्मी आबि गेलीह। हुनके तेहन प्रेम भाव भ' गेलैन जे जेठकी विद्यादनी कनियाँ के अपन कन्या जकाँ मानय लगलथिन। एहि बीच इन्द्रबाबू बी०ए० ऑनर्स क' चुकल छलाह। ओ किछु दिन गामक स्कूलमे हेडमास्टरक काज कैलनि। तत्पश्चात् कलकत्ताक एक मारवाड़ी बिजनेस फर्ममे कार्य करय लगलाह। (परन्तु ओहिमे हुनका मन नहि लगलैन और एक-दू वर्ष बाद पुनः पटना आबि हमरा सभक संग रहि आर्यावर्तक उप सम्पादकक रूपमे कार्य करय लगलाह।)

एहि बीचमे हमरा कदमकुआँ, पार्क लग एक मकान भेटि गेल। (जहाँ प्रो० ताराप्रद चौधरी, प्रो० सी० टी० मिश्र आदिक कोलोनी जकाँ छलनि हम सभ सात-आठ वर्ष धरि ओहिमे रहि गेलहुँ। एतबा दिन पत्नी गामपर माय-बाबूजीक सेवामे रहैत छलीह। आब सबौर वाली कनियाँक आबि गेने हुनका उल्लास भेलैन और ई संभव भेलैन जे पटना आबि किछु दिन हमरो सेवामे रहि सकथि। कोनो छुट्टी भेलापर हम सभ गाम जा क' देखि अबैत छलियैन। ओहो सभ कहियो काल पटना आबि जाइत छलाह। बीच-बीच मे लोमासँ पं० जी प्रभृति सेहो गंगास्नानक हेतु आबि जाइत छलाह। ओहि डेरामे बमुलिया बाबा (मरौन बिहारीक प्रसिद्ध परमहंस) सेहो आबि जाइ छलाह। ओ अपन कमंडल फूकि क' सीटी बजबैत छलाह और नाना प्रकारक वस्तु (यथा किशमिश, छोहारा, सेब आदि) बहार क' लोककेँ प्रसाद दैत छलथिन। लोकक विश्वास छलैन जे हुनका कोनो यौगिक सिद्धि प्राप्त छैन्ह और जे चाहथि आकाश मार्गसँ मँगा सकैत छथि। ओ जखन अबैत छलाह, भक्त लोकनिक मेला लागि जाइत छल। ओ हमरा सभकेँ बड़ मानैत छलाह। और पटना अबैत छलाह त अधिकतर हमरे डेरामे रहैत छलाह। हुनकर चमत्कारक की रहस्य छलैन से ककरो नहि कहैत छलथिन।

१९४२ (मई)मे हम बाबूजीके पुस्तक भंडारक जयन्ती समारोहमे लहेरियासराय ल' गेलिऐन। जयन्ती स्मारक ग्रंथमे हुनकर तीन टा वृहत् ऐतिहासिक महत्वक निबन्ध छपल छलैन 'मिथिला के पंडित',' द्विवेदीजी का पत्र', 'सरोज सौरभ' (राजा कमलानन्द सिंहक संस्मरण)। ओतय साहित्य गोष्ठीमे हुनकर सम्मान भेलैन।

१९४२क अगस्तक आन्दोलन सर्वविदित अछि। ऐतिहासिक क्रांतिमे बी०एन कालेजक छात्रवृंदक महत्वपूर्ण योगदान रहलैन। ओतय मीटिंग एवं जुलूसमे हमर रचित ई कालेज सौंग सर्वत्र छलाह।—' हमारा कालेज बिहार नेशनल, हम इसके सायेमे पल रहे हैं, तभी तो जोशेवतन हमारे दिलों के अंदर उछल रहे हैं।"

ओहि क्रांतिमे छात्रवृन्द सेक्रेटेरिएट पर राष्ट्रीय झंडा फहरैबाक प्रयास मे कतो शहीद भ' गेलाह सेहो इतिहास प्रसिद्ध अछि।

ओहि समय गामसँ माय और लोमासँ सासु आएल रहथि। प्राय: गंगास्नानक कोनो पर्व रहैक। लोमाक पं० जी के पैरमे घाव रहैन जाहिसँ चलबामे कष्ट होइत रहैन। परन्तु तथापि साहस कय गंगास्नानक हेतु आएल रहथि। आध रातिक करीब हरबिराड़ो उठाबय लगलथिन—उठै जाउ, उठै जाउ। चलै चलू। हम कहलिऐन—एहन बिकालमे कोना गेल जाएत? पं० जी बिगड़ि गेलाह तखन हम सभ ऐलहुँ किएक? हम सभ त नास्तिक नहि छी। ओ सभकेँ ल' क' स्नानक हेतु विदा भेलाह। परन्तु घरसँ बहराइत देरी हल्ला भेलैक जे आर्डर भ' गेलैक अछि जे केओ घरसँ बाहर नहि जा सकैत अछि। सड़क पर जे आएत तकरा देखितहि गोली मारि देतैक। सभटा घाट बाट बंद भ' गेल छलैक। कौटक तारसँ घेरि देने छलैक। कमाण्डियन टामी सभ घाट कातसँ पटनाक नाकाबंदी क' नेने छलैक। पं० जीक मकुलेज उद्दीप्त भ' उठलैन, कहलनि—ओझा, ई सभ रावण जकाँ क' रहल अछि। मात्र पाँच वर्षमे एकर सभक अन्त भ' जयतैक।

तरह तरहक समाचार उड़य लगलैक। आई लाइब्रेरी जरा देलकैक। आइ कुम्हरियामे गोली चला देलकैन, आइ एक तरकारी बेचय वालीसँ चड़कादा भील छीनि क' काँचे खा गेलैक, फलकल लगमे मुह भकभकाय लगलैक। तखनसँ ओकरा पेट मे हिरिच ओकला लग, ओहूमे भेल फिरैत छैक। सभ लोक अपने घरमे बंदी बनल रहल। जखन एक दू मासक बाद यातायात चालू भेलैक तखन ओलोकनि गाम जाइत गेला।

किछु दिनक बाद (प्राय: ४३-४४मे) इन्द्र बाबू कलकत्तासँ पटना आबि गेलाह। ओ आर्यावर्त्तक उपसम्पादक नियुक्त भेलाह। ई कार्य हुनकर साहित्यिक संस्कार, प्रतिभा आ योग्यताक अनुरूप छलैन। ओ शीघ्रे खूब लोकप्रिय भ' उठलाह। आर्यावर्त्तक प्रबन्धकर्त्ता कालीकान्त बाबू, सम्पादक श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार तथा संपादकीय विभागक अन्यान्य सहकर्मी (भवेशदत्तजी, सुदकला नन्दजी, प्रभृति) हुनका खूब मानय लगलथिन। हुनकर कलात्मक रुचि छलैन। आर्ट एंड आर्टिस्ट कलबक सदस्य बनि गेलाह। हार्मोनियम आ बेहाला बजाबय लगलाह। तेहन मिलनसार छलाह जे सभकेँ मित्र बना लैत छलाह। हमरा सभकेँ कखनो चिन्तित वा उदास देखैत छलाह त रंग विरंगक विनोदपूर्ण बात कहि मनोरंजन करैत छलाह। डेरामे खूब रमन चमन होइत रहै छल। ओ कविता और श्लोक बनाबय लगलाह और बाबूजीकेँ पद्यमय पत्र पठाबय लगलथिन जाहिसँ हुनक प्रसन्नता और बढ़ि जाइ छलैन।

ओ हमरासँ १४ वर्ष छोट छलाह और परम आज्ञाकारी छलाह। जखन हम कोनो बात पर पत्नीकेँ डँटैत छलिऐन त ओ तुरंत बीचमे आबि कहैत छलाह—भैया, अहाँ भौजीकेँ किएक बात कहैत छिऐन! ई त साक्षात् देवी छथि। और जखन ओ कोनो बात पर रूसैत छलीह त तुरंत आ क' मनाबय लगैत छलथिन और हुनका खोआइएक' हँसाइ क' छोड़ैत छलथिन।

१९४४मे हमर स्वास्थ्य बिगड़ि गेल। शरीर बहुत दुर्बल भ' गेल। डाक्टरक राय भेल जे कोनो स्वास्थ्यप्रद स्थानमे एक मास रहिक' जलवायु परिवर्तन क' आबी। हम सपत्नीक आ चारिवर्षक रमणजीक संग हजारीबाग गेलहुँ। ओतय एकटा मस्तमौला मित्र भेटि गेलाह। पं० बद्रीदत्त शास्त्री (जे बादमे सेंट कोलम्बस कालेजमे संस्कृत हिन्दी विभागक अध्यक्ष भेलाह)। ओ आन आन विषयमे त आचार्य छलाहे, भोजन शास्त्रमे सेहो पारंगत छलाह। तैं तुरंत मैत्री भ' गेल। ओ हमरा बदम बाजारमे स्थित अपन मकानमे ल' ऐलाह और हमरा सभकेँ आवासक सुविधाजनक व्यवस्था लगा देलनि। ओ हमर स्वास्थ्यक जिम्मा ल' लेलनि और हम हुनकर अंग्रेजी शिष्यक। एहि प्रकारेँ अन्योन्याश्रय स्वार्थसँ आगाँ बढ़ैत गेलहुँ ओ हमरा भोरे पाँच बजेसँ मैदानमे घुमाबय लगलाह। अखाड़ामे व्यायाम कराबय लगलाह। डेरापर आबि एक तिनपौआ गिलासमे धारोष्ण दूध

पिबैत छलहुँ । आमक रस आ मधु मिलाक' खूब पाकल पपीता सेहो छोहाराक मोरब्बा आ उदुम्बर पाकक सग खाइत छलहुँ । शास्त्रीजीक राजस्थानी पटलक अनुसार भोजन करय लगलहुँ । पुन चुपड़ल मिस्सी रोटी, साबित उड़ीदक दालि, कुमरकलीक साग, चूरमा । तेहन हाजमा बनि गेल जे राजमा पर्यन्त पचय लागि गेल ।

हम तीस दिनमे स्वास्थ्य लाभ कैलहुँ आ तीस दिनमे अंगरेजी पूरा कयलनि । तदनन्तर एतबा शक्ति आबि गेल जे पहाड़ी स्थानमे भ्रमणक इच्छा भेल । पत्नीओकेँ राजगीर तथा गिरिडिह आदि गेलनि । हम सभ मोटरसँ राँची गेलहुँ । सड़कक चढ़ाइ उतराइ देखैत पहाड़पर चढ़बाक आनन्द भेटल । किछु दिन धर्मशालामे रहि चारूकात घूमिक' देखलहुँ । राँचीक पहाड़ी, जैन मंदिर, गोशाला, सिरिल, कांके मार्गमे प्रस्तर काटिक' निर्मित कलापूर्ण जहाज और वायुयानक दृश्य सेहो । फिरती बेर मोटरसँ अबैत काल हुण्डरू सिलैयाक ओ जिलेबीनुमा मार्ग ततेक आकृष्ट कैलक जे कोडरमामे उतरि एक दिन रहि ओतुक जंगल और अबरक खान देखि ऐलहुँ ।

जखन एक मोनसँ डेढ़-दू मासक बाद पटना स्टेशनपर आबि रहैत पर चढ़लहुँ त दस सेर वजन बढ़ि गेल छल । तन्वंगी पत्नी सेहो एक मोन सँ एक पसेरी बढ़ि गेल छलीह । ओही आसपास हमर एक मित्र भूपेन्द्र प्रसाद शुक्ल (टुना बाबू) जे कन्होली स्टेटक जमींदार छलाह अपन छोट भाय राघवेन्द्र प्रसाद शुक्ल (ठाकुर बाबू) कें हमरा कालिजमे बी० ए० मे पढ़ाबक हेतु नेने एलाह । हमरा लोकनि कें (विशेषतः बाबूजीकें) पूर्वहिसँ शुक्ल परिवारसँ मैत्री छल, आब और अधिक आत्मीयता भ' गेल । ओ तेहन आचारनिष्ठ छलाह जे नित्य छौ-छौ घंटा भगवानक पूजा करैत छलाह । हुनका भूत प्रेत ओझागुणीमे अगाध विश्वास छलनि । परोपकारी तेहन जे नाना प्रकारक होमियोपैथिक दवाइ आनि रोगी सभकें अमूल्यक वितरण करैत छलाह । (ठाकुर बाबू यथासमय बी०ए०, बी०एल०, एम०एल० क' गेला ।)

हमर बाबूजी जिलाभरि (बल्कि प्रान्त भरि) मे सभसँ वरिष्ठ साहित्यकार छलाह । हाजीपुरक तत्कालीन एस० डी० ओ० जगदीश चन्द्र माथुर हुनका वैशालीक प्रथम महोत्सवमे (१९४५) विशिष्ट अतिथिक रूपमे ल' गेलथिन ।

१९४६मे एक महत्त्वपूर्ण शुभ कार्य भेल हमर कन्या फूलदाइक कन्यादान, जे बाबूजीक हाथसँ सम्पन्न भेलैन । ओहि कथाक प्रसंगमे हम सभ बनौर गेल रही । ओतय ओझाजी कोनो बबुआन (प्रायः श्रीहन बाबू) क हाथी ल' ऐलाह । हम सभ बाबूजीकें बहुत हिफाजतिसँ नेहुरा ल' अनलियनि । ओतय पं० हरीन्द्र झा, वकील (जिनकर मातृक हमरे गाम रहनि) हमरा सभकें बहुत आदर सत्कार कैलनि । ओ हमरा सभक प्रस्ताव सहर्ष स्वीकार कैलनि । ओहि समय वरक बाप केहन होइ छलथिन से हमर "वीआक दाग" (प्रहसन) मे अंकित अछि । परन्तु वकील साहेब एको कैंचाक माँग हमरा सभसँ नहि कैलनि । हम सभ हुनक ई सौजन्य एवं उदारता देखि अत्यन्त प्रसन्न भेलहुँ । हुनक सुपुत्र (शैलेन्द्र मोहन जी) मिथिला कालेज, दरभंगासँ आइ० ए० कैने छलथिन । (जे एखन मिथिला विश्वविद्यालयमे मैथिली विभागाध्यक्ष छथि ।)

आषाढ़ मासमे शुभ मुहूर्तमे फूलदाइक विवाह भेलैन । हम सभ ओझाजीक शील सौजन्य देखि मुग्ध भ' गेलहुँ । ओ हमरा सभक संग रहि पटना कालेजसँ बी० ए० कैलनि । गामसँ गोपालजी और लखनजीकें सेहो पटना बजाय टी० के० घोष एकेडेमीमे नाम लिखा देलिऐन । किछुए दिनक उपरान्त दुनू भाइक उपनयनो ओतहि भ' गेलैन । ओहिमे बाबूजी आचार्य भेल रहथिन । सैह हुनकर अन्तिम पटना यात्रा रहलैन ।

ओही आसपास (प्राय. १९४७-४८मे) हमर एक साहित्यिक बन्धु बाबू लक्ष्मीपति सिंह हमरे लग डेरा लेलनि । ओ गिरिपौत भायक संग (बाबू दुर्गापति सिंह) "मिथिला ज्योति" नामक एक मैथिली मासिक पत्रिका बहार कैलनि । ओहिमे हमर एक व्यंग्यपूर्ण लेख, 'बाजीक चिट्ठी' लय छपलनि, जे पाछाँ धर्मयुग आ रंगशालामे प्रकाशित भेलैक । हमर पत्नीओक एक लेख ल' क' छपलनि । कोनो विशिष्ट व्यंजनक विधि ।

तदुपरांत ओ इंडियन नेशन लग अपन डेरा ल' गेलाह और एक दोसर मैथिली मासिक पत्रिका 'चोपाटि' बहार कैलनि, जाहिमे हमर पटना 'स्तोत्र" और "हिन्दी ओ मैथिली" शीर्षक कविता प्रकाशित कैलनि ।

१९४७ (१५ अगस्त) क' देश स्वतंत्र भ' गेल । महात्मा गांधीक तपस्या फलित भेलैन, परन्तु ओ स्वाधीन देशमे छौओ मास तक नहि रहि सकलाह ।

१९४८क ३० जनवरीक ओ भयंकर कालरात्रि सम्पूर्ण राष्ट्रक हेतु कलंक राति छल । इन्द्र बाबू आर्यावर्तसँ दौड़ल अएलाह—भैया, अनर्थ

भ' गेलैक। गांधीजीकेँ गोली मारि देलकैन। मोजी, भानसभात बंद फक।

ओहि राति कैओ अन्न जल ग्रहण नहि कैलक। सम्पूर्ण राष्ट्र कोना सात दिन धरि शोक-मग्न रहल से सर्वविदित अछि।

ओहि समय मोहि जानि केहन दैव दुर्योग छलैक जे हमरा परिवार पर धिपलिक पहाड़ टूटि पड़ल। तीन वर्षमे तीनटा भीषण वज्राघात भेल।

पहिने त इन्द्र बाबूक अत्यन्त सुन्दर भविष्णु बालक (ललनजी) जे छौओ वर्षक छलाह, सन्निपातिक ज्वरसँ अकाल कवलित भ' गेलाह।

इन्द्र बाबू ओहन संस्कारी, तेजस्वी प्राणप्रिय पुत्रक वियोग नहि सहि सकलाह। शनैः शनैः क्षय रोगसँ ग्रस्त भ' गेलाह। डा० टी० एन० बनर्जीक चिकित्सा होमय लगलैन। स्ट्रेप्टोमाइसिनक इंजेक्शन पड़य लगलैन। ओकर कोर्स पूरा भेला पर पैतृक घर सासो आबि गेलाह। पुनः डाक्टरक रायसँ काज पर जाय लगलाह। आओ हारमोनियमपर गीत गाबै लगलाह, परन्तु आब ओहिमे चेतनाक स्वर रहैत छलैन।

१९४९क पूजावकाशमे ओ मायक संग गाम गेलाह कहलनि—भैया, हम छठि धरि आबि जाएब। प्रसाद लेने।

गाम परसँ बाबूजीक चिट्ठी आएल—'इन्द्र बाबू अपना मायक संग सकुशल पहुँचि गेलाह। बहुत दिनपर हुनका देखि क' अत्यन्त प्रसन्नता भेल। एहि ठाम देहातक हवा पानिमे रहने स्वास्थ्य और बढ़िया भ' जयतैन। एखन खूब मन लगौने छैन। माछ भात खाइ छथि। शतरंज खेलाइ छथि, बाजा बजबैत छथि। भगवत् कृपासँ पूर्ण सबल भ' क' पटना जयताह।' तदनन्तर 'पुनश्च' क' क' लिखने छलाह—'अहैत रातुक एकटा दुर्घटना ई भेलैन जे बहुआरा लोकैक पुत्र संग इमदम चलदि गेल रहैत आहिसँ पाँजरमे किछु चोट लगलैन। परन्तु ओहिसँ कोनो विशेष अभिघात नहि भेलैन।'

परन्तु किछुए दिनक बाद दोसर चिट्ठी आएल—'रक्तपान। इन्द्रबाबूकेँ काल्हि भोजनोत्तर एकाएक पाँजरमे दर्द उठलैन। धाविपुरक डाक्टर आबि क' इंजेक्शन देलथैन। बहुत तरहक उपचार कैल गेलैन परन्तु ओ अपन इहलीला संवरण कय...। हमरा बाद आना नहि पड़ि भेल। ओहिक आगा अन्हार भ' गेल। बदहवास गाम ऐलहुँ। आब ओ

लक्षण नहि छलाह जे दौड़ि क' अबितथि और हमदमसँ उतारि कय ल' जैतथि। जर घरमे दीपावलीक दीप जरैत छलैक। अपना घरमे अन्हार भय पड़ल छल। बाबूजी जीवन्मृत अवस्थामे पड़ल छलाह। करेजपर पाथर राखि क्रिया कर्म कैल गेलैन।

बाबूजी ओहन दोहरा शोकक आघात नहि सहि सकलाह। चूर चूर भ' गेलाह। उदासीन भेल रहय लगलाह। फेर गामसँ बाहर कतहु नहि गेलाह।

हुनकर चिरायु मूत्ररोग फेर उभड़ि ऐलन। एहि बेर (२१. ६. ५१ केँ) ७९ वर्षक अवस्थामे हुनका अपना संग नेने गेलैन।

ओहि समय हम सभ गंगा कात रानीघाट मठियामे आबि नेने रही। गामसँ केसवर दौड़ल आएल—"बाबा त विदा हो गेलन।"

ओ रामवर बरदेरि हुनक सेवामे रहैत छलैन। ओहि राति बहुरविन हो केसवर, भाइ राति तों एतहि रहि जाह। हमर हालति ठीक नहि बुझि पड़ै अछि। अपना कलमदानक प्रथम पाकेट मालदह आम आलमारीमे रखने रहथि। मायके कहने रहथिन—ई ननकिरबूक ऐलापर द' देबैन। अपन अन्त्येष्टि क्रियाक हेतु सभटा प्रयोजनीय वस्तु पहिनहि सरियाकेँ रखबौलनि। २१. ६. १९५१ केँ ७९ वर्षक अवस्थामे समस्त मायामोहक बंधनसँ मुक्त भ' गेलाह।

हम सभ पुनः बौड़ल गाम ऐलहुँ। भैया कहय बला त पहिनहि चलि गेल छलाह। आब ननकिरबू कहयबला केओ नहि रहलाह। दुर्भाग्यवश माइ-बाप किनको अन्तिम दर्शन नहि भ' सकल।

हम इन्द्र बाबूक कनियाकेँ आश्वासन देलिऐन जे हुनक दूनू संस्कारिणी कन्या (रन्ना, रमा)केँ अपना संग राखि कालेजमे पढ़ैबैन और बढ़िया घरमे विवाह करैबैन।[1]

यावत् धरि बाबूजी आ इन्द्र बाबू छलाह हमर जीवनक गाड़ी समतल भूमिपर समान गतिसँ चलैत रहल। पटनासँ गाम गाम सँ पटना। आब

[1] भगवानक कृपासँ ई दूनू बात पूरा भ' गेल। रन्ना आ रमा कालेजमे पढ़ि सुयोग्य भ' गेलीह और दूनूक विवाह खूब सुखी संपन्न प्रतिष्ठित परिवारमे सुयोग्य वरसँ भेलैन। (जकर वर्णन जथा स्थान भेटत।)

ओ भाग टूटि गेल। हमर गुरुकेन्द्रित मन बहिर्मुखी भ' गेल। घरसँ बेसी बाहरे रहय लगलहुँ। एहिठामक निश्चिन्तता छिना गेल। ओ सहारा नहि रहल। नव नव दायित्व आ चिन्ता माथपर आबि गेल। जीवनमे जेहन मोड़ आबि गेल तेहना कोनो परिस्थितिमे परम विरामक बाट नहि बदलि जाइ छैक और नव नव दुरूह मार्गपर आबय लगैत छैक। (ओकर वृत्तान्त आगाँक अध्याय-सभमे भेटत, जकरा एहि भावकथाक तत्त्वपादुई कतुल नहि सकैत अछि।)



अध्याय ९

दर्शन विभाग

१९४८ (५ मई)मे हम बी० एन० कालेजसँ पटना कालेजमे आबि गेलहुँ। ओहि समय पटना कालेजमे दर्शन विभागक अध्यक्ष छलाह आचार्य धीरेन्द्र मोहन दत्त। ओ हमर 'न्याय दर्शन' आ 'वैशेषिक दर्शन'क स्पष्ट सरल भाषामे विषय विवेचन तथा हमर अध्यापनक ख्यातिसँ प्रभावित छलाह। ओ हमरा पटना कालेजमे अयबाक प्रेरणा देलनि। यद्यपि सरकारी नोकरीक सामान्य वयःसीमा हम बहुत पहिनहि पार कय चुकल छलहुँ। (चालीस वर्षक अवस्था भ' गेल छल) तथापि विशेष योग्यता और अनुभवक आधार पर सीनियर ग्रेडमे हमर नियुक्ति भेल। पटना कालेजमे आबि हम एम० ए० कक्षामे प्राच्य एवं पाश्चात्य दर्शनक अध्यापन एवं परीक्षण कार्य लगलहुँ।

आचार्य दत्त अपन प्रसिद्ध कृति ''इन्ट्रोडक्शन टू इंडियन फिलोसफी''क हिन्दी रूपान्तर करबाक भार हमरा ऊपर देलनि। हम अपन सहकर्मी प्रो० नित्यानन्द मिश्रक सहयोगसँ शीघ्रे ओ ग्रंथ प्रस्तुत क' देलिऐन। (ओ 'भारतीय दर्शन' पुस्तक भंडार, पटनासँ प्रकाशित भेल और हिन्दी भाषी क्षेत्रमे बहुत लोकप्रिय भेल।)

पटना विश्वविद्यालयक तत्कालीन कुलपति (श्री शारङ्गधर सिंह) हमरा निगमन तर्कशास्त्र (डिडक्टिव लोजीक) पर हिन्दीक माध्यमसँ एक मौलिक ग्रंथ लिखय कहलनि, जाहिमे छात्रवृन्दकेँ विषय बुझबामे सुगमता होइन। तदनुसार हम निगमन तर्कशास्त्र लिखलहुँ, जाहिमे सरल ओ मनोरंजक उदाहरण द्वारा विषयकेँ सुगम आ रोचक बनौलहुँ। ओ पटना विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित भेल आ पाठ्यपुस्तक निर्धारित भेल।

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, द्वारा प्रकाशित स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्माक 'यूरोपीय दर्शन'मे केवल ग्रीक धर्मक वर्णन छलनि। परिषद्क अनुरोधपर हम ओकर प्रस्तावनाक रूपमे आधुनिक समकालीन पाश्चात्य दर्शन

(जेना प्रत्ययवाद, नव्य वस्तुवाद, व्यवहारवाद, अस्तित्ववाद आदि)क परिचयात्मक विवरण जोड़ि देलियनि ।

तत्कालीन राज्यपाल श्री आर० आर० दिवाकरक आदेशानुसार हम प्राचीन, मध्यकालीन तथा अर्वाचीन बिहारक अवदान (Philosophical Contributions of Bihar in Ancient, Medieval and Modern Ages) पर तीन अध्याय लीखि क' देलियनि । जे श्री अपन सम्पादित ग्रंथ Bihar Through the Ages मे समाविष्ट क' प्रकाशित कैलनि ।

१९४८मे ओरियण्टल कान्फेरेंस दरभंगामे भेल रहैक आहिमे म० म० डा० उमेश मिश्र सेक्रेटरी रहथि आ डा० अमरनाथ झाक भाषण भेल रहनि । ओहिमे हम 'पुनर्जन्म और कर्मफल' पर अपन आलोचनात्मक निबन्ध पढ़ने रही जे विद्वन्मंडलीक ध्यान आकृष्ट कैलनि ।

१९४९मे इंडियन फिलौसोफिकल कांग्रेसक अधिवेशन पटनामे भेल रहैक । ओहिमे स्थानीय मंत्री, आचार्य दत्त हमरा पंडित-सभा संयोजित करबाक भार देलनि । ओहिमे हम मिथिला, काशी, नवद्वीपसँ लऽ दक्षिण भारत धरिक प्रसिद्ध पंडित सभके आमंत्रित कैने छलियनि । एकसँ एक उद्भट अलौकिक विद्वान् आयल छलाह ।

दाक्षिणात्य पं० वेदशास्त्री तेहन आचारनिष्ठ छलाह जे केवल बेलपातेक रस पीबि क' रहैत छलाह । ओ आजन्म-कहियो पानी नहि छूनै छलाह । हम आग्रहपूर्वक चाकय देलियनि त अनेक जीह पर राखि कहलाह—'ओम्, ओस्तुम् दलयते ।'

पंडित सभामे विचारक मुख्य विषय छलैक—'अवच्छेदकता' जाहिपर काशीक सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० राजेश्वर शास्त्री एक लघु पुस्तिका (अवच्छेदकतादि विमर्श) छपा क' आनल रहथि । अवच्छेदकता पर गहन तर्कवितर्क आरम्भ भेलैक, परन्तु प्रत्येक वाक्यमे तेतेक रास अवच्छेदकताक लच्छा रहैक जे श्रोतालोकनि ओहिमे ओझरा क' रहि गेलाह । मिथिलाक एक सुप्रसिद्ध नैयायिकसँ हम प्रार्थना कैलियनि जे ओ सरल भाषामे श्रोताकेँ अवच्छेदकताक अर्थ बुझाबथि । ताहिपर ओ जे व्याख्या करय लगलाह तकर नमूना नीचा देल जा रहल अछि :—

'घटाभावक प्रतियोगी थीक घटाभाव । प्रतियोगितावच्छेदकता अछि घटत्वनिष्ठ अवच्छेदकता । अतएव घटाभावाभावक घटत्वनिष्ठ अव-

च्छेदकतानिष्ठ अवच्छेदकता: निरूपित प्रतियोगितानिष्ठ अवच्छेदकता नीरूपित प्रतियोगिताक भाव अर्थ थीक। घटाभावाभावक प्रतियोगी: भेल घटाभावाभाव, प्रतियोगितावच्छेदकता भेल घटाभावनिष्ठ प्रतियोगितानिष्ठ अवच्छेदकता। अवच्छेदकता अछि घटत्वनिष्ठ अवच्छेदकतानिष्ठ अवच्छेदकता, अत: घटाभावाभावक भावक अर्थ भेल घटनिष्ठावच्छेदकता निष्ठावच्छेदकता निरूपित प्रतियोगिता निष्ठावच्छेदकता निष्ठावच्छेदकता निरूपित प्रतियोगिताक अभाव।"

समागत श्रोतागणकें केहन अवस्था भेल हेतनि से पाठक स्वयं अनुमान क' सकैत छथि।

१९५०मे बिहार प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलनक गया अधिवेशनमे हम दर्शन शाखाक अध्यक्षता करैत उपर्युक्त उद्धरण दैत कहने रहिऐक जे आबथु छायावादी, प्रयोगवादी आ प्रतीकवादी और लगाबथु एहन अर्थ। एकर अर्थ दोहन करबाक हेतु चाहने धुरंधर 'दोग्धा गोपालनन्दन' चाही। (हमर ओ अध्यक्षीय भाषण जाहिमे हम दर्शनशास्त्रकें सरस काव्यसँ उपमा दैत रहिऐक। सम्मेलनक त्रैमासिक 'साहित्य'मे प्रकाशित भेल रहय।) कहने केहनो क्लिष्ट नीरस विषय रहौक हम ओकरा तेहन रोचक ढंगसँ उपस्थित करैत छलहुँ जे श्रोताकें आनन्द आबि जाइ छलैन। एक गोष्ठीमे 'अवच्छेदकता'क प्रसंग कहलिऐक—'अवच्छेदकता'क अन्त सोलहक सगरासँ भेलैक। श्रोतागण चकित भ' गेलाह। तखन हम कहए लगलिऐन—पं० गंगेश उपाध्याय अपना दलान पर बैसल विद्यार्थीगणकें पढ़ा रहल छलाह—

'यत्र यत्र धूमः तत्र तत्र वह्निः'

भीतर आँगनमे पत्नी आगि पजारैत छलथिन। काँच जारनसँ केवल धुआँ धुआँ भ' क' रहि जाय छलैन, धधरा नहि बहराइ छलैन। ओ एकटा बेलमे धुआँ भरि ऊपरसँ झाँपि मुँह बंद कय दलानपर गेलीह और ओहिना बैसल पटकि क' पुछलथिन—'अत्र धूमः कुत्र वह्निः ?'

पंडितजी अवाक् भ' गेलाह। एहन प्रश्न कोनो शास्त्रार्थमे केओ नहि कैने छलैन। यदि तुरंत समाधान नहि क' दितथिन त लोक कहितैन पंडितजी अपनी पत्नीसँ पराजित भ' गेलाह, सेहो विद्यार्थीसभक समक्ष। अतएव ओ उत्तरपक्ष करय लगलाह—जहाँ ई जे धुआँ अनने छी से अग्निसँ संलग्न अछि तें आगि नहि थीक। जहाँ मूलसँ संलग्न धूम रहतैक तहाँ आगि अवश्य रहतैक।" अतः

व्याप्ति-वाचक एना परिष्कार कैल गेल—'एक धन धूमावच्छेदेन धूमः सम तत्र वह्निः।' एवं प्रकार जहाँ जहाँ शंका उपस्थित होइत गेलैन तहाँ तहाँ अवच्छेदकता थोपाइत गेल। एहीसँ मिथिलामे नव्यन्यायक उत्पत्ति भेलैक।

ई कथा (जे किंवदन्तीक रूपमे प्रचलित छैक) सुनि गोष्ठीमे आनन्द-विनोदक लहरि आबि जाइ छलैक। और नव्यन्यायक एक सरस पृष्ठभूमि बनि जाइत छलैक। एहि प्रकार हम जटिल विषयकेँ तेहन रोचक बना दैत छलिऐक जे ओ तुरंत सभकेँ हृदयंगम भ' जाइत छलैक।

गयाक ओहि सभामे हम दू टा प्रस्ताव कैने रही—

(१) नव्यन्यायक संस्कृत भाषामे व्याख्या कैल जाय।

(२) म० म० पं० रामावतार शर्माक 'परमार्थ दर्शन'केँ प्रकाशमे आनल जाय।

हम यथासम्भव एहि दुनू संकल्पकेँ क्रियान्वित कयलहुँ (जकर वर्णन यथास्थान एहि पुस्तकमे भेटत।) हम अनेको विश्वविद्यालयमे नव्यन्याय पर व्याख्यान देलहुँ और अवच्छेदकता-प्रकारता आदिक सरल व्याख्या अपन ग्रन्थ ('भारतीय दर्शनमे भाषा-विश्लेषण')मे कैलहुँ। पं० रामावतार शर्माक 'परमार्थ दर्शन'क सरल व्याख्या कयलहुँ (जे अखिल भारतीय दर्शन परिषद्क मुखपत्र त्रैमासिक 'दार्शनिक'मे धारावाहिक रूपसँ (१९५८-६०क मध्य प्रकाशित भेल। ओ पत्र डा० यशदेव शल्यक सम्पादकत्वमे फरीदकोटसँ बहराइत छलैक (जकर परामर्शदातृ समितिमे हमहुँ छलहुँ)।

तहिना डा० जे० पी० आत्रेयक सम्पादकत्वमे मोरादाबादसँ प्रकाशित दर्शन इंटरनेशनलक सर राधाकृष्णन मेमोरियल वॉल्यूम (१९६४)मे हमर 'परमार्थ दर्शन'क परिचयात्मक निबन्ध छपल जे विदेशोक विद्वानक ध्यान आकृष्ट कैलकनि। हम हिन्दीमे 'परमार्थ दर्शन' पर परिचयक किछु अध्याय लिखने छलहुँ से राष्ट्रभाषा परिषद्क अध्यक्ष पं० रामदयाल पांडे प्रकाशनार्थ ल' गेलाह।

१९५२मे विश्वविद्यालयक नव विधानक अनुसार प्राध्यापकक तीन टा कोटि बनलैक—प्रोफेसर, रीडर आ लेक्चरर। (जेना आचार्य, ... सहायक।) स्नातकोत्तर विभाग कालेजसँ पृथक भ' गेलैक। हमरो दर्शन विभाग पटना कालेजसँ दरभंगा हाउसमे चलि गेल।

१९५६ (जून)मे डॉ० दत्त अवकाश ग्रहण कैलनि, तदनन्तर हम हुनक स्थान पर विभागाध्यक्ष तथा रीडर नियुक्त भेलहुँ। १९५९मे युनिवर्सिटी प्रोफेसर क पद पर प्रोन्नत भेलहुँ। १९६६मे 'सेलेक्शन ग्रेड' मे आबि गेलहुँ। गवर्नमेंट सर्विसमे ५८ वर्षक आयु पर सेवा निवृत्ति होइत छलैक, परन्तु युनिवर्सिटी सर्विसमे ६२ वर्ष पूरला पर। अतः (१८ सितम्बर, १९७०मे) हम अवकाश प्राप्त कैलहुँ। एवं प्रकारे हम लगातार नअह वर्ष धरि दर्शन विभागक अध्यक्ष बनल रहलहुँ। तदुपरान्त केन्द्रीय सरकारक यू०जी०सी० (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग)क तत्वावधानमे सिनियर प्रोफेसर नियुक्त भेलहुँ और पाँच वर्ष (१९७५ धरि) ओहि पद पर कार्य कैलहुँ।

हम अपन सुदीर्घ कार्यकालमे दर्शन विभागकेँ सम्मिलित परिवार जकाँ चलबैत रहलहुँ। अपन सहयोगी अनिरुद्ध बाबू नित्यानन्द बाबू प्रभृतिकेँ छोट भाए जकाँ और सहकर्मिणी कुमारी उमा गुप्ताकेँ कन्या जकाँ मानैत रहलिअनि। विभाग तथा अंगीभूत कालेज मिला कए गोट बीसेक दर्शनक प्राध्यापक आ प्राध्यापिका छथीह जाहिमे अधिकांश हमर शिष्य रहथि। (यथा अशोक बाबू, यशवन्त बाबू, मधुसूदनजी, नर्मदेश्वर, हरदेव, रामुन, राधिका, प्रतिमा, इन्दिरा प्रभृति)।

हमरा सभमे तेहन पारस्परिक सौहार्द भाव रहैत छल जे मासमे एक दिन ककरो ने ककरो ओतय सभक प्रीतिभोज होइत छलनि। यदि कोनो बात स' क' मतभेद भ' जाइ छल त हम सभ गाँधीवादी (हृदय-परिवर्तन) नीति अपनाय पुनः एक भ' जाइत छलहुँ।

कतेको अन्यान्य विभागवलाकेँ हमरा सभमे एहन सामंजस्य देखि आश्चर्य लगैत छलनि। पुछैत छथाह—'अहाँक विभागमे 'ग्रुप' नहि अछि?' हम कहैत छलियनि—'हमरा विभागमे तीन टा ग्रुप अछि—इंडियन फिलोसोफी, रिलीजन और एथिक्स (भारतीय दर्शन, धर्मदर्शन और नीति दर्शन)। एकरा अतिरिक्त और कोनो ग्रुप नहि अछि। दर्शन विभागमे जातिवाद, प्रांतवाद, वा सम्प्रदायवाद सभ बाध मानवतावादमे विलीन भ' जाइ छल। 'सर्वे पक्षाः दृष्टिपथे निमग्ना।'"

स्नातकोत्तर विभागमे (पंचम-षष्ठ वर्गमे) छात्र-छात्राक संख्या लगभग डेढ़-सय छलनि। एहिमे केवल दस-बीस टा छात्रा छलीह। परन्तु साझे साझ क्रमशः बढ़ैत-बढ़ैत ओ सभ छात्रक बराबरि और तदुपरांत ओहूसँ अधिक भ' गेलीह। ओहि गुरुकुली वातावरणमे सभ भाइ-बहिन जकाँ

रहैत छलाह। समय-समय पर विचार-गोष्ठी होइत छलैक जाहिमे वेदसँ विनोबा धरि, प्लेटोसँ रसेल धरि नाना विषयक विवेचना होइत छल। समय-समय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता होइत छलैक। देश-विदेशक कोनो प्रसिद्ध दार्शनिक जखनि जाइ छलाह त हुनकासँ भाषण कराओल जाइत छलैनि। नवागन्तुक [illegible] (योगी यथा महर्षि महेश योगी, आचार्य रजनीश, माँ योगशक्ति प्रभृति) हिनको आदि क' प्रवचन करैत छलाह और ओहि पर शंका-समाधान गोष्ठी होइत छल। हमरा निर्देशनमे अनेको प्राध्यापक थीसिस लिखि डाक्टरेट प्राप्त कैलन्हि। अपन स्नातकोत्तर विभागक सहकर्मिणी सुश्री ऊषा गुप्ता वेद पर, प्रो० हरिनारायण (मगध महिला कालेज) भगवद्गीतापर, प्रो० कुमारी रमा सेन (अरविंद महिला कॉलेज) गांधी दर्शनपर, प्रो० सुश्री रेखा ऐकट (गुरु गोविन्द सिंह कॉलेज) अहिंसा दर्शन पर, आन्ध्र विश्वविद्यालय (काकीनाडा कॉलेज)क प्रो० चिरंजीविनी कुमारी रामानुजपर, नेपालक वीरेन्द्र [illegible] (कोलकाता कॉलेज) महाभारत पर, प्रो० मधुसूदन प्रसाद (बी० एन० कॉलेज) राम मोहन राय पर।

एहि प्रकारेँ हम दर्शन-स्तरक अनुसंधान ऐतकें अधिक व्यापक आ लोकप्रिय बनौलहुँ। हम आओर आन विश्वविद्यालयमे भिन्न-भिन्न भाषा (अंग्रेजी, हिन्दी, मैथिली)मे लगभग पचीस-तीस शोधग्रंथक परीक्षण कय पी० एच० डी०, डि० फिल०, डी० लिट्, डिग्री प्रदान कराओल। (ओकर सूची परिशिष्टमे देखल)।

अखिल भारतीय दर्शन परिषद्क ढंग पर हम सभ बिहार दर्शन परिषद् स्थापित कैलहुँ। ओकर संयोजक मंत्री भेलाह डा० रामजी सिंह, रीडर, भागलपुर विश्वविद्यालय। पटना, बेगूसराय, मुजफ्फरपुर, भागलपुर, सोहसराय आदिमे ओकर बैसक भेलैक, जाहिमे हम, अनिरुद्ध बाबू, नित्यानन्द बाबू, राजेन्द्र बाबू, अशोक बाबू, प्रि० भगवान बाबू प्रभृति प्रमुख भाग लैत रहलहुँ। ओहि संस्थाक तत्वावधानमे एकटा महत्वपूर्ण कार्य ई भेलैक जे आचार्य डा० दत्तक सम्मानमे एक विशाल अभिनन्दन-ग्रंथ प्रस्तुत भेल। World Perspective In Philosophy, Religion and Ethics (जाहिमे हमर परिचयात्मक भूमिका अछि At the feet of the Great Guru)। रामजी बाबूक अदम्य उत्साह और परिश्रमक फलस्वरूप ओहिमे देश विदेशक बड़का-बड़का विद्वान्‌सँ निबन्ध प्राप्त कय संकलित कैल गेल और ओ ग्रंथ भारती भवन (पटना) सँ प्रकाशित भेल।

हम अपन सुदीर्घ कार्यकालमे (लगभग १८ वर्ष धरि विभागक अध्यक्षक पद पर रहैत) दर्शन विभाग कें एक सम्मिलित परिवार क' क' सुखेँ रहलनि-हैनि। समय-समय पर छात्र-छात्रा सभकें ट्रिप (यथा शान्तिनिकेतन, अजंता) आ पिकनिक (यथा राजगीर, सहस्रधारा) मे पठबैत रहलिऐन। पिकनिकमे प्राध्यापक-प्राध्यापिकासँ लय किरानी (सुरेन्द्र बाबू) आ चपरासी (वासुदेव राम) पर्यन्त सम्मिलित रहैत छलाह। वार्षिकोत्सवमे छात्र-छात्रा सभ विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम (संगीत, नाटक आदि) प्रस्तुत करैत छलाह। हम [illegible] आधारपर कोनो एकांकी प्रस्तुत क' दैत छलिऐन, जेना गांधी [illegible] आदि और विद्यार्थी छात्रा तेहन कुशलतापूर्वक [illegible] अभिनय करैत छलाह जे दर्शन विभाग दर्शनीय विभाग बनि जाइ छल। जखन परीक्षा समाप्त भेलापर छात्र-छात्रा घर जाय लगैत छलीह त हुनका सभक विदाइ समारोह होइत छलैन। ओहिमे विभागमे, [illegible] हमर [illegible] आशीर्वाद [illegible]। ओहिमे दीक्षांत समारोह सभकें उपदेश देल जाइ छलैन—जे जीवनमे कतहु कोनो क्षेत्रमे रही, ई सर्वदा स्मरण राखब जे अहाँ दर्शन शास्त्रक विद्यार्थी छी, और समाजकें मार्ग-दर्शन करैत रहबाक दायित्व अहाँ सभ पर अछि। हम अपना प्रवचनमे महात्मा गाँधीक पथ पर चलबाक प्रेरणा दैत छलिऐन :

A kindly word
A friendly smile
A helpful act
And life is worth while.

१९५२मे हम इंडियन फिलोसोफिकल कांग्रेसक मेम्बर बनि गेलहुँ। १९५६मे अखिल भारतीय दर्शन परिषद्'क जन्म भेलैक त ओकरो आजीवन सदस्य बनि गेलहुँ।

१९५२सँ हमर जे दार्शनिक अभियान शुरू भेल से लगातार (१९७५ पर्यन्त चलैत रहल। ओकर एक विहंगम दृष्टि देल जा रहल अछि।

१९५२मे इंडियन फिलोसोफिकल कांग्रेसक अधिवेशन आचार्य डा० धीरेन्द्र मोहन दत्तक अध्यक्षतामे भेलैक। ओहिसँ दार्शनिक यात्राक श्रीगणेश भेल।

१९५३मे इं० फि० कांग्रेसक बड़ौदा अधिवेशनमे गेलहुँ। ओतय भारतीय दर्शन पर निबंध पाठ कैलहुँ। भारतीय दर्शन विषयक एक परिचर्चामे भाग लेलहुँ।

१९५४मे इं० फि० कांग्रेसक अधिवेशन अंका (पेरेडेनिया युनिवर्सिटी) मे भेलैक। ओहिमे बौद्ध दर्शन आ वेदान्त दर्शनक तुलनात्मक समीक्षा कैलहुँ।

१९५५मे नागपुर अधिवेशनमे Symposium क विषय रहैक—Should States be Secular ? (कि राष्ट्र सभकेँ धर्मनिरपेक्ष होयबाक चाही ?) हमर निबंध इं० फि० कांग्रेसक मुखपत्र (Proceedings)मे प्रकाशित भेल।

१९५६मे इं० फि० कां० क अधिवेशन चिदम्बरम् (अन्नामलाइ युनिवर्सिटी) मे भेलैक। ओहिमे हम म० म० रामावतार शर्माक 'परमार्थ दर्शन' पर एक परिचयात्मक भाषण देलहुँ। हम अग्रिम अधिवेशनक हेतु नीतिशास्त्र एवं समाज दर्शन विभागक अध्यक्ष निर्वाचित भेलहुँ।

ओही आसपास अखिल भारतीय दर्शन परिषद्क स्थापना भेलैक। (जाहिमे हिन्दीक माध्यमसँ दर्शन विषयक विचार होमय लगलैक। मुखपत्र 'दार्शनिक' क सम्पादक छलाह डा० यशदेव शल्य। ओकर परामर्शदातृ समितिमे हमरो नाम मनोनीत भेल।

१९५७मे इंडियन फिलोसोफिकल कांग्रेसक अधिवेशन श्रीनगर (कश्मीर) मे भेलैक। ओहिमे हम Ethics cum Social Philosophy (नीतिशास्त्र सह समाज दर्शन) विभागक अध्यक्षता कैलहुँ। हमर अध्यक्षीय भाषण Path of Peace (शांतिक मार्ग) पर भेल। जे ओकर मुखपत्र (Proceedings) मे छपल।

१९५८मे अखिल भारतीय दर्शन परिषद्क [illegible] अधिवेशनमे हम [illegible] शास्त्र सह तर्कशास्त्र [illegible] अध्यक्षता कैलहुँ, जाहिमे [illegible] [illegible] [illegible] मे भेल। से ओकर मुखपत्र [illegible] मे प्रकाशित भेल।

ओही वर्ष [illegible] मे हम इं० फि० कांग्रेस [illegible] अधिवेशनमे सम्मिलित भेलहुँ, जाहिमे [illegible] दर्शन पर [illegible]।

१९५९ (दिसम्बर) मे हम इं० फि० कां० क [illegible] अधिवेशनमे Concept of Negation (निषेध प्रत्यय) पर निबंध पाठ कैलहुँ—से ओकर मुखपत्र Philosophical Quarterly मे प्रकाशित भेल।

१९६०मे हम अ० भा० दर्शन परिषद्क उदयपुर अधिवेशनमे दार्शनिक विचार गोष्ठीमे सम्मिलित भेलहुँ।

ओही आसपास (१९६०मे) हम भारत सरकारक Standing Commission for Scientific and Technical Terminology (वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली निर्माण आयोगक) Philosophy Committees (दर्शन समिति)क सदस्य मनोनीत भेलहुँ। ओहिमे उत्तर आ दक्षिण भारतक गोट पसेक विद्वान छलाह— डा० रामअवध शर्मा, दिल्ली, डा० बी० एल० आत्रेय, बनारस, डा० डी० डी० वडेकर, पूना, डा० रामानुजम्, केरल प्रभृति। हम सभ एक-एक शब्द पर सांगोपांग विचार विमर्श करैत छलहुँ। और जे शब्द निर्णीत होइ छल से कार्यालयक सहायक डा० गोवर्धन भट्ट, [illegible] माथुर प्रभृति नोट कैने जाइ छलाह।

एहि सम्बन्धमे एक रोचक संस्मरण कहैत छी—एक सदस्य Eudemonism क हिन्दी पर्याय बनौलनि—सम्पूर्णानन्दवाद। हम कहलिऐन—ई त 'अहिलागुंल' न्याय भेल। ओ पुछलनि—से की ? हम कहलिऐन—जेना हम सभ अपन नामक्षिगुनाकेँ बिसरि ओकर अंग्रेजी नाम—Lady finger क शाब्दिक अनुवाद करी महिलांगुलि। तखन अपना भाषामे 'कल्याण' [illegible] सन एत अनेको शब्द मौजूद अछि, तखन उत्तरप्रदेशक मुख्यमंत्रीक नाम पर ई वाद गढ़बाक कोन प्रयोजन ?

[illegible] कतेक फाइली आदि भेल। तकरासँ जे [illegible] नागपुर [illegible] पुष्टि भेल छलाह— [illegible] [illegible] [illegible]।

१९६३मे हम [illegible] अधिवेशनमे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

१९६४ दिसम्बर मे हम इं० फि० कांग्रेस [illegible] अधिवेशनमे Higher Philosophy Centre द्वारा दर्शन [illegible] आयोजित Symposium मे भाग लेलहुँ। (जे Dialogue क रूपमे व्यवस्थित कैल गेल छल।)

१९६४-६५,६६ मे हम त्रिभुवन विश्वविद्यालय (नेपालक) आमन्त्रण पर 'फिलोसोफी' बोर्डमे परीक्षा सम्बन्धी परिशोधन कार्यक हेतु काठमांडू गेलहुँ।

१९६५ (मार्च) मे हम विश्व भारतीक निमन्त्रणपर शांति निकेतन आयि मिथिलाक न्याय (विशेषतः अवच्छेदकता) पर भाषण देलहुँ। ओहिमे हमर गुरु आचार्य धीरेन्द्र मोहन दत्त एवं अन्यान्य विशिष्ट विद्वान् उपस्थित रहथि। हमर स्पष्ट सरल आ रोचक प्रतिपादन शैलीसँ सभ प्रभावित भेलाह।

१९६५ (मई) मे हम दर्शनावली निर्माण आयोगक दर्शन-मनोविज्ञानक सम्मिलित संगोष्ठीमे भाग लेबाक हेतु मसूरी गेलहुँ। ओहिमे आओर आन सदस्य सम्मिलित छलाह (यथा डा० टी० आर० बी० मूर्ति, डा० बी० बी० शर्मा, डा० देवराज, डा० दुर्गानन्द सिंह प्रभृति। हम सभ लगभग दस दिन ओतय रहि कार्य करैत गेलहुँ।

दर्शन-समितिक अग्रिम बैसक १९६६मे अन्नामलाई युनिवर्सिटी, और १९६७मे अहमदाबादमे भेलैक। दुनू ठाम एक-एक सप्ताह रहि हम सभ कार्यकेँ आगाँ बढ़ौलहुँ।

१९६७ (नवम्बर) मे विश्व भारतीक निमन्त्रणपर हम पुनः शांति निकेतन गेलहुँ। और क्रिश्चन धर्म विषयक गोष्ठीक अध्यक्षता कैलहुँ। ओहिमे तात्कालीन कुलपति डा० कालिदास भट्टाचार्य सेहो अपन निबंध पाठ कैने रहथि। हम अपन समन्वयात्मक दृष्टि उपस्थापित कैलहुँ।

१९६८मे (अक्टूबर) मे अखिल भारतीय दर्शन परिषद्क अधिवेशन दिल्लीमे हमरा अध्यक्षतामे भेल। ओहिमे हमर अध्यक्षीय भाषणक विषय छल—'आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे भारतीय दर्शनक महत्त्व'। जे विचारोत्तेजक निबंध उपस्थित विद्वन्मंडलीक ध्यान आकृष्ट कैलकैक और परिषद्क मुख-पत्र "दार्शनिक" मे प्रकाशित भेलैक।

ओहि वर्ष १९६८ (दिसम्बर) मे इंडियन फिलो० कांग्रेसक अधिवेशन पटनामे भेलैक। अधिवेशन आंध्र विश्वविद्यालयक दर्शन विभागाध्यक्ष डा० सच्चिदानन्द मूर्तिक अध्यक्षतामे भेल। हम लोकल सेक्रेटरीक रूपमे समागत सदस्यगणक स्वागत-सत्कारक यथोचित प्रबन्ध कैने रहिऐन। जाहिमे

अपन सहयोगी दर्शन परिवारक समस्त सदस्यक हार्दिक सहयोगसँ पूर्ण यश प्राप्त भेल।

१९६९मे इं० फि० कांग्रेसक अधिवेशन कर्णाटक (धारवाड़) मे डा० बेंडेकरक अध्यक्षतामे भेलैक। ओहिमे धर्म एवं समाज दर्शनक मनोनीत अध्यक्ष नहि आबि सकलाह। हुनका स्थानमे हमरे द्वारा अध्यक्षताक कार्य सम्पादित कराओल गेल।

१९७०मे हम मद्रास युनिवर्सिटीमे आयोजित गाँधी दर्शन विषयक वृहत् विचार संगोष्ठीक निमंत्रण पाबि सम्मिलित भेलहुँ। तामिलनाडुक राज्य-पाल सरदार उज्ज्वल सिंह ओकर उद्घाटन कयने छलाह। डा० महादेवन, डा० देव सेनापति, डा० शेषाद्रि, नागराज, डा० जोशी (पूना) प्रभृति गाँधी दर्शनक विशेषज्ञ विद्वान् ओहिमे अपन-अपन विचार प्रकट कैने रहथि। गाँधी मार्ग अहिंसा दर्शन पर हमर व्याख्यान भेल जे ओतय (स्मारिका) मे प्रकाशित भेल।

एहि बीचमे हमरा दार्शनिक कार्यक्षेत्रक और अधिक विस्तार भेलैक। अंग्रेजीक अनेक दर्शन विषयक ग्रंथक हिन्दी अनुवादक हेतु भारत तथा केन्द्रीय और राज्य सरकार अकादमी सभक द्वारा प्रकाशनक हेतु समन्वया-त्मक सूची प्रस्तुत करबाक हेतु अनेको बैसक दिल्ली शास्त्री भवन तथा हिन्दी निदेशालयमे भेलैक जाहिमे आनो आन सदस्य (यथा दिल्लीक डा० रामचन्द्र पांडेय, जयपुरक डा० दयाकृष्ण प्रभृति) सेहो सम्मिलित भेल रहथि। एहि बीच हम साहित्य अकादमी (हिन्दी) क सदस्य मनोनीत भेलहुँ। युनियन पब्लिक सर्विस कमीशनक अंग्रेजी-हिन्दी समीकरण समिति तथा आन विश्वविद्यालयक अनुदान आयोगक रिसर्च ग्रांट कमीटीक सेहो। एहि सभ कार्यसँ अनेक बेर दिल्ली जाइत रहलहुँ।

१९७१मे हम बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी (जकर निदेशक डा० शिव नन्दन प्रसाद छलाह) और मगध विश्वविद्यालयक, (जकर दर्शन विभागाध्यक्ष डा० याकूब मसीह छलाह) संयुक्त तत्वावधानमे बोधगयामे आयोजित भारतीय दर्शन संगोष्ठीमे अध्यक्षता कैलहुँ। ओहिमे महात्मा गाँधीक ब्रह्मचर्य दर्शन एवं विनोवा जीक सर्वोदय सिद्धान्त पर परिचर्चा तथा अन्यान्य महत्त्वपूर्ण दर्शन विषयक निबंध पाठ भेल जाहिमे हमर अनेको शिष्य सेहो भाग लेलनि। हमर अध्यक्षीय भाषण तथा अन्यान्य महत्त्वपूर्ण निबंधक संक-

सँग हमरा द्वारा संपादित कराय बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी द्वारा दार्शनिक विवेचनाएँ नामसँ प्रकाशित भेल।[1]

१९७८मे इंडियन फिलॉ० कांग्रेस कानपुर आइ० आइ० टी० अधिवेशनमे जकर अध्यक्ष डा० जावडेकर और लोकल सेक्रेटरी डा० राजेन्द्र प्रसाद रहथि हम अन्विताभिधानवाद और अभिहितान्वयवाद पर निबंध पाठ कैलहुँ।

१९७३मे हम दिल्लीमे आयोजित दर्शन विषयक मानक ग्रंथक अनुवाद समितिमे अध्यक्षता कैलहुँ।

१९७४मे हम इं० फि० कां०क, General President भेलहुँ। ओकर अधिवेशन प्रयागमे भेलैक। सर गंगानाथ झा रिसर्च इंस्टिट्यूटमे हमर अध्यक्षीय भाषण 'नव्य न्यायक भाषा विश्लेषण' पर भेल। जे उपस्थित विद्वन्मंडली डा० टी० आर० वी० मूर्ति, डा० मतिलाल, डा० जावडेकर, डा० रामचन्द्र पाण्डेय, डा० संगमलाल पाण्डेय प्रभृति विद्वानक ध्यान विशेष रूपसँ आकृष्ट कैलकैक।

१९७५मे अखिल भारतीय दर्शन परिषद्क अधिवेशन राँची (मेसरा) मे भेलैक। ओकर लोकल सेक्रेटरी दर्शन विभागाध्यक्ष डा० रमाकर अंबष्ठ छलाह और डा० सी० एम० [illegible] विशेष निमंत्रण कय [illegible] और उद्घाटन समारोहमे आमंत्रित कयलनि।

१९८०मे ७५ धरि हम विश्वविद्यालय अनुदान आयोग यू० जी० सी० [illegible] एक ग्रंथ प्रस्तुत कैलहुँ— Trends of Linguistic Analysis in Indian Philosophy [illegible] विशेषज्ञ [illegible] Gene-

१. बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी हमरासँ और अनेको ग्रंथ पुनरीक्षित संपादित कराय प्रकाशित कैलक (जकर सूची परिशिष्टमे भेटत)।

ral President बनाओल गेलहुँ। भिन्न-भिन्न विश्वविद्यालयमे आप दर्शनशास्त्र पर व्याख्यान दैत रहलहुँ।

१९३३मे हम जे अध्यापन कार्य शुरू कैलहुँ से १९७५ धरि चलैत रहल। एहि ४२ वर्षक अन्तरालमे हमर अनेक शिष्यो-शिष्या अछैनाह जे देशक भिन्न-भिन्न भागमे भिन्न-भिन्न कालेज वा संस्थाम पदस्थ छथि। जतहि जाइ छी, कैओ ने कैओ प्रणाम सब करैत भेटिए जाइ छथि और हेहन स्नेह दैत छथि जेना अपने परिवारक सदस्य होथि।

हमर विश्वास अछि जे एखनो जे गुरु निष्ठापूर्वक अपन कर्तव्यपालन करैत छथि अर्थात ठीक सभा निष्पक्ष भावसँ जातीय प्रान्तीय वा दलीय संकीर्णतासँ ऊपर उठि विद्यार्थीकेँ विद्यादान करैत छथि तिनका हार्दिक श्रद्धा आ कृतज्ञताक भाव अवश्य भेटैत छैन। कोनो गुरुक जीवनमे एहिसँ बढ़ि पुरस्कार और की भेटि सकैत छैन!

एक महान आचार्य पं० भवनाथ मिश्र अपन जीवनक अन्तकालमे कहने रहथि—

'अधीतमध्यापितमर्जितं यशः
न शोचनीयं किमपि हि भूतले
अतः परं श्री भवनाथ शर्मणः
मनो मनोहारिणि जाह्नवी तटे।...'

हमहूँ किछु अंशमे हुनिके स्वरमे स्वर मिला कय कहि सकैत छी—

अधीतमध्यापितमर्जितं यशः
[illegible]
अतः परं श्री [illegible]
[illegible]।

—

अध्याय 10

रानीघाट

हमर जीवनक पचीस वर्ष रानीघाटमे बीतल। लगभग दू वर्ष रानी घाट महल्लामे कोठाक ऊपर रहलहुँ। पचीस टकापर। जो भाड़ापर मुरलि हाल मुरारिजीक (जे हमर बाबूजीक शिष्य छलथिन्ह) छलैन। हुनकर भागिन पं० रामेश्वर गोडिया हुनक भग्नीमे दुविधा नोस्टी करैत छलथिन्ह। (ज हिमे विशेषत. हुनकर रचित ग्रन्थ हुनका स्मारक जाड होइत छलैन) ओ भवन गंगाक कोण जकाँ छल, खिड़की खोलैत देरी 'गंगाजल' मनि आबत छल। ओहिमे दू वर्ष रहि गंगा सेवन करैत रहलहुँ।

1951 (जुलाई)मे युनिवर्सिटीक एकटा क्वार्टर भेटि गेल। ओहिमे चारू बालक (गोपालजी, रतनजी, रमणजी आ भुवनजी) और बुनू कन्या (भतीजी) रहल, रमाकें संग राखि पढ़ाबय लगलिऐन। यथा समय सभ भाइ-बहिनक नाम लिखा देलिऐन। गोपालजी रतनजी, पटना कालेजमे पढ़य लगलाह, रमणजी, भुवनजी टी०के० घोष स्कूलमे, रमा बांकीपुर कन्या विद्यालयमे।

ओहि क्वार्टरक ऊपरी भागमे मैथिली विभागक अध्यक्ष प्रो० डा० सुधाकर झा रहैत छलाह। बगलमे प्रो० कृपानाथ मिश्र और प्रो० वैद्यनाथ झा। पाछाँमे भिन्न-भिन्न प्रान्तक प्रोफेसर रहैत छलाह। प्रो० देवीदास चटर्जी (बंगाली), डा० मलडेकर (मराठी), डा० माधन (मद्रासी), डा० मोहर (पंजाबी), डा० ईश्वर दत्त (गुजराती) सन्निकट छलाह। ओहि भन्तः प्रान्तीय परिवेशक प्रभाव धुहियाँओ पर पड़लैन। ओहो रानीघाटक प्रोफेसरानी सभक संग बहुराय लगलीह, नार्केटिंग करय लगलीह, मोमाइटी मे घूमय लगलीह।

ओहि समय प्रायः कोनो मैथिलानी युनिवर्सिटीक कम्पाउण्डमे नहि जाइत छलीह। हम पहिले पहिल गाड़ीक सब हुनका सभा सोसाइटी, ड्रामा पिकनिक आदिमे लऽ जाय लगलिऐन। कतिपय बंधु ओहि मोहल्लामे भावनाक आयतमे

कनफुसकी करय लगलाह। कालक्रमे जे लोकनि हमर कट्टर आलोचक छलाह सेहो सभ शनैः शनैः हमर अनुसरण करय लागि गेलाह।

ओहि समय पटना कालेजक पिकनिक पार्टी जाइत छलैक। गड़हा-नहरका नाव पर लोक गंगाक ओहि पार जाइत छल। बालूपर छात्र-छात्रा, प्रोफेसर, प्रोफेसरानीक मेला लागि जाइत छलैक। रंग-बिरंगी परिधानसँ इन्द्रधनुषी छटा लागि जाइत छलैक। ओहि ठाम पाक कलाक प्रदर्शन सेहो होइत छलैक। भिन्न-भिन्न प्रान्तक महिला अपन-अपन प्रान्तक चमत्कार देखबैत छलीह। किछु घरसँ बनाकऽ लेने अबैत छलीह। किछु ओतहि बनबैत छलीह। बंगाली चमचम, पंजाबी छोले, मद्रासी दोसा, गुजराती ढोकला। ई सभ देखि मैथिलानी लोकनिकें प्रेरणा भेटलैन। ओहो मिथिलाक किछु विशिष्ट व्यंजन पकवान बनाकऽ लऽ जाय लगलीह, (यथा, तिलकोरक तरुआ, अमरसा आदि)। जकर सराहना भेलैन। ताहिसँ प्रोत्साहित भऽ कऽ और नव-नव वस्तु बनाबय लागि गेलीह (जेना खीराक पायस, नारंगीक हलुआ), जाहिसँ हुनक प्रशंसकक संख्या तथा मनोरंजनक व्याप रानीमे उत्तरोत्तर वृद्धि होइत गेलैन।

हमर सुधारवादक जे एतेक दिनसँ अवरुद्ध छल अनेक रूपमे प्रकट भेल। क्वार्टरमे हेडमिस्ट्रेस कोई अबैत छलहुँ। हुनका लोकनिकें सेहो सम्मिलित होयबाक हेतु प्रेरित कैलिऐन। मनोरंजनक क्वार्टरसँ सेहो कतेको पड़ोसिन महिला संग देबय लगलथिन।

ई सभ देखि आशा भेल जे भविष्य कन्या हमर जीवन पथमे संगिनी बनि सकतीह।[1]

१९५१मे हम भुवनेश्वरीकें इंडियन फिलोसोफिकल कांग्रेसक सदस्या बना देलिऐन। ओ प्रतिवर्ष भिन्न-भिन्न अधिवेशनमे हमरा संग जाय लगलीह। (जेना ५२मे मैसूर, ५३मे भड़ौंच, ५४मे लंका। एहि तरहें भारतीय दर्शनक प्रसादात् हुनका सम्पूर्ण भारत-दर्शन भऽ गेलैन।[2] कनफरेंसमे सम्मिलित भेने एकटा बड़का लाभ ई भेलैन जे दृष्टिकोणक विस्तार भेलैन। साहस आ आत्मविश्वास आबि गेलैन। किन्तु पचीस वर्षसँ जे पर्दाक बंधन माथ पर लादल छलैन से स्वतः उतरि गेलैन। (जे पाछुने रिक्शा पर एकसरि जेबामे लजाइत छलीह से आब एकाकिनी छोट बीच देखबामा सेहो करय लागि गेलीह।

1. रानीघाट क्वार्टरमे रहि हम सब सर्वाधिक मनोरंजन कऽ देखलहुँ। कश्मीरसँ कन्या कुमारी, नेपालसँ लंका धरि।
2. ओहि भारत भ्रमणक वृत्तान्त अगिला अध्यायमे भेटत।

१९५१ (मद मास)मे भारतीय रेलवे शताब्दीक समारोहक अवसर पर विशेष प्रकारक कनसेशन टिकट जारी भेलैक। कोनो एक जोन (क्षेत्र)मे पंद्रह दिन धरि यथेच्छ भ्रमण क' सकैत छलहुँ। सोचलहुँ जे एहि सुविधाक लाभ उठाबक चाही। मायकें बहुत दिनसँ जगन्नाथजीक दर्शन करबाक अभिलाषा छलैन। ओ लगभग सत्तरि वर्षक छथीह। तेँ हुनक सेवामे पुतहु और रमणजीकें सेहो संग ल' लेलिऐन।

हम सभ १४ तारीखक रातिमे पटनासँ विदा भ' १५केँ भोरमे कलकत्ता पहुँचलहुँ। मायक इच्छा भेलैन जे अपन नाति (चन्द्रकान्त)सँ भेंट करैत चली। चन्द्र बाबू यादवपुर गोशालामे डेरा ल' क' छलाह। ओ हमरा सभकें देखि अत्यन्त प्रसन्नचित्त भ' उठलाह। तुरन्त नानी केर आगमनसँ दस-बीस टा लाभ करबाक' मनोभावनि और केवि-तेज क' ओतय कौशल जलसँ सभकें तृप्ति करौलनि। अत्यन्त सामंजस्यक वातावरण छलैक। हम सभ पोखरि मे खूब स्नान करैत गेलहुँ। तदुपरान्त दही चूड़ा आ देशी चीनी खाइत भेलहुँ। माय मिलक चीनी प्रकार ओ विलायती चीनी कहैत व्यवहार नहि करैत छथीह। एतय आलू आ गुड़ आ ताल मिश्री देखि ओ बहुत प्रसन्न भेलीह। बड़का मोटर भेने कलकत्तामे खूब विचरण करय आइत छलैक। चन्द्र बाबू ओहिमे नानी-मामीकेँ बैसाय संपूर्ण कलकत्ता घुमा देलाह। कालीघाटसँ दक्षिणेश्वर धरि। हम सभ मायसँ रामकृष्ण आश्रम (बेलूर मठ) सेहो देखि ऐलहुँ।

९ बजे राति हम सभ एक्सप्रेस द्वारा विदा भ' भोरमे पुरी पहुँचलहुँ। खूब बाला धर्मशालामे जाबि डेरा देलहुँ। मायक विचार भेलैन जे सभसँ पहिने समुद्र स्नान क' आबी। हम सभ समुद्र तट पहुँचलहुँ।

पुतोहु हाथ धरा क' ओहि स्थानपर ल' गेलथिन जहाँ बैसि क' लोक स्नान करैत छल। ओ और रमणजी हुनका धऽ क' जलमे बैसि गेलथिन। तावत् सेहन्त जोरसँ हिलकोर ऐलैक जे सभ लोकाकें धक्का करैत चलि गेलैन। ओहि तरंगक प्रवाहसँ मायकेँ एकटा आश्चर्यजनक लाभ भेलैन जे पांखुरक एक हड्डी बहुत दिनसँ खिसकल छलैन, और कतेको उपचार कैने ठीक नहि होइत छलैन से ठीक भ' गेलैन। मायकेँ आजीवनसँ दर होइत छलैन। से चिकित्साक काज समुद्रे क' देलकैन।

'मकजाम फल देखिय हरजाली' सुनैत ओ हड्डी अपना जगहपर आबि गेलैन। माय आनन्दसँ चिचियाइ उठलीह 'बौआ! देखू, भगवानक माया, हमर बाँहि ठीक भ' गेल'। ओ जगन्नाथजीक महिमा गाबय लगलीह।

मंदिरमे दर्शन करायब सं गेलिऐन। आनन्दसँ गद्गद भ' गेलीह। ब्राह्मणकेँ दान-दक्षिणा देलनि। अटका पर चढ़ौना चढ़ौलनि, पुरुषार्थ कैलनि। धर्मशालामे पहुँचि प्रसाद ग्रहण भ' गेलाह। आइन भात जमल दालि आ तरकारी पहिले पहिल खेलहुँ। अपूर्व स्वादिष्ट लागल।

मायकेँ न केवल भारतक एक प्रसिद्ध देवस्थान हेतु कोणार्क ल' गेलिऐन। ओतय सूर्य मंदिर (सुप्रसिद्ध) पर पत्थरक रथ आदि हुनका परम प्रिय लगलनि।

मायकेँ बहुत दिनसँ नर्मदा स्नानक इच्छा रहैन। अतः जबलपुर (भेड़ा घाट) सं जा' क' ओतय स्नान करा लेलिऐन, जाहिसँ हुनका बहुत आनन्द भेलैन। परन्तु प्रचण्ड गर्मीमे तप्त बालुपर चलबासँ हुनका पैर पकैत छलैन। ओ चट्टी नहि पहिरैत छलीह। पुनः कलकत्ता होइत बैद्यनाथ धामक दर्शन करबैत हुनका पटना नेने ऐलिऐन।

मायकें मथुरा वृन्दावन नहि गेल छलीह। अतः दोसर बेर (१९५४ नवम्बर)मे हुनका ओहि दिस ल' गेलिऐन, ओहि दिसमे मथुरा, वृन्दावन, आगरा, दिल्ली, अजमेर आदि देखबैत ऐलिऐन। ओहि यात्राक रोचक वृत्तांत ओ बहुत दिन धरि लोककेँ सुनबैत रहैत छलथिन। विशेषतः मथुराक द्वारिकाधीश मंदिर, वृन्दावनक रंग मंदिर, सेवाकुंज (जहाँ स्त्रीगण 'जय राधे' कहिकऽ परस्पर अभिवादन करैत छथीह)। यमुनाजीक विश्राम घाट पर एक एक मनक विशाल काछु, एक-एक हाथ भरि नमरौने खाद्य संग्रह हेतु मुँह बौने रहैत छल। अयोध्याक हनुमान मंदिर सब बाबर देनाक सुनैत जाहिमे स्वयं महावीर जी हुनका हाथसँ अपन प्रसाद (लड्डूक दोना) ग्रहण क' ल' लेलथिन। गामपर माय बहुत दिन धरि एहि सुख यात्राक वृत्तान्त और अपन पुतोहुक सेवाक बखान करैत रहलीह।

ओहि समय पटना आकाशवाणी केन्द्रमे मैथिलीमे वार्ता देबयवाली महिला कठिनतासँ भेटैत छलथिन। एक दिन सुमन वात्स्यायन (जे ओहि समय पटना रेडियोमे छलाह) हमरा ओतय ऐलाह और सुभद्रा देवीकेँ रेडियो

वार्ता देबाक हेतु प्रोत्साहित कैलथिन। ओ मैथिलीमे कोनो-कोनो विषय (यथा यात्रा संस्मरण आदि) पर वार्ता देबय लगलीह।

१९५५मे केन्द्रीय आकाशवाणीक तत्त्वावधानमे एक अखिल भारतीय सांस्कृतिक समारोह आयोजन कैल गेलैक। ताहिमे मिथिलाक सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व करबाक हेतु एक सेहन्त मैथिलानीक प्रयोजन पड़लैक जे अपन टीम बनाक' ल' जाथि और ओतय विद्यापति गीतक कार्यक्रम प्रस्तुत करथि। एक दिन डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी (जे बिहार सरकार, शिक्षा विभागमे उप-निदेशक छलाह) हमरा ओतय ऐलाह और सुभद्रा देवीक स्वीकृति पाबि हुनक नाम मनोनीत कय पठा देलथिन। ओ अपन मंडलीमे पंडौलवाली काकी तथा सबौरवाली ननिया आदिकें सम्मिलित कय सदलबल दिल्ली गेलीह। ओतय लाल कटोरा बाग कैम्पमे हिनका सभकें ठहराओल गेलैन। (जहाँ देशक भिन्न-भिन्न भागक कलाकार मंडलीकें ठहरबाक छलैक।) १४-११-१९५५कें नियत समय पर आकाशवाणीसँ हिनका लोकनिक गीत (विद्यापतिक महेशवाणी) प्रसारित कैल गेलैक। ई प्रायः प्रथम अवसर छल जाहिमे छोटी ग्रामीण क्षेत्रक मैथिलानीक स्वरमे मैथिली गीत केन्द्रीय आकाशवाणीसँ प्रसारित भेल। ओ तत्कालीन प्रसारण मंत्री केसकरजीक हाथसँ कलाकार पुरस्कार पाबि क' पटना ऐलीह। ओहि समय एहि घटनाकें ततेक महत्व देल गेलैक जे समाचार-पत्र सभमे वर्णित चित्रित भेल। जखन ई गाम गेलीह त हिनका लोकनिक स्वागत कैल गेलैन (जाहिमे पचैपुर प्रखंडक महिला कल्याण संयोजक सेहो भाग ल' धन्यवाद देलथिन)। बाजितपुरक इतिहासमे ओ सभा प्रायः प्रथम महिला-सभा छल।

एही बीच (१९५६मे) पटनाक सामाजिक सांस्कृतिक इतिहासमे एक महत्त्वपूर्ण घटना भेलैक। ओ छल चेतना समितिक जन्म। एक दिन बंधुवर श्री जयनाथ बाबूक ओतय हम, शास्त्रीजी, सतीश बाबू, भटाशंकरजी, रूपनारायण ठाकुर प्रभृति दस-बीस गोटे बैसल रही। ओहिमे विचार भेलैक जे एक एहन संस्था बनय जे समाजमे नव चेतना आनय। कइएकटा नाम प्रस्तावित भेलैक। अन्तमे चेतना नाम रहलैक।

ओ 'चेतना' समाजमे सत्ते नव चेतना आनि देलक। तेहन धूमधामसँ विद्यापति पर्व आ शारदीय जाय लागल जे समूहक संख्यामे लोक जुटय लागि गेलाह। जे स्त्रीगण घोर-पर्दामे रहैत छलीह सेहो सभ मुँह बाबिक' एक आमिक पर्व; हमरा बूझि ओहिमे भाग लगलीह। संयोगवश ओही

समय डा० अमरनाथ झा सेहो (पब्लिक सर्विस कमीशनक चेयरमैन भ') पटना आबि गेलाह। हुनके अध्यक्षतामे प्रथम विद्यापति जयन्ती मनाओल गेल। हुनका एहन सामाजिक जागृति (विशेषतः एहन नारी जागरण) देखि अत्यन्त प्रसन्नता भेलैन।

हुनका ओतय (किंग जौर्ज एवेन्यूमे) प्रतिमास एक दू गोष्ठी जमैत छल और सामाजिक, साहित्यिक प्रगति देखि हुनक विश्वास छलैन जे मैथिलीकें संविधानक भाषा सूचीमे अवश्य स्थान भेटतैक। ओ तदर्थ कृतसंकल्प छलाह।[1]

१९५७मे हम गंगातट पर नव-निर्मित दू मंजिला क्वार्टरमे आबि गेलहुँ, जे विशेषतः रीडरक हेतु बनल छलैक। हमर क्वार्टरसँ सटले हिन्दी विभागक अध्यक्ष डा० शिवनन्दन प्रसाद छलाह। हुनका परिवारसँ हमरा लोकनिक पूर्ण आत्मीयता छल। समीपेमे कन्हौलीक झुकुलजी [पंडितबाबू, टूना बाबू] डेरा ल' क' सपरिवार रहैत छलाह। हुनको लोकनिसँ पूर्ण घनिष्ठता भ' गेल। सभ परिवारक स्त्रीगण संग मिलि गंगा-स्नान क' अबैत छलीह और पाबनि तिहारमे प्रसादक आदान-प्रदान होइत छल। टूना बाबू नित्य पाँच छौ घंटा पूजा करैत छलाह। होमियोपैथिकमे माहिर छलाह। जहाँ हमरा कनेको उदास देखैत छलाह कि जीभ पर एक खोराक इग्नेशिया ध' दैत छलाह और पूछै छलाह—कहिए, अब ठीक है न? हम तोष राखक हेतु 'हँ' कहि दैत छलिऐन। हुनका तंत्र-मंत्रमे अगाध विश्वास छलैन। जखन अबैत छलाह, प्रेतांग, प्रयोग, ओझा, तांत्रिकक गप्प चला दैत छलाह। ओहि पर खूब मनोरंजक बहस छिड़ि जाइत छल।

पंडित बाबू सदा प्रसन्न और मुसकुराइत रहैत छलाह और हँसैत-हँसैत बेर पर सभक उपकार क' दैत छलथिन, तेँ बड़ लोकप्रिय छलाह। हुनका सभक पुजेरी जी (पं० मधुकान्त झा) अबैत छलाह त शतरंजक अष्टयाम प्रारम्भ भ' जाइ छल। हुनका ऐ सभक मनोविनोद होइ छल।

राधाकान्तजी पटना सिटीसँ बाँकीपुर राधाकृष्ण मंदिरमे आबि गेल छलाह। बरावरि किछु ने किछु ल' क' अबैत छलाह। रत्ना-रमाकें पुछैत छलथिन—'की गय! की सभ छुनन-मनन भ' रहल छौक। हमरा सात दिनसँ यजमानक ओतय पूड़ी मिठाइ खाइत-खाइत जी उबहि गेल अछि।

1. परन्तु खेद जे ओ ३-९-१९५७कें अकस्मात् दिवंगत भ' गेलाह और ओ अनुपम सांस्कृतिक केन्द्र शून्य भ' गेल।

तें भात खाय आयल छियौक। अपना काकीकें कोनो चटकार वस्तु बनाबय कहुन।" ओलक चटनी, सेतरिक चटनियही, तीसी देल कुम्हरौड़ी आदि जे वस्तु सँबाक इच्छा होई छलैत से ओ बना दैत छलथिन। तें ओ बहुत आशीर्वाद दैत रहै छलथिन।

गामसँ पंडौलवाली काकी और राजेन्द्र नगरसँ द्रौपदी बहिन (कामर्स कालेजक प्रिंसिपल इंदुशेखर जीक पत्नी) आबि जाइ छलीह त खूब आमोद प्रमोद होइ छल और संगीतक धारा प्रवाहित भ' जाइ छल—"जय जय चरण जगदम्बाक धयलहुँ आनन्द की दरबार।"

१९५७ मे हम काश्मीर, अजमेर और कलकत्ता गेलहुँ। काश्मीरक वर्णन यात्राक अध्यायमे भेटत। अजमेरमे एक बृहत प्रवासी मैथिल सम्मेलन भेल छल जकर संयोजक छलाह पं० रघुनाथ शर्मा पुरोहित। बंधुवर बाबू लक्ष्मीपति सिंह जे प्रवासी मैथिलक बड़का पंजिकार जकाँ छलाह हमरा सभकें ओतय ल' गेलाह। ओहि सभामे म०म० उमेश मिश्र, कुमार गंगानन्द सिंह प्रो० आनन्द मिश्र सेहो सम्मिलित छलाह। प्रवासी मैथिलमे अपन मातृभूमि मिथिलाक प्रति असीम श्रद्धा-भक्ति देखबामे आएल। ओ सभ मैथिली भाषाक प्रति बहुत प्रेम रखैत छलाह और 'कन्यादान' 'चतुर चका' आदि पढ़ि क' आनन्द लैत छलाह। हमरा सभकें बहुत प्रेम सँ स्वागत-सत्कार कैलनि। दिसम्बर '५७मे कलकत्ता (महाजाति सदन)मे प्रधान मन्त्री नेहरूजीक अध्यक्षतामे राइटर्स कनफेरेन्स भेल रहैक। ओहिमे हमहुँ (सपत्नीक) गेल रही। (बंधुवर मणिपद्मजी सेहो रहथि। ओहि समय पद्मजा नायडू गवर्नर छलीह। हुनका ओतय (राजभवनमे) नेहरूजीक संग समस्त लेखक बन्धु निमंत्रित छलाह, जाहिमे हमहुँ सब गेलहुँ।

कलकत्ताक मैथिली प्रेमी बन्धुगण गिरीश पार्क मे हमरा सभक अभिनन्दन कैलनि। ओहिमे भारी संख्यामे लोक जुटल रहथि। हमरा सभकें मैथिलीक सेवाक उपलक्ष्यमे मानपत्र प्रदान कैल गेल।

सुभद्रा देवी दिल्ली जा क' केन्द्रीय आकाशवाणीक समारोहमे मैथिली गीतक शुभारंभ क' ऐल छलीह। तदर्थ हुनको अभिनन्दन कैल गेलैन। बूझि पड़ल जे सब बंगाल जकाँ मिथिलोक स्थानमे मातृभाषा प्रेम उमड़ि रहल छल। प्राय: कुछेक दिन पूर्व हमर लिखल 'ब्रह्माक शाप' नामक कथा छपल छल। आशामतीजी गणेश लोकनि ओहि शाप आपसी फूट) कें मेटाक'

रहलाह। परन्तु ई जानि दुख भेल जे एहु ठाम दुगोला छैक। एक अखिल भारतीय मैथिल संघ, दोसर अखिल भारतीय मिथिला लोक संघ।

दुनूक उद्देश्य एके (मिथिला, मैथिलीक संवर्धना)। दुनू दिस बड़का-बड़का महान् व्यक्ति रहथि। वयोवृद्ध मिथिलेन्द्र, हरिश्चन्द्र मिश्र, कर्मठ उत्साही नेता बाबू साहेब चौधरी, प्रो० प्रबोध नारायण सिंह, तथा डोमन झा, परमेश्वर बाबू, उचित बाबू, महावीर बाबू, चन्द्रकान्त बाबू प्रभृति।

दुनू संस्थामे ६३ नहि, ३६ क सम्बन्ध। ई देखि हम (और मणिपद्मजी) संकल्प कैलहुँ, जे आब एहि दुनू दलकें एक कइएक' हम सभ जाएब। हम अपर चितपुर रोडमे अपन भागिन विष्णुकान्त जी (जे ओहि समय आइ० पी० एस० क तैयारी करै छलाह और आब डी० आइ जी० छथि) क बासा मे ठहरल रही। ओहि डेरामे हमरा मामक एक कन्या (पार्वती) अपन पति पुण्यानन्द मिश्रक संग रहैत छलीह। तुषितनारायण जी (विश्वमित्र), शिवकान्त जी (अध्यापक) आदि सेहो छलाह। ओहि समय राजकमल नवयुवक छलाह। ओहो उत्साहपूर्वक एहि कार्यमे लागि गेलाह। आचार्य अधिकारी पं० सीताराम झा और रेवती रमण झा प्रभृति सेहो पूर्ण योगदान देलनि। दुनू दलक प्रधान-प्रधान व्यक्ति सभ पहिने बेराबेरी (बादमे संग संग) हमरा डेरा पर अबैत गेलाह और परामर्श दैत रहलाह। तीन चारि दिनक भगीरथ प्रयाससँ दुनू दलक पदाधिकारी सभक सपिंडीकरण भेल और एकीकरण यज्ञ सम्पन्न भेल। नवीन संस्थाक नाम प्राय: मैथिली संघ पड़लैक। ओहि उपलक्ष्यमे एक बृहत् भोज (मिथिला निकेतनमे) भेल। जाहि मे दुनू दिसक सदस्य सम्मिलित भ' सभ प्रेमपूर्वक हमरालोकनिकें शुद्ध मिथिलाक रीतिसँ (अरिकौंच, तिलकोर, दही, माछ, भोजन करौलनि। ता० ३१ दिसम्बरक' रातिमे ओ लोकनि स्टेशन आबि हमरा सभकें तेहन भाव भरल हृदयसँ विदा कैलनि जेना कोनो सोही कुटुम्बकें विदा कैल जाइ छनि।[1]

१९५७मे हमर ज्येष्ठ पुत्र राजमोहन (गोपालजी) एम०ए० मनोविज्ञानमे कैलनि। १९५८ मे दिल्लीसँ अलवर स्टेटक भूतपूर्व न्यायाधीश पं० रामभद्र झा (जे बाबू जीक मित्र छलथिन) क सुपुत्र प्रो० आनन्द कुमार ओझा हमरा ओतय गोपालजीक वैवाहिक प्रस्ताव ल' क' ऐलाह।

---

1. सुभद्रा देवीक ओहि कलकत्ता यात्राक संस्मरण मिथिला दर्शन प्राय: १९५८, जनवरीमे छपल रहैन।

हुनक कन्या आशा देवी बी० ए० बी० टी० कैने छलथिन (और बाद मे एम० ए० सेहो कैलथिन)। कन्याक माय विमला देवी सेहो अवला आवासमे (दरियागंज) इंगलिश स्कूल खोलि प्राध्यापिकाक कार्य करैत छलथिन। काशीमे कन्या निरीक्षण भेल। हम सब दशाश्वमेध घाटसँ गंगाजी पर नौका भ्रमण करैत वार्तालाप करैत गेलहुँ। कन्याक माय मिथिलाक मुझौना गामक छल:थिन और शुद्ध मैथिली मे गप्प कैलनि। दुनू समधिनमे तुरंत मनोबंध भ' गेलैन। हम कनियासँ पुछलियैन अहाँ की सब जलपान बनाअ' जनै छी। ओ हिन्दी मे कहलीह—फुलके, समोसे, दही बड़े, पकौड़ियाँ। बस, आब और की चाही! ग्रेजुएट पुतोहु, पाक शास्त्रमे प्रवीण, प्रतिष्ठित परिवार। कनियाँक मायकेँ पुछलियैन—हिनका मैथिली भाषा किऐक नहि सिखौलियैन। ओ कहलीह—ओतय रहतीह त सीखि लेतीह। ओहिमे कि देरी लगतैनि? अस्तु हमरा लोकनि कनियाँक शील-स्वभाव देखि सन्तुष्ट भ' गेलहुँ। और ओ कथा सहर्ष स्वीकार क' लेलियैन।

लेन-देनक कोनो प्रश्ने नहि छल, यथा समय २९ मईक' हम सब पाँच गोटेक संग गोपालजीक बरियाती दिल्ली ल' गेलियैन। और शुभ मुहूर्तमे हुनक विवाह कार्य सम्पन्न भेलनि। ओतय परिवारक और और लोक (पं० रामभद्र झा, पं० शिवकुमार झा, पं० गणेशकुमार झा प्रभृति) बहुत सौजन्य पूर्वक हमरा सभक आदर सत्कार कैलनि। हम सभ दुलहिनकेँ ल' क' पटना अबैत गेलहुँ। एतय लखनजी और हुनक माय सबटा स्वागत और प्रीतिभोजक प्रबन्ध कैने रहथि। परिवार और कुटुम्बक सबलोक पहुँचि गेलाह और खूब आनन्दपूर्वक कनियाँकेँ आशीर्वाद दैत गेलथिन। समाजमे एहन आदर्श विवाहक खूब सराहना भेल।

ओहि समय मैथिली महिला सांस्कृतिक मंच पर ऐबा मे सकाइत छलीह। परन्तु क्रमशः हुनका सभमे साहस आ आत्मविश्वास आबय लगलैन और ओ सभ उत्तरोत्तर अधिकाधिक संख्यामे मैथिली संगीतक कार्यक्रम देबय लगलीह।

१९५८मे चेतना समितिक विद्यापति जयन्ती बंधुवर सतीश बाबूक अध्यक्षतामे (जैन साहु हॉलमे) समायोज गेल। ओहि मे हमर एकांकी 'मंडन मिश्र' मंचन करबाक विचार भेलैक, परन्तु मंडन मिश्रक पत्नी (भारती)

बनबाक हेतु कोनो मैथिलानी तैयार नहि भेलीह। तखन शास्त्रीजी प्रभृति बन्धुक प्रोत्साहन पाबि सुभद्रा देवी साहस कय मंच पर उतरलीह और भारतीक भूमिका निभौलथि। ९.११.५८केँ एक मध्य वयस्का मैथिलानी द्वारा कैल ओहि सफल अभिनयकेँ एक सामाजिक क्रान्तिक रूपमे स्वागत कैल गेलैक। तकरा बाद त मैथिल-कन्यामे उत्साहक सुरसरी धार उमड़ि अयलैक और ओ सभ अधिकाधिक संख्यामे नाटकक मंच पर आबय लागि गेलीह। आब ओहि घटनाक एक ऐतिहासिक महत्व छैक।[1]

गोपालजी श्रम नियोजन पदाधिकारी नियुक्त भेलाह। और किछु दिनक बाद जमशेदपुरमे पदस्थापित भेलाह।

१९५८मे लखनजी दर्शन शास्त्रमे एम० ए० (फर्स्ट क्लास फर्स्ट) भेलाह। और किछु दिनक बाद राँची विश्वविद्यालयमे दर्शनक व्याख्याता नियुक्त भेलाह। हुनको प्रति एकसँ एक सुन्दर वैवाहिक प्रस्ताव अयलैन, परन्तु हुनका मनमे विदेश (कनाडा) जा क' डाक्टरेट करबाक संकल्प छलैन, अतएव वैवाहिक बंधनमे पड़ब स्वीकार नहि भेलैन।[2]

१९६०मे हुनकर माय दुहू पुत्रक ओतय जा क' देखि ऐलीह। जमशेदपुरमे दुलहिनकेँ सुचारु रूपसँ आश्रम चलबैत देखि बहुत आनन्द भेलैन। राँचीमे लखनजीक ओतय सेहो डेराक सलतनत नीक जकाँ लागल देखि प्रसन्नता भेलैन। परन्तु ओ गृह गृहिणी बिना उदास लगलैन।

---

1. (१९७९मे) चेतना समितिक (महिला शाखा दिससँ) एक विवरिणिका प्रकाशित भेलैक, जाहिमे चेतनामे मैथिल नारीक योगदानक इतिहास छैन। ओहिमे सर्वप्रथम सुभद्रा देवीक पचीस वर्ष पूर्व कैल ओहि सेवाक उल्लेख करैत हुनका प्रति कृतज्ञता अर्पित कैल गेलैन। १९८२मे(१४ अगस्त) क' हुनकर स्वर्गवास भ' गेलापर चेतना समितिक दिससँ हुनका प्रति श्रद्धांजलि अर्पित भेलैन। (प्रो० डा० संध्या झा, डा० प्रभावती झा, श्रीमती कविता देवी, प्रभृति प्रबुद्ध महिलासँ हुनका विशेष आत्मीयता छलैन।)
2. ओ यथासमय कौमनवेल्थ स्कालरशिप पाबि १९६२मे कनाडा गेलाह और चारि वर्ष टोरन्टो युनिवर्सिटीमे रहि पी० एच० डी० कैने ऐलाह।

१९६०मे चेतना समितिक विद्यापति समारोह युनिवर्सिटीक सेनेट हॉलमे हमरा अध्यक्षतामे भेल। जकर दिनकरजी उद्घाटन कैलनि। दोसर दिनक अध्यक्षता डॉ० हुमायूँ कबीर कैलन्हि। ओहो मैथिलीकेँ संविधानक सूचीमे स्थान देबाक आश्वासन द' गेलाह। ओही आसपास एकटा ई बात देखि क' अत्यन्त आनन्द भेल जे झुंडक झुंड मैथिली भाषिणी कन्या हमरा विभागमे दर्शन शास्त्रमे एम० ए० करय लगलीह जकर तीस वर्ष पूर्व कल्पना नहि कैल जा सकैत छल। केवल मैथिलीए टा नहि, आनो आन भाषा आ प्रान्तक कालेजक कन्या हुनका (गृहिणीकेँ) चाची कहैत अबैं छलथिन और ईहो कन्ये जकाँ मानैत छलथिन। हुनका सभकेँ कोनो गीत वा ड्रामाक रिहर्सल करबाक होइ छलैन त ई यथोचित व्यवस्था कय दैत छलथिन। और कलाकार सभकेँ स्नेहपूर्वक जलपान करबैत छलथिन। एहि सभसँ ई ओहि सर्किलमे बहुत लोकप्रिय भ' गेलीह और हुनका सभक बेसी आवागमन होइत रहलैन। ओहिमे किछु तेहन स्नेहपात्री बनि गेलीह जेना अपने घरक बेटी होथि।

ओहि बीच हम मास-दू मास पर (पारिभाषिक शब्द निर्माण समितिमे) दिल्ली जाइत छलहुँ। चारि दिन कार्य क' क' फिरती बेर वाराणसीमे उतरि दशाश्वमेध घाटसँ रामनगरक प्रसिद्ध बड़का-बड़का भाँटा जे हरियर डाभ सन लगैत छलैक लेने अबै छलहुँ। हम अधिकतर श्यामा मंदिरमे ठहरैत छलहुँ। चौक पर केसरीक ठढइ, कुलियारक मुरब्बा और कचौरी गलीक रावड़ीक आनन्द लैत छलहुँ। पटना ऐला पर बनारसी भाँटाक हरुआ-भरुआ बनैत छल और बन्धु वर्गकेँ आस्वादन कराओल जाइ छलैन। खूब आनन्दसँ समय बितैत छल।[1]

१९६१ (नवम्बर)मे हमरा युनिवर्सिटी बला एक बड़का क्वार्टर भेटि गेल जाहिमे पहिने डा० अल्टेकर (पुरातत्वक प्रख्यात विद्वान्) रहैत छलाह।

1. हम जतय जाइ छलहुँ ततयसँ कोनो वस्तु लेने अबैत छलहुँ। जेना मुजफ्फरपुरसँ लिचचीक लातु, भागलपुरसँ कतरनी चूड़ा वा जरदालु आम। ई सभ देखि किछु मित्र बचकानी प्रवृत्ति कहि हँसै छलाह। परन्तु जखन आस्वादन करैत बेरमनि हमरा रसज्ञ कहैत छलाह।

ओकर विशाल हाता (दू बीघाक) छलैक, जाहिमे नाना प्रकारक फल-फूलक वृक्ष छलैक। मकानक सामने एकटा गोलाकार हरियर घासक मैदान छलैक जकरा चारू कात लाल पीयर फूल (गेंदा, सूर्यमुखी, जटाधारी) लागल छलैक। एकटा तेहन कटहरी चम्पा छलैक जकरा फुलाइत देरी साँझ धरि पाकल कटहर जकाँ गमगम करय लगैत छल। ओ हरितकुंज दार्शनिक चिन्तन आ काव्य सर्जनाक हेतु अत्यन्त उपयुक्त स्थान छल। जाड़क दिन और गर्मीक रातिमे ओहिपर बैसारि जमैत छल।

ओहि क्वार्टरमे कतेको अभिनव वस्तु छलैक। एकटा हजारा नेबो छलैक जे गोल गोल आकारक रससँ भरल हजारक हजार गाछमे लुबुधल रहैत छलैक। हम ओकरा देशी नारंगी कहैत छलिऐक और गृहिणी ओकर जैम जेली बनबैत छलीह।

आङनमे आमादी (एक प्रकारक बड़का आद) छलैक जकर सुगंध ठमक कृष्णभोगक टिकोला सन होइ छलैक। करीलीक (सुगंधित मसालाक पात) छलैक जाहिमे छौंकला पर दालि तरकारी कढ़ी बड़ी आदिमे अपूर्व सौरभ आबि जाइ छलैक।

ततेक अफरात हरियरी छलैक जे गृहिणी एकटा कामधेनु गाय पोसि लेलनि (जकर अमृत समान दूध होइ छलैक)। ओहि भवनमे हम सभ पूरे चौदह वर्ष (कार्यकालक अन्त धरि) रहि गेलहुँ। (ओ हमरा जीवनक सभसँ अधिक सुखद काल रहय।

हमर ओ आवास दर्शन तथा साहित्यक एक केन्द्र बनि गेल। एकसँ एक दार्शनिक, कवि, कलाकार अबैत रहै छल।

आनो आन प्रान्तक विश्वविद्यालयसँ जे विशिष्ट दर्शनशास्त्री (विशेषतः दर्शन विभागाध्यक्ष) अबैत छलाह से हमरे ओतय ठहरैत छलाह। काशीसँ डा० बी० एल आत्रेय, इलाहाबादसँ डा० रामनाथ कौल, वा डा० शकधर दत्त, जबलपुरसँ डा० सी०डी० शर्मा, भुवनेश्वरसँ डा० गणेश्वर मिश्र, उज्जैनसँ डा० एस० एम० एल० श्रीवास्तव प्रभृति। ओ सभ अपने घर जकाँ बूझिक' रहैत छलाह। हमहुँ हुनका सभक ओतय जाइ छलिऐन त ओहने स्नेह सत्कार भेटैत छल।

हमरासँ अनेको प्राध्यापक, प्राध्यापिका पी०एच०डी० थीसिसक निर्देशन लेवक हेतु अबैत छलीह। अपन स्नातकोत्तर दर्शन विभागक प्राध्यापिका सुश्री उमा गुप्ता, थेव पर, बी० एन० कालेजक प्राध्यापक प्रो० मधुसूदन प्रसाद, 'राममोहन राय' पर, प्रो० श्रीमती इंदिरा शरण (संप्रति मगध महिला कालेज) भागवत पर, प्रो० सुश्री रेखा ऐकर (तहिया गुरु गोविन्द सिंह कालेज, पटना सिटी) अहिंसा पर, प्रो० कुमारी रमा सेन (अरविंद महिला कालेज, पटना) महात्मा गाँधीपर, प्रो० श्रीमती चिरंजीविनी कुमारी (प्राध्यापिका, कोकोनाडा कालेज, आन्ध्र विश्वविद्यालय) रामायण पर, श्री वीरेन्द्र कुमार सिंह (कोलंबो प्लैन) 'महाभारत' पर। ओ सभ बराबरि अबैत रहै छलाह, जाहिसँ ओ आवास दर्शन शास्त्रक चर्चासँ मुखरित होइत रहै छल। (मंडन मिश्रक धाम जकाँ।) हुनका सभक हेतु गृहिणीक अबारित द्वार रहैत छलैन। ओहिमे कतेको पाक कला वा संगीत कलामे सेहो प्रवीण छलीह। उमाजी माछेर 'चर्चरी' बनेबामे सिद्धहस्त छलीह। चिरंजीविनी करोलीक व' क' रसम् जंबरम् बनबैत छलीह। सुश्री रमा सेन आकाशवाणीक प्रसिद्ध गायिका छलीह। ओ अबैत छलीह त भरल-भरल मैथिल कन्याक स्वरमे विद्यापतिक गीत मुखरित भ' उठैत छल---

'कखन हरब दुख मोर हे भोला नाथ'

यदाकदा आध्यात्मिक प्रवचन कर' वाली साधिका सेहो आबि जाइ छलीह। एक बेर माँ योगशक्ति ऐलीह। एक बेर वाराणसीक प्रो० ज्ञानवती त्रिवेदी, एक बेर ब्रह्माकुमारी श्रावणी पूर्णिमामे आबि क' रक्षाबंधन द' गेलीह। कदाचित् सिनेमाक अभिनेत्री पर्यन्त आबि जाइ छलीह। एक बेर बंबईसँ लता सिन्हा (कन्यादान फिल्मक हीरोइन) तदलखल पहुँचि गेलीह। हिनका सभक स्वागत सत्कारक भार पत्नीपर रहैत छलैन। नव पुरान कवि पत्रकार आकाशवाणीक कलाकार प्रभृति अबैत छलाह। यदाकदा प्रतिष्ठित वयोवृद्ध कविवर पं० सीताराम झा वा पं० शिवानंद चौधरी प्रभृति आबि जाइत छलाह त पत्नी हुनका अपने कन्याजकाँ आदरपूर्वक भोजन करबैत छलथिन। ओ स्वयं साहित्य सेविका नहि बनि सकलीह, परन्तु साहित्य सेवीक सेविका अवश्य बनल रहलीह। ओहि आवासक अनेको मधुर स्मृति अछि। सामनेक कोठीमे राधाबाबू (इंगलिश डिपार्टमेंटक हेड) तिला संक्रातिक भोजमे गामसँ खोआ हत गाढ दही मंगबैत छलाह। दिवाकर बाबू

(अर्थशास्त्रक विभागाध्यक्ष) नवरात्रामे शान्त पटलसँ भोज करैत छलाह। जाहिमे भगवतीक प्रसादसँ लोकके अछी करा दैत छलथिन। पार्वण-एकोदिष्टमे आनन्दजी और बेतकर बाबूक ओतय भोजमे सोतिपुराक चमत्कार भेटि जाइ छल। फगुआक अवसर पर हमरा ओतय हरियर टंडक संग-संग पुओ वड़ी हरियरे रंगक बनैत छल जे देखि कतेको बन्धु चकित भ' जाइ छलाह। (ओकर रहस्य ई छलैक जे मैदा बेसन पहिलहि सोयाक रसमे सानिक' छानल जाइ छलैक।) एकटा और बात मन पड़ै अछि जे रानीघाटक महिला लोकनि रंगक बाल्टी आ पिचकारी लय बहराइत छलीह और अपना मंडली सहित घर-घर घूमि आपसमे रंग क्रीड़ा करैत छलीह। जाहिसँ ब्रजभूमिक किछु झलक भेटि जाइ छल।

ओहि आवासमे रहैत अनेको शुभ कार्य संपन्न भेल। रत्ना दाइ मगध महिला कालेजसँ प्री युनिवर्सिटी पास क' चुकल छलीह। १९६३मे हुनकर विवाह हमर सहपाठी मित्र स्व० विश्वभंर चौधरी जीक सुपुत्र प्रो० विनय कुमार चौधरी जीसँ भेलैन। ओहि परिवारसँ हमरा लोकनिकेँ पूर्वहिसँ अवयात छल। हुनक कन्या सभ हमरा ककाजी कहैत छलीह। सौ० सुधा हमर एक कथा 'टोटका'क हिन्दी अनुवादो कैने छलीह। १९५८मे रत्नाक काकी (सुभद्राजी) मंडन मिश्रक पत्नी (भारती)क अभिनय चेतना समितिक मंच पर कैने रहथिन, ताहि उपलक्ष्यमे ओ सभ हमरा सभके अपना ओतय प्रीतिभोजो देने रहथि। हुनका सभकेँ साहित्यिक संस्कार आ उच्च विचार छलैन। अतएव आदर्श रूपसँ ओ विवाह भेल जाहिसँ सभकेँ अत्यन्त आनन्द भेल। चौधरी जी कामर्स कालेजमे मनोविज्ञानक व्याख्याता छलाह। रत्ना दाइ अपन सासुर राजेन्द्र नगर फ्लैटमे गेलीह। बादमे ओ फिलोसफीमे एम० ए० फर्स्ट क्लास फर्स्ट कय पटना वीमेन्स कालेजमे प्राध्यापिका नियुक्त भेलीह। रमा सेहो मगध महिला कालेजसँ प्रियुनिवर्सिटी क' गेलीह। हुनकर विवाह आयकर कमिश्नर पं० सीताराम झाक अनुज दयानन्द झाजी (आयकर अधिकारी) सँ भेलैन। ओहू परिवारसँ हमरा सभकेँ पूर्व परिचय छल। १९५७मे ओ सभ कलकत्तामे हमर अभिनन्दन समारोहमे सम्मिलित रहथि। १९६६मे एक दिन (हुनक पत्नी श्रीमती उर्मिला देवी) हमरा ओतय रानीघाट ऐलीह। और रमाकेँ देखि पत्नीकेँ कहलथिन ई कन्या हमरा द' दिय'। ओ कहलथिन अहींक थीक, ल' जाउ। एहि तरहेँ तेना मनोर-

चारिक ढंगसँ ई कथा भेलैक जे कोनो पक्षकेँ कनेको असुविधा नहि भेलैन। हमरा आत्मसंतोष भेल जे हम कनियाकेँ जे आश्वासन देने रहिऐन से भगवत् कृपासँ पूर्णतः फलित भेलैन।

ओझाजी लखनऊ, बरेली, सीतापुर, बदाऊँ, काशीपुर, आदि अनेक ठाम पदस्थापित भेलाह। कतेको ठाम हम सभ जा क' देखिओ ऐलिऐन, जाहिसँ बहुत आनन्द भेल। ओतेक स्थानान्तरण होइतो रमा एम० ए० एल० एल० बी० क' गेलीह, से देखि और अधिक प्रसन्नता भेल।

१९६४ (जुलाइ)मे हमर 'कन्यादान' फिल्मक शूटिंग बंबईमे होइत रहैक। हम सभ चित्रक निर्माता हीराबाबू (वीणा सिनेमाक अध्यक्ष वीरेन्द्र प्रसाद सिंह)क अनुरोध पर सेट देखबा ले हेतु ओतय गेलहुँ। हमरा सभकेँ ग्रीन होटलमे ठहराओल गेल। (जहाँ अछूत कन्याक हिरो अशोक कुमार पहिले पहिल बंबई ऐलापर ठहरल छलाह)। हम सभ अंधेरीक 'प्रकाश' स्टूडियोमे 'कन्यादान'क 'सेट' पर गेलहुँ; ओतय कोबर (इ टक घर) बना क' चूनसँ ढेउरल गेल छलैक। अभिनेत्री सभसँ परिचय कराओल गेल। हीरोइन (लता सिंहा) कुन्ची दाइ, पद्मा चटर्जी (लालकाकी), दुलारी बाई (फुचुक रानी), चाँद उसमानो (विधकरी-बड़कागामवाली), देवी टुनटुन पनिभरनी (मुनिया माय) आदि ठाढ़ि छलीह। लाल काकीकेँ बजबाक छलैन अर्थ मय तों दिन-दिन बहुला भेल जाइ छे" ? परन्तु ई हुनका नहि उभियाइत छलैन। 'छे'क स्थानमे 'छैरह्' भ' जाइ छलैन। ओ लोकनि मैथिली बजबाक कोन कथा कहियो सुननहु नहि छलीह। मैथिली भाषी एक मात्र अमरजी छलाह जे लाल काका बनल छलाह। ओ बारंबार अपन लालकाकी केँ प्रेमपूर्वक सिखा रहल छलाह। आनो आन अभिनेत्रीक मैथिली उच्चारण सम्हारबाक भार हुनके ऊपर छलैन। एकटा भारी समस्या ई आबि गेल जे अभिनेत्री सभकेँ कोंचा लगाक' साड़ी पहिरय नहि अबैत छलैन। मेकअप मैनकेँ सेहो नहि जानल छलैन। तखन अभिनेत्री लोकनिक अनुरोध पर पत्नी हुनका लोकनिक संग ग्रीन रूममे जाय हुनका लोकनिकेँ कोंचा लगाएब सिखा देलथिन। दस दिन हुनका सभक बीचमे रहि खूब घुलि मिलि गेलीह। पटकथा लेखक नवेन्द्र घोष और निर्देशक फनिन्द्र मजूमदार छलाह। ओ सभ अपने मनसँ एकटा खलनायक जोड़ि देलथिन और मारि पीटक तेहेन रास सीन घुसिया देलथिन जे ओ "विनायकं प्रकुर्वाणः रचयामास वानरम्" भ' गेलैक। हमरा सबके बुझा गेल जे ओ हमर उपन्यासक अनुरूप नहि बनि सकत। तथापि हम सभ दस दिन ओतय रहि जहाँ धरि भ' सकल ओकरा सम्हारि शेष भार अमरजी पर सौंपि पटना वापस ऐलहुँ।

हम सभ ओतयसँ आबय लगलहुँ त हमर सभक फोटो (अभिनेत्री सभक संग लेल गेल। बादमे कलाकार सभ आउटडोर शूटिंगक क्रममे जखन पटना अबैत गेलाह त हीरोइन लता सिन्हा आदि हमर रानीघाट आवासमे अबैत गेलीह और पत्नी हुनकालोकनिकेँ प्रीतिभोज देलथिन। ओहि फिल्ममे मैथिली भाषाकेँ यथासाध्य शुद्ध रूपमे सन्निविष्ट करबाक श्रेय अमरजीकेँ रहलैन। एहन संयोग जे १९५५मे हमर 'भवानी मिश्र' नाटकक मंचन (दरभंगा)मे ओ हीरोक रूपमे सफल अभिनय कैने रहथि, तहिना हमर 'कन्यादान' फिल्ममे सेहो प्रमुख भूमिका निभौलनि।

हमर प्रिय शिष्य गोपेशजी (और हुनक पत्नी प्रभावतीजी) सेहो बहुत उत्साहपूर्वक आउटडोर शूटिंगमे कलाकार सभक मार्ग दर्शन करैत अपन योगदान देलथिन। ओ अपन डालुर पुलारपुरसँ दर्शक भार सेहो पठौलथिन जे चित्रपट पर आनुषंगिक प्रदर्शित कैल गेल।

पटना ऐलापर फिल्मी कलाकार सभकेँ चेतना समितिक दिससँ काशनाथ बाबूक ओतय स्वागत-सत्कार भेलैन। जाहिमे विशिष्ट मैथिली प्रेमी विद्वान् सभक आशीर्वचन भेटलैन। तहिना वीणा सिनेमामे यथा समय प्रीमियर शो भेलैक त सहस्रो व्यक्ति देखि क' प्रसन्न भेल रहथि। सरकार दिससँ मनोरंजन करसँ मुक्त क' देल गेलैन। परन्तु प्रेमचंदक गोदान जकाँ एकरा जतेक दिन चलबाक चाही से नहि चललैक से देखि अवसाद भेल। परन्तु संतोष भेल जे कम-सँ-कम चित्रपटक इतिहासमे मैथिलीक नाम आबि गेलैक।

एही बीच १९६६मे रमण जी सेहो कनाडासँ आबि गेलाह। ओ टोरंटो युनिवर्सिटीसँ 'Ayer क Logout Position' पर डाक्टरेट कैने ऐलाह। और राँची युनिवर्सिटीमे रीडरक पद पर प्रोन्नत भेलाह। पुनः अनेको ठामसँ एक सँ एक सुन्दर वैवाहिक प्रस्ताव अबलैन। हम सभ (समस्त कुटुम्ब परिवार) अपना भरि प्रयत्न कैलहुँ जे लखनजी मानि जाथि परन्तु ओ

भीष्म जकाँ अपन सिद्धान्तपर अटल रहलाह; अपनाकेँ दर्शन शास्त्रक सेवामे समर्पित क' देलनि। हम आ हुनकर भाय ओतय अनेक बेर जा क' देखि ऐलिऐन। ओ अत्यन्त स्वागत सत्कार करैत छलाह परन्तु वैवाहिक विषय पर चुप्प रहि जाइ छलाह। हुनका ओ सिद्धता नामले गेलैन।

१९६९मे रमणजीक विवाह बरअंगामे दुर्गाजीक कृष्णानन्द जीक बहिन (वीणा देवी) सँ भेलैन। ओ गामे पर रहैत छलाह। एक साल बाद एक बालक भेलैन—'रमन' सौ जे दुइए वर्षसँ हमरा सभक संग पटना रहय लागल। ओ अत्यंत चंचल छल और हमरा सभमे तेना रितिया गेल जे दूध बताशा जकाँ घुलिमिल गेल। ओ एक बेर (१९७२मे) हेरा गेल छल और अथक प्रयास सँ १० बजे रातिमे एक माइल दूर पर भेटल (प्रायः कोनो बच्चा-चोरक गिरोहमे पड़ि गेल छल)। तहियासँ हमरा सभक जी छनकल रहैत छल। ओकर बाबा सदिखन कंठ लगौने रहैत छलथिन। ओ हमरा बाबा बाबा कहैत दौड़ि क' सभटा काज करैत छल। ओ हमरा सभक संग दिल्ली (१९७३), इलाहाबाद (७४), राँची (७५) सँ भ' आएल।

हमर माय जे कन्याक संग रत्ना-रमाक विवाहमे पटना ऐलीह से एतहि रहि गेलीह। पुतोहु नित्य हाथ धरा क' गंगा स्नान करौने ल' अबैत छलथिन। हुनकर शक्ति दिनानुदिन क्षीण होइत गेलैन। हमरा कहलनि—बौआ! हम मगहमे नहि मरब! आब गामे ल' चलू। जहाँ अहाँक बाप गेलाह ताहि माटिमे हमहूँ जाएब।

अतः १९७१मे (जखन ओ नब्बे वर्षक भ' चुकल छलीह) हम सभ हुनक इच्छानुसार बहुत हिफाजतसँ गाड़ी पर लेटा क' गाम नेने गेलिऐन। तकर ओ किछु दिनक बाद, १९७५मे ९३ वर्षक अवस्थामे स्वर्गीय भ' गेलीह।

ओ परोपट्टामे सभसँ वृद्ध प्रतिष्ठित छलीह। ताहि अनुरूप श्राद्ध भेलैन। ओ मरय काल हमरा हाथ उठा क' स्नेहपूर्वक आशीर्वाद देलनि। पुतोहुकेँ आशीर्वाद दैत कहलथिन—"कनिया! अहाँ हमर बड्ड सेवा कैने छी। अहूँक खातिर बैकुण्ठसँ विमान आओत। आब हम जा रहल छी।" और ई कहैत ओ आँखि मुनि लेलनि। तेहन शांतिपूर्वक जेना कोनो दिव्य धाम जा रहल होथि। ओहि माटि पर अन्त्येष्टि क्रिया भेलैन जहाँ बाबूजी क भेल रहैन।

श्राद्धमे समस्त परिवार कुटुम्बक लोक पहुँचि गेलथिन। माता-पिताक स्नेह केहन होइ छैक से अभावे भेलापर पूर्णतः बोध होइ छैक। बूझि पड़ल जेना आब अनाथ भ' गेल होइ।

१९७५मे हमर कार्यकालक अवधि समाप्त भ' गेल। और ओहि क्वार्टरसँ विदा होमय पड़ल। ओहि आसपास चेतना समितिक विद्यापति पर्व कार्तिक धवल त्रयोदशीमे हमरा ताम्रपत्रसँ विदाइ भेटल छल। जीवनक पचीस वर्ष रानीघाटमे बीतल छल से आब सदाक हेतु छूटि गेल। चलबा काल विद्यापतिक अन्तिम पद स्मरण भ' आयल :—

बड़ सुख सागर पाओल तुअ तीरे।
छोड़इत निकट नयन बह नीरे॥

—

शेष अध्याय

हमरा जीवनक शेष अध्याय आरंभ भेल १९७६ सँ। रानीघाट क्वार्टरक बाद ई समस्या उठल जे आब कतय रही। आन-आन प्रोफेसर लोकनि (जे दूरदर्शी छलाह) सेवा निवृत्ति सँ पहिनहि अपन-अपन सुख-सुविधापूर्ण भवन बनवा लेने छलाह जाहिसँ पर्याप्त किराया सेहो अबैत छलैन। परंतु हमहीटा एकमात्र अपवाद बनल रहि गेलहुँ। हितोपदेशक यद्‌विष्य जकाँ सोचैत रहि गेलहुँ—तदानीं तद्विचन्ता। (समय ऐला पर देखल जैतैक)। कयाक प्लाटमे लागल रहि गेलहुँ तावत मकानक प्लाट अप्राप्य भ' गेल। जमीन साले साल दोबर बढ़ैत पचास हजार रुपये कट्ठा पर पहुँचि गेलैक और बनल मकानक मूल्य आकाश ठेकि गेलैक। तखन अपन मूर्खताक बोध भेल (जे समस्त मूर्खताक मालामे सुमेरुक स्थान ग्रहण क' सकैत अछि)।

यद्धात्रालिखितं ललाट पटले तन्मार्जितुं कः क्षमः।

हारि-दारि क' अथक प्रयाससँ एकटा किरायाक मकान भेटल (महेन्द्रू, टिकिया टोलीमे, जकर परिवेश नामेसँ सूचित होइत अछि)। बूझि पड़ल जे बड़का जहाजसँ एक छोट नाव पर आबि गेल होइ (सेहो क्वार्टरसँ कइएक गुणा बेसी भाड़ा द' क')। ओहि लंकामे एकमात्र विभीषण छलाह हमरा गामक प्रो० योगेन्द्र मिश्र (इतिहास विभागक भूतपूर्व अध्यक्ष) जिनकर पत्नीए (सुशीला देवी) अथक प्रयाससँ अपन 'वैशाली भवन'सँ सटले ओ मकान ठीक क' देने रहथि। पत्नीकेँ अंतरंग संगिनी भेटि गेलथिन और दुनू संग-संग प्रेमपूर्वक हाट-बाजार करय लगलीह। लगेमे चिल्ड्रेन पब्लिक स्कूल छलैक जाहिमे दमनजी (छौ वर्षक एकमात्र पौत्र)क नाम लिखा देलियनि।

ओ खूब उत्साहसँ पढ़य लगलाह। टाइक बना क' देखावय लगलाह। हमरा संग हाट-बाजार जाय लगलाह। दमनजी तेहन चंचल छलाह जे बच्चा सभक लीडर बनि गेलाह। ओ 'बाबा-बाबा' कहैत उत्साहपूर्वक दौड़ि-दौड़ि क' काज करैत छलाह। हमरा सभमे तेना रितिया गेल छलाह जे हम सभ जहाँ-जहाँ (दरभंगा, राँची, प्रयाग, दिल्ली आदि) जाइ छलहुँ, संग लेने जाइत छलिऐन। दादी कंठ लगौने रहैत छलथिन।

ओ एक दिन (२२ जुलाई १९७६) दुखित पड़ि गेलाह। समीपेमे एक प्रसिद्ध वैद्य छलाह। ओ देखि क' कहलथिन—ज्वर छनि, दू-चारि दिनमे उतरि जैतैन। हुनका चिकित्सासँ लाभो होमय लगलैन।

परंतु ओ काल-ज्वर सिद्ध भेलैन। एकाएक २८क रातिमे ओ जोर-जोरसँ चिकड़ि उठलाह, छटपटाइत छिचिआय लगलाह। तुरन्त एमर्जेंसी अस्पतालमे ल' गेलिऐन और दू दिन दू राति धरि लगातार उपचार होइत रहलैन। सूई देल गेलैन, पानि ओ शोणित चढ़ाओल गेलैन, कोरामिन देल गेलैन ·· परंतु ओ जे बेहोश भेला से फेर होशमे नहि ऐलाह। ओ घुरि क' डेरा नहि आबि सकलाह। अस्पतालसँ सोझे गुलबी घाट ल' जाय पड़ल। पहिल अगस्तक सूर्योदय नहि देख सकलाह। ओहि छौ वर्षक सुकुमार बच्चाक कोमल मुखमे अट्ठत्तरि वर्षक वृद्ध पितामहकेँ जरैत ऊक लगावय पड़ले—बज्र बनि एकमात्र पौत्रक अन्त्येष्टि क्रिया करय पड़ल।

दमन जी परिवारक केन्द्रबिंदु छलाह। सभक मनोरंजक खेलौना छल थन। आशा छल जे हुनका संग शेष जीवन आनंदपूर्वक बीतत। परंतु विधाताकेँ से मंजूर नहि भेलैन। ओ निष्ठुरतापूर्वक ओ सहारा छीनि लेलनि।

जीवनक समटा उल्लास छिना गेल। ओहि पर जे हरियर चश्मा लागल छल से धूमिल भ' गेल। जीवनक गाड़ी हास्य-विनोदसँ उतरि करुणाक पटरी पर चलय लागल। मनक शांति लेल ठाम-ठाम घुमलहुँ, परन्तु कतहु शांति नहि भेटल। कतिपय सुहृद बन्धु (सुमनजी, मणिपद्मजी, शेखर जी प्रभृति) विचार देलनि जे समय काटक हेतु आत्मकथा लिखवामे मनकेँ लगा दी। लिखय बैसैत छलहुँ त आँखिमे दमनजीक मूर्ति नाचि जाइ छल—'बाबा आइ वैशाली कॉपी किना देब' ललका पेंसिल आ रबर सेहो'····लिखैत छलहुँ, कटैत छलहुँ···फेर लिखैत छलहुँ, फेर कटैत छलहुँ—कॉपी सभक अम्बार लागि जाइत छल। मानसिक संतुलन नहि रहै छल।

ई भयंकर आघात हमरा घोर नैराश्यवादी बना देलक। जीवन यंत्र-परिचालित जकाँ बुझि पड़य लागल। जे नीक अधलाह घटना घटित होइत गेल, से उदासीन भावसँ ग्रहण करैत गेलहुँ। विगत सात वर्षसँ ओहिना जीवि रहल छी।

एहि अध्यायमे हम डायरीक आधार पर किछु छिटपुट घटना द' रहल छी जाहिसँ हमर अंतिम कालक गतिविधिक (वा विधिक गति) किछु झलक भेटि जायत।

१२-१-७६, लहेरियासराय

मन शान्तिक हेतु एतय आयल छी। फूलादाइ, ओझाजी, भुवनजीक बीच मन किछु दोसर रंग होइत अछि। अमर जी सरस्वती अकादमीमे एक समारोहक आयोजन कैने छथि। मिहिर जी आदि क' ओहिमे ल' जाइ छथि। ओतय बाबू भोला लाल दासजी, सुमनजी, पं० आनन्द झा न्यायाचार्य, पं० रामचन्द्र झा साहित्याचार्य, पं० जीवनाथ झा, पं० उपेन्द्र झा प्रभृति बहुत सहानुभूति प्रदान करै छथि। हमरा कवितो सुनयबाक आग्रह करै छथि। हम आइ भ' सुनयबाक चेष्टा करैत छी—'आब की कविता सुनाउ ?' परन्तु शोकोच्छ्वाससँ कंठ अवरुद्ध भ' जाइ अछि। काव्य-गान करुण-क्रन्दनमे परिणत भ' जाइ अछि। किछु दिनमे पुनः पटना आबि जाइ छी। पुनस्तथैव लम्बितो वेताल:।

५-२-७७, पटना

हमर शिष्या प्रो० सुश्री रमासेन आबि क' हमरा ओ पत्नीकेँ अपन अरविन्द महिला कॉलिजक सांस्कृतिक समारोहमे ल' जाइत छथि। कॉलिज-कन्या लोकनि हमर 'बौआक दाम' (प्रहसन)क अभिनय करैत छथि। बौआक बाप पर्यन्त छात्रा बनि पार्ट करैत छथि। हमर आँखि भरि अबैत अछि। तत्कालीन मुख्यमंत्रीक पत्नी (श्रीमती वीणा मिश्र) पुरस्कार वितरण करैत छथि।

२१-२-७७, जबलपुर

आइ जबलपुर युनवर्सिटीक टेलिग्राम पाबि एतय आयल छी। डॉ० चन्द्रधर शर्मा और शुक्लजी गाड़ी ल' क' स्टेशन पर ठाढ़ छलाह और अपना ओतय ल' गेलाह। हुनक पत्नी (शान्ति देवी) हमरा दुनू गोटाक आतिथ्य सत्कार कैलनि। दोसर दिन शर्माजीक संग विश्वविद्यालय जा ओतय अन्तर्वीक्षाक कार्य सम्पन्न कैलहुँ। तदुत्तर हमरासँ दर्शन शास्त्र पर व्याख्यान कराओल गेल। डॉ० वालिगेतँ सेहो भेंट भेल। हम सभ शर्मा दम्पतिक संग मोटरसँ नर्मदाक जलप्रपात और नौका द्वारा जलविहार कैलहुँ। रातिमे प्रो० श्रीमती छाबड़ाक ओतय भोजनक निमंत्रण छल। श्री हरिशंकर परसाई जी शय्याग्रस्त छलाह तेँ नहि आबि सकलाह। २६केँ हम सभ कावेरी एक्सप्रेस द्वारा साँझमे काशी पहुँचि श्यामा मंदिरमे रात्रिनिवास कैलहुँ। दोसर दिन स्नानादि क' प्रसाद ल' अपर इंडियासँ पटना पहुँचलहुँ।

९-३-७७, दरभंगा

आइ संस्कृत विश्वविद्यालयमे पं० श्री कृष्ण झाक पी० एच-डी० (विद्यावारिधि)क मौखिक परीक्षा (सांख्य दर्शन विषयक) लेलिऐन। श्री परमानन्द शास्त्री ओ पं० कुलानन्द झा सेहो छलाह।

हम पंडित लोकनिकेँ निवेदन कैलिऐन जे मिथिलाक कीर्त्ति नव्य न्यायक आधार ग्रन्थ तत्वचिन्तामणि आब दुष्प्राप्य भेल जाइत अछि और किछु दिनक उपरान्त ओकरा पढ़ाबहुवला नहि भेटताह। अतएव अधिकारी विद्वान लोकनिसँ ओकर सटीक अनुवाद करा क' विश्वविद्यालय वा संस्थानसँ प्रकाशित होमक चाही।

२७-३-७७, पटना

आकाशवाणीमे 'भारती' प्रोग्रामक संयोजक छत्रानन्द जी आबि कवि-सम्मेलनमे ल' गेलाह। ओतय शेखरजी, व्यासजी, गोपेशजी एवं श्रीमती शान्ति सुमनक कविता-पाठ भेलनि। अंतमे हम अपन एकटा गीत—'चारि दिनक जिन्दगी ई, पानि केर बताशा छै' सुनाबय लगलहुँ त भाव विह्वल भ' उठलहुँ। तखन हमर आग्रह पर कवयित्री शान्ति सुमन ओकरा पूरा कैलनि।

२-५-७७, राँची

भोरमे गोपालजीक संग राँची स्टेशन उतरि ललनजीक डेरा (लोअर वर्दवान कम्पाउन्ड)मे ऐलहुँ। अपन दौहित्र अरुणजीक विवाहमे आयल छी। हम सभ साँझमे उमाबाबूकेँ संग ल' जनवासा (डोरण्डा गर्ल्स स्कूल) पहुँचैत छी। भुवनजी आदि ओझाजीक संग दरभंगासँ स्पेशल बस द्वारा आयल छथि। खड़गपुरसँ ओझाजीक समधि राजेन्द्र बाबू तथा अमेरिकासँ ओझा जीक कन्या ओ जामाता (श्रीमती शान्ता ओ श्री देवेन्द्र मिश्र) सेहो आबि गेलथि। रातिमे पं० हरिनन्दन झा (ए० जी० ऑफिस)क कन्या (माला देवी)सँ अरुण जीक शुभ विवाह कार्य सम्पन्न भेलनि।

२८-५-७७, पटना

आइ बिहार रिसर्च सोसाइटीक भवनमे श्रीमती शेफालिका वर्माक कथासंग्रह (स्मृति रेखा)क विमोचन कैलिऐन। ओतय प्रो० सुधाकान्त मिश्र ('बटुक' सम्पादक), व्रजेश्वर मल्लिक जी तथा कतिपय अन्यान्य साहित्यिक बन्धु उपस्थित छलाह।

१७-६-७७, कन्हौली

कन्हौलीक शुक्लजीक मंदिरमे महारुद्र यज्ञक निमंत्रण पाबि एतय आयल छी । ठाकुर बाबू पीताम्बर पहिरने पुजा पर बैसल छथि । पं० मधुकान्त झा तथा अन्यान्य पुरोहितगण वैदिक मंत्र पढ़ि रहल छथि । काशीसँ एक धर्माचार्य तथा एक ब्रह्मकुमारी सेहो प्रवचन देबाक हेतु आयल छथि । दर्शनार्थी सभक मेला लागल अछि । सम्पूर्ण वातावरणमे धार्मिक उल्लास भरल अछि । बूना बाबू आ ब्रह्मकुमारी (प्रायः रानी देवी)मे आध्यात्मिक विषय पर मनोरंजक शास्त्रार्थ भेलैन जे याज्ञवल्क्य-गार्गी संवादक स्मरण करा देलक ।

२८-७-७७, दरभंगा

आइ दरभंगा आकाशवाणी केन्द्रमे मैथिली गप्प गोष्ठीमे सम्मिलित भेलहुँ । हमर 'शास्त्रार्थ' तथा 'सलगम लेबाक प्रायश्चित' पर विनोद वार्त्ता प्रसारित भेल । कविवर अमरजी ओर डॉ० भवनाथ मिश्र जीक मनोरंजक गप्प सेहो भेलैन ।

तदुपरांत हम सभ डॉ० लक्ष्मण झा (कुलपति, मिथिला विश्वविद्यालय)सँ भेंट कय अनुरोध कैलिऐन जे मिथिलाक गौरव मुख्यतः संस्कृत ओ दर्शन ल' क' छैक, परन्तु एही दुनू विषयक स्नातकोत्तर पढ़ाइ एतय नहि होइत अछि । ई केहन विडम्बना थीक ? ओ हमरा एहि उपालम्भक हेतु धन्यवाद देलनि और आश्वासन देलनि जे आब सर्वप्रथम एकरे व्यवस्था कैल जायत ।

१४-८-७७, पटना

मैथिली संस्थानमे 'व्यास'जी द्वारा अनूदित 'विप्रदास' (शरत बाबूक प्रसिद्ध उपन्यास)क विमोचन कैलहुँ । न्यायमूर्ति पं० सुशील कुमार झा, पं० श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार, श्री दीनानाथ झा, पं० हीरानन्द शास्त्री, श्री दमन कान्त झा, जयदेव बाबू, विद्याकर बाबू प्रभृति गणमान्य लोक समारोहमे उपस्थित छलाह । हम 'व्यास'जीक चिरकालीन मैथिली सेवाक सराहना करैत शुभकामना प्रदान कैलिऐन ।

५-९-७७, पटना

आइ स्थानीय राजकीय शिक्षण संस्थानमे उत्साही, सहृदय साहित्य सेवी श्यामाशंकर वर्मा जी द्वारा संयोजित 'कामायनी गोष्ठी'मे कविवर आरसी

जीक जन्मदिवस हमर अध्यक्षतामे मनाओल गेल । हम आरसी जीक अनेक संस्मरण कहि शुभकामना प्रदान कैलिऐन । एहि अवसर पर वर्माजी, प्रवासी जी, कुमुद जी, अकिंचन जी प्रभृति सेहो अपन-अपन उद्‌गार प्रकट कैलनि । वर्माजीक सकल परिवारकेँ साहित्यिक रंगमे रँगल देखि आनन्द भेल । कवि सम्मेलनमे एक नवोदिता प्रतिभाशालिनी कवयित्री सुमन सरीनक शब्द-शिल्प एवं हृदयस्पर्शी भाव मनकेँ विशेष प्रभावित कैलक ।

१८-९-७७, पटना

आइ युवालेखन वर्ग द्वारा आयोजित जीवन-बीमा निगममे एक साहित्यिक समारोह भेल जाहिमे हमर सत्तरिम वर्षक उपलक्ष्यमे शुभकामना प्रदान कैल गेल । ओहिमे नव आ पुरान दुनू पीढ़ीक प्रतिनिधि साहित्यकार उपस्थित छथि । पंडित श्रीकांत ठाकुर विद्यालंकार बाबू लक्ष्मीपति सिंह, प्रि० मदन मोहन झा, पं० दीनानाथ झा, पं० हीरानन्द शास्त्री, पं० सुधांशु 'शेखर' चौधरी, जयदेव बाबू 'व्यास' जी, प्रो० आनन्द मिश्र, गोपेशजी, भीमनाथ जी, प्रभास कुमार चौधरी, गुंजन जी, रवीन्द्र ठाकुर, मोहन भारद्वाज, कुलानन्द जी, सुकांत सोम, अमरनाथ जी, रमानन्द 'रमण' प्रभृति शुभाशंसा प्रकट करैं छथि । हम अपन मैथिली सेवाक प्रसंगमे किछु संस्मरण सुनबैत छिऐन ।

२-१०-७७, जनकपुर

दरभंगासँ पत्नी, फूलबाबू, भुवनजी आ हुनकर एकटा संगीक संग जनकपुर ऐलहुँ । सीताजीक सासुर (अयोध्या), वनवास आ अशोक वाटिका पहिनहि देखि आयल छलहुँ, परन्तु हुनकर नैहरक मंदिर बाँकी छल, से चिर अभिलाषा आइ पूर भेल ।

बंधुवर डॉ० धीरेन्द्रजीकेँ हमर ऐबाक सूचना भेटलैन त ओ सदलबल (राम भरोस कापड़ि प्रभृति साहित्यकारक संग) हमर आवास होटल (हॉलिडे)मे आबि पहुँचै छथि । दोसर दिन अखिल नेपाल मैथिली साहित्य परिषद्, रा० रा० कॉलेज कैम्पस आ आधुनिक नाट्य परिषद्क सम्मिलित तत्त्वावधानमे जानकी मंदिरक विशाल प्रांगणमे हमर मैथिली सेवाक पुरस्कार स्वरूप अभिनन्दन कैल जाइछ । हुनका लोकनिक मासिक पत्रिका 'अर्चना' एवं अन्यान्य मैथिली कृति देखि आनन्द होइछ । सभामे अनेक गणमान्य नेपाली साहित्यकार उपस्थित छथि जे मैथिलीक परम भक्त छथि । पं०

कृष्ण प्रसाद उपाध्याय विद्यापति पदावलीक रूपान्तर कैने छथि, तकर किछु अंश सुनबैत छथि।

रातिमे शुभकांत जीक ओतय शुद्ध मिथिलाक रीतिसँ प्रीतिभोज होइत अछि। हुनका लोकनिक ओहन प्रेम देखि आनन्द होइत अछि।

६-११-७७, पटना

पटना रेडियोमे मध्य गोष्ठीक आयोजन छल जाहिमे हम, पं० हीरानन्द शास्त्री और रमणकान्त बाबू सम्मिलित भेलहुँ। हम उर्दू गजल और संस्कृत छंदक गंगा यमुनी सुनौलिऐ।

२४-११-७७, पटना

आइ चेतना समितिक विचार गोष्ठीक अध्यक्षता कैलहुँ। ओहिमे डा० जयकान्त मिश्र, डा० प्रबोध नारायण सिंह, डा० प्रभावती झा तथा हिंदी, बंगला और उड़ियाक प्रतिनिधि (क्रमशः डा० नवल किशोर गौड़, डा० सेन तथा डा० रथ) प्रभृति आलोचक साहित्यमे नवचेतना पर अपन-अपन निबंध पाठ कैलनि। हमहुँ अपन समन्वयात्मक विचार देलिऐन।

२५-११-७७, पटना

आइ राति चेतना समितिमे कवि-सम्मेलनक अध्यक्षता कैलहुँ। ओहिमे बंधुवर सुमनजी, मणिपद्म जी, गोपेशजी, बुद्धिनाथ जी, गुंजन जी, प्रवासी जी प्रभृति कवि अपन-अपन सरस कविता सुनौलनि।

२५-१२-७७, लहेरियासराय

सरस्वती स्कूलमे 'संकल्प लोक'क समारोहमे विशिष्ट अतिथिक रूपमे आयल छी। आचार्य रामकृष्ण झा (जे हमर विद्यार्थी रहि चुकल छलाह) सभक यथोचित स्वागत कैलथिन। शिक्षामंत्री श्री दिगम्बर ठाकुर, संस्कृत वि०वि०क कुलपति पं० रामकरण शर्मा, मधुपजी, मणिपद्म जी आदि उपस्थित छलाह।

हम एक कविता सुनौलहुँ—'हम आइ आठ संकल्प करब।'

४-२-७८, दिल्ली

साहित्य अकादमीक जेनरल काउन्सिलक मेम्बरक रूपमे एतय आयल छी। एगारह बजे रवीन्द्र भवनमे मीटिंग भेलैक। भिन्न-भिन्न प्रान्तसँ लगभग एक सय विभिन्न भाषा-भाषी उपस्थित छलाह। गुजरातक डा०

उमाशंकर जोशी नव अध्यक्ष निर्वाचित भेलाह। हम मैथिली समितिक अध्यक्षक हेतु बंधुवर डा० जयकान्त मिश्रक नाम प्रस्तावित कैलिऐन जे सर्व-सम्मतिसँ स्वीकृत भेल।

८-३-७८, काशी

एतय काशी विद्यापीठमे दर्शनक प्राध्यापकक नियुक्ति करब आयल छी। कुलपति डा० राजाराम शास्त्रीक संग बैसि कय अन्तर्वीक्षा कैलहुँ।

कार्योपरान्त पुस्तकालयाध्यक्ष पं० तर्केश्वर बाबू हमरा सभकेँ अपना ओतय ल' गेलाह और संकटमोचन, मानस मंदिर तथा दुर्गाकुंड देखबैत डेरा पर (श्यामा मंदिरमे) पहुँचा गेलाह। ओतय बाला बाबू (पं० खुद्दी झाक पुत्र) हमरा 'संस्कृत समस्यापूरणम्' एवं किछु अन्यान्य पुस्तक देखौलनि जाहिमे काशीक प्राचीन प्रसिद्ध पंडित (पं० शिव कुमार शास्त्री, गंगाधर शास्त्री, तात्या शास्त्री, पं० बच्चा झा प्रभृति)क परिचय देल छलैन। ओ सभ आब दुष्प्राप्य भ' गेल छैक और ओकर पुनः प्रकाशन होमक चाही।

१२-३-७८, पटना

आइ एक भयंकर शोक समाचार सुनि स्तब्ध रहि गेलहुँ। सत्यानन्द बाबू एक बस दुर्घटनामे कालग्रस्त भ' गेलाह। ओ कन्याक द्विरागमनमे गाम (पुनह) जा रहल छलाह। परन्तु दैवी विचित्रा गतिः। हुनकर ओ जीवंत हँसैत चेहरा आँखिमे नचैत अछि। आब पटनामे हमरा ओहन स्नेह-पूर्वक 'भाइ' कहयवला नहि रहलाह।

२-५-७८, काशी

एतय संस्कृत युनिवर्सिटीमे प्रोफेसर नियुक्त करबाक हेतु सेलेक्शन कमिटीक सदस्य भ' आयल छी। कुलपति पं० बदरीनाथ शुक्ल और चन्द्रधर शर्माक संग बैसि दस-बारहटा पंडितक संस्कृतमे इन्टरव्यू लेलिऐन। मिथिला शोध संस्थानक प्रो० गोस्वामीक नाम अनुशंसित कैलिऐन। प्रो० संगम लाल पाण्डेय हमरासँ भेंट करय (श्यामा मंदिरमे) ऐलाह। प्रो० आनन्द झा न्यायाचार्य, पं० अनूपलाल ठाकुर, प्रो० दिनेशचन्द्र गुहा प्रभृति सेहो। दोसर दिन हम प्रो० पांडेय जीक संग जा क' अपन Trends of Linguistic Analysis in Indian Philosophy क पांडुलिपि रायल्टी एग्रीमेंट कराय

प्रकाशनार्थ चौखम्भा ओरिएंटेलियाकें देलिऐन। पटनी चौक पर भुवनजीक भावी कनियाक हेतु वियाहुता बनारसी साड़ी एवं अन्यान्य वस्तु कीनि लेलहुँ।

२१-५-७८, सहरसा

आइ भुवनजीक शुभ विवाह पं० सदाशिव खाँ (डिप्टी कलक्टर)क कन्या पुष्पा देवीसँ भेलैन। हम सभ किछु गोटा (गोपालजी आ हुनकर तीनू कन्या, लखनजी, भीमनाथ जी प्रभृति) पटनासँ बरियातमे अयलहुँ तँ दरभंगासँ ओझाजीक संग अमल, चन्द्र, गणेशजी आदि सम्मिलित भेलाह। जनवासा एकटा लगक स्कूलमे छलैक। हमर रहबाक प्रबंध ओझा जीक बहनोइ प्रो० जवाहर झाक ओतय छल। शुभकार्य नीक जकाँ सम्पन्न भेल।

दोसर दिन हम ओतसँ वनगाम, महिषी जा बाबा लक्ष्मीनाथ गोसाईं और उग्रताराक मंदिर दर्शन क' ऐलहुँ। मंडन मिश्रक इनार और राज-कमलक घर सेहो। ओहिठाम हृदयमे जे भावना उमड़ल से पद्यमे व्यक्त कैलहुँ जे 'मिथिला मिहिर'मे (९-७-७८) प्रकाशित भेल।

१९-७-७८, पटना

आइ बधुवर मणिपद्म जी ऐलाह। सरस साहित्यिक चर्चा चलय लागल। पटनी बाड़ीसँ हरिहर बालि तोड़ि-ओराहि हमरा सभक आगाँ राखि देलनि। एही बीच सुमन सदीन आबि गेलाह और हमरा सभकेँ वर्माजीक 'कामायनी' गोष्ठीमे ल' गेलाह जहाँ कविवर जानकी वल्लभ शास्त्रीक अभिनन्दन कैल गेलैन। हमहूँ सभ हुनकर संवर्धना करैत अपन शुभोद्गार प्रकट कैलिऐन। शास्त्री जी अपन ओजस्वी भाषण एवं कवितासँ सभकेँ मुग्ध क' देलनि। उमाशंकर वर्मा (संयोजक) सभकेँ धन्यवाद प्रदान कैलथिन।

५-१०-७८, लखनउ

एतय लखनऊ युनिवर्सिटीमे दर्शन शास्त्रक रीडर नियुक्त करबाक लेल आयल छी। ओहि कमीटीमे दिल्लीक प्रो० बहाउद्दीन, कर्नाटकक प्रो० शाह, कुलपति डा० मिश्र, विभागाध्यक्ष सुश्री रूपरेखा वर्मा सेहो छलीह।

ओतयसँ मोटर द्वारा उन्नाव गेलहुँ जतय हमर भतीजी रमा रहैत छलीह। हमरा देखि ओ सभ उल्लसित भ' उठै छथि। रमा तुरन्त हाटसँ माछ मँगाय तरय लगैत छथि। बच्चा सभ हमरामे रमि जाइत अछि।

ओझाजी और बच्चा सभक संग निराला पार्क देखय जाइत छी। ओतय 'निराला' जीक भव्य संगमरमर-प्रतिमा स्थापित छैन। 'निराला' कविनाक जीक आधार पर निर्मित 'वह तोड़ती पत्थर, इलाहाबाद के पथ पर' पर्यन्त कलापूर्ण मूर्ति देखबामे अबैत अछि। अपन साहित्यकारक प्रति स्नेह-सम्मानक एहन सुन्दर अभिव्यक्ति देखि मन मुग्ध भ' जाइत अछि।

१३-१०-७८, दरभंगा

साहित्य अकादमीक मैथिली समितिक मीटिंगमे आयल छी। संगमे भीमनाथ जी और पं० गोविन्द झा सेहो छथि। हम सभ ओझाजीक ओतय (बंगाली टोलामे) ठहरल छी। संस्कृत विश्वविद्यालयक भवन (आनन्द बाग)मे बैसक छैक। यथासमय सभ गोटे ओझाजीक संग जाइ छी। ओतय डा० जयकान्त मिश्र (संयोजक), सुमन जी, मणिपद्म जी, मायानन्द जी, रमाकान्त जी तथा श्रीमती नीरजा रेणुसँ भेँट होइत अछि। मैथिली साहित्यमे प्रगति अनबाक हेतु अनेको प्रस्ताव पारित होइत अछि।

१३-११-७८, पटना

आइ चेतना समितिक विद्यापति जयंतीमे कवि सम्मेलनक अध्यक्षता करैत छी। श्री किरणजी, सुमनजी, मणिपद्मजी, व्यासजी मायानन्दजी, गोपेशजी, गुंजनजी, सोमदेवजी, श्रीमती शांति सुमन प्रभृतिक सुंदर सरस कविता होइत छैन। हमहूँ एकटा गजल गाबि सुनबैत छी—

कहू की औ बाबू, किछु नहि फुरैए
ई युग देखै छी, छगुंता लगैए।

(ओ चेतनाक मंच पर प्रायः हमर अंतिम कविता अछि)।

१५-१२-७८, पटना

एखन डेरामे एकसरे छी। भुवनजीक माय और कनिया दरभंगा छथि। गोपालजी रहिकाक विद्यापति पर्वमे गेल छथि। एतय केवल बहादुर अछि। प्रातःकाल गंगा कात टहलय जाइत छी। एकाएक विचित्र कम्पन होइ अछि। पैर तलमलाय लगैत अछि। आँखिक आगाँ अन्हार भ' जाइ अछि। ठामे खसि पड़ैत छी। छात्रावासक किछु छात्र (अमरनाथ प्रभृति) रिक्शा पर लड़ा डेरा लैने अबैत छथि। डा० अशोक कुमार ठाकुर देखि कहैत छथि जे 'पार्किंसन' बीमारी अछि। दवाइ लीखि दैत छथि और राय दैत छथि जे आब बकसर बाहर नहि जाइ।

२६-१-७९, पटना

आइ यशस्वी युवा उपन्यासकार प्रभास कुमार चौधरीक सद्यः प्रकाशित उपन्यास 'नवारम्भ'क विमोचन करैत छी। हम हुनक संवेदनशीलता आ कथाशिल्पक सराहना करैत शुभाशीर्वचन दैत छिऐन। समारोहमे पं० दीनानाथ झा (अध्यक्ष), पं० श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार, पं० हीरानन्द शास्त्री, श्री मंत्रेश्वर झा, जयदेव बाबू, गोविंदजी, गोपेशजी, दमनकान्त बाबू, आरसी जी, भीमनाथ जी, अमरनाथ जी प्रभृति सेहो अपन शुभोद्‌गार प्रकट करैत छथि।

८-२-७९, पटना

ज्ञात भेल लखनजी अखिल भारतीय दर्शन परिषद्‌क विभागीय अध्यक्षक रूपमे हृषीकेश गेल छलाह। ओतय पैर फिसलि खसि पड़लाक कारण चोट अयलैन तथा हाथमे प्लास्टर लगाओल गेलैन। राँचीसँ ओ लिखैत छथि जे आब कोनो चिंताक बात नहि ताहिसँ मन आश्वस्त होइत अछि।

१५-२-७९, पटना

आइ काल रात्रि छल। आधा रातिमे एकाएक तीव्र ज्वर ओ कँपकँपीसँ बेसुधि भ' गेलहुँ। डाक्टर (ठाकुर जी) कखन ऐलाह आ गेलाह से नहि बुझलिऐन। राति भरि अचेतन अवस्थामे पड़ल रहलहुँ। रक्तचाप बहुत बढ़ि गेल अछि। तकर दवाइ देल जा रहल अछि। ई कालक दोसर चेतावनी अछि।

१६-३-१९७९, पटना

एकटा दुखद समाचार भेटल जे हमर एक समवयस्क साहित्यिक बाबू लक्ष्मीपति सिंह स्वर्गीय भ' गेलाह। हम हुनक संस्मरण लिखलहुँ जे मिथिला-मिहिर (१-३-७९)मे प्रकाशित भेल।

३०-३-७९, पटना

आइ बर्सातिक 'कामायनी' संस्थामे प्रसिद्ध लेखक विष्णु प्रभाकर आयल छथि जे शरत बाबूक कृतित्व पर एक बृहत ग्रंथ (आवारा मसीहा) लिखने छथि। ओ शरत साहित्यक अनेको पात्र-पात्री (विशेषतः राजलक्ष्मी)क विषयमे अनेको नव रोचक बात कहि सुनौलनि।

१०-६-७९, पटना

आइ हमर चिरकालीन साहित्य सेवाक उपलक्ष्य स्वरूप राजभाषा विभागक दिससँ रवीन्द्र भवनमे मुख्यमंत्रीक हाथसँ मान-पत्र, रेशमी चादर और ५०१) पुरस्कार भेटल। साठि वर्षसँ उपरवला शताधिक वरिष्ठ साहित्यकारकेँ एहि तरहेँ सम्मानित कैल गेलैन। कतिपय अपनोसँ ज्येष्ठ वयोवृद्ध (पं० छविनाथ पांडेय, वियोगी जी, प्रभात जी, केसरी जी, शतीश बाबू, विश्वमोहन बाबू, पं० बदरीदत्त शास्त्री, पं० रामानन्द शर्मा प्रभृतिकेँ) देखि संतोष भेल जे एखन 'क्यू'मे हमरोसँ आगाँ किछु बन्धु छथि।

३०-१०-७९, पटना

मिथिलाक प्रसिद्ध नवोदिता गायिका शारदा सिन्हा अपन पतिक संग अयलीह। रातिमे दस बजे धरि मैथिली संगीत गोष्ठी चलैत रहल, जाहिमे आनन्द जी सेहो पहुँचि गेलाह। गोपालजी आ हुनक संगी सभ (भीमनाथ जी, मोहन भारद्वाज, कुलानन्द जी, विनोद जी, प्रभास जी, प्रभृति) सेहो आबि क' आनन्द लेलनि। सुभद्राजी सभक आतिथ्य सत्कार कैलथिन।

१९-११-७९, पटना

आइ चेतना समितिक महिला शाखाक अध्यक्ष श्रीमती शैव्या झा विद्यापति भवनमे हमर अभिनन्दन समारोह कैलनि। शैव्याजी चेतनामे नारी जागरणक इतिहास अपन 'विवरणिका'मे प्रकाशित कैने छथि जाहिमे हमर दुनू गोटाक योगदानक उल्लेख अछि। हम ताहि दिनक बहुत रासे मनोरंजक संस्मरण सुनौलिऐन।

२०-१२-७९, पटना

सायंकाल मैथिली अकादमीक निदेशक 'व्यास'जी गाड़ी ल' क' अयलाह आ मैथिली अकादमीक गौरीनाथ व्याख्यानमालामे ल' गेलाह। ओतय म्यूजियम भवनमे हमर अध्यक्षतामे प्रो० श्रीकृष्ण मिश्रक भाषण (संस्कृत समीक्षाक दृष्टिसँ मैथिली काव्यक विवेचन) भेलैन। प्रिंसपल मदन मोहन झा, प्रो० जयमन्त मिश्र, पं० परमानन्दन शास्त्री, जयदेव बाबू, गोपेशजी प्रभृति विचारमे भाग लैत छथि।

हम भिन्न-भिन्न विचार धाराक समन्वय करैत छी। सभामे श्री जयनाथ बाबू अपन समस्त परिवारक संग उपस्थित छथि। हम सभ स्व० गौरी

वासुक (जे हमर शिष्य छलाह् और जिनका नाम पर व्याख्यान माला आयो-जित छल) चित्र पर माल्यार्पण करैत छिऐन। व्यासजी सभकें धन्यवाद प्रदान करैत छथि।

२०-१-८०, पटना

प्रो० वासुकी नाथ झा पटना कॉलेजमे डा० सुभद्र झाक भाषण (मैथिली आ संतालीक तुलना) मे अध्यक्षता करक हेतु ल' गेलाह्। सभामे व्यासजी, परमानन्द शास्त्री, गोपेशजी, कपिलेश्वर जी प्रभृति छलाह्। प्रो० आनन्द मिश्र सभकें धन्यवाद प्रदान कैलनि।

२३-४-८०, पटना

आइ चेतना समितिक प्रबुद्ध महिला वृन्द द्वारा विद्यापति भवनमे आयो-जित जानकी नवमी मे सपरिवार सम्मिलित भेलहुँ। श्रीमती शैव्याजी, प्रभावतीजी, शकुन्तलाजी, कविताजी, वीणाजी आदिक भाषण भेलनि। श्रीमती प्रेमलता, वैदेही, विभा, मंजु आदि छोटी विवाहक गीत गौलनि जाहिसँ शुद्ध मिथिलाक वातावरण बनि गेल।

बंधुवर जयदेव बाबू, अनिरुद्ध बाबू, आनन्द जी, गोविन्दजी, गोपेशजी, रवीन्द्रनाथ जी प्रभृति अपन-अपन उद्‌गार प्रकट कैलनि।

हम सीताजीक प्रति अपन श्रद्धांजलि अर्पित करैत मिथिलाक माटिक बेटी सभकें संबोधित करैत कहलिऐन जे ओ सभ तिलक-दहेज रूपी धनुषकें जे तोड़ि सकताह्, तिनके वरण करथु। एहि पर ओतय उपस्थित सभ कन्या हाथ उठा क' अनुमोदन कैलनि। ई देखि आनन्द भेल जे आब तिलकासुर मर्दिनी भवानी जागि रहल छथि।

जुलाइ १९८० सँ जुलाइ १९८१, पटना

लिखैत-लिखैत अकस्मात आँखि मुना जाइत अछि। लगैत अछि जेना हम ऊपर उड़ल जा रहल छी⋯ऊपर आर ऊपर⋯कहाँ ल' जा रहल अछि? कानमे विभिन्न स्वर सुनाइ पड़ैत अछि—'अयँ, ई की भ' गेलनि?⋯डॉक्टर, अस्पताल, इमर्जेंसी, एम्बुलेंस⋯हड़हड़-खटखट⋯फुर्र। तकरा बाद शून्य घुप्प अंधकार। पता नहि कतेक दिन अचेत रहैत छी। क्षणिक चैतन्य अबैत अछि, भगजोगनीक प्रकाश जकाँ। पत्नीकेँ देखि पुछैत छिऐन—'हम कहाँ छी⋯काशीमे कि प्रयाग? ओ कहैत छथि—पटनेमे छी, इन्टेन्सिव केअर

युनिटमे। डाक्टर मना करैत छथिन—एखन डिलिरियम मे छथि⋯बेसी नहि बजबियौन। गोपालजी, लखन जी, रमनजी, भुवनजी, फूलबाबू सभ सेवामे लागल छथि। क्यो दवाइ लाबय जाइ छथि, क्यो फल लेने अबैत छथि⋯केओ भरसाहा द' क' बैसल छथि। पुनः बेहोशी। फेर एलग लागि जाइ अछि।

दू-चारि मोटे सीरम लग ठाढ़ छथि। डा० अशोक कुमार ठाकुर, ओझाजी, चौधरी जी—सभ नहुँ-नहुँ गप्प क' रहल छथि—आइ पाँच दिन पर बेहोशी दूर भेलैन अछि। एखन बहुत हिफाजतिक जरूरत छैन।

कतेको लोक पुछारी करय अबैत छथि। किनको किनको चीन्हि जाइत छिऐन—बंधुवर सतीश बाबू, अनिरुद्ध बाबू, व्यासजी⋯। गोपेश जी अख-बार पढ़ि क' सुनबैत छथि—अपनेक बीमारी दिस सरकारक ध्यान आकृष्ट भेलैक अछि। मुख्य मंत्रीक आदेश छनि जे चिकित्सा मे कोनो त्रुटि नहि रहि पावय। कतिपय मंत्रिमंडलक सदस्य सेहो जिज्ञासा मे अबैत छथि। घोषणा होइत अछि जे हमर चिकित्साक व्यय भार सरकार करत, परन्तु ओ कार्यान्वित होयबाक पहिनहि अस्पताल सँ डिस्चार्ज सर्टिफिकेट भेटि जाइत अछि।

अशोक बाबू बराबर पुछारी क' जाइत छथि—'मामा, आब केहन हाल? हम कहैत छिऐन—अहाँ शोक हरण छी, तेँ हमरा कोमे टा रहल, फुलस्टॉप नहि पड़ल। बूझी त हमर एके डॉक्टर अहाँ छी ए० के०। ओ मुस्कुरा क' कहैत छथि—आब डेरा जा सकैत छी। ओतय किछु-किछु चलैत-फिरैत रहब।

हमरा आश्चर्य लगैत अछि। एखन तँ हम पलंग पर अपने सँ करौटो नहि फेरि सकैत छी, अपना पैर पर ठाढ़ भ' क' चलि कोना सकब? परन्तु ओ आश्वस्त क' दैत छथि।

८ जुलाइ कें हम जहिना एम्बुलेंस पर आयल रही, १८ कें डेरा वापस जाइ छी। ओहि तमिस्र कोष्ठ सँ बाहर अबितहि सूर्यक प्रकाशमे आँखि चौन्हिया जाइ अछि। स्ट्रेचर मे चारू भाइ कान्ह लगौने छथि, परन्तु ओ खाट नहि, घरमे ल' अबैत छथि।

घोर अरुचि भ' गेल अछि। रतना पुछै छथि—ककाजी, माछूर माछ

खैवाक मन होइत अछि ? ओ अपना घरसँ माछ बना क' लबैत छथि। फूलदाइ गामक कुम्हरौरी लेने आयलि छथि। ओ रुचि खोलि दैत अछि।

एक-दू मासक निरन्तर औषध सेवन, विश्राम एवं पथ्य भोजन सँ शरीर एहि योग्य भ' जाइत अछि जे स्वयं ठाढ़ भय दस-बीस डेग चलि बाथरूम जा सकैत छी। लोक सभ कहैत छथि जे हमर पुनर्जन्म भेल अछि। अपनहुँ बुझि पड़ैत अछि जे यमक द्वार पर जाक' फीरि आयल छी।

परन्तु एखन दुःखक अन्त नहि भेल छल। डॉक्टरक राय भेलैन जे हमर आँखिक ऑपरेशन सेहो शीघ्र भ' जायब जरूरी अछि। नेत्र विभागक केबिन मे भर्ती भेलहुँ। ४ नवम्बर केँ सुप्रसिद्ध नेत्र-विशेषज्ञ डा० ए० एन० पांडेय मोतियाबिन्दक ऑपरेशन कैलनि। साधारणतः लोक एक सप्ताहमे ठीक भ' जाइ अछि। परन्तु हमरा ओहू मे विपत्ता खनिहया गेलाह। बैंडेज खोलिते डाक्टर चौंकि गेलाह—"सर्वनाश ! आँखि मे एतेक शोणित कहाँ सँ आबि गेल। अहाँ निश्चय खखोरि लेने हैबै। आब भगवानक भरोस।" स्वास्थ्य मंत्री (उमेश्वर वर्माजी) जिज्ञासा मे अबैत छथि। डॉक्टरकेँ कहैत छथिन—कहुना आँखि बचा लियौन। पांडेय जी बजैत छथि जे ओ अपना भरि प्रयत्न करताह परन्तु फल तँ भगवानेक हाथमे छैन।

दोसर दिन बैंडेज खोलैत देरी डाक्टर आश्चर्य चकित भ' गेलाह—अरे ! ओतबा रातो शोणित कोना सुखा गेलै ? भगवानक लीला। आब अहाँक आँखि बाँचि जायत। परन्तु फेर नोचि नहि लेबै।

एकर भार लखन जी अपना उपर लैत छथि। ओ छौ बजे साँझ सँ लय छौ बजे भोर धरि तौरम मे बैसल रहै छथि। जहाँ कनेको हाथ सुगबुगाय लगैत छल वा दखिन करौट फेरय लगै छलहुँ कि ओ ध' लैत छलाह। हुनकर एहन साधना देखि सभकेँ आश्चर्य लगैत छैक। लगभग एक मास केबिनमे रहैत छी। पत्नी राति-दिन संग रहि परिचर्या करैत छथि। हरियर पट्टी लगौने डेरा अबैत छी। तदुपरान्त एक मासक बाद लैंसक जाँच क' चश्मा भेटैत अछि।

अगस्त १९८१ सँ फरवरी १९८२, पटना

विपत्तिक समाप्ति नहि भेल अछि। लगातार वर्ष दिन धरि अहर्निश परिचर्या करैत-करैत पत्नीक स्वास्थ्य खड़ि पड़ैत छनि। राति-दिन जागि

बातु पर औतेक सेवा करैत रहलीह तकर परिणामस्वरूप स्नायुविक दुर्बलता सँ ग्रस्त भ' शय्यागत भेल पड़लि छथि। ठाढ़ होइते चक्कर आबय लगैत छनि आ किछु खा नहि होइत छनि। आब हमरा अपनो सँ बेसी हुनके चिन्ता भ' रहल अछि। समस्त परिवारक लोक (चारू बेटा, तीनू जमाय, तीनू कनियाँ फूलदाइ, रत्ना, रमा) हुनका हेतु चिंतित छथिन। नाना प्रकारक उपचार चलि रहल छनि। तखन जेहन ईश्वरेच्छा। के पहिने जायत तकर निश्चय नहि।

विगत डेढ़-दू वर्ष सँ लगातार सङ्कट पर संकट हमरा घोर नियतिवादी (और नैराश्यवादी) बना देने अछि। अपना शक्तिमे आस्था नहि रहि गेल अछि।

१९८० (२ जुलाइ)क बाद जे हम जीवि रहल छी से लगैत अछि जेना किछु दिनक एक्सटेन्शन वा डेज ऑफ ग्रेस (अनुदान) भेटल हो। कतबा दिनक हेतु से पता नहि। ई परिशिष्ट जीवन केहन बीतत सेहो पता नहि। आब फेर कहियो ओ बहारक दिन आनन्द-विनोदक क्षण आबि सकत तकर आशा कम्मे अछि।

एहि बीच हमर 'ट्रेन्ड्स ऑफ लिंग्विस्टिक एनालिसिस' छपिक' आबि गेल अछि। अपन अंतिम कृति आत्मकथा (जीवन यात्रा) जकर चारिटा फर्मा एखन छपल अछि, सेहो अपन जीवन यात्रा सँ पहिने प्रकाशित देखि ली त संतोष हैत।

मार्च १९८२ सँ······

१८ मार्च ८२ केँ हम सभ दोसर कियायाक मकानमे भिखना पहाड़ी मोहल्ला (धरहरा कोठी रोड)मे आबि गेलहुँ। भुवनजी दरभंगा सँ आबि सभ संतलत लगा जाइत छथि। ई डेरा बरसातक दृष्टिसँ असुविधगर होइताहुँ हवादार छल। ज्ञात भेल जे बगलेमे स्वर्गीय राजकमल रहैत छलाह।

पत्नीकेँ कष्ट बढ़ले जाइत छनि। साँस लेबामे दिक्कत होइत छनि। डॉ० ठाकुर एक्सरे लेलथिन जाहिसँ पता चललै जे फेफड़ामे पानि भरल छनि। दूइ बेरि पानि निकालल गेलनि मुदा फेर तुरन्ते भरि जाइन। तखन हुनका भयंकर रोग (कैंसर)क संदेह भेलनि आ कहि देलथिन जे ई बीमारी हुनकर सेज सँ बाहर छैन।

डा० रंगीक कीमोथेरापी चल' लगलैन। खैनाइ कम होइत-होइत नाम

मात्रक रहि गेलनि-सेहो उल्टी भ' जायनि । सभ गोटे विवशतापूर्वक हुनका शनैः-शनैः कालक मुँहमे जाइत देखैत रहलथिन । बेटा-बेटीक अलाव देवाविनी, रत्ना, रमा, सुभद्रा दाइ सभ गोटे आबि सेवा करैत रहलथिन । गोपालजी एकटा एलेक्ट्रोपैथ आ तदुपरांत एक वैद सँ सेहो देखौलथिन । परन्तु हालत मे सुधार नहि भेलनि । आब ओ स्वयं उठि-बैसि क' अपन परिचर्या करबा मे असमर्थ भ' गेलीह । दू गोटा धरा क' बाहर ल' अबैत, फेर ल' जायनि । बेचैनी बढ़िते गेलनि ।

१८ अप्रैलकेँ मैथिली गोष्ठी (सैदपुर) दिस सँ सीनेट हॉल मे हमर अभिनन्दन कैल गेल ।

२२ मइकेँ बिहार राष्ट्रभाषा परिषदक दिससँ कतिपय वयोवृद्ध हिन्दी सेवीक संग हमरो दस हजार टाका पुरस्कार भेटल ।

२६ जूनकेँ मैथिली अकादमी दिससँ अन्यान्य वयोवृद्ध मैथिली सेवीक संग एक हजार एक टाका पुरस्कार प्राप्त कैलहुँ ।

जीवन सम्पत्ता-विपत्ताक खिस्सा अछि । एक दिन हँसी त दोसर दिन रुदन । एक दिन पुरस्कार त दोसर दिन दंड आ से भगवान तेहन दंड देलनि जे सभ हँसी छिना गेल ।

रक्षा बंधन दिन हम पत्नीकेँ राखी बान्हि देलिऐन त ओ बजलीह—आब हमरा जीवाक आशीर्वाद नहि दिअ' । हमर शरीर पराश्रित भ' गेल, एहन जीवन जीविक' की करब । हमर मोह छोड़ि दिअ' ।''''

तकरा बादे हुनक वाक् बन्द भ' गेलनि ।

५ ता० केँ ओ कोमा मे आबि गेलीह और १४ अगस्त केँ १० बजे रात्रिमे सर्वदाक हेतु विदा भ' गेलीह । चेहरा सौम्य-प्रफुल्ल रहनि जेना सूतल होथि । भोरे चारू भाइक संग मैथिल गोष्ठी वला सभ कान्ह पर ल' गेलथिन ।

हुनका चलि गेलाक बाद हम एकसर भ' गेलहुँ । गोपालजीक सेहो ट्रांसफर दरभंगे भ' गेलनि त सभक विचार सँ पटनाक डेरा उखाड़ि लहेरिया-सराय आबि गेल । लहेरियासराय मे ओझाजीक लगमे एकटा डेरा भुवनजी ठीक क' रखने छलाह । मुशाफिर जकाँ हम चलि देलहुँ ।''''

अपना जीवन पर दृष्टिपात करै छी त एकटा खेल जकाँ बूझि पड़ैत अछि । लगैत अछि जेना एहि जीवन लीलाक सृष्टिकार [जे सभसँ महान् कथाकार छथि] हमरा मुख्यतः हास्य-विनोदक पोर्टफोलियो द' क' एहि नाटकशालामे पठौने होथि । किछु दिन और पार करबाक [वा देखबाक] बाँकी अछि । तकरा बाद यवनिका पात !

क्षण बालो भूत्वा क्षणमपि युवा काम रसिकः
क्षणं वित्तैर्हीनः क्षणमपि च संपूर्ण विभवः
जराजीर्णैरंगैः नट इव वलीमंडित तनुः
नरः संसारांके विशति यमधीनां जवनिकाम् ।

एतबा रास 'आत्मकथा' लिखलाक बाद हम सोचैत छी जे ई 'आत्मा' के थिकाह जिनकर कथा हम कहने छी । ई त वैह परि भेल जे सौंसे रामायण पढ़ि गेलहुँ, सीता किनकर बाप ?

सर्वप्रथम तँ ई प्रश्न उठैत अछि जे 'आत्मकथा'क अर्थ की ? यदि एकर अर्थ होइक अपन (आत्माक) कथा त भारी ओझराहटि ! जाहि आत्माक विषयमे उपनिषद्, गीता, वेदान्तक एतेक रास विवेचन कैल गेल छैन (जे आजीवन पढ़ैत-पढ़बैत ऐलहुँ अछि) ताहि आत्माक साक्षात्कार अद्यावधि नहि भेल अछि । तखन हम ककर कथा कहि रहल छी ? हम ककरा 'हम' नामसँ अभिहित क' रहल छी ? हम छी के ?

ई प्रश्न उपर सँ जेहने सोझ लगैत अछि, भीतर सँ तेहने जटिल अछि । रेशाक भीतर रेशा ठेक--प्याज जकाँ छोहैत जाउ और भीतर मे नव-नव परत भेटैत जायत । अंतमे की हाथ लागत ? शून्य ।

पुनः मूल प्रश्न पर आउ । हम के छी ? कोऽहम ? पचास वर्ष सँ चर्पट पंजारिका स्तोत्र पढ़ैत आबि रहल छी कस्त्वं कोऽहम कुतः आयातः । परन्तु एकर स्पष्ट उत्तर नहि भेटैत अछि । वेदान्ती कहैत छथि—आत्मानं विद्धि [अपनाकेँ जानू] । परन्तु कोना जानू ? कतबो श्रवण, मनन निदिध्यासन कैने आत्मदर्शन नहि होइत अछि । जहाँ कहब जे पर्याप्त साधन [शम दम यम नियम तितिक्षा उपरति श्रद्धा समाधान विवेक वैराग्य मुमुक्षुत्व ईश्वर प्राणिधान आदि] प्राप्त करू तखन आत्मज्ञान [वा ब्रह्म ज्ञान] हैत । अर्थात् 'हम के छी' से जनबाक हेतु भरि जन्म तपस्या करैत रहू, योगाभ्यास

करैत रहू, तखन जा क' बोध हैत जे हम के छी। और यदि ताहू पर आत्म-बोध नहि हो त बूझब जे साधनामे कनेनु त्रुटि रहि गेल अछि। धन्य छी महाराज! हम भरि जन्म अपन नीक मुँह बंद करैत रहू तथापि अपनाकेँ चीन्हि सकब वा नहि तकर गारंटी नहि।

'कोऽहम्' प्रश्नक उत्तरमे अद्वैतवादी कहैत छथि 'सोऽहम्' [अर्थात् हम वैह छी)। ई और बनल। वैह के? परमात्मा! तखन कि हम परमात्मा छी और वैह परमात्मा अपन कथा लिखलनि अछि [वा लिखबौने अछि] ? किछु विशिष्ट द्वैत वादी 'सोऽहम्' मे एक अक्षर जोड़ि दैत छथि---'दासोऽहम्' (अर्थात हम दास छी)। परन्तु अभेदवादी केँ ई दासता पसिन्न नहि। ओ एक और अक्षर जोड़ि क' कहैत छथिन—'सदासोऽहम्'। परन्तु भक्ति पक्षवला नम्रतापूर्वक एक और अक्षर जोड़ि दैत छथिन---'दासदासोऽहम्'।

हजारो वर्ष सँ एहन-एहन वाद-विवादक युद्ध होइत आबि रहल अछि, परन्तु आइ धरि कहाँ किछु फारछायल अछि। बड़का-बड़का दार्शनिक आजीवन आत्मचिंतन करैत रहि गेलाह जे हम के छी, मोट-मोट ग्रन्थ लिखि गेलाह, परन्तु कहाँ कोनो अंतिम निष्पत्ति पर पहुँचि सकलाह ?

अंतमे जेना अपना ओतय अनिर्वचनीय, अकथनीय, नेति-नेति—तहिना पाश्चात्यो दर्शनमे Unknowable (अज्ञेय)। एकबेर प्रख्यात दार्शनिक शोपेनहावर केँ कोनो बगीचाक रखबार पुछलथिन—Who are you? (अहाँ के छी?)। ओ चट ओकरा भरि पाँज ध' लेलथिन—'भाइ रे भाइ! यैह बात तँ हम आजीवन सोचैत ऐलहुँ अछि। तोँही कहि दे जे हम के छी। बड़ गुण मानबौ।' बड़का-बड़का वैज्ञानिक चन्द्रलोक पर पहुँचि गेलाह परंतु ओ स्वयं के थिकाह, से नहि जानि सकलाह। Agnosticism [अज्ञेयवाद] क सोझ-सोझ अर्थ जे हम नहि जनैत छी—कोनो थाह पता नहि लगैत अछि।

तखन हम के छी, ककर कथा लिखलहुँ अछि। सभ सँ बेसी चिन्हार छथि ई शरीर जे पचहत्तरि वर्षसँ संग छथि। कहियो एक हाथक गोलगिड छलाह। ठेहुनियाँ दैत छलाह आ 'बौआ' कहबैत छलाह। क्रमशः जवान ओ प्रौढ़ होइत गेलाह---'बाबू' कहाबय लगलाह। और पुनः ठेहुन ध'क' उठय लगलाह अछि—'बाबा' कहबैत छथि। ई नाना प्रकारक दुःख-सुख

भोगैत (वा भोगबैत) ऐलाह अछि (नहि जानि और कतेक दिन धरि कतेक रास भोगबैत रहताह)। जखन ई स्वस्थ रहैत छथि त मित्र प्रतीत होइ छथि जखन कोनो मशीन क कल-पुर्जा भकठि जाइछ त शत्रु बनि जाइत छथि।

हम अपना विषयमे जे बजैत छी से प्रायः अधिकतर हिनके पर लागू होइ छैन। जेना, हमर जन्म १९०८ ई०मे भेल। हम डेढ़ मन छी। हम टहलय जाइ छी इत्यादि। तखन हम जकरा 'हम' कहैत छिऐक से के थीक? ई शरीर? अर्थात् हम जे आत्मकथा लिखैत छी से एहि शरीरक कथा थीक। परन्तु ईहो बात पूर्णतः तकक कसौटी पर नहि उतरैत अछि। एखन जे हम लिखि रहल छी से के लिखबा रहल अछि? हमर मन। हमर अनेक ऐच्छिक क्रिया-कलाप होइत अछि से एही मन द्वारा प्रवर्तित होइछ। परन्तु तुनू परिवर्त्तनशील अछि। शरीर दिन-दिन बदलैत अछि त मन छन-छन बद-लैत रहैत अछि। ई मन तेहन चंचल अछि जे धरऽ नहि दैत अछि---पारा जकाँ छिटकि जाइत अछि। ई मन कखन कोन दिस ल' जायत तकर ठेकान नहि। यैह मन एखन हमरा हाथसँ आत्मकथा लिखबा रहल अछि, कटबा रहल अछि----फेर लिखबा रहल अछि।

तखन कि 'हम' शब्द मनकेँ संकेतित करैत अछि? हमरा मनसँ तादात्म्य सम्बन्ध अछि? परन्तु सेहो कहब युक्त नहि। कारण जे यदि शरीर वा मनसँ हमर तादात्म्य सम्बन्ध अछि त फेर 'हमर शरीर' वा 'हमर मन' एहन पदक प्रयोग किऐक करैत छिऐक? आत्मवादी लोकनि एही युक्ति सँ शरीरा-त्मवाद वा इन्द्रियात्मवादक खंडन करैत छथि। एही युक्तिसँ आत्मवादोक खंडन कैल जा सकैत छैक। जखन 'हमर शरीर', 'हमर मन' कहने सूचित होइछ जे हम ओकरा सँ भिन्न छी त 'हमर आत्मा' कहलो सँ त यैह सूचित होइछ जे हम आत्मा सँ भिन्न छी।·······

[२३ फरवरी१९८४क प्रातःकाल हुनक आत्मा पार्थिव शरीरक पिजड़ा सँ बहराय शून्यमे विलीन भ' गेल आई आत्मकथा एतबहि रहि गेल।]

परिशिष्ट—१

पुष्पांजलि

हम अहाँक सीरममे बैसल छी। अहाँक ललाटमे खूब भगजोगार ठोप आओर हाथमे लाल चूड़ी देखि अहाँक ओ बालिका-वधूवाला रूप आँखिमे नाचि उठैत अछि, जहिया अहाँक हाथ हमरा धराओल गेल रहय—"इमां सुभद्रा नाम्नीं कन्यां तुभ्यमहं संप्रददे।"

अहाँ तेहन सरल, निश्छल, निरीह प्रकृतिक छलहुँ जे हमरा घरमे अबितहि सभक स्नेह-पात्री बनि गेलहुँ। अहाँक शुद्ध, शान्त, सात्त्विक वैष्णवी संस्कार देखि हमर माय-बाबूजी अहाँकेँ मुनिकन्या कहैत छलाह। अहाँ हमरा जीवनक तेहन अविच्छेद्य अंग बनि गेलहुँ जे हम सम्पूर्णतः अहाँपर निर्भर भ' गेलहुँ।

हम अपन सभटा काज अहीँकेँ अढ़बैत छलहुँ। अए कहाँ गेलहुँ? सुनै छी? माथमे ठण्डा तेल पचा दिअ कंघीक' दिअ। हमर जनउ पर्यन्त सैंठियाक' देबाक भार अहींपर छल। घरसँ बाहर धरि छाया जकाँ संगिनी बनलि रहलहुँ, जीवन-यात्राक समस्त सुख-दुखमे सम्मिलित रहलहुँ। हमरा आशा छल जे हमरा अन्त धरि अहाँ अहिना निमाहि देब, परन्तु निष्ठुर काल पहिनहि अहाँकेँ छीनिक' ल' गेल, जखन हमरा अहाँक सहाराक सभसँ अधिक प्रयोजन छल।

१९८०मे हम तेहन भयंकर रूपसँ दुःखित पड़ि गेलहुँ जे बेहोश अवस्थामे एम्बुलेंस कारमे लदिक' इंटेंसिभ केयर आओर तदुपरान्त नेत्रक शल्य-चिकित्सा विभागमे भर्ती भेलहुँ। ओहिमे लगातार घरसँ अस्पताल धरि अहर्निश भरि-भरि राति जागिक' अहाँ हमर जे अष्टयामी सेवा करैत रहलहुँ तकर दृष्टान्त भेटब कठिन अछि। परन्तु हमरा रोगक पाशसँ छोड़यबाक प्रयासमे अहाँ स्वयं कालक मुँहमे पड़ि गेलहुँ। १९८१क सितम्बर धरि अहाँ स्वस्थ आ प्रसन्न छलहुँ। हमरा प्रतिमास चेक कराबय हेतु कार्डियोलोजी विभागमे ल' जाइत छलहुँ। हमर आरोग्य लाभक उपलक्ष्यमे

महावीरजीक मंदिरमे लड्डू चढ़ाय प्रसाद अहाँ वितरण कयने रही परन्तु अक्टूबरमे नहि जानि कहाँसँ एक प्राणलेवा रोग आबि अहाँकेँ ग्रस्तक' लेलक। दू-तीन मास धरि अहाँक फेफड़ासँ पानि बहार कयल गेल। परन्तु ओ रोग क्रमशः बढ़िते गेल। जखन दिसम्बरमे अढ़ाइ हजार सी० सी० पानि बहरायल तखन डाक्टर लोकनिक माथ ठनकलनि आओर ओ जे अन्तिम निदान कयलनि से हमरा आओर अहाँकेँ बूझय नहि देल गेल।

१९८२क जनवरीसँ अगस्त धरि बारम्बार एक्सरे आ रक्त परीक्षा कयल गेल बारम्बार ग्लूकोज आओर शोणित चढ़ाओल गेल। परन्तु रोग बढ़ितहि गेल। अहाँ क्षीणसँ क्षीणतर होइत गेलहुँ, क्रमपातसँ बुझना गेल से आ सेहो असाध्य रोग अछि, जकर नामे सुनैत लोकके फाँसीक सजाय जकाँ बूझि पड़ैत छैक। परन्तु अहाँ अपन शान्त सर्वंसहा प्रकृतिक अनुरूप असीम साहस आ धैर्यपूर्वक अविचलित रहि चुपचाप ओहि भयंकर रोगसँ संघर्ष करैत रहलहुँ। अहाँ हमरा अपन पूरा कष्ट बूझय नहि देलहुँ।

आधा रातिमे अहाँक कोठरीसँ कुहरबाक शब्द सुनाइ पड़ैत छल—'हे राम-हे-कृष्ण, आब जल्दी ल' चलू।' परन्तु जखन हम उठिक' अहाँक समीप जाइत छलहुँ त' अहाँ हमर आहट पाबि चुपचाप शान्त भ'क' पड़ि रहैत छलहुँ। जेना कोनो कष्ट नहि हो।

हम नित्य भोरे जाक' पुछारी करैत छलहुँ—की रातिमे निन्द पड़ल? अहाँ क्षीण स्वरमे कहैत छलहुँ—हँ। "दर्द त' नहि भेल"? "नहि।" हम आश्वस्त भ' जाइत छलहुँ, परन्तु कनिया जे अहाँक सेवामे रहैत छलीह कहैत छलीह—"आइयो भरि राति कछ-मछ छटू-पटू करैत रहलीह अछि। हिनका मनमे दुःख नहि होइन्ह तेँ नहि सुन' दैत छथिन।"

अहाँकेँ तेहन घोर अरुचि भ' गेल जे कोनो वस्तु खयबाक इच्छे नहि होइत छल। भोरमे १ चम्मच दही-भात आओर रातिमे आधा कप दूध, आब मात्र आहार रहि गेल। नारंगी-बेदानाक रस, हॉर्लिक्स पर्यन्त कनेक ठोरमे लगाक' छोड़ दैत छलहुँ। हम अहाँकेँ कहैत छलहुँ, 'अहाँ एहन घोर चन्द्रायण व्रत पर कय दिन जीवित रहि सकब।'। अहाँ एक करुण-विवशता सूचक-दृष्टिसँ हमरा दिस तकैत कहैत छलहुँ—'हे भगवन! हम कोनाक' बुझाउ जे हमरा भीतरमे केहन बेचैनी भ' रहल अछि। जीबाक इच्छा ककरा नहि होइत छैक? परन्तु हमरा खायले नहि जाइत अछि। की करू? लगैत अछि

जेना ई रोग नहि कोनो शापक फल हो ।" आओर ओ भयंकर राक्षस रोग अजगर साँप जकाँ अहाँकेँ तिल-तिल क' चिबावय लागि गेल ।

हम कहैत चलहुँ "अहाँसन पवित्रात्माकेँ एहन चंडाल रोग कहाँसँ लागि गेल ? अहाँक ओहन सुन्दर स्वस्थ शरीरकेँ केहन क' देलक अछि जे आब चिन्हबामे नहि अबैत छी ।" अहाँ दार्शनिक मुद्रामे कहय लगैत छलहुँ—"एहिना होइत छैक । एहिना होइत अयलैक अछि, एहिना होइत रहतैक । इएह संसारक नीति छैक । अपन साध्य की ? अहाँ तँ स्वयं अनकासभकेँ बुझबैत छिऐक ।"

अहाँकेँ बहुत दिनसँ गाम अयबाक इच्छा छल । हम समाचारपत्र हाथमे दैत कहलहुँ—आब तँ दुइये घंटामे पटना पुल पार क' क' हाजीपुर पहुँचि जा सकैत छी । अहाँ करुण मुस्कान पूर्वक बजलहुँ—"हे भगवन ! आब हम वैतरणी पार करब की पटनाक पुल ? आब एहि संसारक समाचारसँ हमरा कोन प्रयोजन । हम दोसरे संसार जा रहल छी ।"

अहाँ 'कथा दिशा'मे 'शेखर'जीक एक मर्मस्पर्शी संस्मरण देखि बाजल रही—ओ देवी धन्य छलीह जे सधवा रूपमे सिंदूर लगौने स्वर्गलोक चलि गेलीह । स्त्रीक हेतु ई कि कम सौभाग्यक बात छैक ? ओहू अवस्थामे अहाँकेँ अपनासँ बेसी हमरे ध्यान रहैत छल । गुड्डी, बाबाकेँ तीनू दवाइ देलहुन ? हमरा देखि क' कहैत छलहुँ "जे अहाँ अपन आँखि पर ध्यान राखू । पुरान-पुरान डायरीकेँ निकालि क' ओहिमे आँखि गड़ौने लिखैत रहैत छी से देखि हमरा चिन्ता होइत अछि ।" अहाँक कोनो कष्टक समाचार जानि हमरा आतंक भ' जाइत अछि ।" हम पुछलिअनि—जे अहाँक बाद हमरा के-देखत-के-करत ?

अहाँ बजलहुँ—अहाँकेँ सब देखत-सब करत । अहाँकेँ बहुत लोक मानैत अछि । हमर एकटा बात मानब ? हमरा लेल बेशी नोर नहि बहायब । ओहिसँ दृष्टि पर आघात पड़त ।

४ अगस्तकेँ रक्षाबन्धन रहैक । हम जा क' अहाँक हाथमे राखी बान्हि देलहुँ । ओ देखि अहाँ सजल नेत्रसँ बजलहुँ "आब हमरा इएह आशीर्वाद दिअ जे जल्दी-सँ-जल्दी एहि कष्टसँ मुक्ति भेटि जाय । हमर शरीर आब पराश्रित भ' गेल । स्वयं अपनो परिचर्या नहि क' सकैत । तखन एहन जीवनसँ कोन फल ? आब हमर मोह छोड़ि दिअ, हमर कोटा पुरि गेल ।"

हमरा शोक-विह्वल देखि अहाँ जेना वायुक झोकमे बाज' लगलहुँ । अहाँ कनै छी किएक—हम नहि मरब—हम नहि मरब । हमर सबटा दुःख छूटि जायत । सभ ठीक भ' जायत । अहाँ चिन्ता नहि करू । जेना दीप मिझयबाक पूर्व अन्तिम ज्योति शिखा प्रज्वलित भ' उठैत छैक तहिना अहाँक मुखमण्डल पर एक दिव्य तेज प्रकट भ' गेल । हम क्षमा याचना करय लगलहुँ—"हम अहाँकेँ आजीवन दुःखे दैत रहलहुँ—बातेँ कहैत रहलहुँ, झगड़ करैत रहलहुँ । अहाँक उचित आदर नहि क' सकलहुँ । तकर मनमे कचोट भ' रहल अछि ।" अहाँ हमर हाथ ध' बजलहुँ—"नहि अहाँ हमरा बड़ड़ मानलहुँ—बड़ड़ मानलहुँ बहुत काम क' गेलहुँ । घुमा-फिरा क' देखओलहुँ । हमरा बहुत सुख देलहुँ, आदर देलहुँ । यश देलहुँ । अहाँ मनमे कोनो कचोट नहि राखू ।" नहि जानि कहाँसँ अहाँमे एक असीम ममताक स्रोत फूटि पड़ल । गोपालजी और रमणजीकेँ ठाढ़ देखि कहलिऐक—आरे बेटा—गोपालजी, रमणजी हमरा कोड़ामे बैस । बहादुरकेँ कनैत देखि कहलिऐक—तोहूँ बेटे जकाँ सेवा कयने छेँ । आ ! गुड्डीकेँ बजओलिऐक । ओकरा अवस्थामे कनेक देरी होइत देखि हम डाँट' लगलिऐक । से देखि अहाँ हमरे हाथ ध' मना कयलहुँ जे कतबैक बच्चा छैक ।

ओहि राति अहाँकेँ दलियाक खीर बनाक' देल गेल से अहाँ तेहन रुचि-पूर्वक खयलहुँ जेना कहियो नहि खयने रही । ई देखि हमरा अत्यन्त संतोष भेल । परन्तु ओएह अहाँक अन्तिम भोजन छल । भोरे गोपालजी बदहवास भेल अयलाह—बाबूजी माय बजा रहल अछि । हम झटकल अहाँ लग गेलहुँ । परन्तु जावत हम पहुँची-पहुँची तावत अहाँक वाक् बन्द भ' गेल छल । प्रयास कयलासँ कंठसँ किछु अस्फुट शब्द अ...... ब.........ज.....'' बहरायल । तकर अभिप्राय व्यक्त नहि भ' सकल । अहाँ अन्तिम विदा माँगि रहल छलहुँ (हम जा रहल छी......कहल सुनल माफ करब ।)

हम पुछलहुँ जे भुवनजी, भजनजी आदिकेँ सेहो बजबा दिअ । आब धैर अहाँ मना क' दैत छलहुँ जे एखन किएक बजबयनि । दुर्गापूजाक छुट्टीमे अओताह तँ भेँट भैये करत । किन्तु एहिबेर माथसँ स्वीकृतिसूचक संकेत देलहुँ । तुरत राँची, दरभंगा, दिल्ली आदि स्थानमे फोन कयल गेल । अहाँ अपन दहिन हाथ उठाय सबकेँ आशीर्वाद देब' लगलहुँ । अहाँक आँखिसँ करुणा विगलित अश्रुधारा बहय लागल । डाक्टरक रायसँ अहाँकेँ पुनः पानि चढ़ाओल गेल, अहाँ 'कोमा'मे चलि गेलहुँ ।

अहाँ तेहन अचेतन अवस्थामे आबि गेलहुँ जे लगातार—सात दिन सात राति धरि यौगिक समाधि जकाँ एक आसनमे पड़लि रहलहुँ। अहाँक दुनू आँखि खुजले रहल। जेना ताकि रहल होइ। परन्तु अहाँ 'डीप कोमा'मे छलहुँ।

गोपालजी, रत्ना हुनक माय तथा चौधरीजी प्रभृति तँ सेवामे छलाह। फोन वा तार सँ सूचना पबैत देरी समस्त कुटुम्ब परिवारक लोक आबि पहुँचलाह। दरभंगासँ फूलदाइ, ओझाजी, भुवनजी हुनक कनियाँ, तेना राँचीसँ लखनजी, काशीपुरसँ रमा ओझाजी, दिल्लीसँ दुलहिन रूपा आदि……।

एहि बीचमे जे जे अबैत गेलाह तनिका अहाँक फूजल आँखि आओर यदा-कदा दहिन हाथक संचारसँ बुझि पड़लनि जेना हुनका सबकेँ चिन्हि रहल होइथनि। परन्तु नहि जानि चीन्हि सकलिअनि वा नहि।

१४ अगस्तक राति अहाँक काल राति छल। १०॥ बजे रातिमे एका-एक अहाँक कंठमे घड़-घड़ी भेल आओर नेत्र मार्ग द्वारा अहाँक प्राण वायु निकलि गेल। अर्थी सजाओल गेल। अहाँक मुख-मण्डलपर केहन सौम्य शांतिक आभा विराजमान छल जेना अहाँ सुख निद्रामे निमग्न होइ। हम ओहिपर फूल चढ़ा देलहुँ।

हम अहाँक सीरमे बैसल अहाँक हाथ धयने छी। आब ई हाथ जे ५८ वर्षसँ हमरा हाथमे छल, सर्वदाक हेतु बिछुड़ि रहल अछि। किछुए कालमे लोक अहाँकेँ एहि सोहागिन रूपमे उठाय गुलबी घाट ल' जायत आओर औतय चिताक अग्निमे भस्मक' गंगाजीमे विसर्जन क' देत, जहाँ ६ वर्ष पूर्व दमनजी (६ वर्षक पौत्र) गेल छथि।

हमरा ओ दृश्य देखबाक साहस नहि होयत। अहाँकेँ लोक अर्थीपर उठाक ल' गा रहल अछि। जेना चारि कहारक कान्हपर महफापर सासुर आयल रही तहिना अहाँकेँ आइ चारि गोटा कान्ह द' क' घाट ल' जा रहल अछि। जहाँसँ केओ घुरिक नहि अबैत अछि। अहाँ अपन जीवन लीला समाप्तक' चलि देलहुँ।

हम अहाँक अन्तिम अनुरोधक पूर्ति नहिक' सकलहुँ। आँखिसँ दहो बहो नोर बहि रहल अछि। आब के आकरा अपना आँचरसँ पोछि ममता-

पूर्वक कहत—"नहि कानू, आँखिपर असरि पड़त।" आब हम ककरा संबोधन करबैक "अए, कहाँ गेलहुँ" "सुनै छी ?" आओर अहाँक उत्तर भेटत "इएह अबैत छी।"

एहि अनन्त कालक प्रवाहमे श्री सुभद्रा नाम्नी देवी फेर-कहियो-कतय कोन रूपमे अवतीर्ण होइतीह वा कहियो नहि होइतीह।

परिशिष्ट—२

ओ दरभंगा : ई दरभंगा

ओ दरभंगा—(१)

जीवनक एहि सांध्यवेलामे हम पुन: दरभंगा आबि गेल छी, जत' जीवनक प्रभात-काल बितौने रही। ओहि समय (१९२०-२२ मे) बाबूजी (मिथिला मिहिरक) सम्पादक रहथि। हम सभ हुनके संगे नवा बाजारमे रहैत रही। राम बागक फाटकसँ ल' माधवेश्वर धरि सड़कक दुनू कात लाल-लाल ब्लाकक कतार छलैक जाहिमे राजक भिन्न-भिन्न महकमाक अधिकारी तथा पण्डित प्रधान रहैत छलाह। ओहिमे एकटा ब्लाकमे हम सभ रहैत छलहुँ। सभ ब्लाक एके रंग, एके नाक-नक्शाक और एक-दोसरासँ सटल छलैक। सभमे नम्बर देल छलैक। हम सभ प्राय: १३५ नम्बरमे रहैत छलहुँ। लगमे उपेन्द्रमोहन मिश्र (वैद्य) आ पं० कपिलेश्वर झा प्रभृति छलाह। देहातसँ कतेको अनभुआर पाहुन अबैत छलाह त' भुतिया क' दोसर ब्लाकमे चल जाइत छलाह। तखन हमरा खोजि क' आन' पड़ैत छल।

माधवेश्वर-पोखरिमे खूब झुभकैत छलहुँ। मोहारपर राजक पहलवान (जनक झा) क अखाड़ा छलनि। बर्फक कारखानामे बड़का-बड़का चट्टान बनैत देखैत छलहुँ, धर्मलाल सिंहक गोशालासँ दूध ल' अबैत छलहुँ।

सड़क पर मलाइक बर्फ चलैत छल। काठक बक्सामे जमाओल तरबूजाक बर्फ कतरि क' नैवेद्य जकाँ पात पर दैत छल। गुल्लीबाड़ाक कबाड़िन टाहि लगबैत अबै छलीह—ल पनियाला लें'। ओ गोल-गोल खटमधुर फल (अंगूर सन) एक पाइमे आठ टा दैत छलीह, जे खूब गुलगुला क' खाइत छलहुँ। खूब सरस परिवेश छल।

रातिमे माय आ सुभद्रा [छोट बहिन]कें माधवेश्वर मन्दिरमे दर्शन कराब' ल' जाइत छलियनि। ओत' माय आत्मविभोर भ' महादेवक गीत उठा दैत छलीह—'कखन हरब दुख मोर हे भोलानाथ।'

डेरा पर बाबूजीसँ भेंट करबाक हेतु अनेको साहित्यिक मित्र अबैत रहैत छलथिन, यथा गोसपुरक पण्डित त्रिलोकनाथ मिश्र, कविवर सीतराम झा

प्रभृति। वार्तालाप क्रममे तेहन श्लेष-यमकक वर्षा होम' लगैत छलैक जे रसक धार बहि जाइत छल। एक बेर गोसपुरक पण्डितजी हमर गाम बाजीतपुरक श्लेष करैत कहलथिन—

'बाजी त पुर करी अपने' तावत बाबूजी पूर्ति क' देलथिन 'नहि त गोस-पुरक लोक पूर करत' एहन-एहन वाग्विलास होइत छलनि, जे आनन्द आबि जाइत छल।

समय-समयपर रामबाग, हरिमन्दिर, कंकाली मन्दिर आदिमे पंडित लोकनिकें राजक दिससँ बृहत भोज होइत छलनि। तावत पूड़ी-कचौड़ी, अमिरती छनाइत छलैक, तावत पंडित लोकनिक शास्त्रार्थ चलैत छलनि। [जेना घटमे घटत्व समवेत अछि। जखन घट फूटि गेल त' घटत्व कत' गेल ?] वाद-विवादमे अवच्छेदकताक लच्छा छूट' लगैत छल। जखन बिसो होइत छलैक तखन लच्छेदार राबड़ीक लच्छा चल' लगैत छल। कदली थम्हकें चीरि क' डमखीरक पात पर राजभोगक वर्षा होम' लगैत छल। हमहूँ बाबूजीक संग विद्यार्थी रूपमे जाइ छलहुँ।

इन्द्रपूजाक समारोहमे काशीक सुप्रसिद्ध गायिका सिद्धेश्वरी बाइ तानपुरा पर ठुमरी गबैत छलीह—'......का जाने प्रीत की रीति लट उलझी सुलझा जा रे बालम।'

ओहि समयक अनेको मनोरंजक स्मृति अछि—पं० रामझाक कीर्तन उमाकान्तक नाटक (सत्यहरिश्चन्द्र), गीत गोविन्दक नाद्यगीत, सुखदेव झा पहलवानक दंगल, तोराइक बटुकजीक शतरंज, राममूर्ति और ताराबाइक सरकस तथा जगदीश कविक बूटी रामायण, जाहिमे रामायणक दोहा-चौपाइ सँ भाँति-भाँतिक जड़ी-बूटीक नुस्खा बहार क' श्रोताक मनोरंजन करैत छलाह। आब ओ सभ बात कोनो अर्धविस्मृत रंगीन सिनेमाक छिटफुट दृश्य जकाँ लगैत अछि।

हमरा ओ [१९२९-३३क) दरभंगा मन पड़ैत अछि जखन लहेरियासराय पुस्तक भण्डारसँ मैथिली मासिक पत्रिका 'मिथिला' बहराइत छल और हमर 'कन्यादान' उपन्यास छपल। विद्यापति प्रेस, विद्यापति-पदावली, विद्यापति वाचनालय, विद्यापति-पचांग। एहन संयोग जे भंडारमे जे हजाम हाराजाहीसँ अबैत छल, तकरो नाम विद्यापति ठाकुर छलैक। ओहि समय पुस्तक भंडार विद्यापतिमय छल।

बन्धुवर अच्युतानन्द दत्तजी रघुवंशक आ हुनके अनुज परमानन्दजी मेघदूतक मैथिली पद्यानुवाद करैत छलाह। पं० कपिलेश्वर मिश्र 'सीतादाह' और कमलेशजी 'मण्डन मिश्र' लिखैत छलाह, मास्टर साहेब जीवनाथ रायजीसँ तिरहुता अक्षर लिखबाय सुन्दर टाइप बनबौने छलाह। गंगाधर बाबू, नागेश्वर बाबू, कमल बाबू, पलट बाबू, आदि हमरा सबकेँ मैथिली सेवाक हेतु प्रोत्साहित करैत छलाह एवं धन्यवाद दैत छलाह।

पुस्तक भंडारमे जनकपुरक मण्डलीक अवसरपर कोबरलीला होइ छल, और मोदलताजीक मैथिलीपद [रामजीक उहकन] स्नेहपूर्वक गाओल जाइ छलनि—

गारि हम नहि दै छी
हम कथा कहै छी।

हमरा ओ दरभंगा मन पड़ैत अछि—

—जखन गुदरी बाजारमे चारि आने सेर रहु और मोट-मोट माङुर छौ आने सेर भेटैत छल।

—जखन अमीरी नेबो पाइमे पाँच-छौ टा दैत छल।

—जखन हरियर पुरैनिक पात, लाल-लाल कमलक फूल और सुम्मक सन बर'क छत्ताक, कारी-कारी फलेना जामुनक पथार लागल रहैत छलैक।

—जहाँ रंग-विरंगक लाल-पीयर आमक अम्बार लागल रहै छलैक और दुइए आनामे खलखरी भरि जाइत छलैक। जहाँ भारपर दही भरैत छलैक, दू आने भरबुड़।

हमरा ओ समय मन पड़ैत अछि जखन अखाढ़ मासक वर्षा—बुन्नीमे भिजैत-तितैत बड़का आमवाली अबैत छलि। एक टाकामे बीस-पचीस टा बड़का-बड़का मालदह आम उझिलि दैत छलैक। दूधवाली एक आनामे सेरही लोटा भरि दूध दैत छलि।

हमरा ओ दरभंगा मन पड़ैत अछि, जखन हम सभ आ दत्त जी पलथा लगाय आम खाय बैसैत छलहुँ त' चोभा लगबैत-लगबैत केहुनीसँ रस बहए लागि जाइत छल, और बीच-बीचमे तरिसोक घटनीक जोगपर सबटा आँठी धुआइए क' उठैत छलहुँ।

ओहि समयक एकटा रोचक घटना कहैत छी। पुस्तक भण्डारसँ हम सभ चौकाक टमटमसँ दरभंगा गेल रही। कुमार गंगानन्द सिंहक ओतय। हम, दत्तजी, शिवपूजनजी, पं० कपिलेश्वर मिश्रजी, कमलेशजी ओ महारथीजी। ओतय गपशप आओर ठंढइ शरबतक बाद हम सभ सुमनजी (ताहि समयक सम्पादक मिथिला मिहिरक) ओतय अबैत गेलहुँ। कविवर पं० सीताराम झा पहिनहि ओतए बैसल रहथि आओर अतिचारकेँ अत्याचार सिद्ध करैत रहथि। धचमेर भूजाक पार्टी चलि रहल छलैक। हमहूँ सभ ओहिमे सम्मिलित भ' गेलहुँ। चर्वणक संग-संग काव्यरसक आस्वादन होइत-होइत राति भ' गेल। तेहिपर तेहि तेहन मनोरंजक गप्प होम' लगलैक जे छोड़िक' विदा होयबाक मन किनको नहि होइत छलनि। तखन घरवैया आग्रह कयलनि जे आब भोजन कइए क' जाइ। दत्तजी मस्तमौला निर्विकार लोक छलाह। कहलथिन—बेस, तखन और जमिक' गप्प हो। आसने पर बैसिक' गप्पक छुरक्का छूट' लागल। ओसारा पर छनन-मनन होइत छलैक। हमरा सभकेँ एतबा धैर्य नहि रहल जे सभ वस्तु बनि गेला पर भोजन आरम्भ करी। जेना-जेना जे बनैत गेलैक, से आगामे अबैत गेल—सरल तिलकोर, भफाइल भात, अदौरी-भाँटा, मूङक दालि, भटवर, आलू-कुम्हरौड़ी, दही-आम। एवं प्रकार जे पूजा भूजा सँ प्रारम्भ भेल छल से दही आमक पूर्णाहुति पाबि समाप्त भेल। एहि दीर्घकालीन गप्पक प्रवाहमे एकटा इहो लाभ भेल जे राजपंडितक संग गपसपमे खट्टर ककाक एक तरंग (चाणक्यक जन्मभूमि)क मसाला सेहो भेटि गेल। सभ गोटाकेँ अपूर्व आनन्द आबि गेल। सहृदय-शिरोमणि सुमनजीक ओहिठामक ओ सद्यः स्फुरित, स्निग्ध, सुरभित, सौमनस्य-पूर्ण सहभोज अद्यावधि स्मरण अछि।

ई दरभंगा (२)

आइ पचास वर्षक उपरान्त पुनः दरभंगा आबि गेल छी, शेष जीवन अपने माटि पानि पर निःशेष करबाक हेतु। अतीतक ओ आकर्षक स्मृतिचिह्न खींचि क' एत' ल' आयल अछि। परन्तु एत' अएला पर हमर ओ परिचित दरभंगा कतहु देखबामे नहि अबैत अछि। ई शहर अनचिन्हार जकाँ लगैत अछि। मनमे आयल जे ओ नया बाजार देखि आबी जहाँ बाबूजीक संग रहैत रही। गेलहुँ, एक छोरसँ दोसर छोर धरि छानि अयलहुँ। ओ नयाबाजारक घर कतहु नहि भेटल। कालक रोलर ओकरा रौदिक' सरपट-सपाट सड़क बना देने छैक जाहिमे ओकर नामोनिशान नहि छैक। अतीतक लेशमात्र चिह्न नहि। ने ओ नगरी ने ओ ठाम। ने सोन साहु ने सहिजनक गाछ। ककरा पुछियौक? कनेक काल माथ पर हाथ द' बैसल रहलहुँ।

स्वास्थ्य सुधारक हेतु दूध-आमक लोभसँ दरभंगा आयल छी। भोरे पाव भरि शुद्ध गोदुग्धक हेतु बहादुरकेँ एकटा रुपैया और लोटा ल'क' पठौलिऐक। ओहि समय एक रुपैयामे सोरह सेर दूध दू पैसामे भार पर अबैत छलैक। बहादुर सभतरिसँ छिछिया आयल, कतहु नहि भेटलैक। तखन, हारि-दारि एक चाहक दोकानसँ एक कप दूध सवा रुपैयामे नेने आयल। एक टाकामे बड़का-बड़का पचीस टा मालदह आम उजिलि दैत छल। तहाँ आब एकोटा सौंग मालदह नहि देलकैक। छौ रुपैये किलोक दरसँ ओखिक' एक आमक दाम दू रुपैया लेलक। एहि पाँचे दशकमे पचास गुना मूल्य वृद्धि कोना भ' गेलैक? एहि प्रश्नक उत्तर कोन अर्थशास्त्री (वा अनर्थशास्त्री) देताह?

आब ओ दरभंगा नहि रहि गेलैक। तहिया माय-बाप जिबैत छलाह। आब मरि गेलाह। हुनका पापा-मम्मी खा गेलनि। पहिले नैना के मिझाओल जाइत छलनि साते भवतु सुशीला देवी शिखरवासिनी। आब धिया-पुताक मुँहसँ सुनैत छिऐक—मम्मी को पापासे, पापा को मम्मी से प्यार हो गया, प्यार हो गया।

हम सोच' लगलहुँ—हम कत' आबि गेल छी? कि एक आबि गेल छी? ई कोनो वैह दरभंगा थिक जे पचास वर्ष पहिने देखि कुकल छी? नहि, आब त ओ जीवित नहि अछि। ओकर आत्मा मरि गेलैक। आइ की बाँचल छैक?

तावत कतहुसँ कानमे अमृतवर्षा भ' उठल नारीकण्ठसँ—

दुखहि जनम भेल, दुखहि गमाओल सुख सपनहुँ नहि भेल
हे भोलानाथ

अरे! ई त' वैह गीत अछि जे हमर माय गबैत छलीह। नहि, नहि ओ अपन संस्कृति नहि मुइल अछि। यावत् पर्यन्त ई लोकनि जीवित रहतीह तावत पर्यन्त अपन संस्कृतिक आत्मा कथमपि नहि मरि सकैत अछि। हिनके सभक मध्य रहि शांतिपूर्वक मरि सकब।

□

परिशिष्ट—२

अन्तिम पत्र

अयँ! सुनै छी?

आइ हम अहाँकेँ पत्र लिखय बैसल छी। हम जनै छी जे ई चिट्ठी अहाँकेँ कहियो नहि पहुँचत, तथापि लिखि रहल छी। एकरा बताहपन छोड़ि और की कहल जाय? परन्तु ई बताहपन पहिनहिसँ अछि। अहाँक गेलापर और बढ़ैत जा रहल अछि।

अहाँकेँ गेना एक वर्ष भ' गेल। अहाँ कहाँ छी, कोना छी, से के कहत? कोन पतासँ लिखू? की सम्बोधन क' क' लिखू? एक दिन अहाँ हमर सभ किछु छलहुँ। आइ केओ नहि। निष्ठुर काल सभटा सम्बन्ध-सूत्र छिन्न क' अहाँकेँ ल' गेल। तथापि ओहिना सम्बोधन क' रहल छी जेना आजीवन करैत ऐलहुँ—"अयँ सुनै छी? कहाँ छी? सुनू।"

१५ अगस्तकेँ (स्वाधीनता दिवसमे) अहाँ सभटा पार्थिव बन्धनसँ मुक्त भ' गेलहुँ। परन्तु हम और अधिक माया-मोह पलेडक बन्धनमे पड़ि गेल छी। शोकोन्माद जकाँ भेल जाइ अछि। चाहैत छी? परिवारक लोक कोनो तरहेँ सम्हारि गाम ल' गेल। ओतय जे केओ अयलाह, अहाँक भूरि-भूरि प्रशंसा करय लगलाह। आइ-माइसभ कहय लगलीह जे अहाँकेँ केओ कहियो ककरोसँ झगड़ा करैत नहि देखलक। ई सभ सुनि हमरा अहाँक प्रति और बेसी कष्ट उमड़ि आयल।

हम बेसुधि रही। श्राद्धमे कोना की भेलैक से नहि बुझलिऐक। एतबे बुझलिऐक जे सभ कुटुम्ब पहुँचि गेलाह और नीक जकाँ भोज भेलैक।

तकरा बाद हम सभ पटना ऐलहुँ। ओ डेरा भुतहा डेरा जकाँ लागय। सभक विचार भेलैन जे आब हम पटना छोड़ि दरभंगा जाक' रही। (अहूँक सेह विचार रहय।) पटनाक छोड़बाक समय ओतुक्का स्नेही साहित्यकार बन्धुवर्ग एक मोट स्मारक-ग्रंथ प्रकाशित कैलनि जाहि आहिमे अहूँक प्रति स्नेह-संस्मरण अछि। ओ अहाँ नहि देखि सकलहुँ।

लहेरियासराय (बंगाली टोला)मे ओझाजीक समीपे एक मकानमे हमरा आनल गेल अछि। एतय गोपालजी, भुवनजी (आ हुनकर कनियाँ) छथि। फूलबाइ बराबरि आबि क' देखि जाइ छथि। ओझाजी बेटी-जमायक आग्रह पर अमेरिका गेल छथि। प्रायः एक-दू मासमे आबि जैताह। दिल्लीसँ दुलहिन और राँचीसँ लखनजी सेहो दू-तीन बेर आबि क' देखि गेल छथि। एहि शुद्धमे रूपाक कन्यादान नहि भ' सकलैक। गुड्डी आब गामेक स्कूलमे पढ़य लागलि अछि। अहाँक गेने परिवारक सभ लोक उदासीन अछि। ककरो मुँहपर उल्लास नहि छैक जे अहाँक जिबैतमे छलैक। और हमर तँ कथे की? साल भरिमे कहिया कोन पर्व-तिहार ऐलैक और गेलैक से बुझि नहि पड़ल। हमर आँ तीनू दवाइ चलि रहल अछि। तकर अहाँ चिन्ता नहि करब। परन्तु मनक दुःख के बाँटि सकैत अछि? ओझाजी, चौधरीजी, रत्ना, रमा सभ कहै छथि जे बदरीनाथसँ भ' आउ। परन्तु आब कि ओ सहयात्रिणी रहलीह जिनका संग ल' आइ छलियनि। आब एकसर कतहु जैबाक मन नहि होइ अछि।

एहि बीचमे कइएकटा शोक-घटना घटित भेल अछि। अहाँक ओ संगिनी सेहो अहाँक बादे विदा भ' गेलीह। अहाँक बहिनपूत (चन्द्र) सेहो। परन्च हम केहन बताह छी! अहाँ तँ एहि संसारक घटना सभसँ बहुत ऊपर उठि गेल छी।

अहाँकेँ हमरा आँखिक बहुत चिन्ता छल। कहि गेल रही जे अहाँक हेतु बेसी नोर नहि बहाबी। परन्तु से नहि भ' पबैत अछि। अतीतक तीस-गीठ स्मृतिमे डूबल रह छी और आत्मकथा लिखैत काल तेना बड़ोबड़ो नोर बहय लगैत अछि जे लिखलाहा अक्षर सभ धोखरि जाइत अछि। फेर लिखै छी, फेर कटै छी—यैह चलि रहल अछि।

एहू ठाम साहित्यकार बन्धु सभ जिज्ञासा-पुछारीमे अबैत रहै छथि और संतोष द' जाइ छथि। परन्तु मनमे ओ शान्ति नहि भेटैत अछि। रहि-रहि क' अहाँक स्मृति सावन-भादवक घटा जकाँ मनमे उमड़ि रहल अछि।

लंकामे अशोक वाटिकामे सीताजीक मूर्ति देखि अहाँ केहन विह्वल भ' गेल रही! सियाजीक जन्म वियोगे गेल! सारि जन्म वनवासे होइत रहलैन, हमरा मनमे तेहने सन भावना भ' रहल अछि।

अहाँकेँ हम कोन-कोन नाच नहि नचौलहुँ? अहाँ बालिका बधूक रूपमे ऐलहुँ। तहियेसँ एकपिठिया जकाँ हम टेनाबेनी करैत रहलहुँ। अहाँ एक कोमल सुकुमार तारक वीणाक रूपमे भेटल रही, परन्तु हमरा बजाबय नहि आयल, ढोल जकाँ पिटैत रहलहुँ। और अहाँ हमरा प्रसन्न करक हेतु सभटा नाच नचैत रहलहुँ।

अहाँक अनेको स्मृति-चित्र सिनेमाक दृश्य जकाँ आँखिमे नाचि उठैत अछि।

अहाँ भारतीय सांस्कृतिक समारोह (१९५५)मे मिथिलाक प्रतिनिधि-रूपमे दिल्ली जा रहल छी और ओतय अहाँक विद्यापति-संगीत केन्द्रीय आकाशवाणीसँ प्रसारित होइ अछि। और अहाँ तत्कालीन मंत्री केसकरक हाथसँ पुरस्कार ल' क' अबैत छी।

कलकत्ता (१९५७)मे मैथिल समाज द्वारा अहाँक अभिनन्दन होइत अछि और अहाँकेँ किछु कहबाक अनुरोध कैल जाइ अछि। हमरा मनमे चिन्ता होइ अछि एहन विराट समारोहमे अहाँ पहिले-पहिल माइक पर कोना बाजि सकब! परन्तु अहाँकेँ नहि जानि कतयसँ शक्ति आबि जाइ अछि और अहाँ अप्रत्याशित रूपसँ भाषण क' जाइ छी।

पटना चेतना समितिक विद्यापति-पर्वमे अहाँ साहसपूर्वक मंचपर आबि हमर मण्डन मिश्र नाटकमे 'भारती' क भूमिकामे उतरि अभिनय कयलहुँ। एक मध्य-वयस्का गृहिणीक एहन साहस देखि मैथिल कन्या सभकेँ अभिनव प्रेरणा भेटैत छैन और पचीस वर्ष पूर्व (१९५८)क ओहि घटनाकेँ आब एक ऐतिहासिक महत्त्व देल जाइत अछि [और ई महिला समितिक 'विवरणिका'मे प्रकाशित भेल अछि।]

बंबइमे जखन [१९६४मे] हमर 'कन्यादान' फिल्मक शूटिंग होइत रहय तखन अहाँ ओतय दस दिन रहि अभिनेत्री लोकनिकेँ मैथिल वेशभूषा एवं आचार-व्यवहारक प्रशिक्षण देने रहिऐन [जकर सचित्र संस्मरण 'मिथिला मिहिर'मे बहरायल रहय।]

कहाँ धरि गनाउ? एहन-एहन अनेको घटना मन पड़ैत अछि। एकटा बात मन पाड़ि दैत छी। हम दुनू गोटे राजगीरक विद्युत् रज्जुमार्ग पर गेल रही। अहाँकेँ हम बुझाबय लगलहुँ जे कोना सामने अबैत कुर्सीपर लपकि क' बैसि जाइ। तावत देखैत छी जे अहाँ पहिनहि ओहिपर चढ़ि ओहि

पार पहुँचि जाइ छी और हम ठाढ़ रहि जाइ छी। [एहु बेर तँ अहाँ सैह कैलहुँ अछि। हमरासँ पहिनहि ओहि पार चलि गेलहुँ।]

एक बेर [१९५७मे] अहाँ हमरा संग काश्मीर [श्रीनगर] गेल रही। ओतय गुलमर्गसँ खिलनमर्ग घोड़ा पर अनेक बर्फक नदी पार करैत दस हजार फुट ऊपर पहुँचि हिमालयक दर्शन कैलहुँ। अहाँक ओ अश्वारोहिणी वीरांगनावला आकर्षक रूप एखन धरि मनमे अंकित अछि।

१९७८ धरिक अहाँक शरीर पूर्ण स्वस्थ सुन्दर आ निरुत्साह रहल जे देखि लोककेँ आश्चर्य होइत छलैन। परन्तु तकर बाद [१९७९सँ ८१ धरि] हम तेहन भयंकर रूपसँ दुःखित रहलहुँ जे ८१ धरि शय्यागत रहलहुँ और रात्रिदिवा हमर सेवा-शुश्रूषा सभटा परिचर्या करैत अहाँ स्वयं टूटि गेलहुँ। तकरा बाद [८२मे] तेहन महाकालक मुँहमे पड़लहुँ जे फेर उठि नहि सकलहुँ। हमर रोग छोड़ेबाक भीषण संघर्षमे अहाँ अपनाकेँ बलिदान क' देलहुँ।

अहाँक ई सभ गुण कोना बिसरू? जतेक बिसरबाक चेष्टा करैत छी, ततेक और अधिक मन पड़ए लगैत अछि। अहाँक सहनशीलता, शालीनता, संयम, संतोष, धैर्यक सभ सराहना करैत छल [जे हमरा नहि छल]। अहाँ आजीवन हमर सेवा करितहुँ मनसँ अपन प्राचीन संस्कृतिक पक्षपातिनी छलहुँ जाहि द्वारे पण्डित लोकनि अहाँकेँ मुनिकन्या कहैत छलाह।

जखन [१९७६मे] दमनजीक शोक-संस्मरणमे हुनका नामसँ स्वर्गीय शब्द देखलिऐन तँ फूटि-फूटि कानल रही। हुनकर डब्बामे राखल इमलीक बीया [जे ओ जोड़-घटाव सीखक हेतु रखने छलाह] देखलिऐन तँ करुण क्रन्दन क' उठल रही। आब अहूँक फोटो आदि देखि हमरा ओहिना भ' जाइ अछि। अहाँ हमरा कहने रही जे आब हमर मोह छोड़ि दिय'। हमर कोटा पुरा भ' गेल।'

हमरा लगैत अछि जे अहाँ कोनो विमान ल' क' आयल छलहुँ और से पुरा रूप प्रसन्न निश्चिन्त चलि गेलहुँ। स्वयं विष पिबैत समाजक हेतु अमृत प्रदान क' गेलहुँ। हमहुँ मनबैत छी जे अहीँ जकाँ ओहिने प्रफुल्ल शान्त चितासँ चलि जाइ। लोकक कहब छैन जे चिताक धधरामे अहाँक मुख-मण्डल तेना चमकैत छल जेना सीताजीक अग्निपरीक्षामे।

अहाँ सर्वदा काल एकटा उपदेश दैत रही—मनकेँ रोकब। अहाँक एहि पवित्र मंत्रकेँ हम मनमे रखने छी। परन्तु एकर तात्पर्य बुझयमे नहि अबैत अछि। आब के कहत?

राति हम अहाँकेँ स्वप्न देखने रही। अहाँ कोनो तेज धारामे एकसरि नावपर बहल जा रहल छी। कोनो पतवार खेवयवला नहि अछि। हमरा भय होइत अछि जे अहाँकेँ कतय बहा क' ल' जायत। सर्वदा जकाँ अहाँपर खिसिआय लागि जाइ छी। तावत् अहाँ कतय विलीन भ' जाइ छी से पता नहि।

हम जनैत छी जे आब अहाँक ओ शरीर, अहाँक ओ मन आब हमरा कहियो नहि भेटत। परन्तु अहाँ एक बात हमरा लेल क' सकब? मृत्युपरान्त की होइ छैक से ककरो जानल नहि छैक। जे गेलाह से घुरि क' नहि ऐलाह, और जे कहै छथि से गेले नहि कैल छथि। अतएव यदि ओहि ठाम वस्तुतः परलोक होइक, अहाँक सूक्ष्म शरीर हो, ओहिमे भाव-ग्रहण आ संप्रेषणक शक्ति होइक तँ अहाँ कोनो संकेत द्वारा सूचित क' दिय'। एहिसँ हमर नहि, सम्पूर्ण जातिक उपकार हेतैक।

हम हृदयसँ अहाँकेँ आशीर्वाद दैत छी जे अहाँ जहाँ होइ, जेना होइ, भगवान सुखी राखथु, कल्याण करथु। और हम कहए की सकै छी! शुभास्ते सन्तु पन्थानः।

अहाँक भूतपूर्व जीवनसंगी
[जिनकर अहाँ पचास वर्ष धरि संगिनी भ'
सहयात्रिणी बनल रहलिऐन]

—